शब्द संख्या—१०२५०

आयुर्वेदीय-कोष

(Ayurvediya-Kosha)

प्रथम खण्ड

(*Volume I*)

'अ, से "अज्ञातयक्ष्मा,, तक

(From-'a' to 'ajnyátayakshmá')

ॐ

आयुर्वेदीयानुसंधान--ग्रन्थमाला का द्वितीय पुष्प

आयुर्वेदीय-कोष

An Encyclopaedical Ayurvedic Dictionary

(with full details of Ayurvedic, Unani and Allopathic terms.)

अर्थात्

आयुर्वेद के प्रत्येक अङ्ग प्रत्यङ्ग सम्बन्धी विषय यथा-निघण्टु, निदान, रोग-विज्ञान, विकृति-विज्ञान, चिकित्सा-विज्ञान, रसायनविज्ञान, भौतिकविज्ञान, कीटाणुविज्ञान, इत्यादि प्रायः सभी विषयके शब्दों एवं उनकी अन्य भाषा (देशी, विदेशी, स्थानीय एवं साधारण बोलचाल) के पर्यायोंका विस्तृत व्याख्या सहित अपूर्व संग्रह। व्याख्यामें प्राचीन व अर्वाचीन मतोंका चिकित्सा-प्रणाली-त्रय के अनुसार तुलनात्मक एवं गवेषणापूर्ण विवेचन किया गया है। इसमें २००० से अधिक वनस्पतियों, समग्र खनिज एवं चिकित्सा कार्य में आने वाली प्रायः सभी आवश्यक प्राणिवर्ग की तथा रासायनिक औषधों के आजतक के शोधों का सार्वाङ्गीन सुन्दर, सुबोध एवम् प्रामाणिक वर्णन है। संक्षेप में आयुर्वेद(यूनानी तथा डॉक्टरी) सम्बन्धी कोई भी विषय ऐसा नहीं चाहे वह प्राचीन हो या नवीन जिसका इसमें समावेश न हुआ हो।

लेखक तथा संकलन-कर्त्ताः—

श्री बाबू रामजीत सिंह जी वैद्य

श्री बाबू दलजीत सिंह जी वैद्य

रायपुरी, चुनार (यू० पी०)

प्रकाशक—

श्री पं० विश्वेश्वरदयालुजी वैद्यराज

सम्पादक—अनुभूत योगमाला,

बरालोकपुर-इटावा (यू० पी०)

संशोधित तथा परिवर्द्धित

[द्वितीय संस्करण, १००० प्रति]

(सम्वत् १९९० वि० तथा सन् १९३४ ई०)

प्रथम संस्करण (First Edition)............सन् १९३२ ई०
द्वितीय संस्करण (Second Edition)............फरवरी सन् १९३४ ई०



श्री पं० विश्वेश्वरदयालुजी के प्रबन्ध से हरिहर प्रेस, बरालोकपुर-इटावा में मुद्रित।

प्रस्तावना

(महामहोपाध्याय कविराज श्रीगणनाथ सेन शर्मा, सरस्वती, विद्यासागर, एम० ए० एल० एम० एस० लिखित)

संसार परिवर्तनशील है। आज इसका रूप कुछ है, पहिले कुछ था, कल कुछ हो जायगा, इतिहास ऐसा बतलाता है। कल जो शासक था आज वही शासनाधीन है, जो पद दलित था वह सिर पर उन्नत है। पूज्य आज हेय समझा जाता है और तिरस्कृत आज आदृत हो रहा है। वही सुजला-सुफला-शस्य-श्यामला पुण्यमयी भारतभूमि है, वही भेषज-पीयूष-वर्षिणी वन्यस्थली है, वही अष्टवर्ग-सोमलतादि-प्रसविनी-हिमाद्रिमाला है, किन्तु आज हमारे भाग्यदोष से उसीको लोग नीरसा कहते हैं। प्राचीन इतिहास की ओर जब दृष्टि उठाते हैं तो पता चलता है कि मानव-जाति मात्र के कल्याणार्थ इस भारत ने सम्पूर्ण-जगत् को क्या क्या नहीं प्रदान किया है!

अविद्य को विद्या, असंस्कृत को संस्कृति, अश्रुत को श्रुति, विस्मृत को स्मृति एवं मोहान्ध को दिव्य-ज्ञान दृष्टि इसने अपने उदार करों से निस्संकोच वितरण किया है। इतना ही नहीं वरन् इसने संसार का वह उपकार किया है कि जिसके अभाव होने पर उक्त समस्त साधन काल के गाल में विलीन हो गए होते। धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष, सभी का आधार जीवन है; जीवन का अवलम्बन शारीरिक एवं मानसिक स्थैर्य है। अतएव समस्त इहलौकिक एवं पारलौकिक सुखों के साधनभूत 'आयुर्वेद' का पुण्योपदेश कर इस भारतवर्ष ने मनुष्य-जाति का जो कल्याण किया है वह वर्णनातीत है। हन्त! वही भारत—विश्व-शिरोमणि-भारत—आज परमुखापेक्षी है; भास्कर का प्रखर-प्रकाश खोकर दीपकों की मलिन-ज्योति का अपेक्षित है।

परन्तु नहीं। दिन के बाद रात और रात के बाद दिन होना अवश्यम्भावी है। कालचक्र का परिक्रमण करता हुआ, सहस्रों वर्ष पश्चात्, महानिशा के अङ्क से निकल कर, 'आयुर्वेद का सूर्य' पुनः प्राची में अपनी संजीवन-किरणें प्रक्षिप्त करते दृष्टिगोचर हो रहा है। उसके स्वागत के लिए कितनी मञ्जरियाँ कलित हो गईं, कितने ही कुसुम विकसित हो गए। इन्हीं में से एक नव-प्रसून "आयुर्वेदीय-कोष" रूप में आज मेरे हाथों में आया है। इसके दलों की मनोहरता, इसके पराग के सौरभ का परिचय आप लोगों की सेवा में उपस्थित करने का भार मुझे सौंपा गया है।

यद्यपि आयुर्वेदीय-कोष लिखने का यह प्रयत्न सर्वथा नवीन नहीं है, तथापि इसमें कुछ विलक्षणता अवश्य है। इसके बहुत पूर्व, आयुर्वेद के द्रव्यगुणांश के अर्थ परिचायक कोष, 'राज-निघण्टु', 'मदनपाल-निघण्टु' आदि प्राचीन एवं 'शालिग्राम-निघण्टु' आदि नवीन ग्रंथ उपस्थित थे, जिनसे आज दिन भी वैद्य-समाज बहुत लाभ उठा रहा है, किन्तु इनका क्षेत्र एक प्रकार से परिमित है और इन्हें हम एक सर्वव्यापक आयुर्वेदीय-कोष के रूप में व्यवहृत नहीं कर सकते। आयुर्वेद का कलेवर आज कितना विशाल है एवं इसके प्रकाश में आज अपना क्षेत्र कितना विस्तृत दिखलाई पड़ रहा है, यह वैद्य-समाज के प्रत्यक्ष ही है। अतः हम कह सकते हैं कि हमारे सन्देह मात्र को दूर करने के लिए अभी पर्याप्त-सामग्री नहीं प्राप्त हुई है। हमें एक ऐसे आयुर्वेदीय-कोष की आवश्यकता है, जो सर्वथा हमारी शंकाओं का समाधान करने, हमारी जिज्ञासाओं का संतोषजनक उत्तर देने एवं सन्दिग्ध स्थलों पर पथ-प्रदर्शन करने में समर्थ हो। हमारी इसी माँग की पूर्ति करने के लिए 'कविराज श्री उमेशचंद्र विद्यारत्न' महोदय ने सन् १८६४ ई० में, विशाल "वैद्यक-शब्द-सिंधु" को प्रकाशित किया था। इसमें संदेह नहीं कि वैद्य-समुदाय ने उससे बहुत लाभ उठाया है, तथापि जैसा कि हम पहिले कह चुके हैं, हमारी वर्तमान आवश्यकताओं को सम्यक्तया पूरी करने की पूर्ण-क्षमता उसमें भी नहीं है। इसी उद्देश्य को लक्ष्य करके आज एक और नवीन "आयुर्वेदीय-कोष" हमारे सम्मुख उपस्थित हुआ है, हम हृदय से इसका स्वागत करते हैं।

आयुर्वेदीय-जगत् के धुरन्धर-विद्वानों एवं अनेक-शास्त्र-पारङ्गत पण्डितों को भी यथावसर जिसकी सहायता लेनी पड़े, विविध क्रिया-कुशल वैद्यों को भी आवश्यकता पड़ने पर जिसका आश्रय लेना पड़े, तथा अनेक अकुशल एवं स्वल्पमति वैद्य और छात्र-समुदाय को भी जिसके भाण्डार से अपने को पूर्ण बनाने के लिए ज्ञान-याचना करनी पड़े, ऐसे आयुर्वेदीय-कोष को कितना सारगर्भित, कितना महान् एवं सर्वाङ्गपूर्ण होने की आवश्यकता है, इसकी कल्पना प्रायः सभी विज्ञ-वैद्य कर सकते हैं। मेरा अनुभव है कि योरोप में जब कभी ऐसे महान् कार्य उपस्थित होते हैं, उस समय उस देश के अनेक सर्वोत्तम विद्वान्, जो कि अपने अपने विषयों के विशेषज्ञ होते हैं, परस्पर सहयोग द्वारा, वर्षों तक दृढ़ परिश्रम एवं प्रचुर-धन-व्यय करके, उसे सर्वाङ्गपूर्ण बनाने की यथाशक्ति चेष्टा करते हैं। इतना ही नहीं, वरन् नवीन नवीन खोज और सुधार पर विशेष ध्यान रखते हुए, उसमें आवश्यक परिवर्तन और सुधार करने के लिए जीवन भर सतर्क रहते हैं और सुधार करते जाते हैं। वास्तव में यह कार्य्य कितना उत्तरदायित्व-पूर्ण, दुःसाध्य एवं दुरूह है, इसे विज्ञ-जन स्वयं समझ सकते हैं। इस विषय में लेखकों को कितनी गम्भीर गवेषणा एवं पाण्डित्य की आवश्यकता होती है, कितनी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, कितनी बाधाओं का अतिक्रमण करना होता है, इसका अनुमान एक ग्रंथकार ही कर सकता है। दुर्भाग्यवश, भारतवर्षके विद्वानोंने इस प्रकारकी सामूहिक सहयोगिता पर अभी तक ध्यान नहीं दिया है; फलतः सच्चे उत्साही लेखकों को एकमात्र अपने परिश्रम एवं अध्यवसाय पर निर्भर रहना पड़ता है। एतदतिरिक्त, भारतवर्ष में, प्रेस के लिए प्रतिलिपि करना, मुद्रण एवं संशोधनादि की कठिनाइयों के साथ ही आर्थिक-क्लिष्टता भी प्रायः रहती ही है। अतः इन सब परिस्थितियों के होते हुए भी इस महान् 'आयुर्वेदीय-कोष' कर्ता ग्रंथकारद्वय का उत्साह एवं साहस सराहनीय है।

एक आयुर्वेदीय-कोष के प्रस्तुत करने में जो सबसे बड़ी एवं विचारणीय बाधा है—वह है पारिभाषिक शब्दों का अर्थ-निर्णय। कितने ही शब्द ऐसे हैं जिनके अर्थ सन्दिग्ध होते हैं और संस्कृत भाषा में नानार्थक शब्द भी अनेक हैं। यह बाधा, आयुर्वेद की प्रायः सभी शाखाओं में किसी न किसी रूप में वर्तमान है, और खेद के साथ लिखना पड़ता है कि इस विषय के एक सर्वमान्य-निर्णय पर वैद्य-समाज आज तक भी नहीं पहुँच सका। इसमें भी विशेषतः शारीर-विषयक एवं नानार्थ-प्रकाशक भेषजों की परिभाषा पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

यहाँ शारीर-शास्त्र-सम्बन्धी जो कार्य 'प्रत्यक्ष-शारीरम्' द्वारा प्रतिपादित हुआ है उससे वैद्य-समुदाय भली भाँति परिचित है, किन्तु भेषज निर्णय का काम अब भी बहुत पीछे है। उदाहरणार्थ अष्टवर्ग की औषधियों को ही ले लीजिए। यद्यपि इनके विनिश्चय के लिए काफ़ी प्रयत्न हुए हैं तथापि कोई सर्वमान्य विश्वसनीय निर्णय अभी तक सुप्रसिद्ध नहीं है। रास्ना एवं तगर आदि जैसी सामान्य औषधियों के परिचय में भी बहुत मत भेद है, क्योंकि देश देश में भिन्न भिन्न प्रकार की चीज़ें एक ही नाम से प्रसिद्ध हैं। अतः इन सब समस्याओं के समाधान करने के लिए सच्ची लगन के साथ गवेषणा (Research) करने की नितान्त आवश्यकता है। आयुर्वेद की सेवा में तन-मन-धन अर्पण करके ही इसका पुनरुत्थान करना है। इसी कार्य की पूर्ति पर आयुर्वेदीय-कोष की सर्वाङ्गपूर्णता निर्भर करती है। अतः इस ओर मैं लेखक महाशयों का ध्यान आकृष्ट करता हूँ कि वे, इस कोष को विशेष उपयोगी बनाने के लिए, विविध-विषयों के विशेषज्ञों एवम् विद्वानों से तद्विषयक गवेषणा-सिद्ध परामर्श सदैव लेते रहें, ताकि समय समय पर इसमें आवश्यक परिवर्तन एवम् परिष्कारादि हो सकें।

आयुर्वेद, तिब्बी एवम् ऐलोपैथी आदि प्रायः सभी वर्तमान प्रचलित चिकित्सा-पद्धतियों से सम्बन्ध रखने वाले विषयों का इस ग्रंथ में समावेश किया है, जिससे इसका कलेवर अति-विशाल होगया है। इन विषयों को कहाँ तक और किस मात्रा में इस ग्रंथ में सन्निविष्ट करने की आवश्यकता थी, इसे विद्वान पाठक स्वयं विचार लें।

एक बात की आवश्यकता हमें और प्रतीत होती है। वह यह कि इस ग्रंथकी रचना में जिन जिन अन्यान्य ग्रंथों से सहायता मिली है, उनके लेखकों एवम् प्रकाशकों के प्रति—चाहे वह स्वदेशीय हों या विदेशीय, प्राचीन हों वा अर्वाचीन—उनके नाम समेत धन्यवाद प्रकाश करना अनिवार्य कर्तव्य है।

अन्ततः हम योग्य लेखकों के बहुवर्षों के प्रभूत-परिश्रम, अदम्य उत्साह एवम् आयुर्वेद की सेवाकी प्रशंसा करते हुए ईश्वर से यह प्रार्थना करते हैं कि इस महाकोष द्वारा आयुर्वेद के भांडार का एक बड़ा अंश पूर्ण हो तथा वैद्य, छात्र-समुदाय एवम् हजारों-जनता का इससे कल्याण साधन हो। इति

कल्पतरु-प्रासाद, कलकत्ता।
पौष, कृष्ण चतुर्दशी, सम्वत् १९९० वि०

विद्वज्जनों का विधेय—
श्री गणनाथ सेन शर्म्मा

प्रकाशक की विज्ञप्ति

इस कालचक्र का प्रभाव आज तक किसी ने भी नहीं पाया; न कोई यह जान ही सका कि कल क्या होगा। जो आज या इस क्षण में है न मालूम उसका इस क्षण के बाद क्या होगा। समय के अनुसार संसार में अनेकानेक परिवर्तन हो चुके, हो रहे हैं, और आगे भी होंगे। इसी चक्र के अनुसार प्रत्येक वस्तु का नाश और विकाश होता आया है। आज उसी कालचक्र से प्रेरित हुआ मैं आपके समक्ष आ रहा हूँ। कोई कुछ भी नहीं कर सकता। समय ही सब कुछ करा लेता है। इसीलिए कहा भी है—

तुलसी जस भवितव्यता तैसी मिले सहाय। आप न आवे ताहि पै ताहि तहाँ ले जाय॥

इसी के अनुसार यह कार्य भी हुआ है। जिस कोष के लिए आज कई वर्ष से आयुर्वेदिक-वायु-मंडल अपनी गुञ्जार से समस्त संसार को गुञ्जायमान कर रहा था, उसी वायु-मंडल की प्रेरणा से हमारे मित्रों (बाबू रामजीतसिंह व बाबू दलजीतसिंह) को प्रेरणा हुई और वे उससे प्रेरित होकर इस कमी की पूर्ति के लिए तल्लीन होगए और जनता की इच्छा के अनुसार इस आयुर्वेदीय-कोष को रच डाला; और मेरे समक्ष, जो ऐसे ही कोष के प्रकाशन के लिए सदैव प्रयत्नशील था, उपस्थित किया। इस कोष को जो देखा तो जनता के अनुरूप ही पाया। फिर क्या था। समय की प्रेरणा से उन्मत्त होकर, अपनी शक्ति का विचार किए बिना नमालूम किस आन्तरिक इच्छाशक्ति के बल इस अपार भार को अपने निर्बल कन्धों पर लेकर उद्वहन करने को तैयार होगया। उसी के फल स्वरूप उसका यह पहिला भाग जनता के समक्ष उपस्थित कर रहा हूँ। अब आप देखें कि इस कोषमें सम्पूर्ण ज्ञातव्य विषय हैं वा नहीं? जहाँ तक अपना विचार था और समयकी प्रेरणा जैसी थी, कि बिना परिश्रम किए ही थोड़ा पढ़ा लिखा या एक, भाषाका विद्वान भी सभी आयुर्वेदीय संसार की बातें जो पृथक् पृथक् पैथियों (यथा-एलोपैथी डॉक्टरी यूनानी, आयुर्वेदीय) में भरी पड़ी हैं, जान जाएँ और जिनमें हमारे वैद्य दूसरी पैथी के मर्मज्ञ के सामने शिर नीचा कर जाते थे; वह दूर हो जाय। वह इस कोष से दूर होगई या नहीं? विद्वान जन लिखने की दया करें।

इस वृहत्काय कोष के प्रकाशित करने के विषय में हमारे कुछ भ्रातृगणों के प्रश्न होंगे कि आयुर्वेद-शास्त्र में कई निघण्टु इस समय भी वर्तमान थे, फिर इस नवीन वृहत्काय कोष के निर्माण करने की क्या आवश्यकता थी? इसके उत्तर में ही प्रकाशक का निवेदन है कि अवश्य कई निघण्टु हैं; परन्तु आप लोगों ने कभी भी उनकी तुलना नहीं की। यदि आप तुलना कर लेते तो उपर्युक्त बात कदापि न कहते। कुछ समयसे हमारे यहाँ वैद्य-समाज में प्रमाद आगया है और उन्होंने—

"हेतुलिंगौषध ज्ञानं स्वस्थातुर परायणम्।

त्रिसूत्रं शाश्वतं पुण्यमायुर्वेदं मनु शुश्रुमः॥

इन सूत्रों को ही भुला दिया और रोग निश्चय तथा उसमें दोष कल्पना और उस अवस्था के लिए औषध विवेचन करना ही छोड़ दिया। सिर्फ रोग का नाम और उसके लिये उस रोग की चिकित्सा में वर्णित कोई सी भी औषध बना कर दे देना ही वैद्यक व्यवसाय समझ लिया था। यह धारणा बढ़ते २ यहाँ तक बढ़ी कि जिसका अन्त अब तक भी नहीं हुआ। इसी प्रवाहमें लिखे हुए चिकित्सा-ग्रंथ तथा निघण्टु (जो केवल मात्र पांडित्य प्रकाश के लिए ही रचे गए थे) ग्रंथों पर किसी ने भी ध्यान नहीं दिया। यह दशा जब इधर भारतवर्ष में हो रही थी तब यूनानी लोग "हेतुलिंगौषधज्ञानम्" इस सूत्र पर विचार करते हुए रोगविज्ञान और औषध-विज्ञान को पूर्ण करने में अधिक परिश्रम करने लग गए। उसका प्रतिफल यह हुआ कि आयुर्वेदीय

मालिक श्रीहरिहर औषधालय—

चिकित्सक पं० विश्वेश्वरदयालु वैद्यराज

बरालोकपुर इटावा यू० पी०



सादर समर्पणम्

जगज्जननि जगदम्बे

किन शब्दों से तुम्हारी पूजा करें ! किन शब्दों से तुम्हें धन्यवाद दें । मातः ! तुमने इस अपने अकिंचन पुत्र को किस चाव से इतना अपनाया है कि जो इच्छा स्वप्न में भी इसने की तुमने वही पूर्ति कर इसे सुखी किया । इसी के उपलक्ष में यह तुच्छ भेंट तुम्हारे चरणों में समर्पित है । इसे अपनाने की दया करना और ऐसी ही कृपा करना कि जिससे यह आयुर्वेद का उद्धार करता हुआ अपना नाम अमर करने में समर्थ हो ।

समर्पक:—

तुम्हारा स्नेही पुत्र विश्वेश्वर

समर्पणम्



आयुर्वेदमार्तण्ड श्री १०८ स्वामी लक्ष्मीरामाचार्यजी प्रधानाध्यापक सं० विद्यालय जयपुर

अयि गुरुवर्य्य !

आपकी दया से जो कुछ ज्ञान प्राप्त कर आयुर्वेदोद्धार के लिए जो कुछ प्रगति हुई है उसका श्रेय आपको ही है। अतः यह कोष आपकी इच्छानुरूप ही संकलित किया हुआ प्रकाशित कर, चरणों में समर्पित करने का साहस किया है, कृपया स्वीकार कर लीजिये।

विश्वेश्वरः

चिकित्सा को अपने चमत्कारों से बहुत कुछ दबा डाला। इसके बाद एलोपैथी का सितारा चमका। उन्होंने यूनानियों से भी अधिक गवेषणा की और आयुर्वेदीय चिकित्सा को बिलकुल ही दबाडाला। इस समय जब कुछ वैद्यों ने अपनी अवनति पर विचार करना प्रारम्भ किया तो उनको अपने रोगविज्ञान (निदान) पर और निघण्टु (औषधि-विज्ञान) पर नज़र डालनी पड़ी, कारण इनके बिना चिकित्सक एक पग भी आगे नहीं बढ़ा सकता। अस्तु तुलनात्मक विवेचन करने पर आंखें खुली और ज्ञात हुआ कि हमतो प्रथम ही अपना मार्ग रुद्ध कर चुके हैं तब होश आया कि हमें अपनी कमी कैसे पूर्ण करनी चाहिए। क्या २ कमी और क्या २ अनर्थ हमारे निघण्टुओं में है दिग्दर्शनार्थ हम नीचे देते हैं। यथा—

"रास्नास्तुत्रिविधा प्रोक्ता मूलं पत्रं तृणं तथा"

इस प्रकार रास्ना तीन तरह की बता कर ऐसा भ्रम में डाला गया है कि कभी भी यह जटिल समस्या तय न हो। इसी तरह कंकुष्ट, रमक आदि पर भी विवाद है। अब देखिए प्रायः नित्यप्रति कार्य में आने वाली वस्तुओं के विषय में।

धान्यकं तु परं स्निग्धमवृष्यं मूत्रलं लघु।
तिक्तं कटूष्ण वीर्यं च दीपनं पाचनं स्मृतम् ॥ भाव० ॥

धनियाँ स्निग्ध, अवृष्य, मूत्रल, हलका, तिक्त, कटु, उष्णवीर्य वाला दीपन और पाचन है। परन्तु,

धान्यकं मधुरं शीतं कषायं पित्त नाशनम्। राजनि०।

राजनिघण्टुकार धनिये को मीठा,शीतल,कषैला पित्तनाशक मानते हैं। भावप्रकाशकार धनियें को पित्तकारक विशेष मानते हैं और राजनिघण्टुकार ठंडा। अब क्या ठीक है? वैद्य किस के मत को स्वीकार कर दे और कैसे सफलता प्राप्त करे? जब तक यह दृढ़ निश्चय हम लोग बैठ कर नहीं कर लेते तब तक हम सफलता से सैकड़ों कोस दूर हैं। एक विद्वान वैद्य भी जिसने बड़ी खोज से रोग निश्चय किया हो उसमें दोष विवेचन करके उसकी अंशांश कल्पना भी कर लेने में वह सफलहो गया हो तो भी वह औषध निश्चय में या तो भ्रम में पड़ जायगा कि किसका मत माने। यदि उसने एक के मत को स्वीकार करके भी औषधि दे दी तो वह असफल हुआ और रोग बढ़ कर प्राण नाशक बन गया। इसमें किसका दोष है? वैद्य का या वैद्यक साहित्य का। अभी तो आप यही कहेंगे कि वैद्यक का तो ऐसी भारभूत साहित्य से ही क्या लाभ? मेरी तो धारणा होगई है कि जल्द से जल्द ऐसे साहित्यको नष्ट भ्रष्ट कर देने में ही भलाई है, वर्ना वैद्यों को बहुत क्षति का सामना करना पड़ेगा। यूनानी वाले धनिये के विषय में लिखते हैं-धनियां फरहत लाती है, दिल व दिमाग़ को क़ुव्वत देती है, दिमाग़ पर बख़ूरे चढ़ने को रोकती है, ख़फ़क़ान व वसवास (वहम) को मुफ़ीद, मेदे को क़ुव्वत देती है, दस्तों को बन्द करती है, जरियान मनी को लाभ देती है, नींद लाती है, ताज़ी धनियां रद्दी माद्दे को पकाती है और सफ़रा को तस्कीन करती है। इसकी कुल्ली मुंह के जोश, और गले के दर्द को नफ़ा करती है। अक्सर दिमाग़ी बीमारियोंको नफ़ा करती है। मात्रा-१ मा० से १ तोला तक। गैर समी अर्थात् विष नहीं है। कहिए यूनानियों को तस्ख़ीससे क्या विशेष लाभ आपको नहीं हो सकता। इसी प्रकार एलोपैथी का वर्णन करके फिर अपना मत निश्चय कर दिया जाय तो क्या चिकित्सकों को सुलभता नहीं हो जायगी? इस कोष में जहाँ तक था सभी साहित्यों से लेकर भर दिया और उसका तुलनात्मक विवेचन कर अपना मत प्रकट कर विषय को साफ कर देने में कोई कसर हो नहीं उठा रक्खी और निघण्टु को 'निघंटुना बिना वैद्यो वाणी व्याकरणं बिना' इस कहावत के अनुसार ही इसको ऐसा बनवाया गया कि प्रत्येक वैद्य का कार्य इसके बिना यथेच्छ सिद्ध ही न हो सके। विशेष विशेषताएं इस कोषके लेखक ने स्वयं अपनी भूमिका में लिख दी हैं, जिनका बताना हमारे लिए केवल मात्र पुनरुक्ति करना ही होगा। अतः हम उस पर मौनावलम्बन करके आगे चलते हैं। आपको यदि अभिप्रेत हो तो 'लेखक के दो शब्दों' को पढ़ने की उदारता कीजिए।

यही नहीं कि सिर्फ धनिएं पर ही ऐसा लिखा है। नहीं नहीं प्रायःसभी वनस्पतियों पर ही यही झगड़ा डाला गया है। इसके दो ही कारण हमारी अल्प मति में आते हैं, १-पद्य रचना है, पद्य रचना करते समय पद्यको पूरा

करने के लिए मनमाने शब्दों को रख देना और ग्रंन्थ पूरा करके नाम कमाना ही है। क्योंकि 'निरंकुशा कवयः' कविनिरंकुश होते हैं। यह बात अन्य विषय के कवियों के लिए लागू भी हो सकती है; परन्तु आयुर्वेद जैसे जुम्मेदारी के साहित्य पर यह निरंकुशता आज कितना बुरा प्रभाव डालती हुई हमारे अधःपतनका कारण हुई है यह किसी भी सहृदय से छिपा नहीं है।

प्रत्येक आयुर्वेदीय साहित्य पर विद्वानों की सम्मति का अंकुश होना चाहिए और वह साहित्य तभी प्रकाश पा सकता है। जब उसका निरीक्षण विद्वानों द्वारा होकर आज्ञा प्राप्त करली जाय। मनगढंत आयुर्वेदीय साहित्य से आयुर्वेद का नाश होना संभव है। और भी देखिए—

पलाण्डुः कफकृन्नाति पित्तलः। भाव० । पलाण्डुः कफ पित्त हरो लघुः। राज० नि०।
तगरद्वयमुष्णं स्यात्। भाव:० । तगरं शीतलं तिक्तम्॥ रा० नि०॥
त्वक् शुक्रला। भा०। त्वचं शुक्रशमनम्। रा० नि०।

कितना अनर्थकारी विरोध है। यही विरोध देख हमने इस ग्रंथ के प्रकाशनका भार अपने निर्बल कंधो पर लिया है। आशा है हमारे वैद्य बन्धु हमें इसमें मदद देंगे और जहाँ जहाँ हमारा स्खलन हुआ हो अपनी बुद्धि के द्वारा सूचित करें ताकि संशोधित हो सके और भावी संतानों के हित साधन में यह एक हो सके। यदि इस ग्रंथ से कुछ भी लाभ पाठकों को होगा तो हम अपने व्यय को सार्थक समझेंगे। दूसरे ओषधि मात्रा, किस वनस्पति का कौन सा भाग प्रयुक्त किया जाना चाहिए, यदि दी हुई औषध अवगुण करती मालूम हो तो उसका दर्पघ्न कौन सी औषध को देकर शीघ्र ही होने वाली हानि से रोगी को बचा लिया जाय।

इसके सिवाय आयुर्वेद में केवल ४०० के करीब और युनानी ग्रंथों में ६०० के करीब वनस्पतियों का वर्णन मिलता है और एलोपैथी में करीब २००० ओषधियों का स्फुट वर्णन मिलता है और करीब २०००० ओषधियों के चित्र लिए जा चुके हैं। आपको इस कोष में अब तक की संसार भर की खोजों का संग्रह मिलेगा जिसे देख आप गद् गद् हो जावेंगे।

इस कोष में क्या है? संक्षेपतः इसमें प्रायः सभी विषयों का समावेश किया गया है। इस कोष को पास रखने पर आपको अंग्रेजी (एलोपैथी, यूनानी, आयुर्वेदीय, रोग-निदान, उनकी चिकित्सा, प्रसिद्ध प्रसिद्ध योग, शारीरिक शास्त्र, रसायन शास्त्र, वानस्पतिक शास्त्र का पूर्ण विवेचन अकारादि क्रम से मिलेगा। अर्थात् जो जो वर्णन आज तक की प्रकाशित पुस्तकों में इतस्ततः था उनका संग्रह एक स्थान पर इस प्रकार से दिया हुआ है कि देखने वाला उस विषय का तत्क्षण विज्ञ हो जाता है अर्थात् उस विषय का अंत ही निकाल बैठता है। इससे आगे उसके लिए कुछ भी ज्ञातव्य शेष नहीं रहता। तीनों पैथियों के शब्दों को और प्रत्येक प्रांतके शब्दों को जो चिकित्सा शास्त्रसे सम्बन्ध रखते थे अकारादि क्रमसे इस प्रकार संग्रह किया है कि, आपको किसी रोग व वनस्पति, पार्थिव,जान्तव, औषधि का नाम मालूम हो तुरन्त उसका नाम निकाल वर्णन पढ़ तृप्ति प्राप्त कर लेनी पड़ेगी। इतना सब कुछ करने पर भी शाब्दिक महान् सागर को हम पार न कर सके हो यह सम्भव है; इसलिए प्रत्येक प्रांतीय भाषाविज्ञों से प्रार्थना है कि इस कोष में जो भी शब्द आपको न मिले उसकी सूचना हमें अवश्य दें ताकि हम उसे अगले संस्करणों में स्थान दे इस कोष को पूर्ण सफल बनाने में समर्थ हो सकें। जो कुछ भी अत्युक्ति, जो कुछ भी कमी, जो कुछ भी सुधार और आपको इसमें कराना या निकालना हो उसकी सूचना से सूचित करना और अपने अपने इष्ट मित्रों को इस कोष के देखने की सलाह देना ताकि इसका प्रचार बढ़े और शीघ्र ही इसके सम्पूर्ण भाग आपको देखने को मिल सकें। यदि आप लोगों ने इसके प्रचार में उत्साह से भाग न लिया तो यह अपनी धीमी धीमी चाल से न जाने कितने वर्षों में सम्पूर्ण निकल सके और आपको जैसा इस कोष से लाभ पहुँचना चाहिए न पहुँचे। कारण बिना कोष के सम्पूर्ण हुए सम्पूर्ण कामनाएँ पूर्ण होनी असम्भव ही है। आशा है कि सभी वैद्य बन्धु इससे प्रसन्न हो सहाय देंगे।

वैद्यों की उन्नति का इच्छुकः

प्रकाशकः - **चिकित्सक पं० विश्वेश्वरदयालुजी वैद्यराज**

लेखक के दो शब्द !

जगत में जितना भी कार्य होता है, उसका कोई न कोई कारण अवश्य होता है। बिना कारण के किसी भी कार्य का होना असम्भव है, पुनः वह मानव बुद्धि द्वारा अवगत हो हो सके अथवा नहीं। यह एक अटल सिद्धान्त है।

जो बात सर्व साधारण के लिए कोई मूल्य नहीं रखती वही बात उस महा पुरुष के लिए जिसके द्वारा कोई महान कार्य सम्पादित होने वाला होता है, अत्यन्त महत्व रखती है। परिपक्व सेव सदैव ही पृथ्वी तल पर टपका करते हैं। परन्तु सामान्य मानव हृदय पर उसका क्या प्रभाव पड़ता है ? पर नहीं इसी एक बात ने सर आइज़क न्यूटन को गम्भीर चिन्ता में डाल दिया और उसके अन्वेषक हृदय तल से गुरुत्व अथवा आकर्षण शक्ति ऐसे महान् उपयोगी सिद्धान्त का आविर्भाव हुआ और आज भी बड़े बड़े वैज्ञानिक उस साधु पुरुष के यश के गीत गाते हैं।

आज से लगभग २० वर्ष की बात है कि हमें एक ऐसा योग बनाना था जिसमें "कालावाला" शब्द प्रयुक्त हुआ था। समझ में नहीं आया "काला वाला" है क्या बला ? और योग का बनाना जरूरी था। अस्तु हमने उसकी तलाश में संस्कृत तथा हिन्दी आदि कई भाषा के प्रायः सभी कोषों को निचोड़ डाला और काशी के तत्कालीन प्रायः सभी आयुर्वेद शास्त्रियों एवं बड़े बड़े औषध-विक्रेताओं से पूछ ताछ की। पर सफलता न मिली। और सफलता मिले भी तो क्यों ? उक्त शब्द महाराष्ट्री भाषा का था (हिन्दी में सुगन्धवाला एवं उशीर दोनों के लिए प्रयुक्त होता है)।

अन्ततः विवश होकर उस औषध के बिना ही, शेष औषधियों के द्वारा योग प्रस्तुत कर उसका प्रयोग कराया गया और उससे सफलता भी मिली। पर हमें संतोष न हुआ। हमने अपने मन में इस बात को की दृढ़ प्रतिज्ञा करली कि हम एक ऐसे आयुर्वेदीय-शब्द कोष का निर्माण करेंगे जिसमें औषधियों के प्रायः सभी भाषा के नाम अकारादि क्रम से दिये गए हों। उसी समय से हमने शब्दों का संकलन प्रारम्भ कर दिया। वर्षों विंध्य एवं हिमवर्ती पर्वत शिखरों एवं संघन भयावह वनों की हवा खाई, जंगली मनुष्यों यथा कोल भील आदिकों से मिला, विभिन्न प्रान्त के लोगों से बात चीत की और इस प्रकार क्रियात्मक रूप से औषधियों की खोज एवं शास्त्रीय वर्णनों से तुलना कर निश्चित निर्णय प्रतिपादनार्थ यथेष्ट मसाला एकत्रित करने में संलग्न हो गया। उस समय केवल इतना ही विचार था।

पर उस विचार एवं यत्न का जो विकसित रूप आज आपके सम्मुख है, उस समय इसका स्वप्नाभाष भी न था। परंतु जिस प्रकार एक नन्हा सा बीज मिट्टी, जल तथा वायु के संपर्क से अंकुरित होकर इतने विशाल वृक्ष का रूप धारण करता है, उसी प्रकार यह छोटा सा विचार उपयुक्त वायुमंडल एवं सहायता द्वारा परिपोषित होकर ऐसे महान कार्य रूप में परिणत हुआ है। "कालावाला" का न मिलना कोई असाधारण बात न थी; परंतु इसी एक विचार से इस कोषकी रचना का सूत्रपात होता है। तभी से अध्यवसाय एवं कठिन परिश्रम के साथ अपना अध्ययन जारी रहा। बीच बीच में विचार विनिमय एवं प्रत्येक विषय के अनुसंधानपूर्वक अनुशीलन तथा क्रियात्मक प्रयोग जन्य अनुभव द्वारा विचार दृढ़ एवं विकसित होते गए। जिसके परिणाम स्वरूप आज यह दीर्घ काय ग्रन्थरत्न का एक छोटा सा अंश (प्रथम खण्ड) आपके सम्मुख है। इसकी प्रस्तावना उत्कृष्ट विद्वान, वैद्य शिरोमणि, वैद्योंके आचार्य एवं प्रत्यक्ष शारीर जो अनेक आयुर्वेदीय कालेजों एवं विद्यापीठ के पाठ्य-क्रममें है और शारीर ग्रंथोंमें संस्कृतमें अपने विषयका एक अनुपम प्रामाणिक ग्रंथ रत्न है, और जिससे शारीर विषयक शब्दों के लिए हमको भी काफी सहायता मिली है के रचयिता महा महोपाध्याय कविराज

श्री गणनाथ सेन शर्म्मा, सरस्वती, विद्यासागर, एम० ए०, एल० एम० एस० ने लिखी है। आपकी प्रस्तावना होते हुए यद्यपि हमको कुछ भी लिखने की आवश्यकता न थी, तो भी पाठकों की विशेष जानकारी के लिए हमें यहाँ कुछ लिखना उचित जान पड़ा। अतः इस कोष में आए हुए विषयों का आंशिक परिचय निम्न पंक्तियों के अवलोकन से हो सकेगा।

१—इस कोष में रसायन, भौतिक-विज्ञान, जन्तु-शास्त्र तथा वनस्पति-शास्त्र, शरीर-शास्त्र, द्रव्यगुणशास्त्र, पूयच्छेद, शारीर कार्य-विज्ञान, वाइन्द्रिय व्यापार शास्त्र औषध-निर्माण, प्रसूतिशास्त्र, स्त्रीरोग, बालरोग, व्यवहारायुर्वेद एवं अगद-तन्त्र, रोग विज्ञान, चिकित्सा तथा विकृति विज्ञान, जीवाणु शास्त्र, शल्य शास्त्र इत्यादि आयुर्वेद विषयक प्रायः सभी आवश्यक संस्कृत, हिंदी, अरबी, फ़ारसी, उर्दू तथा हिंदी में प्रचलित अंगरेज़ी के शब्द और प्राणिज, वानस्पतिक, रासायनिक तथा खनिज द्रव्यों के देशी विदेशी एवं स्थानिक व प्रांतीय आदि लगभग सवा सौ भाषा के पर्याय व्युत्पत्ति एवं व्याख्या सहित अकारादि क्रम से आए हैं। क्रमागत प्रत्येक शब्द का उच्चारण रोमन में तथा उसका निश्चित अँगरेज़ी वा लेटिन पर्याय अँगरेज़ी लिपि में दिया गया है, जिसमें केवल अँगरेज़ी भाषा भाषी पाठक भी इससे लाभ उठा सकें। पुनः उक्त शब्द के जितने भी अर्थ होते हैं, उनको नम्बरवार साफ़ साफ़ लिख दिया गया है। और उस शब्द को जिसके सामने उसकी विस्तृत व्याख्या करनी है, बड़े अक्षरों में रक्खा गया है और व्याख्या की जाने वाले शब्द के भीतर उसके समग्र भाषा के पर्यायों को भी एकत्रित कर दिया गया है।

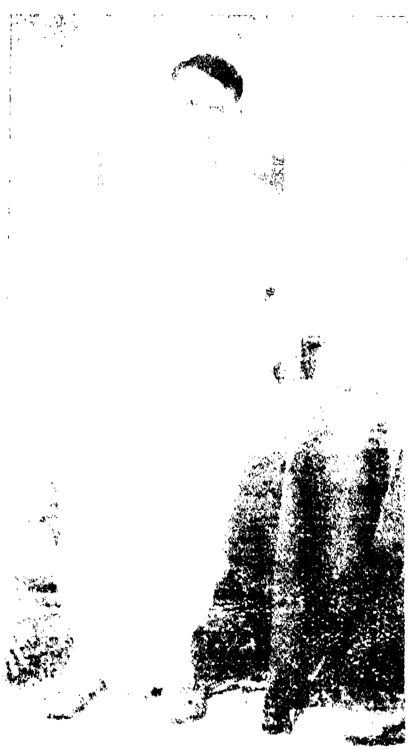
२—औषधों के प्रायः सभी भाषा के पर्याय अकारादि क्रममें मय अपने मुख्य नाम एवं अँगरेज़ी वा लेटिन पर्याय के साथ आए हैं, किन्तु उनका विस्तृत विवेचन मुख्य नाम के सामने हुआ है। मुख्य नाम से हमारा अभिप्राय (१) औषध के उस नाम से है जिससे प्रायः वह सभी स्थानों में विख्यात है अथवा उसका शास्त्रीय नाम, (२) जिससे उसे पर्वतीय वा अरण्यवासी लोग जानते हैं और (३) वह जिससे किसी स्थान विशेष के मनुष्य परिचित हैं। मुख्य संज्ञाओं की चुनाव में उत्तरोत्तर नाम अप्रधान माने गए हैं अर्थात् शास्त्रीय व व्यापक संज्ञाओं से आरण्य वा पर्वतीय पुनः स्थानिक संज्ञाएँ अप्रधान मानी गई हैं।

यह तो हुई भारतीय औषधों की बात। इसके अतिरिक्त वे औषध जो एतद्देशीय लोगों को अज्ञात हैं और उनका ज्ञान एवं प्रचार विदेशियों द्वारा हुआ है, उनका तथा विदेशी औषधों का वर्णन उन्हीं उन्हीं की प्रधान संज्ञाओं के सामने किया गया है।

औषध वर्णन में प्रत्येक मुख्य नाम के सामने सर्व प्रथम उसके प्रायः सभी भाषा के पर्यायों को एकत्रित कर दिया गया है। पर्यायों के देने में उनके ठीक होने का विशेष ध्यान रक्खा गया है। विस्तृत अध्ययन, अनुशीलन एवं अनुसंधान के पश्चात् ही कोई पर्याय निश्चित किया गया है। इस सम्बन्ध में अत्यन्त खोज-पूर्ण एवं संदेह परिहारक टिप्पणियाँ भी दी गई हैं। इतने विस्तृत पर्यायों की सूची भी शायद ही किसी ग्रंथ में उपलब्ध हो।

पुनः यदि वह औषध वानस्पतिक वा प्राणिज है तो उसका प्राकृतिक वर्ग दिया गया है। यदि वह औषध ब्रिटिश फार्माकोपीआ वा निघण्टु में ऑफिशल वा नॉट ऑफिशल है तो उसे लिख दिया गया है एवं उसके रासायनिक होने की दशा में उसका रासायनिक सूत्र दिया गया है। इसके पश्चात् प्रत्येक औषध का उत्पत्ति स्थान वा उद्भवस्थान दिया गया है। फिर संज्ञा-निर्णायक टिप्पणी के अन्तर्गत उसके विभिन्न भाषा के पर्यायों पर आलोचनात्मक विचार प्रगट किए गए एवं संदिग्ध औषधों के निश्चीकरण का काफी प्रयत्न तथा मिथ्या विचारों का खण्डन किया गया है। मुख्य मुख्य संज्ञाओं की व्युत्पत्ति दी गई है और तत्विषयक विलक्षण बातों एवम् उनके भेदों का स्पष्टीकरण किया गया है। पुनः इतिहास शीर्षक के अन्तर्गत यह व्यक्त किया गया है कि उक्त औषध सर्व प्रथम कब और कहाँ प्रयोग में लाई गई। इसके अन्तर्गत गवेषणापूर्ण नोट लिखे गए हैं, जिसके द्वारा प्राचीन अर्वाचीन वैद्यों के पारस्परिक शंकाओं का निवारण होता है।

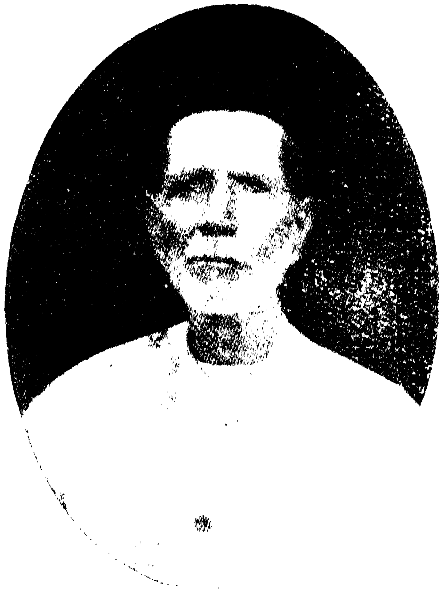
आयुर्वेदीय-कोषकारद्वय—





बाबू रामजीतसिंहजी वैद्य　　　बाबू दलजीतसिंहजी वैद्य

(रायपुरा, चुनार, यू० पी०)



डॉक्टर मुहम्मदशफ़ी (चुनार)

बर्गे दरख़्तां सब्ज़ दर नज़रे होशियार ।
हर वर्क़े दफ़्तरेस्त मअ्रफ़ते किर्दगार ॥

(सादी)

सुख़न के तलबगार हैं अक़्लमंद, सुख़न से है नाम निकोयां बलंद ।
सुख़न की करें क़द्र मर्दाने कार, सुख़न नाम उनका रखे बरक़रार ॥

(जोन शेक्सपीयर)

फिर प्रत्येक औषध का वानस्पतिक व रासायनिक वर्णन दिया गया है जो हिंदी में एक बिलकुल नवीन विषय है। पुनः रासायनिक-संगठन (विश्लेषण), प्रयोगांश, परीक्षा, मिश्रण, विलेयता, संयोग-विरुद्ध, शक्ति, गुरुत्व, प्रकृति, प्रतिनिधि, हानिकारक और दर्पघ्न इत्यादि का आवश्यकतानुसार यथास्थान वर्णन किया गया है।

पुनः विषोपविष एवम् खनिज की आयुर्वेदीय तथा यूनानी मतानुसार शुद्धि एवम् खनिज व धातुओं के भस्मीकरण के परीक्षित एवम् शास्त्रीय नियमों का वर्णन किया गया है। फिर औषध-निर्माण तथा मात्रा दी गई है।

औषध-निर्माण में प्रथम अमिश्रित फिर मिश्रित आयुर्वेदीय, युनानी औषध तथा डॉक्टरी के ऑफ़िशल योग (जिसमें प्रत्येक औषध की निर्माण-विधि है) दिए हैं। तत्पश्चात् नॉट ऑफ़िशल योग जिसमें उक्त औषध से बनाई हुई यूरोप अमरीका की लाभप्रद प्रायः पेटेण्ट औषध का उनके संक्षिप्त इतिहास लक्षण एवं गुणधर्म तथा प्रयोग का वर्णन है, दिया गया है। तदनन्तर गुणधर्म तथा प्रयोग शीर्षक के अन्तर्गत आयुर्वेदीय मत से धन्वन्तरीय निघण्टु से लेकर आज तक के सभी निघण्टुओं के गुणधर्म इस प्रकार एकत्रित कर दिए गए हैं। जिसमें विषय आवश्यकता से अधिक न होने पाए और साथ ही कोई बात छूटे भी नहीं। फिर चरक से लेकर आज पर्यन्त के आयुर्वेदीय चिकित्सा शास्त्रों में जहाँ जहाँ उक्त औषध का प्रयोग हुआ है, उसको यथा क्रम सप्रमाण एकत्र संकलित कर दिया गया है, पुनः उन पर अपना वक्तव्य लिखकर बाद में यूनानी मत से प्रायः उनके सभी प्रमाणिक ग्रंथों से उक्त औषध विषयक गुणधर्म तथा प्रयोग को सरल हिंदी में अनूदित कर प्रमाण सहित संगृहीत कर दिया गया है। किसी किसी औषध के पञ्चांग के प्रयोग का विशद विवेचन किया गया है। और यदि उसके किसी अंग से किसी धातुपधातु वा रत्नोपरत्न की भस्म प्रस्तुत होती है तो उसके भस्मीकरण की विधि, मात्रा, अनुपान, एवं गुणप्र-योग आदि भी दिए गए हैं। फिर डॉक्टरी मतानुसार उक्त औषध का विस्तृत आवयविक बाह्यान्तर प्रभाव तथा प्रयोग अर्थात् उक्त औषध का कितनी मात्रा में किस किस शरीरावयव पर क्या क्या प्रभाव होता है, विस्तार के साथ वर्णन किया गया है। यदि उसका अन्तःक्षेप होता है तो उसकी मात्रा एवं उपयोग-विधि का भी उल्लेख किया गया है। औषध के गुणधर्म वर्णन के पश्चात् योग-निर्माण-विधि विषयक एवं किसी किसी औषध के सम्बन्ध में आवश्यक आदेश दिए गए हैं। सेन्द्रियक तथा निरेन्द्रियक विषोपविष द्वारा विषाक्तता के लक्षण एवं तच्छामक उपायों तथा अगद का विशद वर्णन किया गया है। अन्त में उक्त औषध के दो चार परीक्षित योग लिख दिए गए हैं।

इस प्रकार इसमें आज कल की ज्ञात अज्ञात एवम् स्वानुसंधानित देशी विदेशी लगभग २५०० वनस्पति प्रायः सभी खनिज एवम् रासायनिक तथा चिकित्सा कार्य में आने वाली प्रायः सभी प्राणिवर्ग की औषधों का विशद वर्णन और लगभग एक सहस्र औषधियों का संक्षिप्त वर्णन है। इस विचार से यह केवल शब्द-कोष ही नहीं, अपितु एक प्रामाणिक एवं अभूतपूर्व निघण्टु भी है। वर्णन इस प्रकार का है कि इसमें आयुर्वेद विद्यार्थी, पंडित, हकीम तथा डॉक्टर एवम् सर्व साधारण जनता भली प्रकार लाभान्वित हो सकती है। संक्षेप में इसको रखते हुए फिर अन्य किसी भी निघण्टु की आवश्यकता ही नहीं रहती।

वनस्पतियों के स्वयं लिए हुए छाया चित्र भी तय्यार किए जा रहे हैं और इसी क्रम से इस ग्रंथ के अंतिम खंड में प्रकाशित किए जाएँगे। जितनी औषधियों का वर्णन इस ग्रंथ में आया है, प्रायः उन सभी के छाया चित्र उक्त खंड में होंगे।

इसमें प्रायः औषधि के नामकरण हेतु, उनके पर्यायवाची शब्दों के एकीकरण, उनके ऐतिहासिक अनु-संधान तथा स्वरूप परिचय विषयक मत वैभिन्नताके निराकरण एवम् सन्दिग्ध औषधोंके निश्चीकरणके सम्बन्धमें जो हमने गवेषणात्मक एवं अनुसंधान पूर्ण नोट लिखे हैं, उनके अवलोकन करने से हमारे विस्तृत अध्ययन एवं कठिनश्रम तथा अध्यवसाय का आंशिक निदर्शन हो सकेगा। (इतना होते हुए भी किसी विषय में यदि

किसी महानुभाव का हमारे साथ मत भेद हो तो वे उसे हमें सूचित करने की अवश्य दया करें जिसमें उस पर हम लोग पुनः बिचार कर अपना अन्तिम मत स्थिर कर सकें। इस प्रकार गवेषणा-सिद्ध परामर्श एवम् सहयोगिता द्वारा भेषज निर्णय में एक सर्वमान्य विश्वासनीय निर्णय सम्पादित हो सकेगा जिससे आयुर्वेद के पुनरुद्धार में काफ़ी सहायता मिलेगी और वैद्यों एवम् आयुर्वेदीय शास्त्रों के पारस्परिक विरोध सर्वथा के लिए मिट जाएँगे। प्रत्येक प्रांत के वैद्य बन्धुओं से हमारी कर बद्ध सविनय प्रार्थना है कि वे इस विषय में हमारी निष्कपट एवम् द्वेश शून्य भाव से सहायता करें। इसके लिए हम उनके सदैव आभारी रहेंगे। उन विषयों के नाम से ही इसमें स्थान दिया जाएगा।) इसके अतिरिक्त इसमें समग्र आयुर्वेदीय तथा अत्युपयोगी यूनानी योगों का वर्णन है और ब्रिटिश फार्माकोपिया (अंग्रेज़ी सम्मत-योगशास्त्र), ब्रिटिश फार्माकोपिया के परिशिष्ट भाग तथा एक्स्ट्रा फार्माकोपिया की समस्त मिश्रित अमिश्रित औषधों के विस्तृत वर्णन के सिवा इसमें भारत, यूरुप तथा अमरीका के समस्त प्रशस्त एवम् उपयोगी पेटेण्ट औषधों का भी वर्णन है।

३—आयुर्वेद में आए हुए सभी रोगों का यूनानी तथा एलोपैथिक रोगों से मिलान कर उनके ठीक अरबी फ़ारसी तथा अंग्रेज़ी प्रभृति के पर्याय दिए गए हैं। पुनः इसमें प्रणाली त्रय के अनुसार निदान, पूर्वरूप, रूप, उनका अन्य व्याधियों से तुलना एवं भेद, साध्यासाध्यता, शास्त्रीय एवं अनुभूत चिकित्सा, मिश्रित व अमिश्रित औषध, पथ्यापथ्य इत्यादि चिकित्सा विषयक सभी ज्ञातव्य आवश्यक बातों का प्रामाणिक विशद वर्णन है।

इसके अतिरिक्त जिन व्याधियों का वर्णन आयुर्वेद में नहीं है अथवा सूत्र रूप में है, उसका भी सविस्तार वर्णन किया गया है अर्थात् आयुर्वेद में न आए हुए और यूनानी तथा डॉक्टरी ग्रंथों में वर्णित प्रायः सभी आवश्यक रोगों का वर्णन पाठकों के लाभार्थ कर दिया गया है। अस्तु इसके रहते हुए किसी भी युनानी एवं डॉक्टरी चिकित्सा ग्रंथ की आवश्यकता ही नहीं रह जाती और इस विचार से इसे रोग-विज्ञान एवम् चिकित्सा शास्त्र कहना यथार्थ होगा।

इसमें सहस्रों आयुर्वेदीय युनानी तथा डाक्टरी के हर विषय के पारिभाषिक शब्द और समान व्याधियों के पारस्परिक भेदों (लक्षण भेद, अवस्था भेद, स्थान भेद, नामभेद, दोष भेद एवम् समय भेद आदि) की भी व्याख्या की गई है।

उपर्युक्त व्याधि भेद के अतिरिक्त कतिपय रोग के सम्बन्ध में यदि अमुक विद्वानों में मत भेद है तो उसका भी विवेचन किया है। इसी प्रकार जिन व्याधि वा परिभाषा के सम्बन्ध में प्राचीन, अर्वाचीन चिकित्सकों में मत भेद है उसको भी स्पष्ट कर दिया गया है।

अखिल रोगों के आयुर्वेदीय, युनानी तथा डाक्टरी संज्ञाओं एवम् आयुर्वेद विषयक शेष अन्य परिभाषाओं और कतिपय प्रणाली त्रय के सिद्धान्तों का ऐक्य स्थापित करना अत्यावश्यक एवं अत्यंत कठिन कार्य है। जो व्यक्ति चिकित्सा-शास्त्र का अभिज्ञ है, वह इसकी उपयोगिता एवं साथ ही कठिनाइयों का अनुमान करसकता है। हम चिरकाल एवं वर्षोंके कठिन उद्योग एवं अध्यवसाययुक्त अध्ययन व अनुशीलन तथा अनुसंधान के पश्चात् इस कार्य को सुचारु रूप से सम्पादित करपाए हैं। अस्तु कई सहस्र आयुर्वेदीय, युनानी तथा डॉक्टरी परिभाषाओं का परस्पर यथार्थ ऐक्य स्थापित हो गया है। सर्व प्रथम तो विभिन्न व्याधि विषयक संज्ञाओं का ही ऐक्य स्थापन करना दुःसाध्य है। किन्तु हमने प्रत्येक रोग के विभिन्न भेदोपभेद का भी ऐक्य स्थापित कर दिया है।

४—कतिपय नव्य डॉक्टरी या अमरीकीय औषधि एवं परिभाषा के लिए जो नवीन आयुर्वेदीय, अरबी, फ़ारसी तथा उर्दू संज्ञाएँ स्थिर की गई हैं, वे सब फिज़ोलॉजी (शब्द रचना) के नियमों पर अवलम्बित हैं। अस्तु प्रत्येक नवीन संज्ञा की रचना करते हुए मूल संज्ञा का विशेष ध्यान रखा गया है जो समग्र साहित्यिक भाषाओं में प्रचलित है।

जिस प्रकार डॉक्टरी में किसी किसी ओषधि-सत्व का नाम उस उस ओषधि के मूल नाम के सम्बन्ध से रक्खा गया है, उसी प्रकार ओषधि-सत्वों के आयुर्वेदीय तथा तिब्बी संज्ञा-निर्माण में भी उसी खूबी को ध्यान में रख कर किया गया है।

५-विरोधी सिद्धान्त—इस ग्रंथ में प्राचीन चिकित्सा-शास्त्र अर्थात् आयुर्वेदीय तथा युनानी और अर्वाचीन चिकित्सा शास्त्र अर्थात् डाक्टरी के लगभग समग्र विरोधी सिद्धान्तों पर तर्कयुक्त वैज्ञानिक एवं न्यायसंगत मत प्रकट किया गया है और उनको अत्यन्त अनुसन्धानपूर्वक एवं विस्तार से लिखा गया है। आशा है इससे वैद्य, हकीम तथा डाक्टरों के पारस्परिक विरोध का बहुतांश में निराकरण होगा और वे परस्पर एक दूसरे को प्रतिष्ठा और प्रेम भाजन बनेंगे। हमने उन समस्त विरोधी सिद्धान्तों को यथाशक्य अत्यन्त गवेषणा के साथ लिखा है।

६-इतिहास—इसमें ब्रह्मा एवं धन्वन्तरि भगवान् से लेकर आज पर्यन्त प्रायः सभी प्रमुख आयुर्वेदीय, चीनी, बाबिली, मिश्री, युनानी, अरबी और यूरूपीय चिकित्सकों की खोजपूर्ण जीवनी लिखी है।

७-विभिन्न भाषाओं का कैटेलॉग—भिन्न भिन्न भाषा के शब्दों को नागरी लिपि द्वारा शुद्ध रूप में प्रगट करने के लिए एक बृहत् कैटलॉग तैयार किया गया था, किन्तु टाइप के अभाव के कारण उसे यथेष्ट रूप में प्रकाशित न किया जा सका। उसका एक छोटा सा अंश जिसमें तीन भाषा के टाइपों का संक्षिप्त परिचय है, "वर्ण-बोधिनी तालिका" नाम से इस पुस्तक के साथ लगाया गया है।

उपर्युक्त संक्षिप्त परिचय मात्र का अवलोकन कर पाठकों को वर्तमान ग्रंथ की विशालता का अनुभव तो अवश्य हो ही गया होगा। अब प्रश्न होता है कि इतने भावों से परिपूर्ण ऐसे विशद ग्रंथ का "आयुर्वेदीय कोष" जैसा लघु नाम क्यों रक्खा गया?

उत्तर में केवल इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि आयुर्वेद शब्द का जो संकुचित अर्थ आज कल प्रायः लोग लेते हैं, उतने संकुचित अर्थों में उक्त शब्द का प्रयोग किया जाना हमें अभीष्ट नहीं। हम तो इसे उसी व्यापक अर्थ में प्रयुक्त करना उचित समझते हैं, जिसमें हमारे ऋषि पुरुषों एवं आयुर्वेदिक पंडितों ने आज से कई सहस्त्र वर्ष पूर्व किया है। अस्तु, सुश्रुत महाराज इसकी निरुक्ति इस प्रकार लिखते हैं:—

आयुरस्मिन् विद्यते, अनेन वा आयुर्विन्दतीत्यायुर्वेद इति।

अथवा (सु० सू० १ अ०)

आयुर्हिताहितं व्याधेः निदानं शमनं तथा।
विद्यते यत्र विद्वद्भिः स आयुर्वेद उच्यते॥

अथवा

हिताहितं सुखं दुःखमायुस्तस्य हिताहितम्।
मानञ्च तच्च यत्रोक्तमायुर्वेदः स उच्यते॥ च० सू०॥

अब आप ही बतलाएँ कि आयु संरक्षणार्थ एवं स्वास्थ्य सम्पादनार्थ कौन सा ऐसा विषय है-फिर चाहे वह आयुर्वेदीय, युनानी तथा डाक्टरी ही क्यों न हो-जिसका समावेश आयुर्वेद शब्द के अन्तरगत नहीं होता। आयुः संरक्षण एवं प्रकृत-साम्य-सम्पादन के प्रायः सभी व्यापक प्राकृतिक नियमों का समावेश आयुर्वेद के अन्तर्गत हो सकता है। इसी बात को ध्यान में रख कर इसके अंगरेजी नाम (An Encyclopædical Ayurvedic-dictionary) की कल्पना हुई है।

अब पाठकों को यह भली प्रकार ज्ञात हो गया होगा कि यह कितना भाव गर्भित शब्द है। यही कारण है कि अनेक अन्य बड़े आडम्बरपूर्ण शब्दों के होते हुए भी इसीको क्यों पसन्द किया?

इतनी विशेषताओं के होते हुए भी इसमें प्रकाशन सम्बन्धी एवं अन्य बहुतः त्रुटियां भी रह गई हैं, जो हमको स्वयं असह्य हो रही हैं; परंतु वर्तमान परिस्थिति में उनका निवारण करना हमारी शक्तिसे बाहर था।

अस्तु उनके लिए हम सहृदय एवं विज्ञ पाठकों के क्षमा प्रार्थी हैं और आशा है कि वे हमें उनसे सूचित करने की विशेष दया करेंगे, जिसमें आगामी संस्करण एवं खंड में उन्हें सुधार दिया जाए।

अंत में हम पं० विश्वेश्वरदयालु जी वैद्यराज सम्पादक अनुभूत योगमाला के सदैव कृतज्ञ हैं और हृदय से धन्यवाद देते हैं जिन्होंने इस महान् कार्य में हमारे हाथ बटाने में अदम्य उत्साह एवं लोक सेवा का परिचय दिया है। यह आप ही ऐसे देश सेवी एवं महत्वाकांक्षी वीर पुरुष का काम है, जिन्होंने लाभा-लाभ वा सफलता असफलता का अंश मात्र भी विचार न करते हुए निर्भय होकर अपने को कार्यक्षेत्र में डाल दिया। अतः परम पिता परमात्मा से हम आपका दीर्घायु एवं सफलता प्रदान करने के लिए हृदय से प्रार्थना करते हैं।

इसके पश्चात् हम अपने गुरुवर कविकुल भूषण पूज्य पाद श्री पं० महादेव मिश्र (चुनार) को हार्दिक धन्यवाद देते हैं जिनके अनुग्रह से यह कोष सफलता प्राप्त कर सका।

अपने स्नेही मित्र डॉक्टर मुहम्मद शफ़ी से इस कोष के संकलन में हमको काफी सहायता मिली है और समय समय पर उचित परामर्श देकर एवं उत्साह वर्द्धन कर इस महान् कार्य के पूर्ण करने में आपने जो मेरी सहायता की है उसके लिए हम आपके हृदय से कृतज्ञ हैं।

और भी जिन जिन ग्रंथ एवं लेखों से तथा और भी किसी से किसी प्रकार की हमको कुछभी सहायता मिली हो, उसके लिए हम उन उनके लेखक महोदयों के हृदय से कृतज्ञ हैं।

आयुर्वेदीयानुसंधान-भवन रायपुरी, चुनार	बाबूरामजीतसिंहजी वैद्य,
माघ शुक्ल वसन्तपञ्चमी सम्वत् १९९० वि०	बाबूदलजीतसिंहजी वैद्य

आयुर्वेदीय-कोष के सम्बन्ध में कुछ प्रमुख विद्वानों की सम्मतियाँ ।

श्रीश्री गौरकृष्ण शरणम्

सन्माध्वसम्प्रदायाचार्य दार्शनिकसार्वभौम साहित्य दर्शनाद्याचार्य तर्करत्न न्यायरत्न गोस्वामि दामोदर शास्त्री,

अष्टाङ्गाभ्रेऽभ्याजां सनियमकलितादभ्रवस्तुप्रभाव,
प्रोद्बोधानेकचेष्टाप्रवणितहृदयाभिज्ञ शारीरिकाणाम् ।
स्वाग्यदुर्त्तचित्तचुञ्चुर्गगनशरदल व्योमभूमानजुष्टै,
आयुर्वेदीयकोषः प्रमदमकृत नोऽकारपूर्वस्थशब्दैः ।

अर्थ—अपने अपने गुणों के साथ बहुत सी औषधियों के प्रभावों को बतलाने में यथोचित यत्न करनेवाले पण्डित और वैद्यकशास्त्र के अष्टाङ्गों का विशेष परिशीलन करनेवाले वैद्यों की योग्यता को प्रकाशित करने वाले दश हजार ढाई सौ अकारादि शब्दों से युक्त आयुर्वेदीय-कोष ने हमको हर्षान्वित किया ।

इह किलेटावाप्रान्तस्थबरालोकपुरतः प्रकाशितायुर्वेदीयकोष प्रथमखण्डमकारादिकाज्ञातयक्ष्मान्त सार्द्धशतद्वयाधिक दशसहस्रशब्दाढ्यमवलोक्य जिज्ञास्वामयाविजनतासन्तोषावह नामतोऽवधाय विनिर्णीय चागदङ्कार चयसध्रीचीनताम परेषामप्यलङ्कर्मीणतां विनिश्चिन्वन् प्रसाद्यमान मानसोऽदसोऽपरिपूर्णतामनन्तरायां जगदीश्वरमभ्यर्थयमानो विरमति मुधाविस्तरादितिशम् ।

चैत्र शुक्ल तृतीयायां, १९९० वैक्रमाब्दे, काश्याम् ।

अर्थः—वर्तमान समय में इटावा जिले के प्रसिद्ध बरालोकपुर से प्रकाशित आयुर्वेदीय कोष के अकारादि अज्ञातयक्ष्मान्त दश हजार ढाई सौ शब्दों से सुशोभित प्रथम खण्ड को देखकर और यह समझ कर कि इससे जिज्ञासु रोगियों को संतोष होगा, वैद्य समूह को सहायता मिलेगी, एवं औरों के प्रति इसकी उपयोगिता का निश्चय करता हुआ और प्रसन्न मन से जगदीश्वर के निकट उक्त कोष की निर्विघ्न पूर्णता की प्रार्थना करता हुआ वृथा विस्तार से विरत होता हूँ ।

श्री चरकाचार्य काशी हिन्दू विश्वविद्यालयायुर्वेद कालेजाध्यक्ष श्री धर्मदास कविराजः ।

नूनमिटावाप्रान्तीय बरालोकपुर पत्तनीय श्री विश्वेश्वर दयालु शर्ममुद्रापितः श्री मङ्गल-जीतसिंह रामजीतसिंहाभ्यामभिनिर्मित संस्कृताद्यनेक भाषासमलङ्कृतः कोषश्चिकित्सक जनानामपर-मोपकारकोऽवशीवर्तिमन्येयंसम्प्रतिनिरुपमस्संवृत्त इति प्रमाणयति ।

पौष शुक्ल १, गुरौ सं० १९९० ।

व्याकरण साहित्यशास्त्री आयुर्वेदाचार्य भिषगाचार्यभिषग्शिरोमणि विद्यावारिधि श्री सत्यनारायण शास्त्री महोदयस्य सम्मतिः—

कौवेर कोषइव सर्व गिरांद्भृतोयो—
ऽयंत्रसर्सीनि भिषजामुपकारकोवै ॥
श्री रामजीत दलर्जातपदाभि धाम्थाम् ।
सश्वन्मुदा विरचितो ह्युपमा विहीनः ॥ १ ॥
यश्चामरप्रभृति कोपकृतस्समग्रान् ।
सद्भावजुष्ट मदनादिकृतोन जस्रम् ॥
भासास्वकेन परिभाव्यचचा च कास्ति ।
सोऽयंसदा विजयताद्भवतांसुकोषः ॥ २ ॥
वरालोकपुरस्थेन, विश्वेश्वरदयालुना ।
मुद्रापितान्वयं कोषो, भिषजामुपकारकः ॥ ३ ॥
इति प्रमाणं कुरुते, सत्यनारायणाभिधः ।
वाराणस्यामगस्तस्य, पत्तनायश्चिकित्सकः ॥ ४ ॥

पौष शु० १२ गुरौ श्री सं० १६६० ।

——*——

Bhim Chandra Chatterjee,

B. A., B. L., B. Sc., M. I. E. E., M. I. E. (India)

PATIALA PROFESSOR

&

Head of the department of Electrical engineering.

ENGINEERING COLLEGE.

Benares Hindu University.

I have gone through some part of Ayurveda-kosba vol. I. by Babu Ramjit Singh ji Vaidya and Babu Daljit Singh ji Vaidya. It seems to be a very laudable undertaking at this opportune moment. The compilors must have taken great pains for collecting the materials. It will be very useful for the hindi speaking public. I wish the compilors would be more intensive rather than extensive and serve the cause of our country.

Dated Benares, the 14 th Jan. 1934.

Gopinath Kaviraj

principal

GOVERNMENT SANSKRIT COLLEGE,

Benares.

I have glanced through the pages of the so called "Ayurvedic kosha" (Vol. I.). Dictionary of words used in Ayurvedic, Unani and Allopathic systems of medicine, compiled by Vaidyas Ramjita Sinha and Daljita Sinha. From what I have seen of the work it has impressed me as a very valuable and useful production of an encyclopædic character and there is no doubt that the Hindi literature, in fact the general medical literature of India, has been enriched by this publication. The compilors have drawn upon original and standard works,so far as the Ayurvedic section is concerned, and it is hoped that it they keep themselves uptodate in case of the subsequent volumes and have an eye on accuracy and thoroughness they will be rendering a great service to the cause of medical literature and profession in India. The work involves a tremendous amount of laboui and is well worthy of generous patronage from the public. 17 / 1 / 1934

वर्ण क्रम

इस कोष में समस्त भाषा के शब्द देवनागरी वर्णमाला के क्रमानुसार रखे गए हैं। अरबी, फ़ारसी आदि अन्य भाषाओं के एक ही वर्ण के समानोच्चारण वाले कई कई वर्ण यथा हिन्दी के केवल एक "ज" के स्थान में फ़ारसी के जीम, ज़ाल, ज़े, ज़े, ज़ाद, और ज़ो प्रभृति अनेक "ज" के लिए क्रम में कोई भेद स्थिर नहीं किया गया है; वरन् "ज" मान कर ही उन्हें हिन्दी वर्णक्रम में स्थान दिया गया है। शेष अन्य समस्त वर्णों के लिए भी इसी भाँति समझ लेना चाहिए। चूँकि देवनागरी वर्णमाला अन्य किसी भी भाषा की वर्णमाला की अपेक्षा अधिक पूर्ण एवं स्वाभाविक है और उसमें इतनी पर्याप्त ध्वनियों का समावेश है, कि अन्य किसी भी भाषा की ध्वनि को हिन्दी वर्णों द्वारा प्रकट करने में कोई अड़चन उपस्थित नहीं होती। अन्य भाषा में जो विशेष ध्वनियाँ आई हैं वे या तो एक ही ध्वनि के भेदोपभेद मात्र हैं अथवा वे इतनी आवश्यक नहीं और उनका समावेश अपनी मूल ध्वनि में हो सकता है। अतः देवनागरी वर्णक्रम में कोई परिवर्तन करना हमें उचित न जान पड़ा! हाँ! जो एक एक वर्ण के स्थान में कई कई वर्ण आए हैं उन्हें अथवा उनके किसी विशेष उच्चारण को स्पष्ट करने के लिए कुछ चिह्न मान लिए गए हैं। जिसके लिए वर्ण (लिपि तथा उच्चारण) निर्णायक सूची का अवलोकन करिए। वर्णक्रम निम्न है :—

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ

ओ औ अं अः

क ख ग घ ङ। च छ ज झ ञ।

ट ठ ड ढ ण। त थ द ध न।

प फ ब भ म। य र ल व श

ष स ह त्र त्र ज्ञ

संकेत सूची

अ०	अध्याय
अ०	अरबी भाषा
अक० आ०	अक्सीर आज़म
अक० कु०	अक्सीरी कुश्ताजात
अगु० तैल	अगुर्व्वादि तैल
अग्निमां०	अग्निमांद्य
अ० च०, अरो०	अरोचक
अ० ची०	अपची
अज०	अजमेर
अजी०	अजीर्ण
अ० टी० नी०	अमरटीका नीलकंठ
अ० टी० भ०	अमरटीका भरत
अ० टी० भा०	अमरटीका भानुदत्त
अ० टी० म०	अमरटीका मथुरेश
अ० टी० र०	अमरटीका रमानाथ
अ० टी० रा०	अमरटीका रायमुकुट
अ० टी० रामा०	अमरटीका रामाश्रम
अ० टी० सा०	अमरटीका सारसुन्दरी
अ० टी० सुभूति० स्वा०	" सुभूति स्वामी
अ० टी० स्वा० (-मी)	" क्षीर स्वामी
अण्ड०	अण्डमन
अथ०, अथर्व०	अथर्ववेद (अथर्वण)
अ० दर	असृग्दर
अनु०	अनुकरण शब्द
अनु० (-पा०)	अनुपान
अने०	अनेकार्थनाम माला
अने० व०	अनेकार्थ वर्ग
अनं० र०	अनंग रस
अन्द०	अन्दलुसी (Spanish)
अन्नद्र० (व०) शू०	अन्नद्रवशूल
अप०	अपभ्रंश
अप० (-स्मा०)	अपस्मार
अ० पि०	अम्लपित्त
अफ़०	अफ़ग़ानी
अभि० (-न्या०) ज्व०	अभिन्यास ज्वर

अभि० निघ०	अभिनव निघण्टु (भाग १ व २)
अम०	अमरकोष
अमृ० सा०	अमृतसागर
अरुण०, अरु० द०	अरुणदत्त
अर्क०, (रावण)	अर्क प्रकाश (रावणकृत)
अर्क० चि०	अर्क प्रकाश चिकित्सा
अर्कादि०	अर्कादिवर्ग
अर्द्धमा०	अर्द्धमागधी
अर्द्धा० भे० (अर्द्धा०)	अर्द्धावभेद
अल०	अलसक
अल्पा०	अल्पार्थक प्रयोग
अल्फ़० अ०	अल्फ़ाज़ुल् अद्वियह्
अ० वृ०	अन्त्रवृद्धि
अव०	अवध
अव्य०	अव्यय
अ० श०	अष्टांग शरीरम्
अश्म० (-री)	अश्मरी
अष्टां० सं०	अष्टांग संग्रह
अ० हृ०	अष्टांग हृदय
अ० (-अति,-ती) सा०	अतीसार
अत्रि०	अत्रि संहिता
आ०	आरबीय
आप्ते० सं० इं० डि०	आप्ते संस्कृत इंगलिश डिक्शनरी
आ० प्र०	आयुर्वेद प्रकाश
आम० वा०, आ० वा०	आमवात
आमा=तीसा०	आमातीसार
आ० व०, आम्र० व०	आम्रवर्ग
आरो० वि०	आरोग्यविधान
आ० वि०	आयुर्वेदविज्ञान
आसा०	आसामी
आ० सू०	आपस्तम्भ सूत्र
इं० (-न्द्रिय)	इन्द्रिय स्थान
इं०	इंगलिश (आंग्ल, अंग्रेज़ी)

इ० इ०	इस्राकल् इत्तिब्बा
इख़्ति० वा०	इख़्तियारात बादीश्र
इट०	इटैली (रूमी) भाषा
इब०	इबरानीभाषा
इला० श्र०	इलाजुल्श्रमूराज़
इ० हि०	इसरार हिकमत
इं० ड्र० इं०	इण्डिजनस ड्रग्स ऑफ इण्डिया
	(आर० एन० चोपरा एम०, ए०; एम० डी० कृत)
इं० वर्ना०	इण्डियन वर्नाक्युलर
इं० बाज़ा० (भा० बा०)	इण्डियन बाजार
	(भारतीय बाजार)
इं० व्यापा० शा०)	इंद्रियव्यापार शास्त्र
इं० व्या०)	(सम्बन्धी)
इं० मे० प्लां०	इण्डियन मेडिसिनल प्लांट्स
	(कर्नल बी० डी० बसु० कृत)
इं० मे० मे०	इण्डियन मेटीरिया मेडिका
	(डॉ० के० एम० नदकारणी कृत)
इं० हैं० गा०	इण्डियन हैंडबुक ऑफ गार्डेनिङ्ग
उ०	उत्तरखंड, उत्तरतन्त्रम्, उदरम्
उड़ि०	उड़िया
उणा०	उणादि
उत्०	उत्कल
उ० दं०	उपदंश
उदय०	उदयपुर
उद० चन्द०=	उदयचन्द्र दत्त मेटीरिया मेडिका
उदा०, उ० व०	उदावर्त
उदाह०	उदाहरण
उन्मा०	उन्माद
उप०	उपसर्ग
उ० प० भा० (सू०)	उत्तरी पश्चिमी भारत
	(सूबा) (N. W. P.)
उभ०	उभयलिंग
उ० बर्मा०	उत्तरी बर्मा
उर० (उ०)	उर्दू
उ० रस० व०	उपरसवर्ग
उ० स्तं०	उरुस्तम्भ
ए० व०	एक वचन
एकार्थ०	एकार्थवर्ग
ए० को०	एकाक्षर कोष

एन्स० (ह्वि०) मे० मे०	एन्सलीज़ (सर ह्विटला)
	मेटीरिया मेडिका
एलादि०	एलादिवर्ग
श्रो० रो०	श्रोष्ठ रोग
श्रौ० सं०	श्रौषधि-संग्रह (डॉ० वामनगणेश
	देशाई कृत महरठी ग्रंथ)
श्रौ० वि०	श्रौषधि विज्ञान (डॉ० गर्ग कृत)
श्रं०	श्रँगरेज़ी भाषा
क०	कर्णाट, कर्णाटक
कच्छ०	कच्छी
कछ०	कछार
कटिवा०	कटिवात
कण्ठ० मु० रो०	कण्ठगत मुख रोग
कना०	कनाड़ी
कमा० (कु--)	क(कु)मायूँ
कर०	करनाटकी
क़रा० का०	क़राबादीन कादरी
क़रा० शि०	क़राबादीन शिफ़ाई
क़रा० सि०	क़राबादीन सिकन्दरी
कर्ण० रो०	कर्ण रोग
कल्प०	कल्पस्थान
क० व०	कर्पूर वर्ग
कां०	काण्ड
काङ्काय० गु०	काङ्कायन गुटी
काठिया०	काठियावाड़
का० पुराण	कालिका पुराण
काम०	कामला
का० र०	काम रत्नम्
काश्०	काशमीरी
काश० रु० की०	काशफ़ुर्रमूज़ कीमिया
का० सू०	कामसूत्र (वात्सायन)
किता० की०	किताबुल् कीमिया
कों०	कोंकड़
क्रि०	क्रिया
क्रि० अ०	क्रिया अकर्मक
क्रि० प्र०	क्रिया प्रयोग
क्रि० वि०	क्रिया विशेषण
क्रि० स०	क्रिया सकर्मक
क्ली०	क्लीव (नपुंसक) लिङ्ग

कु० (कुम्भ०) का०	कुम्भ कामला
कु० टी०, कुसामा०	कुसुमावली टीका
कु० नफ़ी०	कुल्लियात नफ़ीसी
कुमा० तं०	कुमारतन्त्र
कुश्ता० र०	कुश्ताजात रहीमी
कुर्ग० (कु०)	कुर्ग
कुश्ता० फ़ी०	कुश्ताजात फ़ीरोज़ी
कौ० अ०	कौटिल्य अर्थशास्त्र
कौ० भृ०	कौमार भृत्य
कों०	कोंकण देश की भाषा (कोंकड़ी)
क्व०	क्वचित् अर्थात् इसका प्रयोग बहुत कम देखने में आता है।
ख०	खसिया
खुला० न०	ख़ुलासतुन्नफ़ाइस
खं०	खंड
ग० गं०	गलगंड
ग०	गण
गढ़०	गढ़वाल
गज० वै०	गज वैद्यक
ग० नि०	गद निग्रह
ग० मा०	गरुड माला
गा०	गारो
गि० लु०	ग़ियासुल्लुग़ात (हिन्दुस्तानी फ़ारसी अरबी लोग़ात)
गु०	गुटी (-ड़ी)
गुदभ्रं०	गुदभ्रंश
गुर्ज्ज०, गु० (गुज०)	गुर्जरी, गुजराती
गु० व०	गुडूच्यादि वर्ग
गो०	गोआ
गोंड़०	गोंडल, गोंडाली
गंगा० परि०	गंगाधर परिभाषा
ग्र०	ग्रह
ग्रह०	ग्रहणी
ग्री० (यु०)	ग्रीक (युनानी)
घो० मे० मे०	घोषेज मेटीरिया मेडिका
च०	चनाब
चक्र० (च) द०	चक्रदत्त (चिकित्सा), चक्रपाणि दत्त द्रव्यगुण
च० द० (सं०)	चक्रपाणिदत्त कृत संग्रह

चन्द० तै०	चन्दनादि तैल
च० वि०	चरक विमान स्थान
च० सं०	चरक संहिता
चातु० ज्व०	चातुर्थक ज्वर
चाँ०	चाँदा
चि०	चिकित्सा स्थान
चि० क०	चिकित्सा कलिका
चि० क्र० क० (-वल्ली)	चिकित्सा क्रम कल्पवल्ली
चिट०	चिटगाँव
चि० सा०	चिकित्सासारः
ची०	चीनी
चू०	चूर्ण
छे० शा०	छेदनशास्त्र
छो०	छोटा
छो० ना०	छोटा नागपुर
ज़खी० ख़ा०	ज़ख़ीरहे ख़ारिज़मशाही
जटा०	जटाधर
जन्तु० शा०	जन्तु शास्त्र
जय० द०	जयदत्त
जर०	जरमनी
जय०	जयपुर
जा०	जावा
जापा०	जापान
जावा०	जावा देश की भाषा
जं०	जंगली
ज्यो०	ज्योतिष
ज्व०	ज्वर
ज्वराति०	ज्वरातिसार
झेल०	झेलम
ट्रां इं०	ट्रांस इण्डस
टी०	टीका
ड०	डल्हण
डल्ल०	डल्लन मिश्र
डि० मे०	ए डिक्शनरी ऑफ़ मेडिसिन रिचार्ड क्वैन एम० डी०, एफ़० आर० एस० कृत।
डिं०	डिंगल भाषा
डे०	डेकन
डू०	डॉक्टर डूरी

त० न०	तर्जुमा नफ़ीसी फ़ने स्.ानी इल्मुल् अद्वियह्
तश० क०	तश्रीह् कबीर
ता० (तामि०)	तामिल
तालु० मु० रो०	तालुगतमुखरोग
ता० श०	तालीफ़ शरीफ़ी
ति० अ०	तिब्बे अकबरी
ति० की०	तिब्बे कीमियाई
तिब्ब०	तिब्बत
ति० फा०	तिब्बी फार्माकोपिया (१ व २ भा०)
तिर०	तिरहुत
तु०	तुलु
तुर०	तुरकी भाषा
तृ०	तृष्णा
ते०(तेल०)	तैलङ्ग, तेलगु
तै०	तैल
॥० तो०	अर्द्ध तोला
तो०	तोला (तोलक)
तोड़०	तोड़रानन्द
तो० मो०	तोह् फ़तुल मोमीन
त्रि०	त्रिलिंग
त्रिका०	त्रिकाण्ड शेष
त्रिश०	त्रिशती
था० डि०	थाना डिस्ट्रिक्ट
द०	दखिनी
द० ब०	दखिनी बर्मा
द० भा०	दखिन भारत
दन्त० रो०	दन्तरोग
द० मु० रो०	दन्तगत मुखरोग
द० व०	दधिवर्ग
दश०	दशक
दा० हिं०	दाक्षिणात्य हिन्दी
दु० व०	दुग्धवर्ग
दुर्गा० मे० मे०	दुर्गादासकर बङ्गला मेटीरिया मेडिका
दे०	देखो
देश०	देशज
द्रव्याभि०	द्रव्याभिधान

द्रावि०	द्राविणी
द्वि० (-रूप०)	द्विरूपकोष
ध०	धन्वन्तरि
ध० निघ०	धन्वन्तरि निघण्टु
धर०	धरणिः
धा० (-न्य) व०	धान्यवर्ग
धा० वि० प्र०	धातुविद्या प्रकाश
ध्व० भं०	ध्वजभंग
न० ज०	नरपतिजयचर्या
नाना०	नानार्थ
ना० व्र०	नाड़ीव्रण
ना० मु०	नासिरुल् मुआलजीन
ना० रो०	नासारोग
ना० वि०	नाड़ी विज्ञान
ना० सं०	नावनीतक संहिता
नि०	निदान स्थान
निदा०	निदान
नि० र०	निघण्टु रत्नाकरः
ने० दृ० रो०	नेत्र दृष्टिगत रोग
ने० रो०	नेत्ररोग
ने० व० रो०	नेत्र वर्त्मगत रोग
ने० शु० रो०	नेत्र शुक्रगत रोग
ने० सन्धि० रो०	नेत्र संधिगत रोग
नेपा०	नेपाल
न्या० वै०	न्याय वैद्यक
पं०	पञ्जाब (बी) भाषा, (गुरुमुखी)
प०	पल; परिच्छेद
पट०	पटना
प० नि० ना०	पर्याय-निर्णायक नोट
प० प०	पथ्यापथ्य
प० प्र०	परिभाषा प्रदीप
प० म०	परमद
पर्या०	पर्याय
पहा०	पहाड़ी
पश्तुः, पश्तु	अफ़ग़ानी भाषा
पा०	पाली भाषा
पा० अजी०	पानाजीर्ण
पा० व०	पाकावली

पि० ज्व०	पित्तज्वर
पि० व०	पिप्पल्यादिवर्ग
पी० वी० एम०	प्रैक्टिशनर्स वेडमीकम्
पुं०	पुंल्लिंग
पुर्त्त०	पुर्तगालीभाषा
पु० व०	पुष्पवर्ग
पु० हिं०	पुरानी हिन्दी
पू०	पूर्व खंड, पूर्व भाग
पू० भा०	पूर्वीय भारत
पू० त०	पूर्वीय तराई
पू० हिं०	पूर्वी हिन्दी
पो० बं०	पोरबन्दर
प्र०	प्रत्येक, प्रयोग, प्रमारणी
प्रत्य०	प्रत्यय
प्रमे० (हः)	प्रमेह
प्रयोगरत्न०	प्रयोगरत्नाकर
प्रयोगा०	प्रयोगामृत
प्र० शा०	प्रत्यक्ष शारीरम् (म० म० क० गणनाथसेन विरचित)
प्रसू० तं०	प्रसूति तंत्र
प्रसू० शा०	प्रसूति शास्त्र
प्रह०	प्रहर
प्रा०	प्राकृत भाषा
प्ले०	प्लेग
फ० व०	फलवर्ग
फ़ा०	फ़ारसी भाषा
फा० इं०	फार्माकोग्राफिया इंडिका (डॉ० वि० डाइमॉक विरचित) १, २, ३, भा०
फ़ार्बी०	फ़ॉर्बीज़ हिंदी अँगरेजी कोष
फ़िo	फ़िरंगी
फ्रें० (फ्रां० या फ़०)	फ्रेंन्च (फ़रासीसी भाषा)
ब० (बहु) व०	बहुवचन
ब०, व० (बर०)	बरमा (बरमी) भाषा
बम्ब०	बम्बई
बरब०	बरबरी
ब० ज०	बह्रूल् जवाहिर (अरबी वैद्यक कोष)
बं० से० सं०	बंगसेन संहिता
बं० क०	बन्ध्या कल्पद्रुम
बं०, बङ्ग०	बँगलाभाषा या बंगाल (-ली)
बुं० खं०	बुंदेलखंड की बोली
बु० मु०	बुस्तानुल् मुफ़रदात
बु० क़ा०	बुर्हानेक़ातीअ़
बृ० सं०	बृहत्संहिता (वराह मिहिर संहिता)
बृ० यो० त०	बृहद्योग तरंगिणी
बेरा०, बे०	बेरार, बेलूची
बोखा०	बोखारा
बुन्देल०	बुंदेलखंड
ब्रिटि० फा० (बी० पी०)	ब्रिटिश फार्माकोपिया
ब्या० क०	ब्याज़ कबीर (१, २, ३ भाग)
भग०	भगन्दर
भ० द्विरूप-को०	भरतद्विरूप कोष
भ० रभस०	भरतधृत रभस
भल्ला० गुड़	भल्लातक गुड़
भा०	भाग, भारत, भावप्रकाश
भा० पू०	भावप्रकाश पूर्व भाग
भा० प्र०	भावप्रकाश
भा० भै० र०	भारत भैषज्य रत्नाकर
भा० म०	भावप्रकाश मध्यभाग
भा० र० शा०	भारतीय रसायन शास्त्र (डॉ० वामन गणेश देशाईकृत महरठी ग्रंथ)
भू० उन्माद०	भूतोन्माद
भूटा०	भूटानी
भूरि० प्र०	भूरिप्रयोग
भे० सं०	भेल संहिता
भैष० (भै० र०)	भैषज्य रत्नावली
भौ० वि०	भौतिक विज्ञान (सम्बन्धी)
म०, मह०	महाराष्ट्र, मोडी, (महरठी)
म० अ०	मख्ज़नुल्अद्वियह् (हकीम मीरमुहम्मद हुसेन विरचित)
म० अक़०	मख्ज़नुल् अक्सीर
म० अ० डॉ०	मख्ज़नुल्अद्विया डॉक्टरी
म० खं०	मध्य खण्ड
म० ज०	मख्ज़नुल् जवाहर या तिब्बी व डॉक्टरी लुग़ात
मद्र०	मद्रास

मदन० निघ० — मदनपाल निघण्टु
मधु० — मधुमती टीका
मधुमे० (म० मे०) — मधुमेह
मनी० — मनीपूर
म० प्र० — मध्यप्रदेश
म० मु० — मख़्ज़नुल् मुफ़र्दात
मय० — मयसूर
मरा० — मराठी
मल० — मलयाली
मला० — (मलायम भाषा) मलायीज़
मसू० — मसूरिका
मह० — महराठी
महा० बा० — महाबालेश्वर
भा० — भाषा
मा० अक्० — मादनुल् अक्सीर
मा० नि० — माधव निदान
मान० श० र० — मानव शरीर रहस्य (१ व २ भाग)
माला० — मालाबार
मि० — मिश्री भाषा
मि० ख़० — मिफ़्ताहुल् ख़ज़ाइन दर बयान अक्सीर व रसायन (हकीम करीमबख़्शकृत)
मिश्र० — मिश्रकाध्याय
मुग० — मुगली
मु० — मुर
मु० अ० — मुहीत अअ्ज़म
मु० रो० — मुखरोग
मुङ्गे० — मुङ्गेर
मुनाफा० क० — मुनाफ़ा कबीर
मुन्त० अ० — मुन्तख़्बुल अद्वियह्
मुन्त० लो० — मुन्तख़्बुल लोग़ात
मुफ़० ति० — मुफ़र्दात् दर आलम तिब्ब
मुफ़० मो० — मुफ़र्दात् मोमीन
मुफ़० सिकं० — मुफ़र्दात् सिकन्दरी
मुहा० — मुहाविरे
मू० कृ० — मूत्रकृच्छ्र
मू० घा० — मूत्राघात
मू० र० — मूत्ररक्त
मे० — मेची
मे० मे० — मेटीरिया मेडिका (डॉ मोहीदीन शरीफ़ कृत)
मेदि० — मेदिनी
मेमो० — मेमोरैण्डम ओङ्ग प्राइसेज़ एण्ड अदर पार्टीक्युलर्स ऑफ़ इण्डियन एकोनोमिक्स।
मेवा० — मेवाड़
यम० — यमनी (पू०)
यु०, यू० — यूनानी भाषा
यो० र०, यो० — योग रत्नाकर
यो० चि० — योगचिन्तामणि
यो० तर० — योगतरंगिणी
यो० र० — योगरत्नाकर
यौ० — यौगिक तथा दो वा अधिक शब्दों के पद
यो० (नि०) व्या० रो० — योनि व्यापत्
र० — रक्तिका
र० आ० — रसार्णवः
रक्ताति० — रक्तातिसार
र० खं० — रसायन खण्डम्
र० चं० — रस चण्डांशुः
र० चिं० — रसेन्द्र चिन्तामणिः (ढुण्ढुकनाथ विरचितः)
र० त० — रसतरंगिणी
रत्ना० — रत्नावली
र० पि० — रक्तपित्त
र० प्र० सु० — रसप्रकाश सुधाकरः
र० मं०, रस० मं० — रसमञ्जरी
र० मा० — रत्नमाला
र० मा० सं० (-ग्रह) — रत्नमाला संग्रह
र० र० — रसरत्नाकरः
र० (स०) र० स० — रसरत्न समुच्चयः
र० (रसा०) शा० — रसायनशास्त्र (Chemistry)
रस० कौ० — रसकौमुदी
रस० प्र० — रसप्रदीप
रस० रत्न० — रसरत्नाकर
रस० चिं० — रसचिन्तामणिः
र० सा० — रसायनसारः
रसायना० — रसायनाधिकार
र० सा० सं० — रसेन्द्रसार संग्रह
र० सु० — रसराजसुन्दरः
रसे० चिन्ता० — रसेन्द्र चिन्तामणि

र० यो० सा०	रसयोगसागर (श्रीहरिप्रपन्नजीकृत)
रसें० चिं०, रसेन्द्र चिं०	रसेन्द्रचिन्तामणि
र० सं०	रसेन्द्रसार संग्रह (गोपालकृष्णविरचितः)
र० सं० क०	रससंकेत कलिका
र० सा०	रससारः
र० हृ०	रसहृदयतन्त्रम्
रा०	रावी
राज०	राजवल्लभ
राजपु०	राजपुताना
राज० य०	राजयक्ष्मा
रा० तरं०	राजतरंगिणी
रा० निघ०	राज निघण्टु
रा० मा०	राजमार्तण्डः (श्रीभोजमहाराज विरचितः)
रिचार्ड०	रिचार्डसन्स फ़ारसी अरबी अंग्रेज़ी कोष
रिसा० र० इ०	रिसाला रफ़ीकुल् इतिब्बा
रिसा० हिं०	रिसाला हिकमत
रुमू० इ०	रुमू जुल् इतिब्बा
रू०	रूमी
रूसी०	रूसी
रो०	रोग
लिण्ड०	लिण्डलेज़ (डॉ० एफ़) 'वेजिटिबल किङ्गडम्'
लु० कि०	लुग़ात किशोरी (फ़ारसी कोष)
लु० अ०	लुग़ातुल् अद्वियह्
लु० क०	लुग़ाते कबीर
ले०, लेटि०	लेटिन (Latin) भाषा
लेद०	लेद्क
लेप०	लेपचा
व०	वर्ग
वटा० व०	वटादि वर्ग
वन० द०	वनौषधि दर्पण (राजवैद्य श्री विरजाचरण गुप्त काव्यतीर्थ कविभूषण कृत बंगला पुस्तक ।)
बम०, बम्ब०	बम्बई
वर्ना०	वर्नाक्युलर
व० वि०	वनस्पति-विज्ञान (Botany)
वा०	वाग्भट्ट
वाजी० क०	वाजीकरण
वा० ज्व०	वातज्वर
वा० पि० ज्व०	वात पित्त ज्वर
वा० र० (रक्त)	वातरक्त
वा० व्या०	वातव्याधि
वि०	विशेष (विशेषण)
वि० वि०	विकृतिविज्ञान (व्याधिमूल-विज्ञान)
वि०, विमा०	विमान स्थान
वि०, विश्व०	विश्व प्रकाश कोष
विज० र०, विर०	विजय रक्षित (व्याख्या मधुकोष)
वि० ज्वर०	विषमज्वर
विदग्धाजी०	विदग्धाजीर्ण
विद्र०	विद्रधि
विल०	विलम्बिका
विल० डा० (डॉ)	विलियम डाइमॉक (डीमक)
विष० तं०	विष तन्त्र
विज्ञा० प्र०	विज्ञान प्रवेशिका
विसू०	विसूचिका
वृ० चि०	वृद्धि चिकित्सा
वृ० म०	वृन्दमाधवः (वृन्दनिर्मितः)
वृ० र० रा० सु०	वृहत् रसराज सुन्दर
वृह० सु०	वृहत्सुश्रुतम्
वृ० नि० र०	वृहन्निघण्टु रत्नाकर '७-८ भाग'
वै० क०	वैद्यकल्पद्रुमः (रघुनाथप्रसाद संगृहीतः)
वै० चन्द्रिका	वैद्यक चन्द्रिका
वै० जी०	वैद्यजीवनम् (लोलिम्बराज संगृहीतम्)
वै० निघ०	वैद्यक निघण्टु
वै० मृ०	वैद्यामृतम् (मोरेश्वर विरचितम्)
वै० र०	वैद्यरहस्यम् (विद्यापति संगृहीतम्)
वै० वि०	वैद्यविनोद
वै० श०	वैद्यक-शब्द सिन्धु
वै० सं०	वैद्यक संग्रह
व्यव० आ०	व्यवहार आयुर्वेद
व्या०	व्याकरण
वं० से०	वंगसेनः (वंगसेन संगृहीतः)
व्य०	अव्यय

व्याक०	व्याकरण
व्र [ण] शो०	व्रण शोधन
श०	शराव
अ० श०	अर्द्ध शराव
श० च०	शब्द चन्द्रिका
श० चि०	शब्द चिन्तामणि
शब्द कल्प०	शब्द कल्पद्रुम
श० मा०	शब्दमाला
श० र०	शब्द रत्नावली
श० शा०	शल्य शास्त्रीय
श० अ०	शरह् असबाब
श० त० वि०	शरीरतत्व–विज्ञान
शा०	शारीर स्थान
शा० ध० (शाङ्गं०)	शाङ्गंधर
शा० नि० भू०	शालिग्राम निघण्टु भूषण
शा० व०	शाकवर्ग
शा व्र०	शारीर व्रण
शा० सं०	शाङ्गंधर संहिता (शाङ्गंधर विरचिता)
शि० रो०	शिरोरोग
शिरो० वि०	शिरोविरेचनम्
शी० पि०	शीतपित्त
शु०	शुद्ध
शू० दो०	शूकदोष
शे०	शेष
श्ली०	श्लीपद
श्लो०	श्लोक
स०	सकर्मक
सत०	सतलज
स० फा० इं०	सप्लिमेण्ट टु दी फार्माकोपिया ऑफ़ इंडिया (डॉ० मोहीद्दीन शरीफ़ कृत)
स० व्र०	सद्यो व्रण
सं०	संस्कृत
संग्र०	संग्रह
सं० ग्रहणी	संग्रह ग्रहणी
संता०	संताल
संयो० क्रि०	(संयोजक अव्यय,) संयोज्य क्रिया
स०(सन्निपा०)	सन्निपात
सन्या० ज्व० चि०	सन्यास ज्वर चिकित्सा
सं० प्रां०	संयुक्त प्रांत
सर्व० मु० रो०	सर्वगत मुखरोग
सर्व०	सर्वनाम
सा०	साधारण, सान्निपातिक
सा० कौ०	सारकौमुदी
सा० सु०	सार सुन्दरी
सि०	सिलोन (लंका)
सिक्कि०	सिक्किम
सिउ०	सिउनी
सि० भे० म०	सिद्धभेषज मणिमाला (श्रीकृष्णराम गुम्फिता)
सिम०	सिमला
सिलह०	सिलहट
सि० यो०	सिद्ध योग
सिं०	सिंध
सिंगा०	सिंगाली
सिं० भू०	सिंह भूमि
सिरि०	सिरिया (शामी)
सि० स्था०	सिद्धिस्थान
सुं० ब०	सुन्दरबन
सु०	सुश्रुत
सु० टी० ड०	सुश्रुत टीका डल्वण
सु० नि०	सुश्रुत निदान स्थान
सु० मि०	सुश्रुत मिश्रकाध्याय
सुर०	सुरयानी (सीरिया या शामी)
सु० सं०	सुश्रुत संहिता (महर्षि सुश्रुत विरचिता)
सू०	सूत्रस्थान
सूति०	सूतिका
सूर्य्यसि०	सूर्य्यसिद्धांत
स्त०	स्तवक
स्त्रि०	स्त्रियों द्वारा प्रयुक्त
स्त्री०	स्त्री लिंग
स्था०	स्थान
स्पे०	स्पेनी भाषा
स्व० भे० (द)	स्वरभेद
ह०	हज़ारा
हजा०	हजाजी

हला०	हलायुध
हली०	हलीमक
ह० व०	हरीतकी वर्ग
ह० श० र०	हमारे शरीर की रचना १, २ भाग (डॉ० त्रिलोकीनाथ वर्मा कृत)
हा०	हारीत
हा० अत्रि०	हारीतोत्तरे अत्रि
हारा०	हारावलि (वली)
हा० सं०	हारीत संहिता
हिमा०	हिमालय
हिं०	हिन्दी भाषा
हिं० बा०	हिन्दू बाजार
हिं० श० सा०	हिन्दी-शब्दसागर
हि० श्वा०	हिक्का श्वास
हरीत० निघं०	हरीतक्यादि निघंटु
ह़ु० क़ा०	ह़ुम्मियात क़ानून
हृद्रो०	हृद्रोग
हे० च०	हेमचन्द्र
हेम०	हेमाद्रिः(तत्कृत टीका)
हि० मे० मे०	सर विलियम् ह्विटला मेटीरिया मेडिका
क्षार०	क्षारपाणि
wil.	H. H wilson

नोट—ज्ञात हो कि इस कोष के लिखने में जिन ग्रन्थों से सहायता ली गई है उन सब का समावेश उपर्युक्त सूची में नहीं हो पाया है ।

Explanation of the Initials and Names Attached to the Botanical names and Synonymes.

ACH. or ACHAR.—E. Acharius, author of Lichenographia Universalis.

ADANS.—M. Adanson, author of Histoire naturella du senegal, etc.

AIT. or AITON.—W., author of Hortus Kewensis, &c.

BALFOUR—Dr. J. H., author of the Class Book of Botany, &c.

BENTH.—M. Bentham, author of Labiatorum genera et species, and Schorophularineæ Indicæ, &c.

BERK.—Berkeley, a Botanist or Naturalist.

BL. or BLUM.—C. L. Blume, author of Flora Javanensis, Etc.

BR. or R. BR.—R. Brown, author of many Botanical works.

BURM.—N. L. Burmann, author of a Flora Indica.

CAV.—A. J. Cavanilles, author of Icones et descriptiones plantarum. Etc.

CHOIS. or CHOISY—A. D. Choisy, a Swiss Botanist who elaborated several of the Natural Orders for De Candolle's Prodromus.

COLEBR.—H.T. Colebrooke, author of several Memoirs in the Linnean Society's Transactions, Etc.

COLLADON—Author of Histoire des Cassiæ.

CORR.—J. Correa de serra, author of some botanical papers.

DALZ.—N.A. Dalzel, one of the authors of Bombay Flora.

D. C.—A. P. De Candolle, author of numerous botanical works.

DEC.—De Candolle, Fil. (Son of De Candolle).

DELILE.—A. R., author of Floræ de Ægyptiaceæ Illustratis, Etc.

DESV.—N. A. Desvanx, author of some botanical papers and editor of the 'Journal de Botanique'

DON.—D., author of the Prodromus Floræ Nepalensis, Etc.

DUCH.—A. P. Duchesne, author of Histoire Naturelle des Fraisiers, Etc.

DUNAL.—M. F., author of Monographie de la famille des anona cees, Etc.

ENDL.—S. Endlicher, author of Genera plantarum secundum ordines naturales dispositæ, Etc.

FABR.—P. C. Fabricus, author of Enumeratio Methodica Plantarum Horti Medici Helmstadiensis, &c.

FALC. or FALCONER.—Dr. H., author of some botanical papers.

FORSK.—P. Forskaol, author of Flora Ægyptico-Arabica, Etc.

FORST.—Forster, author of a Flora, Etc.

GŒRTN.—J. Gœrtner, author of 'De Fructebus et Seminibus.'

G. DON.—Editor of a new Edition of Miller's Gardner's Dictionary.

GREVILLE.—Dr. Greville.

GRIS.—G. Grisley, author of Viridarium lusitanicum, Etc.

HAM.—Dr. F. Hamiiton (formerly Buchanan), author of a 'Journey to Mysore, and some botanical papers.

HAW.—A. H. Haworth, author of Synopsis Plantarum Succulentarum.

H. B. et K.—Humboldt, Bonpland, and Kunth, authors of Nova genera et species, Etc.

HERBERT.—H. W. Herbert, author of 'Herbert's Amarillideæ' Etc.

H. et T.—Drs. J.D. Hooker and T. Thompson, author of a Flora Indica, Etc.

HEYN. or HEYNE—B. Heyne, a Botanist or Naturalist.

HOOK. or HOOKEr—Dr. W. J. Hooker, author of Botånical Miscellany, and of his (Hooker's) Journal of Botany.

JACK—Dr. W., author of some papers on Penang plants, Etc.

JUSS.—Bernard de Jussieu, author of Genera Plantarum, Etc.

KOEN., KON. or KON.—J.G. Kœnig, a Danish Botanist.

KTH. or KUNTH—A, Prussian Botanist.

LABILL.—J. J. Labillardiere, author of Icones Plantarum Syriæ rariorum decades.

LAM.—J. B. Lamarck, editor of the botanical portion of Encyclopedia Methodic.

LEHM.—J. G. C. Lehman, author of Plantae familia asperipoliarum nuciferæ, Etc.

LESCH.—Leschenault de la Tour, a Director of the botanical garden at Pondicherry.

LINDL. or LINDLFY—Dr. J., author of the 'Vegetable Kingdom', Etc.

LINK—H. F., author of Philosophiæ botanicæ novæ prodromus, Etc.

LINN.—Carl von Linnæus, the founder of Botanical Science.

MATON.—Dr. W. E. Maton.

MEISN. or MEISSNER—Leon Fred. Meissner, author of some botanical papers.

MIERS—J. Miers, author of a work.

MIQ. or MIQUEL.—F. A. W., a Botanist.

MILL.—P. Millers, author of tue Gardener's Dictionary.

MOEN.—C. Mœnch, author of a few botanical works.

MULL. or MULL.—Otto Fred. Muller, author of some botanical works.

NEES—G. G. Nees von Esenbeck, author of several botanical works.

OLIVER.—G. A., author of a botanical work.

PAVON—J., author of a botanical work.

PELL.—Pelletier, author of some botanical papers.

PERS.—C. H. Persoon, author of Synopsis plantarum seu enchridium botanicum, Etc.

PLANCH.—A. Botanist.

POHL— J. J. author of 'Brazilian plants', Etc.

RETZ.—A. J. Retzius, author of Fasciculus Observationum Botanicarum, Etc.

RISSO—A.,author of Histoire naturelle des Oranger.

RŒM. or Rom. et schult.—J. J. Rœmer, and J. A. Schultes, authors of Linnœi systema vegetabilium, Etc.

ROSC. or Roscœ—W. Roscœ, author of 'Monandrian plants of the Order Scitamineæ.'

ROTH—A. W., author of Novæ Plantarum, and several other works.

ROTT.—Dr. Rottler, an Indian Botanist.

ROXB.—Dr. W. Roxburgh, author of Flora Indica, and Plants of the Coromandel Coast, Etc.

ROY. or ROYLE—Dr. J. F. Royle, author of the Illustrations of the Botany of the Himalyan Mountains, and of a work on the fibrous plants of India.

SALISB.—R. A. salisbury, author of the Prodromus Londinersis, Etc.

SAV. OR SAVI—C., author of several botanical works.

SCHOTT—H., author of a few botanical works.

SCHRAD.—H. A. Schrader, author of many botanical works.

SCH. OR SCHULT.—C. F. Schultz author of Prodromus Floræ Stadgardiensis, Etc.

SEB.—A. Seba, author of a book.

SER.—N. C. Seringe, who has elaborated several difficult Tribes in De Candolle' s Prodromus.

SM. OR SMITH. Sir J. E. Smith, author of several botanical works.

SPR. OR SPRENGEL—K. Sprengel, author of systema Vegetabilium, and many other botanical works.

STOCKS—author of some botanical papers in Hooker's Journal of Botany.

STOK.—J. Stokes, author of Botanical Materia Medica.

SWT.—R. Sweet, a Botanist.

SWZ. OR SWARTZ—O. Swartz, author of Prodromus Descriptionum Vegetabilium Indicæ Orientalis, Etc.

THUNB.—C. P. Thunberg, author of Flora Japonica and many other works.

TOURN.—J. P. Tournefornt, author of Elements de Botanique, Etc.

VAHL.—M., author of Symbolæ botanicæ, Etc.

VENT or VENTN.—E. P. Ventenat, author of Principes de Botanique, Etc.

VILL. or VILLARS—D., author of Histoire des Plantes du Dauphine, Etc .

W. et A.—Dr. R. Wright and Mr. G. A. Walker Arnott, authors of the Prodromus Floræ Peninsulæ Indiæ Orientalis.

WALL.—Dr. N. wallich, author of plantæ Asiaticæ rariores, and Tentamen Floræ Nepalensis Illustratæ.

WEDD.—Weddell, author of Histoire naturelle des quinquinas.

W. ELLIOT—Sir, author of Flora Andhrica.

WIGHT—Dr. R., author of Icones Plantarum Indiæ Orientalis, Illustrations of Indian Botany, and Contributions to Indian Botany, Etc.

WILLD.—C. L. Wildenow, author of Species Plantarum, and several other works.

वर्ण-विवरण

अर्थात्

वर्णबोधिनी-तालिका

देवनागरी (हिंदी) वर्ण	फ़ारसी, अरबी तथा उर्दू के वर्ण	अंगरेज़ी (रोमन) वर्ण	देवनागरी (हिंदी) वर्ण	फ़ारसी, अरबी तथा उर्दू के वर्ण	अंगरेज़ी (रोमन) वर्ण
अ	ا	a	क	ک	k
आ	آ	á	क़	ق	q
इ	اِ	i	ख	کھ	kh
ई	اي	í	ख़	خ	kḥ
उ	اُ	u	ग	گ	g
ऊ	اُو	ú	ग़	غ	gḥ
ऋ		ri	घ	گھ	gh
ॠ		rí	ङ		ng, n̤*
ऌ		lri	च	چ	ch
ॡ		lrí	छ	چھ	chh
ए	اے	e	ज	ج	j
ऐ	آے	ai	ज़	ز	z
ओ	اُو	o	ज़	ذ	z̤*
औ	آو	ou	ज़	ژ	zh
अं		aha }	ज़	ض	ẓ*
अः		ah }	ज़	ظ	z̤*
ँ	ں	ṅ	झ	جھ	jh

ञ		n̤*	म	م	m
ट	ٹ	ṭ	य	ي	y
ठ	ٹھ	ṭh	र	ر	r
ड	ڈ	ḍ	ल	ل	l
ड़	ڑ	ṛ*	व	و	v, w
ढ	ڈھ	ḍh	श		ṣh
ढ़	ڑھ	ṛh*	ष	ش	sh
ण		ṇ	स	س	s
त	ت	t	स़	ص	ṣ
त़	ط	t̤*	स़़	ث	s̤*
थ	تھ	th	ह	ه	h
द	د	d	ह़	ح	ḥ
ध	دھ	dh	क्ष		ksh
न	ن	n	त्र		tr
प	پ	p	ज्ञ		jn̤y*
फ	پھ	ph	अ़	ع	ā
फ़	ف	f	इ़	عِ	āi
ब	ب	b	उ़	عُ	āu
भ	بھ	bh	ए़	عي	āe

N. B.—Unable to receive the marked English letters in time, the letters marked with an asterisk (*) in the above catalogue have been used without marks all through the book. Therefore the readersare requested to read them according to the corresponding Hindi letters.

श्री धन्वन्तरये नमः

आयुर्वेदीय कोष

अ

अ a-संस्कृत और हिंदी वर्णमाला का पहिला अक्षर। इसका उच्चारण कंठ से होता है इससे यह कंठ्य वर्ण कहलाता है। व्यञ्जनों का उच्चारण इस अक्षर की सहायता के बिना अलग नहीं हो सकता, इसी से वर्णमाला में क, ख, ग आदि वर्ण अकार संयुक्त लिखे और बोले जाते हैं।

अअयून aáayún-अ० मेथी, मेथिका (Trigonella Fœnum=Græcum, *Linn.*)

अअर aáar-रू० मुर, बोल (Myrrh.)

अअल्यूतस aáalyútas-यु० अभ्रक, भोडर (Mica.)

अआकुल aáákul-अ० जवासा, यवास, हिंगुआ (Alhagi Maurorum, *Desc.*)

अआडइवोत्ती aádaivottí-ता० चिरकी-हिं०। वन ओकरा-बं०। (Triumfetta Rhomboidea, *Jacq.*) इं० मे० मे०। मेमो०।

अआनी aáni-ते०, ता०, मह०, कना० हाथी हस्ति (Elephant.)

अआरगोस aáragis-रसौत, दारुहल्दी, चित्रा-हिं०। दारुहरिद्रा-सं०। अंबरबारीस-अ०। (Berberis Aristata, *D. C.*)

अआस aáás-अ०
अआसिल बर्री aáásil barri-अ०
(Myrtus Communis, *Linn.*) विलायती मेंहदी-हिं०। फा० इं०।

अअ़क़ब aáqab-अ० गोरखर (एक जंगली जानवर जो गदहे की तरह होता है।)

अअ़जफ़ aájaf-अ० दुबला, कृश, क्षीण। एमेशिएटेड (Emaciated)-इं०।

अअ़ज़ाअ़ aázáa-अ० (Organs.) (ब० व०), उ़ज़्व (ए० व०), बदन के टुकड़े या हिस्से, अवयव, इन्द्रियाँ-हिं०। वे गाढ़ी और स्थूल वस्तुएँ जो प्रथम ख़िल्तों (दोषों) के योग से बनती हैं।

अअ़ज़ाअ़ अस्लिय्यह aázáa asliyyah-अ०, अअ़ज़ाअ़ मुन्विय्यह, असली अअ़ज़ाअ़ अर्थात् शुक्र द्वारा उत्पन्न अवयव, यथा-अस्थि, नाड़ी, रग प्रभृति।

अअ़ज़ाअ़ आलयह aázáa álayah-अ० अअ़ज़ाअ़ मुरक्कबह, वे अवयव जो कुछ साधारण अवयवों (धातुओं) के परस्पर योग से बने हों, संयुक्त अवयव।

अअ़ज़ाअ़ इस्तहियाइय्यह aázáa istahiyáiyyah-अ० अन्दाम निहानी, अअ़ज़ाअ़ तनासुल ज़ाहिरी (प्रधानतः स्त्री के), स्त्री जननेन्द्रियाँ (बाह्य)-हिं०। (Pudendum.)

अअ़ज़ाअ़ कैलूसियह् aázáa kailúsiyah-अ० आलातकैलूसियह्।

अअ़ज़ाअ़ ख़ादिमिह् aázáa khádimih-अ० सेवा करने वाले अवयव, वे अवयव जो किसी अन्य अवयव की सेवा करें, यथा-आमाशय जो यकृत् की सेवा करता है अर्थात् भोजन से शुद्ध आहार-रस (कैलूस) तैयार करके यकृत् की ओर भेजता है; अथवा शिराएँ जो यकृत् से आहार तथा प्राकृतिक शक्ति को लेजाकर अवयवों में वितरित करती हैं।

अअ़ज़ाअ़ ख़ादिमहुर्रईसह् aázáa khádimahurraísah-अ० उत्तमाङ्गों की सेवा करने वाले अवयव, यथा-धमनी जो यकृत् की

सेविका है, और नाड़ी जो मस्तिष्क की सेवा करती है अर्थात् उक्त अवयव की प्रधान शक्तियों को अन्य की ओर पहुँचाती है।

अअ्ज़ाअ् गिज़ा aāzáa ghizá–अ० आहारेन्द्रियाँ, आहार सम्बन्धी अवयव, अथवा आहार को ग्रहण करने वाले अवयव, यथा–आमाशय, अंत्र और यकृत आदि।

अअ्ज़ाअ् ग़ैर रईसह aāzáa ghair raísah–अ० वे अवयव जो न स्वयं किसी की सेवा करते हैं और न कोई उनकी सेवा करता है।

नोट—किसी किसी हकीमका यह विचार है कि शरीर में कुछ ऐसे अवयव भी हैं जिनमें जीवन और पोषण की स्वाभाविक शक्ति विद्यमान है और उत्तमाङ्गों से उनमें कोई शक्ति नहीं आती, यथा–अस्थियाँ। किन्तु स्वतन्त्र हकीमों का यह पंथ नहीं और वास्तविक बात भी यही है। शरीर में कोई एक अवयव भी ऐसा नहीं जो अन्योन्याश्रय न हो, अथवा जिसमें स्वामी सेवक भाव विद्यमान न हो।

अअ्ज़ाअ् तनफ़्फ़ुस aāzáa tanaffus–अ० आलात तनफ़्फ़ुस। श्वासोच्छ्वासेन्द्रियाँ–हिं०। (Respiratory Organs.)

अअ्ज़ाअ् तनासुल aāzáa tanásul–अ० आलात तनासुल। जननेन्द्रियाँ–हिं०। (Reproductive Organs.)

अअ्ज़ाअ् तब्इय्यह् aāzáa tabāiyyah–अ० प्राकृतिक शक्ति सम्बन्धी अवयव, यथा–जननेन्द्रिय वा आहारेन्द्रिय।

अअ्ज़ाअ् तर्फ़ियह् aāzáa tarfiyah–अ० शाखावयव, वे अवयव जो शाखाओं में स्थित हैं, यथा–हस्तपाद आदि।

अअ्ज़ाअ् दम्विय्यह् aāzáa damviyyah–अ० रक्त से उत्पन्न होने वाले अवयव, रक्त जन्य अवयव, यथा–मांस वा वसा।

अअ्ज़ाअ् नफ़्ज़ aāzáa nafz–अ० शारीरिक मल को निकालने वाले अवयव, मल प्रवर्तक अवयव, यथा–अन्त्र, वृक्क, बस्ति, लिंग, गर्भाशय की ग्रीवा और गुदा प्रभृति। एक्सक्रीटरी ऑर्गंज़ (Excretory Organs.)–इं०।

अअ्ज़ाअ् बसीतह् aāzáa basítah–अ० अअ्ज़ाअ् मुफ़्रिदह्।

अअ्ज़ाअ् बौल aāzáa-boul–अ० आलात बौल, मूत्रेन्द्रियाँ, मूत्रसंस्थान–हिं०। (Urinary system.)

अअ्ज़ाअ् मरऊसह aāzáa-maraúsah–अ० उत्तमांगों से लाभ उठाने वाले अवयव।

अअ्ज़ाअ् मुतशाबिहतुल् अजज़ा (aāzáa-mutshábihtul ajzá-अ० अअ्ज़ाअ् मुफ़्रिदह्

अअ्ज़ाअ् मुन्विय्यह् Aázáa munviyyah)–अ० अअ्ज़ाअ् अस्लियह्।

अअ्ज़ाअ् मुफ़्रिदह् Aázáa–mufridah-अ० मुफ़्रिद् अअ्ज़ाअ्, अअ्ज़ाअ् बसीतह्, अअ्ज़ाअ् मुशाबिह तुल् अअ्ज़ाअ्, वह अवयव जो स्वयं अथवा उसका कोई भाग नाम और वास्तविकता में अभेद हो, अर्थात् यदि उज़्व मुफ़्रिद् (मौलिक धातु) का कोई भाग लेकर कहा जाय कि इसका क्या नाम और परिभाषा है तो उत्तर में वही नाम और परिभाषा बतलाई जाय जो वास्तविक अवयव के लिए कही जाती है; उदाहरणतया–अस्थि के एक सूक्ष्म भागको भी अस्थि कहेंगे, एवं मांस के सूक्ष्म भाग को मांस।

मुफ़्रिद् अअ्ज़ाअ् (मौलिक धातुओं) की संख्या १० है, यथा–अस्थि, उपास्थि या कुर्री (Cartilage), नाड़ी, मांस–पेशी, धमनी, शिरा, कला, झिल्ली, संधि-बंधन (बंधनी, स्नायु, रज्जु) और कण्डरा। ये वीर्य से उत्पन्न होते हैं, इसलिए इनको अअ्ज़ाअ् मुन्विय्यह् (शौक्रावयव) कहते हैं। इनमें से दसवीं धातु लह्म (मांस, गोश्त) है। शह्म (वसा) तथा समीन (मेद) की गणना भी इसी में होती है। ये तीनों शोणित से बनते हैं। रोम तथा नख की गणना वस्तुतः शारीरिक मलों में होती है। किन्तु किसी किसी ने इनकी गणना भी अअ्ज़ाअ् मुफ़्रिदहमें की है।

टिप्पणी—अअ्ज़ाअ् मुफ़रिदह् की रचना को अरबी में नस्ज (ए० व०) और नसाइज (ब० व०) तथा आयुर्वेद में तन्तु (धातु) और अंगरेज़ी में टिश्यु (Tissue) कहते हैं। सभी भाँति के तन्तु विशेष प्रकार की सेलों (कोषों, घटकों, कीसों) के परस्पर मिलाप द्वारा बनते हैं। अस्तु—अस्थि, मांस, रग तथा नाड़ियों की रचना मुख्य मुख्य भाँति की सेलों के पारस्परिक मिलाप द्वारा होती है। इसका विस्तृत वर्णन तन्तु (धातु)-शास्त्र (Histology) में होगा।

अअ्ज़ाअ् मुरक्कबह् aāzáa-murakkabah—अ० अअ्ज़ाअ् आलयह्, मुरक्कब अअ्ज़ाअ्। संयुक्तावयव, वे अवयव जो चन्द मुफ़्रिद शरीर तन्तु (धातु) के पारस्परिक मेल से बनते हैं। उदाहरणतः—हस्त अस्थियों, रगों, नाड़ियों और मांस पेशियों तथा त्वचा के मिलाप द्वारा बनता है। इस भाँति के अवयव का यदि कोई भाग लिया जाय तो वह अपनी परिभाषा तथा नाम में सम्पूर्ण से भिन्न होगा, यथा हाथ की अस्थि अथवा मांस हस्त नहीं कहलाएगा।

अअ्ज़ाअ् मुहिम्मह् aāzáa muhimmah—अ० अअ्ज़ाअ् शरीफ़ह्।

अअ्ज़ाअ् रईसह् aāzáa raísah—अ० उत्तमाङ्ग। एक्स्ट्रा Extra—इं०। जीवनाधारभूत अवयव, अर्थात् वे अवयव जिन पर जीवन अवलम्बित हो। वे चार हैं, यथा—(१) हृदय, (२) मस्तिष्क, (३) यकृत् और (४) मुष्क (पुरुषाण्ड), लिंग और शुक्राशय। इनमें से प्रथम तीन मनुष्य जीवन के लिए अत्यन्त आवश्यक हैं, क्योंकि यह क्रमशः प्राणशक्ति (क़ुव्वते हयात, क़ुव्वते हैवानी), चेतनाशक्ति (क़ुव्वते नफ़्सानी) और प्राकृतिक शक्ति (क़ुव्वते-तबई) अर्थात् शारीरिक पोषणशक्ति अवयवों को प्रदान करते हैं। इनमें अन्तिम के जननेन्द्रिय सम्बन्धी अवयव स्वजाति रक्षा के लिए परम आवश्यक हैं।

अअ्ज़ाअ् शरीफ़ह् aāzáa sharífah—अ० शरीफ़ अअ्ज़ाअ्, अअ्ज़ाअ् मुहिम्मह्, अहम अअ्ज़ाअ्। वे अवयव जो अपने कार्यकी महत्ता के अनुसार उत्तमाङ्गों की सामीप्य कक्षा का अधिकार रखते हैं। इनकी गणना उन (उत्तमाङ्गों) के पीछे होती है, यथा—फुप्फुस, आमाशय और अंत्र इत्यादि।

अअ्ज़ाअ् सद्रिय्यह् ज़ाहिरह् aāzáa-sadriyyah-záhirah—अ० वक्षोर्ध्वाङ्ग। वक्ष के ऊपर के अवयव, यथा—वाक्षीय मांसपेशियाँ और स्तन प्रभृति।

अअ्ज़ाअ् सद्रिय्यह् बातिनह् aāzáa-sadriyyah-bátinah—अ० वक्षान्तरस्थ अवयव, वक्षसे भीतर के अवयव, यथा—हृदय और फुप्फुस आदि। थॉरेसिक विसरा (Thoracic Viscera)—इं०।

अअ्ज़ाअ् सौत aāzáa-sout—अ० आवाज़ के अअ्ज़ाअ्, शब्देन्द्रियाँ, शब्दोत्पादक यंत्र, यथा—स्वरयन्त्र, टेंटुआ (श्वासपथ) और फुप्फुस इत्यादि। ऑर्गन्ज़ ऑफ़ वाइस (Organs of Voice)—इं०।

अअ्ज़ाअ् हज़्म aāzáa-hazm—अ० पाचक यन्त्र, पाकावयव, यथा—आमाशय, यकृत्, मासारीक़ह् इत्यादि। डायजेस्टिव ऑर्गन्ज़ (Digestive Organs)—इं०।

अअ्ज़ाअ् हर्कत aāzáa harkat—अ० आलात हर्कत।

अअ्ज़ाअ् हिस्स aāzáa hiss—अ० आलात हिस्स।

अअ्ज़ाअ् हैवानिय्यह् aāzáa haivániyyah—अ० जीवन शक्ति सम्बन्धी अवयव, प्राणिशक्ति से सम्बन्ध रखने वाले अवयव, यथा हृदय या धमनी प्रभृति।

अअ्नब aānab—अ० जिसकी नासिका बड़ी और लम्बी हो, दीर्घनासा।

अअ्नश aānash—अ० ढोंगा, ढोंगुर, छः अंगुलियों वाला, छंगा।

अअ़्नाक़ aānáq–अ० (ब० व०), उ़ (अ़) नक़ (ए० व०) ग्रीवा, गर्दन–हिं० । सर्विक्स (Cervix), नेक्स (Necks)–इं० ।

अअ़्फ़ज aāfaj–अ० Corpulent तोंदीला, मेदयुक्त, मेदावी, स्थूल, वह व्यक्ति जिसकी तोंद निकली हो ।

अअ़्फ़र aāfar–अ० सफ़ेद, मैला सुफ़ेद, धूसर श्वेत । (Brownish white)

अअ़्फ़ाज Aāfáj–अ० (Intestines, Entrails.) आन्त्र–हिं० ।

अअ़्मश aāmash–अ० जिसके नेत्र से जलस्राव होता हो ।

अअ़्मा aāmá–अ० (Blind) नाबीना, कोर –फ़ा० । अंध, अंधा, नेत्रहीन–हिं० । अअ़्माअ़् (ब० व०) और अ़मा (स्त्री० लिं०) ।

अअ़्माले बिल्यद् aāmále-bilyad–अ० (Operation) हस्तक्रिया, शल्य–हिं० । दस्तकारी–फ़ा० । छेदन क्रिया, व्यवच्छेद शास्त्र । साहब कामिल के वचनानुसार इसके तीन भेद हैं–(१) रग एवं (२) मांस की काट छाँट, जैसे रक्तमोक्षण, नश्तर देना, पृथक् करना (काटना छाँटना), दाग़ना और टाँके लगाना इत्यादि और (३) अस्थि को यथा स्थान बिठाना, टूटी अस्थि को जोड़ना, और स्थानच्युत अस्थि की संधि को बिठाना; इत्यादि ।

अअ़्मिदतुल् मिन्ख़रीन aāmidatul-min-kharín–अ० (Nasal Septum) नासामध्य पटल, दोनों नकुओं के मध्य का परदा–हिं० ।

अअ़्याअ़् aāyáa–अ० (१) कूटना, थकावट । (२) हाथ पैर टूटना, शरीर का थक जाना ।

अअ़्यून aāyún–अ० प्रसरित चक्षु, वह मनुष्य जिसके नेत्र की पुतलियाँ फैल गई हों ।

अअ़्रज aāraj–अ० (Lame) लङ्गड़ा, लुञ्ज –हिं० ।

अअ़्राज़ aāráz–अ० (ब० व०) (Symptoms) अ़र्ज़ (ए० व०), रोग के लक्षण ।

अअ़्राज़े नफ़्सानिय्यह aāráze nafsániyyah–अ० इन्फ़िआलाते नफ़्सानिय्यह । अन्तःक्षोभ, मनोविकार, आत्मा में होने वाली दशाएँ–हिं० । ये छः हैं, यथा–(१) शोक, (२) क्रोध, (३) भय, (४) आनन्द, (५) लज्जा और (६) चिन्ता ।

अअ़्शा aāshá–अ० (Nyctalops) शब-कोर–फ़ा० । नक्तांध, वह मनुष्य जिसको रतौंधी का रोग हो ।

अअ़्साब aāṣáb–अ० (Nerves) (ब० व०), अ़सब (ए० व०), नाड़ियाँ, वात या बोधतन्तु (देखो–नाड़ी)–हिं० ।

अअ़्साब उज्ज़िय्यह aāṣab-āujziyyah–अ० (Sacral Nerves) । त्रिकास्थि नाड़ी, नितंब (त्रिक) नाड़ी, अअ़्साब सुरीन । ये वात तन्तु सुषुम्नाकाण्ड से निकल कर नितम्बास्थि से बाहर आते हैं । ये संख्या में ५ जोड़े होते हैं । इनकी शाखाएँ उरु, टाँग, वा पाँवकी मांस पेशियों तथा त्वचा में चेष्टा व संज्ञा बढ़ाती हैं ।

अअ़्साबे उ़नुक़िय्यह aāṣábe āunuqiyyah –अ० (Cervical Nerves) अअ़्साबे गर्दन–फ़ा० । ग्रैव नाड़ियां–हिं० ।

अअ़्साबे क़त्निय्यह् aāṣábe-qatniyyah –अ० अअ़्साबे कमर–फ़ा० । कटि नाड़ियाँ –हिं० । (Lumbar Nerves)

अअ़्साबे ज़ह्रिय्यह् aāṣábe-zahriyyah –अ०, (Dorsal Nerves) अअ़्साबे पुश्त –फ़ा० । पृष्ठ नाड़ियाँ–हिं० ।

अअ़्साबे दिमाग़िय्यह् aāṣábe-dimágh-iyyah – अ० मास्तिष्क नाड़ियाँ – हिं० । (Cranial Nerves) ।

अअ़्साबे नुख़ाइयह् aāṣábe-nukháāiyah –अ० सौषुम्न नाड़ियाँ–हिं० । (Spinal-Nerves.) ।

अअ़्साबे मुरक्कबह् aāṣábe murakkabah –अ० मिश्र नाड़ियाँ–हिं० । मिक्स्ड नर्वज़् (Mixed Nerves)–इं० ।

अअ़्साबे शिर्कियह् aāṣábe shirkiyyah –अ० अअ़्साबे हम्दर्दी । पिंगल नाड़ियाँ–हिं० । (Sympathetic Nerves.)

अअ़्साबे हर्कत् aāṣábe-ḥarkat–**अ० हर्कती अअ़्साब** । चालक नाड़ियाँ, चेष्टावहा नाड़ियाँ, गति सम्बन्धी नाड़ियाँ–**हिं०** । (Motor Nerves)

अअ़्साबे हास्सह् aāṣábe-ḥássah–**अ०** विशेष चेतना सम्बन्धी नाड़ियाँ–**हिं०** । (Special Senses Nerves .)

अअ़्साबे हिस्स aāṣábe-ḥiss–**अ० हिस्स के पुट्ठे–उ०** । सांवेदनिक नाड़ियाँ, चेतना सम्बन्धी नाड़ियाँ, बोध अथवा ज्ञान तन्तु–**हिं०** । (Sensory Nerves)

अइग्रिमोइन aigrimoine–**फ्रां०** शज्र-तुल् बराग़ीस–**अ०** । (Agrimonia Eupatorium, *Linn.*) **फा० इं० १ भा०** ।

अइता aitá–**गों०** आवर्तनी, मरोड़फली–**हिं०** । (Helecteres Isora, *Linn.*)

अइदा aidá–**अ०** । हीरादोख़ी–**हिं०** । दम्मुल्-अख़्वैन–**अ०, हिं०, बाज़ा०** Draggon's blood (Dracœna cinnabari, *Balf.*) **फॉ० इं० ३ भा०** ।

अइँधा aindhá–**उ० प० सू० हरथू–चल्ला** । अजहार–**आसा०** । (Lagerstrœmia Flos-Reginæ, *Rotz.*)

अइन ain–**महा०** } आमनवृत्त, साज, सदरी
अइनी ainí–**कना०** } –**हिं०** । **पियासाल–बं०**
(Terminalia Tomentosa *Bedd*) । **इं० मे० मे०** । **मेमा०** ।

अइर air–**हिं०** (Farsetia Egptiaca, *Turr.*) फ़रीदबूटी ।

अइरन airan–**बम्ब० अरनी**, उरनि, पिरून–**हिं०** (Clerodendron Phlomoides, *Linn.*) **इं० मे० मे०** ।

अइरन मूल airanmúl–**बम्ब० अरनी**, अग्निमन्थ ।(Premna Integrifoila, *Linn.*) **इं० मे० मे०** ।

अईरसा aírasá–**अ० पुष्करमूल**, पद्मपुष्कर–**सं०** । **ईरसा–हिं०** । Orris root (Iris Florentina.)

अईल aíl–**अव०, हिं० सानला** । सीकी (के) काई–**द०** । कोचै–**बं०** । Acacia Concinna, *D.C.*) **इं० मे० प्लां०** । **फा० इं० १ भा०** ।

अउजा aujá–**बर०** Custard apple (Anona squamosa, *Linn.*) । शरीफ़ा, सीताफल, आत–**हिं०** ।

अउनी aunee–**फ्रां० रासन**, जञ्जबील शामी, कुस्ते–शामी । Elecampane (Inula Helenium, *Linn.*) **फा० इं० २ भा०** ।

अउसरक ausarak–**पं०** छड़ीला–**हिं०** (See-Chharíla) । शैलेय, शिलापुष्प–**सं०** । उश्नह्–**अ०**

अऊ aú–**बरब० १**--अण्डा(Ovum) । २--गर्भ (Embroyo)

अऊ aú } –**बर०** (**प० ब०**) **कन्द–हिं०** ।
ऊ ú } (Bulb or Tuber) **स० फा० इं०**

अऊमियाआ aúmiyaá } –**बर०** (**ब० ब०**)
उमियाआ umiyaá } **कन्द–हिं०** (Bulbs, Tubers) । **स० फा० इं०** ।

अऋतुमती aritumatí–**सं० स्त्री०** (Unmenstruating woman) अदृष्टार्तवा, रजोलोपा, अनार्तवमती, अनृतुमती ।

अएगरवल्ली aegar-vallí–**ता०** **धारकरेला–हिं०** । (Momordica Dioica, *Roxb.*) **इं० मे० मे०** ।

अएडकुल रीतिचेट्टु aedakul-ríti-Chettu–**ते०** छातिम, सप्तपर्ण, छतिवन–**हिं०** । (Alstonia Scholaris, *R.Br.*) **इं० मे० मे०** ।

अएडु aedu–**ता०, कना०** (Sheep) **भेंड़, मेष–हिं०** । **इं० मे० मे०** ।

अएण्डु aendu–**ता० चकमर्द**, चकवड़, पमाड़–**हिं०** । (Cassia Tora, *Linn.*) **इं० मे० मे०** ।

अएरिलम्पाल aerilampál–**मल० सप्तपर्ण** (Alstonia Scholaris, *R.Br.*) **इं० मे० मे०** ।

अएलि–लप्पालई Aeli-lœppálai–**ता०**(Alstonia Scholaris, *R. Br.*) छतिवन, छातिम, सप्तपर्ण ।

अक़्अक़ āaqāaq – अ० महूका पक्षी, यह एक प्रसिद्ध पक्षी है। असकर, कालअङ–फ़ा०।

अकचः akachah–सं० वि० }
अकच (akacha)–हिं० वि० }
केश शून्य, बाल रहित–हिं०। बाल्ड (Bald) –इं०। जारमाथा नेड़ा–बं०।

अकच्छ akchchha–हिं० वि० [सं० अ = रहित + कच्छ वा कच्छ = धोती, परिधान] (१) नग्न। नंगा। (२) व्यभिचारी। परस्त्रीगामी।

अक़ज akaj–ज़अ़रूर और बक़ोल अज़रून का नाम।

अकटा akatá–हिं० पुं०, कङ्कर। ग्रेवल (Gravel)–इं०।

अकड़ akara–हिं० संज्ञा स्त्री० [आ = अच्छी तरह + कड्ड् = कड़ा होना] [क्रि० अकड़ना] ऐंठ। तनाव। मरोड़। बल।

अकड़ तकड़ akara takara–हिं० संज्ञा पुं० ऐंठन।

अकड़ना akaraná–हिं० क्रि० अ० [आ = अच्छी तरह+कड्ड् = कड़ापन] [संज्ञा अकड़ अकड़ा] सूखकर सिकुड़ना और कड़ा होना। खरा होना। ऐंठना। (२) ठिठुरना। स्तब्ध होना। सुन्न होना। (३) तनना।

अकड़ बाई akarabái–हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० कड्ड्–कड़ापन + वायु, हिं० बाई = हवा] ऐंठन। कुड़ल। शरीर की नसों का पीड़ा के सहित एक बारगी खिंचना।

अकड़ा akará–हिं० संज्ञा पुं० [सं० कड्ड् = कड़ापन] चौपायों का एक छूत का रोग। जब चौपाए तराई की धरती में बहुत दिनों तक चर कर सहसा किसी ज़ोरदार धरती की घास पा जाते हैं तब यह बीमारी उन्हें हो जाती है।

अकड़ाव akaráva–हिं० संज्ञा पुं० [हिं० अकड़] ऐंठन। खिंचाव।

अक़तना अक़तनस aqataná aqatanas }
अक़तना अक़तस aqataná afalas }
–यु० ज़अ़रूर–वृक्ष (Zaārúr)।

अक़तनार अनाक़ aqatanár–aniqi }
अक़तना लूक़ा aqataná-lúqi } –यु०
(१) शुकाई (Shukái)। (२) बादावर्द। (Volutarella Divaricata, *Benth.*)

अक़तमाअ aqatamáā–अ० शराब या अंगूर का पानी।

अक़तमारून aqatamárún–यु० सूरिंजान Hermodactylus (Hermodactyl)

अक़तालूनी aqatálúní–यु० बादावर्द (Volutarella Divaricata, *Benth.*)

अक़ती aqatí–यु० खुमान कबीर।

अक़तीसूस aqatísús–यु० जंगली मूली, अरण्य-मूलक (The Wild Radish.)

अक्त akta––सं० मालिश।

अकती akatí–ता०, मल०, अगस्त्य, अगस्तिया–हिं०। (Agati Grandiflora, *Desr.*) इं० मे० मे०।

अक़तुल मलिक aqatul-malik–बम्ब०, (Trigonella Uncata, *Boiss.*) इक्लीलुल् मलिक–अ०। नख, नाखूना–हिं०।

अक़दन aqadan–हिं० क्रि० वि०। दे० कदन।

अक़दह āaqadah–मिश्र० ज़रिश्क की लकड़ी, दारुहल्दी–हिं०। दारुहरिद्रा। (Berberis Asiatica, *D.C.* 'wood of')

अक़दूनिया āqadúniyá–यु० जौहरी जवाहन, किरमाला, अफ़सन्तीनुल् बहर, दरमनह (Worm seed.)

अकन akan–हिं० आक, मदार, अकौंद (calotropis Gigantea or Procera, *R. Br.*) स० फ़ा० इं०।

अक़न aqan–अ० गंदह–बग़ल–फ़ा०। कक्ष-शुद्धि, कक्षदुर्गन्ध–हिं०। वह व्यक्ति जिसके कक्ष से दुर्गन्ध आती हो।

अकनक akanak–अ० सुरिंजान कडुआ (Hermodactylus 'bitter')

अकनना Akananá–हिं० क्रि० स० [सं० आ-कर्णन = सुनना] कान लगाकर सुनना। चुपचाप सुनना, आहट लेना, सुनना, कर्णगोचर करना।

अकनादि akanádi–बं०, पाठा, अम्बष्ठा (Cissampelos Pereira, *Linn.*)

अक़नूस aqanús–यु० नासपाती (Pyrus Communis, *Linn.*)

अकन्दा akandá–हिं० मदार,आक (Calotropis Gigantea *R. Br.*)

अक़फ़ áaqaf–अ० ग़िल्ज़ुल्जिल्द, मिस्मार, ऐ दु-स्समकह्, क़र्न। कदर–सं०। अट्टन, ..., यह एक प्रकार का चर्म रोग है जिसमें साधारणतः पाँव के अँगूठे की संधि अथवा छँगुली की संधि की त्वचा कठोर और स्थूल हो जाती है और जूता पहन कर चलते समय व्यथा होती है। कॉर्न (Corn), क्लेवस (Clavus)–इं०।

अक़ब áaqab–अ० पं, ताँत, नस जिससे धनुष का चिल्ला बनाते हैं।

अक़बर áakabar–अ० मोम भेद (A kind of beeswax)

अकबरी akabarí–हिं० संज्ञा स्त्री० [अ०] (१) एक फलहारी मिठाई, तीखुर और उबाली अरुई को घी के साथ फेंट कर उसकी टिकिया बनाते हैं और घी में तलकर चाशनीमें पागते हैं।

अकबरी अशरफ़ी akabarí asharafí–हिं० संज्ञा स्त्री० [अ०] सोने का एक पुराना सिक्का जिसका मूल्य पहिले १६) था पर अब २०) हो गया है।

अकबरूस akabarús–यु० रूमी और हिंदी भेद से यह वृक्ष दो प्रकार का होता है। इनमें से रूमी को अकबरूस अर्थात् गोंद कहरुबा का वृक्ष कहते हैं।

अक़म áaqam–अ० बन्ध्या अर्थात् बाँझ होना। गर्भ स्थिर न होना (Sterile)

अक़माउर्रुम्मान aqamáaurrummán–अ० अनार की छाल या अनार वृक्ष की कली जिसमें फल लगता है। (Pomegranate bark or bud)

अक़माउर्रुम्मानुल्हिन्दी aqamáaurrummánul-hindí–अ० नागकेशर–हिं०। (Mesua Ferrea, *Linn.*)

अक़याक़ैलून aqayáqailún–रू॰ चिरायता (Chirata)

अक़यान áaqayán–अ० शुद्ध स्व... प्योर गोल्ड (pure gold)–इं०।

अक़यास aqayás–यु० इन्दरस (ग़ा) रून।

अक़यूस aqayús–यु० (१) अमरूत (Guava)। (२)नासपाती (Pyrus communis, *Linn.*)

अकर akara–हिं० त्रि० [सं०] ... हाथ का, हस्त रहित।

अकर áakar–अ० तिलछट, तेल–किट्ट, रसोब, दुर्द, गाद, गदलापन, तेल आदि की गाद। सेडिमेण्ट (Sediment)–इं०।

अक़रक़रतून aqarqartún–यु० गिले अक़रीतुस, एक प्रकार की मिट्टी है।

अकरकरभः akarakarabhah–सं० पु०। अकरकरा (See-Akarakará)।

अकरकरआदिचूर्ण akarakarabhádichúrna–हिं० संज्ञा पुं० अकरकरा, सोंठ, कंकोल, केशर, पीपर, जायफल, लौंग तथा श्वेत चंदन इन्हें कर्ष कर्ष भरले, चूर्णकर कपड़छान करें, पश्चात् अहिफेन शुद्ध १ पल, मिश्री (सिता) सर्व तुल्य मिला चूर्ण कर रक्खें। मात्रा–१ रत्ती शहद के साथ रात्रि को कामी पुरुष चाटें तो वीर्य स्तम्भन हो। शा० सं० म० ख० अ० ६ श्लो० ४५।

अक़रक़रहा áqarqarhá–अ० (Pyrethri Radix) अकरकरा–हिं०।

अकरकरा akarakará–हिं० संज्ञा पुं० [सं० आकरकरभः] अकलकरा, अकोलखर, अकलकोरा –द०। आकारकरभः, अ (–आ) कल्लकः, अक्-ल्करः, अकोलर, तीक्ष्णमूलः और तीक्ष्णकीलकः प्रभृति एवं इसके अनेक अन्य कल्पित संस्कृतनाम हैं। अकोरकोरा, आकरकरा, रोशुनिया–बं०। आ (–अ) क़रक़र्हा, ऊदुल्क़र्ह–अ०। अ-कल्करा, आक़रक़र्हा हस्पानी, आक़रक़रह–फ़ा०। पाइरीथ्राई रैडिक्स (Pyrethri Radix) एनासाइक्लस पाइरीथ्रम (Anacyclus Pyrethrum, *D. C.*), पाइरीथ्रम

रैडिक्स (Pyrethrum Radix) –लै० । पेलिटरी आफ स्पेन और पेलिटरी रूट, (Pellitory of Spain or Pellitory root)–इं० । सैलिवरी डी एस्पैग्नी (Salivaire d.' Espagne)–फ्रां० । अक्किरकारम्–ता० । अक्किकरुका, अक्किलाकारम्–मल० । अक्कारकारम्, आकलकर्र, मराटी-तींग,मराटी मोग्गा-ते० । अक्कला करे–कना० । अक्कलकरा-मह० । अकरकरा-गु० । कुकैजआ या कुकया–बर० । पोकरमूल, आककरहा–पं० । अकर्का–यरब० ।

मिश्रवर्ग

(*N. O. Compositæ*)

उत्पत्ति स्थान–भारतीय उद्यान, बङ्गदेश, अरब, उत्तरी अफ्रीका, अल्जीरिया और लीवाएट ।

नोट—अकरकरा के उपर्युक्त समस्त पर्याय अकरकरा वृक्ष(Anacyclus Pyrethrum, *D. C.*) की जड़ के हैं जो वास्तव में बाबूना का एक भेद है, जिसे स्पेनीय बाबूना (Spanish Chamomile or Anthemis Pyrethrum) कहते हैं । बाबूना नाम की मिश्रवर्ग (Compositeæ order) की निम्न चार ओषधियां जिनका तिब्बी ग्रंथों में वर्णन आया है परस्पर बहुत कुछ समानता रखती हैं, इसी कारण इनके ठीक निश्चीकरण में बहुधा भ्रम हो जाया करता है । वे निम्न हैं, यथा—(१) बाबूनज रूमी या गुफ़ाही (Anthemis Nobilis), (२) बाबूनह् बदबू (Anthemis Cotula), (३) बाबूना गावचश्म या उक़्ह़ वान (Matricaria Parthenium) और (४) स्पेनीय बाबूना या आक़रक़रहा (Anthemis Pyrethrum) । इन सब के लिए एन्थेमिस अथवा कैमोमाइल अर्थात् बाबूना शब्द का ही प्रयोग होता है (देखो—बाबूना अथवा उसके अन्य भेद) । इनके अतिरिक्त अकरकरा नाम की इसी वर्ग की दो और ओषधियाँ हैं, अर्थात् (१) बोज़ीदान या मधुर अकरकरा और(२) अकलकर (Spilanthus Oleraceœ) या पिपुलक--मह०, बनमुगली--कना० । अकरकरा से बहुत कुछ समानता रखती हुई भी ये बिलकुल भिन्न ओषधि हैं । अस्तु, इनका वर्णन यथास्थान सविस्तर किया जाएगा । यहाँ पर बाबूना के भेदों में से एक भेद केवल अकरकरा का ही वर्णन होगा ।

नाम विवरण—पाइरीथ्रम पाइरास(Pyros) से जिसका अर्थ अग्नि है, व्युत्पन्न यूनानी शब्द है । चूँकि अकरकरा प्रदाहकारक होता है; इस कारण इसका उक्त नाम पड़ा । आक़रक़र्हा अक़्र और तक़्रीह (क्षत कारक) से व्युत्पन्न अरबी शब्द है और चूँकि यह गुण इसमें विद्यमान है अस्तु इसको उक्त नामसे अभिधानित कियागया है । इसके ऊदुल्क़ह् नाम पड़ने काभी यही उपर्युक्त कारण है । अन्य भाषाओं में भी इसी बात को ध्यान में रख कर नामों की कल्पना हुई है ।

इतिहास—अकरकराका वर्णन किसी भी प्राचीन आयुर्वेदीय ग्रन्थ, यथा—चरक, सुश्रुत, वाग्भट, धन्वन्तरीय व राजनिघंटु और राजवल्लभ प्रभृति में नहीं मिलता । हाँ ! पश्चात् कालीन लेखकों यथा भावप्रकाश और शार्ङ्गधर प्रभृति ने अपनी पुस्तकों में इसका वर्णन किया है । (देखो शार्ङ्ग० अकारादि चूर्ण ६ अ०; भा०, म०, १ भ० ज्वरघ्नी वटी और वै० निघ०) । इससे स्पष्ट ज्ञात होता है कि भारतीयों को इसका ज्ञान इस्लामी हकीमों से हुआ; जिन्होंने स्वयं अपना ज्ञान यूनान वालों से प्राप्त किया । यूनानी हकीम दीसक़ूरीदूस (Dioscorides)ने पायरीथीन नाम से, जिससे पाइरीथ्रम शब्द व्युत्पन्न है (और जिसको मुहीत अअ्ज़मसें फ़ारियून लिखा है), उक्त औषधि का वर्णन किया है । किन्तु, मख़्ज़नुल् अद्वियह् के लेखक हकीम मुहम्मद हुसैन के कथनानुसार इसको अरबी में ऊदुल्क़ह् जब्ली कहते हैं और यह सीरिया में बहुतायत से पैदा होता है तथा अकरकरा के बहुशः गुण धर्म रखता है । प्रमाणार्थ वे हकीम अन्ताकी का वचन उद्धृत कर कहते हैं कि—अकरकरा दो प्रकार का होता है, प्रथम सीरियन (शामी)

जिसका वर्णन दोसकूरीदूस ने किया है, और द्वितीय पाश्चात्य जो अफ़रीका और पाश्चात्य देशोंमें उत्पन्न होता है। उक्त वनस्पति की आकृति, पत्र, शाखा और पुष्प श्वेतपुष्पीय बाबूना कबीर के समान होते हैं, पर उसके (अकरकरा के) पुष्प पीत वर्ण के होते हैं। इसी की जड़ को अकरकरा और फ़ारसी में **पर्वतीय नख़ून** कहते हैं। हकीम अन्ताकी का उक्त वर्णन बिलकुल सत्य है। क्योंकि पश्चिमी अकरकरा वास्तव में स्पेनीय बाबूना की जड़ है जिसका वानस्पतिक नाम एन्थेमिस पाइरीथ्रम(Anthemis Pyrethrum)अर्थात् आग्नेयबाबूना या स्पेनिश कैमोमाइल (Spanish Chamomile) अर्थात् स्पेनीय बाबूना है। और इसी की जड़ हमारा उपर्युक्त अकरकरा है जिसका वर्णन हो रहा है। कोई कोई बच को ही अकरकरा कहते हैं। परन्तु अकरकरा और बच वस्तुतः दो भिन्न-भिन्न वस्तुएँ हैं।

वानस्पतिक वर्णन—यह अरब और भारतवर्षकी प्रसिद्ध बूटी है (यह बङ्गाल और मिश्र में भी उत्पन्न होती है)। इसके छोटे छोटे क्षुप चातुर्मास की पहिली वर्षा होते ही पर्वती भूमि में उत्पन्न होते हैं। इसकी शाखाएँ, पत्र और पुष्प सफ़ेद बाबूने के सदृश होते हैं, परन्तु डण्डल पीली होती है। गुजरात और महाराष्ट्र देश में इसकी डण्डी का अचार और साग बनाते हैं। इसमें सोआ के सदृश बीज आते हैं। डाली रोंगटेदार और पृथ्वी पर फैली हुई होती है तथा एक जड़ में से निकल कर कई होजाती है। उस डाली के ऊपर गोल गुच्छेदार छत्री के आकार का, किन्तु बाबूने से विपरीत पीले रंग का फूल होता है। डाली खड़ी खड़ी और पुष्प-पटल (Petals) सुफ़ेद होते हैं। इसकी जड़ औषध कार्य में आती है। ये सीधे सीधे टुकड़े,जिन पर कोई रेशा नहीं लगा होता, ३-४ इंच अर्थात् एक वालिस्त लम्बे और आधे से पौन इंच मोटे बेलनाकार गोल होते हैं। ऊपर के किनारे पर प्रायः बे रङ्ग रोमों की एक चोटी सी होती है। वाह्य भाग धूसर वर्ण का तथा झुर्रीदार होता है। इसको जहाँ से तोड़ें वहीं से टूट जाती है। गंध-विशेष प्रकारकी। **स्वाद**—इस जड़के खाने से गरमी मालूम होती है, चरपरी लगती और जिह्वा जलने लगती है, यही इसकी मुख्य परीक्षा है। इसको चबाने से मुँह से लालास्राव होने लगता है और सम्पूर्ण मुख एवं कंठ में चुनचुनाहट और कांटे से चुभते मालूम होते हैं। इसकी जड़ भारी (वज़नदार) और तोड़ने पर भीतर से सफ़ेद होती है। इसमें शीघ्र कीड़े लग जाया करते हैं। **परीक्षा**—अकरकरा अरण्य(जंगली)-कासनी की जड़के सदृश होता है; किन्तु यह (कासनी) तिक्त एवं काले रङ्ग की होती है।

रसायनिक संगठन—इसमें १-एक स्फटिकवत् अल्कलॉइड (क्षारीयसत्व) आकरकर्भीन (Pyrethrine), २-एक रेज़िन (राल) और ३-दो स्थायी (Fixed Oils) तथा उड़नशील तैल होते हैं।

प्रभाव—सशक्त लालानिस्सारक, प्रदाहजनक और कामोद्दीपक।

औषध-निर्माण—यौगिक चूर्ण, वटिकाएँ और कल्क।

(१) अकरकरा ४ भाग, इन्द्रायन २ भाग, नौसादर ३ भाग, कृष्णजीरक २ भाग, कुटकी ४ भाग और कालीमिर्च ४ भाग; इन सबको मिला चूर्ण प्रस्तुत करें। अपस्मार में इसको नस्य रूप से व्यवहार में लाएँ।

(२) अकरकरा ४ भाग, जायफल ३ भाग; लौंग २ भाग; दालचीनी ३ भाग; पिप्पलीमूल; केशर २ भाग; अफीम १ भाग; भंग ४ भाग; मुलेठी ४ भाग; मदार मूल त्वक् ४ भाग; वायविडङ्ग ३ भाग और शहद ४ भाग; सब को चूर्ण कर वटिका प्रस्तुत करें। **मात्रा**—आधी से २॥ रत्ती।

गुण—बच्चों के चिड़चिड़ापन, अनिद्रा, संवेदन दंतोद्भेद, अतीसार, उदरशूल तथा वमन के लिए गुणदायक है।

ऑफ़िशल प्रिपेयरेशञ् (ए० मे० मे०)—टिङ्क्चूरा पाइरीथ्राई (Tinctura Pyrethri)**-लै०** । टिङ्क्चर ऑफ़ पाइरीथ्रम (Tincture of Pyrethrum)**-इं०** । अकरकरासव-हिं० ।

निर्माणविधि—पाइरीथ्रम की जड़का ४०नं० का चूर्ण ४ आउन्स अलकुहॉल (७०%) आवश्यकतानुसार । चूर्ण को ३ फ्लुइड आउन्स अल्कुहॉल में तर करके पर्कोलेशन द्वारा एक पाइन्ट टिंक्चर तय्यार कर लें ।

प्रयोग—लालास्राव हेतु इसका स्थानिक उपयोग होता है । यह दाँतके दर्द,गठिया,अपस्मार, पक्षाघात, कफवात, तोतलापन और ज्वर तथा अनेक अन्य रोगों में लाभ पहुँचाता है ।

मात्रा—३॥ मा० । **अहित**—फुफ्फुस को । **दर्पनाशक**—कतीरा और मुनक्का ।

गुणधर्म तथा उपयोग

आयुर्वेद की दृष्टि से—अकरकरा उष्णवीर्य; कटुक तथा बलकारक है, तथा प्रतिश्याय शोथ एवं वात का नाश करता है । **वृ० नि० र०** ।

वैद्यकीय व्यवहार

भावप्रकाश—फिरंग रोग में—विशुद्ध-पारद आधा तोला, खदिरचूर्ण आधा तोला, अकरकरा चूर्ण १ तोला, मधु १॥ तोला, इनको एकत्र मर्दन कर वटिका प्रस्तुत करें । इसमें से प्रातःकाल १-१ वटी जल के साथ सेवन करने से फिरंग रोग (Syphilis) नष्ट होता है ।

यूनानी एवं नव्यमत—अकरकरा को चबाने से प्रथम दाह प्रतीत होता है; तत्पश्चात् शीघ्र झुनझुनाहट एवं सनसनाहट का ज्ञान होता तथा अधिक मात्रा में लाला की उत्पत्ति होती है । क्योंकि मौखिकी धमनी बोधतन्तु तथा लालाग्रंथि पर इसका उत्तेजक प्रभाव होता है । परन्तु थोड़ी देर पश्चात् नाड़ियाँ शिथिल होजाती हैं । अस्तु, यह एक सशक्त लालानिस्सारक (पावफुल स्यालेगॉग) तथा किञ्चित् अवसन्नताजनक (अनस्थेटिक) है । उक्त प्रभावों के कारण इसको दन्तपीड़ा, कव्वा लटकने (रीलैक्स्ड यूवुला) और कण्ठशोथ (सोरथ्रोट) में मंजन गण्डूष प्रभृति रूप से व्यवहार में लाते हैं । दन्तपीड़ा में अकरकरा को विकृत दाँत के नीचे रखने तथा चबाने से अथवा इसका टिंक्चर तथा टिंक्चर आयोडीन दोनों समभाग सम्मिलित कर इसमें जरा सी रुई तर करके पीड़ा युक्त दन्त में रखने से वेदना शमन होती है । २ आउंस (१ छं०) जल में एक ड्राम (३॥। माशा) इसका टिंक्चर मिलाकर इसका गंडूष करते हैं । डॉक्टर राय इसको योषापस्मार (ग्लोबस हिस्टैरिकस) में गुणदायी बताते हैं । (ए० मे० मे०)

यूनानी ग्रन्थकार—इसे तीसरी कक्षा के अन्त में और चतुर्थ कक्षा तक रूक्ष मानते हैं । परन्तु कोई कोई तीसरी और चतुर्थ कक्षा में शीतल मानते हैं ।

देह में जो सुद्दा (रुधिर आदि की गाँठ) पड़ जाता है उसको खोलता, मस्तक को दुष्ट मल से शुद्ध करता तथा मस्तक के अवयव तथा कफ आदि को निस्संदेह चमक (जिला) देता है । अर्दित (लक़वा), पक्षाघात, कफवात, पीड़ा के साथ गर्दन का जकड़ जाना, जोड़ों का ढीला होना, तोतलापन, छाती, दाँत और संधि वेदना, गृध्रसी, जलंधर, पसीना और ज्वर को दूर करता,शीतल प्रकृति वाले की इन्द्री की शक्ति को तथा स्तनों में दूध को बढ़ाता, खुलकर पेशाब लाने को व स्त्रियों के आर्त्तव को पतला तथा गाढ़ा लेप करने से लाभ पहुँचाता है । मस्तक रोग, संधि के रोग, वाततन्तु (पुट्ठे) के, मुख के और छाती के रोग में अकरकरा को जैतून तैल में पीसकर मर्दन करने से लाभ होता है और कुबड़ापन, सुप्तवात, या ढीलेपन को, अवयवों के पुराने रोगों को भी पूर्वोक्त उपयोग गुणदायक होता है ।

यदि अकरकरा के क्वाथको गरम गरम मस्तक पर लेप और तालू पर मर्दन करें तो मस्तक को गरम कर नज़ले को नष्ट करता है । यदि इसे मस्तगी या कसैली वस्तु के साथ चटाएँ तो वह मृगी रोग, जो दूषित दोषों से प्रकट हुआ है,

नष्ट होता है। शहत के साथ अकरकरा चूर्ण को चाटने से मृगी, अंधकार आना और पक्षाघात प्रभृति रोग नष्ट होते हैं।

अकरकरे के कपड़छन किए हुए बारीक चूर्ण को सूँघने से नाक रुकना अर्थात् श्वासावरोध दूर होता है। यदि इसको सिरके में भिगो दाँत के नीचे रक्खें तो दन्तशूल नष्ट होता है। चबाने या जिह्वा पर बुरकाने से जीभ की आर्द्रता दूर होकर तुतलाना मिटता है।

इसके क्वाथ को मुख में रखने से हिलते दाँत मजबूत होते हैं। उक्त क्वाथ में सिरका मिला कर गंडूष करने से गले का फोड़ा, काग का लटक आना तथा जीभ के लटकने (जो कफ के कारण हो) को लाभ पहुँचता है।

पीस कर मर्दन करने से पसीना लाता है। केवल अकरकरा, या अकरकरा और फावानिया दोनों, को गलेमें डोरेसे बाँधकर लटकाएँ तो बच्चे की मृगी दूर होती है। यदि इकरँगे काले कुत्ते के बाल और अकरकरा दोनों को बालक के बाँध दे तो इन्द्रियों में चैतन्यता हो तथा आमाशय के रोग और ज्वर नष्ट हों।

अकरकरा के लऊक़ (अवलेह) में शहद मिला के पीने से देह की कांति बढ़ती है, तथा छाती का दर्द, कफ की पुरानी खाँसी एवं सरदी के रोग दूर होते हैं। यह आमाशय से आँव को निकालता एवं शीतल प्रकृति वाले की मैथुन शक्ति को बढ़ाता है।

यदि आधा दिरम (१॥ मा०) घोट के पिएँ तो बलपूर्वक कफ को जुलाब द्वारा निकालता है। ज्वर आने से प्रथम अकरकरा को जैतून के तेल में पीस सम्पूर्ण शरीर में मालिश करें तो ज्वर, सरदी का लगना दूर होता है और पसीना लाता एवं देह के जोड़ (संधियों) की बीमारी दूर करता है। अकरकरा के तैल को इन्द्रीपर मलने से इन्द्री दृढ़ तथा कामशक्ति प्रबल होती है, और मैथुन में विशेष आनन्द आता है। विधिपूर्वक शहद में घोल तिला (पतला लेप) करने से स्त्री को बहुत जल्दी स्खलित करता है। यदि बाकला के आटे के साथ घोट पोटली में रख इन्द्री और अण्डकोषों में बांधे तो गुण करता है, अर्थात् जिसके फोतों को बहुत सर्दी लगती हो उसे लाभ पहुँचाता है।

सबसे अद्भुत बात इसमें यह है कि इस को नौसादर के साथ बारीक पीस तालु और मुख में खूब लगाए अर्थात रगड़े, तो आग से मुंह कदापि नहीं जलता। अकरकरा को सिरके के साथ औटाए तो खमीर के सदृश हो जाएगा। इसे कीड़े खाए हुए दांतों के ऊपर रखने से सब कीड़े झर के गिर पड़ेंगे।

एक औक़िया शुष्क अकरकरा को कूटे और आधसेर जलमें औटाए जब एक औक़िया शेष रहे तब उतार शीतल कर हाथों से मलकर छान ले, फिर दो औक़िया जैतून के तेल के साथ दुहेरी देग में मिलाकर काम में लाए।

गुण—इस रोगन के पीने से पसीना निकलकर सर्दी का ज्वर नष्ट होता है। यह सर्दी के यावन्मात्र रोगों को नष्ट करता एवं मैथुनशक्ति को बढ़ाता है।

अकरकरा का सऊत नाक में टपकाने से मस्तक पीड़ा,आधा शीशी तथा मृगी नष्ट होती है एवं यह शीतल व मस्तक को बलिष्ट करने में उत्तम है।

जिगर के रोगों में अकरकरा की प्रतिनिधि पीपल और शहत है और आमाशय के रोगों में रासना और अगर। यदि समय पर ये दोनों न प्राप्त हों तो उनके स्थान में सोंठ और इससे आधी काली मिरच लेनी चाहिए। गंडूष में पहाड़ी पोदीना डेढ़ गुना, हलक की पीड़ा में इलायची लेनी चाहिए। एवं अकरकरा के उसारे से निर्मित तैल लेना चाहिए।

वामक व विरेचक औषध पीने से पहिले यदि अकरकरा खा लें तो फिर कड़वे, चरपरे, कषैले रस का कुछ भी ज्ञान न होगा। अतएव जिसको क्वाथ आदि पीने से घृणा होती है हकीम लोग उसको प्रथम अकरकरा चबाने को देते हैं। जब वह चबाकर थूक देता है तो ऊपर से फिर जो क्वाथ पिलाना हो पिलाते हैं।

अकरकरादिचूर्ण akarkarádi chúrṇa. -हिं० अकल्लकादि चूर्ण- अमृतप्रभा चूर्ण- अकरकरा, सेंधानमक, चित्रक आमला, अजवायन, हड़ इन्हें समान भागलें और सोंठ २ भाग लेकर बारीक पीस कपड़ छान करें। पुनः बिजौरे के रस की भावना देकर रक्खें।

गुण—मन्दाग्नि, अरुचि, खाँसी, श्वास, गले के रोग, सरेकसा, पीनस, मृगी, उन्माद तथा सन्निपात को नष्ट करता है। अभि० नि० भा० १।

अकरकराहा akarkaráhá. -हिं० } अकर-
अकरकरो akarkaro -यु० }
करा (Pyrethri Radix.)

अकरकेशियम acer Cæsium, *Wall.* -लें० हजल, किलपत्तर। इसका प्रयोग औषध हेतु अथवा मवेशियों के चारे के लिए होता है। प्रयोगांश-शाखा और पत्र। मेमो०। फा० इं० १ भा०।

अकरकाँटा akarkántá. -हिं०, बं० ढेरा, अंकोल (Alangium Decapetalum, *Lam.*) इं० मे० मे०।

अकरखना akarakhaná -हिं० क्रि० स० [सं० आकर्षण] (१) खींचना, तानना। (२) चढ़ना।

अकरपिक्टम् acer pictum, *Thunb.* -लें० अकर केशियम (Acer Cæsium.) मेमो०। फा० इं० १ भा०। देखो-किलपत्तर।

अकरफ्स akarafsa -अजमोद, करफ्स प्रसिद्ध है (Apium involucratum.)

अक़रब âaqarab.-अ० (Scorpion.) वृश्चिक, बिच्छू-हिं०। कज़ दुम-फ़ा०।

अकरब âakrab-अ० जंगली सरसों का एक भेद है जिसका बीज श्वेत और लम्बा होता है।

अक़रब aqaraba-हिं० संज्ञा पुं० [अ०] जिस घोड़े के मुँह पर सफ़ेद रोएँ हों और उन सफ़ेद रोओं के बीच बीच में दूसरे रँग के भी रोएँ हों उसे अक़रब कहते हैं। यह ऐबी समझा जाता है।

अक़रब बह्री âaqrab bahri-अ० सिंगी (-घी) मछली। यह एक प्रकार की रक्त आभायुक्त खाकी रँग की वृश्चिक सदृश छोटी मछली है। (Saccho Branchus.)

अक़रबुलमाअ् âaqrabulmáa-अ० कर्क, कर्कट, केकड़ा-हिं०। सर्तान-अ०। (Crab)

अक़र्यान âaqaryán - इस्क़ूलूक़न्दर्यून। (Asplenium Falcatum, *Willd.*)

अकरविल्लोसम (acer villosum, *Wall.*) -लें० केरंडेरा-सिम०। यह चारे के काम में आता है। प्रयोगांश-पत्र। मे० मो०।

अकरश âakrash.-अ० ढोल भेद।

अक़रस,-सी aqras,-si-यु० दबक़, एक फल है जो चने के दाने के बराबर होता है। किन्तु गोल नहीं होता।

अकरा akará-सं० स्त्री० आमला का वृक्ष -हिं०। (Phyllanthus Emblica. *Linn.*)-लें०। श० च०। महँगा, बहुमूल्य।

अकराकरभः akarákarabhah.-सं० पु० अकरकरा। (Pyrethrum Radix.) शार्ङ्ग० अकारादि चू० ६ अ०। भा०।

अक़रामातीक़ान aqará-mátiqán.-यु० ज़रूर, अर्थात् वे शुष्क औषधियां जो पीसकर व्रण प्रभृति पर छिड़की जाती हैं। अवचूर्णन-सं०।

अकराम्भकः akarámbhakah -सं०पु० अकरकरा (Pyrethrum Radix.)

अकरास (akarása)-हिं० संज्ञा पुं० [हिं० अकड़] (१) अँगड़ाई, देह टूटना। संज्ञा पुं० [सं० अकर] आलस्य, सुस्ती, कार्य शिथिलता।

अकरास सेपोटा achras Sapota, *Linn.* -लें० चिकु-मह०। चिकलीचिक्कुकवथ-बरग०। फल-सपोट-हिं०, बं०। शिमैं गुलुप्पै-ता० शिम-इप्प-ते०। कुम्पोले-कना०। चकचो-कोटी-कजहार-इ०। सैपोडिल्ला प्लम, (Sapodilla plum.), बुलीट्री (Bully tree)-इं०। सैपोटिलीर (Sapotillier)-फ्रां०। शिमई इल्लु पाई-म०।

मधुक वर्ग

(*N. O. Sapotaceæ.*)

उत्पत्ति स्थान–पश्चिमी द्वीप तथा भारत वर्ष के अनेक भागों में इसको लगाते हैं।

इतिहास व प्रयोगआदि–पश्चिमी किनारों तथा बंगाल में फल के लिए इसके वृक्ष लगाए जाते हैं और फल बाज़ारों में विक्रय हेतु लाए जाते हैं। भारतवर्ष के अन्य प्रान्तों में यह कम होता है। पश्चिमी द्वीप एवं अमरीका में इसकी छाल बल्य तथा ज्वरघ्न प्रभाव के लिए प्रयोग में लाई जाती है। इसका बीज तीन रत्ती की मात्रा (अधिक परिमाण में यह विषैला प्रभाव उत्पन्न करता है) में मूत्रल है। भारतीयों में इसके फल की बहुत प्रसिद्धि है। उनका कथन है कि यदि इसके फल को पिघले हुए मक्खन में रात्रिभर भिगो रक्खा जाय और प्रातःकाल सेवन किया जाय तो यह पित्त एवं ज्वर संबन्धी आक्रमणों से सुरक्षित रखता है। (डाइमाक)

वानस्पतिक वर्णन–इसकी त्वचा रक्तवर्ण की होती है। ऊपरी भाग धूम्र वर्ण का होता है। स्वाद–तिक्त और अत्यन्त कसैला। फल–बाहरसे खुरदरा और अंडाकार भीतर से पीताभायुक्त श्वेत, नर्म और गूदादार–और पकने पर इसका स्वाद सेब के समान होता है। बीज काले रंगके चमकीले अंडाकार और लम्बे होते हैं।

रसायनिक संगठन–(१)दो रेजिन (Resins) जिनमें से एक ईथर में घुल जाता है, (२) कषायीन (Tannin.) ११'८ प्रतिशत, और (३) एक क्षारीय सत्व सैपोटीन(Sapotine) जो ईथर, मद्यसार और सम्मोहिनी (Chloroform) में घुल जाता है; तथा एमोनिया द्वारा अपने लवणों से भिन्न होकर तलस्थायी हो जाता है। इं० मे० प्ला०; फा० इं० २ भा०।

अक़रासुलमलिक aqrásul-malik–अ० एक हिन्दी बूटी का नाम है। कोई कोई जैनफल को कहते हैं।

अकरी Akarí–हिं०, (१) Dunal (seeds of–) अँकरी। (२) एक असगंध की जाति का पौधा वा झाड़ी जो पंजाब, सिंध और अफ़गानिस्तान आदि देशों में होती है। पुनीर के बीज –हिं०। कन्नी–पं०। आलिश–यु०। Witharia (Puneeria) Coagulans. इं० मे० मे०। फा० इं० २ भा०। स० फा० इं०।

अक़रीतस-मातस aqrítas-mátas–यु० गुलेऊलीकुल कुदस।

अकरुज़्ज़ैत ãakaruzzait–अ० तैल या जैतून तैलकी तलछट। सेडिमेण्ट (Sediment)–इं०।

अकरूट akrut–बं० अखरोट walnut(Juglans regia, *Linn.*)

अकरूलबहर akrul-bahar–अ० मोथा के सदृश एक जड़ है जिसको लैफ़ुलबहर भी कहते हैं।

अक़रूस aqrús–यु० अक़सूस, मवेज़ज असली के नाम से प्रसिद्ध है।

अकरोट akrot–इ० }
अकरोट्टु akarottu–ता० } अखरोट Juglans regia, *Linn.* (walnut)

अकरोफ़स akarofas–यु० हौज़ रूमी।

अकरोः akaroh–सं पु० अखरोट (Juglans regia, *Linn.*)

अकरोहक akarohak–फ़ा अंज़रूत (Astragalus Sarcocolla, *Dymock.*) फा० इ०।

अकरौट akarout–हिं }
अकरौटु akaroutu–ते० }
अकरौड akaroud–म० }
अकरौडु akaroudu–कना० } अखरोट,अक्षोट Walnut (Juglans regia, *Linn.*)

अककरः akarkarah }
अकल्करः akalkarah } सं० पु० अकरकरा (Pyrethrum Radix) गुणधर्म–उष्णवीर्य, बलकारक और कटु तथा प्रतिश्याय शोथ और वात नाशक है। वै० निघ०।

अकर्णः akarnah–सं० त्रि० (१) Devoid of ears, deaf बहरा, बूचा, बधिर–हिं०। है०च०। (२) कान रहित (Destitute of

karna.) । (३) साँप, सर्प (Snake, A serpent) ।

अकर्त्तनः akartanah—सं० त्रि० (Dwarfish) वामन । वै० श० सिं० । वाँओन-बं० ।

अकर्षण akarshana— हिं० संज्ञा पु० दे० आकर्षण ।

अकलकरः akalkarah—सं० पु० उकरा, पोकरमूल (Spilanthus Oleraceæ) इं० मे० मे० । फा० इं० ।

अकलकरा akalkará } —फ़ा० अकरकरा

अक़लक़ोरा aqalqorá } (Pyrethrum Radix) स० फा० इं० ।

अकल akala—हिं० वि० [सं०] (१) अवयव रहित । जिसके अवयव न हों । (२) जिसके खंड न हों । अखंड । सर्वाङ्गपूर्ण । (Not in parts, without parts.) (३) [सं० अ=नहीं+हिं० कल=चैन] विकल । व्याकुल । बेचैन ।

अकलबर akalabar—हिं० संज्ञा पुं० दे० अकलबीर ।

अकलबीर akalabíra—हिं० संज्ञा पुं० [सं०] करबीर भांग की तरह का एक पौधा जो हिमालय पर काश्मीर से लेकर नैपाल तक होता है । इसकी जड़ रेशम पर पीला रंग चढ़ाने के काम में आती है । (Datisca cannabina, *Linn.*) देखो—अकलबार

अकलबर्की akalbarkí—इं० सर्वजया, कामाक्षी—सं० । सबजया—हिं० । देवकली—मह० । कृष्णताम्र—ते० । कण्डामण्ड—ना०, (Canna Indica, C. orientalis.) इं०मे० मे० ।

अकलबार akalabár—हिं० (१) सबजया—बं० । सर्वजया, कामाक्षी—सं० । तेहर्ज—काश० । (Common Indian Shot.) इं० हैं० गा० । इं० मे० मे० । फॉ० इं० ३ भा० ।

अकलबार akalbár } —हिं० वैर-बम्ब,
अकलबेर akalbar } भङ्गजल(फॉ० इं०) —बम्ब वंग (इं० मे० मे०)—पं० । बगतङ्गेल—तेहर्ज—काश० । डेटिस्का केनाबीना (Datisca Cannabina, *Linn.*)—ले० ।

अकलबार जाति

(*N. O. Datisceæ.*)

उत्पत्ति-स्थान — हिमालय (काश्मीर से नैपाल पर्यन्त) और सिन्ध ।

वानस्पतिक विवरण—प्रकाण्ड—२-६ फो०, कठोर, शाखी; निम्नपत्र—१ फु०, पत्राकार । लघुपत्र (पत्रक)—७-११ संख्या में, ६ इं० लम्बा १॥ इं० चौड़ा, पत्रमूल (डंठल)—युक्त, ऊर्ध्व (पत्र) अत्यन्त सूक्ष्म तथा कम कटे हुए; पुष्पपत्र (पंखड़ी) मध्यान्य (अभिश्रित) ३ इं० लम्बा तथा १। इं० चौड़ा, पुष्पडण्डी में प्रायः पतली बंधनियां होती हैं ।

पराग-कोष—लम्बा अधिक बड़ा, तन्तु बहुत सूक्ष्म ।

नारितन्तु—चौथाई इं०, डोडा (छीमी) चौथाई इञ्च लम्बा तथा इससे कम चौड़ा, एक कोषीय, सिरे परखुला हुआ; बीज बहुसंख्यक धारीदार होते हैं तथा आधार पर एक जालीनुमा आच्छादन लगा रहता है । फ्लो० ब्रि० इं० ।

प्रयोगांश—क्षुप, मूल, और त्वचा ।

रसायनिक संगठन (या संयोगी तत्व)—

पत्र तथा मूल में एक प्रकार का ग्लूकोसाइड अकलबारीन (Datiscin) क[21] उद[22] ऊ[12], एक राल (Resin) तथा एक भांति का कटु सत्व पाया जाता है । अकलबारीन (Datiscin) वर्णहीन रेशमवत् सूची अथवा छिलके रूप में पाया जाता है । यह शीतल जल में कम तथा उष्ण जल एवं ईथर में अंशतः विलेय होता है । रवे (Neutral) और स्वाद में कटु होते हैं । ये १८०° शतांश के ताप पर पिघल जाते हैं ।

औषध-निर्माण—पौधे का शीतकषाय (१० भाग में १ भाग); मात्रा—आधे से १ आउंस (१। तो० से २॥ तो०), चूर्ण-मात्रा ५ से १५ ग्रेन (२॥ रत्ती से ७॥ रत्ती) ।

प्रभाव व उपयोग—अकलबार कटु तथा मारक है और कभी कभी ज्वर, गण्डमाला तथा आमाशयिक रोगों में उपयोग किया जाता है । खगान (Khagan) में इसकी जड़ को

कुचल कर शामक रूप से शिर में लगाते हैं। मदन (Madden) के कथनानुसार कर्नूल (Kurnool) में बज्रबक्र नामसे उक्त औषध को व्यवहार में लाते हैं। (स्टयुवर्ट)

यह पौधा ५ से १५ ग्रेन (२॥ से ७॥ रत्ती) की मात्रा में विषम ज्वरों में उपयोग किया जा सकता है। (डाइमॉक)

आमवात (गठिया) में औषध रूपसे इसका अवसादक प्रभाव होता है। काशिया (Quassia) के समान इसकी छाल में एक तिक्त सत्व होता है। (वैट)

पौधे का शीतकषाय कंठमाला, छर्दि सहित विषम ज्वर तथा कंठ व वायु प्रणालियों की श्लैष्मिक कलाओं के प्रदाह में व्यवहार किया जाता है। इं० मे० मे०।

वायु प्रणालीस्थ प्रदाह में श्लेष्मनिःसारक रूप में और दंत रोग में इसका स्थानिक प्रयोग किया जाता है। (लन्दन प्रदर्शिनी १८६२)

अकलाकरा akalákari ⎫ –फ़ना० अकर-
अक्कलाकरा akkalákari ⎭ करा–हिं०। (Pyrethrum Radix.) फा० इं०। स० फा० इं०।

अकलंक akalanka–हिं०वि० [सं०] [संज्ञा अकलंकता वि० अकलंकित] दोष रहित। निर्दोष, बे दाग़।

अकलंकता akalankatá–हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] निर्दोषता, सफ़ाई, कलंकहीनता।

अकलंकित akalankita–हिं० वि० [सं०] निष्कलंक, निर्दोष, बे दाग़, साफ़, शुद्ध।

अकल्क akalka–हिं० वि० (Free from sediment, pure.) मलरहित, स्वच्छ।

अकल्का akalká–हिं०स्त्री० (Moon light) ज्योत्स्ना, चाँदनी।

अकल्पन akalpan–हिं० सचाहट, प्रकृत, सत्य, यथार्थ, वास्तविक। रीअल् (Real)–इं०।

अकल्मष akalmasha–हिं० वि० [सं०] निर्विकार निर्दोष, पाप रहित, बे ऐब।

अकल्यः akalyah–सं० त्रि० रुग्ण, रोगी। डिज़ीज़्ड (Diseased.), इल (Ill.) इं०।

अकल्याण Akalyána–हिं० वि० [सं०] अमंगल, अशुभ, अहित।

अकल्लः akallah–सं० पु० अकरकरा (Pyrethrum Radix.) अ० टी० वा०। वै० निघ० २ भा० वा० व्या०।

अकल्लकः akallakah–सं० पु० अकरकरा (Pyrethrum Radix.)

अकवार akavár–हिं० पु० कुक्षि, कोख, गोद, बूज़म (Bosom.)–इं०।

अकश akash–अ० बालोंका उलझना, गुथजाना, घूंघरवाले केश। कर्ल्ड हेयर (Curled hair.) –इं०।

अकसा akasá–हिं० पु० अकरा।

अकसीर akasíra– हिं० संज्ञा स्त्री० [अ०] देखो–अक्सीर।

अक़ा āaqá–अ० ज्वर के कारण मुख का स्वाद बदल जाना, रोग से अन्न जल का बुरा लगना।

अकाकरभः akákarabhah–सं० पु० अकरकरा (Pyrethrum Radix, *Linn.*)

अकाकरा akákará–हिं० करेला, काकरा (Momordica Charantia, *Linn.*)

अक़ाक़ा aqáqá–मि० एक मिश्र देशीय वृक्ष केफल हैं।

अक़ाक़ालिस aqáqális–यु० चाकसू (शू.) Cassia absus। फा० इं० १ भा०।

अक़ाक़िया aqáqiyá–अ० यह यूनानी शब्द अकाकिआ (akákiá) से अरबी बनाया गया है। युनानी भाषा में अकाकिया कीकर को कहते हैं; किन्तु प्रामाणिक एवं विश्वस्त अरबी तथा फ़ारसी तिब्बी ग्रन्थों के मतानुसार यह एक सत्व है जो क़रज़ (यह मिश्र के एक कण्टकयुक्त वृक्ष का फल है, जो कीकर का एक भेद है; कीकरकी फलियों से जो सत्व बनाया जाता है उससे भी ये ही प्रभाव प्रगट होते हैं।)के रस से तैयार किया

जाता है। **निर्माण-विधि**—इसके फल और पत्तों को कूट कर रस निचोड़ लें। पुनः इसको छानकर मन्दाग्नि पर यहां तक पकाएँ कि यह गाढ़ा होजाए।

विवरण—यह भारी दृढ़ तथा प्रियगंधयुक्त होता है। इसके छोटे टुकड़े प्रकाश के सामने देखने से हरित बोतल के रंग के मालूम होते हैं; किन्तु कोई२ कुछ ललाई लिए हुए होते हैं। इसके बड़े बड़े टुकड़े काले वर्ण के दीख पड़ते हैं। **स्वाद**—मधुर, कसैला और लुआबदार होता है। शीतल जल में डालने से यह लुआब रूप में परिणत हो जाता है और इसमें पीताभायुक्त धूसरवर्ण अथवा भूरापन लिए हुए हरे रंग के पदार्थ तैरते हुए प्रतीत होते हैं। छानने के पश्चात् लुआब का रंग बबूल गोंद के समान होता है।

प्रकृति—३ कक्षा में (अशुद्ध) ठण्डी और रूक्ष है। **हानिकर्ता**—रोध उत्पादक है।

दर्पनाशक—रोग़न बादाम। **प्रतिनिधि**—चन्दन और रसौत। **मात्रा**—३॥ मा०।

अक़ाक़िया-गुणधर्म—यूनानीग्रन्थकारों के मत से अक़ाक़िया बालोंको काला करता है। क्योंकि यह बालों की तरी को दूर करता है। सर्दी के फटे हुए हस्तपाद (विपादिका) के लिए गुणदायक है, क्योंकि अपनी संकोचनीय शक्ति के कारण यह अवयवों से विच्छिन्न भागों को संकुचित एवं एकत्रित करता है, अवयव को बलवान बनाता और इसे फटने से रोकता है। दाहस (अंगुलबेढ़ा) के लिए लाभदायक है, क्योंकि इस में ठण्डक पैदा करता तथा मादाको लौटाता है। इसी कारण अन्य शोथों कोभी लाभप्रद है। मुंह के क्षतों को दूर करता है क्योंकि उन रतूबतों को शुष्क कर देता है जो उनको पूरित नहीं होने देतीं। अपनी शुष्कताके कारण संधियों की शिथिलता को लाभप्रद है। दृष्टि को बल देता और उसे सूक्ष्म एवं तीव्र बनाता है क्योंकि यह नेत्र की सान्द्र रतूबतों को जो रूहको ग़लीज़ करने वाली हैं, अभिशोषित कर लेता है। आंख आने में लाभ व शान्ति प्रदान करता है, क्योंकि यह आँत की और मलों के बहाव को रोकता है। और नाखूना (नेत्रस्थ रक्त बिन्दु) को औषधों में डाला जाता है, क्योंकि यह दृष्टि को शक्ति प्रदान करता है, और इसकी चिकित्सा में जो उष्ण तीक्ष्ण एवं भक्षक (अक्काल) औषधियाँ उपयोग में आती हैं उनकी पीड़ा से नेत्र को सुरक्षित रखता है। पान, अनुलेपन तथा वस्ति (हुक़ना) रूप में प्रयुक्त करनेसे यह क़ब्ज़ पैदा करता है। प्रवाहिका रक्तातीसार और रक्तस्राव को गुण करता है। निकली हुई काँच (गुदभ्रंश) को असली दशा पर लौटाता एवं उसकी शिथिलता को दूर करता है, क्योंकिइसमें संकोचक शक्ति तथा रूक्षता विद्यमान होती है। उक्त अभिप्राय हेतु इसको खिलाते हैं अथवा इसे लेप रूप से उपयोग में लाते हैं। (नफ़ा०)

अक़ाक़िया या आकाक़िया के प्रभाव तथा प्रयोग—कफ निस्सारक, वक्षःस्थलस्थ वेदना शामक, संकोचक, रक्तस्थापक, मृदुताजनक और बल कारक। अन्त्र प्रणालीस्थ कलाओं तथा जननेन्द्रिय वा मूत्र सम्बन्धी अवयवों पर इसका सर्वोत्तम प्रभाव होता है। इसी कारण अतिसार, प्रवाहिका, सूज़ाक (पूयमेह), नासूर और पुरातन वस्तिप्रदाह प्रभृति विकारों में यह अत्यन्त लाभदायक सिद्ध होता है। यद्यपि अफ़ीम तथा इसके कुछ यौगिकों की अपेक्षा यह कम प्रभावजनक होता है, तथापि उस अवस्था में, जब कि यह अकेला उपयोग में लाया जाए, समस्त वानस्पतिक तथा खनिज संकोचक औषधों से अधिकतर प्रभावकारक प्रमाणित होता है। जलोदर के साथ जब अतिसार एवं प्रवाहिका हो तो अफ़ीम और इसके यौगिक प्रायः हानिकर होते हैं; क्योंकि जिस मात्रा में ये अतीसार प्रभृति को रोकते हैं उसी अनुपात में ये जलोदर की वृद्धि करते हैं। इसी कारण "अक़ाक़िया" आंत्र रोगों में अफ़ीम तथा इसके अन्य यौगिकों की अपेक्षा श्रेष्ठतर तथा लाभदायी औषध है।

अक़ाक़िया मग़सूल (धोया हुआ)—इसकी विधि इस प्रकार है—अक़ाक़िया को पानी में खरल

करके ऊपर का पानी निथार कर टपका लें, और इसी प्रकार तब तक करते रहें जब तक कि पानी स्वच्छ न दिखाई देने लगे तथा इसका रंग बदलना बन्द न हो जाय। पश्चात् उसकी टिकिया बना लें। उपयोग में लाने से पूर्व इसके धो लेनेसे यह और उत्तम होजाता है। स० फा० इं०। इं० मे० म्रां०। फा० इं० २ भा०। त० न०।

देखो—बब्बुरः।

अकाकिया akákiya-फ़ा०, इं०, अ०, हिं०, बाज़ा०, अकाकिया-क़र्ज़ का गाढ़ा किया हुआ स्वरस (उसारह्), कीकर का रस, रङ्ग।

अक़ाक़ीर āaqáqír-अ० (ब० व०); अक़ार (ए० व०) जड़ी बूटियाँ, ओषधि। हर्ब (Herb)-इं०।

अकाचा akáchá-सं० स्त्री० पर्पटन, पुनीर (एक भारतीय बूटी है), काकनज। Withania (Puneeria) coagulans, *Dunal.* -लें०।

अक़ाम āaqám-अ० अक़ीम। बन्ध्या स्त्री वा पुरुष। स्टेराइल (Sterile)-इं०।

अकाम akáma-सं० त्रि० (Free from desire),-हिं० वि० बिना कामना का। कामना रहित। इच्छाविहीन। अथ० सू०, २, ७, का० ६।

अकामा akámá-हिं० वि० स्त्री० [सं०] (स्त्री) जिसमें काम का प्रादुर्भाव न हुआ हो। यौवनावस्था के पूर्व की।

संज्ञा स्त्री० काम चेष्टा रहित स्त्री।

अकामी akámí-हिं० वि० [सं० अकामिन्] [स्त्री० अकामिनी] जो कामी न हो। जितेन्द्रिय।

अकाय akáya-हिं० वि० [सं०] (१) (Without body, incorporeal) बिना शरीर वाला। देह रहित। कायाशून्य।

(२) अशरीरी। शरीर न धारण करने वाला, जन्म न लेने वाला। (३) रूपरहित, निराकार।

अकार akára-हिं० संज्ञा पुं० अक्षर अ। दे० आकार।

अक़ार āaqár-अ० शराब, मद्य। वाइन (Wine)-इं०।

अक़ार अर्तनीसा āaqár āartanísá-यू० आ़ज़रबुआ, चक्रक, अश्नान-फ़ा०। Cyclamen Persicum, *Miller.*

अक़ारआदम āaqár-ádam-अ० मैदा लकड़ी -हिं०। मग़ास्, मग़ासे..-हिन्दी-अ०। किल्ज़ -फ़ा०। Tetrantha Roxburghii, *Nees.* (Wood of-)। मुशैप्पीयेट्टि, मैदा लक्टि, पिशिन पट्टइ-ता०। नरमामिडि मेदा -ते०। कुकुर चिता बं०। स० फा० इं०।

अकारक मिलाव akáraka-miláva-हिं० संज्ञा पु० [सं० अकारक+हिं० मिलाव] ऐसा रसायनिक मिश्रण वा मिलावट जिसमें मिली हुई वस्तुओं के पृथक् गुण बने रहें और वे अलग की जा सकें।

अक़ार कोहान āaqár-kohán (१) अकरकरा (Pyrethri Radix)

(२) ऊदे सलीब, फ़ावानिया-फ़ा०, अ०। ऊदे सालप-हिं०। Pœonia officinalis, *Linn.*, P. Corallina, *Linn.* (Male variety)

अकारकाँटा akár-kántá-हिं० पु० ढेरा, अंकोल। (Alangium Decapetalum, *Lam.*)-लें०।

अकारतलून akár-talún-रू० फारस देश में होने वाले एक जंगली वृक्ष का बीज है। इस वृक्ष का पुष्प अत्यन्त लाल तथा नीलगूं एवं सुन्दर होता है। स्वाद-मधुर।

अक़ारवा aqárava--करोया, जीरा भेद। (A kind of cumin seed.)

अक़ार सौसीनाई āaqár-sousínái सुर; ईरसा-हिं०। पुष्करमूल, पद्मपुष्कर-सं०। Orris root (Iris Florentina.)

अकारा,-रः akárá,-rah--हिं० अपामार्ग, चिरचिटा (Achyranthes aspera, *Linn.*) फा० इं०।

अक़ाराअरून āaqárá-āarún–सिरा० अम्-राश, एक बारीक चूर्ण है जो कभी कभी आंत्र द्वारा और कभी खुन्सा की जड़से बनाया जाता है।

अकारीक़ून akáríqún–जंगली जैतून का बीज (Wild Olive-oil seed)

अक़ारून aqárún–रू० वज-अ० । वच-हि० । Acorus calamus, *Linn.*

अकाल akála–हिं० संज्ञा पु० [सं०] (वि० अकालिक) (१) दुर्भिक्ष, दुष्काल, महँगी, क़हत (Famine) । (२) । असमय अनुपयुक्त समय, अनवसर, अनियमित समय । बे ठीक समय । कुसमय । ठीक समय से पहिले वा पीछे का समय । प्रिमेचर (Premature) अनटाइम्ली (Untimely) }—इं० । (३) घाटा, कमी, न्यूनता ।

अकालह् akálah–अ० अकलान, हिक्कह । ख़ारिश–फ़ा० । कण्डु, खाज, खुजली, खुजाहट, –हिं० । प्रुराइटिस (Pruritis)–इं० ।

अकालकु(कू)ष्माण्डः akála-ku,-kúshmáṇḍah–सं०पु०(A pumpkin produced out of season.) असमय में होने वाला कुष्माण्ड, ऋतु के अतिरिक्त होनेवाला कुम्हड़ा ।

अकालकुसुम akála-kusuma–हि० संज्ञा पु० [सं० अकालकुसुमं] (१) बे समय फूलने वाला, बेसमय का फूल । बिना समय वा ऋतु में फूला हुआ फूल । (A flower blossoming out of season) (२) बेसमय की चीज ।

नोट—यह दुर्भिक्ष वा उपद्रव-सूचक समझा जाता है ।

अकालजम् akálajam–सं० त्रि० (Unseasonable, Premature, produced out of season) अकाल उत्पन्न, अकाल जात, बे समय उत्पन्न हुआ, यथा—

"अकालजन्तु विरसं न धान्यं गुणवत्संस्मृतम् ।" अर्थात् बे समय उत्पन्न हुआ धान्य स्वाद रहित और गुणहीन होता है । राज० ।

अकालजलदः akála-jaladah–सं० पु० बेसमय का बादल ।

अकालपुष्पम् akála-pushpam–सं० क्ली० अकाल कुसुम, बे मौसमका फूल (A flower blossoming out of season.)

अकाल भोजनम् akála.bhojanam–सं० क्ली० असमय भोजन अर्थात् भोजन के समयसे पहिले अथवा समय बिताकर भोजन करना ।

गुण–इससे शरीर असमर्थ हो जाता है और इस कारण सिर दर्द, विषूचिका, अलसक और विलम्बिका आदि रोग उत्पन्न होते हैं । और रोगों की वृद्धि होने पर मृत्यु भी होजाती है, जैसे—

अप्राप्तकालंभुञ्जानो ह्यसमर्थतनुर्नरः ।
तांस्तानव्याधीनवाप्नोति मरणञ्चाधिगच्छति ॥
भा० पू० १ भा० १४१ श्लो० ।

अकालमृत्यु akála-mrityu–हि० संज्ञा स्त्री० [सं०] असामयिक मृत्यु । ठीक समयसे पहिले की मृत्यु । अनायास मृत्यु । थोड़ी अवस्था का मरना । अपक्व मृत्यु, कुसमय (असमय) में मृत्यु (संस्कृत में मृत्यु पुलिङ्ग है) । अनटायमलीडैथ (Untimely death)

अकालमेघोदयः akálameghodayah–सं० पु० १—(An unseasonable rise or gathering of clouds) अकालजलदो दय, असमय में बादल होना (mist or fog) कुहिरा, अवश्याय ।

अकालवृष्टिः akála-vrishṭih–सं० हि० स्त्री० असमय की वर्षा (Untimely rain)

अकालवेला akálavelá–हि० संज्ञा पु० (Unseasonable or improper-time) असमय ।

अकालशयनम् akála-shayanam–सं० क्ली० असमय का सोना, बेसमय की निद्रा ।

गुण—अकाल शयन से कफ कुपित होता है और प्रतिश्याय, पीनस, क्षय, सूजन, शिरोरोग, तथा अग्निमांद्य प्रभृति रोग होते हैं । वा० सू० अ० ८ । हा० । अत्रि: १ स्थान २३ अ० ।

अकालिक akálika–हिं० वि० [सं०] असामयिक । बिना समय का । बे मौके का ।

अक़ालीम aqálím–अ० (ब० व०), इक़्लीम (ए० व०) देश, भाग, स्थान–हिं० । कण्ट्री (Country)–इं० ।

अकाव akáva–हिं० संज्ञा पुं० [सं० अर्क] Calotropis gigantea, *R. Br.* आक, मदार ।

अकाशदेवी akáshadeví–द० एक पौधा विशेष ।

अकाश (स) पवन akásh,s-pavan–द० अकासबेल, अमरबेल–हिं० । कसूस–फ़ा० । (Cuscuta Reflexa, *Roxb.*) इं० मे० मे० ।

अकाशबवर,–री akásha bavar,-rí–हिं० अकासबेल(Cuscuta Reflexa, *Roxb.*)

अकाशवल्ली akásha balli–सं० स्त्री० अकासबेल (Cuscuta Reflexa, *Roxb.*)

अकाश (–स) बेल akásha, -sa-bela –हिं० संज्ञा पु०[सं० आकाशवेलि] अकाशबँवरी, अमर-बेल,अकाशबेलि, अंबरबेलि, आकाश बौंर, –हिं० । अकाशवल्ली, खवल्ली, अमर वल्ली–सं० । अकाशबेल, आलोकलता, अल्गुसी, हल्दी, अलगुसीलता–बं० । अफ़्तीमूने हिन्दी-यु०, अ० । कसूसे हिन्दी–फ़ा० । ककस्युटा रिफ्लेक्सा (Cusuta Reflexa, *Roxb.*) केस्सिथा फिलिफॉर्मिस (Cassytha Filiformis,*Linn.*)–ले०। डॉडर (Dodder) –इं० । कोतान, इन्द्रिरावल्ली, नान्दे -ना० । इन्द्रजाल, पाचतिगे, पञ्चतिगा–ते०, तेलं० । अकाश वल्ली–मल० । बेल्लुवल्लि,नेलमुदवल्लि, शविगेवल्लि अमरवल्लि–कना०,कर्ना० । अमरबेल, अन्तरबेल, सोनबेल, अलरोइल्ला–मह० । अमरबेल–गु० । कोतन–द० । अलगजर्डी–मन्ता० । नेदमुदवल्ली–का० । अन्तरबेल–कों० । शियून–तु० ।

लतावर्ग–

(N. O. Convolvulaceæ.)

उत्पत्ति स्थान—प्रायः समस्त भारतवर्ष ।

वानस्पतिक विवरण—अकासबेल सर्वथा एक पराश्रयी लता है जो डोरे सी कीकर, बेर, अड़से इत्यादि वृक्षों पर जाल की तरह फैली हुई होती है । इसका तना गहरे हरित वर्ण का होता है जिस पर लम्बाई के रुख पीली पीली धारियाँ पड़ी होती हैं । अंकुर से पतली जड़ निकल कर भूमि में प्रविष्ट होजाती है और तना शीघ्र शीघ्र बढ़ने लगता है । इससे चोषक सूत्र (Suckers) निकल कर निकटस्थ वृक्ष की डालियों में निज आहार हेतु मार्ग बनाते हैं और उक्त वृक्ष से आहार सम्बन्धी आवश्यक तत्त्व, जैसे–जल तथा लवण जो वृक्ष में विद्यमान होता है, प्राप्त करते हैं । इस प्रकार की व्यवस्था होजाने पर जड़ सूख जाती है और पुनः लता का भूमि से कोई भी सम्बन्ध नहीं रह जाता । ऐसे भी इसके टुकड़े करके वृक्षों पर डाल देने से यह उस पर बढ़ने लगता है । यदि अंकुर को कोई उपयुक्त आधार न मिले तो भी वह सूख जाता है । सूक्ष्म परतों के अतिरिक्त इसमें पत्ते नहीं होते और नहीं इनसे उसको कोई लाभ होता है । तने को काट कर देखने पर बाहर मज़बूत नालीदार रेशे और मध्य में मृदु गूदा दीख पड़ता है । पुष्प श्वेत रंगके आते हैं,पुष्पवाह्यावरण (Sepals) को हटाने पर भीतरसे मटर के आकार के गोलाकार बीज निकलते हैं । वर्षाकाल में इसकी बेल उगती है तथा एक ही वृक्ष पर प्रतिवर्ष पुनः नवीन होती है; इसी कारण इसको "अमरबेल" (Immortal) कहते हैं । यह वृक्षों के ऊपर होती है और इसका भूमि से कोई सम्बन्ध नहीं रहता इस कारण इसको आकाशबेल आदि नाम से पुकारते हैं । इसका लेटिन नाम कस्क्युटा (Cuscuta)कसूस से, जो अफ़्तीमून (अकाश बेल विलायती) का अरबी पर्याय है, व्युत्पन्न है । देखो—अफ़्तीमून । उपर्युक्त दोनों लेटिन पर्यायों में से प्रथम अर्थात् कस्क्युटा कॉन्वॉल्व्युलेसीई वर्ग का तथा द्वितीय अर्थात् केस्सिथा लॉरेसीई (Lauraceæ) वर्ग का पौधा है । छोटे छोटे भेदों के कारण इसकी बहुत सी जातियाँ होगई हैं । अस्तु, इनमें से किसी के

डंठल पीले और किसी के लाल होते हैं; किसी के फल बड़े और किसी के छोटे होते हैं; इसी प्रकार और अनेक भेद प्रभेद की बातें हैं। यूनानी हकीम जिस औषध को काम में लाते हैं वह अफ़्तीमून नामसे फ़ारस प्रभृति देशों से भारत वर्ष में आती है।

प्रयोगांश—सम्पूर्ण पौधा, बीज (तुख़्मेकशूस) और तना।

रसायनिक संगठन—क्वरसेटीन (Quercetin) राल और एक प्रकार का क्षारीय सत्व कसूसीन या अक़रीन (Cuscutine) जो कुछ २ तिक्त एवं ईथर और क्लोरोफ़ार्म में विलेय होता है।

गुणधर्म तथा उपयोग

अकाशबेल—ग्राही, तिक्त, पिच्छिल, नेत्ररोगनाशक, अग्निवर्द्धक, हृद्य और पित्त तथा कफ को नाश करने वाली है। भा० पू० १ भा०। मद० व० १।

मधुर, कटुपित्तनाशक, शुक्रवर्द्धक और रसायन एवं बल्य है। रा० नि० व० ३।

यूनानी हकीम आकाशबेल को उष्ण व रूक्ष मानते हैं। **हानिकर्त्ता**—मूर्च्छाजनक, तृष्णाजनक और वात प्रसन्नताजनक है।

प्रभाव—अकासबेल के जो गुण वैद्यक ग्रन्थोंमें वर्णित हैं अफ़्तीमून के प्रायः वेही गुण यूनानी ग्रन्थों में पाए जाते हैं। यही क्यों, प्रसिद्ध यूनानी निघण्टु **मख़्ज़नुल् अद्वियह्** के लेखक मीर-मुहम्मदहुसेन ने तो इसके गुण अफ़्तीमून के सदृश ही वर्णन किए हैं। अतः सर्व सम्मत से इसके मुख्य मुख्य गुणधर्म निम्न प्रकार हैं—परिवर्तक, पित्त, कफ, तथा आमनाशक अर्शोघ्न, मस्तिष्कविकार, यथा—उन्माद मूर्च्छा आदि को लाभदायक, रक्तशोधक, हृदय को हितकारी, शुक्र-वर्धक, नेत्र रोगनाशक, अग्निकारक, पिच्छिल, ग्राही, बलकारक, रसायन और दिव्यौषध है। इसका वाह्य प्रयोग (पुल्टिस रूप में) स्थानीय वेदनाशामक तथा कण्डुघ्न है।

स्वाद—मधुर, कड़वा, कषैला और चरपरा।

औषधनिर्माण—शीतकषाय, क्वाथ, चूर्ण और पुलटिस। **मात्रा**—४ रत्ती से १॥ तोला तक।

दर्पनाशक—सेव, कतीरा, बादामरोग़न।

प्रतिनिधि—काली निशोथ या बिसफ़ायज।

अकाशबेल द्वारा भस्म प्रस्तुत करना—हरी अकाशबेल का पानी १० तो० निकाल कर चांदी के पत्र १ तो० डालकर खरल में घोटें। शुष्क होने पर टिकिया बना कर छोटे शरावों में बंद करके पांच सेर उपलों की आंच दें। शीतल होने पर श्यामआभायुक्त भस्म निकाल लें। **मात्रा**—एक चावल से एक रत्ती तक, उपयुक्त अनुपान के साथ सेवन करें।

अकास akása–हिं० पुं० संज्ञा दे० **आकाश**।

अकासकृत akásakrita–हिं० संज्ञा पुं० [सं० आकाशकृत] बिजली। **अनेक०**।

अकासनीम akásaníma–हिं० संज्ञा पु० [सं० आकाशनिम्ब] एक पेड़ जिसकी पत्तियाँ बहुत सुन्दर होती हैं।

अकासबेल विलायती akása-bela-viláyatí –हिं० अकाशबेल भेद। **अफ़्तीमून**–अ०। (Cuscuta Reflexa, *Roxb.*)

अकासमुग्री akása-mugrí–कों० सन्ध्याराग, कृष्णकली, **गुल–अब्बास**–फ़ा०। Four o' clock flower (Mirabilis Jalappa, *Linn.*) । **इं० मे० मे०**।

अकाहुली akáhulí–हिं० ओ० अंधाहुली, अंधपुष्पी (Trichodesma Indicum) –**ले०**।

अक़ित aqit–अ० उस पनीर को कहते हैं जो दही के पानी टपकाने के पश्चात् शेष रहता है। उसमें लवण मिलाकर शुष्क कर लेते हैं।

अक़ितन aqitan–**यु० या यम०**मुद्ग, मूँग–हिं० (Phaseolus Mungo, *Linn.*)

अकित मकित akitmakit–अ०, सिरं०, करञ्जुवा, करञ्जो, कटकरञ्ज–हिं०। कुबेराक्षिफलम्–सं०। **ख़ायहे इब्लीस**–फ़ा०। Cœsalpinia (guilandina) bonducella, *Linn.* (Nut of Bonduc-nut.) **स० फा० इं०। फा० इं०।**

अक़िब äaqib–अ० (१) पार्ष्णि, एड़ी–हिं०। पाश्नह–फ़ा०। (Calcis, Heel. (२) संधिबंधन, स्नायुरज्जु–हिं०। रिबात–अ०। (Ligament)

अकिलबहार akilabahára–हिं० संज्ञा० पु० [अ० अक़ीकुल बह्] वैजयन्तीका पौधा व दाना।

अकिल्विष akilvisha–हिं० वि० [सं०] (१) पवित्र (२) निर्मल, शुद्ध।–संज्ञा पु० शुद्ध-प्राणी, पापशून्य मनुष्य।

अक़ीक़ aqiqa–हिं० संज्ञा पु० } अगेट(Agate)
अक़ीक़ äaqiq–अ० } –इं० यह एक प्रकार का खनिज पत्थर है जो कई प्रकारका होता है इनमें यमनी,पीताभायुक्त,रक्त वर्णीय इसके पश्चात पीत पुनः श्वेत वर्णीय, सर्वोत्तम होता है। किसी किसी हकीम के विचार में यकृत के रंगका अर्थात लोहित वर्णवाला सर्वोत्तम होता है। यह बंबई, बांदा और खंभात से आता है। इसकी कई किस्में यमन और बग़दाद से भी आती हैं।

गुणधर्म–अक़ीक़ हृद्य है और मूर्छा, शोक, रक्तस्राव, प्लीहा और यकृतके सुद्दों तथा अश्मरी को नष्ट करने वाला है। इसे नेत्र में लगानेसे ज्योति की वृद्धि होती है। इसको भस्म–उपर्युक्त रोगों के अतिरिक्त उत्तमाङ्गों को बलप्रद, कामोद्दीपक और शुक्रको गाढ़ा करने वाली है। ज्वरों में इसका उपयोग लाभदायी सिद्ध होता है। पुरातन सूज़ाक तथा व्रणों को पूरित करता है।

अक़ीक़ भस्म बनाने की विधि—

(१) अक़ीक १ तो०, कमलगट्टा ऽ॥, कमलगट्टा को कूटकर एक टाटपर आधा बिछा दें और अक़ीक़ की समूची डली उसपर रखकर शेष आधा ऊपर बिछा दें। टाट का गुलूला सा बनाकर १० सेर उपलों की आंच दें। एक आंच में भस्म होगी अन्यथा दो तीन आंच और दें। उचित तो यह है कि अक़ीक़ को गुलाबार्क में १०–१५ बार बुझाव देलें जिससे वह टुकड़े टुकड़े हो जाय। इसे गुलाबार्क या बेदमुश्क में खरल करके टिकिया बनाकर आग दें। अत्युत्तम भस्म प्रस्तुत होगी। मात्रा–१ से २ रत्ती तक।

गुण—हृद्रोग विशेष कर मूर्च्छा तथा पुरातन शुष्क कासको अत्यन्त लाभ पहुँचाता है। रुधिरको बन्द करता है। उचित अनुपानके साथ सेवन करें।

(२) शीशम की छाल १ छटांक, १ तोला अक़ीक़ श्याम, एक बर्तन में उक्त छाल अक़ीक के टुकड़ों के नीचे ऊपर देकर बन्द कर कपड़ मिट्टी करके एक मन उपलों की आंच दें। यदि फूल न हो तो एक आंच और दें।

गुण—आमाशय को बलप्रद, कामोद्दीपक, हृदय व मस्तिष्क को बलप्रद (हृद्य व मेध्य), क्षुधावर्धक और पूयमेह को लाभकारी है।

(३) शुद्ध उत्तम रंगरहित अक़ीक को अर्क बेदमुश्क और केवड़ा में इतना बुझाएँ कि टुकड़े टुकड़े होजाय फिर उसी अर्क केवड़ा और बेदमुश्क से दो पहर खरल करके टिकिया बना लें और गुलाब के कल्क में लपेट कर शराव सम्पुट कर २०–२५ सेर उपलों की आंच दें। एक वा दो आंचों में फूल होजाएगा। मात्रा–एक रत्ती तक।

गुण—उत्तमांगों को बल प्रदान करने, विशेष कर मूर्च्छा, के लिए उत्तम है।

नोट—चूँकि यह एक अत्यन्त कठोर पत्थर है अस्तु इसके भस्मीकरण में ऐसा प्रयत्न करें कि जिसमें यह बिल्कुल आटे की तरह बारीक पिस जाय और इसमें करकराहट अवशेष न रहे। उक्त अभिप्राय हेतु इसको बूटियों के जल में देर तक खरल कर तीक्ष्णाग्नि देते रहें।

अक़ीक़ह äaqiqah–अ० नवजात शिशु के शिर के बाल।

अक़ीक़ुल्बहार äaqiqul bahár–अ० जयापुष्प, जयन्ती (Sesbania aculeata, *Pers.*)

अकीख़ akíkh–अ० रोदे, आंत्र, तांत. (Intestines)

अक़ीदुल् अनब äaqídul äanab–अ० मद्यभेद–हिं०। मैफ़ख़्तज–अ०। (A kind of wine)

अकीदून akídún–रू० सुम, खुर। हूफ़ (Cloven, A hoof)–इं०।

अक़ीम् āaqím–अ० बन्ध्या, बाँझ चाहे पुरुष हो अथवा स्त्री। स्टेराइल (Sterile)—इं०।

नोट—बाँझ पुरुष वह है जिसके वीर्य में गर्भोत्पादक शक्ति न हो और बन्ध्या स्त्री वह है जिसमें गर्भ न ठहरे। अक़ीम शब्द यद्यपि पुलिङ्ग वा स्त्रीलिङ्ग दोनों के लिए प्रयोग में लाया जाता है, तथापि कभी स्त्रीलिङ्ग के लिए अक़ीमह् शब्द को उपयोग में लाते हैं।

अक़ीमह् āaqímah–अ० बन्ध्या स्त्री। स्टेराइल वुमन (Sterile woman)—इं०।

अकीमूज़ akímúz–अ०

अकीमूस akímús

यह शब्द एकिमोसिस (Echymosis) से व्युत्पन्न है, जिससे वे चिह्न अभिप्रेत हैं जो चोट प्रभृति के कारण अधः त्वचा में रक्त के जमने से रक्त अथवा नीलवर्ण के पड़ जाते हैं, जैसे-नेत्र का लाल विन्दु।

अक़ीर āaqír–अ० तिक्ततम, अत्यन्त कटु (कड़ुआ)। दी मोस्ट बिटर (The most bitter)—इं०

अकीरैन्थस हाली लीव्ड achyranthus holy leaved–इं० हरकुच काँटा–बं०।

अ (ए) कीरैन्थीस आइलिसिफोलिया (achyranthes Ilicifolia)—ले० हकुँच काँटा, हरकत।

अ (ए) कीरैन्थीस आल्टर्निफोलिया (achyranthes alternifolia)—ले० अजाश्रृंगी, गंगाटी (-तियः), उतरन–हिं०। इं० हैं गा०।

अ (ए) कीरैन्थीस आल्टर्नेट लीव्ड achyranthes alternate leaved–इ० गंगाटी, उतरन—हिं०। इं० हैं गा०।

अ (ए) कीरैन्थीस ऑब्ट्युज़ीफोलिया achyranthes obtusifolia, *Lamb*.–ले० (The prickly chaff flower) अपामार्ग—हिं०। इं० मे० प्लां०।

अ (ए) कीरैन्थीस इण्डिका achyranthes Indica, *Roxb*.–ले० अपामार्ग –हिं०। इं० मे० प्लां०।

अ (ए) कीरैन्थीस एस्परा achyranthes aspera, *Linn*.–ले० अपामार्ग, लटजीरा –हिं०। रू० फा० इं०। इं० मे० मे०। इं० मे० प्लां०। मेम०। इं० हैं० गा०। फा० इं० २ भा०।

अ (ए) कीरैन्थीस, क्लाइमिंग achyranthes, climbing)–इं० (A Scandens *Roxb*.) इं० हैं० गा०।

अ (ए) कीरैन्थीस, ट्रिएण्ड्रा achyranthes, triandra, *Roxb*.–ले० माँची, शालच्छद। इं० हैं० गा०।

अ (ए) कीरैन्थीस, थ्री स्टेमेण्ड achyranthes, three stamened, *Roxb*. –इं०, माँची, शालच्छद। इं० हैं० गा०।

अ (ए) कीरैन्थीस, रफ achyranthes, rough.–इं० अपामार्ग, अगरा (-रों), हलीम, महूत। इं० हैं० गा०।

अ (ए) कीरैन्थीस, लैनेटा achyranthes lanata, *Roxb*.–ले० चाया। इं० हैं० गा०।

अ (ए) कीरैन्थीस लेपेरिया achyranthes Laparia–ले० रक्तापामार्ग, लाल-ओंगा।

अ (ए) कीरैन्थीस वली achyranthes, wooly–इं०, चाया इं० हैं० गा०।

अ (ए) कीरैन्थस स्पिकेटा achyranthes Spicata, *Burm*.–ले० अपामार्ग The prickly chaff flower–इं०। इं० मे० प्लां०।

अकीरैन्थस होली लीव्ड achyranthes holyleaved–इं० हरकुच काँटा–बं०।

अक़ीला āaqílá गौरह।

अकीलिया कस्पिडेटा achillea cuspidata, *D. C.*–ले०, बरआसिफ़-कछ, हिं० बाज़ा०। रोज़मरी-बरव० इं० मे० प्लां०।

अकीलिया टर्मिका achillea termica–ले० क़ुन्दस–यु०। जुन्दबेदस्तर (Castoreum.)

अकीलिया मॉस्केटा achillea moschata -लै० यह आल्पपार्वतीय पौधा है जिसमें कस्तूरी-वत् गंध होती है। इसमें उग्र स्वेदजनक तथा आरोग्यकारक प्रभाव होता है। फा०इं०२भा०।

अकीलिया मिलीफॉलिअम् achillea millefolium, *Linn.*-लै० बरिंजासिफ़, बूमादरान-फ़ा०। गोमाद्र-चोपन्दिया-काश०। बरबर-मि०। स्टुवर्ट महोदय के कथनानुसार यह बाज़ार में बिकने वाला एक पौधा है। इसके पुष्प और पत्र औषध कार्य में आते हैं। इं० मे० मे०। फा० इं० २ भा०। मेमो०।

अकीलिया सेन्टोलीना-achillea santolina, *Linn.*-लै० बरिंजासिफ़-फ़ा०। फा० इं० २ भा०।

अकीलीइक एसिड achilleic acid-इं० बरिंजासिफ़ या विषका तेज़ाब (Aconitic acid) फा० इं० २ भा०।

अकीलीईन achilleine-इं० यह अकीलिया मॉस्केटा द्वारा निर्मित एक क्षारीय सत्व है। फा० इं० २ भा०।

अकीलीन achillein-इं० रक्ताभायुक्त धूसर वर्ण का सत्व जो बरंजासिफ़ द्वारा प्राप्त होता है। फा० इं० २ भा०।

अकीलीस aqilis—यु० फ़रञ्जमिस्क,शामनुलसी, अस्वल (Ocimum gratissimum *Linn.*)-लै०।

अकीसून aqisún-यु० एक अप्रसिद्ध कण्टकमय बूटी है जो बादावर्द के सदृश होती है, और इन्दलुस (Spain) में उत्पन्न होती है।

अकुजीमडु akuji madu-ते० थूहर, सेंहुड़, (Euphorbia Nerifolia, *Linn.*) इं०मे० मे०।

अकुप् akup-फ़ा० मुख के भीतर, मुख की नाली (Œsophagus)

अकुप्यम् akupyam-सं० क्ली० स्वर्ण, सोना gold (Aurum) हला०।

अकु (-कू) माली aqu,-qú-máli-अ० माउल् अस्ल। शहदजल, शहद का पानी या अन्य पदार्थ जिसमें शहद को हल करके जोश नहीं दिया जाता। हनीवाटर (Honey water)-इं०।

अकुरु akuru--सिंगा० गुड़-हिं०। कन्द-फ़ा०। गुड़-द०। जैगरी (Jaggery of sugar cane)-इं०। स० फा० इं०।

अकुरु अरक akuru-arak-सिंगा० गुड़ की शराब-हिं०। गुड़ की दारू, गुड़की शराब-द०। (Liquor of Jaggery) स० फा० इं०।

अकुलः akulah-सं० त्रि० (१) निरस्थि द्रव्य, बीजशून्य। च० चि० १ अ०। (२) लम्ब कर्णहीन मध्यम अश्व, यथा—"लम्बकर्णोऽजटश्चैव अकुलः परिकीर्तितः। जय० ६ अ०। (३) कुल रहित, परिवार विहीन। जिसके कुल में कोई न हो। (४) बुरे कुल का। अकुलीन। नीच कुल का।

अकुलाना akulána-हिं० क्रि०अ० [सं० आकुलन] (१) व्याकुल होना, व्यग्र होना। (२) विह्वल होना, मग्न होना, लीन होना, आवेश में आना।

अकुलिनी akulini-हिं० वि० स्त्री० [सं० अकुलीना] जो कुलवती न हो, कुलटा, व्यभिचारिणी।

अकुलीन akulina-हिं० वि० [सं०] बुरे कुल का, नीच कुल का, तुच्छ वंश में उत्पन्न, कमीना, क्षुद्र।

अक़ुल्लबलसाँ aqulla-balasán-अ० रोग़ने बलसाँ-फ़ा०। बलसाँ का तेल-हिं०, द०। Balsamum, var.of (Blasam of Necca or Balm cf Gilead.)-लै०।

अक़ुवोयलासमूँ aquvoyalá-samún-अ०, दोहनुल बलसाँ, रोग़ने बलसाँ-फ़ा०। बलसाँ का तेल--हिं०, द०। (Balsamum)

नोट—यद्यपि उपर्युक्त शब्द, वस्तुतः बालसम ऑफ़ मक्का (Balsam of Mecca) के पर्याय हैं, पर वे भारतीय ऑइल आफ़ कोपैबा (Oil of Copaiba India) के लिए भी प्रयुक्त होते हैं। स० फा० इं०।

अकुशलं akuṣhalam–सं० क्लीं० } अशुभ,
अकुशल akuṣhala–हिं० संज्ञा पु० }
अहित, बुराई, (Evil or misfortune.) वि०(not clever or skilful) जो दक्ष न हो, अनिपुण, अनाड़ी ।

अकूटः akúṭah–सं० पु० फलवृक्ष विशेष, आगई रत्ना० ।

अक़ूनीतून aconitún–यु० (१) अतीस, अतिविषा (Aconitum Heterophyllum, *Wall.*) । (२) वत्सनाभ (Aconitum Napellus, *Linn.*) । (३) वत्सनाभ वर्ग ।

अक़ूनैतस aqúnaitas–यु० ख़ानिकुन्नमिर –अ०। विष,मीठा ज़हर, वत्सनाभ (aconitum Napellus, *Linn.*)

अक़ूनोस्यून aqúnosyún–यु० र.ईयुलअबल । एक बूटी है जिसके लक्षण में मतभेद है ।

अकूपार akúpára–हिं० संज्ञा पु० } (१)कच्छप,
अकूपारः akúpárah–सं० पु० }
कछुआ (A tortoise in general.) श्रि० का० (२) बड़ाकछुआ । वह कच्छप जो पृथ्वी के नीचे माना जाता है । (३) पत्थर वा चट्टान । (४) समुद्र (The sea.) (५) सूर्य (The sun.)

अक़ूमार्शून aqumarshún–यु० जंगली सौंफ (Wild anise.)

अक़ूरून aqúrún–यु० वज, वंच (Acorus calamus, *Linn.*)

अक़ूल āaqúl-अ० (१) बुद्धिमान मनुष्य (*Idem*) (२) संकोचक औषध (astringent Medicine.)

अक़ूसालियून aqúsáliyún–यु० करफ़स नब्ती जो कि बाग़ी से बड़ा होता है ।

अकृच्छ्र akrichchhra–हिं० संज्ञा पु० [सं०] (१) क्लेश का अभाव (Absence of difficulty.) (२) आसानी । सुगमता । असंकोच वि० (१) (Free from difficulty.) क्लेश शून्य । जिसे किसी प्रकार का संकोच व कष्ट न हो (२) आसान । सुगम ।

अकृत akrita–हिं० वि० [सं०] (१) (Not done or prepared.) (२) स्वयंभू (३) प्राकृतिक (४) मन्द, कर्महीन (One who had done no work.) संज्ञा पुं० (१) कारण, (२) मोक्ष, (३) स्वभाव । प्रकृति ।

अकृत काल akrita kála–हिं० वि० [सं०] जिसके लिए कोई काल नियत न हो । जिसके लिए कोई समय न बाँधा गया हो । बेमियाद ।

अकृताख्ययूषः akritákhya-yúshah सं० पु० लवण, स्नेह, कटु आदि पदार्थ वर्जित यूष, यह लघु होता है । वै० निघ० ।

अकृतार्थ akritártha–हिं० वि० [सं०] अपटु, अकुशल, कार्य में अदक्ष ।

अकृत्रिम akritrima–हिं० वि० [सं०] बे बनावटी, आपसे उत्पन्न, प्राकृतिक, स्वाभाविक, प्रकृतिसिद्ध, नैसर्गिक ।
(२) असली, सच्चा, वास्तविक, यथार्थ, (३) हार्दिक । आन्तरिक ।

अकृथित क्षीरम् akrithita-kshiram–सं० क्लीं० कच्चा दुग्ध । यह कफ कुपित करता है और भारी होता है । वै० निघ० ।

अकृदुद्वाह Akri dudváha–हिं०वि० (Unmarried) अविवाहित ।

अकृष्टपच्य akriṣhṭa pachya } –हिं०
अकृष्ट रोही akriṣhṭa rohi }
वि० [सं०] [स्त्री० अकृष्टपच्या, अकृष्टरोहिन्] जो बिना जोते पैदा हो,जंगली (Growing exuberant or wild.)

अकेन्थस इलिसिफोलिआ, अस acanthus Ilicifolius, *Linn.*–ले० हरकुच काँटा –हिं०बं०। हरिकपा–सं०। मोरेंडा–गो०। मारण्डी –मह०। पैना स्कुल्लीभा–मल० (Holly,-ly leaved acanthus.) इं०मे०मे० १ इं० हैं० गा०, फा० इं० ३ भा० ।

अकेन्थस होल्ली लीह्व्ड acanthus holly leaved–इं० हरकुच्च काँटा–हिं०, बं० । इं० मे० मे०, इं० हैं० गा०, फॉ० इं० ३ भा० ।

अकेन्थेसीई acanthaceæ–ले० अड़ूसावर्ग. अरूसे के वर्ग की औषधियाँ । The adusa order (acanthad's) ।

अकेम्पे पेपिलोसा acampe papillosa, *Lindl.*–ले० इसकी जड़ औषध कार्य में आती है । मेमो० ।

अकेलिफा इण्डिका acalypha Indica-ले०
अकेलिफा इण्डियन acalypha Indian-इं०
कुप्पी, श्वेतबसन्त ।

अकेलूचाँग गुल akelú-chánggula–ते० कुड़ा, कुटज, कोरैया (Holarrhena-antidysenterica, *Wall.*) ।

अकेशा akeshá–सं०स्त्री० जयन्ती, रवासन, जैत –हिं० (Sesbania Ægyptiaca, *Pers.*)

अकेशिया acacia–इं० फलीवर्ग (Leguminasæ) के माइमोसी (Mimosæ) उसवर्ग की औषधियाँ जिनसे समग़ेअरबी प्राप्त होता है । समग़े अरबी 'बबूल का गोंद' (Gum arabic)

नोट—प्राचीन अंगरेजी में इसका उच्चारण अकाकिया था, किन्तु अर्वाचीन अंगरेजी में अकेशिया है ।

अकेशिया—अरेबिका acacia—arabica, *Willd.* ले० बबूल (र), कीकर-हिं० (Babool tree) । मे० मॉ० । स० फॉ० इं० । देखो–बब्बुरः ।

अकेशियाइन्ट्सिया acacia Intsia, *Willd.* ले०, अईई, अदई की बेल–सता० । कर्तार-कुमा० । कांदूजनुम–सन्ता० । कुन्दुरू–कोल० हर्रारी–ने० । पायिरिक, उम्राभिक–लेप० । कोरिण्टा, कोरेण्डम्–ते० । चिल्दारी–मह० । माइमोसा इन्ट्सिया (Mimosa Intsia *Linn. Roxb.*)–ले० ।

अकेशिया बब्बुर वर्ग ।

(*N. O. Leguminosæ.*)

उत्पत्ति स्थान—हिमालय के उष्ण प्रदेश, पूर्वी और पश्चिमी प्रायद्वीप । गुणधर्म–संतालों की स्त्रियां अनियमित ऋतु (Deranged courses) में इसके पुष्प का उपयोग में लाती हैं । इं० मे० प्लां० । इसकी छाल तथा पत्र रंग के काम में आते हैं । मेमो० ।

अकेशिया कॉन्सिन्ना acacia Concinna, *D. C.*)–ले० सातला, अईल, रस्सौल–हिं० अव० । शातला, सप्तला, चर्मकषा–सं० । फली या छीमी के नाम (The Pods)–सीकी (के)काई–द्र० । शीका, शीकाकाई–ता० । शीकाय, चीकाय, गोगु–ते० । चीनिक्–काय–मल० । शीगे–कायि–कना० । कोचै, बनरीठा–बं० । शीका, तेलसेङ्गा–मह० । केन्मोन-सी, केन्मोन पेङाङ्, केङ्गोन-ति–बर० । अ० रूयुगेटा (Acacia Rugata)–ले० । स० फॉ० इं० । इं० मे० प्लां० ।

अकेशिया कॉर्टेक्स acacia Cortex–ले० बबूर त्वक्, बबूल की छाल–हिं० । (acacia bark) । इं० मे० प्लां० । बी० पी० । देखो–बब्बुर ।

अकेशियाकेकोउ acacia cachou, *Willd.* –फ्रां० खैर वृक्ष, खदिर वृक्ष, कत्था का पेड़ –हिं० । (Acacia Catechu, *Willd.*) फॉ० इं० १ भा० ।

अकेशिया कैटेशू—श्यू acacia Catechu, *Willd.*–ले० खदिर वृक्ष, खैर का पेड़, खैर, कत्था खैर, खैर बबूल–हिं० । (Catechu tree, Cutch) इं० मे० प्लां० । फॉ० इं० १भा० । स० फॉ० इं० ।

अकेशिया गम Acacia gum —इं०
अकेशियागम्माई Acaciagummi —ले०
समग़े अरबी, बबूल, का गोंद बबुर निर्यास, (gum acacia) इं० मे० मे० । बी० पी० देखो बब्बुरः ।

अकेशिया जैक्कोमॉण्टियाइ acacia Jaquemontii, *Benth.*-लै० कीकर, बबुल, बमुल, बब्बिल-पं० । हज़्ज-अफ़ा । रतबौली-गु० । मे० मा० । देखो-बब्बुरः ।

अकेशिया डी अरबी acacia d' arabie -फ्रां० बबूल, बब्बुर । (acacia arabica, *Willd.*) फॉ० इं० १ भा० ।

अकेशिया डीकरेन्स acacia decurrens, *Willd.*-लै० इसकी छाल रंग के काम में आती है । मेमो० ।

अकेशिया नाइलेटिका acacia nilatica, *Delile.*—लै० क़रज़ वृक्ष । फॉ०इं० १ भा० ।

अकेशिया पाइक्नेन्था acacia pyenantha, *Benth.*—लै० अरि विरुबूल । इं०मे०प्लां० ।

अकेशिया पॉलीअकन्था acacia Polyacantha—लै० खदिर वृक्ष (Catechu tree.) इं० मे० मे० ।

अकेशिया पिनेटा acacia Pennata, *Willd.*—लै० आरि, बिरुबूल-हिं० । (Mimosa Pennata) इं० मे० प्लां० ।

अकेशिया फार्नेशियाना acacia Farnasiana, *Willd.*)-लै० (अ) इ रिमेद, दुर्गन्ध खैर, गृहकीकर (Farnesiana Mimosa, *Linn.*) लै० इं० मे० प्लां० ।

अकेशिया फेरुगीनिया acacia ferruginea, *D. C.*-लै० खैर-नेपा०, अनसण्ड, अनचन्द्र और बुनि ते० शीमै-वेलवेल, वेलवीलम-ता० नोट – तेल गुनाम "बुनि" तामिल "वन्नि" के साथ मिलाकर प्रायः भ्रम कारक बना दिया जाता है, जो वस्तुतःसमी(Prosopis spicigera) का नाम है । देखो-बबुर । स० फॉ० इं० ।

अकेशियाबार्क acacia bark-इं० बबूल का छाल, बबुर त्वक् (acacia cortex.) । देखो-बबुर ।

अकेशिया मॉडेस्टा acacia modesta, *Wall.*-लै० पलोस-अफ़० । फुलही-पं० । मेमो० । कारटोसरियो-गु० ।

उत्पत्तिस्थान—पश्चिमी और मध्य हिमालय मूल ।

प्रयोगांश—गोंद । देखो-बबुर ।

अकेशियामॉलिस् acacia mollis-लै० लाकी (acacia soft) इं० है० गा० ।

अकेशिया रयुगेटा acaia rugata-लै० सातला-हिं० । acacia concinna, *D. C.* इं० मे० मे० ।

अकेशिया लेण्टिक्युलेरिस् acacia lenticularis, *Wall.*-लै० खिन-बर्ना० कुमा० । मेमो० ।

अकेशिया लेट्रोनम् acacia latronum, *Willd.*-लै० मेष-हिं० । पाकीतुम्म-ते० । मेमो० ।

अकेशिया ल्युकोफ्लोआ acacia leucophlaea, *Willd.*-लै० रीवाँ, सुफेद-कीकर-हिं० । श्वेत बबूर वृक्ष-सं० । उज्लो कीकर पट्ट की कीकर, शराब की कीकर-द० । सफेद बाबूल-बं० । वेल--वेल, वेल-- वेलम्-ता०, तेल्ल-तुम्म -ते० । वेल-वेलम्-मला० । बिलि जालि मरा -कना० । हेबुर, पाँढर, पाँढरियो बावलिचेभाड -मह० । सफेद बावल-गु० । नन्लौनकियिङ्-अफियु, तनोङ्-बर० । अरिङ्ग-राज० ।

उत्पत्ति स्थान—पञ्जाब के मैदान मध्य तथा दक्षिण भारत और राजपूताना ।

प्रयोगांश--त्वचा । देखो-"बबुर" ।

अकेशियावेरा acacia vera; *Willd.*-लै० क़रज़ वृक्ष । फॉ० इं० १ भा० । शौकुल्त क़ह् शौकुल--एअराबियह्, शौकुल--मिश्रियह्-अ० ।

नोट—अन्तिम तीन नाम मिश्र तथा अरब में पाए जाने वाले बबूर वृक्ष के कुछ अन्य भेदों के लिए भी प्रयोग में लाए जाते हैं । फॉ० इं० १ भा० । स० फॉ० इं० ।

अकेशियावैलीक्याना acacia Wallichiana -लै० कत्थाका पेड़, खदिर वृक्ष । इं० मे० मे० ।

अकेशिया समा acacia suma-लै० स (श) मी, छोकरा । सई-बं० (Proscpis Spicigera White Mimosa.) फॉ० इं० ३ भा० ।

अकेशिया सॉफ्ट acacia soft–इं० लाकी। इं० हिं० गा०।

अकेशियासैनेगल acacia senegal, *Willd.* –लै०, खोर–सिंध। कुमता–राजपु०।
उत्पत्ति स्थान—यह एक कंटकमय छोटा वृक्ष है जो सिंध और अजमेर में उत्पन्न होता है।
नोट—यह अफरीका के सेनेगल प्रांत में होने वाला 'बब्बुर' ही है।
प्रयोगांश–निर्यास।

अकेशिया सुन्दड़ा acacia sundra *D. C.* -लै० नला मंड़ा-ते०। इसका गोंद काम में आता है। मेमो०।

अकेशियास्टेनोकार्पस acacia stenocarpus–लै० बबूर भेद। इसके पत्र द्वारा एक नया स्पर्शाज्ञता जनक क्षारीय सत्व प्राप्त होता है, जिसको **स्टेनोकार्पीन** (Stenocarpine) कहते हैं। इसके दो प्रतिशत के घोल में से दो बूंद नेत्रों में टपकाने से यह उक्त भाग को पूर्णतः अवसन्न कर देता है। इसका उपयोग करने से ५ मिनट पश्चात् विना कष्ट अनुभव किए नेत्र कनीनिका में सूची चुभाई जा सकती तथा उसे खुरचा एवं बल दिया जा सकता है। १० से १५ मिनट अनन्तर कनीनिका विस्तार उपस्थित होता है, और क़रीब क़रीब बत्तीस घण्टे तक स्थिर रहता है। इससे नेत्रपिण्ड का तनाव कम होता है। अस्तु, हरित मोतियाबिन्द में लाभ दायक होता है। इसी भांति त्वचा के किसी भाग को स्थानिक रूप से अवसन्न किया जा सकता है। पी० वी० एम०।

अकेशिया स्पेसीओज़ा acacia speciosa, *Willd.*–लै० सिरस का पेड़–हिं०। शिरीषः -सं०। शिरिस का झाड़-द०। (albizzia lebbeck) इं० मे० मे०।

अकोटः akoṭah सं० पुं०–सुपारी–गुवाकः, पूग (गी)–सं०। (areca catechu)।

अकोटा akoṭá–कना० कोसम। गौसम्–पं० हिं०। (Schleichera Trijuga, *Willd.*) लै०। इं० मे० प्लां०।

अकोडः akoḍah–सं०। अखरोट (Juglans regia.)।

अकोड़गन्धः akoragandhah–सं० हींग हिंगु; रामठम् (assafoetida)।

अकोढ़ई akorhai–हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० अक्रूर] सरल, मुलायम वह भूमि जो सींचने से बहुत जल्द भरजाए। वह भूमि जिसमें पानी ठहरा रहता हो।

अकोंद akonda–हिं० मदार आक (Calotropisgigantea, *R. Br.*) मदार सं० फॉ० इं०।

अकोरकपरायुः akorakaparáyuh–सं० पु० (chorion Leave)।

अकोरा akorá–यु० चाँदी रजत (Silver) (Argentum)–लै०।

अकोरिया akoriyá–उ० प० सू०, भलियून।

अकोरीटीन acoretine–इं० बचीन; बचसत्व कोलीन (choline)–इं०। यह मधु सदृश तरल ग्ल्युकोसाइड (Glucoside) है जो अत्यन्त तिक्त और सुगन्धित होता है तथा मद्यसार (alcohol), क्लोरोफ़ॉर्म और ईथर में घुल जाता है, और शर्करा तथा उड़नशील तेल रूप में पृथक् हो जाता है। इं० मे० मे०।

अकोरीन acorina–इं० यह एक उड़नशील तेल है जो बच में वर्तमान होता है। देखो–बच। इं० मे० मे०।

अकोल akola–द०, हिं० काला अकोला, ढेरा भेद (alangium hexapetalum, *Lam.*) स० फॉ० इं०। देखो–अंकोल।

अकोला akolá–हिं० संज्ञा पु० (सं० अंकोल) ढेराका पेड़–हिं०। अंकोल, ढेरा (alangium Decapetalum, *Lam.*)–स०फॉ०इं०।

अकोविद akovida–हिं० संज्ञा पु० (सं. अग्र) ऊख के सिर पर की पत्ती, अगोला, अगौला, गेंड़ा।

अकौआ akouá–हिं० (१) संज्ञा पु०(सं०अर्क) मदार, आक (Calotropis gigantea,

R. Br.) (२) कौआ, लालरी, घंटी, (Uvula.)

अकौल,-ला akoul,-lá-हिं०, ढेरा, अंकोल (alangium Decapetalum *Lam.*)

अक़ौस aqous अ० कुबड़ा, कुब्ज, जिसका पृष्ठ बाहर निकल आया हो। हञ्चबैक्ड (hunch backed)-इं० ।

अकं akam-सं० क्ली० संज्ञा दुःख (Pain)

अक्अब् akāab-अ० (ब०व०), कअ्ब (ए०व०) गुल्फ, टखने-हिं० वह स्थान जहाँ पर पैर सामने को और पीछे को मुड़ सकता है (ankles)

अक्अम् aqāam-अ० सपाट (चिपटी) नासिका वाला (Flat-nosed)

अक्असः aqāasa-अ० उन्नतोदर वातीय अर्थात् वह जिसका वक्षःस्थल बाहर को निकला हो और पृष्ठ भीतर को दबा हो।

नोट—अहदब और अक्अस का भेद अहदब में देखो।

अ (-इ) क्आद a-i-qāād -अ० लुञ्जापन, लंगड़ापन अथवा अवयवों का ऐसा विकार जो बैठने को बाध्य करे (lameness.)।

अक्ऊमा aqāúmá-अ० अक्ऊमा एक प्रकार का चक्षुः क्षत। विशेष कर यह कठिनता पूर्वक अच्छा होता है। यह पपड़ी के समान होता तथा झिल्ली को खा जाता और नेत्र को विनष्ट कर देता है।

अक्क़ह āaqqah-फ़ा० अक्अक़ (महुका पक्षी)

अक्क़त् āaqqat-अ० वह उष्ण रात्रि जिसमें वायु सर्वथा बन्द हो।

नोट—ग़म्म, रम्ज़ाअ्, मक़्रूह् और इहतिदाम् इनमें से अक्कह् वायुके रुकने और उष्णताधिक्य को कहते हैं। ग़म्मका अर्थ कठिन गर्मी है और मक़्रूत तथा इहतिदामइसके पर्याय हैं। रम्ज़ाअ् ऐसी कठिन उष्णता एवं उत्ताप को कहते हैं जिससे कंकरी आदि भी जल उठे।

अक्कलकरा akkala-kará-मह० } -हिं० ।
अक्कलाकरे akkalá-kare-कना० } अकरकरा-
अक्कलाकरो akalá-karí-कना० }
(Pyrethri Radix.) फॉ० इं०। रू० फॉ० इं०।

अक्का akká-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] (A mother) माता। माँ। नोट—संबोधन में इस शब्द का रूप "अक्के" होता है।

अक्क़ार āaqqár-अ० (ए० व०) अक़ाक़ीर (ब० व०) औषधियाँ जड़ी बूटी-हिं०। हर्ब (Herb.)-इं०। स० फॉ० इं०।

अक्कारकारम् akkára-káram-ते०, ता० अकरकरा-हिं० (Pyrethri Radix.) रू० फॉ० इं०।

अक्काल akkála-अ० इसका शाब्दिक अर्थ भक्षक अर्थात् खाजाने वाला है, किन्तु आयुर्वेद की परिभाषा में उस औषध को कहते हैं जो अपने तीक्ष्ण एवं भेदक गुण की अधिकता के कारण अवयवों के सार अंशों को नष्ट कर दे। वह औषधि जो क्षत कारक एवं गलाने वाले गुण के कारण मांस को खा जाय और उसके सार भाग को क्षीण कर दे, यथा चूना और हड़ताल। करोसिव (Corrosive), एस्कैरोटिक (Escharotic)-इं०।

अक्किकरुका akkikaruká-मला० } -अक-
अक्किराकारम् akkirákáram-ता० } रकरा
अक्किलाकारम् akkilákáram-मला० } -हिं०
(Pyrethri Radix)-रू० फॉ० इं०। फॉ० इं०।

अक्की aakki-कना०, चावल (Rice) रू० फा० इं०।

अक्कीसारायि akkísaráyi-कना० चावल की दारू-इं०। तण्डुलमद्य, चावल की शराब-हिं०। अरिशशाराायम-ता०। बिय्यमु साराायि-ते०। अरिचारायम-मल०। लाइकॉर ऑफ राइस (Liquor of Rice)-इं०। रू० फॉ० इं०।

अक्ज़म akzama- अ० (१) कोताहबीनी,, (२) जिसकी नासिका छोटी हो।

अक्ज़ाज़ akzáza–अ० कठिन शीत लगना, कम्पन, काँपना ।

अक्ज़ार aqzára-अ०(ब० व०) क़ज़र (ए० व०) कस़ाफ़त, निजासत, गंदगी-फ़ा० । मैलापन, अशुद्धि–हिं० । फिल्थ्ज़ (Filths)–इं० ।

अक्तअ् aktaā–अ० जिसकी अंगुलियाँ हथेली की ओर फिरी हुई हों ।

अक़्तअ् aqtaā–अ० छेदित हस्त, कटाहुआ हाथ, विछिन्न हाथ ।

अ–इ क़् तअ्रार a-i-qtaārára–अ० हाँपना, हाँफना (To pant, To be out of breath.)

अक्त akta–हिं० वि० सं० (Smeared, Anointed) व्याप्त । संयुक्त : सफल । युक्त । रँगा हुआ । लिप्त । भरा हुआ ।

नोट—यह प्रत्यय रूप में शब्दों के पीछे जोड़ा जाता है ; जैसे-विषाक्त, रक्ताक्त ।

अक्तद् aktad–अ० उच्च कंधावाला, ऊँचे कंधा वाला मनुष्य ।

अक़्तन aqtana-अ० कूज़पुश्त-फ़ा० कुबड़ा, कुब्जा हम्प बैक्ड (Hump-backed) इं० ।

अक़्तम aqtama–अ० रक्तवर्ण, श्यामतायुक्त, श्यामाभा युक्त रक्त वर्णीय कारूरा (मूत्र) ब्राउनिश रेड (Brownish red)–इं० ।

अक्ता aktá–सं० स्त्री० (night) रात्रि ।

अक़्तात् aqtáta–अ० घुंघराले (लहराए, मुड़े) बालों वाला पुरुष । कर्ल हेयर्ड (Curl haired)–इं० ।

अक्ताद् । aktáda [ब० व०] कतिद् [ए० व०]–अ० स्कन्ध, तथा मध्य स्थल पृष्ठ की दूरी (Shoulder) ।

अक्ताफ़ aktáfa–अ० (ब० व०), कतिफ़ (ए० व०)–स्कन्ध, कंधे । शोल्डर्स (Shoulders)–इं० ।

अक़्तार aqtár–अ० (ब० व०) कुत़्र (ए० व०) शारीरिक दूरियाँ, व्यास, चौड़ाई, अधकट । डायमीटर्स (Diameters)–इं० ।

अक़्तार ख़ार्जिय्यह् aqtár khárjiyyah–अ० शरीरकी बाह्य दूरियाँ, अंतर (External Diameters.)

अक़्तारदाख़िलिय्यह् aqtár-lákhi-liyyah–अ० शरीर की आभ्यन्तरिक दूरियाँ (अन्तर, फासले) (Internal Diameters.)

अक़्तारसलास़ह् aqtár–salásah–अ० शरीर की दूरीत्रय, घनमाप अर्थात् लम्बाई, चौड़ाई व गहराई ।

अक़्तियूस aqtiyúsa–यू० अक़्तीक़ूस–अ० । यह युनानी भाषाका शब्द है, जिसका अर्थ मग्न व स्थिर होता है, किंतु तिब्ब की परिभाषामें तपेदिक (राजयक्ष्मा, क्षय) को कहते हैं । हेक्टिक फीवर (Hectic Fever)–इं० ।

अ(अ)क़्द áaqda–अ० (ए० व०) गिरह लगाना, गांठ देना, बाँधना, ग्रंथि देना–हिं० । तरल पदार्थों का सान्द्र (गाढ़ा) हो जाना, बँध जाना, घनीभूत होना । अक़्द (व० व०) ।

अक़्दह् āaqdah–अ० लुक़्नते-ज़ुबान, ज़ुबान की लुक़्नत–फ़ा० । हकलाना, तुतलाना, शुद्ध शब्द का न निकलना । स्टेमरिंग (Stammering), बलब्युटीज़ (Balbuties)–इं० ।

अक़्दह āakdab–अ० (१) बीख़े ज़ुबान–फ़ा० । जिह्वामूल, ज़ुबान की जड़–हिं० । (२) हृदय मूल अथवा हृदयाधार, (३) मध्य हृदय ।

अक़्दीदूस aqdídús –अ० देखो–अग़दीदूस ।

अक्न āqna–अ० चीन, शिकन–फ़ा० । झुर्री पड़ना, सिकुड़न, बली जो मेदावी होने के कारण उदर पर पड़ जाय । बलिः–सं० । रिंकिल (wrinkle)–इं० ।

अक़्नफ़ aqnafa–अ० लघुकर्ण वाला, छोटे छोटे कान वाला–हिं० । (Small eared) ।

अक़्नह् āaknah–अ० सुरिंजान (Hermodactylus) । स० फ़ा० इं० ।

अक्नह् aknah–स़ूरतब्निय्यह्, दुहनिय्यह् और हब्बुस्सबा–अ० । यौवन पिड़िका, कील,

मुहांसे जो जवानी के आरम्भ में मुख मंडल पर निकलते हैं। एक्नी (acne)-इं० ।

नोट—जो युवा स्त्री पुरुष ब्रह्मचर्य मार्ग का अवलम्बन न कर स्वास्थ्य सम्बन्धी नियमों का उल्लंघन करते हैं उनको सामान्यतः यह विकार हो जाया करता है।

अक़्नार aqnár-अ० सुराही में मुंह लगाकर जल पीना अथवा मद्यपान करना।

अक़्फ़ाअ् aqfaā-अ० जिसके पाँव की अंगुलियाँ फिरी हुई हों।

अक्फ़स akfasa-अ० जिसका पैर टेढ़ा हो और वह अपने पैर की छोटी अंगुली पर सहारा देकर चले।

अक्फ़ह् akfah-अ० श्याम, काला-हिं०। ब्लैक (Black)-इं०।

अक्बद akbada-अ० यकृत रोगी, वह रोगी जिसका यकृत बढ़ा हुआ हो, बढ़े हुए यकृत वाला। एनलार्ज्ड लिवर (Enlarged liver)-इं०।

अक्बस akbasa-अ० जिसके शिर का आगा निकला हुआ और ललाट धँसा हुआ हो।

अकबाद akbáda अ० (ब० व०), कबिद (ए० व०), यकृत, जिगर, कलेजा (Liver)।

अक़्बीस aqbisa-अ०, रसूलिया, जिसका शिश्नाग्र (मणिमुण्ड) ख़तना से पहिले त्वचा से बाहर निकलता हो।

अक़्मअ् aqmaā-अ० जिसके नेत्र से जल स्राव हो।

अक्मस akmasa-अ० जो कठिनता पूर्वक देख सके।

अक्मह् akmah-अ० कोरमादरज़ाद-फ़ा०। जन्मांध, सहजांध-हिं०। बॉर्न ब्लाइण्ड (Born Blind) इं०।

अक्माक़ akmáka-फ़ा० वमन, छर्दि, मतली। वॉमिटिङ्ग (vomiting), नॉशिया (Nausea)-इं०।

अक़्माल aqmála-अ० (ब० व०), क़म्ल (ए० व०), जुओं (ढीलों) के अण्डे बच्चे अर्थात् लीख। निट (Nit) The egg of a louse-इं०।

अक़्मावसा aqmávasa-अ० एक दैनिक ज्वर, एक दिन का ज्वर। हुम्मायूम-अ०। तप एक रोज़ह्-फ़ा०। फेब्रिक्युला (Febricula) -इं०।

अक्याघास akyághása-हिं० अपभ्रं० अगिया। (Lemon grass)-इं०। स० फॉ० इं०।

अक्याघास का इत्र akyá-ghás-ká-itra -हिं०। देवजग्धक-तैल-सं०। अग्याघास-तैल-बं०। (Lemongrass oil)-इं०। स० फॉ० इं०।

अक़्रअ् aqraā-अ० कल्ल, गञ्जा, केशहीन, जिसके शिर के बाल गिर गए हों, चँदला। बाल्ड (Bald)-इं०।

अक़्रन् aqran-अ० पैवस्तह् अब्रु-फ़ा०। जिसकी दोनों भौएँ मिली हों।

अक़्रफ़ aqrfa-अ० अत्यन्त रक्तवर्ण, गम्भीर रक्तवर्ण-हिं०। डार्क-रेड (dark-red) -इं०।

अक्रबी āakrabí-फ़ा० दरूनज अक़्रबी (Doronicum Pardalianches, *Linn.*)। फॉ० इं० २ भा०।

अक्रम akrama-हिं० ब० [सं०] सं० पुं० क्रम रहित, व्यतिक्रम, विपर्यय, (Irregularity, Confused)-इं०।

अक़्राअ् aqráa-अ० (ब० व०) क़ुरुअ् (क़ुरअ्) (ए० व०) रजःकाल, आर्तवकाल, मासिक धर्मका समय (Period of the menses)

अक्रानीकी akrániki-यु० (१) शुकाई-बाज़ा० (२) बादावर्द (shukai) फॉ० इं० १ भा०।

अक्रान्ता akrántá–सं० पुं० कटेरी, भटकटाई, बृहती, बृहतीक्षुप–सं०। व्याकुड़–बं०। डोरली पाण्डरी, बनभरटी–म०, कं०। अक्रान्ति–उत्० व्राकुरु चेट्टु–ते०। रा० मा०। गुणधर्म-उष्ण वीर्य, पाचन, संग्राही। चक्र० द०। राज०।

यह उष्ण वीर्य, रस में कटु तिक्त, लघु, वात नाशक, ज्वरनाशक, अरोचक व कास नाशक तथा श्वास और हृद्रोग नाशक है। रा० नि० व० ४।

अक़्राबाज़ीन aqrábázína–अ० क़राबाज़ीन किताबे अद्विवियह् मुरक्कबह्–फ़ा०। योग संबन्धी ग्रन्थ, योग शास्त्र–हिं० वह ग्रन्थ जिसमें यौगिक औषध एवं उनके योग लिखे हों, फार्माकोपिया (Phormacopœea), डिस्पेन्सेटरी (Despensatory)–इं०।

अक़्राबादीन aqrábádína–अ० अक़्राबाज़ीन

अक़्रास aqrása–अ० (ब० व०), क़ुर्स (ए० व०), टिकिया–हिं०। टेब्लॉइड्स (Tabloids)–इं०।

अक्रीय akríya–हिं० वि० [सं०] (१) क्रिया रहित (Inactive, dull) (२) चेष्टा रहित। निश्चेष्ट। जड़। व्यापार रहित। जो कर्म्म करने से रहित हो। स्तब्ध।

अक्रूर akrúra–हिं० वि० [सं०] जो क्रूर न हो, सरल, दयालु, सुशील, कोमल, मृदु, (not cruel)।

अक्रोध akrodha–सं० हिं० वि० क्रोध रहित (Free from anger)

अक्रोसाइन achrosine–इं०। अरञ्जक (Not colouring)–इं०। फॉ० इं० १ भा०।

अक्ल akla–अ० व्याधिमूल–विज्ञान की परिभाषा में उस औषध को कहते हैं जो अवयवों के मांस वा त्वचा को खाजाए अर्थात् उसे नष्ट करदे। करोडि (Corrode)–इं०।

अक़्ल áaqla–अ० (ए० व०) अक़्ल (ब० व०), ख़िर्द, दानाई–फ़ा०। बुद्धि, समझ–बूझ, सूझ, मनीषा, धी, धिषणा, विवेक-शक्ति–हिं०। इण्टेलिजेन्स (Intelligene)–इं०। प्रकृति में यह वह शक्ति अथवा अपार्थिव तत्त्व है, जिससे बुरे भले में विवेक किया जाता है।

अक्लफ़ aklafa–अ० उन्नाबीरंग, श्यामाभायुक्त रक्तवर्ण–हिं०। ब्राउनिश रेड (Brownish red)–इं०।

अक़्लफ़ aqlafa–अ०, वह व्यक्ति जिसका खतना न हुआ हो। अनसर्कमसाइज़्ड (uncircum-cised)–इं०।

अक़्लब aqlaba–अ० जिसके ओष्ठ उलटे हुए हों।

अक्ल-व-शुर्ब akla-va-shurba–अ० खुर्द व नोश–फ़ा०। भक्ष्य एवं पेय अर्थात् खाने पीने के पदार्थ–हिं०। (edible anb drinka-ble)–इं०।

अक़्लह् aqlah–अ० क़लह (अर्थात् जिसके दाँत-मैले हों) का रोगी।

अक्लह् aklah–अ० एक बार खाना।

अक्लाअ् akláa–अ० अवस्था (उमर) की पूर्णता तथा अंत तक न पहुँचना।

अक़्लाबोतस aqlábotasa–यु० अञ्जुरह्–फ़ा०। उटङ्गन–हिं०।

नोट अञ्जुरह्, उटङ्गन और कजनह प्रभृति शब्द भूल से "केवाँच" के लिए प्रयुक्त होते हैं। वस्तुतः केवाँच से ये सर्वथा भिन्न हैं। (Blepharmis edulis, *Pers*.)

अक़्लारोतस aqlárotasa–यु० झाऊ–हिं०। फ़रास, फरवा–मरलेई–पं०। (Tamarix Gallica, *Linn*.)

अक्लिका akliká–सं० स्त्री०

नील, नीलीवृक्ष। The Indigoplnt; (Indigofera tinctoria.)। नीलीचे-झाड़–मह०। नीली०–कं०। नल्लचेट्टु गेरिट पेढ़ नीलिचेट्टु–ते०। नीली, महानीली भेद से यह दो प्रकारकी होतीहै। गुण—यह उष्ण वीर्य, रस में तिक्त और कटु तथा केशवर्द्धक, कफ, कास

और आमनाशक, लघु तथा वात, विष विकार, उदररोग, गुल्म (वायुगोला) कृमि और ज्वर नाशक है। रा० नि० व० ४। रेचक, मोह, भ्रम, आमवात तथा उदावर्त को नाश करने वाली है। भा० प्र० १ भा०। म० १ ख०।

अक्लिन्त-वर्त्म aklinta-vartma-हिं० पुं०
अक्लिन्न-वर्त्म aklinn-vartma-सं० पुं०
नेत्रवर्त्मज रोग विशेष। जिसमें धोए हुए अथवा बिना धोए हुए पलक परस्पर बारम्बार चिपक जाँय और कोए पक के पीपसे न चिपकें उसे "अक्लिन्न वर्त्म" नामक रोग कहते हैं। इसीको वाग्भट्टजी "पिल्लाख्य" नाम से पुकारते हैं। मा० नि०।

अक्लिष्ट aklishta-हिं० वि० [सं०] (१) विना क्लेश का। कष्ट रहित (disease-less) (२) सुगम। सहज। साधारण। सरल सीधा। (Easy)।

अक्लीका akliká-सं० स्त्री० नीलका पेड़, नीली वृक्ष (The Indigo Plant)।

अक्लीतक़ूस aqlítaqúsa
अक्लीतून aqlítúna
-रू० अरण्य लशुन सं० (Scilla indica, roxb)।

अक्लीमिया aqlímiyá-पुं० कलीमिया, क़दीमिया अ०। धातुओं का मैलजो उनके पिघलाने केबाद ऊपरनीचे झागऔर तिलछटके समान उत्पन्न हो जाता है। कैलेमीन (calamine)-इं०।

अक्लीलुल्जबल aklíluljabala-अ० यह एक बूटी है, जो स्पेन तथा मिश्र देश में उत्पन्न होती है। (रोस्मैरिस् rosmaris)-ले०। रोजमैरी (RoseMary)-इं०। स० फा० इं०।

अक्लीलुल्मलिक aklilulmalika-अ० वन मेथी, वन मेथिका-सं०। (Trifolium Indicum, Melgiotusparviflora) नाखूना-हिं०। देखो-इक्लीलुल्मलिक।

अक्वथित क्षीरम् akvathita kshíram-सं० विना पकाया हुआ दूध।

गुण गुरु और कफ कारक है। वै० निघ०

अक्वन akvana-हिं० आक, आख, मदार, अर्क (Calotropis gigantea, R. br.)

अक्वम akvama-अ० बन का अधोभाग।

अक्वा akvá-हिं० आक, मदार, अर्क (Calotropis gigantea, R. Br.)

अक्वा aqua-ले० जल। देखो एक्वा।

अक्वाअ् akváa-अ० (ब० व०) कुअ (ए० व०) पहुँचे अर्थात् कलाई की हड्डियाँ (Rist bones)।

अक्वात aqváta-अ० (ब० व०) क़ुव्वत (ए० व०) भक्ष्य पदार्थ, ग़िज़ायें, अग़ज़ियह (Edible)-इं०

अक्विलीजिया वल्गैरिस् aqulegia Vulgaris, Linn.-यह एक रैन्युनक्युलेसीई (Ranuncula ceae) वर्ग की एक औषधि है।

अक्विलेरियाअगेलोका aquilaria agallocha Roxb.-ले० अगर, अगुरु, ऊद। अगर-अ० ægle wood-इं० मे० ठ०। मे० म०।

अक्विलेरिया-ओवेटा aquilaria Ovata -ले० अग (Ægle wood)-इं०।

अक्विलेरिया मलाकेन्सिस् aquilaria Malaccensis, Lamk.—ले० अगर Ægle wood-इं०।

अक्वेज़ान akvezána-रू० मटर भेद। इसे कोई २ रईयुल हमाम को कहते हैं।

अक्शाब aqshába-अ० (ब० व०) (ए० व०) क़िश्ब (१) सन्निपात, जहरें, विष (Deadly poison), घातक। विष (२) ज़ङ्ग, मुरचा, कीट, (Rust)।

अक़्शी aqshí-आसा० करकोट -बं०। अगाई-अव०।

अक्शूरीयून aqsúriyúna-यु० एक प्रसिद्ध औषध है।

अक्शूस akshúsa–अ० कसूस। अकाशबेल (Cuscuta reflexa)–लें०।

अक्स aksa–हिं० संज्ञा पुं० (अ० अक्स) (१) प्रतिबिम्ब। छाया। परछाईं। (२) चित्र, तसवीर।

अक्सअ aksaā–अ० वह व्यक्ति जिसके मसूड़े फूलेहों।

अक्सम aksama–अ० मेदावी मनुष्य, वह व्यक्ति जिसका मेद (तोंद) बढ़ा हो। कार्प्युलेण्ट (Corpulent), फैटी (Fatty)–इं०।

अक्सह aksah–अपाहिज, लंगड़, जो अपने स्थान से हिल न सके। क्रिपल (Cripple)–इं०।

अक्साब aqsába–अ० (ब० व०) क़ुस्ब (ए० व०), अंतड़ियाँ, आंत्र–हिं०। (Intestines)

अक्सियह aksiyah–फ़ा० जौ की शराब, यव-मद्य। (Barley wine)

अक़्सिया aqsiyá–फ़ा० सुफ़ेद माज़रियून। अपराजिता श्वेत (Clitoria ternatea, *Linn.* White)

अक्सियानूस aksiyánúsa–यु० जुन्दबेदस्तर जुन्द–अ० (Castoreum)–लें०।

अक्सीर aksíra–हिं० छड़ीला (Nardostachys Jatamansi, *D. C.*)–लें०।

अक्सीर aksíra–अ० (१) वह रस वा भस्म जो धातु को सोना व चांदी बना दे। रसायन, कीमिया, पारस पत्थर, पारसमणि (Philosopher'sstone) (२) वह औषधि जो प्रत्येक रोग को नष्ट करे। वह औषधि जिसके खाने से कभी मनुष्य बीमार न हो। वि० अव्यर्थ। अत्यन्त गुणकारी। अत्यन्त लाभकारी।

अक्सीर बवासीर aksíra-bavásíra–हिं० पुं० बूटी बवासीर, एक बूटी है जो पृथ्वी से मिली हुई होती है। चैत मास में प्रायः होती है। गुण—रक्त स्थापक, अतिसार नाशक, हामि० यु० मार्च १६२८

अक्सीरी aksíri–फ़ा० माहिर, कीमिया दाँ, कीमियाँ। कीमिया गर। रासायनिक। रसायन शास्त्री। (Alchemist)

अक्सीरी आक aksiri áka–हिं० पुं० प्रसिद्ध पौधा विशेष

अक्सीरी बूटी aksíri-búti–हिं० स्त्री० यह एक रसायनी बूटी है जो लग भग १ फुट ऊंची होती है। टहनी तथा पत्र घने, पत्र-जाल-पत्रवत् परन्तु उससे अर्धलम्बे, गम्भीर, हरित वर्णके होते हैं। इससे लौह ताम्र हो जाता है। हामि यु० जून १६३२ ई०।

अक्सुनाफि (फ) न aksunáfin,–(phan) अ० हकीमी माप भेद, यह ६ तोले ११ माशे २ रत्ती अथवा ६ तोले ६ माशे के बराबर होता है।

अक्सूफैलस aksúfailasa–यु० सहंसकोई नाम की एक बूटी है।

अक्सूमानस aksúmánasa–यु० रतनजोत (Alkanet)–इं०।

अक्सूमाली aksúmálí–यु० सिकञ्जबीन–अ० हिं०, द० सिकञ्जबीं–फ़ा० (Oxymel)

अक्सूस aksúsa–अ० अकासबेल का बीज। तुख़्मे कसूस–फ़ा० Cuscuta Reflexa (Seeds-of)

अक्हल akhala–अ० स्याहचश्म, सरमगीं, आँखवाला। (२) छेदनशास्त्रकी परिभाषा में रगे हफ़्तअन्दाम को कहते हैं। वह रग कुहनी के मध्य में भीतर की ओर स्थित है। और क़ीफ़ाल व बासलीक़ के मिलाप तथा संयोग द्वारा पैदा होती है। चूंकि इसमें क़ीफ़ाल (Cephalic-vein) और बासलीक दोनों से शोणित आता है इस कारण इसके फ़स्द (रक्तमोक्षण) से सम्पूर्ण शरीर का रक्त निकलता है। मीडियन कॅफ़ैलिक (median cephalic)–इं०।

अक्हाल akhála–अ० (ब० व०) कहल (ए० व०) सुर्मा, अंजन, नेत्र में लगाने का शुष्कऔषध। कॉलिरियमज़ (Collyriums)–इं०।

अख akha–हिं० संज्ञा पुं० बाग़, बगीचा। (Garden)–इं० ।

अखगरिया akhagariyá-हिं० संज्ञापुं० (फा०) वह घोड़ा जिसके मलते समय उसके बदन से चिनगारी निकलती हो। ऐसा घोड़ा ऐबी समझा जाता है।

अखट्टः akhaṭṭah–सं० पुं० चिरौंजी–हिं०। (पियाल वृक्ष), पीलिया, इसके बीजको पीयाल बीज या चारदाना कहते हैं।चारोली-भा०। रा० नि० व० ११। भा० आम्रादिव०। (buchanania lati-folia, *Rox b.*)

अखनी akhaní–हिं० संज्ञा स्त्री० (अ० अख़नी) (meat-juice) देखो–अख़नी।

अख़नी akhani–अ० मांस रस। मांस का रस। शोरबा।

अख़न्न akhanna–अ० गुन्ना, गुनगुना, भुनभुना, मुनमुना, मिनमिना, नाकके बल से बोलने वाला, नकनका।

अखर akhara–सं० पुं० कर्पास, कपास, बाड़ी (Gossypium Indicum)–ले०।

अख़रसाज akharasája–फा० एक वृक्ष है जो उष्ण देशों में एवं शुष्क स्थानों में उगता है। मनुष्य के कद के बराबर अथवा कुछ अधिक ऊँचा एवं खुरदरा और अञ्जीर के समान नर्म और खोखला होता है।

अखरा akhará-हिं० वि० (सं० अ=नहीं +हिं० खरा) जो खरा वा सच्चा न हो। झूठा। बनावटी। कृत्रिम। संज्ञा पुं० सं० (अक्षर) भूसी मिला हुआ जौ का आटा जिसको गरीब लोग खाते हैं।

अख़रोट akharoṭa–हिं० संज्ञा पुं०बं०, अक्रोट आक्रोट,–बं० हिं०, द०। अक्षोट, पीलु, शैलभवः और कर्परालः–अक्षोटः: अक्षोटकः, आखोटः, पर्व्वतपीलुः, कन्दरालः, आशोड़ (ख०), आस्फोटकः, (शा० र०) गिरिज पीलुः, अक्षोडकः–सं०। जौज़, जौज़ुल्ख़निफ़—अ०। गिर्दगाँ, चारमग़्ज़, चहार मग़्ज़, गौज़, फा०। कासलीस,क़ादस्याह–यु०। क़ौज़–तु०। जुग्लैंस् Juglans regia जु० रेजिया (J. regia, *Linn.*)-ले०। वालनट (Walnut) इं० वालनस बाम (Wallnussbaum)-ज०। नोयर कल्टिव Noyer Cultive-फ्रां०। अक्रोट्टु–ता०। अक्रोटु–ते०। अक्रोडु, अखोट-कना० कर्ना०। अक्रोड़–म०। अख़रोट, अखोड–गु०। सिस्–स्या–सिया निक्या–ज़ि–बर०। अखोड़–कों०। उब्बकाई–द्राविं०। तगशिङ्ग–भूटि०। कव्सिङ्ग–आ०। कोवल–लेप०। आक, अखोर, अखोट, अखरोट–उ० प० प्रा०। अखोर, खरोट–कुमा०। अखोर, क्रोट, दून–काश० अख़रोट, दून, चारमग़्ज़, थनथान, खोर, कादारग, अखोरी, क्रोट, कबोटङ्ग, स्टार्ग,उग़्ज़, वग़्ज़ थानक, छाल-डिराडासा–पं०। उग़्ज़, वग़्ज़ –अफ़॰।

अक्षोट वर्ग
(Juglandaceæ.)

उत्पत्ति स्थान–हिमालय (शीतोष्ण) पर भूटान से लेकर अफ़गानिस्तान तथा काशमीर तक होता है। खसिया की पहाड़ियों तथा और और स्थानों में भी यह लगाया जाता है। इसका एक भेद और है [Aleurites Moluccana, *Willd.*] बंगाल और दक्षिणी भारत में बहुतायत से होता है। पीलु [Mustard tree of scripture] भी कोंकन देशमें उत्पन्न अखरोट जातिका एक प्रकार का वृक्ष है। इनके लिए उन २ नामों के अन्तर्गत देखिए। श्वेत श्याम भेद से अक्षोट २ प्रकार का और होता है।

वानस्पतिक विवरण—यह शाखी वृक्ष है जो पर्वतों में उत्पन्न होता है। इसके वृक्ष बड़े २ बहुत ऊँचे होते हैं। इनकी उंचाई लगभग ४० से ६० फी० होती है। पत्ते ४ से ८ इं० लम्बे अंडाकार नुकीले और बराबर या तीन तीन कंगूरे युक्त एक डंठल के दोनों ओर विषमवर्ती लगे होते हैं।छूने में सख़्त और मोटे मालूम होते हैं। पुष्प सफेद रंग के छोटे छोटे शाख के शिरे पर गुच्छे में कई कई आते हैं। एकही गुच्छे में स्त्री

पुरुष दोनों प्रकार के पुष्प होते हैं। इनमें पुरुष (andrœcium) की संख्या अत्यधिक होती है। फल दो कोष युक्त मैनफल वा बहेड़े के समान अण्डाकार होते हैं। उनके ऊपर तीन छिलके होते हैं, इनमें प्रथम हरा और मोटा (पकने पर जैतूनी रंग का हो जाता है) स्वाद में कषैला और कड़ुवाई लिए हुए होता है। यह फल कच्चेपन में नरम परन्तु सूखकर कठोर हो जाते हैं। द्वितीय छिलका पहिले छिलके के नीचे कठोर होता है। फिर इसके दो टुकड़े आपस में मिले और सिरा उनका निकला हुआ तथा तीसरे छिलके के भीतर से टेढ़ा मेढ़ा गूदा वा मीठी गिरी निकलती है। मींगी के ऊपर बहुत बारीक छिलका होता है। मींगी अंडाकार सफेद कुछ चिपटी और चिकनाई लिए पिस्ते और चिलगोजे की मींगी के समान होती है, इन सबके चार भाग होते हैं। दो दो भाग आपस में मिले इनके बीच में बहुत बारीक परदा होता है। फल का बृहत्तम व्यास लग भग २॥ इंच होता है। इसकी लकड़ी बहुत ही अच्छी मज़बूत और भूरे रंग की होतीहै और उसपर बहुत सुंदर धारियाँ पड़ी होती हैं।

आक्षोट तैल-गुण—अखरोट के गूदे में से तेल भी बहुत निकलता है। मूलक तैलवत्। कृमिनाशन हेतु मुख्यतः कद्दूदाना (Tape worm) को मारने के लिए मृदुभेदन और पित्तनिःस्सारण हेतु इसके तेल का आभ्यन्तरिक और दृष्टि मान्द्य हेतु वाह्य प्रयोग किया जाता है।

नोट—उपयुक्त समस्तपर्याय इसी के मींगी अथवा फलके हैं। लेटिन नाम जुगलेन्ज रेजिया (juglans regia) इसके वृक्ष के लिए आया है।

प्रयोगांश—फलत्वक्, त्वचा, बीज (मींगी), फल और खोपरी (Nut)

प्रभाव वा उपयोग। गुण—मधुर, बलकारक स्निग्ध, उष्ण, वातपित्तनाशक, रक्तविकारहर, शीतल तथा कफ प्रकोपक है। रा० नि० व० ११ मधुर, बल्य, गुरु, उष्ण, विरेचक और वातनाशक मद० व० ७०।

परिवर्तक, और संकोचक इसका क्वाथ (१२ में १) कंठ-माला, श्वेतप्रदर प्रभृतिकेलिए लाभ जनकहै। बीज-इसमें तेल, एल्युमीन या जुगलैण्डिक एसिड और राल होती है।

अपक्वफल कृमिघ्न। **पक्वफल या मींगी**—"अक्षोटः कोऽपि वाताद सदृशः कफ पित्त कृत्" भा० प्र० फ० व०। स्वादिष्ट, भक्ष्य, पुष्टिकर और कामोद्दीपक। **फलत्वक्** कृमिघ्न, उपदंश नाशक **वृक्षत्वक्** संकोचक,कृमिघ्न और दुग्ध नाशक (Lactifuge) तथा व्रणशोधक। इ० मे० मे०। इ० मे० प्लां०।

इसकी लकड़ी मेज, कुरसी, बंदूक के कुन्दे, संदूक आदि बनाने के काम में आती है। इसकी छाल रंगने और दवाके काममें भी आती है। डंठल और पत्तियों को गाय बैल खाते हैं।

अखरोट-जंगली akharoṭa-jangalí-**हिं० संज्ञा पुं०** (१) जायफल (Nut-meg) अरण्या-क्षोट। जंगली अखरोट।

अखरोस akharosa-**पुं०** (१) एक बूटी है, जो फ्रांस तथा सर्द दरियाई देशों में उत्पन्न होती है (२) जंगली गेहूं।

अखरौट akharouṭa-**यं०** अखरोट, अक्षोट Walnut-**इं०** (Juglans-regia.)।

अखर्व akharba-**हिं० वि०** [सं०]। बड़ा। लम्बा। (Not dwarfish.)।

अखर्यूस akharyúsa- **पुं०** पहाड़ी गन्दना।

अखलः akhalah-**सं० पुं०** उत्तम वैद्य।

अखसत akhasata-**हिं० संज्ञा पुं०** [अक्षत] चावल (Rice)।

अखा akhá **हिं० संज्ञा पुं० देखो-आखा**।

अखाड़ा का भेद akhḍqá-ká-bheda-**द०** अपामार्ग भेद।

अखात akháta-**हिं० संज्ञा पुं०** बिना खुदाया हुआ स्वभाविक जलाशय ताल, झील खाड़ी (A natural lake.)।

अखातम् akhátam-**सं० क्ली०** } देवखात-**हिं०**।
अखातः akhátah-**सं० पुं०** }

देवखाद-सं० । हेच० का० ४ । पुष्करणी । अम० । (A natural lake.) ।

अखाद्य akhádya-हिं० वि० [सं०] अभक्ष्य, खाने के अयोग्य, (uneatable.)-इं० ।

अखाव मियाश्रा akháva-miyaá—बर० छाल, त्वक । Barks-इं० । स० फॉ० इं० ।

अखाव akháva-बर, (ए० व०) छाल, त्वक (Bark)-इं० । स० फॉ० इं० ।

अखियारी akhiyárí-पं० अरण्य गुलाब, बन गुलाब (wild rose.)-इं० ।

अखिल akhila-हिं० वि० [सं०] (१) सम्पूर्ण, समग्र, पूरा, बिलकुल, सब (whole) (२) अखण्ड, सर्वांग पूर्ण ।

अखिलिका akhiliká-सं०, पुं०, करेली छोटी, क्षुत्रकारवेल्ली, उच्छे-बं० A kind of gourd (Momordica charantia, *Linn.*)

अखीतहे ज़ौइय्यह Akhítahe-zouiyyah-अ० ख़्यालाते चश्म-फ़ा० चक्षुरोग विशेष जिसमें नेत्र के सामने चिनगारियाँ अथवा तारे दृष्टिगोचर होते हैं । मस्सी वॉलिटेण्टीज़ (Musce volitantes-)-इं० ।

अख़ीफ़ Akhífa-अ० जिसका एक नेत्र श्याम और दूसरा हरित वा नीलवर्ण युक्त हो ।

अख़ीरूस akhírúsa-यु० जङ्गली गेहूं के अतिरिक्त एक बूटी है जो जल के समीप उगती है ।

अख़ील Akhíla-अ० अस्थिर, क्षण क्षण में रंग बदलने वाला (१) गिरगिट केमीलिअन (Chameleon)-इं० । (२) एक रूमी कपड़ा है जो घंटा घंटा पश्चात् रंग बदलता है । (३) एक प्रकार का पक्षी है, जिसके पैरों के विभिन्न प्रकार के रंग होते हैं ।

अख़ीलस Akhílasa-यु० एक क़ाबिज़ (संकोचक) और शुष्क बूटी है (An astringent and dry herb.) ।

अख़ी (ख़ै) लूस akhilús-यु० नानख़ाह, अजवाइन । (Carum ptychotis *D. C.*) अ० अन्तःस्थ नेत्रकोण-शोथ, नेत्र के भीतरी कोये का शोथ । ऑब्स्ट्रक्शन ऑफ दी पंक्टा (Obstruction of the puncta)-इं० ।

अखुविषः Akhu-vishah-सं० पुं० बिन्दाल, घगरबेल, देवदाली-हिं० । (Luffa Echinata, *Roxb.*) फॉ०-इं० २ भा० ।

अखेटिकः Akhetikah सं० पुं० (१) वृक्ष पेड़ । (A tree in general) (२) शिकारी कुत्ता ।

अखेरारी akherarí-पं० कण्टोच, आख्री, ढेरा ।

अखोट akhota-का० अख़रोट, Walnut (Juglans regia.) ।

अखोड akhoda-गु० अखरोट Walnut (Juglans regia) ।

अखोर akhora-काश० अख़रोट । Walnut (Juglans regia.) ।

अखोर-मोरनु akhor-moranu-कना० सिहोर, सहोर-हिं०, बम्ब० । शाखोटकः—सं० । (Streblus Asper, *Linn.*) इं० मे० मे० ।

अखोरी akhorí-पं० कण्टोचा, आख्री, ढेरा-पं० । -हिं० संज्ञा पुं० अकोला । अंङ्कोल ।

अखोला akholá-अङ्कोल ।

अखोह akhoh हिं० संज्ञा पुं० (सं० क्षोभ = असमानता) ऊंची नीची भूमि । ऊभड़ खाबड़ पृथ्वी । असम भूमि ।

अखंड Akhanda हिं० वि० [सं० वि०] अखंडनीय, अखंडित, (Unbroken, whole, entire.) (१) अटूट । जिसके टुकड़े न हों । अविच्छिन्न । सम्पूर्ण । समग्र । समूचा । पूरा । (uninterruptedly) (२) लगातार । जिसका क्रम या सिलसिला न टूटे । जो बीच में न रुके । (३) बेरोक । निर्विघ्न ।

अखंडनीय Akhandaníya-हिं० वि० [सं०] (१) जिसके टुकड़े न हो सकें । जिसका खंडन न हो सके । जो काटा न जा सके ।

अखंडल akhandala-हिं० वि० [सं० अखंड]

अखंडित akhandita हिं० वि० [सं०] (unbroken) जिसके टुकड़े न हुए हों। अविच्छिन्न। विभाग रहित। (२) सम्पूर्ण। समूचा। परिपूर्ण। पूरा। (३) निर्विघ्न। बाधा रहित। जिसमें कोई रुकावट न हो। (४) लगातार।

अखंडित-ऋतु akhandita-ritu-हिं० वि० (Fruit ful.) जो ऋतु पर फल फूल दे।

अख् akh अ० खंकार, खांसीका शब्द, वेदना शब्द, खांसने का शब्द। कफ (Cough)-इं०।

अख्गोरा akhgora-फ़ा० अमरूद भेद (Wild pear.)। इं० हिं० मरा०।

अख्ज़ akhza-अ० गिरफ़्त फ़ा०। लेना, थामना, पकड़ना, आशोब चश्म (आंख आना), गिरफ्तार होना।

अख्ज़अ akhzaa अ०-संकुचित ग्रीव, लघुग्रीव, बौना, ठिगना-हिं०। ड्वार्फ (Dwarf) पिग्मी(Pigmy)-इं०।

अख्ज़र akhzara-अ० फ़ा०। हरा, हरी हिं०, द०। हरित सं०। हरा, सबुज-बं०। ग्रीन-(Green)-इं०। हरित्वा (हकीम लोगों) ने इसकी चार कक्षाएँ स्थिर की हैं, यथा—(१) फ़ुस्तक़ी या पिस्ती अर्थात् पीताभयुक्त हरितवर्ण, (२) नीलजी अर्थात् नीलगूँ, नीलवर्ण, (३) ज़ंगारी या जंगारी या मटियाला मख्ऊमायल अर्थात् हरिताभयुक्त मटियाला और (४) गन्दने के सदृश हरित वर्ण।

अख्ज़र akhzara-अ० कनखियोंसे देखने वाला।

अख़ुज़ुल् बर्द akúzul-bard-अ० शीत लगना, शीतल वायु लगना, वायु लगना, प्रतिश्याय। कोल्ड (Cold), केचकोल्ड (Catchcold)-इं०।

अख़्ज़ुल् शम्स akhzulshamsa-अ० सिकूतह् शम्सियह्, लू लगना, आतपाघात-हिं०। सन-स्ट्रोक (Sunstroke), इन्सोलेशन (Insolation)—इं०।

अख्तावर akhtávara-हिं० संज्ञा, पुं० [फ़ा०] अख़्ता—वह घोड़ा जिसे जन्म से अंडकोष की कौड़ी न हो। ऐसा घोड़ा ऐबी समझा जाता है।

अख्नस akhanasa- चपटी, सपाट नाक वाला (Snub-nosed)

अख्नियूस akhniyús-यु० पालक (Spinacea oleracea, *Linn.*) या अख्नैमूस।

अख्नैमूस akhnaimúsa यु० एक अप्रसिद्ध बूटी है जो तर स्थानों तथा नहरों के किनारे पर उगती है।

अख्नैमूस akhnaimúsa—फ़ा० पालक।

अख्फ़श akhfasha-अ० ख़फ़श अर्थात् धुन्धा (दिवसांध) रोगी (Dayblind)

अख्फ़ाक akhfák-फ़ा० चान्दरेल, इश्कपेचा (लताविशेष)।

अख्बसान akhbasána अ० (१) मलमूत्र अर्थात् गूहमूत्र से संकेत है। (२) मुखदुर्गन्धि, एक्सक्रीमेण्ट्स (Excrements)-इं०।

अख्म akhma अ० ललाट और भौं (भ्रू) की शिकन (बलखान) (Frown)।

अख्माद akhmáda-अ० ताप बुझाना, गर्मी मारना, आग की लौ दबाना, कमज़ोर करना, ताप शमन करना।

अख्रब akhraba-अ० वीरान मुक़ाम-उ०। निर्जन स्थान, उजाड़-हिं०। तिब्ब की परिभाषा में कर्णफटा को कहते हैं अर्थात् वह व्यक्ति जिसका कान फटा हो।

अख्रम akhrama-अ० ज़ाइदहे अख़रमियह् नक्टा। छेदन शास्त्र की परिभाषा में नक्टा उभार, स्कन्धास्थि का वह उभार जो कन्धे की ऊंचाई बनाता है, अंसकूट। एक्रोमियॉन प्रॉसेस (Acromion Process)-इं०।

अख्रस akhrasa-अ० मूक, गुङ्ग, गूँगा। डम्ब (Dumb)-इं०।

अख्रास akhrasa-यु० नाशपाती, अमृतफल (Pyrus Communis, *Linn.*)

अख्रीज़ हब्बुल् अस्फ़र akhríz-habb-ul-asfara-अ० कुसुम्भः, कुसुम (मभ) (Carthamus Tinctorius, *Linn.*)।

अख्रीत akhríta-अ० जंगली गन्दना।

अखांतूस akhrítús यु० जंगली करमकल्ला, गोभी भेद (wild cabbage.) ।

अखलह akhlah एक कंटकयुक्त बूटी है जो बालिश्त के बराबर होती है। पुष्प नीले एवं श्वेत और पत्ते कठोर होते हैं।

अखलात् akhlat –अ० (ब० व०) ख़िल्त (ए० व०) यूनानी वैद्यक के मतानुसार ख़िल्त (दोष) चार हैं, यथा—सौदा (वात) सफ़रा (पित्त) बलग़म (कफ, श्लेष्मा) और ख़ून (रक्त) शारीरिक—द्रव (तरी) अर्थात् शरीर की वह चारों रतूबतें (तरी, स्निग्धता) जो भोजन के प्रथम परिवर्तन द्वारा उत्पन्न होती हैं। ह्यूमर्स (Humours) इं०।

अखलीलुल् मलिक akhlílul-malika–फ़ा० अपभ्र० इकलीलुलमलिक, ताज बादशाही।

अख़शम akhsham –अ० ख़्शम रोगी, घ्राणज रोगी। वह रोगी जिसकी घ्राणशक्ति नाश हो गई हो अर्थात् जो वस्तुओं के गन्ध को न मालूम कर सके। अनॉस्मैटिक (Anosmatic.) –इं०।

अख़्सा akhsá–अ० गोबर, गू। डङ्ग (Dung) फीसेज (Fœces) इं०।

अख़्सामुलऐन akhsamúlain–अ० पलकों के किनारों के मिलने का स्थान।

अख़्सीनह् akhsínah-जङ्गली राई (Brassica Juncea, Willd.)।

अग aga–हिं० संज्ञा पुं० [सं० अज्ञ] मूढ़ अनजान। अंग, शरीर,–हिं० सं० पुं० [सं० अङ्गारी] ऊख के सिरे पर का पतला भाग जिसमें गांठें बहुत पास २ होती हैं, और रस फीका होता है। अगौरा। अगौरी। वि० [सं० अज्ञ] मूढ़, अनजान, अनाड़ी। वि० सं० (१) न चलने वाला। अचर। स्थावर। (२) टेढ़ा चलने वाला।

अगंड aganda–हिं० सं० पु० (सं०) धड़ से जिसके हाथ पैर कट गए हों।

अगः agah–सं० पुं० (१) पहाड़, पर्वत–हिं० (Mountain) (२) एक वृक्ष। (३) पत्थल (४) सर्प (५) सूर्य्य। पहाड़ आग्नेय व सौम्य गुण भेद से दो प्रकार के होते हैं। इनमें विन्ध्य पर्व्वत आग्नेय गुण युक्त और हिमालय सौम्य गुण युक्त है। आग्नेय गुण विशिष्ट पहाड़ों में होने वाली औषधियाँ अग्नि गुण विशिष्ट होती हैं, और सोमगुण विशिष्ट पर्व्वतों में होने वाली औषधियाँ सोमगुण विशिष्ट होती हैं। सु० ८०।

अगई agaí–हिं० संज्ञा पु० (?) चलता की जाति का एक पेड़ जो अवध, बंगाल, मध्यदेश और मद्रास में बहुतायत से होता है। इसकी लकड़ी भीतर सफेदी लिए हुए लाल होती है। जहाज़ों और मकानों में लगती है। इसका कोयला भी बहुत अच्छा होता है। इसके पत्ते दो दो फुट लम्बे होते हैं और पत्तल का काम भी देते हैं। इसकी कली और कच्चे फलों की तरकारी बनती है।

अगज agaja–हिं० संज्ञा पु० पर्व्वत से उत्पन्न होने वाला। शिलाजीत।

अगजः agajah–सं० पु० (१) आर्द्र धनियाँ, नैपाली धनियाँ, तुम्बुरु–हिं०। तुम्बुरुः, आर्द्र धान्यकम्–सं०। काँचधनम्–बं०। Execaria agallocha (२) बन्दकः–सं० बन्दा बाँदा–हिं०। बाँदड़ा। बरगाछा–बं० A parasiteplant (Epidendrum Tessellatum)।

अगजन agajana–पं० फ़वानी बूटी। मे० मो०।

अगजम् agajam–सं० क्ली० शिलाजतुः, शिलाजीत (Bitumen) र० मा०।

अगट agata–हिं० संज्ञा पु० [देश] चिक या मांस बेचने वाले की दूकान।

अगड़धत्ता agaradhattá–हिं० पुं० (१) द्रोण पुष्पी, गूमा। (२) हिं० वि० [अग्रोद्धत, बढ़ा चढ़ा] लम्बा तड़ंगा। ऊँचा (श्रेष्ठ) बढ़ा चढ़ा

अगड़ा agadá–हिं० संज्ञा पुं० (देश) ज्वार बाजरे आदि अनाजों की बाल जिसमें से दाना झाड़ लिया गया हो । खुखड़ी, अखरा ।

अगण agana–हिं० वि० जिसकी गिनती न हो ।

अगति agati–हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] (१) गति का उलटा (२) स्थिर व अचल पदार्थ ।

अगतिक agatika–हिं० वि० [सं०] निराश्रय जिसकी कहीं गति वा पैठ न हो ।

अगती agatí–हिं० संज्ञा स्त्री० (१) चक्रमर्दक, चकौड़ । दद्रुघ्न । दादमर्दन । Cassia tora (२) अगस्तिया, अगस्त, (Agati Grandiflora.) ।

अगत्ति agatti–ता० गु०, मला० हिं० अगस्तिया अगस्त्य वृक्ष । Agati Grandiflora.

अगतीहून agatíhúna–सं० पुं० एक दवा है जो मय जड़ और पत्तों के ज्वर में दी जाती है । मु० आ०

अगथिया agathiyá–हिं० } Agati Gr-
अगथियो agathiyo–गु० } andiflora
अगस्तिया, अगस्त का पेड़, अगस्त्य वृक्ष ।

अगद agada–हिं० संज्ञा पुं० } (१)रोग रहित
अगदः agadah–सं० पुं० } Healthy
(२) औषध । (Medicine) रा० नि० व० २० ।

अगदम् agadam–सं० क्ली० (१) आरोग्य, स्वस्थ, निरोग(Healthy) रा० नि० व० २० वा० उ० ३५ अ०(२)प्रति-विष, विषघ्न औषध –हिं० फ़ादे ज़हर–फ़ा० । तिर्याक–अ० । Antidote–इं० ।

अगदङ्करः agadnkarah } –सं०, पुं० वैद्य
अगदङ्कारः agadnkárah }
चिकित्सक (IA physician.) । रा० नि० व० २० ।

अगदतंत्र agadatantra } सं० क्ली० विष
अगदतन्त्रम् agada-tantram }
चिकित्सा विषयक तन्त्र, निखिल स्थावर व जङ्गम विष चिकित्सा; विष तन्त्र (शास्त्र) । इल्मुस्समियात इल्मुस्सुमूम–अ० । टॉक्सि-कॉलॉजी (Toxicology.)–इं० यह शल्य आदि अष्टविध तन्त्रान्तर्गत वैद्यक का एक अंग विशेष है । जिसमें सर्प बिच्छू आदि के विष से पीड़ित मनुष्य की चिकित्सा का विधान हो । सु० सू० १ अ० ।

वह शास्त्र जिसमें विषों के वर्गीकरण, उनके मनुष्य शरीरावयवों पर होने वाले प्रभाव एवं लक्षण तथा उपचार और चिकित्सा व अगद प्रभृति का पूर्ण विवेचन किया जाय ।

अगदनस्यम् agada-nasyam–सं० क्ली०, सर्पदंष्ट्र प्रभृति विषयक नस्य विशेष, विष के नस्य(Sternutatory used in snake poisoning) सु० क० ५० ।

अगदाञ्जनम् agadánjanam–सं०, क्ली०, विष द्वारा मूर्च्छित हुए प्रभृति का अंजन, विषघ्न अंजन (Collyrium used as antidote to poison.) सु० क० ५० ।

अगदेश्वरः agadeshvarah–सं० पुं० योग–शुद्ध गंधक १ भाग, पारद १ भाग, मैनशिल १ भा०, वर्क चांदी १ भाग, हरताल १ भाग, शुद्ध अभ्रक भस्म गंधक का चौथाई भाग, चूर्ण कर इसमें हंसराज, घिकुँआर और नीबू के रस की सौ भावना दें फिर आतशी शीशी में रख बालुका यंत्र द्वारा ३२ पहर की आँच दें ।

मात्रा—चना प्रमाण ।

गुण—यह उचित अनुपान से प्रत्येक रोगों को नष्ट करता है । र० यो० सा० ।

अगन aghana–अ० मिनमिना वह व्यक्ति जो नकिया कर बात करे ।

गअन agana–हिं० संज्ञा स्त्री (१) दे० अग्नि । (२) दे० अगण ।

अगन चश्मानोका agana-chashmánoká–हिं० पुं० आतशी शीशा, सूर्य्य-कान्त-मणि, अग्नि-गर्भ (The sun-stone)–इं० ।

अग़नश aghanasha–बम०, हजा०, नौसादर, नृसार । (Ammonii chloridum)

अगना aganá–उ० प०सू० धासन । मे० मो०।

अगनाद् aganáda-बं० वन तिक्तिका, आकनादि सं० बं० । Stephania Hernandifolia । फा० इं० १ भा० ।

अगनी agani-हिं० संज्ञा स्त्री० दे० अग्नि । संज्ञा स्त्री० [सं० अग्र] घोड़े के माथे पर की भौंरी वा घूमे हुए बाल ।

अगनीन aganína-इं० जलीय ऊर्ण वसा (Adeps lanæhydrosus) । इं० मे० मे० ।

अगनीयूस aghaníyúsa-सिरि० किर्मिज़ दाना, मसूर के बराबर रक्त वर्ण का एक कीट है (Cochineal) देखो कोचनील ।

अगनीस aganísa यु० निर्गुण्डी सम्हालू-हिं० । (Vitex negunde, *Linn.*)

अगनू aganú
अगनेऊ agnaeú } -हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०
अगनेत agnata

आग्नेय] अग्नि कोण । आग्नेय दिशा ।

अगन्धखर्पर पर्पटी agandhakharparparpatí-सं० स्त्री० योग-शुद्ध पारद १२ मासे, लौह भस्म १२ मासे, दोनोंकी कज्जली करें पुनः थोड़े से घी में मन्दी आग पर पिघला कर विधि वत् गोबर के ऊपर केले के पत्र रख उस पिघली हुई कज्जली को डालकर ऊपर से दूसरे केले के पत्र से दाब दें । फिर भारंगी, सोंठ, अगस्तिया, त्रिफला, जयन्ती, निर्गुण्डी, त्रिकुटा, वासा, कुमारी इनके रसकी ७-७ भावना देकर एक लघु पुट दें ।

गुण—उचित अनुपानोंमें समस्त रोगों को नष्ट करती है । पान, तुलसीके रस तथा गो मूत्रके साथ सेवन करने से श्वास और खाँसी का नाश होता है । मात्रा-१ माशा से २ रत्ती ।

अगन्धिकम् agandhikam-सं० क्ली० सोंचल लवण-बं० । sochal-salt भा० मध्य० । देखो--**सौवर्चलम्** ।

अगम agama-हिं० वि० [सं० अगम्य] (१) अथाह । (२) अलभ्य ।

अगमकी agamakí-हिं० स्त्री० विलारी । म्युकिया स्कैब्रेल्ला Mukia scabrella, *Arn.*), ब्रायोनिया स्कैब्रेल्ला (Bryonia Scabrella, *Linn*)-ले० । अहिल्यकम्, घण्टाली,-सं० । चिराती, बेल्लारी-सिं० चिराती-मह० । ग्वाल ककड़ी-उ० प० सू० । मोसुमुसुकी, मुसु मुसुकाइ- ता० । पुटेन-पुदिङ्ग, पोट्टी बुदमु, नूधोस कुतुतरु बुदम--ते० । मुक्कपिरी, मुक्कल-पीरम्-मल० । ब्रिस्टली ब्रायोनी (Bristly Bryony)-इं० ।

कुष्माण्ड वर्ग.

(N. O. Cucurbitaceæ.)

उत्पत्ति स्थान—समग्र भारतवर्ष ।

वानस्पतिक विवरण-पौधा लोमश, खुरदरा, (विषम तलीय), आधारकतन्तु (tendril) सामान्य, पत्र-हृदाकार, खण्डयुक्त या कोणयुक्त पुष्प-लघ्वक्ष युक्त, जिसमें असंख्य नर पुष्प होते हैं । और पुष्प गुच्छाकार होता है । नारि पुष्प १ से ४, लघु, घण्टाकार और पीत वर्ण का, बीज (berry) वर्तुलाकार, पक्वावस्था में गम्भीर रक्त वर्ण का जिसपर लम्बाई की रुख श्वेत धारियाँ पड़ी रहती हैं, चिकना (समतल) अथवा कतिपय प्रहष्ट रोमों से व्याप्त होता है । फल एवं पौधा स्वाद में कटु होते हैं । फल अक्टूबर से दिसम्बर मास तक परिपक्व होते हैं ।

इतिहास व गुणधर्म आदि- डाइमाक एन्सली के वर्णनानुसार इसका दाक्षिणात्य संस्कृत नाम अहिल्यकम् है जो स्पष्टतया अहिलेखनका अपभ्रंश है । इसके फल पर सर्पाकार श्वेत धारियाँ पड़ी रहती हैं इस कारण इसका उक्त नाम भी उचित ही है ।

इसका तथा शिवलिङ्गी (Bryonia Laciniosa) का दूसरा संस्कृत नाम दो प्रयोग में आता हुआ दीख पड़ता है । वह घण्टाली-- है जिसका अर्थ "सूत्र में एक पंक्ति में पिरोई हुई घण्टियां" है जैसाकि नर्तक कुमारी गण नृत्य काल में पहनती हैं । यह नामभी उपयुक्त सादृश्यताके कारण ही रखा गया है ।

यह पौधा साधारण भेदक एवं आमाशय बलप्रद है । इसका शीत कषाय अर्द्ध प्याली की मात्रामें

दिन में दो बार दिया जाता है। यह अब उन्हीं आशयों के लिए व्यवहार में आती है तथा यह उन मिश्रणों में जो बालकों को दी जाती हैं, प्रविष्ट होती है। ऐन्सली।

यह मूत्रल है—र्‌हीडी।

बीज का क्वाथ तीव्र स्वेदक है। इसकी जड़ द्वारा निर्मित क्वाथ आध्मान में हितकर है तथा जड़ को दंत से चर्वण करने से यह दंतशूल को लाभ पहुँचाती है। वैट।

कोमल अंकुर एवं तिक्त पत्र सामान्य सारक प्रभाव करते हैं। और डाक्टर पीटर (Watts' dictionary] शिरोऽर्त्ति या शिर चकराने और पित्त विकार में प्रयोग करने की शिफ़ारिश करते हैं।

यह दवा कुछ मिश्रित योगों का एक अवयव है जो कफयुक्त (मुख्य लक्षण) पुरातन रोगों में व्यवहृत है। सम्भवतः इसके श्लेष्म निस्सारक प्रभाव के कारण ही ऐसा किया जाता है। इं० मे० मे०।

अगमन agamana–हिं० क्रि० वि० [सं० अग्रवान] आगे। पहिले। प्रथम। आगे से, पहिले से।

अगमनीया agamaníyā–हिं० वि० स्त्री० [सं०] न गमन करने योग्य (स्त्री), जिस (स्त्री) के साथ संभोग करने का निषेध हो।

अगम्य agamya–हिं० वि० [सं०] (Unapproachable) न पहुँचने योग्य।

अगम्या agamyá–हिं० वि० स्त्री० [सं०] न गमनकरने योग्य (स्त्री) मैथुन के अयोग्य स्त्री। संज्ञा स्त्री० न गमन करने योग्य स्त्री। वह स्त्री जिसके साथ सम्भोग करना निषिद्ध है। जैसे-गुरुपत्नी, राजपत्नी, इत्यादि [A women not deserving to be approached, (for cohabitation)

अगम्यागमन agamyágamana–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] अगम्या स्त्री से सहवास। उस स्त्री के साथ मैथुन जिसके साथ संभोग का निषेध हो। जैसे--राजपत्नी, गुरुपत्नी, मित्रपत्नी, माता, बहिन इत्यादि।

अगम्या गामी agamyágámí–हिं० संज्ञा पुं० [सं० अगम्यागामिन] (Practising-illicit intercourse) अगम्या स्त्री से संभोग करने वाला।

अगया agaya } **अगयाघास** agaya-ghása } -हिं० [१] रोहिष-तृण, गंधतृण, भूतृण। Andropogon Schoeranthus, *Linn.* फा० इं० ३ भा०। इं० मे० मे०। देखो अगिया। (१) जल धनियाँ, देवकाँडर–हिं०। स्वरूप–हरा। स्वाद–कडुआ और तीखा। पहिचान–प्रसिद्ध बूटी है। रासायनी लोग इसको ढूढ़ने में बहुत रहते हैं। प्रकृति–तीसरी कक्षा में गरम और दूसरी कक्षा में रूक्ष है। हानिकर्ता–त्वचा को और खुजली उत्पन्न करती है। दर्पनाशक–मुर्दासंग और गाय का घी। मात्रा–२ रत्ती। गुणकर्म-प्रयोग–(१) यदि इसके स्वरस में चालीस दिन गंधक भिगोकर धूप में रक्खें फिर उस गंधक को २ रत्ती पान में रखकर खाएँ तो अत्यन्त क्षुधा लगती है, (२) अति कामोद्दीपन कर्ता, (३) यदि वंग को इसके स्वरस में भस्म करें तो श्वास कास को अत्यन्त गुण करती है और किसी प्रकार का अवगुण नहीं करती (निर्विषैल) बु० मु०।

अगर agara–हिं० संज्ञा पुं० काली अगर, अगर सत। अगरु, अगुरु, वंशिकं, राजार्हम्, लोहं, कृमिजं, क्रिमिजं, जोङ्गकं, [अ०], अनार्य्यजं, [हे०], वंशकं, [हा०], लघु, पिच्छिलं [के०] भृङ्गजं, कृष्णं, लोहाख्यं अर्थात् लोहे के सम्पूर्ण नाम [र०] रातकं, वर्णप्रसादनं, अनार्यकं, असारं, अग्निकाष्ठं, क्रिमिजग्धं और काष्ठकं, लोहं, प्रवरं, योगजं, पातकम्, क्रिमिजम्, सं०। अगरु, अगुरचन्दन, आगु– बं०। ऊ.द, ऊदुल्-बखुर, ऊदे ग़र्क़ी, अगरे हिन्दी–अ०, फ़ा०। एक्किलेरिया एगेलोका (Aquilaria agallocha, *Roxb.*) ए० मलाकेन्सिस (A. Malaccensis, *Lamb*) ए० ओवेटा [A. Ovata]

-ले० । एलोवुड Aloewood, ईगल वुड Eaglewood-इं० बॉयस डी कैलम्बक (Boisde Calambac)-फ्रां० । अगर, अगलीचन्दन-ता० । हरुगुहचेट्टु--ते । कृष्नागरु, अगरु--ता० ते०, कना० । कृष्णागरु शिशवाचे झाड़-म० । अगरु-गु० । अक्यन-ब्र० । आकिल-मलाया० । हागलगंध-तु० । चिन--हि-अंगचीन । गरू, क्यागहरू--मल० । सासी -आसा० ।

थाईमलेसीई वर्ग

[N. O. thymelaceae]

उत्पत्ति स्थान—आसाम, पूर्वी हिमालय पश्चिमीमलय पर्वत, खसिया पर्वत, भूटानसिलहट, टिपेरा पहाड़ी, मर्तबान पहाड़ी, पूर्वी बंगाल प्रांत, दक्षिण प्रायद्वीप, मलक्का और मलायाद्वीप ।

नोट—आसाम प्रदेश प्राचीन काल से अगुरु वृक्ष की जन्मभूमि होने के लिए विख्यात है। रघु दिग्विजय वर्णन काल में कालिदास लिखते हैं—

चकम्पे तीर्णलौहित्ये तस्मिन् प्राग् ज्योतिषेश्वरः ।
तद्गजालानतां प्राप्तैः सह कालागुरु द्रुमैः ॥
[रघु०, ४ र्थ सर्ग]

इतिहास—अगर का सुगन्धि तथा औषध तुल्य उपयोग आज का नहीं वरन् अत्यन्त प्राचीन है । इसकी प्रचीनता का पता तो केवल एक इसी बात से लग सकता है कि इसका वर्णन सभी प्राचीन आयुर्वेदीय ग्रथों-सुश्रुत, चरक आदि में आया है । इतना ही नहीं प्रत्युत लोबान और तेजपात प्रभृति के साथ अहलोट तथा अह-लीम नाम से इसका ज़िकर यहूदी धर्म ग्रन्थों में भी पाया जाता है । (साम ४५ ८, कहा० ७ १७) । डीसकुरीदूस (Dioscorides) के कथनानुसार यह भारत वर्ष एवं अरब से यूरूप में लाया गया । ईटियस (Ætius) से पश्चात्कालीन लेखकों ने एलोवुड (Aloe wood) नाम से इस औषध का उल्लेख किया है, और इसी नाम से यह अब तक युरूप में प्रसिद्ध है । अगर का संस्कृत नाम अनार्य्यजं या अनार्य्यकं है । अस्तु विलियम डाइमॉक महोदय का निश्चय है कि भारतीयों से प्रथम कदाचित् पूर्वी एशिया के मूल निवासियों को इसके उपयोग का ज्ञान हुआ । प्राचीन समय में खुश्की के रास्ते यह मध्य एशिया और फ़ारस में लाया गया और वहां से अरब और यूरूप में पहुँचा । राजनिघण्टुकार ने कृष्णागुरु (काला अगर), काष्ठागुरु (पीली अगर), दाह काष्ठम्, दाहाग (गु) रु (गुर्जर देश प्रसिद्ध अगरु विशेष) तथा स्वादुगुरु (मङ्गल्यागुरु,मधुर रसागुरु, कंदार देश प्रसिद्ध अगर) नाम से इसे पांच प्रकार का लिखा है । निघण्टुकार के मतसे मङ्गल्यागरु श्रेष्ठ है । विस्तृत विवरण के लिए उन उन नामों के अन्तर्गत देखिए ।

भावप्रकाशकार—इसके चार प्रकार के भेदों को स्वीकार नहीं करते । ऐसा विदित होता है कि अरब यात्रियों ने इसके व्यापार एवं उत्पत्ति स्थान के सम्बन्ध में काफी समाचार संग्रह किए हैं ।

याहन्ना विन सेरापियन—ने हिन्दी, मंडली, सिन्फी और कमारी नाम से इसके चार भेदों का वर्णन किया है । दशवीं शताब्दि में इब्नसीना-इसके सम्बन्ध में निम्न विवरण देते हैं—मंडली हिंदी या (पहाड़ी) समंदूरी,कमारी, सन्फी और काकुली,किस्मूरी ये दोनों मृदुल मधुर होती हैं ।इनमें से सबसे खराब प्रकार हलाई, कम्ताई, मन्ताई, लवथी या रव्ताथी है। मंडली सर्वोत्तम है, इसके बाद समंदूरी धूसर वर्ण युक्त, वसामय एवं तैलीय भारी श्वेत धारियों से रहित और धीरे धीरे जलने वाली होती है । कोई कोई भूरीसे काली अगर को उत्तम ख़्याल करते और सबसे अधिकतर काली,श्वेत धारी रहित वसामय तैलीय और धीरे धीरे जलने वाली "कमारी" होती है । संक्षेप में सर्वोत्तम अगर वह है जो काली, भारी, जल में डूबने वाली, चूर्ण करने पर रेशा रहित हो, तथा जो जल में न डूबे वह अच्छी नहीं । अरब यात्री भी अगर को लगभग उन्हीं नामों से पुकारते हैं ।

मीर मुहम्मद हुसैन—[१७७०] लिखते हैं–"ऊद जिसे हिन्दीमें अगर कहते हैं,यह एक लकड़ी है जो कि सिलहट के निकट जन्तिया की पहाड़ियों में उत्पन्न होती है। ये वृक्ष बंगाल से दक्षिणस्थ टापुओं में भी जो कि त्रिपुवन् रेखा के उत्तर में स्थित हैं, पाए जाते हैं। इसके वृक्ष बहुत ऊंचे होते हैं। और प्रकाण्ड एवं शाखाएं वक्र होती हैं और काष्ट मृदु होता है। इसकी लकड़ी से घड़ी, प्याले तथा अन्य बर्तन बनाते थे। यह सड़ता गलता भी है और इस दशामें विकृत भाग सुगंधयुक्त द्रव्य से व्याप्त हो जाता है। अतः उक्त परिवर्तन लाने के लिए इसे नम पृथ्वी गर्त में गाड़ देते हैं। अगर के जिस भाग में उक्त परिवर्तन आ जाता है वह तैलयुक्त भारी एवं काला होजाता है। पुनः इसे काटकर पृथक् कर जल में डाल देते हैं। इनमें जो जलमें डूब जाता है उसे ग़र्क़ी (डूबने वाला), जो आंशिक जल मग्न होता है उसे नीम ग़र्क़ी (आधा डूबने वाला) या समालहे आला और जो तैरता रहता है उसे समालह् कहते हैं। इनमें से अन्तिम सर्व सामान्य होता है। ग़र्क़ी काला होता है तथा अन्य काले और हल्के धूसर वर्ण के होते हैं।

औषध कार्य के लिए ऊदे ग़र्क़ी, जो सिलहट से प्राप्त होता है, सर्वोत्तम होता है। इसे तिक्त सुगंध मय तैलीय तथा किञ्चित् कषैला होना चाहिए, इससे भिन्न निम्न कोटि के ख़्याल किए जाते हैं। चूंकि ऊद की लकड़ी को कुचल कर जल में भिगोकर अथवा इसे बादाम के साथ मिलाकर पुनः कुचल दबाकर इसका तेल निकाल लेते हैं, इसलिए योगों में प्रायः ऊदे ख़ाम (कच्चा ऊद) ही लिखा जाता है। और क्योंकि "चूरा अगर" नाम से अगर के टुकड़े भारतीय व्यापारिक द्रव्य है, अस्तु इसमें चन्दन, तगर अथवा एक सुगन्धित काष्ठ के टुकड़े मिला दिए जाते हैं।

रॉक्सबर्ग तथा अन्य वनस्पति शास्त्रियों ने सिलहट में अक्विलेरिया (aquilaria) अर्थात् अगर की परीक्षा की और हाल ही में यह निश्चय किया कि यह मर्गुई आर्चिपलेगो द्वीपों में उत्पन्न होने वाले एक वृक्ष की लकड़ी है। गैम्बल (Gamble) के कथनानुसार इसका बर्मी नाम "अक्यायु"है और यह टेनासरम तथा मर्गुई आर्चिपलेगो में उत्पन्न होता है।

अगर (aloe wood) धूप देने के लिए अथवा सुगन्ध हेतु समस्त पूर्वीय देशों में व्यवहृत है और पूर्वकालमें यह युरूप में उन्हीं व्याधियों के लिए व्यवहार में आता था जिनके लिए आज भी यह भारतवर्ष में प्रयुक्त होता है।

एक पेड़ जिसकी लकड़ी सुगन्धित होती है, इसकी ऊंचाई ६० से १०० फुट और घेरा ५ से ८ फुट तक होता है। जब यह बीस वर्ष का होता है तब इसकी लकड़ी अगर के लिए काटी जाती है। पर कोई कोई कहते हैं कि ५० या ६० वर्ष के पहिले इसकी लकड़ी नहीं पकती। पहिले तो इसकी लकड़ी बहुत साधारण पीले रंग की और गंध रहित होती है पर कुछ दिनों में धड़ और शाखाओं में जगह जगह एक प्रकार का रस आ जाता है जिसके कारण उन स्थानों की लकड़ियाँ भारी हो जाती हैं। इन स्थानों से लकड़ियाँ काट ली जाती हैं और अगर के नाम से बिकती हैं। यह रस जितना अधिक होता है उतनी ही लकड़ी उत्तम और भारी होती है। पर ऊपर से देखने से यह नहीं जाना जा सकता कि किस पेड़ में अच्छी लकड़ी निकलेगी। विना सारा पेड़ काटे इसका पता नहीं लग सकता। एक अच्छे पेड़ में ३००) तक का अगर निकल सकता है। पेड़ का हलका भाग, जिसमें यह रस वा गोंद कम होता है, 'धूप' कहलाता है और सस्ता अर्थात् १), २) रुपए सेर बिकता है। पर असली काली लकड़ी जो गोंद अधिक होने के कारण भारी होती है ग़रक़ी कहलाती है। और १६) या २०) सेर बिकती है। यह पानी में डूब जाती है। लकड़ी का बुरादा धूप, दशांग आदि में पड़ता है। बम्बई में जलाने के लिए

इसकी अगर बत्ती बहुत बनती है। सिलहट में अगर का इत्र बहुत बनता है। चोवा नामक सुगंध इसी से बनता है।

वानस्पतिक वर्णन—अगर के बेडौल टुकड़े होते हैं जो उनमें राल के परिमाणानुसार धूसर या गहरे धूसर वर्ण आदि विभिन्न रंगों के होते हैं। हलके तथा गहरे दोनों रंगों के टुकड़े लम्बाई की रुख गहरे रंग के नसों से चित्रित होते हैं, ये जल में डालने से जलमग्न हो जाते हैं। इसे चबाने से ये दाँतों में चिपट जाते हैं तथा मृदु प्रतीत होते हैं। स्वाद—तिक्त तथा सुगन्ध युक्त। जलाने से इसमें से ग्राह्य गंध आती है।

प्रयोगांश—काष्ट।
रसायनिक संगठन—एक उड़न शील तैल, जो ईथर में विलेय होता है, दूसरा राल जो मद्यसार (अलकुहाल) में घुलनशील तथा ईथर में अन घुल होता है।

औषध निर्माण—क्वाथ (१० में १); मात्रा—४ से १२ ड्राम। चूर्ण तथा कल्क अनेक औषधियों से युक्त पाक आदि; मात्रा—१० से ३० रत्ती। तैल—३० से ६० बूंद।

गुणधर्म तथा उपयोग.

आयुर्वेदीयमतानुसार—अगर शीत, प्रशमन और कासघ्न है। च०।

अगर वात-कफहर, वर्णप्रसादक, देह का रंग सुधारने वाला) खुजली नाशक और कुष्टनाशक है। अगर की लकड़ी को जल में औटाकर उस पानी को पीने से ज्वर में लगने वाली तृषा न्यून होती है और यह मृगी एवं उन्माद आदि रोगों में परमोपयोगी है। सु०।

अगर तिक्त, उष्ण, चरपरा, लेप करने से रूक्षता उत्पन्न करने वाला, त्वचा को हितकर, तीक्ष्ण-पित्तकारक और हलका है तथा व्रण, कफवात, वमन, मुख रोग एवं चक्षु और कर्ण रोग नाश करने वाला है। रा० नि० व० १२। वा० चि० ४ अ०।

जो अगर काले रंग का होता है उसे कृष्णागुरु कहते हैं। यह अधिक गुण वाला और लोहे के सदृश पानी में डूब जाता है। अगर से बनाए हुए तैल में भी काले अगर के सदृश ही गुण हैं। भा० क० व०। अगर गन्ध—गरम, तिक्त, कटु, स्निग्ध, मंगल दायक, रुचिकारी धूपके योग्य पित्त जनक, तीक्ष्ण है तथा वात, कफ, कर्णरोग और कोढ़ का नाश करता है। लेप में और लगाने में श्रेष्ठ है। नि० र०

वक्तव्य

इस देश में अति प्राचीन काल से अनुलेपन व औषध रूप से अगर व्यवहार में आरहा है। अतः चरक सूत्रस्थान ३४ अध्याय में शिरो-वेदनाहर एवं शीतहर प्रलेप में अगरू का उल्लेख दिखाई पड़ता है।

चरकोक्त शीत ऋतुचर्या में अगर के अनुलेपन का उपदेश किया गया है। सुश्रुत में व्रणधूपन द्रव्यों के मध्य अगर का पाठ दिया है। (सू० ६ अ०)। अगर का तेल पीत वर्ण का एवं अगर के समान गंध वाला होता है। भावप्रकाशकार लिखते हैं—अगर के तेल का गुण कृष्णागुरु अर्थात् काले अगर के समान है, यथा—

"अगुरु प्रभवः स्नेहः कृष्णागुरु समोमतः।"
उत्तम अगर की लकड़ी को जल से घिस कर शरीर में लगाने से उसका वर्ण उज्ज्वल होजाता है इसी लिए इसका एक नाम "वर्ण प्रसादन" है।

यूनानी मत के अनुसार—प्रकृति दूसरी कक्षा में गरम और तीसरी कक्षा में रूक्ष है। किसी किसी के मतानुसार दूसरी कक्षा में गरम व रूक्ष है। हानिकर्त्ता—उष्ण प्रकृति को इसका पीना और धूनी देना। दर्पघ्न—गुलाब, कपूर, सिकंज-बीन। प्रतिनिधि—दालचीनी, लौंग, केशर, चंदन बालछड़, रूमी मस्तंगी। गुण धर्म-प्रयोग—(१) हलकी अपनी सुगन्धि एवं प्रकृतोष्मासे प्राण वायु को बलप्रद होने के कारण आमाशय यकृत, हृदय तथा इंद्रियों को बल देता है और इसी

कारण मस्तिष्क के लिए अत्यन्त लाभदायक है, (२) अपनी सूक्ष्मता एवम् ऊष्मा से रोधोद्‌घाटक है, (३) इसका चबाना मुख को सुगंधि प्रदान करता है। और वायु लयकारक है। त० नफ़ी० (५) हृदय को प्रसन्न करता है। (६) वात तन्तुओं को बलप्रद (७) पक्वाशय और आंत्र को बलप्रद, (८) गर्भाशय की शीतता, को लाभ कर्त्ता, (९) ओजप्रद और हृदय की व्याकुलता का नाशक है।

अगर के सम्बन्ध में नव्यमत—सुगंध हेतु चूर्ण रूप में तथा उत्तेजक पित्त निस्सारक एवम् रोधोद्‌घाटक प्रभाव के लिए इसका आभ्यन्तरिक उपयोग होता है।

अनेक नाड़ी बलदायक वायुनिःसारक तथा उत्तेजक औषधियों का यह एक अवयव है। निक़रस (Gout) तथा संधिवात में एवं वमन निग्रह हेतु भी इसका उपयोग होता है। शल्य चिकित्सा सम्बन्धी व्रण एवं स्तनों की वेदना शमनार्थ इसको अंगमर्द प्रशमन धूनी रूप से उपयोग में लाते हैं। बालकों की खांसी में अगर तथा ईश्वरी (Indian birth wort) के कल्क को ब्रांडी के साथ वक्षस्थल पर लगाते हैं। शिरःशूल में इसे शिर में लगाते हैं। धूप बत्तियों के बनाने में भी यह प्रयुक्त होता है। इसे अगर की बत्ती कहते हैं।

जवारश ऊद में भी यह पड़ता है (अस्तु, देखो—जवारस) इसकी मात्रा १० से ३० रत्ती तक है। गुण—शुक्र सम्बन्धी निर्बलता, शिर में चक्कर आना तथा श्वेतप्रदर में यह नाड़ी को बल दायक औषध है। ई० मे० मे०।

अगर agar—फ़ा० सुरीन, चूतड़—उ०। नितम्ब—हिं०। (Hip)

अगर-अगर agar-agar—लङ्का० (१) चीनी घास—भा० बा०, बम्ब०। दरिया की घास, पाची—मोस—द०। समुद्रपु—पाची, समुद्रपु—पाचि—ते०। अगर-अगर—सिं०। सीलोन मॉस (Ceylon moss), एडिबल मॉस (Edible moss), सी वीड्स (Sea-weeds)—इं०। ग्रेसिलेरिया लाइकेनॉइडीज़ (Gracilaria lichenoides, *Grev.*) कडल् पाचि—ता०। कियाव् चाव्ङ्—बर०। ग्रेसिलेरिस कॉनफर्वॉइडीज़ (Gracilaris confervoides, *Grev.*)—ले०।

शैवाल जाति.

(Algae or sea weed.)

उत्पत्ति स्थान—लंका का स्थिर समुद्री भाग तथा हिंद महासागर।

वानस्पतिक वर्णन—अगर-अगर श्वेताभायुक्त या पीताभायुक्त श्वेत शाखी तन्तुमय जलीय पौधा है जो कई इञ्च लम्बा (अश्वेतकृत बैंगनी)होता है। आधार पर बृहत्तन्तु कुक्कुट पत्र से अधिक मोटे नहीं होते; लघु तन्तु सीने के सूत्र के लग भग मोटे होते हैं। नंगी आंखों से वे तन्तु करीब करीब वेलनाकार प्रतीत होते हैं। परन्तु सूक्ष्म दर्शकयंत्र से देखने पर वे लहरदार या झुर्री युक्त दीख पड़ते हैं। शाखाक्रम कभी कभी युग्म (Dichotomous.) होता है। और कभी अयुग्म। शुष्कावस्था में सूक्ष्म वृत्ताकार कोष (Coccidia) अप्रत्यक्ष रहते हैं किन्तु आर्द्र होने पर स्पष्ट रूप से तत्क्षण दीख पड़ते हैं। वे करीब २ खाखस बीजाकार या अर्द्धवृत्ताकार होते हैं और उनमें सूक्ष्म आयताकार (स्तम्भाकार) गंभीर रक्तवर्णीय दानों (Spore) का एक समूह होता है। अगर-अगर (Ceylon moss) कार्टिलेजीय पदार्थ है। स्वाद—निर्बल लवणयुक्त शैवालीय होता है।

रासायनिक संगठन—वेजिटेबल जेली(वानस्पतीय सरेश)४० से ८० प्रतिशत, अल्ब्युमेन नैलिन (Iodine), निशास्ता (True starch), लिग्निअस पदार्थ (Ligneous matter), लुआब, लवण यथा सैंधगन्धेत (Sodium sulphate) तथा सैंध हरिद (Sodium chloride), चूनस्फुरेत (Calcium phosphate), चूनगन्धेत (Calcium sulphate), मोम, लौह तथा शैलिका।

इतिहास तथा उपयोग—अगर-अगर

Ceylon moss) दक्षिण भारत तथा लंका में प्राचीन काल से पोषण मृदुता जनक, स्निग्धता कारक तथा परिवर्त्तक रूप से और मुख्यतः वक्ष रोगों में उपयोग में लाया जाता है। पुतलम और कालपेन्टिर के मध्यस्थित नहरफील वा प्रशान्त जल में यह अधिकता के साथ उत्पन्न होता है। प्रधानतः दक्षिणी पश्चिमी मानसून काल में जलस्थ क्षोभ के कारण जब यह पृथक् होजाता है तो देहाती लोग इसे एकत्रित कर लेते हैं। तदनन्तर उसको (सिवार को) चटाइयों पर बिछा कर दो तीन दिवस पर्यन्त धूप में शुष्क करते हैं। पुनः ताजे जल से कई बार धोकर धूप में खुला रखते हैं जिससे वह श्वेत हो जाता है।

बँगाल फार्माकोपिया (पृष्ट २७६) में उसके उपयोग का निम्न क्रम दर्शित है :—

क्वाथ—शुष्क अगर-अगर चूर्ण २ ड्राम, जल १ क्वार्ट० इसको २० मिनट तक उबालकर मलमल से छान लें। इसमें अर्द्ध आउंस के अनुपात से विचूर्णित शैवाल की मात्रा अधिक करने से (या १०० भाग जल तथा शुष्क शैवाल चूर्ण १ भाग इं० मे० मे०)—शीतल होने पर छना हुआ घोल दृढ़ सरेश में परिणत हो जाता है और जब इसको दालचीनी वा निम्बूफल त्वक् या (तेज-पत्र) शर्करा तथा किञ्चित् मद्य द्वारा स्वादिष्ट बना दिया जाता है तो यह रोगी बालकों तथा रोगानन्तर होने वाली निर्बलता के लिए उत्तम एवं हलका(पोषक) पथ्य होजाता है। (डाइमॉक) अगर–अगर का शुष्क पौधा औषध रूप में व्यवहार में आता है। इसमें पेक्टिन् तथा वानस्पतीय सरेश अधिक परिमाण में वर्तमान होते हैं। इसका क्वाथ (४० में १) मृदुताजनक एवम् स्नेहकारक रूप से वक्ष रोगों, प्रवाहिका तथा अतिसार में लाभदायक होता है। इसके द्वारा निर्मित सरेश (Jelly) श्वेतप्रदर- असृग्दर तथा मूत्रपथस्थ क्षोभ में व्यवहृत होता है। इसमें नैलिका (Iodine) होती है अस्तु यह घेघा (Goitre) तथा कंठमाला आदि में लाभ-प्रद होता है। यह सिरेशम माही (Isinglass) का उत्तम प्रतिनिधि है। इं० मे० मे०।

हिन्दू जनता इसे अगर-अगर (Japanese isinglass) की अपेक्षा अधिक पसन्द करती है क्योंकि उसको इसके प्राणिवर्ग से निर्मित होने का सन्देह है, जो सर्वथा भ्रममूलक एवं अज्ञानता पूर्ण है। (डाइमॉक)

(२) अगर–अगर agar–agar–जापानीज़ आइसिन् ग्लास (Japanese Isinglass), जेलोसीन (Gelosin)-इं० जेलीडियम् कॉर्नियम् (Gelidium Corneum, *Lam.*) जी० कार्टिलेजीनियम् (G- Cartilagineum, *Gaill.*)-ले०। माउसी डी चाइनी (Mousse de chine)-फ्रां०। थेओ (Thao)-जापा०। याङ्ग–ट्सै चा०। चोनो यास्त–मा० वा०।

शैवाल जाति।

(*N. O.* Algæ)

(नॉट ऑफिशल Not official.)

उत्पत्ति स्थान—हिन्द महासागर।

विवरण—अगर-अगर ऊपरोक्त दोनों प्रकार के सिवारोंसे निर्मित झिल्लीमय फीता को शकल का शुष्क सरेश है। सम्भवतः यह स्फीरोकॉकस कॉम्प्रेसस (Sphoerococcus com pressus, *Ag.*) तथा ग्लॉइओपेल्टिस टिनेक्स (gloiopeltis tenax, *Ag.*) से भी प्रस्तुत किया जाता है।

हैन्बरी—इसके विषय में निम्न वर्णन उद्धृत करते हैं :—जापानीज़ आइसिन् ग्लास के अशुद्ध नाम से अभी हाल में ही जापान से इङ्गलैण्ड में एक वस्तु भेजी गई है जो दबी हुई, असमान चतुर्भुजीय छड़ होती और प्रत्यक्ष रूप से लहरदार, पीताभयुक्त श्वेत एवं अर्द्धस्वच्छ झिल्लियों की बनी होती है। ये छड़ ११ इंच लम्बे तथा १ से डेढ़ इंच चौड़े, आशयों से पूर्ण अत्यन्त हलके (प्रत्येक लगभग ३ ड्राम) अधिक लचीले परंतु सरलता पूर्वक टूट जानेवाले

तथा स्वाद एवं गंध रहित होते हैं। शीतल जल से स्पर्श होने पर इनका द्रव्यमान बढ़ जाता है तथा वे चतुष्कोणी स्फटिकवत् होजाते हैं और उनकी भुजाएँ नतोदर तथा चौड़ाई में १॥ इंच होती हैं। यद्यपि जल में यह किसी परिणाम में अविलेय होता है तथापि कुछ काल पर्यन्त उबालने पर इसका अधिक भाग लय हो जाता है और घोल, जब कि अभी यह जल मिश्रित (या पतला) है, शीतल होने पर सरेश में परिणत हो जाता है। चीन देशीय यूरूप निवासी इसे वास्तविक सिरेशम माही (Isinglass) की प्रतिनिधि स्वरूप व्यवहार में लाते हैं जो कि बहुशः उससे भी गुणदायक है। यह बहुत जल में मिलकर भी उसे सरेश में परिवर्तित कर देता है। उसका यह गुण एम० पेयन (M. payen) द्वारा अभिहित जेलोज़ (Gelose) नामक पदार्थ के कारण है जो जापानीय शैवाल में विशेष रूप से पाया जाता है। यह सिरेशम माही की अपेक्षा अधिक उत्ताप पर पिघलता है। यह अपने से १०० गुने जल में भी घुल कर शीतल होने पर सरेश में परिणत हो जाता है।

(४) एक ही वजन में इससे सिरेशम माही से १० गुना अधिक सरेश तैयार होता है। आहार हेतु चेओ सरेश (अगर-अगर) प्राणिज सरेश से अधिक प्रिय नहीं होता, क्योंकि वह (चेओ) मुख में अनघुल होता है और उसमें नत्रजन का भी अभाव होता है। उसमें सर्वोपरि गुण यह है कि वह अति न्यून परिवर्तनशील होता है, अस्तु, उपयोग हेतु प्रस्तुत, स्वादिष्ट एवं मधुरीकृत 'सी वीड जेली' (समुद्र शैवाल सरेश) नाम से कभी कभी सिंगापूर से आया हुआ सरेश बिना विकृत हुए उसी रूप में वर्षों रक्खा रह सकता है।

अधुना विशेषतया उष्ण जल वायु में जीवाणु शास्त्रान्वेषणार्थ व जीवाणु उत्पादन वर्द्धन हेतु यह अधिक उपयोग में लाया जाता है। (डाइमॉक)

रसायनिक संगठन—उक्त सिवार से प्राप्त सरेश में जेलोज़ (gelose) जो सरेशी सत्व है प्राप्त होता है। इसमें कोई नत्रजन वायव्य नहीं होता तथा शर्करा पदार्थ (mannite), निशास्ता तथा अलब्युमेन वर्तमान होते हैं।

प्रभाव तथा उपयोग—उन छिद्र आदिकों को, जिनसे कभी आन्त्र वृषण में उतर आती है, संकुचित (छोटा) करने के विचार से अगर-अगर के कीट रहित घोल का तत्स्थानीय तन्तुओं में अन्तःक्षेप करते हैं। मृदुभेदक रूप से इसका प्रायः सफलता पूर्ण उपयोग किया गया है। अगर-अगर द्वारा निर्मित रिग्यूलीन (Regulin) नामक एक शुष्क एवं स्वाद रहित औषध जिसमें २० प्रतिशत कैस्करा सत्व (Extract of cascara) होता है प्रचार पा चुकी है। १ से ३ ड्राम की मात्रा में पुरातन मलावरोध में यह मृदु भेदक प्रभाव करता तथा मल परिमाण की वृद्धि करता है। कुचले हुए आलू व उबाले हुए फलों के साथ मिलाकर इसका उपयोग करना चाहिए। अगर-अगर के शुष्क बारीक पत्र चाय की चम्मच भर की मात्रा में कैस्करा के बिना मरोड़ एवं रेचन के उत्तम परिणाम उत्पन्न करते हैं। अगर के प्रभाव को आन्त्रीय पृष्ठों तक ही निर्मित रखने की दृष्टि से इसके साथ बहुत सी अन्य औषधियां जैसे फिनोलथैलीन (Phenol-phathalein) रूबर्ब (रेवन्द), टैनीन (कषायीन), कैटेच्यू (कत्था) तथा कैलम्बा इत्यादि सम्मिलित करदी गई हैं। हिट० मे० मे०।

यह पोषक तथा स्नेहकारक है और सीलोन मॉस (चीनी घास नं० १) के समान व्यवहारमें आता है। यह उत्तम आहार है। इं० मे० मे०।

अगरई agarai–हिं० वि० [सं० अगरु] श्यामता लिए हुए सुनहला संदली रंगका अगर।

अगरता agharatá–बर ब० छोटी मांई का वृक्ष (फ़राशवृक्ष) Tamarix gallica, *Linn.*

अगर तेलियह् agar-teliyah-हिं० ऊद ग़र्क़ी अर्थात् पानी में डूब जाने वाली 'अगर' या जो अगर तैलीय एवं श्यामवर्ण की तथा उपरोक्त गुण वाली अर्थात् डूब जाने वाली हो-(Aquilaria Malaccensis, *Lamk.*

अगरधत्ता agardhattá-सं० पुं० } गूमा,
अगरधाक agardhák ,, }
द्रोणपुष्पी (Leucas Cephalotes, *Spreng.* फा० इं० ३ भा० ।

अगरबत्ती agarbattí-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० अगरुवर्तिका] सुगन्ध के निमित्त जलाने की पतली सींक वा बत्ती जिसमें अगर तथा कुछ और सुगन्धित वस्तु पीसकर लपेटते हैं। इसका व्यवहार मद्रास तथा बम्बई में बहुत होता है।

अग़रलयूस aghar-layúsa-यू० इन्द्रायन का फल-हिं० (Citrulluscolocynthis, Schrad. Fruit of-Colocynth.) ।

अग़रस agharas-यू० वृक्ष विशेष, इसके गोंद को कहरुवा कहते हैं। (Succinum Amber [tree of-] ।

अगरसत agar-sata-हिं० पुं० अगर aquilaria agallocha, *Roxb.*)

अगरसार agárasára-हिं० सं० पु० देखो-अगर।

अगर सोमिनह agara sominah-अर० व० ग़ाफ़िस के नाम से प्रसिद्ध है। एक घास है।

अग़रस्तस agharastasa-यू० वेद गयाह। एक गोंददार वृक्ष अथवा घास।

अगरा,-री agará,-rí-सं० स्त्री० A kind of grass Deotar। एक प्रकार की घास। देवदाली। देयाताड़ा-बं०। अ० टी० भ०। (२) पीत-देवदाली। भा०, रा० नि० व० ३।

अग़रिया aghariyá-यू० मिट्टी का नाम है। (A knid of clay)

अग़रियूस aghariyúsa-यू० (१) गर्जरम्, गाजर Daucus carota, *Linn.* (car-rot) (२)देवदाली, बिन्दाल (Luffa Echinata, *Roxb.*)

अगरी agarí-सं० स्त्री० देवताड़ वृक्ष, देवदाली (Deotar) वै० श० । 'अपामार्ग'-हिं०, द०। (Achyranthes Aspera, *Linn.*) इं० मे० मे०।

अगरु agaru-सं० क्लो० } -अगर
अगरू agarú हिं० संज्ञा०पुं० } लकड़ी। ऊद,
काली अगर, अगरु चन्दन, कृष्णागुरु-हिं०। अगराइ-चन्दन-बं०। Aloe wood (Agallochum, the black variety) वा० उ० २७ अ०। देखो-अगर।

अगरु गंध काष्ठ agaru-gandha.káshtha-सं० क्लो० रक्तचन्दन। Pterocarpus santalinus, *Linn.* (wood of-Red sandal wood)स० फा० इं०।

अग़रू ग़ौलीत़ूस agharú-ghoulítúsa-यु० बोल-हिं० फा०, बं०, द०। गंध रसः बोलम् -सं०। मुर-अ० Mirrh, (Balsamodendron Mirrh.)

अग़रूस agharúsa-यू० खरहा, ख़रगोश। हेयर (Hare), रैबिट (Rabbit)-इं०

अगरूसारः agarú-sárah-सं० पुं०, कालीअगर, कृष्णागुरु। काला अगुरु-बं०। Aloe wood (the black variety) देखो-अगर

अगरेतुर्की agare-turkí-फ़ा० बच०-हिं० वज, वज्ज-अ०। acorus calamus,*Linn.* (Root of-sweetflag)

नोट—बहुधा समस्त वर्नाक्यूलर अंगरेज़ी कोषों में बच (Sweet flag) को पुष्करमूल (Orris root) के साथ मिलाकर भ्रम कारक बना दिया गया है। अतिरिक्त इसके अरबी वज या वज्ज रिचार्डसन (Richardson) शेक्सपीअर (Shakespear) और फ़ार्बीज (Forbes) प्रभृति कोषों में प्रमादवश लिंअ (Gallangal) के लिए प्रयोग

किया गया है। अतीस प्रकरणान्तर्गत फ़ारसी नाम "वज्जे तुर्की" के सम्बन्ध के नोट को देखिए। स० फा० इं०।

नोट—हाजिजैनुल् अत्तार (१३६८) इसे ऊ़दुल ज़ूज कहते हैं और इसका फ़ारसी नाम वलज़ूज बताते हैं।

अगल agala-ता०। चिकरस्सी-बं०। बीगापोमा-आसा०। मे० मो०।

अग़ल्सोलीस aghal-solísa-यू० एक वृक्ष है जिससे उशक़ नामक गोंद निकलता है।

अगलहिया agalahiyá-हिं० संज्ञा स्त्री० [देश०] एक चिड़िया, (चञ्चु का)

अगला agalá-हिं० वि० [सं० अग्र] [स्त्री० अगली] (१) आगे का। अग्र भागका। सामने का। अगाड़ी का। पिछला शब्द का उलटा। (२) पूर्ववर्त्ती। पहिले का। प्रथम। (३) आगामी। आने वाला। भविष्य। (४) अपर। दूसरा। एक के बाद का।

अगलाकोष्ठ agalá-koshtha-हिं० पुं० (Anterior chamber.) अग्रकोष्ठ।

अगलागल agalágala-हिं० कचैटा, किंगलो।

अग़लानअशी aghalán-ashí-तु० जुन्दबेदस्तर, गंधमार्जार (Castoreum.)

अगलाय agaláya-ता० चिकरस्सी-बं०। बीगा पोमा-आसा० मे० मो०।

अग़लीक़न aghalíqana-यू० मैफ़ख़्तज (दोशाब के नाम से प्रसिद्ध है)

अग़लीक़श aghalíqasha-यू० दोसर (एक बूटी है जिसके पत्ते गेहूं के पत्तों के सदृश होते हैं और उसके फल पर दो तीन पर्दे होते हैं और उस पर बाल के समान रोंआ होता है।)

अग़लीक़ी aghalíqí-यू० (१) मूली का तेल (२) मैफ़ख़्तज।

अग़लीतूस aghalitúsa-यू० फाशरा, शिवलिंगी-हिं० (Bryonia Alba)

अगवन्त agavanta-सं० अरनी [Premna Integrifolia, *Linn.*)

अग़बर aghavara-तु० खीस, प्यूसी, पीयूष, (The milk of a cow during the first seven days after calving.)

अगवोसी agavose-इं० यह एक प्रकार की निष्क्रिय शर्करा है जो राकसपत्ता (Agave americana, *Linn.*) नामक वृक्ष के डंठल के रस से पृथक की जाती है। इं० मे० मे०।

अगशि agashi-कना० अगस्त वृक्ष, अगस्तिया (Agati grandiflora, *Desv.*) फा० इं० १ भा०।

अगसतामरेरय agasa-tamre-raya-ता० जलकुम्भी-हिं०। कुम्भिका०-सं०। Pistia Stratiotes, *Linn.* इं० मे० मे०। फा० इं० १ भा०।

अग़साक़ aghasáqa-अ० (Black crow.) कुलाग़ स्याह (खेत का कौआ)।

अगसीगिदा agasi.gidá-कना० चकवँड़-हिं० चक्रमर्द, दद्रुघ्न-सं०। दादमर्दन-बं०। Ringworm shrub (Cassia alata.) *Linn.* इं० मे० मे०।

अगसेयमरनु agaseya-maranu—का० अगस्त, अगस्तिया (agati grandiflora, *Desv.*)

अगस्त agasta-हिं० पुं०, }
अगस्तिः agastih-सं० पुं०, } —अगस्तिया —Sesbania Grandiflora, *Pers.*)

अगस्तिकुसुमः agasti-kusumah-सं० पुं०,
अगस्तिद्रुः,-मः agasti-druh,-drumah

अगस्तिया

Agati grandi flora, *Desv.*

अगस्तिपत्र नस्य agastipatra-nasya-सं० पुं०, अगस्ति (अगस्तिया) के पत्तों के रस की नस्य लेने से चौथिया ज्वर का नाश होता है। (वृ० नि० र०)

अगस्तिया agastiyá-हिं० पुं०

अगथिया, अगस्त, वस्न, वासना, हथिया हतिया, हदया-हिं०। पर्याय—अथागस्त्योवंगसेनोमुनिपुष्पोमुनिद्रुमः। अगस्त्यः, वङ्गसेनः, मुनिपुष्पः, मुनिद्रुमः, शिववल्ली, पाशुपतः, एकाष्ठीलः, वृकः, वसु, वसुकः, वसूहट्टः, वसूकः, वकपुष्पः, शिवप्रियः, शिवमल्ली, काक-

नामा, काकशीर्ष, स्थूलपुष्पः, सुपूरकः, रक्तपुष्पः, मुनितरुः, अगस्तिः, वङ्गसेनः, शीघ्रपुष्पः, व्रणारिः, व्रणापहः, दीर्घफलकः, वक्रपुष्पः, सुरप्रियः, शिवापीडः, सुव्रतः, शिवाङ्कः, शिवेष्टः, शिवाह्लादः, शाम्भवः, क्रमपूरकः, रविसन्निभः, शुक्लपुष्पः, कनली, खरध्वंसी, और पवित्र-सं० । बकपुष्पः वक (ओ) बकफुलेर-गाछ बासकोना फुलेर गाछ -बं० । अगस्त- अ०, फा०, उ० । सिस्बेनियां ग्रांडिफ्लोरा Sesbania Grandiflora, *Pers.*) अगेटि ग्रांडिफ्लोरा agati Grandiflora, *Desv.*) इस्कीनोमेनी ग्रां० (Æschynomene, *Gr.*, *Linn.*)—लें० । लार्ज फ्लावर्ड एगेटी (Large flowered agati)-इं० । अकत्ति, अगतीं, अगात्ति, अगति-ता० । आनिसे, अविसि, तल्लअविसे-चेट्टु-ते०। अकत्ति-मल०। अगशी (सी)-कना० हदगा, अगस्ता-मह० । अगथियो-गु० । अगसेयमनु-का० । अगासेल-बाव० । बगफल-सुन्द० व० । कतुरु-मुरुङ्गा-सिंहली । लीग्यूमिनोसी (शिम्बी वा बब्बुर वर्ग) (N. O. Leguminosæ.)

उत्पत्ति स्थान—दक्षिणी तथा पश्चिमी भारत वर्ष । गंगा की घाटी और बंगदेश ।

वानस्पतिक वर्णन- अगस्तिया का वृक्ष समस्त भारतवर्ष में विशेषकर पुष्पोद्यानों में अधिक होता है । इसकी अवस्था बहुत थोड़ी होती है । यह थोड़े वर्षों में ही लगभग ३० फीट की ऊँचाई तक पहुँचकर पुनः मृतप्राय हो जाता है ।

काण्ड—सरल, ६ । १ हाथ दीर्घ; शाखा—घन सन्निविष्ट नहीं—फाँक फाँक होती हैं ।

पत्ते—बबूल के समान किंतु इससे बड़े दीर्घ वृन्त के जोड़ेजोड़े दोनों ओर २१ । २१ अथवा इससे न्यूनाधिक संख्या में लगे होते हैं । ये १-१॥ इं० लम्बे और अंडाकार स्वाद में कुछ अम्ल और कसैले होते हैं ।

पुष्प—बड़ा, शुभ्र वा रक्तवर्ण का एवं कोरकितावस्था में चन्द्रकला के समान वक्र होता है । श्रीहर्ष कवि ने यथार्थ कहा है—

"मुनिद्रुमः कोरकितः सितद्युति र्वनेऽह मुना मन्यत सिंहिका सुतः । तमिस्र पक्ष त्रुटिकूट भक्षितः कलाकलापं किल वैधवं वमन्

—नैषधचरित

बाह्यकोष—(Calyx) घंटाकार, द्विओष्ठीय और हरितवर्ण का होता है । पुष्प-तितली स्वरूप, श्वेत वा रक्तवर्णीय(आयुर्वेद में नील वा श्याम दो अधिक लिखे हैं) १॥-२ इंच लम्बा वक्र तथा गूदादार होता है ।

पुष्पाभ्यन्तरकोष—(Corolla) में विषमाकृति की चार पंखड़ियाँ (दल) होती हैं । जिनमें से ऊपर ध्वजा (Standard) और दोनों बगलमें १-१ पक्ष (wing) तथा नीचे तारणी (keel) होती है । तारणी(keel) के भीतर परागकेशर (१०) तथा रति वा गर्भ केशर (१) ढके होते हैं । प्रत्येक गुच्छे में २ या ४ पुष्प कक्षस्थ डंठल में लगे होते हैं । इसका स्वाद—कुछ अम्ल तथा तिक्त होता है ।

फली—लटकनदार, १-१॥ फीट के लगभग लम्बी कुछ चिपटी तथा बीजों के मध्यमें दबी होती है । प्रत्येक फलीमें लगभग ४०-४१ बीज होते हैं ।

वृक्ष त्वचा—लम्बाई के रुख चिड़चिड़ाई और बाहर से देखने में धूसर वर्ण की प्रतीत होती है । शुष्क काष्ठ मोटाई में ताजे काष्ठ के बराबर होता है । ताज़ी दशा में दरारों के मध्य असंख्य सूक्ष्म अश्रुवत् ताम्रवर्ण के निर्यास दीख पड़ते हैं, किंतु वायु में खुले रहने से ये पुनः शीघ्र श्यामवर्ण के हो जाते हैं । नवीन त्वचा का बाह्य तल रक्तवर्ण का और इसी प्रकार के नर्म गोंद से लदा रहता है ।

इतिहास तथा नाम विवरण—अगस्त्य मुनि के नाम पर इस वृक्ष के नाम अगस्ति और अगस्त्य प्रभृति रक्खे गए हैं । कहते हैं जब अगस्त्य मुनि का उदय होता है तब ही अगस्तिया के फूल खिलते हैं । इसका औषधीय उपयोग आज का नहीं वरन् अति प्राचीन है ।

प्रयोगांश—त्वचा, पत्र, पुष्प, मूल, शिम्बि और निर्यास ।

रासायनिक संगठन—त्वचा में कषायीन (Tannin) और निर्यास होता है।

औषधि निर्माण—त्वक् क्वाथ (२० भाग में १ भाग), मात्रा—१। तोला से २॥ तोला। मूल (स्वरस) २॥ मा० से ५॥ मा०। इसकी जड़ की लुगदी और पत्र का पुलटिस स्थानीय रूप से उपयोग में लाया जाता है। शर्बत की मात्रा २ मा०। हानिकर्ता—उदर में वायु उत्पन्न करता है। दर्पनाशक—सोंठ और मिर्च।

गुण धर्म (प्रभाव) तथा प्रयोग—आयुर्वेदिक मतानुसार—अगस्तिया पित्त कफ नाशक, गर्मी को शांत करनेवाला, शीतल, योनि शूल, तृष्णा, कोढ़ तथा शोथ नाशक है। वक अर्थात् अगस्त अत्यन्त शीतल, तिक्त, मधुर और मदगंध युक्त (कहीं कहीं "मधु गंधकः" पाठ आया है जिससे अभिप्राय 'मधु गंध युक्त' है) तथा पित्तदाह, कफ, श्वास एवं श्रम नाशक और दीपन है। रा० नि० व० १०।

सफेद, पीले, नीले और लोहित पुष्प भेद से अगस्तिया चार प्रकार का होता है। यह मधुर, शीतल, त्रिदोष, श्रम, कास और भूतबाधा का नाश करने वाला है। रा० नि०।

अगथिया—शीतल, रूक्ष, वातकारक, कड़वा है, और पित्त कफ चातुर्थिक ज्वर (चौथिया) तथा प्रतिश्याय को नष्ट करता है।

अगस्त पुष्प के गुण—अगस्तिया पुष्प-शीतल (मधुर) है, तथा त्रिदोष, श्रम, बलास, कास, विवर्णता, भूतबाधा और बल को नष्ट करता है। रा० नि० व० १०।

अगस्तिया के फूल—शीतल, चातुर्थिक ज्वर निवारक, रतौंधे को दूर करने वाले, कडुवे कसैले पचने में चरपरे रूक्ष और वातकारक हैं तथा पीनसरोग कफ एवं पित्त को दूर करते हैं।

भा० पू० १ भा० शा० व०। वृ० नि० र०।

अगस्ति के पत्ते के गुण—अगस्तिया के पत्ते चरपरे, कड़वे, भारी, मधुर, किञ्चित गरम और स्वच्छ हैं तथा कृमि, कफ, कण्डू (खुजली), विष और रक्त पित्त को हरते हैं। वै० निघ०।

अगस्तिया की फली के गुण—अगस्तिया की फली सारक (कुछेक हस्तलेख) बुद्धिदायक रुचिकारक, हलकी, पचने में मधुर, कड़वी, स्मरण शक्ति वर्धक है तथा त्रिदोष, शूल, कफ, पांडुरोग, विष, शोष, (कहीं कहीं शोफ पाठ है) और गुल्म को दूर करती है। इसकी पकाई हुई भाजी रूक्ष एवं पित्त कारक है।

अगस्तिया के वैद्यकीय व्यवहार

सुश्रुत—अगस्तिया अधिक शीतल एवं उष्ण नहीं है और नक्तांध रोगी के लिए हित कारक है। सू० ४६ पु० व०।

वाग्भट—नक्तांध्यमें अगस्तिया के पत्र; अगस्तिया के पत्र को शिल पर पीस कर इसको गो घृत में पकाकर घृत सिद्ध करें इस घी को नक्तांध रोगी को पिलाएँ। (उ० १३ अ०)

पाक करने की विधि—गो घृत १ सेर, अगस्तिया के पत्ते शिल पर पिसे हुए ऽ। एक पाव, इसे मंद अग्नि पर यहां तक पकाएँ कि रस शेष न रहे। पुनः कपड़े से छानकर रक्खें।

वक्तव्य

चरक के पुष्पवर्ग में इसका उल्लेख नहीं है। धन्वन्तरीय निघंटुकार ने अगस्तिया का गुण वर्णन नहीं किया। राजवल्लभ में अगस्तिया के फूल का गुण वर्णित है। पत्र तथा शिम्बी फली का गुण नहीं लिखा है।

भाव प्रकाशकार—लिखते हैं कि अगस्तिया का पत्र प्रतिश्याय अर्थात् तरुण प्रतिश्याय (सर्दी) निवारक है।

बृहन्निघण्टुकार के मत से अगस्तिया की की शिम्बी (फली) 'सरा' अर्थात् रेचक है।

चक्रदत्त चातुर्थिक ज्वर में अगस्तिया के पत्र—जब दो दिन के अन्तर से ज्वर आए तब अगस्तिया के पत्र का नस्य दें। (ज्वर चि०) ज्वर आने के दिन ज्वर से पूर्व नस्य लें। यह प्लीहा यकृद्विवर्जित चातुर्थिक ज्वरमें प्रयोज्य है।

भाव प्रकाश—वात रक्त में अगस्तिया का फूल—अगस्तिया के फूल को चूर्ण कर इसको भैंस के दूध में मिलाकर उसकी दधि जमाएँ।

उस दधि से निकाले हुए नवनीत से वातरक्तजन्य शरीरस्थ स्फोट (कांटे) अच्छे होते हैं। (म० खं० २ य० आ०)।

हारीत—(१) अपस्मार पर अगस्तिया के पत्र–अगस्तिया पत्र बहुत मरिच थोड़ी इनको गोमूत्र में भली प्रकार बारीक पीसकर अपस्मार रोगी को नस्य कराएँ। (चि० १६ अ०)
(२) बालापस्मार—में अगस्तिया के पत्र के रस के साथ मरिच योजित कर नस्य देने से लाभ होता है। उक्त रस में रुई का फाया भिगोकर उसे बालक के नासारंध्र के पास स्थापित करना अच्छा है। (चि० ४३)

अगस्त के सम्बन्ध में यूनानी व डाक्टरी मत—यूनानी ग्रन्थकार अगस्तिया को दूसरी कक्षा में शीतल और रूक्ष मानते हैं। फारसी द्रव्य गुणशास्त्र के प्रसिद्ध लेखक मीर मुहम्मद हुसैन लिखते हैं कि सरेकजाँ अथवा मस्तक दुखना हो तो इसके पत्तों का रस निकाल नाकमें २ बूंद टपकाएँ तो छींक आकर नासिका द्वारा जलस्राव होकर मस्तक का भारीपन दूर हो जाएगा।

बम्बई के निवासी इसके पत्ते और पुष्प के निचोड़े हुए रस को प्रतिश्याय एवं मस्तक शूल में नस्य रूप से उपयोग करते हैं। इससे नासिका द्वारा अत्यन्त जलस्राव होता है तथा शिर की वेदना एवं भारीपन सर्वथा दूर होता है। वि० डाइमॉक।

फूल का साग करके खाते हैं। छाल पाचन शक्ति बढ़ाने में दी जाती है। पत्तों को गरम जल में भिगाकर उस जल को पीने से जुल्लाब लगता है। आँख में जाला पड़ गया हो तो अगस्तिया के फूल का रस आँख में डालने से फायदा होता है। म० अ०।

यह उष्ण तथा पित्त हारक है। इसका पुष्प पित्तनाशक घ्राणशक्तिको बलप्रद और नक्तांध्य अर्थात् रतौंधे को दूर करता है।

अगस्तिया का मूल कफ निःसारक, त्वक् कषाय, तिक्त, बलकारक, पत्र तथा पुष्प के रस की नस्य देने से पीनस, प्रतिश्याय और शिरोवेदना कम होती है। मूल रस मधु के साथ तरुण कफ रोगमें प्रयोजनीय है। अगस्तिया तथा धतूरा की जड़ समान भाग लेकर पीस कर वेदना युक्त शोथ स्थल पर प्रलेप करें। (मे० मे० इं० आर० एन० खोरी कृत २ या खंड २२६–इं० पृ०)।

लाल फूल वाले अगस्तिए की जड़ को जल के साथ पीसकर बनाई हुई लुगदी का संधिवात में उपयोग होता है। १से २ तो० तक इसकी जड़का रस प्रतिश्याय में मधुके साथ उपयोग में लानेसे श्लेष्मा निस्सारक प्रभाव करता है। एक भाग अगस्तिए की जड़ तथा इतनी ही धतूरे की जड़, इन दोनों से तैयार की हुई लुगदी को वेदना युक्त शोथ में वर्तते हैं। इसके पत्ते को मृदुभेदक बन लाते हैं। वि० डाइमॉक।

चेचक की प्रथमावस्था तथा अन्य स्फोटकीय ज्वरों में इसकी त्वचा के शीत कषाय का लाभदायक उपयोग होता है। टी० एन० मुकर्जी० डॉक्टर बोनेविया (Dr. Bonavia) के कथनानुसार इसकी छाल अत्यन्त संकोचक है। और वे इसको बलकारक रूप से उपयोग में लाने की सिफारिश करते हैं।

डॉक्टर रम्फिअस (Dr. Rumphius) के वर्णनानुसार इसके पत्ते की पुलटिश चोट लगने अथवा कुचल जाने के लिए एक प्रसिद्ध औषधि है।

सहज कास अथवा बच्चों की सर्दी में दो बूंद अगस्त के पत्ते के रस को ८ या १० बूंद शहद में मिलाकर इसे अंगुली के सिरे पर लगा शिशु के ब्रह्मरंध्र पर दाई लोग चतुरता पूर्वक लगाती हैं। (इं० मे० मे०)

इसके पुष्प को निचोड़ कर निकाले हुए रस को चक्षुओं में डालने से दृष्टिमांद्य अथवा धुंध को लाभ होता है। (डा० मुर्रे)।

अगस्त की ताजी छाल को कूटकर इसका रस निचोड़ कपड़े की वर्तिका इसमें तर कर योनि में रखने से श्वेतप्रदर तथा योनि कण्डु का नाश होता है। (लेखक)

अगस्ति रस agasti ras सं० पुं० देखो—अगस्त्यरसः।

अगस्ति सूतराजः agasti sútarájah—सं० पुं० पारा, तांबा, जमालगोटा, लोहा, मैनशिल हल्दी और गंधक इन्हें तुल्यभाग ले कज्जली प्रस्तुत करें पुनः त्रिकुटा, चित्रक, भांगरा, अदरख, निम्बू, सम्हालू, अमलतास और मूली इनके रसों से पृथक् पृथक् भावना दें, गुड़ के साथ सेवन करने से सर्व प्रकार का उदर रोग दूर होता है। मात्रा—१–३ रत्ती।

(र० ल० र० चि० मो० सं०) उदराधिकार

अगस्य agastya—हिं० सं० पुं० | **अगस्त्यः** agastyah सं० पुं० | **अगस्त्याजय** agastyá-jaya } अगस्तिया

(Sesbania grandiflora, *Pers.*) त्रिका०।

(२) एक ऋषि का नाम जिनके पिता मित्र वरुण थे। इनको मैत्रा वरुणि और्शेय, कुंभ संभव, घटोद्भव और कुम्भज भी कहते हैं। विन्ध्यकूट, समुद्र चुलुक और पीताब्धि इनके अन्य नाम हैं। कहीं कहीं पुराणों में इन्हें पुलस्त्य का पुत्र भी लिखा है।

अगस्त्यनामरय agastya-támaraya—ना० जलकुम्भी—हिं०। कुम्भिका—सं० (pistia stratiotes, *Linn.*)

अगस्त्य मोदकः agastya modakah—सं० पुं० अर्शाधिकार में वर्णित योग विशेष—हड़ ३ पल, त्रिकुटा ३ पल, तेजपत्र आधापल, गुड़ आधा पल में मोदक प्रस्तुत करें। इसे सेवन करने से शोथ, अर्श, ग्रहणीदोष, उदावर्त तथा कास का नाश होता है।

बंग० सं० अर्श० यो० श्लो० ४७

अगस्त्यरसः agastyarasah—सं० पुं० उदर रोगघ्न रस विशेष—पारा, गंधक, जयपाल बीज, लौह, शिलाजतु, ताम्रभस्म, हल्दी समभाग लेकर त्रिकुटा, भांगरा, अदरख, नीम की छाल, सम्भालू, स्वर्णवल्ली के एकत्र क्वाथ में एकबार मर्दनकर रक्खें। मात्रा-१ रत्ती प्रमाण गुड़, हरड़ कचीला के साथ देने से उदर रोग का नाश होता है। (र० सा० सं० र० सै० चि०)

अगस्त्यरसायनम् agastyarasáyanam—त्रिफला, त्रिकुटा, त्रिगन्ध (दाल चीनी, इलायची, तेजपात,) निशोथ, वायविडंग, चव्य, चित्रक, धत्तूर बीज, विष्णुकान्ता, सुगन्धवाला, चोरक, लवंग, नागकेशर, कुलिञ्जन, सफेद मुसली, काकड़ासिंगी, भांग और अशन् वृक्षकी छाल प्रत्येक १–१ तो० ले चूर्ण कर इसमें ८ तो० अभ्रक भस्म मिलाएँ पुनः शुद्ध शिलाजीत ८ तो० और १०० वर्ष का पुराना सरडर सबके बराबर मिलाएँ; सतावर का रस १ सेर, गोमूत्र आधा सेर बकरी का दुध १ सेर और १॥ सेर शकर मिलाकर पाक विधि से पकाएँ। जब वह गुड़ पाक की तरह सिद्ध होजाए तो चिकने पात्र में रक्खें। मात्रा—१–४ मासे।

गुण—संग्रहणी, शूल, सूजन, गुदभ्रंश, प्रमेह, विषमज्वर, जीर्णज्वर, क्षय, श्वास, हिचकी, भगन्दर, हृदयशूल, पार्श्वशूल, पक्तिशूल, अरुचि अम्लपित्त, पांडुरोग, कामला, आनाह, उदररोग, और बवासीर को यह रसायन नष्ट करता है। इस परम मेध्य वातातपिक नाम वाले रसायन को अगस्त्य ऋषि ने बताया है। यह बुड्ढे को काम शक्ति देता है। स्त्रियों को पुष्टि देता है। और वृद्धास्त्रियों को भी गर्भ धारण कराता और प्रदर को दूर करता है। ना० वि०।

अगस्त्य वटी agastyavatí | **अगस्ति वटी** agasti vatí } सं० स्त्री० वच १० पल कुचिला १० पल, दोनों को तुषों के काढ़े में पका कर चूर्ण करें तथा इसमें त्रिकुटा, सज्जी खार, जवाखार, अजवाइन, अजमोद, खुरासानी अजवाइन, विडंग, हींग, सैन्धव, बिड, सोंचर नमक, प्रत्येक का चूर्ण ३ पल मिलाकर नीबू के रस में घोंट कर बेर प्रमाण गोलियां बनाएँ।

गुण—शूल, मन्दाग्नि, गुल्म, कृमि, तिल्ली आमवातको नष्ट करती है। वृ० नि० र० शूल० चि०

अगस्त्य सूतराज रसः agastya-sútarája rasah—सं० पुं० पारा, गंधक, सिंगरफ,

प्रत्येक १-१ तो० धत्तूर का बीज २ तो०, अफीम २ तोला इनका चूर्णकर भांगरे के रस की भावना दें। मात्रा-१ रत्ती से १॥ रत्ती पर्यन्त। अनुपान सोंठ,मिर्च, पीपर और शहद के साथ देने से वमन शूल, कफ, वातविकार, मन्दाग्नि तथा घोर निद्रा को तथा घृत और मिर्च के चूर्ण के साथ प्रवाहिका तथा छः प्रकार के अतिसार में जीरा और जायफल के चूर्ण के साथ देने से इनका नाश करता है

अगस्त्यहर्रे agastya-harra-हिं० संज्ञा पुं० } **अगस्त्य हरीतकी** agastya-haritaki }

अगस्त्यावलेहः agastyá-valehah-सं० पुं० सं० ग्रा० (१) यह काम में हित है। निर्माण क्रमः-दशमूल, कौंच, शंखपुष्पी, कचूर बरियारा, गजपीपल, चिचिड़ा, पीपलामूल, चित्रक, भारंगी पुष्करमूल ये सब आठ आठ तो० ले और जव (यव) २५६ तो०, हड़ १०० अदद, इन्हें १२७० तो० जल में पकाएँ जब सीज जाएँ तो उस क्वाथ को वस्त्र से छान के सौ हड़ों में ४०० तो० गुड़ और १६ तो० गोघृत मिला पकाएँ। और तेल, पीपल का चूर्ण भी १६-१६ तो० मिलाएँ जब सिद्ध हो के शीतल हो जाए तो इसमें १६ तो० शहद मिलाकर यत्न से रक्खें। दो दो हड़ रसायन विधि से खाने से वली व पलित पाँचों खाँसी, क्षय, श्वास, हिचकी, विषम ज्वर, अर्श, संग्रहणी, हृद्रोग, अरुचि और पीनस को नाश करता है। यह अगस्त्यमुनि का रचा हुआ रसायन है। वंग० च० द० सं० कास० अ० यो० त०.वा० भ० चि० अ० ३।

(२) बड़ी हड़ १००, अजवाइन १ आढक, दशमूल २० पल, चित्रक, पीपलामूल, चिचिरा, कचूर, केवाँच, शंखपुष्पी, भारंगी, गजपीपर, बरियारा, पुष्करमूल प्रत्येक २-२ पल, ४ आढक जल में पकाय छान लें तिस में १०० हड़, तेल, घृत आठ पल, गुड़ १ तो० देकर पकाएँ। जब ठंडा हो जाए तो इसमें शहद, पीपल का चूर्ण १-१ कुड़व डालें, इस तरह इस सिद्ध अवलेह के संग २ हड़ नित्य खाएँ तो क्षय, कास, श्वास, ज्वर, हिचकी, अर्श पीनस, अरुचि और संग्रहणी का नाश हो, यह अगस्त्यमुनि की कही हरीतकी प्रत्येक रोगों का नाश करती है। भा० सं० म० ख० भ० २।

(३) दशमूल, गजपीपल, कौंच के बीज, भारंगी, कचूर, पुष्करमूल, सोंठ, पाढ, गिलोय, पीपलमूल, शंखाहुली, रास्ना, चित्रक, अपामार्ग, बला, जवासा ये प्रत्येक २-२ पल लें। तथा यव (जौ) १ आढक लें०, बड़ी हड़ १०० सौ लें, प्रथम १ द्रोण (१६ सेर) अथवा एक आढक (४ सेर) जल लेके उसमें हड़ों को औटाएँ जब चौथा हिस्सा जल शेष रह जाए तो उतारें फिर १ तुला (५ सेर) गुड़ लेकर जलमें औटाकर तेल, शहद, घृत, ४-४ पल डालें और पीपल का चूर्ण ४ पल डालें, फिर पूर्वोक्त हड़ डालें, इस प्रकार पाक कर शीतल कर उसमें ४ पल शहद और डालें तो सुन्दर हरीतकी पाक तैयार होता है। यह रसायन है, नित्य दो हड़ों को करके युक्त खाए तो राजयक्ष्मा, संग्रहणी, सूजन, मंदाग्नि, स्वरभेद, पांडु श्वास, शिरोरोग हृदयरोग, हिचकी और विषमज्वर को नष्ट करता है। और बुद्धि, बल तथा उत्साह गति, को बढ़ाता है। यह हरीतकीपाक सब में श्रेष्ठ है। यो० चि० मु० सं० उ० तं० अ० ४५।

अगस्थिश्रो agasthio-श्रो० अगस्तिया, अगस्त Sesbania Grandiflora, *Pers.*)। फा० इं० १ भा०।

अगहन agahana-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अग्रहायण,] [वि० अगहनिया, अगहन] मार्गशीर्ष मगसिर।

अगहनिया agahaniyá-हिं० वि० [सं० अग्रहायणी] अगहन में होने वाला धान।

अगहनी agahani-हिं० वि० [सं० अग्रहायणी अगहन में तैयार होने वाला। संज्ञा स्त्री० वह फसल जो अगहन में काटी जाती है। जैसे जड़हन धान, उरद, इत्यादि।

अगाड़ा agáḍá-हिं०, संज्ञा पुं० [हिं० अगाड़] अपामार्ग (Achyranthes Aspera, *Linn.*)। (२) कहार तरी।

अगाति agátti–ना० अगस्तिया. अगस्त्य (Sesbania Grandiflora.)

अगाथियोस agáthiyos–मिश्र० इसका शाब्दिक अर्थ अत्यन्त पवित्र है, पर शामी हकीम गण इसे मदार के लिए प्रयोग करते थे। इसी का अपभ्रंश हजाकियूस अरबी शब्द है।

अगाधम् agádham–सं० क्ली० (१) जल (Water, aqua) हे० च० ४ का० (२) छिद्र, गर्त (a-hole, a perforation)

अगाध त्वक् agádha-tvak–सं० पु०, (Dermis,)

अगाधाधार तिरश्चीना agádhádhára-tirashchiná)–सं० स्त्री०, (Transversus parinoei profundus)।

अगानी agáni–उ० प० सू०, त्रिधारा, वेत्तिरः, गुग्गुल मे० म०।

अगार agára–हिं० संज्ञा० पुं०, [सं० अगार घर, निवास स्थान। धाम, गृह, (२) ढेर। क्रि० वि० अगाड़ी, प्रथम।

अगारह agharah–नीबू वृक्ष। (Common lemon tree)

अगारधूमः agárdhúmah–सं० त्रि० गृहधूम, (Soot), सु० चि० ३८ वा० उ० अ०।

अगारधूमाद्यतैलम् agáradhúmádya-taylam–घरका का धुवाँसा (घरऊ) १ भा० हल्दी २ भा०, सुराकिट्ट ३ भा०, इन्हें डालकर तैल पाक करें, यह खुजली शोथ को दूर करता, तथा उपदंश के व्रण का शोधन व रोपण कर उसे नष्ट करता है। भै० र०। चक्र० द०। भा० म०।

अगा (गे) रिक agáric अगारीक़ून, ग़ारीक़ून–अ०। साँप की छत्री, खुम्बी, कुकुरमुत्ता–हिं०। Boletos (Fungus) Agniarius. यह एक पराश्रयी (Parasitic) पौधा है, जिसमें रक्तस्थापक गुण विद्यमान है। इ० हैं० गा०।

अगा (गे) रिक ओक ओफ ओक agaric of oak –इं० ओक नामक इं० वृक्ष से उत्पन्न ग़ारीक़ून।

अगा (गे) रिक एसिड agaric acid–इं० खुम्बीन, छत्री सत्व (Agaricin. *Dr. Stewart.*) देखो–अगारिकस एल्बस।

अगा (गे) रिक ओक ऑरसर्जन्स agaric oak or surgeon's.

अगा (गे) रिक फ्लाई agaric fly–इं० अगारिकस अमेनिटा।

अगा (गे) रिकस् अमेनिटा agaricus amanita–ले० फ्लाई अगारिक (fly agaric)–इं०। अमेनिटा मस्केरिया (Amanita muscaria) अगारिकस् मस्केरिया (agaricus muscaria)–फ्लाई अगारिक् (Fly agaric)–इं०। मादीय छत्रांकुर–हिं०। ग़ारीक़ून ज़ुबाब, ग़ारीक़ून मगस –फ़ा० (Not official)

अगा (गे) रिकस् एल्बस् *agaricus albus* (*Dr. Stewart*)–ले०। पॉलिपोरस ऑफ़िसिनेलिस (Polyporus officinalis, *Fries.*) ह्वाइट अगारिक (White agaric), पर्जिङ्ग अगारिक (Purging agaric), लार्च अगारिक (Larch agaric)–इं०। अगारिक ब्लैङ्क (Agaric blanch), पालिपोरी डयू मलेज़ी (Polypore dumeleze)–फ्रा०। ग़ारीक़ून–इण्डि० बा०। छत्रिका, गोमय छत्रिका, दिलीरं, शिलीन्ध्रकं, वसारोहं, गोलासं, उध्यंगं, (हा०), उच्छिलीन्ध्रम्, शि (लि) लीन्ध्रः (कः), भूछत्राक, संस्वेदजशाकं, भूमिच्छत्रं, भूछत्रं, पृथ्वी कन्दं, कवचं, भूमिछत्रं, भूमिस्फोटः, धरांकुर, भूसुता, छत्र, छत्राक, स्वेदज–सं०। पाताल फोड़, भूई फोड़, कोड़क छाता, पायालछातु, छातकुड़, छाता, भूई छाति, खुम्बा–बं०। छत्री, कुकुरमुत्ता, सांप की छत्री, छत्रांकुर छाता लतौना,–हिं०। अलम्बी, भूँई फोड़–म० ०। किरिन–पं०। जंगली बलगर–काश०। अगारीकून–यू०। कामिल –कों०। कुम्य मीद डॉनीबली–गु०। ग़ारीक़ून अबैज़, ग़ारीकूनतिब्बी–अ०। ग़ारीक़ून सफ़ेद, ग़ारीक़ून मुस्हिल, ग़ारीक़ून सनोबर, माह शर्मा–फ़ा०।

(नॉट ऑफ़िशल Not official)
छत्रिका वर्ग
(N. O. Polyporaceae "Fungi-Mushroom.")

उत्पत्तिस्थान—दक्षिण तथा मध्य युरूप, साइबेरिया; एशिया माइनर, पञ्जाब, संयुक्त प्रान्त प्राचीन (सनोबर वृक्ष) ।

नामविवरण—युनानी हकीम दीसक़ूरीदूस (Dioscorides) के मतानुसार जिसने सर्व प्रथम उक्त औषध का वर्णन किया है इसका युनानी नाम अगारीक़ून (Agarikon) अगारिया से, जो सर्माशिया में एक देश है, व्युत्पन्न शब्द है। चूंकि उक्त औषध उस प्रदेश में अधिकता के साथ उत्पन्न होती है; अस्तु वह उस नाम से अभिहित हुई ।

औषधविनिश्चय—ग़ारीक़ून [छत्रिका] के विषय में प्राचीन तथा अर्वाचीन चिकित्सकों में बहुत कुछ मतभेद है। अस्तु, किसी के मत से यह किसी प्राचीन या सड़े हुए वृक्ष यथा अंजीर व गूलर की सड़ी गली हुई जड़ है जो उसके खोखलों में से निकलती है; तथा किसी किसी के कथनानुसार यह ग़ार वृक्ष की जड़ है, इत्यादि— परन्तु किसी ने--उदाहरण स्वरूप हकीम मुहम्मद बिन् अहमद ने इसका यथार्थ वर्णन किया है। कि ग़ारीक़ून छत्रिका के प्रकार की एक बूटी है और इब्नमासूया ने जो लिखा है कि ग़ारीक़ून नर व मादा होता है तथा विभिन्न वर्ण का (श्वेत, पीत, रक्त तथा श्याम) होता है यह भी सत्य है। अस्तु, श्वेत छत्रिका जो युरूप के कतिपय प्रदेशों में औषध-तुल्य व्यवहृत होती है वास्तव में मादा ग़ारीक़ून ही है।

नोट—मशरूम (Mushroom) जिसको संस्कृत में छत्रिका या वर्षाजा, अरबी में फ़ित्र, फ़ारसीमें समारोग़ और हिन्दी उर्दू में खुम्भी कहते हैं, सैकड़ों प्रकार के होते हैं। इनमें से कोई खाद्य कार्य में आते हैं और कोई औषध में तथा कोई कोई अत्यन्त विषैले होते हैं मुख्यतः वे जो कृष्ण वर्ण के होते हैं । अस्तु मादक छत्रिका (Fly agaric) इसी अन्तिम प्रकार में से है। यह चमकीले वर्ण की खुम्भी है जिसमें मस्करीन (घातकीन) नामक पदार्थ वर्तमान होता है। इससे घर्म ग्रन्थियों में अन्त होनेवाली नाड़ियाँ (बोधतन्तु) वातग्रस्त होजाती हैं।

छत्रिकाएँ बहुधा भूमिपर उत्पन्न होती हैं। अस्तु, वर्षा ऋतु में ये इतनी अधिकता के साथ उत्पन्न होती हैं कि इनके उत्पत्त्याधिक्य का उदाहरण दिया जाता है। परन्तु किसी किसी प्रकार की छत्रिकाएँ प्राचीन वृक्ष की जड़ प्रभृति पर उत्पन्न होती हैं। अस्तु श्वेत छत्रिका (ग़ारीक़ून तिब्बी) भी उसी प्रकार की छत्रिकाओं में से है। आज से अर्द्ध शताब्दि पूर्व युरूप में तीन प्रकार की छत्रिकाएँ (ग़ारीक़ून) व्यवहार में आती थीं, जैसे— (१)-श्वेत छत्रिका, (२)--नासिक छत्रिका तथा (३)--शाल्य छत्रिका। परन्तु अधुना इनमें से केवल प्रथम प्रकार की छत्रिका ही युरूप के किसी किसी प्रदेश में प्रयोग की जाती है।

इतिहास—छत्रिका का औषधीय उपयोग अति प्राचीन है। हकीम दीसक़ूरीदूस Dioscorides ने इसके नर मादा दो भेदों का वर्णन किया है। इनमें से नर बिलकुल सीधा लपेटदार गोल होता है और इसके भीतर पृष्ठ पर परत नहीं होते, परन्तु यह एक समान होता है। मादाकी अन्तः रचना कंघी के समान परतदार होती है और यही सर्वोत्तम है। स्वाद में दोनों समान अर्थात् आरंभ में मधुर तथा पश्चात् को कटु होते हैं।

इनके अतिरिक्त प्लाइनी, प्रीगा आदि युनानी, इब्नसीना आदि मुसलमान तथा राजनिघंटु, भावप्रकाश आदि आयुर्वैदिक चिकित्सा ग्रन्थकारों ने अपने अपने तौर पर इसके उपयोग का पर्याप्त वर्णन किया है।

वानस्पतिक विवरण—यह वृक्षों तथा भूमिपर उत्पन्न होने वाला एक पराश्रयी छोटा पौधा है जो वर्षा ऋतु में अधिकता से उत्पन्न होता है। इसका गर्भान्वित भाग बाहर वायु में होता है। यह सीधा ऊपर को बढ़ता है। इसके तने के ऊपर छत्रिकाकार एक टोपी लगी रहती है। भीतर

से इसमें स्पञ्जवत् कोठरियां होती हैं। इसका रस दुग्धवत् तथा तीव्र व अग्राह्य, स्वाद में चरपरा कसैला और किंचित् लावण्ययुक्त होता है। काट कर वायु में खुला रखने पर यह धूसर वर्ण का होजाता है।

रसायनिक संगठन—इसमें राल, तिक्त पदार्थ, निर्यास, वानस्पतिक अलब्युमेन तथा मोम आदि होते हैं, इसका वास्तविक प्रभावात्मक सत्व अगारिक एसिड या फङ्गिक एसिड या लार्किक एसिड (छत्रिकाम्ल) है। इसमें स्फुरिकाम्ल, पोटाश, चूना, एमोनिया और गन्धक प्रभृति होते हैं। अगारीसीन निर्यास में १७ प्रतिशत अगारिकाम्ल (Agaric acid) तथा ३% अगारिकोल (Agaricol) होता है। अगारिक एसिड [छत्रिकाम्ल) के अति सूक्ष्म श्वेत चमकीले रवे होते हैं जो मद्यसार, क्लोरोफ़ॉर्म तथा ईथर में (शीतल जल में न्यून परन्तु उष्ण जल में सरलतापूर्वक) विलेय होते हैं। जल में उबालने पर यह सरेशी घोल बनाता है।

औषध-निर्माण तथा मात्रा (१) छत्रिका तरल सत्व *Fl. ext.* (३ में १) मात्राः—३ से २० बुन्द या अधिक, (२) एक्सट्रैक्टम् अगारीसाई (छत्रिका सत्व) मात्रा—२० से ६० बुन्द। (३) टिङ्क्चर (१० में १) मात्राः—२० से ६० बुन्द (४) छत्रिकाचूर्ण (agaricus powder.) मात्राः—५ से ३० ग्रेन (२॥-१५ रत्ती), अगारी सीन (शिलीन्ध्रीन मात्राः—$\frac{1}{4}$ से $1\frac{1}{2}$ ग्रेन ($\frac{1}{12}$ से $\frac{1}{6}$ से १ ग्रेन)

नोट—छत्रिका चूर्ण को किसी मुरब्बा में मिला कर देते हैं तथा इसके सत्व (अगारीसीन) को डोवर्स पाउडर के साथ वटिका रूप में वर्तते हैं।

कार्य—बलवान रेचक, रक्तस्थापक, सङ्कोचक, वामक, स्तन्यनाशक।

छत्रिका (ग़ारीकून) के गुणधर्म—

आयुर्वेदमतानुसारः—

शीतल, कसैला, मधुर, पिच्छिल, भारी तथा छर्दि, अतिसार, ज्वर, कफ रोग कारक, पाक में भारी, रूक्ष तथा रेणुज, गोष्ठज, शुचिस्थानज वा काष्ठज श्वेत, छत्रिका (ग़ारीक़ून सफेद) दोषों को करने वाली एवं निन्दित है। राज०।

सांप की छत्री शीतल, बलकारक, भारी, भेदक, मधुर, त्रिदोषजनक, वीर्य वर्द्धक और कफकारक है। यह कृष्ण, रक्त और पाण्डु भेद से तीन प्रकार की होती है। कालेरंग की-मधुर, गरम और भारी है। श्वेत—पाक में भारी और लाल अल्पदोष जनक है। नि० र०।

सर्व प्रकार के संस्वेदज शाक शीतल, दोष जनक, पिच्छिल, भारी तथा वमन, अतिसार, ज्वर और कफ रोगों को उत्पन्न करते हैं। सफेद शुभ्रस्थान में उत्पन्न होने वाले तथा काष्ठ, बांस और गायों के स्थानों में उत्पन्न होने वाले अत्यन्त दोषकारक नहीं हैं और शेष सर्व त्यागने योग्य हैं। भा० प्र० १ खं० व निघण्टु खं० शा० व०।

यूनानी ग्रन्थों के मतानुसारः—

यह संकोचक, उष्ण, तथा विरेचक है और इसे ज्वर, पांडु, वृक्कशोथ, गर्भाशयिक रोग, यक्ष्मा, अजीर्ण, रक्तज्वर, संधिशूल में देते हैं। यह विषघ्न है। दीसक़ूरीदूस नर छत्रिका अधिक दृढ़ एवं तिक्त है तथा यह शिरःशूल को भी उत्पन्न करती है। (प्लाइनी) इब्नसीना ग़ारीक़ून या छत्रिका (agaric) के विषघ्न गुण के लाभदायकत्व पर बहुत जोर देते हैं। यह तथा अन्य मुसलमान चिकित्सकों ने छत्रिका के गुणधर्म वर्णन में यूनानी ग्रन्थकारों का बहुत कुछ अनुसरण किया है। उनके विचारानुसार यह सम्पूर्ण आशयिकावरोधों को नष्ट करती तथा विकृत दोषों को निकालती है। यक्ष्मा में छत्रिका का उपयोग नवीन नहीं प्रत्युत अति प्राचीन है। इसे बालों की चलनी में छानकर व्यवहार में लाएँ क्योंकि इसमें नखवत् जो वस्तु होती है वह विषैली होती है। (डाइमॉक) प्रकृति—प्रथम कक्षा में उष्ण तथा द्वितीय कक्षा में रूक्ष है। जब इसको चखा जाता है तो आरंभ में मधुर पुनः फीका प्रतीत होता है। तदनन्तर इसमें तिक्तता पुनः तीक्ष्णता एवं किञ्चित् कषेलापन प्रतीत होता है। फीकापन जल के कारण

और तिक्तता जले हुए पार्थिवांश के कारण होती है।

ज्वरशापन–(हिराक़त) आग्नेयांशके कारण और संकोच (कषाय, क़ब्ज) पार्थिवांश के कारण होता है। चूँकि यह हलकी होती है, अस्तु इसमें वायव्यका अधिकता के साथ होना आवश्यक है। इसी कारण इसकी उष्णता कम और रूक्षता अधिक होती है।

हानिकर्त्ता–व्याकुलता और गले में रोध उत्पन्न करती है।

दर्पनाशक–जुन्दबेदस्तर,ताजादुग्ध,वमन कराना।

प्रतिनिधि–निशोथ, इन्द्रायण का गूदा, शुण्ठी, बसफ़ाइज।

गुण कर्म प्रयोग–अपनी उष्णता के कारण यह लय कर्त्ता और सान्द्र (गाढ़े) दोषों की छेदक एवं उनको रेचन करने वाली है, क्योंकि दोष त्रय (बलग़म, सफ़रा, सौदा) को छेदन करती एवं उनको स्वच्छ करती है और कटुता तथा छेदकत्व के अतिरिक्त तारल्य (लताफ़त) उत्पन्न करती है। अपनी उष्णता के कारण सम्पूर्ण अवरोधों को उद्घाटित करती तथा अवादमें तारल्योत्पादन करती है। पार्थिवांश के कारण सङ्कोचक है। अपने विशेष गुण (खासियत) से वात तान्त्विक मलों को शुद्ध करती है इस कार्य में रोधोद्घाटक, छेदक, निर्मल कारिणी एवं लयकारिणी शक्ति इसकी खासियत को सहायता करती है। यह सम्पूर्ण संधिशोथों, गृध्रसी, अपस्मार, श्वास तथा रोधयुक्त रक्ताल्पता (यर्क़ान सुद्दी) में लाभ प्रदान करती है। ये समग्र लाभ इसकी तारल्य जनक (तलतीफ़), लयकारिणी तथा रोधोद्घाटिनी शक्ति के कारण होते हैं। सिकञ्जबीनके साथ यह प्लीहा शोथ के लिए हित है, क्योंकि सिकंजबीन इसकी छेदक व रोधोद्घाटक शक्ति को बढ़ा देता है। इसकी पूरी मात्रा ७ मा० है।

यह अपनी रोधोद्घाटक तथा तारल्यकारी शक्ति के कारण मूत्र एवं आर्तव का प्रवर्तन करती है।

न० नफ़ी०।

विशेष प्रभाव–श्लेष्मा तथा वायु की रेचक, मूत्र तथा आर्त्तव प्रवर्त्तक और रोधोद्घाटक है। कफज शिरःशूल तथा अर्द्धशीशी को लाभप्रद विशेष कर हरीतकी तथा नस्तगी के साथ, फ़ाबानिया के साथ अपस्मार को लाभदायक है। इसका गंडूष शोथ लयकर्त्ता तथा रक्त निष्ठीवन को हित और रुबुस्सूस (सत्व मुलहठी) के साथ उरोव्यथा की नाशक तथा श्वास काठिन्य को हित है। रेवन्दचीनी के साथ आमाशय तथा यकृद्रोगों को गुण दायक तथा पांडु वा प्लीहा को हित, वृक्क व वस्त्यश्मरी निस्सारक तथा जलोदर को गुण प्रद है। इसका प्रस्तर शोथ लयकर्त्ता है। मद्य के साथ इसे उपयोग करने से सर्प विषघ्न है।

बु० मु०।

वायुशोथ और गुल्म लयकर्त्ता, नाड़ी, हृदय और मस्तिष्क को बलवान करता, प्रायः विष का दर्पनाशक है। कफ ज्वर को लाभ करता है। इसका पान करना उचित नहीं है (निर्विषेल है परन्तु इसमें एक वस्तु नख के समान होती है, वह विष और घातक है)

डाक्टरी मतानुसार

छत्रिका चूर्ण १२ ग्रेन (७॥ रत्ती) की मात्रा में या अगारीसीन या अगारिक एसिड, छत्रिका सत्व, छत्रिकाम्ल यह श्वेत स्फटिकवत् चूर्ण है।

$\frac{1}{5}$ ग्रेन की मात्रामें यक्ष्मा रोगियोंके रात्रि स्वेदको रोकनेमें अपना निश्चित प्रभाव रखता है। पहिले यह विरेचक रूप से उपयोग में आता था। अधिक मात्रा में यह जलवत मल प्रवर्त्तन करता है, थोड़ी मात्रा में अतिसार तथा प्रवाहिका को रोकता है तथा रक्त निष्ठीवन में गुण दायक होता है। यह वायु प्रणालियों तथा स्तन विषयक स्रावों (Secrations) को (अर्थात् कास तथा स्तन्यस्राव को) कम करता है।

साधारण स्वेदस्राव में $\frac{1}{6}$ ग्रेन की मात्रा का एक ही बार उपयोग पर्याप्त होता है परन्तु घर्माधिक्य में उतनी ही मात्रा में करने से ४ घंटा पश्चात् स्वेदावरोध अथवा उसे बढ़ा बढ़ा कर बारम्बार उपयोग होता है। पर इच्छित प्रभाव हेतु इसके उपयोग की सर्वोत्तम विधि यह है कि इसे (इसके मृदुभेदक प्रभाव को रोकने के लिए)

१ ग्रेन (अर्द्ध रत्ती) डोवर्स पाउडर के साथ वटिका रूप में प्रयोग किया जाय।

ओक अगारिक या सर्जन्स अगारिक जिसको अमेडो (Amadou) या फङ्गस इग्निएरियस् (Fungus agniarius) भी कहते हैं ओक अगारिक, नाइट्र तथा अल्केली का एक मिश्रण है जो स्थानिक रक्त स्थापक रूप से उपयोग में आता है। ह्विट० मे० मे०।

विस्फोट जन्य ज्वरों में विस्फोटकोत्पत्ति विवर्द्धन हेतु इसे अधिक मात्रा में मधु के साथ वर्तते हैं। जलौका रक्तस्रवण में यह रक्तस्थापक प्रभाव करता है। इं० मे० मे०।

थोड़ी मात्रा में यह संकोचक और बड़ी मात्रा में वामक तथा विरेचक प्रभाव करता है। डी० वी० एम०।

अगद तन्त्र

Fungi (or muscarin)

विषैले छत्रांकुर (Poisonous Fungi) में सम्भवतः दो विभिन्न विषैली वस्तुएँ वर्तमान होती हैं, यथा मस्केरीन (Muscarin) जिसका प्रभाव बिलाडोना तथा धुस्तुर के सर्वथा विपरीत होता है; और द्वितीय जिसका प्रभाव धत्तूरीन (Atropine) और हैट्यूरिया (धत्तूरीन वा धुस्तुर सत्व) के समान होता है।

अगद—वामक (जिंक सल्फेट १५ ग्रेन वा अधिक जल के साथ) वा स्टमक पम्प का व्यवहार करना चाहिए। तदनन्तर अहिफेन सत्वो ल्लिखित टैनिक एसिड के साथ कॉफी फाण्ट देना चाहिए। कनीनिका विस्तार काल तक बारम्बार ऐट्रोपीन $\frac{1}{40}$ ग्रेन का 'त्वगन्तः क्षेप' करना अथवा डिजिटैलिस् या मार्फीन (अहिफेन सत्व) देना चाहिए। स्वतन्त्र उत्तेजना, राई के प्रस्तर तथा घर्षण की आवश्यकता होती है।

इस प्रकार का गारीक़ून फिरंग के वनों में उत्पन्न होता है। यदि इसको दुग्ध में उबाल दिया जाय तो वह मक्खियों के लिए घातक होता है। इसको संयोगात्मक विधि से भी प्रस्तुत किया जा सकता है। प्रभावमें यह बहुत कुछ पाइलोकार्पीन (Pilocarpine) के समान होता है। अस्तु इससे अत्यन्त लालास्राव, स्वेदस्राव तथा अश्रु स्राव होता है, तथा इससे वलपूर्ण एवं वेदना पूर्ण मूत्रस्राव और कभी कभी उत्क्लेश (मतली) तथा अतिसार उत्पन्न हो जाते हैं। इसका घोल (१० %) जब चक्षु में डाला जाता है तो इससे नेत्र कनीनिका विस्तृत हो जाती है और इसका अन्तः प्रयोग करने से (निगलने से) यह संकुचित होती है।

स्थानिक कनीनिका विस्तारक तथा स्वेदघ्न प्रभाव के मस्करीन धत्तूरीन Atropine के प्रत्येक प्रभावकी निर्णीत प्रतिद्वंद्वी (Antagonist) है। अस्तु धत्तूरीन (Atropine) छत्रिका (Fungi) द्वारा विषाक्त दशाओं की प्रतिविष है। एक समय जब पाठशाला के बहु संख्यक बालक (Fungi) के खानेसे विषाक्त हुए उस अवसर पर लेखक धत्तूरीन (Atropine) के त्वगन्तः क्षेप द्वारा कतिपय प्राणियों की जीवन रक्षा करने में अपने को सन्तुष्ट कर सका। ह्विट० मे० मे०।

मारात्मक छत्राङ्कुरागद

Muscarin or Poisonous mushrooms फङ्गाइ (Fungi) द्वारा विषाक्तोपचारवत्यत्न करें (देखो—**अगारिकस् ऐल्बस्**) यथा स्टमक पम्प अथवा वामक औषध उपयोगानन्तर ऐट्रोपीन (धत्तूरीन) का त्वगन्तः रूप से व्यौहार करें।

इस प्रकार के विषैले गारीक़ून में से एक प्रभावात्मक सत्व निकलता है जिसे **मस्करीन** Muscarine (घातकी) कहते हैं। इस प्रकार के गारीक़ून को कहीं कहीं अफीम तथा भंग के सदृश उपयोग में लाते हैं।

अगा (गे) रिकस् ऑफिसिनेलिस् A.officinalis—ले० गारीक़ून।

अगा (गे) रिकस् ऑस्ट्रीएटस् agaricus ostreatus, *Facq.*—ले० फणस आलोम्बे, फनसाम्बा, पनसलम्बे—महा०, को० Agaric of the oak, Touchwood; Oyster mushroom.

उत्पत्ति-स्थान—फ़राम (कटहल) वृक्ष।

प्रयोगांश—छत्रिका।

रसायनिक संगठन—राल, गेन्द्रिकाम्ल तथा सरेश।

प्रभाव तथा उपयोग—संकोचक। मुखपाक (Apthæ) में मसूढ़ों पर इसका प्रस्तर लगाया जाता है। यह लालास्राव की अधिकता को रोकती है प्रवाहिका तथा अतिसार में इसका अन्तः प्रयोग होता है और मुख पाक से पीड़ित बालकों के मुख में इसे लगाते हैं। इं० मे० मे०।

अगा (गे) रिकस् कैम्पेस्ट्रिस् agaricus campestris, *Linn.*-लै० शिलीन्ध्रः छत्रक -सं० खम्बूर दम्व०, मोखा-चरवा० खुम्बह्, खाम्बूर, चत्री अफ़०, बाज़ा०। मांस खेल--काश०। खुम्बह् ममारोग (stewart)-बाज़ा०। हरार (विषैला) रूप। प्रयोगांश--छत्रिका (Mushroom)। आहार तथा औषध कार्य में आती हैं। मे० मो०

अगा (गे) रिकस्चिरर्गोरम् agaricus chirurgorum-लै० ग़ारीक़ून बलूती।

अगारिकस् मस्केरिया agaricusMuscaria फ्लाइ अगारिक Fly agaric-इं०।

अगा (गे) रिकस्शिरर्जिअन् agaricus chirurgeon-लै० शाल्य छत्रांकुर (Surgeon's agarics ग़ारीक़ून जर्राही। ग़ारीक़ून बलूती, अस्सौफान्-अ०,। फा० इं० ३ भा०।

इस प्रकार का ग़ारीक़ून, फिरंग के बनों में प्राचीन बलूत वृक्ष के तनों पर पाया जाता है। प्राचीन समय में इसे विशेष विधि द्वारा शुद्ध कर घनों में रक्तस्राव को रोकने के लिए उपयोग करते थे परन्तु अधुना इसका प्रयोग सर्वथा अव्यवहारिक हो गया है।

अगा (गे) रिकस् पामेलस agaricus palmalus-लै० पनसलस्बे—महo, कों०। agaric of the oak, Touchwood, Oyster-mushroom। इं० मे० मे०।

अगारिकस् मस्करिया agaricus Muscaria-लै० अगारिकस अमेनिटा।

अगारिक ह्वाइट ऑर पर्जिंग agaricwhite or purging-इं० अगारिकस् ऐल्बस्।

अगारीक़ून agárikon-यु० } ग़ारीक़ून-अ०
अग़ारीक़ून agáriqún-अ० } खुम्बी साँप की छत्री, कुकुरमुत्ता-हिं० purgingAgaries, Large agaric, Boletia (Agaricus Albus)

नोट—बांसीदह (सड़ी गली) जड़ के सदृश एक वस्तु है। जो किसी वृक्ष की जड़ों के भीतर से निकलती है यह वास्तव में एक प्रकार की खुम्बी होती है। देखो-अगारिकसऐल्बस।

अगा (गे) रीसीन agaricin-इं० यह ग़ारीक़ून (agaricus) का एक प्रभावात्मक सत्व है। वह शक्तिमान स्वेदघ्न औषध है जो यक्ष्मा रोगी के रात्रि स्वेद स्राव को रोकता है।

मात्रा—½ ग्रेन। इसके मृदु भेदकी प्रभाव को रोकने के लिए "डोवर्स पाउडर" के साथ मिलाकर उपयोग में लाते हैं। इं० मे० मे०

देखो—अगारिकस् ऐल्बस्

अगारूस अमरसी agárose amarase-यु० आस विरतानी, आ.सबारी--उ०। आल, आछी --हिं० Morinda citrifolia, *Linn.* देखो—आच्छुकः।

अगालूजी agaloge-यु० अगर-हिं०। aloewood (Aquillaria agallocha)

अगाव agáva-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अग्र] ऊँख के ऊपर का पतला और नीरस भाग जिसमें गाँठें बहुत पास पास होती हैं। अगौरा। अघोरी। अँगोरी।

अगास agása-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अग्र] प्रा० अग्ग--हिं० आस (प्रत्य०) द्वार के आगे का चबूतरा। संज्ञा पुं० [सं० आकाश] आकाश।

अगास्त agásta-मह० अगस्त, अगस्तिया-हिं० Sesbania Grandiflora, *Pers.*। फा० इं० १ भा०।

अगि agi-लै० लाल मिर्चसे बनी हुई चटनी। फा० इं० २ भा०।

अगिकेसु,-सी agikesu,-sí-बर० बड़ी अरंडी का तेल बृहदैरण्ड तैल (Oleum ricini

obtained from the seeds of large seeded castor oil plant) स० फा० इं० ।

अगिन, ना agina, ná हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०अग्नि] [क्रि०अगियाना] (१) आग । (२) गौरैया वा बया के आकार की एक छोटी चिड़िया जिसका रंग मटमैला होता है । इसकी बोली बहुत प्यारी होती है । लोग इसे कपड़े से ढके हुए पिंजरे में रखते हैं । यह हर जगह पाई जाती है । (A bird,a sort of lark) (३) एक प्रकार की घास जिसमें नीबू की सी मीठी महक रहती है । इसका तेल बनता है । अगिया घास । नीली चाय । यज्ञ कुश ।

संज्ञा स्त्री० [सं० अंगारिका] ईख के ऊपर का पतला नीरस भाग । अगोरी ।

अगिन-घास agina-ghása-अगिया घास रोहिष । भूतृण (Andropogon Schœnanthus, *Linn.*)

अगिन बाव agina-báva हिं० पुं०, (१) अश्व (the farey in horse) रोग विशेष (२) मनुष्य में फोड़ा फुन्सी निकलने की बीमारी (An eruptive disease in men) ।

अगिन-बूटी agina-búṭí द०, बम्ब० दाद मारी,जंगली मेंहदी-हिं० । (Ammania baccifera, *Linn.*) इं० मे० मे० ।

अगिनालागड़ी aginá-ligaḍí-चन्दा० फलागिनी हरिनपली-हिं० । (Manisuris granularis, *Linn.*) इं० मे० मे० ।

अगिया agiya-हिं० संज्ञा० स्त्री० [सं० अग्नि प्रा० अग्गि] (१) एक प्रकारकी घास जिसमें नीबूकी सी सुगन्धि निकलती है और जिससे तेल बनता है । यह दवाओं में भी पड़ती है । अगिया घास । रोहिष तृण । नीली चाय । यज्ञ कुश । (Andropogon Schœnanthus, *Linn.*)

(२) एक खर वा घास जिसमें पीले फूल लगते हैं और जो खेतों में उत्पन्न होकर कोदों और ज्वार के पौधों को जला देती है । इसी नाम का एक और पौधा है जो धान के खेतों में उत्पन्न होता है । देखो अगया ।

(३) एक हद ६ से १० फुट लम्बा पौधा जो हिमालय आसाम ब्रह्मा में मिलता है । इसके पत्ते और डंठलों में जहरीले रोएँ होते हैं जिनके शरीर में धँसने से पीड़ा होती है । इसी से इसे चौपाए नहीं छूते । नैपाल आदि देशों में पहाड़ी लोग इसकी छाल से रेशे निकाल कर बँगरा नामक मोटा कपड़ा बनाते हैं ।

(४) जल धनियां ।

(५) पक्षी विशेष । A bird (alauda aggiya)

(६) घोड़ों और बैलों का एक रोग ।

(७) एक रोग जिसमें पैर में पीले पीले छाले पड़ जाते हैं ।

अगिया बैताल agiyá.baitála-हिं० संज्ञा पुं० (सं० अग्नि, प्रा० अग्नि+बैताल) (Ignis fatuus, Will-o'-the-wisp) दलदल में या तराई में इधर उधर घूमते हुए फास्फरस (स्फुर) के अंश जो दूर से जलते हुए लुक के समान जान पड़ते हैं । ये कभी कभी कबरिस्तानों में भी अँधेरी रातमें दिखाई देते हैं । महावा ।

अगियाना agiyáná-हिं० क्रि० अ० [सं० अग्नि] जल उठना । गरमाना । जलन वा दाह युक्त होना ।

अगिरः agirah-सं० पुं० चित्रक का पेड़ (Plumbago Zlanicum, *Linn.*) जटा० ।

अगिरेटम् अक्वेटिकम् ageratum aquaticum, *Roxb.*-ले० बड़ी किरनी । इं० हैं० गा० ।

अगिरेटम्-कॉनिज़ॉइडोज़ ageratum conyzoides, *Linn.* देखो-अगिरेटम्-कॉर्डिफोलियम्

अगिरेटम्-कॉर्डिफोलियम् ageratum cardifolium, *Roxb.*)-ले० उचरटी-बं० । ओसद्री-बम्ब० । सहदेवी भेद । फॉ० इं० २ भा० । इं० मे० प्ला० । पश्चिम भारत में होने वाली एक बनौषधि है । गुण—कृमि नाशक है ।

इसमें एक प्रकार का उड़नशील तैल पाया जाता है।

अगिला agilá–हिं० वि० दे० अगला।

अगिहाना agiháná–हिं० संज्ञा पुं० [सं० अग्निधान] आग रखने का स्थान। जहाँ आग जलाई जाती हो।

अगीकर agíkara–सं०। धार करेला–हिं०। किरार पं० Momordica dioica, *Roxb.*

अगीरस agírasa–यु० एक प्रकार का वृक्ष है जिसका गोंद कहरुवा के नाम से प्रसिद्ध है। Succinum. (tree of–)

अगीरातून agdírátúna–यु० पटेर–हिं० एक प्रकार की बूटी है जो प्रायः मोथे की शक्ल की होती है। इसे गुजेना भी कहते हैं। यह जलाशयों में होती है, जिससे बोरिया इत्यादि बुने जाते हैं।

अगीरिया aghíriyá–यु० पृथ्वी, भूमि, धरणी, ज़मीन (The Earth.)

अगुण aguṇa–हिं० वि० [सं०] (Destitute of attributes) गुण रहित, निर्गुण, धर्म वा व्यापार शून्य, रज, तम आदि गुण रहित। संज्ञा पुं० अवगुण, दोष।

अगुरु aguru–सं० क्लीं० अगर (See-Agara) वा० चि० ४ अ०।

अगुरुः aguruh–सं० पुं० (१) अगुरु वृक्ष, अगर–हिं०। Aloe wood (agallocha) यथा—"अगुरुः श्री वासकं कुंकुमम्" वा० सू० १५ अ० एलादिर्गण। (२) कपिल वर्ण शीसम, सीसम, सीसो–हिं०। कपिल शिंशपा–सं०। Dalbergia latifolia भा० पू० १ भा० वटादि वर्ग। (३) सीसम, सीसो शिंशपा वृक्ष–हिं०। शिशुगाछ–बं०। (Dalbergia sissoo, *Roxb.*) (४) –हिं० वि० हलका (Light) (५) जिसके गुरु (Teacher) न हो।

अगुरु गन्धम् aguru-gandham–सं० क्लीं० हिंगु, हींग हिं०। हिङ–बं०। (Assafœtida).

अगुरुसारः aguru-sárah–सं० पुं० कृष्णागुरु वृक्ष, काली अगर हिं०। काल अगरु–बं०। aloewood (the black variety.) (२) लौह Iron (Ferrum) रत्ना०, एकार्थः।

अगुरुसारा agurusárá–सं० स्त्री०, शिंशपा वृक्ष। सीसो सीसम–हिं०। Dalbergia Sissoo, *Roxb.*। भा०।

अगुरु शिंशपा aguru-shinshapá–सं० स्त्री० शीशम (व) सीसो–हिं०। Dalbergia-sissoo, *Roxb.* भ० टी० स्वामी। शिंशपा-सं०। शिशु–बं०।

अगुर्वादिधूप agurvádidhúpa–सं० क्लीं० अगर, कपूर, लोबान, खस, तगर, सुगन्धवाला, चन्दन और राल इनके धूप से दाह शान्त होता है। वृ० नि० र०।

अगूढ़ agúrha-हिं० वि० [सं०] जो छिपा न हो। स्पष्ट। प्रगट।

अगूढ़ गन्धम् agúrha gandham सं० क्लीं०।

अगूढ़-गन्धा agurha gandhá–हिं० संज्ञा स्त्री० (हींग) गंधी हिंगु–हिं०। Ferula assa fœtida रा० नि० व० ६। (२) पलांडु Allium cepa, *Linn.* (३) मृगनाभि (musk) लशुन, लहसुन (Allium Sativum, *Linn.*)

अगूढ़ः agúrhah–सं० पुं० श्वेतैरण्ड (सफेद) एरण्ड या अरण्ड–हिं०। श्वेत भेरेन्डा–बं०। The castor-oil plant (Ricinus communis) वै० निघ०।

अगृद्धिः agriddhih–सं० स्त्री० अभिलाष, इच्छा (wish, desire) । वा० चि० अ० ७

अगेथ agetha–संज्ञा।
अगेथ agetha,
अगेथुथू agethu-thoo } –हिं० पुं०, अरनी, का पेड़, अग्निमन्थ (Premna Integrifolia, *Linn.*)

अगेट agate–सं०, (१) आर्तगल, नील झिण्टी– सं०। कट करैया–हिं०। Barleria coerulea (२) ई०, अकीक एक मूल्यवान पत्थर विशेष।

अगेटि ग्रांडिफ्लोरा agati grandiflora, *Linn.*-लै० अगस्तिया, अगस्त (Great-flowered agati) फा० इं० । इं० मे० मे० ।

अगेनोस्मा कैर्योफाइलेटा aganosma caryophyllata, *G. Don.*-लै० इसके पत्र औषधि कार्य में आते हैं । मेमो० । देखो मालती ।

अगेनोस्मा कैलसिना aganosma Calycina, *A. Dc.*-लै० मालती-हिं०, बं०, सिं० गंधोमालती-सं० । इसके पत्र औषधि कार्य में आते हैं । मेमो० ।

अगेरिक agaric-इं० } अगारीकून
अगेरिकस agaricus-लै० } अगारिकस

अगेरिकब्लैंक agaric-blanc-फ्रा० गारीकून । देखो अगारिक एल्बस ।

अगेला agelá-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अग्र] हलका अन्न जो ओसाते समय भूसे के साथ आगे जा पड़ता है, और जिसे हलवाहे आदि ले जाते हैं ।

अगेवि अमेरिकेना agave americana, *Linn. Roxb.*-लै० राकसपत्ता, बड़ा कँवार, कंटला, बांस केवड़ा, (मेमो०, इं० मे० प्लां०) जंगली कँवार, हाथी सेंगाड़ (स० फा० इं०) हाथी चिंघाड़-हिं० रावकस पत्ता-द० । आनैक्-कट्टाज़ (स० फा० इं० इं० मे० प्लां०) विश्कल बुन्थ-ता० (मे० मो० इं० मे० प्लां०) राकाशि-मट्टलु-ते० । पनम् कट्टाज़ु- मला० । भुत्ताले, बुबुकट्टले नार-कना० । जंगली या विलायती अननाश (स), बिलाति पात, कोयन मुर्गा, (आनारस अपभ्रंश)-बं० । जंगली कांमारी-गु० । जंगली कुँवार, पारकन्द-बम्ब० विलायती कैटल्-पं० । अमेरिकन एलो (American aloe), कैरेटा Carata-इं० ।

नोट—(१) हैदराबाद के किसी किसी जिले में अगेवि अमेरिकेनाके लिए केतकी शब्द प्रयोग में लाया जाता है, किन्तु यही नाम भारतवर्ष के अन्य भागों में केवड़ा अर्थात केतकी (Pandanus odoratissimus, *Willd.*) के लिए व्यवहृत होता है ।

किसी किसी ग्रन्थ में उपरोक्त पौधे के लिए बर्मी पर्याय कांयाक्षि निश्चित किया जाता है, किंतु ये नाम दर्द कँवार विषमण्डल अर्थात् सुख दर्शन (Crinum Asiaticum, *Linn.*) के हैं । अमेरिलिडीई अर्थात् (सुख-दर्शनवर्ग) (N. O. amaryllideæ)

उत्पत्तिस्थान—इस पौधे का मूल निवास स्थान अमेरिका है, पर अब यह भारतवर्ष के अधिक भागों में आ बसा है ।

प्रयोगांश—मूल, पत्र और निर्यास तन्तु, पुष्प, डण्डी तथा मध्य, आहार औषध तथा डोर हेतु ।

रसायनिक संगठन—इसके डंठल के रस में एक शर्करा जनक एलकोहल (मद्यसार होता है जिससे एक संधानित मादक पेयपदार्थ प्राप्त होता है जिसको मेक्सिको (Mexico) में पल्की (Pulque) कहते हैं । अगेवोसी (Agavose) एक निष्क्रिय शर्करा है ।

प्रभाव—मूल-मूत्रल और उपदंशघ्न है । रस-मृदुभेदनीय, मूत्रल रजः प्रवर्तक और स्कर्वी नाशक (Antiscorbutic) है ।

औषध-निर्माण—क्वाथ, पत्र स्वरस, मूली का रस एवं निर्यास ।

प्रयोग—इसका मूल सारसापरिला के साथ क्वाथ रूप से उपदंश रोग में प्रयुक्त होता है, (लिण्डले)

अमेरिकन डॉक्टर इसके पत्ते से निचोड़े हुए रस को शोथघ्न और परिवर्तक प्रभाव के लिए विशेष कर उपदंश रोगमें उपयोग करते हैं ।

इसका रस कोष्ठ मृदुकर, मूत्र विरेचनीय और रजः प्रवर्तक, २ फ्लूइड आउंस की मात्रा में स्कर्वी नाशक है । (यु० एस० डिस्पेन्सरी) जरनल शरीदन (Genl-Sheridan) का वर्णन है कि उन्होंने अपने आदमियों पर जो स्कर्वी से व्यथित थे इसका उपयोग किया और इसे बहुत लाभ दायक पाया । (इयर बुक-फार्मे० १८७१, २३२)

तर और गूदादार पत्तां का पुल्टिस रूप से उपयोग अत्यन्त गुणदायी है। इसका ताजा रस कुचले हुए स्थान पर लगाया जाता है।

पत्तों तथा प्रकाण्ड के निम्न भाग से निकलता हुआ निर्यास मैक्सिको में दांत के दर्द के लिए धर्त्ता जाता है। इसके पत्ते का गूदा मलमल के तह में रख आँख आने में चक्षुओं पर बांधा जाता है। और शर्करा के साथ दिन में दो बार सूजाक में प्रयुक्त होता है। (डब्ल्यू० एस० पी० किन्सक मद्रास)

देशी लोग इसे पुरातन सूजाक में वर्तते हैं। (सर्जे० मेजर आई० एम० कोरह० बालाशोर०)।

अगेविप्लेनोफोलिया agave Planifolia--लें०।

अगेवि कैंटयूला agaveCantula, Roxb.) लें० विलायती अनन्नास। इं० हैं० गा०।

अगेवि विविपेरा agave vivipara Linn. लें० कंटल-सं०। कटालई-ता०। पेटाकलबंठ ते०। मे० मो०। इसके रेशे काम में आते हैं।

अगेरिक ऑफ दी ओक agaric of the oak इं०--खुम्बी ग़ारीक़ून बलूती अगारिकस् ऑष्ट्रिएटस् Agaricus ostreatus, Cacq. इं० मे० मे०।

अगेरिसीन agaricin-इं० अगारोसीन।

अगेह ageha-हिं० वि० [सं०] गृह रहित। जिसके घर द्वार न हो। बे ठिकाने का।

अगैरा agairá-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अग्र] नई फसल की पहली आँटी जो प्रायः जमींदार को भेंट की जाती है।

अगोचर agochara-हिं० वि० [सं०] जिसका अनुभव इंद्रियों को न हो। बोधागम्य, इंद्रियातीत, अप्रत्यक्ष। अप्रगट। अव्यक्त। (Imperceptible by the senses, Not obious)

अग़ोर aghora-तु० प्यूसी बीस,-हिं०। पीयूष-सं० दुग्ध देने वाले पशुओं यथा गो, भैंस प्रभृतिके ब्याने के प्रथम दिवस से लेकर चार छः रोज बाद तक का दुग्ध जो अग्नि पर रखने से थका थका जम जाता है। फटा।

अगोही agohí-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अग्र] वह बेल जिसके सींग आगे की ओर निकले हों।

अगौड़ी agourí-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० अग्र] ईख के ऊपर का पतला भाग, अगाव।

अगौका agoukáh-सं० पुं० (१) (A fadulous animal with eight legs.) शरभ (२) पक्षी (a bird)। (३) सिंह। मे०।

अगौरा agourá-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अग्र+हिं० और] ऊख के ऊपर का पतला नीरस भाग जिसमें गाँठें नज़दीक नज़दीक होती हैं।

अगौली agoulí-हिं० संज्ञा स्त्री० [देश०] ईख की एक छोटी और कड़ी जाति है।

अगंड aganda-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] धड़ से जिसका हाथ पैर कट गया हो।

अग्गई aggai-अव० कर्कोट—सं०, द० अगई।

अग़्ज़ब aghzaba-अ० (ए० व०) उग़ाज़िब (ब० व०)। लिंग और जांघ या रानके मध्य की दूरी, वङ्क्षण, जंघासी, निम्नकच्छ। ग्रोइन (Groin)--इं०।

अग़्ज़ल aghzala-अ० तपेनौबत-फा०। नौबती बुखार, बारी का बुखार-उ०। पर्याय ज्वर, पारी का ज्वर-हिं०। Intermittent fever.

अग़्ज़िय्यह् aghziyyah-अ० (ब० व०) ग़िज़ा (ए० व०)। अग़्याय खुर्दनी-फ़ा०। भक्ष्य पदार्थ, भोज्य पदार्थ, खाद्य आहार, खाने की वस्तु-हिं०। डाइट्स (Diets)-इं०।

अग़्तम aghtama-अ० वह व्यक्ति जो शुद्ध बात न कर सके।

अग़्तश aghtash-अ० अजहर रोज़कोर-फ़ा०। दिवसांध, दिन अंधा, दिनौंधी का रोगी, वह व्यक्ति जो दिन में भली भांति न देख सके। हेमीरोलोप (पिया) Hemeralape,-pia-इं०।

अग़्दीदूस aghdídúsa-अ० खुस्यह् फ़ौक़ानी। उपांड-हिं०। (Epididymus)

अग्नायी agnáyí–हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] The wife of agní and goddess of fire अग्नि की स्त्री स्वाहा। त्रेतायुग।

अग्नाशयः agnáṣhayah–सं० अग्न्याशयः (Pancreas)

अग्नाशयद्रव agnáshaya drava–हिं० पुं० अग्नाशय रस (pancreatic juice)

अग्नाशय प्रदाह agnáṣhaya–pradáha हिं० क्लोम ग्रन्थि प्रदाह, अग्न्याशय प्रदाह, अग्नाशय का शोथ, (Pancreatitis), इल्तिहाब बन्कर्यास, वर्म बन्क़रास–अ०। सोज़िश लबलबह, लबलबह की सूजन–उ०।

अग्नाशय रस agnáṣhaya rasa–हिं० पुं० क्लोम रस। अग्नि रस। Pancreatic juice)

अग्नाशयिक प्रणाली agnáṣhayika pranáli–हिं० स्त्री० (Pancreatic duct) क्लोम ग्रन्थ्यस्थ प्रणाली। मजरीयुल् बान्क़रास् –अ०। बान्क़रास या लबलबह की नाली –उ०। इस नाली द्वारा अग्नाशय रस द्वादशांगुलांत्र में गिरता है।

अग्नाशयिक क्षय agnáṣhayika-kshaya-हिं० पुं० (Pancreatic phthisis) अग्न्याशय जन्य क्षय रोग। सिल्ल इन्क़रासी-अ०। लबलबह की सिल–उ०। इस प्रकार का क्षय अग्नाशय के विकृत होकर संकुचित होजाने से उत्पन्न होता है। इसमें भी रोगी दिन दिन निर्बल होता जाता है।

अग्निः agnih-सं० पुं० } The fire
अग्नि agni हिं० संज्ञा स्त्री० } of the stomach, digestive faculty. जठराग्नि, पाचनशक्ति। यह मन्द, तीक्ष्ण विषम और सम भेद से चार प्रकार की होती है। यथा मनुष्य के कफ की अधिकता से मन्दाग्नि, पित्त की अधिकता से तीक्ष्णाग्नि, वात की अधिकता से विषमाग्नि तथा तीनों दोषों की समता से समाग्नि होती है। विषमाग्नि वातज रोगों को, तीक्ष्णाग्नि पित्तज रोगों को और मन्दाग्नि कफज रोगों को उत्पन्न करती है। लक्षण—समाग्नि वाले का किया हुआ यथोचित भोजन सम्यग् रूप से पच जाता है। मन्दाग्नि वाले मनुष्य का किया हुआ थोड़ा सा भी भोजन अच्छे प्रकार नहीं पचता और विषमाग्नि वाले मनुष्यका किया हुआभोजन कभी भली प्रकार पचता और कभी नहीं पचता; तथा जिस मनुष्य को अत्यन्त किया हुआ भोजन भी सुख पूर्वक पच जाए उसको तीक्ष्ण अग्नि कहते हैं। इन चारों प्रकार की अग्नियों में समाग्नि उत्तम है। मा० नि० अग्नि० मा० (२) पाचक, रञ्जक प्रभृति पञ्चपित्त [देखो–पित्त]। (३) तेज पदार्थ विशेष, तेजका गोचर रूप, उष्णता, आग–हिं०। फायर (Fire)–इं० नार, अरह, आतश–अ०, फ़ा०। आगुनि–बं०। यह पृथ्वी, जल, वायु, आकाश आदि पंच भूतों वा पंच तत्वोंमें से एक है। इसके संस्कृत पर्याय–वैश्वानर, वह्नि, वीतिहोत्र, धनञ्जय, कृपीटयोनि, ज्वलन, जातवेदस्, तनूनपात्, तनूनपा, वर्हि, शुष्मा, कृष्णवर्त्मा, शोचिष्केश, उपर्बुध, आश्रयाश, आशयाश, बृहद्भानु, कृशानु, पावक, अनल, रोहिताश्व, वायुसखा, शिखावान्, शिखी, आशुशुक्षणि, हिरण्यरेता, हुतभुक्, हव्यभुक्, दहन, हव्यवाहन, सप्तार्चि, दमुना, शुक्र, चित्रभानु, विभावसु, सुचि, अप्पित्त (अटी) वृषाकपि, जुहुवान्, कपिल, पिंगल, अरणि, अगिर, पाचन, विश्वप्सा, छागवाहन, कृष्णार्चि, भास्कर, जुहुवार, उदर्चि, वसु, शुष्म, हिमराति, तमोनुत्, सुशिख; सप्तजिह्व, अपपरिक, सर्व्वदेवमुख (ज)।

अग्नितापके गुण—वात, कफ, स्तब्धता, शीत तथा कम्प नाशक, आमाशयकर और रक्त पित्त को कुपित करने वाला है। राज० भा०। आग्नेय द्रव्य—आग्नेय द्रव्य रूक्ष, तीक्ष्ण, उष्ण, विशद (सूक्ष्म स्रोतोंमें जाने वाले) और रूप गुण बहुल होते हैं। ये दाह, कान्ति, वर्ण और पाक कारक होते हैं। वा० सू० अ० ६। (४) द्रव्यों का तीसरा रूप जिसे वायवीय अर्थात् गेसियस (Gaseous) कहते हैं इसे वाष्पीय

(भापकासा) कहते हैं। यह हमारा प्राचीन तेजस् तत्व है। हवा, पानी की भाप, इत्यादि इसके उदाहरण हैं। किसी पदार्थ को जब बहुत गर्मी दी जाती है तो वह अंत में इस रूप को धारण करता है। तेजस द्रव्यों में कुछ तो दृश्य हैं अर्थात् देख पड़ते हैं और कुछ अदृश्य, इनमें दो विशेष गुण हैं, एक तो अपना इसका कोई आकार नहीं होता, जैसे वर्तन में भर दीजिए उसी आकार का हो जायगा। गोले, चौखटे, तिकोने आकार के धारण करने में इसे कोई कठि-नाई नहीं होती। दूसरी बात जो इसमें पाई जाती है वह यह है कि इसका कोई अपना परिमाण नहीं होता। एक इत्र की शीशी लीजिए। अभी उसमें गंध के परिमाणु वाष्प रूप से हैं, किंतु उनका-परिमाण उतना ही है जितनी कि शीशी में खाली जगह है। यदि आप शीशी की डाट खोल दीजिए तो अभी गंध सारी कोठरीमें फैल जायगी। अर्थात् अब वही परमाणु बढ़कर कोठरी के बराबर हो गया। अतः वाष्पीय द्रव्य वे हैं जो अपना स्वयं कोई परिमाण या आकार नहीं रखते प्रत्युत जिस पात्र में रक्खे जाते हैं उसी के आकार और परिमाण को ग्रहण कर लेते हैं। भौ० वि०।

(५) चित्रक वा चीता (Plumbago Zeylanica, *Linn.*) स्त्रियां० ग्रहणी चि०। विल्वाद्य घृत। वा० सू० १५ अ० आरग्वध व०। (६) अग्निजार वृक्ष (agnijára) रा० नि० व० २३। (७) पीतबालक।

(८) केशर, Saffron (Crocuss ativus, *Linn.*) (९) पित्त (Bile), (१०) अन्न (११) निम्बुक वा नीबू (Citrus medica, (*Gold.*) । रा० नि० व०२१। (१२) स्वर्ण, सुवर्ण (Aurum)। रा० नि० व० १३। (१३) भल्लातक, भिलावाँ (Semecarpus anacardium, *Linn.*) रा० नि० व० ११। (१४) रक्त चित्रक, लाल-चीता (Plumbago Rosea, *Linn.*) रा० नि० व० ६। च० द० ग्रहणी चि०। कपित्थाष्टक।

अग्नि-(१५) वैद्यकके मतसे अग्नि तीन प्रकार की मानी गई है-यथा-(क) भौम, जो तृण काष्ठ आदि के जलनेसे उत्पन्न होती है। (ख) दिव्य-जो आकाश में विजली से उत्पन्न होती है, (ग) उदर व जठर, जो पित्त रूप से नाभि के उपर हृदयके नीचे रहकर भोजन भस्म करती है। इसी प्रकार कर्मकांड में अग्नि छः प्रकार की मानी गई है। गार्हपत्य, आहवनीय, दक्षिणाग्नि, सभ्याग्नि, आवसथ्य, औपासनाग्नि। इनमें पहिली तीन प्रधान हैं। (१६) वेद के तीन प्रधान देवताओं (अग्नि, वायु और सूर्य) में से एक।

अग्नि-आर agni-ára-नैपा० अयार, यज्ञ छाल। मे० मो०।

अग्निउ agniu-कुमा० बसोटा, बक्काच। मे० मो०।

अग्निउम् agnium-हिं० पुं० बसौटा, बक्काच। अग्निरुहा, मांसरोहिणी-सं०।

अग्निक agnika-हिं० संज्ञा पुं०
अग्निकः agnikah-सं० पुं० } (१) इन्द्र-गोप, बीर-बहूटी। अपाड़े पोका-बं०। an insect of a bright scarlet colour (Mutella occiden talis) सु० मि० अ०। हे० च० ४ का०। (२) चित्रक वृक्ष (Plumbago zeylanica, *Linn.*) वा० चि० ७ अ०। (३) भिलावाँ, भल्लातक वृक्ष (Semecarpus anacardium, *Linn.*) भा० प्र० १ भा० ह० व०।

अग्निकर चूर्ण agnikara-chúrṇa-हिं० पुं० शर्करा, अनार दाना, हड़, सोचर नोंन, कुड़े की छाल, इनका चूर्ण अग्नि संदीपक और अति-सार नाशक है। वृंदास० यो० सं०।

अग्निकरो रसः agnikaro rasah-सं० पुं० शिंगरफ को काले बैंगन के रस से ३ वार भावित करें। पुनः बन भौंटा, चित्रक, पीपल की छाल, अमली और केले की जड़ इनके रसों अथवा काथों की क्रम से भावना दें। फिर उसमें मेघ-नाद (चौलाई खारदार) आक, थूहर, चिरचिटा,

और ढाक इनके क्षार, सज्जी, यवक्षार, सेंधा नमक, इन्हें शिंगरफ के बराबर मिलाएँ, फिर सर्वतुल्य काली मिर्च तथा मिर्चों से आधी लवंग मिलाकर नीबू के रस से खूब भावना दें। इसे अदरख या पानके रसके अनुपान से आवश्यकतानुसार वर्त्तना चाहिए।

मात्रा—१-३ मा० पर्यन्त। गुण—यह जठराग्नि को प्रदीप्त करता है।

अग्नि कर्णी agni-karṇí–सं० स्त्री० (A tree) वृक्ष विशेष। वै० निघ० २ भा० अग्निन्यास ज्वर चि०।

अग्नि-कर्म agni-karma–सं० क्लो०, हिं० संज्ञा पुं० ग्रन्थ्यादि रोगों में अग्नि में लाल किए हुए शलाका आदि से किए जाने वाले दाह क्रिया को 'अग्निकर्म' कहते हैं। क्षार से दाह कार्य श्रेष्ठ है गुण के विचार से न कि क्रिया के विचार से। काल–इसके लिए शरद और ग्रीष्मऋतु को छोड़कर अन्य समस्त ऋतु में श्रेष्ठ है। इसके लिए पात्र अर्थात् योग्य रोगी दुर्बल, बालक, वृद्ध और डरपोंक प्रभृति के अतिरिक्त अन्य समस्त। सु० सू० १२ अ० वा० चि० १५ अ०।

अग्निका agniká–सं० स्त्री० (Gossypium Indeium) कपास, कर्पास।

अग्नि-काश agni-kásha–हिं० (oxygen) उत्प्लजन, ओषजन।

अग्नि काष्ट agnikáshṭha–हिं० संज्ञा पुं०)
अग्नि काष्ठम् agnikáshṭham–सं० क्लो०)
(१) अगर, अगरु (agalochum) "अग्निकाष्ठ करोरेस्यात्" रा० नि० व० २३ (२) शमी काष्ट acacia suma) रा० नि० व० १२। करील।

अग्नि कीट agni-kíṭa–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] समंदर नाम का कीड़ा जिसका निवास अग्नि में माना जाता है।

अग्नि-कीलः agni-kílah–सं० पुं० अग्नि-शिखा। अग्नि ज्वाला बं० (gloriosa superba) लाङ्गली, कलिहारी।

अग्नि कुक्कुट agni kukkuṭa-हिं० संज्ञा पुं०)
अग्नि-कुक्कुटः agni-kukkuṭah–सं० पुं०)
जलदाग्नि तृणोल्का, विद्युत। ज्वलंत-तूड़ी-बं०। (Lightning) जलता हुआ तृण वा पुवाल का पूला। लुक। लुकारी।

अग्नि-कुण्ड-रसः agni-kuṇḍa rasah–सं० पुं० गन्धक, पारद ४-४ मा०, ताम्रभस्म २ मा०, मिला कज्जलीकर ४ तह मलमल या खादी में बाँध अमलतास और सागवन के क्वाथ में डालकर १ दिन और एक रात रहने दें। दूसरे दिन निकाल कर १ अहोरात्र खिरनी के दूध में डालकर रक्खें। पुनः सम्पुट में बांध लघु पुट से पकाएँ जिससे कि पारद उड़ न जाए। पश्चात् उपर्युक्त द्रव्यों की पुट दें। इस प्रकार ५ पुट दें। पुनः उसके समान शुद्ध जमालगोटा मिला मर्दन कर २ या ३ रत्ती प्रमाण की गोली बनाएँ। गुण—जल के साथ सेवन करने से रेचन होकर आध्मान, शूल, उदरामय और मलेरिया ज्वर का नाश होता है। र० यो० सा०।

अग्निकुमार-मोदकः agni-kumára-modakah–खस, नेत्रवाला, नागरमोथा, दालचीनी, तमालपत्र, नागकेशर, जीरा सफेद, जीरा स्याह, काकड़ाशिंगी, कायफल, पुष्करमूल, कचूर, सोंठ, मिर्च, पीपल, बेलगिरी, धनियां, जायफल, लौंग कपूर, कान्तलौहभस्म, शिलाजतु, वंशलोचन, छोटी इलायची बीज, जटामांसी, रास्ना, तगर, चित्रक, लाजवन्ती, गुलशकरी, अभ्रक भस्म, वंग भस्म, मुरामांसी इन्हें समभाग लें, इन्हीं के समान मेथी तथा इस चूर्ण से आधी शुद्ध पिसी भंग लें, इसमें शहद तथा मिश्री उचित मात्रा में मिलाकर मोदक प्रस्तुत करें। मात्रा–१ तो०। अनुपान–जल, बकरी का दूध।

यह सेवन से उग्र संग्रहणी, कास, श्वास, आमवात, मन्दाग्नि, जीर्णज्वर, विषम ज्वर, विबन्ध, अफरा, शूल, यकृत, प्लीहा, १८ प्रकार का कुष्ट उदावर्त, गुल्म तथा उदररोग को नाश करे। भै० र० ग्रहण्याधि०।

अग्नि-कुमार-रसः agni-kumára-rasah–सं० पुं० पारद, गन्धक, बच्छनाग, त्रिकुटा, सुहागा भुना, लौह भस्म, अजवाइन, अहिफेन,

प्रत्येक समान भाग सर्व तुल्य अभ्रक भस्म लें। पुनः चित्रक के रस में १ प्रहर मर्दन कर चना प्रमाण गोलियां बनाएँ।

गुण—अजीर्ण, संग्रहणी, जठराग्नि की मन्दता, पक्वातिसार को दूर करता और वाजीकरण करता है। र० सं०।

(२) मिर्च, वच, कूट, नागरमोंथा, इन्हें सम भाग लें, इनके तुल्य मीठा विष लें, उत्तम चूर्ण कर अदरख के रस से खरल कर एक एक रत्ती की गोलियां बनाएँ। मात्रा—१ रत्ती।

अनुपान—आम ज्वर में शहद, सोंठ से, कफ ज्वर में सम्हालू के रसमें, प्रतिश्याय और पीनस में अदरख के रस में, अग्निमांद्यमें लवंगसे, शोथ (सूजन) में दशमूल क्वाथ के साथ, संग्रहणी में सोंठसे, अतिसारमें मोंथासे, आमातिसारमें सोंठसे, धनियांके क्वाथसे, शहद, अदरखके साथ, पक्वातिसार में पीपर, अदरख के रस के साथ, सन्निपात ज्वरमें कटेरी के रस के साथ, श्वास, खांसी में तैल और गुड़ के साथ, यह चित्त स्वस्थ कारक, आम दोष नाशक और जठराग्नि को बढ़ाने वाला प्रसिद्ध अग्निकुमार नामक रस है। भै० र० ज्वराधिकारः०।

(३) पारा, गंधक, सुहागा ये समभाग लें, मीठा विष ३ भा०, कौड़ी भस्म २ भा०, शंख-भस्म २ भा०, मिर्च ८ भा०, पारा गंधक की कज्जली कर सब औषधियों को चूर्ण कर मिलाएँ पुनः पके जम्भीरी रस से अच्छी तरह मर्दन कर दो दो रत्ती प्रमाण की गोलियां प्रस्तुत करें। इसके सेवन से विशूचिका (हैजा) अजीर्ण और वातरोग का नाश होता है। इसमें किसी किसी आचार्यों के मत से १ भाग वच का भी मिलाना चाहिए। रस० रा० सु०। भै० र० अग्निमा० अधि०। यो० त० अजी० अ०।

नोट—इस नाम के भिन्न भिन्न योग अनेक पुस्तकों में वर्णित हैं।

अग्नि-कुमार-लौह agni-kumára louha—हिं० पुं० प्लीहाधिकार में वर्णित रस। योग इस प्रकार है:—

यथा—तूतिया, हींग, सुहागा, सैंधव, धनियां जीरा, अजवाइन, मिर्च, सोंठ, लौंग, इलायची, विडंग प्रत्येक १-१ तो० इन सबों के समान लौह तथा पारद ४ तो० व गंधक ४ तो०, निर्माणविधि—सर्व प्रथम पारद व गंधक की कज्जली कर पश्चात् शेष औषधियों को मिलाकर भली भांति घोटें पुनः इसको शीशी प्रभृति में सुरक्षित रक्खें। मात्रा—अवस्थानुसार। अनुपान—घृत और मधु। बृ० र० रा० सु० ३३४ योग।

अग्निकेतुः agniketuh—सं० पुं० (Smoke) धूम।

अग्नि-कोण agnikona—हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (The south-east corner) पूर्व और दक्षिण का कोना, अग्निदिक्।

अग्निक्रिया agnikriyá—हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] (Funeral ceremonies) शव का अग्निदाह। मुर्दा जलाना।

अग्नि-गर्वः agni-garbah—सं० पुं०। दादमारी इ० मे० मो० (Ammannia Baccifera, *Linn.*)

अग्नि-गर्भ agni-garbha हिं० संज्ञा पुं०)
अग्नि-गर्भः agni-garbhah—सं० पुं०)
(१) अग्निजार वृक्ष (A plant used in medicine of stimulant properties) रा० नि० व० ६। (२) आतिशी शीशा, सूर्य कान्त मणि (The sun stone (३) शमी वृक्ष (Acacia suma)

अग्नि-गर्भ-पर्वत agni garbha-parvata हिं० संज्ञा पुं० [सं०] ज्वाला मुखी पहाड़ (Volcano)

अग्नि गर्भा agni garbhá—सं० स्त्री० (१) शमी वृक्ष (acacia Suma)
गुण—तिक्त, कटु, कषाय, शीत वीर्य, लघु, रेचनी, कफ, कास, श्वास, कुष्ट, अर्श तथा कृमि नाशक है। भा० पू० १ भा० (२) महा ज्योतिष्मती लता सं० बड़ी माल कागुनी-हिं०। बड़ा लता फटकी-बं०। (Cardisspermum Halicacabum, *Linn.*) रा० नि०। करील।

अग्नि गर्भा वटी agni-garbhá-vatí–सं० स्त्री० र० र०, र० सं०, उदराधिकारे। शुद्ध पारा ४ तो० शुद्ध गन्धक ८ तो०, लोह, सुहागा वच, कुट, हींग, त्रिकुटा, और हल्दी ये सब पारे से अर्ध प्रमाण में लें, सबका चूर्ण कर पश्चात् मानकन्द, जिमीकन्द, व्याघ्रनखी (हिं०–बघ-नहा, म०–वाघांटी) और त्रिफला के रस अथवा क्वाथ से अलग अलग भावित करें। फिर ६-६ रत्ती की गोलियां प्रस्तुत करें।

गुण—प्लीहा, गुल्म, उदर रोग, शूल, यकृत, अष्ठीला, कामला, हलीमक, पांडु, कृमिरोग, और कुष्ठ को नष्ट करती हैं।

अग्नि गर्भो रसः (१ म) agni-garbho rasah–सं० पुं० शुद्ध पारा, ताम्र, लोह, अभ्रक, सीसा, बंग प्रत्येक की भस्म, वच्छनाग, सोनामाखी शुद्ध, मुर्दासंग शुद्ध, सुहागा भुना, शिलाजीत, मैनसिल शुद्ध, कमीला और गन्धक शुद्ध प्रत्येक तुल्यभाग और सर्वतुल्य श्वेत आक की जड़ की छाल लेकर घी कुंवार, चित्रक, त्रिफला, अम्लवेत, कचूर, ब्राह्मी और अम्ली के रस (जिसका रस न मिले उसके स्थान में उसका क्वाथ) से सात बार अलग अलग भावित करें, पुनः भिलावे के क्वाथ से २६, गोभी के रस से ६, त्रिकटु के क्वाथ से १०, जिमीकन्द क्वाथसे २० और ताड़ीसे ३ भावना दें तो यह सिद्ध होता है। मात्रा–१ माशा।

अनुपान—तुलसी, पीपल और शहद,दृढ और शहद, काला नमक और चित्रक, त्रिकुटा, जिमी-कन्द, चित्रक अजवाइन, गुड़, पीपल, ताड़ी, और शतावरी का चूर्ण अथवा आमले का चूर्ण और शहद अथवा घी और त्रिकुटा है। यह सभी प्रकार के अर्श, मन्दाग्नि, प्रमेह कान और नेत्र पीड़ा शूल, गुल्म, उदररोग, अंधेरी, दशा, उदावर्त, कृमिरोग, पीनस, पेट फूलना, तूनी, प्रत्यष्ठीला, प्रतूनी, शोथ और पांडु रोग को नष्ट करता है। इसे सेवन करने वालों को बैंगन, तैल, शाक, स्त्री सङ्ग, दिन का सोना, और घोड़े की सवारी मना है। रसावतारे—अर्श० अधि० (२) ज्वराधिकार रसावतारे।

अग्नि घृतम् agni-ghritam–सं० क्ली० पीपल, पीपलामूल, चित्रक, गजपिप्पली, हींग, अजमोद, चव्य, पञ्च लवण, जवाखार, सज्जी-खार, हाऊबेर, प्रत्येक ८ ८ तो० अदरख का रस ६४ तो०, घृत ६४ तो०, दही, कांजी, शुक्त घृत के बराबर लें, पुनः विधिवत् पकाएँ।

गुण—अर्श, गुल्म, उदर, ग्रन्थि, अर्बुद, अपची, खांसी, कफ, मेद, वायुरोग, संग्रहणी, शोथ, भगन्दर, वस्तिगत रोग और कुक्षिगत रोग में हितकर है। च० द०। वंग० से० सं० अजीर्ण अ०। अ० ृ अ०।

अग्निचक्र agni-chakra–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] योग में शरीर के भीतर माने हुए छः चक्रों में से एक। इसका स्थान भौहों का मध्य, रंग बिजली का सा और देवता परमात्मा माने गए हैं। इस चक्र में जिस कमल की भावना की गई है उसके दलों (पखुड़ियों) की संख्या दो और उनके अक्षर ह और क्ष हैं।

अग्नि चारः agni-chárah–सं० पुं० एक औषधि है, जो पश्चिमी समुद्र के किनारे होती है। (Phaseolus gallas)

अग्नि-चूड़ः agni-chúdah–सं० पुं० (A cock) ताम्र चूड़ पक्षी। कोमड़ा-दा० हिं०। कुक्कुट, मुर्ग–हिं०। कुकड़ा–बं०। ग्राम्य व वन्य भेद से ये दो प्रकार के होते हैं। इनमें (१) ग्राम्य बृंहण, वृष्य, बल्य, गुरु, शुक्र एवं कफ कर्त्ता, स्निग्ध, उष्ण वीर्य और रस में कषैला होता है। (२) आरण्य (जंगली) स्निग्ध, बृंहण, श्लेष्मा कारक तथा गुरु है और वात, पित्त, क्षत वमन तथा विषम ज्वर नाशक है। भा०। हृद्य,श्लेष्मा नाशक तथा लघु है। रा०नि० व० ११। रुच, स्वाद, (मधुर) कषैला और शीतल है। राज०

अग्निज agnija–हिं० संज्ञा पुं० }
अग्निजः agnijah–सं० पुं० } A plant used in medicine of stimulant properties.

(१) समुद्र फल का पेड़, अग्निजार वृक्ष।
(२) (Semecarpus anacardium,

Linn.) भिलावाँ, भल्लातक (३) (Gold) सोना, सुवर्ण (Aurum), मांस धातु (Muscle) वै० श०।

अग्नि-जननी agnijananí–सं० स्त्री०, हि० वि० (१) अग्नि से उत्पन्न। (२) अग्नि को उत्पन्न करने वाला (३) अग्नि संदीपक। पाचक।

अग्नि-जननी-वटी agni-jaaní vatí–सं० स्त्री० पारद, गंधक, सोंठ, सुहागा, वच्छनाग, काली मरिच समान भाग लें। पुनः बड़हल के रस में मर्दन कर चना प्रमाण गोलियां बनाएँ। गुण—यह अग्नि प्रदीपक है। भै० र० अग्नि मा० अ०।

अग्नि-जातः agni-játah–सं० अग्नि जार वृक्ष। (See-agnijára.) रा० नि० व० ६।

अग्नि जार agnijára–हि० संज्ञा पुं०
अग्नि जारः agnijárah–सं० पुं०
Aplant used in medicine of stimulant properties.) पश्चिम समुद्र में उक्त नामकी प्रसिद्ध सागर सम्भूत औषध विशेष, समुद्र फलका पेड़, इसके पर्याय निम्न हैं:-यथा—अग्नि निर्य्यासः, अग्निगर्भः, अग्निजः, बड़वाग्नि-मलः, जरायुः, अर्णवोद्भवः, अग्निजातः और सिंधुफल। लक्षण–यह चार प्रकार के वर्ण वाले होते हैं, इनमें लोहित वर्ण का श्रेष्ट होता है। जैसे–जाराभो दहनस्पर्शी पिच्छिलः सागरोद्भवः। जरायस्तच्चतुर्वर्णाः तेषु श्रेष्ठः स लोहितः॥ गुण–कटु रस युक्त, उष्ण वीर्य; लघुपाकी तथा कफ, वायु, सन्निपात, शूल रोग नाशक और पित्त कारक है, यथा—स्यादग्नि जारः कटु रुष्ण वीर्यः गुदामय वात कफामयघ्नः। पित्त प्रदः सोऽधिक सन्निपातशूलार्ति शीतामय नाशकश्च॥ रा० नि० व० ६। (amber) अम्बर अशहब।

अग्नि-जालः agnijálah सं० पुं० अग्निजार, समुद्रफल का वृक्ष।

अग्नि-जिह्व agnijihva–हि० संज्ञा पुं० [सं०] देवता, अमर।

अग्नि जिह्वा agnijihvá–हि० संज्ञा स्त्री०
अग्नि–जिह्विका agnijihviká सं० स्त्री०
(Gloriosa Superba, *Linn.*) लांगली वृक्ष। रला०। कलिहारी–हि०। कललावी–म०। ईष लांगुलिया–बं०।

गुण–दस्तावर, तिक्त, कड़वी, चरपरी, कषैली, तीक्ष्ण, उष्ण, हलकी, पित्तकारक और खारी, गर्भ को गिराने वाली है। कुष्ट, शोफ (सूजन), अर्श (बवासीर) व्रण, शूल, श्लेष्म तथा कृमि को नष्ट करने वाली, कफ वात नाशक और अन्तः शल्य निस्सारक है। भा० पू० १ भ० गु० व० (A tongue or flame of fire) आग की लपट।

अग्नि-ज्वाला agnijvalá–सं० स्त्री०(१) गजपीपल –हि०। गज पिपुल–बं०। पॅथोस आफिसिनैलिस् (Pothos officinalis)–ले० विद्वान् लोग चव्य के फल को ही गजपीपल कहते हैं। यथा–"चविकायाः फलम् प्राज्ञैः कथिता गज-पिप्पली"। भा० पू० १ भ०।

गुण–गजपीपल, चरपरी, वात, कफ नाशक, अग्नि को दीपन करने वाली और गरम है, और अतिसार, श्वास, कंठ के रोग और कृमि रोग को नष्ट करने वाली है। (२) लांगली वृक्ष (Gloriosa superba) (३) अग्निजार, (Agnijára) (४) जलपिप्पली–हि० । कांचड़ा–बं०। जलपिप्पली–म०। (५) धातकी वृक्ष। रा० नि० व० २३। (६) आग की लौ, (Flame) (७) आंवले का पेड़, आमला। (Phyllanthus Emblica) (८) अग्निबाड़ा। (Agnibadá)

अग्नि-झाल agnijhála–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] अग्नि ज्वाला। जरायु। सुफेद चित्रक (white lead-wort)-इं०। (२) जल पिप्पली का पेड़।

अग्नि-तप्त agni-tapta–हिं० वि० आग पर गरम किया हुआ।

अग्नि-तुण्डा-वटी agni-tundá-vatí–हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] अग्नि-तुण्डी वटीः—

अग्नि-तुण्डी-वटी agni-tundí-vatí सं० स्त्री० शुद्ध पारद, वच्छनाग, गंधक, अजमोद, त्रिफला, सज्जी-खार, जवा-खार, चित्रक, सैंधा नमक, जीरा

काला नमक, वायविडंग, समुद्रलवण, त्रिकुटा, प्रत्येक समान भाग, सबके समान कुचला ले चूर्ण करें। पुनः जम्भीरी नीबू के रस में घोट कर मिर्च प्रमाण गोलियां बनाएँ।

मात्रा—१-३ गोली। रसेन्द्र कल्पद्रुम में इसकी मात्रा छः रत्ती लिखी है। परन्तु जब कुचले के स्थान में बकायन के बीज लिए जाएँ तो इसकी मात्रा दो गोली काफी होती है। गुण—इसके सेवन से सम्पूर्ण अजीर्ण और मन्दाग्नि दूर होती है। भै० र०। र० यो० सा०।

अग्नि-तुण्डी-रसः agni-tundí-rasah—सं० पुं० पारद शुद्ध, गंधक शुद्ध, विष शुद्ध, अजमोदा (यमानी), त्रिफला, सज्जी, सोडा, जवाखार, चित्रक, जीरा, सेंधा लवण, काला लवण, (सौवर्चल,) वायविडंग, समुद्रलवण, त्रिकुटा, इन्हें समान भाग लें। सर्व तुल्य विषमुष्टी (कुचिला) लें, चूर्णकर जम्भीरी के रस में घोट मिर्च प्रमाण गोलियां बनाएँ।

गुण—इस सेवन से मन्दाग्नि दूर होती है। शार्ङ्ग० सं० मध्य ख० अ० १२।

अग्निद agnida—हिं० वि० अग्नि दीपन। (Tonic, Stomachic)

अग्नि-दग्ध agni-dagdha हिं० वि०। आग से जला हुआ।

अग्नि-दमनकः agni-damanakah सं० पुं० }
अग्नि-दमनी agni-damaní—सं० स्त्री० }

Medicinal plant stimulant and stomachic considered as a small species of Cantacarica.

क्षुद्र कंटक वृक्ष विशेष। गणिकारी हिं०। गणिरी —बं०। दुरालभा भेद—हिं०, बं०। धमासा भेद, अगिदवणा—म०। वै० निघ०। कोई कोई शोला को कहते हैं। इसके पर्याय निम्न हैं:— यथा—वह्निदमनी, बहुकंटका, वह्नि कंटकारिका, गुच्छफला, क्षुद्रफला, क्षुद्रकंटकारी, क्षुद्रदुःस्पर्शा, क्षुद्रकंटकारिका मत्स्येन्द्रमाता, दमनी। गुण— कटु, उष्ण, रूक्ष, रुचिकारक, अग्निदीपक है। रा० नि० व० ४। वात, गुल्म तथा कफ नाशक और प्लीहा विकार नष्ट करता है। वै० निघ०।

अग्नि-दाह agnidáha हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) आग में जलाने का कार्य। भस्म करना, जलाना (२) शवदाह, मुर्दा जलाना (Funeral ceremonies.)

अग्नि-दीपक agni-dípaka—हिं० वि० [सं०] जठराग्नि को उत्तेजित करने वाला, पाचक शक्ति को बढ़ाने वाला। अग्नि-वर्द्धक, दीपक (Stomachic)

अग्नि-दीपन agni-dípana हिं० वि० अग्नि-दीपक।

अग्निदीपन agni dípana हिं० संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अग्निदीपक] (१) अग्निवर्द्धन। जठराग्नि की वृद्धि। पाचन शक्ति की बढ़ती। (२) अग्नि वर्द्धक औषध। पाचन शक्ति को बढ़ाने वाली दवा। वह दवा जिसके खाने से भूख लगे।

अग्नि-दीपनः agni-dípanah—सं० पुं० (१) वरुण वृक्ष, बरना—हिं०। वरुण गाछ —बं०। (Cratæva religiosa, *Fort.*) भा० पू० १ भा०। (२) अग्नि वर्द्धक (Stomachic, Tonic)

अग्निदीपन रसः agni-dípanarasah—सं० पुं० पारद, मीठा तेलिया, लवंग, गंधक प्रत्येक १ भाग, मरिच २ भाग, जायफल आधा भाग। सबको महीन करके अम्ली के रस की भावना देकर रक्खें। मात्रा—१ मासा।

गुण—इसे अदरख के रसके साथ सेवन करने से शीघ्र ही अग्नि प्रदीप्त होती है। र० प्र० सु० अ० ८।

अग्नि-दीपनी, नीय agnidípaní, níya—सं० त्रि० दीपन, अग्नि वर्द्धक, अग्नि वृद्धि करो—हिं० (A medicine which stimulates the digestive fire or increases the appetite, Stomachic.)

अग्नि-दीपनी वटी agni-dípaní-vatí—सं० स्त्री० गन्धक, काली-मिर्च सोंठ, सेंधा, नमक,

जवाखार समभाग ले मर्दन कर चने प्रमाण गोली बनाएँ। मात्रा–१ गोली।

गुण – यह जठराग्नि को प्रदीप्त करती है।

अग्नि-दीप्ता agni-díptá–सं॰ स्त्री॰ महाज्योतिष्मती लता, जोंकमांगनी, ज्योतिष्मती–हिं॰। लताफटकी–बं॰ । थोर माल कांगनी–म॰। (Celastrus paniculata, *Willd.*) रा॰ नि॰ व॰ ३ भा॰ पू॰ १ भा॰।

अग्नि-दीप्ति agni-dípti -हिं॰ संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] Improved digestion, good appetite) क्षुधा वृद्धि, पाचन शक्ति का बढ़ जाना।

अग्नि-धमनः agni-dhamanah–सं॰ पुं॰ Melia azadirachta, *Linn.*) कटु निम्ब-हिं॰, म॰। कटु निम, घोड़ा निम-बं॰। देखो–महानिम्ब, बकाइन।

अग्नि-निर्यासः agni-niryásah–सं॰ पुं॰ अग्निजार वृक्ष। रा॰ नि॰ व॰ ६। See agni-jára.

अग्नि-पत्री agni-patrí सं॰ स्त्री॰ अग्नि वर्ना, अगिया प्रसिद्ध–हिं॰ (Andropogon Schœranthus, *Linn.*)

अग्नि पर्णी agni-parní–सं॰ स्त्री॰ वानरी, कौंच, केवाँच। (Mucuna pruriens, D. C.)

अग्नि–परिताप agni-paritápa–हिं॰ पुं॰ आग की जलन (Scorching heat (–of fire)

अग्नि-परीक्षा agniparíkshá-हिं॰ संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] सोना चाँदी आदि धातुओं की आग में तपाकर परख।

अग्नि पा (मा) ली agni-pá (ma) lí सं॰ स्त्री॰ (The white lead-wort) चित्रक, सुफेद चीता–हिं॰। चिते–बं॰। मद॰ २ व॰।

अग्नि प्रदीपकानि agni-pradípakání सं॰ क्ली॰ सोंठ अथवा गुड़ के साथ भक्षण की हुई अथवा सेंधालवण के संग भक्षण की हुई हरीतकी निरंतर अग्नि को प्रकाशित करती है।

सेंधा नमक, हर्ड़, पीपल, चित्रक इन का चूर्ण बनाय उष्ण जल के साथ खाने से नष्टाग्नि उत्तेजित होती है तथा नवीन अन्न, मांस, घृत भक्षण किया हुआ शीघ्र भस्म हो जाता है।

सेंधा लवण, हींग, हर्ड़, बहेड़ा, आमला, अजवाइन, सोंठ, मिर्च, पीपल इन्हें बराबर ले और सबके बराबर गुड़ मिला गोलियां बनाएँ, इसके सेवन से मन्दाग्नि वाला तृप्त होता है और अधिक भोजन करता है।

वायविडंग, भिलावाँ, चित्रक, गिलोय, सोंठ बराबर ले इनके समान गुड़ और घृत मिला गोलियां बनाएँ इसके सेवन से मन्दाग्नि दूर होती है। गुड़ के साथ सोंठ अथवा पीपल, या हर्ड़ अथवा अनार को आम रोग में, अजीर्ण में, गुदा के रोगों में, मल के विबन्ध में नित्य प्रति सेवन करें।

भोजन के प्रथम नमक और अदरख का खाना हृदय को हितकारक तथा दीपन है। चक्र॰ द॰ अग्नि॰ मा॰ आ॰।

अग्निप्रदोरसः agni-prado-rasah सं॰ पुं॰ पारद, गंधक, सीसा, वच्छनाग, प्रत्येक १–१ तो॰ कज्जली कर आतिशी शीशी में रख वालुका यन्त्र द्वारा ८ प्रहर की अग्नि से पकाएँ। इसमें २ तो॰ त्रिकुटा मिलाकर बारीक पीस ईख के रस से मर्दन कर १–१ रत्ती प्रमाणकी गोलियां बनाएँ। गुण—इसके सेवन से मन्दाग्नि, क्षय, सन्निपात और वात रोग दूर होते हैं। र॰ प्र॰ सु॰ अग्नि॰ मा॰ अ॰ र॰ प्र॰ सु॰ अ॰ ८।

अग्नि प्रभा वटी agniprabhá-vatí–सं॰ स्त्री॰ सेंधा नमक, नौसादर, जवाखार, विड नमक, सिंदूर, प्रत्येक समान भाग लें। पुनः पटोल की जड़ के रस से भावना देकर उड़द प्रमाण गोलियां बनाएँ। इसे तालमखाने के पंचांग के क्वाथ से दें तो घोर यकृत, दारुण-प्लीहा, वातपीड़ा, मन्दाग्नि और गुल्म का नाश होता है। र॰ यो॰ सा॰।

अग्नि प्रस्तर agniprastara हिं॰ संज्ञा पुं॰ }
अग्नि प्रस्तरः agni-prastarah–सं॰ पुं॰ }

(Fire-Stone, a glint) अग्नि उत्पन्न करनेवाला पत्थर। वह पत्थर जिससे आग निकले। अग्निजनक पाषाण, चकमक पत्थर।

अग्नि-फला agni-phalá–सं० स्त्री० (Celastrus paniculata, *Willd.*) महा ज्योतिष्मतीलता, ज्योतिष्मती लता, मालकांगनी –हिं०। बड़लता फटकी–बं०। थोर मालकांगनी –म०। रा० नि० व० ३।

अग्नि-बाव agni-báva–हिं० संज्ञा० पुं० [सं० अग्नि+वायु] घोड़ों और दूसरे चौपायों का एक रोग, जिसमें उनके शरीर पर छोटे छोटे आबले निकलते हैं और फूट कर फैलते हैं। यह रोग अधिकतर घोड़ों को होता है। (२) मनुष्यों का चर्मरोग जिसमें शरीर पर बड़े बड़े लाल चकत्ते वा ददोरे निकल आते हैं और साथ ही कभी कभी ज्वर भी आ जाता है। पित्ती। ददरा। जुड़पित्ती।

अग्निबाहुः agni-báhuh–सं० पुं० (smoke) धूम्र।

अग्निभ agnibha–सं० क्लीं०
अग्निभः agnibhah–सं० पुं० } (Gold) सुवर्ण, सोना। (aurum) रा० नि० व० १३।

अग्निभा agnibhá–सं० स्त्री० celastrus paniculata.-मालकाँगनी।

अग्नि-भु agnibhu सं० क्लीं० Gold, (Aurum) सुवर्ण। सोना। रा० नि० व० १३। (२) जल, water (Aqua)

अग्नि मणि agni-maṇi–हिं० संज्ञा पुं०
अग्नि मणिः agni-maṇih–सं० पुं० } The sun stone, a glint सूर्यकान्त मणि। आतिशी शीशा–फ़ा०। एक बहुमूल्य पत्थर। (२) सूर्य-मुखी शीशा।

अग्नि मथनः agni-mathanah–सं० पुं० (Premna Integrifolia, *Linn.*) अरनी–हिं० अग्नि मन्थ, गणिकारिका–सं०। गणिरी का गाछ–बं०। रा० नि० वा० ६।

अग्नि-मन्थ agni-mantha–हिं० सं० पुं०
अग्नि-मन्थः agni-manthah–सं० पुं० } (१) (Premna Integrifolia) अरनी–इरनी, अगेथ, टेकार। (२) अग्निवधू पूर्व देशमें—उ०। सु०सू० ३६ अ०। (३) सशोधन। वा० उ० २० अ०। (४) शाल, सर्जवृक्ष (५) अरणी नामक मन्त्र जिससे यज्ञ के लिए आग निकाली जाती है।

अग्नि-मन्थादि-क्षार तैल agnimanthádi-kshára tail–सं० पुं० अरणी, सोनापाठा, ढाक, तिलनाल, बला, केला और अपामार्ग। इनके क्षारों के पानी से सिद्ध किया हुआ तैल उदररोग और वातज हृद्रोगों का नाश करता है।

अग्नि-मयः agni mayah–सं० पुं० सुफेद विधारा, श्वेत वृद्धदारक। श्वेत विचताड़क–बं०। श्वेत वरधारा–म०। वै० नि०। श्वेत बुढ़ा। See-Vidhárá.

अग्निमा agnimá–(Anona squamosa) सीताफल, शरीफा। फा० इं०।

अग्नि-मात agni-máta–ते० चित्रक, चीता (Plumbago Rosea, *Linn.*) फा० इं० भा० २।

अग्नि-मांद्य agni-mándya-हिं० संज्ञा० पुं०
अग्नि-मांद्यम् agni-mándyam–सं० क्लीं० } (Indigestion) अजीर्ण, मन्दाग्नि। (Anorexia) जठराग्नि की कमी। पाचन-शक्ति की कमी। भूख न लगने का रोग।

अग्नि-मारुति agni-máruti–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] अगस्त्य मुनिका एक नाम।

अग्नि-मुखम् agni-mákham–सं० क्लीं० (१) (Safflower carthamus Tinctorius) कुसुम्भ पुष्प, कड़ का फूल। (२) Saffron (Crocus) कुंकुम, केशर।

अग्नि-मुख agni-mukha–हिं० संज्ञा पुं०
अग्नि-मुखः agni-mukhah–सं० पुं० } (Plumbago Zeylanica, *Linn.*) (१) चित्रक, चीता। चितंगाछ–बं०। (२) भिलांवा, भल्लातक। भेलागाछ–बं०। (Semecarpus anacardium, *Linn.*)

अग्नि-मुखः agni-mukhah–सं० पुं० पारा, गन्धक, अभ्रकभस्म, ताम्रभस्म, अमलवेत,

सिंगिया, त्रिफला प्रत्येक समान भाग लें। सब को कूट-पीस, धतूरा, पान, कटेरी, अरनी, कमल, नेत्रबाला, अडूसा, कुचिला, थूहर और बिजौरा नीबू के रसकी पृथक् २ भावना दें तथा सब के बराबर अदरख के रस की भावना दें। मात्रा—३ रत्ती।

गुण—इसके सेवन से प्रबल शूल दूर होता है। बृ० र० रा० सु०। शूल चि०।

अग्नि-मुख-चूर्णः agni-mukha-chúrṇah-सं० पुं० हींग १ मा०, वच २ मा०, पीपल ३ मा०, अदरख ४ मा०, अजवाइन ५ मा०, हड़ ६ मा०, चित्रक ७ मा०, कूट ८ मा० इन सब का चूर्ण कर सेवन करने से उदावर्त, अजीर्ण, प्लीहा, उदर व्याधि, अंगों का टूटना, विषभक्षणविकार, बवासीर, कफ, और गुल्म दूर होता है। इसे वातव्याधि में गर्म जल, मद्य, दही, दही के पानी इसमें किसी एक के साथ दें।

बं० से० सं० यो० त० अजी० अ०

(२) जवाखार, सज्जी, चित्रक, पञ्चलवण, इलायची, पत्रज, भारङ्गी, भूनी हींग, पुष्कर मूल, कचूर, निसोथ, नागरमोथा, इन्द्रयव, डांसरा (तन्तरीक) अमलबेत, जीरा, आमला, अजवाइन, हड़ की छाल, पीपर, तिलखार, सहिजन खार, पलासखार, खार इन्हें सम भाग ले महीन पीस कपड़ छान कर रस बिजौरेकी आठ २ पुट दें। सिद्ध कर प्रति दिन २ टंक जल के साथ लें तो भूख लगे, तथा अजीर्ण, गोला, उदर व्याधि, अण्डवृद्धि, और वातरक्त दूर होता है। अमृ० सा०

अग्नि-मुख-चूर्णम् (बृहत्) agni-mukha Chúrṇam-(Brihat)-सं० पुं० सज्जीखार, जवखार, चित्रक, पाठा, करञ्ज, पांचों नमक, छोटी इलायची, तमालपत्र, भारङ्गी, वाय विडंग, हींग, पुष्करमूल, सोंठ, दारुहल्दी, निसोथ, नागरमोथा, वच, इन्द्रजौ, कोकम्, जीरा, आमला, अजमोद, कलौंजी, अमलबेत, अम्ली, अजवाइन, देवदार, हड़, अतीस, काली निसोथ, हाऊबेर, अमलतास, तिल, मोखा, सहिजन, तालमखाना, और पलाश इनके खार, गोमूत्र में लगाकर बुझाया हुआ मण्डूर, प्रत्येक तुल्य भाग लेकर बारीक चूर्ण कर लें। पुनः तीन २ दिन तक बिजौरे का रस, सिरका, और अदरख के रस की भावना दें। मात्रा १—३ मा०।

गुण—इसके सेवन से अजीर्ण, सम्पूर्ण गुल्म, प्लीहा, बवासीर, उदर रोग, अन्त्रवृद्धि, अष्ठीला, वातरक्त, और मन्दाग्नि दूर होती है।

र० यो० सा०।

अग्नि-मुख-ताम्रम् agni-mukha-támram—सं० पुं०। पारा १ तो०, गन्धक १ तो० मिला कर कज्जली बनाएँ, पुनः अर्जुन वृक्ष की छाल के रस अथवा क्वाथ से घोट कर २ तो० ताम्र के पत्र पर लेपकर पके हुए गूलर के पत्ते लपेट कर कच्चे सूत से लपेट के मिट्टी के बर्तन में पांचों नमक और चूने के बीच में क्रम से रखकर अन्धमूषा में रखकर भाथी से धौंकें जब सिद्ध हो जाय तो निकाल कर रक्खें। मात्रा—१ रत्ती से प्रारम्भ करें और रोजाना १ रत्ती बढ़ाकर १ मा० तक पहुँचाएँ। यह रस अम्ल पित्त, क्षय, शूल, और दारुण पक्ति शूल को नष्ट करता है। सात रात्रि तक इसका प्रयोग करने से शरीर निर्मल होजाता है।

अम्लपित्ताधिकारे—र०रा०, र० च०।

अग्नि-मुख-मंडूरम् agni-mukha-mandúram—सं० पुं०। लौह किट्ट ४८ तो० लेकर अठगुने गोमूत्र में पकाएँ पुनः चित्रक, चव्य, सोंठ, पीपर, पीपरामूल, देवदारु, नागरमोथा, त्रिकुटा, त्रिफला, वायबिडंग इनका चूर्ण १ पल लेकर उक्त मण्डूर में मिलाकर उपयोग करने से असाध्य शोथ तथा पुराने पांडु रोग का नाश होता है।

भैष० र० शोथाधिकारे।

अग्नि-मुख-रसः agni-mukha-rasah—सं० पुं०। पारा, गन्धक, विष, सम भागलें, इसे अदरख के रस से खरल करें, पुनः पीपलखार, अम्लीखार, अपामार्गखार, सज्जीखार, जवाखार, सोहागा, आंवला, सौंफ, त्रिकुटा, ये समान भाग लें, पांच नमक, अजवाइन, हींग, और जीरा दो दो भाग लें सब को चूर्ण कर नीबू के रस से खरल कर एक २ रत्ती प्रमाण गोलियां

बनाएँ, इसके सेवन से अजीर्ण, शूल, विशूचिका, हिचकी, गोला, मोह नष्ट होता तथा तत्काल पाचन दीपन होता है।

यो० त०- रसेन्द्र सं०।

अग्नि-मुख-लवणम् agni-mukha-lavanam-सं०पुं०। चित्रक, त्रिफला, जमालगोटा मूल, निसोथ, पुष्करमूल इन्हें समान भाग लें, और सर्वतुल्य सेंधालवण लेकर चूर्ण बना थूहर के दुग्ध में भावना देकर थूहर के कांड में भरकर साधारण कपरौटी कर सुखाएँ पश्चात अग्नि दे सुन्दर पाक करें, पुनः चूर्ण कर उष्ण जल से सेवन करने से अग्नि को दीप्त करता तथा यकृत, तिल्ली, उदर रोग, आनाह, गुल्म, बवासीर, पसली के शूल को दूर करता है।

भैष०र० अग्नि मान्द्याधिकारे। बं०सें०सं०।

अग्नि-मुख-लौहम् agni-mukha-louham-सं० पुं०। निसोथ, चित्रक, निर्गुण्डी, थूहर, मुण्डी, भू-आमला प्रत्येक आठ २ पल लें, एक द्रोण (१६ सेर) जल में पकाएँ जब चतुर्थांश रहे तो इसमें वायविडंग १२ तो०, त्रिकुटा ६ तो०, त्रिफला २० तो०, शिलाजतु ४ तो०, मैनशिल व सोनामाखी से मारा हुआ रुक्म लौह भस्म का चूर्ण ४८ तो०, घृत, शहद, मिश्री प्रत्येक ६६-६६ तो० इन्हें मिलाकर यह लौह प्रस्तुत करें, पुनः उचित प्रमाण से इसे सेवन करने से अर्श, पांडु, शोथ, कुष्ठ, प्लीहा, उदरामय, असमय केशों का श्वेत होना, आमवात, गुदा रोग, इन्हें सहज ही नाश करता है, इसके सिवाय मन्दाग्नि को दूर करते हुए समस्त रोगों को उचित विधान से वर्तने से दूर करता है। इसके सेवन करने वालों को ककार वाले पदार्थ वर्जित हैं। मात्रा-१-४ मा०। भैष०र० अर्शोऽधिकारे। वृ० रस० रा० सु० बं० से० सं०।

अग्निमुखा agni-mukhá-सं० स्त्री० The marking-nut tree (Semecarpus-anacardium, *Linn.*) भल्लातकी भिलावाँ (अ)। भेला-बं०। (२) लाङ्गलिका (वि०)-सं०। कलिहारी-हिं०। ईशलाङ्गलीया-बं०। (Gloriosa Superba, *Linn.*)

अग्निमुखी agni-mukhí-सं० स्त्री० भल्लातकी भिलावाँ भेला-बं०। (Semecarpus anacardium, *Linn.*) मे० खचतुष्क। रत्ना०। च० सू० ४ अ० भेदनीय। (२) लांगलिका। ईशलाङ्गलीया-बं०। मे० खचतुष्क। भा० पू० २ भा० अने० बं०। (३) कझट-सं०। जलचौलाई-हिं०। कलिहारी-हिं० (Gloriosa superba, *Linn.*) काँचड़ा-बं०। रा० नि० व० ४। भा० पू० ह० व०। गुडूची, गुरुच, गिलोय (Tinospora Cordifolia, *Miers.*)

अग्नि-मुखो-रसः agni-mukho-rasah-सं० पुं०। पारा, गन्धक, वच्छनाग तुल्य भाग लें चूर्ण कर अदरख के रस की भावना दें। पुनः पीपल (वृक्ष) इमली, और चिरचिरा इनके क्षार, यवक्षार, सज्जी और सोहागा, जायफल, लवंग, त्रिकुटा, त्रिफला ये सब समान भाग, और शंख भस्म, पांचो नमक, हींग, जीरा प्रत्येक पारे से द्विगुण डाल कर अम्ल योग से खूब घोटकर २ रत्ती प्रमाणकी गोलियां प्रस्तुत करें। गुण—पाचन, दीपन, अजीर्ण, शूल, हैजा, हिचकी, गुल्म और उदर रोग को नष्ट करता है। रसेन्द्रसंहिता में इसे अग्निमुखरस कहा है।

र० यो० सा०।

अग्नियूम agniyúma-हिं० बकार, बकर्ष, बसीटा। प्रेम्ना लैटिफोलिया (Premna Latifolia, *Roxb.*)-ले०। अग्निउ-कुमा०। रम, खार, गिआन- पं०।

निर्गुण्डी वर्ग

(N. O. Verdenaceæ)

उत्पत्तिस्थान—उत्तरी भारतवर्ष कमायूं से भूटान तक और खसिया पर्वत तथा सामान्यतः बंगप्रदेश के मैदान।

प्रयोग—उपर्युक्त पौधे के बक्कल का क्वाथ सूजन पर लगाया जाता है, और पशुओं के उदर शूल में इसका रस प्रयुक्त होता है (ऐटकिन्सन); पञ्जाब देशमें इसका रस औषधितुल्य

प्रयोग में लाया जाता है । स्ट्रयुवर्ट । इं० मे० प्लां० ।

अग्निरचस् agnirachas, **अग्निरजः** agnirajah, **अग्निरजाः** agni-rajáh, **अग्निरज्जुः** agni-rajjuh } सं० पुं० (१) बीरबहूटी, इन्द्रवधू, इन्द्रगोप-कीट-हिं० । आपाडे पोका-बं० । हे० च० ४ । An insect of bright-scarlet colour. (Mutella occidentalis.) । (२) सुवर्ण gold (Aurum)

अग्नि रसः (प्रथमः) र० र० यक्ष्माधिकारे । हीरा भस्म २ भा०, सुवर्ण भस्म ३ भा०, पारद भस्म ६ भा०, इन्हें ग्रहण कर दिन भर गोखरु के रस में भावना दें । शाम को उसका चूर्ण कर लें । मात्रा-१ रत्ती० । अनुपान थूहर की जड़ और जम्भीरी का रस । जिस राजयक्ष्मा के साथ ज्वर भी हो उसमें इसका प्रयोग करना उचित है । इस नाम के चार योग इन ग्रंथों में आए हैं । जैसे-(२) र० का०, र० क० ल०, र० र० स०, नि० र०,र० कां०,कासाधि कारे।

अग्नि-रसः agni-rasah-सं० पुं० मिर्च, मोथा, वच, कूट, समान भाग लें, सर्व तुल्य विष लें, पुनः अदरख के रस से मर्दन कर मुद्ग प्रमाण की गोलियां बनाएँ । यह हर प्रकार के अजीर्ण को नष्ट करता है ।

भैं० र० अजीं० अधि० ।

अग्निरसः agni-rasah-सं० पुं० (१) (Pancreatic juice) क्लोम रस, अग्नाशय रस । असीरुल् इन्क्रिरास-अ० । (२) अग्निमान्द्याधिकारोक्त रस विशेष ।

अग्निरुहा agni-ruhá-सं० स्त्री० मांसरोहिणी । The Indian red wood tree (Soymida Febrifuga, *Juss.*) रा० नि० व० १२ ।

अग्निरोहिणी agni-rohiṇí-सं० स्त्री०, हिं० संज्ञा स्त्री० (Soymida Febrifuga, *Juss.*) (१) मांसरोहिणी-सं० हिं०, बं० । वा० उ० ३१ अ० । (२) Plague उक्त नाम का क्षुद्र रोग विशेष । यह त्रिदोष जन्य होता है । लक्षण-पित्ताधिक वातादि दोषों के कारण बगल में, ज्वर पैदा करने वाली, मांस को विदीर्ण करने वाली, अग्नि के समान तीक्ष्ण जो फुन्सियां हो जाती हैं उन्हें अग्नि-रोहिणी कहते हैं । ये पांच वा सात या पन्द्रह दिन में रोगी का प्राण नाश कर देती हैं । वा० उ० ३२ अ० ।

अग्नि-लोहः agni-louhah-सं० पुं० । निशोथ, चित्रक, निर्गुण्डी, सेहुंड़, मुण्डी, भू-आमला प्रत्येक ८-८ पल, १ द्रोण [१६ सेर] पानी में पकाएँ । पुनः विडङ्ग ३ पल, त्रिकुटा ३ कर्ष, त्रिफला ४ पल, शिलाजीत १ पल, रुक्म लौह चूर्ण १२ पल, दिव्यौषधि १२ पल, शुक्रवृक्ष छाल १२ पल लें । इनका उत्तम चूर्ण, घृत २४ पल, मधु २४ पल, शर्करा २४ पल मिलाकर विधिवत् पकाएँ । जब सिद्ध होकर शीतल होजाए तो उतार कर रख लें । गुण-अर्श मात्र को नष्ट करता है ।

नोट:—दिव्यौषधि-स्वर्णमाक्षिक, मैनशिल । रुक्मलौह-वज्र-पाण्डु-लोह । वैं० श० सिं० ।

अग्निवक्त्रः agni-vaktrah-सं० पुं० (Semecarpus anacardium, *Linn.*) भल्लातक वृक्ष, भिलावां का पेड़-हिं० । भेला गाछ-बं० । लें० मद० व० १ (२) चित्रक (चीता) क्षुप-हिं० । चिते गाछ-बं० (Plumbago zeylanica, *Linn.*)

अग्निवण्डा agni-vaṇdá-सं० स्त्री० अग्नि-ज्वाला (एक गरम दवा है) । See-agni-jválá ।

अग्निवती agni-vati-सं० स्त्री० (Andropogon Schœranthus, *Linn.*) अगिया घास एक प्रसिद्ध औषध है ।

अग्निवधू agni.vadhú-सं० अग्निमन्थः अरनी (Premna Integrifolia, *Linn.*)

अग्निवर्द्धकः, नः agni-vardhakah, -nah सं० त्रि० (Stomachic tonic) अग्नि उद्दीपक मरिच प्रभृति आग्नेय द्रव्यमात्र, अग्निवृद्धि कर । देखो दीपक [न] राज० ।

अग्निवर्द्धन agni-vardhana—अग्नि उद्दीपक।

अग्निवल वृद्धिः agni-vala-vriddhih सं० स्त्री० जठराग्नि वृद्धि। च० द० अर्श चि०।

अग्निवल्लभ agni-vallabha हिं० संज्ञा पुं० (१) शालवृक्ष। साल् का पेड़। (Shorea Robusta, *Gærtn.*) (२) शाल से निकली हुई गोंद। Shorea Robusta, the gum of—)। मद० व० ३। See-sarjah. राल, धूप, सर्ज, योनिशाल विशेष। धूना—बं०। रेजिन (Resin)—इं०। हे० च०। रा० नि० व०। ६, १२

अग्निवल्लभः agni-vallabhah—सं० पुं० दे० अग्नि वल्लभ।

अग्निवल्ली agni-valli—सं० स्त्री० (A creeper, turning or climbing plant) लता विशेष। र० सा० सं० अभिन्यास ज्वर० स्वच्छन्दलायक रस।

अग्निवासः agnivásah—सं० अग्निका स्थान।

अग्निवाहः, हुः agni váhah-huh सं० पुं० धूम। स्मोक (Smoke)—इं०। हे० च० ४ का०। (२) a goat अज, बकरा।

अग्निविकारः agni-vikárah—सं० पुं० पुन, उक्त नाम के रोग का एक भेद। यह चार प्रकार का होता है। शार्ङ्ग० पू० ७ अ०। देखो अग्निः।

अग्निविवर्द्धनः agni-vivarddhanah-सं० त्रि० यमानी, अजवाइन, Carum copticum, *Benth.*)

अग्निवर्द्धक agnivarddhaka—हिं० (१) दीपन (stomachic) (२) यमानी (अजवाइन) प्रभृति (Carum copticum, *Benth.*)

अग्निविसर्पः agnivisarpah-सं० पुं० अग्नि-विसर्प, विसर्पभेद (Pain from a boil)

अग्निवीजम् agni-víjam—सं० क्ली० स्वर्ण, सुवर्ण, gold (Aurum)—त्रिका०।

अग्निवीजः agni-víjah—सं० पुं० अग्निमन्थ, अरनी (Premna Integrifolia, Linn.)

अग्निवीर्य्यम् agni-virryyam-सं० क्ली० स्वर्ण, सुवर्ण। gold (aurum) रा० नि० व० ३।

अग्निवीसर्पः agnivísarpah सं० पुं० (Pain from a boil) द्वंद्वज विसर्पों का एक भेद है। देखो विसर्पः। Erysipelas.

अग्निविसर्प के लक्षण—वात, पित्त, विसर्प में ज्वर वमन, मूर्छा, अतिसार, तृषा, भ्रम, अस्थिभेद, अग्निमांद्य, तमकश्वास और अरुचि ये सब लक्षण होते हैं। इसमें सम्पूर्ण शरीर जलते हुए अंगारों की भांति प्रतीत होता है। शरीर के जिस जिस अवयव में विसर्प फैलता है वहीं ही अंग बुझे हुए अंगार के समान काला, नीला, अथवा लाल हो जाता है। अग्नि से जले हुए स्थान की तरह वह फुन्सियों से व्याप्त हो जाता है और शीघ्रगामी होने के कारण हृदय प्रभृति मर्म स्थानों पर शीघ्र ही आक्रमण करता है। इसमें वायु अत्यन्त प्रबल होकर शरीर में पीड़ा, संज्ञानाश, निद्रानाश, श्वास और हिचकी उत्पन्न करता है। विसर्प रोगी की ऐसी दशा हो जाती है कि वेदना से ग्रस्त होने के कारण भूमि शय्या या आसन पर कहीं इधर उधर लेटने से सुख प्राप्त नहीं होता और देह मन और श्रम जनित वेदना से ऐसा दुःखित हो जाता है कि दुष्प्रबोध अर्थात् चिरस्थायी निद्रा में लीन हो जाता है। इन लक्षणोंसे युक्त विसर्प को अग्नि विसर्प कहते हैं। वा० नि० १३ अ०।

चिकित्सा—अग्नि विसर्प में सौ बार धुला हुआ घी या केवल घृतमंड अथवा मुलहठी का शीतल क्वाथ, कमलका जल, दूध वा ईखका रस इनका परिसेक करें और महातिक्त घृत को पान-लेपन और परिसेक के काम में लाएँ। वा० च० १८ अ०।

अग्निवृद्धिः agni-vriddhih—सं० स्त्री० अग्निदीप्ति, क्षुधावृद्धि (Increase of digestive fire or appetite, Improveddigestion, Good appetite.)

अग्निवृद्धिकर agni-vriddhikara–सं० पुं० अग्निवर्द्धक (Stomachic.)

अग्निवेण्डु पाकु agni-vendupáku-तै० दाद-मारी, चँकवड़, चक्रमर्द (Cassia tora, Linn.)

अग्निवेन्द्र पाकु agni-vendra-páku–हिं० (Ammania Baccifera, Linn.) अग्निगर्भ–सं० । दादमरी हिं० । फा० इं० ३ भा०, इं० मे० मे० ।

अग्निवेश agni vasha–हिं० संज्ञा पु० [सं०] आयुर्वेद के आचार्य एक प्राचीन ऋषि का नाम जो अग्नि के पुत्र कहे जाते हैं ।

अग्निशिख agnishikha–हिं० संज्ञा पुं०
अग्निशिखम् agnishikham सं० क्लो०
Gold (aurum) (१) स्वर्ण, सुवर्ण, सोना । रा० नि० व० १३ । (२) कुसुम्भ पुष्प–सं० । कुसुम वा बर्रे का फूल । कुसुम फूल–बं० । safflower (Carthamus tinctorius; Linn.) (३) कुंकुम, केशर ।

Saffron (Crocus Sativus, Linn.) भा० पू० २ भा० । मद० व० ३ । (४) दीपक । (५) (An arrow) बाण, तीर ।

अग्निशिखा agni-shikhá–सं० स्त्री० हिं० संज्ञा स्त्री० । (१) लांगलिका औषधि–सं० । करि [-लि] हारी–हिं० (Gloriosa superba Linn.) भा० पू० १ भा० गु० व० । कलियारी व करियारी नामक पौधा जिसकी जड़ में विष होता है । (२) अग्नि की ज्वाला, आग की लपट ।

अग्निशिखः agnishikhah–सं० पुं० (१) कुंकुम, केशर । (Crocus sativus, Linn.) (Shrub of saffron.) । रा० नि० व० १२ । (२) लांगलिका वृक्ष सं० । कलिहारी–हिं० । विषलाँगलिका गाछ –बं० । (Gloriosa superba, Linn.) । रत्ना० (३) कुसुम्भ वृक्ष–सं० (Safflower Carthamus Tinctorius, Linn.) श० र० । (४) पूति करञ्ज–सं० । कट करञ्ज–हिं० । नाटा–बं० । (Cæsalpinia Bonducella, Fleming.) (५) सूरणः (न)–सं० । जमीकन्द –हिं० । ओल गाछ–बं० । (Amorphophallus campanulatus, Blume.) प० मु० ।

अग्निशिष agni-shisha–तै० नाट का बच्छनाग, कलिहारी, लांगली । (Gloriosa Superba, Linn.) । इं० मे० मे० ।

अग्निशिषा agni-shishá–सं० स्त्री० (१) (Amaranthus spinosus, Willd.) तण्डुलीय, चौलाई । (२) (Gloriosa superba) कलिहारी, (३) चित्रक (Plumbago zeylanica.)

अग्नि शुद्धि agnishuddhi–हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] (१) अग्नि से पवित्र करने की क्रिया । आग छुआकर किसी वस्तुको शुद्ध करना । (२) अग्नि-परीक्षा ।

अग्निशेखरम् agni-shekharam–सं० क्लो० (Saffron Crocus Sativus, Linn.) कुंकुम, केशर । रा० नि० व० १२ । कुसुम्भ पुष्प, Safflower (Carthamus tinctorius, Linn.) । (३) लांगलीवृक्ष सं० । कलिहारी–हिं० । (Gloriosa Superba, Linn.) (४) विशल्या नामक शाक भेद ।

अग्निष्टुत् agni-shtut-हिं० सं० पुं० [सं०] एक प्रकार का यज्ञ जो एक दिन में पूरा होता है । यह अग्निष्टोम यज्ञ का ही संक्षेप है ।

अग्निष्टोमः agni-shtomah–सं० पुं० (The moon plant) सोमलता, सोमः सु० चि० २६ अ० । (२) स्वर्ग की कामना से किया जाने वाला एक यज्ञ विशेष ।

अग्निष्ठः agni-shthah–सं० पुं० कड़ाह, तंडुल आदि अथवा कोई भी शाक आदि भूजने का लोह पात्र ।

अग्निष्वात्ता agni-shváttá–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] अग्नि-विद्युत आदि विद्याओं का जानने वाला ।

अग्निसखा agnisakhá-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] वायु, हवा ।

अग्निसंस्कारः agni-sanskárah-सं० पुं० (१) अग्निदाह कर्म (Funeral ceremonies)। मृतक के शव को भस्म करने के लिए उस पर आगी रखने की क्रिया ।

(२) आग का व्यवहार । तपाना । जलाना । (३) शुद्धि के लिए अग्नि स्पर्श कराने का विधान ।

अग्निसंस्पर्शा agni-sansparshá-सं० स्त्री० पर्पटी नामक सुगन्ध द्रव्य, पद्मावती, यह उत्तर में प्रसिद्ध है। भा०पू०पू० १ भा०क० व०। पपड़ी (-री) पनरी (-ड़ी)-हिं०।

अग्निसंदीपनः agnisandípanah-सं० त्रि० अग्निवर्द्धक, क्षुधावर्द्धक (Increasing appetite).

अग्निसंदीपनोरसः agni-sandípano-rasah सं० पुं०। पीपल, पीपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठ, मिर्च, पञ्चलवण, जवाखार, सज्जीखार, सोहागा, सफेद जीरा, स्याह जीरा, अजवाइन, वच, सोंफ, हींग, चित्रकको छाल, जायफल, कूट, जावित्री, दारचीनी, तेजपात, छोटी इलायची, अम्लीक्षार, अपामार्ग क्षार, विष, पारा, गंधक, लौह भस्म, अभ्रक भस्म, बंग भस्म, लौह, हड़ ये प्रत्येक एक २ भाग, अम्लवेत २ भा०, शंख भस्म ४ भा० सबका चूर्ण कर पञ्चकोल, चित्रक, अपामार्ग के क्वाथ की भावना दें, इसी तरह खट्टी नोनिया के रस की ३ तीन, तथा नीबू के रस की २१ इक्कीस भावना देकर बेर तुल्य गोलियाँ बनाएँ, सायंकाल व प्रातःकाल इसके सेवन से तथा दोषानुसार अनुपान से यह रस मंदाग्नि को प्रज्वलित करता तथा अजीर्ण, अम्लपित्त, शूल और गुल्म को नष्ट करता है।

(२) शुद्ध पारा और गन्धक बराबर लेकर कज्जली कर के गाढ़े वस्त्र में उसको बांध दें। पुनः १ घड़े में नीचे बालू भरकर उस पोटली को इसमें रख दें और ऊपर से घड़े को बालू से भर दें। उसके ऊपर से दो दिन तक तृणाग्नि जलाएँ अथवा उसको गजपुट में १ दिन तक पकाएँ। सिद्ध होने पर इसकी मात्रा २ रत्ती देने से जठराग्नि अत्यन्त प्रदीप्त होती है।

वृ० रस० रा० सु० अजीर्ण० चि०, भैष०।

अग्नि सन्निभा वटी agnisannibhávatí सं० स्त्री०, टी०, र० रा०शि०, र० (मा०) ना० वि०, अजीर्णाधिकारे ।

४० तोले कुचले के बीज और तुषाम्ल (हरे जौ दल कर उनकी जो कांजी बनाई जाती है उसको तुषाम्बु या तुषाम्ल कहते हैं) में उतनी ही हरड़ें, उबाले हुए विडंग, हींग, त्रिकुटा, त्रिदीप्य (अजवाइन, अजमोद, खुरासानी अजवाइन) पारा, गंधक, ये सब ४ तो० मिलाकर घोटकर बारीक कज्जली के माफिक चूर्ण बनाएँ और सब चीजें कुचिले और हड़ वाले कल्क में मिला के जंगली बेरकी गुठली के सदृश गोलियां बनाएँ । गुण—कफ स्राव, मन्दाग्नि, तन्द्रा, स्वरभेद, अफारा, शूल, उदर रोग, खांसी, हिचकी, वमन, और कृमिरोग को नष्ट करती है। इसे अगस्त्य, हारित और पाराशरजी ने कहा है।

अग्निसम्भवः agni-sambhávah-सं० पुं० (Wild Saffron) जंगली कुसुम, अरंड कुसुम वृक्ष । वन कुसुम-बं० । रा० नि० व० ४ । (२) अग्निजार वृक्ष (Agnijára) रा०नि० व० ६ ।

अग्निसहायः agnisahayah } सं० पुं०
अग्निसखः agni sakhah }

(१) (Wild pigeon) जंगली कबूतर क्योंकि उसके मांस से जठराग्नि तीव्र होती है। वन्यपारावतः-सं० । घुगु-बं० । होगलापखी म० । रा० नि० व० १६ । (२) वायु, हवा (air, wind) । (३) smoke धूम ।

अग्निसात् agnisát-हिं० वि० [सं०] आग में जलाया हुआ, भस्म किया हुआ ।

अग्निसादः agni-sádah-सं० पुं० (Indigestion) अग्निमांद्य, अपच, अजीर्णता, कफ द्वारा जठराग्नि का निस्तेज होना, मन्दाग्नि, सा० कौ० ज्व० चि० ।

अग्निसाध्य agnisádhyah-सं० त्रि० अग्नि दाहसाध्य, अग्नि से जलने से जो ठीक हो। च० द० अर्श० चि० ।

अग्निसारम् agnisáram-सं० क्लीं० रसाञ्जन, रसवत (A sort of collyrium) रा० नि० व० १३ ।

अग्निसारा agnisárá-सं० स्त्री० (१) (The fruitless branches) फल शून्य शाखा, फल रहित डालियाँ । रा० नि० व० २ । (२) मञ्जरी, बौर, मुकुल (A blossom)

अग्नि सुन्दर रसः agni-sundara-rasah सं० पुं० अजीर्णाधिकार में वर्णित रस, यथा सुहागा १ भाग, मरिच २ भाग, इनके चूर्ण में अदरक के रस की भावना दें। अनु०—लवंग । प्रयोगा० ।

अग्नि-सूनुरसेन्द्रः agni-súnurasendrah-सं० पुं० । पीली कौड़ी भस्म १ मा०, शंख भस्म २ मा०, शुद्ध पारद १ मा०, शुद्ध गंधक १ मा०, काली मिर्च ३ मा० सब को एकत्र कर नीबू के रस से खरल करें । मात्रा—१ रत्ती इसके सेवन से मन्दाग्नि शीघ्र दूर होती है ।

नोट—किसी के मत में कौड़ी और शङ्ख की भस्में २-२ मा० मिलानी चाहिएँ ।

अनुपान—घृत, मिश्री के साथ क्षीणता में, पीपर घृत के साथ संग्रहणी में, तक्र के साथ खाने से संग्रहणी, ज्वर, अरुचि, शूल, गुल्म, पांडु, उदर रोग, बवासीर, शोष, प्रमेह दूर होते हैं ।

वृ० रस० रा० सु० संग्रहण्याधिकारे ।

अग्निसेवन agni-sevana-हिं० संज्ञा पुं० } **अग्निसेवनम्** agni-sevanam सं० क्लीं० } अग्निसेवा, अग्निप्रयोग, आग तापना । इसके गुण—शीत, वात, स्तम्भ, कफ कम्पन, प्रभृति को नाश करने वाला और रक्त, पित्तकर्त्ता तथा आम और अभिष्यन्द का पाचक है । मद० १३व० ।

अग्निस्थापनीय agni-sthápaniya-अग्नि-वर्द्धक, दीपन (stomachic.)

अग्निहानिः agni-hánih-सं० पुं० (Indigestion, loss of appetite)अग्नि मान्द्य, अजीर्णता, अपच, मन्दाग्नि । वा० नि० १३ अ० ।

अग्निहोत्रः agni-hotrah-सं० पुं० (१) (Ghee, clarified butter)घृत, घी । (२) (Fire] अग्नि । मे० । (३) एक यज्ञ, वेदोक्त मंत्रों से अग्नि में आहुति देने की क्रिया । यह दो प्रकार की कही गई है—(१) नित्य और (१) नैमित्तिक वा काम्य ।

अग्नीका agniká-सं० स्त्री० कर्पास, कपास (Gossypium Indicum)

अग्न्या agnyá-सं० स्त्री० (१) तीतर चिड़िया, तित्तर पक्षी a partridge (Perdix Francolinus) (२) (a cow) गाय, गो हला० ।

अग्न्याशयः agnyáshayah-हिं० पुं०

अग्नाशयः agná-shayah-सं० पुं० अग्नाशय, जठराग्निका स्थान, पैङ्क्रियस(Pancreas)-इं० । क्लोमग्रंथि-हिं० । बन्कर्यास, बन्क्रास, इन्क्रि-रास बानूकरास, उनुकुत्तिहाल, लबलबह्य अ० । नूर मिकवह्-फा० । यह एक ग्रंथि है जो पतली, लम्बी, चिपटी और श्वान जिह्वोपम होती है । यह नाभि से ३--४ इंच ऊपर आमाशय के पीछे कटि के पहिले दूसरे कशेरुका के सामने आड़ी पड़ी रहती है । इसका बायाँ तंग सिरा प्लीहा से मिला हुआ रहता है । इसकी लम्बाई ६ से ८ इंच, चौड़ाई १॥ इंच तथा मुटाई १ वा १। इंच के लगभग और भार १ छटांक से ३ छटांक तक होता है । इस ग्रंथि में एक प्रणाली होती है जो इसके वामपार्श्व से आरम्भ होकर दक्षिण सिरे की ओर आकर पुनः पित्त प्रणाली से मिल कर द्वादशांगुलान्त्र में आ खुलती है । इसके द्वारा बने हुए पाचक रस को अग्न्याशय रस वा क्लोम रस (Pancreatic juice) कहते हैं । इस रस का प्रधान कार्य यह है कि यह आहारस्थ वसा (fats) अंडे की सुफेदी के सदृश पदार्थ (albumen) और सरेशीय पदार्थ को पाचनयोग्य बनाता है ।

अग्बर aghbara-अ० गरद । गुब्बार आलूद, गर्दआलूद, गुब्बारी, खाकीरंग, अरियाबा-उ० । धूलियुक्त, धूसरवर्ण) मटीला-हिं० । धूली

(Dirty)-इं० (२) चक्षु या सर्प के लिए एक यौगिक औषध है।

अग्मस aghmasa-अ० । चेपड़ो उ० जिसके नेत्र में ग़म्स अर्थात् चेपड़ (कीचड़) आती हो।

अग्यारी agyári-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० अग्नि प्रा० अग्नि + सं० कार्य्य] अग्नि में धूप गुड़ आदि सुगन्ध द्रव्य देने की क्रिया, धूप देना (१) अग्निकुण्ड।

अग्र agra-हिं० सं० पुं० } (१) पल परिमाण
अग्रम् agram-सं० क्लीं० } यथा—'परिमाणेपलस्य च'। एक पल ८ तो० के बराबर होता है। श्री० रट्टिकं। (२) वृक्ष आदि का अग्र भाग। (३) हिं० क्रि० वि० पहिले, आगे, आदि। आगा, सिरा, नोक, अगला हिस्सा (The fore part of a thing, adjanterior, prior, first.) मुक़द्दम, कुद्दामी-अ०। हिं० वि० अगला। प्रथम। श्रेष्ट। उत्तम। प्रधान। अथ० सू० ७। ३। का० ८

अग्र-काण्ड agra kándah-सं० पुं० (The fore part of the stem) काण्डाग्र, तने का अग्र भाग।

अग्र कास्थि agra kásthi-सं० स्त्री० (Frontal bone) ललाटास्थि, ललाट की हड्डी।

अग्र-कुम्भः agra-kumbhah-सं० पुं० (Frontal ominence)

अग्र-कोटरम् agra-kotaram-सं० क्लीं० (Frontal air sinus.)

अग्र-कोटिः agra-kotih-सं० पुं० (Ophryon)।

अग्र-कोणः agra-konah-सं० पुं० (Anterior forenix.) योनि का अगला कोण।

अग्र-खण्ड agra-khanda—हिं० पुं० उरोस्थि के तीनों टुकड़ों में से तीसरा नीचे का पतला टुकड़ा जो कौड़ी देश में दबाने से स्पर्श किया जा सकता है। (Xiphoid process.)-इं०।

अग्र-गामी agra-gámí-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] अगुआ, आगे चलने वाला, अग्रसर, नेता (Preceding, going before)

अग्र-गायी agra-gáyí-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] अगुआ। अग्रसर।

अग्र-गोर्दम् agra-gordam-सं० क्लीं० (Fore-brain) अग्र मस्तिष्क। भेजे का अगला हिस्सा।

अग्र-चर्वण agra-charvana-हिं० पुं० }
अग्र-चर्वणकः agra-charvanakah- }
-सं० पुं०
(Premolar teeth) सामने के दांत जिससे चबाया जाता है।

अग्रजः agrajah-सं० पुं० (१) काक विशेष वायस, कौआ (a crow) (२) भासपक्षी, कौवे के समान एक पक्षी है। (३) जो भाई पहले जन्मा हो। बड़ा भाई। श्रेष्ट भ्राता। अनुज का उलटा।

अग्र-जन्मा agra-janmá-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) बड़ा भाई (२) ब्रह्मा।

अग्र-जङ्घा agra-janghá-सं० स्त्री० जंघाग्र-भाग, टाँग का अगला हिस्सा। The fore part of the leg)

अग्र-जिह्वा agra-jihvá-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] The tip of the tongue जिह्वा का अगला भाग।

अग्रणी agrani-हिं० वि० [सं०] अगुआ श्रेष्ठ। संज्ञा पुं० प्रधान पुरुष। मुखिया। अगुआ, (The head)

अग्र-धान्यम् agra-dhányam-सं० क्लीं० धान्य विशेष, ज्वार, बाजरा।

अग्र-नाड़ी-मस्तक agra-nádí-mastaka-हिं० पुं० ललाट की नाड़ी।

अग्र-पर्णी agra-parní-सं० स्त्री० (१) शूक शिम्बी; कौंच, किवाँच-हिं०। आलाकुशी-बं०। (Mucuna pruriens.) a plant cowhage-य० मु०। देखो-आत्मगुप्ता, अजलोमा (र०)

अग्र-पर्विका agra-parviká-सं० स्त्री०। (Anterior phalanx) पोर्वाग्र, अगला पोर्वा।

अग्र-पाणिः agra-pánih–सं० पुं० The fore part of the hand. हस्ताग्र, हाथ का अग्र भाग।

अग्र-पादः agra-pádah–सं० पुं० (The fore part of the foot, toes.) अंगुलियाँ।

अग्र-पुष्पः agra-pushpah–सं० पुं० Calamus rotang, *Linn.* (Common cane) बेंत-हिं०। वेतस वृक्ष-सं०। बेत गाछ बं०। प० म०।

अग्र-बाहुः agra-báhuh–सं० पुं० (Fore arm.) कोहनीं के नीचे अथवा कोहनीं से कलाई तकका भाग, अग्रबाहु या प्रकोष्ठ कहलाता है। अग्रबाहु कोहनीं के स्थान पर बाहु के ऊपर मुड़ जाती है। साइद, मिअ्‌सम्, कलाई-अ०।

अग्र-बाहुमूलगा-पेशी agrabáhumúlagá-peshí–हिं० संज्ञा स्त्री० (Pronator rædii teres.) कोहनी से नीचे की पेशी।

अग्र-बीज agra-bíja–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) वह वृक्ष जिसको डाल काट कर लगाने से लग जाए। पेड़ जिसकी कलम लगे।
(२) कलम।

अग्र-भाग agra-bhága–हिं० संज्ञा पुं० अगला हिस्सा। पहिला हिस्सा। आगे का भाग (The preceding part.) (२) सिरा। नोक। छोर। (Tip, point.)

अग्र-भूमि agra-bhúmi-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] घर की छत। पाटन।

अग्र-मस्तिष्क agra-mastishka–सं० पुं० (Fore-brain) भेजे का अगला भाग।

अग्र-मांसम् agra-mánsam–सं० क्ली० (Flesh in the heart) हृदय के भीतर होने वाला मांस वृद्धि रूप रोग विशेष। सु० शा० हृदय, बुक्का। (The heart.)

अग्रया agrayá–सं० स्त्री० (The three myrobalans.) त्रिफला।

अग्रयून agrayúna–फ़ा० ख़ारिश, खुजली, कण्डु, खाज–हिं०। प्रुराइगो (Prurigo) प्रुराइटीज (Pruritis.) देखो–कण्डुः।

अग्र-लम्बिका agra-lambiká–सं० स्त्री० (Frontal lobe.) ललाट–खण्ड।

अग्र-लोड्यः agra-lodyah–सं० पुं० (Marsilia dentata.) चेंचुना, चिञ्चोटक–क्षुप –हिं०। चेंचको, चिञ्चोड़–मुल–बं०। गुण–यह पाक में गुरु, शीतल तथा अजीर्ण कारक है। राज०।

अग्र-लोहिता agra-lohitá–सं० स्त्री० चिल्ली-शाक, चेलारी हिं०। रा० नि० व० ७।

अग्र-वक्त्र agra-vaktra–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] सुश्रुत में वर्णित चीर फाड़ का एक यंत्र।

अग्र-वर्त्ती agra-vartti–हिं० वि० [सं०] आगे रहने वाला। अगुआ।

अग्र-बीजः agra-víjah–सं० पुं० A viviparous plant as the gemphrœna globosa, etc. बीजाग्र वृक्ष मात्र यथा कुण्टादि। हे० च०। देखो अग्रबीज।

अग्रव्रीहिः agra-vríhih–सं० स्त्री० प्रसाधिका, नीवार। र० मा०।

अग्रशृंग agra-shringa–हिं० पुं० (Anterior horn.) योनि का अगला शृङ्ग।

अग्रशोची agrashochí–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] आगे से विचार करने वाला। दूरदर्शी। दूरंदेश।

अग्रसन्ध्या agra-sandhyá–हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रभात। प्रातः काल।

अग्रसर agrasara हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) आगे जाने वाला व्यक्ति, अग्रगामी पुरुष। अगुआ। (२) आरम्भ करने वाला। पहिले पहिल करने वाला व्यक्ति। (३) मुखिया प्रधान व्यक्ति। वि० (१) जो आगे जाए। अगुआ (२) जो प्रारम्भ करे। (३) प्रधान, मुख्य।

अग्रह agraha–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] गार्हस्थ को न धारण करने वाला पुरुष। वानप्रस्थ।

अग्रहस्तः agra-hastah–सं० पुं० (The fore part of the hand.) हाथ का अगला भाग।

अग्रहण agrahaṇa-हिं० पुं०
अग्रहायणं agraháyaṇam-सं० पुं०
अग्रहायणः agraháyaṇah-सं० पुं०
अग्रहायनः agraháyanah-सं० पुं० वर्ष का पहिला महिना। मार्गशीर्ष मास अर्थात् अगहन का महिना। प्राचीन वैदिक क्रमानुसार वर्षका आरम्भ अगहनसे माना जाता था यह प्रथा अब तक गुजरात आदि देशों में है। पर उत्तरी भारत में वर्ष का आरम्भ चैत्र मास से लेने के कारण यह महीना नवाँ पड़ता है।

अग्रांश agráṅsha-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अग्रांश] आगे का भाग।

अग्राशन agráṣhana-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] भोजन का वह अंश जो देवता के लिए पहिले निकाल दिया जाता है। यह अग्राशन पशुओं और सन्यासियों को दिया जाता है।

अग्रास aghrása-अ० .मुह्रुजुल्अम्.आ़. । अंत्रां-तरीय श्लेष्मा-हिं०। (Mucus)-इं०।

अग्राह्य agráhya-हिं० वि० [सं०] ग्रहण करनेके अयोग्य, न धारण करने योग्य। अप्रिय। अग्रहणीय। तुच्छ, निस्सार। (Unagreeable.) (२) न लेने लायक़ (३) त्याज्य। छोड़ने लायक़।

अग्रिम agrima-हिं० वि० [सं०] (१) आगे आने वाला। आगामी। (२) प्रधान। श्रेष्ठ। उत्तम। संज्ञा पुं० बड़ा भाई।

अग्रिमा agrimá-सं० स्त्री० लवली वृक्ष, हर फरी-हिं०। लोणागाछ-बं०। श० च०।

अग्रिमोनियम् (-या)युपेटोरियम् agrimonium Eupatorium, *Linn.*-ले० शज्र-तुल बराग़ीस, ग़ाफ़िस-अ०। (Agrimony) फा० इं० भा०।

अग्रिमोनी agrimony-इं० ग़ाफ़िस.-अ०। (See-Gháfis)।

अग्रुः agruh-सं० स्त्री०
अग्रूः agrúh-सं० स्त्री० } अंगुली, अंगुश्त -फ़ा०। फिङ्गर (Finger)-इं०। आंगुल -बं०। (Bone of finger, ortoa)

अग्रेटम् एकेटिकम् agratum-aquaticum -ले० बड़ी किश्ती इं० है० गा०।

अग्रेटम् वाटर agratum-water-इं० बड़ी किश्ती। इं० हैं० गा०।

अग्रेदिधिषु agredidhishu-हि० संज्ञा पुं० [सं०] ऐसी स्त्री से विवाह करने वाला पुरुष जो पहिले किसी और को व्याही रही हो।

संज्ञा स्त्री० वह कन्या जिसका विवाह उसकी बड़ी बहिन के पहिले हो जाय।

अग्रेष्टो agresto-रू० अपक्व द्राक्षारस, कच्चे दाख का स्वरस (Juice of unripe grapes) फा० इं० १ भा०। देखो-अंगूर।

अग्रोपाइरम् agropyrum-ले० श्वेतदुर्वा ग्रन्थि, सफेद दूब। Couch grass, (Triticum)

अग्रोपाइरम् रिपेंस agropyrum repens, *Beauv.*-ले० सफेद दूब। श्वेत दूर्वा। (Couch grass.)

अग्रोस्टिस् एल्बा agrostis alba, Linn. -ले० सफेद दूब। श्वेत दूर्वा (Cynodon alba)

अग्रोस्टिस् डाइएण्ड्रा agrostis diandra, *Roxb* -ले० बेनाजोनी-बं० Diandrous bent grass -इं० हैं० गा०।

अग्रोस्टिस् लिनीएरिस् agrostis linearis, *Roxb.* ले० जनेवा, दूर्वाभेद। (Thread like bent grass.) इं० हैं० गा०।

अग्रोस्टिस् साइनास्युरि ऑइडीस् agrostis. Cynasureoides-ले० दूब, हरी दूब।

अग्र्य agrya-हिं० वि० [सं०] (Best, foremost.) प्रधान। श्रेष्ठ। संज्ञा पुं० बड़ा भाई।

अग्लफ़ aghlafa-अ० बेख़तना, ख़तना न किया हुआ, जिसका ख़तना न हुआ हो। अनसर्कम-साइज़्ड (Uncircumcised)-इं०।

अग्लुक़ूमा aghlukúmá-अ० नुज़ूलुल्माउल् अख़्ज़र, ख़ज़्रतुलऐन सब्ज़ मोतिया, नेत्र में हरित जल उतर आना, हरित मोतिया। यह सब से बुरे प्रकार का मोतिया विन्द है जिसमें नेत्र पिंड कठिन हो जाता है और दृष्टि शक्ति नष्ट हो जाती है। यदि आरम्भ में इसकी चिकित्सा न

की जाय तो यह असाध्य होता है और क़द्ह (Couching) के अयोग्य होता है। ग्लॉकूमा (Glaucoma)-इं०। अग्लकूमा इसी का अरबीकृत है।

अग्लेयाएडूयूलिस aglaia edulis, A. gry. -ले०। लतेमहवा-नेपा०। सिनकदंग-लेप०। गुमी गारो की पहाड़ी तथा सिलहट में बोलते हैं इसका फल खाने के काममें आता है। मे०मो०।

अग्लेयाकुमायं aglaia kumayun-ले० गिरथन, गिद्‌ड़ाक, कानक-पं०।

अग्लेयापॉलिस्टेकिया aglaia polystachya -ले०।

अग्लेया पालिस्टेकीन aglaia polystachine-इं० बन्दूरपाला-बं० इं० हैं० गा०।

अग्लेया रॉग्ज़ बर्ग्याना aglaia Roxburghiana, *muq. Dr.w ill.*-ले० प्रियंगु।

अग़शर aghshara-अ० अग़बर।

अग़्शियह् aghshiyah-अ० (ब० व०) ग़िशाअ् (ए० व०) कलाएँ, झिल्लियाँ, परदे -हिं०। मेम्ब्रेन्स (Membranes)-इं०। देखो ग़िशाअ् (कला)।

अग़्शियह् जनीन aghshiyah-janína-अ० भ्रूणावरण (Fœtal membranes)

अग़्शियह् .ज़ुलालियह aghshiyah-zuláliyah-अ० अग़्शियह् बल्ग़मियह् (Mucous membranes)

अग़्शियह् नुखाईयह् aghshiyah nukhaāiyah-अ० सौषुम्नावरण (Spinal membranes)

अग़्शियह् बल्ग़मिय्यह् aghshiyah-balghamiyyah-अ० अग़्शियह् .ज़ुलालियह्, बल्ग़मी झिल्लियाँ, लुआबी झिल्लियाँ-उ०। श्लेष्मधर कला, स्नैहिक कला, एक पतली चमकदार झिल्ली जिसकी सेलें एक चिकनाईदार तरल (स्नेह) बनाती हैं जिससे संधियाँ चिकनी और मुलायम रहती हैं। इससे उनकी गतिमें सरलता होती है। साइनोवियल मेम्ब्रेन्स (Synovial membranes-इं०।

अग़्शियह् माइयह् aghshiyah-máiyah --अ० आबी झिल्लियाँ-उ०। जलीयावरण। देखो-'ग़िशाअ् माई'। सीरस मेम्ब्रेन्स (Serous membranes)-इं०।

अग़्शियह् मुख़ातियह् aghshiyah-mukhátiyah-अ० बल्ग़मी झिल्लियाँ, लुआबदार झिल्लियाँ-उ०। श्लैष्मिक कलाएँ हिं०। म्युकस मेम्ब्रेन्स (Mucous membranes)-इं० देखो—ग़िशाअ् मुख़ाती।

अग़्शियतुद्दिमाग़ aghshiya tuddimágha -अ० सहायाया-अ०। परदहाय दिमाग़-फ़ा० दिमाग़ का झिल्लियां, दिमाग़ के परदे-उ०। मस्तिष्कीय कलाएँ,मस्तिष्कावरण-हिं०। मेनिन्जीज़ (Meninges)-इं०।

नोट—(१) यह दो झिल्लियाँ हैं जो मस्तिष्क पर लिपटी हुई हैं। इनमें प्रथम अंतरावरण, जो एक पतली झिल्ली है मस्तिष्क के चारों ओर लिपटी है, को उम्मरक़ीक़ (Piameter) कहते हैं, और दूसरी बाह्यावरण, जो स्थूल होती और अस्थियों से चिपकी रहती है, उम्मग़लीज़ (Durameter) कहलाती है।

(२) यह उपर्युक्त वर्णन यूनानी हकीमों का है, परन्तु अर्वाचीन छेदनशास्त्र विदों के अन्वेषण के अनुसार उपर्युक्त दो झिल्लियों के अतिरिक्त एक झिल्ली और मालूम हुई है जो उक्त दोनोंके मध्य में स्थित है जिसे हिंदी में मध्यावरण और अरबी में अन्कबूती तथा अंगरेजी में अरकनॉइड (Archanoid) कहते हैं। विशेष विवरण यथा स्थान देखिए।

अग़्शियतुन्नुखाअ् aghshiyatunnukháā-अ० अग़्शियह् नुखाइयह्। परदहाय नुख़ाअ्, हराम मग़्ज़ के ग़िलाफ़-उ०। सौषुम्नावरण -हिं०। मस्तिष्क के सदृश सुषुम्ना पर भी तीन झिल्लियाँ हैं। इनके नाम वही हैं जो मस्तिष्क की झिल्लियों के हैं (Spinal membranes)।

अग़्शियतुल् जनीन aghshiyatuljanína --अ० अग़्शियह् जनीन, जनीनके परदे, जनीनपर

की तीन झिल्लियाँ-उ० । गर्भ कला, भ्रूणावरण -हिं० । फोटल मेम्ब्रेन्स (Fœtal membranes.) डेसिडस (Decidus.)-इं० ।
ये तीन कलाएँ हैं जो जरायुस्थ भ्रूण के चारों ओर लिपटी रहती हैं। इन में से प्रथम को हिंदी में भ्रूण वाह्यावरण, अरबी में अनफ़स और कोरिओं (Chorion) और द्वितीय को क्रमशः भ्रूणान्तरावरण, मशीमह् तथा एमनिओन (Amnion.) और तृतीय को क्रमशः भ्रूण मध्यावरण, लफ़ाइफ़ी और एलनटाइस (Allantois.) कहते हैं ।

अग्सान aghsána-अ० (ब० व०) गुस्न (ए० व०) शाखाएँ, टहनियाँ । ब्रान्चेज (Branches-)-इं०

अघ agha-संज्ञा पुं० [सं०] (१) दुःख । (२) व्यसन ।

अघनम् aghanam-सं० क्लीं० दधि, दही-हिं० दई-बं० । (कर्ड (Curd)-इं० । हला० ।

अघम् agham-सं० क्लीं० (Distress) कष्ट । अथ० सू० ६, २६, का० ८ ।

अघडोडे aghaḍoḍe-ने० अडूसा, अरूस हिं० (Adhatoda vasica, *Nees.*)

अघर्म aghrma-हिं० वि० (not hot,cold) शीतल ।

अघविषः aghavishah-सं० पुं० सर्प, साँप (A serpent, A snake) ।

अघाटः aghátah-सं० पु० अपामार्ग (Achyranthes aspera *Linn.*) रा० ।

अघाडा,-ड़ा aghádá,-rá-हिं० अपामार्ग, कांचवाली (Achyranthes aspera, *Linn.*)

अघेरन agherana-हिं० संज्ञा पुं० [देश] जौ का मोटा आटा ।

अघोड़ी-ड़ो aghori,ro-गु० मार्ग ।

अघोर aghora-सं० पुं० रस शास्त्र के पूर्व आचार्य 'शिव' ।

अघोरनृसिंह (हो) रसः aghoranrisimha, ho, rasah-सं० पुं० सान्निपातिक ज्वर में प्रयुक्त होने वाला रस । देखो—घोरनृसिंहरसः ।

ताम्र भस्म १ भा० लौह भस्म २ भा० वङ्ग भस्म ३ भा० अभ्रक भस्म ४ भा० तथा स्वर्णमाक्षिक भस्म १ भा०, पारद १ भा० गन्धक १ भा० शु० मैनशिल १ भा०, शु० विष २ भा० त्रिकुटा २ भा० अथवा समस्त वस्तु समान भाग ले और विष सब से द्विगुण ले इन्हें चूर्ण कर मछली, भैंसा, और मोर के पित्त तथा चित्रक के रस में पृथक् २ एक २ पहर घोटे, पुनः सरसों बराबर गोलियां बनाए, धूप में सुखा कर रक्खे, इसको ठण्डे जल के साथ खाने से तेरह प्रकार के सन्निपात, बिसूचिका, अतिसार त्रिदोष जन्य खांसी, त्रिदोष ज्वर, इत्यादि दूर होते हैं । इस पर दही और शीतल जल का पथ्य देना योग्य है ।

अघोर-मंत्रः aghora-mantrah-सं० पुं० ॐ अघोरेभ्यश्च घोरेभ्यो घोर घोर तरेभ्यश्च । सर्वतः सर्वसर्वेभ्यो नमोऽस्तु रुद्र रूपेभ्यः ॥ 'इस मंत्र-से रस क्रिया की सिद्धि होती है । भै० र०

अघोरास्त्रो रसः aghorastrorasah-सं० पुं० शुद्ध पारा, शु० गंधक, शु० वत्सनाग, शु० हरताल, शु० संखिया, सोहागा, तांबा (भस्म) और शु० नीलाथोथा इन्हें समान भाग लें खरल में बारीक घोट रक्खें । मात्रा—१ रत्ती । गुण-यह सम्पूर्ण सन्निपातों को दूर करता है ।

अघोरेश गुटिका aghoreshagutiká-सं० स्त्री० मुण्ड लोह (बीड़ लोह) की कड़ाही में ऊपर और नीचे धान की भूसी रख कर बीच में पारा रक्खें । फिर जामुन के रस से उस कड़ाही को पूर्ण कर १ रात तक रहने दें । प्रातःकाल जामुन रस अलग करके दिन में कड़ाही को सुखाकर फिर सायंकाल पूर्वोक्त विधि से पारे को रख दें । फिर इसी तरह ३ रात तक उक्त नियम से पारे में भावना दें । फिर समान भाग वङ्ग मिलाकर कजली बनाएँ । फिर इसका १ गोला बनाकर धतूर के फल के भीतर रख पुटपाक करें, इसी तरह ७ पुटपाक करें । फिर उस गोले पर धतूर के गाढ़े रसका लेप चढ़ा कर भङ्ग के लुगदी में बन्द करके भङ्ग के रसमें दोला यंत्र में पकाएँ ।

इसी तरह अफीम का लेप चढ़ा कर पोस्ता के पानी में दोला यंत्र में पकाएँ, फिर तीसरी बार मद्य में पकाएँ तो यह गुटिका सिद्ध होती है। इसे केले के फल, गुड़ अथवा किसी मीठी वस्तु के भीतर रख कर मुंह में रक्खें, जब तक यह मुंह के अन्दर रहेगी वीर्य स्खलित न होगा। इसके प्रभाव से १०० स्त्रियों से भोग किया जा सकता है। र० यो० सा०।

अघोष aghosha-हिं० वि० [सं०] (१) शब्द रहित। नीरव। (२) अल्पध्वनियुक्त।

अघ्ना aghná सं० स्त्री० गाय,गऊ गो, गरु-बं०।

अघ्न्या aghnyá-सं० स्त्री० गवि, गाय। (Cow)-इं०। गाभी-बं०।

अघ्रान aghrána-हिं० संज्ञा पुं०[सं० आघ्राण] आघ्राण करना। गंध ग्रहण। महंक लेने की क्रिया। सूंघने का कार्य।

अघ्रानना aghránaná हिं० क्रि० स० [सं० आघ्राणं] आघ्राण करना। महंक लेना। सूंघना।

अघ्रेय aghreya-हिं० वि० [सं०] न सूंघने योग्य।

अङ्क anka-हिं० पुं० ⎫ (१) (Limb of
अङ्कः ankah-सं० पुं० ⎭ the body) शरीरावयव, अंग। कोल-बं०। रा० नि० व० १८। वा० चि० ७ अ०। (२) चिह्न, निशान, छाप आँक, रेखा (Mark, Spot, a line.)

(३) Sin पाप। Pain दुःख। मे० कद्विकम्।

(४) number आँकड़ा, अदद, संकेत, संख्या का चिह्न, जैसे-१, २, ३, ४, ५ आदि।

(५) शरीर, देह, अंग।

अङ्कडास Ankadása-ते० (Leea styphylea) (L. Sambucina, *willd.* Staphylea Indica) कुक्कुर जिह्वा, कुकुर जिह्वा। इं० मे० मे०।

अङ्कड़ी ankari-हिं० स्त्री० संज्ञा [सं० अंकुर=अँखुआ, टेढ़ी नोक] (१) कँटिया, हुक। (२) बेल, लता।

अङ्कतिः ankatih-सं० पुं०, (१) (wind) वायु। त्रि० (२) Fire अग्नि। त्रि०।

अङ्कनः ankanah-सं० पुं० अंकोल, अंकोटवृक्ष, ढेरा। आङ्कोड़ गाछ-बं०। (Alangium decapetalum, *Lam.*) वै० श०।

अङ्कनम् ankanam-सं० क्ली० (Mark) चिह्न।

अङ्कना ankaná-हिं० लिखना, छापना, मोलभाव करना, चिह्न करना।

अङ्कपादम् ankapádam-सं० क्ली०, (१) पादचिह्न, पैर का निशान (Footprint.)। (२) छागैणावयव विशेष। वा० सू० १६ अ०।

अङ्कपाली ankapálí ⎫ सं० स्त्री० (१)
अङ्कपालिः ankapálih ⎭ (Midwife, a nurse) धाय, धात्, दाई। (२) वेदिकाख्य गन्ध द्रव्य विशेष, यथा-'धात्री वेदिकयोरपि'। मेलंचतुष्कं। (३) Embracing, an embrace आलिङ्गन। मे०।

अङ्कपालिका anka-pāliká ⎫ हिं० स्त्री०
अङ्कपाली anka pálí ⎭ संज्ञा [सं०] Midwife धात्। देखो-अंकपाली।

अङ्कब āanakaba-अ० (A kind of fish) मछली भेद। एक प्रकारकी मछली है।

अङ्कबूत् āankabúta-अ० (A spider) मकड़ी, ऊर्णनाभि। शेर मगस-फ़ा०।

अङ्कबूतिय्यह् āanka bútiyyah-अ० मकड़ी के जाले का सा परदा। नेत्र का चतुर्थ पटल। देखो-तबक़ह् अङ्कबूतिय्यह।

अङ्कमाल ankamála-हिं० पुं० संज्ञा [सं०] आलिंगन, भेंट, परिरंभण, गले लगना।

अङ्कमालिका ankamálikā हिं० स्त्री० संज्ञा [सं०]

(१) छोटा हार, छोटी माला।

(२) आलिंगन, भेंट।

अङ्करा ankará-हिं० पुं० संज्ञा [सं० अंकुर] (१) एक खर वा कुधान्य जो गेहूं के पौधों के बीच जमता है। इसे काट कर बैलों को खिलाते हैं और इसका साग भी खाते हैं।

इसका दाना वा बीज काला, चिपटा, छोटी मूंग के बराबर होता है, और प्रायः गेहूं के साथ मिल जाता है। इसे गरीब लोग खाते भी हैं। खेसारी इसी का एक रूपान्तर है। अँकरा।

अङ्करास (ankarása)-हिं० पु० संज्ञा। देखो-अकरास। अँकरास।

अँकरी (ankari) हिं० स्त्री० संज्ञा [अंकरा का अल्पार्थक प्रयोग] A kind of vetch (Vicia Sativa) अकरी, रवाड़ी, राड़ी।

अङ्कलिगे (ankalige)-कना० अंकोल, ढेरा (Alangium decapetalum, *Lam.*) फा० इं० २ भा०।

अङ्कलेख्य aṇkalekhyah } सं०, पु०,
अङ्कलोड्य aṇkalodya } चिञ्चोड़ (चिञ्चोटक) वृक्ष-हिं० चेंचकोमूल-बं०। (Marsilea dentala.) वै० श०। देखो-अम्रलोड्यः।

अङ्कशः (aṇkṣhah)-सं० पु०, क्रोड़स्थ बालक। कोलेर छेले-बं०।

अङ्का,-ङ्की (aṇká,-ṇkí)-सं० स्त्री० मृदङ्ग विशेष। शब्द। र०।

अङ्काना (aṇkáná)-हिं०, परखना, जँचवाना, दाम कुतवाना (To cause to value, to examine 'as cloth, to approve of)

अङ्कारक तैलम् ankáraka-tailam } सं०
अङ्कार तैलम् ankára-tailam } क्ली०। देखो अङ्कार तैलम्।

अङ्काव ankáva-हिं० पु०, निरख, दर, माल का ठहराव (Valuation)

अङ्कित ankita चिह्न किया हुआ, मुद्रित, चिह्नित (Marked, examined, valued, paged.)।

अङ्कुडु ankuḍu-ते० कुड़ा, कुटज, कुरैया Holarrhena anti-dysenterica, *R.Br.*) स० फा० इं०।

अङ्कुडु कर्र ankuḍu-karra-ते० गम्भीर मला० (Uncaria gambier, *Roxb.* wood of-) स० फा० इं०।

अङ्कुडु कोडिश ankuḍu-kodiṣha-ते० काडिश-वित्तुलु। मीठा इन्द्रयव, इन्द्रजौ। Wrightia tinctoria, *R.Br.* (seed of-)। स० फा० इं०।

अङ्कुडु-चेट्ट amkuḍu-cheṭṭu-ते०प०व० }
अङ्कुडु-चेट्लु-amkuḍu-cheṭlu-ते०व०व० }
अङ्कुडु-मानु-amkuḍu-mánu-ते०प०व० }
अङ्कुडु-मानुलु-ankuḍu-mánulu-ते०ब.व. }
कुड़ावृक्ष, कुटजवृक्ष, कुरैया। स० फा० इं०। Holarrhena anti-dysenterica, R. BR. (Tree of-)

अङ्कुडु-वित्तु amkuḍu-vittu-ते० प० व०
अङ्कुडु-वित्तनमुलु-amkḍu-vittanamulu ते० व० व०।

अङ्कुडु वित्तुलु—amkuḍu-vittulu—ते० कडुआ इन्द्रजौ, इन्द्रयव तिक्त-हिं०। Holarrhena anti-dysenterica, R. BR. seeds of-)। स० फा० इं०।

अङ्कुरः ankurah सं० पु० } (A pla-
अङ्कुरम् ankuram सं० क्ली० } ntlet, a seed-bud)

अंकुर, अँखुआ, अँगुसा, गाभ, नवोद्भिद, प्ररोह, फुनगी। वा० उ० ३६ अ०। पोंक-बं०। संस्कृत पर्या०-अभिनवोद्भिद् (अ,मे) उद्भिदः, पुरोह्यः, अकुरः (रा) रोहः (हे)। (२) A shoot or sprout, a germ, a blade. डाभ, कल्ला, कनखा, कोंपल, आंख। (३) मुकुल, कली (Bud)। (४) (sharp) नोक। swelling अर्बुद, शोथ। (५) villi अंकुर (अपरा के) (६) Blood रुधिर, रक्त, खून। (७) hair रोआँ, लोम। (८) water (Aqua) जल, पानी। माँसके बहुत छोटे लाल लाल दाने जो घाव भरते समय उत्पन्न होते हैं। मांस के छोटे दाने। अंगूर। भराव। (९) फल Fruit सर्व्वत्र मे० रत्रिक। (१०) Tumour.

अङ्कुरआना ankuraáná-उगना जमना रुह (germinate, sprout)

अङ्कुरकः ankurakah-सं० पु० पक्षिवास स्थान, घोंसला, खोंता (a nest) वै० श०।

अङ्कुर मात्रकम् ankura-mátrakam सं० क्लो० (rudimentary)

अङ्कुरना ankuraná } हिं० क्रि० अ०
अङ्कुराना ankuráná } [सं० अंकुर] Germinate, sprout उगना, जमना, रुह्।

अङ्कुर-विशिष्ट-आवरण ankura-vishista-áv rana

अङ्कुरित ankurita-हिं० वि०, अंकुर सहित फुनगी वाला (Having sprouts) अँखुवाया हुआ। उगा हुआ। जमा हुआ। निकलाहुआ। जिसमें अंकुर होगया हो। (२) उत्पन्न, उगा हुआ (arisen)

अङ्कुरित यौवना ankurita-youvaná-हिं० वि० [सं०] वह स्त्री जिसके यौवनावस्था के कुच आदि चिह्न निकल आए हों। उभड़ती हुई युवती। स्त्री जिसकी उभड़ती जवानी हो।

अङ्कुरी ankurí-हिं० स्त्री० संज्ञा [हिं० अंकुर+ई] चने की भिगोई हुई घुघनी।

अङ्कुल ankula } हिं० पुं० संज्ञा [सं०
अङ्कुले ankule } अङ्कोल] alangium decapetalum, *Lam.* अङ्कोल, ढेरा।

अङ्कुशः ankushah-सं० पुं० (१) [Hamular process]। प्र० शा० ह० शा० र० १ भ०। (२) शृणि-सं०। डाङ्श बं० हला० शा० स०, आंकुश, अंकुश, A hook on goad आंकड़ी, लोहे का एक छोटा शस्त्र वा टेढ़ा काँटा जिससे हाथी चलाया जाता है। गजबाग।

अङ्कुशकास्थि ankushasthi-सं० स्त्री० (Hamate)

अङ्कुशदन्ता ankusha-dantá-हिं० वि० [सं० अंकुशदन्त] हाथी का एक भेद। इसका एक दाँत सीधा और दूसरा पृथ्वी की ओर झुका रहता है। यह और हाथियों से बलवान और क्रोधी होता है तथा झुण्ड में नहीं रहता। इसे गुण्डा भी कहते हैं।

अङ्कुशदुर्धर ankusha-durdhara-हिं० पुं० संज्ञा [सं०] मतवाला हाथी। मस्तहाथी।

अङ्कुशिन् ankushin-सं० त्रि० (Having a hook or goad.)

अङ्कुश्त ankushta-फा० कोयला।

अङ्कुसा ऑफिसिनेलिस anchusa officinalis ले० गावजुबान।

अङ्कुसा टिंकटोरिया anchusa tinctoria, *Desc.*-ले० एक पौधा है जिसका तैल औषधि कार्य में आता है। मेम०।

अङ्कूर,-कुं ankúra-kum-सं० पुं० अङ्कुर a sprout, a germin इं० च०४ का०।

अङ्कूलंग ankúlang-ता० असवगंध, असगंध, (Withania somnifera, *Dunal* .)

अङ्कूलिया ankúliyá } -गु० ढेरा वृक्ष।
अङ्कूली ankúlí }

अङ्कूषः ankúshah-सं० पुं० अङ्कुश।

अङ्केरिया गैम्बियर Uncaria Gambier, *Roxb.*-ले० खदिर कत्था वृक्ष, खैर वृक्ष, चीनी कत्था Gambier-इं० मे० मे०।

अङ्केरिया गैम्बीर (uncaria Gambir, *Roxb.* (Wood of-) अंकुडुकर्र-ते०।

अङ्कोअड ankoed } सं० ढेरा, अंकोल
अङ्कोएल ankoel } गम्भीरी-मल०। सं० फा० इं०। alangium decapetalum इं० मे० मे०।

अङ्कोटः,-ठः ankotah, thah-सं० पुं० अंकोल, अंकोटक वृक्ष, ढेरा (Alangium decapetalum, *Linn.*) रा०मा० (सु० मि० अ० ३६) भा० पू० १ भा०, गु० व०।

अङ्कोटकः ankotakah-सं० पुं० ढेरा, अङ्कोल। आंकोड़गाछ, धला आँकोड़-बं०। (alangium Decapetalum) भा०। रा० व० ६। मद० व० १। क० च० द० अन्सा-त्रि०।

अङ्कोट गुटिका ankota-gutiká-सं० स्त्री० ढेरे की जड़ ४ तो०, पाठा की जड़ ४ तो० दारुहल्दी ४ तो इन्हें चूर्ण कर चावल के जल से घोटकर १-१ तो० की गोलियाँ बनाकर छाया में शुष्क कर रक्खे। इसे चावल के

धोवन से उपयोग करे तो वात पित्त कफ और द्वन्द्वज सन्निपात तथा प्रत्येक प्रकार के अतिसारों को दूर करता है।

अङ्कोट वटकः ankota-vatakah—सं० पु० दारु हल्दी, ढेरे की जड़, पाठा की जड़ (निर्विषी मूल), कूड़ा की छाल, सेमल का गोंद (मोचरस) धातकी [धौ पुष्प] लोध, अनार का छिलका प्रत्येक १–१ तो० लें, इन्हें चावलों के पानी में पीस कल्क कर शहद के साथ बड़े बनाएँ पुनः इसे प्रभात में सेवन करें तो हर प्रकार के अतिसार दूर हों।

चक्र० द० अतिसार० चि०, वङ्ग० से० सं० अति० सा० चि०।

अङ्कोढ़ ankodha—हिं०, ढेरा, अंकोल (Alangium Decapetalum, *Lam.*)

अङ्कोरना ankorana—अकोरना, घूस लेना, भूंजना।

अङ्कोल ankola—हिं० पुं० } अकोला, अङ्कुल,
अङ्कोलः ankolah—सं० पुं० } काला अकोला
टेरा, ढेरा, थैल, अङ्कुल—हिं०, द०। संस्कृत पर्याय—"अङ्कोटो दीर्घकीलः स्यादंकोलश्च निकोचकः"। अकोटः, दीर्घकीलः, अङ्कोलः निकोचकः [अ०] निकोटकः, [भ०], अङ्कोटकः [भा०, रा० नि० व० ९] अङ्कोलकः बोधः, नेदिष्टः दीर्घकीलकः (ज) अङ्कोठः, रामठः (र) कठोरः, रेची, गूढ़पत्रः, गुप्तस्नेहः,पीतसारः, मदनः, गूढ़वल्लिका, पीतः, ताम्रफलः, गुणाढ्यकः, कोलकः, लम्बकर्णः, गन्धपुष्पः, रोचनः,विशालतैल, गर्भः,विषघ्नः,घलन्तः, कठोरः, वामकः और लम्बकर्णकः, लम्बपर्णः। आँकोण, धलआँकोण, धला कुरा, आँकोड़ गाछ, अकरकाटा, बाघाङ्कुर, बाघअङ्करा—बं०। एलेन्ज़ियम डेकापेटेलम् Alangium decapetalum, *Lam.* एले०लेमार्कियाई A. Lamarckii, *Thwaites.* एले० टोमेन्टोसम् A. Tomentosum-ले० सेज लीव्ड् एलेंजियम Sage-leaved alangium इं०। अज़िञ्जि मरम्, अलञ्जी—ता०। ऊडुग, (ऊडुगु) चेट्टु, अङ्कोलम् चेट्टु उडीके—तै०। अयञ्जोलम्, अज़िञ्जि—मरम्, चेमरम्, अङ्कोलम्—मल०। अङ्कोले, कोपोटा, अनीसरूलीमरा—कना०। अङ्कोल, अगोल—सिं०। ओ० शौ०—विङ्या, तो शौविङ्—बर०। अङ्कोली—वृक्ष, आंकुल—म०। अङ्कोल्या, आंङ्का—गु०। ढेला—सन्ता०। अङ्कोल—कोल०। अंकुला—डोलूंक —उडि०। रुक अङ्कुला-सिहली।

कॉर्नेसीई या अङ्कोट वर्ग

N. O. Cornaceæ.

उत्पत्ति स्थान—इसका पेड़ हिमालय की घाटी से गंगा तक, संयुक्त प्रान्त, दक्षिण अवध व बिहार, बंगाल प्रभृति प्रान्तों के बड़े और छोटे जंगलों में पहाड़ी जमीन पर बहुतायत से पैदा होता है। राजपूतानेमें भी पाया जाता है। उष्णकटिबन्ध में स्थित दक्षिण भारतवर्ष और बर्मा के वनों और कभी कभी बगीचों में पाया जाता है। माघ से चैत्र तक अर्थात् आरम्भिक ग्रीष्मकाल में यह पेड़ फूलता फलता है। पुष्पितावस्था में वृक्ष पत्रशून्य रहता है। वैशाख से सावन तक फल लगते और पकते रहते हैं।

इतिहास—चूंकि यह भारतीय पैदावार है इसलिए इसका वर्णन सभी प्राचीन आयुर्वेदीय ग्रंथों में पाया जाता है। यूनानी चिकित्सा ग्रंथों के लेखकों में पीछे के लोगों ने अपनी पुस्तकों में इसका वर्णन किया है।

वानस्पतिकवर्णन—यह एक जंगली वृक्ष है जो वनों में तथा शुष्क व उच्च भूमि पर अधिकतया उत्पन्न होता है। ऊंचाई भिन्न २ साधारणतः लघु, आरम्भ में कंटक रहित, पुराने अथवा युवा वृक्ष के प्रकाण्ड से निकलती हुई आरम्भिक शाखाएँ भी कांटा रहित होती हैं। **उद्भिद् विद्यानुसार** अङ्कोट कटक को कंटक नहीं कहते किन्तु तद्युक्त शाखाओं को तीक्ष्णाग्र शाखा कहते हैं। पत्र—एकान्तरीय अर्थात् विषमवर्ती, अण्डाकार बर्छीनुमा अथवा तंग अण्डाकार ३-४ इंच लम्बा और १–१॥ इंच चौड़ा, चिकना डंठल युक्त होता है। डंठल—लघु, अत्यन्त सूक्ष्म रोम, युक्त, लगभग चौथाई इंच लम्बा होता है। पुष्प—

मध्यवर्ती, सूक्ष्म, सुगन्ध युक्त, पीताभायुक्त, श्वेत साधारणतः कक्षीय, वृन्त युक्त। पुष्पवृन्त–लघु, सामान्य। पुष्प–बाह्य–कोष (Calyx) ऊर्ध्वगामेय, दंष्ट्राकार, लघु, स्थायी। पुष्पाभ्यन्तर–कोष (Corolla) बहुदलीय। पुष्पदल–अर्थात् पंखड़ियां ६ से १०, अण्डाकार, न्यूनाधिक उलटी हुई। परागकेशर–पुष्पदल से द्विगुण। परागतन्तु का निम्न भाग लोमश। पराग कोष–अण्डाकार। गर्भकेशर–सामान्यतः परागतन्तु से अधिक लम्बा होता है। फल–लगभग छोटे रीठा अथवा जंगली बेर के बराबर, गोलाकार चिकना, झुका हुआ, अपक्व दशा में नीलाहट लिए और कड़ुवा तथा पकने पर रक्त वर्णयुक्त (इन पर स्याही झलकती है) जिसके शिरे पर –पुष्प–बाह्य कोष लगा होता है, एक बीज युक्त सूक्ष्मतः ग्राह्य तथा मधुर स्वाद युक्त, गदराहट को हालत में स्वाद्वम्ल होता है। बीज–गोलाकार ऊपर नीचे कुछ चपटा कठोर और धूसर वर्ण युक्त होता है। इसकी जड़ वजनी, लकड़ी मजबूत हलकी पीलापन लिए हुए, बीच का हिस्सा बादामी रंग का होता है। जिससे सुगन्धि आती है। परीक्षा–इसे तथा छाल को परक्लोराइड आफ़ आयर्न घोल का स्पर्श कराने से ये मटमैले हरितवर्ण में परिवर्तित होजाते हैं। इसकी छाल आध इंच तक मोटी, खाकी रंग की जिसके ऊपर छोटे २ कांटे से मालूम होते हैं। स्वाद—तिक्त और गन्ध अधिकतर मतली कारक (उत्क्लेश जनक) होता है।

नोट—देशी वैद्य तथा औषध विक्रेता सफेद तथा काले नाम से इसके दो भेद बतलाते हैं। इनमें श्वेत प्रकार वही है जिसका ऊपर वर्णन किया गया है; परन्तु डाक्टर मोहदनशरीफ महोदय के कथनानुसार काला उसका भेद नहीं, जैसा कि सर्व साधारण का विचार है, वरन् यह उसी की एक निकटस्थ जाति अर्थात् एलेञ्जियम हेक्सापेटेलम् Alangium Hexapetalum of Lanlarck है। वे इसे अङ्कोल का काला भेद इस कारण बतलाते हैं कि यह उससे रंग रूप में बहुत कुछ समानता रखता है।

उसके फूल का रंग बैगनी और छाल गम्भीर धूसर वर्ण की होती है। इसकी छाल परिवर्तक तथा विषघ्न प्रभाव में किसी–किसी स्थान में उत्तम ख़याल की जाती है और इसमें कभी कभी वान्ति कारक गुण होने का निश्चय किया जाता है। (देखो—कालाअकोला।

प्रयोगांश—मूल, मूलत्वचा, बीज, फल, पत्र, पुष्प और तैल।

रसायनिक संगठन—इस की जड़ में एक अत्यन्त तिक्त, रवा रहित अङ्कोटीन या एलेन्जीन (Alangin) नामक क्षारीय सत्व वर्तमान होता है जो हलाहल (Alcohol), ईथर क्लोरोफ़ार्म और एसेटिक ईथर में तो विलेय होता है परन्तु जल में अविलेय।

गुणधर्म व प्रयोग—आयुर्वेदिक मतानुसार—
अङ्कोल चरपरा, तीक्ष्ण, स्निग्ध, उष्ण, कसैला, हलका तथा रेचक है और कृमि, शूल, आम, सूजन श्लेष्मा (कहीं कहीं 'ग्रह' पाठ है) और विष नाशक है। भा० मद० व० १।

विसर्प, कफ, पित्त, रक्त, मूसा तथा सर्पविष को दूर करता है। भा०

ढेरा–कसैला, कड़ुवा, पारे को शुद्ध करने वाला, हलका, चरपरा, किञ्चित् सर (दस्तावर), स्निग्ध, तीक्ष्ण, गरम और रूक्ष है। (नि० रा०)

विसर्प, कफ, पित्त, रुधिर–विकार, तथा सांप और चूहे का विष दूर करता है।

अङ्कोल का फल—शीतल, स्वादिष्ट, कफनाशक, पुष्टि कारक, भारी, बलकारक, रेचक है और वात, पित्त, दाह, क्षय और रुधिर विकार को नाश करता है मद० व० १ भा०। विष, लूता (मकड़ी) आदि दोष नाशक और वात कफ नाशक तथा शुद्धि करने वाला है। रा० नि० घ० ६। च० द० अ० सा० नि०।

अङ्कोल का रस—वान्ति जनक है तथा विषविकार, कफ, वात-शूल, कृमि, सूजन, ग्रहपीड़ा, आमपित्त, रुधिर विकार, विसर्प, कुत्ते का विष मूसे का विष, बिलाव का विष, कटिशूल, अतिसार और पिशाच पीड़ा को दूर करने वाला है। (बृ० नि० र०)

अङ्कोल के बीज—शीतल, धातुवर्द्धक, स्वादिष्ट मन्दाग्नि कारक, भारी, रस और पाक में मधुर, बलकारक, कफ कारी, सारक, स्निग्ध, वृष्य (वीर्य वर्द्धक) तथा दाह, वात, पित्त, क्षय, रक्त विकार, कफ, पित्त और विसर्प को नाश करने वाले हैं। नि० रा०)

अङ्कोल का अर्क—शूल, आम, सूजन, अङ्गग्रह और विष को नष्ट करता है।

अङ्कोल तैल—इसको पूर्व वैद्य एवं महर्षियों ने वात कफ नाशक और मालिश करने से चर्मरोग नाश करने वाला कहा है (वै० निघ०)

अङ्कोट के वैद्यकीय प्रयोग—(१) **दन्तकाष्ट-गत-विष में अङ्कोटमूल**—दन्तकाष्ट विषयुक्त होने पर जिह्वा एवं दांत पर मैल जम जाता है और ओष्ट सूज जाता है। इसके प्रतीकारार्थ अङ्कोट की जड़ की छाल का चूर्ण प्रस्तुत कर शहद के साथ शोथ स्थल पर धीरे धीरे रगड़ें वा प्रलेप करें। (कल्प० १ अ०)

(२) विषैले अञ्जन से नेत्रों में अन्धता उत्पन्न होने पर अङ्कोल के फूलों का अञ्जन नेत्रों में लगाने से अन्धता दूर होती हैं।

(कल्प० १ अ० सुश्रु०)

अङ्कोल की जड़ की छाल बकरी के मूत्रमें पीस कर पीने व लेप करने से चूहे का विष नष्ट होता है। (वा० उ० ३८ अ०)। इसकी जड़ की छाल गो दुग्ध के साथ पीस कर पीने से कुत्ते का विष दूर होता है।

(भाव० म० खं० ४ भा०)

(१) अङ्कोट की जड़ की छाल का क्वाथ प्रस्तुत कर, इसका घन सत्व तैयार कर गो घृत के साथ सेवन करें। इसके सेवन से पूर्व रोगी के शरीरको तिल तैल मर्दित कर स्वेदित करलें, यह गरदोष नाशक है (विष० चि०)

नोट—उपविष सेवन जन्य उपद्रव को गरविष कहते हैं।

इसकी मूल त्वचा का चूर्ण १ तो० चावलों के साथ पीस कर सेवन करने से अतिसार और संग्रहणी में लाभ होता है।

(च० द० अतिसा० चि०)

नोट—यह मात्रा अधुना प्रयोजनीय नहीं।

वक्तव्य

चरक में अंकोटके फलका गुण इस प्रकार लिखा है—"श्लेष्मलं गुरु विष्टंभि चाङ्कोटफलमग्नि-जित्" (सू० २१ अ०)। चरकोक्त विष चिकित्सा के अमृत घृत कल्क "पाठा-ङ्कोटाश्वगन्धार्क" पाठ में अङ्कोट का व्यवहार दिखाई देता है। इससे भिन्न और समस्त विष चिकित्सा में अङ्कोट शब्द नहीं आया है। सुश्रुत ने कल्प स्थान के छठवें अध्याय में चूहे तथा कुक्कुर आदि के विष की चिकित्सा लिखी है। सुश्रुत के श्वविष चिकित्सा में अङ्कोट व्यवहृत नहीं हुआ है, किन्तु मूषिक विष चिकित्सा में चूहा काटे हुए रोगी को वमन कराने के लिए अङ्कोट का प्रयोग किया गया है—"छर्दनं जालिनी क्वाथैः शुकाख्याङ्कोट योरपि" क० ६ अ० अङ्कोट का एक नाम वामक है। चरक के विमान स्थान के ८ वें अध्याय एवं सुश्रुत के सूत्र स्थान के ३९ वें अध्याय में विरेचक तथा वामक द्रव्यों की तालिका है। उस तालिका में अङ्कोट का नाम नहीं है। चरक और सुश्रुतोक्त कुष्ठ, अतिसार एवं ग्रहणी की चिकित्सा में अंकोट का नामोल्लेख नहीं है। सुश्रुत के अश्मरी चिकित्साध्याय में अंकोट के फल का उल्लेख है। "निचुकाङ्कोल कतक शाकेन्दी-वरजैः फलैः। चूर्णितैः सगुडं तोयं शर्करानाशनं पिबेत्" (चि० १ अ०)। निघंटुकार अङ्कोट को फलको "गुप्तस्नेह" बोलते हैं।

चरक के सूत्रस्थान के १३ वें अध्याय एवं सुश्रुत चिकित्सा स्थान के ३१ वें अध्याय में उक्त स्थावर स्नेह योनि फलों में अङ्कोट का उल्लेख नहीं है। निघंटुकार अङ्कोटका एक नाम "रेची" लिखते हैं, किन्तु उ[illegible]रण अङ्कोटको "संग्राही" कहते हैं। चक्रदत्त व वंगसेन दोनों ने ही अतिसार की चिकित्सा में अंकोट को संग्राही रूप से व्यवहार किया है। वास्तव में अङ्कोट रेची है या संग्राही इसकी परीक्षा करनी आवश्यक है।

अङ्कोलके सम्बन्धमें यूनानी मत—

प्रकृति—यूनानी ग्रन्थकार इसे पहिली कक्षा में

[किसी किसी के मत से दूसरी कक्षा में] गरम तर मानते हैं।

हानिकर्ता—श्लेष्मा अधिक उत्पन्न करता है।

दर्पघ्न—काली मिर्च और शीतल व रूक्ष वस्तुएँ

प्रतिनिधि—किसी किसी रोग में कुकरौंधा है।

मात्रा—४ या ६ मा० तक। विशेष प्रभाव—विषघ्न व शोथलय कर्ता, हृदय को बलप्रद, करता, कफ और वायु के विकारों को हरण करना, उदर की पीड़ा को हरण कृमिघ्न, और इसकी जड़ के छाल का चूर्ण १ मा० काली मिर्च के साथ बवासीर को बहुत गुण कारक है।

इसके अत्यधिक उपयोग से आमाशय निर्बल होजाता है, और सिर में झनझनाहट के साथ मीठा दर्द शुरू हो जाया करता है। गुदा स्थान में जलन मालूम होती है। नेत्र पीले पड़ जाते हैं निद्रा कम आती है। एवं मस्तिष्क कार्य करने की इच्छा अधिक बढ़ जाती है। ऐसी अवस्था होने पर शंखपुष्पी चूर्ण ४ मा० दुग्ध पावभर में उबालकर ठंडा करके स्वाद के अनुसार मिश्री मिलाकर पिलाने से तत्काल समस्त विकार नष्ट होते हैं। जड़ उष्ण और चरपरी होती है। फल ठंडा पौष्टिक शरीर को मोटा करने वाला होता है। यह आहार कार्य में आता है। किन्तु अधिक खाने से गरमी मालूम होती है।

अङ्कोल के विविध अंगों के अनेक उत्तम उपयोग :—

अङ्कोल की जड़ तथा छाल—देशी चिकित्सा में इसकी जड़ की छाल रेचक तथा कृमिघ्न प्रभाव के लिए उपयोग में आती है। बम्बई में संधिवात की पीड़ा को शमन करने के लिए इसके पत्तियों का पुलटिस व्यवहार में आता है। (डाक्टर सखाराम अर्जुन)

मि० मोहीदीन शरीफ़ के वर्णनानुसार उक्त औषधि कुछ एक गुप्त योगों का, जो वीर्य रोग त्वचारोग तथा कुष्टरोग की चिकित्सा में अर्काट तथा वैलौर प्रभृति स्थानों में अत्यधिक प्रचार पा चुके हैं, एक प्रधान अवयव है। और वह स्वानुभव का वर्णन करते हुए कहते हैं कि मैंने उक्त छाल को कुछ कुष्ट रोगियों को प्रयोग कराया और अनेक दशाओं में मैंने इसे २॥ रत्ती की इतनी कम मात्रा में भी वामक प्रभाव युक्त पाया। अधिक मात्रा (अर्थात् २५ रत्ती) में उपयोग में लाने पर यह योग्य और बेज़रर (अहानिकर) वामक तथा थोड़ी मात्रा में उत्क्लेश कारक और ज्वरघ्न औषध सिद्ध हुआ। इससे भी न्यून मात्रा में यह भारतवर्ष की सर्वोत्तम परिवर्तक, बलप्रद औषधियों में से है।

इसकी त्वचा अत्यन्त तिक्त है, अतः त्वचा रोगों में इसकी प्रसिद्धि बिना आधार के नहीं। यदि इसको पर्याप्त काल तक लगातार उपयोग में लाया जाय तो मदार की अपेक्षा उन पर इसका प्रभाव अधिक होता है।

वे पुनः वर्णन करते हैं कि यह इपिकेकाना (Ipecacuanha) की एक उत्तम प्रतिनिधि है और प्रवाहिका के अतिरिक्त उन समस्त रोगों में लाभदायक सिद्ध होता है, जिनमें कि इपिकेकाना व्यवहृत है।

ज्वरघ्न तथा स्वेद जनक होने के कारण ज्वर नष्ट करने में यह उपयोगी पाया गया है। उत्क्लेश कारक, मूत्र जनक और ज्वरघ्न प्रभाव हेतु इसकी जड़ की छाल की मात्रा ३ से ५ रत्ती तक और परिवर्तक रूप से १ से २॥ रत्ती तक है। यह कुष्ट एवं उपदंश में प्रयुक्त होती है। देशी लोग इसे विशेषतः विषैले जानवरों के काटने में विषघ्न ख़याल करते हैं।

औषधि-निर्माण—अङ्कोलचूर्ण—जड़ की छाल साए में सुखाकर चूर्णकर बारीक छान लें और बोतल में सुरक्षित रक्खें। **मात्रा**—वमनहेतु २५ रत्ती, (५० ग्रेन)। (मो० श०)

इसकी जड़ की छाल चावल के पानी में घोट कर थोड़ी से शहद के साथ अतिसार में बरती जाती है। आमातिसार और रक्तातिसार में मूल त्वचा का चूर्ण ५ रत्ती दिन में २-३ बार सेवन कराना चाहिए।

यह नित्य ज्वरों में भी उपयोगी है। ज्वर की अवस्था में २॥ से ५ रत्ती देने से स्वेद आकर

ज्वर वेग कम हो जाता है तथा तृषा, दाह आदि ज्वर के उपद्रव शमन होते हैं।

इसकी जड़ का शीत कषाय तथा क्वाथ घी के साथ श्वान विष नाशक है। यह उदर शूल, कृमि, प्रदाह और सर्पदंश (२॥ मा० छिलके का चूर्ण) प्रभृति विषों को शमन करने वाला है। इसकी मूल त्वचा द्वारा निर्मित तेल का संधिवात में वाह्योपयोग होता है। कम मात्रा में यह रसायनिक गुणों को करता है।

मसूढ़े और ओष्ठ सूजने पर मधु के साथ प्रलेप करने अथवा इसके काढ़े से कुल्ली करने से लाभ होता है एवं मसूढ़ों से खून बहना बन्द होता है। यह विसूचिका नाशक है तथा कूकर खाँसी की प्रथमावस्था में प्रयोग करने से लाभ करता है।

जलोदर में जड़ के चूर्ण की १॥ से ३ मा० की मात्रा देने से दस्त होकर रोग दूर होता है। अजीर्ण नष्ट होता है।

दर्द और शोथ पर जड़ को पीसकर लेप करने से फायदा होता है।

जड़ के छिलके का चूर्ण सेवन करने से दस्त होकर पेट के कीड़े दूर हो जाते हैं।

छिलके का चूर्ण १ माशा, काली मिर्च का चूर्ण १ मा० दोनों को मिलाकर सेवन करने से बवासीर में लाभ होता है। इसके छिलके को पीस कर लेप करने से त्वचा के रोग दूर होते हैं।

जड़ के छिलके का चूर्ण जायफल, जावित्री लौंग, सम भाग के चूर्ण को ४ माशे की मात्रा में उपयोग कराने से कोढ़ का बढ़ना रुक जाता है।

जड़ के छिलके के चूर्ण को अडूसे के काढ़े के साथ सेवन करने से राजयक्ष्मा के लिए गुणदायी है।

यदि छिलका और बीज समभाग लेकर कूट पीस कर गोली चना प्रमाण बना कर एक मा० से दो मा० तक सेवन कराएँ तो वमन व रेचन सरलतापूर्वक लाता है और आमाशय की सूजन तथा बदन के नीचे के भागों के दर्द और जलोदर में बहुत मुफ़ीद है।

अंतर्छाल का चूर्ण बनाकर शहद के साथ खाकर ऊपर से मिश्री मिला हुआ दुग्धपान करने से प्रमेह दूर हो जाता है और कटिशूल, शिरशूल एवं शारीरिक पीड़ा दूर होती है-तथा पौष्टिक है।

अंकोल की जड़ १ तो०, कूट ३ मा० पीपल ३ माशा, बहेड़ा ६ माशा मिलाकर इसका काढ़ा बनाएँ, इसे ठंडा होने पर मिश्री मिला कर पिलाने से इन्फ्लुएन्ज़ा [संक्रामक प्रतिश्याय] में अधिक लाभ होता है।

प्रत्येक भांति के विष में जड़ का काढ़ा बनाकर खूब पिलाना चाहिए। इससे कै और दस्त होकर विष दूर हो जाएगा।

इसकी ताजी छाल १ मा० से ४ मा० तक गोदुग्ध में पीसकर पिलाने से बिना कष्ट के वमन और रेचन होते हैं तथा बच्चों की मृगी (अपस्मार) को बहुत फ़ायदा पहुँचता है।

अङ्कोल मूल द्वारा भस्म निर्माण विधि-

अंकोल वृक्ष की छाल लाकर सुखा लें। पुनः उसी वृक्ष की मोटी जड़ पृथ्वी के भीतर से खोद लाएँ और उसमें गढ़ा बनाएँ। तत्पश्चात् उक्त गढ़े में थोड़ी छाल रखकर उसमें कलई पत्र लपेटा हुआ शुद्ध ताम्र चूर्ण [या ताम्र का पैसा] रक्खें और ऊपर से उक्त छाल भर दें। अब इसे कपरौटी कर सुखा लें। और गजपुट की अग्नि मात्र दें। शीतल होने पर निकालें। कागज के रंग की श्वेतभस्म प्रस्तुत होगी। मात्रा-१--२ चावल यथोचित अनुपान के साथ उपयोग में लाएँ।

गुण—सम्पूर्ण शारीरिक व्याधियों के लिए अक्सीर है। (कु० फ़ो०)

अङ्कोल के पत्ते

चोट लगने से यदि दर्द होता हो तो अंकोल के पत्ते लाकर उसको जल में उबाल कर उसकी भाप उस जगह देना, पुनः उक्त पत्तों को गरम २ बांध देने से फौरन दर्द दूर हो जाएगा। (डा० सखाराम अर्जुन)

अतिसार रोगी को पत्तों का ६ मा० रस दूध के साथ मिलाकर पिलाना चाहिए। इससे

प्रथम दस्त होकर कोष्ट शुद्धि होती है फिर वे एकदम बन्द हो जाते हैं।

अंकोल के पत्ते पीस कर पुल्टिस बांधने से गठिया का दर्द दूर हो जाता है।

पत्तों को पीस कर टिकिया बना लें और सरसों के तैल के साथ कड़ाही में डालकर आग पर रख जला लें। जब जल जाए तो थोड़ी स्याह मिर्च का चूर्ण डाल कर मरहम तयार करें। इसको उपयोग में लाने से प्रत्येक भांति के व्रण, खुजली खरवा प्रभति अच्छे होजाते हैं।

पत्तों को जलाकर उसकी राख १ तो० लें। फिर इसमें काली मिर्च २५ नग, तूतिया भुनी ३ मा०, हरताल १ मा० मिलाकर खूब खरल करें। बाद को तिल का तैल जिसमें मोम मिलाया गया हो इसमें खरल करके मरहम तैयार कर लें। इसके लगाने से बवासीर के मस्से सूख कर निकल जाते हैं।

अण्डवृद्धि—अंकोल पत्र उबालकर बांधने से जल निकलता है।

अंकोलकी लकड़ी—नासूरमें इसकी लकड़ी की राख भरनी चाहिए। इससे नासूर अच्छा हो जाता है।

इसकी लकड़ी का चूर्ण बनाकर इसे पिया-राँगा, कागजी नीबू के बीज तथा दरियाई नारियल आदि उपर्युक्त औषधियों के साथ मिलाकर विशूचिका रोगी को खिलाने से लाभ होता है।

अंकोल की लकड़ी का फ़र्श बनाकर यदि इस पर सोया जाए तो कोई कीड़ा मकोड़ा पास न आएगा।

अंकोल पुष्प—इसके पुष्प मधुर, शीतल, कफ नाशक, वीर्यवर्धक, बलकारक, दस्तावर एवं वात, पित्त, दाह रुधिर विकारों को दूर करते हैं।

अंकोलके फल—इसका फल शारीरिक दाह, राजयक्ष्मा और रक्तपित को लाभ पहुंचाता है। शारीरिक दाह में फलों को पीस कर लेप करने से लाभ होता है। रक्तपित्त में फल को मिश्री के साथ पीस कर पीने से मुँह आदि द्वारा रक्तस्राव बन्द होजाता है।

अतिसार में इसके फल के गूदे को शहद में मिलाकर चावल के धोवन के साथ उपयोग में लाने से लाभ होता है।

फलों के गूदे और तिलों के क्षार को शहद में मिलाकर देने से सूजाक दूर होता है।

वर्षा ऋतु में जो फुड़ियां बगल के नीचे तथा गले में प्रायः हो जाया करती हैं, जिनसे अक्सर रोगी मर जाते हैं, आरम्भ ही में सवेरे के समय यदि इसका एक फल खिलाया जाए और एक फल का पानी निकाल कर गिल्टियों पर मल दिया जाए तो दर्द को तुरन्त लाभ होगा और रोगी बच जाएगा।

अंकोल-तैल निकालनेकी विधि—एक प्याले के मुंहको कपड़ेसे बांध दें और अंकोल के बीज की गिरी को कूट कर इस पर बिछा दें और एक टुकड़ा अभ्रक का इस पर रखकर कोयलों की आग करें, इसकी गरमी से तैल टपककर प्याले में आएगा इसी को व्यवहार में लें।

यदि किसी धारदार शस्त्र से क्षत हो जाय तो अंकोल तैल में रुई भिगोकर पट्टी बांध दें तो बहता हुआ रक्त भी रुक जाता है और घाव भी शीघ्र सूख जाता है।

अंकोल तैल १ पाव, मोम १ छटांक अग्नि पर जलाकर रख दो, २ मा० भुनी तूतिया मिला दो, और ठंडा होने पर भली प्रकार मिलाकर किसी बर्तन में रख दो। यह मलहम दाह, खुजली, भगन्दर, नासूर, क्षत, फोड़ा, फुन्सी प्रभति समस्त त्वचा सम्बन्धी रोगों को नष्ट करता है।

५ बूंद तैल मिश्री में मिलाकर विशूचिका रोगी को उपयोग कराने से उसे लाभ होता है।

५ से १५ बूंद तक तैल उष्ण दुग्ध में मिला कर मिश्री डालकर प्रति दिन पीना शरीर को बलवान बनाता है। और प्रमेह, निर्बलता, शरीर में चक्कर आना तथा आंखों में अंधेरा आना आदि को दूर करता है।

३॥। मा० तैल उष्ण जल से पीना खूब दस्त लाता है और पेट के दर्द व बदहज़मी को दूर करता है।

सिर में दर्द हो और किसी तरह अच्छा न होता हो तो उक्त तैल को २० बूंद की मात्रा में बकरी के दूधमें थोड़ा सा शहद डालकर पिलाना लाभदायी है। इससे मस्तिष्क पुष्ट होता है।

इसके तैल को तिल के तेल में मिलाकर लगाना बालों को बढ़ाता है और सिर के जुओं को दूर करता है।

गरम पानी में तैल डाल कर कुल्ली करना मसूड़ों की सूजन, दर्द, खून बहने को आराम करता है।

चेचक के दाग पर गेहूं के आटे में हल्दी और अंकोल का तेल मिलाकर पानी से गीला करके उबटना रंगको ठीक करता है और कुछ सुन्दर करता है।

नोट—प्रायः निघण्टुकार अङ्कोल को रेचक मानते हैं पर कई प्राचीन इसे संग्राही कहते हैं। चरक सुश्रुतने विषघ्न माना है पर संग्राही विरेची गुण का उल्लेख देखने में नहीं आया।

अङ्कोलकः ankolakah–सं० पुं० अङ्कोल (Alangium Deca peptalum, *Lam.*) र० सा०-सं०।

अङ्कोल कल्कः Ankola kalkah सं० पुं० ढेरे की जड़ की छाल चावल के धोवन में पीस शहद डाल कर पीने से अतिसार और विष के विकार दूर होते हैं।

भा० म० ख० २ अति० चि० शार्ङ्ग० सं० म० ख० अ० ५

अङ्कोल तैलम् ankola tailam सं० क्ली० अङ्कोल बीज तैल। Alangium decapetalum, *Lam.* (Oil of-)। वै० निघ०।

अङ्कोल फल सङ्काशः ankola-phala-sankáṣhah–सं० पुं०, फल विशेष। संसार में पिहता नाम से प्रसिद्ध है। वै० श०।

अङ्कोल बद्धवटी ankola-baddhahvatí –सं० स्त्री० यो० म० शुद्ध पारे को श्वेत अङ्कोल के रस में तीन दिन तक भावित करें, फिर पारे के समान भाग गन्धक मिलाएँ और खरलमें बारीक कज्जली बनालें। फिर अङ्कोल ही के रस को मिलाकर गोला बनालें, फिर तत्काल मारे हुए बकरे के मांस का पिंड जैसा बना कर गोले को उसके भीतर रक्खें। फिर लाल चित्रक के रस और लाल मूली की जड़ का रस इनमें उसको डुबाकर फिर बाहर से चारों तरफ़ बकरे का मांस लपेट दें फिर अग्नि के समान गरम तैलमें उसको डालकर भूनलें। और जब वह मांस पिंड भूनकर सिंदूर का सा रंग धारण करले तो निकाल कर रखलें।

मात्रा—१ रत्ती शहद और घी के साथ खाएँ।
गुण—इसके सेवन से मनुष्य वीर्यवान होजाता है। नपुंसकता जाती रहती है। इस पर कसैला पदार्थ सेवन करना निषेध है।

अङ्कोलम् ankolam–मल० ढेरा अंकोल (Alangium decapetalum, *Lam.*) इं० मे० मे०।

अङ्कोलमनचर ankolama-nachar–अज्ञात।

अङ्कोलम् चेट्टु ankolam-cheṭṭu—ते० अकोला, अङ्कोल, ढेरा [Alangium decapetalum, *Lam.*] स० फा० इं०।

अङ्कोलमु ankolamu ते०, ढेरा, अङ्कोल (A. decapetalum, *Lam*) इं० मे० मे०।

अङ्कोला ankolá–म०,
अङ्कोली ankolí–कना०
अङ्कोले ankole–कना०
अङ्कोल्य ankolya–गु०
अङ्कोलुम् ankolum–ता०
} ढेरा, अङ्कोल, अङ्कोला (Alangium decapetalum, *Lam.* -स० फा० इं०।

अङ्कोल्लः ankollah–सं० पुं० (Cedrus deodara) देवदारु। रा० नि० व० २१। वा० उ० ३८ अ०।

अङ्कोल्लकः ankollakah सं० पुं० (Alangium Decapetalum, *Lam.*) अङ्कोल मद० व० १।

अङ्कोल्लसारः ankollasárah–सं० पुं० मालव प्रसिद्ध स्थावर विष भेद (A kind of poison) हे० च० ४ का०। अफीम, संखिया, प्रभृति। औ० श०।

अङ्कोहर ankohara–हिं०सं० पुं० ढेरा, अङ्कोल (Alangium decapetalum, *Lam.*)

अङ्कुरा-विरइ ankhurá-virai—ता० पुनीर के बीज। तुख्मे काकनजे-हिन्दी-फा० । (Withania puneeria Coagulans *Dunal.*) सं० फा० इं० ।

अङ्गम् angam—सं० क्ली० Myrrh (१) (Balsamodendron Myrrh.) बोल । सुगन्ध बोल—बं० । रा० नि० व० ६ । (२) शरीर, बदन, देह, तन, गात्र, जिस्म, (The body) । (३) शरीरावयव, अवयव (An organ, a limb or member of the body.) उज़्व—अ० । रा० नि० व० १८ ।

शरीर के छोटे छोटे भागों को अंग कहते हैं, जैसे—हाथ, पांव, जंघा, हृदय, अन्त्र, चक्षु—इत्यादि । कुछ अङ्ग पोले होते हैं और कुछ थैली के समान, जैसे—मूत्राशय, शुक्राशय, आमाशय और गर्भाशय । कुछ अङ्ग नली के सदृश होते हैं, जैसे—रक्त की नलियाँ, शुक्रकी नलियां, पाचक रसों की नलियां, और मूत्र की नलियां । (३) उपसर्जनभूत । हे० च० नानार्थ पुं० (४) Earth,भूमि । (५) भाग, हिस्सा (A part or portion) । (६) A constituent, part.

अङ्गकं angakam—सं० क्ली० १-(Body.) शरीर २—अगर (Aloe wood) । ३ - A limb शरीरावयव ।

अङ्गकर angakara—ते० धारकरेला, किरार । (Momordica dioica, *Roxb.*) फा०इं० २ भा० ।

अङ्गगौरवम् anga-gouravam—सं० क्ली० (Heaviness of the body.) शरीर का भारीपन,शरीरका गुरुत्व । गाभार—बं० । वा० नि० १३ अ० ।

अङ्गग्रहः anga-grahah—सं० पुं०, गठिया, अङ्गवेदना । वा० नि० १६ अ० । शरीर का दर्द शारीरिक व्यथा, शरीर की पीड़ा, अकड़बाई, बात रोग, देह का जकड़ना । वह रोग जिससे देह में पीड़ा हो । Spasm, (Bodily pain)

अङ्गग्लानिः anga-glánih—सं० क्ली० देह की जड़ता, देह जाड्य, शरीर का जड़ हो जाना । (Langour) । वा० चि० २२ अ० ।

अङ्गघातः anga-ghátah—सं० पुं० देह में चोट का लगना, अङ्गाघात (Bodily pain) वै० श० ।

अङ्गचयः anga-chayah—सं० पुं० पेरीनियम् Perineum-इं० गुदा और वृषण का मध्य भाग, मूलाधार । इज़ान—अ० । वै० नि० ।

अङ्गचेष्टा anga-cheshṭá—सं० स्त्री० अङ्ग-चालन, शरीर को गतिदेना । वा० नि० १५ अ० ।

अङ्गजम् ang-jam—सं० क्ली० १—ब्लड (Blood-) रक्त २ - फीसिज़ fœces) मल । मे० जत्रिकं ।

अङ्गजः anga-jah सं० पुं०, १—हेयर(Hair) केश । २—डिज़ीज (A disease) रोग । ३—बाल, रोम, मांस । (Muscle) मसल धातु । ४-इन्टॉक्सिकेशन Intoxication-इं० मद । वि० । ५ देखो -अङ्ग । ६—(A son, Love, cupid, intoxicating passion. काम ।

अङ्गज्वरः anga-jvarah—सं० पुं० क्षयरोग, राजयक्ष्मा, यक्ष्मा, (Consumption)

अङ्गज्वरम् anga-jvaram—सं० क्ली० शरीर के भागों में लगा हुआ ज्वर । अथ० सू० ३०, ८ का० ५ । शरीर के अङ्गों में संताप उत्पन्न करने वाला । अथ० सू० ८, ५, का० ६ ।

अङ्गणं anganam—सं० क्ली० आँगन सहन, चौक, अजिर, घर के बीच का खुला हुआ भाग । अँगना, (ई) अङ्गन भूमि (A yard) वै० श० ।

अङ्गतिः angatih—सं० पुं० (Air,wind-) वायु । २—(Fire) अग्नि (श०) ३-- ब्रह्मा ४--विष्णु ।

अङ्गतापः angu-tápah—सं० पुं०, शरीरोष्मा शरीरोष्णता, देहकी गरमी (Body heat) वै० श० ।

अङ्गदं angadadam—सं० क्ली० बाजूबंद (An armlet)

अङ्गदरणम् anga-daranam–सं० क्ली० (Bilious pain) पित्त जन्य पीड़ा, पैत्तिक व्यथा । वै० श० ।

अङ्गदान anga dána–फ़ा० अञ्जदान, हिंगु-वृक्ष, हींगका पेड़ (Ferula Fœtida, *Regel*.) हिं० पुं० संज्ञा [सं०] तनुदान, तनसमर्पण । सुरति । रति । नोट—यह स्त्री के लिए प्रयुक्त होता है । क्रि० प्र०–रति करना । सम्भोग करना ।

अङ्गदाहः anga-dáhah–सं० पुं० (Burning of the body) गात्रदाह, देहकी ज्वाला । वै० श० ।

अङ्गद्वार anga-dvára–हिं० पुं० संज्ञा [सं०] शरीर के मुख, नासिका आदि दस छेद ।

अङ्गधारी anga-dhárí–हिं० पुं० संज्ञा [सं०] शरीरी । प्राणी । शरीर धारण करने वाला।

अङ्गन angana–हिं० पुं० संज्ञा [सं० अङ्गण] A yard (१) आँगन । सहन । चौक – पं० । (२) चरवा, कुसा–उ० प० सू० । मेमा० अगेनोस्मा कैर्योफाइल्लेटा aganosma Caryophyllata-ले०दखुरी,अंगु फ्रैक्सिनस फ्लोरिबण्डा Fraxinus Floribunda, *Wall.* वनरिश–अफ़्० । सूम,सुमु, शुन–पं० । कङ्गु, तुहसी नैपा० ।

जैतूनवर्ग

(N. O. Oleaceæ)

उत्पत्तिस्थान—शीतोष्ण और अधः आल्पीय हिमालय–काश्मीर से भूटान पर्य्यन्त–तथा खसिया पर्वत ।

उपयोग—इसके प्रकाण्ड (तने) को काटनेसे इसमें से एक भांति का ठोस, मधुर स्राव (शीरख़िस्त) प्राप्त होता है जो सम्मत शीरख़िस्त (Officinal manna) का प्रतिनिधि है । इसे इसके मधुर एवं किञ्चित् कोष्ठ मृदुकारी प्रभाव हेतु उपयोग में लाते हैं । (वैट०)

अङ्गना anganá–सं० स्त्री० १–(a woman or female in general, a wife) नारि, स्त्री, पत्नी, कामिनी । मे० नत्रिकं । २–(Prunus mahaleb, *Linn.*) प्रियंगु, भा० । ३–हिं० पुं० (A yard) आंगन, अङ्गना ।

अङ्गनाप्रियः anganá-priyah–सं० पुं० १ (Saraca Indica, *Linn.*) अशोक वृक्ष । र० मा० । २–द्रुमोत्पल, कर्णिकार । ओलट्–कम्बल–बम्ब०, बं० । Davil's Cotton (Abroma Auguststa, *Linn.*) इं० मे० मे० । प० मु० ।

अङ्गनाप्रिया anganá-priyá–सं० स्त्री० प्रियंगु, फूल प्रियंगु, गन्ध प्रियंगु, नारिवल्लभा, (prunus mahaleb, *Linn.*) । भा० पू० १, भा० क० व० ।

अङ्गनेर anga-ner–राज० पुं० खाजा–हिं० ।

अङ्गन्यास anga-nyása–हिं० संज्ञा पुं० मंत्रों द्वारा अङ्गों का स्पर्श ।

अङ्गपाक anga-páka–हिं० पुं०
अङ्गपाकता anga-pákatá–सं० स्त्री० } पित्तजन्य रोग, पके फोड़े के सदृश शरीरमें वेदना होना । वै० श० ।

अङ्गपालिः anga-pálih–सं० स्त्री० (An embrace) गोद, आलिंगन ।

अङ्गपीड़ा anga-pírá–सं० स्त्री० (Bodily pain) वायु जन्य रोग, शरीर व्यथा, गात्र-वेदना ।

अङ्गपूजितः anga-pújitah सं० पुं०अश्वतर, अश्वखरज, खच्चर घोड़ा । डंकी (Donkey, mule)–इं० । मद० व० १२ ।

अङ्गप्रसारणम् anga-prasáranam–सं० क्ली० कायविस्तार, शरीर का प्रस्तार, शिथिलता । वा० नि० ४ अ० ।

अङ्गबली anga-balí–सं० स्त्री० त्रिवलि, जठरावयव विशेष ।

अङ्गबार angabára–फ़ा० अञ्जबार (Polygonum bistorta, Linn.)

अङ्गबीं Angabín–फ़ा० शहद, मधु । honey (Mel) । स० फ़ा० इं० ।

अङ्गबीने ख़ुश्क angabíne khushka–फ़ा० खुश्कअबीं । एक प्रकार का शहद है जो अत्यन्त शुष्क होता है । गन्ध तीव्र होती है ।

अङ्गभङ्गः anga-bhangah–सं० पुं० (Yawning) १–अङ्गड़ाई, हड़फूटन, शरीर भङ्ग वा० उ० २ अ० सु० ४ अ० २–(Perineum) गुदा और वृषण अथवा भग के मध्य का भाग, मूलाधार। ३–(A disease) रोग। ४–(Nervous disease) वायुरोग। ५–(Palsy or paralysis of limbs) पक्षाघात।

अङ्गभूः angabhúh–सं० पुं० (A son) पुत्र। (२) Cupid–काम।

अङ्गभेदः anga-bhedah–सं० पुं० (Nervous pain) वायुरोग, वायुजन्य गात्रभङ्ग; शरीर में होने वाली पीड़ा। अथ० सू० ३० अ० ८–४०५।

अङ्गमर्द्दः anga-marddah–सं० पुं० (१) गात्रवेदना, देह की पीड़ा, अंगडाई। वा० सू० ४ अ०।

अङ्गमर्द्दकः angamardakah-सं० पुं० (Rheumatism) अंगमर्द्दित। अंगमर्ष, हड्डियोंका फूटना। हड्डियोंमें दर्द। हड़फूटन रोग। (२) संवाहक। अंग मलने वाला। हाथ पैर दबाने वाला। नौकर। सेवक (One who shampoos his master's body)

अङ्गमर्द्दनम् anga-marddanam–सं०क्ली० गात्रस्फोटन, शरीर का फूटना, वेदना, व्यथा।

अङ्गमर्द्द प्रशमनम् anga-mardda-prashamanam–सं०क्ली० वेदना शमन (शा०क), वेदना हर, व्यथा (व्यथ, रुक्, भेद) प्रशमन–हिं० मुख़द्दिरुल्अलम् (ए० व०), मुख़द्दिरातेअलम्, (ब० व०), मुसकिनुल्अलम् (ए० व०) मुसकिनाते अलम् (बहु० व०), मुफ़क्किदातुल् इह्सास–अ०। दाफ़ादर्द–फ़ा०। एनोडाइन्स (Anodynes) एनलजे (जे) सिक्स (Analgesics)–इं०।

उक्त प्रकार की औषधियां नाड़ी अथवा वात केन्द्रस्थ उत्तेजना एवं क्षोभ को दबाकर या धीमा करके वेदना शामक प्रभाव करती हैं। ऐसी औषधियां सम्वेदनाओं को मस्तिष्क तक पहुँचने से रोकती हैं। अस्तु वे संज्ञा को या तो उसके उद्भव स्थान पर अथवा वाहन पथ में, वा उस स्थान पर, जहां कि वे मस्तिष्क पर प्रभाव डालती हैं, अवरुद्ध कर देती हैं।

उक्त प्रकारकी औषधियों की सूची निम्न है—यथा—(१) डाक्टरीऔषधियाँ—ओपियम (अफीम), मॉर्फ़ीन (अफीम सत्व), बेलाडोना, अत्त्रीन या अम्त्रीन (ऐट्रोपीन), ब्युटिल क्लोरल, कोनाइम (शौकरान), हायोसाइमस (अजवाइन ख़ुरासानी), स्ट्रेमोनियम (धतूरा), केनाबिस इण्डिका (भंग), जेलसीमियम् (पीली चमेली की जड़), क्लोरल, जेनरल अनस्थेटिक्स (व्यापक अवसन्नता जनक औषधियां), फीनेज़ून, फेनेसीटीन, एसेटऐनिलाइड (ऐण्टिफ़ेब्रीन), रोग़न कायापुटी, लौंग तेल, इकोनाइटीन (विष-सत्व, विषीन), क्लोरोफॉर्म (सम्मोहनी), कोनाइन (सत्व शौकरान) केफ़ीन (कहाला सत्व), कैम्फर (कपूर), स्पिरिटस ईथरिस (Spiritus Ætheris)

(२) आयुर्वेदीय औषधियां—शालपर्णी, बृहती, कण्टकारी, एरण्डमूल, काकोली, रक्त चन्दन, उशीर (खस), बड़ी इलायची, मुलेठी चाकुल।

(३) आयुर्वेदीय व यूनानी औषधियाँ—अगरु, दारुहरिद्रा (रसौत), रक्तसेमल, पुन्नाग वृक्ष (सुल्तान चम्पा, सुर्पन), एरक (नागर मोथा), साल (साखू), पोहकरमूल (कुष्ट), अशोक, नीलोफर (नीलोत्पल), कमल (पद्म), धारकदम्ब (हल्दी), कायफल, यष्टिमधु (मुलेठी) मेथी, कैथ, हल्दी, देवदार, तुन, बड़ी इलायची, इं० मे० मे०। शेष यूनानी औषधियों तथा परिभाषाओं के लिए देखो—मुख़द्दिर और मुसक्किन।

नोट—उपर्युक्त औषधियों में से अफीम का प्रभाव प्रत्यक्ष एवं स्पष्ट होता है। यह संवेदना को उपरोल्लिखित सम्पूर्ण स्थलों पर अवरुद्ध कर व्यथा को नष्ट कर देती है। बेलाडोना संज्ञावहा वात नाड़ियों के क्षोभ को दबाकर उक्त प्रभाव करता है। तथा जेलसीमियम, क्लोरल हाइड्रेट और ब्युटल क्लोरल प्रभृति मस्तिष्क

सम्बन्धी केन्द्रों की उत्तेजना को कम करके ऐसा प्रभाव उत्पन्न करते हैं।

अंगमर्द प्रशमन औषधों का उपयोग—जब वेदनाधिक्य के कारण व्यग्रता एवं अनिद्रा जन्य कष्ट हो तो ऐसी दशा में डायरेक्ट जेनरल ऐनोडाइन्स (प्रत्यक्ष व्यापक वेदना शामक] को उपयोग में लाना चाहिए।

अस्तु, अफीम अथवा उसके सत्व मार्फीन (Morphine) का येन-केन-प्रकारेण प्रयोग अत्यन्त लाभदायी सिद्ध होता है। विशेषतः मार्फीन के त्वक्स्थ सूचि प्रवेश (अन्तः क्षेप) करने से वेदना तत्काल शांत हो जाती है।

युरिनस कॉलिक अर्थात् वृक्क वेदना में वेलाडोना को बड़ी मात्रा में उपयोग में लाने से बहुत लाभ होता है। किन्तु जब यह अभीष्ट हो कि वेदना तत्क्षण शान्त होजाय तो उक्त अवस्था में (General anœsthetic) व्यापक अवसादक औषध उपयोग में लाना चाहिए। यथा प्रसवकाल व यकृत वेदना तथा वृक्क वेदना प्रभृति में फेनेजून जेलसीमियम और ब्यूटिल क्लोरल प्रभृति वात वेदनाओं में अधिक लाभ दायी होते हैं।

अङ्गमेजयत्वम् angamejayatvam-सं० क्ली० अङ्गकम्पन, देहकम्प, शरीर का काँपना। (Shivering)

अङ्गरक्तः anga-raktah-सं० पुं० (Monkey face tree) कम्पिल्ल, कमीला। कमला गुँडि-बं०। अम०।

अङ्गरक्षिणी anga-rakshiṇí-सं० स्त्री० अङ्गत्राण। साँजोया-बं०। वै० श०।

अङ्गरा anghará-यु० Hibiscus Rosa-sinensis, *Linn.* (Flowers of-) गुड़हल, जपापुष्प-सं०। उड़उल-हिं०।

अङ्गरागः anga-rágah-सं० पुं० अङ्गलेपन द्रव्य। यथा—कुङ्कुमादि अनुलेपन द्रव्य, लेप, गात्र रञ्जन द्रव्य। (Scented cosmetic application of perfumed unguents to the body, Fragrant unguent, Liniment.) मालिश-फा०। (२) (Act. of anointing) अनुलेप करना।

अङ्गराए-हिन्दी angharáe-hindí-अ०, फ़ा० फ़ा० अड़उल, गुड़हल, जवा, जसून-हिं०। जासूत, गुड़ेल, कुदल-द०। जपा-पुष्पम्-सं० Hibiscus rosa-sinensis, *Linn.* (Flowers of-)-स० फा० इं०।

अङ्गरापान angará-pána-हिं० ताम्बूल भेद (A sort of betel)

अङ्गरुहम् anga-ruham-सं० क्ली० (Hair) रोम, बाल, लोम।

अङ्गरुहा anga-ruhá-सं० स्त्री० (Hair) लोम, केश।

अङ्गलाघवम् anga-lághavam-सं० क्ली० (Lightness of the body.) कायलघुत्व, शरीर का हल्कापन। वा० उ० १९ अ०।

अङ्गलीह्न anga-líhna-हिं० पुं० सुम्बुलख़ताई, बालछड़ भेद (Garden angelica) इं० हैं० गा०।

अङ्गलेपः anga-lepah-सं० पुं० चन्दनादि द्रव्य, अनुलेपन, लेप (Liniment.)।

अङ्गलेपन anga-lepana-सं० पुं० (१) उबटन (A paste for scouring the skin) (२) The hair wash। फा० इं० २ भा०।

अङ्गलोड्यः anga-lodyah सं० पुं० (१) आर्द्रक, आर्द्री-हिं०। आदा-बं०। Ginger (Amomum Zinziber.) (२) Marsilea Dentata-चिञ्चोटक वृक्ष।

अङ्गवः agnavaḥ-सं० पुं० (Dryfruit) शुष्क फल, सूखा हुआ फल। श० च०।

अङ्गवस्त्रोत्था anga-vastrotthá-सं० स्त्री० (White Ajowan-fruit) श्वेत यमानी, सुफेद अजवाइन। ओयान-बं०। वै० श०।

अङ्गविकल anga-vikala-हिं० वि० (Maimed, paralysed) विकलाङ्ग (Fainting) मूर्च्छा।

अङ्गविकारः angavikárah–सं० (A bodily defect.) शारीरिक दोष।

अङ्गविकृतिः anga-vikritih–सं० पुं० (१) अपस्मार रोग, मृगी वा मिरगी रोग, मूर्च्छारोग (apoplexy, an apoplectic fit.) रा० नि० व० २० (२) Change of bodily appearance; collapse. गात्र-संकोच।

अङ्गविभ्रंशः anga-vibhranshah–सं० पुं० काय शैथिल्यरूप-वायुज रोग। भा०।

अङ्गविक्षेपः anga-vikshepah–सं० पुं० अङ्गहार, अङ्गचालन, अंग (हाथ पाँव) फेंकना, (Spasm)। वा० उ० २ अ०। (२) Gesticulation. हाव भाव।

अङ्गशूलम् angashúlam–सं० क्ली० (Bodily pain) गात्रतोद, गात्रशूल, शारीरिक वेदना। वै० श०।

अङ्गशोथः angashothah–सं० पुं० (Swelling of the body) कायशोथ, शरीर की सूजन।

अङ्गशोषणम् anga-shoshanam–सं० क्ली० अंग की शुष्कता (रूक्षता), शरीर का सूखना। वा० उ० ३ अ०।

अङ्गशोषः anga-shoshaha–सं० पुं० वायुज रोग विशेष, गात्रक्षीणता, देह का सूखना, क्षय (Consumption)।

अङ्गस angasa–सं० पुं० पक्षी (A bird)

अङ्गसङ्गम–anga-sangama–सं० क्ली० रति-संयोग, संभोग, मैथुन, स्त्रीप्रसङ्ग (Coition, Copulation)

अङ्गसदनम् anga-sadanam–सं० क्ली० (Depression) शरीरावसाद, अंग की शिथिलता, अवसन्नता, जड़ता। वा० नि० १२ अ०।

अङ्गसादः anga-sádah–सं० पुं० (Depression) अवसाद, अवसन्नता। हारा०।

अङ्गसुन्दरः anga-sundarah सं० पुं० १-(Cassia Tora) चक्रमर्द, दद्रुघ्न वृक्ष चँकवड़-हिं०। दादमर्दन-बं०। अम०। (२) (Aloe wood) अगर।

अङ्गसुप्तिः anga-suptih–सं० स्त्री० (anæsthesia) स्पर्शा ज्ञता, शरीर स्वाप, अंग का सुन्न अथवा जड़ हो जाना, अवसन्नता। गात्रेर असाड़ता-बं०।

अङ्गसेनः anga-senah–सं० पुं० अगस्तिद्रुम अगस्तिया। बाकस गाछ–बं०। रत्ना०। (agti grandiflora, *Desv.*)

अङ्गसंहतिः anga-sanhatih सं० स्त्री० (१) Compactness, symmetry. शारीर का गठाव।
(२) Body शरीर (३) Strength of the body शरीर बल।

अङ्गस्तूरा छाल angastúrá chhála–हिं०
अङ्गस्तूरा त्वक् angastúrá-tvak–हिं०
अङ्गस्तूरा बार्क angustura-bark–इं०

कस्पेरीई कॉर्टेक्स (Cuspariæ cortex) –ले० कृश्न अङ्गस्तूरा, पोस्त अंगस्तूरा–नि०।
कस्पेरिया बार्क (Cusparia bark)–इं०
रयूटेसोई अर्थात् नागरङ्ग वर्ग।
(N. O. Rutaceæ)
(ऑफ़ीशल–official)

उत्पत्ति स्थान—दक्षिणी अमेरिकाके उष्णप्रदेश।

लक्षण—उपर्युक्त औषधि कस्पेरिया फ़ेब्रिफ़्यूजा (Cusparia Febrifuga) वृक्ष की सूखी हुई छाल है जो औषधि तुल्य प्रयोग में आती है। ये सपाट, वक्राकार या एक दूसरे पर लिपटे हुए टुकड़े हैं जो ६ इं० या इससे अधिक लम्बे, १ इञ्च चौड़े, $\frac{1}{12}$ इञ्च मोटे होते हैं। त्वचा का बाह्यतल चिह्नयुक्त एवं पीताभायुक्त धूसरवर्ण का होता है, यह ऊपरी त्वचा सरलता पूर्वक भिन्न की जा सकती है और इसके अन्तः तलसे श्याम धूसरवर्ण की रेज़िन (राल) जैसी तह निकल आती है। भीतरी तल सूक्ष्म धूसर वर्ण का होता है। यह छाल बहुधा परतदार और कठोर होती है और इसको जहां से तोड़ें वहीं से टूट जाती है। टूटा हुआ तल रालयुक्त दृष्टिगोचर होता है। गन्ध—अप्रिय। स्वाद—तिक्त वा उष्ण।

परीक्षा –कुचिला वृक्ष की छाल स्वरूप आकृति में इस उपर्युक्त छाल के समान होती है। इस कारण इसमें प्रायः उसका मिश्रण किया जाता है। इसकी एक साधारण परीक्षा यह है कि कुचिला वृक्ष की छाल के भीतरी तलपर शोराम्ल (Nitric acid) के लगानेसे उसमें ब्रूसीन होने के कारण रक्तवर्ण उत्पन्न हो जाता है। जिससे इसकी ठीक परीक्षा हो सकती है।

रसायनिक सङ्गठन—इसमें ये निम्न चार अलकलाइड्स [क्षारीय सत्व] होते हैं: यथा- (१) एक तिक्त सत्व कस्पेरीन, (२) गैलेपीन (३) गैलेपीडीन, (४) कस्पेरीडीन और एक सुगन्धित तैल।

संयोगविरुद्ध (असम्मिलन)–खनिजाम्ल और धातु लवण।

प्रभाव–सुगन्धित एवं तिक्त, बलप्रद और ज्वरघ्न। अधिक परिमाण में उपयोग में लानेसे यह आमाशय एवं आँतों में प्रदाह उत्पन्न करता है। यूरुपमें इसको कैलम्बा के सदृश क्षुधावर्द्धन हेतु अजीर्ण तथा निर्बलता में बरतते हैं। परन्तु इसमें ज्वरघ्न प्रभाव होने के कारण अमेरिका में इसे विषम ज्वर और प्रवाहिका में उपयोग में लाते हैं।

ऑफिशल योग [Official preparations. (१) इन्फ्यूज़म् कस्पेरी [Infusum Cuspariæ.], इन्फ्यूज़न ऑफ कस्पेरिया [Infusion of Cusparia]–डॉ० ना०। अंगस्तूरा फांट–हिं० । त्रिसाँदहे अंगस्तूरा ती० ना०।

निर्माण-विधि–कस्पेरिया बार्क का चूर्ण एक औंस, खौलता हुआ परिस्रुत जल एक पाइंट, १५ मिनट तक भिगोकर छाम लें।

मात्रा–१ से २ फ्लुइड औंस (२८·४ से ५६·८ क्यु० से०)

(२) लाइकार कस्पेरी कन्सेण्ट्रेटस (Liquor Cuspariæ Concentratus) –ले०। कन्सेण्ट्रेटेड सोल्युशन ऑफ़ कस्पेरिया Concentrated Solution of Cusparia.–इं० । अंगस्तूरा घन द्रव–हिं०। साइल अंगस्तूरा ग़लीज़–ति० ना०।

निर्माण-विधि–कस्पेरिया बार्क का ४० नं० का चूर्ण १० औंस, अलकुहॉल (२०%) २५ फ्लुइड औंस या आवश्यकतानुसार, कस्पेरिया को ५ फ्लुइड औंस अलकोहाल से तर कर के पर्कोलेटर में जमा दें और तीन दिन तक पृथक् रख दें। पुनः अवशिष्ट अलकुहाल को १० बराबर भागों में विभाजित कर के १२–१२ घंटे के अन्तर से एक–एक भाग अलकुहाल डालकर इसे पर्कोलेट कर लें, यहां तक कि एक पाइंट द्रव प्राप्त हो जाए।

मात्रा–आधे से १ फ्लुइड ड्राम (१.८ से ३.३६ क्यु० से०)

परीक्षित–प्रयोग

(१) टिङ्क्चूरा कस्पेरीई ½ फ्लु० ड्रा०, टिङ्क्चूरा कैप्सिसाई ५ बूंद (मिनिम), सोडियाई बाइकार्ब १५ ग्रेन, इन्फ्युज़म रीहाई ½ औंस पर्यन्त ऐसी एक–एक मात्रा औषध दिन में ३ बार दें। गुण–एटोनिक डिस्पेप्सिया (आमाशयिक निर्बलता जन्य अजीर्ण में लाभजनक है।

(२) टिङ्क्चुरा आरन्शियाई ३० मिनिम, स्पिरिट एमोनिया ऐरोमैटिक १५ मिनिम, सिरूपस ज़िञ्जिबेरिस ३० मिनिम, इन्फ्युज़म् कस्पेरीई १ औंस पर्यन्त, ऐसी १–१ मात्रा औषधि दिन में तीन बार दें। बल्य (टानिक) है।

अङ्गहर्षः anga-harshah.–सं० पुं० (Horripilation.) रोमाञ्च, रोमहर्ष, रोंगटे खड़े होना। वा० नि० ३ अ०।

अङ्गहारः anga-hárah.–सं० पुं० अंगचालन, अंग विक्षेप। (spasm.)। (२) gesticulation, a dance. नृत्य।

अंगहीनः anga-hinah.-सं० त्रि० (Having some defective limb.) अंगरहित, विकलांग, जैसे काणादि (काना प्रभृति)। (२)crippled लुंग।

अङ्गाकर angákara.-ते० धारकरेला, किरार, (Momordica Dioica, *Roxb.*) फा० इं० २ भा०।

अङ्गारः angárah–सं० पुं० १–(Firebrand or embers)अँगार,अँगरा, निधूम

अग्निपिंड (बिना धुएँ की आग), आग का दहकता हुआ कोयला, जलता हुआ टुकड़ा यथा—"बृहतः काष्ठसम्भूतोऽङ्गारः।" वा० सू० ६ अ० अग्न्यः। २–अंगारपूर्ण पात्र, वह बर्तन जिसमें अंगार रखा हुआ हो। ३-Yellow amaranth) कुरुण्टक वृक्ष। झांटी विशेष, पीली कटसरैया, पीतवर्ण, अम्लान वृक्ष। रत्ना०। ४ (Musk melon)-इं० हैं० गा०। ५–चिनगारी। ६–Charcoal, (whether heated or not)

अङ्गारं angáram–सं० क्ली० (Red colour) रक्तवर्ण।

अङ्गारकः angárakah–सं०पुं० १–कोयला। (A spark, embers) अंगारा, अंगार। २–कुरुण्टक, कटसरैया का पेड़, पियाबाँसा–हिं०। झांटी जाति–बं०। (Yellow or white amaranth) मे० कचतुष्क। ३–(wedelia calendulacea, *Less.*) भृङ्गराज, भांगरा, भँगरा, भँगरैया। रा० नि० वा० ४। भा० पू० १ भा० गु० व०। ४–(Barleria prionitis, *Linn.*) कटसरैया (पात)। ५–कोयला (Charcoal.)

अङ्गारक तैलम्, **अङ्गारतैल** } angáraka-tailam-सं० क्लो० कुठारा ४०० तो० भर लेकर १०२४ तोले पानी में पकाएँ, जब चतुर्थांश शेष रहे तो इसमें ६४ तो० तिल तैल डाल कर पकाएँ, तथा इसमें कुठारा, अपामार्ग, प्रोष्टिका नामक मच्छी इनका कल्क बनाकर उक्ततेलमें डाल कर सिद्ध करें तो यह तैल घावों का शीघ्र शोधन कर अंकुर लाताहै और इसकी मालिशसे नाड़ियां सबल होती हैं। चक्र० द० अ० गु० शो० चि०।

(२) मरोड़फली, लाख, हल्दी, मजीठ, इन्द्रायन, बड़ी कटेली, सेंधानमक, कूट, रास्ना, जटामांसी, शतावर, इनका कल्क बनाएँ, २५६ तो० आरनाल नामक कांजी और ६४ तो० तिल तैल मिला तैल सिद्ध करें। इसकी मालिशसे हर प्रकार के ज्वर नष्ट होते हैं।

चक्र० द०
भैष० र०
बं० से० सं० } ज्वर० चि०

नोटः—द्राक्षामूर्वा हरिद्रे द्वे मंजिष्ठा चेन्द्रवारुणी, बृहती सैन्धवं कुष्ठं रास्नामांसी शतावरी। यो० त०। अर्थात् इसमें दाख और दोनों हल्दी ली हैं।

अङ्गारक मणिः angáraka-maṇih सं० पुं० प्रवाल, मूंगा–हिं०। कोरल (Coral) -इं०। र० नि० व० १३।

अङ्गारकर्कटी angára-karkaṭí–सं० स्त्री० (Balls or thick cakes of bread baked on coal) अंगार की रोटी अर्थात् लिट्टी, बाटी–हिं०। रोटिका–सं०। रुटी–बं०।

प्रस्तुतविधि—गेहूं अथवा चना प्रभृति के आटे को जल के साथ मर्दन कर कठोर कर लें। पश्चात् उसमें से थोड़ा २ लेकर चपटी २ अथवा गोल वटी के आकार के बाटी बनाएँ, पुनः उन्हें धूम्र रहित अग्नि पर शनैः शनैः पकाएँ। बस यही अंगार कर्कटी है। गुण—यह बृंहणी, शुक्रल, लघु, दीपनी, कफ कारक, बलकारक तथा पीनस श्वास और कास को जीतने वाली है। वैद्य० नि० भा०।

अङ्गारकित angárakita–हिं० वि० (Charred, roasted) भृष्ट, भुना हुआ, अंगार पर पकाया हुआ।

अङ्गार की बटी angāra kí baṭí–हिं०
अङ्गारकी लिट्टी angára kí liṭṭí–हिं० }
देखो—अङ्गार कर्कटी।

अङ्गारह् angárah–उ० सांसर्गिक कृमि। देखो अंथ्राक्स (Anthrax)–इं०।

अङ्गारह्‌का टीका angárah-ká-ṭiká–उ० सांसर्गिक कृमिघ्न सीरम। देखो–एरिट अन्थ्राक्स सीरम स्क्लेवॉस (Anti Anthrax Serum Sclavos)–इं०।

अङ्गार कुष्ठका angára-kushṭhaká–सं० स्त्री० हिंतावली। हिंगोट, हिंगावली–हिं०। (Ingua)

अङ्गार धानिका angára-dhániká–सं० स्त्री० (A portable fire-pan, brazier) अंगेठी, अंगार धारण पात्र, अंगार (आग) रखने

का बरतन, बोरसी-हिं० । सँगड़ाल बं० । आतिशदान-फा० ।

अङ्गार धूपः angára-dhúpah-सं० पुं० (Incense, aromatic vapour) अंगार पर किसी औषधि को डालने से जो धूम्र निकलता है उसे अङ्गारधूप कहते हैं, वा० चि० ८ अ० ।

अङ्गार परिपाचितम् angára-paripách-itam-सं० क्ली० (१) शूलादि पक्वमांस, लौह शलाका आदि पर पकाया हुआ मांस (Roasted food) (२) त्रि० अंगार पक्व, अंगारा पर पकाया हुआ ।

अङ्गारपर्णी angára-parní-सं० स्त्री०, (Clerodendron Serratum, *Spreng.*) भार्गी, भारंगी । बामण हाटी-बं० । र० सा० सं० ।

अङ्गार (क) पुष्पः angára-k-pushpah -सं० पुं० Balanites Roxburghii, *Planch.* जीवपुत्रद्रुम । जियापोता-हिं० । इंगुदी -बं० । (Ingua) श० र० । हिंगुआ, गोंदी । इंगुदी वृक्ष जिसके फल अंगार के समान लाल होते हैं, हिंगोट का पेड़ ।

अङ्गारपात्री angárapátri-सं० स्त्री० (A. portable fire-pan) बोरसी ।

अङ्गारपूरिका angára-púriká-सं० स्त्री० (Bread) रोटक; रोटी । रूटी-बं० ।

अङ्गारमञ्जरी angára-manjarí } -सं०
अङ्गार मञ्जी angára-manji } -स्त्री०
करञ्ज विशेष (a species of Bonduc or Bonducella) श० र० । महा करञ्ज -हिं० । डहर करञ्ज-बं० । रा० नि० व० ६ अ० ।

अङ्गारमणिः angára-manih-सं० पुं० (Coral) प्रवाल, मूंगा ।

अङ्गारवर्णी angára-varní-सं० स्त्री०, (Clerodendron Serratum, *Spreng.*) भार्गी, भारंगी । बामन हाटी-बं० ।

अङ्गारवल्लरी angára-vallarí-सं० स्त्री० करञ्ज विशेष (Ovieda verticulata.) भाषा में नाटा करञ्ज कहते हैं ।

अङ्गारवल्ली angára-vallí-सं० स्त्री० १-(Cæsalpinia Bonducella, *Roxb*) महाकरञ्ज, रक्तकरञ्ज । २-(Clerodendron serratum, *Spreng.*) भार्गी । वा० सू० १५ अ० । सुरसादि । ३-(Ocimum album, *Linn.*) सुरसादि तुलसी । भा० पू० १ भा० । ४-(abrus precatorius, *Linn.*) गुञ्जा लता, घूंघची की बेल । चिरमटी की बेल हिं० । बं० । भा० पू० अनेक व० । (५) कटुकरञ्ज, करञ्ज वल्ली । (६) रक्तगुञ्जा (लालघुंघची) । भ० पू० १ भा० गु० व० ।

अङ्गारवृक्षः angára-vrikshah-सं० पुं० १-(Balanites Roxburghii, *Planch.*) इंगुदीवृक्ष । हिंगोट-हिं० । भा० पू० १ भा० वटा० । रत्ना० । (२) पूतिकरञ्ज ।

अङ्गारवेणुः angára-venuh-सं० पुं० (Bambusaarundinacea, *Retz.* The red variety) रक्तवर्ण वंश विशेष, लालबाँस ।

अङ्गारशकटी angáraṣhakaṭí-सं० स्त्री० (A portable fire pan) चुल्लि, चुल्ली, चूल्हा (-ल्ही)-हिं० । चुलाँ-बं० ।

अङ्गारा angárá-सं० स्त्री० (Ingua) हिताबली । इंगुदी वृक्ष, हिंगोट । प० मु० । जियापुता -बं० ।

अङ्गारिका angáriká सं० स्त्री० १ इक्षुकाण्ड, ईख का तना (The stalk of the-sugar-can) २-(Butea frondosa, *Roxb.*) किंशुककोरक, पलाश की कली मे० कचतुष्क (३) The bud of the tree किंशुक-कली । (४) चूल्हा (A portable fire-pan)

अङ्गारिणी angáriní-सं० स्त्री० (A small fire-pan) छोटी कड़ाही, अंगारि ।

(२) अंगेठी, बोरसी, आतिशदान (३) (A creeper in general) लता।

अङ्गारित angárita-सं० त्रि० (Roasted, half-burnt) भूना, अधभूना,। आ० सं० इं० डि०।

अङ्गारितम् angáritam-सं० क्लो० (The early bud of Butea frondosa.) पलाश (किंशुक) की आरम्भकालिक कलियाँ, किंशुक-कोरक, पलाश कलिकोद्गम, हारा०।

अङ्गारिता angáritá-सं० स्त्री० १—(A creeper in general) लतामात्र— अंगारधानी, चुल्लि, चूल्हा मे० चतुष्क। ३—(A bud in general) कली।

अङ्गारी angárí-सं० स्त्री० (A portable fire-pan) छोटी कड़ाही। आ० सं० इं० डि०।

अङ्गारीय angáríya-सं० त्रि०, कोयला बनाने में प्रयुक्त होना, (To be used in preparing coal)

अङ्गार्कित angárkita-सं० (Fried) भूना हुआ। आ० सं० इं० डि०।

अङ्गिका angiká-सं० स्त्री० कञ्चुक, सर्पका काँचुल, (The skin of a serpent, slough.)

अङ्गिरः angirah-सं० पुं० (Partridge) तित्तर पक्षी, तीतर।

अङ्गिरसीः angirasíh- सं०त्रि० (१) अंग या शरीर में रस उत्पन्न करने वाली औषध। (२) शरीर शास्त्र वेत्ता। (अथ० सू० ७, १७, का० ८)।

अङ्गुएण्टम् unguentum-लें० (ए० व०) अंग्वेण्टा Unguenta (ब० व०) ऑइण्टमेण्ट Ointment (ए० व०) ऑइंट मेण्ट्स Ointments (ब० व०)-इं०। मलहम, अनुलेप-हिं०। मर्हम् (ए० व०), मराहम (ब० व०)-अ०, फ़ा०।

अंग्वेण्टम् अर्थात् मलहम एक या अनेक औषधों को किसी प्रकार की वसा या तैल प्रभृति में मिलाकर निर्मित किया हुआ एक अर्ध तरल या मृदु यौगिक है, जो केवल बाह्यरूप से उपयोग में लाया जाता है। मलहम प्रस्तुती करण में निम्नांकित वसामय तैलीय पदार्थ बेसिस (मुख्य अवयव) रूप से अकेले अथवा एक दो मिलाकर उपयोग में आते हैं, यथा—(१) विशुद्ध भेड़ की वसा, (२) शूकर वसा, (३) शूकर की लोबान युक्त बसा, (४) ह्वेल मत्स्य के शिर की वसा, (५) मेष ऊर्णवसा, (६) मोम, (७) जैतून तैल, (८) बादाम तैल, और (९) पैराफ़ीन। सूचना—उष्ण देशों में जहां ऊष्माधिक्य के कारण मलहम अत्यन्त मृदु हो जाती है, वहां पर साधारण बेसिस के स्थान में हार्डयोर्ड लार्ड) दबाकर कठोर की हुई) शूकर वसा, विशुद्ध भेड़ की वसा और श्वेत वा पीत मोम उपयोग में ला सकते हैं।

अङ्गुएण्टम् आयोडाई Unguentum iodi-लें० आयोडीनानुलेपन, नैलिक प्रलेप (Iodine ointment)। संयोगी अवयव-आयोडीन (नैलिका), पोटाशियम् (पांशुजम्), आयोडाइड (नैलिद), मधुरीन (ग्लीसरीन) लार्ड (शूकर वसा)। शक्ति ४%। देखो—आयोडम्। ब्रि० फा०।

अङ्गुएण्टम् आयोडो-पैराफ़ीनी Unguentum Iodoparaffini-लें० नैल-पैराफ़ीन प्रलेप। देखो—आयोडोफ़ॉर्म।

अङ्गुएण्टम् आयोडोफ़ॉर्माई Unguentum Iodoformi-लें० आयोडोफ़ॉर्म प्रलेप। (Iodoform ointment)। संयोगी अवयव-आयोडोफ़ॉर्म तथा शूकर वसा (लार्ड या पैराफ़ीन ऑइण्टमेण्ट) शक्ति—१० %। देखो-आयोडोफ़ॉर्म। बी० पी०।

अङ्गुएण्टम् आयोडोफ़ॉर्माई कम एट्रोपीना unguentum Iodoformi cum atropina-लें० धत्तूरीन व आयोडोफार्म प्रलेप। देखो-आयोडोफ़ॉर्म।

अङ्गुएण्टम् ऑलियो रेज़ाइनी कैप्सिसाई unguentum oleo-resinæ capsici-लें० रक्त मिर्च प्रलेप।

अङ्गुएण्टम् इक्थिऑल unguentum ichthyol–**ले० इक्थिऑल** प्रलेप।

अङ्गुएण्टम् इकोनाइटीनी unguentum aconitinæ–**ले०** विषीन वा **वत्सनाभीनानु** लेपन (aconite ointment) **संयोगी अवयव** एकोनाइटीन (वत्सनाभीन), शूकर वसा (लार्ड) ऑलीइक एसिड। शक्ति–२% देखो-वत्सनाभ। बी० पी०।

अङ्गुएण्टम् एक्वीरोज़ी unguentum aquæ rosæ–**ले० गुलाब जलानुलेपन** (Rose water ointment) **संयोगी अवयव**–गुलाब जल (रोज वाटर), ह्वाइट बीज़वैक्स (श्वेत मधूच्छिष्ट), बोरैक्स (टङ्कण), आमण्ड ऑइल (बादाम तैल) तथा गुलाब तैल (ऑइल ऑफ़ रोज़) शक्ति–२०% (१६ में ७ रोज़ वाटर) देखो–**एक्वा रोज़ी**।

अङ्गुएण्टम् एमॉलिएन्स unguentum Emolliens **ले० अङ्गुवेण्टम् एका** रोज़ी (गुलाबार्क प्रलेप। देखो **गुलाब वा एक्वा रोज़ी**।

अङ्गुएण्टम् एलिमाई unguentum elemi –ले० एलीमाई प्रलेप। देखो– अरण्य बातादि (नं० ३)

अङ्गुएण्टम् एसिडाई कार्बोलिसाई unguentum acidi carbolici–**ले०** कार्बोलिकाम्ल प्रलेप। (Carbolic ointment) **संयोगी अवयव**–फेनोल, ह्वाइट पैराफ़ीन ऑइण्टमेण्ट। शक्ति ३%। देखो–**एसिडम् कार्बोलिकम्**।

अङ्गुएण्टम् एसिडाई बोरिसाई unguentum acidi borici-**ले०, टङ्कणाम्ल प्रलेप** (Boric ointment)। **संयोगी अवयव** बोरिक एसिड (टंकणाम्ल), ह्वाइट पैराफ़ीन आइण्टमेण्ट। शक्ति–१०%। देखो–एसिडम बोरिकम्। बी० पी०।

अङ्गुएण्टम् एसिडाई सैलिसिलिसाई unguentum acidi salicylici–**ले० सैलिसिलिकाम्ल प्रलेप** (Salicylic Acid ointment.) **संयोगी अवयव**–सैलिसिलिक एसिड, ह्वाइट पैराफ़ीन आइण्टमेण्ट। शक्ति-२%। देखो–एसिडम् सैलिसिलिकम्। बी० पी०।

अङ्गुएण्टम् एट्रोपीनी unguentum atropinæ.-**ले० धत्तूरीन प्रलेप** (Atropine ointment) **संयोगी अवयव**–ऐट्रोपीन (धत्तूरीन), ऑलीइक एसिड, लार्ड (शूकर वसा)। शक्ति-२%। देखो–बिलाडोना। बी० पी०।

अङ्गुएण्टम् ऐट्रोपीनी कम एसिडो बोरिको unguentum atropinæ cum acido borico–**ले०** धत्तूरीन व **टंकणाम्ल** प्रलेप। **संयोगी अवयव**–ऐट्रोपीन, बोरिक एसिड तथा सॉफ्ट पैराफ़ीन। देखो–बिलाडोना।

अङ्गुएण्टम् एट्रोपीनी कम कोकीनी unguentum atropinæ cum cocainæ -**ले०** धत्तूरीन व कोकीन प्रलेप। **संयोगी अवयव**–ऐट्रोपीन, कोकीन तथा सॉफ्टपैराफीन। देखो–बिलाडोना।

अङ्गुएण्टम् ऐट्रोपीनी डाइल्यूटम् unguentum atropinæ dilutum–**ले०** जल मिश्रित (हलका किया हुआ) धत्तूरीन प्रलेप। **संयोगी अवयव**–ऐट्रोपीन तथा पीत मृदु पैराफ़ीन। देखो–बिलाडोना।

अङ्गुएण्टम् ऐण्टिमोनियाई टार्टरेटी unguentum antimonii tartaratæ –**ले०** टार्टरेटीय अञ्जन प्रलेप, **वामककनमक** प्रलेप (ointment of tartarated antimony)। **संयोगी अवयव**–टार्टरेटेड ऐण्टिमनी, सिम्पल ऑइण्टमेण्ट। देखो–अञ्जन।

अङ्गुएण्टम् ओपियाई unguentum Opii –**ले०** अहिफेनानुलेपन, **अफीम प्रलेप** (opium Ointment)। **संयोगी अवयव**–एक्सट्रैक्ट ऑफ ओपिअम् (अहिफेन सत्व), स्पर्मैसेटाई ऑइण्टमेण्ट। देखो–पोस्तान्तर्गत (अफीम)

अङ्गुएण्टम् कॉक्युलाई unguentum cocculi–**ले० काकमारी प्रलेप** (Kakmari ointment)। **संयोगी अवयव**-काकमारी बीज, प्रीपेयर्ड लार्ड। देखो-काकमारी।

अङ्गुएएटम् केओलीनी unguentum kaolini—ले० केओलीन (चीन मृत्तिका) प्रलेप। संयोगी अवयव—वैज़ेलीन, हार्ड पैराफ़ीन, केओलीन। देखो—केओलीनम्।

अङ्गुएएटम् कैन्थेरीडाइनाई unguentum cantheri dini—ले० तेलनी मक्खी प्रलेप (Cantheridies ointment)। संयोगी अवयव—कैन्थेरीडीन, बेंज़ोएटेड लार्ड, क्लोरोफार्म। शक्ति—०·०३३%। बी० पी०। देखो—कैन्थेरिस।

अङ्गुएएटम् कैप्सिसाइ unguentum capsici—ले० कुमिरच (रक्त मिरचा) प्रलेप। (capsicum ointment, chilly paint)। संयोगी अवयव—कैप्सिकम् फ्रूट (रक्त मिरच), हार्ड एण्ड सॉफ्ट पैराफ़ीन (कठिन व मृदु पैराफ़ीन) और लार्ड (शूकर वसा)। शक्ति २५%। देखो रक्त मिरच बी० पी०।

अङ्गुएएटम् कोकीनी unguentum cocainæ)—ले० कोकीन प्रलेप (cocain ointment) संयोगी अवयव—कोकीन ऑलीइक एसिड तथा लार्ड। शक्ति ४%। देखो—कोका। बी० पी०।

अङ्गुएएटम् कोनियाई unguentum conii —ले० शूकरान लेप। (conium ointment)। संयोगी अवयव—जूस ऑफ कोनाइम (शूकरान स्वरस) हाइड्रस वूल फैट। शक्ति १ में २। देखो—कोनाइम्। बी० पी०।

अङ्गुएएटम् क्युप्राई ऑलिएटिस unguentum cupri oleatis—ले० ताम्र ऑलिएट प्रलेप। संयोगी अवयव कॉपर ऑलिएट, सॉफ्ट पैरीफ़ीन। देखो--ताम्र।

अङ्गुएएटम् क्राईसारोबाईनाई unguentum Chrysarobini—ले० क्राईसारोबीन प्रलेप (Chrysarobin ointment) संयोगी अवयव—क्राइसारोबीन और सॉफ्ट पैराफ़ीन (या बेन्ज़ोएटेड लार्ड)। शक्ति—४%। देखो—अरारोबा। बी० पी०।

क्रियोज़ूटाई unguentum creosoti क्रियोज़ूट प्रलेप (Creosote ointment) संयोगी अवयव-क्रियोज़ूट, हार्ड एण्ड सॉफ्ट (व्हाइट) पैराफ़ीन। शक्ति—१०% देखो—क्रियोज़ूट। बी० पी०।

अङ्गुएएटम् गाइनोकार्डीई unguentum gynocardiæ—ले० चॉलमूगरा प्रलेप (Ointment of chaulmogra oil) संयोगी अवयव—चॉलमूगरा तैल, हार्ड और सॉफ्ट पैराफीन देखो—चॉलमूगरा। शक्ति—१०%। बी० पी०।

अङ्गुएएटम् गॉली unguentum gallæ —ले० माई (माजू) प्रलेप (gall ointment) संयोगी अवयव—गॉल्ज़ (माई) तथा बेन्ज़ोएटेड लार्ड। शक्ति—२०%। देखो—माई। बी० पी०।

अङ्गुएएटम् गॉली कम् ओपियो unguentum gallæ cum opio—ले० माई व अहिफेन प्रलेप (Gall and opuim ointment) संयोगी अवयव—गॉल ऑइण्टमेण्ट तथा ओपिअम् (अफीम)। शक्ति—७½%। देखो—माई। बी० पी०।

अङ्गुएएटम् चॉलमूग्री unguentum chaulmoogræ—ले० अङ्गुएएटम् गाइनोकार्डीई। चॉलमूगरा प्रलेप। बी० पी०।

अङ्गुएएटम् ग्लीसराइनाई प्लम्बाई सबएसिटेटिस unguentum glycerini plumbi subacetatis—ले० मधुर सीसक सबएसीटेट प्रलेप (glycerin of lead Subacetate ointment)
संयोगी अवयव—सबएसीटेट, व्हाइट पैराफ़ीन ऑइण्टमेण्ट। देखो सीसक।

अङ्गुएएटम् ज़िन्साई unguentum zinci—ले० यशद प्रलेप (Zinc ointment)। संयोगी अवयव—ज़िङ्क ऑक्साइड (यशद भस्म) बेंज़ोएटेड लार्ड। शक्ति—१५%। देखो यशदम्। बी० पी०।

अङ्गुएएटम् ज़िन्साई ऑलिएटिस unguentum zinci oleatis—ले० यशद

ऑलिएट प्रलेप (zinc oleate ointment) संयोगी अवयव ज़िङ्क आलिएट। ज़िंक सल्फेट, हार्ड सोप, जल, ह्वाइट सॉफ्ट पैराफ़ीन शक्ति ४०%। ब्री० फा० देखो–यशद।

अङ्गुएण्टम् ज़िन्साई कम एसिडो सैलिसिलिको unguentum zinci cum acido salicylico–ले० यशद व सैलिसिलिकाम्ल प्रलेप। संयोगी-अवयव सैलिसिलिक एसिड, जिंक आइण्टमेण्ट, सॉफ्ट पैराफ़ीन। देखो–यशदम्।

अङ्गुएण्टम् डायाकिलाई unguentum Diachyli–ले० हेब्रास प्रलेप (Hebras ointment) संयोगी अवयव लेडप्लास्टर, आइल आफ लैवेण्डर। देखो–सीसकम्।

अङ्गुएण्टम् थाइमोल unguentum thymol–ले० थाइमोल (वन पुदीना) प्रलेप। संयोगी अवयव वैज़ेलीन व थाइमोल। देखो—थाइमोल, पुदीना।

अङ्गुएण्टम् नेफ्थोलिस unguentum naphtholis-ले० नैफ़थोल (कपूर कोलटार) प्रलेप (Kaposis ointment)। संयोगी अवयव–बीटा नैफ़थोल तथा लार्ड। देखो–नैफथोल।

अङ्गुएण्टम् नैफ्थोलाई कम्पोज़िटस unguentum naphtholi compositus–ले० मिश्र नैफ़थोल प्रलेप। संयोगी अवयव नैफ़थोल, लार्ड, ग्रीन सोप, प्रीपेयर्ड चॉक। देखो–नैफथोल

अङ्गुएण्टम् पाइलोकार्पीनी unguentum pilocarpinæ–ले० पाइलोकार्पीन प्रलेप। संयोगी अवयव पाइलोकार्पीन, वैज़ेलीन, लेनो-देखो–पाइलोकार्पीनो नाइट्रास

अङ्गुएण्टम् पाइसिस लिक्विडी unguentum picis liquidæ–ले०चुर्दब तैल प्रलेप (Tar ointment)। संयोगी अवयव--टार, लार्ड, पीत मधूच्छिष्ट (एलो बीज़ वैक्स)। शक्ति ७०%। ब्री० फा० देखो–पिक्स लिक्विडा (या देवदारु)

अङ्गुएण्टम् पाइसिस मॉली unguentum picis molle–ले० मृदुकान्तरान (चुर्दब तैल) प्रलेप। संयोगी अवयव-टार, बेन्ज़ वैक्स आमण्ड आइल (बादाम तैल)। देखो– पिक्स लिक्विडा (या देवदारु)

अङ्गुएण्टम् पैराफ़ाइनी unguentum paraffini–ले० पैराफ़ीन प्रलेप (Paraffin ointment) संयोगी अवयव--हार्ड और सॉफ्ट पेराफ़ीन श्वेत या श्वेत व पीत मधूच्छिष्ट (ह्वायट या ह्वाइट एण्ड एलो बीज़ वैक्स)। शक्ति १० %। ब्री० फा०। देखो–पैराफीनम्।

अङ्गुएण्टम् पोटेसियाई आयोडाइडाइ unguentum potasii iodidi–ले० पांशुनैलिद प्रलेप (Potassium Iodide ointment) संयोगी अवयव–पोटासियम आयोडाइड, पोटाशियम कार्बोनेट, जल और बेन्ज़ोएटेड लार्ड। शक्ति–१०%। ब्री० फा० देखो—पोटेशियम।

अङ्गुएण्टम् पोटेशी सल्फ्युरेटी unguentum potassæ sulphuratæ–ले० पांशु गन्धेत् प्रलेप। संयोगी अवयव–सल्फ्युरेटेड पोटास, हार्ड पैराफ़ीन, सॉफ्ट पैराफ़ीन। देखो--गंधकम् (या पोटाशा सल्फ्युरेटा)।

अङ्गुएण्टम् प्लम्बाई आयोडाइडाई unguentum plumbi iodidi–ले० सीसनैलिद प्रलेप (Iodid of lead ointment) संयोगी अवयव--लेड आयोडाइड (सीस नैलिद), और बेन्ज़ोएटेड लार्ड। शक्ति–१०% ब्री० फा०। देखो--सीसकम्

अङ्गुएण्टम् प्लम्बाई कार्बोनेटिस unguentum plumbi carbonatis–ले० सीस कज्जलेत प्रलेप (Lead-carbonate ointment) संयोगी अवयव–लेड कार्बोनेट (सीसभस्म) और पैराफ़ीन। शक्ति–१०% देखो–सीसकम्।

अङ्गुएण्टम् प्लम्बाई सबएसीटेटिस unguentum plumbi subacetatis–ले०

सीससबएसीटेट प्रलेप (Lead subacetate onitment) संयोगीअवयव-स्ट्राँग लाइकर (तीक्ष्ण), वूल फैट (ऊर्णवसा) हार्ड व साफ्ट पैराफीन । शक्ति-१२ 0/0 । बी० पी० । देखो-सीसकम्

अङ्गुएण्टम् बिज़्म्युथाई unguentum bismuthi-लै० स्वर्णमाक्षिक प्रलेप (Bismuth ointment) । संयोगी अवयव-बिस्मथ सबनाइट्रेट, लार्ड । देखो-बिज़्मथम्

अङ्गुएण्टम् बिज़्म्युथाई आक्साइडम् unguentum bismuthi oxidum-लै० स्वर्णमाक्षिक भस्म प्रलेप । संयोगी अवयव-बिज़्मथ ऑक्साइड, आलीइक एसिड, श्वेत मधूच्छिष्ट । मोम । (साफ्ट) पैराफीन । देखो-बिज़्म्यथम् ।

अङ्गुएण्टम् बिलाडोना unguentum belladonnæ-लै० बिलाडोना प्रलेप (Belladonna ointment) संयोगी अवयव-लिक्विड एक्सट्रैक्ट ऑफ बिलाडोना (बिलाडोना तरल सत्व 'वाष्पीभूत'), बेञ्ज़ोएटेड लार्ड और वूल फैट (ऊर्ण वसा) शक्ति-०'१०0/0 अलकलाइड (क्षारीय सत्व) बी० पी० । देखो-बिलाडोना ।

अङ्गुएण्टम् बेञ्ज़ोईनी unguentum benzoinæ-लै० लोबानानुलेपन, कुन्दुरु प्रलेप । संयोगी अवयव-बेञ्ज़ोईन, एडेप्स (शूकर वसा) । देखो-कुन्दुरु या बेञ्ज़ोईनम् ।

अङ्गुएण्टम् बोरेसिस unguentum boracis-लै० टङ्कण प्रलेप (Boric ointment) संयोगी अवयव-बोरेक्स (टङ्कण) स्पर्मेसीटी ऑइण्टमेण्ट (मत्स्य वसा प्रलेप) देखो-टङ्कण ।

अङ्गुएण्टम् माइरोबेलेनाई unguentum myrobalani-लै० हरीत की प्रलेप (Ointment of myrobalan) संयोगी अवयव-हरीतकी चूर्ण तथा बेञ्ज़ोएटेड लार्ड । देखो हरीतकी । बी० पी० ।

अङ्गुएण्टम् माइरोबेलेनाई कम ओपिओ unguentum myrobalani cum opio-लै० हरीतकी व अहिफेन प्रलेप (ointment of myrobalan with opium) संयोगी अवयव-हरीतकी प्रलेप तथा अहिफेन । देखो-हरीतकी । बी० पी० ।

अङ्गुएण्टम् माइलेब्रिडिस unguentum mylabridis स्निग्धमक्खी प्रलेप (Mylabris ointment) देखो-कैन्थेरिस ।

अङ्गुएण्टम् मेटेलोरम् unguentum metallorum लै० खनिज प्रलेप । संयोगी अवयव-मर्क्युरिक नाइट्रेट ऑइण्टमेण्ट, लेडएसीटेड ऑइण्टमेण्ट और ज़िङ्क ऑइण्टमेण्ट । देखो-पारद ।

अङ्गुएण्टम् मेन्थोलाई unguentum mentholi-लै० मेन्थोल प्रलेप (Menthol ointment) संयोगी अवयव-मेन्थोलाई २½, बालसम ऑफ पेरू ४ तथा लेनोलिनाई १०० । पी० बी० एम० । देखो-मेन्थोल ।

अङ्गुएण्टम् युकेलिप्टाई unguentum eucalypti-लै० युकेलिप्टस प्रलेप (Eucalyptus ointment) संयोगी अवयव-आइल आफ युकेलिप्टस, हार्ड पैराफीन, साफ्ट (ह्वाइट) पैराफीन । शक्ति-१०0/0 । देखो—युकेलिप्टाइ । बी० पी० ।

अङ्गुएण्टम् रेज़ाइनी unguentum resinæ—लै० राल प्रलेप (Resin ointment) संयोगी अवयव—रेज़िन (राल), एलो बीज़ वैक्स (पीत मधूच्छिष्ट) । ऑलिव ऑइल (ज़ैतून तैल) तथा लार्ड (शूकर वसा) । शक्ति—२६0/0 (३¾ में १) । बी० पी० । देखो—राल ।

अङ्गुएण्टम् लेनी को unguentum lanæ co—लै० संयोगी अवयव—लार्ड, वूल फैट तथा पैराफीन ऑइण्टमेण्ट । शक्ति—४०0/0 । बी० पी० ।

अङ्गुएण्टम् वेरेट्राइनी unguentum varetrinæ—लै० अमरीका छिक्किका सत्व प्रलेप (Varetrni ointment) संयोगी

अवयव – बेरेट्रीन ओलीइक एसिड तथा लार्ड। शक्ति—४५ में १। देखो—वेरेट्रीना।

अङ्गुएण्टम् सल्फ्युरिस unguentum sulphuris—ले० गंधकानुलेपन (Sulphur ointment) संयोगी अवयव—सब्लाइम्ड सल्फर (ऊर्ध्वपातित गंधक) तथा बेन्ज़ोएटेड लार्ड। शक्ति—१०0/0। बी०पी०। देखो—गंधकम्।

अङ्गुएण्टम् सल्फ्युरिस आयोडाइडाई unguentum sulphuris iodidi—ले० गंधक नैलिद प्रलेप (Sulphur iodide ointment) संयोगी अवयव—सल्फर आयोडाइड, ग्लीसरीन तथा बेन्ज़ोएटेड लार्ड। शक्ति—२५ में १। देखो—गन्धकम्।

अङ्गुएण्टम् सल्फ्युरिस एट रिसार्सीना unguentum sulphuris et resorcini—ले० गंधक व रिसार्सीन प्रलेप। संयोगी अवयव—प्रेसिपिटेटेड सल्फर, रिसार्सीन, सॉफ्ट पैराफ़ीन पीत। बी० पी० सी०। देखो—गंधकम्।

अङ्गुएण्टम् सल्फ्युरिस कम्पोज़िटम् unguentum sulphuris compositum—ले० मिश्र गंधक प्रलेप, विल्किन्सन प्रलेप (wilkinson's ointment) संयोगी अवयव—सॉफ्ट सोप, सब्लाइम्ड सल्फर (ऊर्ध्वपातित गंधक)। प्रेसिपिटेटेड चॉक, टार, लार्ड (शूकर वसा) बी० पी० सी०। देखो—गन्धकम्।

अङ्गुएण्टम् सल्फ्युरिस कम हाइड्रार्जिरो unguentum sulphuris cum hydrargyro—ले० गंधक व पारद प्रलेप। संयोगी अवयव—सब्लाइम्ड सल्फर (ऊर्ध्व पातित गंधक) मर्क्युरिक-सल्फाइड (पारद गन्धिद), एमोनिएटेड मर्करी, ऑलिव आइल (जैतून तैल,) लार्ड (शूकर वसा) देखो—गन्धकम्।

अङ्गुएण्टम् सल्फ्युरिस हाइपोक्लोराइटिस unguentum sulphuris hypochloritis—ले० संयोगी अवयव—सब्लाइम्ड सल्फर (ऊर्ध्व पातित गंधक), एसेन्शल ऑइल ऑफ आमण्ड्ज़ (स्थिर वातादतैल), प्रिपेयर्ड लार्ड, सल्फर क्लोराइड (गंधक हरिद)। देखो—गन्धकम्।

अङ्गुएण्टम् सिटेसिआई unguentum cetacei—ले० ह्वेलमत्स्य शिरो वसा प्रलेप (Spermacetae ointment) संयोगी अवयव—स्पर्मेसिटाई, ह्वाइट बीज़ वैक्स (श्वेत मधूच्छिष्ट) लिक्विड पैराफ़ीन। शक्ति—२०0/0। देखो— बी० पी०।

अङ्गुएण्टम् सैलोल कम कोकीन unguentum salol cum cocain—ले० सैलोल कोकीन प्रलेप। संयोगी अवयव-सैलोल, कोकीन हाइड्रोक्लोराइड, पेट्रोलियम् साइट्रेट। देखो - सैलोल।

अङ्गुएण्टम् स्टैफिसैग्रिई unguentum staphisagriae—ले० अरण्यद्राक्षा वा स्टैफिसैग्री प्रलेप (staphisagrie ointment) संयोगी अवयव स्टेवी सैक्री सीड्स। येलो बीज़वैक्स (पीत मधूच्छिष्ट) तथा बेन्ज़ोएटेड लार्ड। शक्ति २० % बी० पी०। देखो—स्टैफीसैग्री।

अङ्गुएण्टम् हाइड्रार्जिराइ unguentum hydrargyri—ले० पारद प्रलेप (Mercury ointment) संयोगी अवयव—मर्करी (पारद) बेन्ज़ोएटेड लार्ड। प्रिपेयर्ड स्वेट (शुद्ध मेष वसा) शक्ति-३० %। बी० पी०। देखो पारद।

अङ्गुएण्टम् हाइड्रार्जिराइ आयोडाईडाई रुब्राई unguentum hydrargyri Iodidi rubri—ले० संयोगी अवयव—रेड आयोडाइड। बेन्ज़ोएटेड लार्ड। शक्ति-४ %। बी० पी०। देखो—पारद।

अङ्गुएण्टम् हाइड्रार्जिराई ऑक्साईडाई फ्लेवाई unguentum oxidi flavi—ले० पीत पारद भस्म प्रलेप (yellow mercuric oxide ointment) संयोगी अवयव—

एलो मर्क्युरिक ऑक्साइड (पीत पारद भस्म) सॉफ्ट पैराफ़ीन (एलो) शक्ति–२ % । बी० पी० । देखो–पारद ।

अङ्गुएण्टम् हाइड्रार्जिराई ऑक्साईडाई रुब्राई unguentum hydrargyri oxidi rubri–ले० रक्त पारद प्रलेप (red-mercuric oxide ointment) संयोगी अवयव–रेड मर्क्युरिक ऑक्साइड (रक्त पारद भस्म) पराफ़ीन ऑइण्टमेण्ट (पीत) शक्ति–१० % । बी० पी० । देखो पारद ।

अङ्गुएण्टम् हाइड्रार्जिराई एमोनिएटी unguentum hydrg- ammoniati–ले० पारदैमोनी प्रलेप (ammoniated mercury ointment) संयोगी अवयव एमोनिएटेड मर्करी, बेन्ज़ोएटेड लार्ड । शक्ति–५ % । बी० पी० । देखो–पारद ।

अङ्गुएण्टम् हाइड्रार्जिराई ऑलिएटी) unguentum hydrarg oleati–ले० मर्क्युरिक ऑलिएट ऑइण्टमेण्ट (Mercuric oleate ointment) संयोगी अवयव-मर्क्युरिक ऑलिएट, बेन्ज़ोएटेड लार्ड शक्ति–२५ % । बी० पी० । देखो–पारद ।

अङ्गुएण्टम् हाइड्रार्जिराई कम्पोज़िटम् unguentum hydrarg compositum) ले० मिश्र पारद प्रलेप (Compound mercury ointment) संयोगी अवयव मर्करी ऑइण्टमेण्ट, ऑलिव ऑइल (ज़ैतून तैल) एलो बीज़वैक्स (पीत मधूच्छिष्ट), कर्पूर । शक्ति–१२ % पारद । बी० पी० । देखो–पारद ।

अङ्गुएण्टम् हाइड्रार्जिराई डाइल्युटम् unguentum hydrarg Dilutum–ले० जलमिश्रित पारद प्रलेप (Ung. hydrg mitiusor blue unctio)संयोगी अवयव–मर्करी ऑइण्टमेण्ट (पारद प्रलेप) तथा लार्ड (शूकर वसा) देखो–पारद ।

अङ्गुएण्टम् हाइड्रार्जिराई नाइट्रेटिस unguentum hydrarg nitratis ले० नागरंग प्रलेप पारद नाइट्रेट प्रलेप, (mercuric nitrate ointment, citron ointment) संयोगी अवयव–मर्करी (पारद) नाइट्रिक एसिड (शोरकाम्ल), लार्ड (शूकर वसा) तथा ऑलिव ऑइल (ज़ैतून तैल) शक्ति १३ % । पारद । बी० पी० । देखो-पारद ।

अङ्गुएण्टम् हाइड्रार्जिराई नाइट्रेटिस डाइल्युटस unguentum hydrg nitratis dil.-ले० जलमिश्रित शोरकपारद प्रलेप (Diluted mercuric nitrate ointment) संयोगी अवयव-मर्क्युरिक नाइट्रेट आइण्टमेण्ट, सॉफ्ट पैराफ़ीन (पीत) शक्ति २० % । उक्त प्रलेप बी० पी० । देखो-पारद ।

अङ्गुएण्टम् हाइड्रार्जिराइ मीटियस unguentum hydrg. mitius-ले० अङ्गुएण्टम् हाइड्रार्जिराइ डाल्युटम् देखो—पारद ।

अङ्गुएण्टम् हाइड्रार्जिराई सबक्लोराइडाई unguentum hydrarg subchloridi-ले० रसकपूर प्रलेप (Mercurous chloride ointment, calomel ointment) संयोगी अवयव मर्क्युरस क्लोराइड तथा बेन्ज़ोएटेड लार्ड । शक्ति २० % । बी० पी० । देखो-पारद ।

अङ्गुएण्टम् हेमेमेलिडिस unguentum hamamelidis--ले० हेमेमेलिस प्रलेप (Hamamelis ointment) संयोगी अवयव-लिक्विड एक्सट्रैक्ट ऑफ हेमा मेलेलिस, सॉफ्ट पैराफ़ीन तथा वूलफैट (ऊर्णवसा) । शक्ति—१० % । बी० पी० । देखो-हैमेमेलिडिस (हैमेमेलिस वर्जिएना)

अङ्गु angu--उ० प० मू० २–Fraxinusfloribunda, *Wall.* अङ्गन । मे० मो० ।

अङ्गुः anguh–सं० पुं० १–(A hand) हाथ आ० सं० इं० डि० ।

अङ्गुणः angunah–सं० पुं० (Solanum melongena, *Linn.*) वार्ताकी, बैंगन, भांटा । बेगुन–बं० । श० र० ।

अङ्गुरिः-,री angurih,-ri–सं० स्त्री० (A finger) अंगुली, हाथ पैर की अंगुली। अ० टी०। देखो-अंगुलिः।

अङ्गुरीयः anguriyah–सं० पुं०, क्ली०, अंगुरीयक। आङ्-टि बं०। अंगूठी।

अङ्गुरु anguru सिं० Carbon लकड़ीका कोयला (Charcoal) इं० मे० मे०। स० फा० इं०।

अङ्गुलः angulah–सं० पुं० (१) A finger अङ्गुली। (२) Thumb अङ्गूठा। (३) A finger's breadth (n. also), equal to 8 barley corns लम्बाई की एक नाप। देखो-अंगुल।

अङ्गुलः angulah } सं० पुं० स्त्री०, १–
अङ्गुलिः angulih } (finger) अंगुली अँगुरी, करपाद शाखा। अंगुरतका। पाँचों अंगुलियों के नाम क्रमशः इस प्रकार हैं। यथा–अङ्गुष्ठ, प्रदेशिनी, मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठा, रा० नि० व० १८। आङ्गुल–बं० [२] गजकर्णिका वृक्ष। (३) हातिशुंडे-बं०। करिशुंडाग्र भाग, हाथीशुण्डो (Heliotropium Indicum, *Linn*) ई० म० (४) वृद्धांगुष्ठ, अंगूठा (Great-tae) (५) लम्बाई का एक नाप। अङ्गुल The measure.

अङ्गुलिकण्टकः anguli-kantakah–सं० पुं० नख A finger nail (Helix ashera)

अङ्गुलिका angulika-सं० स्त्री० दे० अंगुली।

अङ्गुलितोरणं anguli-toranam–सं० क्ली० ललाट में चन्दन प्रभृति द्वारा अङ्कित अर्द्ध चन्द्राकार चिह्न विशेष, तिलक विशेष। देखो अङ्गुलितोरण।

अङ्गुलित्रं angulitram–सं० हाथ की पांच अंगुलियाँ जिनके नाम ये हैं :—अंगुष्ठ, तर्जनी मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठा।

अङ्गुलित्राणकम् anguli-tranakam–सं० क्ली० अङ्गुलित्राणक यन्त्र, उक्त नाम का यन्त्र विशेष। अङ्गुश्ताना अङ्गुष्टाना। वा० सू० २५ अ०। (A finger-protector)

अङ्गुलिनलकम् anguli-nalakam–सं० क्ली० (Phalange) अङ्गुल्यस्थि।

अङ्गुलिपञ्चकम् anguli-panchakam–सं० क्ली० (The five fingers) कराङ्गुलि पञ्चक–हाथकी पांच उंगलियाँ जिनके नाम ये हैं—अङ्गुष्ठा, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका और कनिष्ठिका।

अङ्गुलिपर्व्व anguli-parvva–सं० क्ली० अङ्गुल्यस्थि, पर्व, पोर्वे, पोर, अङ्गुलिग्रन्थि। उँगलियों की पोर, उँगली का गाँठ वा जोड़ (Phalanx, phalanxes) फैलेञ्जी Phalange (ए० व०), फैलेञ्जीज़ Phalanges (ब० व०) इं०।
बुजुर्मद् (ए० व०), बराजिम् (ब० व०)। सुलामा (ए० व०), सलामय्यात् (ब० व०) --अ०।

अङ्गुष्ठ में दो और शेष अङ्गुलियों में तीन तीन पर्व अर्थात् अस्थियाँ होती हैं। पहिली पंक्ति के पोर्वे सब से लम्बे और मोटे होते हैं। दूसरी पंक्ति के इनसे छोटे और तीसरी पंक्ति के सब से छोटे होते हैं। अङ्गुष्ट में केवल दो ही पंक्तियाँ हैं, अङ्गुष्ठ का दूसरा पोर्वा शेष अङ्गुलियों के तीसरे पोर्वे के सदृश होता है। तीसरे पोर्वे पर नख लगे रहते हैं, इन तीसरे पोर्वों को शकल घोड़े के खुर जैसी होती है। अङ्गुष्ठ के पोर्वे शेष अङ्गुलियों के पोर्वों से मोटे होते हैं।

अङ्गुलिप्रसारणी पेशी anguliprasarani-peshi-,हिं० स्त्री० (Extensor of the finger उंगलियां फैलाने वाली पेशी।

अङ्गुलिफला anguli-phala–सं० स्त्री० A sort of pulse (Paseolus radiatus.) श्वेतनिष्पावः,सफेद सेम। श्वेत शिम्-बं०। रा० नि०।

अङ्गुलिमानम् anguli-mánam–सं० क्ली० अङ्गुलि से योजन पर्यन्तमान यथा। ८ यव= १ अङ्गुल। २४ अङ्गुल=१ हाथ। ४ हाथ=

१ दंड। २००० दंड=१ क्रोश। ४ क्रोश=१ योजन।

अङ्गुलिमुखम् anguli-mukham-सं० क्लो० (The forepart of the finger) अङ्गुल्यग्रभाग अङ्गुली का आगे का हिस्सा।

अङ्गुलिमूलसन्धि anguli-múla-sandhi सं० स्त्री० करभास्थि तथा अङ्गुल्यस्थिको मिलाने वाली सन्धि। मेटाकार्पो फैलेञ्जिअल् या मेटाटार्सो फेलेञ्जिअल् जॉइण्ट (Metacarpo phalangeal or Metatarso phalangeal joints)-इं०। जफ़्सिलुल् अस्-लुल् अस्ाबीअ-अ०।

अङ्गुलिमोटनम् anguli-motanam
अङ्गुलि-स्फोटनम् anguli-sphotanam
सं० क्लो० (snapping or cracking of the fingr) अंगुलि तोड़ने का शब्द, अंगुलि मर्द्दनज शब्द, अर्थात् जो शब्द अंगुली मर्दन द्वारा उत्पन्न हो। त्रिका०।

अङ्गुलियाथूहर anguliyá thúhar हिं० पुं० छोमियां सेंहुड़।

अङ्गुलियापीपर anguliyá pipara-हिं० पुं० बड़ी पीपर।

अङ्गुलिसंकोचनी पेशियाँ angulisankochaní peshiyán-हिं०स्त्री० उंगली सिकोड़ने वाले पट्ठे।

अङ्गुलिसंकोचनी पेशी anguli-sankochanipeshí-हिं० स्त्री० (Flexor of finger) उंगलियों को अन्दर मोड़ने वाली पेशी।

अङ्गुलि संधि anguli-sandhi-सं० स्त्री० अङ्गुलियों की सन्धि या जोड़। डिजिटल आर्टीक्युलेशन (Digital articulation) इं०। मफ़्सिलुल् असाबीअ-अ०।

अङ्गुलिसम्भूतः anguli-sambhútah सं० पुं० nail (Helix ashera) नख रा० नि० व० १८।

अङ्गुलि संज्ञा anguli-sanjyá-सं० स्त्री० यवागू (yavágú) अंगुलि-संधि।

अङ्गुलित्राणकयन्त्रम् angulitranaka-yantram-सं०क्लो० यह हाथी दाँत या काष्ठ का बनाया जाता है। इसका प्रमाण ४ अंगुल होता है, यह अर्ध यंत्र के सदृश गौ के स्तन के आकार वाला छिद्रों से युक्त होता है, इससे मुख सहज में खुल जाता है। इस यंत्र से अंगुलियों की रक्षा दाँतो से हो जाती है। इसी से इसका नाम अंगुली त्राण यंत्र है। वा० सू० अ०। देखो-अंगुलित्राणकम्।

अङ्गुली angulí-सं० स्त्री० १-गजकर्णिका (gajakarniká) मे० लत्रिकं २-(A finger) अंगुली। अंगुलियों की अस्थियाँ। अंगुली माप।

अङ्गुलीय anguliya-सं० अंगूठी।

अङ्गुली प्रसारिणी (Anguli prasarini सं० स्त्री० अङ्गुली को फैलाने वाली पेशी। अज़्लह बासितुल असाबीअ-अ०। एक्सटेन्सर डिजिटोरम् कम्युनिस (Extensor Digitorum communis)-इं०।

अङ्गुलीया धमनी anguliya-dhamaní-सं० स्त्री० शिरियान असाबियह्, अङ्गुली की पोषण करने वाली धमनी (Digital artery)

अङ्गुल्याकुञ्चनी angulyákunchaní-सं० स्त्री० अङ्गुली को सिकोड़ने वाली पेशी। अज़्लह तअरीज़ुल् असाबीअ-अ०। फ्लेक्सर डिजिटोरम् सब्लिमिस (Flexor Digitorum sublimis)-इं०।

अङ्गुल्युदर्या angulyudaryá-सं० स्त्री० अङ्गुल्याधरा पेशी।

प्रॉपर वूलर डिजिटल (Proper volardigital)-इं०।

अङ्गुल्यस्थि angulyasthi-सं० स्त्री०
अङ्गुल्यस्थीनि angulyasthíni-सं०स्त्री०
अंगुलीपर्व, पोर्व (Phalanx.) (व० व०)

अङ्गुल्यास्थियाँ angulyásthiyan-हिं० स्त्री० व० व० पंचे की हड्डियाँ; (Bone fingers)।

अङ्गुश्त angushta-फ़ा० १--(A finger) अङ्गुली, अङ्गुरी--हिं० । २--एक माप जो लगभग १ इंच के बराबर होता है। ३-(The thumb) अङ्गुष्ठ ।

अङ्गुश्त-कोचक angushta-kochak--फ़ा० कनिष्ठा-सं० । कानी अङ्गुली, छोटी अङ्गुली, छंगुली--हिं० । लिट्ल फिंगर (Little finger)--इं० ।

अङ्गुश्त गन्दह् angushta-gandah-फ़ा० (Assafœtida) हींग-हिं० । अङ्गोज़ह-फ़ा० । हिल्तीत-अ० । हिंगुः, रामठम्-सं० । हिंग-बं० । मां० शा० ।

अङ्गुश्त दराज़ angushta-daráza-फ़ा० बृहदांगुलि, मध्यमा, बीचकी अंगुली, लम्बी अंगुली-हिं० । मिड्ल फ़िंगर (Middle finger)-इं० ।

अङ्गुश्त दुश्नाम angushta-dushnáma-अंगुश्त शहादत--फ़ा० । तर्जनी,प्रदेशिनी, अंगूठे के पास वाली अंगुली । फ़ोर फिंगर (Fore finger)-इं० ।

अङ्गुश्त नर angushta nara-फ़ा० (The thumb) अङ्गुष्ठ ।

अङ्गुश्त बर्ग angushta-barga-शो० छुछून्दर, चूहाभेद । Mole,musk rat (Sorex cærulescens)

अङ्गुश्त बुज़ुर्ग angushta-buzurga-अङ्गुश्त-नर--फ़ा० । अङ्गुष्ठः, अँगूठा--हिं० । थम्ब (Thumb)--इं० ।

अङ्गुश्त मियानह् angushta-miyánah--फ़ा० (Middle finger) मध्यमा, बिचली अँगुली ।

अङ्गुश्तरी angushtarí-हिं० संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] अँगूठी । मुंदरी । मुद्रिका ।

अङ्गुश्त हल्क़ह् angushta-halqah-फ़ा० अनामिका, अंगूठी की अंगुली, छंगुली (कनिष्ठा) के पास की अंगुली-हिं० । रिंग फ़िंगर (Ring finger)-इं० ।

अङ्गुषः angushah-सं० पुं० (१) नकुल, नेवला । Mongoose (Vivera mungo) । २-(An arrow) बाण, तीर ।

अङ्गुष्ठः angushthah-सं० पुं० बृद्धांगुलि, अंगुष्ठांगुलि, अँगूठा (The thumb or great toe) । अंगुश्त बुज़ुर्ग-फ़ा० । पाँचों अंगुलियों में से सब से मोटी अंगुली । बुड़ो आङ्गुल-बं० । रा० नि० व० १८ । ३ ।

अङ्गुष्ठ अन्तरानायनी angushtha-antara-náyaní- सं० स्त्री० अंगुष्ठ को अन्दर की ओर ले आने वाली पेशी । एड्डक्टर पॉलिसिस (Adductor pollicis)-इं० । अज़लह् मुक़र्रिबह् अस्बइयह्--अ० ।

अङ्गुष्ठ पृष्ठ्या angushtha prishthyá -सं० स्त्री० एरिएरिया डार्सैलिस हैल्युसिस (Ariaria darsalis Hallucis) --इं० ।

अङ्गुष्ठ प्रतानर्नी पेशी angushtha pratánaní peshí--हिं० स्त्री० (Extensor Primi enter nodii pollicis) अंगूठा खींचनेवाली पेशी ।

अङ्गुष्ठ प्रत्याकुञ्चनी angushtha pratyákunchaní--सं०स्त्री० अंगुष्ठ सम्मुख कारिणी पेशी । ऑपोनिअस पॉलिसिस (Opponeus pollicis)--इं० ।

अङ्गुष्ठ प्रसारणी दीर्घा angushtha prasáraní dírghá--सं० स्त्री० अङ्गुष्ठ को फैलाने-वाली दीर्घ पेशी । एक्सटेन्सर पॉलिसिस लॉङ्गस (Extensor pollicis longus)--इं० । अज़लह् बासितह् असाबिअ़ यह् कबीरह्--अ० ।

अङ्गुष्ठ प्रसारणी ह्रस्वा angushtha-prasáraní-hrasvá-- सं० स्त्री० अङ्गुष्ठ को फैलाने वाली ह्रस्वा (छोटी) पेशी । एक्स-टेन्सर पॉलिसिस ब्रेविस (Extensor pollicis brevis)--इं० । अज़लह् बासितह् असबइयह् सग़ीरह्--अ० ।

अङ्गुष्ठ बहिर्नायिनी angushtha-bahirnáyaní--सं० स्त्री० अङ्गुष्ठ को बाहर (शरीर की मध्य रेखा से दूर) ले जाने वाली पेशी ।

एेब्डक्टर पॉलिसिस (Abductor pollicis)-इं०। अज़लह् मुबइ्इदह अस्बइ्यह--अ०।

अङ्गुष्ठबहिर्नायनी दीर्घा angushtha-bahirnáyaní-dírghá--सं० स्त्री० अङ्गुष्ठ को बाहर अर्थात् शरीर की मध्य रेखा से दूर ले जाने वाली दीर्घ पेशी। एब्डक्टर पॉलिसिस लॉङ्गस (Abductor pollicis longus)-इं०। अज़लह मुबइ्इदह अस्बइ्यह तवील-अ०।

अङ्गुष्ठ बहिर्नायनी ह्रस्वा angushtha-bahirnáyaní-hrasvá-सं० स्त्री० अङ्गुष्ठ को बाहर (शरीर की मध्य रेखा से दूर) लेजाने वाली ह्रस्व पेशी। ऐब्डक्टर पॉलिसिस ब्रेविस (Abductor pollicis brevis)-इं०। अज़लह मुबइ्इदहे अङ्गुश्त सग़ीरह्-अ०।

अङ्गुष्ठ सङ्कोचनी angushtha-sankochaní-सं० स्त्री० अंगुष्ठ को सिकोड़ने वाली (मोड़ने या झुकानेवाली) पेशी। फ्लेक्सर पॉलिसिस (Flexor pollicis)-इं०।

अङ्गुष्ठ सङ्कोचनी दीर्घा angushtha-sankochaní-dírghá-सं० स्त्री० अंगुष्ठ को मोड़ने वाली दीर्घ पेशी। फ्लेक्सर पॉलिसिस लॉङ्गस (Flexor pollicis longus) -इं०।

अङ्गुष्ठ सङ्कोचनी लम्बी angushtha-sankochaní lambí-हिं० स्त्री० (Flexor longus pollicis) लम्बी अंगूठा सिकोड़ने वाली पेशी।

अङ्गुष्ठ सङ्कोचनी ह्रस्वा angushtha-sankochaní-hrasvá-सं० स्त्री० अंगुष्ठ को मोड़ने वाली ह्रस्व पेशी। फ्लेक्सर पॉलिसिस ब्रेविस (Flexor pollicis brevis) -इं०।

अङ्गुष्ठाकर्षणी angushthákarshaní-सं० स्त्री० अंगुष्ठ अन्तरनायनी। एडडक्टर पॉलिसिस (Adductor pollicis)-इं०। अज़लह् मुक़र्रिबहे अंगुश्त-अ०

अङ्गुष्ठाना angushthána-सं० स्त्री० (१) अंगुष्ठ। (२) अंगुलित्राणक, अंगुश्ताना।

अङ्गुष्ठावर्त्तनीपेशी angushthávarttaní-peshí-हिं० स्त्री० (Abductor pollicis) अंगूठे को लपेटने वाली पेशी।

अङ्गुष्ठ्यः angushthyah-सं० पुं० (The thumb-nail) अंगूठा का नाख़ून।

अङ्गू angú-उ० प० सू० अंगन। (Fraxinus floribunda, *Wall.*) मे० मं०।

अङ्गूर angúra-हिं० संज्ञा पुं०,फ़ा०,द०। (१) दाख, दाख-हिं०। अंगूर, दाक-द०। संस्कृत पर्याय-कृष्णा, चारफला (ज), रसा (शब्दर०), मृद्वीका, गोस्तनी, स्वाद्वी, मधुरसा (अ०), यक्षपत्नी (श०मा०), प्रियाला, तापसप्रिया, गुच्छफला, रसाला, अमृतफला, स्वादुफला, हारहूरा, द्राक्षा, फलोत्तमा और सुफला सं०। द्राक्षा, आंगुर-बं०। इनब, कम-अ०। ओज़ुम--तुर०। वाइटिस वाइनिफेरा Vitis vinifera, *Linn.* (Fruits of grapes) -ले०। ग्रेप वाइन Grape-vine, ग्रेप Grape, वाइन Vine (tree of-) -इं०। विग्नी कल्टिवी Vigne, Cultivee -फ़्रां०। एडलीवीनरीबी Edleweinrebe, रोज़ीनेन Rosinen-जर०। दिराक्ष-पज़ुम, कोडि-मुन्दिरिप्-पज़ुम,दिराक्ष-परम (मो० शा०); कोडि मद्दि-ता०। द्राक्ष-पंडु, गोस्तिनिपण्डु, द्राक्षा-ते०। मुन्तिरिङ्ङप्-पज़ुम, मुन्तरि-परम, पच मुन्तिरिङ्ङप्-पज़ुम (मो० शा०)-मल०। द्राक्षी-हण्णु (मो० शा०), द्राक्षे-कना०। द्राक्ष, द्राक्षे-मह०। द्राख (मो० शा०), द्राख, धाख, मुद्रक-गु०। मुद्र-पलम्, मुद्रिका (मो० शा०)-सिं०। सबीसी, सब्या-सी, या सबीति -बर०। द्राक्षा-कों०।

सूर्यताप या कृत्रिम ताप द्वारा शुष्क किए हुए पक्व अंगूर - मुनक्का, सूखे अंगूर (कालीदाख) -हिं०। मुनक्क़ा,-द०। गोस्तनी, कपिलद्राक्षा, मृद्वीका, कपिलफला, अमृतरसा, दीर्घफला, मधुवल्ली, मधुफला, मधूलि, हरिता, हारहूरा, सुफला, मृद्वी, हिमोत्तरा, पथिका, हैमवती, शतवीर्या,तथा काश्मीरी (-रिका)-सं०। मोनक्क, मनेका, सस्का-द्राक्षा-बं०। ज़बीब, मवेज़,

मुनक़्क़ा,-अ० । अंगूरे खुश्क-फ़ा० । यूवी Uvæ,यूवी पैसी Uvæ passæ-ले० । रेज़िन्स Raisins-इं०,फ्रां० । रोज़िनेन Rosinen -जर० । Monaqqá मोनक़ा-हिं०,द०,फ़ा० । उलर्न्दविराछप्-पज़म्, उलर्न्दद्राच-परम्-ता० । दोपद्राच-पण्डु,सन्न-द्राच-पंडु,एंडु,द्राच पंडु-ते० । मुन्तिरिङ्ङ्ङप्-पज़म्, उणक्किङ्य-मुन्तिरिङ्ङप्-पज़म् (-परम्)—मल० । दीप द्राचि-कना० । वेल्लिचे-मुद्र-पलम्, वेल्लिच-मुद्रका-सिं० । सबीसी, सब्यासी या तबी-ति-- बर० । बीज-रहित लघु द्राक्षा—किशमिश, बेदाना-हिं०, द०, फ़ा० । काकली द्राक्षा, जाम्बुका, फलोत्तमा, लघुद्राक्षा, क्षुद्र द्राक्षा, निर्बीजा, सुवृत्ता, रुचिकारिणी, (रसाधिका, लघुद्राक्षा)-सं० । किसमिस-बं०, गु०, म० । किसमिस-द्राक-[illegible] । सुल्तानस Sultanas, रेजिन्स Raisins -इं० । किशमिश, अंगुल द्राख (मा० शु०)-फ़ा० । चिकुद्राचे-कना० । किसमिस पंडु-ते० ।

नोट—पके सूखे हुए लाल अंगूर को मुनक्का और छोटे एवं बीज रहित को किसमिस तथा बड़े और काले वर्ण वाले को गोस्तनी (काली दाख) कहते हैं । काले अंगूरोंकी काली दाखें और भूरे अंगूरों की भूरी दाखें होती हैं । चरक में केवल मृद्वीका और सुश्रुत में केवल द्राक्षा के गुण का निर्देश किया गया है । पर्वती तथा करोंदी नाम से इसके और दो अन्य भेद हैं । भाव० ।

एम्पेलिडीई अर्थात् द्राक्षावर्ग
(*N. O. Ampelideæ*)

उत्पत्ति स्थान—यह उत्तरी पश्चिमी हिमालय (या भारतवर्ष) अर्थात् पंजाब, काश्मीर, काबुल, बलूचिस्तान, अफ़ग़ानिस्तान, कन्दहार तथा फ़ारस और यूरुप प्रभृति प्रदेशों में बहुत लगाया जाता है । हिमालय के पश्चिमी भागों में यह आप से आप भी होता है । और और जगह भी लगाया जाता है । संयुक्त प्रदेश के कमाऊँ, कनावर और देहरादून तथा बम्बई प्रांत के अहमदनगर और औरंगाबाद, पूना और नासिक आदि स्थानों में भी इसकी उपज होती है । बंगाल में पानी अधिक बरसने के कारण इसकी बेल वैसी नहीं बढ़ सकती । वहाँ केवल तिरहुत और दानानगर में थोड़ी बहुत टट्टियाँ हैं ।

इतिहास—द्राक्षा और मृद्वीका नाम से अंगूर का वर्णन सुश्रुत और चरक आदि सभी प्राचीन आयुर्वेदीय ग्रन्थों में मिलता है । यही दशा यूनानी तथा अरबी ग्रन्थों की है । इसकी कृषि एवं उपयोग का ज्ञान उन्हें बहुत प्राचीन काल से रहा है, और निज ग्रन्थों में अपने अपने दृष्टि कोण के अनुसार इसके उपयोग एवम् गुणधर्म के सबन्ध में उन्होंने काफी प्रकाश डाला है । जैसा कि आगेके वर्णन से विदित होगा । इसके द्वारा प्रस्तुत हुए मद्य के मादक प्रभाव से वे भली भाँति परिचित थे । अस्तु आर्यों का सोम तथा यूनानी पुराणों का आरम्भिक मद्य निःसन्देह स्वर्गीय अमृत था ।

भारतवर्ष में इसकी खेती कम होती थी । फल प्रायः बाहर ही से मँगाए जाते थे । मुसलमान बादशाहों के समय में अंगूर की ओर अधिक ध्यान दिया गया । आज कल हिन्दुस्तानमें सबसे अधिक अंगूर काश्मीर में होते हैं । जहाँ ये क्वार महीने में पकते हैं । वहाँ इनकी शराब बनती है और सिरका भी पड़ता है । महाराष्ट्र देश में जो अंगूर लगाए जाते हैं उनके कई भेद हैं, जैसे—आबी, फ़क़ीरी, हबशी, गोलकली और साहेबी इत्यादि ।

अफ़ग़ानिस्तान, बिलूचिस्तान और सिंध में अंगूर बहुत अधिक और कई प्रकार के होते हैं, जैसे—हेटा, किशमिशी, कलमक, हुसैनी इत्यादि । किशमिशी में बीज नहीं होता । कंधारवाले हेटा अंगूर को चूना और सज्जीखार के साथ गरम पानी में डुबाकर आबजोश और किशमिशी को धूप में सुखा कर किसमिस बनाते हैं ।

वानस्पतिक वर्णन—अंगूर की बेलें काठ की टट्टियों पर चलती हैं । इसके पत्र हाथ की आकृति के कुम्हड़े या नेनुए की पत्तियों से मिलते जुलते होते हैं, मानो हथेली में पाँच अंगुलियाँ लगादी गई हों । फल गुच्छों में लगते हैं ।

अंगूर पुष्प में दो कोषीय डिम्बाशय होता है और प्रति डिम्बाशय में दो-दो डिम्ब होते हैं। ये डंठल युक्त, स्थूल, गूदादार, गोल या अण्डाकार (झड़बेरी के सदृश) फल रूप में विकास पाते हैं। कोष भिन्न हो जाता है तथा उनमें से कुछ बीज साधारणतया नष्ट हो जाते हैं। चूँकि फल डंठल से और डंठल शाखा से नहीं जुड़े रहते, इस कारण परिपक्वावस्था में ये झड़ते नहीं, किन्तु उक्त पौदे में ही लगे रहते हैं (पर यह शर्त है कि सूर्यताप काफी हो) और धीरे धीरे सूख जाते हैं। उक्त शुष्क फल को सूर्यताप द्वारा पका हुआ किशमिश कहते हैं। फल इसके छोटे, बड़े, गोल और लम्बे कई आकार के होते हैं। कोई नीम के फल की तरह लम्बे और कई मकोय की तरह गोल होते हैं।

रासायनिक संगठन—फलके गूदे में अंगूरी शकर (द्राक्षौज) तथा क्रीम ऑफ टार्टार (Cream of tartar) वर्तमान होता है। इसमें निर्यास तथा सेब की तेज़ाब भी विद्यमान होती है। बीज में एक प्रकार का स्थायी तेल होता है। (ग्रेगट-)। बीज तथा फलत्वक् में ५-६ प्रतिशत कषायाम्ल (टैनिक एसिड) पाया जाता है। फार्माको०। डॉ जे० कोनिक तथा सीकेश्च के विचार से काली दाख में जल २३·१८, अल्ब्युमिनस पदार्थ २·७१, वसा ०·६६, द्राक्षौज (ग्रेप शूगर) ५५·६२, अन्य अनत्रजनीय पदार्थ १४·१२, काष्ठोज १·९४, तथा भस्म १·३६ प्रतिशत विद्यमान होती हैं। शुष्कद्रव्य में उन्होंने नत्रजन ०·२६ और शर्करा ७२·४३ प्रतिशत पाया। डॉक्टर इ०मैक और के० पोर्टेलो के परीक्षणानुसार किशमिश में जल २०·४, द्राक्षशर्करा ३०·२ लिव्युलोज़ ३६·४, पेक्टिन १·८६, फ्री एसिड्स १·७६, सेब की तेज़ाब ०·३८, अर्गोल ३·२८, अनघुल पदार्थ ५·० तथा भस्म २·०३ होती है। डॉक्टर एम. सी. म्युथार के परीक्षानुसार अंगूर पत्र में इमली की तेज़ाब (टार्टरिक एसिड) बाइटार्ट्रेट ऑफ पोटाश, क्वर्सेटीन, क्वर्सिट्रीन, कषायिन, श्वेतसार, सेव की तेज़ाब, निर्यास, इनोसीट, अस्फटिकवत् शर्करा, ऑक्ज़ेलेट ऑफ लाइम तथा एमोनिया और फॉस्फेट व सल्फेट ऑफ़ लाइम विद्यमान होते हैं।

प्रयोगांश—फल (पक्व या अपक्व), कुछ शुष्क फल [किशमिश मोनक्का प्रभृति) तथा पत्र।

मात्रा-शर्बत, आधे से एक फ्लूइड आउन्स (२४ घण्टे में ५-६ बार)। किशमिश या मुनक्का १। तो० से २॥ तो० तक (दिन रातमें ३-४ बार)।

औषध-निर्माण—द्राक्षा सुरा (Vinum), द्राक्षारिष्ट, द्राक्षासव, द्राक्षाचुक्र या अंगूरी सिर्का (vinegar of grapes) प्रभृति।

प्रतिनिधि—यूरोपीय औषध, इमली और नीबू की तेज़ाब (अङ्गूर के लिए), आलूबुख़ारा और शीरख़िश्त (किशमिश के लिए) मो० श०। गम्भारी फल। सि० यो० ज्व० चि० पिप्पल्यादि, वा० सू० १५ अ० परूषकादि, च० द० वा० ज्व० चि० पिप्पल्यादि, वा० ज्व० चि० द्राक्षादि।

द्राक्षा के गुणधर्म व उपयोग
आयुर्वेद की दृष्टि से:—

पक्का अंगूर—दस्तावर, शीतल, नेत्रों को हितकारी, पुष्टिकारक, भारी, पाक तथा रसमें मधुर, स्वर को उत्तम करने वाला, कषैला, मल तथा मूत्र की प्रवृत्ति करने वाला, कोठे में वायुकारक, वृष्य (वीर्य को बढ़ानेवाला), कफ तथा रुचि को उत्पन्न करता है और तृषा, ज्वर, श्वास, कास, वातरक्त, कामला मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त, मोह, दाह, शोष तथा मदात्यय रोग को नष्ट करता है। गोस्तनी (गाय के स्तन के सदृश) अर्थात् कालीदाख वीर्यवर्द्धक (वृष्य) भारी और कफ तथा पित्त को नष्ट करने वाली है। कच्चा अंगूर हीन गुण वाला तथा भारी है। खट्टा अंगूर रक्तपित्त को करने वाला है। बीज रहित अथवा छोटे बीजों वाली (किशमिश) गोस्तनी दाख के सदृश गुणों वाली है। पर्वतमें उत्पन्न हुई (पार्वतीय) दाख हलकी, अम्ल और कफ तथा रक्तपित्त को करने वाली है।

करमर्दिका (करौंदे के सदृश) दाख में भी पर्वतोत्पन्न दाख के सदृश गुण हैं ।

भा० द्राक्षा व० ।

दाख मधुर, खट्टी, कसैली है और किसी चार के साथ पित्त, वात और कफ का नाश करती है, उत्तम है तथा रुधिर रोग, दाह, शोष, मूर्च्छा, ज्वर, श्वास (श्वसन) और खाँसी को दूर करती है । जो दाख विपाक में कसैली व अम्ल (कषायाम्ल) होती है वह कफ में हित है ।

अत्रि० १७ अ० ।

दाख मधुर, स्निग्ध, वीर्यवर्द्धक, शीतल, मलभेदक, बलकारक एवं वृष्य है तथा क्षतक्षीण, वात और रक्तपित्त का नाश करती है ।

रा० नि० ।

दाख मधुर, खट्टी, शीतल, पित्तनिवारक, दाहनाशक, मूत्रदोषहारक रुचिकारक, वृष्य और तृप्तिकारक है । रा० नि० ।

कच्ची दाख कटु, उष्ण, विशद, रक्तपित्तकारक है । मध्यम अवस्था की दाख खट्टी, रुचिकारक और अग्निवर्द्धक है । पकी दाख, मधुर, खट्टी, तृषानाशक और रक्तपितनाशक है । पक कर सूख गई हुई दाख श्रमनाशक तृप्तिकारक और पुष्टिजनक है ।

दाख धातुवर्द्धक, शोषनाशक, प्यास को हरनेवाली, वात को दूर करने वाली, वमन रोगनाशक, पचने में अम्ल, सुरस, मधुर, शीतवीर्य, ज्वर और कफ को हरने वाली, मूत्र और मल को शोधने वाली है ।

गोस्तनी दाख शीतल, हृदय को हितकारी, वीर्यवर्द्धक, वातानुलोमक, स्निग्ध, और हर्षजनक है तथा श्रम, दाह, मूर्च्छा, श्वास, खाँसी, कफ, पित्त, ज्वर, रुधिरविकार, तृषा, वात और हृदय की व्यथा को हरने वाली है ।

किशमिश मधुर, शीतल, वीर्यवर्द्धक, रुचिप्रद, खट्टा, रसाल है तथा श्वास, खाँसी, ज्वर, हृदय की पीड़ा, रक्तपित्त, क्षतक्षय, स्वरभेद, तृषा, वात, पित्त और मुख के कड़वेपन को दूर करता है ।

द्राक्षा रस में मधुर, स्निग्ध, शीतल, हृद्य और स्वर्य है तथा रक्तपित्त, ज्वर, श्वास, तृष्णा और दाह का नाश करने वाली है । मृद्वीका मधुर, स्निग्ध, शीतल, वृष्य और अनुलोमक है तथा रक्त, वात, श्वास, कास, श्रम, तृष्णा और ज्वर का नाश करने वाली है ।

धन्वन्तरीय निघण्टु ।

गोस्तनी—मधुर, शीतल, हृद्य और मदहर्षिणी है तथा दाह, मूर्च्छा, ज्वर, श्वास, तृषा और हल्लास को नाश करने वाली तथा शीतल और मनुष्यों को प्रिय है । द्राक्षा के विशेष गुण— द्राक्षा 'बालफल' कटु, उष्ण, विषदोषजनक और रक्तपित्त को करने वाली है । 'मध्य' और रसान्तर को प्राप्त अम्लरस युक्त रुचिकारक और अग्निजनक है । 'पक्व' और मधुर तथा अम्लरस सहित तृष्णा और रक्तपित्त को दूर करने वाली है। "पक्व" अत्यन्त सूखी हुई श्रमजनित पीड़ा को शमन करने वाली, संतर्पण और पुष्टिदायक शीतल तथा पित्त और रक्त के दोषों को शमन करती है । एवं मधुर, स्निग्धपाकी और अत्यन्त रुचिकारक है । चक्षुष्य, श्वास, कास, श्रम तथा वमन को शमन करने वाली, सूजन, तृष्णा और ज्वर का नाश करने वाली है एवं आध्मान, दाह तथा श्रम आदि को हरण करती और परम तर्पण है । द्राक्षा क्षीण वीर्य वाले को भी मदनकला केलि में दक्ष बनाती है । रा० नि० ।

तृष्णा, दाह, ज्वर, श्वास, रक्तपित्त, क्षत वा क्षय, वात, पित्त, उदावर्त, स्वरभेद, मदात्यय, मुँह का कड़वापन, मुखशोष और कास को दूर करती है । मृद्वीका बृंहण, वृष्य, मधुर, स्निग्ध, और शीतल है । चरक फ० व० ।

द्राक्षा दस्तावर, स्वर्य, मधुर, स्निग्ध और शीतल तथा रक्तपित्त, ज्वर, श्वास, तृष्णा, दाह और क्षय का नाश करने वाली है । सुश्रुत ।

द्राक्षा के वैद्यकीय व्यवहार

सुश्रुत—मूत्रावरोधज उदावर्त अर्थात् मूत्रवेग के धारण से उदावर्त रोग होनेपर द्राक्षा का क्काथ प्रस्तुत कर पिलाना चाहिये । (उ० ५५ अ०)

वाग्भट्ट—

(१) मदात्यय रोग में होनेवाली पिपासा में वात, पित्त की अधिकता वाले मदात्ययी को, शीतल किया हुआ द्राक्षा का क्वाथ पिलाना चाहिए। औषध के पच जाने पर बकरे के मांस से बनाए हुए यूष के साथ मधुराम्ल वस्तु का भोजन करने का आदेश कर देना चाहिए। (चि० ७ अ०)। (२) मूत्रकृच्छ्र में द्राक्षा को बासी जल के साथ पीसकर जल के साथ सेवन करने से मूत्रकृच्छ्र प्रशमित होता है। (चि० ११ अ०)

चक्रदत्त—

दश वर्ष का पुराना घी ʃ४ सेर, द्राक्षा कल्क ʃ१ सेर एवं जल १६ सेर इनका मृदु अग्नि से यथा विधि पाक करें। यह घृत रक्त पित्त, कामला, गुल्म, पांडु रोग, ज्वर प्रमेह और उदर रोगों को नष्ट करता है। (रक्तपित्त-चि०)

यूनानी ग्रंथकार अंगूर को—दूसरी कक्षा में गरम तर मानते हैं। कच्चा प्रथम कक्षा में ठंडा और दूसरी कक्षा में रूक्ष है। हानिकर्त्ता—स्निग्ध आमाशय और प्लीहा को तथा वायुजनक है। दर्पघ्न—सौंफ और गुलकन्द। प्रतिनिधि—किसी किसी गुण में अंजीर व मवेज़ मुनक्का। गुण, कर्म, प्रयोग—यह अत्याहार है; क्योंकि इससे शुद्ध रुधिर उत्पन्न होता है जो अपनी मधुरता के कारण हृदय को अत्यन्त प्रिय है; अतिरिक्त इसके अपनी तारल्यता के कारण यह शीघ्र शोषित हो जाता है और इसी कारण बल्य है। पूर्णतया पका हुआ अंगूर उत्तम होता है; क्योंकि यह अत्यन्त मधुर होता है तथा इसमें अपक्व द्रव बहुत कम होता है। लटका कर रखा हुआ अंगूर इससे उत्तम होता है; क्योंकि इस दशा में वायु का, जो अवशिष्ट द्रव को लयकरता है, चारों ओर से आधिपत्य रहता है। इसके विपरीत जो किसी स्थान में रखे हुए हों विशेषतः जब अत्यधिक तह पर तह रक्खे हुए हों तब वे इससे क्लिष्टतर होते हैं। इसी प्रकार बिलकुल का तोड़ा हुआ अंगूर भी उत्तम होता है, क्योंकि रस जो अंगूर के आहार में व्यय होता है उसकी ओर शीघ्र शीघ्र पहुँचता है। इसका कारण यह है कि अंगूर का वृक्ष अपनी उत्ताप शक्ति के कारण जल शोषण में अधिक शक्तिशाली है। इसके अतिरिक्त इसका वृक्ष पूर्णरूप से सीधा खड़ा हुआ नहीं होता। इस कारण जल भी इसकी ओर सरलतापूर्वक शोषित होता है। इसके सिवा यह अत्यन्त पिलपिला होता है, और इसमें आहार नलिकायें अत्यन्त विस्तृत होती हैं। और चूंकि अंगूर की ओर आहार प्रवेश तीव्र गति से होता है, इसलिये वह अपक्व रहता है तथा उक्त अवस्था में शेष होता है, जिससे वायु एवं उदराध्मान उद्भूत होते हैं। किन्तु, तोड़ने के पश्चात् जब कुछ समय तक रखा रहता है तब इसके अवशिष्ट रतूबतों का प्रायः भाग लय हो जाता है। अंगूर वस्ति को हानिकर्ता है; क्योंकि यह शिथिलता, तीक्ष्णता और शोषण उत्पन्नकर्त्ता है। शैथिल्यजनन का कारण यह है कि उक्त रतूबत के कारण वस्ति अधिक स्नेह युक्त हो जाती है, क्योंकि इसकी ओर अंगूर की रतूबत अधिकताके साथ प्रवेशित होती है। और क्योंकि इसकी रतूबत मात्रा में अधिक आशुकारी तथा मूत्रजनक होती है। तीक्ष्णता का कारण इसका माधुर्याधिक्य है। (नफ़ा०)

अंगूर शीघ्रपाकी, पक्वाशय की थैली में शीघ्र उतरनेवाला और अत्याहार है; उत्तम रुधिर उत्पन्न करता और शरीरको बृंहण करता है। यह रक्तशोधक वातजमल को हरणकर्ता, स्वच्छ करता, मल को पक्व करता है। यदि इसको ज़िस्मी के साथ पक्व करके शोथ पर लगाएँ तो यह शोथ को शीघ्र ही लय करे। यह क्लिन्नोद्घाटक है और मन को प्रसन्न करता है।

अंगूर के छिलका और बीज शीतल तथा रूक्ष हैं। मुड़ली वायुकारक, विबंधकारी, मूत्र एवं वीर्यस्तम्भनकारी है। अपक्व अंगूर शीतल तथा संकोचक है। इसके बीज तथा त्वचा को नहीं खाना चाहिए। इसकी लकड़ी की राख अश्मरी ध्वंसक, शीतल, अण्डशोथ तथा अर्श

नाशक है। अन्तिम दो रोगों में इसका वाह्य तथा आभ्यन्तर उपयोग होता है।

मुनक्का—स्वरूप—काला और लाल। स्वाद—मधुर। प्रकृति—१ कक्षा में गरम और तर। हानिकर्ता—उष्ण प्रकृति वालों को और रुधिर, वृक्क को स्वच्छताप्रद है। दर्पनाशक—सिकञ्जबीन, खशखाश और अम्लफल स्वरस। प्रतिनिधि-किशमिश तथा इसका अन्य भेद आबजोश। मात्रा—१० दाने से २० दाने तक। गुण, कर्म, प्रयोग—विशेष कर यह अल्पाहार, बृंहण, कामवर्धक तथा हृद्य है। पित्त की तीक्ष्णता और उष्णता को शमनकर्ता, कफशोधक, दोषों को पक्व और समपक्व करता, प्रकृति को मृदुकर्ता, वायु को लयकर्ता, आमाशय और आंत्रियों को स्वच्छकर्ता, शरीर की बृंहणकर्ता, यकृत और शीत प्रकृति वालों के ओज को बलप्रद तथा फुप्फुस प्रान्त के अनुकूल है। पशुओं की चरबीके साथ इसका लेप शोथको लय करता है। यह भुना हुआ गरमागरम खांसी को गुणकारक है।

मुनक्का रेचक औषधियों का सहायक एवं वस्ति व वृक्क के रोगों को लाभप्रद है। गावज़ुबान तथा ताजे छुहारे के साथ मूर्च्छा को लाभप्रद और लोबान के संग विस्मृति तथा सिरके के साथ पांडु को लाभप्रद है। कालीमिर्च के साथ मूत्रकृच्छ्र तथा वृक्काश्मरी एवं वस्त्यश्मरी को लाभप्रद है। इसका क्वाथ प्रकृति को मृदुकर्ता तथा शीत कषाय सिरके के साथ प्लीहा शोथ को लयकरता है।

मुनक्का के बीज-प्रकृति—१ कक्षा में ठंडे और २-कक्षा में रूक्ष। हानिकर्ता—वृक्क को। दर्पनाशक—उन्नाब व अमलतास। स्वाद—फीका, दुःस्वाद।

गुण, कर्म,-प्रयोग—बन्धक, आध्मानकर्ता, स्निग्ध-आमाशय तथा आंत्र को बलप्रद तथा स्निग्धता शोषणकर्ता है। किसी किसीने स्तम्भक भी लिखा है।

किशमिश।

स्वाद—मधुर और चाशनीयुक्त। प्रकृति—गरम और तर तथा बीज ठंडे और रूक्ष हैं। हानिकर्ता-वृक्क एवं उष्ण प्रकृति को। दर्पनाशक—सिकंजबीन व खसखास तथा उन्नाब। प्रतिनिधि-मवेज़ मुनक्का उचित मात्रामें। गुण,कर्म,प्रयोग-इसका विशिष्ट गुण यकृत, हृदय तथा मस्तिष्क को बलप्रदान करना और कामशक्ति को बढ़ाना है, एवं गाढ़े दोषोंको पक्व करना, प्रकृतिको मृदु करना, रोध उद्घाटन तथा आमाशयको स्वच्छ करना है। यह कठोरता को मृदुकर्ता, कफ प्रकृति को कोमल करता, श्वास को लाभप्रद, ओजको बलवान करता, शरीर को बृंहण करता, रेचक होते हुए भी मस्तिष्क को लाभप्रद है। मूर्च्छानाशक, वस्ति तथा वृक्करोग को लाभप्रद, अंगूरी सिरके के साथ प्लीहाशोथलयकारक तथा हृदय व वात तंतुओं को बलप्रद और अल्पाहार, एवं विस्मृति रोग नाशक भी है।

अंगूर क्षार—इसके पञ्चांग से निकाला हुआ क्षार अश्मरीभेदक है। मात्रा—२-४ रत्ती।

अंगूर आदि के गुणकर्म व प्रयोग

डॉक्टरों के मतानुसार।

डॉक्टर मोहीदीन शरीफ़—स्वलिखित मेटेरिया मेडिका में स्वानुभव को निम्न प्रकार से पेश करते हैं। यथा—

प्रभाव—अंगूर, उत्तापशामक, मूत्रजनक, तथा ज्वरनाशक है। किशमिश (अधिक मात्रा में) स्निग्धताकारक श्लेष्मानिस्सारक तथा उदरमृदुकारी (Laxative) है। (थोड़ी मात्रा में) संकोचक है।

प्रयोग—अंगूर का शर्बत अतिग्राह्य तथा शीतजनक पेया है और अनेक ज्वरों में ज्वर सम्बन्धी लक्षणों तथा तृषा को शमन करने में अत्यन्त लाभदायक सिद्ध होता है। उक्त डॉक्टर महोदय कहते हैं कि मैंने मूत्रदाह, मूत्रावरोध तथा मूत्रकृच्छ्र और पैत्तिकाजीर्ण की कतिपय दशाओं में इसका उपयोग किया और इसे लाभप्रद पाया। यह अन्य औषधियों के लिए विशेषतः उनके लिए जो अजीर्ण, प्रवाहिका, अतिसार तथा जलोदर

प्रभृति विकारों में व्यवहृत होती है, सर्वोत्तम एवं अतिग्राह्य अनुपान है।

शर्बत निर्माण-विधि—एक द्राक्षा स्वरस १ सेर, जल १॥ सेर, शुद्ध स्वच्छ शर्करा २ सेर। सर्व प्रथम शर्करा को जल में डाल कर अग्नि पर रखकर खौलें, पुनः अंगूर स्वरस मिलाएँ। तत्पश्चात् सम्पूर्ण द्रव को मधुर अग्नि द्वारा यहाँ तक पकाएँ कि वह ⅔ रह जाए। मात्रा–आधा से १ फ्लुइड आउंस (२४ घंटे में ४–६ बार)।

डाइमॉक-अपक्व अंगूर स्वरस को अरबी में हस्रम, फ़ारसी में गूरह, अंग्रेज़ी में वरजूस (Verjuice) तथा रूमी में अग्रेस्टो (agresto) कहते हैं। वह इटली में अब तक कंठरोगों में व्यवहृत होता है। वसंत ऋतु में अंगूर की शाखाओं को काटने से उनमें से अधिकता के साथ रस निकलता है। यह त्वचा रोगों में व्यवहृत होता है। अब भी यूरप में चक्षु प्रदाह के लिए यह एक प्रसिद्ध औषध है।

इसका पत्ता संकोचक है, तथा अतिसार में उपयोग किया जाता है।

आर० एन० खोरी—औषधार्थ प्रयोग करने से पूर्व अंगूर के बीज एवं छिलका दूर कर देने चाहिए। मुनक्का श्रमहर, स्निग्ध, शीत तथा मृदुरेचक हैं। इसको प्रायः औषध को मधुर करने के लिए प्रयोग में लाते हैं। यह ज्वर की पिपासा, प्रदाहमूलक पीड़ा एवं कोष्ठबद्ध रोग में सेवनीय है। पत्र–कषेला है और अतिसार रोग में व्यवहृत होता है।

काष्ठ की भस्म—अश्मरी रोग के पूर्वरूप में एवं भावीरोगोत्पादनानुकूल अवस्था में शरीर में युरिक एसिड सञ्चय हेतु अनागतव्याधि प्रतिषेधक रूप से अर्थात् भावी व्याधि उत्पन्न न हो; इस लिए इसका उपयोग करते हैं। एतद्देशीय लोग कोष्ठवृद्धि रोग एवं अर्श में इसका प्रलेप करते हैं।

कपिलद्राक्षा (भूरीदाख) साधारणतः रेचक मिश्रणों में उपादान रूप से व्यवहृत होती है।

किशमिश-विविध खंडमोदकादि में व्यवहृत होता है।

(मे० मे० इं० २ य भा० १३७ पृ०)

मुकर्जी—किशमिश शीतल तथा मृदुभेदक ख्याल किया जाता है और खाँसी, प्रतिश्याय तथा पांडुरोग में व्यवहृत होता है।

हिं० संज्ञा पुं० [सं० अंकुर] (२) मांस के छोटे छोटे लाल दाने जो घाव भरते समय दिखाई पड़ते हैं। (३) अंकुर, अँखुआ।

अङ्गूर का मड़वा angúra-ká-maravá-हिं० संज्ञा पुं० अंगूर की बेल को चढ़ने और फैलने के लिए बाँस की थज्जियों का बना हुआ मण्डप।

अङ्गूर की टट्टी angúra-ki-ṭaṭṭi-हिं० संज्ञा स्त्री० अंगूर का मड़वा।

अङ्गूर की शर्करा angúra-ki-ṣharkará हिं० संज्ञा स्त्री० द्राक्षौज, द्राक्षा खंड, दाख की शर्करा। Grape sugar (Dextrose, glucose.)

अङ्गूर शेफ़ा angúra ṣhefá-हिं० संज्ञा पुं० [फ़ा०] (Dulcamara) एक जड़ी जो हिमालय पर शिमले से लेकर काश्मीर तक होती है। इसे संग अंगूर, सूची, जवराज तथा गिरबूटी भी कहते हैं। इसकी जड़ और पत्तियाँ दमे और वायु के दर्द को दूर करती हैं। देखो–अंगूरे शिफ़ा।

अङ्गूरी angúrí-हिं० वि० [फ़ा० अंगूर+ई] (१) अंगूर से बना हुआ। (२) अंगूरी रंग का।

संज्ञा पुं० कपड़ा रंगने का हलका हरा रंग जो नील और टेसू के फूल को मिलाकर बनाया जाता है।

अङ्गूरी शकर angúrí-ṣhakara-फ़ा०-हिं संज्ञा पुं० द्राक्षौज, द्राक्षखंड, अंगूर की शर्करा (Dextrose)

अङ्गूरी शराब angúrí-ṣharába-हिं०, द० द्राक्षासव, मद्य। खम्र, शराब–अ०। मै, बादह, मुल–फ़ा०। शाक्याम–ता०। द्राक्षसारायि, द्राक्ष रसम्–ते०। मुन्तिरिक्कप पज़म-चारायम

–मल० । द्राख्‌-नु-दारु–गु० । मुद्रिर-का-अरक, मुदिरक-पान–सिं० । वाइनम Vinum (Fermented juice of grapes–Wine or Port wine)–लें० । स० फा० इं० ।

अङ्गूरी सिर्का angúrí-sirká–हिं०, द० अंगूरेर सिर्का–बं० । खल्लुल् खनर, खल्लुल् अनब–अ० । सिर्कह अंगूरी–फ़ा० । दिराक्ष-काडी–ता० । द्राक्ष–पुल्लनील्लु-तें० । मुन्तिरिङ्ङ कारि–मल० । द्राक्षी-काडी–कना० । द्राख्नु-सिर्को–गु० । विनेगर ऑफ ग्रेप्स (Vinegar of grapes or wine vinegar) -इं० । स० फा० इं० ।

अङ्गूरे काबुली angúre kábulí–फ़ा० किशमिश, काबुली किशमिश । Raisin (Uvæ, Uvæ passæ.)

अङ्गूरे कौली angúre-kaulí } –फ़ा०
अङ्गूरे खिरस angúre-khiras } रीछदाख । यूवी अर्साई फोलिया (Uvæ ursi folia) –लें० । ए० मे० मे० ।

अङ्गूरे ख़ुश्क angúre-khushk–फ़ा० मुनक्का, सूखे अंगूर, किशमिश । Raisins (Uvæ, Uvæ passæ)

अङ्गूरेर सिर्का angúrera-sirká–बं० अंगूरी सिर्का (Vinegar of grapes) स० फा० इं० ।

अङ्गूरे रूबाह angúre-rúbáh–फ़ा० मको, काला मको, ऊदा मको–हिं० । (Solanum Nigrum, *Bl.* not *Linn.*) स० फा० इं० ।

अङ्गूरे रूबाहे सुर्ख़ angúre-rúbáhe surkha–फ़ा० मको, रक्त (लाल) मको–बं०, हिं० । (Solanum Rubrum, *Mill.*)

अङ्गूरे रूबाहे सियाह angúre-rúbáhe-siyáh–फ़ा० काला मको–हिं० । (Solanum nigrum, *Bl.* not *Linn.*)

अङ्गूरे शिग़ाल angúre-shighála–फ़ा० मको Bitter sweet (Dulcamara).

अङ्गूरे शिफ़ा angúre-shifá–फ़ा० (Dulcamara) मको–हिं० ।

अङ्गूरे सग angúre-sag–फ़ा० (Jacquins nightshade) इं० हैं० गा० ।

अङ्गूषः angúshah–सं० पुं० (An ichneumon) एक चारपाया जानवर ।

अङ्गेज़ angeza–अफ़० अफगानी भाषा में इस का नाम नूरेआलम है । यह एक घास है जो गीलान के पहाड़ों में उगता है । नर व मादा भेद से दो प्रकार का होता है ।

अङ्गेज़ अवरतस angeza-avaratasa–फ़ा० अजुफ़ारुत्तीब,नख (Helix ashera)

अङ्गोकर angokara–ने० (Momordica dioica, *Roxb.*) धारकरेला–हिं० । फा० इं० भा० ।

अङ्गोज़ह्‌ angozah–फ़ा० (Assafœtida) हींग–हिं० । हिंगुः, रामठम्–सं० ।

अङ्गोज़हे इलरी angozahe-ilarí–फ़ा० (Assafœtida) हींग, हिङ्गु–हिं० ।

अङ्गोद्वर्तन angoda-vartana–सं० अंग-लेपन, अनुलेपन, लेप । The hair-wash (Liniment) फा० इं० २ भा० ।

अङ्गोरम् angoram–कोंपल,नवपल्लव (Bud).

अङ्गोल angola–सिं० अङ्कोल (Alangium decapetalum, *Lam.*) स० फा० इं० ।

अङ्गौन angouna–बर० (ए० व०) मुकुल, कली (Bud.)

अङ्गौन मियाआ angoun-miyáá-बर० (ब० व०) कलियाँ (Buds).

अङ्गुवेण्टा unguenta–लें० (ब० व०) अङ्गुएण्टम् (ए० व०)

अङ्घ्रालजी anghrálají–सं० स्त्री० अन्ध्रालजी रोग (Andhrálají).

अङ्घ्रिः anghrih } सं० पुं० १–(The
अंह्रिः anhrih } Root of a tree) द्रुम मूल, वृक्ष की जड़ । रा० नि० व० २ । अम० । २–(Foot) पाद, चरण, पाँव । (Lower limb) रा० नि० व० १८ ।

अङ्घ्रि ग्रन्थिकम् anghri-granthikam–सं० क्लीo पिप्पलीमूल (Piper root).

अङ्घ्रि जिह्विकः anghri-jihvikah–सं० पुं०

दमनक वृक्ष (Artemisia indica, *Willd.*).

अङ्घ्रि नामकः,-नामन् anghri-námakah-, náman-सं० पुं० १-(Artemisia indica) दमनक वृक्ष। २-(The Root of a tree) वृक्ष मूल, जड़। रा० नि० व० २। अम०।

अङ्घ्रिपः anghripah-सं० पुं० (A Tree) अंघ्रिप, पेड़, दरख्त, वृक्ष। रा० नि० व० २। हला०।

अङ्घ्रिपर्णिका anghri-parniká } -सं० स्त्री०
अङ्घ्रिपर्णी anghri-parní } (Doodia lagopodioides) पृश्निपर्णी। चाकुलिया -बं०। भा० पू० १ भा० गु० व०।

अङ्घ्रिबला anghri-balá-सं० स्त्री० पृश्निपर्णी (Hemionites cordifolia)

अङ्घ्रिवल्लिः,-का anghrivallih,-ká } -सं०
अङ्घ्रिवल्ली anghrivallí } स्त्री० (Uraria Lagopoides, *De.*) पृश्निपर्णी। चाकुलिया-बं०। अ० टी० र०।

अङ्घ्रिषः anghrishah-सं० पुं० उक्त नाम का तालु रोग। देखो-अध्रुषः (Adhrushah)

अङ्घ्रिसन्धिः anghrisandhih- }
अङ्घ्रिस्कन्धः anghri-skandhah } सं० पुं०
अङ्घ्र्यः anghryah-सं० पुं० } गुल्फ, पादगुल्फ, गट्टा-हिं०। हे० च०। The ankle (Malleolus), पायेर गोड़ालि -बं०।

अचण्ड Achanda-सं० सुमुख।

अचता achatá-नैपा० लाल कांईपुरा--सिलहट। मे० मो०।

अचर achara-हिं० वि० [सं०] (Immovable) न चलने वाला। जड़। स्थावर। संज्ञा पुं० न चलने वाला पदार्थ। जड़ पदार्थ। स्थावर द्रव्य।

अचरणा acharaná-सं० स्त्री० वह योनि जो मैथुनके समय पुरुषसे प्रथम स्खलित हो जाती है।

अचल achala-हिं० वि० (Immovable) स्थिर।-हिं० पुं०, लः-सं० पुं० (१) A mountain पर्वत। (२) A bolt or pin शंकु। संज्ञा पुं० न चलने वाला।

अचलकीला achalakílá-सं० स्त्री० (Earth) पृथ्वी।

अचल त्विट्(-ष) achala tviṭ,-sha-सं० पुं० कोकिल, कोइल (A cuckoo)

अचल सन्धि achala sandhi-सं०, हिं० स्त्री० अचेष्ट संधि, स्थिर संधि, वे सन्धियाँ जिनमें गति असम्भव है। जैसे दोनों पार्श्विकास्थियों के बीच की संधि। इम्मूवेबल जॉइण्ट Immovable joint, सिनार्थ्रोसिस Synarthrosis-इं०।

मफ़्सिल् साबित, मफ़्सिल् मुवस्सक़ -अ०।

नोट—(१) अधोहन्वास्थि और शंखास्थि की संधि को छोड़कर कर्पर की शेष सन्धियाँ स्थिर ही हैं।

(२) अचल संधियाँ तीन प्रकारकी होती हैं:- १—दरज़वाला जोड़ (मफ़्सिल् मदरूज़, मफ़्सिल् तदरीज़ी) जैसे कपाल की अस्थियाँ। २-कीलनुमा, गड़ा हुआ जोड़ (मफ़्सिल मर्कूज़, मफ़्सिल् मिस्मारी) जैसे दन्त और हनु की संधि। ३-नलिकाकार सन्धि (मफ़्सिल् शर्क़ी, मफ़्सिल् मीज़ाबी) जैसे जतुकास्थि और नासावंशास्थि की सन्धि। इनके अंगरेजी नाम क्रमशः इस प्रकार हैं:—(१) स्युचर (Suture), (२) कम्फोसिस (Comphosis), (३) स्केंडिलेसिस (Schendylesis)

अचला achalá } -सं० स्त्री०
अचला कीला achalá-kilā } पृथ्वी (The earth.)

अचलीज achalíja-हिं० संज्ञा पुं० इटिया मेक्रोफाइला Itea macrophylla.

अचलेश्वरः achaleshvarah-सं० पुं० एक योग जिससे वृद्धता नष्ट होती है। पाराभस्म, शुद्ध गन्धक, त्रिफला और गुग्गुल इन सबको समान भाग लेकर बारीक चूर्ण करके एरण्ड के तैल के साथ रोज चाटें। इस प्रकार ६ महीने सेवन करने से वृद्धता दूर होती

और आयु की वृद्धि होती है। इसके सेवन करने वाले को बकरे के अण्डकोष की कीमा को गाय के दूध में उबाल कर मिश्री मिलाकर खाना उचित है। रस यो० सा०

अचक्षु achakshu-हिं० वि० } बिना
अचक्षुस् achakshus-सं० त्रि० } आँख का। अंधा। नेत्र रहित। (Eyeless, blind).

अचापल,-ल्य achápala,-lya सं० त्रि० (Stealy) स्थिर, अचंचल।

अचापलं,-ल्यं achápalam,-lyam—सं० क्लो० (Steadiness) स्थिरता।

अचार achára-हिं० संज्ञा पु० (१) खटाई भेद। (२) चाल चलन, आचार, व्यवहार। (३) चिरौंजी का पेड़। प्रियाल वृक्ष (Buchanania latifolia, *Roxb.*)

अचार बोंगड़ा achára-bondí-म० पोकर-मूल, उकरा-हिं०। अकलकर-सं०। वन मुगला-कना०। Paracress (Spilanthes Oleracea, *Jacq.*)

अचारी achári-हिं० वि० [सं०] अचार करने-वाला। आचरण शील।

अचिकित्स्य achikitsya-हिं० वि० }
अचिकित्स्यः achikitsyah-सं० त्रि० }
बे उपाय। बे इलाज। ला दवा। जिसकी दवा न हो सके। चिकित्सा के अयोग्य। असाध्य (Incurable.)।

अचिकुरः achikurah-सं० पुं० कपाल रोग, खालित्य, इन्द्रलुप्त। (Alopecia Baldness)

अचिक्कन achikkana-हिं० वि० [सं०] खुरखुरा, खरदरा, (Rough, unpolished.)

अचित् achit-हिं० संज्ञा पु० [सं०] (१) Devoid of understanding अचेतन। जड़ प्रकृति। "चित्" का उलटा। (२) Material प्राकृतिक।

अचिन्त achinta-हिं० वि० [सं०] चिन्ता-रहित, निश्चिंत, बे फ़िक्र।

अचिन्ता achintá-हिं० संज्ञा स्त्री० बे फ़िकरी, निश्चिन्तता (.Absence of thought).

अचिन्त्य achintya-हिं० वि० [सं०] (१) बोधागम्य। अज्ञेय। कल्पनातीत। (२) अतुल। (३) आशा से अधिक।

अचिन्त्यजः achintyajah सं० पु० पारद, पारा (Mercury) रा० नि० व० १३।

अचिन्त्यशक्तिरसः achintya-shaktirasah-सं० पु० पारा, गन्धक प्रत्येक २ मा०, भाँगरा, केशराज (काला भाँगरा), सम्भालू, ब्राह्मी, पत्रसुन्दर (गूमा), सफेद अपराजिता की जड़, शालिञ्चशाक और कालमरिच इनको ४-४ मा० ले उपर्युक्त सभी औषधियों के रसमें बारीक पीसें, फिर सोनामाखी १ मा०, कालीमिर्च १ मा० मिलाकर नैपाली ताम्बे के डण्डे से खरल कर मूँग प्रमाण गोलियाँ बना छायामें शुष्ककर रक्खें। इस प्रयोग को सन्निपात में बरतें। देखो-भै० र० सन्निपाताधिकारः।

अचिन्त्यात्मा achintyátmá-सं० पु० [सं०] परमात्मा (The Supreme Soul)

अचिरं achiram } सं०, हिं० क्रि० वि०
अचिर achira } (soon, quickly)
शीघ्र। तुरन्त। जल्दी।

अचिर द्युति achira-dyuti-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] बिजली। क्षणप्रभा। विद्युत। (Lightning)

अचिर-पल्लवः achira-pallavah-सं० पु० (Alstonia scholaris, *R. Br.*) सप्तपर्णवृक्ष। छातिम। छतीऊन। छतिवन। सतवन।

अचिर प्रभा achira-prabhá } -सं० स्त्री०
अचिर भास् achira.bhás } (हिं०
अचिर रोचिस् achira-rochis } संज्ञा स्त्री०)
बिजली, चपला। विद्युत। (The lightning.)

अचिरात् achirát-हिं० क्रि० वि० [सं०] शीघ्र। तुरन्त। जल्दी।

अचिराभा achirábhá } -सं० स्त्री० विद्युत।
अचिरांशु achiránshu } बिजली। (Lightning)

अचीता achítá-हिं० वि० स्त्री० [सं०] अनिच्छित । अचिंतित । (Unwished.)

अचुका achuká सं० स्त्री० आच्छुक । आल । आछी (Morinda citrifolia, *Linn.*)

अचुवागन्दी achuvágandí–ता० असगन्ध । अश्वगन्ध । (Withania Somnifera, *Dunal.*)

अचूक achúka-हिं० वि० [सं०] अच्युत । जो न चूके । ठीक । जो अवश्य फल दिखाए । अवश्य निर्दिष्ट कार्य करने वाला । भ्रम रहित । पक्का । ज़रूर । (Sure, unfailing)

अचेत acheta-हिं० वि० [सं०] अज्ञान । मूर्च्छित । सुन्न होना । चेतना रहित । संज्ञा शून्य । बे होश । (Out of mind or senses)

अचेतन achetana–हिं० संज्ञा पुं०
अचेतनः achetanah-सं० त्रि०
(Inanimate object)जड़द्रव्य ।अचैतन्य पदार्थ ।-हिं० वि० [सं०] Insensible, senseless बेहोश । संज्ञा हीन । मूर्छित । चेतना रहित । आत्मविहीन ।

अचेलः achelah-सं० पुं० वस्त्रहीन । नंगा । नग्न (Naked, clothless.)

अचेल परिसह achela-parisah–हिं० संज्ञा पुं० [सं० अचैलपरिसह] आगम में कहे हुए वस्त्रादि धारण करने और उनके फटे एवं पुराने होने पर भी चित्तमें ग्लानि न लाने का नियम ।

अचेष्ट संधि acheshta-sandhi–सं० त्रि० अचल सन्धि (Synarthrosis)

अचेष्टा acheshtá- सं० स्त्री० अटल । स्थिर (Immovable).

अचैतन्य achaitanya–हिंoसंज्ञा पुं०
अचैतन्यः achaitanyah–सं० त्रि०
निश्चेतता, चेतना का अभाव, अज्ञान ।–हिं० वि० [सं०] आत्माविहीन, अज्ञानता, जड़, चेतनारहित ।

अचैन achaina–हिं० संज्ञा पुं० [सं० अ= नहीं+शयन=सोना] आराम न करना, विकलता, दुःख, कष्ट । (Uncomfortable).

अच्चेगिडा achchegidá–कना० वृद्धि, रक्त-

विन्दुच्छदा (Euphorbia pilulifera, *Linn.*)

अच्छ achchha-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) (A crystal) स्फटिक । (२) (A bear) रीछ, भालू । भल्लूक, भल्ल । (३) स्वच्छ जल । -हिं० वि० (clear, pellucid transparent) स्वच्छ ।–संज्ञा पुं० [सं० अक्ष] (१) आँख, नेत्र । (२) रुद्राक्ष ।

अच्छः achchhah—सं० पुं० (१) गुन्द्र । (२) रीछ, भल्लूक । (३) स्फटिक । मे० छद्विक । (४) पटेरे ।

अच्छकीकसम् achchha-kíkasam—सं० क्ली० सूत्रविहीन कारटिलेज (Hyaline cartilage)

अच्छटा achchhatá—सं० स्त्री० भुईं आमला, भूम्यामलकी (Phyllanthus niruri, *Linn.*)

अच्छत achchhata-हिंoसंज्ञा पुं०[सं०अक्षत] बिना टूटा हुआ चावल (Whole rice). वि० अखंडित ।

अच्छ-भल्लः,-ल्लुकः achchha-bhallah,-llukah–सं०पुं० १--सोनापाठा (Oroxylum indicum, *Vent.*) । देखो–भल्लुकः । रा०नि०व० १६ । रत्ना० । २-(A bear) भालू , रीछ ।

अच्छर्दिका achchhardiká-सं० स्त्री० (Vomiting, an emetic) वमन । छर्दि । उकाई । वमी । वान्ति । रा० नि० व० २० ।

अच्छलः achchhalah-सं० पुं० तिल की लुगदी । तिलकल्क (Paste of sesamum indicum)

अच्छा achchhá -हिं० वि० [सं० अच्छ=स्वच्छ, निर्मल] [स्त्री० अच्छी] मनोहर । सुन्दर ।

अच्छा-विच्छा achchhá-vichchhá–हिं० वि० [हिं० अच्छा] (१) दुरुस्त । खासा । चुना हुआ । (२) नीरोग । भला चंगा ।

अच्छिन्न achchhinna–हिं० वि० [सं०] छिद्र रहित, जो कटा न हो । अखण्डित ।

अच्छिन्न-पत्रः achchhinna-patrah–सं० पुं० (१) शाखोट वृक्ष, सिहोर (Streblus asper, *Linn.*)। (२) युक्तपत्र वृक्ष मात्र।

अच्छुकः achchhukah–सं० पुं० उक्त नाम का रञ्जन पुष्प वृक्ष। तिनिश वृक्ष। आल। आल फुलेर गाछ–बं०। (Lagerstrœmia flos=reginæ, *Retz.*) प० मु०।

अच्छोदन achchholana–हिं० संज्ञा पुं० शिकार। आखेट। अहेर। (The chase, hunting).

अच्छोदन् achchholan–सं० त्रि० (Having clear water)

अच्युत achyuta–हिं० वि० [सं०] (१) स्थिर, अटल, दृढ़, नित्य, अविनाशी। (२) जो गिरा न हो। (३) जो न चूके, जो त्रुटि न करे, जो विचलित न हो।

अच्युता achyutá–सं० स्त्री०, नेपा० लाल कांईपुरा–सिलहट।

अच्युतावासः achyutá-vásah }
अच्युतवासः achyuta-vásah } सं० पुं० (Ficus religiosa, *Linn.*) अश्वत्थ वृक्ष, पीपलवृक्ष। रा० नि० व० ११। (२) उदुम्बरवृक्ष, गूलर का पेड़। The sacred fig tree (Ficus glomerata, *Roxb.*)

अछवानी achhaváni–हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० यवनिका वा यमानी] कॉड्ल (Caudle)–इं०। बनी, बानी, प्रसूता स्त्रियों की औषध। अजवाइन, सोंठ तथा मेवों को पीस कर घृत में पकाया हुआ मसाला जो प्रसूता स्त्रियों को पिलाया जाता है।

अछाम achháma–हिं० वि० [सं० अक्षाम्] (१) जो पतला न हो। मोटा। बड़ा। भारी। (२) जो क्षीण वा दुबला न हो। हृष्ट पुष्ट। मोटा ताजा। बलवान्।

अछिद्र achhidra–हिं० वि० छिद्र रहित (Impervious)।

अछी achhí–हिं० संज्ञा स्त्री० [देश०] आल का पेड़ (Morinda citrifolia, *Linn.*)

अछूता achhútá–हिं० वि० [सं० अ=नहीं + छुप्त=छुआ हुआ] अनछुआ, नवीन, पवित्र। [स्त्री० अछूती]

अछेद achheda–हिं० वि० [सं० अच्छेद्य] जिसका छेदन न हो सके। जो कट न सके। अछेद्य। अखंड्य।

संज्ञा पुं० अभेद, अभिन्नता।

अछेद्य achhedya–हिं० वि० [सं०] जिसका छेदन न हो सके, जो कट न सके, अभेद्य।

अछेह achheha–हिं० वि० [सं० अच्छेद्य] बहुत अधिक। अनंत। अत्यन्त। (२) अखंड्य। निरन्तर।

अछोप achhopa हिं० वि० [सं० अ+छुप] आच्छादन रहित। नंगा। नीच। तुच्छ।

अछोभ achhobha–हिं० वि० [सं० अक्षोभ] (१) क्षोभरहित, उद्वेग शून्य, चंचलता रहित, स्थिर, गम्भीर, शांत।

अछोह achhoha–हिं० संज्ञा पुं० [सं० अक्षोभ, प्रा० अच्छोह] क्षोभ का अभाव, शांति, स्थिरता।

अज aja–हिं० वि० [सं०] }
अजः ajah–सं० त्रि० } (Unborn)
जिसका जन्म न हो। अजन्मा।

संज्ञा पुं० (१) Cupid कामदेव। (२) Moon चन्द्रमा। (३) A ram, he goat बकरा। (४) A sort of corn or grain अनाज।

अज़अर azaãar–अ० कम बालों वाला। जिसके बाल कम हों।

अज़क़ ãazaq–अ० फलदार खजूर का वृक्ष। Fruitful date tree (Phenix sylvestris)

अज़क़ इब्न ज़ैद ãazaq-ibna-zaid–अ० खजूर भेद। (A kind of date).

अज़क़ इब्न ताब ãazaq-ibna-táb–अ० खजूर भेद। (A kind of date).

अजकम् ajakam–सं० क्लो० साखू, साल। The sal tree (Shorea robusta, *Gærtn.*) इं० मे० मे०।

अजकर्णः ajakarṇah } —सं० पुं०
अजकर्णकः ajakarṇakah }
अजकर्णक ajakarṇaka—हिं० संज्ञा पुं०
बकरा के कर्ण के समान पत्र-वाला शालवृक्ष विशेष, असन । र० मा० । बालसर्ज । रत्ना० । इसका प्रसिद्ध नाम पीतशाल है । (Indian kino tree) आसन, विजयसार, साल का पेड़—हिं० । आसना, पियासाल—बं० ।

गुण—कटु, तिक्त, कषाय, उष्णवीर्य, कफ, पाण्डु, कर्णरोग, प्रमेह, कुष्ठ, विष विकार तथा व्रण-नाशक है । भा० पू० १ भा० वटा० व० । (Sal tree) सर्ज वृक्ष, साखू । रा० नि० व० ६ । महासर्ज तरु, शाल का एक भेद है । महासालवृक्ष । सु०सू०अ०३८, ४ गणः ड ।

अजकर्णशाल ajakarṇa-shála—हिं० संज्ञा पुं० The sal tree (Shorea robusta, *Gærtn.*) साल, साखू ।

अजका ajaká—सं०स्त्री० १—(Scrofulous disease of the goat) अजागलस्तन (बकरे का गलगण्डरोग) । देखो—गलस्तन । २ छाग पुरीष, लेंडी (Goat's dung) । ३—(A young she-goat) । ४—जो शुक्र कुछ ताँबे के से रंग का, पिच्छिल, रक्तस्रावी, कुछ ताँबे के से रंग की फुंसियों से युक्त, अत्यन्त वेदना सहित बकरी की मेंगनी के सदृश ऊँचा और कृष्ण वर्ण का होता है, उसे अजका कहते हैं । यह रक्त से उत्पन्न होता है । और असाध्य भी है । वा० उ० १० अ० । (५) शुक्र तुलसी (Ocimum album, *Linn.*) इं० मे० मे० ।

अजकाजात ajakájáta—हिं० संज्ञा पुं० }
अजकाजातम् ajaká-játam—सं० क्ली० }
आँख में होने वाली लाल फूली जो पुतली को ढक लेती है । टेंटड़ वा ढेंढड़ । नाखूना । चक्षु तारा में होने वाला रोग विशेष । काले भाग में बकरी की सूखी लेंडी के समान पीड़ायुक्त लाल तथा गाढ़े आँसुओं को बहाने वाली शुक्र (फूली) की वृद्धि होती है उसको अजकाजात नामक शुक्र जानना चाहिए । यह तृतीय त्वचा में प्राप्त होती है, इससे इसमें भेदा की वृद्धि होती है । मा० नि० नेत्ररष्टिगत रो० निदा० । टेरीजियम् Pterygium—इं० । नाखुनह्, नाखूनह्—फ़ा० । ज़ुफ़रह्, ज़ुफ़रह्—अ० ।

अज़क़ुः áazaqúh—अ० बामनी । बभनी । (A red tailed lizard)

अजकेशी ajakeshí—सं० स्त्री० नीलीवृक्ष, नील (Indigofera tinctoria, *Linn.*) वै० निघ० ।

अजखीस áajakhísa—अ० बछड़ा (A calf)

अजग ajaga—सं० राई, सरसों, सर्षप, (Sinapis dichotoma)

अजगर ajagara—हिं० संज्ञा पुं० [सं०] A large serpent, the boa constrictor बकरी निगलने वाला साँप, बहुत मोटी जाति का साँप जो अपने शरीर के भारीपन के कारण फुर्ती से इधर उधर डोल नहीं सकता और बकरी तथा हिरन ऐसे बड़े पशुओं को निगल जाता है । और सर्पों के समान इसमें विष नहीं होता । यह जंतु अपनी स्थूलता और निरुद्यमता के लिए प्रसिद्ध है ।

अजगरः ajagarah—सं० पुं० } सर्प विशेष,
अजगर ajagara—हिं० संज्ञा पुं० } बहुत मोटा साँप । A large serpent (Boa constrictor) who is said to swallow goats । म६० १२ । १०६ । बिलेशय(अर्थात् बिल में रहने वाला) मृग विशेष ।
पर्य्याय—शंयुः, वाहनः, । (अ०) । यह अर्श (बवासीर) में हितकारी है । सु० सू० ४६ अ० ।

अजगल ajagala—दे० अजागल ।

अजगलिका ajagaliká—हिं० संज्ञा स्त्री० }
अजगल्लिका ajagalliká सं० स्त्री० }
अजगल्ली ajagallí—सं० स्त्री० }
बर्बरी वृक्ष, वनतुलसी । बाबुइ तुलसी—बं० । (Ocimum album, *Linn.*) भा० पू० १ भा० पु० । क्षुद्ररोगान्तर्गत बालरोग विशेष । यह कफ वात जन्य होता है । वा० उ० ३१ अ० । बालकों के चिकनी, शरीर के समान वर्ण की, गठीली, पीड़ा रहित, मूँग के दाने के

बराबर छोटी पिड़िका (फुंसी) जो कफ और वात के प्रकोप से शरीर पर निकलती है, उसको **अजगल्लिका** कहते हैं । **मा० नि० क्षुद्र**रो० ।

अजगव ajagava-हिं० संज्ञा पुं० दे० अजकवः

अजकवः,-वं ajakavah,-vam-सं० पुं०, क्ली० शिव का धनुष (The bow of Shiva).

अजगुत ajaguta-हिं० वि० अद्भुत, अचरज ।

अजगुर ajagura-हिं० संज्ञा पुं० एक बूटी है जो एक से १॥ बालिश्त ऊँची होती है । इसमें तुलसी सदृश पत्र एवं मञ्जरी लगती है । स्वाद–अत्यन्त तिक्त ।

गुण—विषमज्वर में इसके पञ्चाङ्ग का येन केन प्रकारेण उपयोग लाभदायक होता है ।

अजगंधा ajagandhá-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] अजमोदा (Apium involucratum, *Roxb.*) ।

अजगंधा ajagandhá } सं० स्त्री०,हिं०
अजगंधिका ajagandhiká } संज्ञा स्त्री०
(१) **वनयमानी**, जंगली अजवाइन, वनयमानी (Seseli Indicum, *W. & A.*) अम० । रत्ना० । (२) **पर्य्या**—वस्तगंधा, खरपुष्पा, अविगंधिका, उग्रगन्धा, ब्रह्मगर्भा, ब्राह्मी, पूति-**मयूरिका-सं०। रामतुलसी**-हिं०। (Ocimum gratissimum, *Linn.*) गुण—कटु, तीक्ष्ण, रूक्ष, हृद्य, अग्निवर्द्धनी, दाहपित्तप्रकारिणी, लघु, शुक्र, वात एवं कफ नाशनी है । मद० व० १ । (३) (Ocimum album, *Linn.*) बनतुलसी का पौधा, ममरी, बर्वरी, बबई–हिं० । तिलौणि । मद० । रानतुलस, तिलवण–म० । **रा० नि० व० ४** । गुण-प्रभाव– लघु, रूक्ष, हृद्य, वात एवं कफ नाशक । मद० व० १ । वन यमानी । **च० द० वि० ज्व०** । "नीलिनीमज गन्धाञ्च" । नीलपुनर्नवा । फोकान्दी, वनयमानी । **च० सू० ४ अ०** । **च० सू० २ शिरो वि०** । **वा० चि० १५ अ० उ० २२ अ०** ।

अजगंधिनी ajagandhiní-सं० स्त्री०, हिं० संज्ञा **स्त्री० मेढासिंगी** । मेषशृङ्गी (Helicteris isora, *Linn.*). **गाड़ल-शिङ्गे-बं०** । **र० मा०** । (२) **काकड़ासींगी** (Rhus succedanea, *Linn.*) ।

अजघोषः ajaghoshah-सं० पुं० सन्निपात ज्वर भेद । लक्षण—शरीर में बकरे के समान गन्ध आए, कन्धों में पीड़ा हो, गले का छिद्र रुक जाय, और नेत्र लाल होजाएँ, ये सब लक्षण जिस ज्वर वाले को हों उसका "अजघोष" सन्निपात से पीड़ित जानना । भा० म० १ भा० ।

अज़ज azaj-अ० फ़ज़्ह, चतुर्थ कोष्ठ (Fourth ventricle)

अजजीवः ajajívah } सं० पुं० (A
अजजीविकः ajajívikah } goat-herd)
गड़ेरिया ।

अजटा ajatá-सं० स्त्री० भूँई आमला, भूम्यामलकी (Flacourtia Cataphracta, *Roxb.*) । **र० सं० चि० अर्श: अग्निमुख लौह** ।

अजड़ ajará-हिं० वि० [सं०] जो जड़ न हो । चेतन । (Not stupid)
संज्ञा पुं० चेतन । चेतन पदार्थ ।

अजड़ा ajará-सं० स्त्री० **भूम्यामलकी, भुँई आमला** (Phyllanthus niruri, *Linn.*) (२) कौंच, केवाँच, कपिकच्छु–हिं० । आलाकुशी, शुया शुम्बा–बं० । Corpopogon pruriens । **भा० पू० गु० व०** । (३) लालमिर्च, कुमरिच–हिं० । लङ्का मरिच–बं० । (Capsicum annuum, *Linn.*) अत्रि० ।

अजड़ाफलम् ajará-phalam-सं० **क्ली०** शुकशिम्बी फल, कौंच, **केवाँच–हिं०** । Corpopogon pruriens (Pod of--) । **च० चि० २ अ०** वृष्य क्षीर ।

अजथ्या ajathyá-सं० स्त्री०, हिं० संज्ञा स्त्री० **पीलीजूही, स्वर्ण यूथिका**, पीले रंग की जूही का पेड़ और फूल । A plant (Yellow jasmin) । (२) पीली चमेली, ज़र्द चमेली (Jelsimium) । (३) छाग समूह (Flock of goats) **वै० श०** ।

अजद āajada-अ० (A crow) कौआ । काग । (२) मवेज़ (मुनक्का) । (३) तुख़्म (बीज) अंगूर । (४) मुनक्का सदृश खजूर का एक भेद (A kind of date)

अजदग्धी aja-dagdhí–सं० स्त्री० बड़ी रास्ना।

अजदण्डी ajadandí–सं० स्त्री० ब्रह्मदण्डी (Echinops echinatus, *D. C.*) इं० मे० मे०। फा० इं० २ भा०।

अज़दर्द azadarda–बर० हिन्दकूक़ी। बिषखपरा।

अज़्दहा azadahá–फ़ा० अजगर, बड़ा मोटा और भारी साँप (Boa constrictor)

अजदहा ajadahá–हिं० संज्ञा पुं० [फ़ा०] अजगर।

अज़दाद azadáda–एक प्रकार का कपूर जो गदला, और नीला-मैला होता है। (A kind of camphor)

अज़दू azadú–फ़ा० निर्यास, गोंद (Gum).

अजदूब ajadúb–अर० अज्ञात।

अज़दूय azadúya–बरब० कायफल। अज़री। (Myrica nagi, *Thunb.*)

अज़दूये ताज़ी azadúye-tází–फ़ा० (Gum acaciá) बबूल गोंद।

अजन ajana–हिं० वि० [सं०] जन्म रहित। अजन्मा। अनादि।–वि० [सं०] निर्जन, सुनसान।

अजनस áajanas–अ० मोटा बलवान ऊँट (Fat camel)

अजनह ajanah–अ० गालों का उभार। जल का वर्ण व गंध बदल जाना।

अज़नाब azanáb–अ० ज़नब का बहु व० अर्थ पुच्छ (दुम) है। टेल (Tail)–इं०।

अज़नाबुल् खील azanábul-khila–अ० लिह यितुत्तीस। यह एक पौधा है जो विदेशों में उत्पन्न होता है। इसके लक्षण में मतभेद है।

अजनामकम् ajanámakam–सं० क्ली० माक्षिक (Ferri Sulphuratum) हे० च०।

अज़नुलफ़ील–azanul-fila–अ० राकस गड्डू। (Bryonia epigæa, *Rottl.*) इसकी जड़ का मलहम गठिया को दूर करता है। इं० हैं० गा०।

अजन्ता ajantá–हिं० संज्ञा स्त्री० कुम्बी–पं०।

अजन्तुजग्धः ajantu-jagdhah–सं० त्रि० अकीट भक्षित। च० द० अ० सा० वि० कुटज पुट पाक।

अजन्म ajanma
अजन्मा ajanmá } हिं० वि० [सं०] (Unborn, unbegotten) जन्मरहित।

अजप ajapa–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) A shepherd बकरी भेड़ पालने वाला। गँड़ेरिया। (२) A butcher कसाई।

अजपत्री ajapatrí–सं० स्त्री० रीझा।

अजपा ajapá–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] A shepherd बकरियों का पालक। गँड़ेरिया।

अजपादः ajapádah–सं० पुं० पत्थरी। Anisochilus carnosus (Thick leaved lavender) इं० मे० मे०।

अजपालः ajapálah–सं० पुं० (A butcher) कसाई।

अजपा वरुणः ajapá-varuṇah–सं० पुं० अश्मरीघ्न, पाशुझद, वरुण। Cratæva nurvala or C. religiosa, *Forsk.* (Three leaved caper) इं० मे० मे०।

अजप्रिया ajapriyá–सं० स्त्री० बदरी या बेर वृक्ष (Zizyphus jujuba, *Lamk.*) भा० पू० १ भा० फ० व०।

अज़फ़ áazafa–अ० खुस खजूर नारियल आदि वृक्षों के पत्तों को कहते हैं। जिसके पत्ते लम्बे व बारीक हों।

अजफ़ áajafa–अ० (Thinness) हज़ाल। लागरी। दुबलापन। दौर्बल्य। कार्श्य।

अज़फ़ारुज्जन aza-fárujjana–अ० कर्णपात। एक बूटी है जिसमें फूल और पत्ते नहीं होते। वर्ण–श्यामाभायुक्त धूसर। यह बूटी नख से चुनी हुई वस्तु के सदृश होती है।

अज़फ़ा-रुत्तीब azafá-ruttíba-अ० नख-हिं०। नाख़ून परियाँ, नाख़ून देव, नाख़ून ख़िरस, नाख़ून सद्फ़–फ़ा०। सीपी के किस्म का एक कठोर वस्तु है जो समुद्र तट के निकट पाई जाती है। यह नख सदृश गोलाकार एवं सुगंधियुक्त होती और सुगंधियों में प्रयुक्त होती है।

क़यास किया जाता कि यह भी घोंघे सीपी आदि के सदृश किसी समुद्री जीव का कोष है।

अज़फ़ूत āazafúta–बामनी, बभनी। (A red tailed lizard).

अजब āajaba–अ० (१) कालादाना, .इब्बुलनील। तुख़्मे-नील–फ़ा। फार्बिटिज़-निल Pharbitis nil, *Choisy.* (seeds of-káládáná).

(२) आश्चर्यजनक बात, अनोखी बात, अनोखापन–हिं०।

अज़ब āazaba–अ० (१) मीठा पानी, मीठी वस्तु। (२) एक वृक्ष का नाम। (३) एक वस्तु जो बच्चा उत्पन्न होने के पश्चात् जरायु से निकलती है।

अज़ब āazaba–अ० स्त्री रहित पुरुष अथवा पुरुष रहित स्त्री।

अजबभ्रु ajababhru–सं० वह वृक्ष जिस पर बकरियाँ चराई जाती हैं। जैसे-बरगद, बेर, पीपर आदि। अथ०।

अज़बह् āazabah–अ० बेवा, राँड़, वह स्त्री जिसका पति मर गया हो। विडो Widow–इं०।

अज़बह् āazabah–अ० (१) छोटी माईं, माईं खुर्द, छोटे झाऊका फल। (Tamarix orientalis, *Kahl.*)। (२) मीठा पानी। (३) काई। (Moss) फा० इं०।

अज़बर azabara फ़ा० छोटी माईं का वृक्ष। (Tamarix orientalis, tree of--).

अजबला ajabalá–सं० स्त्री० कृष्ण तुलसी (Ocimum sanctum, *Linn.*) वै० श०।

अजबू ajabú–सं० सुगन्धवाला। (Pavonia odorata, *Willd.*)

अज़बूतह् āazabútah–अ० मरक़ मादह, चूहा मादा, चुहिया, मूस (Rat, mouse)

अजभक्ष ajabhaksha–हिं० संज्ञा पुं० }
अजभक्षः ajabhakshah–सं० पुं० }

१—(Acacia arabica, *Linn.*) बर्बुरी वृक्ष, बबूल का पेड़ जिसे बकरियाँ अधिक चाव से खाती हैं। बाबुई, बाबर–बं०। रा० नि० व० ४।

अजभक्षा ajabhakshá–सं० स्त्री० छोटा धमासा। क्षुद्र दुरालभा (Nut of) रा० नि० व० ४।

अजम āajama–अ० १—(Fruit-stone) फलों की गुठली। २—(Young-one of camel) ऊँट का बच्चा।

अज़म āazama–अ० पुश्त पञ्जह। क़ज़्ज़ा।

अज़म āazama–हड़। हरीतकी (Terminalia chebula, *Retz.*)

अजमह् āajamah–अ० खजूर का वृक्ष जो बीज से निकलता है। खजूर का गाभा (Shoot of Date tree).

अजमद ajamada–सं० यवानिका, अग्निवर्द्धन, दीपक। अजवाइन–हिं०। (Ptychotis Ajowan, *D. C.*)। ओमम (सीड्स) Omum (seeds), बिशप्स वीड (Bishop's weed)–इं०। इं० मे० मे०।

अजमलः ajamalah–सं० पुं० (Common wheat) गोधूम। गेहूं। गम्–बं०। प० मु०।

अजमसी āajamasí–अ० (A kind of small date) छोटा खजूर भेद।

अजमा ajamá–गु० अजवाइन, Carum (Ptychotis) Ajowan, *D. C.*

अजमाय āajamaya–अ० (१) क्वाड्रुपेड (Quadruped)–इं०। चारपाए, चतुष्पदजीव। (२) सतराम्यून।

अजमारः ajamárah–सं० पु० (A butcher) कसाई।

अज़मालूस azamálúsa मिर० अजवाइन खुरासानी (Hyoscyamus nigrum, *Linn.*)

अजमांसम् ajamánsam–सं० क्ली० (Goat's flesh) छाग मांस। देखो–छागमांसम्। चा० स० ६ अ०।

अज़मूत azamúta–बरब० रीठा, अरिष्टक, अरीठा। Soapnut tree (Sapindus trifoliatus, *Linn.*).

अज़मेई azameí–ग्रा० इं० **चाय** । Tea plant (Gamellia theifera).

अजमो ajamo–गु० (१) **अजमोदा** (Apium involucratum.). (२) **अजवाइन** (Carum ptychotis Roxburghianum, *benth.*)

अजमोदः ajamodah सं० पुं० } Carum
अजमोद ajamoda–हिं० संज्ञा पुं० } Ajowan *D. C.*) दीप्यक । वा० सू० ३५ अ० वत्सकादि० व० । देखो—**अजमोदा** (Apium involucratum.)

अजमोदा,–दिका ajamodá,-diká–सं०,हिं० स्त्री०बोड़ी अजमोद, आजमूद,आजमूदा,अजमद् । आजमूदह, आजमूदह-अजवान–द० । संस्कृत पर्याय—अजमोदा, खराश्वा, मयूर, दीप्यक, ब्रह्मकुशा, कारवी, समस्तका, खराह्वा, वस्तमोदा, मर्कटी, मोदा, गंधदला, हस्ती, गंधपत्रिका, मायूरी, शिखिमोदा, मोदाढ्या, वह्निदीपिका, ब्रह्मकोशी, विशाली, हयगंधा, उग्रगंधिका, मोदिनी, फलमुख्या, मयूरका, दीप्यका, वल्ली, लोमकर्कटी, रोमकर्कट, यवान, कृमिरोगजित, दीप्यवल्ली, मर्कटा, कराह्वा, कर्कटा, लोचमस्तका, यवानिका, मेध्यदा, विशल्या, हस्तिकावरी, हयगंधा, उग्रगंधा, वनयमानी, हस्तिकारवी । रांधनी, आजमूद, वनयमानी, चनु, वनयोयान –बं० । करफ़से-सख़री, करफ़्सुल्-जिबली, करफ़्सुल्-मक़दूनी, बज़्रुल्-करफ़्स अ० । करफ़्से-कोही, करफ़्से-मक़दूनी, करफ़्से-हिन्दी, तुख़्मे-करफ़्स–फ़ा० । बित्रासालियून, (फ़ित्रासालियून–अ० क्र०)–यू० । केरम (टाइकोटिस्) राक्सबर्घ्यानम् Carum (Ptychotis) Roxburghianum. *Benth.*, एपिअम इन्वाल्युक्रेटम Apium Involucratum, *Roxb.* (Friut of--), एपिअम पेट्रोसेलिनम Apium Petroselinum, पेट्रोसेलिनम Petroselinum, ए० ग्रेवियोलेन्स A. Graveolens, *Linn.* पिम्पिनेला इन्वाल्युक्रेटा Pimpinella involucrata, लिग्युस्टिकम् अज्वान Ligusticum ajwaena–ले० । सेलेरी (सीड) Celery (seed); वाइल्ड सेलेरी (Wild celery),पार्स्ले(Parsley)–इं०। सेलेरी Celeri–फ्रां० । अशम-तागम्, अशम्ता ओमम्–ता० । अजमोद-वोमम् , अशु-मदाग-वोमम् , आजमोदा, वामम्–ते० । आजमोदा-वोमा, अजमोदा–कना० । अजमोदा–मह०, कर्णा० । अजमोदा-वोवा–मह० । बोडी-अजमो, बोडी–अजमोदा,अजमो–गु० । अजमुद,बोडी-अजमोदा–बं०, प० । अजवान के पत्ते, बुड़ी-अजिवाइए–कच्छ । भूतघाट–पं० ।

अम्बेलिफेरी अर्थात् छत्री वर्ग
(N. O. Umbelliferae.)

उत्पत्तिस्थान—उत्तरी पश्चिमी हिमवती पर्वत मूल, पञ्जाब की बाह्य पहाड़ी, पश्चिमी भारतवर्ष और फ़ारस ।

इतिहास—अजमोदा का वर्णन लगभग सभी प्राचीन एवं अर्वाचीन आयुर्वेदीय ग्रन्थों में पाया जाता है । अरब लोगों ने इसका ज्ञान सम्भवतः यूनानियों से प्राप्त किया । हकीम दीसक़ूरीदूस (Dioscorides) ने पाँच प्रकार के करफ़्स का वर्णन किया है । थीओफ्रैस्टस (Theophrastus) ने सीलिनोन (करफ़्स) नाम से इसका वर्णन किया है । मीरमुहम्मद हुसैन लिखते हैं कि करफ़्स (अजमोदा) को अङ्गरेज़ी में सेलरी (Celery.) तथा यूनानी में ऊद-सालियून कहते हैं । वह इसके तीन अन्य भेदों का भी वर्णन करते हैं, जिनमें (१) सख़री जिसको यूनानी में फ़ितरसालियून, (२) नबती जिसको यूनानी में अकूसालियून और (३) तरी जिसको यूनानी में शमरीनियून कहते हैं । वास्तव में ये क्या हैं ? इसका निश्चय करना अति दुःसाध्य है । बम्बई में "फ़ितरासालियून" नाम से जो ओषधि बिकती है वह पहाड़ी सौंफ है जिसको हिन्दी में कोमल कहते हैं । परन्तु वह बीज जो ईरान से बम्बई में आकर करफ़्स नाम से बिकता है उसको वहाँ "बड़ा अजमोद" कहते हैं ।

वानस्पतिक-विवरण—अजमोदा अजवाइन

ही का एक भेद है। इसके क्षुप अजवाइन के ही समान होते हैं। इनकी शाखाओं पर बड़े बड़े छत्ते से लगते हैं; उनपर श्वेत रंग के पुष्प आते हैं और जब वे छत्ते पक और फूट जाते हैं तब उनमें से जो दाने उत्पन्न होते हैं वे छत्तों से अलग होते हैं, उनको अजमोद कहते हैं। करफ़्स या बड़ी अजमोदा जो फ़ारस से बम्बई में आती है, वह एक अति सूक्ष्म फल होता है। यह गोलाकार और चिकना होता है। स्वाद-प्रथम सौंफ के समान पुनः कड़ुआ। गंध-सौंफ के समान, किन्तु उससे निर्बल।

प्रयोगांश—बीज तथा मूल।

रासायनिक संगठन—(१) गंधक, (२) एक उड़नशील तैल, (३) अल्ब्युमीन, (४) लुआब तथा (५) लवण। इसमें से एक प्रकार का कपूर निकलता है जिसे एपिओल (Apiol) कहते हैं।

औषध-निर्माण—चूर्ण, क्वाथ, परिस्रुत, औषधीय जल (अर्क) आदि।

अजमोद के गुणधर्म तथा प्रयोग।

आयुर्वेद की दृष्टि से—

अजमोद शूलप्रशमन और दीपन है। (च०) वातकफनाशक, अरुचिनाशक, दीपन, गुल्मशूलनाशक और आमपाचक है। सु०।

अजमोद, चरपरा, गरम, सूखा, कफवातनाशक और रुचिकारक है तथा शूल, अफरा, अरोचक और उदररोग का नाश करनेवाला है। (रा० नि० व० ६)

अजमोद चरपरा, तीक्ष्ण, अग्निदीपक, कफ, तथा वात को नष्ट करने वाला, गरम, दाहकारक हृदय को प्रिय, वीर्यवर्द्धक, बलकारक (कहीं कहीं "बद्धमला" अर्थात् विबंधकारी पाठ है) और हलका है तथा नेत्ररोग, कफ (कहीं कहीं कृमि पाठ है), वमन, हिचकी, तथा वस्तिशूल नष्ट करने वाला है। मद० व० २, भा० पू० १ भा० ह० व०, सि० यो० अग्निमांद्य चि०।

अजमोद रुचिकारक, दीपन, चरपरा, रूखा, गरम, विदाही, हृदय को प्रिय, वीर्यवर्द्धक, बलकारक, हलका, कड़वा, मल स्तम्भक, ग्राही और पाचन है तथा अफरा, शूल, कफ वात, अरोचक, उदर के रोग, कृमि, वमन, नेत्र रोग, वस्तिशूल, दन्तरोग, गुल्म और वीर्य के विकार को दूर करता है। (नि० र०)

अजमोदार्क के गुण

अजमोद का अर्क वात कफनाशक और वस्तिशोधक है।

यूनानी ग्रन्थकारों की दृष्टि से अजमोद के गुणधर्म व प्रयोग।

स्वरूप—काला। स्वाद—तीखा और चरपरा। प्रकृति—१ कक्षा में उष्ण और २ कक्षा में रूक्ष है। हानिकर्ता—गर्भवती तथा दुग्ध पिलाने वाली स्त्रियों और उष्ण प्रकृति व मृगी के रोगियों को। दर्पनाशक—अनीसून और मस्तगी। प्रतिनिधि—खुरासानी अजवायन। मात्रा—६ मा० से ६ मा० तक। गुण, कर्म व प्रयोग—समस्त श्लेष्मज एवं शीतजन्य रोगों के लिए विशेषकर लाभदायक है।

यह तीक्ष्ण तथा कड़वा है, इसलिए उष्ण, मुक़त्तअ़ (काटने छाँटने वाला) और तीव्र रोधउद्घाटक है। यह आध्मान लयकर्ता, रोधउद्घाटक और स्वेदजनक है तथा श्लेष्मा एवं वायुजन्य वेदनाशामक है। मुखकी गंधको अत्यन्त सुगन्धि युक्त बनाता है। क्योंकि यह मसूढ़ों, तालु, कव्वे तथा आमाशय की दुर्गन्धि युक्त एवं सड़ी गली रतूबतोंको लयकर्ता तथा काटता छाँटता है। अपस्मार के लिए हानिकारक है और अपस्मार रोगियों के दोषों को कुपित करता है। क्योंकि आमाशय को गरम करता है और उसमें वाष्पोद्भूत करनेवाला उत्ताप उत्पन्न कर देता है; जिससे तीव्र धूम्रमय वाष्प उत्थित होता है। जिस समय यह मस्तिष्क तक पहुँचता है उस समय घनीभूत होकर वायु बन जाता है। इसी से अपस्मार पैदा होता है। इसके अतिरिक्त यह शिर की ओर मलों को भी चढ़ाता है। किसी किसी के मतानुसार मल नलिकाओं को खोलने के कारण यह आमाशय, शिर तथा जरायु की ओर तीव्र मलीय रतूबतों को शोषण करता है। इस हेतु अपस्मार को

हानि करता तथा कास को लाभ पहुँचाता है। यकृत, प्लीहा, वृक्क तथा वस्तिके लिए लाभदायक है, जलोदर और मूत्रावरोध को दूर करता है। अश्मरी को टुकड़े टुकड़े कर डालता है, क्योंकि इसमें तफ़्तीह (मवाद के छाँटने), रोध उद्घाटक तथा रेचक शक्ति पाई जाती है। रजःप्रवर्तक होने के कारण गर्भवती को हानिकर्ता है और इसी कारण तीव्र मवाद एवं तीव्र रतूबतों से गर्भाशय को पूरित कर देता है। जिस समय यह भ्रूण की आहारमें सम्मिलित हो जाता है उस समय उसके शरीर में खराब फुन्सियाँ तथा दुष्टव्रण उत्पन्न हो जाते हैं चाहे ये जन्म के बाद ही क्यों न प्रगट हों। अपनी रोध उद्घाटनी शक्ति के कारण यह गरम मवाद को शुक्राशय की ओर गति देता है, अस्तु यह कामोद्दीपनकर्ता है जिससे कामेच्छा को उत्तेजना मिलती है। (नफ़ा०)

अजमोद श्वास, शुष्ककास और आंतरिक अवयव के शोत को गुणकर्ता, यकृत और प्लीहा के रोध को खंडन कर्ता, अत्यन्त मूत्रप्रवर्तक, क्षुधा और ओज को चालनकर्ता है। इसकी जड़ सम्पूर्ण कफज रोगों को लाभ करती तथा आहार को पचाती और जलोदर को गुण करती है। यह प्रभाव में अपने बीज से बलवान है। जौ के आटे के साथ इसका लेप शोथ को लयकर्ता है तथा पार्श्वशूल और वान्तिनाशक है।

डॉक्टरी एवं अन्य मत

अजमोद के पत्तों को कुचल कर स्तन में लगाने से दुग्धस्राव अवरुद्ध हो जाता है। (नुकिन). यह ज़ख़्मी नेत्रों में पुलटिस रूप से उपयोग में आता है। अजमोद की जड़ का वृक्क पर लाभदायक प्रभाव होता है। इं० मे० मे०

अजमोद बदहज़मी और दस्त की बीमारी में अत्यन्त उपयोगी है तथा खराब स्वाद वाली दवा अजमोद के पानी के साथ देने से उलटी आने की सी शंका नहीं होती। इससे ये सब दवाएं पेट में शूल होने की सी शंका होने को बन्द करती हैं। यह अत्यधिक लालास्रावक है। इससे पाचक रस अधिक उत्पन्न होते हैं, उदरशूल नष्ट होता है तथा पाचन शक्ति बढ़ती है। गले के भीतर की सूजन पर भी अजमोद को अन्य ग्राही पदार्थ के साथ मिलाकर उपयोग करना हित है। (डॉ० वॉडो)।

अजमोद तैल अर्थात् एपिओल (Apiol).
नॉट ऑफ़िशल (Not official).

लक्षण—यह एक पीतवर्ण का तैलीय द्रव है जिससे विशेष प्रकार की गन्ध आती है। स्वाद-तीक्ष्ण एवं अग्राह्य।

घुलनशीलता-यह जल में तो नहीं घुलता किन्तु हलाहल (Alcohol) और ईथर में सरलतापूर्वक घुल जाता है।

मात्रा-३ से ४ मिनिम् (बुन्द)।

उपयोग-विधि-इसको साधारणतः कैप्स्यूलज़ में डालकर देते हैं।

नोट—स्फटिकाभ एपिओल (कर्पूर अजमोदा), इसको भी कभी उक्त तैल के स्थान में उपयोग करते हैं।

प्रभाव व प्रयोग-एपिओल को रजःप्रवर्तक तथा मूत्रजनक रूप से रजःरोध तथा बाधक वेदना और वृक्क आदि रोगों में (२-३ बुन्द की मात्रा में कैप्स्यूलज़ या शर्करा के साथ) वर्तते हैं। कहते हैं कि विषम (मलेरिया) ज्वरों में भी यह लाभदायक होता है, पर डॉक्टर डाइमाक महोदय के अनुसार इसकी परीक्षा करने पर निम्न इन्द्रियव्यापारिक क्रियाएँ संपादित होती हैं, यथा शिरोवेदना, मदकारी, खाद्य को बारम्बार खाने की इच्छा, पाचन विकार, क्षुधा का नष्ट हो जाना और ज्वर आदि। सूक्ष्म मात्रा में एपिओल आपस्मारिक मूर्च्छा के लिए गुणदायक बतलाया जाता है। इं० मे० मे०।

नोट—यूनानी हकीम भी फ़ितरासालियून को मूत्रविरेचक, रजःप्रवर्तक तथा वृक्क, वस्ति एवं गर्भाशय के लिए लाभदायी जानते हैं तथा उसे इन्हीं गुणों के लिए उपयोग में लाते हैं।

योग-निर्माण—(१) क़िनीन सल्फेट १ रत्ती, एपिओल $\frac{१}{३}$ ग्रेन ($\frac{१}{६}$ रत्ती) और पर्मैंगनेट ऑफ़ पोटाश $\frac{१}{८}$ रत्ती ($\frac{१}{१६}$ ग्रेन) इनको मिला

कर वटिका प्रस्तुत करें। यह एक मात्रा है।

गुण—ज्वर सहित रजःरोध तथा मलेरिया ज्वर में लाभ होता है। इं० मे० मे०।

(२) एक्सट्रैक्टम् अर्गोटी $\frac{१}{२}$ रत्ती (१ ग्रेन), एपिश्रोल ३ मिनिम् (बुंद).

उपयोग-विधि—इन दोनों औषधों को एक खाली कैपशूल में डालकर खिला दें और ऐसा एक एक कैपशूल दिन में ३ बार दें।

गुण—रजः रोध तथा बाधक वेदना में लाभदायक है।

अजमोदाख्या ajamodákhyá–सं० स्त्री० (१) वनयमानी, वन अजवाइन। खेत्रयमानी, खेत पापड़ा। रत्ना०, बृहत् लवंगादि चूर्ण। (२) यमानी। अजवाइन। Carum (Ptychotis) Ajowan, *DC.* । रा० नि०।

अजमोदादि गुटिका ajamoládi-gutiká –सं० स्त्री० अजमोद, मिर्च, पीपल,चित्रक, वायविडंग,देवदारु, सोआके बीज, सेंधा लवण, पीपलामूल, इन्हें १ पल और सोंठ १० पल, विधारा १० पल, दन्ती (जमालगोटा की जड़) ५ पल इनका चूर्ण कर चूर्ण के बराबर गुड़ मिला गोलियाँ बनाएँ।

मात्रा—२–६ मा०। इसे गर्म जल से उपयोग करने से समस्त वात रोग दूर होते हैं।

(योगचिन्तामणि)

अजमोदादि चूर्णः ajamodádi-chúrṇah –सं० पुं० अजमोद,वायविडङ्ग,सेंधानोंन,देवदारु, चित्रक, पीपरामूल, सौंफ, पीपर, मिर्च, इन्हें कर्ष कर्ष भर लें। हड़ ५ कर्ष, विधारा १० कर्ष, सोंठ १० कर्ष इन्हें चूर्ण कर गुड़ पुराना मिश्रित कर उष्ण जल से खाने से शोथ, आमवात, सन्धिपीड़ा, (गठिया) गृध्रसी, कटिपीड़ा, पीठ, जाँघ की पीड़ा, तूणी, प्रतितूणी वायु, विश्वाची, कफरोग तथा वायु के रोग दूर होते हैं। शार्ङ्ग० सं० मध्य० ख० अ० ६। योग० चि० म०।

अजमोदाद्य वटकः ajamodádya-vaṭakah –सं० पुं० अजमोदादि गुटिका।

(१) अजमोद १ सेर, हड़, बहेड़ा, आमला, सोंठ मुलतानी, विदारी कन्द, धनियाँ, मोथा, मोचरस, गजपीपल, लौंग, जायफल, पीपर, चित्रक, अनारदाना, भारंगी, कमलगट्टा, मिर्च, दोनों जीरा, कुटकी, अजवाइन, पीपरामूल, रेणुका, वायविडंग, वच, कायफल, पित्तपापड़ा तिधारा, दन्ती की जड़, कुरदानासार इन्हें एक एक तोला लें, चूर्ण व कपड़छान कर इसमें २० वर्ष का पुराना गुड़ एक सेर मिलाकर पाक विधि से एक एक तो० प्रमाण गोलियाँ बनाएँ। इसे उष्ण जल से उपयोग करने से पेट का भारीपन, कछुई तथा उदर विकार दूर होते हैं।

(२) अजमोद, त्रिफला, विदारीकन्द, सोंठ, धनियाँ, मोचरस, मोथा, गजपीपल, लौंग, जायफल, पीपल, विजयामुलतानी, अनारदाना, दोनों जीरा, चित्रक, भारंगी, कमलगट्टा, कौंचबीज, मुलहठी, शिलाजतु, काकड़ासिंगी, केशर, नागकेशर, पुष्करमूल, शतावर, इन्हें ६–६ मासे लें, पुनः चूर्ण कर कपड़छान करें। पश्चात् ८४ सेर गोदुग्ध औटाएँ जब एक सेर शेष रहे एक सेर मिश्री की चाशनी कर, उक्त चूर्ण मिला १ तो० प्रमाण गोलियाँ बनाएँ। इसके सेवन से वीर्य वृद्धि होकर बल बढ़ता है। (अमृ० सा०)

(३) अजमोद १२ भाग, चित्रक ११ भाग, हड़ १० भाग, कूट ६ भाग, पीपर ८ भाग, मिर्च ७ भाग, सोंठ ६ भाग, जीरा ५ भाग, सेंधालवण ४ भाग, वायविडंग ३ भाग, वच २ भाग, हींग १ भाग। इन्हें चूर्ण कर चूर्ण से द्विगुण पुराना गुड़ मिलाकर ७॥ टं० प्रमाण गोलियाँ बनाएँ। इसके सेवन से अनेक प्रकार के वातरोग, १४ प्रकार के हर्ष रोग, १८ प्रकार के गुल्म, २० प्रकार के प्रमेह दूर होते हैं। तथा, यह हृद् रोग, शूल, कुष्ठ, वायु, गुल्म, गलग्रह, श्वास, संग्रहणी, पांडु, अग्निमान्द्य, अरुचि, इत्यादि को दूर करती है।

(४) अजमोद, मिर्च, पीपर, वायविडंग, देवदारु, चित्रक, शतावरी, सेंधालवण, पीपरामूल, इन्हें चार चार तोला लें। सोंठ ४० तोला,विधारा

४० तोला, हड़ २० तोला इन सब का बारीक चूर्ण बनाएँ और सर्व तुल्य पुराना गुड़ मिलाकर १ तोला प्रमाण गोलियाँ बनाएँ। इसको उष्ण जल से सेवन करने से आमवात, विश्वाची, तूणी, प्रतितूणी, हृद्रोग, गृध्रसी, कटि, वस्ति, गुदा-स्फुटन, शोथ, सन्धिपीड़ा इत्यादि रोग दूर होते हैं। चक्र० द० उरुस्तम्भ० चि०। वङ्ग० से० सं०। भैष० र०।

अजमोदिका ajamodiká–सं० स्त्री० अजमोदा (Ajamodá).

अजम्भः ajambhah–सं० पुं० (१) भेक (कृष्णाभ्र, मंडूक)। श० र०। See-bheka. (२) वे दाँतका बच्चा। दन्त रहित। बिना दाँत का।

अजय ajaya–हिं० वि० [सं०] (Not victorious, unsuccessful, Subdued) जयरहित, अकृतार्थ। –हिं० संज्ञा पुं० पराजय, हार।

अजयपाल ajaya-pála–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] जमालगोटा। (Croton tiglium, *Linn.*).

अजया ajayá सं० स्त्री० (Cannabis Indica, *Linn.*) विजया, भंग, भाँग। भाषा में इसको सिद्धि कहते हैं। रा० नि०। (२)–हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० अजा] बकरी (A shegoat).

अजर ajara––सं० त्रि०, हिं० वि० [सं०] (१) (Not Subject to old age or decay, ever young) जरारहित, जो बूढ़ा न हो। (२) [सं० अ=नहीं+जृ=पचना] जो न पचे, न हज़म हो।

अजरकम् ajarakam–सं० क्ली० अग्निमांद्य, अजीर्ण (Indigestion). सि० यो० कास० चि० वृन्दः। च० द० पांडु–चि० योगराज।

अज़रद azarad-समुद्रफेन की एक क़िस्म है। (A kind of cuttle-fish).

अज़रन áazarana–बांग्हे अरमना।

अज़रफ़ूत áazarfúta ⎱ बामनी, बमनी।
अज़फ़ूत áazafúta ⎰ (A red tailed lizard).

अज़रब áazaraba–अ० छोटा अज़दहा (अजगर) Boa constrictor (Small).

अजरम् ajaram–सं० क्ली० स्वर्ण Gold (Aurum). रा० नि० व० १३। –त्रि० जरारहित। डिवॉइड ऑफ ओल्ड एज (Devoid of old age)–इं०।

अज़रह áazarah–अ० पायख़ाना (Latrine).

अजरह áajarah–अ० वृक्ष प्रभृति की गिरहें। वृक्ष ग्रन्थि (Node).

अजरा ajará–सं० स्त्री० (१) (A lizard) गृहगोधिका–सं०। छिपकी, छिपकली–हिं०। टिकटिकि-बं०। (२) जीर्णफञ्जीलता। (३) (Gmelina asiatica, *Linn.*) वृद्धदारक, विधारा। रा० नि० व० ७। (४) (Aloe indica, *Roy.*) गृहकन्या, घृतकुमारी, घीकुआर। रा० नि० व० ५। (५) (Corpopogon pruriens) आत्मगुप्ता, कवाँच, कौंच–हिं०। आलाकुशी–बं०। भा० पू० १ भा० गु० व०। –यु० अर्तकान (इसके पीतवर्ण के संगरेज़े होते हैं।)

अज़राक azaráka छोटे आलूबुख़ारा की एक क़िस्म है। A sort of small variety of Prunus communis.

अज़रार azarára-नौशादर, नुशा(द)र। (Amonii chloridum.)

अज़रासुल, अओज़ azarásul áajouza–अ० (Tribulus terrestris, Linn.) गोखरू, गोक्षुर (क)।

अज़रासुलकल्ब azarásul-kalba–अ० बं-फ़ाजी जो बसफ़ाइज के नाम से प्रसिद्ध है। (Polypodium vulgare, *Linn.*)

अजराशौ ajaráshou–तु० ख़ाकशी–फ़ा०। ख़ूबकलाँ–हिं०। (Sisymbrium Iris, *Linn.*)

अजरियून ajariyúna–अ० सूरजमुखी (सूर्य-) The Sunflower (Helianthus annuus, *Linn.*)

अजरूफ़ āajarúfa-अ० एक कीड़ा अथवा चिऊँटी जिसके पाँव लम्बे होते हैं।

अजरूम āajarúma-अ० जल का एक पक्षी है।

अजल ajala-अ० काल, अन्त, अवस्था, मृत्यु (ए० व०), आजाल (ब० व०)। डेथ (Death), मॉर्टिफ़िकेशन (Mortification)-इं०।

अजल āajala-अ० १—बछड़ा, गाय का बच्चा, बछवा-हिं०। गो-सालह्-फ़ा०। (A calf.) २—काली मिट्टी (Black clay).

अज़ल āazala-अ० पृथक करना, भिन्न करना। मैथुन में पृथक वीर्यपात करना।

अज़लम āazalama-अ० नील वृक्ष, नीली (Indigofera Tinctoria, *Linn.*)

अजलम्बनम् ajalambanam-सं० क्ली० यामुन स्रोतोऽञ्जन, सुर्मा (काला)। Antimony। श० च०। देखो-अञ्जनम्।

अज़लह् āazalah-अ० अज़्लह्, मछली-उ०। मांस पेशी, मांस, पेशी-हिं०। इसका बहुवचन अज़लात है। मस्सल (Muscle) (ए० व०), मस्सल्ज़ (Muscles) (ब० व०) -इं०।

अज़लह् अख़मअ़िय्यह् मुक़द्दमह् āazalah-akhamaāiyyah-muqaddamah-अ० मध्यग्रीवा के कशेरुका पार्श्वों से प्रथम पशु का तक एक मांस पेशी है। स्केलेनस एण्टाइकस (Scalenus anticus)-इं०।

अज़लह् अरीज़ह् बत्निय्यह् āazalah-āarízah-batniyyah)-अ० अन्तः-उदरच्छदा पेशी-हिं०। ट्रान्सवर्सेलिस एब्डोमिनिस (Transversalis abdominis)-इं०।

अज़लह् आसिरह् āazalah-āásirah-अ० संकोचनी पेशी -हिं०। स्फिङ्क्टर (Sphincter), फ्लेक्सर (Flexor)-इं०।

अज़लह् आसिरतुल् इस्त āazalah-āásiratul-ista-अ० मलद्वार संकोचनी पेशी-हिं०। स्फिङ्क्टर एनाई (Sphincter ani)-इं०।

अज़लह् आसिरतुल् बौल āazalah-āásiratul-boula-अ० मूत्रमार्ग सङ्कोचनी पेशी -हिं०। कम्प्रेसर युरेथ्री (Compressor Urethræ)-इं०।

अज़लह् आसिरतुल् महबिल् āazalah-āásiratul-mahbil-अ० योनिसङ्कोचनी पेशी-हिं०। स्फिङ्क्टर वेजाइनी (Sphincter vaginæ)-इं०।

अज़लह् इजानिय्यह् मुस्तअ़रिज़ह् āazalah--āijániyyah-mustaārizah-अ० सेवनी स्थल की चौड़ी पेशी जो पेडू के अवयवों को सहारा देती है। ट्रैंसवर्सस पेरिनियाई (Transversus perinæi) इं०।

अज़लह् इल्यियह् कबीरह् āazalah-ilviyah-kabírah-अ० नैतम्बिका महती पेशी -हिं०। ग्लुटियस मैग्नस (Gluteus magnus)-इं०।

अज़लह् उस्उसियह् āazalah-āuṣāuṣiyah -अ० पुच्छिका-हिं०। कॉक्सीजीअस (Coccygeous)-इं०।

अज़लह् काबह् āazalah--kábah-अ० हस्त को औंधा या पट करने वाली पेशी। प्रोनेटर मस्सल् (Pronator muscle)-इं०।

अज़लह् क़ाबिज़ह् āazalah-qábizah-अ० अ़ज़लह् उक़्लह्। सङ्कोचनी पेशी-हिं०। (Sphincter).

अज़लह् ज़हरिय्यह् अरीज़ह् āazalah-zahriyyah-āarízah-अ० पृष्ठच्छदा पेशी। वह पेशी जो कटि एवं कूल्हे से लेकर बाज़ू तक फैली हुई है। लैटिसिमस डॉर्साई (Latissimus dorsi)-इं०।

अज़लह् ज़ाते सुलासियतुर्रऊस āazalah-záte-sulásiyaturraúsa-अ० त्रिशिरस्का पेशी-हिं०। ट्राइसेप्स (Triceps)-इं०।

अज़लह् ज़ातुर्रासैन āazalah-záturrásain -अ० द्विशिरस्का पेशी-हिं०। बाइसेप्स (Biceps)-इं०।

अज़लह् तह् तुल्कतफ़िय्यह् āazalah-tah-tul-katafiyyah–अ० अधः स्कंधिका-पेशी–हिं० । सबस्कैप्युलेरिस (Subscapularis)–इं० ।

अज़लह् तह् तुलतर्कुवह् āazalah-tahtul-tarquvah–अ० अधः अक्षिका पेशी –हिं० । सबक्लेविअस (Subclaveus) –इं० ।

अज़लह् दालियह् āazalah-dáliyah –अ० अंसाच्छादनी पेशी–हिं० । डेलटॉइड (Deltoid)–इं० ।

अज़लह् बातिहह् āazalah-bátihah–अ० करोत्तानना पेशी–हिं० । सुपाइनेटर (Supinator)–इं० ।

अज़लह् बासितह् āazalah-básitah–अ० अज़लह् शादह् । प्रसारणी पेशी–हिं० । एक्सटेन्सर (Extensor)–इं० ।

अज़लह् मुक़त्तिबह् āazalah-muqattibah–अ० संकोचनी (झुर्री डालने वाली) पेशी–हिं० । करूगेटर (Corrugator) –इं० ।

अज़लह् मुक़र्रिबह् āazalah-muqarribah–अ० अन्तरनायनी, अन्तरवाहिनी–हिं० । एडक्टर (Adductor)–इं० ।

अज़लह् मुबअ्इदह् āazalah-mubaāāidah–अ० बहिर्नायनी पेशी–हिं० । एब्डक्टर (Abductor)–इं० ।

अज़लह् मुबव्विक़ह् āazalah-mubavviqah–अ० मुखप्रसारणी, कपोलच्छदा पेशी जो मुख को फैलाती है । बक्सिनेटर (Buccinator)–इं० ।

अज़लह् मुसन्निनहे कबीरह् āazalah-musanninahe-kabírah–अ० दंष्ट्राकार अल्पपार्श्विकाबृहती, बृहत् दन्ताकार पेशी जो ऊपरी आठ पसलियों के सामने से आरम्भ होकर स्कंधास्थि के पिछले किनारे तक जाती है । सरेटस मैग्नस (Serratus Magnus)–इं० ।

अज़लह् राफ़िअतुल् इस्त āazalah-ráfiāatul-ista–अ० गुदोत्थापिका पेशी–हिं० । लीवेटर एनाइ (Levator ani)–इं० ।

अज़लह् राफ़िअतुल् जफ़्न āazalah-ráfiāatul-jafna–अ० ऊपरी पलक को ऊपर उठाने वाली पेशी । लीवेटर पैल्पिब्रेलिस (Levator Palpebralis), लीवर (Lever)–इं० ।

अज़लह् सद्रिय्यह् कबीरह् āazalah-ṣadriyyah-kabírah–अ० उरश्छादनी बृहती पेशी–हिं० । पेक्टोरैलिस मेजर (Pectoralis major)–इं० ।

अज़लह् सद्रिय्यह् सग़ीरह् āazalah-ṣadriyyah-ṣaghírah–अ० उरश्छादनी लघवी पेशी–हिं० । पेक्टोरैलिस माइनर (Pectoralis Minor) इं० ।

अज़लह् सुद्ग़िय्यह् āazalah-ṣudghiyyah –अ० शांखिकी पेशी–हिं० । टेम्पोरैलिस (Temporalis)–इं० ।

अज़लह् सुलबिय्यह् कबीरह् āazalah ṣulabiyyah kabírah–अ० कटीलम्बिनी बृहती पेशी–हिं० । सोअस मैग्नस (Psoas Magnus)–इं० ।

अज़लह् हर्क़फ़िय्यह् āazalah-harqafiyyah–अ० श्रोणि पक्षिणी पेशी–हिं० । इलायकस (Iliacus)–इं० ।

अजलोमा,-मी ajalomá,-mí–सं० पुं०, हिं० संज्ञा स्त्री० (१) कौंच, केवाँचकी बेल, शूकशिम्बी, आत्मगुप्ता । आलाकुशी-बं० । Cowach (Corpopogon pruriens) र० मा० । (२) महौषधि विशेष । देखो–ओषधिः ।

अज़ल्ल azalla–अ० (ब० व०); ज़ुल्ल (ए० व०), अंगुली का भीतरी अर्थात् हथेली की ओर वाला भाग ।

अजवला ajavalá–म० वनतुलसी–सं० । रामतुलसी–बं०, द० । बनजई–हिं० । श्रबी बेज़िल (Shrubby Basil)–इं० । (Ocimum Gratissimum, Linn.) इं० मे० मे० ।

अजवल्ला ajavallá–म० } रामतुलसी (Ocimum Gratissimum, Linn.) फा० इं० ।
आजवल्ल ájavalla–सं० }

अजवल्ली ajavallí–सं० स्त्री० (Helicteris isora, Linn.) मेढ़ासिंगी, मेषशृङ्गी । मेड़ाशिङ–बं० ।

अज़वा azavá–तु० (Aloes) एलुवा, कुमारी-सारोद्भवा, मुसब्बर।

अजवाइन ajaváina–हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] यवानिका, अजवायन, (अ) जवान, (अ) ज़मान, जवाइन–हिं० । अजवान–द० । **संस्कृत पर्याय**—अजमोदा (–दिका), ब्रह्मदर्भा, सेत्र यमानिका, भूतिकः, यवनिका, यवनी, यवानी, दीप्यः, दीप्या, दीपकः, दीप्यका, दीपनी, दीपनीयः, यवजः, यवसाह्वः, यवसाह्वया, यवाग्रजः, उग्रगन्धा, वातारिः, भूकदम्बकः, शूलहन्त्री, उग्रा, तीव्रगन्धा, कारवी, भूमिकः, अग्नि गन्धा, अग्निवर्धनी, यवान, हृद्या, ब्रह्मदर्भाह्वय, यवाह्व। अजोवान, जोवान, योयान, यमानी, अजवाइन, अजवान–बं० । केरम कॉप्टिकम् (Carum copticum, *Benth.*),लिग्युस्टिआज़्म अजवान (Ligustiasm-ajowan, *Roxb.*), केरम (टाइकोटिस) अजोवान Carum (Ptychotis) Ajowan, *D. C.* (Fruit of--Ajowan-fruit.), अम्मी कॉप्टिकम (Ammi copticum)-ले० किंग्ज़ क्युमिन King's cumin, लोवेज Lovaga, बिशप्सवीड Bishop's weed, ओमम् Omum (seeds)-इं० । अम्मी डी इण्डी Ammi de l'Inde-फ्रां० । इण्डिस्कीज फ़ाल्टीनोर Indisches faltenohr–जर० । नानख़ाह्, कमूने- मलूकी, ज़िन्यान–अ०, फ़ा० । ओमम, अमन-ता० । ओमसु (–मी), वामसु, वासु-ते० । अयमोदकम, होमम -मल० । वोम, ओंमु, ओएडु, ओम,उंडु–कना० । वोवसादा, वोवाअजमा,उंवा-मह० । ओडी अज्वान, अजमो, जवाइन–गु० । अस्समोदगुड्, अस्समोदगम, ओमम-सिं० । समूहुम-बं० । ओमा–तु० । अम्मी, बासलीक़न कमूनी (मलु की)–यु० । योहरा–कछ० । ओएडु, ओम्–करना० । ओम -माला० । अजवाइन--पं० । जाविन्द--काश० । योवा–बम्ब० । वोवो--कों० । लाविअु लार्मिसी –मला० ।

अम्बेलिफेरी अर्थात् छत्री वर्ग—
(*N. O. Umblliferæ*)

उत्पत्तिस्थान—एक पौधा जो सारे भारतवर्ष में विशेषकर बंगाल में लगाया जाता है। यह पौधा अफ्रीका, दकन तथा पंजाब, मिश्र और ईरान (फ़ारस), अफगानिस्तान आदि देशों में भी होता है।

नाम विवरण तथा इतिहास—यूनानीहकीम डायोसकोराइडीज़ (Dioscorides) ने अम्मी (अवीलूस) नामक जिस अफ्रीकीय ओषधि का वर्णन किया है वास्तव में वह यही दवा है। अस्तु, हकीम जालीनूस अम्मी और कमूने मलूकी या किंग्ज़ क्युमिन (King's cumin) को एक ही दवा मानते हैं। फ़ारस में भी एक इसी प्रकार का बीज ज़िन्यान तथा नान्ख़ाह के नाम से बहुत प्राचीन काल से प्रयोग में आता था। नान्ख़ाह (नान=रोटी+ख़ाह = चाहने वाला) का अर्थ "रोटी का चाहने वाला" है। चूँकि यह क्षुधावर्द्धक है इसलिए इसका उक्त नाम पड़ा। प्राचीन काल में ईरानी लोग ज़िन्यान को, वास्तव में जो नान्ख़ाह ही था, तनूरी रोटियों पर लगाया करते थे। **इब्न-सीना** ने नान्ख़ाह नामसे इसका वर्णन किया है। प्राइनी अम्मी और किंग्ज़ क्युमिन (कमूने मलूकी) को एक ख़्याल करते हैं। हाजी ज़ैनुलअत्तार डायोसकोराइडीस द्वारा वर्णित अम्मी को नान्ख़ाह बतलाते हैं तथा उसके औषधीय गुणधर्म के सम्बन्ध में उन्हीं चिकित्सकों की सम्मतियों को उद्धृत करते हैं। वे और भी बतलाते हैं कि उक्त ओषधि शोधक रूप से प्रसिद्ध है और दुष्ट व्रणों को अच्छा करने तथा उनसे दुर्गन्धि युक्त स्रावों को रोकने के लिए उपयोग में आती है।

तुहफ़तुल् मोमनीन के लेखक तथा अन्य इसलामी चिकित्सक डायोसकोराइडीज़ के अम्मी या बैसिलिकॉन क्युमिनॉन (Basilikon kuminon) तथा फारसीयों के नान्ख़ाह व ज़िन्यान को अजवायन ही मानते और इसका अरबी नाम कमूनुलमलूकी (King's cumin) बतलाते हैं। पश्चात् कालीन यूरूपीय लेखकों का यह टिकोटिस अजोवान (Ptychotis ajowan) है।

प्राचीन आयुर्वेदीय ग्रंथकारों ने इसी प्रकार के एक ओषधि का यवानी तथा यवानिका नाम से वर्णन किया है, जिससे इसका विदेशी होना साफ सिद्ध होता है। उनके वर्णनानुसार यह अजमोदा के भेदों में से एक है।

वानस्पतिक विवरण—अजवायन क्षुप जाति की वनस्पति के बीज हैं। ये क्षुप लगभग चार फीट ऊँचे होते हैं। पत्ते छोटे छोटे डालों के पत्तोंके समान एवं कटीले होते हैं और इनकी डालियों पर छत्ते से आते हैं जिनपर सफेद फूल लगते हैं। जब वे छत्ते पक जाते हैं तब उनमें अजवाइन उत्पन्न होती है। उनको कूटने से छोटे छोटे दाने से निकलते हैं, इन्हीं को अजवाइन कहते हैं। अजवायन (फल) रूपाकृति में अजमोदा समान तथा धूसर वर्ण की होती है, जिसका ऊपरी धरातल अर्बुदाकार पद्म उभार युक्त होता है। इनकी मध्यस्थ नालियाँ स्पष्ट धूसरित होती हैं, जिनमें एक तैल नलिका होती है। संधिस्थल में दो तैल नलिकाएँ होती हैं। गंध हाशा अर्थात् जंगली पुदीना के सदृश होती है।

भारतीय कृषक प्रायः धनिए के साथ इसे खेतों में बोते हैं। बोने का समय अक्टूबर से नवम्बर तक (कार्तिक, अगहन) और काटने का समय फर्वरी है। इसके लिए खेत ग्वाददार होना चाहिए।

नोट—आयुर्वेद में यवानी, वनयमानी, पारसीक तथा खोरासानी आदि नामों से अजवायन को चार प्रकार का बतलाया गया है। इनमें से प्रथम दो में कोई भेद नहीं (दूसरी केवल जंगली है) और अंतिम की दो अजवायन खुरासानी ही के पर्याय हैं; किन्तु यह अजवायन से सर्वथा भिन्न वर्ग की ओषधियाँ हैं। इनका वर्णन यथास्थान किया जाएगा।

प्रयोगांश—फल, पत्र।

रासायनिक संगठन—स्टेनहाउस (१८५५) महाशय के मतानुसार अजवाइन के फल में एक प्रकार का ग्राह्य सुगंधियुक्त उड़नशील तैल (५-६ प्रतिशत) होता है जिसका विशिष्ट गुरुत्व ०.८९६ है। परिस्रुत जल के ऊपरी धरातल पर एक प्रकार का स्फटिकवत् द्रव्य (Stearoptin) इकट्ठा होता है। उसे **अजवाइन का फूल** या **सत** कहते हैं। स्टॉक (stock) महाशय ने सर्वप्रथम इसका बयान किया तथा स्टेनहाउस (Stenhouse) और हेन्स (Haines) ने परीक्षा करके इसकी थाइमोल (Thymol) से, जो जङ्गली पुदीना (Thymus Vulgaris) से प्राप्त होता है, समानता दिखलाई। देखो—**थाइमोल**। इसमें क्युमीन (Cumene), टर्पीन (Terpene) तथा थाइमीन (Thymene) भी पाए जाते हैं।

औषध-निर्माण—अजवायन गुटिका (शाङ्र्ग०), चूर्ण, क्वाथ, अर्क (असूम का पानी) और तैल।

अजवायन के गुणधर्म व प्रयोग।

आयुर्वेदीय मत के अनुसार—अजवायन लेखन (देहस्थ धातु तथा मलों को शोषण करने वाली), पाचक, रुचिकारक, तीक्ष्ण, गरम, चरपरी, हलकी, अग्नि को दीपन करने वाली, कड़वी और पित्तकारक है तथा वीर्य, शूल, वात, कफ, उदर, आनाह, गुल्म, प्लीहा तथा कृमि को नष्ट करने वाली है। (भा० पू० १ भा०)

इसके शाक के गुण—अजवायन का शाक आग्नेय, रुचिकारक, वात-कफ-नाशक, चरपरा, कड़वा, गरम, पित्तकारक, हलका तथा शूलकारक है। (भा० पू० शा० व०)

अजवायन चरपरी, कड़वी और गरम है तथा बात की बवासीर, कफ, शूल, आध्मान, कृमि और वमन को दूर करने वाली तथा परम दीपन है। (रा० नि० व० ६)

अजवायन कोढ़ और शूल को नष्ट करने वाली है, हृदय को हितकारक, पित्तवर्द्धक तथा अग्निवर्द्धक है।

अजवायन चरपरी, कड़वी, रुचिकारी, गरम, अग्निप्रदीपक, पाचक, पित्तजनक, तीक्ष्ण, हलकी हृदय को हितकारी, सारक और वीर्यजनक है तथा वादी की बवासीर, कफ, शूल, अफरा, वमन, कृमि, शुक्रदोष, उदररोग, आनाह, हृदय-

रोग, प्लीहा, गुल्म, द्वन्द्वज रोग और आमवात को नाश करती है। (रा० नि०)

अर्क अजवान—अजवायन का अर्क–हिं० द०। अजोवान Ajowan, एक्का टाइकोटिस Agua Ptychotis–ले०। ओमम् वाटर Omum water–इं०। ओमत्ति-नीर–ता०। ओमद्रावकम्-ते०।

अजवायन के अर्क के गुण—अजवायन का अर्क पाचक, रुचिकारक, दीपन तथा शुक्रनाशक एवं शूलनाशक है।

यूनानी मतानुसार अजवायनके गुण धर्म व प्रयोग—**स्वरूप**—अनीसूँ के समान कालापन लिए भूरी। **स्वाद**—कडुवास लिए तीखी और तीक्ष्ण गंधयुक्त है। **प्रकृति**—३ कक्षा में गरम और रूक्ष है। **हानिकर्ता**—उष्ण प्रकृति को, शिरः पीड़ाप्रद और स्तनों के दुग्ध की ह्रासकर्ता। **दर्पनाशक**—उन्नाब, धनियाँ, खाँड तथा स्निग्ध व शीतल द्रव्य। **प्रतिनिधि**—कलौंजी और काला जीरा। **मात्रा**—६ मा० से १ तोला तक।

गुण, कर्म, प्रयोग—अजवायन विशेष कर समस्त अवयवों की वेदना को शमन करने वाली शोथों के लय करने वाली तथा कामोद्दीपक है।

यह आर्द्रता शोषक, कोष्ट मृदुकारी, वायु लय कर्त्ता तथा अगद शक्ति से संयुक्त होती है,

अजवायन का शर्बत लकवा, कम्पनवायु तथा शैथिल्य को लाभदायक है। इसके क्वाथ द्वारा आँख धोने से नेत्र स्वच्छ होते हैं। इसे कान में डालने से बधिरता को लाभ होता है, यह वक्षःस्थवेदना तथा रतूबतों को नष्ट करने के लिए उत्तम है और रोधउद्घाटक, कोष्ट मृदुकारक, यकृत एवं प्लीहा की कठोरता को लयकर्ता, हिचकी, वमन, मतली, दुर्गन्धियुक्त डकार, बदहज़मी, उदर में शब्द होना, मूत्रावरोध तथा अश्मरी प्रभृति के लिए गुणदायक है। कामोद्दीपक है तथा यकृत, आमाशय, वृक्क तथा वस्ति को उष्णता प्रदान करती एवं शक्ति देती है। यह मूत्र, आर्तव, दुग्ध तथा स्वेद की प्रवर्तक है। जलोदर के लिए गुणदायक है और हर प्रकार के केचुओं को निकालती है।

लेमू (नीबू) के रसमें यदि इसे सातबार डुबोकर शुष्क कर लें तो यह नपुन्सकता के लिए अत्यन्त गुणदायक है। इसका शर्बत श्लैष्मिक ज्वरों में विशेषकर चातुर्थिक ज्वर के लिए अत्यन्त लाभदायक है तथा ज़हरों को नष्ट करने में अगद है। अण्डशोथ के लिये इसका लेप उत्तम है। शहद के साथ मिलाकर उपयोग में लाने से यह सम्पूर्ण आवयविक वेदना तथा शोथ के लिए लाभदायक है। म० अ०। (निर्विषैल, परन्तु अधिक मात्रा में विषैल है।)

एलोपैथिक मेटीरिया मेडिका तथा अजवाइन।

यमानी तैल—अजोवान ओलियम् (Ajowan Oleum)–ले०। अजोवान ऑइल (Ajowan oil), टिकोटिस ऑइल (Ptychotis oil)–इं०। रोग़ने नान्ख़्वाह–फ़ा०। अजवाय (इ) न का तैल–हिं०, उ०। यवानीर तैल–बं०।

ऑफिशल (Official.)

लक्षण—यह एक वर्णरहित तथा उड़नशील तैल है जो अजवायन के फल द्वारा परिश्रुत करके प्रस्तुत किया जाता है। इसका स्वाद तथा गंध अजवायन के समान होती है। इसका आपेक्षिक गुरुत्व ·९१७ से ·९३० तक होती है। ३२० फारनहाइट पर इसे शीतल करने से इसमें से ४० प्रतिशत थाइमोल पाया जाता है।

नोट—थाइमोल को भारतवर्ष में अजवायन का फूल और पञ्जाब में अजवायन का सत कहते हैं और मध्य भारत के किसी किसी स्थान में इसको बनाते हैं।

पहाड़ी पुदीना जिसे अरबी में हाशा और सातर तथा यूनानी में थाइमस (Thymus) कहते हैं और प्राचीन अरबों ने जिसका उच्चारण सोमस किया है। वस्तुतः उसके जौहर या सत को अंगरेजी में थाइमोल (Thymol) कहते हैं। परन्तु उपरोक्त वर्णनानुसार यह जौहर

अजवायन आदि से भी प्राप्त होता है। देखो-थाइमोल।

प्रभाव-वायुनिस्सारक (Carminative) तथा कृमिघ्न (Anthelmintic).

मात्रा-½ से ३ मिनिम (३ से १८ सें० मि० ग्रा०).

यमानी तैल के प्रभाव तथा प्रयोग—थाइमोल तथा अन्य आफ़िशल तैलों के सदृश ३ बुंद की मात्रा में यह प्रबल वायुनिस्सारक है। थाइमोल के समान द्वादशांगुलीयांत्रस्थ (द्वादशांगुल नामक अंत्रमें पाए जाने वाले) केचुओं पर यह सशक्त कृमिघ्न प्रभाव करता है। परन्तु उक्त अभिप्राय हेतु एक फ्लुइड ड्राम से अधिक मात्रा की आवश्यकता होती है और थाइमोल के तरल रूप में अग्नीकृत होजाने के कारण सम्भवतः विषैला होगा। आभ्यन्तरिक रूप से अजवायन का अर्क उदराध्मान (Flatulence) तथा उदरशूल में लाभदायक है।

अजवायन के गुणधर्म के सम्बन्ध में डॉक्टरों एवं अन्य मत—अजवायन के बीज तथा उड़नशील तैल उदराध्मान, उदरशूल, अतिसार, विशूचिका, योषापस्मार, और आक्षेप में लाभदायक हैं। इससे उष्मा एवं आह्लाद की वृद्धि होती है और आंत्रविकार के साथ होनेवाली उदासीनता तथा निर्बलता दूर होती है। उक्त तैल को १ से ३ बुंद की मात्रा में किञ्चित् शर्करा पर डालकर अथवा गोंद के लुआब और जलके साथ इसका इमलशन बनाकर उपयोग में लाना चाहिए। वात व आमवात सम्बन्धी वेदनाओं को दूर करने के लिए इसका बाह्य प्रयोग होता है। विशूचिका की प्रथमावस्था में वमन व रेचन को रोकने तथा शरीर को उत्तेजित करने के लिए, यमानी तैल एवं इसके बीजों द्वारा परिस्रुत जल (अजवान के अर्क) को १ से २ आउंस (२॥ तो० से ५ छं० तक) की मात्रा में उपयोग करना गुणदायक होता है।

अतिसार में एक आउंस (२॥ तो०) अजवायन का अर्क तथा उतने ही चूने के पानी में ५ बुंद अहिफेनासव (Tincture of opium) मिश्रित कर व्यवहार करना उत्तम है तथा २॥ तो० अर्क अजवायन और उतने ही चिरायते के शीत कषाय में १ ग्रेन (आधी रत्ती) लोहगन्धेत् [सल्फेट ऑफ आयर्न] मिश्रित कर दिन में २ बार व्यवहार करना उत्तम व्यापक बलदायक औषध है।

इसे अन्य सुगन्धित औषधियों यथा यूकेलिप्टस, पेपरमिन्ट तथा गॉलथेरिया आदि के साथ मिलाने से यह लाभजनक वायुनिस्सारक औषध होजाती है। यमानी तैल तथा अजवायन का फूल इन दोनों को सोडा के साथ देने से अम्लपित्त, अजीर्ण तथा उदराध्मान में लाभ होता है।

अजवायन का बीज, कालीमिर्च, सोंठ प्रत्येक आधा ड्राम और इलायची १ ड्राम इन सबको चूर्ण कर १ ड्राम की मात्रा में उदरशूल में दिन में दो बार व्यवहार करने के लिए में यह बढ़िया वायुनिस्सारक दवा है।

चक्रदत्त—अजवायन, सेंधानमक, सोंचललवण, यवक्षार, हींग तथा हर्रा इनको समभाग ले चूर्ण करें। मात्रा—५ रत्ती से १० रत्ती मद्य के साथ। गुण—अँतड़ियों की वेदना व शूल को दूर करता है।

अजवायन के बीजों को मुंह से चबाकर निगल जाय और ऊपर से उष्ण जल पान करें। इससे आमाशय शूल, कास तथा अजीर्ण नष्ट होते हैं।

अजवायन का तेल प्रस्तुत करने के लिए ३ सेर कुचली हुई अजवायन में १५ सेर पानी डाल के मद्य संधान की विधि से १० सेर पानी काढ़ना चाहिए। (मि० लिसडेल)

पैत्तिक वमन एवं शीत लगना प्रभृति में अजवायन के बीज तथा गुड़ मिलाकर भक्षण किया जाता है।

ज़ुकाम, आधाशीशी तथा उन्माद इत्यादि में इसके बीज के चूर्ण को बारीक कपड़े में बाँध कर थोड़ी थोड़ी देर में सुँघाना चाहिए अथवा उक्त चूर्ण का सिगरेट बनाकर पिलाना चाहिए।

उदरशूल निवारण हेतु इसके बीजों का उपनाह

(पुलटिस) या प्रस्तर उपयोग में आता है। इसके बीजों को गरम कर दशा में सीने को तथा विशूचिका, मूर्च्छा व बेहोशी में हाथ पाँव को शुष्क सेक करते हैं।

अजवायन के बीज, पिप्पली, अडूसा पत्र और पोस्ते के ढोंढ़ इनका क्वाथ कर आधे से १ आउंस की मात्रा में आभ्यन्तर रूप से बर्तते हैं।

श्लेष्मा के शुष्क हो जाने या चिपचिपा हो जाने के कारण जब कफस्राव कठिन हो जाता है, उस समय इसके बीजों के चूर्ण में मक्खन मिलाकर खिलाने से लाभ होता है।

बनयमानी भी उत्तम है और अनेक कृमि-नाशक योगों का एक मुख्य अवयव है।

शिथिल-कंठक्षत में इसका बीज संकोचक औषधियों के साथ उपयोग में आता है। औषधियां विशेषकर एरण्ड तैल के अग्राह्य स्वाद को छिपाने के लिए एवं उनकी वामक प्रकृति व ऐंठन युक्त वेदना को रोकने के लिए इसका उपयोग किया जाता है।

आभ्यासिक मादकता तथा पागलपन में यह लाभदायक है।

अपने चरपरे तथापि मनोहर स्वाद और आमाशयिक उत्ताप विवर्द्धन के कारण मादक द्रव पान की इच्छा से व्यथित व्यक्तियों का इसे व्यवहार में लाने की आधुनिक काल में बहुत शिफ़ारिश की जाती है। यद्यपि इसमें नशा नहीं पैदा होती, तो भी निर्बलता दूर करने के लिए यह सामान्य उत्तेजक औषधों की एक उत्तम प्रतिनिधि है-(वुड)। आपका कथन है कि यह बहुत से बुद्धिमान व्यक्तियों को मद्यपान के अभ्यास की किङ्करता से मुक्ति दिलाने के लिए उत्तम कारण सिद्ध हुई है।

अजवायन (बीज लगने से प्रथम) के पौधे के कोमल पत्ते कृमिघ्न प्रभाव हेतु व्यवहार में आते हैं। कृमि में इसके पत्र का स्वरस दिया जाता है।

विषैले कीटाणुओं के काटने पर दंश स्थान पर इसके पत्तों को कुचल कर लगाते हैं।

अजवायन के पत्ते का स्वरस, इस्पन्द (हेना) और मालकांगनी इनको समान भाग लेकर इससे तिगुना मीठा तेल मिलाकर पकाएँ। तैयार होने पर उतार लें और नासिका व कर्ण रोगों में इसका व्यवहार करें। (इलाजुल गु०)

अजवाइनकाफूल ajaváína-ká-phúla
अजवाइन-का-सत ajaváína-ká-sata
हिं० संज्ञा पुं० थाइमोल (Flowers of Ajowan Camphor)। देखो--थाइमोल व अजवाइन। फा० इं०। इं० मे० मे०। मु० फा० इं०।

अजवाइन-के-बू-का-पत्ता ajawáina-ke-bú-ká-pattá-द० सोता का पञ्चांग।

अजवाइ (य) न खुरासानी ajavái (ya) na-kharásání-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० यवानिका] खुरासानी अजवा (मा) यन। खुरासानी अजवान-द०। मदकारिणी, तुरुष्का, तिक्ता, यवानी, यावनी, मादक, मदकारक, दीप्य, श्याम, कुबेराख्य, पारसीक यवा (मा) नी, खोरासानी यमानी-सं०। खुराशानी योयान, खुरासानी ओयान-बं०। हाइयो साइमस नाइग्रम् Hyoscyamus Nigrum, *Linn.* (Seeds of-), हाइयो साइमस (Hyoscyamus), हा० रेटिक्युलेरिस (H. Reticularis), हा० रेटिक्युलेटस (H. Reticulatus, *Linn.*)-ले०। हेनबेन (सीड्स) Henbane (Seeds)-इं०। जस्क्वीएमिन्-वायर Jusquiame-noire-फ्रां०। अफ़ियून Afiyum-जर०। खुरासानि-योमम् -ता०। खुरासानि-वामम्, खुरिश्विामम्। खुरासानी-यमनी, खुरसान वामो-ते०, तै०। खुरासानि वोमा, खुरासानि-वादक्कि-कना०। किरमाणि-ओवा, खोरासाणी-नि-ओवा, सुरवंदीचें-फूल-मह०। खुरासानि-आजमो, खुरासानि-अजवान, खुरसाणा-अजमा, करमाणी-छहारी-गु०। बजरभंग, इस्किरास-काश०। काटफिट-मू०। बञ्जुलबञ्ज, बञ्ज, सीकरान, खदाउर्रजाल-अ०। बंक, बंग, बंगदीवाना-फ़ा०। अज़्मालुस-सिरि०। वार्तवात-तु०। अफ़ीकून,

अफ़ियून–यु०। अक़लफ़ीत, इस्कीरास वरब०। कीर्चक–देलमी०।

सोलेनेसीई अर्थात् धुस्तु (तू) र वा धत्तूर वर्ग

(*N. O. Solanaceæ.*)

उत्पत्ति-स्थान—उत्तरी भारतवर्ष, (काश्मीर, गढ़वाल) पश्चिमी हिमालय के शीतोष्ण प्रदेश। समस्त हिमवती पर्वत-श्रेणियों में ८००० से ११००० फ़ीट की ऊँचाई पर यह वन की तरह उपजता है। बलूचिस्तान, (ईरान) खुरासान, मिश्र, एशिया कूचक और साइबेरिया के अतिरिक्त सहारनपुर के सरकारी वनस्पत्योद्यान में भी बोया जाता है। यूरुप, (पुर्तगाल और यूनान से नारवे और फिनलैंण्ड तक) अमेरिका आदि।

नाम विवरण—इसका लेटिन नाम हायोसाइमस यूनानी हुऑस कुआमोस (Huoskuamos) से लातानीकृत शब्द है जो एक यौगिक है (हुऑस=शूकर+कुआमॉस=बाकला, लोबिया)। अस्तु उक्त शब्द का अर्थ शूकर लोबिया हुआ। चूँकि इसके पत्ते लोबिया पत्रके सदृश होते हैं एवं इसे सूअर बहुत रुचिपूर्वक खाता है इसलिए यूनानियों ने इसका यह नाम रक्खा।

नोट—मख़ज़नुलअदविया तथा मुहीतआज़म में जो इसका यूनानी नाम अफ़ीक़न लिखा है वह शुद्ध अफ़्यून है। कोई-कोई प्राचीन इस्लामी हकीम इसको यूनानियों का अफ़्यून ख़याल करते रहे। अस्तु, इसीके वर्णन में लिखा है कि कभी इसके पत्तों तथा शाखाओं का उस्सारह अफ़ीम की प्रतिनिधि स्वरूप उपयोग में आता है। अफ़्यून यूनानी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ निद्राजनक है।

इतिहास—यद्यपि उक्त बूटी हिमालय पर्वत तथा उत्तरी भारतवर्ष व इसके अन्य भागों में भी अधिकता से उत्पन्न होती है, तथापि सम्भवतः प्राचीन आयुर्वेदिक चिकित्सकों को इसका ज्ञान न था। पारसीक तथा खोरासानी यमानी आदि नाम इसका विदेशी होना सिद्ध करते हैं।

आज ही नहीं प्राचीन काल से ही भारत में व्यापारिक आयात निर्यात हो रहा है। विदेशों की उत्तम चीजों का अपनाना और अपनी चीजें विदेश में भेजना भारतीय अपना ध्येय बनाते रहे हैं। इसी प्रकार बहुत सी ओषधियाँ जिनको हमारे पूर्वाचार्यों ने रोगियों पर लाभदायक पाया उनको मँगाते थे। खुरासानी अजवायन भी उन्हीं ओषधियों में से एक है।

प्राचीन यूनानी चिकित्सकों ने तीनों प्रकार के बञ्ज (पारसीक यमानी) का वर्णन किया है। परन्तु उनमें श्वेत प्रकार को ही ओषध तुल्य उपयोग में लाते थे। डायोस्कोराइडीस (Dioscorides) ने भी इसकी प्रशंसा की है, एवं वह इसीके उपयोग करने की सिफ़ारिश करते हैं। इस सम्बन्ध में इस्लामी चिकित्सक भी अबतक उन्हीं के अनुयायी हैं।

लेटिन लेखक हायोसाइमस को अल्तर्कम (Altercum) तथा हर्बासिम्फोनिएका (Herba Symphoniaca) बोलते हैं। प्लाइनी के कथनानुसार अल्तकर्म अरबी शब्द है। सम्भवतः यह अस्तियांक़ का अपभ्रंश है जो मूल में फ़ारसी शब्द है और जिसका अर्थ विषघ्न है। मुसलमान लेखक इसे बञ्ज कहते हैं जो फ़ारसी बंग का आरबीय अपभ्रंश है। इनके कथनानुसार यह यूनानियों का अफ़ियून, सिरियन लोगों का अज़मालूस, मूर लोगों का कल्फ़ीत या इस्कीरास है। वे पुनः कहते हैं कि देलमी भाषा में इसे कीर्चक कहते हैं।

टिप्पणी—ब.ज्रुल् बञ्ज अबैज़ (तुख्मबञ्ज सफ़ेद) जो खुरासान से भारतवर्ष में अधिक आता है, भारतीय चिकित्सकों ने अजवायन के समान समझ उसका नाम खुरासानी या पारसीक यमानी रख दिया जो अब उर्दू भाषा एवं तिब में अजवायन खुरासानी के नाम से प्रसिद्ध है। परन्तु इस बात को भली भाँति स्मरण रखना चाहिए कि ब.ज्रुल् बञ्ज (अजवायन खोरासानी) और नानख़्वाह (अजवायन) गुण धर्म के विचार से सर्वथा दो भिन्न ओषधियाँ हैं। अस्तु, पारसीक यमानी को कदापि यमानी (अजवायन) का भेद न ख़याल करना चाहिए।

वानस्पतिक विवरण—खुरासानी या किरमानी अजवायन वास्तव में अजवायन के वर्ग की ओषधि नहीं। अपितु, यह बादञ्जान अर्थात् सोलेनेसीई वर्ग की ओषधि है जिसमें बिलाडोना व धतूर आदि विषैली दवाएँ सम्मिलित हैं। इसका क्षुपअजवायनके क्षुपसे ऊँचाई में कुछ बड़ा होता है। **पत्ते** कटे हुए कङ्गूरेदार करीब करीब गुलदाउदी के समान होते हैं। **पुष्प** श्वेत, अनार की कलियों के समान,परन्तु पङ्खड़ियों के कङ्गूरे व मध्य व मूल भाग सुर्खी मायल होते हैं। जिनके पकने पर मूल भाग में छत्ता सा लगता है जिसमें अजवायन खुरासानी के **बीज** लगते हैं; ये अजवायन के बीज से दूने बड़े एवं वृक्काकार (जिनका पार्श्व भाग दबा हुआ होता है।) तथा धूसर वर्ण के होते हैं। वाह्य त्वचा भली प्रकार चिपकी हुई होती है। अल्व्युमीन तैलीय होता है। **वृत्त गर्भ** इस प्रकार (?) वक्र होता है, जिसका पुच्छ अङ्कुर बनता है।

स्वाद—तैलीय, तिक्त एवं चरपरा होता है।

भेद—मख़्ज़नके लेखक **मीर मुहम्मदहुसैन** बञ्ज के नाम से उक्त ओषधि का वर्णन करते हैं। वे इसके तीन भेद यथा श्वेत, श्याम तथा रक्त का ज़िकर करते हैं (किसी ने पीत पुष्पवाले का वर्णन किया है) और इनमें श्वेत प्रकारको उत्तम ख़याल करते हैं। प्राचीन ग्रन्थों में यही अर्थात् श्वेत प्रकार (Hyoscyamus Albus, *Linn.*) ऑफ़िशल थी। मुफ़र्दात नासरी में इसके बीजको ब़ज़ुल् बञ्ज अब्ैज़ (श्वेत पारसीक यमानी बीज) लिखा है। प्लाइनी (Pliny) ने उक्त पौधे अर्थात् हा० रेटिक्युलेटस के चार भेदों का वर्णन किया है। उनमें से प्रथम (H. reticulatus) काले बीज वाली जिसमें नीले रंग के पुष्प आते हैं, तथा जिसका तना काँटेदार होता है और जो गलेशिया में उत्पन्न होती है; द्वितीय या साधारण प्रकार हायोसाइमस नाइगर (श्यामपारसीक यमानी); तृतीय भेद जिसका बीज मूली के सदृश होता है अर्थात् हायोसाइमस ऑरियस (H. aureus, *Linn.*) और चतुर्थ हा० एल्बस (H.albus) अर्थात् श्वेत बीजयुक्त है जो समस्त चिकित्सकों द्वारा स्वीकृत है। उनके कथनानुसार इन सभी में चक्कर तथा पागलपन पैदा करने का गुण है। पारसीक यमानी बीज जो खोरासान से लाया जाता है वह उक्त चारों में से प्रथम का ही बीज है। यह क्वेटा में बहुतायत से होती है। इसके अतिरिक्त इसका एक और भेद है जिसे कोही भंग (H. muticus, *Linn.*, or H. Insanus, *Stocks.*) कहते हैं। यह अत्यन्त विषैला होता है। देखो–कोही भंग।

प्रयोगांश—वैद्यगण बहुधा इसके बीजों को व्यवहार में लाते हैं और तिब्बी हकीम भी प्रायः उन्हीं का अनुकरण करते हैं। प्राचीन यूनानी लोग तो इसके पत्तों, शाखों तथा मूल व बीज अर्थात् पञ्चाङ्ग को व्यवहार में लाते थे। परन्तु, मध्यकालीन यूरुप में इसके बीज, मूल अधिक उपयोग में आते रहे। आजकल यूरुप व अमेरिका में अधिकतर इसके पत्ते और जड़ न्यूनतर व्यवहृत हैं। प्राचीन यूनानी व इस्लामी चिकित्सक तो श्वेत पुष्पीय बञ्ज को ओषध रूप से उपयोग करना उत्तम ख्याल करते थे। यद्यपि बञ्ज स्याह के उसारह् का भी उन्होंने ज़िकर किया है, पर अधुना यूरुप में पारसीक यमानी श्याम ओषध रूप से व्यवहृत है। अस्तु, डॉक्टर लोग इसकी (शुष्क या नवीन) पत्तियों से तरह तरह के योग निर्माण करते हैं। **वे पत्तियों को मय शाखा व फूल** सावधानी से संग्रह करते हैं। यह उस समय किया जाता है जब खुरासानी अजवायन का पेड़ फूलने फलने लगता है तथा अपनी पाकावस्था में दिखाई देने लगता है।

रासायनिक संगठन—हेनबेन (पारसीक यवानी) में एक हायोसायमीन (Hyoscyamine) नामक सत्व जिसकी रासायनिक रचना धतूरीन (एट्रोपीन) के समान होती है, पाया जाता है। यह विभिन्न प्रकार के हायोसायमस (बञ्ज) के बीज तथा पत्र स्वरस में हायोसीन या विकृताकार हायोसायमीन के साथ पाया जाता है। इसके सूचिकाकार या त्रिपार्श्वाकार रवे होते हैं और यह धतूरीन की अपेक्षा जल एवं

डायलूट अलकुहॉल में अधिकतर लयशील होता है। यह धतूरीनके समान नेत्र कनीनिका विस्तारक है।

हायोसायमीन अनेक सोलेनेसीई पौधों यथा-धतूर, बिलाडोना और सम्भवतः इसके कुछ अन्य भेदों में धतूरीन के साथ मिला हुआ पाया जाता है। हायोसायमीन उन्हीं द्रव्यों में विश्लेषित किया जा सकता है जिनमें ऐट्रोपीन वियोजित होता है, यथा-ट्रोपीन और ट्रॉपिक एसिड।

हायोसीन (स्कोपोलेमीन) या विकृताकार हायोसायमीन-अपने कनीनिका प्रसारक तथा अन्य गुणों में निकट की समानता रखते हैं। जल में उबालने से यह ट्रॉपिक एसिड तथा स्युडो-ट्रोपीन में वियोजित हो जाते हैं। (वॅट्स डि० ऑफ केमिस्ट्री, द्वि० संस्क० ११, ७४४)।

उनके अतिरिक्त पत्ते में हायोस्क्रीपीन (Hyoscripin), कोलीन (cholin), फैटी ऑइल, लुआब, अलब्युमीन-(अंडे की सुफेदी) और पांशुनत्रेत् (पोटेसियम नाइट्रेट) २ प्रतिशत तक होते हैं।

बीज में एक स्थिर या वसामय तेल २६ प्रतिशत, एक एम्पाइर युमैटिक तेल (Empyreumatic oil) जो विनाशक परिस्रुति विधिद्वारा प्राप्त होता है, और वार्नीक (Warneke) के मतानुसार ४·४१ प्रतिशत भस्म वर्तमान होती है।

प्रभाव—बीज-मादक, निद्राजनक (मदकारी), वेदनानाशक, पाचक, संकोचक तथा कृमिघ्न है। पत्र तथा हायोसाइमीन-अवसादक, वेदना-शामक, आक्षेप निवारक, उत्तेजक और नेत्र कनीनिका प्रसारक है। इनका उन्मत्तकारी प्रभाव बिलाडोना की अपेक्षा मृदुतर तथा निद्राजनक अधिकतर एवम् अधिक विश्वसनीय व शीघ्र और अफीम सत्व (मॉर्फिया) व क्लोरल से उत्तम होता है।

औषध निर्माण—पत्र चूर्ण, मात्रा २॥ से ५ रत्ती (५ से १० ग्रेन); ताजा स्वरस (दवा कर निकला हुआ एवं सुरक्षित रक्खा हुआ), मात्रा-आधा से १ ड्राम; शुष्क पौधे द्वारा निर्मित टिंक्चर, मात्रा-चौथाई से १ ड्राम; ताजे पौधे का एक्स्ट्रैक्ट (सत्व), मात्रा-आधी से १॥ रत्ती (१ से ३ ग्रेन)। इनके द्वारा प्रस्तुत प्रस्तर (प्लास्टर) एवम् तैल का बाह्य उपयोग होता है। अत्यधिक मात्रा में यह मदकारी विष है तथा इससे उन्मत्तता, मूर्च्छा एवं मृत्यु उपस्थित होती है। और इसकी क्रिया अति शीघ्र होती है।

सत्व निर्माण-विधि—खुरासानी अजवायन का पौधा जब फूलने फलने लगे, तब मय पत्तियों के उसकी छोटी छोटी शाखाओं को लेकर पानी से भली भाँति धोकर स्वरस निकाल लें। शुद्धता आदि का विशेष ध्यान रखना आवश्यक है। स्वरस को छानकर अग्नि पर पकाएँ, जब खौलने लगे और खौलते हुए १० मिनट हो जाएँ तथा स्वरस के ऊपर मैल के झाग से, जैसे कि खाँड़ की चाशनी करते समय प्रायः हुआ करते हैं, उठने लगें, तब स्वरसको उतार कर छानलें, और निथारने के लिए स्वरस को चीनी के प्यालों में भर कर १२ घंटे रक्खा रहने दें। तदनन्तर सावधानी से निथार कर फिल्टर करलें अर्थात् (फिल्टर पेपर) में छान लें और फिर पकाएँ। जब गाढ़ा होजाय अर्थात् अवलेह समान गोली बनाने लायक होजाय तो उतार लें। मात्रा-३-३ या ४-४ रत्ती।

पारसीकयवानी तरल सत्व—पूर्वोक्त विधि से स्वरस को फिल्टर करके १० प्रतिशत के हिसाब से हली [रेक्टीफाइड स्पिरिट] मिलाकर सद्यः निर्गत स्वरस का गर्म पानी मिलाकर वजन पूरा कर शीशी में भरकर उपयोग करें। मात्रा-३० बुंद से ६० बुंद तक २॥-२॥ तो० जल में मिलाकर सेवन कराएँ।

पारसीक यमानी के गुण धर्म व प्रयोग

आयुर्वेदिक मतानुसार—

खुरासानी अजवायन के गुण अजवायन के समान ही हैं, परन्तु विशेष करके यह पाचक, रुचिकारक, ग्राहक, मादक तथा भारी है। भा०।

पारसीक यमानी तिक्त, गर्म, कटु, तीखी, अग्निदीपन करने वाली, वृष्य तथा हलकी होती है। त्रिदोष (सन्निपात), अजीर्ण, उदरज कृमि रोग, दर्द, आजशूल (पेचिश की ऐंठन) तथा कफ रोग आदि को नष्ट करती है। वै० निघ०।

खुरासानी अजवायन चरपरी, रूखी, पाचक, ग्राही, गरम, नशा करनेवाली, भारी, वातकारक और कफनाशक है, शेष गुण अजवायन के समान हैं। वै० निघ०।

यह बुद्धि और नेत्रको मन्द करती है, कानों में भारीपन, कंठग्रह, चित्त के चलायमान होने, तथा रुधिरस्राव और सर्व प्रकार की पीड़ा को नष्ट करती है। विशेषकर पाचन, ग्राही, मादक और भारी है। अभि० १ भा०।

खुरासानी अजवायन का अर्क—यह मलरोधक, पाचक और मदकारक है।

यूनानी मतानुसार अजवायन खुरासानी का गुण-धर्म व प्रयोग।

स्वाद—तीखी और कड़वी। प्रकृति (श्वेत) २ कक्षामें ठंडी और रूक्ष;(काली) ३ कक्षामें ठंडी और रूक्ष है। हानिकर्ता-(सफ़ेद) चक्कर, कंठमाला एवम् उन्मादकारी है; (काली जाति को) घातक है। दर्पनाशक—शहद या अनीसूँ समभाग या न्यूनाधिक; किसी किसी ने अफीम और पोस्त लिखा है। प्रतिनिधि—अफीम, अजवायन देशी, और खशखाश स्याह। मात्रा-(श्वेत) २ मासे से ३ मासे तक, (सुर्ख) २ से २॥ मासा तक। आधुनिक मात्रा—आधा माशासे १ मा० तक।

गुण, कर्म, प्रयोग—मीरमुहम्मद हुसेन इसके ताजे पत्ते के स्वरस के सूर्यतापी सत्व निर्माण का वर्णन करते हैं और कहते हैं कि इसके पत्तों को कूटकर आँटे के साथ कल्क प्रस्तुत कर इसकी छोटी छोटी बाटियाँ बनाकर सुखा लें। इससे कुछ काल पर्यन्त इसमें औषधीय गुणधर्म विद्यमान रहेगा।

यह सब नज़लाओं को लाभ कर्ता, स्निग्धता युक्त स्राव (आँख की ओर) को हरण कर्ता, सम्पूर्ण प्रकारकी कर्ण पीड़ा को शान्तिप्रद, अवयवों में शैथिल्योत्पादन कर्ता, निद्राप्रद, अवयवों के रक्त विशेषतः आर्तव इत्यादिका रुद्धक व बद्धक है। कफज कास को गुण कर्ता, खखार में रुधिर आनेकी नाशक तथा अधिक रूक्षताकर्ता है। प्रत्येक भाँति की वेदनाशमनार्थ इसका बाह्य उपयोग होता है। अस्तु, तिल तैल में अकेले इसे अथवा अन्य औषधियों के साथ पकाकर सन्धिवात, गृध्रसी या कटि वेदना (अर्कुन्निसा) तथा निक्रिस (Gout) प्रभृति में इसकी मालिश की जाती है। उक्त तैल के अर्धोष्ण कर्ण में टपकाने से कर्ण पीड़ा नष्ट होती है। अग्नि पर डालकर धूनी देने से अथवा इसके क्वाथ द्वारा कुल्ली करने से दाँतों का दर्द दूर होता है। मुख़द्दिर अर्थात् अवसन्नताजनक व निद्राप्रद होने के कारण यह उन्माद, पागलपन तथा अनिद्रा रोगमें प्रयुक्त है। अफीम व अजवायन खुरासानी दोनोंको समभाग लेकर माष समान वटिका निर्मित कर उपयोग करने से बहुत नींद आती है और इसका लेप पुरातन यकृत् वेदना, जरायुस्थ व्रण तथा वंक्षण वेदना को बहुत लाभ पहुँचाता है। वस्ति-शोथ, प्रोस्टेट ग्रंथि प्रदाह, वस्त्यश्मरी में वेदनाशमनार्थ तथा हृदय विकार-जन्य दमा और खाँसी, विशेषकर काली खाँसी में इसे वर्तते हैं। नफ़ा० २ भा०, बु० मु०, म० अ०।

अजवाइन खोरासानी के सम्बन्ध में डॉक्टरी तथा अन्य मत

प्रादाहिक शोथों की वेदना शमनार्थ इसके स्वरस तथा यव के आँटे द्वारा प्रस्तुत प्रस्तर (पुल्टिस) व्यवहार में आता है। इसके बीजों को मद्य अर्थात् ब्रांडी में पीसकर इसकी पुलटिस का संधिशोथ, शोथ युक्त छातियां एवं अण्ड में उपयोग करते हैं। अर्ध ड्राम के लगभग इसके बीज तथा १ ड्राम खसखास को जल एवं शहद के साथ पीसकर खाँसी तथा संधिवात आदि में वेदनाशमनार्थ वर्तते हैं। जरायुस्थ वेदना में इसकी वर्ति व्यवहृत है। इसके बीजों का स्वरस अथवा तीक्ष्ण हिम चक्षुपीड़ा हरणार्थ नेत्रोंमें डाला जाता है। घोड़ी के दुग्ध में इसके बीजों को

पीसकर कल्क प्रस्तुत कर पुनः जंगली साँड के चमड़े में बाँध कर स्त्रियाँ गर्भ निरोध हेतु इसे पहनती हैं। इसके बीजों के चूर्ण तथा राल दोनों को मिश्रित कर वेदना नाशन हेतु खोखले दाँतों में भरते हैं।

मालकाँगनी, वच, अजवायन खुरासानी के बीज, कुलञ्जन और पीपल इनको समभाग लेकर जल के साथ पीसकर कल्क प्रस्तुत करें। पुनः इसमें शहद मिलाकर स्वरयंत्र प्रदाह में ३॥। मा० की मात्रा में दिन में दो बार व्यवहार में लाएँ। (इलाजुलग़ुर्बा)

खोरासानी अजवायन और सेंधानमक को खाली मेदा बहुत सवेरे सेवन करने से एङ्किलोस्टोमा (Ankylostoma) नामक कृमि में लाभ होता है। (डॉ० रॉय)

एलोपैथिक मेटीरिया मेडिका और

हायोसाइमस (पारसीक यमानी)

पारसीक यमानी पत्र

हायोसाइआइ फोलिया (Hyoscyami-Folia)-लै०। हायोसाइमस लीव्ज़ (Hy-oscyamus Leaves), हेनबेन लीव्ज़ (Henbane Leaves)-इं०। औराकुलबञ्ज, औराकुस्सीकरान-अ०। बर्ग बङ्ग-फ़ा०।

सोलेनेसीई अर्थात् धुत्तूर वर्ग

(*N. O. Solanaceæ*)

ऑफ़िशल (Official)

उत्पत्तिस्थान—ब्रिटेन।

वानस्पतिक नाम व प्रयोगांश—इसका वानस्पतिक नाम हायोसाइमस नाइगर (Hyoscyamus Niger.) अर्थात् काली खुरासानी अजवायन है। इसके नवीन पत्र व पुष्प को शाखा सहित अथवा केवल पत्र तथा पुष्प को तोड़कर शुष्क करके औषध कार्य में वर्तते हैं।

लक्षण—पत्ती की लम्बाई विभिन्न होती हैं। ये दस इंच तक लम्बी और कई अंशों में विभाजित होती हैं। कोई डंठल युक्त एवं कोई डंठल रहित होती हैं। इनका रूप अंडाकार और किसी कदर त्रिकोणाकार होता है। इनके किनारे अनियमित रूप से दंष्ट्राकार होते हैं। वर्ण सूक्ष्म हरा तथा निम्न भाग एवं शाखा विशेषकर रोमयुक्त होती है। नवीन पत्तों एवं शाखाओं की गंध तीव्र व बुरी होती है। स्वाद—कड़वा तथा किञ्चित् चरपरा।

समानता—खिलाडोना और धतूरे के पत्ते इन पत्तों से मिलते जुलते होते हैं। किन्तु, वे रोमरहित होते हैं।

रासायनिक संगठन—इसमें (१) हायोसायमीन और (२) हायोस्मीन ये दो प्रभावकारी अल्कलाइड्ज़ अर्थात् क्षारीय सत्व तथा एक विषैला तैल होता है।

असम्मिलन (संयोग विरुद्ध)—लाइकर पुटासी, लेड एसीटेट, सिल्वर नाइट्रेट और वानस्पतिक एसिड्स।

प्रभाव—निद्राजनक (Narcotic), वेदनाशामक (Anodyne) और अवसादक (Sedative).

ऑफ़िशल योग

(Official preparations).

(१) एक्सट्रैक्टम हायोसाइमाई (Extractum hyoscyami)-लै०। एक्सट्रैक्ट ऑफ हेनबेन या हायोसाइमस (Extract of Henbane or Hyoscyamus)-इं०। पारसीक यमानी सत्व, खुरासानी अजवायन का सत-हिं०। उसारहे बञ्ज, रुब्ब बङ्ग-फ़ा०, अ०।

निर्माणविधि-हायोसाइमस नाइगर (काली खुरासानी अजवायन) के नवीन पत्तों, फलों तथा कोंपलों को कुचल कर दबाने से जो स्वरस प्राप्त हो उसे क्रमशः १३०° फ़ारनहाइट का ताप दें तथा कॅलीकी फिल्टर द्वारा छानकर रंगीन अंश भिन्न करलें, पुनः छने हुए रस को २००° फारनहाइट की ताप दें और उसे छानने के पश्चात् शीरा के समान गाढ़ा कर लें; पुनः उस रंगीन पृथक किए हुए द्रव्य को बालोंकी चलनी में छानकर इसमें सम्मिलित कर दें, और लगभग १४०° के ताप पर इतना शुष्क करें कि वह मृदु अवलेह के सदृश हो जाए।

मात्रा—२ से ८ ग्रेन अर्थात् १ से ४ रत्ती (१२ से ५० सें० ग्रा०).

(२) पिल्युला कालोसिन्थिडिस एट-हायोसाइमाई (Pilula colocynthidis et Hyoscyami.)–लें० । पिल ऑफ़ कालोसिन्थ एण्ड हायोसाईमस (Pill of colocynth and Hyoscyamus) –इं० । इन्द्रायन व पारसीक यमानी वटिका –हिं० । ह़ब्ब ह़न्ज़ल व बञ्ज (बङ्क)–अ०, फ़ा० ।

निर्माण-विधि—कम्पाउण्ड पिल ऑफ़ कालोसिन्थ २ आउंस (१ छ०), एक्सट्रैक्ट ऑफ़ हायोसाइमस १ आउंस दोनों को मिला लें ।

मात्रा—४ से ८ ग्रेन अर्थात् २ से ४ रत्ती (२६ से ५२ ग्राम).

(३) सक्कस हायोसाइमाई (Succus Hyoscyami)–लें० । जूस ऑफ़ हायोसाइमस (Juice of Hyoscyamus) –इं० । पारसीक यमानी स्वरस–हिं० । अ़सीर-बञ्ज, अफ़्शुर्दहे बङ्क–अ०, फ़ा० ।

निर्माण-विधि—नवीन पत्रों, पुष्पों तथा शाखाओं को कुचलने से जो रस प्राप्त हो उसके प्रति तीन भाग (आयतन के विचार से) में १ भाग हली (९० प्रतिशत) सम्मिलित करें और एक सप्ताह तक पड़ा रहने दें, पुनः फिल्टर कर लें ।

मात्रा—आधा से १ फ़्लु० ड्रा०–(१·८ से ३·६ क्यु० सें०) ।

(४) टिंक्चूरा हायोसाइमाई (Tinctura Hyoscyami)–लें० । टिंक्चर ऑफ हायोसाइमस (Tincture of Hyoscyamus)–इं० । पारसीक यमान्यासव–हिं० । सुबग़ाह् बञ्ज, तफ़्क़ीन बङ्क-फ़ा०, अ० ।

निर्माण–विधि—हायोसाइमस के पत्तों और पुष्प युक्त शाखाओं का २० नं० का चूर्ण २ आउंस, हली (Alcohol) ४५ % यथोचित । चूर्ण को २ फ्लुइड आउंस हलाहल से तर करके पर्कोलेशन (टपकाना) द्वारा १ पाइण्ट टिंक्चर तय्यार कर लें ।

मात्रा—आधा से १ फ्लुइड ड्राम (२ से ४ मिलिग्राम)

नॉट ऑफ़िशल योग

(Not official preparations.)

(१) क्लोरोफ़ॉर्मम् हायोसाइमाइ (Chloroformum Hyoscyami)–पारसीक यवानी मूल (Hyoscyamus root) चूर्ण किया हुआ ३० भाग, क्लोरोफॉर्म २० भाग। यह क्लोरोफार्म एकोनाइटीनी के समान प्रस्तुत किया जाता है ।

(२) टिंक्चूरा हायोसाइमाइ रेडिसिस (Tinctura Hyoscyami Radicis)–चूर्णित पारसीक यमानी मूल पाँच भाग, हली (६० प्रतिशत) ४० भाग में एक सप्ताह तक भिगोकर पर्कोलेट कर लें ।

मात्रा–२० से ६० मिनिम (बुंद) ।

हायोसाइमस के गुणधर्म व प्रयोग

पारसीकयमानीपत्र अर्थात् हायोसाइमाइ फोलिया (Hyoscyami Folia).

प्रभाव—हायोसाइमीन (पारसीक यमानी का स्फटिकाकार सत्त्व) जो हायोसाइमस अर्थात् ख़ुरासानी अजवायन का प्रभावात्मक सत्त्व है, अपनी रचना में धतूरीन (एट्रोपीन) के समान होता है। अस्तु,स्थायी क्षार (फिक्स्ड अलकेलीज़) की उपस्थिति में सामान्य उत्ताप पर वह धतूरीन (एट्रोपीन) में परिणत हो जाता है। इसलिए यद्यपि पारसीक यमानी के बहुशः गुणधर्म स्वभावतः बिलाडोना और स्ट्रेमोनियम् (धुस्तुर, धत्तूर) के गुणधर्म के समान होने चाहिए (देखो–बिलाडोना), तथापि उनके प्रभाव में निम्नांल्लिखित पारस्परिक भेद प्रभेद पाए जाते हैं:– (१) बिलाडोना की अपेक्षा हायोसाइमस से उन्मत्तता तो कम उत्पन्न होती है; किन्तु मस्तिष्क पर इसका अवसादक (Sedative) तथा निद्राजनक (Soporific) प्रभाव शीघ्रतर एवं बलवानतर होता है। (२) सुषुम्ना कांड पर भी इसका अवसादक प्रभाव अधिक स्पष्ट होता है। (३) यह आंत्र के क्रमिवत् आकुञ्चन को तीव्र करता तथा प्रवाहिका या मरोड़ा को

अपेक्षाकृत बहुत कम करता है। (४) विलाडोना के सदृश यह हृदय पर सबलोत्तेजक प्रभाव नहीं करता, अपितु हृदय पर हायोस्मीन का अत्यन्त निर्बल प्रभाव पड़ता है। (५) मूत्रेन्द्रिय विशेषतः वस्ति पर विलाडोना की अपेक्षा इसका अधिकतर अवसादक प्रभाव पड़ता है। क्योंकि वस्तिस्थ श्लैष्मिक कला की नाड़ियों के अन्तिम भाग पर अवसादक तथा निर्बलताजनक प्रभाव करके यह उसके मांस तन्तुओं की ऐंठन को दूर करता है। (६) हायोस्मीन से इण्ट्राऑक्युलर टेन्शन (नेत्रपिंड का तनाव) कम हो जाता है। अस्तु, हायोसायमस का यह प्रभाव उतना नहीं होता जितना कि बिलाडोना का।

उपयोग—हायोस्मायमस का उपयोग आक्षेप विकार की अवस्थाओं के अतिरिक्त जिनमें विलाडोना व्यवहृत है, निम्नांकित दशाओं में भी होता है।

(१) विविध रोगों की तीव्र पीड़ा में मस्तिष्कोत्तेजना को कम करके नींद लाने के लिए, यथा उन्माद (मेनिया) अनिद्रा या निद्रानाश (इन्सोम्निया), स्त्रियों की हिस्टीरिया (योषापस्मार के दौरे में), वृद्धा की उन्मत्तावस्था में तथा वात वेदनाओं में इसे देना चाहिए। उन्मत्त शराबी को भी नींद लाने के लिए दे सकते हैं।

अतः खुरासानी अजवायन के तरल सत्व को १-१ घंटे के अन्तर से ३०-३० बुंद दवा और २॥-२॥ तोला पानी एकत्र कर पिलाते रहें। जब नींद आजाय तब बन्द करें। इस प्रकार ५-६ मात्रा सेवन कराने से ही रोगी सो जाता है।

नींदके लिए हायोसायमीन (खुरासानी अजमायन का सत्व) १ ग्रेन (आधी रत्ती) को साफ़ गरम जल ३ मा० ६ रत्ती में मिलाकर हायपोडर्मिक सिरिञ्ज में भरकर १ से ४ बुंद तक त्वचा के नीचे पहुचाएँ। इसी को हाइपोडर्मिक इञ्जेक्शन हाइयोसाइमीन कहते हैं।

(२) रेचक ओषधियाँ जो मरोड़ पैदा करने वाली हैं उनके उक्त गुण को कम करने के लिए तथा पेचिस की ऐंठन को दूर करने के लिए इसे व्यवहार में लाते हैं।

(३) मूत्रपथ सम्बन्धी चीस चबक अर्थात् वृक्क, वस्ति तथा मूत्र प्रणाली के रोगों यथा—वस्ति प्रदाह, प्रोस्टेट ग्रन्थि प्रदाह, तथा अश्मरी प्रभृति में वस्तिस्थ आक्षेप निवारण हेतु इसका प्रभावकारी सत्व, हायोसायमीन, मृदु मूत्रविरेचनीय है, और शरीर से विसर्जित होते समय प्रदाह युक्त झिल्लियों में अंत होने वाली वाततंतुओं पर अवसादक प्रभाव करता है। अस्तु जब अनावश्यक रूप से थोड़ा थोड़ा मूत्र निकालने के लिए वस्ति में बार बार ऐंठन होती है, तब विशेष रूपसे इसका उपयोग होता है। उक्त दशा में इसे क्षारों के साथ संयुक्त कर सेवन करना गुणदायक होता है।

ऐसी दशा में इसको साधारणतः अन्य युरिनरी सिडेटिभ्ज़ (मूत्रावसादक) या मृदुल ओषधियों यथा-बुकू या युवा अर्साई अथवा बेञ्जोइक एसिड प्रभृति तथा एल्केलीज़ (क्षारों) के साथ मिलाकर सेवन कराते हैं।

(४) ब्रांकाइटिज़ (कास या श्वास नलिका प्रदाह) में खाँसी को कम करनेके लिए। (५) व्रण शोथ की चीस चबक को दूर करने के लिए इसका पुल्टिस व्यवहार में आता है। (६) पुतली फैलाने के उद्देश्य से आँखों में डालने के लिए। (७) यह विलाडोना के समान उन्माद, मुखशोथ, नेत्रकनीनिका विस्तार तथा निद्रा उत्पन्न करता है। सूक्ष्म मात्रा में यह अवसादक और हृदयबलदायक है। अधिक मात्रा उत्तेजक एवं अत्यधिक मात्रा निर्बलताजनक है। अस्तु, हृदय सम्बन्धी दमा तथा हृदय कपाट सम्बन्धी विकार एवं तज्जन्य हृदयोत्तेजना में इसका उपयोग किया जाता है।

बच्चों में इसकी बड़ी मात्रा के सहन की क्षमता होती है। किन्तु, वृद्ध एवं निर्बल व्यक्तियों में इसकी छोटी मात्रा का भी गहरा प्रभाव होता है। एक चाय के चमचा भर इसका रस सर्वोत्तम औषध है, परन्तु यह ऑफ़िशल नहीं।

हायोसीन (Hyoscine)

यह हायोसाइमसका एक क्षारीय सत्त्व (Alkaloid) है जो उसके द्वितीय रवा रहित सत्त्व हायोसायमीन में भी पाया जाता है। यह एक उड़नशील तैलीय द्रव होता है जो अपने प्रभाव में हायोसायमीन से पाँच गुणा अधिक प्रभावशाली होता है। यह स्वयं औषधरूप से व्यवहार में नहीं आता। इसके हाइड्रोक्लोरेट, हाइड्रिओडेट तथा हाइड्रोब्रोमेट आदि लवणों में से अंतिम का लवण ही अधिक उपयोग में आता है।

हायोसीनी हाइड्रोब्रोमाइडम् (Hyoscinae hydro bromidum)–लै०। हायोसीन हाइड्रोब्रोमाइड (hyoscine hydrobromide), स्कोपोलेमीन हाइड्रोब्रोमाइड (Scopolamine Hydrobromide), हाइड्रोब्रोमेट ऑफ हायोसीन (hydrobromate of hyoscine)–इं०। पारसीक यमानी सत्त्व–हिं०। जौहर बज्र, जौहर सीकरान –नि०।

रासायनिक संकेत

$$(C_{17}H_{21}NO_4, HBr, _3 H_2O)$$

ऑफ़िशल (official).

उत्पत्ति—यह हायोसाइमस (पारसीक यमानी) के पत्तों तथा विविध भाँति के स्कोपोला के वृक्षों एवं सोलेनेसीई पौधों में पाए जाने वाले एक एल्कलाइड (क्षारीय सत्त्व) का हाइड्रोब्रोमाइड है

लक्षण—इसके वर्ण रहित रवे होते हैं जो वायु में स्थिर तथा स्वाद में तिक्त और जल में अत्यन्त लयशील होते हैं। एक भाग यह, ४ भाग जल में घुल जाता है।

प्रभाव—निद्राजनक (hypnotic).

मात्रा—$\frac{१}{२००}$ से $\frac{१}{१००}$ ग्रेन (·३ से ·६ मि० ग्राम) मुख या त्वगस्थ अन्तःक्षेप द्वारा।

नॉट ऑफ़िशल योग

(Not official preparations).

(१) इञ्जेक्शिओ हायोसीनी हाइपोडर्मिका (Injectio hyoscinae hypodermica)–शक्ति १००० मिनिम परिस्रुत जल में १ ग्रेन (आधी रत्ती)। मात्रा–५ से १० मिनिम (बुंद).

(२) हाइपोडर्मिक लेमीली (Hypodermic lamele)–हरएक लेमीली में $\frac{१}{२००}$ ग्रेन हायोसीनी हाइड्रोब्रोमाइड होता है।

(३) गट्टी हायोसीनी (Guttae hyoscinae) एक आउंस परिस्रुत जल में २ ग्रेन हायोसीन हाइड्रोब्रोमाइड होता है।

(४) ऑफ्थैल्मिक डिस्कस (Ophthalmic Discs)–प्रत्येक डिस्क में $\frac{१}{५००}$ से $\frac{१}{२००}$ ग्रेन हायोसीन हाइड्रोब्रोमाइड होता है।

हायोसीनी हाइड्रोब्रोमाइड के प्रभाव तथा प्रयोग

यह अधिक विषैला है और प्रभाव में धतूरीन (एट्रोपीन) से जिससे रसायनवाद के अनुसार यह इतना निकट का सम्बन्ध रखता है, किसी किसी बात में भिन्न होता है। यह सशक्त अवसादक तथा निद्राजनक है और इसमें धतूरीन (एट्रोपीन) के समान हृदयोत्तेजक प्रभाव नहीं पाया जाता, एवं इससे मस्तिष्क के वल्कलस्थ गत्युत्पादक सेल निर्बल हो जाते हैं। इसे $\frac{१}{१२०}$ ग्रेन की मात्रा में उपयोग करने से ऊँघ, सुस्ती, स्तब्धता तथा प्रकट रूप से स्वाभाविक निद्रा शीघ्र आ जाती है और जागने पर रोगी अपने को भला चङ्गा मालूम करता है। कुछ समय के लिए कंठ में केवल कुछ शुष्कता शेष रह जाती है। पागलपन (मेनिया) तथा अनेक प्रकार के मानसिक विकारों के लिए यह सर्वोत्तम निद्राजनक औषध है। उक्त औषध को त्वचा के नीचे अन्तःक्षेप करने से सर्वोत्तम प्रभाव होता है। परन्तु किसी किसी रोगी में इसके प्रभाव के ग्रहण की क्षमता अधिक होती है; अस्तु, इसे $\frac{१}{२००}$ ग्रेन से अधिक की मात्रा से आरम्भ न कराना ही उत्तम है। इससे तीक्ष्ण उन्माद, जैसा

कि धत्तूरीन (Atropine) द्वारा विषाक्त रोगी में देखा जाता है, विरला ही उत्पन्न होता है। ऐट्रोपीन के समान यह तत्काल व बलपूर्वक नेत्र-कनीनका को प्रसरित कर देता है और इसका यह प्रभाव एट्रोपीन से ४-५ गुणा अधिक होता है। इससे इण्ट्राआँक्युलर टेन्शन (नेत्र पिण्ड का तनाव) स्पष्टरूप से नहीं बढ़ता।

डॉक्टर क्रॉस (Crauss) के वर्णनानुसार इसके उपयोग करने के पश्चात् उन्मत्तता विद्युताघात के समान तत्क्षण स्थिरता को प्राप्त होती है और रोगी की व्यग्रता शीघ्र शान्तिमय निद्रा में परिवर्तित हो जाती है। परन्तु यह व्यापक वातग्रस्तता रूपी स्थिरता धीरे धीरे होती है। मद्योन्माद (डेलीरियम ट्रीमेन्स), प्रसूतिकोन्माद (प्युर्पेरल मेनिया) एवं विविध भाँति के अनिद्रा विकारों में यह गुणदायक सिद्ध हुआ है। उस अनिद्रा रोग में जिसमें पागलपन का छिपा हुआ माद्दा हो, यह सर्वोत्कृष्ट निद्राजनक औषध प्रमाणित हुआ है। डॉक्टर ब्रूस (Bruce) के अनुभव के अनुसार यह वृक्क रोगों में अच्छा प्रभाव करता है। हृच्छूल (अञ्जाइना पेक्टोरिस) में इसका उपयोग कर सकते हैं।

दमा, वीर्यस्राव तथा राजयक्ष्मा रोगी में स्वेदस्राव को रोकने के लिए और अफीम सत्व (Morphia) तथा कोकीन के अभ्यासियों की चिकित्सा में यह उपयोगी सिद्ध हुआ है।

जर्मनी के प्रसिद्ध डॉक्टर श्नीडरलीन (Schneiderlein) जेनरल अनस्थेसिया (व्यापकावसन्नता) उत्पन्न करने के लिए स्कोपोलेमीन तथा मॉर्फीन को मिलाकर प्रयोग करना लाभदायक ख्याल करते हैं। अस्तु, वे ऑपरेशन की पूर्व संध्या को लगभग $\frac{१}{१००}$ से $\frac{१}{२००}$ ग्रेन स्कोपोलेमीन तथा चौथाई ग्रेन मॉर्फीनको परस्पर संयुक्त कर इसका त्वचा के भीतर अन्तःक्षेप करते हैं। आवश्यकतानुसार ऑपरेशन की सुबह को इसे अधिक मात्रा में दोहराया जाता है। इससे रोगी को गम्भीर निद्रा आजाती है और वह ऑपरेशन के पश्चात् कई घण्टों तक सोता रहता है। इस प्रकार यह दुःख व वेदना काल निद्रा में व्यतीत हो जाता है। शिशुजनन काल में इससे "गोधूली निद्रा" उत्पन्न होगी। (ए० मे० मे०)

निद्राजनक रूप से ज्वर सहित तीव्रोन्माद सम्बन्धी रोगियों में यह गुणदायक पाया गया है। इससे किसी प्रकार की हानि की सम्भावना नहीं। वृक्कविकार में जहाँ अफीमसत्व (मॉर्फिया) सर्वथा वर्जनीय है और जब सम्पूर्ण अवसादक औषधियाँ निष्फल सिद्ध होती हैं, उस समय इसका उपयोग निर्भयतापूर्वक किया जाता है।

हायोसीन के हाइड्रोब्रोमेट, हाइड्रोक्लोरेट तथा हाइड्रिओडेट शुक्रमेह में लाभदायक पाए गए। (मै० बो० एम०).

हायोसाइमीन (Hyoscyamine).

यह रचनामें धत्तूरीन (एट्रोपीन) के समान होता है तथा हायोसीन व हायोसिनिक एसिड में विश्लेषित किया जा सकता है। यह स्फटिकवत् एवं विकृताकार दोनों रूपों में पाया जाता है। इसके सूक्ष्म श्वेत रवे होते हैं या यह श्यामधूसर वर्ण का सत्व सदृश पदार्थ होता है।

हायोसायमीनी सल्फास
Hyoscyaminae sulphas.

पर्याय—हायोसायमीन सल्फेट (Hyoscyamine sulphate)-इं०।

रासायनिक संकेत $(C_{17}H_{23}NO_3)_2, H_2SO_4 2H_2O.$

ऑफिशल (Official).

यह पारसीकयमानी पत्र तथा अन्य सोलेनेसीई पौधों में पाए जाने वाले एक ऐलकलाइड (क्षारीय सत्व) का गन्धेत् (सल्फेट) है।

लक्षण— यह एक पीत या पीत श्वेतवर्ण का स्फटिकवत् व गन्धरहित चूर्ण है जो वायु में से नमी को अभिशोषित करता है।

स्वाद—तिक्त एवं चरपरा।

नोट—इसको वायु विशेषकर तर वायु से सुरक्षित गहरे अम्बरी रङ्ग के मज़बूत डाट वाले बोतलों में रखना चाहिए।

लयशीलता—यह २ भाग, एक भाग जल में और १ भाग ४॥ भाग हली (९० प्रतिशत)

में और अत्यन्त स्वल्प क्लोरोफार्म और ईथर में घुल जाता है।

प्रभाव—व्यापावसादक (General sedative) और निर्बल निद्राजनक (Weak hypnotic) । सामुद्र रोगों (Sea sickness) में लाभदायी है।

मात्रा—$\frac{1}{200}$ से $\frac{1}{100}$ ग्रेन (·३ से ·६ मि० ग्रा०) मुख से या त्वगस्थ अन्तःक्षेप द्वारा ।

नॉट ऑफ़िशल योग
(Not official preparations).

(१) हायोसायमीनो हाइड्रोब्रोमाइडम् (Hyoscyaminæ hydrobromidum) इसके छोटे छोटे श्वेत दानेदार रवे होते हैं, जो ३ भाग १ भाग जल में लय होजाते हैं। मात्रा—$\frac{1}{200}$ से $\frac{1}{100}$ ग्रेन।

(२) इञ्जेक्शिओ हायोसायमीनी हाइपोडर्मिका (Injectio hyoscyaminæ hypodermica)—हायोसायमीन सल्फेट १ ग्रेन (आधी रत्ती), परिस्रुत जल २ ड्राम। मात्रा—१ से २ बुंद।

(३) हाइपोडर्मिक लेमेल्ज़ (Hypodermic lamels)—प्रत्येक लेमाली में $\frac{1}{200}$ से $\frac{1}{100}$ ग्रेन उक्त औषध होती है।

(४) आफ्थैल्मिक डिस्कस् (Ophthalmic discs)—प्रत्येक डिस्क में $\frac{1}{200}$ ग्रेन दवा होती है।

(५) हायोसायमीनी ग्रेन्यूल्ज़ (Hyoscyaminæ granules)—प्रत्येक में $\frac{1}{100}$ ग्रेन।

यह सी-सिकनेस (सामुद्र रोग) में लाभदायक है।

हायोसायमीनी सल्फास के गुणधर्म व प्रयोग

प्रभाव—हायोसायमीन या हायोसाइमस का द्वितीय क्षारीय सत्व नेत्रकनीनिका प्रसारक है, और थोड़ी मात्रा में यह नाड़ी की गति को मंद करता है तथा धामनिक तनाव की वृद्धि करता एवं शारीरोष्मा की कमी को रोकता है और भूल चूक (Hallucination) व विभ्रम पैदा करता है। अधिक मात्रा में यह तन्तुगत नाड़ी स्पन्दन को कम कर देता है तथा प्राकट्य वातग्रस्तता या चालन की अशक्तता तथा निद्रा उत्पन्न करता है।

उपयोग—हायोसीन की अपेक्षा हायोसायमीन प्रभाव में धत्तूरीन (Atropine) से अधिक समानता रखता है। अधिकांश रोगियों में यह बिना पूर्व विभ्रम के निद्रा उत्पन्न करता है। हायोसायमीन (Hyoscyamine) ऐट्रोपीन के समान ही, किन्तु उससे अधिक नेत्रकनीनिका प्रसारक है। इसमें एट्रोपीन से विभ्रमकारी प्रभाव कम तथा निद्राजनक प्रभाव अधिक है। इसमें अधिक विश्वसनीय तथा शीघ्र मदकारी (नारकोटिक) गुण है। और यह सत्व अफीम (मॉर्फीया) तथा क्लोरल हाइड्रेट से पूर्ण तथा कम वर्जनीय है। यह वातमंडलावसादक है।

डॉक्टर रिङ्गर (Ringer) के कथनानुसार जिन्होंने सम्भवतः अशुद्ध लवण का नवीनोन्माद में उपयोग किया इसके प्रभाव का एट्रोपीनसे तुलना करनेपर कोई भेद नहीं ज्ञात हुआ। यह बलवान नेत्रकनीनिकाप्रसारक है तथा नेत्र रोग में इसका उपयोग होता है। परंतु ऐट्रोपीन की अपेक्षा यह विशेष लाभदायी नहीं है।

डॉक्टर ए० आर० कुश्नी (Cushny) के वर्णनानुसार विशुद्ध हायोसायमीन शुद्ध ऐट्रोपीन की अपेक्षा नेत्रकनीनिका प्रसारण तथा लालास्राव प्रतिबंधन में द्विगुण शक्तिशाली है। किश्ती पर सवार होने से प्रथम यदि इसे कुछ दिवस तक $\frac{1}{100}$ ग्रेन की मात्रा में प्रयोग करें तथा इसे कुछ समय तक प्रति घंटा २–२ घंटा पर दोहराते रहें तो यह सामुद्र रोग (Sea sickness) को रोकने के लिए सर्वोत्कृष्ट औषध है। यह कनीनिकाप्रसारक रूप से भी व्यवहार में आता है। फ़ालिज (अर्द्धांगवात या पक्षाघात)

सहित कम्पन में कपकपी को रोकने तथा पारदीय पक्षाघात के लिए औषध रूप से उपयोग में आता है। परन्तु उक्त प्रयोजन के लिए यह हायोसीन से निम्न कोटि का है ।

अनिद्रा (इन्सोम्निया), पागलपन (मेनिया), मद्योन्माद (डिलेरियम ट्रीमेन्स), साङ्गांग कम्पन (पैरालिसिस एजिटेन्स), दमा (ऐज़्मा), वातवेदना (न्युरैल्जिया) तथा कम्पन (कोरिया) में इसका उपयोग किया गया; किन्तु यह हायोसीन की अपेक्षा कम उपयोगी प्रतीत हुआ। (एलो० मे० मे० ह्विटला)

मानसिक विकार—मद्योन्माद, असीम व्यग्रता, भ्रम, शंका, सांस्थ्य स्मृति भ्रंश तथा अव्यवस्थितता, अपस्मारोन्माद तथा पुरातन विस्मृति रोगमें इसका व्यवहार होता है। पागलपन एवं तत्सम्बन्धी दशाओं में बिना किसी कुप्रभावके क्लोरल की अपेक्षा निश्चित निद्रा उत्पन्न करता है। तांत्रोन्माद में इसके उपयोगकी उत्तम विधि त्वगन्तर अन्तः क्षेप है।

वात विकार—साङ्गांग कम्पन में यह वह काम करता है जो किसी और औषध ने कभी नहीं किया अर्थात् अचेतना उत्पन्न किये बिना ही यह अंगचालन को चार घंटे तक रोक देता है। जब सम्पूर्ण औषधियाँ असफल होजाती हैं उस समय यह वायु कम्पन को ठीक करता है एवं उसी प्रकार यह पारदीय कम्पन, वृद्धावस्था अथवा निर्बलता जन्य कम्पन, रैशा (कोरिया) तथा योषापस्मारीय आक्षेप को शमन करता है। युवा या बाल दोनों के मरोड़ (आक्षेप) की अवस्था में यह वेदना तथा प्रदाह को शमन करता है। वातवेदना में इसका उपयोग किया गया और सम्भवतः ज्ञान तन्तुओं की उत्तेजना कम होकर वेदना शान्त होगई।

आक्षेप शमन—यह आक्षेपशामक है और इस लिए आक्षेप युक्त कास, श्वास, हिक्क (हिचकी) आदि में इसका लाभदायी उपयोग होता है।

मूत्रविकार—यह मूत्रविरेचक है तथा वृक्क गविनि (युरेटर) तथा वस्तिस्थ वेदना एवम् खराश को शमन करता है।

निद्राजनक—यह सार्वाङ्गिक वेदनाशामक तथा निद्राजनक औषध है और जब अफीम का उपयोग अनुचित होता है उस समय इसे देनेसे नींद आजाती है। इससे विबन्ध नहीं पैदा होता।

औषध-निर्माण तथा मात्रा—हायोसायमीन (स्फटिकवत्) $\frac{१}{२००}$ से $\frac{१}{४०}$ ग्रेन। हायोसायमीन (विकृताकार) $\frac{१}{१६}$ से $\frac{१}{८}$ ग्रेन। नवीनोन्माद में $\frac{१}{४}$ से १ ग्रेन की मात्रा में भली प्रकार हलका कर (diluted) तथा चतुरतापूर्वक उपयोग करना चाहिए। क्योंकि कुछ रोगियों में इसके बरदाश्त की शक्ति नहीं होती।

हायोसायमीनी सल्फ—$\frac{१}{१२०}$ से $\frac{१}{४०}$ ग्रेन

त्वगन्तरीय-सामान्य मात्रा—$\frac{१}{७५}$ या $\frac{१}{५०}$ ग्रेन, अधिकसे अधिक $\frac{१}{२०}$ और कम से कम $\frac{१}{१२०}$ (प्रै० वी० एम०)

परीक्षित योग

(१) एक्सट्रैक्टम् हायोसायमाई ३ ग्रेन, पल्विस कैम्फोरी २ ग्रेन, दोनों की १ गोली बना कर रात्रि में सोते समय दें। कार्डी (सुज़ाक सम्बन्धी शिश्नोत्तेजना) में लाभदायक है।

(२) एक्सट्रैक्टम् हायोसायमाई २ ग्रेन, ज़िन्साई वेलेरीएनेट्स २ ग्रेन, १ गोली बनाएँ और ऐसी १-१ गोली दिन में २ बार दें। नर्व सिडेटिव (वातावसादक) है।

(३) हायोसीनी हाइड्रोब्रोमाइड) $\frac{१}{१००}$ ग्रेन, पल्विस सैक्लिलैक्टस (मिल्क शूगर) २ ग्रेन। गोली बनाकर सोते समय दें। पैरेलिसिस एजिटैन्स (पक्षाघातीय कम्पन) में गुणदायक है।

(४) सोडियाइ ब्रोमाइडाई १५ ग्रेन, सक्काई हायोसाइमाई आधा ड्राम, सीरूपाई पेपेवरस १ ड्राम, एका डिस्टिलेटा १ आउंस तक,

ऐसी एक मात्रा औषध रात्रि में सोते समय दें। अनिद्रा (इन्सॉम्निया) में लाभदायक है।

(५) टिङ्क्चुरा हायोसाइमाई ३० मिनिम, सोडियाई बेञ्जोएट्स १० ग्रेन, एलिक्सर सक्किराइनी ५ मिनिम, इन्फ्युज़म् ब्युक्यू १ आउंस तक। ऐसी एक एक मात्रा प्रति चार चार घंटा पश्चात् दें। वस्तिप्रदाह (सिस्टाइटिस) और वृक्क प्रदाह (पाइलाइटिस) में फलदायक है।

अजवाइन मुदब्बर ajaváin-mudabbar –नि० शुद्ध अजवाइन। विधि–अजवाइनको तीन दिन रात इतने सिर्कामें तर रखें कि वह अजवाइन से चार अङ्गुल ऊपर रहे। फिर उसे सिर्कासे बाहर निकाल कर शुष्क कर लें। जीरा को भी इसी प्रकार शुद्ध करते हैं। प्योरिफ़ाइड अजोवान (Purified Ajowan)–इं०।

अजवाण ajaváṇa–जय० } **अजवान** ajaváña–हिं०, द०, गु० } अजवाइन (Carum Ajowan, *D. C.*)

अजवान का अर्क ajaváña-ká-arka–द० अर्क अजवाइन–हिं०। ओमम् वॉटर (Omum water)–इं०।

अजवान का पत्ता ajaváña-ká-pattá–द० पञ्जीरी का पत्ता। पञ्जीरी का पात, सीता की पञ्जीरी–हिं०। एनीसोकिलस कार्नोसस (Anisochilus Carnosus, *Wall.*)–ले०। थिक-लीभ्ड लेवेण्डर (Thick-leaved lavender)–इं०। इं०मे०मे०। फा०इं०।

अजवान का फूल ajaváña-ká-phúla–द०, हिं० अजवाइनका सत। स्टियरॉप्टिन (Stearoptin), फ़्लावर्स ऑफ़ अजवान कैम्फर (Flowers of ajowan camphor) –इं०। देखो–अजवाइन।

नोट—यह अङ्गरेजी थाइमॉल (सत पुदीना) के समान होता है।

प्रभाव—क्षुधासंत्तेजक, आमाशय बल्य, वायुनिःसारक, आक्षेपशामक, शोधनीय। यह पुरातन स्रावों, यथा—कास में अधिक श्लेष्मास्राव को रोकता है।

प्रयोग—अजवाइन का तेल और सत-अजवाइन को सोडा के साथ मिलाकर देने से आमाशयस्थ अम्लरोग, अजीर्ण तथा आध्मान दूर होते हैं। इं० मे० मे०। देखो—अजवाइन तथा थाइमोल।

अजवायण ajaváyaṇa–जय० } **अजवायन** ajaváyana–हिं० संज्ञा स्त्री० } [सं० यवानिका] अजवाइन (Carum Ajowan, *D. C.*)

अजवायन गुटिका ajaváyana-guṭiká –सं० स्त्री० अजवाइन, जीरा, धनियाँ, मिर्च, विष्णुकान्ता, अजमोद, मँगरैल प्रत्येक ४ शा०, हींग भुनी ६ शा० तथा सर्जाखार, जवाखार, पञ्चलवण, निशोथ प्रत्येक ८ शा० और जमालगोटा, कचूर, पुष्करमूल, बायविडंग, अनारदाना, बड़ी हड़, चित्रक, अम्लवेद और सोंठ प्रत्येक १६ शा० लें, पुनः बिजौरे (नींबू) के रस से मर्दन कर चने प्रमाण गोलियाँ बनाएँ। सेवन–विधि तथा गुण—घृत, दूध, मद्य, नींबू के रस और उष्ण जल के साथ देने से गुल्म का नाश होता है। मद्य से वात गुल्म, गोदुग्ध से पैत्तिक गुल्म, गोमूत्र से कफज गुल्म, दशमूल क्वाथ से त्रिदोषज गुल्म एवं स्त्री का रक्त-गुल्म तथा ऊँटनी के दूध के साथ देने से हृद्रोग संग्रहणी, शूल, कृमिरोग और अर्श का नाश होता है। शार्ङ्ग० सं० मध्य० ख० अ० ७।

अजशृङ्गिका ajaṣhringiká–सं० स्त्री० } **अजशृङ्गी** ajaṣhringí–सं० स्त्री० } -हिं० संज्ञा स्त्री०, एक वृक्ष जो भारतवर्ष में प्रायः समुद्र के किनारे होता है। इसकी छाल संकोचक है और ग्रहणी आदि रोगों में दी जाती है। इसका लेप घाव और नासूर को भी भरता है। मेढ़ासिं(शिं)गी, मेषशृङ्गी। एस्क्लीपिआस गेमिनेटा (Asclepias Geminata, *Roxb.*)–ले०। भा० पू० १ भा० गु० व० ३७१। रा० नि० व० ६; सु० सू० ३८ अ०; रा०; मद०व० १। (२) कर्कटशृङ्गी, काकड़ासिङ्गी। (इसका वृक्ष पुत्रजीव वृक्ष के समान होता है)। (Rhus succedanea; Acuminata)–ले०। सु० सू० ३७ ड।

(अ), भा० ४ भा० रेवतीग्रह-चि० । मेषशृङ्गी या कर्कटशृङ्गी । सु० सू० ३८ अ० वल्लीपञ्चके । वा० चि० ८ अ० । "अजशृङ्गी जटाकल्कम् ।" भा० पू० २ भा० अने० व० ।

अजश्री ajashrí-सं० स्त्री० फिटकिरी, फटिकारिका, फटिकारी, स्फटिकारि । भा० नि० । Alum (Alumen).

अजस āajasa-अ० अज्ञात ।

अजखर ajakhara-अ० रोहिषतृण । इज़्खिर (Andropogon schoeranthes)

अज़ह् āazah-अ० हरिण, मृग । ग़ज़ालह्, आहू-फ़ा० । (A deer or antelope).

अज़हल āazahala-अ० नर कबूतर, कपोत, पारावत । (A pigeon).

अज़हह् āazahah-अ० मादा लोमड़ी । फोक्स (A fox)-इं० ।

अजहा ajahá-सं० स्त्री० कौंच, केवाँच, शुकशिम्बी । आलाकुशी-बं० । (Carpopogon Pruriens) । अ० टी० ।

अज़हार azahára-अ० (ब० व०), ज़हर (ए० व०), कलियाँ, कलिकाएँ-हिं०, द० । गुञ्चहा-फ़ा० । बड्स (Buds)-इं० । देखो-कला (-लि).

अज़हारुरेह् azhárurreh } —फ़ा०
अज़हारुल्फ़श् azhárulfash } अनामून (Pulsatilla).

अज़हून āazahúna-अ० ऊँट (A Camel). रू० फा० इं० ।

अजक्षीरम् ajakshíram-सं० क्ली० छागीदुग्ध, अजादुग्ध, बकरी का दूध । वा० उ० १६ अ० । (Goat's milk).

अजक्षीरनाशः ajakshíra-náshah-सं० पुं० शाखोट वृक्ष, सहोरा (मि-), रुसा, सिओड़-हिं० । शेओड़ा-गाछ-बं० । (Streblus asper, *Linn.*) रा० नि० व० ६ ।

अजा ajá-सं० स्त्री०, हिं० संज्ञा स्त्री० (१) A she-goat. छागी, बकरी । (२) उक्त नामकी महौषधि विशेष । इसका स्वरूप-अजा (बकरी) के स्तन जैसी आकार वाली, दूध युक्त, क्षुप (पौधे) के रूप की, शंख, कुन्द, तथा चन्द्रमा जैसी उज्वल और पांडुर रंगवाली महौषधि है । सु० चि० ३० अ० । देखो—ओषधिः । (२) प्रकृति या माया । रा० द० ।-हिं० वि० जिसका जन्म न हुआ हो । जो उत्पन्न न की गई हो । जन्म रहित ।

अज़ा āazá-अ० सीपी का एक भेद है । (A kind of common oyster shell.)

अजाकर्ण ajákarna-सं० मदी (एक बड़ा हिंदी वृक्ष है) । (A huge indigenous tree).

अजागरः ajágarah-सं० पुं० (१) भाँगरा, भँगरैया, भृङ्गराजवृक्ष । भीमराज-बं० । एकलिप्टा एल्बा (Eclipta alba, *Hassk.*) श० र० । (२) महासर्प, दर्वीकर सर्प (फणदार या गेहुँअन साँप) । (The cobra).

अजागरी ajágarí-सं० स्त्री० Name of a plant. एक पौधा है ।

अजागलस्तनः ajágalastanah-सं० पुं० The fleshy protuberance or nipple hanging down from the neck of goats. ललरी ।

अजाघृतम् ajághritam-सं० क्ली० छागीघृत, बकरी का घी । गुण—बकरी का घी चक्षु के लिए हितकारी, दीपन, बलवर्द्धक, वृष्य, पाक में कटु, कास, श्वास और क्षय को नष्ट करता है एवं कफ, अर्श (बवासीर) तथा राजयक्ष्मा के लिए परम हित है । वै० निघ० ।

अजाज āajája-अ० (१) Dust गुब्बार, धूल; Smoke. धूम्र । (२) A fat camel बहुत मोटा ऊँट ।

अज़ाज़ āazáza-अ० बड़ा ऊँट (A huge camel).

अजाजिकः,-का ajájikah,-ká- सं० पुं० पीला जीरा, पीतजीरक . Yellow cumin seed) रा० नि० व० ६ ।

अजाजी,-जिः ajájí,-jih-सं० स्त्री० } (१) हिं० संज्ञा स्त्री० } जीरा,

सफेद और काला जीरा। जीरक, स्थूलजीरक –सं०। Cumin seed (Cuminum cyminum) रा० नि० व० ६। च० द० संग्रहणी चि० बृहच्चुक। (२) Ficus oppositifolia काकोडुम्बरिका, अजीर। जीरा, सफेदजीरा। भा० पू० १ भ० ह० व०। च० द० संग्रहणी चि० आयामकञ्जिक। र० सा० सं० माणिक्य रस। (३) Nigella sativa or Indica कृष्णजीरक, कालाजीरा। सि० यो० द्विवारात्रि ज्वर वृन्द०। "गुड़ संयुक्त जीरा विषमज्वर नाशक है।"

अजाजीवः ajájívah } सं० पुं० (A goat-herd) गड़ेरिया, भेड़ बकरी पालने वाला।
अजापालकः ajápálakah }

अजाज्यादि चूर्णम् ajájyádi-chúrṇam–सं० स्त्री० जीरा श्वेत ८ तो०, जवाखार ४ तो०, नागरमोथा ८ तो०, अहिफेन शुद्ध ४ तो०, मंदार मूल १६ तो०, ले चूर्ण कर सेवन करने से उग्र संग्रहणी, ज्वरातिसार, रक्तातिसार, निरक्तातिसार, तथा घोर विशूचिका दूर होती है। भैष० र० ग्रहण्याधिकारे।

अजात ajáta - हिं० वि० [सं०] (Unborn) जो पैदा न हुआ हो। अनुत्पन्न। जन्म रहित। अजन्मा।

अजातक्रम् ajátakram– सं० क्ली० छागी तक्र, बकरी का तक्र। गुण–बकरी का तक्र लघु, स्निग्ध तथा दाह, गुल्म और अर्शनाशक है एवं त्रिदोष, शोथ (सूजन), ग्रहणी और पांडुरोगमें परम हितकारी है। वै० निघ।

अजात ककुत्,-द् ajáta-kakut,-d–सं० पुं० (A young bull whose hump is not yet fully developed) वह युवा साँड़ जिसका डील पूर्ण विकास को प्राप्त न हुआ हो।

अजातान् ajátán–सं० क्ली० वह स्थान जहाँ केश न उगें। अथ०। सू० १३६। २। का० ६।

अज़ाद āazáda–अ० पस्तक़ामत–फ़ा०। बौना, ठिंगना, छोटे कद का–हिं०। पिग्मी Pigmy –इं०।

अजात दन्तः ajátadantah–सं० त्रि० छः मास व्यतीत होने पर भी जिस बालक के दन्त न उगें, अर्थात् दन्तोद्भेद न हो उसे 'अजातदन्त' कहते हैं।

अजादनी ajádaní–सं० स्त्री० क्षुद्र दुरालभा। छोटा धमासा, जवासा। (A small species of prickly night-shade.) रा० नि० व० ४।

अजादुग्धम् ajádugdham–सं० क्ली० छागी (–ग) दुग्ध, बकरी का दुग्ध (Goat's milk.) वै० श०।

अजान ajána–हिं० वि० (१) अज्ञान, मूर्ख, निर्बोध, (Ignorant, simple, innocent.) । (२) अजायन। एक पेड़ जिसके नीचे जाने से लोग समझते हैं कि बुद्धि भ्रष्ट होजाती है। यह पेड़ पीपल के बराबर ऊँचा होता है और इसके पत्ते महुए केसे होते हैं। इसमें लम्बे लम्बे मौर लगते हैं।

अजानयः ajánayah–सं० पुं० } उत्तम अश्व, कुलीन घोटक, अच्छी जाति का घोड़ा। (A horse of good breed.) जयदत्त।
अजानेयः ajáneyah–सं० पुं० }

अज़ानस āajánasa–हजानस, जुअ़्लान। गोबरौंदा, गुबरौंता, गोबरीला (एक प्रकार का कीड़ा जो गोबर में पैदा होता है)। A beetle found in dunghill or old cow-dung (Scarabeus or sterconarius copris.)

अजान्त्री ajántrí–सं० स्त्री० (१) नील वुह्ना, नीलबोंना, छागल बेंटे–बं०। A pot-herb convolvulus argenteus.) रत्ना०। पर्य्याय—नीलवुह्ना, नीलपुष्पी (नील अपराजिता), अतिलोमशा, नीलिनी, छगलान्त्री, अन्तः कोटरपुष्पी (र), वस्तान्त्री, वृद्धदारकः, (रा)। गुण—रस में कटु, कासनाशक, वीर्य-

वर्द्धक तथा गर्भजनक है। रा० नि० व० ३। (२) (Gmelina Asiatica or Rourea santaloides.) वृद्धदारक, विधारा। रा० नि० व० ३।

अजानिः ajánih-सं० पुं० (Without a wife, a widower.) रँडुआ।

अजानिकः ajánikah-सं० पुं० (A goat-herd.) गड़ेरिया, भेड़ बकरी पालने वाला।

अजापक्वम् ajápakvam-सं० क्लो० पक्वघृत विशेष।

अजापञ्चकम् ajápanchakam-सं० क्लो० यक्ष्मा रोग में प्रयुक्त होने वाला घृत। निर्माण-विधि-छागीघृत ४ श०, छागविष्टारस ४ श०, छागीदुग्ध ४ श०, छागीदधि ४ श०, छाग मूत्र ४ श०, इनको एकत्रित कर उसमें ८ पल यवक्षार डालकर यथा विधि पाचन करें। बस इसी को "अजापञ्चक" कहते हैं। च० द० यक्ष्मा-चि०। भैष०।

अजापञ्चक घृतम् ajápanchaka-ghritam-सं० क्लो० छाग। पुरीष रस, छाग मुत्र, छाग दुग्ध, छागदधि, इनमें घृत मिला कर सेवन करने से राजयक्ष्मा, श्वास तथा खाँसी दूर होती है।

अजापयः ajápayah-सं० क्लो० (Goat-milk.) छाग दुग्ध, बकरी का दूध। वा० उ० १३ अ०।

अजापाद ajápáda-सं० पञ्जीरी, मिटकी। इन्दुपर्णी, उत्पलभेद-सं०। गेनिसोकिलस कार्नोसस (Anisochilus carnosus) -ले०। इं० मे० मे०। देखो—सोता की पञ्जीरी।

अजाप्रिया ajápriyá-सं०स्त्री० झाड़बेरी-पं०। बदरी वृक्ष, बेर-हिं०। बालक प्रिया, भू-कर्टक, सूक्ष्म-फल-सं०। मल्ल, बेर, झाड़ी-यू० पी०। ज़िज़िफस नुम्मुलेरिया (Zizyphus nummularia,), ज़ि० माइक्रोफाइला (Z. Microphylla)-ले०। फा० फ० व०।

अजाफ āajáfa-अ० इन्द्रायनका फल। हञ्ज़ल -फ़ा०। (Citrullus colocynthis, *Schrad.*)

अजाम āajáma-अ० बड़ा चमगादड़, चाम-चिड़िया, चमगीदड़, चमगुदड़ी (A bat).

अजामांसम् ajámánsam-सं० क्लो० (Goat flesh) छाग मांस, बकरे का मांस। गुण—लघु, स्निग्ध, किञ्चित् शीतल, रुचिकारक, मधुर, पुष्टिकारक, बलकारक तथा वातपित्त नाशक है। रा० निघ०।

अजामूत्रम् ajámútram-सं० क्लो० (She-goat's urine) छागीमूत्र, बकरीका मूत्र। गुण—रस में कटु, उष्ण वीर्य, रूक्ष, नाड़ी-विपघ्न, एवं प्लीहोदर, कफ, श्वास, गुल्म तथा शोथ (सूजन) नाशक और लघु है। रा० नि० व० १५। व० उ० २४ अ०।

अजामेदः ajámedah-सं० क्लो० (Goat's fat) छागवसा, बकरे की चर्बी। वा० चि० ३ अ०।

अजायन ajáyana } -हिं० संज्ञा पुं० नीम के
अजान ajána } बराबर होने वाले एक भारतीय वृक्ष का नाम है। इसके पत्ते आम के पत्तों के समान किन्तु इसमें बारीक और लम्बे होते हैं। इसमें फलियाँ लगती हैं जो अंगुली के बराबर मोटी और आध गज तक लम्बी होती हैं। इसकी छाल रक्तशोधक है।

अज़ायह āazáyah-अ० सारा (छिपकली के क़िस्म का एक जानवर है)। A kind of lizard.

अजार ajára-हिं० संज्ञा० पुं० [फ़ा० आज़ार] रोग। बीमारी। (A disease).

अज़ार āazára-अ० अज़् वह्, माईं ख़ुर्द, (छोटी या बड़ी माईं), झाऊ। (Tamarix Gallica, *Linn.*)

अजारम् āajárama-अ० मज़बूत सूई अथवा पुरुष शिश्न। (Strong-needle or human penis).

अजारह āajárah अ० खजूरभेद। (A kind of Date),

अज़ाराक़ी azáráqí-अ० कुचिला । नक्स वॉमिका (Nux vomica), वामिट नट (Vomit-nut)-लें० । मु० अ० । म० अ० ।

अज़ाराक़ी सिरिया azáráqí-Syria-इं० कुचिला । (Nux vomica) फा० इं० ।

अज़ालत āazálata-अ० पिस्सू (केक)-हिं० । ए फ्ली (A flea)-इं० ।

अज़ालहेबकारत azálahe-bakárata अ० कुमारिच्छद को नष्ट करना । रप्चर ऑफ़ दी हाइमीन (Rupture of the Hymen)-इं० ।

अजावयः ajá-vayah-सं० पुं० वह ओषधियाँ जिन्हें बकरियाँ खाती हैं । अ०ग० । सू० ७ । १५। का० ८ ।

अजाविकं ajávikam-सं० क्लो० (Small cattle) क्षुद्र पशु ।

अजाविट् ajávit-सं० क्लो० छाग विष्ठा, बकरे की लेंड़ी । Goat's Fæces (excrements) । वा० उ० १० अ० ।

अजावी सीड्स ajáve seeds, *Percival.* -इं० अजवाइन । फा० इं० २ भा० ।

अजाशृङ्गी ajáshringí- सं० स्त्री० मेढासिंगी, मेषशृङ्गी । (Asclepias Geminata, *Roxb.*)

अजाश्वम् ajáshvam-सं० क्लो० (Goats and horses) बकरे और घोड़े ।

अज़ाहन āajáhana-अ० साही-हिं० । खारपुश्त-फ़ा । पॉर्क्युपाइन (A Porcupine), हेज हॉग (Hedge-hog)-इं० ।

अजाह्वा ajahvá-सं० क्लो० (Carpopogon pruriens.) केवाँच, आत्मगुप्ता । आलाकुशी-बं० । अ० टी० भ० । देखो-अजहा ।

अज़ाह āazáh-अ० कण्टकयुक्त बड़ा वृक्ष, जैसे-बेरी अथवा बबूर वृक्ष । (Any spinous tree).

अजाक्षी ajákshí-सं० स्त्री० अञ्जीर A fig (Ficus oppositifolia, *Roxb.*) रा० नि० व० ११ ।

अजाक्षीरम् ajákshíram-सं० क्लो० छागी दुग्ध, बकरीका दूध (She-goat milk). वै० श० ।

अजिका ajiká-सं० स्त्री० (१) रामतुलसी, वन तुलसी (Ocimum gratissimum, *Linn.*) इं० मे० मे० । (२) (A young she-goat) जवान बकरी ।

अजिज़ āajiza-अ० विवशहोना, निर्बलता, अशक्तता हिं० । डेबिलिटी (Debility) -इं० ।

अजित ajita- हिं० वि० [सं०] अपराजित । जो जीता न गया हो ।

अजित तैलम् ajita-tailam-सं० क्लो० मुलेठी का कल्क ४ तो०, आमले का रस ६४ तो०, गो दुग्ध ६४ तो०, तिल तैल मिलाकर तैल सिद्ध करें । गुण—इसके सेवन करने से दृष्टि विमल होती है । भैष० र० नेत्र० रो० चि० । बङ्ग० से० सं० नेत्र० रोग० चि० ।

अजित प्रसारणी तैलम् ajita-prasáraṇí-tailam-सं० क्लो० शरत्कालके सुपक्क प्रसारणी मूल ४०० तो०, दशमूल, बरियारा (बला), अश्वगंध, शतावर, पियाबाँसा, गोखरू, रास्ना, कौंच-बीज, गुरुच, पुनर्नवा प्रत्येक पृथक् पृथक् ४०० तो० । कुलथी, बदरीमूल, यव प्रत्येक २५६ तो० कूटकर छः द्रोण (९६ सेर) जलमें क्वाथ करें, जब १ द्रोण शेष रहे तब उसमें तिल तैल ४ सेर, मांसरस ४ सेर, दही ४ सेर, गोदुग्ध १६ सेर, शुक्त ४ सेर, दही का पानी ४ सेर, मूलीका रस ४ सेर, काँजी ४ सेर, तथा रास्ना, सौंफ, अगर, देवदारु, मजीठ मुलहठी, महुआ पुष्प (मधुक पुष्प), नख, नेत्रबाला, बालछड़, बच, सेंधानोंन, चित्रक, जवाखार, सरल, दारुहल्दी, वायविडंग, भिलावाँ, पुष्करमूल, कूट, पीपलामूल, चव्य, मेदा, महामेदा, जीवक, ऋषभक, काकोली, क्षीर काकोली, मिर्च, दालचीनी इलायची, काकड़ासिङ्गी, कचूर, नखी, गजपीपल, स्पृक्का, मैनफल, सोंठ, केशर, चन्दन, तेजपात, गोखरू, अदरख, कंकोल, ऋद्धि वृद्धि, हल्दी, कमल, अजवायन, जीरा, अजमोद,

नागरमोथा, सिंघाड़ा, तज, पीपर, इन्हें २-२ तोला लेकर, कूट बारीक चूर्ण कर उक्त तैल में मिलाकर पकाएँ। **सेवन विधि तथा गुण**—इसके सेवन से पंगुरोग वाले, विसर्प, स्नायु, संकोच, खंज, शिरा संकोच, गात्र भग्नता, गति की नष्टता, मन्यास्तम्भ, भुजा, कंठ-स्तम्भ, एकांगवात, सर्वांगवात, लकवा, सोजा, खुजली, हनुग्रह, महावात तथा जिनके अंग जर्जरित हो गए हों, कटि, कपाल, जानुस्थित वायु, संधियों का ढीलापन, शिरास्तब्ध, स्नायु, अस्थि, सन्धि, उरु, इनमें स्थित वायु, शूल, शिरोशूल, गात्रशूल, एकांग तथा सर्वांग वात, स्त्रियों का योनिशूल जो वातरक्त के प्रकोप से हुआ हो, पुरुषों का शुक्रक्षय, मेढ्रशूल, विकलता, इन्द्रीक्षीणता, गूँगापन, स्मृतिविभ्रम, तुतलाना, निरुद्ध वाणी, स्त्रियों की सन्तान हीनता, आर्तव, शुक्र का दूषित होजाना, इन समस्त विकारों को दूर करते हुए मनुष्य को स्मृति प्रदान होताहै।

इसके सिवाय, आध्मान, प्रत्याध्मान, अधिक डकार का आना, जृम्भा, कर्णनाद, क्षत, वातोन्माद, अपस्मृति, शाखावात, गृध्रसी, अस्सी प्रकार के वातरोग, मिश्रित वात, कफ के रोग, इसके अभ्यंग, पान और नस्य से दूर होते हैं तथा जिनके अंग सिकुड़ गए हों उन्हें प्रसारित करता है। उर्ध्वगत, अधोगत समस्त वात रोगों को यह अजितप्रसारणी नामक तैल शीघ्र दूर करता है। वं० से० सं० वातव्या० चि०।

अजितागदः ajitágadah–सं० क्लो० वाय-विडंग, पाठा (निर्विषी हरिद्वारे), आमला, हड़, बहेड़ा, अजमोद, हींग, सोंठ, मिर्च, पीपल, चित्रक, लवणों का सूक्ष्म वर्ग चूर्णकर शहद मिला कर गाय के सींग में भर कर १५ दिन तक बंद रक्खें। प्रयोग—इसके सेवन से स्थावर तथा जंगम विष दूर होते हैं। भै० र० विषाधिकारे।

अजितात्मन् ajitátman } -सं०पुं०(One-
अजितेन्द्रिय ajitendriya } who has not subdued his mind or his senses.) वह मनुष्य जिसकी आत्मा एवं इंद्रियाँ वश में न हो।

अ़जि़न azina–अ० जिस मनुष्य के कर्ण द्वारा सर्वदा तरल स्राव होता हो।

अजिनम् ajinam–सं० क्लो० } (१) मृगचर्म,
अजिन ajina–हिं० संज्ञा पुं० } मृगछाला। (The hairy skin of any antelope.) अम०। (२) चर्म्म, खाल, छाल। (३) ब्रह्मचारी आदि के धारण करने के लिए कृष्ण-मृग और व्याघ्र आदि का चर्म। अथ०। सू० ६८। ३ का०।

अजिनपत्रा ajina-patrá–सं० स्त्री० (A bat.) चमगादड़–हिं०। जतु (तू) का, चर्मचटका (टी)–सं०। बादुड़, चामचिकी–बं०। रा० नि० व० १६।

अजिन पत्रिका ajina-patriká–सं० स्त्री० (१) (A bat) चर्म्मचटी, चमगादड़–हिं०। हे० च०। (२) (An owl) पेचक उलूक पक्षी, उल्लू।

अजिनपत्री ajina-patrí सं०स्त्री० (A bat) जतु (-तू-) का, चमगादड़, चामचिड़िया–हिं०। चामचिकी–बं०। रा० नि० व० १६।

अजिन योनिः ajina-yonih–सं० पुं० }
अजिन योनि ajina-yoni-हिं० संज्ञा पुं० } हरिण, मृग (A deer, An Antelope). प० मु०।

अजिन्नह् ajinnah–अ० (ए० व०), जनीन (ब०व०) गर्भ, भ्रूण, जरायुस्थ शिशु, वह शिशु जो माता की उदरमें हो। फीटस Fœtus, एम्ब्रयो Embryo–इं०।

नोट—अंगरेज़ी में ३ मास से न्यूनावस्था वाले भ्रूण को एम्ब्रयो और इससे अधिक वाले को फ़ीटस कहते हैं।

अजिप्टिशा इण्डिगोप फ्लेञ्ज agyptischo Indigop flange जर० श्वेतनील, नीलिनी–सं०। नील बं०। (Indigofera Argenta) इं० मे० मे०।

अ़जि़ब áaziba-अ० वह जल जिस पर कोई जमी हो।

अजिरः ajirah–सं० पुं० क्लो० } (१) मण्डूक,
अजिर ajira–हिं० संज्ञा पुं० } मेंढक, दद्दुर।

A Frog (Rana tigrina). (२) Wind, *Air*. वात। (३) Any object of sense विषय (इन्द्रिय)। (४) The body तन, शरीर। (५) A court-yard. आँगन, सहन। सर्व्वत्र मे० रत्निक।

अज़िरत āazirata-अ० (ए० व०), अज़िरात (ब०व०) मल, विट्, गूह, पाखाना (मनुष्य का)। Fœces, Excrement.

अज़िरत āazirata-अ० मूलाधार, गुदा और वृषणके मध्यकी रेखा (चुरट),वह रेखा जो वृषणोंके निम्नभाग से लेकर गुदा तक है; सेवनी, सीवन। इसका उच्चारण इ..ज़्रित और सही है। पेरीनिअम् Perineum, रैफ़ी Rhaphe-इं०।

अजिह्म ajihma-सं० त्रि० (Straight) सरल, सीधा।

अजिह्मगः ajihmagah-सं० पुं० (An arrow) तीर, बाण।

अजिह्वः ajihvah) -सं० पुं० मण्डूक,
अजिह्मः ajihmah) मेंढक,भेक। A Frog (Rana tigrina) त्रिका०।

अजी āají-अ० सूखे छिल्के जिनको पकाकर खाते हैं।

अजीगर्त्तः ajígarttah-सं०पुं० (A serpent) सर्प, साँप।

अजीज़ āajíza-अ० क्लीब, नपुन्सक, नामर्द, जो मैथुन न कर सके (Impotent).

अज़ीज़ azíza-अ० देग के उबलने की आवाज़। बादल गरजने की आवाज़, मेघशब्द। वर्तमान वैद्यकीय परिभाषा में हाँप कर श्वास लेने तथा खर्राटे का शब्द। ((Sncring).

अज़ीज़ी āazízi-अ० यौगिक सुर्मा (Compound antimony).

अज़ीडेरक कॉमून azedarak commun-फ़्रें० बकायन, महानिम्ब (Melia azedarach) इं० मे० मे०।

अज़ीडेरक मीलिया azedarach, melia, *Linn*.-लै० बकायन। (Commen bead tree) इं० मे० मे०।

अज़ीतह् āazítah-अ० रोग विशेष जिसमें मैथुन काल में वीर्यपात समय मल निस्सरित हो जाता है।

अजीन āajína-अ० ख़मीर, ख़मीरी आटा। गुँधा हुआ आटा। डो (Dough)-इं०।

अज़ीमा azímá-अ० क़ु० तहब्बुज, वर्म रिख़्व-अ०। शिथिल सूजन, ढीली सूजन-हिं०। अडीमा (Edema)-इं०।

अज़ीमाटेट्राकैन्था azima tetracantha, *Lam*. -लै० कुण्डली-सं०। कण्ट-गूरकामाई-हिं०। त्रिकण्ट जटी-बं०। अज़ीमा टेत्रा कैन्था-लै०। इं० मे० मे०। फा० इं० २ भा०।

अज़ीमा टेब्राकैन्था azima tebracantha, *Lam*.)-लै० कुण्डली-सं०। कण्टागूर-कामाई-हिं०। त्रिकण्ट-जति-बं०। सुक-पाल-द०। मुक्कली-ता०। तेल्लउपी-ते०। मेमो०। इं० मे० मे०। फा० इं० २ भा०।

अज़ीर āazíra- } -अ० क़ुन्तूरियून (Di-
अज़ीरन āazírana } anthus anatolicus, *Boiss*.)

अजीरन ajirana-हिं० संज्ञा पुं० दे० अजीर्ण।

अजीरु ajeru-कों० हत्ता जुड़ी-हिं०। सूर्य्यावर्त्त, श्री हस्तिनी-सं०। हीलिओट्रापिअम् इण्डिकम् (Heliotropium indicum), ही. कार्डिफोलिअम् (H. cordifolium)-लै०। हीलिओ ट्रोप (Helio-trope)-इं०। इं० मे० मे०।

अजीर्ण ajírna-सं० त्रि०, हिं० त्रि० (Undigested) अपक्व।

अजीर्णम् ajírnam सं० क्लो०) (१) अपाक
अजीर्ण ajírna-हिं० संज्ञा पुं० } रोग विशेष,
अजीर्णिः ajírnih-सं० स्त्री०) अपच, अध्यसन, बदहज़मी—हिं०। ज़ुअ़्फ़ हज़्म, फ़सादुल् हज़्म, सूअ्हज़्म-अ०। हज़्म का ज़ुई.फ़ या कमज़ोर होना, हाज़्मा की कमज़ोरी, खाना अच्छी तरह हज़्म न होना, बदहज़्मी, ख़राबिये हज़्म-उ०। इण्डाइजस्चन (Indigestion), डिस्पेप्सिया (Dyspepsia-इं०।

अजीर्ण की निरुक्ति—जिस रोग में अन्न

पचे नहीं, अपितु जल जाय उसको अजीर्ण कहते हैं। भा० म० ख० १ भा० अ० अ० मा०।

प्रायः पेट में पित्त के बिगड़ने से यह रोग होता है जिससे भोजन नहीं पचता और वमन, दस्त और शूल आदि उपद्रव होते हैं। आयुर्वेद में इसके छः भेद बतलाए हैं:—

१—आमाजीर्ण जिसमें खाया हुआ अन्न कच्चा गिरे।

२—विदग्धाजीर्ण जिसमें अन्न जल जाता है।

३—विष्टब्धाजीर्ण—जिसमें अन्न के गांठे वा कंडे बंधकर पेट में पीड़ा उत्पन्न करते हैं।

४—रसशेषाजीर्ण जिसमें अन्न पतला पानी की तरह होकर गिरता है।

५—दिनपाकी अजीर्ण जिसमें खाया हुआ अन्न दिन भर पेट में बना रहता है और भूख नहीं लगती है।

६—प्रकृत्याजीर्ण वा सामान्याजीर्ण जो सदैव स्वाभाविक रहे।

डॉक्टरों में इसके दो भेद मानते हैं—(१) उग्र अजीर्ण (Acute dyspepsia) और (२) पुरातनाजीर्ण (Chronic dyspepsia). पुरातनाजीर्ण के पुनः तीन भेद होते हैं—(१) आमाशयविकार जन्य अजीर्ण (Atonic dyspepsia), क्षोभजन्याजीर्ण (Irritative dyspepsia) और वाताजीर्ण (Nervous dyspepsia).

अजीर्ण निदान।

ईर्षा (पराए धनधान्यादिकों देखकर जलना), डरना, क्रोध करना इन कारणों से व्याप्त तथा लोभ, शोक, दीनता इन कारणों से पीड़ित और दूसरों के शुभ कामों को बुरा समझने वाले मनुष्यों का किया हुआ भोजन भली भाँति नहीं पचता है। ये अजीर्ण के मानसिक कारण हैं।

शारीरिक कारण ये हैं—

अत्यन्त जल पीने से, विषम (असमय वा न्यूनाधिक) भोजन करने से, मल-मूत्रादि के वेग रोकने से, दिन में सोने से, रात्रि में जागने से, इन कारणों से भोजन के समय यदि प्रकृति अनुकूल, लघु तथा शीतल पदार्थ सेवन करें तो भी अन्न भली प्रकार नहीं पचे उसको अजीर्ण कहते हैं।

जो लोभी मनुष्य जिह्वा के वश होकर पशु के समान बेप्रमाण भोजन करते हैं उनको सब रोगों का कारण अजीर्ण रोग शीघ्र उत्पन्न होता है। माधवः।

अजीर्ण के लक्षण

(१) आमाजीर्ण—यह कफ के प्रकोप से होता है। इसमें देह का भारीपन, जी मचलाना, कपोल व नेत्रगोलक में सूजन, मीठा खट्टा जो ही रस खाया गया हो उसी की डकार आना प्रभृति लक्षण होते हैं।

(२) विदग्धाजीर्ण—यह पित्त के प्रकोप से होता है। इसमें भ्रांति, तृष्णा, बेहोशी, अनेक प्रकार की पित्तज पीड़ा, धूएँ के साथ खट्टी डकार आए, पसीना आए तथा दाह हो, ये लक्षण होते हैं।

(३) विष्टब्धाजीर्ण—यह वायु के प्रकोप से होता है। इसमें रोगी को शूल, पेट फूलना, नाना प्रकार की वातज पीड़ा, मल तथा अधोवायु का न निकलना, पेट का जकड़ना, इन्द्रियों में मोह और शरीर में पीड़ा, ये सब लक्षण होते हैं।

(४) रसशेषाजीर्ण—इसमें अन्न में अरुचि हृदय में जड़ता और देह में भारीपन होता है। माधवः। वा० नि० १२ अ०।

नोट—दिनपाकी तथा प्रकृत्याजीर्ण के लक्षण अजीर्ण के भेदों के अन्तर्गत वर्णित हैं।

अजीर्ण के उपद्रव

अजीर्ण रोगी के बेहोशी, प्रलाप, वमन, मुख से पानी का आना, देह शिथिल होना, भ्रांति होना, ये सब उपद्रव होते हैं। अत्यन्त बढ़ा हुआ अजीर्ण मनुष्य को मार भी डालता है।

नोट – अग्नि मन्द होने ही से अजीर्ण और ग्रहणी पैदा होती है अर्थात् अधिक समय तक अग्निमान्द्य और अजीर्ण रोग रहने से पीछे इसी की गणना ग्रहणी में होने लगती है।

उपरोक्त आम, विष्टब्ध तथा विदग्धाजीर्ण से विसूची (हैजा), अलसक और विलम्बिका

रोग की भी उत्पत्ति होती है। मा० नि०। चिकित्सा—मन्दाग्निवत्।

अजीर्णकण्टकरसः ajírna-kntaka-rasah -सं० पु० अजीर्ण नाशक योग विशेष। शुद्ध पारा, बच्छनाग, गन्धक प्रत्येक तुल्यांश, सब के समान काली मिर्च लें, फिर कंटकारी के रस अथवा क्वाथ में भावना देते हुए २१ बार मर्दन करें। मात्रा—२ रत्ती। गुण—यह सभी प्रकार के अजीर्णों को नष्ट करता है। यो० र०, चि० सा०, वै० क०, र० सं०, भै० सा०, र० सि०, र० स० सं०, र० क० ल०, र० चि०, र० ख०, र० मं०, र० र०, नि० र०, चि० र०, र० सु०, वै० चि०, भै० र०, र० (मा०), र० को०, र० क० यो०, वै० वि०, र० का०, रसायन० सं०, ना०वि०, चि०क०, र० क०, भा० प्र०, अजीर्णाधिकारे० व० रा० (अग्निकुमारः)।

अजीर्णकण्टक वटी ajírna-kantaka-vatí —सं० स्त्री० शुद्ध पारा, बच्छनाग, गन्धक प्रत्येक समान भाग, सबके बराबर सुहागा भूना, सब को मिश्रित कर २१ बार नीबू के रस की भावना दें, फिर चने प्रमाण गोलियाँ बनाएँ। गुण—यह अजीर्ण तथा अलसक आदि को दूर करती है। यो० म०।

अजीर्णकण्टकोरसः ajírna-kantako-rasah —सं० पु० सोहागा भूना, पीपल, बच्छनाग, शिंगरफ प्रत्येक समान भाग लें, और काली मिर्च सोहागे से द्विगुण लें, पुनः नीबू के रस से घोटकर मटर प्रमाण गोलियाँ बनाएँ। गुण—यह रस अजीर्ण की शान्ति, जठराग्नि की वृद्धि करता और कफ के रोगों का नाश करता है। मात्रा—१-२ गोली। यो० म०, भा० प्र०, र० क० ल०, रसायन० सं०, वै० र०, अजीर्णाधिकारे। नि० र०, र० रा० सु०, निघण्ट रत्नाकरे, रसराजसुन्दरे चास्य क्षुद्बोधकेति नाम।

अजीर्णकालानलोरसः ajírna-kálánalo-rasah—सं० पु० शुद्ध पारा, गन्धक, प्रत्येक ८ तो०, लोहा, ताँबा, हरताल, बच्छनाग, तूतिया, बंग, लवङ्ग, सुहागा, दन्तीमूल और निसोथ का चूर्ण प्रत्येक ४ तो०, अजमोद, अजवाइन, सज्जी, जवाखार, और पाँचों नमक, प्रत्येक २ तो० इनका चूर्ण करके २० बार अदरख के रस की और पीपल, पीपलामूल, चव्य, चित्रक तथा सोंठ के क्वाथ की १० और गिलोय के रस की १० भावना दें। पुनः सब के आधा भाग काली मिर्च मिला मर्दन कर चना प्रमाण गोलियाँ बनाएँ। गुण—यह प्रत्येक अजीर्ण के विकार को शीघ्र दूर करता है। र० सु०, व० रा०, अजीर्णाधिकारे।

अजीर्ण गजाङ्कुशः ajírna-gajánkushah -सं० पु० शुद्ध पारा, गन्धक, विडङ्ग, अजमोद, बच्छनाग, सूरन, पुनर्नवा, पाँचों नमक, पञ्चकोल, अम्लवेत, तीनों क्षार, अम्ली, हस्तिकर्णी, (एरंड की जड़ की छाल), कालीमिर्च और हींग प्रत्येक समान भाग लें, इसमें समुद्र लोन को भूनकर मिलाएँ। सब का बारीक चूर्ण करके चित्रक, पाठा और शरपुङ्ख के रस अथवा क्वाथ से पृथक पृथक भावना दें। मात्रा—½ तो०। अनुपान—अदरखका रस है। गुण—यह सम्पूर्ण अजीर्ण के विकारोंको शीघ्र दूर करता है। र० क० यो०।

अजीर्णजरणः ajírna-jaranah—सं० पु० कर्चूर। See Karchúra। वै० श०।

अजीर्ण नाशनः ajírna náshanah—सं०क्ली० पारे को भोजपत्र में बाँध के काँजी में लवण डाल के तीन रात्रितक स्वेदन करें तो यह पारद सुवर्ण आदि धातुओं के अजीर्ण को दूर करे। जब तक अजीर्ण दूर न होजाय तब तक पाराग्रसन का अधिकारी नहीं है। योगतरङ्गिणी० पारद० विधान०।

अजीर्ण बलकाला नलो रसः ajírna-bala-kálá-nalo-rasah—सं० पु० शुद्ध पारा २ पल, शुद्ध गन्धक २ पल, लौहभस्म, हरिताल, विष, नीलाथोथा, बङ्गभस्म, लौंग, सोहागा, दन्ती की जड़, निशोथ इन्हें पृथक पृथक एक-एक पल लें; अजमोद, अज.

वाइन, जवाखार, सज्जीखार, पञ्चलवण प्रत्येक चार चार तो० इन्हें एकत्र कूट पीस कपड़छान कर अदरख के रसकी २१-२१ भावना दें। इसी तरह पञ्चकोल, तथा गुरुच की १० १० भावना दें। पुनः सब के अर्द्धभाग कालीमिर्च का चूर्ण मिलाएँ। सब को खरल कर चने प्रमाण की गोलियाँ बनाएँ। जब सूख जाय शीशी में बन्द कर रक्खें। गुण—इसके सेवन से पुरातन अजीर्ण, आमवात, पाण्डु, प्लीहा, प्रमेह, विष्टम्भ, प्रसूत, संग्रहणी, खाँसी, श्वास, पीनस, क्षय, अम्लपित्त, शूल, भगन्दर अर्श, आठ प्रकार के उदर रोग, यकृत रोग तथा मन्दाग्नि को दूर करते हुए खाए हुए अन्न को प्रहर मात्र में भस्म करता है। यह गहनानन्द सिद्ध का कहा हुआ रस है। वृ० रस० रा० सु० अजीर्ण० चि०।

अजीर्णहर महोदधि वटीः ajírṇahara-mahodadhi-vaṭíh-सं० स्त्री० शुद्ध जमालगोटा बीज, चित्रक, सोंठ, लौंग, गन्धक, पारा, सोहागा, मिर्च, विधारा, विष इन्हें सम भाग ले चूर्ण कर दन्ती के रस की पन्द्रह भावना दें। इसी तरह नीबू के रस की तीन, चीते के रस की तीन तथा अदरख के रस की सात भावना देकर शुष्क कर जब गोलियाँ बनाने योग्य हो जाए तब मटर प्रमाण गोलियाँ बनाएँ। गुण—इसके सेवन से शूल, अजीर्ण, ज्वर, खाँसी, अरुचि, पाण्डु, उदर रोग, आम रोग, पेट का गुड़गुड़ाहट, हलीमक, मन्दाग्नि तथा सब रोगोंका नाश होता है। वृ० रस० रा० सु० अजीर्ण० चि०।

अजीर्णहर रसः ajírṇa-hara-rasah-सं० पुं० इस नाम के तीन योग हैं—

(१) रसेन्द्र मं०। (२) यो० र०, अजीर्णाधिकारे। (३) यो०र०,अजीर्णाधिकारे। सज्जीखार, जवाखार, सुहागा, पारा, लवङ्ग, लवणत्रय (काला, सेंधा और विड़ नमक), पीपल, गन्धक, सोंठ, कालीमिर्च प्रत्येक ४ तो०, बचछनाग १ तो० मिलाकर बारीक चूर्ण कर लें। पुनः आक के दूध से ७ दिन तक भावना देते रहें फिर गजपुट में उसे इस प्रकार पकाएँ कि उसका धूँआ (वाष्प) बाहर बिल्कुल न निकले। ठंडा होनेपर निकालें। फिर उसमें लवङ्ग, कालीमिर्च, फिटकिरी प्रत्येक ४ तो० मिलाकर बारीक चूर्ण करें और शीशी में रख लें। मात्रा २ रत्ती सायंकाल खाने से खाया हुआ क्षण भर में पच जाता है। इसको सेवन करने वाला भोजन करने के एक पहर बाद पुनः भोजन करने की इच्छा करता है। यह मांसको भी जीर्ण कर देता है।

अजीर्णारि रसः ajírṇári-rasah-सं० पुं० शुद्ध पारा, गंधक प्रत्येक ४ तो०, हड़ ८ तो०, सोंठ, पीपल, मिर्च, सेंधानमक प्रत्येक १२ तो०, भाङ्ग १६ तो० सब को मिलाकर चूर्ण करें, फिर नीबू के रस से घोटें। इसी तरह धूप में सुखा सुखा सात भावना दें। मात्रा—१-३ मा०। गुण—शूल, प्लीहा, उदरशूल, अजीर्ण और गुल्म रोग को नष्ट करता है। र० का० ल०, रसायन सं०, चि० क०, टी०, अजीर्णाधिकारे।

अजीर्णी ajírṇí सं०त्रि०हिं० अजीर्ण रोगी, मन्दाग्नि रोग वाला (Indigestive-person, *Dyspeptic*.) वै०श०।

अजीलह् यतूस aajílah-yatúsa--गिरगिट। इब्रंह्-फ़ा०। (A lizard, a chameleon)

अजीव ajíva-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (Lifeless) अचेतन।जीव तत्त्वसे भिन्न। जड़ पदार्थ वि० बिना प्राण का। मृत।

अजीवनिः ajívanih-सं० स्त्री० मृत्यु। (Death, Non-existense).

अजीविजः ajívijah-सं० पुं० अनैन्द्रिक। (Inorganic.)

अजुगा केमी-पाइटिस ajuga chama pitys -लें० कमाफ़ीतूस-यु०। कुकरौंधा-हिं०।

अजुगा डिस्टाइका ajuga distica-लें० गोबरा।

अजुगा ब्रैक्टीओसा ajuga bracteosa, *Wall*.)-लें० कौड़ी बूटी-भे०। ककूं, नीलकण्ठी-सत०। खुर-बनरी-ट्रां० इं०। इसके

बाजारू नाम निम्न प्रकार हैं, यथा—जनेश्रादम, मुफ़ीद बावरी, नीलकण्ठी।

नोट—मि० बेडेन पॉवेल "अजुगा रेपटन्स" (एक यूरोपीय भेद) का वर्णानुसार में जने-आदम नाम से अभिव्यक्ति करते हैं, पर मि० स्टयुवर्ट (Stewart) सैल्विश्रा ऐनलेटा (Salvia anlatá) का उक्त नाम प्रदान करते हैं। मेमा० । इं० मे० प्लां०।

अजुज़ ãajuz-अ० (ए० व०) अअजाज़ (ब०व०) सुरीन, चूतड़-उ०। नितंब, चूतड़-हिं०। अर्वाचीन वैद्यकीय परिभाषामें यह शब्द नितंबास्थि (अज़्मुल्अजुज़) के लिए प्रयोगमें लाया जाता है। बटक्स (Buttocks), नेट्स (Nates) और सेक्रम (Sacrum)-इं०।

अजुटा ajuṭá-सं० भुँई-आमला, भम्यामलकी। (Phyllanthus niruri.)

अ(इ) ज़ुद ãa(ãi)zad-अ० भुजा, बाज़ू, डण्ड, कुहनी और स्कंध का मध्य। आर्म Arm-इं०।

अजुमोद वोमम् ajumoda-vomam-ते० अजमोद। स० फा० इं०। Carum (Ptychotis) Roxburghianum, *Benth.*

अजुलीनी ajulíní-अज्ञात।

अजू (जो) ज़ ãajúz-अ० (१) शराब, (२) लोमड़ी, (३) शेर, (४) गाय, (५) भेड़िया, (६) चर्ख, (७) बिच्छू, (८) घोड़ा, (९) कुत्ता, (१०) ऊँटनी, (११) हथिनी, (१२) एक वृक्ष का नाम है, (१३) मिश्क और (१४) एक प्रकार का खाना भी है। (१५) पीरज़ाल-फ़ा०। बुड्ढी स्त्री, बुढ़िया-हिं०।

अजूजा ajújá-हिं० संज्ञा पुं० [देश०] बिज्जू की तरह का एक जानवर जो मुर्दा खाता है।

अज़ूत azút-अ० यह यूनानी शब्द अज़ूट का अरबीकृत शब्द है (जिसका अर्थ प्राण-नाशक है)। यह नाइट्रोजन का पर्याय है। नाइट्रोजन (नत्रजन) एक सूक्ष्म वायव्य है जो वायु में ७७ प्रतिशत पाया जाता है। नाइट्रोजन Nitrogen- इं०।

अजूम ãajúm-अ० ऊँट का बच्चा।

अजूरा ajúrá-बरब० अज्ञात।

अजूल ãajúla-अ० बछड़ा। गोसालह्-फ़ा०।

अजूह ãajúh-अ० खजूर भेद। यह मदीना मुनव्विरा में होता है। (A kind of date).

अजेयः ajeyah-सं० पुं० } **अजेय** ajeya } अर्जुन वृक्ष। (Terminalia arjuna *W. & A.*) वै० निघ०। त्रि० न जीते जाने योग्य। जिसे कोई जीत न सके।

अजेय घृतम् ajeya-ghritam-मुलहठी, तगर, कूट, देवदारु, पित्तपापड़ा, केशर, एलुआ, नागकेशर, कमल, मिश्री, वायविडंग, श्वेत चंदन, तेजपत्र, प्रियंगु, रोहितृण, हल्दी, दारुहल्दी, छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी, शालिपर्णी, शालपर्णी, बला, इनके कल्कों से सिद्ध घृत प्रत्येक विषों को दूर करता है। चक्र० सं० विष० चि०।

अज़ेरोना azarona-(Artemisia sibersiana, *Wall.*) माज़रीना। फा० इं० २ भा०।

अज़ैडिरा डी' इण्डी azadirae D' Inde-फ्रां० नाम। The Neem tree। इं० मे० मे०।

अज़ैडिरैक्टा इण्डिका azadirachta Indica, *Kuss.*-ले० नीम-हिं०, द०, पं०, बं०। रावीप्रिय, व्रणशोधकरी-सं०। मीलिया अज़ैडिरैक्टा (Melia azadirachta) -ले०। दी नीम (The Neem), मार्गोसाट्री (Margosa tree), इण्डियन लिलैक (Indian lilac)-इं०।

अजैडकं ajaidakam-सं०क्ली० (Goats and rams) बकरे और भेड़े। इं० मे० मे०। स० फॉ० इं०।

अजैपाल ajaipála हिं० संज्ञा पुं० जमालगोटा (Croton seeds).

अजैरू ajairú-नैपा० बरड़ा-म०, सं०, सो० पी०।

अज़ोमूत azomúta } -गोश्रा० प्लेस्मोमम् मार्गों-
उज़ामेत uzometa } र्टिफ़ॉर्म (Plesmomum Margortiform, *Schott.*), एरम मार्गों र्टिफ़ॉर्म (Arum Margortiform,

Roxb.) फा० इं०। इं० मे० मे०। (डाइमॉक)

मदनमस्त या सूरण वर्ग

(*N. O. Aroideae or Araceae*)

उत्पत्ति स्थान—बंगाल (राक्स०), सिलहट (वेल्य०), अर्थात "गोआ देशस्थ" (डाइ०), हिन्दुस्तान।

उपयोग—गोआ में देशी लोग इसके बीज को कुचल कर दंतरोग में बर्तते हैं। थोड़ी मात्रा में इसे रुई में रख कर खोखले दाँतों में भर देते हैं। इससे तात्कालिक शान्ति हो जाती है। इसी अवसादक गुण के कारण चोट लगने अथवा कुचल जाने प्रभृति में इसका बाह्य उपयोग होता है। (डाइमॉक)

नोट—देखो-सूरन अर्थात् एरम सिल्वेटिकम् (Arum sylvaticum, *Roxb.*) या सिनैन्थेरिअस सिल्वैटिका (Synantherias sylvatica, *Schot.*).

अजावान ajowan-बम्ब० अजवाइन। Carum (ptychotis) Ajowan, *D. C.*

अजोवान ऑइल ajowan oil-इं०
अजावान ऑलियम ajowan oleum-ले०
यमानी तेल। देखो—अजवाइन।

अजौफ़ ajoufa-अ० (बहु० व०), जौफ़ (ए० व०) शाब्दिक अर्थ जौफ़दार या खोखली वस्तु; किन्तु छेदनशास्त्र की परिभाषा में उस बड़ी नलीदार शिरा को कहते हैं जो यकृत के उन्नतोदर भाग से निकलकर अजौफ़ साइद या नाज़िल दो भागों में विभाजित होती है। महाशिरा -हिं०। (Vena cava)

नोट—साहब कुस्तासुत्तह्तिब्बा अजौफ़ को उदर तथा योनि के लिए भी प्रयोग में लाते हैं

अजौफ़अअ़्ला ajoufa-aālá-अ० देखो—अजौफ़ साइद। (Superior vena cava).

अजौफ़ तह्तानी ajoufa-tahtání-अ० देखो-अजौफ़ नाज़िल (Inferior vena cava).

अजौफ़ नाज़िल ajoufa-názil-अ० अजौफ़ तह्तानी। अधोगा महाशिरा, निम्न महाशिरा। प्राचीन छेदनशास्त्र की परिभाषा में उपरोल्लिखित शिरा का वह भाग जो यकृत से निम्नावयवों की ओर जाकर शाखाओं में विभाजित होता है। इन्फ़ीरिअर वेना केवा (Inferior vena cava)-इं०।

अजौफ़ फ़ौक़ानी ajoufa-fouqání-अ० देखो-अजौफ़ साइद (Superior vena cava).

अजौफ़ साइद ajoufa-sáid अजौफ़ फ़ौक़ानी, अजौफ़ अअ़्ला और अजौफ़ ताजम-अ०। ऊर्ध्व(-गा) महाशिरा-हिं०। प्राचीन छेदन शास्त्र की परिभाषा में उपरोल्लिखित शिरा का वह भाग जो यकृत से ऊपर हृदय की ओर तथा उससे ऊपर जाकर अनेकश शाखाओं में विभाजित होता है। सुपीरिअर वेना केवा (Superior vena cava) इं०।

टिप्पणी—प्राचीन हकीमलोग चूँकि शिराओं का उद्गम यकृत से मानते थे। अस्तु, वे शिरा के उस भाग को जो यकृत के उन्नतोदर भाग से निकल कर वक्षउदरमध्यस्थ पेशी को छेदन कर ऊपर हृदय की ओर जाता है ऊर्ध्वगामहाशिरा अर्थात् "अजौफ़ साइद या अजौफ़ फ़ौक़ानी" कहते हैं। इसके प्रतिकूल शिरा के उस भाग को जो यकृत् से निम्नभाग की ओर उदर में पृष्ठकशेरुका के समानन्तर पेडू तक जाता है अधोग महाशिरा अर्थात् "अजौफ़ नाज़िल या अजौफ़ तह्तानी" कहते हैं। परन्तु अर्वाचीन योरोपीय डाक्टरगण चूँकि शरीरस्थ समस्त शिराओं का अन्त हृदय के दाहिने प्रकोष्ठ कोष्ठ में मानते हैं। अतः उनके वर्णनानुसार उपर्युक्त दोनों शिराओं, यथा—"अजौफ़ साइद और अजौफ़ नाज़िल" का समावेश निम्नमहाशिरा (Inferior vena cava) ही में होता है। शिरा सम्बन्धी अर्वाचीन डाक्टरी मत तथा प्राचीन वैद्यक मत के लिए देखिए "शिरा"।

अजंभ ajambha-सं० त्रि०, हिं० वि० (Toothless) दंतहीन।

अजंभः ajambhah-सं० पुं० (A frog)

मण्डूक, मेंढक। (२) The sun सूर्य। (३) Toothless state (of a child) वह बालक जिसके अभी दाँत न निकले हों।

अजः ajah-सं० पुं० (१) छाग, बकरा (A he-goat) । भा० पू० । (२) स्वर्णमाक्षिक (Ferri sulphuretum) सोनामक्खी। हे० च० । (३) उक्त नाम की औषधि विशेष, अजशृङ्गी (Asclepias geminata, *Roxb.*) च० चि० १ अ० ।

अज़्आफ़ azáafa-अ० (१) (Double) दूना करना, बढ़ादेना। (२) (Weaken) निर्बल करना, अशक्त करना।

अज़्ग़ास् अह्लाम azghása-ahláma-अ० वैकल्य कारक स्वप्न। असत्य वा मिथ्या स्वप्न। कन्फ्युज़िङ्ग ड्रीम (Confusing dream) -इं० ।

अज़्ज़् áazza-अ० दंशन, दाँतसे काटना। अज़्ज़्, रज़्ज़, कद्म, नक़्, कस्ब, लस्अ्, नह्श और नक्ज़ प्रभति के अर्थ भेद विवरण प्रत्येक पशु के काटने को अज़्ज़् और प्रत्येक विषधर जीवों के काटने को रज़्ज़ और कद्म, पक्षियों के काटने को नक़्, वृश्चिक के डङ्क मारने को कस्ब और सर्पदंशन को लस्अ्, नह्श और नक्ज़ कहते हैं।

अजज़म ajzama-अ० (ब० व०), जज़्म (ए० व०) जुज़ामी, कोढ़ी-उ०। कुष्ठ रोगी, कुष्ठी, जिसकी अंगुलियों के पोर्वे झड़ गए हों। लेप्रस (Leprous)-इं० ।

अजज़म ajzama-अ० अजद्अ्। नकटा, जिसकी नासिका कटी हो। नोज़क्लिप्ट (Nose clipt)-इं० ।

अजज़ा ajzá-अ० (ब० व०), जुज़ (ए० व०) ह्स्सा,हिस्से, टुकड़े-उ०। भाग, अंश, टुकड़ा -हिं०। पार्ट्स (Parts)-इं। (२) अद्वियह्। औषधियाँ। ड्रग्ज़ (Drugs)-इं० ।

अज्ज़ाअ् अव्वलिय्यह ajzáa-avvaliyyah -अ० अर्कान। तत्व-हिं०। (Elements)

अज्ज़ाइयह् ajzáiyah-अ० अज्ज़ाख़ानह्। दवाख़ानह्-उ०। औषधालय-हिं०। डिस्पेन्सरी Dispensary-इं०।

अज्ज़ाजी ajzáji-अ० अज्ज़ाई, सैदली। दवासाज़, अत्तार-उ० । औषध-निर्माता, औषध-विक्रेता -हिं०। अपाथेकरी Apothecary, केमिस्ट Chemist, ड्रगिस्ट Druggist-इं०।

अज़्ज़िफ़्तुलबर्ग़न्दी azziftul-barghandí-अ० बर्गुण्डी पिच (Burgundipitch) -इं०।

अज्ज़ाए-सग़ीरह् ajzá-e-saghírah-अ० अवयवों के सूक्ष्मातिसूक्ष्म अंश,अणु-हिं०। मॉलीक्युल्ज़ (Molecules)-इं०।

अज्ज़ेमा ajzemá-अ० अग्ज़ेमा से अरबीकृत शब्द है। नार फ़ारसी, आतशक,जलनदार फुन्सियाँ--उ०। एक्ज़ेमा (Eczema) इं०

अज़्ज़ैबक़ुल क़ीमूलियाई azzaibaqul-qimúliyái-अ० भूरा चूर्ण, ख़ाकी सफ़ूफ़। ग्रे पाउडर (Grey powder)-इं०।

अज्झटाः ajjhatáh-सं० स्त्री०(Phyllanthus niruri, *Linn.*) भुँई आमला, भूम्यामलकी, आम्बरा। भा० पू० १ भा० गु० व०।

अज्झलं ajjhalam-सं० क्ली० १-(A shield) ढाल। २ (A live coal) हड्डी का कोयला।

अज्झलः ajjhalah-सं० पुं० कोकिल, कोइल -हिं०। The black or Indian cuckoo (Cuculus).

अज़्द áazda-अ० (An arm) भुजा, बाहु। सहायक, सहायता करना (Helper).

अज्दअ् ajdaá अ० नकटा, बूचा, वह व्यक्ति जिसकी नासिका कटी हुई हो। नोज़क्लिप्ट (Nose clipt) इं०।

अज़्दरान azdarána-अ० शंखस्थल पर दो रगें हैं जो कर्ण और वाह्य चक्षुकोणके मध्य स्थित हैं।

अज्दार ajdára-अ० (ब० व०), जद्र(ए० व०) दाग़, धब्बे, चिह्न। स्कार्ज़ (Scars) -इं०।

अज़्दिलाम azdiláma-अ० नासिका को मूलसे काट डालना।

अज़्दिवाजिलनब्ज़ azdivájil-nabza-अ० नब्ज़ जितरक़ी। नाड़ीमें एक ही बार दो गतियों (धमक, थपक) की प्रतीति होनी। डाइक्रॉटिज़्म (Dicrotism)-इं०।

अज़्दिवाजिलबस्र azdivájil-basra-अ० एक वस्तु का दो दिखाई देना। डिप्लोपिया (Diplopia)-इं०।

अज़्दिवाजिलहद्ब azdivájil-hadaba-अ० पलक के रोमों का दोहरा अर्थात् दो पंक्तियों में होना। नेत्र में रोमाधिक्य (परबाल) का हो जाना।

अज्न āajna-अ० संघातित करना, ख़मीर करना, सौंदना, सानना, गूँधना-हिं०। निर्बलता के कारण पृथ्वी पर हाथ टेक कर उठना। फर्मेण्ट (Ferment), लीवेन (Leaven)-इं०।

अज्नास ajnása-अ० (ब० व०), जिन्स (ए० व०) जाति-हिं०। Genuses। देखो—जिन्स।

अज्निहह् ajnihah-अ० (ब० व०), जनाह् (ए० व०) शाब्दिक अर्थ पंख,पत्र,पक्षियोंके पंख। छेदन शास्त्र की परिभाषा में पृष्ठ के मुहरों के उस उभार या प्रवर्द्धन को कहते हैं जो उनके दोनों बग़लों पर स्थित होते हैं और जिन पर पशु काओं के शिर जुड़ते हैं। पाश्चात्यकूट, पश्चिम प्रवर्द्धन-हिं०। लेटरल प्रॉसेस (Lateral process)-इं०।

अज्निहह् स़ग़ीरह् ajnihah-saghírah-अ० अजिनहह् कबीरह, वतदी,अस्फ़ीनी। जतूकास्थि, तितली स्वरूपास्थि-हिं०। स्फीनॉइड (Sphenoid)-इं०।

अज़्फ़ azfa-अ० व्रण पूरित होना, घाव भर जाना, क्षत का अंगूर ले आना। ग्रेन्युलेशन (Granulation)-इं०।

अज़्फ़र azfara-अ० साधारणतः उग्रगंध चाहे बुरी हो या अच्छी। विशेषण या संबन्ध द्वारा इसमें भेद किया जाता है अर्थात् इस शब्द का सम्बन्ध यदि किसी अच्छे या सुगन्धित द्रव्य से हो तो इससे कोई उग्र सुगन्धित द्रव्य अभिप्रेत होता है, यथा-मुश्क अज़्फ़र अर्थात् उग्र सुगंधियुक्त कस्तूरी और यदि बुरे और दुर्गन्धि युक्त वस्तु से हो तो उससे अभिप्राय तीव्र दुर्गन्धि होती है।

अज़्फ़ान ajfána (ब०व०), जफ़्न (ए०व०)-अ० पपोटे, पलक। आई लिड्ज़ (Eyelids)-इं०।

अज़्फ़ार azfára-अ० (ब० व०), ज़ुफ़्र (ए० व०) नख चाहे मनुष्य का हो या पशु का। नेल्ज़ (Nails)-इं०।

अज्ब āajba-अ० हुदबतुल्वर्क। कुकुन्दर पिण्ड, नितंबास्थि का वह भाग जो बैठने में पृथ्वी पर लगता है। इस्कियल ट्युबरॉसिटी (Ischial tuberosity)-इं०।

अज़्बत azbata-अ० खेबड़ा, बाँया हाथ, वाम (बाएँ) हस्त से खाने पीने और काम काज करने वाला।

अज़्बह् āazbah-अ० (ए० व०) अज़ब (ब० व०), अज़्बात। जिह्वाग्र, जिह्वा की नोक वा तीव्रता।

अज़्बूतह् āazbútah-अ० घूँस मादा, मूस (A she rat).

अज़्बाद azbáda-अ० झाग निकालना।

अज्म ajma-अ० एक ही प्रकार का भोजन करते करते उकता जाना। इतना अधिक भोजन करना कि क़रीब अजीर्ण के हो। सनक़ और अज्म के भेद को "सनक़" में देखें।

अज़्म azma-अ० निराहार रहना, उपवास करना-हिं०। फ़ास्ट (Fast)-इं०।

अज़्म āazma-अ० (ए० व०), इज़ाम् (ब० व०)। उस्तख़्वाँ-फ़ा०। अस्थि, हड्डी-हिं०। बोन Bone, ऑसिस osis (ए० व०), Bones बोन्ज़, ऑसा ossa (ब० व०)-इं०।

नोट—यह मूल धातुओं अर्थात् अवयवों में से एक कठोर व श्वेत अवयव है जो अपनी कठोरता के कारण दोहरी नहीं हो सकती। यूनानी वैद्यक के अनुसार यह वीर्य से उत्पन्न होती और शरीरका आधार बनती है।

(आयुर्वेद में अस्थि की उत्पत्ति मेद धातु से माना है नकि वीर्य से) विस्तार हेतु देखिए— इज़ाम।

अज़्म अरीज़ äazma-äariza–अ० । चौड़ी अस्थि, कुकुन्दरास्थि, नितंबास्थि, त्रिकास्थि, चूतड़ की हड्डी। सैक्रम (Sacrum)–इं०। देखो–त्रिकास्थि।

अज़्म अस्फ़ञ्जी äazma-asfanji-अ० अज़्म वतदी (स्फ़ीनॉइड) का वह पतला परत जिसमें आरम्भावस्था में इसके दोनों रन्ध्र बन्द रहते हैं। झर्झरास्थि चूड़ा। एथ्मोइडल क्रेस्ट (Ethmoidal crest)–इं०।

अज़्म अस्फ़ञ्जी अअ्ला–äazma–asfanji-aälá–अ० ऊर्ध्वशुक्तिका, ऊर्ध्वसीपाकृति। सुपीरिअर कोञ्चा (Supeior concha), सुपीरिअर टर्बिनेटेड बोन (Superior Turbinated bone)–इं०।

अज़्म अस्फ़ञ्जी अस्फ़ल äazma-asfanji-asfal–अ० अज़्म मशाशी अस्फ़ल, अज़्म मुस्सद्फ़ह् अज़्म-मुल्तवी। उस्तख़्वाँ सद्फ़ी, सीपनुमा हड्डी फ़ा०। अधः सीपाकृति, अधः शुक्तिका–हिं०। इन्फ़ीरिअर कोञ्चा (Inferior concha), इन्फ़ीरियर टर्बिनेटेड बोन (Inferior Turbinated bone) –इं०।

अज़्म अस्फ़ञ्जी मुतवस्सित–äazma–asfanji mutvassit–अ० मध्य सीपाकृति, मध्यशुक्तिका-हिं०। मिडिल कोञ्चा (middle concha), मिडिल टर्बिनेटेड बोन (Middle Turbinated bone)-इं०।

अज़्मक़मह् दुवह azma-qamah-duvah–अ० (Occipital bone) अल्मुवख़्ख़िरी, अज़्ममुवख़्ख़र रास। उस्तख़ाने क़फ़ा–फ़ा०। गुद्दी की हड्डी, शिर की पिछली हड्डी, पश्चात् कपालास्थि–हिं०।

अज़्म क़ाइदतुद्दिमाग़ äazma-qáäidatu-ddimágh-अ० मस्तिष्क तलास्थि, जतूकास्थि -हिं०। देखो–अज़्म वतदी। (Sphenoid bone)।

अज़्म क़ासिमुल् अन्फ़ äazma-qásimul-anfa–अ० उस्तख़्वाँ परदहे-बीनी-फ़ा०। नासाफलकास्थि–हिं०। वोमर (Vomer), ऑस वोमर (os vomer) इं०।

अज़्म कुर्सनी äazma-kursaní–अल्वली -अ०। वर्त्तुलक, मटराकार, गोलाकार–हिं०। पिसीफॉर्म (Pisiform)-इं०।

अज़्म ख़ञ्जरी äazma-khanjarí–अ० ग़ज़रूफ़ ख़ञ्जरी, ग़ज़रूफ़ सैफ़ी उस्तख़्वाँ, ख़ञ्जरी -फ़ा०। ख़ञ्जरनुमा हड्डी-उ०। वज्रास्थि, दात्रवत, फणधर–हिं०। अन्सिफॉर्म(Unciform), हैमेट बोन (Hamate bone)-इं०।

अज़्म नर्दी äazma-nardí-अ० अन्नर्दी। नर्दनुमा हड्डी–उ०। घनास्थि–हिं०। क्युबॉइड (Cuboid)-इं०।

अज़्म मशाशी äazma-mashâshi-अ० अज़्म अस्फ़ञ्जी। झर्झरास्थि चूड़ा हिं०। एथमॉइडल क्रेस्ट (Ethmoidal crest) –इं०। देखो–इज़ाम मशाशियह् तथा अज़्म अस्फ़ञ्जी अस्फ़ल इत्यादि।

अज़्म मुइय्नी äazma-muäiyní अल्मुरब्बअ्उल् मुन्हरिफ़-अ०। विषमकोण चतुर्भुजास्थि –हिं०। यह उक्त स्वरूप की अस्थि पहुँचे की संधि की दूसरी पंक्ति की अस्थि और संधि की वाह्य ओर स्थित है। ट्रेपीज़िअम् (Trapezium)-इं०।

अज़्म मुक़द्दम रास äazma-muqaddam-rās–अ० ललाटास्थि–हिं०। फ्रॉण्टल बोन (Frontal bane)-इं०। देखो–अज़्मुल् जब्हह्।

अज़्म मुवख़्ख़र रास-äazma-muvakhkh-ar-rása–अ० पश्चात् कपालम्; पश्चात् कपालास्थि, गुद्दी की हड्डी–हिं०। ऑक्सीपीटल बोन (Occipital bone)–इं०। देखो–अज़्म क़मह् दुवह।

अज़्म मुवख़्ख़री äazma-muvakhkharí –अ० पश्चात् कपालास्थि, गुद्दी की हड्डी –हिं०। ऑक्सीपीटल बोन (Occipital bone)-इं०। देखो- अज़्म क़मह् दुवह।

अज़्म रिकाबी āazma-rikábí-अ० अरिकाब। रकाबास्थि-हिं०। स्टेपस (Stapes)-इं०

अज़्म ला-इस्म लह āazma-láism-lah अ० उस्तख़्वाँ बेनाम। बेनाम, हड्डी-फ़ा०। अ (-बे-) नामास्थि-हिं०। ऑस इन्नॉमिनेटम् (Os innominatum)-इं०।

नोट—इस अस्थि में यह तीन भाग होते हैं-अर्थात् (१) अज़्मुल्ख़सरह, (२) अज़्मुल्-वरिक, (३) अज़्मुल् आनह जिनको यथास्थान देखिए।

अज़्म लामी āazma-lámí-अ० अज़्मुल्लसान। उस्तख़्वाने ज़ुबान फ़ा०। ज़ुबान की हड्डी, यह हड्डी युनानी अक्षर लामकी सी होती है और कंठाग्र जिह्वामूल में स्थित है। कण्ठिक स्थि-हिं०। ऑस हॉइड (Os hyoid)-इं०।

अज़्म वतदी āazma-vatadí-अ० अज़्मुल् वतद। उस्तख़्वाने क़ाइदतुद्दिमाग़-फ़ा०। करोटि तलास्थि। जतूकास्थि-हिं०। स्फ़ीनॉइड बोन (Spheroid bone)-इं०।

अज़्म शबियहबिलमइय्नी āazma-shabiyha-bilmaāiyní-अ० अलशबियह बिल्मुन्हरिफ़। ट्रैपीज़ॉइड (Trapezoid)-इं०।

अज़्म सिन्दानी āazma-sindání-अ० अस्सिन्दान। नेहाई, कर्णान्तरस्थ शूर्मिकास्थि-हिं०। इन्कस (Incus) इं०।

अज्मह ajmah-अ० नैज़ार, नेस्ताँ-फ़ा०। दलदल, फँसाव-हिं०। मार्श (Marsh)-इं०

अज़्मा āazmá-अ० मापभेद। यह सात ऑक़ियह या उनतीस तोला ८ मा० २ रत्ती (२६ तो० ८ मा० २ र०) के बराबर होता है। A measurement equal to 29 tolas, 8mashas & 2ratis.

अज्माअ् āajmáa-अ० बहीमह, चौपायह-उ०। वह स्त्री जो शुद्ध बात न कर सके, गूँगी या हकली स्त्री-हिं०।

अज़्मान āazmána-अ० (अज़्म का द्विवचन) दो अस्थियाँ, किसी स्थानकी दो अस्थियाँ। अस्थ्छेदशास्त्र की परिभाषा में यह शब्द ऐसे स्थान पर बोला जाता है जहाँ एक समान दो अस्थियाँ पाई जाती हैं। उदाहरणार्थ - अज़्मा उल्अन्फ़ अर्थात् नासिका की दो अस्थियाँ और अज़्मा उल्हनक अर्थात् तालू की दो अस्थियाँ इत्यादि।

अज़्मिदह azmidah-अ० (ब० व०), ज़मादू (ए० व०) लेप, अनुलेप-हिं०। पेस्ट Paste-इं०।

अज़्मुज़्ज़ौरक़ी āazmuzzouraqí-अ० अज़्ज़ौरक़ी। नौकाकृति-हिं०। स्केफ़ॉइड (Scaphoid)-इं०।

अज़्मुज़्ज़ौज azmuzzouja-अज़्मुस्सुद्ग़-अ० उस्तख़्वाँ बिनागोश-फ़ा०। शंखास्थि-हिं०। टेम्पोरल बोन (Temporal bone)-इं०। देखो-अज़्मुस्सुद्ग़।

अज़्मुत्तर्क़ुवह-āazmuttarquvah-अत्तर्क़ुवह-अ० उस्तख़्वाँ चम्बरहे गर्दन फ़ा०। अक्षकास्थि, हँसली की हड्डी। यह संख्यामें दो होती हैं जो वक्ष के ऊपर ग्रीवामूल में स्थित हैं। क्लैविकल (Clavicle)-इं०।

अज़्मुद्दमआ āazmuddamā-अ० अज़्मुल्माक़, अज़्म ज़ुफ़री। उस्तख़्वाँ गोशहे-चश्म, उस्तख़्वाने मरश्क-फ़ा०। अश्रुअस्थि, आँसू की हड्डी, जो अन्तरीय चक्षुकोण में नख के बराबर होती है। लैक्रिमल (Lacrimal)-इं०।

अज़्मुर्रज़फ़ह āazmurrazfah अ० अज़्मुर्रुक्बह। उस्तख़्वाने ज़ानू-फ़ा०। पाली, जान्वस्थि-हिं०। पैटला (Patella) इं०।

अज़्मुलअक़्ब āazmul-āaqba-अलअक़्ब-अ०। उस्तख़्वाने पाश्नह-फ़ा०। पार्ष्णयस्थि, पार्ष्णि, एड़ी, कूर्च-हिं०। कैलकेनियम (Calcaneum), ऑस कैल्सिस (Os calcis), हील (Heel)-इं०।

अज़्मुलअजुज़ āazmul-āajuz-अ० अज़्मुल् अज्ब, अज़्मुल् अरीज़, अलअजुज़। उस्तख़्वाने सुरीन फ़ा०। त्रिकास्थि-हिं०। सैक्रम (Sacrum)-इं०।

अज़्मुलअन्फ़ āazmul-anfa-अ० उस्तख़्वाने-बीनी-फ़ा०। नासास्थि-हिं०। नेज़ल बोन (Nasal bone)-इं०।

अज़्मुल् अज़ुद āazmul-āazuda–अ० उस्तख़्वाने बाज़ू फ़ा० । प्रगण्डास्थि,बाहु–हिं० । आर्म (Arm), ह्युमरस (Humerus) –इं० ।

अज़्मुल् आनह् āazmul-āānah–अ० भगास्थि, पेड़ू की हड्डी–हिं० । ऑस प्युबिस (Os pubis)–इं० ।

अज़्मुल् उस् उस् āazmul-āuṣāuṣ–अ० अलउस् उस् । उस्तख़्वाने दुम–फ़ा० । दुम्ची की हड्डी–उ० । गुदास्थि, पुच्छास्थि, चञ्चवस्थि –हिं० । कॉक्सिक्स् (Coccyx)–इं० ।

अज़्मुलकअ्ब āazmul-kaāba–अ० अलकुअ़ूई । उस्तख़्वाने बुजूल–फ़ा० । टखनेकी हड्डी –हिं० । अस्ट्रागेलस (astragalus)–इं० ।

अज़्मुल् कतिफ़ āazmul-katif–अ० अल्लोह । उस्तख़्वाने शानह्–फ़ा० । स्कंधास्थि, अंसफलक–हिं० । स्कैपुला (Scapula)–इं० ।

अज़्मुल् क़मह् दुव्वह āazmul-qamah-duvvah–अलमुवख़्ख़री, अज़्म मुवख़्ख़र रास –अ० । उस्तख़्वाने क़फ़ा–फ़ा० । पश्चात् कपालास्थि, पश्चात् कपालम्–हिं० । ऑक्सीपीटल बोन (Occipital bone)–इं० ।

अज़्मुल् क़स् स āazmul-qassa–अ० उस्तख़्वाने सीनह्–फ़ा० । वक्षोऽस्थि, उरोऽस्थि, उरःफलकम्–हिं० । स्टर्नम (Sternum)–इं० ।

अज़्मुल् क़िह् फ़ āazmul-qihfa–अ० अज़्मुलयाफ़ोख़, अलजिदारी । उस्तख़्वाने कासहे सर–फ़ा० । पार्श्विकास्थि,पार्श्विक कपालम्–हिं० । पेराइटल बोन (Parietal-bone)–इं० ।

अज़्मुल् जन्ब āazmul-janba–अ० शंखास्थि–हिं० । देखो-अज़्मुस्सुद्ग । (Temporal bone).

अज़्मुल् जब्हह् āazmul-jabhah–अ० अलजब्ही, अज़्म मुक़द्दम रास । उस्तख़्वाने पेशानी –फ़ा० । ललाटास्थि–हिं० । फ्रॉण्टल बोन (Frontal bone)–इं० ।

अज़्मुल् फ़ख़िज़ āazmul-fakhiz–अ० अलफ़ख़्ज़ । उस्तख़्वाने रान–फ़ा० । उर्वस्थि –हिं० । फ़ीमर (Femur)–इं० ।

अज़्मुल् फ़ाइक़ āazmul-fáiqa–अ० देखो–अज़्म लामी । कंठिकास्थि–हिं० । (Os-hyoid.)

अज़्मुल् मशाशियुल अस्फल āazmul-mashāshiyul-asfal–अ० अलक़रीनुल् अस्फ़ल,अज़्म अस्फ़जी अस्फ़ल । सीपानुमा हड्डी –उ० । अधः शुक्तिका, अधः सीपाकृति–हिं० । इन्फ़ीरिअर टर्बिनेटेड बोन (Inferior Turbinated bone)–इं० ।

अज़्मुल् माक़ āazmul-máqa–अ० उस्तख़्वाने गोशहे चश्म –फ़ा० । देखो—अज़्मुद्दम्अ । अश्रवस्थि–हिं० । (Lacrimal.)

अज़्मुल् मित्रक़ी āazmul-mitraqí–अ० अलमित्रक़ह् । मुद्गरास्थि–हिं० । मालिअस (Malleus)–इं० ।

अज़्मुल् मिस्फ़ात āazmul-misfáta–अ० अज़्म मशाशी । छलनीनुमा हड्डी–उ० । झर्झरास्थि, बहुछिद्रास्थि–हिं० । इथ्मॉइड बोन (Ethmoid bone)–इं० ।

अज़्मुल् याफ़ूख़ āazmul-yáfúkha–अ० तालुवस्थि, पार्श्विकास्थि–हिं० । देखो—अज़्मुल क़िह् फ़ । (Parietal bone.)

अज़्मुलवजनह् āazmul-vajnah–अ० उस्तख़्वाने रुख़्सार–फ़ा० । कपोलास्थि–हिं० । (Cheek bone).

अज़्मुल् वतीरह āazmul-vatírah–अ० अज़्म क़ासिमुल् अन्फ़, अलमेकअ्बह । नासाफलकास्थि, नासावंश–हिं० । ऑस वमर (Os vomer), वूमर (Vomer) –इं० ।

अज़्मुल् वरिक āazmul varika–अ० उस्तख़्वाने निशिस्तगाह–फ़ा० । कुकुन्दरास्थि –हिं० । ऑस इस्कियम (Os ischium), इस्किअल बोन (Ischial bone)–इं० ।

अज़्मुल् हजबह āazmul-hajabah–अ० सर उस्तख़्वाने निशिस्तगाह–फ़ा० । कुकुन्दरपिण्ड–हिं० । इस्किअल ट्युबरॉसिटी (Ischial tuberosity)–इं० ।

अज़्मुल् हज्री āazmul-ḥajrí-**अ०** उस्तख़ाने मज़्री-फ़ा० । अश्मास्थि, **अश्मकूट-हिं०** । पेट्रोसल बोन (Petrosal bone), पेट्रस प्रॉसेस (Petrous process)-**इं०** ।

अज़्मुल हनक āazmul-ḥanaka-**अ०** उस्तख़ाने काम-फ़ा० । **तालव्वस्थि-हिं०** । पैलेट बोन(Palate bone)-**इं०** ।

अज़्मुल् हर्क़फ़ह् āazmul-ḥarqafah-**अ०** अज़्मुल् ख़ासिरह् । उस्तख़ाने तिहीगाह-फ़ा० । जघनास्थि, **नितम्बास्थि-हिं०** । **इलिअम्** (Ilium), **इलिअक बोन** (Iliac bone), **ऑस काक्सी** (Os coxæ)-**इं०**

अज़्मुश्शसी āazmushshasí-**अ०** अल्कलाबी, असि॒ मनारी । फणधर, **वक्रास्थि**, दात्रवत हिं० । अंग्सिफ़ॉर्म (Unciform), हेमेटबोन (Hamate bone)-**इं०** ।

अज़्मुस्सद्फ़ह् āazmuṣṣadfah-**अ० अधः** **शुक्तिका-हिं०** । देखो-**अज़्म अस्फ़र्अ अस्फ़ल** (Inferior turbinated bone).

अज़्मुस्सफ़ीनी āazmussafíni-**अ०** अल्ज़र्मी । कलाई की **नौकाकृति अस्थि** । क्युनिआईफ़ॉर्म (Cuneiform)-**इं०** ।

अज़्मुस्सफ़ीनियुल्इन्सी āazmussafíniyu-l-insí-**अ०** अल्अस्सफ़ीनियुलअव्वल । **अन्तः** त्रिपार्श्विक-हिं० ।
इण्टर्नल क्युनिआईफ़ॉर्म (Internal cuneiform)-**इं०** ।

अज़्मुस्सफ़ीनिय्युल्वस्ती āazmussafíniy-yul-vastí-अल्अस्सफ़ीनियुल् सानी-**अ०** । मध्यत्रिपार्श्विक-हिं० । मिड्ल क्युनिआईफ़ॉर्म (Middle cuneiform)-**इं०** ।

अज़्मुस्सफ़ीनिय्युल्वह्शी āazmussafíni-yyul-vaḥshí-**अ०** अल्अस्सफ़ीनियुल् सालस । बहिः **त्रिपार्श्विक-हिं०** ।
एक्सटर्नल क्युनिआईफ़ॉर्म (External cuneiform)-**इं०** ।

अज़्मुस्सबक़ āazmussabaqa-**अ०** अरत, पर जो घोड़े व गदहे के खुरों से ऊपर होते हैं ।

अज़्मुस्सिनारी āazmuṣṣinárí-**अ०** देखो—**अज़्मुश्शसी** । **वक्रास्थि-हिं०** । (Unciform).

अज़्मुस्सुद्ग āazmuṣṣudgha-**अ०** अ॒र सुद्‌ग़ी, अज़्मुल्जन्ब । उस्तख़ाने-बिना-गोश-**फ़ा०** । **शंखास्थि-हिं०** । (Temporal-bone)

अज़्मे कबीर āazme-kabíra-**अ० पहुँचे** (कलाई) की बड़ी हड्डी ।
ऑस मैग्नम (Os magnum)-**इं०** ।

अज़्य azya-**अ०** अज़ीय्यत । **दुःख, क्लेश-हिं०** । इञ्जुरी (Injury)-**इं०** ।

अज़्रक़ azraqa-**अ०** ज़ुर्क़म, ज़रका (स्त्री०) । बिलाव जैसी चक्षुओं वाली-हिं० । गुर्बह् चश्म-फ़ा० ।

अज्रद ajrada-**अ०** जिसके सिर पर बाल न हों, गञ्जा, चन्दला, खालित्थी-हिं० । बैल्ड (Bald) -**इं०** ।

अज्रब ajraba-**अ०** जर्ब अर्थात् तर खाज (**कण्डु**) का रोगी । स्केबी (Scaby)-**इं०** ।

अज्रम āajrama-**अ०** बीख़ ज़कर-फ़ा० । **शिश्नमूल-हिं०** । रूट ऑफ़ दी पेनिस (Root of the Penis)-**इं०** ।

अज़्रा āazrá-**अ०** बिक्र,दोशीज़ह्, कुँवारी लड़की-उ० । कुमारी, कुँवारी, अक्षतयोनि, अविवाहिता -**हिं०** । वर्जिन (Virgin),मेडन (Maiden)-**इं०** ।

अज़्रार लह्मिय्यह azrára-laḥmiyyah-**अ०** ज़ख़्मके अङ्कुर-उ० । ग्रेन्युलेशन (Granulation)-**इं०** । व्रणाङ्कुर ।

अज़्रास azrása-**अ०** (ब० व०), ज़िर्स (ए० व०) हन्वस्थि-हिं० । मोलर्ज़ (Molars) -**इं०** ।

अज़्रास ख़ुमासियह् azrása-khumá-siyah-**अ०** पञ्च उभार युक्त सिरे की दाढ़ें ।

अज़्रास रुबाइयह् azrása-rubááiyah-**अ०** चार उभार युक्त सिरे की दाढ़ें ।

अज़्रास सु॒नाइयह् azrása-sunáiyah -**अ०** द्वि उभार युक्त सिरे की दाढ़ें ।

अज़्रास सु॒लासि॒यह् azrása- sulási-yah-**अ०** तीन उभार युक्त सिरे की दाढ़ें

अर्थात् वे जिनके बाह्य सिरे पर जरा जरा सी तीन उभारें होती हैं ।

अज़्रासुल्हुल्म azrásulhulma–अ० अक़्ल दन्त, बुद्धि दन्त–हिं० । अक़्ल दाढ़ें अर्थात् अंतिम की चार दाढ़ें जो युवावस्था (बालिगावस्था) पश्चात् से पचीस वर्ष तक के काल में निकलती हैं ।

अज्ल ajla–अ० (ए० व०), आजाल (ब० व०) मुद्दत, उम्र, मौत–उ० । काल, अवस्था, मृत्यु–हिं० । डेथ (Death), मॉर्टिफ़िकेशन (Mortification) इं० ।

अज्ल अत्वल ajla-atvala–अ० लम्बी मौत, वह मृत्यु जो सब से बड़ी अवस्था अर्थात् १२० वर्ष की अवस्था में आए ।

अज्ल आर्ज़ी ajla-áarzí–अ० अज्ल इख़्तरामी । अस्वाभाविक मृत्यु, अप्राकृतिक मृत्यु, अचानक मृत्यु–हिं० । सडन डेथ (Sudden death) –इं० ।

अज्ल इख़्तरामी ajla-ikhtarámí–अ० देखो– अज्ल आर्ज़ी । अचानक मृत्यु, आकस्मिक मृत्यु–हिं० । (Sudden death)

अज्लज् ajlaj–अ० जिसके शिर के दोनों बग़ल के रोम गिर गए हों ।

अज्ल तबीई ajla-tabíáí–अ० तबई मौत, बुढ़ापे की मौत–उ० । प्राकृतिक या स्वाभाविक मृत्यु अर्थात् वृद्धावस्था के कारण होने वाली मृत्यु । नेचरल डेथ (Natural death) –इं० ।

अज़्लाअ azláá–अ० (ब० व०), ज़िलअ (ए० व०) पसलियाँ–उ० । पशुकाएँ–हिं० । रिब्ज़ (Ribs)–इं० ।

अज़्लाअ हक़ीक़िय्यह् azláá haqíqiyyah –अ० अज़्लाअ ख़ालसह्, अज़्लाअ सादिक़ह्, अज़्लाउ़स्सद्र, अज़्लाअ मक़्फ़ूलह् । सच्ची पसलियाँ–हिं० । ट्रू रिब्ज़ (True ribs), स्टर्नल रिब्ज़ (Sternal Ribs)–इं० ।

अज़्लाउल् ख़ुल्फ़ azláául-khulf–अ० अज़्लाउश्शोर, अज़्लाअ काज़िब । झूठी पसलियाँ, आज़ाद पसलियाँ–उ० । फ़ाल्स रिब्ज़ (False Ribs), फ़्लोटिङ्ग रिब्ज़ (Floating Ribs), ऐब्डॉमिनल रिब्ज़ (Abdominal Ribs) और वर्टिब्रोकॉण्ड्रल रिब्ज़ (Vertebrochondral Ribs)–इं० ।

अज़्लात áazlát–अ० (ब० व०), अज़्लह् (ए० व०) देखो–अज़्लह् ।

अज्वाफ़ ajváf–अ० (ब० व०), जौफ़ (ए० व०) गढ़े, पोल–उ० । नालियाँ, कोष्ठ –हिं० । बेलीज़ (Bellies)–इं० ।

अज़्वाज azváj–अ० (ब० व०), ज़ौज (ए० व०) जोड़े, नाड़ियोंके जोड़े, युगल, युग्म–हिं० ।

अज्सम ajsam–अ० जसीम, बदीन, समीन, मोटा, चाक़–उ० । स्थूल, मेदावी, बृंहित–हिं० । कॉर्पुलेण्ट (Corpulent)–इं० ।

अज्साद ajsád–अ० (ब० व०), जस्द या जसद (ए० व०) १–बदन–उ० । शरीर, वस्तु–हिं० । बॉडीज़ (Bodies)–इं० । २–धातु (Metals)

अज्साम तुवामिय्यह् अर्बअह् ajsám-tuvámiyyah-arbaáah)–अ० अज्साम अर्बअह् । चार जुड़े हुए छोटे छोटे उभार जो वृहत् मस्तिष्क में पाए जाते हैं । कॉर्पोरा क्वाड्रिजैमिना (Corpora Quadrigemina.)–इं० ।

अज्साम दसिमह ajsáma dasimah–अ० वसा वा तैलीय पदार्थ, यथा—तैल, वसा (चर्बी) वा मलहम प्रभृति । फैट्स (Fats), ऑइली सब्सटैन्सेज़ (Oily substances)–इं० ।

अज्साम मुज़ल्लअह् ajsáma-muzallaáah–अ० अज्साम मुख़त्तत़ह् । रेखांकित प्रबद्धन धारीदार उभार–हिं० । कॉर्पस स्ट्राइटम (Corpus striatum)–इं० ।

अज्साम शअरिय्यह् ajsáma-shaáriyyah –अ० लोमश या रोमयुक्त सेलें । सिलिएटेड सेल्ज़ (Ciliated cells)–इं० ।

अज़्हान azhána–अ० (ब० व०), ज़िह्न (ए० व०) बुद्धि, समझ, स्मरणशक्ति ।

अभिञ्जी ajhinjí–ता० }
अभिञ्जीमरम् ajhinjí-maram–ता० }

ढेरा, अङ्कोल (Alangium Decapetalum, *Lam.*)

अञ्चकम् anchakam–सं० क्ली० नेत्र, चक्षु, आँख। ऐन-अ०। चश्म-फ़ा०। आई (Eye) --इं०। गा० नि० व० १८।

अञ्चञ्चक anchanchak--अञ्जकक। Pyrus communis (seeds of–) फा० इं० १ भा०।

अञ्चित anchita-हिं० वि० (Bent; curved) झुका हुआ, तिर्छा, टेढ़ा।

अञ्चुसा anchusá-यु०, रू० अञ्जुसा। दम्मुल-अख़्वैन, ख़ूनाख़राबा, विजयसार निर्यास। फा० इं० २ भा०।

अञ्चू anchú--नैपा०, हिमा०, प्रसिद्ध। कलहेर, कलहिसरा (-री)--गढ़०, हिं०। फ्यु फ्लावर्ड रैस्पबेरी (Few flowered raspberry) --इं०। रुबुस पॉसीफ्लोरस (Rubus pauciflorus), रु० वैलिकियाई (R. wallichii)--लें०। इं० मे० मे०। इं० हैं० गा०।

गुलाब वर्ग

(*N. O. Rosaceæ*)

उत्पत्ति स्थान—नैपाल, हिमवती-पर्वतश्रेणी तथा उत्तरी पश्चिमी भारत। ब्रिटेनमें यह जंगली पौधों की तरह बहुतायत से होता है।

वानस्पतिक विवरण—यह एक झाड़ी है जिसका तना सीधा होता है और जिसमें असंख्य सूक्ष्म मृदु कण्टक लगे होते हैं। पत्र गुलाब के समान और कोंपल बदामी रंग के मखमली जो देखने में अत्यन्त मनोहर प्रतीत होते हैं। पुष्प अत्यन्त सूक्ष्म श्वेत और गुच्छे में आते हैं। फल गोल और रक्त, पीत एवं श्वेत वर्ण के तथा रस से परिपूर्ण होते हैं। फलका ऊपरी धरातल सूक्ष्म मृदु गोलाकार दानों से युक्त होता है। फूल गुच्छों में अथवा अकेले होते हैं। रस मधुराम्ल और सुस्वादु होता है। बीज अत्यन्त सूक्ष्म और गोल होते हैं। चैत में यह पुष्पित होता है तथा आषाढ़, श्रावण में इसमें पक्व फल प्राप्त होते हैं। पीले फलवाले को गढ़वाल में पांडा कहते हैं।

रासायनिक संगठन—एक उड़नशील तैल, शर्करा, पैक्टिन (Pectin) नीबू और सेव के तेज़ाब (Citric and malic acids), खनिज तथा रञ्जक पदार्थ, कुछ खनिज लवण और जल।

गुणधर्म—यह ज्वरतापशामक है। ताज़े होने पर यह केसरी (Strawberry) के अतिरिक्त किसी भी अन्य फलकी अपेक्षा तृष्णा शमन हेतु श्रेष्ठतर है। इसको अकेले खाने से आमाशय में अम्लीय संधानोद्भूत होने की आशंका नहीं रहती। इसका अचार अथवा मुरब्बा सर्वोत्तम पदार्थ है। अञ्चू के पत्ते का शीत कषाय तीव्र आंत्रशैथिल्य, प्रवाहिका, विसूचिका, शिशुव्याधि तथा उत्तापव्यथा और आमाशय द्वारा रक्तस्राव में उत्तम औषध है। इं० मे० मे०।

अञ्ज áanza--अ० बकरी--हिं०। (She-goat)

अञ्जअ anzaá--अ० जिसके ललाट के दोनों बगल से रोम जाते रहे हों।

अञ्जकक anjakak }
अञ्जुकक anjukak } —फ़ा० कुनुंम हिन्दी।

(ये जङ्गली अमरूद के बीज हैं जिनका छिलका श्यामवर्ण का होता है। ये बिहीदाना से किसी भाँति बड़े और उसके सदृश त्रिकोणाकार होते हैं। इनके भीतर से श्वेत गूदा निकलता है)। फा० इं० १ भा०। Anjukak, Pyrus communis (seeds of–)

अञ्जद áanjad--अ० मुनक्का के बीज (तुख़्म मवेज़) अथवा फलों के दाने।

अञ्जदान anjadán–अ०क्रि० यह अञ्जदान से अरबी बनाया हुआ शब्द है जिसका अर्थ अञ्ज का दाना अर्थात् बीज है। इस वृक्ष के गोंद को हींग कहते हैं। इसी कारण हींग का फ़ारसी नाम अञ्जुद अर्थात् अञ्जका गोंद है। इसके मूल (बीख़ अञ्जदान) को अरबी में मजरूम् और ऊदुद्दर्क़ह् कहते हैं। इसका बीज किसी किसी के विचार से काशम है।

नोट—अञ्जदान का वृक्ष काशम वृक्ष के समान होता है तथा यह ख़ुरासान, आर्मीनिया और भारतवर्ष के पर्वतों में उत्पन्न होता है।

फेरयुला फीटीडा (Ferula Fœtida, *Regel.*)--लें० । दी गम रेज़िन (The gum resin)--इं० । फा० इं० २ भा० । देखो-हींग या हिङ्गुः ।

अञ्जदान रूमी anjadána-rúmí-अ०क्रु० सीसालियूस (भापङ्गी); कोई कोई काशम को कहते हैं। (See--Sísáliyús)

अञ्जदान विलायती anjadána-viláyatí -अ०क्रु० अञ्जदान--फा० । हिङ्गु, हींग का वृक्ष । (Ferula Fœtida, *Regel.*)

अञ्जदान स्याह anjadána-siyáh-अ० कमात । हींग वृक्ष, हिङ्गु । फेरयुला फेटिडा (Ferula fœtida, *Regel.*)--लें० ।

अञ्जन anjana--हिं० संज्ञा पुं० (१) वह औषध जो आँख में डाली जाती है। (२) स्रोतांजन सौवीर-सं० । अञ्जन, सुर्मा का पत्थर-हिं० । एण्टिमनी सल्फाइड (Antimony sulphide) -लें० । किर्मीज़ मिनरल (Kermes mineral), ब्लैक एण्टिमनी (Black antimony) इं० । । इं० मे०मे० । देखो- अञ्जनम् (३) भांधुपेरा (गोगडा) । मेमो० । (४)--यर्नो० अञ्जन, याल्की, कुर्प, लोम्बरडी -म० । काशमरम्--ता० । अल्लिचेड्डु--ते० । सुर्मा -कना० । वरीकड़ संस्काय--हिं० । अञ्जना -स० । मेमीसीलोन एडयुली (Memecylon Edule, *Roxb.*)--लें० । आयर्नवुड ट्री (Iron-wood tree)--इं० । मेमीसीलोन कमेस्टिबल (Memecylon comestible)-फ्रें० । फा० इं० । देखो--अञ्जनी । (५) कहुआ, अर्जुन, अर्जुना-हिं० । अर्जुना-बं० । हब्बल-उड़ि० । अर्जुना मं० । वेल्लमरड वेल्लमट्टी-ता० । मद्दी, विल्लीमट्टी-मैं० । एरमद्दी, टेल्लामडु-तै० । तौक्यान-ब० । टर्मिनेलिया अर्जुना (Terminalia Arjuna, *Bedd.*)-लें० । मेमो० । -पं० चरवा, कुमा -उं० प० प्रा० । मेमा० । पं-पेनिमेटम् सिंकोओइडिस ।

अञ्जन anjan-दृष्टी-अञ्जनम् (सुर्मा) । अथ० । सू० ६ । ३ । का० ४ ।

अञ्जनः anjanah-सं० पुं० (A lizard) गृहगोधिका, छिपकली-हिं० । टिकटिकी-बं० । वै० श० । देखो—अंजगा ।

अञ्जनक anjanaka-हिं० पुं० अञ्जनम्, सुर्मा (Antimony).

अञ्जनक्-कल्लु anjanak-kallu-ता० सुर्मा -हिं० । (Antimony sulphide). देखो-अञ्जनम् । स० फा० इं० ।

अञ्जन कर्म्म anjana-karmma-सं० क्लीं० (१) नेत्रप्रसादन (Anointing or making clear) सुर्मा, काजल, आँजन —हिं० । देखो अञ्जनविधि ।

अञ्जन का पत्थर anjana-ká-patthar द० सुर्मा-हिं० । अञ्जनम्-सं० । एण्टिमोनिआई सल्फ्युरेटम Antimonii sulphuretum लें० । सल्फ्युरेट ऑफ़ एण्टिमनी sulphuret of Antimony इं० । स०फा०इं० ।

अञ्जन केशिका anjana-keshiká-सं०स्त्री० }
अञ्जनकेशी anjan-keshí- " }
(१)हनु-हट्टविलासिनी, नखी, नख-सं० । नाखून देव, छोटे नख को कहते हैं-हिं० । नाख़ुन पर्या -फ़ा० । अज़्फ़ारुत्तीब-अ० । Helix ashera हेलिक्स आशरा-लें० । शेल Shell-इं० । (२) नलिका नामक गंध द्रव्य । यह उत्तरी देशों में प्रसिद्ध है। ए वेजिटेबल पर्फ्यूम A vegetable perfume-इं० । भा० पू० १ भ० क० व० । देखो—नख ।

अञ्जन गुटिका anjana-gutiká—सं० स्त्री० (१) सोंठ, मिर्च, पीपर, करंजफल, हल्दी, बिजौरे की जड़, इनकी गोली बना छाया में शुष्क कर नेत्रांजन करने में विशूचिका (हैजा) दूर होती है ।

(२) महुआ पुष्प, श्वेत अपराजिता, अपामार्ग मूल और त्रिकुटा इनकी गोली बना नेत्रांजन करने से विशूचिका दूर होती है ।

(भैष० र० अग्निमां० चि०)

(३) मैनसिल, देवदारु, हल्दी, दारुहल्दी, आमला, हड़, बहेड़ा, सोंठ, मिर्च, पीपल, लाख, लहसुन, मंजीठ, सेंधालवण, इलायची, सोनामाखी, सावर लोध, लौहचूर्ण, ताम्रचूर्ण, काला-

नुसादिया, मुर्ग के अंडे का छिलका, इन्हें समान भाग लेकर स्त्री के दूध में घोटकर गोली बनाएँ । इसका अञ्जन खाज, तिमिर, शुक्रार्म तथा नेत्र की रक्त रेखा को दूर करता है ।

(४) काँसे के पात्र के रगड़ने से उत्पन्न स्याही, मुलैठी, सेंधालवण, तगर, एरंड की जड़ इन्हें बराबर लें, तथा इनमें से एक से द्विगुण बड़ी कटेली मिलाएँ, इनको बकरी के दूध से पीसकर ताम्र पात्र पर लेप करें । इसी तरह सात बार बकरी के दूध में पीस पीस कर उक्त पात्र पर लेप करें और छायामें शुष्क कर वटी बनाएँ । यह अञ्जन नेत्र रोग को दूर करता है ।

(सु० सं० अध्या० १२, नेत्र० रो० चि०)

(५) गेरू १ माशा, सेंधा लवण २ मा० पीपर ३ मा०, तगर ४ मा०, इस प्रकार ले इनमें द्विगुण जल से खरल करें, पुनः गोली बनाकर नेत्रांजन करने से नेत्र रोग दूर होता है ।

(भैष० र० नेत्र रो० चि०)

अञ्जनगुड़िका anjana-guriká-सं० स्त्री० विसूचिका में प्रयुज्य औषध विशेष, यथा–महुआ के पुष्प का रस, चिर्चिटा बीज, अपराजिता मूल, हरिद्रा और त्रिकटु । इनका अञ्जन करना । (च० द० अग्निमांद्य चि०)

अञ्जन ताडनाद्युपायः anjana-táranádyupáyah-सं० पुं० शुद्ध मनुष्य के आचार के नष्ट होजाने पर तीक्ष्ण नस्य, तीक्ष्ण अञ्जन, ताडन तथा मन, बुद्धि, स्मृति इनका संवेदन, ये हित हैं । उन्माद से विस्मृति होजाने पर तर्जन दुःखदेना, सांत्वना, हर्ष, आनन्द, भय दिलाना, विस्मय (आश्चर्यान्वित) मन को प्रकृति में स्थिर करें । काम, शोक, भय, क्रोध आनन्द, ईर्षा तथा लोभ से उत्पन्न उन्माद में परस्पर प्रतिद्वन्द्व क्रिया से शाँत करें । वांछित द्रव्य के नष्ट होने से उत्पन्न उन्माद में तत्तुल्य द्रव्य प्राप्ति, शांति तथा आश्वासन से उसकी शांति करे ।

(चक्र० द० उन्माद चि०)

अञ्जनत्रयम्,-त्रित्रयम् anjana-trayam,-tritrayam-सं० क्लो० कालाञ्जन, स्रोताञ्जन और रसाञ्जन । रा० नि० व० २२"यथा–कालाञ्जन समायुक्तं स्रोतोऽञ्जन रसाञ्जने ।"

अञ्जन दृष्टि प्रसादनी शलाका anjana-drishti-prasádaní-shaláká-सं० स्त्री० शुद्ध सीसे को बारम्बार तपाकर हड़, बहेड़े, आमला, के रस में, घी में, गोमूत्र में, शहद में, तथा बकरी के दूध में बुझाएँ, पश्चात् उक्त सीसे की सलाई बनाकर नेत्रों में फेरें तो नेत्र सम्बन्धी समस्त रोग नष्ट हों ।

(भा० प्र० ख० ने० रो० चि०)

अञ्जन नामिका anjana-námiká-सं० स्त्री० (Stye) नेत्रपक्ष्म में होनेवाले नेत्ररोग का एक भेद । यह रोग रक्तसे उत्पन्न होता है । यह बरौंछियों (नेत्रपक्ष्मों) के मध्यमें अथवा किनारे की तरफ खुजली, दाह और वेदना से युक्त, ताम्र वर्ण की, कठोर, मूँग प्रमाण की फुन्सियाँ होती हैं । इन्हें अञ्जन रोग अथवा अञ्जननामिका कहते हैं । वा० उ० ८ अ० । जो फुन्सी दाह, सुई चुभाने की सी पीड़ा वाली, लाल, कोमल छोटी और मन्द पीड़ा वाली नेत्रके कोये में उत्पन्न होती है उसको अञ्जना (अञ्जनहारी) या अञ्जन नामिका कहते हैं । यह रक्त से उत्पन्न होती है । मा० नि० ।

अञ्जन पत्री anjana-patrí-सं० स्त्री० (१) भंग के पत्ते Cannabis Indica, *Linn.* (Leaves of-) । (२) गाँजा ।

अञ्जन भैरवः anjana-bhairavah-सं० पुं० पारा, लौहभस्म, पीपर, गंधक इन्हें एक एक भाग लें, जमालगोटा के बीज ३ भाग, इन्हें जम्बीरी के रस से अच्छी तरह पीस नेत्रांजन करने से सन्निपातज्वर दूर होता है । भैष० र० ।

अञ्जन माई anjana-mái-ता० सुर्मा । ऐण्टिमोनिआई सल्फ्युरेटम् (Antimonii Sulphuretum.)-ले० । देखो-अञ्जनम् ।

अञ्जन मूलक anjana-múlaka-सं० अठारह प्रकार के मणियों में से एक । यह नीला और काला मिश्रित वर्णका होता है । कौटि० अर्थ० ।

अञ्जनम् anjanam-सं० क्लो० }
अञ्जन anjana-हिं० संज्ञा पुं० } (१)
(anointing, smearing with, mixing) लगाना ।

(२) Collyrium or black pigment used to paint the eye-lashes आँजन,कज्जल,काजल । हि० व० भि० यो० कामला चि०, रक्तपित्त चि० ।

अञ्जन--हल्दी, गेरू, आमलेका चूर्ण इन्हें द्रोणपुष्पी (गूमा) के रस में मिलाकर अञ्जन करने से कामला दूर होता है । यो० त० पाण्डु० चि० ।

शिरिस बीज, पीपल, कालीमिर्च, सेंधा नमक, मैनसिल, लहसुन, वच इन्हें गोमूत्र में पीसकर अञ्जन करने से सन्निपात रोगी चैतन्य होता है । यो० त० ज्वर० चि० । भैष० र० ज्वर० चि० ।

करंज की मींगी, सोंठ, मिर्च, पीपर, बेल की जड़, हल्दी, दारुहल्दी, तुलसी की मंजरी इनको गोमूत्र में पीसकर अञ्जन करने से विषाक्त रोगी जी उठता है । यो० त० विष० चि० ।

जमालगोटे का बीज शुद्ध ४० मासे, सोंठ, मिर्च, पीपर चार चार मासे इन्हें गम्भारी के रस में घोट अञ्जन करने से सन्निपात दूर होता है । शार्ङ्ग० सं० म० ख० १२ अ० श्लो० २१ ।

पीपर, मिर्च, सेंधालवण, शहद, गाय का पित्त, इनका अञ्जन बनाकर नेत्र में आँजने से प्रत्येक भूत दोषों से उत्पन्न उन्माद और महानुन्माद का नाश होता है । भैष० र० उन्माद० चि० ।

त्रिकुटा, हींग, सेंधालवण, वच, कुटकी, सिरस के बीज, करंज के बीज, सफेद सरसों, इनकी बत्ती बनाकर नेत्राञ्जन करने से अपस्मार, चातुर्थिक ज्वर, और उन्माद दूर होता है। च० द० उन्माद० चि० ।

तगर, मिर्च, जटामांसी, शिलारस इन्हें समान भाग ले, सर्वतुल्य मैनशिल, पत्रज ४ भाग(तगरकादि से चौगुने)तथा सबसे द्विगुण शुद्ध सुर्मा, और उतनी ही मुलहठी लेकर बारीक पीस अञ्जन बनाएँ । सु० सं० उ० अ० १२ ।

हल्दी, दारुहल्दी, मुलेठी, दाख, देवदारु, इन्हें समान भाग ले बकरी के दूध से अञ्जन करने से अभिष्यन्द दूर होता है । भै० र० ।

(३) A cosmetic ointment कान्ति जनक प्रलेप, वर्ण्यलेपन ।

(४) Ink रोशनाई ।

(५) Night रात्रि, रात ।

(६) Fire अग्नि, आग ।

(७)स्रोतोऽञ्जन । भा० । सु० चि० २५ अ० ।

(८)रसाञ्जन । च० द० अ० सा० चि० प्रियङ्ग्वादि । रक्त पित्त-चि० । च० ३ अ० प्रदेहपङ्के । स्तम्भन योगेच । भा० बाल चि० ।

(९) सौवीराञ्जन वा० सू० १५ अ० अञ्जनादि । सु० सू० ३८ अ० । देखो–अञ्जन-विधि ।

(१०) सुर्मा धातु विशेष । यह आभा प्रभायुक्त एक श्वेत धातुतत्व है । यह कठोर होता तथा तोड़नेसे टूटजाता है, और सरलतापूर्वक चूर्ण किया जा सकता है । इसका रासायनिक सङ्केत अञ्ज० (Sb.)तथा परमाणु-भार १२० है और आपेक्षिक गुरुत्व ६·७ है । यह ६३०° शतांश की उत्ताप पर गल जाता और चमकीले रक्तताप पर वाष्पीभूत हो जाता है ।

सामान्य तापक्रम पर वायु तथा आर्द्रता का अञ्जन पर कुछ भी प्रभाव नहीं होता । वायु में उत्ताप पहुँचाने पर यह हरिताभायुक्त नीले रंग के लौ में जलने लगता है ।

प्रकृति में अंजन स्वतन्त्र या शुद्ध रूप में नहीं मिलता; अपितु गन्धक के साथ मिला हुआ स्रोताञ्जन या सुर्मा रूप में पाया जाता है । यह प्रायः सोमलिका, निकिलम् और रजतम् धातु के साथ मिला हुआ यौगिक रूप में भी पाया जाता है । विशेष रासायनिक विधि द्वारा इसे अन्य धातुओं से भिन्न कर लेते हैं ।

इसके पर्याय—अञ्जनम् (अञ्जनक)—सं०, हि० । इस्मद, हज्रुल् कोहल, अस्मीमूनुल् मादनी --अ० । अन्तीमून, संगेसुर्मह्--फ़ा० । ऐण्टिमोनियम् (Antimonium), स्टीबिअम् (Stibium)--ले० । ऐण्टिमनी (Antimony)--इं०

नाम विवरण—ऐण्टिमोनियम् यौगिक शब्द

है (एण्टि=विपरीत + मोनाक्स = उपदेष्टा, सन्यासी) जिसका अर्थ सन्यासी या साधु के विपरीत अर्थात् नष्ट करनेवाला है। कहा जाता है कि सन् १७६० ई० में वालण्टेन नामी एक रासायनिक ने, जिसने कि सर्व प्रथम उक्त शुद्ध धातु के असली गुण-धर्म का वर्णन किया, इसके औषधीय गुणधर्म दर्याफ्त करने के लिए इसे कुछ सन्यासियों को खिलाया। फलतः वे सब के सब इस विष द्वारा मरणासन्न हो गए। इसी कारण इसका नाम एण्टिमोनियम पड़ गया।

इतिहास—उपर्युक्त वर्णनानुसार स्रोताञ्जन अर्थात् सुर्मा रूप से यह औषध प्राचीन वैदिक काल से, यूनानी व रूमी चिकित्सकों को मालूम थी। अस्तु, हकीम दीस्कूरीदूस (Dioscorides) यूनानीने स्टीमी नाम से तथा हकीम वर्लीनास रूमी ने स्टीबियम् नामसे इसका वर्णन किया है। इन दोनों ने इसको शोधक (एवेकेण्ट) अर्थात् वामक तथा रेचक लिखा है और अवनक प्रायः चिकित्सक इनके अनुयायी हैं। परन्तु, हकीम बुक़रात व हकीम जालीनूस ने इसमें संग्राही तथा मुक़त्ता (काटने छाँटने वाले) गुण की विद्यमानता का भी वर्णन किया, पर उन्होंने इसका वाह्यरूप से ही उपयोग किया था।

प्राचीन चिकित्सक इस धातु को प्रकृति में पाया जाने वाला यौगिक सुर्मा रूप से उपयोग में लाते थे। उनका यह विचार था कि सुर्मा (अंजन गन्धिद) गन्धक और पारद का यौगिक है और किसी किसी का यह विचार था कि यह गन्धक और सीसा का यौगिक है। इससे स्पष्ट है कि उनको अंजनम् धातु के मौलिक रूप का ज्ञान न था। शेखुर्रईस ने इसे मृत सीसा का जौहर लिखा है। जिसका कारण आगे वर्णित होगा।

प्रायः प्राचीन भारतीय आयुर्वेदिक चिकित्सा एवं रसशास्त्रों में सभी जगह सुर्मा के विविध प्रयोगों का वर्णन आया है। वे इसके गुण धर्म एवं वाह्य व आभ्यन्तर उपयोग से भली भाँति परिचित थे। इतना ही नहीं; अपितु, संसार के सब से प्राचीनतम ग्रन्थ वेद (अथ०) में तो इसका पर्याप्त वर्णन उपलब्ध होता है।

नोट—शुद्ध अञ्जनम् धातु (Antimony) औषध रूप से व्यवहार में नहीं आता, किन्तु इसके निम्न लिखित प्रकृति में पाए जाने वाले या रसायनशालामें बनने वाले यौगिक ही औषध रूप से उपयोग में आते हैं।

आयुर्वेद शास्त्र में अञ्जनम् धातु (Antimony) अर्थात् इसके यौगिकों के अतिरिक्त अञ्जन शब्द उन समस्त अर्थों के लिए व्यवहार में आता है जिनका आँजने से सम्बन्ध है। फिर चाहे वे खनिज या वानस्पतिक द्रव्य हों, अथवा प्राणिज। कहा भी है :—

अञ्जनं क्रियते येन तद्द्रव्यं चाञ्जनं स्मृतम्।

अर्थात् जिस द्रव्य से आँजन किया जाय वह अञ्जन कहलाता है। अस्तु, जहाँ इसके भेदों का वर्णन होता है। वहाँ से भी यह बात स्पष्ट होती है। यथा—

सौवीरमञ्जनं प्रोक्तं रसाञ्जन मतः परम्।
स्रोतोऽञ्जनं तदन्यच्च पुष्पाञ्जनकमेव च।
नीलाञ्जनञ्चेति ॥ (रस० दर्प०, वा०)

अर्थात्—सौवीरांजन, रसांजन, स्रोतांजन, पुष्पांजन और नीलाञ्जन प्रभृति पंचविध अंजनों में से रसांजन किसी किसी के मत से पीले चन्दन का गोंद है अथवा पीले चन्दन के काढ़े से बनता है और पीत होता है। यथा—

पीत चन्दन निर्यासं रसांजनमितीरितम्।
तत्क्वाथजं वा भवति पीताभं वक्त्र रोगनुत् ॥

और किसी किसी के मत से दारुहल्दी के काढ़े को बकरी के दूध में मिलाकर औटाकर गाढ़ा करलें। यही रसांजन अर्थात् रसवत् है। यथा—

दार्व्वी क्वाथ समं क्षीरं पादंपक्वा यदा घनम्।
तदा रसांजनाख्यं तन्नेत्रयोः परमं हितम्।
(भा०)

और किसी किसी के विचारानुसार यह कृष्ण-पाषाणाकृति का एक द्रव्य या नीलांजन है। इसे अंग्रेज़ी में गैलेना (Galena) या सल्फेट ऑफ लेड (Sulphate of Lead)कहते हैं। यह गन्धक और सीसा का एक यौगिक है।

और भी कहा है :—

सौवीरं जाम्बलं तुत्थं मयूरं श्रीकरं तथा ।
दर्व्विका मेघनीलश्च अञ्जनानि भवन्ति षट् ॥
(कालिका पुराण)

अर्थात् सौवीर, जाम्बल, मयूरतुत्थ (तूतिया भेद), श्रीकर, दर्व्विका (काजल) और मेघनील (नीलांजन) ये छः प्रकार के अञ्जन कालिका पुराण के रचयिता ने लिखे हैं । इनमें तुत्थ तथा कज्जल अंजनम् (Antimony) से सर्वथा भिन्न वस्तु हैं । इन सब बातों से साफ विदित होता है कि अंजन से उनका अभिप्राय उन समस्त वस्तुओं से था जो नेत्रचिकित्सा में व्यवहृत होती थीं । इनके विभिन्न भेदों का पूर्ण विवेचन यथाक्रम किया जाएगा । यहाँ पर जो कुछ वर्णन होगा वह अंजन (सुरमा) अथवा इसके यौगिकों का ही होगा ।

स्रोतोऽञ्जन अर्थात् सुरमा

सौवीरं, कापोताञ्जनं, यामुनं, नदीजं, पोतसारि, वारिभवं, स्रोतोनदीभवं, स्रोतोभवं, सौवीरसारं,(का–) कपोतसारं, वल्मीकशीर्षम् । र० मा०, सु० चि० । १७ अ० । वाल्मीकं, जयामलं, स्रोतजं, सौवीरसारं, कपोतांजनं,—सं० । सुरमा, सुरमे का पत्थर, अंजन–हिं० । अंजन, अंजन का पत्थर –द० । सुर्मा, शुर्मा, जलांजन, काल शुर्मा–बं० । इ्स्मद, कुह्ल-अ० । सुर्मह्, संगसुर्मह्, स्याह सुर्मह्, सुर्मह अस्फहानी–फ़ा० । ऐण्टिमोनियाई सल्फ्युरेटम् (Antimonii Sulphuretum), एण्टिमोनियम् सल्फ्युरेटम् (Antimonium Sulphuratum)-लें० । ऐण्टिमनी सल्फाइड (Antimony Sulphide), सल्फ्युरेट और टर्सल्फ्युरेट ऑफ ऐण्टिमनी (Sulphuret or Tersulphuret of Antimony), ब्लैक ऐ० (Black Antimony), किर्मीज़ मिनरल (Kermes mineral)–इं० । अंजनक–कल्लु, अंजन-माइ–ता० । अंजन-रायि, नीलांजनम्, कटुक –तै० । अंजनक—कल्ल-मल० । अञ्जेना –कना० । सुर्मो, सुर्मो–नु-फत्रो, कुह्ल–अंजन–गु० । शुर्म-स्वियिग्र, सुर्मे-स्वियो, नयलकयो-यर० । सुर्मा–मह०, को० । काला–सुरमा –मह० ।

रासायनिक संकेत

(अञ्ज$_2$ गं$_3$) (Sb_2S_3).

(ऑफ़िशल)

काला सुरमा जो प्राकृतिक रूप में खानों से निकलता है उसे पिघला कर शुद्ध कर लेते हैं ।

नोट—आयुर्वेदिक शुद्धि का वर्णन आगे होगा ।

उद्भवस्थान—चीन, जापान, (ब्रह्मदेश) वर्मा, थोड़ी मात्रा में मायसूर में भी पाया जाता है । विजयानगरम तथा पञ्जाब (झेलम आदि स्थानों से खानों से निकलता है । चीन में यह सब से अधिक मिलता है ।

लक्षण—किञ्चित् धूम्र श्यामवर्ण का दानेदार चूर्ण होता है । यह भंगुर द्रव्य है ।

घुलनशीलता—यह जलमें अनघुल होता है, किन्तु कॉस्टिक सोडा के सोल्युशन (दाहक सोडा घोल) और गरम हाइड्रोक्लोरिक एसिड (लवणाम्ल) में घुल जाता है तथा उद्‌जन वायव्य उत्पन्न करता है ।

परीक्षा—कोइले पर सोडियम् कार्बनित सहित दग्ध करने से श्वेत चूर्ण सा प्राप्त होता है । अञ्जनम् धातु के कण प्राप्त नहीं होते ।

मात्रा—आधी से १ रत्ती (१ से २ ग्रेन).

मिश्रण—सोमलिका तथा अन्य गन्धिद ।

प्रभाव—स्वेदक, परिवर्तक और वामक ।

नोट—स्रोताञ्जन जैसा कि वर्णन हुआ अञ्जनम् धातु तत्व (Antimony) तथा गंधिका (Sulphur) अधातु तत्व का एक यौगिक है । परन्तु, भारतवर्ष तथा पंजाब में जो कंधारी सुर्मा अधिकता के साथ बिकता है, वह वस्तुतः गंधक और सीसा का एक यौगिक है जिसको अंग्रेजी में गैलेना (Galena) या सल्फ्युरेट ऑफ लेड (Sulphuret of Lead) कहते हैं । यह कृष्ण वर्ण युक्त एक गुरु कठोर पदार्थ है । यही कृष्णाञ्जन वा काला

सुरमा है। यह सीसक और गन्धक को मूषा में उष्ण करने से भी प्राप्त हो सकता है। यही सीसक की कृष्ण भस्म है। कदाचित् इसी भाँति के सुरमाके लक्षण को जनाब शेख़ुर्रईस बूअलीसीना ने मालूम करके इ्समद अर्थात् सुरमा को मृत सीसा का जौहर लिखा है।

सुरमा—यह भी काले सुरमे का एक भेद है जिसमें गंधक जस्ता (यशद) के साथ मिला हुआ होता है। यह अधिक कठोर होता है।

सुरमहे अस्फ़हानी—सम्भव है शुद्ध होता हो। परन्तु, डॉक्टर पावल महाशय अपनी पुस्तक "एकोनॉमिकल प्रॉडक्ट्स ऑफ़ पञ्जाब" के पृष्ठ ११ पर लिखते हैं कि सुरमहे अस्फ़हानी के नमूने की परीक्षा करने पर इसमें लौह का मिश्रण पाया गया। वह पेशावर के निकटस्थ बाजौर नामक स्थान के खनिज सुरमा को शुद्ध सुरमा बतलाते हैं और पर्वतीय सुरमा तथा पञ्जाब के किसी किसी अन्य स्थान के सुरमा को अशुद्ध बतलाते हैं।

सफ़ेद सुरमा—वास्तवमें खटिक धातु का एक योग विशेष अर्थात् कार्बोनेट ऑफ़ लाइम (संगमरमर) है। आयुर्वेद के अनुसार इसको सौवीराञ्जन कहते हैं। इसको लोग भूल से सुरमा समझ कर उपयोग में लाते हैं, किन्तु यह बिलकुल सुरमा नहीं। तोड़ने पर भीतर से यह सुरमा के सदृश चमकदार होता है। अस्तु, इसी सादृश्य के कारण यह सुरमा ख़याल किया जाता है।

अञ्जन शुद्धि

(१) सब अञ्जनों की शुद्धि भँगरे के स्वरस में खरल करने से होती है।

(२) सूर्यावर्त्त (काला भँगरा अथवा हुलहुल) के रस में खरल करने से अञ्जन शुद्ध होता है।

(३) सब अञ्जनों का चूर्ण कर एक दिन जंभीरी के रस में भावना देकर धूप में सुखा लेने से उनकी शुद्धि होती है तथा वे समस्त कार्यों में योजनीय हो जाते हैं।

(४) गोबर के रस, गोमूत्र, घृत, शहद तथा वसा इनकी बहुत बार भावना देने से सुरमा शुद्ध होता है।

(५) स्रोताञ्जन और सौवीराञ्जन को त्रिफला के काढ़े वा भँगरे के रस में औटाने से शुद्धि होती है।

(६) नीलाञ्जन के चूर्ण को १ दिन जंभीरी के रस में खरल कर धूप में सुखा दें तो यह शुद्ध और समस्त रोगों में प्रयोज्य हो जाता है। इसी प्रकार गेरू, कसीस, सुहागा, कौड़ी, मैनसिल एवं मुरदासंग की शुद्धि होती है।

(७) सर्व प्रथम केले के तनेमें गढ़ा बनाएँ। पुनः अञ्जन का एक टुकड़ा उसमें रखकर ऊपर से वही केले का छिलका भर दें और इसे २१ दिन तक इसी प्रकार रहने दें। इसके बाद निकाल कर इसी प्रकार नीम के वृक्ष में उतने ही दिन तक रक्खें। इससे अञ्जन की विशेष शुद्धि होती है। नेत्र के लिए तो यह अमृत समान गुणदायी है।

सलायह् सुरमह्

(१) रक्र सुरमा १ तो०, काली हड़ जो बहुत छोटी हो ४ तो०, पृथक् बारीक करके मिलाएँ और एक दिन तक खूब रगड़ कर रख दें।

गुण—अर्श भेद और नासूर के लिए परीक्षित है।

मात्रा—१ रत्ती से ४ रत्ती तक सवेरे, शाम को किञ्चित् गुड़ के साथ मिलाकर खिलाएँ। इसके पश्चात् रोज सुबह को गोमूत्र और पानी पिलाएँ। ४० दिन तक लगातार सेवन करते रहें। पथ्य—दो प्याज या चौलाई का साग और घी चुपड़ी हुई गेहूँ की रोटी खिलानी चाहिए। इससे मस्से गिर जाएँगे।

(मञ्ज़न)

(२) रक्र सुर्मा ४ तो० को निम्नलिखित औषधियों के रसमें खरल करें। यथा—त्रिफला की छाल, माजू, माईं, कत्था, रसवत, गूगल प्रत्येक ५ तो०, काली हड़ बहुत छोटी ६ तो०, कूट कर मूली के चार सेर पानी में एक दिन रात तर करके एक दो जोश देकर साफ कर लें और

सुरमा को इससे खरल कर के चने बराबर गोली बनाएँ ।

गुण—अर्श तथा असाध्य नासूर के लिए रामबाण है । १ गोली से ४ गोली तक ४० दिन मक्खन में खाते रहें । और उन औषधियों को जो रस निकालने के पश्चात् बच रहें, बारीक करके जंगली बेर के बराबर वटिका बनाएँ और सुबह शाम १–२ गोलियाँ खाते रहें । ३ सप्ताह में ही रोग को जड़-मूल से नष्ट कर देगा ।

(मनहू)

(३) काला सुरमा, जलाए हुए नील के बीज, प्रत्येक १ तो०, फिटकरी (भुनी हुई) अनविध मोती प्रत्येक १ मा०, यशद भस्म २ मा०, चाँदी के वर्क़ ५ इनको ५ दिन मेंहदी और गुलाब के रस में खरल करके रख दें ।

गुण—उक्त औषध अञ्जन रूप से नेत्र रोगों विशेषकर मोतियाबिन्द की आरम्भिक अवस्था, जाला और रक्तबिन्दु के लिए परीक्षित है ।

(मनहू)

(४) सुहागा शुद्ध, नौसादर, समुद्र झाग, कलमी शोरा, संगबसरी, फिटकरी का लावा, पलाश की जड़ की गुद्दी, राई की गिरी, प्रत्येक अर्ध तोला और काला सुरमा १० तोला को खरल में नींबू का रस डालकर ३ घंटे तक भली भाँति घोटकर मिलाएँ । शीशी में रखने से पूर्व इसे साया में सुखा कर खूब बारीक कर लें ।

गुण—इसको अञ्जन रूप से उपयोग में लाने से यह गत दृष्टिशक्ति, आँख आने, नेत्रकण्डु, नेत्ररक्तता, ख़राश और नेत्र द्वारा जलस्राव प्रभृति के लिए अत्यन्त लाभप्रद है । संक्षेप में यह अनेक नेत्र रोगों की अचूक औषध है ।

(पं० जे० एल० दुबे जी)

(५) सुरमा श्वेत को ताजी इन्द्रायन में अष्ठ प्रहर डालकर रख दें । पुनः उक्त शुद्ध सुरमा को कुक्कुटाण्डत्वक् भस्म तथा मोती की सीपी की भस्म प्रत्येक १–१ तो० के साथ मिलाकर एक दो दिन खरल करके रख दें ।

गुण—यह सुरमा पड़वाल के लिए एजाज़ मसीही के समान और सदैव का परीक्षित है ।

(मनहू)

(६) सुरमहे अस्फहानी २ तो०, मोती ६ मा०, प्रवाल ४॥ मा०, शादनह् अदसी मग़्सूल (धोया हुआ) ४ मा० पृथक पृथक बारीक करके मिला लें और गुलाब में हल करके संगबसरी ६ मा० बढ़ाएँ तथा बारीक करके रख लें ।

गुण—यह सुरमा दृष्टि की निर्बलता तथा जाले को लाभदायक और आँख आने में जो जलस्राव होता है उसका शोषणकर्ता है ।

(शरीफ़)

(७) काला सुरमा, यशद भस्म प्रत्येक २०मा०, समुद्र झाग, ज़ङ्गार, कैशर, प्रत्येक १ तो०, सफेदा और अफीम प्रत्येक ३ मा० बारीक कर लें ।

गुण—दृष्टि की निर्बलता अर्थात् दृष्टिमांद्य के लिए सर्वोत्तम औषध है । इसे चक्षुओं में लगाया करें । (इ० सद०)

(८) सफेद सुरमे को अग्निमें तपा तपा कर सातबार हरड़, बहेड़े तथा आमले अर्थात् त्रिफला के रसमें डालकर बुझाएँ, फिर तपा तपा कर सात बार स्त्रीके दूधमें बुझाएँ । पुनः उक्त सुरमे का चूर्ण करके नित्य नेत्रों में आँजे तो नेत्रों को हित-कारी होता है और नेत्र सम्बन्धी सम्पूर्ण विकारों का निःसन्देह नाश होता है । आ० ।

सुरमे की भस्म

(१) तबकदार श्वेत सुरमे को १० दिवस पेठा के रस में खरल करके टिकिया बना लें और एक पेठा में डालकर भली भाँति कपरौटी करें ।

गुण—ज्वर की उन्मत्तावस्था में इसे १ रत्ती की मात्रा में अर्क सौंफ तथा अर्क केवड़ा के साथ तीन बार खिलाने से लाभ होता है ।

तपेमुह्रिक़ास्फ़रावी (आंत्रिक ज्वर)—मूत्रदाह, यकृदोष्मा, नवीन सूजाक के लिए उपर्युक्त शर्बतों के साथ व्यवहार में लानेसे लाभ होता है । चक्षुओं में लगाने से दृष्टिवर्द्धक और नेत्र स्वच्छकारक है । (कु० रही०)

(२) श्वेत सुर्मा को हरे लम्बे कद्दू की गर्दन में रखकर कपरौटी करें और बहुत सी अग्नि दें, भस्म होगी । इसमें सम भाग नीले बंशलोचन मिलाकर अर्क बेदमुश्क व केवड़ा में १ सप्ताह खरल करके रख दें ।

गुण—मुख, नासिका तथा शिश्न प्रभृति से रक्तस्राव होने और शुक्रप्रमेह, रजःस्राव तथा सम्पूर्ण ऊष्मा सम्बन्धी रोगों के लिए लाभदायी है। राजयक्ष्मा के लिए सुर्मा की भस्म १ तोला, चाँदी का वर्क़, अनविध मोती प्रत्येक ३ मा०, स्वर्ण वर्क (पत्र) १ माशा, केशर ४ रत्ती सबको अर्क बेदमुश्क में खरल करके २ रत्ती की मात्रा सवेरे व शाम खिलाएँ। परीक्षित है।

(मनह)

(३) काले सुरमे की भस्म—सिलावें की स्याही, भाँगरा, ग्वारपाठे का लुआब प्रत्येक आधपाव कूटकर नुग़दा (कल्क) बनाएँ। शुष्क होने पर इसमें १ तो० सुरमेकी डली डालकर बंद करें और सकोरे में बन्द कर गिलेहिकमत (कपरौटी) कर सुखा कर २५ सेर कण्डेकी अग्नि दें। भस्म प्रस्तुत होगी।

मात्रा—१ से २ रत्ती तक मक्खनमें। ऊपरसे दुग्ध दें। गुण—पुरातन सुज़ाक तथा शुक्रमेह में लाभप्रद है। सम्पूर्ण त्वग् रोगों, नासिका तथा मुख द्वारा रक्तस्राव, स्त्रियों में अनियमित एवं अधिक रक्तस्राव और अर्श में मुफीद एवं प्रभावकारी है। (कुश्ना० फ़ी०)

(४) सुरमा श्वेत, सङ्गजराहत समान भाग, सुरमा को एक दिन दही के जल में और एक रोज़ घृतकुमारी में खरल करके टिकिया बनाएँ और अग्नि दें। संगजराहत को मदार के दूध में घोटकर अग्नि दें। पश्चात् दोनों को मिला लें।

गुण—पुरातन सुज़ाक और नवीन क्षत प्रभृति के लिए परीक्षित है। मात्रा–२ रत्ती तक मक्खन में। (इस० सद०)

ब्रिटिश फार्माकोपिया द्वारा स्वीकृत (ऑफ़िशल) अञ्जन के यौगिक

(१) अञ्जनोष्मिद अर्थात् ऐण्टिमोनियाई ऑक्साइडम् (Antimonii Oxidum)-ऐण्टिमोनिअस ऑक्साइड (Antimonius Oxide)-इं०। किर्मिज़ुलमअ्दनी, किर्मिस मअ्दनी-फ़ा०। ऑक्सीदुल् अन्तीमून-अ०।

रासायनिक संकेत (Sb_2O_3).

निर्माण विधि—ऐण्टिमोनियस क्लोराइड घोल को जल में मिलाने से ऑक्सी क्लोराइड ऑफ ऐण्टिमनी घनीभूत होकर अधःक्षेपित हो जाता है। इसे पृथक् करके कार्बोनेट ऑफ़ सोडियम के साथ मिश्रित करने से ऐण्टिमोनियस ऑक्साइड प्राप्त होता है।

लक्षण—किञ्चित् धूसर श्वेत रंग का चूर्ण।

घुलनशीलता—जल में तो यह बिलकुल नहीं घुलता, किन्तु लवणाम्ल (हाइड्रोक्लोरिक एसिड) में सरलतापूर्वक घुल जाता है।

मिश्रण—अञ्जन के अन्य ऊष्मिद (ऑक्साइड्स्)।

प्रभाव—स्वेदक और वामक।

मात्रा—१ से २ ग्रेन (६ से १२ सें० ग्राम), १ वर्ष के बालक को $\frac{1}{6}$ से $\frac{1}{4}$ ग्रेन तक। यह ऐण्टिमनोनियम् टार्टरेटम के बनाने में काम आता है और यह उसका एक यौगिक भी है।

ऑफ़िशल योग

(Official preparations).

पल्विस ऐण्टिमोनिएलिस (Pulvis Antimonialis)-ले०। ऐण्टिमोनियल पाउडर (Antimonial Powder), जेम्सेज़ पाउडर (James's Powder)-इं०। अञ्जन चूर्ण, जेम्स का चूर्ण-हिं०। सफ़ूफ़ या सफ़ूफ़ अन्तीमून, सफ़ूफ़ जेम्स नि०।

निर्माण-विधि—ऐण्टिमोनियस ऑक्साइड (अञ्जनोष्मिद) १ आउंस, कैल्सियम फॉस्फेट (चूनस्फुरेत) २ आउंस दोनों को परस्पर संयोजित करलें।

मात्रा ३ से ६ ग्रेन अर्थात् १॥ से ३ रत्ती (२ से ४ डेकाग्राम); १ वर्षके शिशु को $\frac{1}{4}$ से $\frac{1}{2}$ ग्रेन।

प्रभाव—टार्टार एमेटिक के समान, किन्तु उससे निर्बल। मृदुस्वेदक प्रभाव के कारण यह ५ ग्रेन (२॥ रत्ती) की मात्रा में ज्वरावस्था में उपयोग में आता है। (ए० मे० मां०)

अलकुहाल (मद्यसार) तथा डोवर्स पाउडर के समान यह यक्ष्मा के रात्रि स्वेदस्राव को रोकता है।

ऐण्टिमोनियम् टार्टरेटम्

(Antimonium Tartaratum)—टार्टरेटेड ऐण्टिमनी (Tartarated Antimony), टार्टार इमेटिक (Tartar Emetic), पोटासियो टार्टरेट ऑफ् ऐण्टिमनी (Potassio Tartarate of Antimony)-इं०। टार्टाराञ्जन, वामक लवण, पांशु टार्टाराञ्जन, वामक टार्टार-हिं०।

रासायनिक सूत्र

$(K\ Sb\ OC_4\ H_4\ H_4\ O_6)_2,\ H_2O.$

निर्माण-विधि—ऐण्टिमोनियम आक्साइड और एसिड पोटेसियम् टार्टरेट को कुछ जल के साथ परस्पर मिश्रित कर इसकी लेई सी बना लें और इसे २४ घंटे तक पड़ा रहने दें जिससे इनका पारस्परिक संयोग हो जाए। पुनः आँच देकर जल को जला डालें। शीतल होने पर इसके रवे बन जाएँगे।

लक्षण—वर्ण रहित, स्वच्छ रवे जो त्रिकोणाकार होते हैं। स्वाद—कुछ कुछ कसैला तथा मधुर।

घुलनशीलता—यह एक भाग १७ भाग शीतल जल में और १ भाग ३ भाग उबलते हुए जल में घुल जाता है। घोल की प्रतिक्रिया अम्ल होती है।

मिश्रण—एसिड टार्टरेट ऑफ पोटेसियम्।

असम्मिलन (संयोग विरुद्ध)—क्षारीय द्रव्य, सीसा के लवण, माजूफलत्व (गैलिक एसिड) और कषायाम्ल (टैनिक एसिड) तथा अनेक अन्य सङ्कोचक द्रव्य।

प्रभाव—स्वेदक, श्लेष्मानिःसारक, हृदयावसादक तथा वामक।

मात्रा- स्वेदन हेतु $\frac{1}{24}$ से $\frac{1}{8}$ ग्रेन (२.४ से ८ मि० ग्राम); श्लेष्मानिःसारण हेतु $\frac{1}{8}$ से $\frac{1}{4}$ ग्रेन; वमन हेतु, $\frac{1}{2}$ से १ ग्रेन (३ से ६ सें०ग्राम), एक साल के बालक के लिए चौथाई ग्रेन। इन विभिन्न मात्राओं को ध्यानपूर्वक स्मरण रखें।

योग-निर्माण-विधि—इसको घोल रूप में या इसका मद्य उपयोग में लाना चाहिए। यदि इसको वटिका रूप में देना हो तो इसे दुग्ध की शर्करा (मिल्क शूगर) के साथ भली प्रकार मिश्रित कर और द्राक्षा के शीरा (ग्ल्युकोज़) द्वारा वटिका प्रस्तुत कर उपयोग में लाएँ।

ऑफिशल योग

(Official preparations).

अञ्जनासव अंजनीय मद्य-हिं०। वाइनम् ऐण्टिमोनियली (Vinum Antimoniale), ऐण्टिमोनियल वाइन (Antimonial Wine), डा० ना०।

निर्माण-विधि—टार्टरेटेड ऐण्टिमनी २० रत्ती (४० ग्रेन), खौलता हुआ परिस्रुत जल (डिस्टिल्ड वाटर) १ फ़्ल्युइड आउन्स और शेरी वाइन १९ फ़्ल्युइड आउन्स। टार्टरेटेड ऐण्टिमनी को पहिले खौलते हुए परिस्रुत जल में डालकर घोल लें पुनः इसे शीतल कर शेरी मद्य में मिश्रित कर लें।

शक्ति—इसके एक फ़्लुइड आउन्स में २ ग्रेन अर्थात् एक रत्ती ऐण्टिमोनियम् टार्टरेटम् होता है।

मात्रा स्वेदक रूप में १० से ३० बुंद (मिनिम) और वामक रूपमें २ से ४ फ़्लुइड ड्राम। एक वर्षीय बालक के लिए श्लेष्मानिःसारक रूप में ३ बुंद और वामक रूप से १५ बुंद (मिनिम) तक।

नोट—इनके अतिरिक्त ऐण्टिमोनियम् नाइग्रम् प्योरीफिकेटम (शुद्ध स्रोतोंजन) और ऐण्टिमनी सल्फाइड (काला सुरमा) दो और अंजन के यौगिक ब्रिटिश फार्माकोपिया में ऑफिशल हैं। इनका वर्णन प्रथम स्रोतोंजन में कर दिया गया है। अतः वहाँ देखिए।

नॉट ऑफिशल योग

(Not official Preparations).

अङ्गुएण्टम ऐण्टिमोनियाई टार्टरेटी Unguentum Antimonii Tartratæ-लें०। ऑइण्टमेंट ऑफ टार्टरेटेड ऐण्टिमनी (Ointment of Tartrated antimony)

–ई०। मरहम वामक टार्टार (लवण); टार्टारा-अञ्जनानुलेपन–हिं० । मरहम तर्तीरुलमुक़ई, मरहम नमक क़ै–ति० ।

निर्माण-विधि—टार्टरेटेम् ऐण्टीमनी का बारीक चूर्ण १ भाग सिम्पल श्रौइण्टमेण्ट (सादा मरहम) ४ भाग भली भाँति मिश्रित करलें । (ब्रिटिश फार्माकोपिया के परिशिष्टांकस्थ योगानुसार)

अंजन के विभिन्न यौगिकोंके विस्तृत गुण धर्म व प्रयोग

(१) आयुर्वेदिक मतानुसार—

अञ्जन सम्पूर्ण चक्षुर्दोषनाशक, आयुष्य-दीर्घ करता, सर्व रोगनाशक, ज्ञान प्रकाशक, शान्ति दायक, प्लीहा रोग नाशक, स्त्रियों से प्राप्त होने वाले तपेदिक, अङ्गभेद, यक्ष्मा आदि रोग नाशक है ।त्रिककुन् नामक पर्वतसे उत्पन्न अञ्जन सर्वश्रेष्ठ है । अथ० । सू० ४३ । ६ । का० १६ ।

स्रोतोऽञ्जन काला सुरमा और सौवीर श्वेत सुरमा को कहते हैं । जो बांबी के शिखर के सदृश होता है वह स्रोतोऽञ्जन कहलाता है । सफेद सुरमा भी स्रोतोंजन के सदृश होता है । किन्तु कुछ पीले रंग का होता है । भा० ।

काला सुरमा शीतल, कटु, कषैला, कृमिघ्न, रसायन, रस शोध्य और स्तन्यवृद्धिकारक है । (रा० नि० व० १३)

स्रोतोऽञ्जन (काला सुरमा) मधुर, नेत्रों को हितकारी, कषैला, लेखन, ग्राही तथा शीतल है और कफ, पित्त, वमन, विष, श्वित्र (सफेद कोढ़), क्षय तथा रक्तविकार को नष्ट करता है । यह सदा बुद्धिमानों को सेवनीय है । जो स्रोतोऽञ्जन में गुण हैं वे सौवीर में भी हैं; ऐसा विद्वानों ने कहा है । किन्तु, दोनों अंजनों में स्रोतोऽञ्जन ही श्रेष्ठ है । भा० ।

सफेद सुरमा नेत्रों को परम हितकारी है । अतएव इसे नित्य लगाना चाहिए । इसको लगाने से नेत्र मनोहर और सूक्ष्म वस्तु के देखनेवाले होते हैं । सिन्धु नामक पर्वत में उत्पन्न हुआ काला सुरमा (शुद्ध किया हुआ न होने पर भी) उत्तम होता है । इसको लगाने से यह नेत्रोंकी खुजली मैल, तथा दाह को नष्ट करता है, और क्लेद (नेत्रों से पानी का बहना) तथा पीड़ा को दूर करता है । नेत्र स्वरूपवान होते हैं, और बात तथा वायु और धूप को सहन करने में समर्थ होते हैं । काला सुरमा लगाने से नेत्रों में रोग नहीं होते, इस कारण इसको भी लगाना चाहिए । रात में जागा हुआ, थका हुआ, वमन करने वाला, जो भोजन कर चुका हो, ज्वर रोगी और जिसने शिर से स्नान किया हो उनको सुरमा नहीं लगाना चाहिए । (भा० प्र० ख० १)

(२) यूनानी मतानुसार—

स्वरूप—श्याम, श्वेत तथा रक्त वर्ण ।

स्वाद—बेस्वाद ।

प्रकृति—प्रथम कक्षा में शीतल और द्वितीय कक्षा में रूक्ष (किसी किसीके विचार से २ कक्षा में ठंढा और रूक्ष) । हानिकर्ता-वक्षस्थलस्थ अवयवों को । दर्पनाशक–कतीरा तथा शर्करा । प्रतिनिधि–अनार ।

गुण, कर्म व प्रयोग—सुरमा पारद तथा गंधक दो वस्तुओं का यौगिक है जिनमें गंधक प्रधान है । इसी कारण यह विबन्धकारी या बद्धक व रूक्षता प्रद है । रूक्षता की अधिकता के कारण यह व्रणपूरक है तथा उनके बढ़े हुए मांस को नष्ट कर देता है । अपनी क़ब्ज़ तथा रूक्षता एवं नेत्र की ओर मलों को रोकने के कारण दृष्टि को बलप्रद तथा नेत्र की स्वस्थता का रक्षक है । उस नकसीर को बन्द करता है जो मस्तिष्क के परदों से फूटा करती है । नेत्र की सरदी गरमी और कीचड़ोंका हरणकर्ता है । इसका .हुमूल (वर्ती) जरायु द्वारा रक्तस्राव होने को रोकता है । (नफ़ा० । इसकी पिचुक्रिया अर्थात् भिगोया हुआ कपड़ा रखना गुदभ्रंश (काँच निकलने) को गुण करता है और गर्भाशय की कठोरता को मृदु करता है । सुरमा शुक्रमेह और आर्तव का रुद्धक है तथा रक्तस्राव (मुख द्वारा रक्तस्राव), पुरातन सूज़ाक, व्रण, अर्श, तथा नासूरों (नाड़ीव्रण) को लाभप्रद है और राजयक्ष्मा को दूर करता एवं अन्य भाँति के ज्वरों के लिए गुणदायी है ।

(३) डाक्टरी मतानुसार अञ्जन के बाह्य प्रभाव

अञ्जन के यौगिकों का त्वचा पर सशक्त उग्रतासाधक वा क्षोभक (इरिटेन्ट) प्रभाव होता है। अस्तु, टार्टरेटेड ऐण्टिमनी को मलहम रूप में त्वचा पर लगाने से शीतला सदृश दाने उत्पन्न हो जाते हैं, जिनसे क्षत होकर सर्वदा के लिए चिह्न रह जाते हैं।

आभ्यंतरिक प्रभाव

आमाशय तथा आंत्र—अञ्जन के यौगिकों के आभ्यंतरिक उपयोग से भी वैसा ही उग्रता साधक (क्षोभक) प्रभाव होता है जैसा कि उसके बाह्य उपयोग से। अस्तु, यदि टार्टरेटेड ऐण्टिमनी को अधिक मात्रा में खाया जाए अथवा अधिक समय तक औषध रूप से उपयोग में लाया जाए तो मुख, कण्ठ, अन्नप्रणाली, आमाशय और आँत पर इसका वैसा ही उग्रता साधक प्रभाव होता है जैसा कि त्वचा पर।

इसे सूक्ष्म मात्रा में व्यवहार करने से आमाशय में ऊष्मा एवं वेदना का भान होता है और किञ्चित् मात्रा में देने से क्षुधा प्रायः नष्ट होजाती है, जी मचलाता है और आमाशय व आंत्र की श्लैष्मिक कला से अधिक द्रवस्राव होता है। इससे भी अधिक मात्रा अर्थात् २ या ३ ग्रेन की मात्रा में देने से यह वामक प्रभाव करता है और इसका यह (वामक) प्रभाव आमाशयपर इसके प्रत्यक्ष (सरल) वामक (डायरेक्ट एमेटिक) प्रभाव का प्रतिफल स्वरूप होता है। किन्तु,तत्काल अभिशोषित होकर मास्तिष्कीय वमन केन्द्र पर भी यह किसी भाँति अप्रत्यक्ष (असरल) वामक (इण्डायरेक्ट एमेटिक) प्रभाव करता है। यदि इसको त्वक्स्थ अन्तःक्षेप द्वारा रक्तमें प्रविष्ट किया जाए तो भी इससे वमन आने लगता है; जिसका कारण यह होता है कि कुछ तो इसका प्रभाव वमन केन्द्र पर होता है और कुछ इस प्रकार कि यह शोणित में अभिशोषित होकर किसी भाँति आंत्र तथा आमाशय में खारिज होता है जिससे कुछ समय तक वमन आता रहता है। और यदि इसको बहुत से पानी में घोल कर दिया जाए तो वमन तो कम आता है; किन्तु, दस्त अधिक आते हैं। अत्यधिक मात्रा अर्थात् विषैली मात्रा में इसे देने से आमाशय तथा आंत्र में खराश होकर विशूचिका के समान लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं और उदर में मरोड़ होकर दस्त आने लगते हैं। अति सूक्ष्म मात्रा में यदि इसे मुख द्वारा आमाशय में प्रवेशित किया जाय तो यह बड़ी मात्रा में शिरामें अन्तःक्षेप द्वारा पहुँचाए जानेकी अपेक्षा शीघ्र प्रभाव करता है। इससे यह सिद्ध होता है कि वमन लाने में वामक केन्द्र की अपेक्षा इसका स्थानीय प्रभाव ही मुख्य है।

हृदय तथा शोणित परिचालन—अञ्जन के विलेय गुण युक्त लवण शीघ्र रक्त में शोषित होजाते हैं। परन्तु, ये रक्तवारि (प्लाज़्मा) की अल्ब्युमिन में मिश्रित नहीं होते।

उपयोग के आरम्भ से ही चाहे इसको सूक्ष्म ([illegible] ग्रेनसे [illegible] ग्रेन) मात्रा में ही दिया जाए तो भी यह हृदय की शक्ति तथा गति दोनों को कम कर देता है। परंतु, मतली को उत्तेजना मिलती है। उसकी गति रुक-रुक कर (क्रै) होने लगती है। इसे अधिक मात्रा में व्यवहार करने से हृदय अत्यन्त निर्बल होजाता है। और द्वितीय यह कि वैसोमोटर सिस्टम के किसी स्थल पर निर्बलताजनक प्रभाव पड़ने से धामनिक मांस पेशियाँ शिथिल होजाती हैं। इस कारण अंजन (ऐण्टिमनी) रक्तभ्रमण तथा हृदय को सशक्त निर्बलकारी या हृदयावसादक औषध है। (अंजन का उक्त निर्बलकारी प्रभाव बहुतांश में विष अर्थात् सींगिया के समान ही होता है।)

फुप्फुस तथा श्वासोच्छ्वास—अंजन के प्रभाव से प्रथम तो श्वासोच्छ्वास में सूक्ष्म सी उत्तेजना होती है, तत्पश्चात् वह अत्यन्त शिथिल होजाता है। अस्तु, श्वासकाल घट जाता है और श्वास छोड़ने का समय बढ़ जाता है। **अन्ततः** श्वासोच्छ्वास का मध्य काल बहुत बढ़ जाता है और उसकी गति अनियमित होजाती है। अंजन वायुप्रणाली की श्लैष्मिक कला के मार्ग से विसर्जित होता है। इस हेतु यह शोफघ्न श्लेष्मानिस्सारक (ऐण्टिफ्लोजिस्टिक एक्सपेक्टोरेण्ट) प्रभाव करता है।

शारीरोष्मा—स्वस्थ दशा में अञ्जन की थोड़ी मात्रा से शारीरिक ताप पर कुछ भी प्रभाव नहीं होता। किन्तु, ज्वरावस्था में उपयोग करने अथवा बड़ी मात्रा में देने से शारीरिक ताप कम होजाता है। जिसका कारण अधिकतर तो (१) हृदय का निर्बल होजाना तथा शोणित के दबाव (रक्त भार) का कम होजाना है, (२) स्वेद स्राव और (३) तापोत्पादन (थर्मोजेनेसिस) अर्थात मास्तिष्कीय तापोत्पादक केन्द्र पर इस का किसी भाँति निर्बलताजनक प्रभाव पड़ता है, जिससे शरीरोष्मोत्पत्ति न्यून होजाती है।

यकृत्—टार्टार एमेटिक तथा विशेषकर ऐंटिमोनियम् सल्फ्युरेटम् प्रत्यक्षतया पित्तस्राव की वृद्धि करते हैं। अस्तु, ये पित्तनिःसारक (कोलेगॉग) हैं। ये यूरिया तथा कज्जलिकाम्ल (कार्बोलिक एसिड) की पैदायश की वृद्धि करते और यकृत् की ग्लाइकोजिनिक (शर्कराजनन) क्रिया को निर्बल करते हैं। यदि इसका अधिक समय तक उपयोग किया जाय तो मल्ल तथा स्फुर के समान ये यकृत की क्रिया को खराब करते और इसमें फैटीडीजेनरेशन (यकृत का वसा में परिणत होजाना) उत्पन्न करते हैं।

त्वचा—त्वचा पर अंजन का सशक्त स्वेदजनक प्रभाव पड़ता है, जिसका प्रधान कारण रक्तभ्रमण का शिथिल होजाना है। किसी भाँति स्वेदजनक ग्रन्थियों पर इसका दूरस्थ स्थानीय प्रभाव पड़ना भी हेतु होता है। यदि मंडूक की त्वचा पर अंजन को लगाया जाए तो यह उसे मल्ल की भाँति मरेश जैसा मृदु कर देता है जिसे सरलतापूर्वक सुरचा जा सकता है।

वृक्क- टार्टारएमेटिक गुर्दों में से गुजरते समय सूक्ष्म मूत्रजनक प्रभाव करता है, जिसका बहुत कुछ आधार त्वचाकी क्रिया पर होता है। अस्तु, यदि अत्यधिक स्वेदस्राव हो तो मूत्र कम आता है और यदि स्वेदस्राव कम हो तो मूत्रस्राव अधिक होता है।

वात संस्थान—मस्तिष्क तथा विशेषतः सुषुम्ना कांड पर अंजन का अत्यन्त निर्बलकारी प्रभाव पड़ता है। यही कारण है कि इसके उपयोग के पश्चात् तबीयत सुस्त हो जाती है और ऊँघ सी प्रतीत होती है तथा काम करने को जी नहीं चलता। प्राणियों पर परीक्षा करने से ज्ञात हुआ है कि अंजन के प्रभाव से परावर्तित क्रिया नष्ट हो जाती है और सौषुम्नीय चेतनास्थल शिथिल एवं निर्बल हो जाता है।

मांस संस्थान—ऐच्छिक तथा अनैच्छिक दोनों प्रकार की विशेषकर ऐच्छिक मांस पेशियाँ निर्बल एवं शिथिल हो जाती हैं। विशेषतः उस अवस्था में जब कि इसे वामक मात्रा में उपयोग किया जाए। अस्तु, अंजन मांसाक्षेपनिवारक (मस्क्युलर ऐंटिस्पैज़्मोडिक) है।

मेटाबालिज़्म (अपवर्त्तन)—शारीरिक परिवर्तन पर अंजन का प्रभाव बिलकुल मल्ल तथा स्फुर के सदृश ही होता है (अस्तु, उक्त वर्णनों का अवलोकन करें)। अति न्यून मात्रामें देने से यह सूक्ष्म परिवर्तक प्रभाव करता है। किन्तु, यदि इसको अधिक समय तक व्यवहार में लाया जाए तो यह धातु या तन्तुओं (टिश्शूज़) के साथ कुछ मास तक मज़बूती से चिपटा रहता है। जिससे आभ्यन्तरिक अवयवों विशेषतः यकृत में फ़ैटीडीजेनरेशन (धातु की वसा में परिणति) हो जाता है।

डॉक्टर रिंगर महोदयके कथनानुसार अंजन जीवनमूलीय विष है तथा यह मल्ल, सींगिया और हाइड्रोस्यानिक एसिड के सदृश नत्रजनीय (नाइट्रोजीनस) धातु या तन्तुओं की क्रिया या व्यौपार को निर्बल करता है।

विसर्जन—अंजन के लवण मूत्र, पित्त, स्वेद वायु प्रणालीस्थ श्लेष्मा, दुग्ध, तथा विशेषकर मल द्वारा शरीर से विसर्जित होते हैं। इनका कुछ भाग शरीर में अवशेष रह जाता है।

हृदय—औषधीय मात्रा में प्रयुक्त मात्रा के अनुसार इसके प्रभाव में भेद उपस्थित होता है। $\frac{1}{6}$ ग्रेन की मात्रामें इसके हृदय पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ने के कारण यह नाड़ी की गति को कुछ धीमा कर देता एवं स्वेदक प्रभाव करता है, जिससे खुलकर स्वेदस्राव होता है। इसका यह प्रभाव सम्भवतः क्युटेनियस मसलज़ (त्वगीय मांस तन्तु) के प्रसार

के कारण होता है। यह वायु प्रणालीस्थ श्लेष्मा स्राव को अधिक करता है। उक्त औषध का यह प्रमुख प्रभाव है जो इसे श्लेष्मानिःसारक औषधों की श्रेणी में प्रथम स्थान प्रदान करता है।

अञ्जन के प्रयोग

बाह्य प्रयोग

यद्यपि अब से कुछ काल पूर्व एमेटिक द्वारा प्रस्तुत मलहम काउण्टर इरिटेण्ट (स्थानीय उग्रता साधक) रूप से फुफ्फुस, मस्तिष्क तथा सन्धिवात प्रभृति रोगों में व्यवहार किया जाता था, किन्तु इसके लगाने से कठिन वेदना होती एवं इससे सदाके लिए चिह्न पड़ जाते हैं, इसलिए आजकल इसका उपयोग सर्वथा त्याज्य है।

आभ्यन्तर प्रयोग

आमाशय तथा आंत्र—विषाक्त प्राणी को वमन कराने के लिए टार्टार एमेटिक का उपयोग उचित नहीं; क्योंकि प्रथम तो इसका प्रभाव विलम्ब से होता है, और द्वितीय इसमें अत्यधिक निर्बलता उत्पन्न होती है। किन्तु, वातीय प्रादाहिक रोगों, यथा कठिन कास अर्थात् वायुनलिका प्रदाह, स्वरयन्त्र प्रदाह (लेरिञ्जाइटिस) तथा खुनाक़ (क्रूप) प्रभृति में जहाँ कि वमन एवं रक्त संचालन की निर्बलता दोनों प्रभावों की आवश्यकता होती है, वहाँ पर उक्त औषध अत्यन्त गुण प्रदर्शित करती है। विषम ज्वरमें जब क्विनाइन से लाभ नहीं होता तब टार्टारएमेटिक से वमन करा के पुनः क्विनाइन खिलाने से लाभ होता है।

रक्त भ्रमण तथा श्वासोच्छ्वास—शोथघ्न (ऐण्टिफ्लोजिस्टिक) प्रभाव के लिए टार्टार एमेटिक को $\frac{१}{६०}$ ग्रेन की मात्रा में सींगिया (एकोनाइट) के समान बहुत से कठिन प्रादाहिक रोगों की प्रारम्भावस्था, यथा—गलग्रह (टॉन्सिलाइटिस), स्वरयन्त्रप्रदाह (लेरिआइटिस), कठिन कास (वायुप्रणाली प्रदाह), फुफ्फुस प्रदाह (न्युमोनिया), फुफ्फुसावरक कला प्रदाह (प्ल्युरिसी), हृदयावरक प्रदाह (पेरिकार्डाइटिस), उदरच्छदा कला प्रदाह (पेरिटोनाइटिस) और डिम्बाशय प्रदाह (ओवेराइटिस) प्रभृति में उपयोग करते हैं।। बच्चों के कठिन कास या क्रूप (खुनाक़) आदि में जब कि इसे अकेले अथवा इपीकाक्वाना के साथ मिलाकर दिया जाता है तब यह और अधिक लाभ करता है।

नोट—नवीन तीव्र कास के आदि में इसको सामान्यतः व्यवहार में लाते हैं। परन्तु, यदि रोगी बलवान अर्थात् रक्त प्रकृति का हो तो इसके प्रयोग से अधिक लाभ होता है। और जब इसके उपयोग से पतला होकर श्लेष्मास्राव आरम्भ हो जाए तब फिर इसका उपयोग स्थगित कर देना चाहिए। डिफ्थीरिया में इसका उपयोग न करना चाहिए।

टार्टार एमेटिक प्रतिश्याय ज्वर के आक्रमण को शीघ्र कम कर देता है। हृदय दौर्बल्यकारी होने के कारण अञ्जन को अब स्वेदक प्रभाव हेतु बहुत कम उपयोग में लाते हैं। पर यदि रोगी सशक्त हो तो कभी कभी इसे उक्त प्रभाव हेतु उपयोग में लाते हैं।

पल्विस ऐण्टिमोनिएलिस एक सूक्ष्म स्वेदजनक (डायफोरेटिक) औषध है, तो भी प्रतिश्याय ज्वर तथा कासीय फुफ्फुस प्रदाह में इसको देने से कभी लाभ होता है। डॉक्टर ग्रेविस महोदय ऐसे ज्वर में जिसमें कठिन उन्माद की अवस्था हो, $\frac{१}{४}$ (चौथाई) ग्रेनकी मात्रामें टार्टार एमेटिक को उतनी ही अफीम के साथ योजितकर एक एक या २–२ घंटा पश्चात् कुछ बार उपयोग करना लाभप्रद बताते हैं।

सर वि० व्हिटला के कथनानुसार मदात्यय (डेलीरियम ट्रीमेन्स) में जब अफीम निद्रा उत्पन्न करने में असफल हो जाता है उस समय उसके साथ $\frac{१}{४}$ से $\frac{१}{२}$ ग्रेन उक्त औषध को मिलाकर व्यवहार करने से शीघ्र प्रभाव होता है।

वात संस्थान तथा मांस संस्थान—मेनिया (उन्माद) रोग में पागलपन को दूर

करने के लिए तथा इसी द्वारा तीव्र विषाक्तता अर्थात् उग्र मदात्यय (एक्यूट अलकुहलिज़्म) में निद्रा हेतु टार्टरेटेड ऐण्टिमनी उपयोग में ला सकते हैं।

व्यापक अवसन्नताजनक औषधों यथा क्लोरोफॉर्म आदि के प्रचार पाने से प्रथम टार्टरेटेड ऐण्टिमनीको अन्त्रवृद्धि (हर्निया) रोग तथा संधिच्युति (डिस्लोकेशन) में पेशियों को ढीला करने के लिए अधिकता के साथ व्यवहार में लाते थे, किन्तु क्लोरोफॉर्म के दर्याफ्तके बाद उक्त अभिप्राय हेतु अब यह बिलकुल व्यवहार में नहीं आती।

परिवर्तक तथा पित्तनिःसारक रूप से ऐण्टिमनी सल्फ्युरेटम् को प्रायः गठिया रोग (गाउट) और (हेपैटिक फुलनेस) में देते हैं। कैलोमेल के साथ प्लमर्स वटी रूप से इसे उपदंश रोग में वर्तते हैं।

नोट—डॉक्टरी चिकित्सा में काला आज़ार के लिए तो केवल एक टार्टार एमेटिक ही एक ऐसी औषध सिद्ध हुई है जो कि उक्त रोग को समूल नष्ट कर सकती है।

पूर्ण विवेचन के लिए देखो—काला आज़ार। श्लीपद रोग में सोडियम् ऐण्टिमनी-टार्ट का अन्तःक्षेप कराना गुणदायी है। आवश्यकतानुसार १, २ या ३ सप्ताहके अन्तर से दें।

टार्टरेटेड ऐण्टिमनी अब बहुत कम उपयोग में आती है। चूँकि यह घुलनशील एवं स्वादरहित औषध है; अतएव इसको घोल रूप में व्यवहार करना उत्तम है। इसको सदा अतिन्यून मात्रा ($\frac{१}{६०}$ से $\frac{१}{४०}$ ग्रेन) से आरम्भ करना चाहिए; क्योंकि यह देखा गया है कि इसको $\frac{१}{४०}$ ग्रेन की मात्रा में बारम्बार देनेसे वमन आने लगता है।

इसको रेचक प्रभाव के लिए कदापि उपयोग में न लाना चाहिए। इसके उक्त प्रभाव को रोकने के लिए प्रायः इसको अफीम के साथ मिलाकर दिया करते हैं। जब इसको नैलिद (आयोडाइड्ज़) या इपिकेकाना के साथ मिलाकर दिया जाता है तब वायुप्रणालीस्थ श्लैष्मिक कला पर इसका अति तीव्र प्रभाव होता है।

एक वर्षीय शिशु को आक्षेपयुक्त खुनाक (Croup) में—

ऐण्टिमनीटार्ट	१ ग्रेन
वाइनाइ इपीकाक	४ ड्रा०
सिरुपाई सिम्प०	१ आउं०
एक्वा	३ आउं०

इनको मिश्रित कर १५-१५ मिनट पर एक एक चाय के चमचा भर जब तक वमन न हो देते रहें। पश्चात् आवश्यकतानुसार एक दो, या तीन घंटे बाद दें। सल्फ्युरेटेड ऐण्टिमनी (काला सुरमा) न्यून मात्रा में टार्टार एमेटिक के संपूर्ण गुणधर्म रखता है। यह परिवर्तक होने के कारण उपदंश (सिफ़िलिस) चिकित्सा में प्रसिद्धि प्राप्त कर चुका है। किन्तु, मार्टिण्डेल्स सोल्युशन ऑफ़ ऐण्टिमनी ऑक्साइड (मार्टिण्डेल का अञ्जनोष्मिद घोल) तथा केस्टेलेनीज़ इण्ट्रावेनस (शिरान्तरीय) या इण्ट्रामस्क्यूलर (मांसान्तरीय) इंजेक्शन ऑफ़ टार्टार एमेटिक के आविष्कार के साथ उसका उपयोग कम होगया। इसे त्वगन्तर, शिरान्तर या मांसान्तर अन्तःक्षेप द्वारा उपयोग में लाना चाहिए।

अञ्जन विषतन्त्र (अगद तन्त्रम्)

तीक्ष्ण विष के लक्षण—इसके विष के लक्षण संखिया विष के सदृश ही होते हैं। अस्तु, पौन घंटेसे एक घंटेके भीतर निम्नलिखित लक्षण उपस्थित होजाते हैं। यथा—

कंठ में गरमी तथा दाह प्रतीत होता है और गला घुटकर गिलन कठिन होजाता है। जी मचलजाता है। बारम्बार दस्त व वमन आते हैं। वमन किया हुआ द्रव्य कभी हरा वा काला और कभी आकाशवत् नीला होता है। उदरमें पीड़ा होती है, और पिंडली की मांस पेशियाँ आकुंचित होजाती हैं। मूत्रावरोध होता है। विषाक्त को कभी उन्माद या शिथिलता भी हो जाती है और अंतिम दशा की निर्बलता होती है। नाड़ी

संकुचित तीव्र और अनियमित तथा अप्रकट रूप से चलती है। त्वचा शीतल तथा पिचपिची हो जाती है। कभी शरीर पर दाने निकल आते हैं।

अगद—यदि स्वयं खुलकर वमन न आता हो तो वामक प्रयोग करें, यथा—१५ रत्ती (३० ग्रेन) सल्फेट ऑफ़ ज़िङ्क को ४ आउंस उष्ण जल के साथ घोलकर दें या एपोमार्फीन $\frac{1}{15}$ से $\frac{1}{10}$ ग्रेनका त्वक्स्थ अन्तःक्षेप करें अथवा स्टमक पम्प या ट्यूब से आमाशय को भली भाँति धोएँ। पुनः माजू सत्व (टैनिक एसिड) को जो कि इसका मुख्य अगद है किसी न किसी रूप से व्यवहार में लाएँ।

अस्तु, टैनिक एसिडको १५ रत्ती (३० ग्रेन) की मात्रामें एक पात्र गरम पानी में मिलाकर पिलादें और यदि आवश्यकता हो तो ऐसी एक एक मात्रा औषध और २–३ बार पिलादें, या (२) माजू चूर्ण १ तो० पावभर पानी में जोश देकर या (३) कीकर की छाल १ छं० अर्द्ध सेर जल में क्वथित कर पिलादें या तेज़ चाय अथवा कॉफ़ी पिलादें और जब वमन बन्द होजाय तब पुनः अण्डों की सुफेदी जल वा दुग्धमें फेंटकर या केवल दुग्ध ही पिलादें। वेदना शमन हेतु अफ़ीम सत्व (मॉरफ़ीन का) त्वक्स्थ अन्तःक्षेप करें। निर्बलता हरण हेतु उत्तेजक औषध उपयोग में लाएँ या कुचला सत्व (स्ट्रिक्नीन) अथवा डिजिटेलिस का त्वक्स्थ अन्तःक्षेप करें। रान और बगल में उष्ण जल की बोतलें लगाएँ।

नोट—बटर ऑफ एण्टिमनी के वे ही अगद हैं जो खनिजाम्लों के। इस लिए देखिए—खनिजाम्ल (Mineral acids)

अञ्जनयुग्मम् anjana-yugmam–सं० स्त्री० स्रोताञ्जन और रसाञ्जन। वा० सू० प्रियंगु आदि। देखो–अञ्जनम्।

अञ्जन रसः anjana-rasah–सं० पुं० (१) पारा, मिर्च, इन्हें बराबर ले पीसकर नस्य दें तो सन्निपात ज्वर दूर हो।

(२) हींग, फिटकरी इन्हें पीसकर नस्य देने से सन्निपात ज्वर दूर होता है।

(र० सा० सं० ज्वर० चि०।)

अञ्जन रायि anjana-ráyi–ते० काला सुरमा –हिं०। देखो–अञ्जनम्। एण्टिमोनिआइ सल्फ्युरेटम् (Antimonii Sulphuretum) –लै०।

अञ्जनवटी anjana-vati सं० स्त्री० पारा १ टङ्क, गंधक २ टङ्क, मिर्च ६ टङ्क सब को पीस कज्जली करें, पुनः करेले के रस की २१ भावना देकर मर्दन कर एक रत्ती प्रमाण गोलियाँ बनाएँ। इसको जल से घिस अञ्जन करने से हर प्रकार के ज्वर दूर होते हैं। (किसी किसी जगह केले के पत्र के रस से ३१ पुट देने को कहा है।)

(वृ० रस० रा० सु० ज्वर चि०।)

अञ्जन विधिः anjana-vidhih–सं० पुं० (Method of using collyrium). नेत्रप्रसाधन भेद, अञ्जनकर्म यथा-दोष पकनेके पश्चात् योग्य अञ्जन आँजना चाहिए। जो पदार्थ नेत्रों में आँजा जाता है, वह अञ्जन कहलाता है। गोली, रस, और चूर्ण रूप से अञ्जन तीन प्रकार का होता है। इनमें चूर्ण से वटी बलवान है, और वटी से रस बलवान् है।

अञ्जन को सलाई अथवा अँगुली से आँजना चाहिए। गोली रूप अञ्जन से रसरूप अञ्जन और रसरूप अञ्जन से चूर्णरूप अञ्जन निर्बल है। प्रागुक्त प्रत्येक अञ्जन के स्नेहन रोपण और लेखन आदि तीन भेद होते हैं। क्षार, कड़वे (तीक्ष्ण भा० प्र० ख० १) और खट्टे रस वाले अञ्जन को लेखन कहते हैं। (यह अञ्जन नेत्रों में, पलकों में, नसों के समूह में, कान में और कपाल की हड्डी में रहने वाले दोषों को स्थान से गिराकर मुख से, नाक से तथा नेत्रों से निकाल देता है।) कषैले तथा कड़ुए रस वाले और स्नेह युक्त अञ्जन को रोपण अञ्जन कहते हैं। स्नेह तथा शीतल होने से रोपण अञ्जन वर्ण को उत्तम करता है और दृष्टि के बल को भी बढ़ाता है। (भा० प्र० ख० १)

मधुर रस युक्त और स्नेह युक्त अञ्जन स्नेहन कहलाता है (स्नेहन अञ्जन दृष्टि के दोष को

शुद्ध करने के लिए और दृष्टि को स्निग्ध करने के लिए उपयोगी है। भा० प्र० खं० १। अंजन तीक्ष्ण (लेखन) हो तो उसकी मटर (एक अंडी के बीज की बराबर) के समान गोली बनानी चाहिए और मध्यम (दृष्टि का बल बढ़ाने के लिए) अर्थात् तीक्ष्ण न हो, और कोमल भी न हो तो उसको १॥ (मटर के बराबर गोली बनानी चाहिए और कोमल (दृष्टि को स्निग्ध करने वाला) हो तो उसकी २ मटर के बराबर गोली बनानी चाहिए। आँख में यदि रसांजन अर्थात् रसरूप अंजन डालना हो तो तीन वायविडंग के बराबर डालना उत्तम है (एक वायविडंग के बराबर-भा० प्र० ख० १), दो वायविडंग के बराबर डालना मध्यम है और एक वायविडंग के बराबर डालना कनिष्ठ है। चूर्णरूप अंजन जो स्नेहन हो तो उसकी चार सलाई आँख में लगानी चाहिए, रोपण हो तो उसकी तीन सलाई और जो लेखन हो तो उसकी दो सलाई नेत्रों में लगानी चाहिए। आँजने की सलाई दोनों ओरके मुखों से सकुची हुई, चिकनी, आठ अंगुल लम्बी और उनके दोनों मुख मटर के समान गोल और वह पत्थर अथवा धातु की होनी चाहिए। स्नेहनांजन आँजना हो तो सोने अथवा चाँदी की, लेखन अंजन आँजना हो तो ताँबे, लोहे, अथवा पत्थर की सलाई होनी चाहिए और रोपण अंजन आँजना हो तो कोमल होने के कारण उसके आँजने के लिए अंगुली ही ठीक है।

काले भाग के नीचे आँख के कोये तक अञ्जन आँजे। हेमन्त ऋतुमें और शिशिर ऋतुमें मध्याह्न के समय अञ्जन आँजना चाहिए। ग्रीष्म और शरद ऋतु में पूर्वाह्न के समय अथवा अपराह्न के समय अञ्जन आँजना चाहिए। वर्षा ऋतु में बादलों के न होने पर तथा जब बहुत गरमी न हो उस समय अञ्जन आँजना चाहिए और वसन्त ऋतु में सदैव अंजन करना चाहिए, अथवा प्रातः और सन्ध्या दोनों समय अञ्जन आँजना उचित है, किन्तु निरन्तर न आँजे।

थका हुआ, बहुत रोया हुआ, भयभीत, मद्यपान किया हुआ, नवीन ज्वर वाला, अजीर्ण रोगी और जिसके मल मूत्रादि के वेग का अवरोध हो गया हो उनको अञ्जन नहीं लगाना चाहिए। (भा० म० २)। जिनको अञ्जन आँजने का निषेध किया है। उनके अञ्जन आँजे तो नेत्रों में लाली होती है, नेत्र सूजे से होते हैं, तिमिर, शूल, तथा दोषों का कोप होता है, और निद्रा का नाश होता है। (भा० प्र० ख० १ श्लो० ५८)

अञ्जन शलाका anjana-shalá á—सं० स्त्री० (A stick or pencil for the application of collyrium) सलाई, सुरमा लगाने की सलाई।

अञ्जना anjaná—सं० स्त्री० मादा हाथी, हथिनी। (A female-elephant)

अञ्जनादिः anjanádi—सं० स्त्री० मैनशिल और पारावत (कबूतर) की बीट का अञ्जन करें तो अपस्मार विशेषकर उन्माद का नाश हो। मुलहठी, हींग, वच, तगर, सिरस बीज, कूट, लहसुन, इन्हें बकरों के मूत्र में पीस नेत्राञ्जन करने से तथा नस्य देने से अपस्मार और उन्माद दूर होता है। पुष्य नक्षत्र में कुत्ते का पित्त लेकर अञ्जन करें तो अपस्मार दूर हो या उसी पित्त में घृत डालकर धूप दें तो अपस्मार (मृगी) दूर हो। चक्र० द० अपस्मार-चि०।

निर्मली, शंख, तेन्दू, रूपा, इन्हें स्त्री के दूध में काँसे के पात्र में घिस अञ्जन करें तो व्रणसहित नेत्र की फूली दूर हो। रत्न, शंख, दन्त (हाथी दाँत), धातु (रूपा), त्रिफला, छोटी इलायची, करञ्ज के बीज, लहसुन, इनका अञ्जन फूली के व्रण को दूर करता है तथा अव्रणशुक्र, गम्भीर व्रण शुक्र, त्वग्गत शुक्र इन्हें भी दूर करता है।

(बं० से० नेत्र रो० चि०।)

अञ्जनादिगणः anjanádi-ganah—सं० पुं० सौवीराञ्जन, रसाञ्जन, नागकेशरपुष्प, प्रियंगु, नीलोत्पल, उशीरमूल (खस), नलिन, मधुक और पुन्नाग। सु० सू० ३८ अ०। स्रोताञ्जन, सौवीराञ्जन, प्रियंगु, जटामांसी, पद्म,

रसौत, इलायची, मुलहठी प्रभृति द्रव्य विष और अन्तर्दाह तथा पित्तनाशक हैं । वा॰सू॰ १५ अ॰ । सुर्मा, फूल प्रियंगु, जटामांसी, सफेद कमल, नीलकमल, रसांजन, इलायची, मुलहठी, नागकेसर । यह गण विष अन्तर्दाह तथा पित्त-शामक है । वं॰ सं॰ द्रव्यगणाधिकारे ।

अञ्जनाधिका anjanádhiká-सं॰ स्त्री॰ (१) काली कपास का क्षुप । देखो-कालाञ्जनी । (२) अञ्जनी, लेपकारिणी । श॰ञ्जनाड्-वं॰ । हारा॰ । हे॰ च॰ ४ का॰ । क्षुद्रसूचिका ।

अञ्जनाम्भः anjanámbhah-सं॰ क्लो॰ अञ्जन जल, लोशन, चक्षु प्रसाधनार्थ औषधीय द्रव । लिक्विड कोलीरिअम् (Liquid collyrium), आई वाटर (Eye water) -इं॰ । वै॰ श॰ ।

अञ्जनिकः anjanikah-सं॰ पुं॰ गन्धरास्ना । वै॰ श॰ ।

अञ्जनिका anjaniká-सं॰ स्त्री॰ देखो-अञ्जनाधिका । डोंगरी । लु॰ क॰ ।

अञ्जनी anjaní-सं॰स्त्री॰ (१) कटुका (-की)-सं॰ कुटकी-हिं॰ । पिक्रोरहाइजा कुरोआ (Picrorrhiza kurroa)-ले॰ । (२) काली कपास । देखो-कालाञ्जनी । रा॰ नि॰ व॰ ४ । (३)-हिं॰ संज्ञा स्त्री॰ अञ्जननामिका । अञ्जन, यालिक, कुर्प, लोखण्डी (फा॰ इं॰ २ भा॰), लिम्ब (इं॰ मे॰ प्लां॰) मह॰ । काशमरम (फा॰ इं॰ २ भा॰ , कायमपूवृचेड्डि, केसरी-चेड्डि (इं॰ मे॰ प्लां॰)-ता॰ । अल्लि-चेड्डु-(चेट्टु) ते॰ । सुर्प (फा॰ इं॰ २ भा॰), लिम्ब-तोलि-कना॰ । वारी-काह, सेरू काय -सिं॰ । काशवा-मल॰ । अंजन, यालिक, लोखण्डी -बम्ब॰ । काली कुडी-कों॰ । मे॰ टिङ्क्टोरियम् M. Tinctorium, मेमीसीलोन ईड्युली (Memecylon Edule, *Roxb.*)-ले॰ । आयर्न वुड ट्री (Iron wood tree)-इं॰ । मे॰ कमेस्टिबल (Memecylon Comestible)-फ्रां॰ ।

मेलास्टोमेसोई वर्ग
(*N. O. Melastomaceae.*)

उत्पत्ति स्थान—पूर्वी व पश्चिमी प्रायद्वीप और लङ्का ।

वानस्पतिक विवरण—अञ्जनी के लघु वृक्ष अथवा झाड़ियाँ होती हैं, जो पर्वती भूमि में उत्पन्न होती हैं । "फ्लोरा ऑफ ब्रिटिश इण्डिया" में इसके द्वादश भेदों का वर्णन किया गया है । यह एक बृहत् झाड़ी है जिसमें चमकीली हरित वर्ण की पत्रावली और निम्न शाखाओं में नीलाभायुक्त बैंगनी रंग के पुष्प-गुच्छ लगते हैं । चौथाई इंच व्यास के फल लगते हैं । इसके सिरे पर चार पंखड़ी युक्त पुष्प-वाह्य-कोष (Calyx) लगा होता है । फल खाद्य हैं । किन्तु कसैला होता है । पत्ते १॥ से ३॥ इं॰ लम्बे, १ से १। इं॰ चौड़े, सम्पूर्ण (अखण्ड), दृढ़, चर्मोपम, पत्र-डंडी लघु, अत्यन्त अस्पष्ट पार्श्विक शिरायुक्त होते हैं । ये सूखने पर पीताभायुक्त हरितवर्ण के हो जाते हैं । स्वाद-अम्ल, तिक्त और कसैला ।

रसायनिक संगठन-पत्रमें क्लोरोफिल (हरिन्मूरि) के अतिरिक्त पीत ग्ल्युकोसाइड, राल (Resin), रञ्जक पदार्थ, निर्यास,श्वेतसार, सेब का तेज़ाब, बेडौल रेशे (Crude fibre) और शैलिका (silica)युक्त अनैन्द्रियक द्रव्य विद्यमान होते हैं ।

प्रयोगांश—मूल और पत्र ।

प्रभाव व प्रयोग—भारतवर्ष और लङ्का में इसके पत्र रङ्ग के लिए प्रयुक्त होते हैं । इसका विशेष प्रभाव रंग को पक्का करना है; इसलिए मदरास में चटाई बनाने वाले हड़, पतङ्ग और मजीठ के साथ इसे विशेष रूप से उपयोग में लाते हैं । गम्भीर रक्तवर्ण उत्पन्न करने में वे इसे फिटकिरी से उत्तम ख़याल करते हैं ।

अञ्जनी शीतल और संकोचक है । इसके पत्ते का शीत कषाय (२० भाग में १ भाग) आँख आने में संकोचक लोशन रूप से व्यवहार में आते हैं और सूज़ाक एवं श्वेत प्रदर में इसका

आभ्यन्तरिक उपयोग होता है। इसकी जड़ का क्वाथ (१० में १) १॥ तो० से ३॥ तो० की मात्रा में अत्यधिक रजःस्राव के लिए लाभदायी ख्याल किया जाता है, (डूरी०) ।

अञ्जनी की छाल का चूर्ण सुगन्धित द्रव्यों, यथा—अजवायन, (काली)मिर्च और जदवार प्रभृति के चूर्ण के साथ मिलाकर इसे कपड़े में बाँधकर मोच आने अथवा कुचल जाने में इसका सेक करें अथवा इसे लेप के काम में लाएँ। (त्रि० डाइमॉक) ।

डॉक्टर पीटर के वर्णनानुसार अञ्जनी पत्र बेलगाँव (दकन) में सूजाक के लिए बहुत प्रसिद्ध है। इस हेतु इसको खरल में कुचलकर उबलते हुए जलमें डाल इसका इन्फ्यूज़न (शीत कषाय) तय्यार करना चाहिए ।

अञ्जबार } **अञ्जुबार** } anjabára—अ० किसी २ ग्रंथ में अञ्जुबार और अञ्जिबार भी आया है। अञ्जबार होज़र, बंदक-फ़ा० । यु० म० । सिरोमती —सं० । इं० मे० मे० । मचूटी, इन्द्राणी, केसरु, कुवर,निसोमली, बीजबन्द-हिं० । मस्लून, बिलौरी अञ्जबार-पं० । द्रोब-काश० । इन्द्रारू-सिंध । पॉलीगोनम् अविक्युलरी Polygonum Aviculare, पॉ० बिस्टॉर्टा P. Bistorta *Linn.*, पॉ० विविपरम P. viviparum–ले० । नॉटग्रास knot grass–इं० । फॉ० इं० । इं० मे० मे० । इं० मे० प्लां० । मेमो० । रिनौवी ओइसी Renouee oiseaux–फ्रां० ।

पॉलिगोनेशिई (अञ्जबार) वर्ग

(*N. O. Polygonaceae*)

उत्पत्ति स्थान—उत्तरी एशिया और यूरोप । वहीं से यह भारतवर्ष में लाया गया । फा० इं० ३ भा० । पश्चिमी हिमालय, काश्मीर से कुमायूँ तक, रावलपिण्डी और डेकन । इं० मे० प्लां० ।

इतिहास—सर्व प्रथम यूनानी ग्रन्थों में अंजुबार का वर्णन किया गया है। अस्तु, दीसक़रीदूस (Dioscorides) और प्लाइनी (Pliny) के ज़माने में यह रक्तावरोधक मूत्रभेदनीय तथा मूत्रल प्रभाव हेतु उपयोग में आता था। जलनयुक्त आमाशयिक वेदना में इसके पत्र को स्थानीयरूप से प्रयोग में लाते थे और मूत्राशय एवं विसर्प संबन्धी व्यथा में इसका लेप करते थे। इसका रस तिजारी और चौथिया प्रभृति ज्वरों में, ज्वर चढ़ने से थोड़ी देर पहिले विशेषरूप से उपयोग में आता था। स्क्रिबोनिअस (Scribonius) का कथन है, कि चूँकि यह प्रत्येक स्थान में पाया जाता है इस लिए इसको पालिगोनोस (Polygonos) कहते हैं। इब्नसीना तथा अन्य अरबी हकीम इसको असाउर्राई तथा अज़्बार नाम से पुकारते हैं। इनके विचार से अञ्जुबार शीतल एवं रूक्ष है तथा वर्णन क्रम में वे इसके उन्हीं गुणों का उल्लेख करते हैं जिसका वर्णन यूनानियों ने सर्व प्रथम अपने ग्रंथों में किया। फ़ारसी लेखक इसको हज़ार बन्दक कहते हैं। आयुर्वेदिक ग्रंथों में इसका कहीं भी वर्णन नहीं मिलता। हाँ! भारतवर्ष में हकीम लोग अबभी इसको उन्हीं रोगों में वर्तते हैं जिनका ज़िकर दीसक़रीदूस ने किया है।

वानस्पतिक विवरण—इसका वृक्ष आदमी के कद के समान होता है। मूल तन्तुमय, लम्बा अत्यन्त कठोर, कुछ कुछ काष्ठीय; निम्न भाग शाखी एवं सिरा साधारण, श्यामाभायुक्त रक्त एवं विषम होती है। प्रकाण्ड अनेक, प्रत्येक दिशा में फैला हुआ,साधारणतः दण्डवत पड़ा हुआ,(नत) बहुशाखा युक्त, गोल, धारीदार अनेक ग्रन्थियों पर पर्णसंयुक्त होता है। पत्र-एकांतरीय अर्थात् विषमवर्ती, डंठल युक्त, मुश्किलसे एक इंच लम्बा, अण्डाकार या बर्छीके आकारका,सम्पूर्ण (अखंड), अधिक कोशीय, एक नस से युक्त, किनारेके सिवा चिकना, विभिन्न चौड़ाई वाला, पदार्थ अधिक चर्मोपम, वर्ण कुछ कुछ धूसर अथवा नीला और डंठल की ओर गावदुमी होता है। पुष्प श्वेत गंभीर रक्त तथा हरित वर्ण से चित्रित होता है। बीज-त्रिकोणाकार चमकीले और काले रंग के होते हैं।

प्रयोगांश जड़ (अधिकतर जड़ की छाल, अथवा जड़के रेशे) उपयोगमें आती है। **स्वाद**–फीका। **प्रकृति**–३ कक्षा में ठंडी और रूक्ष है। **हानिकर्ता**–शीत प्रकृति को। **दर्पनाशक**–सोंठ, शहद। **प्रतिनिधि**–ज़रिश्क और गिले अरमनी। **मात्रा**–४ से ६ मा० तक।

रासायनिक संगठन—अञ्जुबार सत्व अर्थात् पॉलिगोनिक एसिड (Polygonic acid), कषायाम्ल (Tannic acid), माज्वाम्ल (Gallic acid), श्वेतसार और कैल्सियम् आक्ज़ेलेट (Calcium oxalate)।

गुण, कर्म, प्रयोग—(१) सम्पूर्ण अवयवोंके रुधिरका रुद्धक, फुप्फुस और विशेष करके वक्षःस्थल के रुधिर का रुद्धक है। (२) पित्त और रुधिर के दाह का शमनकर्ता। (३) बवासीर सम्बन्धी रुधिर, प्रवाहिका, वमन और जीर्णातिसार (पुराने दस्त) का बद्धक और नज़लाओं का रुद्धक है। (४) इसका चूर्ण क्षतों पर बुरकने से रक्तस्राव रुककर वे भरने लगते हैं। (निर्विषैल).

अञ्जुबार श्लेष्मानिस्सारक, मूत्रविरजनीय, बल्य, सङ्कोचनीय और परियायज्वरनिवारक है। इसकी जड़ का क्वाथ (१० भाग में १ भाग) २॥ तो० से ५ तो० की मात्रा में जनशन (Gentian) के साथ विषम ज्वर (Malaria), पुरातन अतिसार और अश्मरी रोग में तथा रक्तकेशिका सम्बन्धी कास, कुकुरखाँसी और अन्य फुप्फुसीय रोगों में भी व्यवहृत होता है। इसका रस भी लाभदायक है। श्वेतप्रदर तथा व्रणों में इसका क्वाथ पिचकारी द्वारा (व्रण धोनेमें) व्यवहृत होता है तथा मसूड़ों की सूजन और कव्वा लटक आने पर इसकी कुल्ली करना सर्वोत्तम है। इं० मे० मे०।

नासिका प्रभृति से रक्तस्राव को रोकने के लिए अञ्जुबार उपयोग में आता है। वि० डाइमॉक

इसकी सूखी जड़ का वेदनाशमन हेतु वाह्य प्रयोग होता है। (स्टुवर्ट).

अञ्जरह anjarah–फ़ा०, अ० देखो–अञ्जुरह।

अञ्जरा anjará–फ़ा० सिरियारी, सिरवाली–हिं०।

अञ्ज़रान áanzarána अ० आज़रबू। लु०क०।

अञ्ज़रूत anzarúta–अ० सिर०,अञ्ज़रूत। गूज़र–बम्ब०। यह गूज़द (फ़ा०) शब्द का अपभ्रंश है। "मख़ज़नुल् अद्वियह" के लेखक मीर मुहम्मदहुसैन महाशय के विचार से इसके पर्याय निम्न प्रकार हैं, यथा–कुहल फ़ारसी (फ़ारसी अञ्जन), कुहल किर्मानी (किर्मानी अञ्जन)–अ०। अञ्जदक, कुञ्जुद, अगरधक, कुन्दरू–फ़ा०। लाई, लाही–हिं०। ऐस्ट्रागैलस सर्कोकोला (Astragalus sarcocolla, *Dymock.*)

लिग्युमिनोसी अर्थात् शिम्बी वर्ग

(*N. O. leguminosæ.*)

उत्पत्तिस्थान—फ़ारस।

इतिहास—यद्यपि पूर्वी देशों में आज भी अञ्ज़रूत अधिकता के साथ उपयोग में आता है, तो भी वर्तमान कालमें लोग युरूपमें मुश्किल से इसे जानते हैं। दीसक़ूरीदूस (Dioscorides) हमें बतलाता है कि यह एक फ़ारसी वृक्ष का गोंद है जो चूर्ण किए हुए लोबान के सदृश और सुर्खीमायल तथा कुछ कुछ तिक्त स्वाद युक्त होता है। इसमें ज़ख़्मों के बन्द करने और चक्षुःस्रावरोधक गुण हैं। यह प्रस्तरों(प्लास्टरों) का एक अवयव है इसमें गोंदों का मिश्रण करते हैं।

प्लाइनी (Pliny) उन्हीं गुणों का वर्णन करता है और इतना विशेष बतलाता है कि चित्रकार इसकी बड़ी इज़्ज़त करते हैं। इब्नसीना कहते हैं कि यह बिना ख़राशके व्रणों को पूर्ति करता एवं अंकुर लाता है। प्रस्तर (प्लास्टर) रूप से उपयोग करने पर यह समस्त प्रकार के शोथों को लयकर्ता है।

मसीह इतना विशेष बतलाते हैं कि यह तीक्ष्ण रेचक है और कफ एवं विकृत दोषों को निकालने के लिए उत्तम है। हाजी ज़ैनुल् अत्तार कहते हैं कि इसका फ़ारसी नाम गूज़द है और जिस वृक्ष से यह निकलता है वह शीराज़ के

निकट शब्बानकारह् की पहाड़ियों में पाया जाता है। उक्त निर्यास का अन्य नाम ज़बुदानह् है। जब यह पहिले निकलता है तब श्वेत होता है, किन्तु वायु में खुले रहने पर लाल होजाता है।

अर्वाचीन लेखकों में "मख़ज़नुल् अद्वियह" के लेखक मीर मुहम्मदहुसैन हमें बतलाते हैं कि इस्फ़हान में अञ्ज़रूत को कुञ्जुद और अगरधक कहते हैं (शेषके लिए देखो-पर्याय सूची)। आप के कथनानुसार यह शाइकह् नामक काँटेदार वृक्ष का गोंद है जो ६ फीट ऊँचा होता है और जिसके पत्र लोबान पत्र सदृश होते हैं। इसका मूल निवास स्थान फ़ारस और तुर्किस्तान है। पुनः वे उक्त औषध का ठीक विवरण देते हैं।

आयुर्वेदीय ग्रन्थों में इसका कहीं भी जिकर नहीं पाया जाता।

वानस्पतिक विवरण—सार्कोकोला के न्यूनाधिक सामूहिक एवं अत्यन्त विचूर्णित दाने होते हैं। यह अपारदर्शक अथवा अर्धस्वच्छ होता है और गम्भीर रक्त से पीताभायुक्त श्वेत अथवा धूसर वर्ण में रूपान्तरित होता रहता है। इसमें मुश्किल से कोई गन्ध पाई जाती है। इसका स्वाद अत्यन्त कड़ुआ और मधुर होता है। उत्तप्त करने पर यह फूलता है और जलते समय इसमें से जले हुए शर्करा की सी गन्ध आती है। सार्कोकोला (अञ्ज़रूत) निर्यास फ़ारसी बन्दरगाह बुशायर से थैलों में बम्बई आता है। इसके अन्य भागों का विवरण निम्न प्रकार है—

फल—डंठल छोटा, पतला, पुष्प-वाह्य-कोष अण्डाकार, घण्ट्याकार, भूसी संयुक्त, $\frac{3}{4}$ इञ्च लम्बा, ५ तंग विभाग युक्त (पञ्च सूक्ष्म खण्डयुक्त) और खुला हुआ होता है। इसके भीतर पुष्पदल (Petals) और एक अण्डाकार, सख़्त, तुण्डाकार, फली जो धान के इतनी बड़ी और जिसका वाह्य धरातल एक घने सुफेद वर्ण के रोवों से आवरित होता है। यद्यपि फली पक जाती है तो भी पंखड़ियाँ लगी रहती हैं। उनमें से सबसे ऊपर वाली फणाकार होती और फली के तुण्ड भाग को ढाके रहती है। फली द्विकपाटीय होती है, उभारकी सीवनसे लगा हुआ एक ओर धूसरवर्ण का उड़द सदृश बीज होता है, जिसका व्यास $\frac{1}{6}$ इञ्च होता और जो जल में भिगोने से फूलता और फट जाता है एवं अंज़रूत समूह में निकल पड़ता है। कुछ छीमियाँ पतनीय तथा निर्यासपूर्ण होती हैं।

प्रकाण्ड-अर्थात् तना—काष्ठीय, जिसमें असंख्य प्रकाश मय गट्टे होते हैं, कण्टकमय; काँटे $\frac{3}{4}$ से १ इंच लम्बे जो लघु शाखा सहित रोंगटों से आवरित होते हैं और जिन पर अञ्ज़रूत की पपड़ी जमी होती है।

पत्र—कहते हैं कि इसके पत्र लोबान पत्र सदृश होते हैं। (सर विलियम डाइमॉक)

प्रयोगांश—निर्यास।

रासायनिक संगठन—सार्कोकोलीन ६५·३०, निर्यास ४·६०, सरेशी पदार्थ—३·३०, काष्ठीय द्रव्य प्रभृति २६·८०। सार्कोकोलीन ४० भाग, शीतल जल तथा २५ भाग उबलते हुए जल में घुलनीय है। (गिबर्ट)

मात्रा—२। मा० से ४॥ मा० (४ रत्ती से १ मा०)। प्रकृति—दूसरी कक्षा के अन्त में उष्ण और उसी कक्षा के आरम्भ में रूक्ष। हानिकर्ता आंत्र को। ५ दिरम पिसा हुआ विशेषकर अभ्रक के साथ विष है। दर्पनाशक—कतीरा, बबूल का गोंद और रोग़न बादाम प्रभृति। प्रतिनिधि—इसके समभाग एलुआ और कुछ अधिक निशास्ता। मुख्य प्रभाव-व्रणाद्रवशोषक और नेत्ररोग को लाभ पहुँचाता है।

गुण, कर्म, प्रयोग—यद्यपि इसमें एक प्रकार की रतूबत भी होती है। जो इसकी खुश्की के साथ दृढ़ता पूर्वक मिली हुई हैं, किन्तु, तो भी खुश्की ग़ालिब रहती है। इसी कारण बिना क्रांतिकारी गुण एवं तीक्ष्णता के यह आर्द्रताशोषक है और इससे यह व्रणों को पूरित करता है, क्योंकि यह उस राध और उन पीत द्रवों को जो व्रणों को भरने नहीं देते नष्ट कर देता है। अपने लहेश के कारण व्रणों के किनारों को जोड़ देता है।

आँख आने को अन्त में लाभप्रद है, क्योंकि बिना कांतिकारिणी गुण एवं कष्ट के दोषों को लयकरता है और नेत्र की ओर बहकर आनेवाले द्रवों को रोकता है। संधियों से गाढ़े दोषों को दस्त द्वारा विसर्जित करता है; क्योंकि इसमें एक तिक्त अंश है जिसकी क्रिया में तस्वीन (खुरदरा कारित्व), नुज़ुज (परिपाक), तफ़तीह (स्रोतावरोधन) और तहलील (विलायन) समावेशित हैं। परन्तु किसी किसी के विचारानुसार उसकी यह क्रिया (गाढ़े दोषों का दस्त द्वारा निकालना) केवल इसकी ख़ासियत की वजह से है।

(नफ़ी०)

अन्जरूत रेचक और विकृत एवं श्लैष्मिक दोषों को लयकर्ता है। निशोथ तथा हड़ प्रभृति के साथ मिलाकर उपयोग में लाने से यह सर्वोत्तम प्रभाव करता है। अपस्मार में एरंड तैल के साथ मिलाकर भीतरी रूप से और नेत्र द्वारा जलस्राव होने पर इसका स्थानीय उपयोग होता है। संधिवातनाशन और कृमिघ्न प्रभाव हेतु इसका आभ्यन्तरिक प्रयोग होता है।

बृंहण प्रभाव हेतु मिश्रदेशीय स्त्रियाँ इसे भक्षण करती हैं। मात्रा आधा से २ मिस्क़ाल है। अधिक मात्रा में आंत्रीय ग्रंथ्यवरोध के कारण यह घातक सिद्ध होता है। अंजन रूप से उपयोग करने के लिए इसे गधी के दूधमें रगड़ना चाहिए; तत्पश्चात् इसको चूल्हे में यहाँ तक शुष्क करें कि यह हलका भुन जाय, पुनः घोंट कर अंजन प्रस्तुत करें। इसका प्लास्टर (प्रलेप) सम्पूर्ण प्रकार के शोथों को लयकरता है। प्याज़ के भीतर भरकर अग्नि पर भूनकर इसका रस कान में टपकाने से कर्णवेदना शमन होती है।

(मीर मु० हुसैन)

अञ्ज़रूत, श्वेत सीसा प्रत्येक २ भाग, निशास्ता ६ भाग इनको खूब घोटकर बारीक चाल लें। यह उत्तम अंजन प्रस्तुत होगा।

(तिब्बे अकबरी)

मोती, मूँगा जलाया हुआ और मिश्री समभाग के साथ आँख की सुफेदी को लाभदायक है। इसका पीना गर्भपातक और कृमिघ्न है। तरबूज के पानी में तर किया हुआ शरीर को बृंहण कर्ता है। यह वायु लयकर्ता, रोधउद्घाटक और श्लेष्मानिस्सारक है।

अञ्जरूत लेपन ओषधियों का एक प्रधान अवयव है। पारसी लोग इसके साथ रुई मिलाकर टूटी हुई अथवा मोच आई हुई अस्थियों तथा निर्बल सन्धियों में भी उनको सहारा देने के लिए इसका उपयोग करते हैं। साधारण लेपन योग निम्न है --

अञ्ज़रूत ८ भाग, जदवार १ भाग, एलुआ सकोतरी १६ भाग, फिटकरी ८ भाग, मेदालकड़ी ४ भाग, गूगल ४ भाग, लोबान ७ भाग और उसारह रेवन्द १२ भाग। इन समस्त औषधों का बारीक चूर्ण कर पुनः जल मिलाकर सिल बट्टा द्वारा इसकी लुगदी प्रस्तुत कर उपयोग में लाएँ। (वि० डाइमॉक)

अञ्जल anjala–खित्मी, खैरू। (See-Khitmi) लु० क०।

अञ्जलिः anjalih–सं० पुं० (१) प्रसृति द्वय (=१६ तो०); ३२ तो० (प० प्र० १ ख०)। (२) कुड़पः (वः) मान (=३२ तो०, ८ वा ४ पल)। रत्ना० नानार्थः। भा० उ० वाजी०। (३) अञ्जलिपुट, करसम्पुट, अँजुरी। प्रे० लत्रिकम्।

अञ्जलिका anjaliká–सं० स्त्री० (१) लज्जालुका। (२) क्षुद्रमूषिका। जटा०।

अञ्जलिकार anjalikára–ओषधि विशेष। कौटि० अर्थ०।

अञ्जलिकारिका anjalikáriká–सं० स्त्री० लज्जालुका, लज्जालु, छुईमुई। माइमोसाप्युडिका (Mimosa Pudica)–ले०। सेन्सिटिव प्लाण्ट (Sensitive plant)–इं०। रा० नि० व० ५। भा० पू० गु० व०। (२) वराहक्रान्ता, वाराहीकन्द–हिं०। लाइकोपोडिअम् इम्ब्रिकेटम् (Lycopodium imbricatum)–ले०।

अञ्जलिनी anjaliní–सं० स्त्री० लज्जालुका, छुईमुई–हिं०। देखो—लज्जालु। वै० श०। दी सेन्सिटिव प्लाण्ट (The sensitive plant)–इं०।

अञ्जलिपुटः,-पुटं anjaliputah,-putam –सं० पुं०,क्ली० (The Cavity formed by joining the hands together) कर सम्पुट। अञ्जलि।

अञ्जस,-सी anjas,-sí–सं० त्रि०, स्त्री० (Not crooked, straight) सरल, सीधा।

अञ्जस anjas–अ० अशुद्धतर, अत्यन्त अपवित्र (नजिस), बहुत पलीदा। म० ज०।

अञ्जायना पेक्टोरिस angina pectoris–इं० हृच्छूल।

अञ्जिवम् anjivam–सं० क्ली० प्रकर कामी। अथ०। सू० ६। ६। का० ८।

अञ्जिष्ठः,-ष्ठुः anjishṭhah,-shṭhuh–सं० पुं० (The sun) सूर्य्य।

अञ्जीरः anjirah–सं० पुं०, फ़ा०, हिं०, संज्ञा पुं० बं०, द०, अंजीर कों०, म०, गु०। मञ्जुलं (-लः), काकोदुम्बरिकाफलं, अंजीर (वृक्ष) –सं०। अंजीरी, गुलनार, ख़बार, बेरू, बेडू, अञ्जीर। इं० मे० मां०, मेमा०। (काक)डुमुर, अञ्जीर, बड़ पेयारा गाछ, आँजीर–बं०। भगवार, काक, कोक, फेड़, इञ्जर, फाग, किम्रि, फगोरू, फागू, फोग, खबारी, फेग्रा, थपुर, जमीर, धूरू, दूधी, दहोलिया, फगूरी, फगारी (मेमा०)-पं०। फगवार–पश्तो०। अंजीर, इञ्जर–अफ़गा०। फेम्री–राज०। थारा–म० प्र०। पेपरी, अञ्जीर –गु०। फगवार, थपुर–उ० भा० के मैदान। (इं०मे० मां०)। अञ्जीर–बम्ब०। शीमइ–अत्ति, तेन अत्ति ना०। शीमै-अत्ति, तेने-अत्ति, अंजूरु, मांडी पालू–तें०। शीम-अत्ति–मला०। बैंएडनैंड-करना०। शीमै-अत्ति–कना०। रट-अत्ति-का –सिं०। स-फानू–मी, तिम्बो-थान–दि, सिम्बो-सफान-सी-बर्मी। तीन, बलस–अ०। सीडियम पॉमिफ़ेरम् (Psidium Pomiferum, Linn.)-ले०। काला उम्बर-मं०। फिग् Figue-फ्रां०। फाइकस केरिका (Ficus carica, Linn.)–ले०। फिग (Fig) इं०।

अश्वत्थ वा वटवर्ग (अर्टिकेशिई)
(N. O. Urticaceæ)

उत्पत्ति स्थान—इसका मूल निवास स्थान फारस वा एशिया माइनर है। अब यह भारतवर्ष में भी बहुत होता है। अरबिस्तान, अफ़गानिस्तान तुर्किस्तान और अफ़रीका तथा बिलोचिस्तान और काश्मीर इसके मुख्य स्थान हैं।

वानस्पतिक विवरण—अंजीर गूलर की ही जाति का एक वृक्ष है। इसमें स्थूल, गूदादार, खोखला, नासपाती की शकल का एक आवरण (receptacle) होता है जिसकी भीतरी सतह पर सूक्ष्म फल समूह उत्पन्न होता है उक्त आवरण के सिरे पर एक छिद्र होता है। वह प्रथम (अपरिपक्वावस्था में) हरा, कठोर और चर्म सदृश होता है। कोई अस्त्र चुभाने पर उसमें से दुग्ध स्राव होता है। परिपक्वावस्था में वह मृदु एवं रसपूर्ण हो जाता तथा दुग्धीय रस शर्करा रस में परिणत हो जाता है। छिद्र घिरा हुआ एवं अनेक छिलकों से आवरित होता है। उसके निकट तथा अंजीर के भीतर नरपुष्प स्थित होते हैं, किन्तु, प्रायः उनका अभाव होता है अथवा उनका पूर्णविकास नहीं हुआ होता। नारी पुष्प आवरण के भीतर कुछ दूरी पर स्थित होते हैं जहाँ वे परस्पर गुथे हुए और डंठलयुक्त होते हैं, इनमें पंच पंखड़ी युक्त पुष्पकोष और द्व्यांशीय खुक्ल (Stigma) होता है। डिम्बाशय, जो साधारणतः एक कोषीय होता है, परिपक्व होने पर एक सूक्ष्म, शुष्क कठोर गिरी में परिवर्तित हो जाता है जिसे ही बीज ख़याल किया जाता है। (फार्माकोग्राफिया)।

इसके लगाने के लिए कुछ चूना मिली हुई मिट्टी चाहिए। लकड़ी इसकी पोली होती है। इसके कलम फागुन में काटकर दूर दूर क्यारियों में लगाए जाते हैं। क्यारियाँ पानी से खूब तर

रहनी चाहिएँ। लगाने के दो ही तीन वर्ष बाद इसका पेड़ फलने लगता है और १४ या १५ वर्ष तक रहता और बराबर फल देता है। यह वर्ष में दो बार फलता है। एक जेठ असाढ़ में और फिर फागुन में। माला में गुथे हुए इसके सुखाए हुए फल अफ़ग़ानिस्तान आदि से हिन्दुस्तान में बहुत आते हैं। सुखाते समय रंग चढ़ाने और छिलके को नरम करने के लिए या तो गंधक की धूनी देते हैं अथवा नमक और शीरा मिले हुए गरम पानी में फलों को डुबा देते हैं। भारतवर्ष में पूना के पास खेड़ शिवपुर नामक गाँव के अंजीर सबसे अच्छे होते हैं। पर अफ़ग़ानिस्तान और फ़ारसके अञ्जीर हिन्दुस्तानी अंजीरों से उत्तम होते हैं। यह दो तरह का होता है, एक जो पकने पर लाल होता है, और दूसरा काला।

प्रयोगांश—शुष्क आवरण अर्थात् (अंजीर)-

लक्षण—यह मृदु होता है इसके भीतर बहुत से कोष एवं बीज होते हैं। दबने से फल चपटे और बेकायदा हो जाते हैं। **वर्ण**--पीताभायुक्त धूसर, पर कोई कोई श्वेताभायुक्त रक्त व श्याम। **स्वाद**--मधुर।

वर्ण भेद से यह तीन प्रकार का होता है। यथा—

(१) पीत, (२) श्वेत और (३) श्याम। ब्रिटिश फार्माकोपिया के अनुसार स्मरना का अञ्जीर दवा के काम में आता है जो पीला होता है।

रासायनिक संगठन—**फल**—इसमें द्राक्ष शर्करा (Grape sugar) ६२ प्रतिशत, निर्यास, वसा और लवण होता है। शुष्क अञ्जीर में शर्करा, वसा, पेक्टोज, निर्यास, अल्ब्युमीन (अण्डे की सुफेदी) और लवण होता है। **दुग्ध**—में पेप्टोनकारी अभिषव (Peptonising ferment) होता है।

गुण धर्म व प्रयोग

आयुर्वेद में इसे शीतल, स्वादु, गुरु, रक्तपित्त, वात, क्रिमी, शूल, हृत्पीड़ा, कफ और मुख की विरसता नाश करने वाला कहा है। मद० व० ६।

अञ्जीर अत्यन्त शीतल, तत्काल रक्तपित्त नाशक, पित्त और शिरोरोग में विशेष करके पथ्य है तथा नाक से रुधिर गिरने को बन्द करता है।

अञ्जीर भारी, शीतल, मधुर, वातनाशक, रक्तपित्त हारी, रुचिकारी, स्वादु, पचने में मधुर तथा श्लेष्मा और आमवातकारक है एवं रुधिर विकार को दूर करता है। बृ० नि० र०।

यूनानी ग्रन्थकार इसे (ताजा अञ्जीर) १ कक्षा में उष्ण और दूसरी में तर मानते हैं। **हानिकर्ता**—यकृत, आमाशय और अधिकता से खाना दाँतों को। **दर्पनाशक**—बादाम और मास्तिर। **प्रतिनिधि**—चिलग़ोज़ा और दाख।

ताजा अञ्जीर मृदुकर्ता, पोषक और शीघ्रपाकी है। कच्चा अञ्जीर अत्यन्त जाली (कांतिकारी) है; क्योंकि इसमें दुग्ध बहुत ज्यादा होता है और पार्थिवांश की अधिकता के कारण यह सर्दी की ओर मायल है। शुष्क अञ्जीर शीतोत्पादक है। जलांश की न्यूनता के कारण यह १ कक्षाके अन्तमें उष्ण और सूक्ष्म है। इससे पतला खून उत्पन्न होता है जो बाहर की ओर गति करता है। अञ्जीर सम्पूर्ण मेवों से अधिक शरीर का पोषण करता है; क्योंकि पूर्व कथनानुसार जलांशाधिक्य के अतिरिक्त पार्थिवांश की अधिकता भी है। भली प्रकार पका हुआ अञ्जीर तक़रीबन् निरापद, होता है; क्योंकि इसमें वह तीक्ष्ण दुग्ध जो इसमें होता है, नष्ट हो जाता है और इसके पार्थिवांश में समता स्थापित हो जाती है।

अधिक गूदादार अञ्जीर शारीरिक दोषों का अधिक परिपाक करता है। क्योंकि गरम व तर होने के कारण दोष परिपाककारी (मुंज़िज्) है। इसके गूदे में स्नेहोष्मा विशेषकर होती है। इसी कारण अधिक गूदे वाला अञ्जीर अधिक परिपाक करता है।

इसमें अन्तिम कक्षा की कुव्वते तलय्यन (दोष मृदुकारी शक्ति) है; क्योंकि इसकी उष्मा रतूबतों

के बहाने पर अधिकार रखती है। परन्तु, शुष्कता उत्पन्न करने पर इसका कोई अधिकार नहीं होता अर्थात् यह शोषक गुण रहित है। यह स्वेदजनक एवं उत्तापशामक है।

अञ्जीर कान्तिदायक है; क्योंकि यह सूक्ष्म शोणित उत्पन्न करता है और उसको बहिर्भाग की ओर गति देता है। अपनी रतूबत, उष्मा और सूक्ष्मता के कारण इसका लेप फोड़ों को पकाता है।

अपनी तीक्ष्णता और मधुरता द्वारा आमाशय को उत्तप्त करने के कारण यह उष्ण प्रकृति वालों को तृषान्वित करता है और उस पिपासा को जो खारी श्लेष्मा (बल्ग़मशोर) के कारण उत्पन्न हुई होती है उसको शमन करता है; क्योंकि यह बल्ग़म (श्लेष्मा) को पिघलाता एवं पतला करता और काटता छाँटता है।

अञ्जीर पुरानी खाँसी को लाभ पहुँचाता है; क्योंकि यह खाँसी केवल बल्ग़म से उत्पन्न होती है और अञ्जीर बल्ग़म को पिघलाता या नुज़ुज (पका) देता एवं तहलील (लय) करता और दोषों से शुद्ध करता है।

अपनी रोधउद्घाटक तथा कान्तिकारिणी शक्ति के कारण यह मूत्रविरजनीय है तथा यकृत एवं प्लीहा के रोध का उद्घाटक है।

क्योंकि यह तीक्ष्ण मलों को त्वचा की ओर प्रक्षेपित करता है; अस्तु मूत्र उनसे रहित होता है, जिससे वस्ति में मूत्र सम्बन्धी कोई कष्ट नहीं होता। इससे सम्भव है कि मूत्र चिरकाल तक वस्ति में बिना किसी कष्ट के बन्द रहे।

यह वस्ति और वृक्क प्रत्येक के लिए उपयुक्त है, क्योंकि यह कान्तिप्रदायक है एवं दोनों के मलों को मूत्र द्वारा विसर्जित करता तथा उनको त्वचा की ओर मायल कर देता है। निहार मुँह खाने से यह अन्न प्रणाली को खोलने में आश्चर्य-जनक लाभ दिखलाता है।

जब इसे अखरोट अथवा बादाम के साथ खाया जाता है तब यह आहार से मिश्रित नहीं होता, जिससे इसकी वैयक्तिक शक्ति टूटने नहीं पाती, क्योंकि उनकी चिकनाई अञ्जीर के प्रदाह को जो तीक्ष्ण दुग्ध के कारण होता है, तोड़ देती है। अखरोट के साथ इसका खाना अधिक पुष्टिकारक है।

अंजीर ग़लीज़ (स्थूल) आहार के साथ अत्यन्त रद्दी होता है। क्योंकि वह इसको शरीर के बाह्य भाग की ओर गति देगा। अतः इससे बाह्य चेहरे में रोध एवं अन्य रोग होजाएँगे।

इसका दुग्ध तीक्ष्णता के कारण रेचक है और रक्त एवम् दुग्ध को जमा देता है। क्योंकि इनके द्रवत्व को लय एवम् शुष्क कर देता है। यदि रक्त व दुग्ध जमे हुए हों तो उनको पिघला देता है क्योंकि यह अपनी तीक्ष्णता एवम् उत्ताप से दोनों के घनांश को पिघला देता है।

(नफ़ा०)

यह वायु को लयकर्ता, अपस्मार (मृगी), पक्षवध और बहुधा कफ के रोगों को लाभकर्ता, प्रकृति को मृदु कर्ता, क्रम क्रम से रेचनकर्ता, रोध, प्लीह, शोथ, बहु मूत्रता और वृक्ककी कृशता को हरण करता है। इसका शर्बत कास को गुण कर्ता है। शुष्क सर्व कर्मों में हीन है। इसका मुख्य प्रभाव शरीर को स्थूल करना और कसीरुलग़िज़ा (जिसका अधिक भाग शरीर का भाग बने, जिससे अधिक रक्त बने) है, विशेष-कर उस अवस्था में जब इसे सौंफ के साथ ४० दिवस पर्यन्त सुबह को खाएँ।

बादाम और पिस्तेके साथ भक्षण करनेसे बुद्धि-वर्द्धक है। सुदाब के साथ विषघ्न, कुसुम बीज (कुसुम्भ) और बोरहे अरमनी के साथ विरेचन और अखरोट के साथ विशेष कर कामोद्दीपक है। इसका लेप खनाज़ीर को लाभप्रद है। इसका दुग्ध चक्षुओं में लगाना मोतियाबिन्द के लिए लाभदायक है। (बु० मु०, मु० आ०)

अञ्जीर पथ्य सहज में पच जाने वाला और औषध रूप से उपयोग करने पर वृक्क एवं वस्ति संबन्धी अश्मरियों का नाश करने वाला और यकृत तथा प्लीहा के अवरोधों को दूर करने वाला है। यह गठिया एवं अर्श चिकित्सा में

व्यवहृत है। मुख व्रण में इसका दूध लगाया जाता है। बच्चों के यकृत रोग में इसका उपयोग लाभदायक है। शुष्क अञ्जीर, बादाम की गुद्दी, पिस्ता, इलायची छोटी, चिरोंजी, बेदाना, शकर इन सबको समभाग लेकर चूर्ण बनाएँ और उसमें किञ्चित् केशर मिलाकर पुनः उसे आठ रोज तक गोघृत में डुबो रक्खें। **मात्रा**—२ तो० प्रति सुबह। **गुण**—अत्यन्त पुष्टिकारक एवं कामोद्दीपक।

२ या ४ ताजे अञ्जीर और थोड़ा सा शर्करा चूर्ण इन दोनों को मिलाकर रात्रि में ओस में खुला हुआ रक्खें और सवेरे इसे खाएँ। इसी प्रकार पक्षभर करें। **गुण**—शारीरिकदाहशामक, निर्बल मनुष्य जिनके ओष्ठ, ज़बान और मुख चिड़चिड़ाते हों उनके लिए ताजा अंजीर उत्तम बलवर्द्धक औषध है। इं० मे० मे०।

विष्टब्धता, वस्ति तथा फुफ्फुस व्याधि में पथ्य रूप से इसका विशेष उपयोग होता है। (इं० मे० प्लां०)

डॉक्टरी मत

ब्रिटिश फॉर्माकोपिया में अंजीर ऑफिशल है। प्रभाव–मृदुभेदक या कोष्ठमृदुकारी। यह कन्फेक्शियो सेना में पड़ता है। प्रयोग यह सुस्वादु और पोषक मेवा है। साधारण विष्टब्ध रोग में इसके कुछ दाने निहार मुँह खाने से कब्ज़ दूर हो जाता है। किन्तु, इसके बीज आंत्र में किंचिद्घर्षण करके कुछ मरोड़ उत्पन्न करते हैं।

अञ्जीरी anjírí–हिं० संज्ञा स्त्रो० खबार, गुलनार, बेड़, बेड़। फाइकस पामेटा (Ficus Palmata, *Forsk.*)–लेo। भगवाड़, काक, कोक, हेड़, इंजर, फाग, किर्मी, फगोरू, फागू, फोग, खबारी, फेग्रा, थपुर, जमीर धूड़, धूड़ी, दहूलिया–पं०। फगवार–पश्तु०। अंजीर, इंजर –अफ़०। केम्री–राजपु० धौरा–म० प्र०। मेंपरी–गुज०। भगवार, थपुर–(ऊर्ध्व भारतीय मैदान)। इं० मे० प्लां०।

वटादि वर्ग

(*N. O. Urticaceæ.*)

उत्पत्तिस्थान—उत्तर पश्चिम भारतवर्ष, पूर्वीय सिन्धु नदी से लेकर अवध पर्यन्त, हिमालय पर्वत (३००० फीट की ऊँचाई पर) और आबू पर्वत।

उपयोग—इसके फलमें मुख्यतः शर्करा तथा लुआब वर्तमान होते हैं, तदनुसार यह स्नेहजनक एवम् कोष्ठ मृदुकर प्रभाव करते हैं। कोष्ठबद्धता (विबन्ध), फुफ्फुस एवम् वस्ति रोगों में यह मुख्यकर पथ्य वा आहार रूप से व्यवहार में आते हैं। इनका पुल्टिस रूप में भी प्रयोग होता है। (Punjab Products.)

अञ्जीरे अहमक़ anjíre-ahmaqa फ़ा० गूलर, गूलर–हिं०। फाइकस ग्लोमरेटा Ficus glomerata, *Roxb.*(Fruit of-)–लें०।

अञ्जीरे आदम anjíre-ádama–फ़ा० गूलर, गूलर–हिं०। किसी किसी ने अन्य फल का नाम लिखा है जिसको हिन्दी में "कलह" कहते हैं। यह काबुलके पर्वतों पर उत्पन्न होता है। हकीम अली गोलानी के कथनानुसार एक भारतीय वृक्ष का फल है जो इन्द्रायन के समान गोल और रक्त वर्ण का होता है। लु० क०।

अञ्जीरे दश्ती anjíre-dashtí–फ़ा० काकोदुम्बरिका सं०। कटूमर, कठूम्बरी, कठगूलर, जंगली अञ्जीर–हिं०। देखो–कटुम्बर। Ficus oppositifolia, *Roxb.* (Fruitof–) –लें०। लु० क०। स० फ़ा० इं०।

अञ्जीरेनैपाल anjíre-naipála–यज्ञडाल–नैपा०।

अञ्जीरे बग़्दादी anjíre-baghdádí फ़ा० अखरोट वृक्ष के बराबर लम्बा एक वृक्ष है जिसके पत्ते चिनार पत्र सदृश और फल अञ्जीरके समान होते हैं। रुक्ऽ अ यमानी (देखो) का फल। लु० क०।

अञ्जीरे यमन anjíre-yamana-फ़ा० अंजीरे बग़्दादी। लु० क०।

अञ्जीलक anjílaka–माज़न्दरानी ख़ुब्बाज़ी का पौधा। लु० क०।

अञ्जीश anjísha-सिराजुल् क़ुत्रुब। लु० क०।

अञ्जुकक anjukak–फ़ा० Pyrus comm-

unis, *Linn.*)-लें० । अन्नकक, कुतुम हिंदी ।

अञ्जुदान anjulán-काश० हींग, हिंगु-हिं० । Assafoetida-फा० इं० ।

अञ्जुबार anjubár-अ० मीरोमनी-सं० । देखो-अञ्जबार । Polygonum aviculare.

अञ्जुबारे रूमी anjubáre-rúmí—अ० प्रसिद्ध । यह फ़ारस से भारतवर्ष में लाया जाता है । यह एक वृक्ष की जड़ की छाल है जो मोटी, सङ्कोचक और ललाई लिए धूसर वर्ण की होती है । फा० इं० ।

अञ्जुरक anjurak- मर्ज़ञ्जोश । लु० क० ।

अञ्जुरतुस्सौदाअ anjuratussoudáa-अ० स्याह (काली) उटङ्गन या एक घास है जो नाग शुद्धि तथा उसके हल करने में काम आता है ।

अञ्जुरह anjurah-फ़ा० क़रीज़, क़रीज़ुल् कल्ब, मुजर्रबुल्कलाब अ० । कुर्नह-शीराज़ । कर्जीन-तु० ! उटञ्जन, उटङ्गन-हिं० । फा० इं० ३ भा० । मु० अ० । म० अ० । अर्टिका पिल्युलिफरा Urtica pliulifera, *Linn.*) एक बूटी के बीज हैं जो अलसी या तालमखानाके सदृश होते हैं । किसी किसी के मतमें अञ्जुरह और उटङ्गन भिन्न भिन्न बीजे हैं ।

अञ्जुली anjulí- } -हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०]
अञ्जुरी anjuri- } अंजलि । दे०-अञ्जली, अँजली ।

अञ्जुसा anjusá-यु० रतनजोत । Alkanet लु० क० । फा० इं० ।

अञ्जूरक anjúrak-फ़ा० (१) रुतैला हिं० । मकड़ी का बड़ा भेद । लु० क० । (२) मर्ज़ञ्जोश ।

अञ्जूरू anjúrú-तै० अञ्जीर (Ficus carica, *Linn.*) स० फा० इं० ।

अञ्जूसा anjúsá-यु० रतनजोत । (Alkanet) लु० क० ।

अञ्जेना anjená-कना० सुर्मा, अञ्जन । Antimonii Sulphuretum.

अञ्जेलिका आर्कैञ्जेलिका angelica-archangelica-लें० । सुंबुल् ख़ताई । बालछड़भेद । इं० हैं० गा० ।

अञ्जेलिका गार्डेन angelica-garden-इं० सुंबुल् ख़ताई । बालछड़भेद । इं० है० गा० ।

अञ्जेलिका ग्लोका angelica-glauca, *Edgw.*-लें० । चोरा या चूनरा-पं० । मेमो० । यह औषध तथा भोजन के काम में आती है । प्रयोगांश- जड़ या पौधा ।

अञ्जेलिका रूट angelica-root-इं० बीख सुंबुल् ख़ताई । अंगलीनह् । बालछड़ मूल ।

अञ्जेलिका सीड angelica-seed-इं० तुख़्म सुंबुल् ख़ताई । बालछड़ बीज ।

अञ्जेलिम् angelim-इं० जोंकमारी । जैंगनी । फा० इं० ।

अञ्जेलिम् अमरगासो angelim-amargoso -इं० अरारोबा । (Araroba) फा० इं० १ भा० ।

अञ्जेलिम् आर्वेन्सिस angelim-arvensis -लें० । जोंकमारी । जैंगनी । फा० इं० ।

अञ्जेली वुड anjelly-wood-इं० यह एण्टिएरिस हिर्स्युटा (Antiaris hirsuta) नामक वृक्ष से प्राप्त होता है । इसको दक्षिण भारतवर्ष में अञ्जेली वुड और मालाबार में अयानी कहते हैं । वहाँ यह अधिकता के साथ होता है । फा० इं० ३ भा० ।

अञ्जोह anjoh-अ० ऊद, अगर । (Aloe wood.) लु० क० ।

अञ्जनक कल्ल anjanak-kalla-मल० सुर्मा । अञ्जनम् (Antimonii Sulphuretum-)लें० । स० फा० इं० ।

अज्म-ज़बीब āajma-zabíba-अ० मुनक्का ।

अज़्मोरा āzmora-बरब० मकोय (Solanum nigrum).

अटकुड़ा aṭakurá-सन्ताल० तिक्त इन्द्रजौ । देखो—इन्द्रजौतिक्त । (Wrightia Tomentosa, *Rœm.* & *schult.*) -लें० । इं० मे० मां० ।

अटक aṭakka-मल० सुपारी-हिं०। Areca Catechu, *Linn.* (Nut of--Betel nut.)-ले०। स० फा० इं०।

अटक्का-मणि aṭakká-maṇi-मल० मुण्डी। (Sphæranthus hirtus, *Willd.*) स० फा० इं०।

अटदी aṭadí-ने० पीतल, पित्तल (Brass). इं० मे० मे०।

अटभूषण aṭabhúshaṇa-सं० क्लीं० हड़ताल Orpiment (Trisulphuret of Arsenic) लु० क०।

अटरू aṭarú-सं० अड़ूसा (Justicia adhatoda).

अटरूषः aṭarúshah }
अटरुषः aṭarushah } -सं० पुं० अड़ूसा, वासक वृक्ष (Adhatoda Vesica, *Nees.*) र० सा० सं० सूतिकारि रस और कन्दर्पसार तैल। वा० चि० २ अ०। देखो-वासकः।

अटरूषः aṭarúshah }
अटरूषकः aṭarúshakah } -सं० पुं० (१) वासक वृक्ष, अड़ूसा। र० मा०। च० द०, रक्तपित्त चि०। (२) आड़ू। (३) अरलू। (४) महानिम्ब। शा० श०। इं० मे० मे०।

अटविः aṭavih }
अटवी aṭaví } -सं०स्त्री० (A forest, Wood.) अरण्य, वन।

अट (द)वी-अत्ति aṭaví-atti-कना० जंगली गूलर-हिं०। Ficus oppositifolia, *Roxb.* (Fruit of.)

अटवी जम्बि (म्बी, म्भी)रः aṭaví jambi,-mbí,-mbhirah-सं० पुं० जंगली निम्बू -हिं०, द०। एटलेंटिया मोनोफाइला (Atlantia Monophylla, *Corr.*); ए० फ्लोरिबण्डा (A. floribunda, *Rheede.*); लाइमोनिया मोनोफाइला (Limonia monophylla, *Linn.*)-ले०। वाइल्ड लाइम (wild lime)-इं०। मलङ्गनार (इं० मे० मे०)-द०। मतङ्गनार, मखुर, माकड़-लिम्बु-महा०। अडवी-निम-ते०। कटइलुमिच्चई, काडे-इलुमिच्चम-परम, कट्-इलिमिचम्, कट्यालु-ता०। कटुनिम्बे-गिडा, कनिम्बे, अडवी-निम्ब-कना०। नरगुर्नी-उ ड़ु०। मलनारङ्गा, मले-नारकम-मल०। मातङ्गनर-द०, कों०। चोर-निम्बु, इंद-निम्बु-कों०। ओदी-निम्बु -गु०।

नागरङ्ग वर्ग

(*N. O. Aurantiaceae.*)

उत्पत्ति स्थान—पूर्वीय बङ्गदेश, दक्षिण-भारत, लङ्का, सिलहट, खसिया पर्वतमूल, सम्पूर्ण पश्चिमी प्रायद्वीप, कारोमण्डल तथा कोंकन से दक्षिणान्त्य।

वानस्पतिक वर्णन—अटवी जम्बीर एक विशाल, कण्टकमय, आरोही झाड़ी है जो पश्चिमी प्रायद्वीप तथा सिलहट की पहाड़ियों पर सामान्य रूपसे पाई जाती है। इसके पत्र नारङ्गी पत्रवत् सुगन्धित होते हैं। फल गोलाकार, पीले लगभग १ इञ्च मोटे (व्यासमें) और झिल्लीदार परदे द्वारा चार कोषों में विभाजित होते हैं। एक कोष साधारणतः पतनशील होता है। मज्जा (गूदा) नीबूवत्, परन्तु अति न्यून होता है। प्रत्येक कोष में $\frac{3}{4}$ इञ्च लम्बा और $\frac{1}{2}$ इञ्च चौड़ा एक बीज होता है उसके एक उन्नतोदर (उभरा हुआ) और दो चिपटे पृष्ठ (नारंगी के फाँक की तरह) होते हैं। फलत्वक् में नागरङ्ग त्वक्वत् अल्प (निर्बल गंध एवं असंख्य तैल की ग्रंथियाँ होती हैं। देहाती लोग इसके बीज को जो ताजा होने पर अत्यन्त सुगन्धियुक्त होता है, चूर्ण कर इसे मीठे तैल (तिल तैल) में छोड़ कर निचोड़ लेते हैं। फलतः इससे एक गम्भीर हरितवर्ण का प्रिय गंधयुक्त तैल प्रस्तुत होता है। इसका त्वचा पर अभ्यङ्ग करने से यह उसे आवश्यक उष्णता प्रदान करता है। बीजों को दबाने से इसमें से किसी प्रकार का वसामय तैल नहीं प्राप्त होता; प्रत्युत वह वस्त्र जिसमें बीज दबाए जाते हैं, स्थिर तैल द्वारा तर होजाता है। नीलगिरि पर्वत पर पाए जाने वाले कुरुन्थु (ता०) नामक (Limonia alata, *W. and A.*) नीबू से भी इसी प्रकार की

एक औषध निर्मित होती है तथा इसके पत्र का क्वाथ कण्डूघ्न है एवं अन्य त्वग्दोषों को हितप्रद है।

प्रयोगांश—तैल, मूल, फल (Berries) और पत्र।

औषध-निर्म्माण—क्वाथ, तैल व प्रलेप।

प्रभाव तथा प्रयोग-र्‌ह्रीडी (Rheede) का वर्णन है कि पत्र द्वारा निर्मित तैल शिर के लिए हित; जड़ आक्षेपशामक; और फल स्वरस पित्तघ्न हैं। लॅारीरा (Loureiro) के मतानुसार इसकी जड़ उष्णताजनक, लयकर्ता और उत्तेजक है।

एन्सली (Ainslie) कहते हैं कि इसके फल (Berries) में एक उष्ण, प्रिय गंधियुक्त तैल निर्मित किया जाता है जिसे दक्षिण भारतमें पुरातन आमवात (गठिया) एवं पक्षाघात में एक मूल्यवान बाह्य औषध ख्याल किया जाता है। कोंकण में इसके पत्ते का स्वरस अर्द्धांग रोग में प्रयुक्त एक मिश्रित प्रस्तर का एक अवयव है। वनौषधि-प्रकाश, १,४०४। डाइमांक।

इसके फल का उत्तम अचार (Pickle) बनाया जाता है जो ज्वर एवं स्वाद वा क्षुधा ह्रासयुक्त अन्य रोगों में लाभदायक पथ्य है। इं० मे० मे०।

अटवी जीरकः atavi-jirakah-सं० पुं० जङ्गलीजीरा-हिं०।

अटवी मधुकम् atavi-madhukam-सं० क्लो० जङ्गली महुआ-हिं०।

अटवीलता atavi-latá-सं० स्त्री० कुम्भाटवृक्ष, कुम्भाडुया। रत्ना०। देखो—कुम्हड़ा, कोंहड़ा।

अटलरिया aṭalariyá-ता० लरबोरन, विहलाङ्गनी, पथरुआ-आसा०। पॉलिगेनम् ग्लैब्रम (Polyganum glabrum)-ले०। इं० मे० मे०।

अटलरी aṭalari-ता० बोख अञ्जुवार (Polyganum barlatum)-इं०। मे० मे०।

अटलेण्टिया मॅानोफाइला atlantia monophylla, *Corr.*-ले०। माकर लम्बू-म०। अरवी नीम-ते०। माखुर-ता०। मे० मो०। अटवीजम्बीर,जङ्गली नीबू। (Wild lime) -इं० मे० मे०।

अटलोएटकम् aṭaloeṭakam-मल० अड़ूसा (Adhatoda vasika)इं० मे० मे०।

अटाइलोसिया बारबेटा-atylosia barbata, *Bake*.-माषपर्णी। इं० इ० इं०।

अटापू aṭápú-शोरा (Nitre) लु० क०।

अटिः aṭih-सं० पुं० शरारिः, शरालिः, शरारिपक्षि (Turdus ginginianus) हला०।

अटिक मामिडि aṭika-mámidi-ते० टीकरी बूटी, ठिकरी-का-झाड़-द०। गदहपुर्ना, पुनर्नवा-हिं०, बं०। Boerhaavia diffusa, *Linn.*-ले०। स० फा० इं०।

अटि(ति)सीन atisine-इं० अतीस सत्व। देखो-अतीस। फा० इं०।

अटी aṭí-हिं० संज्ञा स्त्री० (सं० अडी) एक चिड़िया जो पानी के किनारे रहती है। चाहा।

अटुप्प करी aṭuppa-kari-मल०। लकड़ी का कोयला। Carbon-ले०। Charcoal (wood)-इं०। स० फा० इं०।

अट्ट aṭṭa-सिं० बीज। (Seed)स० फा० इं०। -मल० जोंक Leech (Hirudo). स० फा० इं०।

अट्ट aṭṭa-हिं०संज्ञापुं०) (१)पट्टवस्त्र।(२)दोतला
अट्टः aṭṭah-सं० पुं०) कोठा घर, द्विमंजिला मकान,कोठा-हिं०। (An apartment on the roof or upper storey) देखो-सौमम्। वैं० श०। (३)-मल०। जोंक। (Leech)इं० मे० मे०।-हिं० संज्ञा पुं० [सं० हट्ट। बाजार] हाट। बाजार-हिं०।-डिं०।

अट्टई aṭṭai-ता० जोंक। (Hirudo) स० फा० इं०।

अट्टकः aṭṭakah-सं० पुं० कोठा, अटारी। (An upper storey).

अट्टनम् aṭṭanam-सं० क्ली० अस्त्र भेद। त्रिका०।

अट्टम् aṭṭam--सं० क्लीं० (१) अन्न । (२) शुष्क । मे० कद्विकं । (Food, boiled rice) आहार; भक्त ।

अट्टलु aṭṭalu--तै० जांक, जलायुका । Leech (Hirudo) स०फा०इं० । इं० मे० मे० ।

अट्टहासः,-कः aṭṭahásah,-kah-सं० पुं०
अट्टहासक aṭṭahásaka-हिं० संज्ञा पुं०
(१) कुन्द पुष्प वृक्ष, कुन्द का फूल और पेड़ -हिं० । कूँद फुलेर गाछ-बं० । (Jasminum multiflorum-लै० । रा० नि० व० १० । (२) Very loud laughter कहकहा मार के हँसना । बहुत जोर से हँसना ।

अट्टालः aṭṭálah-
अट्टालकः aṭṭálakah
-सं० पुं० (An apartment on the roof, an upper storey) उपरितलगृह, दोतलाघर, अटारी । वै० श० ।

अट्टालिका aṭṭáliká-सं० स्त्री० (A palace, lofty mansion) राजोचित गृह, महल । वे० श० ।

अट्रफि atraphy-इं० सुखड़ी या कृशता, शोषरोग, कार्श्य ।

अट्रिप्लेक्समोनेटा atriplex moneta, *Bunge*.-लै० सरमक, सुरका, कोरके, पोई -पं० । मे० मो० ।

अट्रिप्लेक्स लेसिनिएटा atriplex laciniata, *L*.-लै० क़तफ, भतुआ-पं० । मे० मो० ।

अट्रिप्लेक्स हॉर्टेन्सिस atriplex hortensis, *L*.-लै० क़तफ़, भतुआ-पं० । मे० मो० ।

अट्रोपा-अक्युमिनेटा atropa acuminata, *Royle*.-लै० एक प्रकार का बेलाडोना है । इं० ड्र० इं० ।

अट्रोपा बेल्लाडोना atropa belladona, *Linn*.-लै० देखो-बेलाडोना ।

अठखटा aṭhakhaṭá-सं० अस्थिसंहार, हड़जोड़ । लु० क० ।

अठगठिया aṭhagaṭhiyá-हिं० संज्ञा स्त्री० एक बूटी है जिसका स्वाद क्षारीय होताहै । यह कंकरीली भूमि में अधिक होती है । इसका पकाया हुआ शाक अत्यन्त सुस्वादु होता है । इसमें क्षार अंश की अधिकता के कारण लवण कम डालना चाहिए ।

अठपहला aṭhapahalá-हिं० वि० [सं० अष्ट पहल, प्रा० अट्ठपटल) आठ कोने वाला । जिसमें आठ पार्श्व हों ।

अठमासा aṭhamásá-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अष्ट, प्रा० अट्ठ + सं० मास] वह खेत जो आषाढ़ से माघ तक समय समय पर जोता जाता रहे और जिसमें ईख बोई जाए । अठवाँसा ।

अठमासी aṭhamásí-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० अष्टमाश] आठ मासे का सोने का सिक्का । सावरिन । गिनी ।

अठवाँस aṭhavánsa-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अष्टपार्श्व] अठपहली वस्तु । अठ-पहले पत्थर का टुकड़ा ।

वि० अठ-पहला । अठ-कोना ।

अठवाँसा aṭhavánsá-हिं० वि० [सं० अष्ट-मास, प्रा० अट्ठमास] वह गर्भ जो आठ ही महीने में उत्पन्न होजाए ।

—संज्ञा पुं० (१) सीमन्त संस्कार । (२) वह खेत जो अषाढ़ से माघ तक समय समय पर जोता जाता रहे और जिसमें ईख बोई जाए ।

अठाना aṭháná-हिं० क्रि० स० [सं० अट्ट= बध करना] (१) सताना । पीड़ित करना ।

अड aḍa-उड़ि० लिसोढ़ा-हिं० । श्लेष्मांतक -सं० । Sebesten plum (Cordia myxa)

अडकुमणियम aḍakumaṇiyam-मल० गोरख मुण्डी-हिं० । मुमुंरिया-बं० । कमाज़रियूस-अ० । (Sphæranthus hirtus) इं० मे० मे० ।

अडण्ड aḍaṇḍa-तै० करवील-पं० ।

अड़द arada-गु० उर्द, उड़द-हिं० । माष-सं० ।

(Phaseolus roxburghii) इं० मे० मे० ।

अडद्-वेल aḍada-vela–गु० माषपर्णी, मषवन । (Glysine debilis, Roxb.)

अडद वेल्य aḍada-velya–गु० वन उड़द, करियासेम । माषपर्णी ।

अडदवेल्य काडोगलिया aḍada-velya-káḍo-galiyá–गु० बन उड़द, बन उर्दी –हिं० ।

अडन्सोनिया aḍan-sonia–इं० गोरख इमली ।

अन्डसोनिया डिजिटेटा adansonia digitata, *Linn.*–लें० गोरख इम्ली–हिं० । बोआबाब या मङ्की-ब्रेड ट्री ऑफ़ अफ़रीका Boabab or monkey-bread tree of Africa–इं० । इं० मे० मे० । फा० इं० । मे० मो० । स० फा० इं० ।

अडन्सोनीन adansonin–इं० गोरख-अम्लीन, गोरख इमली सत्व–हिं० । इं० मे० मे० ।

अडपु-कोडी aḍapu-koḍí–ता० दोपातीलता –हिं० । चाङ्गलाङ्गी, छागल खुरी–बं० । आइपोमिआ बाइलोबा Ipomæa biloba, *Forsk.*–लें० । गोट्स-फूट कोनवालव्युलस Goat's foot Convolvulus–इं० । वृद्धदारक, विधारा–सं० । फा० इं० २ भा० । इं० मे० मे० ।

अडबन वुपोरियो aḍaban-vuporiyo-कच्छु० पोरबन्दर० १-(Gram) चणकः, चना । १-(Lady's finger) भिण्डी -हिं० ।

अडमरम् aḍamaram–मल० जंगली बादाम -हिं० । (Terminalia catappa, T. myrobalans) । The Indian almond । इं० मे० मे० ।

अडमोरिनिका aḍamoriniká–ते० असल, सरह–अ० । Indian cadaba (Cadaba Indica) इं० मे० मे० ।

अडम्पाकु aḍampáku–ते० अरूष, अड़ूसा, वासक–हिं० । Adhatoda Vasika–लें० Malabar nut–इं० । इं० मे० मे० ।

अडम्बेदी aḍambedí–ता० वासुक–सं० । Indigofera Enneaphylla–लें० । इं० मे० मे० ।

अडर्सा aḍarsá–हिं०, द० अरूष, अरूसा, अड़ूसा, वासक–हिं० । Adhatoda Vasica, Nees.–लें० । स० फा० इं० ।

अडल्सा aḍalsá हिं०; द० अरूष, अरूसा, अड़ूसा, वासक–हिं० । Adhatoda Vasica, Nees.–लें० । स० फा० इं० ।

अडवाऊ गाजर aḍaváú-gájar–गु० जङ्गली गाजर–हिं० । (wild carrot.)

अडवाड़ aḍavára–गु० बन उर्दी, बन उड़द –हिं० । माषपर्णी-सं० । (Grangea Madras patana.)

अडवाड मगवेल aḍaváḍa maga-vela –गु० मुद्गपर्णी । बन-उर्दी, माषपर्णी ।

अडवी aḍaví–ते० कना० वन्य, जंगली–हिं० । wild–इं० । स० फा० इं० ।

अडवी अत्ति aḍaví-attí–कना० जंगली अंजीर–हिं० । Ficus opposi tifolia, *Roxb.* (Fruit of–)–लें० । स०फा०इं० ।

अडवी-अलवा aḍaví-alavá–सं० चाकसू । s. m. (Cassia absus, Linn.)

अडवी–आमूदमु aḍaví-ámúdamu–ते० जंगलीएरंड, जंगली रेंड–हिं० । Jatropha Curcas–लें० । Angular-leaved physic-nut –इं० । इं० मे० मे० । (२) जंगली जमालगोटा–हिं०, गु० । Croton Polyandrum, *Roxb*-, Syn. C. Roxburghii,-*Wall.*-लें० । स० फा० इं० ।

अडवी-इप्पे-चेट्टु aḍaví-ippe-chettu–ते० जंगली महुआ–हिं०, द० । Bassia Latifolia, Roxb.–लें० । स० फा० इं० ।

अडवी-इरुल्ली aḍaví-irullí-कना० जङ्गली प्याज, काँदा–हिं०, बं० । Urginea Indica, kunth syn. Scilla Indica, *Roxb.* (Bulb of Indian Squill.) –लें० । स० फा० इं० । फा० इं० ३ भा० ।

अडवी-ऐलकाय adaví-elakáya–ते० जंगली इलायची, बड़ी इलायची-हिं० । Amomum subulatum, Roxb.-ले० । स० फा० इं० । इं० मे० मे० ।

अडवी-कछोला adaví-kachholá—मल० कचूर-हिं० । Curcuma Zedoaria, Rosc.–ले० । Round Zedoary-इं० । इं० मे० मे० ।

अडवी-कन्द adaví-kanda–सं० जंगली सूरन, जिमीकन्द-हिं० । S. M.

अडवी-कन्द-गड्ड adaví-kanda-gadda—ते० मेचाला-बं० । जङ्गली सूरन-हिं० । Amorphophallus Paniculatus. Blume.

अडवी-गन्नेरू adaví-gannerú–ते० गुलचीन-हिं० । Plumeria Acuminata-ले० । इं० मे० मे० ।

अडवी-गोरण्टा adaví-gorantá–ते० देवदारु-ता० । Erythroxylon monogynum, Roxb.-ले० । इं० मे० प्लां० ।

अडवी-गोरण्टी adaví-gorantí–कना० Erythroxylon monogynum, or E. Indicum, Roxb.–ले० । नाट का देवदार-द० । अडवी गोरण्डा-ते० । देवदारु-ता० । इं० मे० प्लां० । फा० इं० ।

अडवी-गोरण्डा adaví-gorndá-ते० नाट कादेवदार-द० । Erythroxylon monogynum, Roxb.-ले० । इं० मे० प्लां० ।

अडवी-जाजी-काय adaví-jájí-káya–ते० जंगली जायफल-हिं० । Pyrrhosia Horsfieldii, *Blume*. (Nut of–Wild nutmeg)-ले० । स० फा० इं० ।

अडवी जिलकर adaví-jilakara–ते० सोमराज– सं०, बं० । बकुची-हिं० । अटवी-जीरक -सं० । Vernonia anthelmintica, *Willd*. (seeds of–)-ले० । स० फा० इं० ।

अडवी तेल्ल गड्ड adaví-tella gadda–ते० छोटा जंगली प्याज़–हिं०, द० गु० । Scilla Indica–ले० । इं० मे० मे० ।

अडवी-नाभी adaví-nábbí–ते० नाट का बच्छनाग–द० । अग्निशिखा–ते० । Aconitum ferox, *Wall*. (Root of–) –ले० । स० फा० इं० ।

अडवीनिम्म adaví-nimma-ते० जंगली नीबू-हिं० । अटवी जम्बीर–सं० । Atalantia monophylla, Corr.-ले० । Wild lime–इं० । इं० मे० मे० ।

अडवी-नीम adaví-níma–ते० जंगली नीबू-हिं० । Atalantia monophylla, –ले० । Wild lime–इं० । फा० इं० ।

अडवी-पसुपु adaví-pasupu–ते० जंगली हल्दी, वनहरिद्रा-हिं० । Curcuma aromatica, Salisb.—ले० । Wild turmuric-इं० । इं० मे० मे० ।

अडवी-पुच्च adaví-puchcha-ते० जंगली इन्द्रायन-हिं० । Cucumis trigonus, *Roxb*.-Sy. . Cucumis pseudocolocynthis, Roy. (Fruit of–) –ले० । Bitter gourd-इं० । इं० मे० मे० । मे० शृ० ।

अडवी-पोगाकु adaví-pogáku–ते० धवल –म० । जंगली तम्बाकू–हिं० । Lobelia nicotianæfolia, *Heyne*.–ले० । Wild tobacco–इं० । फा० इं० २ भा० ।

अडवी-पोटगल adaví-potagal–ते०
अडवी-पोटला adaví-potalá–ते०
जंगली चिचिण्डा, जं० चिचोण्डा-हिं०, द० । Trichosanthes cucumerina, *Linn*.–ले० । स० फा० इं० ।

अडवी प्रत्ती adavı-prattí– ते० वन कपास– आशा०, बं० । रान-भिण्डी-मह० । Hibiscus lampas.–ले० । इं० मे० मे० ।

अडवी मन्दारमु adaví-mandáramu–ते० कचनार–हिं० । (Bauhinia variegata. Linn.)

अडवी मल्ली adaví-mallí–तें० मधुमाधवी --सं० । चमेली, चम्बेली--हिं० । नवमल्लिका -बं० । (Jasminum arborescens, Roxb.)-लें० । इं० मे० मे० ।

अडवी मल्ले adaví-malle–तें० मालती --सं०, हिं० । (Jasminum angustifolium, Vahl.)–लें० । इं० मे० मे० ।

अडवी मामडी adaví-mámadí–तें० आम्रातक-सं० । अमड़ा, अम्बाड़ा--हिं० । Hog-plum– इं० । (Spondias elliptica.) –लें० । इं० मे० मे० ।

अडवी मुनगा adaví-munagá } —तें०
अडवी मनग adaví-múnaga }
जंगली कासनी--हिं० । ऑर्मोकार्पम् सेनॉइडीस (Ormocarpum sennoides, *D. C.*)–लें० । का० मोञ्जि–ता० । कुडुनुग्ग–कना० ।

शिम्बी या बबूर वर्ग

(*N. O. Leguminosoe*)

उत्पत्ति स्थान--पश्चिम प्रायद्वीप और लङ्का ।

वानस्पतिक वर्णन—एक छोटी झाड़ी है जिसकी शाखाएँ पतली होती हैं । नूतन अंकुर तथा पुष्पवान भाग एक प्रकार के चिपचिपे लोम से आच्छादित होते हैं । चिपचिपा स्राव सुवर्ण पीत रंग का होता है । पत्र-पत्राकार; लघु पत्र (या पत्रक) ३ से १७, एकान्तरीय, आयताधिक-कोणीय और झिल्लीदार । पुष्प–कक्षीय, एक डंठल में ३ से ६ और पीत वर्ण के होते हैं । फली (छीमी) २ से ५ जुड़ी हुई, पेण्डुलमवत, संधि स्थल पर अधिक सिकुड़ी हुई और चेपदार होती है ।

उपयोग—इसकी जड़ का क्वाथ ज्वरावस्था में बल्य एवं उत्तेजक रूप से व्यवहृत है । इसका प्रस्तर (या तैल) पक्षाघात और कटिशूल में बरता जाता है । (डाइमाक) फा० इं० १ भा० ।

अडवी मुल्लङ्गी adaví-mullangí–तें० कुक-रौंदा--हिं० । जंगली या दीवारी मूली, जंगली कासनी-द० । कमाफ़ी त् स-गु० । (Blumea eriantha, *D. C.*)–लें० । फा० इं० १ भा० । (Blumea aurita, *D. C.*) -लें० । स० फा० इं० ।

अडवी येलकाय adaví-yela-káya—तें० बड़ी इलायची--हिं०, द० । Amomum. sp. of. (Capsules of)--लें० । स० फा० इं० ।

अडवी-लवङ्ग-पट्टे adaví-lavanga-patte –कना० जंगलीदारचीनीपत्र, तेजपात-हिं० । Cinnamomum Iners; C. Tamala;--लें० । इं० मे० मे० ।

अडवी-लवङ्गमु-पट्ट adaví-lavangamu-patta--तें० तेजपात-हिं० । Cinnamomum Iners--लें० । मेमो० ।

अडवी-वुद्दुलु adaví-vuddulu--तें० माष-पर्णी, जंगली उड़द, वनउड़द--हिं० । रान उड़िद--मह० । माषानि बं० । Teramnus labialis, Spreng wight, Ic. t. 118 --लें० । फा० इं० १ भा० ।

अडवी-सुदाप adaví-sudápa--सं० सुदाब, जंगली तितली--हिं० । (Ruta graveolens, *Linn.*)

अडसी adasí–महानिम्ब ।

अडस्पुडूस adaspudúsa--मल० सोवा, सोया--हिं० । Peucedanum Graveolens -लें० । इं० मे० मे० ।

अड़हुल arahula--हिं० संज्ञा पुं० [सं० ओड्र+फुल्ल, हिं० ओड़हुल] ओड़ (क), देवीफूल, जपा या जवापुष्प, इसका पेड़ ६-७ फुट ऊँचा होता है और पत्तियाँ हरसिंगार से मिलती जुलती होती हैं । फूल इसका बहुत बड़ा और खूब लाल होता है । इसके फूल में महँक (गंध) नहीं होती । (Hibiscus Rosa=sinensis, Linn.)

अडासरा adásará- तें० अडूसा, वासक, अरूष -हिं० । Adhatoda Vasica-Nees लें० । मेमो० ।

अडिएएटम् कॉडेटम् adiantum caudatum, *Linn.*-लें० मोरपंखी, मयूर-शिखा -हिं० । मेमो० । अभ्रमारित की जड़ी-पं। इं० डु० इं० ।

अडिएएटम् कैपिलस वेनेरिस adiantum capillus veneris, *Linn.* --लें० बिस्फ़ाइज--अ०क्रु० देखो-मुबारक--कुमा०, --हिं० । हंसराज--हिं० । मेमो० ।

अडिएएटम् ट्रैपोज़िफ़ॉर्मी adiantum Trapeziforme, *Linn.*--लें० हंसराज । see-Hansarája.

अडिएएटम् पेडेटम् adiantum pedatum, *Linn.*--लें० हंसराज । see-Hansarája

अडिएएटम् फ्लेबेल्युलेटम् adiantum flabellulatum, *Linn.*- लें० मयूरशिखा --हिं० । इसकी जड़ औषध कार्य्य में बरती जाती है । मेमो० ।

अडिएएटम् ल्युन्युलेटम् adiantum lunulatum, *Linn.*--लें० हंसराज या राजहंस --हिं० । कालीझाँट(प) --बं० । मुबारक--कुमा० । मेमो० ।

अडिएएटम् वेनस्टम् adiantum venustum, *Don.*--लें० हंसराज--हिं० । बाजार परसियावशान--फ़ा० । कालीझाँट--हिं० । मुबारक--बम्ब० । म० अ० । मेमो० ।

अडिके adike-कना० सुपारी--हिं० । Areca Catchu, *Linn.*--लें० । स० फा० इं० ।

अडिन adin-लें० अज्ञात ।

अडिना कॉर्डिफोलिआ adina Cordifolia, Hook- f.--लें० धाराकदम्ब—सं० । हलदु, हदु, कदमी, करम-हिं० । बङ्का, केलि-कदम, पेट पुड़िया-बं० । हदुआ, हदु-म० प्र० । करम-नै० । कुरम्बा, कोम्बासंकु--कोल० । कराम-सन्ता० । बड़ा कुरम-मल० । तिक्का-भड़ौं० व गों० । हदु, पस्पु, कुर्मी (गों०), होलोंदा --उड़ि० । सक्क डोंग-गारो । रोघु,केलो-कदम-आ० । मआकदम्बे-ता० । दाडुक,बेत्तगैगप,बनदारु,डुडागु, पुस्पुकन्द्री ,पुस्पुकदिमी-ते० । अर्सिन्तेग-मैस० । हेड्डे, येत्तेग-पेत्तेग, अर्सन्तेग, येत्तद, अहुन-कना० । हेड्-मह० । हलधवान-गु० । Nauclea cordifolia, वैज्ञा० ना० । इं० मे० मो० । फा० इं० २ भा० । थरली, बला, गुआ -बम्ब० ।

अडिनेन्थेरा पेवोनीना Adenanthera pavonina, *Linn.*-इं०रक्त-कम्बाल--बं० । इं० डु० इं० ।

अडुई adui-पं० आडू । See-ádú.

अडुप्पुकरी aduppukarí-ना० लकड़ी का कोयला-हिं० । Wood charcoal-इं० । इं० मे० मे० । स० फा० इं० ।

अडूरास्पी aduráspí }
अडूल्सा adulsá } --गु० अडूसा,अरूस-हिं० । Adhatoda vasica, Linn--लें० । इं० मे० मे०
अडूल्सो adulso }

अडू adú-हिं० पुं० अरु- म० । शफ़्तालू-फ़ा० ।

अडूसोगए adusogae-कों० अडूसा, अरूस-हिं० । (Adhatoda vasica, *Nees.*)--लें० । इं० मे० मे० ।

अडूनाइडीन adonidin-इं० अडूनी सत्व । देखो-अडूनिस । म० अ० डा० १ भा० ।

अडूनिस adonis-इं० अडूनी, अडूनी बूटी-हिं० । अडूनिसवर्नेलिस (Adonis vernalis.) --लें० ।

वत्सनाभ वा रैननक्युलेसीई वर्ग

(*N. O. Ranunculaceæ*)

नोट—यह बूटी तीन प्रकार की होती है और यूरोप व एशिया के भिन्न भिन्न प्रदेशों में उत्पन्न होती है । पर कदाचित् यह भारतवर्ष में नहीं होती क्योंकि डॉक्टर वाट महाशय और डॉक्टर डीमॉक महाशय के भारतवर्षीय औषधि सम्बन्धी विस्तृत ग्रन्थों में इसका कहीं भी उल्लेख नहीं पाया जाता है ।

वानस्पतिक विवरण—यह झाड़ी १० इंच के लगभग ऊँची होती है । इसकी पत्तियाँ चमकीली हरितवर्ण की और बारीक बारीक सूत्रों में विभाजित होती हैं । इसके पुष्प सुवर्णमय रक्त वर्ण के होते हैं ।

रासायनिक संगठन—इसमें ग्ल्युकोसाइड की तरह का एक सत्व "अडूनाइडीन" और एक अन्य सत्व "अडूनेट" नाम का होता है। अडूनाइडीन जल और मद्यसार (अल्कुहॉल) में विलेय होता है ।

मात्रा—इसका चूर्ण १ से ३ रत्ती तक और इसी अनुपात से इसके हिम अथवा टिंक्चर या स्वरस को भी प्रयोगमें ला सकते हैं। इसके सत्व अडूनाइडीन की मात्रा $\frac{1}{6}$ से $\frac{1}{2}$ ग्रेन तक है और इसको वटिका रूप में वर्तते हैं।

नोट—यूरोप के इटली, रूस व स्पेन प्रभृति देशों में यह औषध ऑफ़िशल है।

प्रभाव—हृदय बलकारक (हृद्य), हृदय रोगके लिए लाभदायक है। म० अ० डॉ० १ भा० ।

अडूनिस ईस्टीवेलिस adonis aestivalis, *Linn.*-लें० वत्सनाभ वर्ग की एक ओषधि है। इं० इ० इं० ।

अडूनिस वर्नेलिस adonis vernalis--लें० । अडूनिस का वानस्पतिक नाम। देखो—अडूनिस । म० अ० डॉ० १ भा० ।

अडूनी adúní-हिं०, उड़ि० अडूनिस--इं०। See--Adonis.

अडोमा adomá--गोआ० माइम्युसॉप्स कौकी (Mimusops kauki, *Linn.*), मा० डाइसेक्टा (M. disecta, Br.)--लें० । बुआ--सोव्--मल० । (मेमो०) । खीरिनी--बं० । खीरी घिरुइ (खिरनी भेद)--हिं० । कौकी--मह० । क्षीरिका-सं० । इं० मे० प्लां० ।

क्षीरिका वा मधुक वर्ग

(*N. O. Sapotaceæ*)

उत्पत्ति स्थान—ब्रह्मा तथा मलाका; कभी कभी होशियारपुर, मुल्तान, लाहौर और गुजरानवाला के निकट अमीनाबाद में लगाया जा चुका है।

उपयोग—इसके बीजका चूर्ण नेत्राभिष्यन्द रोग में व्यवहृत होता है और ज्वरघ्न एवं बल्य रूप से इसका अन्तः प्रयोग भी होता है। इसकी जड़ लाहौर में ऑफ़िशल है । (स्टयुवर्ट)

बीज उष्ण एवं तर ख़्याल किया जाता है। और कुष्ठ, पिपासा, उन्माद तथा बहुशः स्राव (Secretion) संबन्धी रोगों के योग में बरता जाता है। यह कृमिघ्न भी ख़्याल किया जाता है। (बेडेन पॉवेल)

इसका फल अत्यन्त मधुर एवं प्रिय होता है। वृक्षस्थ दुग्ध कर्णशोथ तथा नेत्रशोथ (आँख आने) में व्यवहृत है। (डॉ० इमर्सन)

जड़ एवं त्वक् संकोचक यक़ीन किए जाते हैं और शिश्नतिसार में इसे जल के साथ पीसकर तथा शहद योजित कर प्रयोग में लाते हैं।

इसके पत्र को तिल तैल में उबाल कर विचूर्णित त्वचा में योजित कर व्यवहार में लाना बेरी बेरी रोग के लिए उत्तम औषध ख़्याल किया जाता है। त्वचा संकोचक होता है तथा इसमें से एक प्रकार का निर्यासवत् तरल निकलता है। इसके पत्र को पीसकर इसमें हलदी और सोंठ मिला ग्रंथियों पर प्रस्तर रूप से लगाते हैं। (डुरी) । इं० मे० प्लां० ।

अडूलसा adúlasá--म० } देखो—अडूसा ।
अडूसक adúsak--हिं० } Adhatoda Vasica Nees.--लें० । अ० नि० १ भा० ।

अडूसा adúsá हिं० संज्ञा पुं० [सं० अटरूष, प्रा० अडरूस] अडलसा (-सो), अरूशा (-सा), बाँसा, रूसा, बसौंटा, वासा, बिसौंटा–हिं०, बस्व० । अद्लसा, अड़र्सा, अरूसा, बसौंटा, अडूसा--द०, हिं० ।

संस्कृत पर्याय—

वासको वाशिका वासा भिषङ्माता च सिंहिका ।
सिंहास्यो वाजिदन्ता स्यादाटरूषोऽटरूषकः ॥
आटरूषो वृषस्ताम्रः सिंहपर्णश्च सः स्मृतः ॥

भाषा—वासक, वाशिका, वासा भिषङ्माता सिंहिका, सिंहास्यः, वाजिदन्ता, आटरूषः, अटरूषकः, वृषः, ताम्रः, सिंहपर्णी ये अडूसे के संस्कृत नाम हैं (रामरूपक, मातृसिंही, वैद्यमाता, वृषः, कसमोत्पाटन, कमलोत्पाटल, सिंही, वाजिदन्तकः, आमलकं, वाशा, अटरूषः, वासः, वाजी, वैद्यसिंही, सिंहपर्णी, रसादनी, सिंहमुखी, कंठीरवी, सितकर्णी, वाजिदन्ती, नासा, पंचमुखी,

सिंहपत्री, मृगेन्द्राणी और सिंहानन ये अडूसे के संस्कृत नाम अन्य ग्रन्थों में पाए जाते हैं.)

बाकस, आरूसा, बासक, छोटाबासक, बासन्तीफुलेर गाछ--बं० । हरीशतुस्सुआल्--अ० । बाँसह्, बाँसा, ख़्वाजह्--फ़ा० । ऐढाटोडा वैसिका (Adhatoda vasica, Nees.), अडेनैन्थेरा वैसिका (Adenanthera vasica), जस्टीशिया ऐढाटोडा (Justicia adhatoda, Roxb; Linn.), ओरोकीलम इण्डिकम् (Orocylum indicum .) --ले० । ऐढाटोडा (Adhatoda), मलाबार नट ट्री (Malabar nut tree)--इं० । आडाटोडई, अधडोडे-ता० । अडुसरम्, अडमृपाकु, पेद्दमानु, अडसरा, अड्सर-ते०, तै० । आटलोटकम्--मल० । आडसोगे-सप्पु, आड्साल, आडूसोगे--कना० । शोगा, शांडीलमर--करना० । आडाटोड, पावट्ट--सिं० । मेस् न--बिङ्--बर्मी । बसूटी, तोरबंजा, वाशक-अरूष, भिक्कर-हिं० । अड्डलसा-मह० । अड्डलसो, बाँस, अडूरसा (-सां), अरडूसा(शी)--गु० । बाड्कण्टर--अफ़्गा-- । आडसोगे-का० । भेकड़--पं० ।

अकेन्थेसीई (आटरुष) वर्ग

(N. O. Acanthaceae.)

उत्पत्ति स्थान—भारतवर्ष के अधिकतर भाग, पंजाब और आसाम से लेकर लङ्का एवं सिङ्गापूर पर्य्यन्त । राजपूताना, शाहजहाँपूर, रनधीरसिंह (जमूँ, कश्मीर) प्रभृति स्थान ।

वानस्पतिक विवरण—यह क्षुप जाति की वनस्पति है; परन्तु किसी किसी स्थान में इसके बहुत बड़े बड़े वृक्ष पाए जाते हैं । शरद ऋतु में इसमें पुष्प आते हैं । प्रकाण्ड सीधा; त्वचा सम, धूसर वर्णीय; शाखाएँ अर्द्ध सरल, त्वचा प्रकांड के सदृश किन्तु समतर; पत्र सम्मुखवर्त्ती, ४ से ६ इंच लम्बे और १॥ इंच चौड़े, नुकीले, जिनके दोनों पृष्ठ चिकने होते हैं, पीटिओल (Petiole) अर्थात् पत्रवृन्त सूक्ष्म, पुष्प प्रधानाक्ष लम्बा, शाखा रहित, बालियाँ बाह्य कक्षीय और अकेली; पुष्पडंठल (पुष्पवृन्त) छोटा और बड़े बड़े बन्धनियों (Brackts) से ढका होता है । पुष्प सम्मुखवर्त्ती, बड़े, श्वेत रंग के होते हैं जिनके भीतरी भाग पर रक्ताभायुक्त लोहित वर्ण के धब्बे होते हैं, पुष्प के दो ओष्ठ सिंह-मुखाकृति के होते हैं जिनकी भीतरी पृष्ठों पर बैंगनी रंगकी धारियाँ पड़ी होती हैं; बन्धनियाँ तीन, सम्मुखवर्त्ती और एक पुष्पीय, तीनों में से बाह्य बन्धनी (Brackt) बड़ी, अण्डाकार, अस्पष्टतया पक्षशिरायुक्त और भीतरी दो अत्यन्त छोटी होती हैं । ये सब स्थायी होती हैं । **पुष्प-बाह्य-कोष** (Calyx) पाँच समान भागों में विभाजित होता है; **पुष्प-आभ्यन्तर-कोष** (Corolla) विस्तीर्ण ओष्ठीय, लघुनालिकेय, विशाल ग्रैव, ऊर्ध्व ओष्ठ नौकाकार, जिसका मध्य भाग परिखा युक्त होता है जिसमें रति केशर स्थान पाता है, निम्न ओष्ठ चौड़ा, जिसमें तीन भाग होते हैं; **पुरुष-केशर** तन्तु लम्बा और ऊर्ध्व ओष्ठीय खात के सहारे रहता है और ये संख्या में दो होते हैं ।

प्रयोगांश—पञ्चांग, क्षार । **प्रयोगाभिप्राय**-औषध, रङ्ग, खाद्य ।

रासायनिक-सङ्गठन—एक सुगन्धित उड़नशील सत्व, वसा, राल (Resin), एक तिक्तक्षारीय सत्व जिसे वासीसीन (Vasicine) जिसे संस्कृतमें वासीन या वासकीन कह सकते हैं, एक सेन्द्रियक अम्ल (वासाम्ल) ऐढाटोडिक एसिड (Adhatodic Acid), शर्करा, निर्यास, रंजक पदार्थ, और लवण । वासीन का अधिक परिमाण अडूसे की मूल त्वचा और पत्र से प्राप्त होता है । वासीन के स्वच्छ श्वेत रवे होते हैं जो अलकुहोल (मद्यसार) में सरलतापूर्वक घुल जाते हैं । ये जल में भी विलेय होते हैं । इनकी प्रतिक्रिया क्षारीय होती है । खनिजाम्लों के साथ यह स्फटिकवत् लवण बनाता है । अमोनिया भी किसी अंश में विद्यमान होती है ।

औषध-निर्माण— शीत कषाय (१० भाग जल में १ भाग); **मात्रा**—१। तो० से २ तो०; तरल सत्व; मात्रा-२ से ४ रत्ती । पत्र स्वरस; ७॥ मा० से १ तो० ३ मा० । टिङ्क्चर (१० में १), मात्रा--२ मा० से ४ मा० । संयुक्त क्वाथ,

घृत, अवलेह, चूर्ण और वटिका (साधारण मात्रा ६ मा०)। डॉक्टर लोग अडूसेको द्रवसत्व, स्वरस और टिंक्चर रूप से उपयोग में लाते हैं।

प्रतिनिधि—इसके समान गुणधर्म की यूरोपीय ओषधि सिनीगा (Senega) है।

स्वाद—फीका और कुछ मीठा। प्रकृति—गरम और रूक्ष तथा फूल १ कक्षा में ठंडा है। हानिकर्त्ता—मैथुन शक्ति को। दर्पघ्न—शहद शुद्ध और कालीमिर्च।

गुणधर्म व प्रयोग

आयुर्वेदीय मतके अनुसार—

वासा तिक्ता कटुः शीता कासघ्नी रक्तपित्त जित्।
कामला कफ वैकल्य ज्वर श्वास क्षयापहा॥
(रा० नि० व० ४)

भाषा—अडूसा तिक्त, कटु, शीतल है, तथा खाँसी, रक्तपित्त, कामला, कफ, विकलता, ज्वर, श्वास और क्षय रोग को नष्ट करता है।

आटरूषः शीतवीर्यो लघुर्हृद्यः कटु स्मृतः।
तिक्तः स्वर्य्यः कासहन्ता कामला रक्तपित्त हा॥
विवर्णता-ज्वर-श्वास-कफ-मेह-क्षयापहः।
कुष्ठारुचि तृषा वान्तिनाशकः परिकीर्त्तितः॥
(वैद्यक)

वासकस्य च पुष्पाणि वक्रसेनस्य चैवहि।
कटुपाकानि तिक्तानि कास क्षय हराणिच॥
राज० ३ चिकित्सासार संग्रहकार।

वृषं तु वमि कासघ्नं रक्तपित्त हरं परम्।
(वा० सू० अ० ६)

वासको वात कृत्स्वर्यः कफ पित्तास्र नाशनः।
तिक्तस्तुवरको हृद्यो लघुशीतस्तृडर्त्तिहृत॥
कास श्वास ज्वर छर्दि मेह कुष्ठ क्षयापहः।
(वृ० नि० र०)

भाषा—अडूसा शीत वीर्य, लघु, हृदय को हितकारी, तिक्त, स्वरके लिए उत्तम, कासघ्न, कामला तथा रक्तपित्तनाशक है। विवर्णता, ज्वर, श्वास, कफ, प्रमेह तथा क्षय, कोढ़, अरुचि, प्यास और वमन को नष्ट करता है। वैद्यक। अडूसा और अगस्तिया के फूल तिक्त, पाक में कटु एवं खाँसी और क्षय को हरण करने वाले हैं। राज० ३ च०। अडूसा वमन, खाँसी और रक्तपित्त को दूर करता है। वा० सू० अ० ६। अडूसा वातकारक स्वर के लिए उत्तम, तिक्त, कषैला, हृदय को हितकारी, लघु, शीतल, कफपित्त, रक्तविकार तृषा की पीड़ा को हरण करने वाला तथा श्वास कास, ज्वर, वमन, प्रमेह और क्षय को नाश करता है। वृ० नि० र०।

युनानी मत के अनुसार अडूसे के गुणधर्म व प्रयोग

भारतीय द्रव्यगुणशास्त्र के फ़ारसी लेखक हिन्दुस्तानी नाम अडूसा के नाम से उक्त ओषधि का वर्णन करते हैं। अतः मीरमुहम्मदहुसेन महोदय ने स्वरचित "मख़्ज़नुल् अद्वियह्" नामक वृहद् ग्रंथमें इस पौधेका वर्णन किया है। उनके कथनानुसार अडूसे का फूल यक्ष्मा, रक्तपित्त अर्थात् रक्तोष्मा और प्रमेह में लाभदायी और पित्तनाशक है। अडूसे की जड़ खाँसी, श्वास, ज्वर और प्रमेह, बलग़मी और सफ़रावी (पित्त को) मतली, वमन, पाण्डु, मूत्रदाह, सूज़ाक और राजयक्ष्मा को नाश करती है। बच्चों को शीत लगने या खाँसी से बचाने के लिए कभी कभी अडूसे के बीज को उनके गले में लटकाते हैं।

अडूसे के विभिन्न अवयवोंके परीक्षित प्रयोग

मूल—अडूसा पत्र और मूल दोनों सोत्तेज्य श्लेष्मानिस्सारक (Stimulant expecrant) और आक्षेप शामक (antispasmodic) हैं। इसीलिए अधिकतर इसकी जड़का सीनीगा (Senega) के स्थान में पुरातन कास, श्वास में उपयोग करते हैं।

अडूसा की जड़ का क्वाथ बच्चोंकी कूकर खाँसी तथा साधारण ज्वर में लाभ करता है।

अडूसा की जड़ पुरातन खाँसी, सफेद दाग, कोढ़ और सूजाक के लिए लाभदायी है। यदि अडूसा मूल त्वचा को चोबचीनी के क्वाथ में एक सप्ताह तक भिगो रक्खें। पुनः निकाल शुष्क कर चूर्ण करलें। इसमें से १ माशा प्रति दिवस खाएँ तो पुरातन उपदंश से मुक्ति प्राप्त हो।

इसकी जड़ और मुण्डी बूटी दोनों को घोट छानकर शहद मिलाकर नित्य पीने से कोढ से छुटकारा मिलता है।

इसकी मूल-त्वचा को जौकुट कर तथा जल में भिगोकर और उस जल को घूँट घूँट पिलाने से वमन तथा मतली को अवश्य लाभ होता है।

यदि पावभर जड़का नियमपूर्वक एक बोतल शर्बत बनाकर उचित मात्रामें प्रति दिवस उपयोग किया जाय तो श्वास और पुरातन कास जड़ से उखड़ जाता है।

जड़ द्वारा धातु मारना

इसकी जड़ के छिलके के पानी में एक तोला सुवर्ण को लाल करके सौ बार बुझाएँ। पुनः सत्यानासी के कल्क (लुगदी) में रखकर अग्नि द्वारा भस्म करें।

गुण—इस भस्म को उचित मात्रा में उपयुक्त अनुपान द्वारा सेवन करने से मुद्दत की गर्मी और पुरातन शुक्र प्रमेह नष्ट होता है।

अड़से के पत्र

अड़से के समान रक्तपित्तनाशक कोई अन्य ओषधि नहीं है। कहा है:—

वृषपत्राणि संपीड्य रसः समधु शर्करः।
अनेनैवशमं याति रक्तपित्तं सुदारुणम्॥

अर्थात् अड़ूसा-पत्र-स्वरस (अथवा क्वाथ) में शर्करा तथा मधु मिलाकर सेवन करने से दारुण रक्तपित्त शांत होता है।

अडूसे के स्वरस का नस्य देने से नाक, कान, नेत्र से रुधिर का बहना बन्द होता है।

अडूसे के पत्तों में कीटाणुनाशक (Insecticide) गुण विद्यमान है और इस कारण जब धान या अन्य फ़सलों पर कीड़े लग जाते हैं तो उनको मारने के लिए इसके पत्तों का उपयोग अत्यन्त लाभदायी ख़याल किया जाता है। (डॉ० वैट०)

चूँकि इसके पत्तों में किसी कदर अमोनिया भी होती है इसलिए इसके सुरट बनाकर पिलाने से दमा के दौरा में कमी हो जाती है। डॉ० वैट महोदय अपने अनुभव के आधार पर इसकी बड़ी प्रशंसा करते हैं। देखो—"डिक्शनरी ऑफ़ दी एकॉनॉमिक प्रॉडक्ट ऑफ़ इण्डिया।"

यदि इस वृक्ष के ताजे पत्ते अथवा पुष्प को कूट कर टिकिया बनालें और इसे लाल तथा दुखती हुई आँखों पर बाँध दें तो तीन चार रात ऐसा करनेमें बिलकुल आराम हो जाता है। इसके पत्तों के चूर्ण को दाँतों पर मलने से दाँत मज़बूत होते हैं और दर्द दूर होता है एवं दाँत के समस्त विकार नष्ट हो जाते हैं। इसके पत्ते को कूटकर रस निचोड़ लें और उसमें शहद मिलाकर चाटें तो खाँसी दूर हो और कंठ साफ होकर वाणी की शुद्धि हो।

१ तो० अड़ूसे के पत्ते, ६ मा० मूली के बीज और ६ मा० गाजर के बीज इनका क्वाथ कर कुछ दिन पिलाने से रजःरोध दूर होता है।

अड़ूसे के पत्ते और सफेद चन्दन इनके समभाग बारीक चूर्ण में से ४ माशा प्रति दिवस खाने से खूनी बवासीर को बहुत लाभ होता और खून का दौरा बन्द हो जाता है।

यदि किसी अवयव में शोथ हो तो इसके पत्ते के क्वाथ का वाष्प देने से लाभ होता है।

इसके पत्तों को रोग़न बाबूना में घोटकर लेप करें तो फुफ्फुस प्रदाह दूर हो। अड़ूसा-पत्र-स्वरस को तिल तैल में मिलाकर पकाएँ जब केवल तैल मात्र रह जाए तब उतार कर ठंडा होने पर शीशी में रख लें। इस तैल से आक्षेप, वातव्यथा उदरस्थ वायुवेदना और हाथ पाँव की ऐंठन दूर होती है।

इसके पत्ते समभाग खर्बूज़ा बीज के साथ घोट छानकर पीने से पेशाब खूब खुलकर आने लगता है और मूत्र सम्बन्धी बीमारियों में बहुत कुछ न्यूनता आजाती है। यदि अड़ूसा पत्र १ तोला, शोरा कलमी ६ माशा और कासनी ६ माशा इनको घोट छान कर पिलाएँ तो मूत्र अधिकता के साथ आता है जिससे कामला रोग दूर होजाता है। इसके पत्तों के जुलाल को पीने से ज्वर, तृषा और घबराहट प्रभृति दूर होते हैं।

अड़ूसा के पत्तों को पानी से पीसकर आरम्भ

ही में यदि इसे फोड़े पर लेप करें तो उसे बिठा देता है और कोई कष्ट भी नहीं होता।

अडूसे के पत्ते को कूट कर गोला सा बनालें और उस गोले पर एरण्ड के हरे पत्ते लपेट कर ऊपर से मास (उड़द) के आटे का लेपन कर भूवल में दबा दें जब आटा पक जाय तब उसे हटाकर अरण्ड पत्र को पृथक करके अडूसा का रस निकाल कर रखलें। अब उस निकाले हुए रस में से आधसेर वह रस, १ पाव खाँड़ देशी, ४ तोला पीपल का चूर्ण और चार तोला गोघृत मिलाकर पकाएँ। जब चाशनी गाढ़ी हो जाए तब उतार कर उसमें एक पाव शुद्ध शहद मिलाकर माजून बनाकर रख लें।

मात्रा—४-४ माशा शाम व सुबह। इसे क्रमशः बढ़ाते जाएँ।

गुण—राजयक्ष्मा, खाँसी, दमा, प्रतिश्याय, अजीर्ण और वक्षःस्थलस्थ वेदना को अत्यन्त लाभप्रद है।

भस्मीकरण

यदि शुद्ध ताम्रपत्र को अडूसे के पत्ते के रस में सौ बार बुझाएँ। पश्चात् राई की गन्दलों की लुगदी में एक मन उपलों की अग्नि दें। इसी प्रकार तीन बार करें, भस्म तैयार होगी।

गुण—इसमें से १ रत्ती उचित रूप में उपयोग करने से सम्पूर्ण वातव्याधि, कफ, खाँसी, दमा, निर्बलता एवम् बुढ़ापा प्रभृति दूर होता है।

अडूसे के पुष्प

अडूसे के पुष्प, पत्र और मूल, परन्तु विशेषकर पुष्प में आक्षेप शामक गुण होने का निश्चय किया जाता है और दमा की कई अवस्थाओं तथा विषमज्वरों की तीव्रता के पुनरावर्तन में योजित किए जाते हैं। ये किञ्चित् तिक्त एवं अर्ध सुगन्धियुक्त होते तथा शीत कषाय एवं अवलेह रूप से उपयोग में आते हैं। अवलेह की मात्रा लगभग चाय के चम्मच भर दिन में दो बार प्रयोग में आती है। (डॉ० पेम्सली)।

"हिन्दू मेटीरिया मेडिका" के लेखक यू० सी दत्त महोदय के कथनानुसार यह कहावत प्रसिद्ध है कि वह व्यक्ति जो राजयक्ष्मा से पीड़ित हो उसे उस समय तक उदास न होना चाहिए जब तक वासक वृक्ष वहाँ स्थित है।

यह पुरातन कास, दमा और अन्य फुफ्फुसीय एवं कफ सम्बन्धी रोगों में अत्यन्त लाभदायक है। (डॉ० ऐन्सलस और दत्त)

इसका पुष्प राजयक्ष्मा नाश करने वाला, पित्तघ्न और रुधिर की उष्णता का शामक है। यदि पुष्प को रात्रि में जल में भिगो दें और सवेरे मल छानकर पान करें तो मूत्र की जलन एवम् अरुणता दूर हो।

इसके शुष्क किए हुए पुष्पों को कूट छान कर उसमें द्विगुण वङ्गभस्म मिलाकर शीरा काहू, खुर्फा और खीरा के साथ व्यवहार में लाने से शुक्रप्रमेह नष्ट होता है।

शुष्क पुष्प चूर्ण के साथ इसका चौथाई जौहर नौसादर योजित करके २ रत्ती बताशा में रखकर खिलाने से तर खाँसी दूर होती है।

इसके एक पाव पके फूल का एक तोला शर्बत तय्यार करें। चार मा० यह शर्बत ६ मा० रूह केवड़ा और उचित मात्रा में कुएँ का जल मिला कर सवेरे पिलाने से हृदय की धड़कन, श्वास फूलना, घबराहट और पुरातन गर्मी दूर होती है।

अडूसेका फूल १ सेर, इससे द्विगुण शर्करा डालकर गुलक़न्द तैयार करें। यह कास, श्वास और यक्ष्मा में लाभप्रद है।

अडूसा पुष्प द्वारा भस्म प्रस्तुत करना

अडूसे के फूल को कूटकर रस निचोड़ें और उस रस में गोदन्ती हड़ताल को खरल कर नियमानुसार अग्नि दें। इसी प्रकार सात बार करें तो गोदन्ती भस्म प्रस्तुत होगी।

गुण—यह जीर्ण ज्वरके लिए अत्यन्त लाभदायी सिद्ध होगी। खून थूकने में २ मा० कहरुवा में एक रत्ती यह भस्म रखकर शर्बत अञ्जबार के साथ खिलाने से कुछ ही खुराकों में लाभ

पहुँचाएगी। पुरातन कासके लिए २–२ रत्ती यह भस्म शर्बत एजाज़ के साथ खिलाने से रामबाण सिद्ध होगी।

अडूसा द्वारा प्रस्तुत विविध योग

(१) वासक क्वाथ, वासा घृत तथा वासावलेह प्रभृति तथा अनेक अन्य योग "शार्ङ्गधर" एवं "भावप्रकाश" आदि ग्रंथों में वर्णित हैं। इस कोष में भी वे यथाक्रम आए हैं। अतः वहाँ वहाँ देखिए।

(२) अडूसा पत्र १ सेर, अडूसा पुष्प १०तो०, जल ४ सेर डालकर रातको भिगो दें। सवेरे एक जोश देकर गोदुग्ध चार सेर मिलाएँ और भपका (नाड़ीयंत्र) द्वारा ५ सेर अर्क खींचें। १० तो० यह अर्क शर्बत एजाज़ ५ तो०में मिलाकर सवेरे और शामको पिलाएँ और उष्ण वस्तुओं से परहेज कराएँ। राजयक्ष्माकी प्रथम एवं द्वितीय कक्षा में लाभदायी है। दो सप्ताह पश्चात् रोगी के वजन में आश्चर्यजनक वृद्धि दीख पड़ती है तथा शरीर लाल और आभायुक्त हो जाता है। मूत्र की अरुणता, जलन और रक्तोष्मा को दूर करने में अनुपमेय सिद्ध होता है।

(३) अडूसा पत्र, अडूसे की जड़ की छाल और अडूसा का फूल प्रत्येक २ सेर, २० सेर जल डालकर जोश दें। आधा रह जाने पर मल कर छान लें। उक्त जल में उपर्युक्त तीनों वस्तुएँ १–१ सेर डालकर पुनः जोश दें। आधा रह जानेपर उपर्युक्त नियमानुसार मल कर छान लें और उपर्युक्त वस्तुएँ प्रत्येक आधा सेर डाल कर जोश दें। आधा रह जाने पर छान कर बोतलों में भर कर रख दें। दिन में तीन बार २॥ तोला की मात्रा में रोगी को पिलाएँ। स्वाद के लिए शहद १ तो० मिला लिया जाए। गुण—खाँसी, ज्वर, मुँह द्वारा रक्तस्राव, रक्तवमन, रक्तार्श तथा पाचनशक्ति को लाभ पहुँचाता है।

अडूसा क्षार

अडूसा के पञ्चांग को लेकर जलाएँ और इसकी भस्म द्वारा नियमानुसार क्षार प्रस्तुत करें। यह क्षार २ रत्ती की मात्रामें खाँसी, दमा और नफ़्सुद्दम (खून थूकने) के लिए अमृत समान है। १ रत्ती से तीन रत्ती तक पान के साथ उपयोग में लाने से यह प्रत्येक भाँति की खाँसी और दमा को लाभ पहुँचाता है।

अडूसा काला adúsá-kálá-हिं०। अडूसा भेद (Black adhatoda)-इं०।

अडूसा क्वाथः adúsá-kváthah-सं० पुं० अडूसे के पत्र या मूल १ तो०, जल १६ तोला में क्वाथ करें; जब चतुर्थांश शेष रहे तब उसमें शहद डालकर पीने से रक्तपित्त तथा क्षय का नाश होता है।

(यो० त०; सा० सं०)

अडूसा पुटपाकः adúsá-putapákah-सं० पुं० अडूसे के पुटपाक का रस निचोड़ कर शहद मिला पीने से रक्तपित्त, छर्दि, कास तथा ज्वर का नाश होता है।

(शार्ङ्ग० सं० म० ख० १ अ०)

अडूसा सुफेद adúsá-sufeda-हिं० संज्ञा पुं० अडूसा भेद। देखो-अडूसा। White adhatoda-इं०।

अडेका मञ्जेन adaca manjen-ले० मुण्डी, गोरखमुण्डी-हिं०। देखो-मुण्डी। (Sphæranthus Indicus, Linn.)-ले० फा० इं० २ भा०।

अडेनएन्थेरा पेवोनीया adenanthera pavonia, Linn.)-ले० लालचन्दन, रक्तचन्दन-हिं०। देखो—रक्त चन्दन। इं० मे० मॉ०। इं० मे० मे०। मे० मो०। (Pterocarpus santalinus, Linn.) -ले०। फा० इं०।

अडेन्सोनिया डिजिटेटा adansonia digitata, *Linn.*)-ले० गोरख इम्ली। मे० मो०।

अडोमा adomá-मोमा बुआ-सोव, मलय।

नोट—इस शब्द का वर्णन भूलसे पृष्ठ २०६ पर अडूनी शब्द के आगे कम्पोज हो गया है। अस्तु, वहाँ देखें।

अड्डः addah–ता० मालजन–हरड़ा० । (See–Málajan).

अड्डलय addalaya–ता० निकुम्भ–सं० । (See–Nikumbha)

अड्डसरम् addasarm ते० अडूसा, वासका –हिं । (Adhatoda vasica, Nees.) –ले० । स० फा० इं० ।

अड्डुतिन पल्ली addutina-pallí–ता० कीड़ा-मार–हिं० ।

अड्डुनम् addunam–सं० क्ली० (A shield) ढाल ।

अड़गजः aragajah–सं० पुं० चक्रमर्द । चाकुन्दे–बं० । वै० श० । (Cassia tora, Linn.)– ले० । फा० इं० १ भा० ।

अड़ङ्गः arangah–सं० पुं० गोधूम, गेहूँ— Common Wheat–इं० । वै० श० Triticum vulgare–ले० । ।

अड़हुः arahuh–सं० पुं० लकुच वृक्ष । बड़-हल–हिं० । Artocarpus Lakoocha, Roxb.–ले० । वै० श० ।

अढ़उल adhaula–हिं० जपा पुष्प, ओड्रपुष्प –सं० । देखो–ओड्रः (कः) । Shoeflower (Hibiscus Rosa-sinensis, Linn)

अढ़कैयसरनु adhakeyasaranu–का० सुपारी–हिं० । Areca catechu–ले० । अ० नि० १ भा० ।

अढ़हर adhahara हिं० संज्ञा पुं० अरहर, रहर, तुवर, आढ़की । See–árhakí.

अढ़ैया arhaiyá–हिं० संज्ञा पुं० [हिं० अढ़ाई, ढाई] (१) एक तौल जो २॥ सेर की होती है । पंसेरी का आधा । (2½ Seers.)

अढ़ुई का बेल arhui-ká bela–इलज०,पं० (Acacia Intsia, Willd.) कोरिण्टा –ते० । कटार–कुमायूँ । मेमा० ।

अणि aṇi–हिं० संज्ञा स्त्री० } (१) The point
अणिः aṇih–सं० पुं० } of a needle.
नोक, सुनुई । (२) धार । बाढ़ । (३) धुरी की कील । (४) सीमा । हद । सिवान । मेड़ । (५) किनारा । (६) अत्यन्त छोटा ।

अणिमरम् aṇimaram–मल० तून वृक्ष । (Cedrela toona, Roxb)

अणियाली aṇiyálí–हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० अणि, धार] कटारी । –डिं० ।

अणी aṇí–हिं० संज्ञा स्त्री० दे०—अणि ।

अणीय aṇíya–हिं० वि० [सं०] अति सूक्ष्म । बारीक । झीना ।

अणुः aṇuh–सं० पुं० } [अणु, अण्वी त्रि०
अणु aṇu–हिं० संज्ञा पुं० }
स्त्री०] (१) जब एक परमाणु दूसरे परमाणु में मिल जाता है तब उस मिले हुए रूप को अणु कहते हैं । अणु केवल तत्वों के ही नहीं होते, प्रत्युत यौगिक पदार्थों के सूक्ष्मतम भाग भी अणु कहलाते हैं । मालीक्यूल (Molecule.)–इं० । ज़र्रह्, रेज़ह्, खुर्दतरीं जुज़्व–उ० । (२) सेल (Cell) । (३) सूक्ष्म धान्य । (४) व्रीहि विशेष । मे० गत्रिक । (५) चीन धान्य (६) द्वयणुक से सूक्ष्म, परमाणु से बड़ा कण । (७) ६० परमाणुओं का संघात या बना हुआ कण । (८) परमाणु । (९) सूक्ष्म कण । (१०) रज, रज-कण । (११) अत्यन्त सूक्ष्म मात्रा ।

वि० (१) अति सूक्ष्म । क्षुद्र । (२) अत्यन्त छोटा । (३) जो दिखाई न दे वा कठिनाई से दिखाई पड़े ।

अणुक aṇuka–सं०(संज्ञा) त्रि० अतिलघु (Very small, atomic) । (Subtle, too fine) अत्यन्त सूक्ष्म ।

अणु कोषः aṇu-koshah–सं० हिं० पुं० जीवकोष वा सेल (Cell) । देखो–सेल ।

अणु-ज्योतिः aṇu-jyotih–सं० क्ली० स्तोक दृष्टि, ज्योति अथवा तेज की अल्पता, दृष्टिमांद्य । वा० शा० ५ अ०, ६२ श्लो० ।

अणुता,–त्वं aṇutá,-tvam (१) Minuteness सूक्ष्मता, अणुरूप होना । (२) Atomic Nature परमाणु स्वभाव ।

अणु-तैलम् aṇu-tailam–सं० क्ली० शरीर के सूक्ष्मातिसूक्ष्म भागों में प्रवेश करने वाला तैल । केश में होने वाले रोग के लिए प्रयुक्त होने वाला तैल विशेष । वा० सू० २० अ० ।

(१) जिस किसी काष्ठ के कोल्हू की लाठ के नीचे तिल सरसों आदि पदार्थ घानी में पेरकर तैल निकाला जाता है, उस उस लकड़ी के खण्ड खण्ड करके एक बड़ी कड़ाही में जल भर कर अग्नि में पकाएँ। उक्त रीति से पकाने पर उन लकड़ियों से जो तैल का अंश पानी पर आ जाए उसको काछ कर अलग कर लें। उस तैल में वातनाशक औषधों को मिलाकर स्नेह पाक की विधि से पका लें, इसे अणु तैल कहते हैं। गुण—यह विशेष कर वात रोगों को दूर करता है और भगन्दर में भी इसका प्रयोग होता है।

(सु० सं० चि० अ०, वं० का०प० ।)

(२) जीवन्ती, नेत्रवाला, देवदारु, नागरमोथा, दालचीनी, कालावाला, अनन्तमूल, रक्तचन्दन, दारुहल्दी, तज, मुलहठी, कदम्ब, अगर, त्रिफला, पौण्डरीक, बेलगिरी, कमल, छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी, सल्लकी, शालपर्णी, पृष्टपर्णी, वायविडंग, तेजपात, छोटी इलायची, रेणुकबीज, नागकेशर, पद्मरेणु इन्हें समान भाग लेकर सौगुने आंतरिक्ष जल में क्वाथ करें, और ऊपर कथित द्रव्यों के तुल्य तिल तैल लें। जब तैल से दसगुना क्वाथ रह जाए तब उतार कर तैल पाक करें और जब तैलमात्र शेष रहे तब पुनः उस तैल के बराबर क्वाथ मिलाकर पकाएँ इस प्रकार दसबार पकाएँ अन्त में जब तैलमात्र शेष रह जाए तो उसमें तैल के बराबर ही बकरी का दूध मिलाकर पुनः पकाएँ। फिर तैल शेष रहने पर उतार लें। इसे अणु तैल कहते हैं। यह नस्य द्वारा प्रयोग करने में महा गुणकारी है। चूँकि यह सूक्ष्म छिद्रों में प्रवेश करता है इसलिये इसे अणु तैल कहते हैं। (वाग्भट्ट० अ० २०)

अणुदर्शक anu-darshaka-हिं० संज्ञा पुं० (Microscope) सूक्ष्मदर्शक।

अणुभा anubhá-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] Lightning बिजुली। विद्युत। अशनि। तड़ित।

अणुमस्तिष्क anumastishka-हिं० संज्ञा पुं० }
अणुमस्तिष्कम् anumastishkam-सं० क्ली० } लघुमस्तिष्क, अनुमस्तिष्क हिं०। मुख़ीख़, मुवख़्ख़र दिमाग़, दमीग़, सग़ीर दिमाग़-अ०। सेरीबेलम् Cerebellum इं०।

अणुमींगी anumíngí-हिं० स्त्री० नुवियह्-अ०। न्युक्लीओलस Nucleolus-इं०। सेल (Cell) को बड़े यंत्र की सहायता से ध्यानपूर्वक देखने पर मींगी के भीतर जो एक छोटा सा बिन्दु दिखाई देता है, उसको अणुमींगी कहते हैं। ह० श० र०। देखो सेल।

अणुमुष्टिः anumushṭih-सं० पुं० विषमुष्टि, महानिम्ब। रा० नि० व० ९। See-vishamushṭih.

अणुमुष्टिका: anumushṭikáh-सं० स्त्री० डोडी, मुष्टिका। See-Dori.

अणुरन्ध्रम् anurandhram-सं० क्लो० (Foramen vesalii) सूक्ष्म छिद्र।

अणुरेवती anurevati-सं० स्त्री० (Croton Polyandrum, Roxb.) दन्ती वृक्ष। प० मु०। रा० नि० व० ६।

अणुवीक्षण anuvíkshana-हिं० संज्ञा पुं० अणुदर्शक, सूक्ष्मदर्शक यंत्र। नज़्ज़ारह्, मकबरह्-अ०। माइक्रोस्कोप् Microscope-इं०। सूक्ष्म वस्तुओं को बड़ा करके दिखाने वाला यंत्र वह यंत्र जिसके द्वारा अत्यन्त सूक्ष्म से सूक्ष्म वस्तु भी देखी जा सकती है। इसी के द्वारा विज्ञान ने ऐसे अनेक सूक्ष्म कीटाणुओं का पता लगाया है जिनकी विद्यमानता का मनुष्य को स्वप्न में भी ख़्याल न था। देखो-सूक्ष्मदर्शक।

अणुवीक्ष्य anuvíkshya-हिं० वि० सूक्ष्मदर्शक यंत्र से दिखाई देने योग्य। नज़्ज़ारह मकबरियह्-अ०। माइक्रोस्कोपिक Microscopic-इं०।

अणुब्रीहिः anu-bríhih-सं० पुं० }
अणुव्रीहि anu-vríhi-हिं० संज्ञा पुं० }
अणुब्रीही anu-bríhí-हिं० संज्ञा पुं० }
श्यामक, साँवाँ, साँठी, छोटे धान। सूक्ष्मधान्य, एक प्रकार का बढ़िया धान, जिसका चावल बहुत छोटा होता है और पकाने से बढ़ जाता है और महँगा भी बिकता है। मोतीचूर-हिं०। रा० नि० व० १६। पर्या०-प्रमातिका(र०)। A Sort of Paddy.

अण्टगलु anta-galu-कना० (ए० व०) गोंद, लासा-हिं० । गम्ज़ gums, रेज़िन्स Resins -इं० । स० फा० इं० । देखो-निर्यास ।

अण्टि anti--मल० (Nut) गुठली-हिं० । स० फा० इं० ।

अण्टिकल anti-kala--मल० (ब० व०), अण्टि (ए० व०) गुठलियाँ--हिं० । नट्स Nuts--इं० । स० फा० इं० ।

अण्टिचेट्ट anti-chetta } -ते० केला, कदली
अण्टिपण्डु antipandu } -हिं० । म्युसा सेपिएण्टम (Musa sapientum, Linn.) स० फा० इं० ।

अण्टिमलरी anti-malari } --मल०
अण्टिमन्तारम anti-mantáram } गुलाबास -हिं० । गुलेअब्बास-फा० । (Mirabilis jalapa, Linn.)-ले० । स० फा० इं० । देखो-गुलेअब्बास ।

अण्टिश antisha--ते० चिरचिटा, चिचिर्दा, अपामार्ग--हिं० । (Achyranthes aspera, Linn.) स० फा० इं० ।

अण्टु antu--कना० (ए० व०) गोंद, लासा --हिं० । गम, Gum, रेज़िन Resin-इं० । देखो-निर्यास । स० फा० इं० ।

अण्ड anda--हिं० संज्ञा पुं० }
अण्डः andah-सं० पुं० }
अण्डम् andam--स० क्लो० }

(१) अंडकोष को टटोलने पर उसके भीतर गुठली के समान जो दो सख्त चीज़ें मालूम होती हैं, उनको अंड कहते हैं । इसकी लम्बाई $1\frac{1}{2}$ से $1\frac{3}{4}$ इञ्च, चौड़ाई १ इञ्च और मोटाई १ इञ्चसे कुछ कम होती है; उसका भार एक तौले के लगभग होता है । टेस्टिकल Testicle, टेस्टिस Testis-इं० । आण्ड, मुष्क, पुरुषाण्ड, शुक्रग्रंथि-हिं० । बैज़ुतुलमनी; ख़ुस्यह, मख़्सा, दोमह्-अ० । शा० नि० व० १८ ।

(२) आण्डकोष, वृषण--हिं० । मफ़न, फ़ोतह, कीसहे ख़ुस्यह-अ० । स्क्रोटम् Scrotum-इं० । हिं० इं० डि० ।

(३) डिम्बः (मे०), स्त्री अण्ड-हिं० । बैज़ह, बैज़तुलमनी-अ० । ओवम् Ovum-इं० । डिम्, आण्डा-बं० । इसके पर्य्याय—पेशी, कोषः, (अ) । पेशिः, कोशः, पेशीकोषः, (अ० टी०) । पेशी (के) । गुण—पाकमें कटु, मधुर (रस, में) रुचिकारक, शुक्रजनक, वात तथा कफनाशक । (४) गंधमार्जारागड । वै० निघ० २ भा० वा० व्या० विषगर्भ तैल । (५) Musk bag कस्तुरिका, नाफ़ा, कस्तूरी का नाफ़ा, मृगनाभि । (६) Semen virile वीर्य्य, शुक्र-सं० । चि० । (७) एरण्ड --हिं० । पामा क्रीस्टाई Palma christi (Ricinus Vulgaris)--ले० । (८) अण्डा (An Egg.) । हिं० इं० डि० । (९) पंच आवरण । दे० कोश । (१०) कामदेव । (Cupid).

अण्ड उपांड खात anda-upánda-kháta -हिं० संज्ञा पुं० (Digital fossa).

अण्डकः andakah-सं० पुं० (Scrotum) आण्डकोष । हिं० च० ।

अण्डकं andakam-सं० क्ली० क्षुद्र डिम्ब, छोटा अंडा (An small egg).

अण्डककड़ी anda-kakari }
अण्डककर्टी anda-karkati } हिं० संज्ञा

स्त्री० आण्डख़र्बूज़ा, पपैया, पपीता Carica Papaya, Linn. (Fruit of).

अण्डकोटर पुष्पा andakotára-pushpá }
अण्डकोटरपुष्पी anda-kotara pushpí }
सं० स्त्री० नीलबुह्ना । देखो-अज़ान्त्री । A pot-herb (Convolvulus argenteus). रत्ना० ।

अण्डकोशः andakoshah }
अण्डकोषः anda-kosha } सं० पुं०
अण्डकोषकः andakoshakah }

(१) कुट्मल । वृषण (Scrotum, Tunica albuginea testes) । शा० नि० व० १८

संस्कृत पर्याय—मुष्कः, वृषणः, (अ)। अंडं, पेलं, अण्डकः (हे) । सीमा (ज) । फलकोशकः (शि) । फलं (के) । बीजपेषिका (रा) । सफ़न (अह् फ़ाब, सिफ़न–ब० व०), कीसुल् उन्स् बैन, क़ीसह् ख़ुस्यह् (ख़ुसिया) फ़ोतह् (फोता)–अ० । पोस्त ख़ायह्–फ़ा० । ख़ुस्यों की थैली–उ० ।

लिंगेन्द्रिय के नीचे और पीछे वह चमड़े की दोहरी थैली जिसमें वीर्यवाहिनी नसें और दोनों गुठलियाँ रहती हैं । दूध पीकर पलने वाले उन समस्त जीवों को यह कोश वा थैली होती है जिनके दोनों अंड वा गुठलियाँ पेडू से बाहर होती हैं ।

(२) फल का छिलका । फल के ऊपर का बोकला ।

अण्डखरबूज़ा anda-kharabúzá–हिं० संज्ञा पु० अरण्डखरबूजा, अरण्डककड़ी, एरण्डकर्कटी, अरण्ड पपैया, पपैया, पीपैयह्, बिलायतीरेंड़, पपीता, पपैता–अम्बा, पपैयह् । अरण्डखरबूज़ा –पं० । पोपाई–द० । एरण्डचिर्भिट, वातकुम्भ, मधुकर्कटी, नलिकादलः–सं० । पपैया, पोपुयि-अम्मा, पेंपाई, पप्पिया, पेपिया, पपया–बं० । अम्बहे-हिन्दी–अ०, फ़ा० । शजरतुल् बतीख़ –अ० । दरख़्त ख़ुरपुज़ह्, दरख़्तख़र्बुज़ह् –फ़ा० । ख़ुरपुज़ह् का दरख़्त–उ० । पपाय (Papay), पपावपेपा ट्री (Papaw tree), मेलनट्री, (Melon tree,), मेलन मेमेयो (Melon- Mamao), कुकुरबिटा पेपा (Cucurbita papa)–इं० । पपाया (Papaya), पपाव (papaw,) केरिका पपाया Carica Papaya *Linn.* (Fruit of–)–ले० । पपायेरकम्यून Papayer commun–फ्रां० । मेलोनेनबॉम Melonen baum–जर० । पप्पायि, पप्पायिपज़्म, पप्पालि-पज़्म, पप्पालिमरम्–ता० । बोप्पायि पण्डु, मदन-अनपकाय, मधुरनकम्, बपैय–पण्डु –ते० । पप्पाय–पज़्म, आपपाय–पज़्म, पप्पा-पम्, कप्पालम्–मल० । बोप्पायि–हण्णु, परङ्गि –हण्णु परङ्गी, पेरङ्गी, पेरिङ्गि–पळ्ळसु । पप्पा-ङ्गाये–कना० । पोपया, पपाई, पपया–मह० । पपई, पपया–मह०, कच्छ०, बम्ब० । पप्यां, पपायि, पपिया, पयाई, पयाईकाट, पपाऊन, चिब्डा, एरण्डककड़ी, फाड़–चिभड़ी–गु० । पपोल्का–सिं० । सिम्बो–सि, तिम्बां–सि–बर० । पप्पागाई–तु० । पोप्पाए–फल–को० । पप्ता, काठचिभड़ी–सिंध० ।

कुमकोलता या पपीता वर्ग

(N. O. Papayoceæ, or Passifloraceæ.)

नॉट ऑफ़िशल

(Not Official).

उत्पत्ति स्थान—इसका मूल निवासस्थान अमेरिका है, परन्तु अब यह सम्पूर्ण भारतवर्ष (विशेषकर पश्चिम भारतवर्ष) में तथा पुरानी दुनियाँ के उष्ण प्रधान प्रदेशों में लगाया जाता है ।

नोट—किसी किसी ग्रन्थ में इसका अरबी फ़ारसी नाम अनबहे हिन्दी लिखा है । परन्तु प्रामाणिक चिकित्सा ग्रन्थों में यह नाम नहीं मिलता । मुहीत आज़म में पपय्यह् तथा मख़ज़नुल् अद्वियह् में पपीहा आदि नामों से इसका वर्णन किया गया है । गीलानी ने शरह् मुफ़रदातक़ानून में बतीख़ के अन्तर्गत इसका वर्णन किया है । इग्नेशिया अमारा (Ignatia Amara) को भी जो कि कुचिला वर्ग की ओषधि है उसके हस्पानी नाम पपीता से ही अभिहित करते हैं, परन्तु वह विषैली तथा अरण्ड-खरबूज़ा से सर्वथा भिन्न वस्तु है; अस्तु, उसके लिए देखो—पपीता ।

वानस्पतिक वर्णन—इसके वृक्ष २० से ३० फीट ऊँचे, आरम्भ में अशाखी (अर्थात् खजूर व तालवत् एक ही तनेपर); किन्तु प्राचीन होने पर शाखायुक्त (पृथक् पृथक् शिरोमय) हो जाते हैं । पत्र लम्बे डंठल युक्त (१—१ गज लम्बे), एकांतरीय (विषमवर्ती) पञ्जाकार, सम खंड-युक्त, एरण्डपत्रवत्, किन्तु उससे मृदु एवं लघु

होते हैं। खराड—आयताकार, न्यूनकोणीय, शिराओं से व्याप्त होता है जिसके सिरे पर पत्तों की छत्री बनी होती है।

मध्य खराड—पुनः त्रिखराडयुक्त होता है। पुष्पाभ्यन्तरकोष नरपुष्प में नलिकाकार और मादा में पञ्च खराडयुक्त होते हैं। नरपुष्प कषीय किञ्चित् मिश्रित गुच्छों में एवं श्वेत होते हैं। मादा (नारि) पुष्प साधारणतः भिन्न वृक्ष में कक्षान्तरीय, वृहत् एवं गूदादार और पीताभायुक्त होते हैं। फल रसपूर्ण आयताकार, धारीदार, लघु खर्बूजा के आकार के परिपक्वावस्था में पीताभायुक्त हरित या सुर्खीमायल वर्ण के और अपक्व दशा में हरे रंग के होते हैं। इनमें बहुसंख्यक गोलाकार धूसर वर्ण के चिपचिपे मरिचवत् बीज होते हैं इनमें से चुनचुनाहट गंध आती है। अपरिपक्वावस्था में फल गाढ़े दूध से भरा रहता है। पत्र एवं प्रकांड में भी दुग्ध होता है। इसमें पेपीन (अरण्डखरबूज़ा सत्व) नामक एक प्रभावशाली पाचक सत्व होता है।

नोट—फल के विचार से ये चार प्रकार के होते हैं:—

१—नर- जिसमें फल नहीं लगते, ये केवल पुष्प आचुकने पर शुष्क हो जाते हैं। शेष तीन फलदार होते हैं। २—इनमें से एक बेल पपय्या है। इस प्रकार का फल तने से लगा हुआ नहीं होता, अपितु डंठलयुक्त होता है। शेष दो प्रकार (तीन व चार) के फल तने से लगे होते हैं केवल फल के छोटे बड़े होने का भेद होता है।

अंडखरबूजा बम्बई, करांची और मदरास में अधिकता से होता है।

प्रयोगांश—दुग्धमय रस, बीज तथा फलमज्जा और पत्र, दुग्धमय रस द्वारा प्रस्तुत सत्व "पेपीन" आदि।

रासायनिक संगठन—इसके दुग्धमय-रसमें एक प्रकार का अल्ब्युमिनीय पाचक संधानोत्पादक (अभिषवकारी) पदार्थ होता है, जो दुग्ध को जमा देता है, उसका पेपीन (Papain) या पेपयोटीन (Papayotin) कहते हैं। ताज़े फल-में रबरवत् एक पदार्थ, एक मृदु पीतवर्ण का राल, वसा, अल्ब्युमीनाइड्स, शर्करा, पेक्टीन, निम्बुकाम्ल (Citric Acid), अम्लीकाम्ल (Tartaric Acid), सेब की तेजाब (Malic Acid) और द्राक्षौज (अंगूर की शर्करा) प्रभृति पदार्थ पाए जाते हैं। शुष्क फल में अधिक परिमाण में भस्म (८.४%) होती है जिसमें सोडा, पोटाश और स्फुरिकाम्ल (Phosphoric Acid) पाए जाते हैं। इसके बीजों में एक प्रकार का तैल होता है जिससे अग्राह्य गंध आती है। (स्वाद-अग्राह्य) इसको अरण्डखरबूज़ा तैल या पपैया तैल (Papaya Oil or caricin) कहते हैं। इनके अतिरिक्त इसमें पामिटिक एसिड, कैरिका फैटएसिड, एक स्फटिकवत् अम्ल जिसको पपीताम्ल (Papayic Acid) कहते हैं और रेजिन एसिड तथा एक मृदुराल आदि पदार्थ पाए जाते हैं। इसके पत्रमें कार्पीन (Carpaine) नामक एक क्षारीय सत्व होता है जिससे कार्पीन हाइड्रोक्लोराइड (Carpaine hydrochloride) बनता है। यह जल में विलेय होता है और हृदय बलप्रद रूप से डिजिटेलिस के स्थानमें $\frac{१}{३०}$ से लेकर $\frac{१}{१५}$ ग्रेन तक की मात्रा में त्वगन्तःक्षेप रूप से उपयोग किया जाता है। कार्पीन एक विषैला पदार्थ है।

औषध निर्माण—१-पपीता स्वरस, मात्रा-२० से ६० बुंद। २—शुष्क पपीता स्वरस, मात्रा-१ से २ ग्रेन या अधिक। इससे $\frac{१}{६}$ भाग पेपीन (पपीतासत्व) प्राप्त होता है। ३—पपीता सत्व अर्थात् पेपीन या पेपेयोटीन, मात्रा—१ से ८ ग्रेन। ४—फल मज्जा। ५—शर्बत, चटनी आदि। ६—कल्क व पुल्टिस।

सेवन विधि—इसको कीचट में डालकर या मिश्रण (मिक्सचर) या गुटिका रूप में तथा एलिक्सिर और ग्लीसरोल की शकल में देते

हैं। डिस्पेन्सिग, सिरप से इसकी उत्तम वटिकाएँ प्रस्तुत होती हैं।

नॉट ऑफ़िसल योग
(Not official preparations).
और पेटेन्ट औषध—

(१) **एलिक्सिर पेपीन** (Elixir papain) अक्सीर जौहर पपय्यह्।

पेपीन ४ भाग, मद्यसार (ऐल्कोहल) १५ भाग, परिस्रुत वारि (डिस्टिल्ड वॉटर) ४५ भाग, ऐरोमैटिक एलिक्सिर आवश्यकतानुसार या इतना जिससे पूरा सौ होजाए। (बी० पी० सी०).

मात्रा—आधा से १ ड्राम भोजन के साथ।

(२) **ग्लीसराइनम् पेपीन** (Glycerinum papain) ग्लीसरीन जौहर पपय्यह्, माधुरिनीय पपीतासत्व। पेपीन ८ भाग, हाइड्रोक्लोरिक एसिड डाइल्यूट ८ भाग, सिम्पल एलिक्सिर ५ भाग, ग्लीसरीन (मधुरीन) १०० भाग पर्यन्त।

मात्रा—१ ड्राम भोजन के साथ।

(३) **ट्रॉकिस्काई पेपीन** (Trochisci papain) पेपीन की टिकिया—

शक्ति—प्रत्येक टिकिया में आधा ग्रेन पेपीन होता है। टेब्लेट्स पेपीन, प्रत्येक में २ ग्रेन पेपीन होता है।

इतिहास तथा गुण-धर्म—ब्राज़ील निवासी इसको प्राचीन काल से जानते थे। अस्तु, अण्डखर्बूज़ा की नरमादा जातिको वहाँ मेमेओ मेको Mamao macho (नर मेमेओ या पपीता) तथा फलान्वित होने वाली की जाति को मेमेओ फेमिया mamao famea (मादा पपीता) और अन्तिम की बोई जाने वाली जाति को मेमेओ मेलेओ (फीमेल मेमेओ) कहते थे। परन्तु, उसके दूधिया रस का कृमिघ्न प्रभाव १७ वीं शताब्दि मसीही में ज्ञात हुआ। पश्चिम भारतीय द्वीपों में इसका मांसपाचक प्रभाव सम्भवतः प्राचीन काल से ज्ञात था। ऐसा प्रतीत होता है कि पुर्तगाल निवासी जब इसको भारतवर्ष में लाए तब उनसे भारतीयों को भी इसके मांसपाचक प्रभाव का ज्ञान होगया; क्योंकि भारतवर्ष में भी यह बहुत काल से व्यवहार में आ रहा है। अस्तु, मांसको कोमल करने के लिए कच्चे अंडखर्बूज़ा का रस उस पर मलते हैं अथवा उसको इसके (पपय्या) पत्र में लपेट देते हैं। (पत्र साबुनवत् है–इं० मे० मे०।) मख़्ज़नुल् अद्वियह् तथा मुहीत आज़म प्रभृति ग्रन्थों में भी पपय्यह् के दुग्ध के इस गुण का वर्णन है कि वह गोश्त को गुज़ार करता (कोमल करता या गला देता) और दुग्ध को जमा देता है।

मख़्ज़नुल् अद्वियह् के लेखक मीर मुहम्मद हुसेन (१७७० ई०) ने पपय्यह् वृक्ष का स्पष्ट वर्णन किया है। वे इसके रस में आर्द्रक को मिश्रित कर मांस के मृदु करने के उपयोग का वर्णन करते हैं। उनके वर्णनानुसार यह रक्तनिष्ठीवन, रक्तार्श तथा मूत्रप्रणालीस्थ क्षतों की औषध है और अजीर्ण में भी हितकारी है। दद्रु या विचर्चिका (जिसमें अत्यन्त खाज उठती हो एवम् जिससे अधिक स्नेह स्राव होता हो) में इसके दुग्ध को ३-४ बार लगाने से लाभ होता है।

प्रकृति—पक्व-गर्म तर; अपक्व-उष्ण, रूक्ष; वृक्ष-त्वक्–उष्ण रूक्ष, किसी किसी के मत से सर्दतर २ कक्षा में।

हानिकर्त्ता—यकृत् को वा शीत प्रकृति और कफ प्रकृति वालों को। दर्पनाशक-सिकञ्जबीन बज़ूरी (खाँड़, लवण तथा सिर्का प्रभृति)। आहार मध्यमें इसका खाना उत्तम है। स्वाद–अपक्व कडुआ और पक्व मिठास लिए कुछ बेस्वाद होता है।

प्रतिनिधि—हिन्दी अञ्जीर।

मात्रा—४ माशे।

गुण, कर्म, प्रयोग—कोष्ठमृदुकर, तृषाहर, प्रवाहिका, अर्श, प्लीहावृद्धि, कंठ मुखकी रूक्षता तथा वृक्कनैर्बल्य और यक्ष्मा को लाभप्रद है। अशुद्ध मलोंको त्वचा, हस्त व पाद द्वारा विसर्जित

करता है; बृंहण विस्मृतिहर, रुक्षता, रक्त-निष्ठीवन, रक्तस्राव, रक्तार्श, मूत्रप्रणालीस्थ क्षत, हृत् व आमाशय व यकृद् दाहहर, शीघ्रपाकी, कफ तथा रक्तवर्द्धक, कफज व वातज आन्त्रकूजन-प्रद है। मु० आ०। इसका परिपक्व फल उपदंश को गुणप्रद है। इसके पके हुए और कच्चे फल का अचार प्लीहा के रोग में गुणकारक है। यह पाचक, क्षुधावर्धक, वायु-लयकर्ता, वृक्क व बस्त्यश्मरी निःसारक और मूत्रल है। मांस विशेषतः कबाबों के मांस को अतिशीघ्र गलाता एवम् उसका दर्पघ्न है। भारतवर्ष में प्रायः यह इसी काम में आता है। म० मु०। बु० मु०।

भारतवर्ष में डॉ० फ्लेमिङ्ग (१८१० ई०) ने इसके दुग्ध के कृमिघ्न रूप से उपयोग की ओर ध्यान दिलाया। इसके कथित गुणधर्म के प्रमाण के लिए वे. मि० कार्पेण्टीर कॉसिग्नी (Mr. Carpentier Cossigni) के लेखों से एक मनोरञ्जक भाग उद्धृत करते हैं। अभी हाल ही में मि० बॉटन (Mr. Bouton) ने इसका प्रबल प्रमाण पेश किया है; जिससे यह निश्चिततया निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि इसके कृमिघ्न प्रभाव विषयक वर्णन वास्तविक घटना पर स्थापित किये गये हैं। वे डॉ० लेमारचन्द (Dr. Lemarchand) द्वारा व्यवहृत निम्न सेवन विधि का उल्लेख करते हैं—

ताजे अंडखरबूजे का दुग्ध, और शहद, प्रत्येक चाय की चम्मच भर इनको भली भाँति मिश्रित कर उसमें उबलता हुआ जल ३ या ४ चम्मच भर धीरे धीरे योजित करें। और जब यह काफी शीतल होजाय तो इसे एक घूँट में पी जाएँ। इसके दो घंटे पश्चात् सिर्का या नीबूके रस मिले हुए एरण्ड तैल की एक मात्रा सेवन करें। आवश्यकतानुसार इसको दो दिन तक बराबर सेवन करें। यह पूर्ण वयस्क मात्रा है। ७ से १० वर्ष के भीतर के बालक को इसकी आधी मात्रा देनी चाहिए और तीन वर्ष से भीतर के शिशु को इसका तिहाई अथवा एक चाय की चम्मच भर देना चाहिए। यदि ऐंठन प्रतीत हो जैसा इससे कभी कभी होता है तो शर्करा योजित एनिमा (वस्ति) करने से वह दूर हो जाता है।

मुख्यतः यह केचुआनिस्सारक है। कद्दूदाना (Taenia) पर इसका कम प्रभाव होता है। बीज में भी कृमिघ्न प्रभाव होने का वर्णन किया गया है, परन्तु इसके गुण विषयक प्रभावों से भलीभाँति यह परिणाम नहीं निकलता।

दक्षिण तथा पश्चिम भारतवर्ष और बङ्गप्रदेश की सभी जाति की स्त्रियों में इसके बीज के आर्त्तवप्रवर्तक गुणमें प्रबल विश्वास है। उनकी यहाँ तक धारणा है कि यदि गर्भवती स्त्री इसे मध्यम मात्रा में भी खाए तो गर्भपात अवश्यम्भावी परिणाम होगा। यही पूर्वाग्रह इसके फल खाने के खिलाफ है। तो भी पपीता के प्राक्कथित आर्त्तवप्रवर्तक गुणों के प्रमाणभूत घटनाओं की बहुत कमी है। (बीज सशक्त आर्तवप्रवर्तक है–इं० मे० मे०) गर्भपात हेतु इसके दूधिया रस का गर्भाशयिकद्वार में पेसरी रूप से स्थानिक उपयोग होता है। यह जमे हुए अल्ब्युमन का लयकर्ता है।

१ आउंस इसके पत्र, ६० ग्रेन (३० रत्ती) अहिफेन तथा ६० ग्रेन (३० रत्ती) सैंधव-लवण इनको रगड़ कर कल्क प्रस्तुत करें। इसके स्थानिक उपयोग से गिनी कृमि (Guinea-worm) नष्ट होती है। 'ले० क०० कॉक्स'।

एक चाय की चम्मच भर अंडखरबूजे के दुग्ध तथा उतनी ही शर्करा को परस्पर मिलाकर इसकी तीन मात्राएँ बनाकर दैनिक सेवन करने से प्लीहा एवम् यकृत् वृद्धि चिकित्सा में उत्तम परिणाम प्राप्त हुए। एवर्स (इं० मे० ग० फर० १८७५ ई०)।

फल पुरातन अतिसार में गुणदायक होता है। इसका अपक्व फल कोष्ठमृदुकारक तथा मूत्रल है। इसका ताजा दूधिया रस वर्ण्यलेपन (Rubifacient) तथा दद्रु हेतु उत्तम

प्रलेप है। यह वृश्चिक दंश की निश्चित औषध है। बीज भी इस हेतु उतने ही लाभप्रद हैं। पक्व फल परिवर्तक है और इसका निरन्तर सेवन आदती मलावरोध को नष्ट करता है। यह अजीर्ण तथा रक्तार्श में हित है। उबालने के पश्चात् इसमें निम्बु स्वरस तथा शर्करा सम्मिलित करने से इसकी उत्तम चटनी प्रस्तुत होती है। इसका शुष्क किया हुआ एवं लवण योजित फल प्लीहा शोथ तथा यकृद् शोथ को कम करता है। इसके अपक्व फलकी कढ़ी प्रस्तुत कर स्तन्य-जनन प्रभाव हेतु स्त्रियाँ सेवन करती हैं। वात-वेदनाओं में इसके पत्र को उष्ण जल में डुबोकर अथवा अग्नि पर गरम करके वेदनास्थल पर बाँधते हैं। पत्तियों को कुचलकर इसकी पुल्टिस बाँधने से कहा जाता है कि श्लैपदिक शोथ कम होता है। इस हेतु इसके फल द्वारा निष्कासित प्रगाढ़ दुग्ध का २ से ४ ग्रेन (१ से २ रत्ती) की मात्रा में वटी रूप में आन्तरिक उपयोग होता है। इं० मे० मे०।

अरण्डखरबूज़ा का दूधिया रस और तन्निर्मित सत्व (पेपीन)

दूधिया रस

प्राप्ति व निर्माण-विधि—अपक्व (वा अर्द्ध-पक्व) फल में लम्बाई की रुख बारम्बार चीरा दें। इस प्रकार जब पर्याप्त दुग्ध निकल आए तब उसे एकत्रितकर सैण्डबाथ (वालुकाकुण्ड)पर रख मन्द अग्नि द्वारा शुष्क करें। इस प्रकार एक मन्द श्वेत वर्ण का चूर्ण प्राप्त होगा। आन्तरिक रूप से प्रयुज्य यह एक उत्तम औषध है। पूर्ण वयस्क मनुष्यको इसकी १ या २ ग्रेन की मात्रा शर्करा वा दुग्ध के साथ देनी चाहिए। इसी प्रकार की एक औषध "फिञ्लर्स पेपीन" के नाम से बिकता है। स्वाद अप्रिय होने के कारण इसका टिंक्चर उत्तम नहीं होता। आवश्यकता होने पर बालकों अथवा स्त्रियों के लिए इसके चूर्ण का शर्बत बनाया जा सकता है। अजीर्ण में यह अत्यन्त सुखदायक है।

लक्षण तथा पेपीन से इसकी तुलना—क्षारीय, अम्लीय, तथा न्युट्रल (उदासीन) घोलोंमें विलायक रूपसे यह पेप्सीनके समान एक एन्ज़ाइम है। यह मांसीय एल्ब्युमेन का प्रबल पाचक एवं वास्तविक पेप्टोन का निर्माण करता है और पेप्सीन के समान दुग्ध को जमा देता है। पेप्सीन से यह इस बात में भिन्न है कि बिना अम्ल योग के तथा अधिक उत्ताप पर एवं थोड़े काल में यह प्रभाव करता है। फाइब्रिन तथा अन्य नत्रजनीय पदार्थों का विलायक होने के कारण यह मांस को गलाता है। छना हुआ रस पेप्सीन से रासायनतः इस बातमें भिन्न है कि उबालने पर वह तलस्थायी (अधःपातित) नहीं होता। और मर्क्युरिक क्लोराइड (पारद्-हरिद्), आयोडीन (नैलिका) एवं सम्पूर्ण खनिजाम्लों द्वारा तलस्थायी हो जाता है। इस बात में वह पेप्सीन के समान है कि न्युट्रल एसीटेट ऑफ लेड द्वारा वह तलस्थायी हो जाता है तथा कॉपर सल्फेट (ताम्रगन्धेत्) और आयर्न क्लोराइड (लौह हरिद्) के साथ तलस्थायी नहीं होता।

पेपीन या पेपेयोटीन

(Papain or papayotin)

प्राप्ति व लक्षण—यह एक एल्ब्युमीनीय वा पाचक खमीर वा अभिषव (प्रभावात्मक सत्व) है जो अपक्व अरण्डखरबूज़ा के दूधिया रसको मद्यसार (ऐलकुहॉल) के साथ तलस्थायी करने से प्राप्त होता है। यह एक श्वेत वर्ण का विकृताकार (अमूर्त) आर्द्रभूत चूर्ण है। जो ७५ % शुद्ध मद्यसार, जल एवं ग्लीसरीन (मधुरीन) में विलेय होता है। इसमें प्राणिज द्रव्यों के पचाने की शक्ति है। एक ग्रेन पेपीन २०० ग्रेन ताज़े दबाए हुए रक्त फाइब्रिन को पचा देगा।

नोट—यद्यपि अरण्डखरबूज़ा के अपक्व रस से निकाल कर शुष्क किए हुए दूधिया रस को अंग्रेजी में पेपेयोटीन कहते हैं तथापि पेपीन और पेपेयोटीन अधुना पर्याय रूप से व्यवहृत होते हैं।

पेपीन (Papain) को पेपाइन (papine) के साथ मिलाकर भ्रमकारक न बनाना चाहिए। पेपाइन एक द्रव पदार्थ है जिसमें अफीम के वर्जनीय क्षारीय सत्वों से भिन्न उसमें अङ्गमर्दप्रशमन गुणों के होने की प्रतिज्ञा की जाती है।

इन्द्रियव्यापारिक कार्य या प्रभाव—इसकी प्रभाव विषयक बातों में सिवा इसके और कोई स्मरणीय बात नहीं कि इसका नत्रजनीय पदार्थों पर प्रबल प्रभाव होता है; और जब पेपेयोटीन को सीधा रक्तमें पहुँचाया जाता है तब यह प्रबल विषैला प्रभाव उत्पन्न करता है; जिस से हृदय तथा वातकेन्द्र वातग्रस्त हो जाते हैं। अन्यथा आन्तरिक रूप से औषधीय मात्रा में यह सर्वथा निरापद है।

उपयोग—डिफ्थीरिया (खुनाक़, कंठरोहिणी), अल्सरेटेड थ्रोट (कण्ठक्षत), क्रूप (स्वरघ्नीकास), एक्ज़ेमा (कन्द) और फिशर ऑफ दी टङ्ग (जिह्वा की कर्कशता) आदि में इसका स्थानिक उपयोग और अग्निमांद्य, अजीर्ण वृक्कशूल, कद्दूदाना (टीनिया सॉलियम्), आध्मान, अतिसार तथा वृक्काश्मरी एवं दन्तोद्भेदजन्य संग्रहणी (Lienteric Diarrhœa) प्रभृति में इसका आन्तरिक उपयोग लाभदायक होता है।

(१) पेपीन तथा पेप्सीन वा पेनक्रिएटीन (ऑमीन) के पाचक प्रभाव की तुलनात्मक व्याख्या—

(क) अम्लीय, क्षारीय तथा न्यूट्रल घोलों (वा माध्यम) में भी इसका प्रभाव होता है जिससे उस अवस्था में भी इसके प्रभाव करने की आशा की जा सकती है जब कि अस्वस्थता के कारण अथवा कृत्रिम रूप से जैसा औषध-काल में होता है, आमाशयस्थ पदार्थों की प्रतिक्रिया क्षारीय या न्यूट्रल(उदासीन)होजाती है। उक्त दशाओं में पेपीन सत्यतः व्यर्थ प्रमाणित होगा।

(ख) क्षारीय एवं न्यूट्रल घोलों में प्रभावजनक होने के कारण आहारीय पदार्थों के आमाशय से आंत्र में जिसकी प्रतिक्रिया क्षारीय होती है, आ जाने पर भी इसका प्रभाव होता रहेगा जो पैङ्क्रिएटीन (ऑमीन) के प्रभाव के तुल्य है। सम्पूर्ण आंत्र पर इसका प्रभाव होता रहेगा।

(ग) इसमें कुछ अङ्गमर्दप्रशमन वा शूलहर प्रभाव भी है।

(घ) पचनीय सान्द्राहार के अनुपात से द्रवाहार की मात्रा औसत वा अत्यधिक होनेपर भी यह पेप्सीन की अपेक्षा प्रबलतर प्रभाव प्रदर्शित करता है।

(ङ) Proteolytic प्रभाव के सिवा पेपीन का तैल पर स्पष्ट इमलशनीकारक प्रभाव होता है।

(च) पेपसीन तथा पेङ्क्रिएटीन (ऑमीन) की उपस्थिति में पेपीन का प्रभाव बढ़ जाता है।

मांस को कोमल करने के लिए पेपीन घोल में डुबा रखने पर वह अधिक काल तक बिना सड़े गले सुरक्षित रहता है जो इसके बिना कदापि सम्भव न होता। इससे अनुमान किया जा सकता है कि इसमें एन्टिसेप्टिक (पचननिवारक) तथा पाचक प्रभाव भी है। (ज) गाढ़े द्रवों में इसका विलक्षण प्रभाव होता है।

(२) आमाशय व आन्त्र विकार-अजीर्णावस्था तथा अन्य आमाशयान्त्रविकार जन्य दशाओं में मांस पचाने में सहायक होने के लिए फ्रांस देश में पेपेयोटीन का उपयोग किया गया। बालकों के कतिपय आमाशय व आंत्र विकारों में इसका सफलतापूर्ण प्रयोग किया गया। कहा जाता है कि थोड़ी मात्रा में इससे अग्निमांद्य एवम् छर्दि में अतिशीघ्र लाभ प्रगट हुआ। स्वाभाविक आमाशयिक रस के कम बनने की अवस्था में पेपेयोटीन को मुख द्वारा अथवा पोषकवस्ति रूप में प्रयोग करने से विशेष लाभ होता है। पेपीन बालकों के पुरातन आमाशयिक प्रतिश्याय, अम्लाजीर्ण, तीव्र आमाशयशूल (आमशूल जो भोजनके थोड़ी देर पश्चात् आरम्भ होता

है) में विशेष रूप से लाभदायक होता है। "पी० बी० एम०"।

२ से ५ ग्रेन की मात्रा में अजीर्ण, पुरातन आमाशयिक प्रवाह तथा आमाशयिक व्रण (अल्सर) वा सर्तान या मांसार्बुद (कैन्सर) में शुद्ध पेपीन द्वारा उत्पन्न मूल्यवान प्रभाव से लेखक को अत्यन्त सन्तुष्टि हुई। वे निम्नोल्लिखित पेपीन मिश्रित योग के विषय में लिखते हैं कि बहुत से आमाशयिक विकारों में इससे उत्तम प्रभावकारी कोई अन्य योग नहीं।

योग—पेपीन ३ ग्रेन, सोडाबाईकार्ब ३० ग्रेन मेग कम् पॉण्ड (विचूर्णित मैग्नेशिया कार्ब) २० ग्रेन, बिज़्म्युथाई कार्ब १० ग्रेन, मॉर्फीई हाइड्रोक्लोर $\frac{1}{18}$ ग्रेन, यह वटी रूप में सोडा के साथ अथवा बिना सोडा के और किसी शक्ति के ग्लीसराइनम् पेपीन रूप में दिया जा सकता है। इसके आमाशयिक प्रभाव में क्रियोज़ूट से कोई बाधा उपस्थित नहीं होती है। "ह्विट० मे० मे०"।

(क) बालकों का पुरातन आमाशयिक प्रतिश्याय—बालकोंके उस पैत्तिक विकारमें जिसमें क्षुधा का नष्ट हो जाना, आलस्य, चेहरे के रंग का पीला हो जाना, रात्रि में निद्रा का न आना, दिन में शीघ्र क्रोधित होना, प्रायः शिरःशूल का होना, चूना जैसा मूत्र आना इत्यादि लक्षण होते हैं। (जब यह दशा कुछकाल लगातार रहती है तब इससे बालक दुर्बल हो जाता है एवम् विकृतश्लेष्मा आमाशय तथा आंत्र की भीतरी पृष्ठ को आच्छादित करलेती है जिससे आहार रस उचित मात्रा में अभिशोषित नहीं होता।) ऐसी निर्बलता की दशाओं में जो साधारणतः कॉडलिवर ऑइल (कॉड मत्स्य यकृतैल) तथा सिरप फॉस्फॉस कम्पाउण्ड आदि औषधें व्यवहार में लाई जाती हैं, उनका आत्मीकरण नहीं होता। किसी किसी समय कास विकास पाता है जिससे बालक को प्रारम्भिक यक्ष्मा से ग्रस्त कहा जाता है। डॉ० हर्शेल (Dr. Herschell) ने उक्त दशाओं में निम्न योग से बहुत लाभ होते हुए पाया—

योग—पेपीन (फिङ्क्लर) आधा से एक ग्रेन, सैकरम् लैक्टेट १ ग्रेन, सोडा बाईकार्ब इनकी एक गोली बनाएँ। इसे प्रत्येक खाने के बाद सेवन करना चाहिए। थोड़े जल के साथ १ या दो बुंद टिं० नक्स वोमिका भोजन के ठीक पहिले देने से भी लाभ होता है।

बालकों को जब हरे रंग के दस्त और दूध के वमन होते हैं जैसा कि दन्तोद्भेद काल में प्रायः होता है तब उक्त अवस्था में निम्नोल्लिखित योग लाभदायक सिद्ध होते हैं।

पेपीन १ ग्रेन, पल्व, डोवराई (डोवर्स पाउडर) ४ ग्रेन, सोडा बाईकार्ब १० ग्रेन, इनकी १२ मात्रा बनाकर १-१ मात्रा प्रातः सायं सेवन कराएँ। पपीता स्वरस के किञ्चित् कोष्ठमृदुकर प्रभाव के कारण अतिसार की अवस्था में डॉ० हचिसन (Dr. Hutchison) पेपीन को उससे उत्तम ख्याल करते हैं।

(ख) अम्लाजीर्ण—(Acid Dyspepsia) इस प्रकार के अजीर्ण में पेपीन अत्यन्त लाभप्रद सिद्ध होता है। चूँकि यह क्षारकी विद्यमानता में भी उतना ही उत्तमतापूर्वक प्रभाव प्रगट करता है, आमाशयस्थ अम्लाधिक्यता को न्युट्रलाइज (उदासीन) करने के लिए पर्याप्त परिमाणमें बाइकार्बोनेट ऑफ़ सोडा देना चाहिए। यह अपने गैस्टिसेप्टिक (पचननिवारक) प्रभाव द्वारा आध्मानजन्य अस्वाभाविक संधान (अभिषव) को रोकता है। उक्त अवस्था में निम्न योग उत्तम प्रमाणित होते हैं।

१—पेपीन २ ग्रेन, सैकरम् लैक्टेट (दुग्धोज) ५ ग्रेन। इसकी एक मात्रा बनाकर भोजन के एक घंटा पश्चात् निम्न मिश्रण के साथ सेवन करें।

मिश्रण—सोडाबाईकार्ब १५ ग्रेन, ग्लोसरीन, एसिड कार्बोलिक मिक्सचर ८, स्पिरिट एमोनिया एरोम्युटिक मिक्सचर २० जल १ आउंस

इसको भोजन करने के एक घंटा पश्चात् सेवन करें। इसको भोजन के साथ सेवन करने से पेपीन की उससे न्यूनतर मात्रा भी वही प्रभाव प्रगट करेगी।

डॉक्टर हचिसन (Dr. Hutchison) अजीर्णावस्था में अण्डखरबूजा के शुष्क रस को अधिक उत्तम ख़याल करते हैं। जैसे—

अण्डखरबूजा का शुष्क रस १२ ग्रेन, पल्व इपीकाक (इपीकेक्वाना चूर्ण) १२ ग्रेन, पल्व रहीआई (रेवन्दचीनी का चूर्ण) ३ ग्रेन, ग्लीसरीन (मधुरीन) आवश्यकतानुसार इसे चाहे चूर्ण रूप में रखें अथवा इसकी १२ वटिकाएँ प्रस्तुत करें।

इसको वे भोजनोपरांत सेवन करने का आदेश करते हैं। शुष्क पपीता स्वरस को पसन्द करने का कारण यह है कि उसका औपयोगिक प्रभाव किंचित् कोष्टमृदुकर है और यह अधिकतर संतोषप्रद है। जैसा कि प्रागुक्त मात्रा (प्रत्येक वटी में १ ग्रेन) में सेवन करने से यह अत्यन्त मृदुभेदक प्रभाव करता है और किसी भी भाँति रोगी को विरेक नहीं कराता। उक्त डॉक्टर महोदयके वर्णनानुसार पपीता वृक्ष से चतुरतापूर्वक निकाल कर शुष्क किया रस या पपीतादुग्ध पेपीन के सहित अपने संयोगी अवयवों की उपस्थिति में अनेक दशाओं में स्वयं प्रभावात्मक सत्व पेपीन की अपेक्षा श्रेष्टतर प्रमाणित होता है। भोजनोपरान्त होने वाली बेचैनी को वास्तविक उदरशूल में परिणत होजाने पर आपने पपीता को अफीम के साथ निम्न प्रकार योजित किया :—

पपीता स्वरस १२ ग्रेन, अहिफेन चूर्ण ३ ग्रेन ग्लीसरीन आवश्यकतानुसार। इसको चूर्ण रूप में रक्खें अथवा इसकी वटिकाएँ प्रस्तुत करें। प्रति भोजनोपरान्त १ वटी सेवन करें।

(३) कण्ठरोहिणी तथा स्वरघ्नोकास (Diphtheria and Croup)—

उक्त रोगके निवारणार्थ पेपीनका स्थानिक प्रयोग लाभदायक होताहै। इस हेतु उसका तीक्ष्ण घोल तैयार करना चाहिए। इसको उक्त स्थल पर लगाना तथा नासिका एवं मुख में ५-५ मिनट के अन्तर से टपकाना चाहिए। इसके उपयोग से डिफ्थीरीयाजन्य मिथ्याकला घुलजाती है। उग्र अवस्थाओं में इससे पहिले ही दिन लाभ अनुभव होता है, जिससे ज्वर लुप्तप्राय होजाता तथा नाड़ी स्वास्थ्यावस्थापर आजाती है। सर्वदा इसका ताजा घोल प्रस्तुत करना चाहिए। अथवा पेपोयोटीन १ भाग, जल ४ भाग तथा ग्लीसरीन ४ भाग, आवश्यकतानुसार इसे घंटा दो दो घंटा पश्चात् लगाएँ।

(४) वृक्कशूल (Nepthritic colic)-वृक्काश्मरी में १ से ३ ग्रेन पेपीन को वटी रूप में सेवन करने से लाभ प्रतीत होता है। डॉ० ई० एच० फेन्विक।

(५) कृमिघ्न (Anthelmintic)–केंचुआ और कद्दूदाने के लिए भी इसका (पेपीन) औषधीय उपयोग किया गया; इसके पाचक प्रभाव के कारण इससे कभी कभी लाभ प्रदर्शित हुआ। ह्विट० मे० मे०।

अण्डखरबूजा के दूधिया रस को शहद के साथ मिलाकर देने और उसके पश्चात् एक मात्रा एरण्ड तैलका व्यवहार करानेसे केंचुआमें अत्यन्त लाभ होताहै। एक षोडशवर्षीया कन्या जो कद्दूदान (Tænia Solium) के कारण अत्यंत पीड़ित थी एवं उसके उदर में तीव्र शूल हो रहा था, उसको डॉक्टर हचिसन (Hutchison) ने शुष्क पपीता स्वरस ३ ग्रेन में शूलशमनार्थ ४ ग्रेन डोवर्स पाउडर सम्मिलित कर सेवन कराया। इससे कद्दूदाना टुकड़ा टुकड़ा होकर मल के साथ निकल आया तथा रोगिणी के सम्पूर्ण विकार जाते रहे एवम् उसको अत्यन्त लाभ प्रतीत हुआ।

(६) स्तन्यजनक तथा गर्भशातक— आंतरिक रूप से उपयोग करने अथवा स्थानिक रूप से लगाने से यह सशक्त स्तन्यजनक प्रभाव करता है। ह्विट० मे० मे०। पी० वी० एम०। गर्भवती स्त्री को उपयोग कराने से इसका गर्भशातक प्रभाव होता है।

जिह्वा तथा कंठरोग—श्वीमर Schwimmer महोदय ने जिह्वा की कर्कशता (जिह्वा

के फटने) में इसके घोल (१० में १) का सफलतापूर्ण उपयोग किया। ह्विट० मे० मे०। जिह्वा की कर्कशता तथा जिह्वा और कंठ की क्षतज अवस्था में चाहे वह औपदंशिक हो या अन्य, १ औंस ग्लीसरीन में १० से २० ग्रेन पेपीन का घोल बनाकर उसमें वेदना हरणार्थ किञ्चित् कोकीन सम्मिलित कर इसको मुख से लगाने से अत्यन्त लाभदायक प्रभाव होता है। औपदंशिक तथा क्षतज मुख वा कण्ठ में मि० ई० एन्ड० फ्रेन्डिक उक्त प्रयोग के स्थान में पेपीन $\frac{1}{4}$ ग्रेन तथा कोकीन $\frac{1}{16}$ ग्रेन इनके द्वारा निर्मित टिकिया के उपयोग की असीम प्रशंसा करते हैं। पेपीन के द्वारा औपदंशीय धब्बे तत्काल लुप्त होते हैं और कोकीन के प्रभाव से निगलन में वेदना का बोध नहीं होता एवं प्रदाहित श्लैष्मिक कला को शान्ति मिलती है।

चिकित्सक लोग जब ऐसे रोगी की परीक्षा करने जाते हैं जिसमें कंठ की श्लैष्मिक कला के संक्रमण का भय होता है तब वे उक्त टिकिया को रक्षक रूप से अपने साथ ले जाते हैं।

(८) त्वक् रोग—पुरातन कंडू (Eczema), विशेषतः हस्तपादस्थ, विचर्चिका (Psoriasis), हाथ की हथेली की प्रवर्द्धित अवस्था, कदर या घट्टा (corn), मशक (Wart) तथा त्वक्काठिन्य में उसको प्रथम जल व साबुन से प्रक्षालित कर दिन में दो बार निम्नोल्लिखित घोल के लगाने से लाभ होता है। जैसे— पेपीन १२ ग्रेन, टङ्कण (सुहागा) ५ ग्रेन तथा जल ५ ड्राम, यथा विधि घोल प्रस्तुत करें।

इसके ताजे दुग्ध को दिन में दो तीन बार दद्रु पर लगाने से लाभ होता है।

(९) कर्णस्राव—मध्यकर्ण के पुरातन पूयस्राव में पेपीन अभी हाल ही में लाभदायक पाया गया। आधे आउंस पेपीन घोल (५%) में ५ ग्रेन सोडा बाइकार्ब मिला लेने से यह और उत्तम होता है।

(१०) ग्रैवेयी ग्रन्थि, दुग्ध ग्रन्थि और कक्षीय ग्रन्थि विषयक शोथों प्रभृति के लय करने के लिए पेपीन का स्थानिक उपयोग होता है।

अण्डगः aṇḍagah–सं० पुं० Wheat (Triticum sativum, *Linn.*) गोधूम, गेहूँ। वै० श०।

अण्डगजः aṇḍa gajah–सं० पुं० (Cassia Tora, *Linn.*) चकवड़, चक्रमर्द क्षुप -हिं०। रा० नि० व० ४

अण्डगा धमनियाँ aṇḍagá-dhamaniyáṅ –हिं० संज्ञा स्त्री० (ब० व०) Spermatic Arteries अण्डकोष को रक्त ले जाने वाली नलियाँ।

अण्डजः aṇḍajah–सं० पुं०
अण्डज aṇḍaja–हिं० संज्ञा पुं० } (१) अण्डे से उत्पन्न होने वाले जीव, अण्डे से जिसकी उत्पत्ति हो, यथा—सर्प, मत्स्य, पक्षी और छिपकली प्रभृति। ये चार प्रकार के जीवों में से एक हैं। ओवीपेरस बीँग Oviparous being–इं०। हिं० इं० डि०। (२) मत्स्य (A Fish)। (३) पक्षी (A bird)। भा० पू० २ भा०। (४) A snake सर्प, साँप।

अण्डजा aṇḍa-já–सं० स्त्री०
अण्डजा aṇḍajá–हिं० संज्ञा स्त्री० } (१) गिरगिट, शरट–हिं०। शेमेलिअन (A chemeleon) –इं०। वि०। (२) सर्प–हिं०। सर्पेंट (A serpent)–इं०। (३) मत्स्य-हिं०। फिश (A fish)–इं०। (४) पक्षी–हिं०। बर्ड (A bird)–इं०। मे०जत्रिकं। (५) (Musk) मृगनाभि, कस्तूरिका। वा० हेमा०।

अण्डधारक रज्जुः aṇḍa-dháraka-rajjuh –सं० पुं० (Spermatic cord) मआलीक़ुल् ख़ुस्‌यह्, हब्लुल मन्वी, हब्लुल् मनी–अ०। अण्डकोष के ऊपर के भाग को टटोलने पर उसमें एक रस्सी या डोरी जैसी चीज़ मालूम होगी। इस–डोरी को अण्डधारक रज्जु कहते हैं। यह वस्तुतः धमनी, शिरा, वाततन्तु और शुक्र प्रणाली का एक संघात है जिस

पर श्लैष्मिक कला का एक वेष्टन चढ़ा रहता है। इसीसे अण्डकोषके भीतर अंड लटका रहता है।

अण्डधारक रज्जु anda-dhâraka-rajju -हिं० संज्ञा स्त्री० देखो–अण्डधारक रज्जुः।

अण्डपर्णः anda-parnah–सं० पुं० मलाण्ड तरु। See-malándah. अत्रि०

अण्डपेशी anda-peshí–सं० स्त्री० कोष (Sac, cyst)। (२) (Testicle) मुष्क, अण्ड, शुक्रग्रन्थि। हिं० वा०।

अण्ड प्रदाह andapradáha–हिं० संज्ञा पुं० अंड की सूजन (Orchitis).

अण्डरसोनिया रोहितका andersonia rohituka, Roxb.–ले०(Amoora rohituka, W. & A.) रोहिना, रोहेड़ा, रोहितक, तिक्तराज–हिं०। देखो–रोहितक।

अण्ड-लाल anda-lála–हिं० संज्ञा पुं० अण्डे की सुफ़ेदी, अण्डोदक। The white of the egg (Albumen).

अण्डवर्धनं anda-vardhanam-सं० क्ली०
अण्डवृद्धि anda-vriddhi–हिं० संज्ञा स्त्री० (Swelling of the scrotum) एक रोग जिसमें अंडकोश वा फ़ोता फूलकर बहुत बढ़ जाता है। फ़ोते का बढ़ना। देखो–अन्त्रवृद्धि।

अण्ड वहा नाली anda-vahánálí–हिं० संज्ञा स्त्री० (Fallopian tube) रजः कोष (डिम्ब) लाने वाली, जो मासिकधर्म के बाद अण्ड (डिम्ब) गर्भाशय को लाती है।

अण्डवेष्टः anda-veshtah–सं० पुं०(Scrotum, Tunica albuginea testes) अण्डकोष।

अण्ड श्वेतक anda-shvetaka हिं० पुं० अल्ब्युमेन (Albumen)। अण्डलाल। ज़ुलाल–अ०।

अण्ड सत्व anda satva–हिं० संज्ञा पुं०, मुष्कीन, मुष्कसत्व, मुष्क रस, शुक्रीन, शुक्रकीट सत्व, उपाण्ड सत्व। टेस्टिक्युलर एक्सट्रैक्ट (Testicular extract); टेस्टीससिका (Testes sicca), टेस्टिक्युलीन (Testiculin), आर्चीडीन (Orchidin), स्पर्मीन (Spermin), डिडीमीन (Didymin)–इं०। नुत्फ़ीन या जौहर मनी, ख़ुस्यीन या जौहर, ख़ुस्यह्, जौहर ख़ुस्यह् फ़ौक़ानी–अ०, फ़ा०।

नोट—जैसा कि उपर्युक्त नामों से प्रगट है, यह सम्पूर्ण औषधियाँ पुरुष के उत्पादक अवयवों द्वारा बनाई जाती हैं।

रासायनिक लक्षण तथा परीक्षा—पोह्ल (Poehl) का निर्माण, विभिन्न जीवधारियों विशेषकर साँड़ (bull) की शुक्रग्रन्थि द्वारा निर्मित रासायनिक पदार्थ का, जो ब्राउन सीक्वार्ड के इमलशन का प्रभावात्मक तत्व है, दो प्रतिशत का कीटरहित घोल है। यह रासायनिक दृष्टिसे पायपेराज़ीन (Piperazine) का सहधर्मी है। शुक्रीन (Spermin) के हायड्रोक्लोराइड (उज्जहरिद्) और फ़ास्फेट (स्फुरेत्) भी उपयोग में आचुके हैं। परन्तु, पोह्ल (Poehl) का दो प्रतिशत का विलेय घोल सम्पूर्ण कार्यों के लिए सर्व श्रेष्ठ है। ग्रन्थियों द्वारा निर्मित शुष्क आण्डीय पदार्थ वा सत्व २-५ ग्रेन (२॥ रत्ती) की टिकियाओं (Tabloids) के रूप में मुष्कीन (आर्चीडीन, टेस्टिक्युलीन, आर्चीटीन) और उपाण्डीन (Didymin) प्रभृति नामों से उपयोग में लाए गए हैं। एक द्रव भी प्राप्य है, जो एक प्रकार का ग्लीसरीन एक्सट्रैक्ट है और जिसे १५ से ३० मिनिम् (बुन्द) की मात्रा में मुख अथवा त्वकस्थ अन्तःक्षेप द्वारा देते हैं।

शुक्रीन की मुख्य मुख्य प्रतिक्रियाएँ:—

शुक्रीन (Spermin) में स्वयं विशेष शुक्रीय गंध नहीं होती, तथापि उसे धात्विक मग्न (Metallic magnesium) के साथ मिलाने पर उससे शुक्रवत् गंधका बोध होता है। मिश्रण को उत्ताप पहुँचाने पर शुक्रीय गंध अमोनिया में परिवर्तित हो जाती है। शुक्रीन (spermin) घोल में न तो आयोडाइड ऑफ पोटाशियम (पांशु नैलिद्) और न एसीटेट ऑफ़ लेड (सीस भस्म) ही से तलस्थ, यौगिक

उत्पन्न हो सकता है। हाइपोब्रोमाइड ऑफ़ सोडियम् शुक्रीन से नत्रजन भिन्न नहीं कर सकता। गोल्ड क्लोराइड (स्वर्ण हरिद) और प्लैटिनिक क्लोराइड शुक्रीन के साथ तलस्थायी हो जाते हैं। उत्ताप पहुँचाने पर शुष्क शुक्रीन से श्वेत वाष्प उद्भूत होता है।

इतिहास—अण्ड सत्व का उपयोग नया नहीं, प्रत्युत अति प्राचीन है। हाँ! निर्माण क्रम में चाहे भले ही कुछ भेद हो। वाग्भट्ट महोदय स्वलिखित "अष्टांगहृदय संहिता" में सर्व प्रथम हमारा ध्यान इस ओर आकृष्ट करते हैं, यथा—

वस्ताण्ड सिद्ध पयसि भावितान सकृत्तिलान्।
यः खादेत्सस्तिलान् गच्छेत्सस्त्रो शतमपूर्ववत्॥
(वा० उ० ४० अ०)

अर्थ—बकरे के अण्ड को दुग्ध में पकाकर उस दुग्ध की काले तिलों में बार-बार भावना दें। इन तिलों को जो मनुष्य शर्करा के साथ सेवन करता है उसमें शत स्त्री सम्भोग की शक्ति बढ़ जाती है, और वह प्रथम समागम का सा सुख अनुभव करता है।

पाश्चात्य अमरीकन डॉक्टर ब्राउन सीक्वार्ड (Brown Sequard) महोदय का बहुत काल तक यह विश्वास रहा कि वृद्ध मनुष्यों की निर्बलता के मुख्य दो कारण हैं:—(१) आवयविक परिवर्तन का प्राकृतिक क्रम। (२) शुक्र ग्रन्थियों की शक्ति का क्रमिक ह्रास। उन्होंने विचार किया कि यदि वृद्ध मनुष्यके रक्त में शुक्र का निर्भय अन्तःक्षेप किया जा सके तो सम्भवतः विभिन्न शारीरिक एवं मानसिक शक्तियों की वृद्धि प्रत्यक्ष रूप से प्रदर्शित होने लगेगी। उक्त विचार को ध्यान में रखकर आपने सन् १८७५ ई० में जीवधारियों पर अनेकों प्रयोग किए। परिणामतः प्रयोग क्रम के अनपकारकत्व एवं उन जीवधारियों पर होने वाले उत्तम प्रभाव विषयक उनके सन्देह की निवृत्ति हो गई। उस का निश्चय हो जाने पर उन्होंने स्वयं अपने ऊपर प्रयोग करने का निश्चय किया। अस्तु, थोड़े परिमाण में जल, आण्डीय शिरा का रक्त, शुक्र, कुक्कुर या गिनी पिग (guinea-pig) के अण्ड को कुचल कर निकाला हुआ ताजा रस इन चार वस्तुओं को एकत्रित कर आपने इसका त्वगन्तः अन्तःक्षेप लिया। अधिक से अधिक प्रभाव प्राप्त करने के अभिप्राय से आपने अन्तःक्षेप भर में अत्यल्प जल का उपयोग किया। प्रागुक्त अन्तिम के तीनों पदार्थों में आपने उनके द्रव्यमान से तिगुने या चौगुने से अधिक परिस्नुत जल का उपयोग नहीं किया; तदनन्तर उनको कुचल कर फिल्टर पेपर (पोतनपत्र) द्वारा छान लिया। प्रत्येक अन्तःक्षेप में उन्होंने १ घन शतांशमीटर छाने हुए द्रव का उपयोग किया। पाश्चर्स फिल्टर द्वारा छाने हुए द्रव का १५ मई से ४ जून तक आपने १० अन्तःक्षेप लिए; जिनमें से २ बाहु में और शेष समग्र अधो शाखा में।

परिणाम निम्न प्रकार हुए—

प्रथम त्वगन्तः अन्तःक्षेप तथा दो और क्रमानुगत अन्तःक्षेपों के पश्चात् आप में एक स्वाभाविक परिवर्तन उपस्थित हुआ और उनमें वह सम्पूर्ण शक्ति जो बहुत वर्षों पहिले थी आगई। विस्तीर्ण प्रयोगशाला विषयक कार्य कठिनता से उन्हें श्रान्त कर सकते थे। वे कई घण्टे तक खड़े होकर प्रयोग कर सकते थे और उन्हें बैठने की कोई आवश्यकता नहीं प्रतीत होती थी।

संक्षेप यह कि उन्होंने इतनी उन्नति की कि वे इतना अधिक लिखने तथा कार्य करने के योग्य हो गए जो आज २० वर्ष से भी अधिक काल तक में वे कभी न हुए थे। उन्हें मालूम हुआ कि प्रथम अन्तःक्षेप से १० दिवस पूर्व मूत्र-धार की जो औसत लम्बाई थी वह पश्चात् के २० दिवस की मूत्र-धार की लम्बाई से कम से कम ¼ न्यून थी। अन्य क्रियाओं की अपेक्षा मल विसर्जन क्रिया में उन्होंने अत्यधिक उन्नति की।

इन्द्रियव्यापारिक क्रिया—उपर्युक्त प्रयोगों से यह बात सिद्ध होती है कि आण्डीय द्रव के अन्तःक्षेप का हृदय एवं रक्त परिभ्रमण पर उत्तेजक प्रभाव होता है, सर्व शरीर की पुष्टि

करता, वातकेन्द्रीय क्रिया शक्ति पर आधारीभूत सम्पूर्ण कार्यों का विशेष रूप से सुधार करता, वस्ति पर सुषुम्णाकाण्ड की शक्ति की विशेष वृद्धि करता और आन्त्र पर शैथिल्यजनक प्रभाव उत्पन्न करता है।

औषधीय उपयोग—अण्ड द्वारा स्रावित (secreted) शुक्र में ऐसे पदार्थ होते हैं जो शोषण क्रिया द्वारा रक्त में प्रवेशित होकर वातसंस्थान तथा अन्य भागों को शक्ति प्रदान करने में अपना सब से आवश्यक उपयोग रखते हैं। इस पदार्थ (वा पदार्थों) में महान गतिजनक शक्ति है जिसके लिए रक्त मुष्क का ऋणी है। यह बात इस घटने से प्रमाणित होती है कि सार्वांगिक निर्बलता तथा मानसिक वा शारीरिक स्फूर्ति के अभाव ही नपुन्सक के स्वभाव कहलाते हैं। और इस बात से भी कि अप्राकृतिक वा हस्त-मैथुन द्वारा मनुष्य के शरीर वा मन (विशेष कर शुक्र ग्रन्थियों के अपनी पूर्ण शक्ति प्राप्ति करने से पूर्व या अधिक अवस्था के कारण जब शक्ति का ह्रास हो रहा हो उस समय) कितने विकृत हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त यह भली भाँति ज्ञात है कि शुक्रक्षय चाहे वह किसी कारणसे उत्पन्न हुआ हो शारीरिक वा मानसिक निर्बलता उत्पन्न करता है। (डॉ० ब्राउन सीकार्ड)

अण्ड सत्व के उपर्युक्त इन्द्रियव्यापारिक कार्य एवं गुण से यह सिद्ध है कि यह रोगीकी सामान्य दशा को स्पष्ट रूपसे सुधारता है। इसके सिवा वात संस्थान पर इसका उत्तेजक और बल्य प्रभाव अन्य सब प्रभावों की अपेक्षा अधिकतर होता है। यह विबंध को दूर करता तथा मूत्रविरेचक है। इन अन्तःक्षेपों से सिवा स्थानिक किञ्चित् सूक्ष्म अल्प समयक वेदना के कोई और अप्रिय सहायक सार्वांगिक या स्थानिक दृश्य उपस्थित नहीं होता। इनसे स्थानिक प्रदाह वा पूय उत्पन्न नहीं होता। पेपर फिल्टर के स्थान में पास्चर्स फिल्टर से उक्त तरल को छानकर व्यवहार में लाने से यह वेदानाएँ एवं अन्य कुप्रभाव भी किसी भाँति कम प्रतीत होते हैं। (डॉ० पॉटॉउर्की)

पॉह्लूस स्टेरिलाइज़्ड मोलूशन का १५ मिनिम (बुंद) की मात्रा में रक्ताल्पता, वातनैर्बल्य, उन्माद (पागलपन), शीघ्रपतन, यक्ष्मा, चाल का लड़खड़ाना (Ataxy), विचर्चिका (Psoriasis), बहुमूत्र रोग और बहुमेदस्यक, रोगों में अन्तः क्षेप करते हैं। दैनिक अन्तः क्षेप के हिसाब से १२ वा १४ दिवस के चिकित्सा क्रम में प्रागुक्त सम्पूर्ण रोगों के लाभ के प्रज्वलित वर्णन प्रकाशित हुए हैं और यह हृच्छूल तथा अन्य हार्दिक वात विकारों (Cardiac neuroses) की मूल्यवान औषध कही गई है। इसका शरीर परिवर्तन क्रम अर्थात् अपवर्त्तन (Metabolism) पर प्रगट प्रभाव होता है। (ह्विट्ला)

इन्हें कामोद्दीपक रूप से व्यवहार करते हैं तथा वातनैर्बल्य, लड़खड़ाती चाल और एक्स-ऑफथैल्मिक गॉइटर में वर्तते हैं।

अण्डसित anda-sita-हिं० वि० (Albumaneous) अंडश्वेतकीय, अंडलाल सम्बन्धी।

अण्डसित पदार्थ anda-sita padártha-हिं० संज्ञा पुं० (Albumaneous matter) अण्डश्वेतकीय वस्तु।

अण्डसू andasú-सं० त्रि०, हिं० वि० (Oviparous) अण्डज।

अण्ड स्कन्दः andaskandah-सं० पुं० घोड़े के अण्ड में स्कन्द सदृश एक रोग होता है। जयदत्त ५० अ०।

अण्डहस्ती anda-hasti-सं० पुं० चँकवड़, चक्रमर्द्दक्षुप (Cassia Tora, *Linn.*) रा० नि० व० ५।

अण्डहानिकर andahánikar हिं० वि०, मुज़िर्रात् उन्स्.यैन-अ०। अण्ड को हानि पहुँचाने वाले। संज्ञा पुं० वे द्रव्य जो अंड को हानि पहुँचाएँ। वे निम्न हैं—

इक्लीलुल्-मलिक, बोज़ीदान, तुख़्म ख़यार (खीरा के बीज), अतसी, जावशीर, हुल्बह् (मेथी) और फ़र्फ़्यून।

अण्डा aṇḍá-हिं० संज्ञा पुं० पक्षी आदि के उत्पन्न होने का स्थान। एग (Egg)-इं०। गुण-धर्म आदि के लिए देखो-कुक्कुट।

अण्डाकर्षणम् aṇḍákarshaṇam-सं० क्लो० (Castration) बधिया करना।

अण्डाकार aṇḍákára-हिं० संज्ञा पुं० } वि०
अण्डाकृति aṇḍákriti-हिं० संज्ञा स्त्री० }
[सं०] (Egg-shaped, oval, Ovoid, elliptical) ऐसा वृत्त जिसका एक अक्ष दूसरे की अपेक्षा लम्बा हो, अण्डा की शकल का, अण्डा की तरह। उस परिधि के आकार का जो अंडे की लम्बाई के चारों ओर खींचने से बने। लम्बाई लिए हुए गोल, अण्डे के आकार का। बैज़ावी।

अण्डाकार खात aṇḍákára-kháta-हिं० संज्ञा पुं० (Fossa ovalis) अण्डे की शकल का गढ़ा। हुफ्रह बैज़ाविय्यह्-अ०।

अण्डाकृति aṇḍákriti-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] अण्डे का आकार, अण्डे की शकल। वि० अंडेके आकार का। अण्डइय। अण्डाकार।

अण्डाली aṇḍálí-सं० स्त्री० भुइँ आमला, भूम्यामलकी (Phyllanthus niruri, Linn.).

अण्डालुः aṇḍáluh-सं० पुं० (A fish) मत्स्य, मछली। श० च०।

अण्डिका aṇḍiká सं०स्त्री० चार जौ के बराबर का एक माप विशेष, यवचतुष्टय परिमाण। च०।

अण्डिनी aṇḍiní-सं० स्त्री० सान्निपातिक योनि रोग विशेष। लक्षण--स्थूल मेढ़ वाले पुरुष से ग्रहण की हुई तरुणी (छोटी अवस्था वाली स्त्री) की योनि अण्डिनी अर्थात् अंडाकृति (कहीं कहीं फलिनी पाठ आया है) हो जाती है। सु० चि०। स्त्रियों का एक योनि रोग जिसमें कुछ मांस बढ़कर बाहर निकल आता है। इसे योनिकन्द रोग भी कहते हैं।

अण्डी aṇḍí--हिंसंज्ञा स्त्री० (१) रेंडी;एरण्ड बीज --हिं०। Ricinus communis, Linn. (Seeds of Castor oil plant)। (२) गंधमार्जारी।

अण्डीका तेल aṇḍí-ká-tela--हिं० संज्ञा पुं० एरंडतैल। (Oleum ricini) देखो-एरण्डः।

अण्डी माल्लेर्य्य aṇḍí-málleryya-मल० सन्ध्या राग--सं०। गुलशब्बो, गुलचेरी-हिं०। रजनी गंधा-बं०। गुलसबो--कों०, हिं०। पॉलिएन्थस ट्युबरोसा (Polyanthus tuberosa, *Linn.*)-ले०। इं० मे० मे०।

अण्डीरः aṇḍírah-सं० पुं० पुरुष, युवा मनुष्य (A full-grown man) मे० रत्रिकं।

अण्डीरा इनर्मिस aṇḍira inermis-ले० जिओफ्रोया इनर्मिस (Geoffroya Inermis)। कैबेज ट्री ऑफ़ ट्रॉपिकल अफ्रीका (Cabbage tree of Tropical Africa)-इं०।

वर्ग=बब्बूरः; उपवर्ग=पैपिलिओनेसीई

N. O. Leguminosae. Sub-Order Papilionaceae

उत्पत्ति स्थान—वेष्ट इंडीज़ (विशेषकर जमेइका)।

प्रयोगांश—त्वक्।

औषध-निर्माण—(१)-चूर्ण की हुई त्वचा २०-३० ग्रेन (१०-१५ रत्ती) कृमिघ्न रूप से, ३०-४० ग्रेन (१५-२० रत्ती) विरेचक रूप से। (२) टिंक्चर (३० से ६० मिनिम (बुँद)। (३) तरल सत्व १० से ४० मिनिम (बुँद)। (४) घन सत्व ३ ग्रेन (१॥ रत्ती)।

प्रभाव तथा उपयोग—कैबेज वृक्ष त्वक् (Cabbage tree bark) नामक त्वचा में जिसका व्यापारिक नाम कृमित्वक् (Worm bark) भी है, कृमिघ्न, ज्वरघ्न और मेदनाशक गुण है और निम्बुकाम्ल (Citric Acid) के साथ यह स्थौल्य रोग में अधिक उपयोग की जाती है। अधिक मात्रा में यह वामक, विरेचक और मादक है तथा इसकी इससे भी अधिक मात्रा विषैला है। (फा० वी० इम०)।

अगडेल andela } -हिं० वि० [अण्डा]
अगडैल andaila }
जिसके पेटमें अंडे हों, अण्डा युक्त, अण्डे वाली। संज्ञा स्त्री० वह मछली जिसके पेटमें अंडे हों।

अगडोदकः andodakah-सं० पुं० अंडलाल, अंड श्वेतक। the white of an egg (Albumen).

अगडोत्थापिका प्रतिक्रिया andotthápiká-pratikriyá-हिं० संज्ञा स्त्री० (Cremastric reflex) जाँघ के अंतरीय भाग को खुजाने से यह उत्पन्न की जाती है। इससे अंड ऊपर को उठता है।

अगडोली andolí हिं० संज्ञा स्त्री० रेंडी, एरण्ड बीज। Ricinus communis, *Linn.* (Seeds of-)। देखो—एरण्डः।

अगडौआ andouá-हिं० संज्ञा पुं० अरण्ड, एरण्ड। (Ricinus communis, *Linn.*).

अग्णाशुप्पू anná shuppú-ता० अनासफल -हिं०। बादियाने खताई-फ़ा०, अ०। (Illicium anisatum, Linn) स० फा० इं०।

अग्णवस्थि anvasthi सं० क्लो० मणि बन्ध आदिमें स्थित एक सूक्ष्मास्थि विशेष। सु०शा०।

अगवी anví-सं० स्त्री० अङ्गुलि, अङ्गुली, अँगुरी (A Finger.)

अतकत atakata दारचीनी, दालचीनी। Cinnamomum Zeylanicum, *Nees.* (Bark of—cinnamon).

अतकुमह् atakumah-अ० चिर्चिटा, अपामार्ग-हिं०। (Achyranthes aspera, *Linn.*) स० फा० इं०।

अतगोकुडो atagokudo-कों० काला इन्द्रजौ (Nerium Tomentosum, *Roxb.*) इं० मे० मे०।

अतची atachí-हिं० आल-। आच्, आछू -बं०। (Morinda Tinctoria, Roxb.)-ले०। फा० इं० २ भा०। देखो—आच्छुक।

अतट atata-हिं संज्ञा पुं० [सं० अतटः] (A precipice, A steep crag) पर्वत का शिखर। चोटी। टीला।

अतड़ी atadí-हिं०स्त्री० अन्त्र (Intestine).

अतगडक्स atandaks } -ता० अरण्ड, एरण्ड
अतगड्य atandya } (Cadaba Harrida, *Linn.*)

अतदिम्मत्त atadimmatta-सिं० गम्भार, खुमेर-हिं०। (Gmelina Arborea, *Linn.*)-ले०।

अतनामीस atanámís-यु० बाबूना, बाबूनह् -हिं०। (Matricaria Chamomilla, Linn.)-ले०। लु० क०।

अतनु atanu-हिं० वि० [सं०] (१) शरीर रहित। बिना देह का। (२) मोटा। स्थूल। संज्ञा पुं० अनंग। कामदेव।

अतन्द्र,-द्रित,-न,-ल atandra,-drita-in,-ila -सं० वि० चैतन्य, जाग्रत (careful, visilant).

अतन्द्रा atandrá—सं० स्त्री० काफी, कहवा, -हिं०। coffea Arabica, Linn. -ले०। अवि०।

अतन्द्रिक atandrika-हिं० वि० [सं०]
(१) आलस्य रहित। निरालस्य। चुस्त। चंचल।
(२) व्याकुल। विकल। बेचैन।

अतन्द्रित atandrita-हिं० वि० [सं०] आलस्य रहित। निद्रा रहित। निरालस्य। चञ्चल। चपल।

अतन्द्रियः atandriyah-हिं० स० पुं० तन्द्राहर सत, कहवा का सत-हिं०। caffeina, caffeine-ले०। देखो कहवा, तन्द्राहर सत। म० अ० डा० १ भा०।

अतन्द्री atandrí-सं० स्त्री० काफी, अतन्द्रा (coffea Arabica, Linn.)

अतन्शुमत्फला atanshumat-phalá सं० स्त्री० केला,कदली (Musa sapientum, Linn.)

अतप्त atapta-हिं० वि० [सं०] जो तपा न हो। ठंडा। (२) जो पका न हो।

अतफ़ áataf-अ० चित्रक,चीता (Plumbago Zeylanica, *Linn.*)

अतफ़ल āatafal—(१) बेदमुश्क-फ़ा० । (calix caprea, Linn.)-लें० । (२) सऊमर — अ० । लु० क० ।

अतफ़ाल ıatafála-फ़ा० (ब० व०), तिफ़्ल (ए० व०) Children बच्चे-हिं० ।

अतब āatab-अ० मध्यमा तथा तन्निकटस्थ-अङ्गुल्य-खात । म० ज० ।

अतब āatab-अ० (Cotton) रुई, तूल । लु० क० ।

अतबह् āatabah-अ० (१) आस्तानः, दह्लीज़, चौखट । (२) अधोभुजखात । दोनों खातों को अरबी में अतबान या अतबैन कहते हैं । म० ज० ।

अतमल atamal-अन्तमल (Tylophora asthmatica, *W. & A*) इं० हैं० गा० ।

अतमूस āatamúsa-गोरखर (पहाड़ी या जङ्गली गधा) लु० क० ।

अ(इ)तर a-i-tar-हिं० संज्ञा पुं० [अ० इत्र] निर्यास, पुष्पसार, भभके द्वारा खिंचा हुआ फूलों की सुगंधि का सार । स्थिर तैल (Essential oil) । देखो-इत्र ।

अतर atara-हिं० संज्ञा पुं० [अ० इत्र] Essential oil पुष्पसार । भभके द्वारा खिंचा हुआ फूलों की सुगन्धि का सार । निर्यास । देखो-(इतर) इत्र ।

अतरदान ataradána-हिं० संज्ञा पुं० [फ़ा० इत्रदान] सोने चाँदी या गिलट के फूलदान के आकार का एक पात्र जिसमें इतरसे तर किया हुआ रुई का फाहा रक्खा जाता है ।

अतरल atarala-हिं० वि० [सं०] गाढ़ा । जो तरल वा पतला न हो ।

अतरानूस ataránúsa-अ० एक मान है जो ४ तो० ४ मा० के बराबर होता है ।

अतरार atarára-अ० ज़रिश्क (Berberis Asiatica, *D. C.*, Berries of-)

अतरुणदारुः atarunadáruh-
अतरुणदारः (कः) atarunadárah,-kah
सं० पुं० विधारा-हिं० । वृद्धदारक "अतरुणदारुरास्नापुराः ।" भा०म० १ खं० सन्धिक ज्व० चि० । (Gmelina Asiatica, *Linn.*)

अतरुन ataruna-बम्ब० लाल तालमखाना । See-Tálamakháná । मेमो० ।

अतर्यह् ataryah-अ० (१) रिश्ता, नाता, संबन्ध । म० ज० । (२) मैदा की सोय्यान, प्रसिद्ध भोजन है । लु० क० । म० ज० ।

अतलब āatalaba, **अतलूब** āataluba — बदमश्क़ाँ, बदक़शाँ । लु० क० ।

अतलसनी काली atalasani-káli-गु० अतीस भेद (Aconitum heterophyllum, Wall.) ।

अतलस्पर्श atalasparsha, **अतलस्पर्शी** atalasparshi, **अतलस्पृक्** atala-sprik, **अतलस्पृश्** atala-sprish — सं० क्ली० जल, पानी । Water (Aqua) है० च० ४ का ।

हिं० वि० [सं०] अतल को छूने वाला । अत्यन्त गहिरा, अथाह (Bottomless, very deep, unfathomable).

अतली atali-गु० हरिताल, हड़ताल (Yellow orpiment..)

अतवस् atavas-गु० अतीस (Aconitum heterophyllum, Wall.) इं० मे० मे० ।

अतवान atavána-अ० एक घास है । (A sort of grass.)

अतविष atavisha-मह० अतीस (Aconitum heterophyllum, *Wall.*) इं० मे० प्लां० ।

अतवि(ब)षनी कली atavi(ba)shani-kali-गु० अतीस । इं० मे०प्लां० । फा० इं० ।

अतशान āatashána अ० मस्तुरोई (एक प्रकार का काँटा है) । लु० क० ।

अतश् āatash-अ० तृष्णा, प्यास लगना, प्यासा होना । थर्स्ट Thirst-इं० । म० ज० ।

अतश् काज़िब् āatash-kázib-अ० मिथ्या तृष्णा, झूटी प्यास, वह प्यास जिसमें जितना जल पान किया जाय, उसी भाँति तृष्णा की वृद्धि होती है । किन्तु, उसको दमन कर यदि संतोष रक्खाजाय तो वह बुझ जाती है तथा

मनुष्य शान्ति लाभ करता है। म०ज०।

अतश् मुफ़्रित् āatash-mufrit— } अ०
शिद्दतुल् अतश् shiddatul-āatash- }
तृष्णाधिक्य बहुत प्यास लगना, घड़ी घड़ी प्यास लगना। पालीडिप्सिया Polydipsia–इं०। म० ज०।

अतल atala-हिं० वि० [सं०] (Bottomless) निस्तल, तल रहित, चिकनी जगह पर न ठहरने वाला अर्थात् झट लुढ़क जाने वाला।

अतसरून atasarúna–यू० सुमाक़ Rhus-coriaria (Dry seed of Sumach or sumac).

अतसः atasah–सं० पुं० (१) (Wind, air) वायु, हवा। (२) A garment made of the fibre of flax अतसी वस्त्र, अतसी के रेशे का बना हुआ कपड़ा।

अतसि-नूने atasi-núne—ते० Linum Usitatissimum, Linn. (oil of-Linseed-Oil.) स्०फा० इं०।

अतसी atasí–सं० (हिं० संज्ञा) स्त्री० एक पौधा और उसका फल वा बीज। लाइनम् युसिटेटिस्सिमम् Linum Usitatissimum, *Linn.* (Seeds of), लाइनम् (Linum) -ले०। कॉमन फ़्लैक्स (Common Flax), या फ्लैक्स (Flax) लिनसीड (Linseed)-इं०। लिन कल्टिव्ह (Lincultive), लिन् युस्वेल (Linusvel) -फ्रां०। जेमीनर लीन और फ्लैक्स (Gemeiner Lein or Flachs)-जर०। अलसी के बीज-द०। तीसी, अलसी–हिं०। संस्कृत-पर्याय—चणका, उमा, क्षौमी, रुद्रपत्नी, सुवर्चला, (र०); पिच्छिला, देवी, मदगन्धा, मदोत्कटा, क्षुमा, हैमवती, सुनीला, नील-पुष्पिका और पार्वती। तैलफला। पूर्वाचार्य कृत वर्णन--'अतसी मशिना इति लोके प्रसिद्धा" डल्वण (सु० टी० सू० ३६ अ०)। "अतसी तिसीति विख्याता" चक्रपाणि-(सु० टी० सू० ३६ अ०)। तीसी, मोसिना-बं०। कत्तान, ब.ज्रुल् कत्ता (तां) न-अ०। कतॉं, तुख़्मे कतॉं, बज्रे कतॉं, तुख़्मे ज़ग़ीर, बज्रक-फ़ा०। अलिशि विरै-ता०। अतसी, मदन गिञ्जलु, नल्लयगसि चेट्टु-ते०। चेरु, चाणत्तिन्ते-वित्त-मल०। अलसी –कन०। अलशी, जौशी, जवस-मह०, कों०, गु०। पेसु-उड़ि०।

अतसीतैलम्

ऑलियम् लाइनाई (Oleum Lini) –ले०। लिनसीड ऑइल (Linseed oil) –इं०। अलसी का तेल, तीसी का तेल-हिं०। अलसी का तेल-द०। मोसिनार तैल, तीसि तैल-बं०। दोहनुल् कत्तान,दोहनुल् कतॉं, ज़ैतुल् कतॉं-अ०। रोग़ने ज़ग़ीर, रोग़ने कतॉं-फ़ा०। अलिशिविरै-ऐ-णे--ता०। मदन-गिञ्जलु-नूने, अतसि-नूने-ते०। चेरुचाण-वित्तिन्ते-एण्णा-मल०। अलशी-यरणे–कना०।

नोट—यह एक गाढ़े पीले रंग का तैल है जो अतसी के बीजों से दबाकर निकाला जाता है। इसका आपेक्षिक गुरुत्व ·९३ से ·९४ तक होता है। वायु में खुला रहने पर यह रालवत् शुष्क हो जाता है।

अतसी वर्ग

(*N. O. Linaceæ or lineæ*)

उत्पत्ति स्थान—इसका मूल निवासस्थान सिंध देश है; परन्तु अब समग्र भारतवर्ष विशेषतः बंग देश, बिहार व ओड़ीसा एवं संयुक्तप्रांत में तथा रूस, हॉलैंड और ब्रिटेन में इसकी कृषि की जाती है।

वानस्पतिक वर्णन—अतसी एक फलपाकान्त पौधा है। यह पौधा प्रायः दो ढाई फुट ऊँचा होता है। इसमें डालियाँ बहुत कम होती हैं, केवल दो वा तीन लम्बी कोमल और सीधी टहनियाँ छोटी छोटी पत्तियोंसे गुथी हुई निकलती हैं। पत्र विषमवर्ती और सूक्ष्म तथा लम्बे होते हैं। इसमें नीले और बहुत सुन्दर फूल निकलते हैं जिनके झड़ने पर छोटी घुंडियाँ बँधती हैं। (इन्हीं घुंडियों में बीज रहते हैं।) ये घुंडियाँ गोलाकार होती और परदों द्वारा पाँच फल-कोषों में विभक्त होती हैं। प्रत्येक कोष में दो

बीज होते हैं। बीज चिपटे, प्रलंबमान, अंडाकार होते हैं जिनका एक सिरा न्यूनकोणीय और किञ्चित् वक्र एवं अवकुंठित नोक युक्त होता है। इनका वर्ण बाहर से श्यामाभायुक्त धूसर चमकदार एवं सचिक्कण होता है किन्तु भीतर से गूदा का वर्ण पीताभायुक्त श्वेत होता है। नोक के ठीकनीचे एक सूक्ष्म छिद्र (Hilum) होता है। बीज बहिस्त्वक् के भीतर अल्ब्युमीन की एकपतली तह होती है जिसके भीतर बड़े, युग्म बैदल होते हैं। और उनके नोकीले सिरेपर गर्भांकुर होता है। विभिन्न देशों के बीज आकार में ¦–⅙ इं० लम्बे होतेहैं।(उष्ण प्रदेशोंमें होने वाले अपेक्षाकृत बड़े होते हैं)। यह गंधरहित तैलमय लुआबी स्वाद युक्त होता है। जल में भिगोने से बीज एक पतले, फिसलनदार वर्ण रहित श्लैष्मिकावरण से आवृत्तहो जाते हैं। यह शीघ्र न्युट्रल (उदासीन) जेली रूप में घुल जाते हैं और बीज किञ्चित् फूल जाते हैं और उनका पॉलिश जाता रहता है।

नोट—(१) कलकत्ता आदि स्थानों में धूसर, श्वेत और रक्त आदि तीन प्रकार की अलसी पाई जाती है। इनके अतिरिक्त एक प्रकार की और अलसी होती है, जिसको लेटिन भाषा में लाइनम् कैथार्टिकम् (Linum Catharticum) अर्थात् विरेचक अलसी कहते हैं। यह युरूप में होती है।

(२) किसी किसी ग्रन्थ में अतीस भूल से तीसी के लिए प्रयोग किया गया है। कभी कभी अल्सी, अलिशि, अलशी, तिसी, अतसी या तीसी इत्यादि उपर्युक्त संज्ञाएँ अतिसि, अगशि, अगत्ति अगती इत्यादि संज्ञाओं के साथ मिलाकर भ्रमकारक बना दी जाती हैं जो वस्तुतः **अगस्तिया** के पर्याय हैं।

रासायनिक संगठन—बीज की मींगीमें स्थिर तैल ३० से ३५ प्रतिशत (यह ऑफिशल है) होता है। बीज त्वक् में म्युसिलेज (लुआब) १५ प्रतिशतः, प्रोटीड २५ प्रतिशत, एमिग्डलीन, राल, मोम, शर्करा तथा भस्म ३ से ५ प्रतिशत और भस्म में फॉस्फेट्स, सल्फेट्स और क्लोराइड्स ऑफ पोटासियम्, कैल्शियम् और मग्नेसियम् (पांशु नैलि चूर्णनैलिद, और मग्न नैलिद) आदि पदार्थ होते हैं। (मेटिरिया मेडिका ऑफ इंडिया आर० एन० खोरी, खंड २, पृ० १५०)

बीज में एक स्थिर तैल होता है जिसमें ३० से ४० प्रतिशत लाइनोलिक, एसिड (Linolic Acid) तथा उपरोल्लिखित पदार्थों के साथ मिला हुआ ग्लीसरील (Glyceryl) होता है। तैल उबलते हुए जल में विलेय होता है।

प्रयोगांश—अतसी बीज, तैल, पत्र और पुष्प एवं तन्तु।

औषध-निर्माण—(बीज) क्वाथ तथा शीत कषाय Infusion (३० में १), पाक वा मोदक, पुलटिस, धूम।

(तैल)—इमलशन, लिनिमेंट और साबुन (मृदु साबुन)।

मात्रा—शीत कषाय (Infusion) २ से ४ फ्लुइड आउंस।

युरूपीय प्रतिनिधि द्रव्य—भारतवर्ष में होने वाली अतसी सर्वथा युरूपीय अतसी के समान होती है। अतः इनमें से प्रत्येक एक दूसरे की उत्तम प्रतिनिधि है।

इतिहास—आयुर्वेद में अतसी का औषधीय उपयोग आज का नहीं, प्रत्युत अति प्राचीन है जैसा कि आगे के वर्णनों से ज्ञात होगा। चरक, सुश्रुत आदि प्राचीनतम ग्रंथों में इसके उपयोग का पर्याप्त वर्णन आया है। तिसपर भी वि० डिमक महोदय लिखते हैं—

"Linseed, called in sanskrit Atasí, appears to have been but little used as a medicine by the Hindus." अर्थात् हिन्दू लोग अतसी का बहुत कम व्यवहार करते थे। यह बात कहाँ तक सत्य है—इसका निर्णय स्वयं पाठकगण ही कर सकते हैं।

इसलामी चिकित्सकों ने इस ओर काफी ध्यान दिया है।

फल्कोजर तथा हेनबरी अपने फार्माकोपिया (पृ० ८६) में पाश्चात्य अतसी क्षुप के इतिहास का सारोल्लेख करते हैं और २३ वीं शताब्दि बी० सी० (मसीहसेपूर्व) में इसके उपयोगका पता देते हैं। दीसकूरीदूस और प्लाइनीने लिनम् नाम से इसका वर्णन किया है। गैलेस्की (१७६७) ने चित्रकारों के उदरशूल (Painter's colic) तथा अन्य आन्त्रीय आक्षेप विकारों में इसके तेल के उपयोग की बड़ी प्रशंसा की है।

अतसी के प्रभाव तथा प्रयोग

आयुर्वेद—

अतसी मधुर, बलकारक, कफवातवर्द्धक, कुछ कुछ पित्त की नाश करने वाली और कुष्ठ तथा वात को जीतने वाली है। रा० नि० व० १६। धन्व० नि०।

अतसी मधुर, तिक्त, स्निग्ध तथा भारी और पाक में कटु है, उष्ण, दृष्टि को हानिकर एवं शुक्र, वात, कफ तथा पित्त की नाशक है। धन्व० नि०।

अतसी दृष्टि के लिए हानिकारक, शुक्र को नष्ट करने वाली, स्निग्ध तथा भारी और वातरक्त को जीतने वाली है। मद० व० १०।

अतसी उष्ण, तिक्त, वातघ्नी, कफ पित्तजनक और स्वाद्वम्ल (मधुराम्ल) है। राजवल्लभः।

अतसी मधुर, तिक्त, स्निग्ध, भारी, पाक में कटु, उष्ण, दृष्टि को हानिकारक, शुक्र तथा वातनाशक और कफ एवं पित्त को नष्ट करने वाली है। भाव०।

पाक में कटु, तिक्त तथा कफ वात और व्रण को नाश करने वाली है। पृष्ठशूल, सूजन, पित्त, शुक्र और दृष्टि का नाश करने वाली है। बृ० नि० र०।

अतसी तैल

मधुर, पिच्छिल, वातनाशक, मदगंधि तथा कषाय है और कफ एवं कास को हरण करती है। रा० नि० व० १५।

आग्नेय, स्निग्ध, उष्ण तथा कफपित्तनाशक पाक में कटु, चक्षु को अहितकर, बल्य, वातनाशक तथा गुरु है, मलकारक, रस में मधुर, ग्राही, त्वग्दोष एवं हृद्रोग को नष्ट करने वाली और वात प्रशमनार्थ वस्ति, पान, अभ्यङ्ग, नस्य और कर्णपूरण रूप से तथा अनुपान रूप से भी प्रयोजनीय है। भा० पू० तैल० व०।

अतसी तैल उष्णवीर्य और कटुपाकी है। (राजवल्लभः)।

अतसी पत्र

तीसी का पत्ता खाँसी तथा कफ वात और श्वास तथा हृद्रोग नाश करने वाला है। बृ० नि० र०।

वैद्यक में अतसी का उपयोग

चरक—(१) फोड़ा पकाने के लिए, अलसी को जल में पीसकर उसमें किञ्चित् जव का सत्तू योजित करें और अम्लदधि के साथ इसका फोड़ा पर प्रलेप करें। इससे फोड़ा पक जाएगा। (चि० १३ अ०)।

(२) वातप्रधान व्रण में जो दाह और वेदनान्वित हो तिल और अलसी को भूनकर गोदुग्ध के साथ निर्वापित करें। शीतल होनेपर इसको उसी दुग्ध के साथ पीस कर फोड़ा पर प्रलेप करें। (चि० १३ अ०)

(३) पक्व शोथ प्रभेदन हेतु अतसी—

"× × उमाथ गुग्गुलः × ×।"

अलसी का प्रलेप करने से फोड़ा फट जाता है। (चि० १३ अ०)।

सुश्रुत—(१) वाताधिक वातरक्त में वेदना प्रशमनार्थ अलसी को दुग्ध में पीस कर प्रलेप करें। (चि० २६ अ०)।

(२) प्रमेह में अतसी तैल प्रमेह रोगी को सेवन कराना चाहिए, जैसे—

"कुसुम्भ सर्षपातसी × × स्नेहाः प्रमेहेषु" (चि० ३१ अ०) मात्रा—आधा से १ तो०।

वक्तव्य

चरक और सुश्रुत में उपनाह स्वेद (जिसे अंगरेजी में पुल्टिस कहते हैं।) के उपादान स्वरूप अतसी व्यवहृत हुई है—"उमया

कुष्ठतैलाभ्यां च ...मोपनाहयेत्" (चरक सू० १४ अ०)

"तिलातसी सर्षप कल्केस्तु वस्त्रावनद्धैः स्वेदयेत्" (सुश्रुत चि० ३२ अ०)

निघण्टु ग्रंथों में अतसी तैल के गुण इस प्रकार लिखे हैं—अलसी का तैल वात नाशक, मधुर और बलासकारक है।

(धन्वन्तरीय निघण्टु)

नोट—शेष देखो—अतसी तैल।

अतस्यादि क्वाथ—अलसी के फूल, मजीठ बड़ के अंकुर, कुश आदि पंच तृण। सबको समान भाग लेकर यथाविधि क्वाथ बनाकर पीने और पथ्य में मूँग का यूष (और भात) खाने से रक्तपित्त का नाश होता है। वृ० नि० र०।

यूनानी मतानुसार—

प्रकृति—२ कक्षा में शीतल व रूक्ष। किसी किसी ने २ कक्षा में उष्ण और ३ कक्षा में रूक्ष लिखा है। हानिकर्त्ता—दृष्टि शक्ति, पाचन तथा मुष्क को। दर्पघ्न—धनियाँ, सिकञ्जबीन और मधु। प्रतिनिधि—मेथी। शर्बत की मात्रा—१०॥ मा०।

प्रधान कर्म—कास, वृक्क एवं वस्त्यश्मरी को लाभदायक है तथा मूत्रकारक एवं स्तन्य-जनक है।

गुण, कर्म, प्रयोग—इसका कपड़ा पहिनना उत्ताप को दूर करता तथा स्वेद को शुष्क करता और कंडु एवं कठिन शोथ को लाभप्रद है। परन्तु, उष्ण प्रकृति वालों को एवं ग्रीष्म ऋतु में पहिनना चाहिए। इसमें जूएँ कम पड़ती हैं। इसके पत्र एवं छाल मस्तिष्क के अवरोधों की उद्घाटक और ज़ुकाम को बहाने वाली है। इसकी छाल को जलाकर छिड़कना रुधिरस्थापक है तथा क्षतों को भर लाता है। इसके पुष्प हृद्य एवं हृदय बलदायक हैं। बीज लयकर्त्ता, व्रण को स्वच्छकर्त्ता (जाली) और प्रकृति को मृदु करने वाले (मुलय्यिन तबअ) हैं। ठंडे पानी में पीसकर अनुलेप करने से शोथजन्य शिरोशूल एवं मास्तिष्कीय कृशा (दिक़्) तथा शिरोव्रण के लिए उपयोगी हैं। इसबगोल के साथ सन्धिशूल को लाभ करते हैं। इसका लुआब, नेत्र में टपकाने से अभिष्यन्द तथा नेत्र की लालिमा को दूर करता है। इसका लऊक़ (अवलेह) श्लेष्मज कास को गुणदायक है और तीन दिरम (३॥ मा०) पीना वक्षःस्थल को शुद्ध करता है तथा यकृत शोथ और आन्तरावयवों के शोथ का लयकर्त्ता है। भूनी हुई अलसी सङ्कोचक (क़ाबिज़) है और २। मा० दैनिक सेवन करने से आन्त्रवेदना को लाभप्रद है तथा मूत्र, स्वेद, दुग्ध एवं आर्तव का प्रवर्तक है। प्रकृति को मृदुकर्ता और वृक्क एवं वस्तीस्थ क्षत को लाभप्रद है। १ तो० पानी में क्वथित कर पीना वृक्काश्मरी के निकालने में शतशोऽनुभूत है। मधु के साथ प्लीहा शोथ के लिए लाभप्रद और काली मरिच और मधु के साथ कामोद्दीपक और शुक्र को गाढ़ा करता है।

नव्य मतानुसार—

एलोपैथिक मेटिरिया मेडिका

ऑफिशल प्रिपेयरेशन्ज़

(Official preparations)

लाइनाइ सेमिना—(Lini Semina) —ले०। लिन्सीड (Linseed)—इं०। अतसी बीज, तीसी का बीज। प्रभाव—अरेबिन (Arabin) के समान लुआबी पदार्थ की विद्यमानता के कारण यह स्निग्धता एवं मृदुताजनक है।

लाइनाइ सेमिना कंट्यूज़ा—(Lini semina contusa). लाइनम् कण्ट्यूज़म् (Linum contusum)—ले०। क्रश्ड लिन्सीड (Crushed linseed)—इं०। कुट्टित (कण्डित) अतसी, कूटी हुई अलसी। अलसी को कूट कर उसका मोटा चूर्ण तैयार करलें। यह ताज़ा तैयार किया हुआ होना चाहिए। यह कैटाप्लाज़्मा लाइनाई (अतसी की पुल्टिस) बनाने में काम आता है।

ऑलियम् लाइनाई—(Oleum Lini) –ले० । लिन्सीड ऑइल (Linseed oil) –इं० । अतसी तैल ।

मृदुताजनक रूप से इसका बहिर प्रयोग होता है ।

प्रभाव तथा उपयोग—लाइनम् कंट्युज़म् अर्थात् कुट्टित अतसी उत्कारिका (पुल्टिस) रूप में स्थानिक प्रदाहों पर अभ्यंतर आर्द्र उष्मा के उपयोग की सर्वोत्तम माध्यम है । जब अलसी की उष्ण पुल्टिस किसी भाग पर लगाई जाती है तब उष्मा के प्रभाव से क्षुद्र स्रोतस् (Small vessels) अबाध्य रूप से विस्तार को प्राप्त होते हैं और त्वगीय मांस तत्व, लोमकोष तथा ग्रन्थिक नलिकाएँ शिथिल हो जाती हैं । अतएव धातुएँ कोमल हो जाती हैं और कठोरता की अनुभूति एवं प्रादाहिक तनाव का सर्वथा लोप हो जाता है अथवा उसमें कमी आती है । रुधिर के धरातल की ओर आकृष्ट हो जाने के कारण बोध तन्तुओं के अन्तिम भागों को दबाव की कम अनुभूति होती है । कूल्हे की सन्धि के प्रदाह में उष्ण उत्कारिका के प्रयोग से कभी कभी मांसपेशीय आकुञ्चन शिथिल हो जाता है और स्थानान्तरित जानु वेदना घट जाती है ।

पुल्टिस को फलालैन पर फैलाना चाहिए और उसे इतना गरम रखना चाहिए जितना सुखपूर्वक सहन होसके । स्थानिक उत्तेजक प्रभाव के कारण अत्यधिक उष्ण पुल्टिस से प्रायः तनाव एवं वेदना की वृद्धि होगी ।

प्रायः यह प्रश्न होता है कि स्थानिक प्रदाह यथा व्हिटलो (नाखून खोरा) में पुल्टिस का व्यवहार किस समय किया जाना चाहिए ? यदि बहुत पहिले पुल्टिस का उपयोग किया जाता है तो फलतः धातु (Tissue) का सार्वांगिक शैथिल्य उपस्थित होता है और तनाव जो जीवन के लिए घातक है दूर होजाता है तथा उसके क्षय की अधिकतर संभावना होती है । परन्तु, यदि प्रदाह यहाँ तक विवर्धित होगया हो कि श्वेताणु तत्व स्रोत के परदे से बाहर आगए हों अथवा पूय एकत्रित होगया हो तो पुल्टिस उसको धरातल तक पहुँचाने में सहायक होती है । अतः पुल्टिसें (उत्कारिकाएँ) प्रदाह की समग्र दशाओं में उपयोगी होती हैं । यदि उनका उपयोग बहुत पहिले किया जाए तो वे पूय निर्माण को रोक देती हैं और उन्नत अवस्था में उसके निर्माण में शीघ्रता उपस्थित करतीं एवं उसे साहस प्रदान करती हैं । यदि उनमें पचननिवारक गुण वर्तमान होता तो उनसे प्रत्येक अभीष्ट की सिद्धि होती । तैलाक्त रेशम में आवृत्त करने पर यही कमी हम स्पिरिट लोशन या औरिक लोशन में पाते हैं ।

बर्न्स या स्केल्ड्स अर्थात् अग्निदग्ध या आग से जले हुए स्थान पर अतसी तैल में सम भाग चूने का पानी मिलाकर, जिसको कैरन ऑइल (Carron oil) कहते हैं लगाना उपयोगी होता है । बृहदान्त्र के अधोभाग में जब अवरोध के कारण मलावरोध हो तब कभी कभी आधा पौंड (१ पाव) अतसी तैल की वस्ति करने से विष्टम्भ दूर होकर एक दो दस्त आ जाते हैं । वि० व्हिटला० ।

कूटी हुई अलसी की पुलटिस को प्रादाहिक रोगों और फोड़े फुन्सियों पर लगाते हैं । इसके लगाने से न केवल वेदना कम हो जाती है, प्रत्युत शोथ भी कम हो जाता है, और यदि सूजन में पीव पड़ गई हो तो उसके विसर्जन में सहायता मिलती है । गंभीर शोथों जैसे फुफ्फुसौष; फुफ्फुसावरण प्रदाह, कास, परिविस्तृत-कला-प्रदाह, सन्धि प्रदाह (Arthritis) इत्यादि रोगों में अलसी की पुल्टिस अत्युत्तम अल्प स्थानिक उग्रतासाधक (काउंटर इरिटेंट) है ।

इसके उक्त प्रभाव को किञ्चित् प्रभावशाली बनाने के लिए पुल्टिस के धरातल (सतह) पर विचूर्णित राई छिड़क देते अथवा कैम्फोरेटेड ऑइल (कर्पूर मिलित तैल) चुपड़ देते हैं या पुल्टिस बनाते समय १६ भाग अलसी में १ भाग राई मिला देते हैं ।

नोट—पुल्टिस बहुत मोटी नहीं होनी चाहिए और लगाते समय उसके निम्न धरातल पर किञ्चित् तैल प्रभृति चुपड़ देना चाहिए जिससे वह शरीर से चिपक न जाय।

अलसी की पुल्टिस इस प्रकार बनाई जाती है—४ भाग कूटी हुई अलसी को १० भाग खौलते हुए पानी में धीरे धीरे डालकर मिलाते जाएँ। परन्तु, जिस बर्तन में पुल्टिस बनानी हो उसको पहले से गरम कर लेना चाहिए और पुल्टिस को आग के सामने तैयार करना चाहिए।

अलसी की खली (Linseed meal) से भी पुल्टिस बनाई जाती है।

अलसी के बीज में एक प्रकार का लुआबदार सत्व होता है जो उबलते हुए पानी में आजाता है। जब आमाशय-आन्त्रीय श्लैष्मिक कलाओं से इसका सम्बन्ध होता है, तब यह शांतिप्रद स्निग्धताजनक प्रभाव करता है और क्षोभक स्रावों से उनकी रक्षा करता है। इसमें प्रख्यात कण्ठ्य अर्थात् श्लेष्मानिस्सारक गुण है जो सम्भवतः आमाशय की ओर जाते समय कण्ठ पर प्रभाव करने पर पूर्णतः आधारित है। अधिक मात्रा में इसका फांट (Infusion) वृक्क को मन्दोत्तेजन देकर मूत्रकारक प्रभाव करता है। अतएव वस्तिप्रदाही प्रायः इससे लाभ अनुभव करता है।

फांट वा अलसी की चाय—(Infusion or linseed tea)-१२० ग्रेन अलसी और ६० ग्रेन मुलेठी, इनके चूर्ण को १० फ्लुइड आउंस खौलते हुए पानी में दो घंटे भिगोकर शीतल होने पर छान लें।

मोहीदीन शरीफ़—अलसी के बीज स्निग्धतासम्पादक (Demulcent), मृदुताकारक (Emollient), मूत्रल और तर्पक (बृंहण वा पोषक) हैं।

मूत्ररोध वा कष्टमूत्र (Dysuria), मूत्रकृच्छ्र, वस्तिप्रदाह और वृक्कप्रदाह में एवं बहुशः अन्य वस्ति, वृक्क तथा मूत्रप्रणाली सम्बन्धी विकारों में मूत्र की प्रदाहक अनुभूति के निवारणार्थ अलसी के बीज का आन्तरिक प्रयोग अत्यन्त उपयोगी होता है। (मेटिरिया मेडिका ऑफ़ मैडरास)

आर० एन० खोरी—अलसी स्निग्धता-सम्पादक, कफनिःसारक और मूत्रकारक है। अधिक मात्रा में मृदुरेचक है। अल्प मात्रामें सेवन करने से वृक्कद्वय अर्थात् मूत्रोत्पादक अवयव की क्रिया वृद्धि होती है। पिच्छिल वा स्नेहान्वित रूप से अलसी को कफ कास में प्रयुक्त करते हैं। स्निग्ध एवं मूत्रल होने के कारण यह मूत्रकृच्छ्र, अश्मरी, शर्करा एवम् शूलरोग में हितकर है।

अलसी के तेल के धूम ग्रहण करने से शिरः स्थित श्लेष्मा तथा योषापस्मार (Hysteria) में लाभ होता है। अलसी के क्वाथ का उसमें तैल की विद्यमानता के कारण, अनुवासनवस्ति रूप से लाभदायक उपयोग किया जा सकता है। इसका तेल मृदुरेचक है; अतएव अर्श रोगी के गाढ़ विट्कता की दशा में इसका उपयोग होता है।

(मेटीरिया मेडिका ऑफ़ इंडिया
२ खं- पृ० १५)

पूयमेह तथा जनन-मूत्रावयवस्थ क्षोभ में इसके बीज का आन्तरिक प्रयोग होता है। पुष्प हृदय बलदायक माने जाते हैं। (इमर्सन)

यह भारतीय तथा ब्रिटिस फार्माकोपिया में ऑफ़िशल है। उत्कारिका अर्थात् पुल्टिस रूप से इसका औषधीय उपयोग होता है। (इं० मे० मॉ०-कर्नल बी० डी० बसुकृत)

१ आउंस पिसे हुए अलसी के बीज को रात्रि भर शीतल जल में भिगो रक्खें। प्रातः काल ही इसे हिला कर ठंडा ही अथवा गरम करके और नीबू का रस मिलाकर प्रयोग करें। यक्ष्मा रोगी के लिए यह एक उत्तम पेय है। इस प्रकार धोया हुआ ताज़ा तैल अत्यन्त रोग

प्रशामक है। भोजन से पूर्व इस अलसी की चाय को १ पाइंट की मात्रा में दिन में तीन बार सेवन कराना चाहिए। अर्श रोग में १ से २ आउंस की मात्रा में इसका तैल प्रातः सायं प्रयोग में आता है। (इं० मे० मे० नद्कारणी कृत)

एक आउंस अलसी के बीज को १ पाइंट जल में १० मिनट तक उबाल कर छान लें। इसे अलसीकी चाय कहते हैं। यह अतीसार, प्रवाहिका और मूत्र विकारों के लिए एक उत्तम पेय है। (इं० ड्र० इं०—आर० एन० चोपरा कृत)

(२) विरेचक अलसी

लाइनम् कैथर्टिकम् Linum Catharticum)–ले०। पर्जिङ्ग फ्लैक्स (Purging flax)–इं०। कत्तान मुस्हिल–अ०।

नॉट ऑफिशल

(Not Official.)

उत्पत्ति स्थान—युरोप।

वानस्पतिक वर्णन—यह एकवर्षीय पौधा है। कांड सरल, कोमल ६ से ४ इं० तक ऊँचा होता है। पत्र–सम्मुखवर्ती, संपूर्ण (अखंड) अंडाकार, नोकीले, होते हैं। पुष्प लघु, श्वेत रंग के; दल अंडाकार होते हैं।

स्वाद—तिक्त व चरपरा।

रासायनिक संगठन—इसमें लाइनीन (अलसीन) एक न्युट्रल (उदासीन), वर्ण रहित; रवाकार अत्यन्त तिक्त सत्व होता है जिसमें विरेचक गुण का अभाव होता है।

मात्रा—६० ग्रेन चूर्ण रूप में। यह पौधा विरेचक रूप से व्यवहार में आता है।

अतस्यादिक्वाथः atasyádi-kváthah–सं० हिं० पुं० अलसी के फूल, मजीठ, बड़के अंकुर, कुश आदि पञ्च तृण। सब को समान भाग लेकर यथा विधि क्वाथ बनाकर पीने और पथ्य में मूँग की यूष (और भात) खाने से रक्त पित्त का नाश होता है। वृ० नि० र०।

अतसी-कुसुम atasí-kusuma सं० पुं० (१) तीसी का फूल। (२) रेशमी वस्त्र (Silk Cloth)। (३) पांशुशय्या। (४) भंग। (Hemp)

अतसी तैलम् atasí-tailam–सं०क्ली० अलसी का तेल, तीसी का तेल–हिं०। Linum Usitatissimum, *Linn.* (Oil of–Linseed oil.) ग० नि०. व० १५। भा० पू० तैल व०। देखो—अलसी।

अतह áatah–अ० (Unconsciousness) मूर्च्छा, अचेतता, अचेत होजाना, विसंज्ञता, बेहोश हो जाना। म० ज०।

अता atá–हिं० पत्थर फोड़ी (Patthara-forí) फा० इं० १ भा०। लु० क०।

अताक़ुत्तीर áatá-quttír–अ० शिकारी पक्षी (The birds of prey.)

अतान पत्रिका atána-patriká–सं० स्त्री० अरण्ड, एरण्ड। (Ricinus Communis, *Linn.*)

अतापी atápí–हिं० वि० [सं०] ताप रहित। दुःख रहित। शांत।

अतार atár } **तुताल्हश्फ़ह** tájulhashfah } अ०(१) वृत्त, घेरा, किनारा। (२) शिश्न-मुण्ड, मणि। कोरोना ग्लैंडिस (Corona Glandis)–इं०। (३) चक्षुतारा-मंडल। म० ज०।

अतारद áatárad } **अतारह** áatárah } नब्त० सुम्बुल रूमी। See-sumbul-rúmí

अतारद áatárad—रसा० Mercury (Hydrargyrum) पारा, पारद–हिं०। म० अ० डॉ० २ भा०।

अतारा áatárá–गन्दना–फा०। गोमी–हिं०। See-gandaná.

अतालीतून atálítúna–यु० कतान।

अति atí–हिं० वि० [सं०] बहुत। अधिक। ज़्यादा।

संज्ञा स्त्री० अधिकता। ज़्यादती। सीमा का उल्लंघन।

अति ati-ता० कचनार (Bauhinia racemosa, *Lam.*)

-घर्मी० फल। अतिमियुग्राम्रा (श० च०) स० फा० इं०।

अति अर्कः ati-arkah-सं० पुं० श्वेतमदार, सफेद आक (Calotropis gigantea, *R. Br.*)। देखो—आक।

अतिआ atiá-खसि० पखानभेद, पाषाण भेद। Saxifraga ligulata, *Wall.*-ले०। फा० इं० १ भा०।

अतिकुटः ati-kuṭah-सं० त्रि० निम्बादि द्रव्य। वै० श०।

अतिकण्टः,-कः ati-kaṇṭah,-kah-सं० पुं० (१) छोटा गोखरू। (२) दुरालभा। मद० व० १।

अतिकन्दः-कः atikandah,-kah-सं० पुं० हस्तिकन्द, यह प्रसिद्ध महाकन्दशाक है। देखो—हस्तिकन्दः। रा० नि० व० ७।

अतिक-मामिडि atika-mámiḍi-ते० पुनर्नवा (Boerhavia diffusa, *Linn.*)।

अतिकर्षणं atikarshaṇam-सं० क्ली० अत्यन्त कृशीकरण, बहुत दुर्बल करना। अतिकार्श्यकर, बहुत निर्बलताजनक (कृशताकारक) द्रव्यों वा उपायों का सेवन करना।

अतिकायः atikáyah-सं० त्रि० }
अतिकाय atikáya-हिं० वि० } १ (Gigantic)
दीर्घकाय। बहुत लम्बा चौड़ा। बड़े डील डौल का। स्थूल। "अतिकाय-गृहीतायास्तरुणया-स्तथविकमी भवेत्।" मा० नि०। २—स्थूल मेद वाला। सु० सं० उ० ३८।

अतिकाल atikála-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) विलम्ब। देर। (२) कुसमय।

अतिकृच्छ्र atikrichchhra हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) बहुत कष्ट। (An extraordinary hardship)। -वि० अति कठिन (Very difficult).

अतिकृत नाशिनी atikrita-náshiní-सं० स्त्री० Mercury (Hydrargyrum). पारा, पारद। अथ०। सू० ६। ४४। ३।

अतिकृशः atikrishah सं० त्रि० अति दुर्बल, बहुत दुबला। वै० श०।

अतिकेश(स)रः atikesha(sa)rah-सं० पुं० कुब्जक पुष्प वृक्ष। कूजा-हिं०। कोंकन देशीय पुष्प विशेष। रा० नि० व० १०। भा० पू० प्र० व०। कण्टक सेवती।

अति कोवचम् atikoevam-ता० अङ्कोल, ढेरा (Alangium decapetalum, *Lam.*) इं० मे० मे०।

अतिक्रम atikrama-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (Act of overstepping; Breach of decorum or duty) नियम वा मर्यादा का उल्लंघन। विपरीत व्यवहार।

अतिक्रमण atikramaṇa-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] उल्लङ्घन। पार करना। हद के बाहर जाना। बढ़ जाना।

अतिक्रांत atikránta-हिं० वि० [सं०] (१) (Gone beyond) सीमा का उल्लंघन किए हुए। हद के बाहर गया हुआ। बढ़ा हुआ। (२) (Past, gone by) बीता हुआ। व्यतीत। गया हुआ।

अतिक्रांता वेक्षणम् atikrántá-vekshaṇam-सं० क्ली० जो बात पहिले कही गई। जैसे-चिकित्सा स्थान में कहा कि श्लोक स्थान में हम यह बात कह चुके हैं। सु० उ० ६५ अ० श्लोक २८। "यत्पूर्वमुक्तं तदति क्रांतावेक्षणम्। यथा चिकित्सितेषु ब्रूयाच्छ्लोकस्थाने यदीरितमिति।"

अतिखिरेटी atikhireṭí-सं० स्त्री० पीली बूटी। कंघी-हिं०। अतिबला-सं०। (Abutilon Indicum, *G. Don* or A. Asiaticum, *G. Don.*) इं० मे० मे०।

अतिगण्डः atigaṇḍah-सं० त्रि० बृहद्गण्ड। मे० डचतुष्कं।

अतिगुप्ता atiguptá-सं० स्त्री० पिठवन-हिं०। (Uraria lagopoides, *D. C.*) -ले०। इं० मे० मे०। देखो-पृश्निपर्णी।

अतिगुहा atiguhá-सं० स्त्री० (१)पिठवन-हिं०। पृश्निपर्णी-सं०। (Uraria lagopoides, *D. C.* । र० मा०। (२) (Hedysarum gangeticum, *Linn.*) शालपर्णी। मद० व० १। वा० सू० २६ अ०। "लक्ष्मीं गुहा-मतिगुहाम्।"

अतिगो atigo-सं० स्त्री० (An excellent cow) उत्तम गाय।

अतिगन्धः atigandhah-सं० पुं०
अतिगंध atigandha हिं० संज्ञा पुं० } (१) भूतृण, गन्धतृण-बं०। (See-Bhútrinam) रा० नि०व० ८। (२) गंधराज, मोगरा-वृक्ष, मुद्गर पुष्प वृक्ष-बं०, हिं०, सं०। A sort of Jasmine (Jasminum z(s)ambac, *Ait.*) रा० नि० व० १०। (३) गंधक-हिं०। (Sulphur) रा० नि० व० १३। (४) चम्पक वृक्ष, चम्पा, चम्पा का पेड़ वा फूल-हिं०। (Michelia champaca, *Linn.*) रा० नि० व० १०। वि० (Having an excessive or overpowering smell) अत्यन्त गन्ध पूर्ण।

अतिगंधकः atigandhakah-सं० पुं० (१) हस्तिकर्ण (पलाश) वृक्ष। (२) चम्पक वृक्ष, चम्पा। रा० नि० व० १०।

अतिगंधा,-लुः atigandhá,-luh-सं० स्त्री० पुत्रदात्रीलता, पुत्रदा-सं०। बाँझ खेखसा, लक्ष्मणा-हिं०। रा० नि० व० १०।

अतिगंधिका atigandhiká-सं० स्त्री० पुत्रदात्रीलता, पुत्रदा-सं०। देखो-पुत्रदात्री। रा० नि० व० ५। (See-Putradátrí).

अतिघूर्णता atighúrnatá-सं० स्त्री० अतिनिद्रा, निद्राधिक्य, अत्यन्त निद्रा। भा० म० ४ भा० श्लो० २४ मसूरिका। "तृष्णा-दाहोऽतिघूर्णता"।

अतिचर atichara-सं० त्रि० (Transient) क्षणिक, अस्थायी।

अतिचरः aticharah-सं० पुं० (१) एक प्रकार की पक्षी (A sort of bird) (२) वृक्ष विशेष (a tree)। वै० श०।

अतिचरणा aticharaná-सं० (हिं०संज्ञा) स्त्री० (१) अत्यन्त मैथुन करने के कारण जिस योनि में सूजन हो जाती है उसे अतिचरणा कहते हैं। कफज योनिरोग विशेष, यथा—"मैथ्यातिचरणा शोफं संयुक्तातिव्यवायतः" । वा० उ० ३३ अ०। देखो—अचरणा। (२) स्त्रियोंका एक रोग जिसमें कई बार मैथुन करने पर तृप्ति होती है। (३) वैद्यक मतानुसार वह योनि जो अत्यंत मैथुन से तृप्त न हो।

अतिचरा,-ला aticharà,-lá-सं० स्त्री० (१) पद्मचारिणी-सं०। गैंदेका फूल, गेंदा। (Tagetes Erecta, Linn.)। मद० व० ३। अभि०नि० १ भा०। (२) स्थल कमल-हिं०। स्थल पद्म, थलपद्म-बं०। Hibiscus mutabilis। मेमो०। गुले अजाइब-फा०। रा०नि० व० ५। भा० पू० १ भा०। देखो-स्थलपद्म। (३) भूत तृण। (४) A lotus plant कमल। पद्म।

अतिच्छत्रः atichchhatrah-सं० पुं० (१) लाल तालमखाना-हिं०। रक्त कोकिलाक्ष -सं०, बं०। प० मु०। रत्ना०। (२) छत्रा, साँप की छतरी, कुकुर-मुत्ता, भूमिछत्रा,काटछातु, पोयालछातु-बं०। (A mushroom) (३) स्थूल तृण विशेष। (४) anise। सौंफ।

अतिच्छत्रकः atichchhatrakah-सं० पुं० (१) भूततृण। प० मु०। (२) भूतृण, गंधराज। रा० नि० व० ८। (३) साधारण तृण। (४) एक वृक्ष जिसके मूल एवं पत्र वच की आकृति के होते हैं तथा जो रस में कटु होता है। रा० नि०। (५) शरवान, छतरिया। शा० औ० श० सा०।

अतिच्छत्रका atichchhatraká
अतिच्छत्रा atichchhatrá
अतिच्छत्रिका atichchhatriká

सं० स्त्री० (१) सौंफ, जंगली सौंफ-हिं० । रा० नि० व० ४ । मद० व० २ । वा० उ० ६ अ० महापैशा० घृ० । 'अतिछत्रा पलङ्कषा' । सि० यो० उन्माद चि० महापैशाच घृते । (२) मधुरिका । मोरी-बं० । च० चि० अ० । (३) छत्रवृक्ष । वह वृक्ष जिसके मूल व पत्र बचकी आकृति के और रस कटु हो । (४) भूत तृण । रा० नि० । (५) अजशृंगी, मेढ़ासिंगी-हिं० । विषाणिका-सं० । वा० सू० २६ अ० । (६) उक्त नाम की महौषध । देखो—ओषधिः । (७) (A mushroom) साँपकी छत्री । अगारिकस एेल्बस ।

अतिजव atijava-हिं० वि० [सं०] जो बहुत तेज़ चले । अत्यन्त वेगगामी ।

अतिजागरः atijágarnah-सं० पुं०
अतिजागर atijágara-हिं० संज्ञा पुं०
नील वर्ण का बगुला पक्षी । A kind of heron (Ardea jaculator). देखो—नील क्रौञ्च । रा० नि० व० १६ ।

अतिजागरणः ati-jágaraah-सं० पुं०
अतिजागरण ati-jágarana-हिं० पुं०
अधिक जागना । वा० सू० २ अ० ।

अतिजात atijáta वह संतान जो पिता के अधिक गुण रखती हो । अथ० । सू० ६ । का० ८ ।

अतिजीवः atijívah-सं० पुं० अन्य सामान्य जीवों की दशा को अपने ज्ञान बल से पार करना । अथ० । सू० २ । कां० ८ ।

अतिजृम्भः atijrimbhah-सं० पुं० अति जँभाई का आना, वायु रोग विशेष । वै० निघ०

अतितपस्विनी atitapasviní-सं० स्त्री० मुण्डी, गोरखमुण्डी (Sphoeranthus Indicus, *Linn.*) भा०पू० १ भा०गु०व०।

अतितर्पणम् atitarpanam-सं० क्ली० अति तृप्ति, अति तर्पण । वा० सू० ८ अ० ।

अतितार्या atitárya-सं० स्त्री० पार करने योग्य । अथ० । सू० २ । २७ का० ८ ।

अतितीव्रा atitíbrá-सं० स्त्री० गांडर दूब -हिं० । गंड दूर्वा-सं० । रा० नि० व० ८ । (See-Ganda-dúrvvá.)

अतितीक्ष्णः ati-tíkshnah-सं० त्रि० (१) मरिच प्रभृति (Black pepper). -पुं० (२) सहिंजन, शोभाञ्जन वृक्ष (Moringa pterygosperma, *Gærtn.*) । -क्ली०(३) अजमोदा (Apium involucratum).

अतितृप्तिः atitriptih-सं० पुं० पित्तजन्य रोग विशेष (Biliary disease.) । वै० निघ० ।

अतितेजिनी atitejiní-सं० स्त्री० तेजबल-हिं०, बं०, मह०, गु० । त्रिपर्णी सं० । मद० व० १ ।

अतिदग्धम् atidagdham-सं० क्ली० अग्नि-दग्ध रोग (Burn) सु० सू० १२ अ० ।

अतिदाहः atidáhah-सं० पुं० अतिसन्ताप, दाहाधिक्य, तापबाहुल्य । वै० निघ० ।

अतिदीप्तिः atidíptih-सं० स्त्री० श्वेत तुलसी -हिं० । श्वेत सुरसा-सं० । श्वेत बाबुई, तुलसी -बं० । (Ocimum Basilicum, *Linn.*) वै० निघ० ।

अतिदीप्यः,-कः atidípyah,-kah-सं० पुं० लाल चीता, रक्त चित्रक (Plumbago Rosea, Linn.)रा० नि० व० ६ ।

अतिदुष्टः atidushtah-सं० पुं० गोखरू -हिं० । गोक्षुर-सं० । (zygophylleæ. Tribulus terrestris, Linn.) वै० निघ० ।

अतिदेशः atideshah-सं० पुं०
अतिदेश atidesha- हिं० संज्ञा पुं०
(१) प्रकृतस्यानागतेन साधनम् अर्थात् प्रकृत का अनागत (भविष्यत) से साधन किया जाना

'अतिदेश' कहलाता है। जैसे, अमुक कारण से इसका वायु ऊर्द्ध्वगामी होता है इसलिए इसे उदावर्त होगा। यहाँ वायु का ऊर्द्ध्वगमन प्रकृत है इसका साधन अगाड़ी होने वाले उदावर्त से होता है। सु० उ० ६१ अ०।

(२) एक स्थान के धर्म्म वा नियम का दूसरे स्थान पर आरोपण। (३) वह नियम जो अपने निर्दिष्ट विषय के अतिरिक्त और विषयों में भी काम आए।

अतिनिद्रः atinidrah सं० त्रि० (१) (Given to excessive sleep) निद्रालु, वह जिसको अत्यन्त नींद आरही हो।

(२) (Without sleep, sleepless) अनिद्रा।

अतिनिद्रता atinidratá सं० स्त्री०
अतिनिद्रा ati-nidrá-हिं० संज्ञा स्त्री०

(Excessive sleeping) निद्राधिक्य, नींद की अधिकता। कफवृद्धि जन्य रोग विशेष। सु० सू० १५ अ०।

अतिनिद्रानाशिनी गुटिका atinidránáshiní guṭiká-सं० स्त्री० कालीमर्च को शहद में घोट कर गोलियाँ बनाएँ। इसे घोड़े के लार से घिस कर नेत्रों में लगाने से घोर निद्रा भी दूर हो जाती है। यो० चि०।

अतिनिद्रा रोग atinidrá roga-हिं० संज्ञा पुं० वह रोग जिसमें बहुत नींद आती है। (Sleeping sickness.)

अतिनेरञ्चि atineranchi-सिं० बड़ा गोखरू (Pedalium Murex, Linn.) स० फा० इं०।

अतिपक्वमांसम् atipakvamánsam-सं० पुं० खर पाक युक्त मांस, अधिक पकाया हुआ सिद्ध मांस, पाकाधिक सिद्ध मांस। गुण—अधिक पकाया हुआ मांस विरस (स्वाद रहित), वातकारक और भारी होता है। वै० निघ०।

अतिपक्वक्षीरम् atipakva-kshíram-सं० पुं० अग्नि पर पकाकर अत्यंत गाढ़ा किया हुआ दुग्ध अतिश्रुत घन दुग्ध। यह अत्यंत भारी होता है। "भवेद्गुरीयोऽतिश्रुतम्" वा० टी० हेमाद्री सारपाणिः।

अतिपज़म atipazam-ता० गूलर-हिं०। उदुम्बर फलम्-सं०। Ficus Glomerata, *Roxb.* (Fruit of) स० फा० इं०।

अतिपञ्चा atipanchá-सं० स्त्री० (A girl past five) पाँच वर्ष से ऊपर की कन्या।

अतिपत्रः,-कः atipatrah,-kah-सं० पुं० (१) (The teak-tree) सागवन-हिं०। शाकतरु-सं०। सेगुन गाछ-बं०। रा० नि० व० ६, उन्माद-चि०, महापैशाच घृते। (२) हस्तिकन्द नामक महाकन्द। रा० नि० व० ७।

अतिपत्रा atipatrá-सं० स्त्री० (Sida cordifolia, Linn.) बलाभेद, खिरेटी, बरियारा, बीजबन्द। बेड़ेला-बं०। देखो—बला।

अतिपरिच्छम् atiparichcham-ता०
अतिपर्या atiparyá—सं० स्त्री०

मालकांगुनी-हिं०। कटुम्भी-सं०। (Celastrus paniculatus, *Willd.*) इं० मे० मे०। फा० इं० १ भा०।

अतिपातितम् atipátitam-सं० क्ली० (Fracture) अस्थिभंग, कांडभग्न, अस्थि का बीच से टूटजाना, जिससे अस्थि पूर्णतः पृथक् हो जाती है। सु० नि० १५ अ०।

अतिपिच्छः atipichchhah-सं० पुं० श्वेत रक्तालु (Dioscorea sativa, Linn.) वै० नि०।

अतिपिच्छला atipichchhalá-सं० स्त्री० कुमारी, घृतकुमारी, घीकुवार-हिं०। (Aloe Barbadensis.) वै० निघ०।

अतिपिञ्जरः atipinjarah
अतिपीड़कः atipírakah

-सं० पुं० (Foul ulcer) दुष्ट व्रण, दूषित क्षत। वै०।

अतिपित्ता atipittá–सं० स्त्री० लजालू, लजालु, छुईमुई (Sensitive plant).

अतिप्रगे atiprage–(Very early in the morning) प्रातःकाल।

अतिप्रभंजनवात atiprabhanjana-váta –हिं० संज्ञा पुं० [सं०] अत्यन्त प्रचंड और तीव्र वायु जिसकी गति एक घंटे में ४० वा ५० कोस होती है।

अतिप्रवाहण atipraváhaṇa–सं० वि० (To grunt) किनकिना,काँखना। सु० नि १३ अ०।

अतिप्रस्रुतम् ati-prasrutam–सं० क्लीं० अधिक रक्तमोक्षण, अधिक रक्त स्रावण। सु० शा० ८ अ० श्लो० १७।

अतिप्रौढ़ा atiprourhá–सं० स्त्री० (A grown-up girl) विवाह योग कन्या।

अतिबरसण atibarasaṇa–हिं० संज्ञा पुं० [सं० अतिवर्षण] मेघमाला। घटा। –डिं०।

अतिबल atibala–हिं० वि० [सं०] (Very strong or powerful) प्रबल, प्रचंड, बली।

अतिबला ati-balá–सं० स्त्री० (१) (Abutilon Indicum *G. Don.*) एक ओषधि, कंघी ,कंघही; ककही, ककहिया–हिं०। देखो–कंघी वा बला। रा० नि०व० ४। मद०व० १। भा० पू० १ भ० गु० व०। सु०सू० ३६ संशमने। च०सू० ४ अ०। सु०सू० क्रमिचि०। चि० क्र० क० वल्ली स्त्रीरोगचि०। वा० उ० ५० अ०। (२) श्वेत वाट्यालक। (३) गोरक्षतण्डुला। विष्णुनारायण तैले। शतावरीयो–सा० कौ०। चि० क्र० क० वल्ली केतक्यादि तैले।

अतिबलिका atibaliká } –सं० स्त्री० वाट्यालक। बरियारा
अतिबली atibalí }
–हिं०। (Sida cordifolia, *Linn.*) रा० नि० व० ४।

अतिबाला atibálá–सं० स्त्री० (A cow two years old) दो वर्ष की गऊ।

अतिभक्ता atibhaktá–सं०स्त्री०गुलाब (The rose)

अतिभ (भा) रः atibha,-bhá,-rah–सं० पुं० (Excessive burden) भारी बोझ।

अतिभारगः ati-bháragah–सं० पुं० अश्वतर। खच्चर, अश्वभेद–हिं०। (Donkey, mule) वै० श०।

अतिभीः atibhíh–सं० स्त्री० वज्रप्रभा, विद्युत, बिजली (Lightning, flash of Indra's thuderbolt.)

अतिभोजनम् ati-bhojanam–सं० क्लीं० अधिक मात्रा में भोजन करना, अधिक भोजन, अत्याहार। गुण—इससे आलस्य, भारीपन, पेट की वेदनासहित गुड़गुड़ाहट तथा शरीर के शिथिल होजाने प्रभृतिकी अधिकता होतीहै। सु० सू० ४६ अ० कृतान्नव०।

अतिमङ्गल्यः ati-mangal-yah–सं० पुं० बिल्व वृक्ष। बेल का पेड़–हिं०। (Ægle or cratœva marmelos,*Corr.*) –ले०। रा० नि० व० ११।

अतिमञ्जुला ati-manjulá–सं० स्त्री० सेवती गुलाब–हिं०। कण्टक सेवती वृक्षः–सं०। गोलाप, रक्त गोलाप-बं०। (Rosa damascena, *Mill.*) भा० पू० १ भा० पु० व०। मद० व० ३। देखो—सेवती।

अतिमण्डलः ati-mandalah–सं० पुं० भूधामन वृक्ष। वै० निघ०।

अतिमदुरम् ati-maduram–ता०, सिं० मुलेहठी, यष्टिमधु, जेटीमध–हिं०। Glycyrrhizæ (Radix) glabra, *Linn.* (Liquorice root or Liquorice) स० फा० इं०।

अतिमदुरम्-पाल् ati-maduram-pál–ता० मुलेठी का सत–हिं०। रुब्बुस्सूस–अ०। Glycyrrhiza. (Extract of–E.of liquorice) स० फा० इं०।

अतिमधुरम् ati-madhuram-मल० मुलेठी (Glycyrrhizæ 'Radix' glabra, *Linn.*) स० फा० इं०।

अतिमधुरम्-पालु ati-madhuram-pálu -ते० मुलेठी का सत-हिं०। Glycyrrhiza (Extract of-)। स० फा० इं०।

अतिं-मधुरमु ati-madhuramu-ते०
अतिमधुरा ati-madhurá-कना०
मुलेठी (Liquorice root) स० फा० इं०।

अतिमन्थः,-कः ati-manthah,-kah-सं० पुं० अरनी, अरणी, अग्निमन्थ (Premna serratifolia).

अतिमात्रम् ati-mátram-सं० क्लो० अधिक मात्रा (परिमाण), मात्राधिक्य। मात्रा से ज़ियादा। वा० सू० ८ अ०

अतिमात्र ati-mátra-हिं० वि० [सं०] (Excessive) अतिशय। बहुत। ज़्यादा।

अतिमानुष ati-mánusha-हिं० वि० [सं०] (Superhuman) मनुष्य की शक्ति के बाहर का। अमानुषी।

अतिमित ati-mita-हिं० वि० [सं०] अपरिमित। अतुल। बे अन्दाज़। बहुत अधिक। बे ठिकाना। बे हिसाब।

अतिमुक्तः,-कः ati-muktah,-kah-सं० पुं०
अतिमुक्त ati-mukta-हिं० संज्ञा पुं०
अतिमुक्तका ati-muktaká
-सं० पुं० (१) तिनिश वृक्ष। तिनसुना। तिरिच्छ। (Mountain ebony)। अम०। (२) तिन्दुक वृक्ष (See-Tinduka)। तेंद, गाब-बं०, हिं०। तत्पर्य्याय-पुण्ड्रकः, मल्लिनी, भ्रमरानन्दा, कामुककान्ता-सं०। (३) नवमल्लिका भेद। वासन्ती, नेवारी-हिं०। रायबेल-बं०। रायविर-म०, ते०। (J. zambac floribus multiplicatus) देखो-नवमल्लिका। (४) माधवीलता, कुसरां, कस्तुरमोगरा (Gærtnera racemosa) प० मु०। "अतिमुक्तकमिच्छन्ति वासन्ती माधवीलताम्।" हला० ५४। वासन्ती। तिनिश। मे० तचतुष्क। वा० उ० १३ अ०। गाब, तेंद। भा० पू० १ भा०।

गुण—कसेली, शीतल, श्रमघ्न, पित्त, दाह, ज्वर, उन्माद, हिक्का, तथा छर्दिनाशक हैं। रा० नि० व० १०। देखो -तिनिशः। माधवी मधुर, शीतल, लघु तीनों दोषोंको नाश करने वाली है। भा० पू० १ भ० पु०व०। -(कः) हरिमन्थ। हारा०। (५) मरुश्रा का पौधा।

अतिमुक्त तैलम् ati-mukta-tailam- सं० क्लो० अतिमुक्त के बीज का तेल, अतिमुक्तक बीज तैल।

गुण—वातपित्तनाशक, केशवर्द्धक अथवा केश के लिए हित, श्लेष्माकारक, भारी और शीतल है। वा० टी० हेमा०।

अतिमुक्ता ati-muktá-सं० स्त्री० अतिमुक्तका। रा० नि० व० १०।

अतिमूत्र ati-mútra-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (Diabetes) वैद्यक में आत्रेय मत के अनुसार छः प्रकार के प्रमेहों में से एक। इसमें अधिक मूत्र उतरता है और रोगी क्षीण होता जाता है। बहुमूत्र।

अतिमैथुन ati-maithuna-हिं० संज्ञा पुं० अतिसङ्ग, स्त्री सहवासाधिक्य, अधिक स्त्री संग करना।

अतिमोदा ati-modá-सं० स्त्री०, हिं० संज्ञा स्त्री० (१)-गुलसेवती-हिं०। नवमल्लिका-सं०। सेउति-बं० (Jasminum arborescens, *Roxb.*) रा० नि० व० १०। (२) गनिकारी वृक्ष-बं०। गणिकारि-सं०। रा० नि० व० १०। (३) नेवारी का पौधा या फूल।

अतिमोक्षा ati-mokshá-सं० स्त्री० नेवाड़ी पुष्पवृक्ष (Jasminum zambac floribus multiplicatus.)

अतियवः ati-yavah-सं० पुं० निःशूकयव। काली यव। मद० व० १०। "निःशूकोऽतियवः स्मृतः" अर्थात् जो जो शूक (सुई) रहित हो

उन्हें अतियव कहते हैं। जौ से अतियव में अल्प गुण हैं। भा० पू० १ भा० धान्य व०।

अतियुक्तः ati-yuktah-सं० त्रि० बारम्बार उपयोगमें लाया हुआ। स्नेह आदि पञ्चकर्मों का अतियोग अर्थात् अत्यंत प्रयोग करना। भा०म० ख० १ भा० अ०स्रा०। "स्नेहाद्यैरतियुक्तैः।"

अतियोगः ati-yogah-सं० पुं०
अतियोग ati-yoga-हिं० संज्ञा पुं० } (१) अति प्रयोग, अतिशयित प्रयोग, अधिक उपयोग में लाना। वा० सू० १७ अ०। (२) अधिक मिलाव। (३) किसी मिश्रित औषधि में द्रव्य का नियत मात्रा से अधिक मिलाव।

अतिर् āatir-अ० सुगंधित, सुगंधित होना। म० ज०।

अतिरक्त atirakta-हिं० पुं०
अतिरक्तः ati-raktah-सं० पुं०
अतिरक्ता ati-raktá-सं० स्त्री० } (१) हिंगुल, सिंगरफ। Cinnabar (Hydrargyri Bisulphuretum.)। (२) ओड़हुल, अड़उलका फूल-हिं०। जवा पुष्प-वृक्ष-सं०। (Hibiscus Rosa=sinensis, *Linn.*) वै० निघ०।

अतिरजःस्राव atirajah-sráva-हिं० पुं० (Menorrhagia) मासिकधर्म का अधिक होना। देखो—प्रदर।

अतिरसः ati-rasah-सं० पुं० पौण्ड्रक-सं०। श० मा०। See-Pundrakah.

अतिरसा ati-rasá-सं० स्त्री० (१) मूर्वा -सं०। चूरनहार, मुरहरी-हिं०। (Sansevieria, zeylanica, *Willd.*)। मुर्रा -बं०। वै० निघ० २ भा० अप० त्रि० पलङ्कषा तैले। (२) रास्ना (Vanda Roxburghii)। मद० व० १। (३) मुलेठी (Liquorice) रा० नि० व० ६। (४) शतावरी-हिं०। शतमूली-सं०। च० सू० ४।

अतिराष्ट्र atiráshtra-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] पुराण के अनुसार एक नाग वा सर्प का नाम।

अतिरुक् atiruk-सं० स्त्री० (A very beautiful woman) अत्यन्त सुन्दर स्त्री।

अतिरुच् atiruch-सं० पुं० (The knee) जानु, घुटना।

अतिरुहा ati-ruhá-सं० स्त्री० मांसरोहिणी -सं०। रोहिणी-हिं०। रा० नि० व० १२। भा० पू० १ भा०। मद० व० १। (See-mánsarohiṇí)

अतिरूक्षः ati-rukshah-सं० त्रि० अत्यन्त रूक्ष, स्नेह रहित, यथा—कंगु और कोदो प्रभृति। (Very dry.)

अतिरेचकः ati-rechakah-सं०पुं० काकोली कॉकला-बं०। (Tizyphus napeca.) वै० निघ०।

अतिरोगः ati-rogah-सं० पुं० क्षयरोग। क्षयीरोग। राजयक्ष्मा। (Pthisis, consumption.) रा० नि० व० २०।

अतिरो (लो) मश atiro,-lo-masha-सं० त्रि० (Very hairy, shaggy) बहुत रोमयुक्त।

अतिरोमशः ati-romashah-सं०पुं०(१) बन बकरी, वन्यछाग (A wild goat.)। (२) (A sheep) भेड़, मेष। हारा०। (३) (A large monkey) बड़ा बन्दर (वानर)।

अतिरोमशा ati-romashá-सं० स्त्री० वृद्धदारकलता, विधारा, नीलबुहा। प० मु०। See-Vidhárá.

अतिरोहण ati-rohaṇa-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] जीवन वा ज़िन्दगी। (Life.)

अतिलङ्घन ati-langhan-हिं० संज्ञा पुं०
अतिलङ्घनम् ati-langhanam-सं० क्ली० } (Excessive fasting) अधिक उपवास, अधिक निराहार रहना।

अतिलङ्घितम् ati-langhitam-सं० क्ली० वह पुरुष जिसने अतिलंघन (उपवास) किया हो, अत्यन्त उपवास किया हुआ।

अतिलम्बी ati-lambí-सं० स्त्री० सौंफ। Anise (Pimpinella Anisum, *Linn.*) भा० पू० १ भा०।

अतिलेशा ati-leshá-सं० स्त्री० मीवा की पहिली

कशेरुका (Atlas=First cervical vertebra.)। फ़ह्‌फ़ह्‌-अ०।

अतिलेशा पृष्ठकीयः ati-leṣhá prishṭa-kíyah-सं० त्रि० (Atlanto occipital.)

अतिलेशापृष्ठकीय-सन्धिः ati-leṣháprishṭa-kíya-sandhih सं० पुं० (Atlanto occipital joint).

अतिलेशाक्षसमीयः ati-leṣháksha-samí-yah-सं० पुं० (Atlanto axial ligament)

अतिलोमशः ati-lomaṣhah-सं० पुं० (१) भेड़। (२) वन बकरी (A wild goat)। (३) बन्दर, वानर (A large monkey)

अतिलोहितगंधः ati-lohita-gandhah -सं० पुं० दौना, दमनक वृक्ष (wormwood)। प० मु०।

अतिवड़यम् ati-vaḍayam-ता० अतीस Root of-(Aconitum Heterophyllum, *Wall.*) स० फा० इं०।

अतिवयस् ati-vayas-सं०त्रि० (Very old, aged) अधिक उम्र वाला, वृद्ध।

अतिवर्त्तुलः ati-varttulah-सं० पुं० मटर, केराव-हिं०। कलाय विशेष-सं०। मटर, बाटुला, कड़ाइ-बं०। (Sida rhombifolia, *Linn.*)। र० मा०।

अतिवल ati-vala-सं० लघु चांच, चांच खुर्द। यह एक बूटी है।

अतिवला ati-valá-सं० स्त्री० नागवला, गंगेरन, गुलसकरी। (Sida Spinosa, *Linn.*)

अति-वला-चेट्टु ati-valá-cheṭṭu-ता० महाबला, सहदेवी। See-Mahábala.

अति-वष ati-vasha-गु० } अतीस। (Aconitum Heterophyllum, *Wall.*) स० फा० इं०।
अति-वस ati-vasa-ते० }
अति-वसु ati-vasu-ते० }

अतिवासा ati-vásá-ते० अतीस (Aconitum Heterophyllum, Wall.) लु० क०। वु० नि० र०।

अतिविकट ati-vikaṭa-सं० त्रि० (Very fierce) अतिभयावह।

अतिविकटः ati-vikaṭah-सं० पुं० (A vicious elephant) दुष्ट, बिगड़ा हुआ वा पागल हाथी।

अतिविरेचक ati virechaka-हिं० वि० अधिक मात्रा में मल (दस्त) निकालने वाला। (Drastic purgative)

अतिविदाही ati-vidáhí-सं० त्रि० बड़ी सरसों, राज सर्षप। वै० श०।

अतिविद्ध ati-viddha-सं० पुं० जाँघ में तीव्र वेदना चलनेका रोग। अथ०। सू० १०६। १। का० ६।

अतिविद्ध भेषजी ati-viddha-bheshají-सं० स्त्री० अत्यन्त पीड़ाको दूर करने वाली ओषधि। अथ०। सू० १०१। १। का० ६।

अतिविद्धा ati-viddhá सं० स्त्री० जो नस प्रमाण से अधिक छेदित होजाए और खून भीतर को प्रविष्ट हो जाए या बहुत अधिक खून निकले वह अतिविद्धा है। सु० शा० ८।

अतिविश्वा ati-viṣhvá-सं० स्त्री० अत्यन्त व्याप्त होने वाली।

अतिविष ativisha-मह०, गु० (Aconitum Heterophyllum Wall.) अतीस। इं० मे० प्लां। फा० इं०। वृ० नि० र०।

अतिविषः,-षा ati-vishah,-shá-सं० स्त्री० }
अतिविष,-षा ati-visha,shá-हिं० संज्ञा स्त्री० }
अतीस (Aconitum Heterophyllum, Wall.) रा० नि० व० ६। व० सु० ३९ अ० वचादि०। च० द० उव० चि० पिप्पल्यादिघृते। मद० व० १। ला० कौ०।

अतिविषनी ati-vishaní-गु० (Aconitum Heterophyllum, Wall.) अतीस। इं० मे० प्लां०।

अतिविषादिक्वाथःati-vishádi--kváthah-सं०पुं० अतीस, मोंथा, नेत्रवाला, धवपुष्प, कुड़ाकी छाल (इन्द्रजौ), अनारदाना, लोध, बरियारा, तुल्य भागले यथा विधि क्वाथ प्रस्तुत कर पीने से प्रबल

संग्रहणी, ज्वर, अरुचि और मन्दाग्नि का नाश होता है तथा यह धातुवर्द्धक है। वृ० नि० र०।

अतिविषादिचूर्णम् ati-vishá li-chúrṇam-सं० क्ली० अतीस, त्रिकुटा, सैंधव, यवक्षार और हींगका काथ या चूर्ण गरम पानी के साथ लेने से आम-युक्त संग्रहणी नष्ट होती है। अथवा पीपल, सोंठ, पाठा, शारिवों, दोनों कटेली, चित्रक, इन्द्र-यव, पाँचो नमक और यवक्षार का चूर्ण बनाकर दही, गरम पानी और सुरा आदि के साथ सेवन करने से अग्नि प्रदीप्त होती और कोष्ठगत वायु मिट जाती है। च० सं० चि० अ० १५।

अतिवीजः ativíjah-सं० पुं० बबूर (बबूल) वृक्ष। (Acacia Arabica, Willd.) वै० निघ।

अतिवृष्टि ati-vrishṭi-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] पानी का बहुत बरसना जिससे खेती को हानि पहुँचे। अत्यन्त वर्षा।

अतिवृहत्फलः ati-vrihat-phalah-सं० पुं० पनस। कटहल (Artocarpus integrifolia, Linn) भा० पू० १ भा०।

अतिवृंहण ati-vrinhaṇa-सं० त्रि० अत्यंत दूध, घी तथा मांसादि भक्षण द्वारा प्राप्त स्थूलता।

अतिवृंहित ati-vrinhita-हिं० वि० [सं०] दृढ़। पुष्ट। मज़बूत।

अतिव्यथा ati-vyathá-सं० स्त्री० अतिवेदना, अतिपीड़ा, अतिशयित यन्त्रणा।

अतिव्याप्ति ati-vyápti-हिं० स्त्री० [सं०] न्याय में एक लक्षण दोष। किसी लक्षण वा कथन के अन्तर्गत लक्ष्य के अतिरिक्त अन्य वस्तु के आजाने का दोष। जहाँ लक्षण या लिंग लक्ष्य वा लिंगी के सिवाय अन्य पदार्थों पर भी घट सके वहाँ अतिव्याप्ति दोष होता है।

अतिव्यात्ताननम् ati-vyattánanam-सं० क्ली० मुँह फाड़ कर, मुँह खोलकर। सु० शा० ८ अ० श्लो० ८।

अतिव्यायामः ati-váyámah-सं० पुं० व्यायामाधिक्य, अधिक व्यायाम करना अर्थात् कुश्ती व कसरत करना, किसी प्रकार के शारीरिक श्रम की अधिकता। अधिक व्यायाम पथ्य नहीं है। इससे कास, ज्वर, छर्दि, क्लान्ति (थकान), प्यास, क्षय, प्रतमक श्वास तथा रक्तपित्त प्रभृति रोग हो जाते हैं। भा० पू० १ भा०। वा० सू० अ० १।

अतिशष्कुली ati-shashkulí-सं० स्त्री० तिलकृत रोटिका।

गुण—यह रूक्ष है और श्लेष्म, पित्त तथा रक्त को नाशकरने वाली भारी, विष्टम्भ (मलावरोध) करने वाली और चक्षु के लिए हितकारी नहीं है। भा० पू० कृतान्नव०।

अतिशारिवा atishárivá-सं० स्त्री० अनन्त-मूल-हिं०, बं०। अनन्ता-सं०। (Hemidesmus indicus, R. Br) । र० मा०।

अतिशीत ati-shíta-सं० (हिं०) स्त्री० अधिक ठंडा, अत्यन्त जाड़ा।

अतिशुपर्णा atishuparṇá-सं० स्त्री० वन मूँग, मुद्गपर्णी। (Phaseolus trilobus, Ait.)

अतिशूकः ati-shúkah सं० पुं० यव-सं०। जौ-हिं०। (Barley)। प० मु०।

अतिशूकजः ati-shúkajah-सं० पुं० गेहूँ-हिं०। गोधूम-सं०। (Wheat.).

अतिशृतक्षीरम् ati-shrita-kshíram-सं० क्ली० अत्यन्त औटाया हुआ दूध। यह बहुत भारी होता है वा० सू० ५ अ०।

अतिशोषः ati-shoshah-सं० पुं० क्षयरोग (Pthisis.)। देखो-क्षयः।

अतिसय्या ati-sayyá-सं० स्त्री० यष्टिमधु लता, मुलेठी की वल्ली (Glycyrrhiza glabra) वै० श०।

अतिसर्जनम् ati-sarjanam-सं० क्ली० वेध, वेधना, छेदन। मे० नपञ्चकं।

अतिसान्द्रः ati-sándrah-सं० पुं० लोबिया, बोड़ा-हिं०। राजमाष-सं०। (A kind of bean (Dolichos Sinensis.),

अतिसाम्या ati-sámyá–सं० स्त्री० मुलेठी की लता, काली मुख वाली गुञ्जाकी बेल। (Abrus precatorius)। मै० श०।

अतिसारः ati-sárah–सं० पुं०
अतिसार atisára–हिं० संज्ञा पुं० } (१) पर्पटक –सं०। पित्तपाड़ा, पापड़ा–हिं०। (Oldenlandia corymbosa)। (२) स्वनामख्यात उदरामय रोग। बहुद्रवमलनिःसरण रोग। एकरोग जिसमें मल बढ़कर उदराग्निको मंद करता हुआ और शरीर के रसों को लेता हुआ बार बार निकलता है। इसमें आमाशय की भीतरी झिल्लियों में शोथ हो जाने के कारण खाया हुआ पदार्थ नहीं ठहरता और अँतड़ियों में से दस्त के रूप में निकल जाता है।

पर्याय—इसहाल–अ०। शिकम रवी, पा रवी–फ़ा०। डायरिया Diarrhœa, डीफ्लक्सियो Defluxio, एल्वी फ्लक्सस Alvi fluxus, कैथार्सिस Catharsis, पर्गेशन Purgation–इं०। दस्त, दस्त आना, दस्त लाना, पेट चलना–हिं०, उ०। कोर्स डी वेण्ट्री Cours de ventre, डीवॉयमेण्ट Devoyement–फ्रां०। डेर डर्श्चफाल Der Durchfall, बॉखफ्लस Bauchfluss, डुर्श्लॉफ Durchlauf –जर०।

परिभाषा–प्रकृतिका अतिक्रमण कर गुदा मार्ग द्वारा अत्यन्त प्रवाहित होना अति(ती)सार कहलाता है।

नोट–जिस अवयवके विकार द्वारा यह रोग होता है उसीके नाम से इसे अभिहित करते हैं। जैसे–आमाशयातीसार, आंत्रातिसार तथा यकृदातीसार प्रभृति। इसी भाँति मल में जिस दोष की उल्वणता होती है उसी दोष के नाम से इसे अभिधानित करते हैं। जैसे पित्तज अतिसार, कफज अतिसार तथा वातज अतिसार आदि।

डॉक्टरी नोट—जब रोग के कारण दस्त आएँ तब डायरिया और जब विरेचन द्वारा आएँ तब उसे कैथार्सिस तथा पर्गेशन कहते हैं।

कोई कोई डॉक्टर इसकी रोगोंमें गणना न कर केवल इसको उपसर्ग मानते हैं।

निदान

भारी (मात्रा गुरु, स्वभाव गुरु) गुण और पाक में भारी, अत्यन्त चिकनी, अत्यन्त रूखी, अत्यन्त गर्म, अत्यन्त पतली चीजों के खानेसे, अति स्थूल (अति कठिन), अति शीतल, विरुद्ध (संयोग विरुद्ध, देश विरुद्ध, समय विरुद्ध और मात्रा विरुद्ध), अध्यशन अर्थात् एक भोजन के बिना पचे फिर भोजन करने तथा अजीर्ण और विषम भोजन करने आदि कारणों तथा स्नेह, स्वेद, वमन विरेचनादि के अतियोग, अयोग और मिथ्यायोग से, विष भक्षण, भय, शोक, दूषित जलपान, अतिशय मद्यपान, स्वभाव तथा ऋतु विपरीत और जल क्रीड़ा करने से, मल मूत्रादि के वेग को रोकने से तथा कृमिदोष आदि कारणों से यह रोग उत्पन्न होता है। सु० उ० ४० अ०। मा० नि०।

सम्प्राप्ति

शरीर के दूषित रस, रक्त, जल, स्वेद, मेद, और मूत्र आदि सम्पूर्ण जलीय धातु बढ़कर मन्दाग्नि को पैदा कर मल के साथ मिल जाते और वायु द्वारा नीचे की ओर प्रेरित होकर अधिक मात्रा में निःसृत होते हैं, इसी को अतिसार कहते हैं।

वैद्यक के अनुसार इसके ६ भेद हैं।

(१) वायुजन्य, (२) पित्तजन्य, (३) कफजन्य, (४) सन्निपात जन्य, (५) शोकजन्य और (६) आमजन्य।

नोट—उपर्युक्त भेदों के अतिरिक्त शार्ङ्गधर में भयजन्य अतिसार भी लिखा है। अस्तु, उनके मत से अतिसार सात प्रकार का हुआ। वाग्भट्ट महोदय उक्त छः प्रकार के अतिसारों में आमजन्य की गणना न कर उसके स्थान में भयज अतिसार के वर्णन द्वारा उक्त छः भेदों की गणना की पूर्ति करते हैं। वे पुनः कुल अतिसारों को दो भागों में बाँटते हैं। जैसे (१) साम और (२) निराम तथा एक सरक्त और दूसरा निरक्त।

कोई कोई आम, पक्व तथा रक्त नामक अतिसारों को अतिसार की अवस्थाएँ मानते हैं नकि स्वतन्त्र व्याधियाँ।

लक्षणों का अनुशीलन करने से भयजन्य और शोकजन्य अतिसारों के लक्षण एक समान पाए जाते हैं। अतएव किसी किसी आचार्य ने इनका पृथक् वर्णन नहीं किया और यही प्रशस्त भी जान पड़ता है। आम और पक्व अतिसार की दो अवस्थाएँ हैं तथा रक्त पित्तातिसार का परिणाम। इस प्रकार कुल अतिसार पाँच ही प्रकार के हुए।

पाठकों की ज्ञानवृद्धि हेतु अब डॉक्टरी मत से अतिसार के भेदों का, मय उनके आयुर्वेदिक एवं यूनानी पर्यायोंके, यहाँ संक्षिप्त वर्णन कर देना उचित जान पड़ता है। डॉक्टरी मतसे अतीसार के मुख्य मुख्य भेद निम्न हैं—

(१) श्वेतातिसार—सफेद दस्त। इस्हाल अब्यज़—अ०। डायरिया एल्बा Diarrhœa Alba, व्हाइट डायरिया White Diarrhœa—इं०।

उष्ण प्रधान देशों में साधारणतः बालकों को इस प्रकार के दस्त आया करते हैं। इसके कारण विशेष प्रकार के कीटाणु माने जाते हैं।

(२) हरितातिसार—हरे दस्त। इस्हाल अख़ज़र—अ। ग्रीन डायरिया Green Diarrhœa—इं०।

इस प्रकार के दस्त शिशुओं को ग्रीष्म ऋतु वा दन्तोद्भेद काल में आया करते हैं।

(३) शिश्वतिसार वा बाल्यातीसार—बच्चों के दस्त। इन्फेंटाइल डायरिया Infantile Diarrhœa—इं०।

(४) इस्हाल बुहरानी—अ०। क्रिटिकल डायरिया Critical Diarrhœa—इं०।

जब प्रकृति किसी रोग में विकृत दोष को रेचन द्वारा विसर्जित करती है तब उक्त प्रकार के दस्त को इस नाम से अभिहित करते हैं।

(५) श्लेष्मातिसार—कफजन्य अतिसार। इस्हाल बलग़मी—अ०। म्युकस डायरिया Mucous Diarrhœa—इं०।

इस प्रकार के दस्त शरीर में श्लेष्माधिक्य एवं उनके प्रकुपित होने से आया करते हैं और उनमें श्लेष्मा मिली हुई होती है।

(६) क्षोभजन्य अतीसार—ख़राशदार दस्त। इस्हाल तहय्युजी—अ०। डायरिया क्रैप्युलोसा Diarrhœa Crapulosa, इरिटेटिव डायरिया Irritative Diarrhœa—इं०। इस प्रकार के दस्त किसी क्षोभक आहार वा औषध के सेवन द्वारा अंत्र में ख़राश होने के कारण आया करते हैं।

क्षोभजन्य अतिसार वस्तुतः प्रादाहिक, प्रवाहिकीय तथा वैशूचिकीय आदि अतिसारों की प्रारम्भिक अवस्था है।

(७) वातातिसार (मास्तिष्कीयातिसार)—मस्तिष्क के क्षोभ वा विकार द्वारा उत्पन्न हुआ अतीसार। इस्हाल दिमाग़ी—अ०। नर्वस डायरिया Nervous Diarrhœa, कटारल डायरिया Catarrhal Diarrhœa इं०।

यूनानी मतके अनुसार वह अतीसार जो मस्तिष्क से कण्ठ एवं अन्न प्रणाली के रास्ते आमाशय में नज़्लह तथा रतूबतों के गिरने से हुआ करता है। इसी कारण उसको इस्हाल नज़्ली (प्रातिश्यायिक अतिसार) भी कहते हैं।

डॉक्टरी मत से—इस प्रकार का अतिसार प्रायः मनोविकार एवं आन्त्रीय कृमिवत् आकुञ्चन और तद्स्थानीय ग्रंथियों की क्रिया की वृद्धि के कारण हुआ करता है। इस प्रकार के दस्त बहुधा स्त्रियों एवं बालकों को आया करते हैं।

(८) प्रादाहिकातिसार—प्रदाह जनित अतिसार। इस्हाल वर्मी—अ०। इन्फ्लमेटरी डायरिया Inflammatory Diarrhœa, डायरिया सिरोसा Diarrhœa Serosa, कैटारल एण्टेराइटिस Catarrhal Enteritis इं०। इस प्रकारके दस्त सामान्यतः आंत्रीय श्लैष्मिक कलाओं के शोथ से और कभी यकृत्प्रदाह के कारण आया करते हैं।

(९) वैशूचिकीयातिसार—

इस्हाल मानिंद हैज़ा—अ। कोलरीफॉर्म

डायरिया Choleriform Diarrhœa, कॉलरिक डायरिया Choleric Diarrhœa, थर्मिक डायरिया Thermic Diarrhœa-इं० । उष्ण प्रधान देशों एवं ग्रीष्म ऋतु में आहार विहार आदि दोष के कारण प्रायः इस प्रकार के दस्त आया करते हैं । इसमें पित्तातिसार एवं विषूचिका के बहुत से लक्षण मिलते जुलते हैं ।

(१०) प्रातिनिधिक अतिसार—

इस्हाल इवज़ी-अ० । विकेरियस डायरिया Vicarious Diarrhœa-इं० ।

वर्षा ऋतु में शीतल वायु के कारण स्वेदावरोध हो जाने से अथवा किसी प्रवृत्त हुए रतूबत के बन्द हो जाने से इस प्रकार के प्रातिनिधिक दस्त आने लगते हैं ।

(११) पित्तातीसार—

पित्त के दस्त । इस्हाल सफ़्रावी-अ० । बिलियरी या बिलियस डायरिया Biliary or Bilious Diarrhœa-इं० ।

उष्ण प्रधान देश तथा ग्रीष्म ऋतु में आहार आदि दोष के कारण प्रायः इस प्रकार के दस्त आया करते हैं । ऐसे दस्तों की आदि में पित्त के वमन भी आते हैं ।

(१२) गिर्यातिसार—

पर्वती अतीसार । हिल डायरिया Hill Diarrhœa-इं०

अतिसार का वह भेद जिसमें दस्त बिलकुल सफेद खड़िया मिट्टी और जल के मिश्रण जैसा पतला होता है ।

(१३) चिरकारी व पुरातन अतिसार

पुराने दस्त । इस्हाल मुज़्मिन-अ० । क्रॉनिक डायरिया-Chronic Diarrhœa -इं० ।

नोट—प्रसंगवश यहाँ डॉक्टरी मत से सामान्य परिचययुक्त अतिसार के कतिपय भेदों का उल्लेख कर अब आयुर्वेदीय मत से इसके अलग अलग भेदों आदि का पूर्णतया वर्णन होगा । अन्त में इसकी सामान्य चिकित्सा व पथ्य आदि देकर इस वर्णन को समाप्त किया जाएगा । इसके पृथक पृथक भेदों की चिकित्सा क्रम में उन उन नामों के सामने दी जाएगी । यूनानी वर्णन एवं भेद के लिए देखिए—इस्हाल ।

अतिसार के पूर्वरूप

जिस मनुष्य को अतिसार होने वाला होता है, उसके हृदय, गुदा और कोष्ठमें सुई चुभाने की सी पीड़ा होती है; शरीर शिथिल पड़ जाता है, मल का विबंध अर्थात् मलावरोध, आध्मान, और अन्न का अपरिपाक होता है । वा० नि० अ० ८ ।

माधव निदान में नाभि तथा कुक्षि (कोख) में सुई छिदने की सी पीड़ा और अधोवायु का रुक जाना, इतना अधिक लिखा है ।

अतिसार के लक्षण

(१) वातातीसार—इसमें जलवत् थोड़ा थोड़ा शब्द (गुड़गुड़ाहट) और शूल से युक्त बँधा हुआ झागदार पतला, छोटे छोटे गाँठों से युक्त, बराबर जले हुए गुड़ के समान, पिच्छिल, (चिकना), कतरने की सी पीड़ा से संयुक्त मल निकलता है । इसमें रोगी का मुख सूख जाता है । गुदा विदीर्ण हो जाती (गुदभ्रंश) और रोमांच होता है । रोगी कुपितसा मालूम होता है । वा० नि० अ० ८ । माधव निदान में ललाई लिए हुए रूखा मल उतरना, कटि, जाँघ और पिंडलियों का जकड़ना ये लक्षण अधिक लिखे हैं ।

(२) पित्तातिसार—इसमें दस्त पीले व लाल रंग के होते हैं, गुदा में जलन तथा पाक हो जाता और रोगी प्यास और मूर्छा से पीड़ित होता है । मा०नि० । वाग्भट्ट महोदय ने काला हरा, हरी दूबके समान, रुधिरयुक्त, अत्यन्त दुर्गन्धि युक्त दस्त होना, दस्तों से रोगी की गुदा में दर्द होना, शरीर में दाह और स्वेद होना ये लक्षण अधिक लिखे हैं ।

(३) कफातिसार—इसमें मल सफेद, गाढ़ा, चिकना, कफ मिश्रित, आमगन्धियुक्त आता तथा रोमहर्ष होता है । मा० नि० । कफातिसार में गाढ़ा, पिच्छिल तन्तुओं से युक्त, सफेद स्निग्ध, मांस और कफ युक्त, बारबार भारी

(जल में डूब जाने वाला), दुर्गन्धि युक्त, विबद्ध, निरन्तर वेदना युक्त, प्रवाहिका से युक्त थोड़ा थोड़ा दस्त होता है। इसमें रोगी को निद्रा, आलस्य, अन्न में अरुचि, रोमहर्ष और उत्क्लेश होता है। वस्ति, गुदा, और उदर में भारीपन होता और दस्त होने के पीछे भी ऐसा मालूम होता रहता है कि दस्त नहीं हुआ है। वा०नि० ८ अ०।

(४) त्रिदोषज वा सान्निपातिकातिसार—

शूकर की चरबी के समान व मांस के धोए पानी के सदृश तथा वातादि तीनों दोषोंके लक्षण जिसमें हों अर्थात् जो दोषत्रय से उत्पन्न हो उसे सान्निपातिकातिसार कहते हैं। यह कष्टसाध्य होता है। मा० नि०। वा० नि० ८ अ०।

(५) शोकातिसार के लक्षण—

जो प्राणी पुत्र, स्त्री, धन, बांधवादि के नाश होने से अति शोक युक्त होकर अल्प भोजन करते हैं, उनकी बाष्पोष्मा नेत्र, नासिका, कण्ठ आदिका पानी वायुसे कोठे में प्राप्त हो अग्नि को मन्द कर रुधिर को दूषित कर देती है जिससे घुँघची के समान लाल रुधिर गुदाके मार्ग होकर विष्ठा मिला हुआ या विष्ठा रहित, निर्गन्ध वा गन्धयुक्त निकलता है। शोक जनित अतिसार प्रायः अति कठिन होता है। कारण यह शोकशांति हुए विना केवल औषधों से शांत नहीं होता, इस लिए इसे कष्टसाध्य मानागया है। मा० नि०।

नोट—एक भयज अतिसार भी होता है जो भय द्वारा चित्त के क्षोभित होने पर पित्त से संयुक्त वायु मलको पतला कर देता है, तदनन्तर वात पित्त के लक्षणों से युक्त गरम, पतला, प्लवतायुक्त जल्दी जल्दी मल निकलता है। इसमें प्रायः शोकातिसार के लक्षण घटित होते हैं। वा० नि० ८ अ०।

(६) आमातिसार –

जब अन्न के न पचने के कारण प्रकुपित हुए दोष (वात, पित्त और कफ) अपने मार्ग को छोड़कर कोष्ठ, रसादि धातु तथा मल को दूषित कर बारबार गुदा मार्ग से अनेक प्रकार के मल बाहर निकालते हैं, तब उसको आमातिसार कहते हैं। इसमें रोगी के पेट में अत्यन्त पीड़ा होती है।

(७) रक्तातिसार—

पित्तातीसार रोगी यदि अत्यन्त पित्तकारक द्रव्यों का भोजन करे तो उसको निश्चय रूप से रक्तातीसार रोग हो। रक्तातिसार के वातजादि विशेष लक्षण उपर्युक्त अतीसार के लक्षण के समान होते हैं। अतीसार रोग में अँतड़ी आदि में घाव होने से भी मल के साथ रक्त गिरता है।

रोग विनिश्चय

कुछ व्याधियाँ ऐसी हैं जो अतीसार से बहुत समानता रखती हैं। अतएव इसके ठीक निर्णीकरण में बहुधा भ्रम हो जाया करता है। वे निम्न हैं—

१—विशूचिका वा वैशूचिकातिसार, २–ग्रहणी, ३–प्रवाहिका और ४–मलावरोध जन्य आमाशयस्थ श्लैष्मिक कलाओं का क्षोभ।

यहाँ पर अतीसार के साथ इनकी तुलनात्मक व्याख्या कर दी जाती है जिसमें अतीसार एवं उक्त व्याधियोंके ठीक निदान करने में सुविधा रहे।

(१) अतीसार के प्रारम्भ में मल संयुक्त किन्तु पश्चात् को मल संयुक्त एवं पतले दस्त आते हैं और उनका रंग आरम्भ से अंत तक पीला अथवा दोषानुसार विविध वर्ण मय होता है। परन्तु विशूचिका में मल संयुक्त न रहकर केवल सड़े कोहड़े के जल की भाँति पतले दस्त आते हैं।

अतिसार अपने उत्पादक विशेष कारणों से उत्पन्न होता है। पर विशूचिका में स्पष्टतया कोई विशेष कारण लक्षित नहीं होता। इसमें वमन और पेशाब बन्द हो जाते हैं और रोगी शीघ्र असीम निर्बलता का अनुभव करता है। अतीसार में प्रायः ऐसा नहीं होता।

मल में पित्त का पाया जाना सदा अतीसार का सूचक है। विशूचिका में वमन बहुत आते हैं और वे एक वर्ण रहित द्रव होते हैं। अतीसार में वमन बहुत कम आते हैं और जब कभी आते भी हैं तो उनमें पित्त अथवा अजीर्ण आहार का कुछ अंश विद्यमान रहता है।

(२) ग्रहणी—आहार के पचने पर व्याधि द्वारा अतिशय साम वा निराम मल निकलना अतीसार कहलाता है। अत्यन्त मल निकलने के कारण इसको अतीसार कहते हैं, यह स्वाभाविक ही शीघ्रकारी है।

परन्तु, ग्रहणी रोग में भुक्त अन्न के अजीर्ण होने पर कभी आमसहित और कभी मात्र (भुक्त अन्न) मल निकलता है। अन्न के जीर्ण होने पर कभी पक्व मल और निकलता है और कभी कुछ भी नहीं निकलता। कभी बिना कारण ही बारबार बँधा हुआ और कभी ढीला दस्त होता है। यह रोग चिरकारी होता है और मल इकट्ठा हो होकर निकलता है। अतीसार और ग्रहणी में यही अन्तर है। ग्रहणी चिरकारी है और अतीसार आशुकारी है।

(३) प्रवाहिका (Dysentery)-

नाना विध द्रव धातु का प्रचुर परिमाण में निकलना अतीसार और केवल कफ का निकलना प्रवाहिका कहलाती है। ज्वरांश, मरोड़, गुदा में एक अवर्णनीय वेदना की अनुभूति होना, प्रायः अल्प मात्रा में आम व रक्तमिश्रित मल का निकलना प्रवाहिकाके सामान्य लक्षण हैं। यद्यपि प्रारम्भिक अवस्था में कभी कभी अतीसारवत् प्रचुर मात्रा में जलीय वा मल मिश्रित दस्त आते हैं, पर मरोड़ आदि प्रवाहिका के पूर्वोक्त लक्षण तथा अन्त्रपुट एवं सरलांत्राधः भागका मृदु स्पर्श रोग के प्रावाहिकीय स्वभाव को प्रगट करते हैं। रोग के पूर्व इतिहासमें उग्र प्रवाहिका का अभाव अथवा श्लेष्मा एवं गुदस्थ वेदनानुभूति का न होना और मल के साथ रक्त का कम आना आदि लक्षण अतीसार सूचक हैं।

(४) मलावरोध के कारण बिलकुल अतीसार के समान ही अवस्था उपस्थित हो सकती है—प्रायः पतली श्लेष्मा व मल मिश्रित दस्त आने लगते हैं। परन्तु, अन्वेषण करने पर वे मात्रा में कुछ कम पाए जाते हैं।

अतीसार के पक्व अथवा अपक्व होने के लक्षण

अर्थात्

(सामत्व वा निरामत्व)

वह मल जो पूर्वोक्त वातादि लक्षणों से युक्त हो तथा जल में डालने से डूब जाए और अति दुर्गन्धित या पिच्छिल (लसदार) हो उसको आम वा अपक्व कहते हैं। साम तथा निराम भेद से अतीसार को दो वर्गों में बाँटते हुए वाग्भट्ट महोदय साम अर्थात् आमातीसार के मल को इसी प्रकार का होना बतलाते हैं। वे और भी कहते हैं कि इसमें रोगी के पेट में पीड़ा, गुड़गुड़ शब्द होना, विष्टंभ वा खट्टा पाखाना होना, लार से मुँह भरा रहना एवं मल बदबूदार होना आदि लक्षण होते हैं।

इसके विपरीत जब देह हलका हो, मल जल में न डूबे और दुर्गन्धि एवं लुआब रहित हो तब उस मलको पक्व मल कहते हैं। वाग्भट्ट महोदय ने इसे निराम लिखा है और वे लिखते हैं कि निराम के लक्षण साम से विपरीत होते हैं, कफजन्य होने के कारण पक्व होने पर भी यह जल में डूब जाता है। इसे निरामातीसार वा पक्वातीसार कहते हैं।

अतिसार की असाध्यता

जिस अतीसार रोगी का मल पके जामुन के समान काला, यकृत् पिण्ड के समान कृष्ण-लोहित वर्ण का, साफ तथा घृत, तैल, वसा, मज्जा, वेशवार (पक्व मांस विशेष) के रंग का, दूध, दही तथा धुले हुए मांस के जल के समान वर्ण का, चित्र विचित्र रंग का, चिकना, मोरकी पूँछ की चन्द्रिकाके सदृश वर्णका, घन (भारी), मुर्दा की सी दुर्गन्धियुक्त, मस्तक की मज्जा के समान गंधयुक्त (मस्तकस्थित स्नेह तुल्य आभायुक्त), उत्तम गंध वा दुर्गन्धियुक्त अत्यधिक मल निकले और जिसको प्यास, दाह, अँधेरा आना, श्वास, हिचकी, पार्श्वशूल, अस्थिशूल, इंद्रियों मे मोह, अनिच्छा, मन में मोह ये लक्षण हों तथा जिसकी गुदा की वलियाँ (आँटें) पक गई हों और जो अनर्थ भाषण करे ऐसे अतीसारी को वैद्य छोड़ दे। अपरञ्च जो मलद्वार धोने में असमर्थ हो जिसके बल व मांस क्षीण हो गए हों,

अत्यन्त अफरा हो, सूजन हो, अतिसार के उपद्रवयुक्त जिसकी गुदा पक गई हो और शरीर शीतल हो उसको वैद्य त्याग दे। और भी जो मनुष्य श्वास, शूल तथा प्यास से पीड़ित हो, बल मांस हीन हो तथा ज्वर से पीड़ित हो उसका और विशेष कर वृद्ध रोगी का अतीसार नाश कर देता है।

अतिसार निवृत्ति के लक्षण

जिस मनुष्य के मलसे भिन्न मूत्र उतरे अर्थात् दोनों की क्रियाएँ पृथक पृथक हों, मल अलग उतरे और मूत्र अलग, शुद्ध अपानवायु खुले, अग्नि दीप्त और कोठा हलका हो उसको अतीसार से मुक्त जानना चाहिए।

अतीसार की सामान्य चिकित्सा

अतीसारी को सुखपूर्वक शय्या पर लिटाए रखें और उसके शरीर को गरम रखें। रोगारम्भ काल से २४ घंटे पश्चात् तक उसे किसी प्रकारका आहार न दें, प्रत्युत उपवास रूप लंघन कराएँ। यथा वाग्भट्टः—

अतीसारोहि भूयिष्टं भवत्यामाशयान्वयः हत्वाग्निं वातजेऽप्यस्मात्प्राक् तस्मिनलंघनं हितम्। वा० चि० अ० ६।

अर्थात्—अग्नि को मन्द करके अतिसार रोग आमाशय में उत्पन्न होता है, इसलिए वातज अतिसार में भी प्रथम उपवास रूप लंघन देना हित है। अपि शब्द से कफादि जन्य अतिसार में भी लंघन हित है। प्राक् शब्द के प्रयोग से यह समझना चाहिए कि उत्तर काल में लंघन कराना हित नहीं है।

अपरञ्च यदि रोगी बलवान हो तभी लंघन भी कराना चाहिए। अन्यथा दुर्बलता की दशा में लघु पथ्य (पाचक तथा अग्निसंदीपक) की व्यवस्था करनी चाहिए।

अस्तु, केवल क्वथित कर शीतल किया हुआ जल, फाड़े हुए दूध का पानी तथा वच, अतीस, नागरमोथा, पित्तपापड़ा, नेत्रवाला, और सोंठ, इनमें से किसी एक के साथ पकाया हुआ पानी १ छं० की मात्रा में ३–३ घंटा पश्चात् रोगी को तृषा उत्पन्न होने पर देते रहें। २४ घंटे पश्चात् क्षुधा लगने पर उपयुक्त भोजन काल में उसको अधोष्ण तरल आहार २–२ छं० की मात्रा में ३–३ घंटा के अन्तर से दें। हलके अन्न से रोगी की शीघ्र ही अन्न में रुचि बढ़ जाती है और उसकी जठराग्नि प्रदीप्त तथा देह बलिष्ट होता चला जाता है।

अतः पका कर शीतल किया हुआ दूध उत्तम आहार है। उक्त दूध में ३ ग्रेन सोडियम् साइट्रेट प्रति १ छं० दूध में मिलाकर देना उपयोगी होता है। अथवा पावभर दूध में ३० बुंद मधुर चूर्णोदक (मीठा चूने का पानी) मिलाकर देना लाभदायक है। यदि दूध से उदराध्मान हो तो दूध के स्थान में अरारोट या सागू (साबूदाना) पका कर दें। पुनः मूँग के दाल का पानी, दाल भात, शोरबा चावल, खिचड़ी और दूध तथा पाव रोटी प्रभृति भी दें सकते हैं।

अतिसार रोगी को जल के स्थान में तक्र, पेया, तर्पण, सुरा और मधु यथा सात्म्य अर्थात् प्रकृति के अनुकूल व्यवहार कराएँ। पके केले को जल में भली भाँति मल छान कर पुनः किञ्चित् मिश्री मिला कर आहार के स्थान में व्यवहार कराते रहना अत्युपयोगी है। उसके आहार में ग्राही, अग्निसंदीपक और पाचन औषधियों का समावेश होना अत्यावश्यक है।

उक्त प्रतीकारों द्वारा जब रोग शमन हो जाए तब रोगी को क्रमशः उसके पूर्व आहार पर ले आएँ। परन्तु, अधिक जल वा दुग्ध से परहेज रखें।

मीठे अनार का स्वरस थोड़ी मिश्री मिलाकर देना रोगी के बल का रक्षक एवं आमाशय की क्षोभ का नाशक है। और किसी वस्तु को न देकर केवल इसको ही देते रहना पर्याप्त है।

उपचार

चिकित्सक को रोगी तथा रोग की दशा की भली प्रकार परीक्षा करने के पश्चात् खूब सोच समझ कर ही किसी औषध की व्यवस्था करना उचित है। प्रारम्भ में ही किसी संग्राही औषध को देकर तत्क्षण दस्त बन्द कर देना उचित नहीं। यथा—

प्रयोज्यं ननु संग्राहि पूर्वमामातिसारिणि ।
ग्रा० चि० ६ अ० ।

क्योंकि पहली दशा में धारक औषध द्वारा मलनिरोध करने पर पेट फूलना, ग्रहणी, बवासीर और शोथ प्रभृति उत्पन्न हो सकते हैं। परंतु दस्त होजानेपर भी यदि दोषोंकी प्रबलता रहे वा रोगी शिशु, वृद्ध अथवा दुर्बल हो तो पहिले ही से धारक औषध का प्रयोग करना चाहिए।

यदि रोगी शूल आनाह और प्रसेक से पीड़ित हो तो उसे वमन कराना हित है। और यदि दोष अत्यन्त वृद्धि को प्राप्त होगए हों तथा विदग्ध अर्थात् पकापक आहारने मिलकर अतिसार उत्पन्न करते हों तो उन सब उत्क्लेशजनक अर्थात् अतिसार को उत्पन्न करने में समुद्यत और बिना यत्न ही चलने में प्रवृत्त हुए दोषों में पाचनादि किसी औषध का प्रयोग न करके केवल पथ्य अर्थात् हितकारी आहार का ही सेवन कराना उपयोगी है।

पर यदि मलावरोध के कारण थोड़ा थोड़ा मल निकलने से उदर में अफरा, भारीपन, शूल तथा स्तिमिता उत्पन्न हो अथवा उदर में कोई क्षोभक द्रव्य या अजीर्ण या सड़ा गला आहार हो तो सर्व प्रथम किसी सामान्य मृदुभेदक औषध को देकर पेट को साफ़ करना चाहिए। फिर दस्तों को रोकने के लिए धारक औषध का व्यवहार करना उचित है।

पक्वातिसार

आम के पके हुए होने की दशा में प्रथम वार बार मृदु धारक और बाद को बलवान धारक औषध व्यवहार करनी चाहिए।

अत्यन्त निर्बलता की हालत में उत्तेजक औषध यथा सुरा (ब्रांडी) जल में मिलाकर देना लाभदायक होता है।

अब स्वानुभूत बहुशः योगों में से यहाँ कतिपय ऐसे योगों का उल्लेख किया जाता है जो अतिसार की प्रत्येक अवस्था की चिकित्सा में अत्युपयोगी सिद्ध हो चुके हैं और सहस्रों बार परीक्षा की कसौटी पर आ चुके हैं। मात्रा रोगी, रोग तथा अवस्था आदि के अनुसार न्यूनाधिक हो सकती है। इनको कोष्ठ शुद्धि पश्चात् ही देना चाहिए, योग निम्न हैं :—

(१) **अवयव**—सफेद राल, अतीस, मोचरस, दालचीनी, छोटी इलायची के बीज, कपूर, अजवायन और सफेद जीरा। **निर्माण-विधि**—इन सबको समभाग लेकर चूर्ण करें फिर खट्टे अनार के रस में भली भाँति १२ घंटे तक खरल करके चना प्रमाण गोलियाँ बनाएँ।

अनुपान—जल, अर्क सौंफ और अर्क पुदीना।

(२) **अवयव**—वटांकुर, अहिफेन शुद्ध, हींग घी में भुनी हुई, जीरा भुना, शंख भस्म, सुहागा भस्म और पोदीना। **निर्माण-विधि**—इन सबका चूर्ण समान भाग लेकर कुड़ा की छाल के रस की सात भावना देकर एक रत्ती प्रमाण की गोलियाँ प्रस्तुत करें।

सेवन-विधि—खट्टे अनार के रस के साथ आवश्यकतानुसार १ या २ वटिका दिन में २–३ बार दें।

(३) **अवयव**-भङ्ग, छोटी इलायची, सफेद जीरा, जायफल, कपूर, अनारदाना तुर्श और कौड़ी की भस्म। **निर्माण-विधि**—इनको समान भाग लेकर बारीक चूर्ण कर रखें।

सेवन-विधि व मात्रा—३ रत्ती से १ माशा तक उक्त चूर्ण को अर्क पुदीना के साथ सेवन कराएँ।

(४) मेथी भुनी, जीरा भुना, रूमी मस्तगी, कपूर, इन्द्रयव, जामुनकी गुठली और आम की गुठली। इन सबको समभाग लेकर बारीक चूर्ण करें और जितना यह चूर्ण हो उतनी ही मात्रा में शुद्ध भाँग का चूर्ण मिलाकर कागदार बोतल में सुरक्षित रखें।

मात्रा—बच्चों को आधी रत्ती से १ रत्ती। पूर्ण वयस्क मात्रा—२ रत्ती से १ माशा तक। **अनुपान**—अर्क पुदीना और अर्क सौंफ।

शूलयुक्त अतिसार में—

सत अजवायन, सत पोदीना, जौहर नौसादर,

जीरा सफेद भुना हुआ और सोंठ प्रत्येक २-२ तो०, छोटी इलायची दाना ६ मा०, शंख भस्म १ तो०, कौड़ी भस्म १ तो० और मूली का क्षार १ तो० । **निर्माण-विधि**—इन सबको पुदीना के रस से बारह प्रहर घोट कर सुखा लें । पुनः चूर्ण कर शीशे के कागदार बोतल में वायु से सुरक्षित रखें । **मात्रा**–१ रत्ती से ६ रत्ती तक ।

अनुपान—शुद्ध जल । **गुण**—उक्त प्रकार के शूल तथा अन्य सभी प्रकारके उदर शूल की दशा में इसकी एक मात्रा देते ही तत्काल शूलकी शांति होती है ।

डॉक्टरी योग

(१) सोडा बाइकार्ब	१ ग्रेन
स्पिरिट अमोनिया एरोमेटिक २० मिनिम (बुंद)	
स्पिरिट क्लोरोफॉर्म	५ मिनिम
टिंक्चर कार्ड० कों०	२० मि०
टिंक्चर केनाबिस इण्डिका	५ मिनिम
एक्वा एनिस	१ आउंस

यह एक मात्रा है ।

ऐसी ही एक एक मात्रा दिनमें तीन बार देनी चाहिए ।

उपयोग—यह अतिसार के लिए सर्वोत्कृष्ट वायुनिःसारक औषध है ।

(२) स्पिरिट क्लोरोफॉर्म	१ ड्राम
स्पिरिट अमोनिया एरोमैटिक	१ ड्राम
टिंक्चर ओपियाई	१ ड्राम
,, कैनाबिस इण्डिका	१ ड्राम
,, कार्ड० कों०	२ ड्राम
,, कर्चियाई	१ ड्राम
,, कैटेक्यू	१ ड्राम
रैक्टीफाइड स्पिरिट	८ आउंस
शुगर प्योर (शुद्ध शर्करा)	६ आउंस

इनको भली प्रकार मिलाकर स्टॉपर्ड (शीशे के कागदार) बोतल में रखें ।

मात्रा—पूर्ण वयस्क मात्रा, १० से ३० बुंद तक । बालक को, २ से १० बुंद तक (अवस्थानुसार) ।

अनुपान—इसकी एक मात्रा द्विगुण शुद्ध जल में मिलाकर रोगानुसार दिन में तीन बार अथवा तीव्रता की हालत में २-२, ३-३, घंटे के अन्तर से दें ।

उपयोग—इसे अतिसार की प्रत्येक अवस्था में दे सकते हैं । यह उक्त रोग की रामबाण औषध है और शतशोऽनुभूत है ।

नोट—अतिसार के अन्य भेदों की चिकित्सा आदि तथा योगों को क्रम में उनके पर्यायों के सामने देखिए ।

अतीसारमें प्रयुक्त होनेवाली ओषधियाँ
(*आयुर्वेदीय तथा यूनानी*)

अमिश्रित

सुगंधबाला, लवंग, नीलोत्पल, (निलोफ़र), उशीर (खस), लोध, पाठा, वच, चिरायता, धवपुष्प (धातकी), दाडिम्ब अर्थात् अनार की छाल (रस, पत्र, फलत्वक् और बीज), सहला; (**चिरकारी वा पुरातन**) अगारी कून, बिल्व, सप्तपर्ण, भंग, अंडखरबूज़ा, काफी (मलेक्षफल), दूर्वा, जामुन (जम्बु), सरपुंखा, निर्मली (कतक), हरीतकी, अंगूर वा लाल मुनक्का, चौलाई (तण्डुलीय), सीताफल (शरीफ़ा), सुपारी, समुद्रफल, समुद्रशोष, कचनार, पलास निर्यास (कमरकस, ढाक का गोंद), पतंग, देवदारु, दालचीनी, जाविद्री, नागरमोथा, कसेरू, तिन्दुक, गोजिह्वा, आमला, कपित्थ और भूम्यामलकी; (**उग्र व पुरातन**) ईसबगोल का छिलका, कुड़ा की छाल, इन्द्रजौ, राजन, कानन, एरण्ड, ज़ख़म हयात (घाव पत्ता), चन्द्रसूर, आम्र (बीज व छाल तथा निर्यास), कायापुटी और केला; (**वैशूचिक तथा ग्रीष्म**) जायफल, नीबू का रस, सन्तरा का रस, मेंहदी, कृष्ण जीरक, कमल, कर्पूर, दरियाई नारियल, ज़हर मुहरा खताई, अर्क सौंफ, अर्क पुदीना (अर्क नाना) अहिफेन, पत्थर का फूल, करञ्ज, पीतशाल साल बीज, रुद्राक्ष, अजवाइन, माजूफल और कतक, (**दन्तोद्भेदजन्य**) रेवन्दचीनी, और चूर्णोदक; (**बलातीसार**) काकड़ासिंगी, और एरण्ड तैल,

अतीस; (प्रवाहजन्यअतीसार) अगस्तिया की जाति के वृक्ष, साल, रोहिना और साज; (एटोनिक अर्थात् आमाशयदौर्बल्य जन्य) कुचिला, आसन प्रभृति, पिण्डतगर भेद,अर्जुन, बहेड़ा, तिर्याक् क्षारक, जंगली काली मरिच आदि और शृंगाटक (सिंघाड़ा प्रभृति); (आर्सनिक) सम्भालू प्रभृति, धातकी (धवपुष्प), मेथी, अनन्तमल (जंगली पिकवन), मूत्र (वृष का), आर्द्रक और बदरी प्रभृति ।

अतिसार में प्रयुक्त डॉक्टरी औषध

अकनागत, (वृषपित्त) अर्जेण्टाइ नाइट्रास, अर्जेण्टाइ क्लोराइडम्, आर्सेनिक (संखिया), ऑइल टेरेबिन्थीनी (निर्गंध तैल), एरिका (सुपारी), आल्सटोनिया (सप्तपर्ण), युवी अर्साई (रीछ दाख), इयेष्ट (सुराबीज), इपिकेक्वाना, ईसबगोल, एसिड नाइट्रिक (शोरकाम्ल), इन्फ्युजम लाइनाई (अतसी फांट); एकोरस (बच), एलम (फिटकरी), अकेशिया (कीकर), ओपियम् (अफीम), एसिड सल्फ्युरिक डिल (जलमिश्रितगंधकाम्ल), अकेशिया कैटेचू (खदिर), क्युप्राई अमोनिया सल्फास, कलम्बा, कार्बोनिक एसिड (कज्जलाम्ल), क्लोरोफॉर्म (संमोहिनी), केम्फर (कपूर), केनाबिस इण्डिका (भंग), कैल्सियम कार्बोनास, कैल्सियम हाइपोफॉस्फॉस, कैलाट्रॉपिस, काफी, कैप्सिकम् (लाल मिर्च), कैटाक्यु (खदिर), कैसकेरिल्ला, कुर्चि (कुटज त्वक्), क्रियोज़ोट, क्युप्राई सलफास (ताम्र गंधिद) कस्पेरिया, कैस्टर ऑइल (एरण्ड तैल), काइनो (विजयसारनिर्यास), क्वासिया, कोयक्रॅस, गाब, गैलिक एसिड (माज्वाम्ल), डिकक्ट ग्रेनेटा, ज़िन्साइ सलफास, ज़िन्साई आक्साइडम्, टैनिक एसिड (कषायिनाम्ल), नाइट्रो हाइड्रोक्लोरिक एसिड, नक्सवामिका (कुचिला), पोटास सल्फ्युरेटा, प्लम्बाई एसिटास, पलास गोंद, माइरिष्टिस, मैटिको, फेरम (लौह), विस्मथम एल्बम, विस्मथाई टैनास, बाबुई तुलसी, वेल, रक्तशोधक, रथाटनि, लाइकर फेरि पर नाइट्रिस, लाइकर फेरि पर क्लोराइड, लाइकर हाइड्रार्ज, विट्रिरम विरिडि, सैलिसिलेट, सिमा रियुबा, सल्फ्युरिक एसिड, सयमाइडि, सोडियाई क्लोराइडम् (सैंधव), सल्फर (गंधक), सैलोल, हाइड्रार्ज कोरोसिव सब्लिमेट और हिमेटिक सिल्लाइ ।

(बालातीसार में)—अर्जेण्टाई नाइट्रास इपिकाक्वाना, एसिड सल्फ्युरिक डिल, ओपियम् (अहिफेन), कलम्बा, कॉफी, केम्फर (कपूर), क्युप्राई सलफास, कस्पेरिया, करोसिव सब्लिमेट, जिन्साइ ऑक्साइडम्, नाइट्रिकएसिड डाइल्युटेड, पेप्सीन, प्लम्बाई एसिटास, साष्टिक, बिस्मथाई कार्ब, टिंकचर केनाबिस इण्डिका, म्युबार्ब, लाइकर हाइड्रार्ज, लाइकर कैल्सियस, लाइकर फेरिपर नाइट्रिस, सैलोल, हाइड्रार्ज कम क्रीटा, हाइड्रार्ज करोसिव सब्लिमेट ।

नोट—अतिसारोक्त योगों का वर्णन क्रमागत इसके भेदों की चिकित्सा लिखते समय किया जाएगा ।

अतिसार नाशक शास्त्रीय योग

नेत्रवाला, अदरख, नागरमोथा, पित्तपापड़ा और खस इन्हें पकाकर वस्त्र से छानकर पिलाएँ, क्षुधा लगने पर नियत समय पर लाजामण्ड दें ।

शालपर्णी, पृष्टपर्णी, बड़ी कटेरी, छोटी कटेरी, खिरेंटी, गोखरू, पाठा, सोंठ, धनिया इन्हें भोजन के साथ क्वाथ कर देने से अतिसार शांत होता है । शालपर्णी, खिरेंटी, वेलगिरी, पृष्टपर्णी इनसे सिद्ध की हुई पेया नीबू तथा अनार का रस डाल कर पीने से कफ और पित्तातिसार दूर होता है । आमातिसार से पीड़ित रोगी को प्रथम संग्राही तथा कब्ज़ करने वाली कोई भी औषध कदापि न दें, क्योंकि ऐसा करने से आदि में ही दोष बध्य हो जाने से शोथ, पांडु, प्लीहविवर्द्धन, कुष्ट, गुल्म, उदरशूल,ज्वर, दण्डक,अलसक, आध्मान, अर्श, संग्रहणी इत्यादि रोग पैदा हो जाते हैं । जिनका दोष वृद्धि होकर बल, धातु अधिक

क्षीण हो गए हों तथा आम भी जाता हो तो उसे क्रमशः स्तम्भित कर देना उचित है। जिस रोगी को थोड़ा थोड़ा बँधा हुआ शूल सहित दस्त आते हों ऐसे रोगी को हड़ और पिप्पली की चटनी द्वारा लघु विरेचन देना चाहिए। चक्र द० अ तै० चि० ।

अतिसारकी ati-sáraki–सं० त्रि० } -हिं त्रि०
अतिसारी ati-sári } अतिसार
रोगी (Dysenteric, afflicted with dysentery; Cathartic) वै० श० ।

अतिसारकुठारः atisárakuthárah–सं० पुं० बड़ी इलायची, बच्छनाग, धतूर के बीज, सुहागा, इन्द्रजौ, जीरा, सोंठ, अहिफेन, नागभस्म, धव-पुष्प, अतीस, करञ्ज के बीज प्रत्येक समान भाग चूर्णकर धतूर के पत्र के रस में घोटकर सुखाकर चूर्ण कर लें । मात्रा–१-३ रत्ती। अनुपान शहद। यह शिवजी का कहा योग है। वा० ।

अतिसारघ्नः ati-sáraghnah–सं० पुं० खेत पापड़ा, खेतपापड़ा, दवन पापड़ा–हिं० । खेत-पर्पटक–सं० । (Oldenlandia biflora, *Roxb.*) वै० श० ।

अतिसारघ्नी ati-sáraghni–सं० स्त्री० अति-सार नाशक औषध, **अतीस** (Aconitum heterophyllum, *Wall.*) वै० निघ० ।

अतिसार दलनोरसः atisáradalano-ra-sah–सं० पुं०

(१) पारा, गंधक, बच्छनाग प्रत्येक समान भाग ले चित्रक के क्वाथ के साथ पीसें, फिर इसे कौड़ियों के भीतर भरें। उन कौड़ियों के मुखों को पिसे हुए भिलावों की लुगदी से बन्द करके हाँडी में रख उसका मुख बन्द कर दें और दस बारह जंगली कंडों में पकाएँ। इसी तरह तीन पुट देने से सिद्ध होता है। मात्रा--३ रत्ती। गुण--अतिसार, संग्रहणी, शूल और मन्दाग्नि को नष्ट करता है। अनुपान--भाँग और जीरा। र० यो० सा० ।

(२) तूतिया, पारा, बच्छनाग, गंधक, शंखभस्म, अभ्रकभस्म, अफीम और धतूरबीज प्रत्येक समान भाग लें। फिर भाँग के रस और समुद्रशोष से पृथक पृथक सात सात भावना दें। मात्रा-१ रत्ती। गुण-सम्पूर्ण अतिसारों को दूर करता है। रसायन सं० अतिसाराधिकारे।

अतिसारनृसिंह रसः atisára-nrisinha-rasah--सं० पुं० शुद्ध अहिफेन २ तो०, शुद्ध पारद १ तो०, शुद्ध गंधक १ तो०, प्रथम पारद, गंधक की कज्जली कर पुनः अहिफेन मिलित कर भंग के रस में मर्दन करें। इसी तरह धत्तूर के रस में मर्दन कर १ रत्ती प्रमाण गोलियाँ बनाएँ। इसे जायफल के साथ देने से घोर अतिसार दूर होता है। वृ० रस० रा० सु० ।

अतिसार भेषजम् atisára-bheshajam --सं० क्ली० (१) लोध--हिं० । लोध्र--सं० । (Symplocos racemosa) । (२) तद्रोगनिवारक औषध ; अतिसारघ्न, अतिसार नाशक औषध। (Antidysenteric).

अतिसार भैरवीवटी atisára-bhairaví-vatí–सं० स्त्री० जावित्री, लवंग, सोंठ, शीतलचीनी, चन्दन, केशर, पीपल, अकरकरा प्रत्येक समान भाग, लें, फिर चूर्ण कर पुनः पारा भस्म, अहिफेन जावित्री के बराबर मिला कर १ प्रहर तक खरल कर ३ रत्ती प्रमाण की गोलियाँ बनाएँ। अनुपान-- चावल का पानी। गुण--यह सम्पूर्ण अतिसारों को नष्ट करती है। र० प्र० सु० अतिसारे।

अतिसारवारणरसः ati-sára-várana-rasah –सं० पुं० अतिसार में प्रयुक्त होने वाला रस। सिंगरफ, पक्क रस कपूर, नागरमोथा, इंद्रयव इनको तुल्य भाग लेकर कच्ची अफीम के पानी की ७ भावना दें। इसको यथायोग्य अनुपान और उचित मात्रानुसार सेवन करने से हर प्रकार के अतिसार नष्ट होते हैं। र० सा० सं० अति० चि० । भैष० ।

अतिसार विदारणम् atisára-vidáranam –सं० पुं० जायफल, धत्तूर बीज, सोंठ, अतीस,

बच्छनाग, आम की गुठली, धव पुष्प, अफीम, भाँग प्रत्येक समान भाग ले चूर्ण कर गिलोय के स्वरस में घोटकर १ रत्ती प्रमाण की गोलियाँ बनाएँ। गुण—इसके सेवन से सम्पूर्ण अतिसार क्षणमात्रमें दूर होजाते हैं। र० यो० सा०।

अतिसार सेतुः atisára-setuh-सं० पुं० सिंगरफ, लवङ्ग, राल, मिश्री, ताम्रभस्म, अहिफेन प्रत्येक समभाग लेकर चूर्ण करें। इसे चावल के धोवन से सेवन करने से सभी प्रकार के साध्य असाध्य अतिसार दूर होते हैं। मात्रा—१-२ रत्ती। रस० यो० सा०।

अतिसार हरो रसः atisára-haro-rasah -सं० पुं० (१) पारा, गंधक, अभ्रक भस्म, हरताल, सुहागा, सिंगरफ और बच्छनाग प्रत्येकको तुल्य भाग लेकर चूर्ण करें। पुनः धत्तूर के पत्र के रस से सात दिन तक अच्छी तरह घोटें। फिर रत्ती प्रमाण की गोलियाँ प्रस्तुत कर रख लें। मात्रा—१ रत्ती, भाँग के चूर्ण और शहद के साथ खाने से ज्वर और अतिसार नष्ट होते हैं। रस० यो० सा०।

राल, मोचरस, अफीम, मोतितिलिया, अतीस, सोंठ इनको समान भाग लेकर चूर्ण बनाएँ। इसको उचित मात्रा के साथ खाने से अतिसार नष्ट होता है। र० प्र० सु० अ० ८।

अतिसारान्तको रसः atisárántakorasah -सं० पुं० स्वर्णवटित रससिंदूर, रसकपूर से निकाला पारा और स्वर्ण भस्म वटित पर्पटी इन सब को बारीक घोट कर रक्खें। मात्रा—१ रत्ती। गुण—यह मृत्यु जैसे भयानक अतिसार को दूर करता है। रस० यो० सा०।

अतिसारेभ सिंहो रसः atisárebha-sinho-rasah-सं० पुं० शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, अहिफेन प्रत्येक समान भाग और पारेका ¼ भा० जायफल मिलाकर भाँग और धतूरे के रस की पृथक पृथक भावना दें। मात्रा—१ रत्ती। यह अतिसार रूपी हाथी के लिए सिंह है। रस० यो० सा०।

अतिसारस्या ati-sárasyá सं० स्त्री० रास्ना (Vanda Roxburghii) वै० निघ०।

अतिसूक्ष्मः ati-súkshmah-सं० त्रि० अत्यन्त सूक्ष्म, अतिशय सूक्ष्म, बहुत छोटा (very subtle).

अतिसेवनम् ati-sevanam-सं० क्ली० किसी वस्तु का अधिक मात्रा में सेवन, अधिक उपयोग में लाना।

अतिसौम्या ati-soumyá-सं० स्त्री० यष्टिमधुलता, मुलेठी की बेल ((Glycyrrhiza glabra) रा० नि० व० ६।

अतिसौरभः ati.sourabhah-सं०पुं० आम्रवृक्ष आम का पेड़। (Mangifera Indica). भा० पू० फ० व०।

अतिस्कंधा ati-skandhá-सं० स्त्री० रक्त कुलत्थी, लाल कुलथी-हिं०। रक्त कुलत्थक-सं०। (Dolichos biflorus.) वै० निघ०।

अतिस्तम्भित् ati-stambhit-हिं० अत्यन्त रुका हुआ।

अतिस्थूल atisthúla-हिं० वि० [सं०] बहुत मोटा संज्ञा पुं० [सं०] मेद रोग का एक भेद जिस में चरबी के बढ़ने से शरीर अत्यन्त मोटा हो जाता है।

अतिस्थूल वर्त्मा ati-sthúla.vartmá-सं० पुं० (Foul ulcer) दुष्टव्रण-विशेष, दूषित व्रण। च०।

अतिस्निग्धः ati-snigdhah-सं० त्रि० अत्यंत स्निग्ध, बहुत चिकना।

लक्षण—मुख द्वारा श्लेष्म स्राव का होना, शिर का भारीपन और इन्द्रियविभ्रम ये अति स्निग्धता के लक्षण हैं। इसके निवारण हेतु रूक्ष प्रक्रिया ग्रहण करनी चाहिए। वै० निघ० नस्य चि०।

अतिस्रवा ati-sravá-सं० स्त्री० मयूरवल्ली। मुरवा-बं०। वै० निघ०।

अतिस्वेदः ati-svedah-सं० पुं० (१) अति पसीना देना, अति स्वेदस्राव कराना। वा० सू० अ० १७। (२) बहुत पसीना आना।

अतिक्षिप्त संधिः ati-kshipta-sandhih -सं० पु० (Complete dislocation) संधि का सर्वथा भिन्न हो जाना, अत्यन्त संधि-च्युति, जिसमें संधि और अस्थि दोनों हट जाएँ। इसमें दोनों संधियों और अस्थियों में अन्तराय हो जाता है और पीड़ा होती है। सु० नि० १५ अ०। "अतिक्षिप्ते द्वयोः संध्यस्थनोरतिक्रांतता वेदना च"। ८। देखो— भग्नः।

अतीक् aatíq-अ० (१) पुरातन, प्राचीन, पुराना-हिं०। देरीनह्, कुहनह्, पुराना-फ़ा०। (२) पुरातन वस्त्र। (३) छोहारा भेद। (४) जल। (५) सुवर्ण। (६) मद्य। (७) दुग्ध।

अतीत् atít-अ० (१) क्षुधा। (२) आटोप, गुड़गुड़ाहट (क़राक़र) । गर्गलिङ्ग Gurgling-इं०। म० ज०।

अतीन्द्रिय atíndriya-हिं० वि० [सं०] जो इंद्रिय ज्ञान के बाहर हो। जिसका अनुभव इंद्रियों द्वारा न हो। अगोचर। अप्रत्यक्ष। अव्यक्त।

अतीस atísa-हिं० संज्ञा पु० [सं०] अति-विषा, अतिवृक, आतइप। एकोनाइटम् हेटरोफाइलम् Aconitum Heterophyllum, *Woll.*-(Root of—); ए० कॉर्डेटम् (A. Cordatum)-ले०। इंडियन अतीस (Indian Atees)-इं०।

संस्कृत पर्य्याय—घुणवल्लभा (भा०), शृङ्गिका (शब्द र०), विश्वा, विषा, प्रतिविषा, उपविषा, अरुणा, शृङ्गी, महौषधं (अ०), काश्मीरा, श्वेता (र०), प्रविषा (के), श्वेतकन्दा, भङ्गा, भङ्गुरा, विरूपा, श्यामकन्दा, विषरूपा, वीरा, माद्री, श्वेतवचा, अमृता, अतिविषा, अतिविषः, शुक्लकन्दा, शृङ्गीका, भृङ्गी, मृद्री, शिशु भैषज्य, अतिसारघ्नी, घुणप्रिया, शौकापहा, अरवीका। (विलायती) वज्जे-तुर्की-द० । आतइच्-बं० । वज्जे-तुर्की फ़ा०। (शीमै) अतिवडयम्-ता०। (सीम) अतिवस (चेट्टु), अतिवासा-ते०, तै०। अतिविष-मह०। अतिवख (विष) नी-कली, अतिवस, अतिवख, अतिविष-गु०। आंगे-सफेद, मोहन्देगज सफेद -काश०। आइस-मोंटि०। सूखी हरी, चिति जड़ी, पत्रीस, पतीस, बांगा-पं०। अतीविषा -क०।

वत्सनाभ वर्ग

(N. O. Ranunculaceæ.)

उत्पत्ति-स्थान – एक पौधा जो हिमालय के किनारे सिंध से लेकर कुमाऊँ तक समुद्र-तट से ६,००० से लेकर १५,००० फ़ीट की ऊँचाई पर पाया जाता है।

नाम विवरण—"श्वेतकन्दा", "भंगुरा", "घुणवल्लभा" आदि परिचय ज्ञापिका संज्ञाएँ और "अतिसारघ्नी" और "शिशुभैषज्यम्" प्रभृति गुणप्रकाशिका संज्ञाएँ हैं।

वानस्पतिक वर्णन—अतीस के क्षुप हिमालय के ऊँचे भागों पर उत्पन्न होते हैं। इसके पत्ते नागदौन पत्र के समान किन्तु चौड़ाई में उससे किञ्चित् छोटे होते हैं। शाखाएँ चिपटी होती हैं और पत्रवृन्त मूल से पुष्पदण्ड निकलते हैं। पुष्पदण्ड (पुष्पदण्ड की व्याख्या के लिए देखो—"आरग्बध") पत्रवृन्तसे दीर्घतर होते हैं। प्रस्फुटित पुष्प देखने में टोपी की तरह दीख पड़ते हैं। ईषद्दीर्घ कंद के गात्र से मूल निकलता है। यह मूल अतीस (अतिविषा) नाम से विख्यात है। यह ओषधि धूसर और श्वेत दो भागों में विभक्त होती है। धूसर लहरदार कंद जो श्वेत की अपेक्षा बड़े और लम्बे होते हैं, प्रधान मूल हैं और प्रायः पृथक कर कम दाम पर बेचे जाते हैं। तज्जन्य लघु कंद बाहर से धूसर वर्ण के और शाखकों के सूक्ष्म चिह्नों से व्याप्त होते हैं। ये $\frac{3}{4}$ से २ इंच लम्बे, शंक्वाकार या लगभग अण्डाकार, पतले मूसलाकार छोरयुक्त, जो कभी कभी दो या दो में विभक्त होने की प्रवृत्तियुक्त होते हैं। सिरे पर छिलकायुक्त पत्राङ्कुर होता है। तोड़ने पर भीतर श्वेतसार के सफेद कण दिखाई देते हैं। यह स्वाद में अतितिक्त और गंधरहित होता है।

राजनिघण्टुकार के मत से अतीस (अतिविषा) तीन प्रकार का है। जैसे, "त्रिविधातिविषा ज्ञेया शुक्लकृष्णारुणातथा।" अर्थात् अतीस शुक्ल, कृष्ण तथा अरुण भेद से तीन प्रकार का होता है। तीनों रस, वीर्य और विपाकमें समान होते हैं। परन्तु इनमें श्वेत जाति का उत्तम होता है। मदनपाल के मत से यह चार प्रकार का है। जैसे, "श्यामकंदाचातिविषा सा विज्ञेया चतुर्विधा। रक्ता श्वेता भृशंकृष्णा पीतवर्णा तथैव च॥" अर्थात् रक्त, श्वेत, अत्यन्त कृष्ण और पीतवर्ण भेद से यह चार प्रकार का है। इनमें यथापूर्व अर्थात् क्रमशः पीत से कृष्ण और कृष्ण से श्वेत आदि गुणमें उत्तम और श्रेष्ठ होता है।

मख़ज़नुल् अद्वियह् में इसके तीन भेदों का वर्णन है अर्थात् अतीस, प्रतिभिका और और श्यामकंद। मुहीतआज़म में केवल इसके दो ही भेद माने हैं। यथा—श्याम और श्वेत।

रासायनिक संगठन—अतीसीन (Atisine) नामक स्वारहित एक अत्यन्त तिक्त क्षारीय सत्व (यह निर्विषैल है), वत्सनाभाम्ल (Aconitic acid), कषायीन या कषायिनाम्ल(Tannic acid), पेक्टस सब्सटैंस (Pectous substance), बहुसंख्यक श्वेतसार, वसा तथा ऑलीइक,पामिटिक, स्टियरिक, ग्लिसराइड्स, वानस्पतिक लुआब, इक्षु शर्करा और (भस्मके मिश्रण २ प्रतिशत तक होते हैं।

मेटीरिया मेडिका ऑफ़ इण्डिया–आर० एन० खोरी भाग २, पृष्ठ ३)।

प्रयोगांश—कन्द।

औषध-निर्माण—(१) चूर्ण; मात्रा–५ रत्ती से ३॥ मा० तक।

ज्वर प्रतिषेधक रूप से–१ से २ ड्राम (२॥ ड्राम पर्यन्त यह निरापद होता है)।

बल्य रूप से–१० से ३० ग्रेन (५ से १५ रत्ती) इस मात्रा में इसका ज्वरघ्न प्रभाव अत्यन्त निर्बल होता है।

ज्वरघ्नरूप से–४० ग्रेन से १॥ ड्राम तक।

कृमिघ्न रूप से–

(२) टिंक्चर–(८ में १ भाग);
मात्रा–१० से ३० बुंद।

(३) कंद का क्वाथ।

वे युरूपीय औषध जिनका यह प्रतिनिधि हो सकता है। ज्वर प्रतिषेधक रूपसे–सिंकोना के क्षारीय सत्व (क्षारोद) यथा क्वीनीन प्रभृति।

ज्वरघ्न रूप से—पल्विस जेकोबाइ वेरा, पल्विस एण्टिमोनियम् (अंजन चूर्ण), लाइकर एमोनियाई एसीटास।

बल्य रूप से—जेंशन और कैलंबा।

इतिहास—अतिविषा नाम से अतीस का ज्ञान आज का नहीं, प्रत्युत अति प्राचीन है। अतः आयुर्वेद के प्राचीन से प्राचीन ग्रंथ यथा चरक, सुश्रुत तथा वाग्भट्टादि में इसका पर्याप्त वर्णन आया है। यही नहीं बल्कि विभिन्न रोगों पर इसके लाभदायक उपयोग की उन्होंने भूरि भूरि प्रशंसा की है जैसा कि आगे के वर्णनों से विदित होगा।

फिर डिमक महोदय तथा उनके पादानुसरणशील एवं आयुर्वेद शास्त्र से सम्यक् अपरिचित चोपरा महोदय के ये वचन "The earliest notices of Ativisha are to be found in Hindu works on Materia Medica, Sarangadhara and Chakradatta." जिसका यह अर्थ होता है कि शार्ङ्गधर तथा चक्रदत्त से पूर्व के आयुर्वेदिक ग्रन्थों में अतिविषा का उल्लेख नहीं है; कहाँ तक सत्य है, इसका पाठक स्वयं निर्णय कर सकते हैं।

आयुर्वेद के अति प्राचीनतम ग्रन्थों में तो इसका उल्लेख है ही जिसके लिए हमें किसी प्रकार के प्रमाण की आवश्यकता नहीं; यह तो सूर्य प्रकाशवत् देदीप्यमान एवं स्वयं सिद्ध है। हाँ! अरबी तथा फ़ारसी ग्रन्थों में इसका बहुत संक्षिप्त वर्णन आया है और यह स्पष्ट रूप से

ज्ञात होता है कि उन्होंने इसके वर्णन में आयुर्वेद कर्त्ताओं का ही अनुकरण किया है।

इन सबके पश्चात् पाश्चात्य लेखकों ने अपने ग्रन्थों में इसका उल्लेख किया।

प्रभाव तथा उपयोग

आयुर्वेदीय मतानुसार

अतीस, दीपन, पाचन, संग्राहक और सर्वदोष नाशक है। च० सू० २५ अ०।

अतीस कटु, उष्ण, तिक्त तथा कफ, पित्त और ज्वर नाशक, आमातिसार, कास, विष, एवं छर्दिनाशक है। रा० नि० व० ६। रा० सु० ३५ अ० वचादि० । धन्वं० नि०।

अतीस, सर्व दोषनाशक, शोथघ्न (लेपात्), श्लैष्मिक रोगनाशक (२० प्रकार के श्लेष्म रोग का नाशक) और रसायन है। मद० व० १।

अतीस गरम, कटु, तिक्त, पाचन और दीपन कर्त्ता है। जीर्णज्वर, अतिसार, आमवात, विष, खाँसी वमन और कृमि रोग को दूर करता है। भा०।

अतीस, पाचन, तिक्त, ग्राही और दीपनाशक है। राजवल्लभः।

अतिविषा तथा कटुकी प्रभृति की उष्ण गोमय जल द्वारा शुद्धि होती है। सा० कौ०।

शिशु के कास, ज्वर तथा वमन प्रतीकारार्थ उपयुक्त मात्रा में अतीस का चूर्ण मधु के साथ सेवन कराना चाहिए। वंग० जी० सं० ८१६ पृ०।

वैद्यकीय व्यवहार

(१) आमातीसार—

"दद्यात् सातिविषां पेयां सामे साम्लां रुनागराम् (च० सू० २ अ०)।"

अतीस १ तोला, सोंठ १ तो०, इनको ६२ जल में सिद्ध करें। जब ६१ जल शेष रहे तब इसे लवण से छौंक कर इसमें अभीष्ट वस्तु की पेया प्रस्तुत करें। इसमें किञ्चित् खट्टे अनार का रस योजित कर आमातीसारी को व्यवहार कराएँ

(२) कुक्ष्यामय—अंकोट की जड़ की छाल ३ भाग और अतीस १ भाग इसको तंडुलोदक (चावल के धोवन) में पीस कर पान करें। इससे ग्रहणी रोग शमन होता है।

वंग० जी० सं० १२१ पृष्ठः।

(३) "नागराति विषाभयाः"।

च० द० ज्वर० चि० पिप्पल्याद्यघृत।

वक्तव्य—चरक चिकित्सास्थान २५ अ० एवं सुश्रुत कल्पस्थान २य अध्याय में स्थावर विष का वर्णन आया है। चरकोक्त मूल विष एवम् सुश्रुत के मूल विष वा कन्द विष की नामावली में अतिविषा (अतीस) का उल्लेख दीख नहीं पड़ता। उपविष के मध्य इसका पाठ नहीं। सुश्रुत और चरक में जहाँ सम्पूर्ण विषों का उल्लेख आया है वहाँ वे इसके गुणों से सम्पूर्ण अपरिचित हैं। सुश्रुत के प्राचीन टीकाकार डल्लण मिश्र लिखते हैं—

"मूलादि विषानां यत्नपरैरपि ज्ञातुमशक्य त्वात्। तत्र तानि हिमवत् प्रदेशे किरात शवरादिभ्यो ज्ञेयानि।"

क० स्था० २ य० अ० टी०।

मदनपाल वर्ण भेद से इसका गुणांतर स्वीकार करते हैं। परन्तु, राजनिघंटुकार ऐसा नहीं करते।

सुश्रुत अतिसार चिकित्सा में और चक्रदत्त अतिसार, ज्वरातिसार, और ग्रहणी चिकित्सा में भिन्न भिन्न औषध के साथ अतीस का पुनः पुनः प्रयोग दिखाई पड़ता है। चरक और सुश्रुत के केवल जीर्णज्वर की चिकित्सा में अतीस का प्रयोग नहीं आया है। चरक के "कालिंगकं त्वामलकी सारिवातिविषा स्थिरा।" (चि० ३ अ०) पाठ में तथा सुश्रुतोक्त "पिप्पल्यतिविषा द्राक्षा।" (उ० ३९ अ०) पाठांतर्गत विषम ज्वरहर घृत में अन्यान्य बहुशः वस्तुओं के साथ अतीस व्यवहृत हुआ है। सुश्रुत एवं वाग्भट्ट में केवल ग्रहणी तथा कास चिकित्सा वा रसायनाधिकार में अतीस का व्यवहार नहीं दिखाई देता।

यूनानीमतानुसार—

प्रकृति—२ कक्षामें उष्ण और १ कक्षामें रूक्ष। स्वाद—किञ्चित् तिक्त। हानिकारक—आमाशय के लिए। क़ाबिज़ है। दर्पघ्न—सर्द व तर वस्तुएँ। मात्रा शर्बत—आधा से १ माशा तक। मुख्य प्रभाव— श्लेष्मघ्न और वायुलयकर्त्ता।

गुण, कर्म, प्रयोग—अतीस कामोद्दीपक, क्षुधावर्द्धक, ज्वर प्रतिषेधक, कफ तथा पित्तजन्य विकारों को नाश करनेवाला, अर्श, जलोदर तथा कफ वा पित्तजन्य वमन एवं अतीसार को दूर करता है। वायुको लय करता और श्लैष्मिक रोगों को लाभप्रद है। म० अ०। (निर्विषैल)

नव्यमत—अतीस, तिक्त, पाचक, वृष्य, बलकारक एवं ज्वरप्रतिषेधक है और ज्वर तथा उग्र प्रादाहिक-विकारादि-जन्य रोगावसान की दशा में दौर्बल्य दूर करने के लिए इसका व्यवहार होता है। कास, अजीर्ण और अग्निमांद्य में अतीस का उपयोग किया जाता है। इन सब रोगों के उपसर्ग रूपसे हुए अतिसार में इसे सुगन्ध, तिक्त एवं कषाय द्रव्यों यथा गुरुच, करंज और कुटज आदि के साथ एवं ज्वर प्रतिषेधक रूपसे मलेरिया ज्वरों (विषम ज्वरों) में इसका प्रयोग किया गया और इससे कुछ सफलता भी हुई; परन्तु क्वीनीन की अपेक्षा यह अत्यन्त निम्न श्रेणीका सिद्ध हुआ विडंग के साथ इसको सेवन करने से आंत्रस्थ कृमियाँ निर्गत होती हैं। (मेटीरिया मेडीका ऑफ इंडिया—२ य० खंड ३ पृ०)

मोहीदीन शरीफ़

प्रभाव—ज्वर प्रतिषेधक (परियाय ज्वर नाशक), ज्वरघ्न और बल्य। उपयोग--सविराम ज्वर तथा सामान्य स्वल्पविराम वा निरंतर ज्वर, कई तरह के अजीर्ण एवं नैर्बल्य में लाभदायक है।

श्वेत अथवा साधारण प्रकारका अतीस अत्यंत लाभप्रद परियायनिवारक (Antiperiodic) एवं ज्वरघ्न है; किन्तु इसके सर्वोत्तम एवं निश्चित प्रभाव के लिए इसको पूर्ण औषधीय मात्रा में उपयोग करना चाहिए जो स्वयं मेरे अनुभव के अनुसार १ से २ ड्राम तक है। २॥ ड्राम तक यह सर्वथा निरापद सिद्ध होता है। लघुतर मात्रा (२० से ४० ग्रेन) में यह उत्तम बल्य है। परन्तु, इससे इसका परियायनिवारक प्रभाव अत्यन्त न्यून होता है। (मेटिरिया मेडिका ऑफ़ मैड्रास १ म खंड पृ० ४)

आर० एन० चोपरा एम० ए० एम० डी०

पहाड़ी लोग इसको प्रभावशून्य रूपसे भली प्रकार जानते हैं एवं इसे शाक रूप से खाने के काम में लाते हैं। देशी औषध में यह मृदु एवं तिक्त बल्य रूप से व्यवहृत है। इस देश में इसको परियायनिवारक, कामोद्दीपक, कषाय एवं बल्य रूप से व्यवहार में लाते हैं।

(इंडिजिनस ड्रग्स ऑफ इंडिया)

अतीसारः atisárah—सं० पुं० (हिं० संज्ञा पुं०) देखो—अतिसार (Diarrhœa).

अतुकार्णी atukárṇi—सं० स्त्री० जमालगोटा (Croton polyandrum, *Roxb.*). देखो—दन्ती।

अतुतिन्लप atutinlap—मल० गृध्रणी, धूम्रपत्र, पत्रबङ्ग—सं०। गुधाटी, किरमरा—हिं०, गु०, द०, बं०। Aristolochia Bracteata—ले०। Birth-wort, worm-killer—इं०। इं० मे० मे०।

अतुनेटी atuneṭi ता० सोल—बं०। Æschynomene Aspera). पौकरान,-पौक ब्यु—बर०।

अतुलः atulah—सं० पुं० } (१) कफ
अतुल atula हिं० संज्ञा पुं० } श्लेष्म।

(phlegm)। (२)तिल का वृक्ष; तिलीका पेड़—हिं०। तिलः (कः)वृक्ष-सं०। (Sesamum orientale) श० च०।

अतुल्जन atuljan—प० बेबङ्ग, कचुम, कोखड़ी, गुगुल, बम्राड़—पं०। मर्सिनी अफ्रीकेना (Myrsine Africana, *Linn.*), म० बाइफेरिया (M. Bifaria, *Wall.*)

-लें० । बेब्रङ्ग; बाइ बड्ङ्ग-पं०, काश०, हिं० । गुवाइनी--सं० ङ्रां० । पहाड़ी चा, चूपा-उ० प० सू० ।

बिड़ङ्ग वर्ग

(*N. O. Myrsinaceæ*)

उत्पत्तिस्थान—यह एक छोटा क्षुप है । हिमालय, काश्मीर और माल्टरेञ्ज (लवणश्रेणी) से नैपाल तक ।

प्रभाव तथा उपयोग—इसका फल सशक्त रेचक तथा विशेष कर कद्दूदाना निःसारक माना जाता है । यह बेब्रङ्ग नाम से बिकता है और (Samara Ribes) की प्रतिनिधि स्वरूप उपयोग में आता है । स्टयुवर्ट ।

इस क्षुप से एक प्रकार का निर्यास प्राप्त होता है जो कष्टरज की एक उत्तम औषध है (वैत-फोर) । जलोदर एवं उदरशूल में यह कोष्ठ--मृदुकारी प्रभाव करता है । इं० मे० मे० ।

इसका लगातार प्रयोग मूत्र को अत्यन्त रञ्जित करता है । इं० मे० प्लां० ।

अतुहिनरश्मि atuhina-rashmi-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] the Sun सूर्य्य ।

आतूत āatúta-अ० तत्तू य (एक पक्षी है) । (A sort of bird.) लु० क० ।

अतून atúna-अज्ञात ।

आतूस āatúsa
उत्तास, मुअत्तिस् āuttása,-muāattis } -अ० क्षुत्कारक औषध, वह औषध जो छींक लाए । इसका (ब० व०) अतमात है । इर्हा-इन Irrhine-इं० । म० ज० ।

अतूसा atúsá-हिं० भोजपत्र । (Betula Bhojapatra) इं० हैं० गा० ।

अतृष्ण atrishna-हिं० वि० [सं०] तृष्णारहित । निःस्पृह । कामना हीन, निर्लोभ ।

अतृप्त atripta -हिं० वि० [सं०] [संज्ञा अतृप्ति] (१) जो तृप्त वा संतुष्ट न हो, जिसका मन न भरा हो । (२) भूखा ।

अतृप्तिः atriptih-सं० स्त्री० }
अतृप्ति atripti-हिं० संज्ञा स्त्री० } तृप्ति अ-भाव, अप-रितोष, तृप्त न होना । असंतोष, मन न भरने की अवस्था । वै० श० ।

अतेइच ateich-बं० अतीस (Aconitum Heterophyllum) इं० मे० मे० ।

अतेज ateja-हिं० वि० [सं०] (१) तेजरहित अंधकार युक्त, मंद, धुँधला ।

अतेजाः atejáh-सं० स्त्री० (Shade, Shadow) छाया । रा० नि० व० २१ ।

अतोय उदर atoya-udara-हिं० संज्ञा पुं० "सर्वत्वतोयमरुण मशोफकम् नाति भारिकम् ।" वा० नि० अ० १२ श्लो० ११ ।

लक्षण जलोदर को छोड़कर सब प्रकार के उदर रोगों में उदर का वर्ण लाल, सूजन रहित और गुरुता रहित होता है । नसों के जाल के समूह से झरोखे की तरह हो जाता है और सदा गुड़गुड़ गुड़गुड़ करता रहता है । वायु नाभि और अंत्र में विष्टब्धता उत्पन्न करके हृदय कटि, नाभि, गुदा और वंक्षण में वेदना करता हुआ अपने रूप को दिखाकर नष्ट हो जाता है तथा शब्द करता हुआ बाहर निकलता है । इसमे मल बद्धता और मूत्र की अल्पता हो जाती है । इसमें जठराग्नि अत्यन्त मन्द नहीं होती है, भोजन में इच्छा नहीं होती और मुख में विरसता उत्पन्न हो जाती है ।

अत्इमह atāimah--अ० (ब० व०) तआम (ए० व०), आहार, भोजन, खाना । डाइट्स Diets-इं० । म० ज० ।

अत्कः atkah-सं० पुं० अङ्ग, अवयव (An organ) उणा० ।

अत्कुमः atkumah-अ० अपामार्ग । (Achyranthes aspera, *Linn.*)

अत्डी atdi-ने० पित्तल, पीतल (Brass) ।

अत्तः attah-मल० जलौका, जोंक, जलायुका । (Hirudo medicinalis). इं० मे०मे० ।

अत्त atta-मल०, सिं० सीताफल, आत, शरीफ़ा । Custard apple (Anona squ-

amosa) । –हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० अति] अति । अधिकता । ज़्यादती ।

अत्तका attaká–मल० मुण्डी, गोरखमुण्डी, (Sphæranthus Indicus).

अत्ततामामिडी attatá-mámidí–ते० पुनर्नवा, सांठ (Boerhaavia diffusa) । इं० मे० मे० ।

अत्तन,-ना attan,-ná–सिं० धुस्तुर, श्वेत धतूरा, कनक, धतूरा । (Datura alba, *Linn.*) (White flowered Dhatura) स० फा० इं० । इं० मे० मे० ।

अत्तबग़ुल्हिंदी attabaghul-hindí–सिं० पाताल यन तामाल–सं० । अमरीका का जंगली तम्बाकू–हिं० । लोबीलिया Lobelia–ले० । म० अ० डॉ० २ भा०

अत्तबड़ attabara–बं० आसा०, बड़, कगांरी –खा० । (Ficus Elastica)

अत्तमीमी attamímí–अज्ञात ।

अत्तर्तीरुज़्ज़ाजी attartíruzzájí–अ० कृ० पांशु गंधेत्–सं० । पोटेसियम सल्फेट (Potassium sulphate)–इं० । म० अ० डॉ० २ भा० ।

अत्तलु attalu–ते० जलायुका, जलौका, जोंक । (Hirudo medicinalis) । इं० मे० मे० ।

अत्तार ãattára–अ० युनानी दवा बनाने और बेचने वाला, औषध विक्रेता, पनसारी । (A druggist) । –हिं० संज्ञा पुं०(२) गंधी, सुगन्धि वा इत्र बेचने वाला ।

अत्तास ãattása–अ० नाक छिकनी–हिं० । छवः (कः) (कृत)–सं० । Dregea volubilis. ।

अत्ति atti–ता०, मल०, कना० गूलर–हिं० । उदुम्बरफलम्–सं० । Ficus Glomerata, Roxb. (Fruit of–)–ले० । –हिं० संज्ञा पुं० [सं०] देखो—अत्त ।

अत्तिचर attier–क्षां० शरीफ़ा, सीताफल । Custard apple (Anona Squamosa) । इं० मे० मे० ।

अत्तिएवयृर attievayr–ता० गूलर की जड़ । फा० इं० ।

अत्तिए-वयूर-तन्निर attie-vayra-tannir –ता० कूल्पाल । गूलर का नीर-हिं० । फा०इं० ।

अत्तिक्कल्लु attik-kallu–ता० } गूलर का नीरा,
अत्तिकल्लु atti-kallu–ते० }
गुल्लर का नीर–हिं० । Toddy of Ficus Glomerata–ले० । स० फा० इं० ।

अत्तिका atti-ká–सिं० गूलर–हिं० । उदुम्बर –सं० । (Ficus Glomerata, Roxb.)

अत्ति-तिप्पिलि atti-tippili–ता०, मल० बड़ीपिप्ली, गज-पिप्पली-हिं० । गज-पिप्पली-सं० । Scindapsus (Pothos) Officinalis, Schott. (Berries of) स०फा० इं० । फा० इं० ।

अत्ति-पज़म् atti-pazham–ता० गूलर-हिं० । उदुम्बर फलम्–सं० । Ficus glomerata, Linn. (Fruit of–) । स० फा० इं० ।

अत्ति-पण्डु atti-pandu–ते० } गूलर–हिं० । (Ficus glomerata, Roxb.) स० फा० इं० । इं० मे० मे०
अत्ति-माणु atti-mánu–ते० }

अत्तिमीर-अलोन attimír-alon—मल० (Ficus excelsa, Vahl.) इसकी जड़ उपयोग में आती है । मेमो० ।

अत्ति-यालुम् atti-yálum–मल० गूलर –हिं० । (Ficus glomerata, Roxb.) स० फा० इं० ।

अत्ति-रा atti-rá–सिं० गूलर का नीर (Toddy of Ficus Glomerata) स०फा०इं० ।

अत्तिरिल्ल-पाल attirilla-pála–सिं० बालू

का साग, बालू की भाजी–द्० । (Gisekia Pharnacioides, Linn.) स०फा०इं० ।

अत्तिर्याक़ attiryáq–अ० विषघ्न, विषहर, प्रतिविष । (Antidote) । फा०इं० २ भा० ।

अत्ति-हण्णु atti-hannu-कना० गूलर (Ficus glomerata, Roxb.) स०फा०इं० ।

अत्तीर attier–फ्रें० सीताफल,शरीफ़ा (Anona squamosa) । इं० मे० मे० ।

अत्तुतुम्मट्टि attu-tummaṭṭí–ता० इन्द्रायन (Citrulus colocynthis) । इं० मे० मे० ।

अत्तेई atteí–ता० जलायुका, जोंक,जलौका–हिं० । (Hirudo medicinalis.) इं०मे मे० ।

अत्तोर attora–सिं० दाद मर्दन, चकवँड़, चक्रमर्द । (Cassia alata, *Linn.*) स० फा० इं० । -

अत्नः atnah–सं० पुं० सूर्य्य (The sun) वै० निघ० ।

अत्नु atnu–हिं० पुं० [सं०] The sun सूर्य्य ।

अत्बातून atbátúna–यु० एक प्रकार का मद्य जो द्राक्षारस, मधु तथा गरम ओषधियों द्वारा प्रस्तुत किया जाता है । लु० क० ।

अत्बान atbána--अ० (ब०व०), तिब्न् (ए०व०) घास,तृण (Grass) । स० फा० इं० ।

अत्बान् ãatbán–अ० कक्ष, कक्षतल, बगल --हिं० । पुग्ज़िल्ला Axillæ–लै० । आर्मपिट्स (Armpits)–इं० । म० ज० ।

अत्बूत atbúta--बर० रीठा, अरिष्ट ।

अत्म ãatma--अ० धुना हुआ ऊन । लु० क० ।

अत्मात atmáta--बर०
अत्मूत atmúta--बर०
} रीठा (Sapindus trifoliatus, *Linn.*)

अत्मोरह् atmorah--बं०
अत्मोरा atmora--बं०
} मरोड़ फली, आवर्तनी (Helicteres Isora) फा० इं० । इं० मे० मे० ।

अत्यः atyah--सं० पु० अश्व, घोड़ा (A horse) । वै० श० ।

अत्यग्निः atyagnih--सं० पुं० (१) क्षुधाधिक्य, भूख की अधिकता । च०द० अग्निमा० चि० । (२) भस्मक रोग विशेष । ऐसे रोगी को अत्यधिक क्षुधा प्रतीत होती है । देखो—भस्मकाग्निः । विज० र० ।

अत्यन्त कुसुमाकरः atyanta-kusumákarah--सं० पुं० कङ्गुनी वृक्ष, मालकांगुनी । (Celastrus paniculata, *Willd.*)

अत्यन्तपद्मा atyantá-padmá--सं० स्त्री० कमलिनी । (Nymphæa edulis, *D. C.*) वै० नि० ।

अत्यन्त शोणितः atyanta-shoṇitah--सं० त्रि० (१) अतिरक्त, रक्ताधिक्य । –क्ली० (२) सुवर्णगैरिक । वै० निघ० ।

अत्यन्तसुकुमारः atyanta-sukumárh--सं० पु० (१) कंदली वृक्ष (Panicum italicum) । (२) कङ्गुणी मालकांगुनी (Celastrus paniculatus, *Willd.*) रा० नि० व० १६ ।

अत्यम्बुपानम् atyambu-pánam--सं० क्ली० अधिक जल पीना, परिमाण से ज़्यादा पानी पीना, इससे निम्न दोष होजाते हैं, यथा–अधिक जल पीने से तथा बिलकुल जल न पीने से अन्न का विपाक नहीं होता । इस लिए मनुष्य को पाचकाग्नि वर्द्धन हेतु थोड़ी थोड़ी देर में जल पीते रहना चाहिए । इति जलपान लक्षण । रा० नि० व० १४ ।

अत्यम्लः atyamlah--सं० पुं०
अत्यम्ल atyamla--हिं० संज्ञा पुं०

(१) अम्ली , इमली का पेड़ (Tamarindus Indicus) तेंतुल--बं० । रा० नि०

च० ६ । (२) मातुलुंग । (३) वन मातुलुंग । (४) आम्रातक (Spondias mangifera) -त्रि० अत्यन्ताम्ल रसयुक्त ।

अत्यम्लदधिः atyamla-dadhih--सं० स्त्री० अत्यन्त खट्टा दही ।

लक्षण—जिस दही से दांत हर्षित होजाए, रोम हर्ष हो और कंठ आदि में दाह हो जाए उसे अत्यम्ल दधि कहते हैं ।

गुण—यह अग्नि प्रदीपक, रक्तविकार, वात तथा पित्त को अत्यन्त उत्पन्न करता और रोगकारक है । वृ० नि० र० ।

अत्यम्लपर्णी atyamla parní--सं० स्त्री० (१) लताशूरण, सूरन । वल्लिशूरण लताविशेष । कड़वड़वेनि । हेग्गोलि । रा० नि० व० ३ । इसके पर्याय निम्न हैं, यथा—तीक्ष्णा, कण्डुरा, वल्लिशूरणः, करवड़वल्ली, वयस्था; अरण्यवासिनी । (२) अम्ललोणी । गुण—अत्यम्लपर्णी रस में अम्ल, तीक्ष्ण, प्लीहा रोग व शूलको नाश करने वाली, वात एवं हृदय के लिए लाभदायी, दीपक, रुचिकारक तथा गुल्म व श्लेष्म रोग को लाभदायी है । मात्रा ३ मा० । रा० नि० व० ३ । (३) रामचना वा खटुआ नाम की बेल

अत्यम्ला atyamlá--सं० स्त्री० जंगली बिजौरा नीबू-हिं० । मातुलुङ्गा वृक्ष, वन बीजपूरः--सं० । रा० नि० व० ११ । रत्ना० तिन्तिड़ी । श० र० ।

अत्ययः atyayah--सं० पुं० } १—नाश,
अत्यय atyaya-हिं० संज्ञा पुं० } ध्वंस, मृत्यु
२—अतिक्रमण । हद से बाहर जाना । ३—दोष । ४—कृच्छ्र, कष्ट । रत्ना० अने० व० । मे० यत्रिकं ।

अत्यर्कः atyarkah--सं० पुं० श्वेत मदारका वृक्ष -हिं० । शुक्लार्क वृक्षः --सं० । श्वेत आकन्द गाछ-बं० । Calotropis gigantea, R. Br. (the white var. of—) रा० नि० व० १० । देखो—आक ।

अत्याग atyága-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] ग्रहण । स्वीकार ।

अत्यानन्दा atyánandá-सं० स्त्री० कफजन्य योनिरोग विशेष । वैद्यक के अनुसार योनियों का एक भेद । वह योनि जो अत्यन्त मैथुन से भी सन्तुष्ट न हो । यह एक रोग है जिससे स्त्रियाँ वंध्या होजाती हैं । इसका दूसरा नाम रतिप्रीता भी है । भा० म० ख० ४ भा०, योनिरोग । 'अत्यानन्दा न सन्तोषं ग्राम्यधर्मेण विन्दति'

अत्यारक्ता atyáraktá-सं० स्त्री० जवा पुष्पवृक्ष -सं० । अड़हुल का पेड़-हिं० । (Hibiscus Rosa-Sinensis)

अत्यार्त्तवः atyártavah-सं० पुं० मात्रा से अधिक रजोस्राव । मेनोरेजिया Menorrhagia-इं० । बं० क० ।

अत्यालः atyálah-सं० पुं० रक्त चित्रक वृक्ष, लाल चीता का पेड़ । (Plumbago Rosea.) । रा० ।

अत्युग्रम् atyugram-सं० क्ली० हींग-हिं० । हिंगु-सं० । (Assafoetida) मद० व० २ ।

अत्युग्रगंधा atyugra-gandhá-सं० स्त्री० हिं० संज्ञा स्त्री० १ कृष्ण गोकर्णी (Sansevieria zeylanica) । २—कृष्णापराजिता । Clitorea Ternatea, (the black var. of—) । ३—अजमोदा (Apium involucratum.) । मद० व० २ ।

अत्युदीर्णा atyudírṇā-सं० स्त्री० दुष्ट व्रणभग विशेष । बहुत तीक्ष्ण, बड़े मुँह के शस्त्र से जो बहुत विस्तृत छेद हो जाए उसे "अत्युदीर्णा" कहते हैं । सु० शा० ८ अ० ।

अत्युष्णः atyushṇah-सं० पुं० (Very hot) अति गर्म, अत्यन्त उष्ण । सु० शा० ८ अ० श्लो० ४ ।

अत्यूहः atyúhah-सं० पुं० कालकण्ठपक्षी। दात्यूह। मे० हत्रिकं। See-Kálakanṭhah,-kah.

अत्यूहा atyúhá-सं०स्त्री०नीलशेफालिका-सं०। नील निर्गुण्डी-हिं०। नीलिका। मे०-हत्रिकं। (Vitex negundo).

अत्र atra-हिं० संज्ञा पुं० अस्त्र का अपभ्रंश।

अत्रकतूस atrakatúsa-यु० कड़, कुसुमबीज। (Carthamus tinctorius, *Linn.*) फा० इं०।

अत्रज atraja-फ़ा० निम्बुः। नीबू। (Citron) इं० हैं० गा०।

अत्रा.कुलबत्.न atráqul.batn-अ० पेट का मोड़। म० ज०।

अत्राग़ूलीदूस atrághúlídúsa-यु० शीरह्, जैसे—शीरह् नबात, शीरह् क़न्द। See-shírah। म० ज०।

अत्राफ़ atráfa-अ० हस्त व पाद। यह तर्फ़ का बहुवचन है जिसका अर्थ "ओर" या 'दिशा' है। इसका शब्दार्थ "किनारे" है। पर व्यवच्छेद शास्त्र की परिभाषा में इससे हस्त व पाद अभिप्रेत हैं। इसको हिन्दी में "शाखा" कहते हैं। एक्सट्रीमिटीज़ Extremities-इं०। म० ज०।

अत्राफ़ उल्या atráfa-áulyá-अ० उर्ध्व शाखाएँ; दोनों हाथों से अभिप्राय है। स्कन्धों से लेकर अङ्गुलियों पर्यन्त। अपर एक्सट्रीमिटीज़ Upper Extremeties इं०। म० ज०।

अत्राफ़ सुफ़्ला atráfa-suflá-अ० अधः शाखाएँ, निम्न शाखाएँ। लोअर एक्सट्रीमीटीज Lower Extremities-इं०।

अत्रिः atrih-सं०पुं० ऋषि विशेष (A Rishi)। सप्तर्षियों में से एक। ये ब्रह्मा के पुत्र माने जाते हैं। इनकी स्त्री अनसूया थी। दत्तात्रेय, दुर्वासा, और सोम इनके पुत्र थे। इनका नाम दस प्रजापतियों में भी है।

अत्रिगुण atriguṇa-हिं० वि [सं] त्रिगुणातीत। सत, रज, तम नामक तीनों गुणों से पृथक्।

अत्रिज atrija-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] अत्रि के पुत्र-(१) चंद्रमा, (२) दत्तात्रेय और (३) दुर्वासा।

अत्रिग्जातः atrigjátah-सं० पुं० चन्द्र। हे०।

अ(इ)त्रीफल atrífala-अ०क्रु० हिन्दी 'त्रिफला' से उक्त अरबी शब्द व्युत्पन्न है। त्रिफला से अभिप्राय हरड़, बहेड़ा और आमला आदि तीन फलों से है। अतः जिस मअ्जून में उपर्युक्त ओषधित्रय पड़ती हैं उसे "अ(इ)त्.रीफ़ल" कहते हैं।

अत्रीफ़ल की तैयारी में यद्यपि उन समस्त बातोंको ध्यानमें रखना चाहिए जिनका आगे मअ्जून के प्रकरण में वर्णन होगा, तो भी इसकी निर्माण विधि में उससे केवल इतना भेद है कि इसमें हरड़ बहेड़ा और आमला को बारीक कूट छानकर बादाम तैल अथवा गोघृत में मलकर चाशनी में मिलाते हैं। इससे इसकी शक्ति चिरस्थायी रहती है एवं चाशनी मृदु बनी रहती है। म० ज०। व्या० ३ भा०।

अत्रीलाल atrílál-बाज़ा०-ना० राजिले ग़ुराब, राजिले-ताइर-अ०। खिलाले-खलील-फ़ा०। फा० इं० भा० २। देखो—अात्.रीलाल।

अत्रुन atruna-बम्ब० (१) शेरवानी बूटी, खटाई, किङ्करू-प०। कॉडई-हिं०। इं० मे० मे०। Flacourtia sepiaria-ले०। सं० मा०। (२) सगवानी, अरस्तू Swallow wort, Prickly (Asclepias echinata). । इं० हैं० गा०।

अत्.रुग़िया atrúghiyá } ये शब्द "अट्रॉ-
अत्.रुफ़िया atrúfiyá } फिया" से अरबी बनाए गए हैं। आहार न मिलने के कारण शरीर का दुबला हो जाना, क्षय, क्षीणता, कृशता। अट्रोफी Atrophy-इं०। म० ज०।

अत्रूश atrúsha -अ० (ए० व०),
अत्रश atrasha अत्रारशह (ब० व०)
बधिर, बधिरता का रोगी, जो ऊँचा सुने। डेफ Deaf-इं०। म० ज०।

अत्रूशाउखूमरम् atrú-sháukhú-maram -ता० शावक, थागुक-सं०। झाऊ (Tamarix gallica, or Indica, *Linn.*) इं० मे० प्लां०।

अत्रेय atreya-हिं० संज्ञा पुं० दे० आत्रेय।

अत्रोग़ा atroghá-फ़ा० नींबू, तुरञ्ज। (Citron) इं० हैं० गा०।

अत्लियह् atliyah-अ० (ब० व०), तिलाs (ए० व०) मर्दन, मालिश, अभ्यङ्ग। म० ज०।

अत्वस atvas-मह० } अतीस (Aconitum heterophyllum,) लु० क०। रू० फा० इं०।
अत्वीका atvíká-इ०

अत्वीन atvín-पं० गिद्दड़ तम्बाकू, विंछुआ। (Heliotropium Europaeum) इं० मे० मे०।

अत्सी atsí-हिं० स्त्री० [सं० अतसी] तीसी-हिं०, उ०। लाइनम् Linum-ले०। म० अ० डॉ० २ भा०।

अत्हल athala-अ० धूसर वर्ण, धूसर वर्ण की चीज़। डस्टी Dusty-इं०। म० ज०।

अत्हलक़ athalaqa-अ० रेणुका बीज, (Vitex agnus costus) इं० मे० मे०।

अत्हानिक़्न athániqúna यु० उशक-अ०, फ़ा०, इं० बाज़ा०। (Dorema ammoniacum, *Don.*)-ले०। फा० इं० २ भा०।

अत्हा(था)रियून athá riyún-यु० दुरालभा -सं०। खारेबुज़, खारे शुतर-फ़ा०। (Alhagi camelorum, *Fisch.*) फा० इं० १ भा०।

अथर्वा atharvá-सं० पुं० एक ऋषि का नाम। अथर्ववेद के रचयिता।

अथर्वाणः atharváṇah-सं० पुं० (१) अहिंसक। (२) विद्वान। अथर्व०। सू० ३७। १। का० ४।

अथानीक़ून athánikúna यु० उशक, काँदर-फ़ा०, अ०, हिं०। कांदल-अफ़०। (Dorema ammoniacum, *Don.* & Fr.) फा० इं० २ भा०।

अथारियून athariyún यु० दुरालभा-सं०। ख़ारे-शुतुर-फ़ा०। (Alhagi camelorum, *Fisch.*) फा० इं० १ भा०।

अथिबला चेट्टु athi-balá-cheṭṭu-ता० महाबला-सं०। सहदेवी हिं०।

अदकर adakar-पं० } अदरख, आर्दी-हिं०।
अदका adaká
Fresh root of Green ginger (Zingiber officinalis, *Roxb.*) फा० इं०। देखा-आर्द्रक।

अदकुमणियम् adakumaṇiyam-मल० गोरखमुण्डी, मुण्डिका। (Sphaeranthus hirtus). इं० मे० मे०।

अदखन adakhana-यु० लूता, मकड़ी-हिं०। स्पाइडर Spider-इं०। लु० क०।

अदगी adagí-ता० अरहर, रहर-हिं०। (Pigeon Pea; Dal). इं० मे० मे०।

अदत्ता adattá-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] अविवाहिता कन्या (Unmarried girl).

अदनम् adanam-सं० क्ली० } भक्षण, खाना।
अदन adana-हिं० संज्ञा पुं०
(To eat.).

अदनागली adanágali-हिं० संज्ञा स्त्री० गुले-सुर्ख़, लाल गुलाब। (Damask rose) इं० हैं० गा०।

अदनातीस adanátísa यु० अनार की कली। (see-Anára) लु० क०।

अदनीय adaníya-हिं० त्रि० [सं०] भक्ष्य। खाने योग्य। (Eatable)

अदनूस adanúsa-यु० पहाड़ी सरो। लु० क०।

अदन् adan-अ० औक़िया। आउंस (An oz.) यह लगभग २॥ अथवा २। तो० के वजन का होता है। म० ज०।

अदन्त adanta--हिं० वि० } (१) दन्त
अदन्तः adantah--सं० त्रि० }
हीन, दन्त रहित (Toothless), बे दाँत का । जिसे दाँत न हो । (२) जिसके दाँत न निकला हो । बहुत थोड़ी अवस्थाका, दुधमुहाँ । (३) जिसने दाँत न तोड़ा हो । (चौपाया)

अदमनिः adamanih-सं० स्त्री० अग्नि । (Fire)

अदमसली adama-salí--आसा० बिल्ला--सिलह० । मेमा० ।

अदमिली āadamilí--अ० पुरातन स्थूल वस्तु । लु० क० ।

अदमुत्तहम्मुल् āadamuttahammul--अ० असहनशीलता, असंवेदनिकता । Intolerance -इं० । म० ज० ।

अदमुलतअ़ज़ौन् adamul-taāazoun--अ० नई ताक़त का उत्पन्न न होना । एप्लैप्सिया Aplapeia--इं० । म० ज० ।

अदमूल āadamúla-अ० मण्डूक, मेंढक । Frog (Rana Tigrina) लु० क० ।

अदम् āadam--अ० अस्ति, ऋण, अभाव, न होना । एब्सेन्स Absence-इं० । म० ज० ।

अदम्बेदी adambedí ता० मुड़-गुलि-मह० । केबे गिलु-कन० । (Indigofera enneaphylla, *Linn.*) फा० इं० १ भा० । ऐन्सली के मतानुसार उक्त पौधे का रस परिवर्तक, मूत्रल तथा एण्टिस्कॉर्ब्युटिक है ।

अदम्बु-वल्ली adambu-vallí-कना० दोपाती-लता, उतरन की बेल-हिं० । देखो—उतरन । छागल-खुरी-बं० । (Ipomæa Biloba, *Forsk.*) फा० इं० २ भा० ।

अदरक adarak-अ० आलूचह् । See-áluchah. । लु० क० ।

अदरक adarak हिं० संज्ञा पुं० }
अदरख adarakh-हिं०, उ० }
[सं० आर्द्रक, फ़ा० अदरक] आर्द्रक । The green ginger (Zingiber officinalis, *Roxb.*)

अदरकी adarakí-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० आर्द्रक] सोंठ और गुड़ मिलाकर बनाई हुई टिकिया । सोंठौरा ।

अदरख अवलेह adarakha-avaleh-हिं० पुं० देखो—आर्द्रक अवलेह ।

पुराना गुड़ ऽ। एक पाव, अदरख का रस ऽ१ एक सेर लेकर गुड़ मिलाकर पतली चाशनी करें, पुनः तज, पत्रज, नागकेशर, छोटी इलायची, लवङ्ग, सोंठ, कालीमिर्च, पीपर इन्हें टके टके भर लेकर महीन कूट कपड़ छानकर उक्त चाशनी में मिला रक्खें । मात्रा—१ माशा से १ तो० । गुण-इसके सेवन से श्वास, कास, मन्दाग्नि तथा अरुचि दूर होती है । अमृ० सा०यदमा०चि० ।

अदरना āadaraná-सोरि० कुन्दरु । लु० क० ।

अदरा adará-हिं० संज्ञा पुं० देखो—आर्द्रा ।

अदराफ़स adaráfas-यु० सूरजमुखी, सूर्य्यमुखी । (Helianthus Annuses.) ।

अदरारा adarárá } माज़रियूनका एक भेद है
अदरारु adaráru } जिसके पत्ते चौड़े होते हैं ।
लु० क० । See-Mazariyún

अदरूमाली adarúmálí-यु० वह मद्य जो वृष्टि-जल तथा शहद से बनता है । (A sort of wine prepared from rain-water & honey) । लु० क० ।

अदरूलीस adarú-lísa-रू० स्वेद, घर्म, पसीना । (Perspiration) लु० क० ।

अदर्मून adarmúna-अ० सूर्य्यमुखी, सूरजमुखी (Halianthus annuus, *Linn.*)

अदर्शक adarshaka-हिं० संज्ञा पुं० पदार्थस्थित गुण विशेष । यह पदार्थ का वह गुण है जिससे उनमें से कुछभी नही दीखता । इसे "अपारदर्शक वा अस्वच्छ भी" कहते हैं । ओपेक Opaque -इं० । अबैज़ हक़ीक़ी-अ० ।

अदर्शन adarshana-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) अविद्यमानता । असाक्षात् । (२) लोप विनाश ।

अदलः adalah-सं० पु०
अदल adala-हिं० संज्ञा पु० } (१) समुद्रफल हिं० । हिज्जलवृक्षः-सं० । (Barringtonia acutangula, *Gartn.*) श० च० ।
(२) घृत । Ghee (Clarified butter) ।
-हिं० वि० [सं०] (१) बिनादल या पत्ते का । पत्र विहीन । (२) पंखड़ी रहित दलशून्य ।

अदलसा adalasá-द०, हिं० वासा, अड़ूसा । (Adhatoda vasica.) ।

अदला adalá-सं स्त्री० घृत कुमारी, घीकुवार (Aloes Barbedensis) । रा० नि० ।

अदली adalí-हिं० वि० [सं० अदल] (१) बिना पत्ते का । (२) पंखड़ी रहित ।

अदवी āadaví-अ० बकरी का बच्चा । (A-kid) लु० क० ।

अदविका adaviká-गु० भूतांकुश । (An Indian plant).

अदस āadas-अ० मसूर । नस्क-फ़ा० । (Ervum lens, *Linn.*)

अदस āadas-अ० मसूर-हिं० । नस्क-फ़ा० । A sort of pulse or lentil (Ervum hirsutum) लु० क० । इं० मे० मे० ।

अदस जबली āadasa-jabalí-अ० श्वेत पुष्पीय बनफ़शा (Viola odorata). लु० क० ।

अदस नबती āadasa-nabatí-अ० (A plant like lentil) मसूर के सदृश एक पौधा है । लु० क० ।

अदसबर्री āadasa-barrí-अ० जंगली वा बन मसूर । (Wild lentil). लु० क० ।

अदसिय्यह् āadasiyyah-
अदसह् āadasah } -अ० (१) मसूरिका । प्लेग के प्रकार का मसूर सदृश एक दाना है जो मनुष्य शरीर पर निकल आता है और प्रायः घातक होता है । (२) आँख का पथरा जाना । (३) लालाटीय सुर्ख़बादह् रोग विशेष । (४) अर्वाचीन मिश्री हकीम चक्षु के स्फटिकवत् द्रव को भी अदसिय्यह् (मासूरिकीय) कहते हैं, जो आंग्ल शब्द लेन्स का ठीक पर्याय है । म० अ० ।

अदसुलमाअ āadasul-máa-अ० हंसराज अथवा काई भेद । (Adiantum venustum, *Don.* or a sort of moss).

अदसुलमुर्र āadasulmurr-अ० अप्रसिद्ध औषध । (An unimportant drug).

अदहन adahana-हिं० संज्ञा पु० [सं० आदहन=खूब जलाना] खौलता हुआ पानी । आग पर चढ़ा हुआ वह गरम पानी जिसमें दाल चावल आदि पकाते हैं ।

अदह्य adahya-हिं० संज्ञा पु० पदार्थस्थित गुण विशेष । यह पदार्थ का वह गुण है जिससे वे जल नहीं सकते अर्थात् "अज्वलनशील" पदार्थ । (Incombustible).

अदच्छिन adakshina-हिं० वि० [सं०] अकुशल, अनाड़ी ।

अदात adáta-अ शस्त्र, अस्त्र, कारीगरी । उद्वात (य० य०) । म० अ० ।

अदादा adádá-बर० माज़रियून भेद । अरख़ोस । लु० क० ।

अदानुद्दुब्ब adánuddubba-अ०
अदानुद्दुब्बअ adánul-dubbaāa-अ० } आरण्यतम्बाकू, बन तम्बाकू (Wild Tobacco, Mullein)-इं० । Verbascum Thapsus-ले० ।

अदाम āadáma-अ० (A kind of Date palm.) तरखजूर भेद । यह मदीना में होता है । लु० क० ।

अदामिल āadámila-अ० पुरातन स्थूल वस्तु । लु० क० ।

अदार āadára-अ० पृथ्वीपर चलने वाला प्राणी,

थलचर। (Moving on land, terrestrial). लु० क०।

अदारिका adáriká-सं० स्त्री० वृक्ष कमल, वृक्षोत्पल-सं०। उलट कम्बल-बं०। (Peterospermum aserifolium). वै० निघ०।

अदाहत adáhata-हिं० वि० [सं०] न जलाने वाला, जिसमें जलाने वा भस्म करने का गुण न हो जैसे, जल में।

अदिके adike-कना० सोंठ, शुंठि। (Dry ginger)- देखो—आर्द्रक।

अदित adita-हिं० संज्ञा पुं० दे० आदित्य।

अदितिः aditih-सं०स्त्री० A cow गवि, गाय। के०

अदील āadila-अ० पुरातन स्थूल वस्तु। लु० क०।

अदुतिन पालई adutin-pálai-ता० कीड़ामार, गंधाली-हिं०। फा०इं० ३ भा०। (Aristolochia bracteata, Retz.)

अदुमत्तदा adumattadá-कना० जंगली पिकवन, अन्तमूल-हिं०। देखो—अन्तमूल। (Tylophora Asthamatica). फा० इं० २ भा०।

अदुल adul-हिं० आंदुल, पुवान, पुपेङ्ग। मेमो०।

अदूनाः adúnáh-सं० बिना जले ही सूख जाना। अथर्व०। सू० ३१। ३। का० २।

अदृक् adrik-सं० त्रि० अंधा, अंध। (Blind). वै० श०।

अदृग् adrig-सं० पुं० घृत ghee (Clarified butter). उ०।

अदृढः adridhah -सं० त्रि० (१) अस्थिर। (Restless, Unsteady) । (२) -क्ली० तृणविशेष। (A kind of grass). वै० निघ०।

अदृढ़ adrirha-हिं० वि० [सं०] (१) जो दृढ़ न हो। कमजोर। (२) अस्थिर। चंचल।

अदृश्र adrishra-सं० अन्धा, अंध। (Blind)

अदृष्ट पुष्पवती adrishta-pushpa-vatí }
अदृष्टार्तवा adrishtártavá } -सं० स्त्री० (Unmenstruating woman) वह स्त्री जिसे आर्तव न आता हो। वह जिसका मासिकधर्म रुक गया हो। नष्टार्तवा। रजः शून्या।

अदृष्टम् adrishtam सं०क्ली० जो नेत्रमें ओझल हो। अथर्व०। सू० ३१। का०२।

अदृष्टहा adrishtahá वह कीट जो आँख से न दीखे, अणुवीक्ष्य। अथर्व०। सू० २३। ६। का०।

अदृष्टिः adrishtih-सं० पुं० }
अदृष्टि adrishti-हिं० संज्ञा पुं० } (१) अंधा, अंध (Blind)। (२) शिष्यों के तीन भेदों में से एक। मध्यम अधिकारी शिष्य।

अदेह adeha हिं० वि० [सं०] बिना शरीर का। संज्ञा पुं० कामदेव।

अदौरी adouri-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० ऋद्ध, पा० उर्द, हिं० उड़द+सं० वटी, हिं० बरी] केवल उर्द की सुखाई हुई बरी।

अद्‌ंशः adanshah-सं० पुं० महामूलक। बड़ मूला-बं०। See-mahámúlakah-

अदाँत adánta-हिं० वि० [सं० अदन्त] बिना दाँत का। जिसे दाँत न आए हों। (प्रायः पशुओं के सम्बन्ध में)।

अद्अज adāaj-अ० श्यामचक्षु, काले नेत्रवाला। ब्लैक आईड (Black eyed)-इं०। म० ज०।

अद्द āadd-अ० (१) गिनना, गणना करना (Count)। (२) उद्यत करना, तैयार करना (To make ready)। म०ज०।

अद्दन्दुस्सीनी addandussíní-अ० जमालगोटा (Croton seeds)। म० अ० डा० २ भा०।

अद्दीजतालुल्-फ़र्फ़ीरी addíjatálul-farfírí -अ० (Digitalis Folia) डिजिटेलिस। म० अ० डा० २ भा०।

अद्दुहनुअ्अ्नउल्अख्ज़र adduhnun-naānaāul-akhzar-अ० रौग़न नअ्नअ्

सब्ज़ फ़ु० । ताज़ा हरे पुदीना का उड़नशील तैल (Oleum menthae viridis). म० श्र० डॉ० २ भा० ।

अद्दुदत addúdat–श्र० रक्त कृमी सं० । कृमीदाना । (Cochineal). म० श्र० डॉ० २ भा० देखो–कोचोनील ।

अद्दुदतुस्सिब्ग़ addúdatussibgh—श्र० कृमीदाना । देखो-कोचोनील । (Cochineal). म० श्र० डॉ० २ भा० ।

अद्नाफ़ adnáf–श्र० कृश होना या कृश करना, मृतप्राय होना । म० ज० ।

अद्भुत बालक adbhuta-bálaka–हिं० संज्ञा पु० विलक्षण बालक । (Monster). कभी कभी जब दो शुक्राणुओं का एक डिम्ब से संयोग हो जाता है; तब ऐसे गर्भ से जो बच्चा उत्पन्न होता है उसके दो शरीर होते हैं जो आपस मेंजुड़े रहते हैं । इनको अद्भुत बालक कहते हैं । ये बालक बहुधा अधिक काल तक नहीं जिया करते ।

अद्भुतसारः adbhutasárah–सं० पु० खदिरसार, खैरसार । रा० नि० व० ८ । देखो–खदिर ।

अद्मह् admah–श्र० अधोचर्म, निम्न वा अधः त्वचा । कोरिअम (Corium), डर्मा (Derma)–इं० ।

नोट–त्वचा के स्थूल निम्न भागको 'अद्मह्' और पतले ऊर्ध्व परत को 'बशरह' कहते हैं । म० ज० ।

अद्मिय्यह् admiyyah–श्र० त्वगन्तर, त्वगधः । म० ज० ।

अद्य adya–सं० भोजन । (Food). -हिं० क्रि० वि० [सं०] अब । अभी । आज ।

अद्यतनः adyatanah–सं० त्रि० } अद्यभव ।
अद्यतन adyatana–हिं० वि० }
अद्यतनीय । आज के दिन का । वर्तमान ।

अद्यनिः adyanih–सं० पु० अग्नि । (Fire) उ० ।

अद्यम् adyam–सं० क्लो० धान्य । (Oryza sativa) देखो–धान्यम् ।

अद्यश्विना adyaṣuviná } -सं० स्त्री० आसन्न
अद्यश्वीना adyashviná }
प्रसवा गवि, हाल की ब्याई गाय । (Recently born cow).

अद्रकः adrakah–सं० पु० महानिम्ब वृक्ष, बकाइन । (Melia azedarach, *Linn.*) वै० निघ० ।

अद्रव adrava–हिं० वि० [सं०] जो द्रव वा पतला न हो । गाढ़ा, घना, ठोस ।

अद्रव्य adravya–हिं० संज्ञा पु० [सं०] सत्ताहीन पदार्थ । अवस्तु । असत् । शून्य । अभाव ।

अद्राम् adrám–श्र० दुग्ध दन्त का हिलना, जिससे वह गिर कर उनके स्थान में नवीन दंत उगें । म० ज० ।

अद्रिः adrih–सं० पु० (१) पर्व्वत (Mountain.) । २) शैलवृत(Hilly-tree). मे० रद्विकं । (३) परिमाण विशेष (A weight.)

अद्रिकर्णी adri-karní–सं० स्त्री० (१) अपराजिता (Clitorea ternatea, *Linn.*) (२) श्वेतापराजिता, विष्णुक्रान्ता । रा० नि० व० २३ ।

अद्रिका adriká–सं० स्त्री० (१) महानिम्ब (Melia azedarach) । (२) धान्यक, धनियाँ । (Coriandrum sativum, Linn.) भा० पू० १ गु० व० ।

अद्रिकी adrikí–कना० सोंठ, शुंठि । (Dry ginger). देखो–आर्द्रक ।

अद्रिछिद् adrichhid–हिं० संज्ञा पु० [सं०] वज्र । बिजली । (Lightning).

अद्रिजः adrijah–सं० त्रि० (१) गिरिजात । पर्वत से उत्पन्न ।-क्ली० (२) शिलाजतु, शिलाजीत । (Bitumen) र० मा० रत्ना० । (३) तुम्बुरुवृक्ष (Xanthoxylon alatum)-

रा० नि० व० ११। (४) गैरिक (See-Gairika).

अद्रिजतु adrijatu-सं० क्लो० शिलाजतु, शिलाजीत। (Bitumen) हेमा०। भा०।

अद्रिजा adrijá-सं० स्त्री० सिंहली पीपल-हिं०। सैंहल पिप्पली क्षुप-सं०। रा०नि०व० ६। See-Sainhali.

अद्रिभूः adribhúh-सं० स्त्री० आखुकर्णीलता-सं०। मूषाकानी, मूषाकर्णी-हिं०। (Salvinia cuculata)। रा० नि० व० ३। पार्व्वतीय लता (Hilly creepers)।

अद्रिमाषा adrimáshá-सं० स्त्री० वनमाष, वनउड़द, माषपर्णी। (Teramnus labialis) वै० निघ०।

अद्रिसानुजा adri-sánujá-सं० स्त्री० त्रायमाणा। वै० निघ०। See-Tráyamáná.

अद्रिसारः adrisárah-सं० पुं०
अद्रिसार adrisara-हिं०संज्ञा पुं० } (१) लौह, लोहा Iron (Ferrum)। रत्ना०। (२) शिलाजीत (Bitumen).

अद्रेष्कः,-ष्का adreshkah,-shká-सं० पुं०, स्त्री० बकाइन-हिं०। निम्ब भेद। पाहाड़ेनिम्-बं०। भैष० कुष्ठचि०। (Melia Azedarach.)

अद्रोक adrok-बं० आर्द्री,शृंगवेर। Zingiber officiualis, Roxb. (Fresh root of—Green ginger)। देखो-आर्द्रक।

अद्ल adla-अ० मणा के खुरण्ड का सूखकर गिर जाना। म० ज०।

अद्ल áadla-अ० न्याय, न्याय करना; समान करना, सादृश्य करना। म० ज०।

अद्वह् áadvah
तआदियह् taáadiyah } -अ०(१) संक्रमण,छूत लगना, किसी छूतदार रोग का एक दूसरे को लगना। (२) वह छूत अथवा विशेष कीटाणु (रोग सम्बन्धी) विष जिससे उक्त रोग उद्भूत हो। (Contagion, Infection) म० ज०।

अद्वा áadvá-अ० अस्ल मिश्र्दी। (१) बीमारी की छूत या लाग जो एक से दूसरे को लग जाए। (२) रोग का वह विष या व्याधि बीज अर्थात् छूत या लाग जो रोगाक्रांत प्राणि द्वारा स्वस्थ व्यक्ति को लगकर उसी रोग का प्रादुर्भाव करती है। (३) एक व्यक्ति की व्याधि का अन्य को लग जाना। (४) वह रोग जो एक से अन्य को लग जाए। कन्टेजियन् (contagion), इन्फेक्शन (Infection)-इं०। देखो-संक्रामक रोग वा बकटेरिया।

अद्वार advár-अ०(ब० व०),दौरह् (ए०व०) पर्याय, पारी, बारी, रोगों की पारी, वेग, दौरा। पैरॉक्सिज़्म Paroxysm, फिट्ज़ Fits-इं०। म० ज०।

अद्वितीय advitíya-हिं० वि० [सं०] प्रधान। मुख्य।

अद्वियह् adviyah-अ० (ब०व०), दवा (ए० व०) औषधें, औषधियाँ। ड्रग्ज़ Drugs-इं०। म० ज०।

अद्वियह् खुश्क adviyah-khushka-फ़ा० खुश्क औषध, सूखी दवा। (Dried drugs)।

अद्वियह् खुश्बू adviyah-khushbú-फ़ा० (Aromatic drugs) सुगंधित औषध, सुगंधित वस्तुएँ जो भोजन में प्रयुक्त होती हैं, यथा-लौंग प्रभृति। मसाला।

अद्वियह् तर adviyah.tar-फ़ा० गीली औषधि (Fresh drugs).

अद्वियह् बसीतह् adviyah-basítah
अद्वियह् मुफ़्रदह् adviyah-mufradah } -अ० साधारण औषधियाँ। अमिश्रित (अकेली) औषधियाँ। सिम्प्ल ड्रग्ज़ (Simple drugs) इं०।

अद्वियह् मुरक्कबह् adviyah-murakkabah-अ० मिश्रित व यौगिक औषधें। वह औषधें जो अन्य औषधियों से मिश्रित की गई हों, यथा पाक, शर्बत,खमीरा प्रभृति। कम्पाउण्ड ड्रग्ज़ Compound drugs-इं०। म० ज०।

अद्विियह् ह़ारह् adviyah-ḥárrah अ० (अबाज़ीर) गरम मसाले को कहते हैं।

अद्हान adhán–अ० (ब० व०), दुह्न (ए० व०)। तैलम्–सं०। तेल, तैल–हिं। रोग़न–फ़ा०। Oil (Oleum).

अध adha–अव्य० दे० अधः।

वि० [सं० अर्द्ध, प्रा० अद्ध] आधा शब्द का संकुचित रूप। आधा। (Half).

अधकचरा adhakachará हिं० वि० [सं० अर्द्ध=आध+हिं०=कचा] (१) अपरिपक्व। अधूरा। अपूर्ण। (Unripe; Imperfect). (२) अकुशल। अदक्ष।

वि० [सं० अर्द्ध=आधा+हिं० कचरना] आधा कुटा वा पीसा हुआ। दरदरा। अधपिसा अधकुटा। अरदावा किया हुआ। (Coarse powder)।

अधकच्चा adha-kachchá–हिं० वि० (Half-ripe) अधपका।

अधकपारी adhakapárí–हिं० स्त्री०
अधकपाली adhakapálí–हिं० स्त्री०
[सं० अर्द्ध=आधा+कपाल=सिर] आधे सिर का दर्द जो सूर्योदय से आरम्भ होकर दोपहर तक बढ़ता जाता है और फिर दोपहर के बाद से घटने लगता है और सूर्यास्त होते ही बंद होजाता है। आधासीसी, सूर्य्यावर्त। (Hemicrania) अर्द्धावभेदक।

अधखिला adhakhilá–हिं० वि० [सं० अर्द्ध+हिं०=खिलाना] [स्त्री० अधखिली] (Half-blown) आधा खिला हुआ। अर्द्ध-विकसित।

अधखुला adhakhulá–हिं० वि० पुं० [सं० अर्द्ध=आधा=हिं० खुलना] [स्त्री० अधखुली] (Half-open) आधा खुला हुआ।

अधगति adhagati–हिं० संज्ञा स्त्री० दे० अधोगति।

अधगो adhago–हिं० संज्ञा पुं० [सं० अधः=नीचे+गो=इंद्रिय] नीचे की इंद्रियाँ। शिश्न वा गुदा। (Lower organs; Penis or anus).

अधगोहुआँ adhagohuáṅ–हिं० संज्ञा पुं० [सं० अर्द्ध+गोधूम] जौ मिला हुआ गेहूँ।

अधङ्ग adhanga–हिं० पुं० अर्द्धाङ्गवात, पक्षाघात। (Palsy, Hemiplegia.).

अधङ्गी adhangí–हिं० वि० पक्षाघात रोगी, वह रोगी जिसे पक्षाघात हुआ हो। (Affected with hemiplegia)

अधजर adhajara–हिं० वि० पुं० [सं० अर्द्ध+हिं० जलन] अधजला। अधजरा। अर्द्ध विदग्ध। (Half-burnt.)

अधड़ी adharí–हिं० वि० स्त्री० [सं० अधर] (१) न ऊपर न नीचे की, आधार रहित। निराधार। (Suspending; In the middle)

अधपई adhapaí–हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० अर्द्ध आधा+पाद=चौथाई] तौलने का एक बाट। एक सेर के आठवें हिस्सेकी तौल। आधा पाव तौलने का बाट वा मान। दो छटंकी। दसभरी। अधपैया। अधपौवा। (A measurement =4 oz.)

अधबर्नी adhabarní
अधबिर्नी adhabirní
–सं० जलनीम (Herpestis monnieria, Thime leaved herpestes) इं० हैं० गा०। मे० मो०

अधमरा adhamará
अधमुआ adhamuá
–हिं० वि० [सं० अर्द्ध, प्रा० अद्ध+हिं० मरा] आधा मरा हुआ। अर्द्धमृत। मृतप्राय। (Half-dead)

अधमाङ्गम् adhamángam–सं० क्ली०
अधमांग adhamánga–हिं० संज्ञा पुं०
पाद, चरण, पैर, पाँव। देखो— चरण। श० च०।

अधमुख adhamukha–हिं० संज्ञा पुं० [सं० अधोमुख]

अधमः adhamah–सं० पुं० (१) अम्लबेत, अम्लवेतस। (Rumex vesicarius). (२) पाद (Foot)।

अधर adhara–हिं०संज्ञा पुं० [सं०] (१) ओठ, ओष्ठ। (Lip, Labium)। शफ़त–अ०। लब–फ़ा०। (२) नीचे का ओठ (Lower-lip)। –संज्ञा पुं० [सं० अ=नहीं+धृ=धरना] (१) पाताल। (२) बिना आधार का स्थान। अन्तरिक्ष। आकाश। शून्य स्थान।
वि० नीच, बुरा।

अधरकण्टकः adhara-kantakah–सं० पुं० जवासा, धमासा, दुरालभा। (Alhagi maurorum). वै० नि०।

अधरकण्टिका adhara-kantiká–सं० स्त्री० छोटी शतावरी, क्षुद्र शतावरी। (Asparagus racemosus (The small var-of–) वै० निघ०।

अधरकण्ठ्या adhara-kanthyá–सं० स्त्री० (Inferior or Inferior--laryngeal Artery) कण्ठाधोगा धमनी।

अधरकाकलकीया adhara-kákala-kiyá –सं० स्त्री० (Inferior Thyroid artery) अधः चुल्लिका धमनी।

अधरकाण्डसिरा adhara-kánda-sirá
अधरकायसिरा adhara-káyasirá
–सं० स्त्री० (Inferior Vena cava) अधोगा महाशिरा। अजोफ़ नाज़िल, अजोफ़ तहतानी-अ०।

अधरकेदारः adhara-kedárah–सं० पुं० (Cerebellar Fossa) लघु मस्तिष्क खात। हु.फ़रह् मख़्मखिय्यह्–अ०।

अधर कौक्षेय (यी) adhara-koukshéya, –yi–सं० स्त्री० (Hypogastric) कौक्षीया, पेड़ सम्बन्धी। ख़स्.ली–अ०।

अधर गल-सङ्कोचनी adhara-gala-sanko chaní–सं० स्त्री० (Constricter Phary.) कंठ संकोचनी।

अधर गुदः adhara-gudah–सं० पुं० (Anal canal). गुद नलिका।

अधर ग्रहणी adhara-grahaní–सं० स्त्री० (Colic valve or Ileo-cæcal).

अधर चतुष्पिण्ड adhara-chatushpinda-हिं०संज्ञा पुं०(Inferior colliculus).

अधर चतुष्पिण्ड बाहु adhara-chatushp-inda-báhu–हिं० संज्ञा स्त्री० (Inferior brachium).

अधर-चालनी-ओष्ठ-नाड़ी adhara-chálaní oshtha-nári–हिं०स्त्री० ओठ चलाने वाली नाड़ी।

अधरज adharaja–हिं० संज्ञा पुं० [सं० अधर+रज] ओठों की ललाई। ओंठों की सुर्खी। (२) ओठों की धड़ी, पान वा मिस्सी से रंग की लकीर जो ओठों पर दिखाई देती है।

अधर जंघासन्धिः adhara-janghása-ndhih–सं०स्त्री० (Distal Tibio-fibular).

अधर जानवी adhara-jánaví–सं० स्त्री० (Inferior genicular).

अधर-तिरश्चीन स्थाविर विबलः adhara-tirashchína--sthávira–vibalah–सं०पुं० Inferior-transverse tibio-fibular ligament).

अधरदन्त्या adhara-dantyá–सं० स्त्री० (Inferior alveolar).

अधर दार्शन केन्द्रम् adhara-dárshana-kendram–सं० पुं०, क्ली० (Lower visual centre).

अधर धमनी adhara dhamaní–सं० स्त्री० (Inferior labial) अधः ओष्ठीया धमनी।

अधर धारा adhara-dhárá–हिं० संज्ञा स्त्री० अधोधारा, निम्न किनारा (Inferior border).

अधर नामनी adhara-námaní–सं० स्त्री० (Quadratus labii inferioris).

अधर नासाशुक्तिका adhara-násáshuk-

tiká–सं० स्त्री० (Inferior nasal concha) अधोशुक्तिका।

अधर पश्चिमसरदा adhara-pashchima-saradá–सं०स्त्री० (Inferior posterior serratus).

अधरपान adhara-pána–हिं० संज्ञा पुं० [सं० अधर=ओठ+पान=पीना, चूसना] सात प्रकार की बाह्य रतियों में से एक रति। ओंठों का चुम्बन।

अधर-पायवी adhara-páyaví–सं० स्त्री० (Inferior Hæmorrhoidal.)

अधरपार्ष्णि नौकीयः adhara-párshni-noukíyah–सं०त्रि० (Inferior Calcaneo-navicular.)

अधर-पृष्ठ-कीया वनता adhara-prishta-kíyá-vanatá–सं० स्त्री० (Obliqus Capitis Inferior.)

अधर-पेश्या adhara-peshyá–सं० स्त्री० (Sural muscular- A.)

अधर-प्रकोण-गो-जिह्वकीया adhara-prakona-go-jihvakíyá–सं० स्त्री० (Inferior Aryepiglottideus.)

अधरप्रकोष्ठ-सन्धिः adhara-prakoshtha-sandhih–सं० स्त्री०(Distal Radioulnar joint)

अधर प्रास्तर-सरित्का adhara-prástara-saritká–सं० स्त्री० (Inferior Petrosal Sulcus.)

अधर प्रास्तरी adhara-prástarí–सं०स्त्री० (Inferior Patrosal Sinus.)

अधर प्रैणिकी adhara--prainikí–सं० स्त्री० (Inferior Phrenic.)

अधरप्रौधी (थी) adhar-proudhí (--thí) –सं० स्त्री० (Inferior Gluteal.)

अधर बिम्ब adhara-bimba–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] कुन्दरू के पके फल जैसे लाल ओठ।

अधर मस्तिष्कम् adhara-mastishkam –सं० क्ली० (Cerebellum) अणु मस्तिष्क, लघु मस्तिष्क।

अधर यमला adhara-yamalá–सं० स्त्री० (Gemellus Inferior) निम्न यमला।

अधर ललाट सीता adhara-laláta-sítá –हिं० संज्ञा स्त्री० (Inferior frontal sulcus.)

अधर-वर्त्मिका adhara-vartmiká –सं० स्त्री० (Inferior Palpibral.)

अधर-वस्तीया adhara-vastíyá–सं०स्त्री० (Inferior vesical.)

अधर-व्रणः adhara-vranah–सं० पुं० ओठ का घाव, ओठ में होने वाला व्रण।

अधर व्रणका यत्न—घृत, फाणित (गुड़भेद), तिल तैल, धतूरा, गेरू, राल, लवण, मैनफल इन्हें एकत्र पीसकर लेप करने से ओठ (अधर) का महाव्रण (घाव) तथा ओंठों का फटना दूर होता है।

अधर शाखा क्षेत्र adhara-shákhá-kshetra–हिं० संज्ञा स्त्री० (Lower extremity area)

अधर शृङ्ग adhara-shringa-हिं०संज्ञा पुं० (भगास्थिका) Inferior horn (Cornu).

अधर-सायकी adhara-sáyakí–सं० स्त्री० (Inferior Longitudinal.)

अधर-हानवी adhara-hánaví–सं० स्त्री० (Mandibular)

अधर-हार्दी adhara-hárdí–सं० स्त्री० (Inferior Cardiac.)

अधर क्षुद्रांत्र adhara-kshudrántra –हिं० संज्ञा क्ली० (Ileum). देखो–क्षुद्रांत्र।

अधरक्षुद्रासखी adhara-kshudrá-sakhí –सं० स्त्री० (Vena Hemi-azygos).

अधरा adhará–सं० स्त्री० निम्न, निम्न दिशा, नीचे की तरफ। (Downwards) सं० निम्न०।

अधरान्नया शयीय पौरीतती adharágnyá shayíya-pouritatí–सं० स्त्री०(Inferior Pancreatic duodenal artery). अ० शा० ।

अधराच्यम् adharáchyam–सं० क्ली० नीचे भूमिमें सरकने वाले कीट । अथर्व० । सू० ७ । ३ । का० ४ ।

अधराजिः adharájih–सं० स्त्री० (Unstriped muscle).धारी विहीन मांस पेशी ।

अधराजिह्मा adhará-jihmá–सं० स्त्री० (Rectus Inferior). अधरासरला ।

अधराञ्चम् adharáncham–सं० क्ली० नीचे दबाना । अथर्व० । सू० १२७ । ३ । का० ६ ।

अधरातानिक रासनी adhará-tánika-rásaní–सं० स्त्री० (Longitudinalis Linguæ Inferior).

अधरातानिकी adhará-tánikí–सं० स्त्री० (Inferior Longitudinal S.).

अधराधर adharádhara–हिं० पु० [सं० अधः+अधर] नीचे का ओंठ (Lowerlip)

अधरान्तर कौर्परी adharántara-kourparí–सं० स्त्री० (Inferior Ulnar).

अधरान्त्रीय प्लक्षकम् adharántríya-plakshakam–सं० क्ली० (Inferior mesenteric Plexus).

अधरान्त्रीया adharántríyá–सं० स्त्री० (Inferior mesenteric).

अधरामहाशिरा adhará-maháshirá–हिं० स्त्री० अधोगामहाशिरा(Inferior-vena cava).

अधरावनता adhará-vanatá–सं० स्त्री० (Obliquus Inferior).

अधरांसधरा adharánsa-dhará–सं० स्त्री० (Lower subscapular). अंसाधरा अ० शा० ।

अधराक्षि-कुण्डीय-विशरणम् adharákshi-kundíya-visharanam–सं० क्ली०(Inferior Orbital fissure).

अधरेद्युः adharedyuh–हिं० संज्ञा पु० [सं०] गत दिन के पहिले का दिन । परसों ।

अधरोत्तर adharottara–हिं० वि० पु० [सं०] (१) ऊँचा नीचा । खड्बीहड़ ।

अधरोत्तरकौक्षेयी adharottara-koukshey í–सं० स्त्री०(Inferior Epigastric)

अधरोंथा adharonthá–हिं० वि० :[सं० अर्द्ध = आधा+रोमंथ = जुगाली]आधा जुगाली कियाहुआ । आधा पागुर किया । आधा चबाया हुआ ।

अधरोर्ध्वकौक्षेयी adharordhva-koukaheyí–सं० स्त्री० (Deeper Inferior Epigastric).

अधरोष्ठ्या adharoshthyá–सं० स्त्री०(Inferior Labial).

अधरौदूखल-स्रोतः adharoudúkhala-srotah–सं० पु० (Mandibular canal).

अधरौदूखली adharoudúkhalí–सं० स्त्री० (Inferior Alveoler).

अधरौपमस्तिष्क पदकम्adharoupamastishka-padakam–सं० पु०(Inferior Cerebellar Pedum or Peduncle).

अधरंगा adharangá–हिं० संज्ञा पु० [हिं० आधा+रंग] एक प्रकार का फूल ।

अधरः adharah–सं० पु० (१) ओष्ठ, ओठ –हिं० । ठोट–बं० । लेबियम् Labium,–ia–ले० । लिप (Lip)–इं० । रा० नि० व० १८ । –क्ली० (२) स्त्री योनि (Vagina).

अधवा adhavá–हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० अ+धव =पति) जिसका पति जीवित न हो । विधवा । बिना पति की स्त्री । राँड़ । सधवा का उलटा ।

अधवारी adhavárí–हिं० संज्ञा स्त्री० [देश०]

एक पेड़ का नाम जिसकी लकड़ी मकान और असबाब बनाने के काम आती है।

अधश्चर adhashchara–हिं० वि० [सं०] जो नीचे नीचे चले।

अधसेरा adhaserá–हिं० संज्ञा पुं० [सं० अर्द्ध=आधा+सेटक=सेर] एक बाँट या तौल जो एक सेर की आधी होती है। दो पाव का मान।

अधस्तल adhastala–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) नीचे की कोठरी। (२) नीचे की तह। (Inferior Surface)।

अधस्तल कारिणी adhastala-kárini–सं० हिं० स्त्री० (Pronator teres).

अधातु adhátu–हिं० संज्ञा पुं० (Non metal) जिनमें धातु के लक्षण न पाए जाएँ। देखो—धातु।

अधामार्गः adhámárgah– }
अधामार्गवः adhá-márgavah }

–सं० पुं० (१) अपामार्ग। (Achyranthes aspera) धामार्गव वृक्ष। See Dhámárgavah। अ० टी०।

अधावट adhávata–हिं० वि० पुं० [सं० अर्द्ध=आधा+आवर्त्त=चक्कर] आधा औंटा हुआ। जो औंटाते या गरम करते करते गाढ़ा होकर नाप में आधा हो गया हो।

अधि adhi–(A Sanskrita Prefix) एक संस्कृत उपसर्ग जो शब्दों के पहिले लगाया जाता है और जिसके ये अर्थ होते हैं—(१) ऊपर। ऊँचा। पर। (२) प्रधान। मुख्य। (३) अधिक। ज़्यादा। (४) सम्बन्ध में। उ० आध्यात्मिक। आधिदैविक। आधिभौतिक।

अधिकण्टकः adhi-kantakah–सं० पुं० यास क्षुप, दुरालभा विशेष। (Alhagi maurorum) गा० नि० व० ४।

अधिकप्रियम् adhika-priyam–सं० क्ली० त्वचा, दारचीनी। Cinnamomum zeylanicum, *Nees.* (Bark of cinnamon)। बैं० निघ०।

अधिकरणम् adhi-karanam–सं० क्ली० जिस अर्थका अधिकार करके और अर्थोंका वर्णन किया जाए उसे अधिकरण कहते हैं। जैसे रस अथवा दोष अर्थात् रस का अधिकार करके और बातें कही गईं या दोष को अधिकार करके या यों कहो कि रस के ग्रहणार्थ रस शब्द कहा गया (कई जगह बिना कहे भी उसका ग्रहण किया जाता है। ये सब अधिकरण ही होते हैं)। सु० उ० ६५ अ०। यमर्थमधिकृत्योच्यते तदधिकरणम्। यथा—रसं दोषं वा। ६। जहाँ कोई काम किया जाता है। अधिष्ठान। आधार। सु०सू०४१अ०। सु०उ०६५अ०।

अधिकार adhikára–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) कार्य्यभार। प्रभुत्व। आधिपत्य। प्रधानता। (२) प्रकरण। शीर्षक। (३) क्षमता। सामर्थ्य। शक्ति।

अधिकारी adhikári–सं० पुं० पुरुष। (A man) वै० निघ०।

अधिकारी adhikári–हिं० संज्ञा पुं० [सं० अधिकारिन्] [स्त्री० अधिकारिणी] (२) योग्यता वा क्षमता रखने वाला। उपयुक्त पात्र। (१) स्वत्वधारी। हक़दार। (३) प्रभु। स्वामी।

अधिकृत adhikrita–हिं० वि० [सं०] (१) अधिकार में आया हुआ। हाथ में आया हुआ। उपलब्ध। जिस पर अधिकार किया गया हो। संज्ञा पुं० अधिकारी। अध्यक्ष।

अधिकांग adhikánga–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] अधिक अङ्ग। नियत संख्या से विशेष अवयव। वि० जिसे कोई अवयव अधिक हो। उ० छांगुर।

अधिक्रम adhikrama–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] आरोहण। चढ़ाव। चढ़ाई।

अधिजिह्वकः adhi-jihvakah–सं० पुं० जिह्वागत रोग विशेष। देखो–अधिजिह्वा। See–Adhi jihváh.

अधिजिह्वा adhi-jihvá }
अधिजिह्विका adhi-jihviká } सं० स्त्री० (१) रक्त शोणित जन्य जिह्वा रोग विशेष, इसमें जिह्वा के ऊपर जिह्वा के अन्य भाग के समान सूजन

होती है। देखो-अधिजिह्वः। सु० नि० अ० १६। (२) घोड़े की जिह्वा के ऊपरी भाग में शोफरूप से होने वाला जिह्वा रोग विशेष। ज० द० २६ अ०।

अधिजिह्वः adhi-jihvah--सं० पु०
अधिजिह्व adhijihva-हिं० संज्ञा स्त्री०
ए ट्युमर ऑन दी टङ्ग (A tumour on the tongue)--इं०।

कण्ठगत मुखरोग। एक बीमारी जिसमें रक्त से मिले हुए कफ के कारण जीभ के ऊपर सूजन हो जाती है। इसको द्विजिह्वा भी कहते हैं। इसके लक्षण निम्न हैं; यथा—इसमें जिह्वाग्र में कफ से शोथ होता है तथा जिह्वा के प्रबन्ध (मूल) पर रुधिरमें मिला हुआ रक्तवर्ण का शोथ होजाता है। सूजन पक जाने पर यह त्यागने योग्य अर्थात् असाध्य हो जाती है। सु० नि० अ० १६।

अधितुण्डी रसः adhitundí-rasah-सं० पु० शुद्ध पारद, शुद्ध विष, शुद्ध गन्धक, अजमोद, त्रिफला, सज्जीखार, जवाखार, चित्रक, जीरा, सेंधा नमक, काला नमक, वायविडंग, गंगलव ण, और त्रिकुटा प्रत्येक तुल्य भाग लें तथा सर्व तुल्य शुद्ध कुचिला चूर्णकर मिलाएँ, पुनः जम्भीरी के रसमें घोटकर मिर्च प्रमाण गोलियाँ बनाएँ। इसके सेवन से मन्दाग्नि दूर होती है। अमृ० सा०।

अधित्वचः adhitvachah-सं० पु० आवरण भाग। अथर्व०। सू० २१। १। का० ६।

अधिदन्तः,-कः adhidantah,-kah-सं० पु० दन्तमूल रोग विशेष, गजदन्त। (A tooth growing over another) ज० द० ३ अ०।

अधिदैव adhi-daiva-हिं० वि० [सं०] दैविक, दैवयोग से होने वाली, आकस्मिक।

अधिदैवतम् adhidaivatam सं० क्लीo
अधिदैवत adhidaivata-हिं० संज्ञा पु०
(१) पदार्थ सम्बन्धी विज्ञान, विषय वा प्रकरण। (२) अधिदेवता। आधिदैविक रोग। देवताधिकृत। सु० शा० १ अ०।

वि० देवता सम्बन्धी।

अधिपतिः adhi-patih-सं० पु० सद्यः प्राणहर मर्म्मस्थान विशेष। मस्तक के भीतर ऊपर को जहाँ बालों का आवर्त (भँवर) होता है वहाँ शिरा और संधि का सन्निपात (मिलाप) है। यह "अधिपति" नामक मर्मस्थान है। यहाँ पर चोट लगने से तत्काल मृत्यु होती है। सु० शा० ६ अ०।

हिं० पु० [स्त्री० अधिपत्नी] सरदार, मालिक। मुखिया। स्वामी। नायक।

अधिपति रन्ध्रम् adhipati-randhram-
अधिपति विवरम् adhi-pati-vivaram
-सं० क्ली० (Posterior Fontanelle) पश्चात् विवर। दो मास से कम आयु वाले बालक के शिर में जहाँ पार्श्विकास्थियों के ऊपर के पिछले कोने पश्चादस्थि से मिलते हैं वहाँ पर एक गढ़ा रहता है उसको अधिपतिरन्ध्र कहते हैं। यहाँ भी मस्तिष्ककी फड़क मालूम होती है।

अधिपर्यङ्क देशः adhiparyanka deshah-सं० पु० (Epithalamus) कोई प्रदेश।

अधिविन्ना adhibinná-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] अध्यूढा। प्रथम स्त्री। प्रथम विवाह की स्त्री। वह स्त्री जिसके रहते उसका पति दूसरा विवाह कर ले।

अधिभूतः adhi-bhútah-सं० पु० जिस इन्द्रिय का जो कार्य है वह कार्य ही उस इन्द्रिय का अधिभूत विषय है। परन्तु किसी किसी ने उनके विषय को ही अधिभूत माना है। सु० शा० १ अ०।

अधिभौतिक adhi-bhoutika-हिं० वि० दे० आधिभौतिक।

अधिमन्थ adhimhanth-हिं० संज्ञा पु०
अधिमन्थः adhimanthah-सं० पु०
(Acute Pains in the balls of the eyes with pain and swelling of one side of the head.) अभिष्यन्द (पानी आना) द्वारा उत्पन्न नेत्र रोग विशेष।

अभिष्यन्द रोग का एक अंश। यह वातज, पित्तज कफज और रक्तज भेद से चार प्रकार का होता है। इन सम्पूर्ण रोगों में तीव्र वेदना होती है। यही इनका मुख्य लक्षण है। अभिष्यन्द (चोक उठना, नेत्रशूल) रोग की उपेक्षा करने से फलतः अधिमन्थ नामक रोग उत्पन्न होता है।

लक्षण—अभिष्यन्द रोगों के बढ़ने पर उपाय और पथ्य नहीं करने वाले मनुष्यों के नेत्र में पीड़ा करने वाले उतने ही प्रकार के अधिमन्थ रोग उत्पन्न हो जाते हैं। जिस रोग में ऐसी पीड़ा होती हुई प्रतीत हो मानो नेत्र अत्यन्त उखाड़े या खींचे जाते हों और आधा सिर मथा सा जाता हो तो उसे अधिमन्थ जानना चाहिए। अधिमन्थ वातादि दोषोंके लक्षण से युक्त चार ही प्रकारका होता है। श्लैष्मिक अधिमन्थ सप्त रात्रि में तथा रक्तज, वातज क्रमशः ५ व ६ रात्रियों में और मिथ्या आचार से पैत्तिक तत्काल दृष्टि का नाश कर देता है।

चिकित्सा—सभी प्रकार के अधिमन्थ रोगमें सर्वथा ललाटस्थ शिराका वेधन करें अर्थात् फ़सद करें। इसकी अशांति की दशा में भौंहों को प्रदाहित करे। सु० उ० ६ अ०।

अधिमुक्तकः adhi-muktakah—सं० पुं० माधवी लता। वै० निघ०। See-mádhavílatá.

अधिमुक्तिका adhi-muktiká—सं० स्त्री० सीपी, मोती की सीपी—हिं०। मुक्तागृहम्, शुक्ति —सं०। Oyster shell (Ostrea Edulis) वै० निघ०।

अधिमांसकः adhimánsakah—सं० पुं० (Inflammation of the tonsils) कफ जन्य दन्तवेष्टज रोग विशेष। एक रोग जिसमें कफ के विकार से नीचे की दाढ़ में विशेष पीड़ा और सूजन होकर मुँह से लार गिरती है। लक्षण—यदि हनु (दाढ़) की पिछली तरफ के दन्त (मूल) में घोर पीड़ायुक्त भारी सूजन हो और मुँह से लालास्राव हो तो उसे "अधिमांसक" कहते हैं। यह कफ के प्रकोप से होता है। मा० म० ख० ४ भा० मु० रो० चि०। मा० नि०। सु० नि० १६ अ०।

अधिमांसम् adhi-mánsam—सं० क्लो०, पुं० नेत्र रोग विशेष। मा० ने० रो०। देखो—नेत्र (अधि) मांसार्म्म।

अधिमांसार्म्म adhi-mánsármma—सं० पुं० (Fleshy excrescence on the eye, cancer of the eye)। दृष्टि शुक्लगत रोग विशेष। यह "मांसवृद्धि" नाम से प्रसिद्ध है। इसके लक्षण—नेत्र के श्वेत भागमें जो फैला हुआ यकृत सदृश अर्थात् ईषत् नील लोहित वर्ण का मोटा मांस दिखाई देता है उसे "अधिमांसार्म्म" कहते हैं। मा० नि०।

अधिरूढ़ा adhi-rúrhá—सं० स्त्री० प्रौढ़ा, दृष्टार्त्तवा, ३० वर्ष से (ऊपर) ५५ वर्ष पर्य्यन्त की अवस्था वाली स्त्री। See-Proudhá.

अधिरोहण adhirohaṇa—हिं० संज्ञा पुं० [सं०] चढ़ना। सवार होना। ऊपर उठना।

अधिरोहिणी adhi-rohiṇí—सं० (हिं० संज्ञा) स्त्री० (Stair case, a ladder.) सीढ़ी। निसेनी। ज़ीना। बाँस का बनाया हुआ चढ़नेका मार्ग। इसके पर्य्याय,—निःश्रेणी। अ० टी०। निःश्रेनिः (अ०)।

अधिवास adhivása—हिं० संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अधिवासित] (१) निवास स्थल। रहने की जगह। (२) महासुगन्ध। खुशबू। (३) उबटन।

अधिवासन adhivásana—हिं० संज्ञा पुं० (१) सुगंधित करना। (२) रहना।

अधिवृक्क adhivrikka—हिं० पुं० (Supra renals) उपवृक्क।

अधिवेत्ता adhivettá—हिं० संज्ञा पुं० [सं०] पहिली स्त्री के रहते दूसरा विवाह करना।

अधिवेदन adhivedana—हिं० संज्ञा पुं० [सं०] एक स्त्री के रहते दूसरा विवाह करना।

अधिश्रयणी adhiṣhrayaṇí—सं० स्त्री० चुल्लि। —हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] सीढ़ी। निसेनी। निःश्रेणी। ज़ीना।

अधिश्रवण adhi-shravana-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) चूल्हा, भोजन पकाने की अँगीठी, तंदूर। भाड़ के लिए अग्नि स्थान। चुल्लि-सं०। (Oven, A fireplace) (२) आग पर चढ़ाना। आग पर रखना।

अधिष्ठाता adhishthátá-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अधिष्ठात्री] (१) करने वाला। नियंता। प्रधान। (२) किसी कार्य की देख भाल करने वाला। वह जिसके हाथ में किसी कार्य का भार हो।

अधिष्ठान adhishthána--सं० पुं० कलाई। टखने की हड्डियाँ। च०। कूर्च। सु०।

अधिष्ठानम् adhishthánam-सं० क्लो०
अधिष्ठान adhishthána हिं० संज्ञा पुं०
(१) वास स्थान (Place)। (२) ग्राम (Village)। (३) नगर। शहर। जनपद। (४) स्थिति। पड़ाव, मुकाम, ठहरने की जगह। टिकान। रहने का स्थान। (५) आधार, सहारा।

अधिष्ठानकला adhishthánakalá-सं० स्त्री० (Basement membrane).

अधिस्कन्द adhiskanda अपने क्षेत्र में। अथर्व०।

अधिक्षिप्त adhikshipta--हिं० वि० [सं०] फेंका हुआ।

अधिक्षेप adhikshepa--हिं० संज्ञा पुं० [सं०] फेंकना।

अधीरः adhírah--सं० पुं०
अधीर adhíra--हिं०वि०,पुं०
(१) अधैर्य, धीरता हीन, धैर्य रहित, जिसको धीरज न हो। उद्विग्न, व्यग्र, व्याकुल विह्वल, बेचैन, घबराया हुआ। (२) अधोग्य वैद्य। वै०निघ०। (३) चंचल, अस्थिर, उतावला, तेज़, आतुर। (४) असंतोषी।

अधो adho-अव्य० दे० अधः।

अधोओष्ठ adho-oshtha--हिं० संज्ञा पुं० निम्न ओष्ठ। (Lower-lip).

अधो ओष्ठीया धमनी adho-oshthíyá-dhamaní

अधःओष्ठ्या धमनी--adhah-oshthyá-dhamaní--हिं० संज्ञा स्त्री० (Inferior labial artery) निम्न ओष्ठकी पोषक धमनी।

अधोऽङ्गम् adho-angam-सं० क्लो० (१) मलद्वार। चूति (Anus)। (२) योनि (Vagina).

अधोऽशुकम् adho-anshukam-सं० क्लो०
अधोंशुक adhonshuka- हिं० संज्ञा पुं०
परिधेयवस्त्र, एक नीचे का वस्त्र। जैसे पायजामा, धोती इत्यादि। अम०। (२) अस्तर।

अधोऽन्वायाम रसनिका adho-anváyáma-rasaniká-हिं० स्त्री० (Longitudinalis)

अधोऽन्वायाम शिरा कुल्या adho-anváyáma-shirá-kulyá-हिं० स्त्री० (Inferior sagital sinus).

अधोऽस्रपित्तम् adho-asrapittam--सं० क्लो० अधोगत रक्त पित्त रोग। देखो-रक्तपित्तम्।

अधोगतः adho-gatah--सं० पुं० अस्थिभंग रोग। (Fracture) वै० निघ०।

अधोगमन adho-gamana--हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) नीचे जाना। (२) पतन।

अधोगामहाशिरा adhogá-maháshirá
अधोगामीमहाशिरा adhogámí-maháshirá
--सं० स्त्री० निम्न महाशिरा। (Inferior vena cava) अजोफ़ नाज़िल--अ०। दाहिनी ओर बाईं संयुक्त श्रोणिगा शिराओं के मेल से अधोगा महाशिरा बनती है। यह उदर में बृहत् धमनी की दाहिनी ओर रहती है। देखो—अधोगा महाशिरा।

अधोगामहाशिरा adhogá-mahá-shirá-हिं० संज्ञा स्त्री० नीचे सब शरीरसे अशुद्ध रुधिर लाने

वाली। नीचे की महाशिरा। (Inferior vena cava).

अधोगा महाशिरा खात adhogá-mahá-shirá-kháta--हिं० संज्ञा स्त्री० (Groove for inferior vena cava)

अधोगावृहद्धमनी adhogá-vrihad-dhamaní--सं० स्त्री०(Descending aorta) निम्न महा धमनी।

अधोगामी adho-gámí--हिं० वि० [सं० अधोगामिन्] [स्त्री० अधोगामिनी] नीचे जाने वाली (Descending).

अधोगामी महाधमनी adho-gámímahád-hamaní--सं० स्त्री० अधोगावृहद्धमनी।

अधोगामीवृहद्अन्त्र adhogámí-vrihad-antra--हिं० संज्ञा पुं० (Descending colon) वृहत् अन्त्र का तीसरा भाग जो प्लीहा से नीचे की ओर जाकर वामपार्श्व से वस्तिगह्वर में पहुँचता है। क़ोलून नाज़िल, कोलून हाबित --अ०।

अधोगामीवृहत् धमनी adhogámí-vrihat-dhamaní--सं० स्त्री० (Descending aorta). निम्न महाधमनी।

अधोघण्टा adho-ghanṭa--सं० स्त्री० (Achyranthes aspera) अपामार्ग, चिचड़ा। रत्ना०।

अधोजिह्वा adho-jihvá, **अधोजिह्विका** adho-jihviká --सं० स्त्री० (Uvula) अलिजिह्वा, उपजिह्वा, तालुमूलस्थ क्षुद्रजिह्वा। हारा०। (२) जिह्वाधः शोथरोग, अधोजिह्वा, की सूजन (Uvulitis)। च०।

अधोदेश adhodeṣha--हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) नीचे का स्थान। नीचे की जगह। (२) नीचे का भाग।

अधोद्वारम् adho-dváram--सं० क्ली० मलद्वार, चूति, गुदा,--हिं०। दुब्र, कुन, शरज, मक़्अद, मबरज़, रोदए-मुस्तक़ीम--अ०। एनस anus --इं०। (२) योनि--हिं०। मह्बिल, फ़र्ज, क़ुब्लुर्रहिम् अ०। वेजाइना (Vagina)--इं०। हे० च०।

अधोधारा adho-dhárá--हिं० संज्ञा स्त्री० निम्नधारा, नीचे का किनारा। (Inferior border.)

अधोनेत्रच्छद adho-netrachchhada-हिं० संज्ञा पुं० (Lower eyelid) निम्न पलक, नीचे की पलक।

अधोपार्श्विक चक्राङ्ग adho-párṣhvika-chakránga--हिं० संज्ञा पुं० (inferior lateral gyrus)

अधोपुष्पी adho-pushpí--सं० स्त्री० अंधाहुली। देखो--अधः पुष्पी (Adhahpushpí).

अधोपृष्ट adhoprishṭha- हिं० पुं० भीतरीपृष्ट (Inferior surface)

अधोभाग adhobhága--हिं० संज्ञा पुं० (Base) अस्थि की तली का चौड़ा भाग।

अधोभार adhobhára--(Downward pressure) गैसों के तीन प्रकार के दबावों में से एक। वायु का नीचे को दबाव डालना।

अधोभागहरः adho-bhága-haraḥ--सं० त्रि० नीचे के भाग की शुद्धि करने वाला। विरेचन कर्म में हित कारक। विरेचन। च०।

अधोभुवन adho-bhuvana--हिं० संज्ञा पुं० [सं०] पाताल। नीचे का लोक। अधोलोक।

अधोमर्म्म adhomarmma--सं० क्ली० (१) गुदा (Anus)। (२) गुह्यद्वार (Pudendum)। हे० च०।

अधोमार्ग adhomárga--हिं० संज्ञा पुं० [सं०] गुदा (Anus)।

अधोमुख adho-mukha--हिं० वि० [सं०] (१) नीचे मुख किए हुए। मुँह लटकाए हुए। (२)। औंधा उलटा। मुँह के बल। क्रि० वि० औंधा। उलटा।

अधोमुखा,-खी adho-mukhá,-khí—सं० स्त्री० गोजिह्वा । गोभी-हिं० । रा० नि० व० ४ । (Elephantopus scaber).

अधोयन्त्रम् adho-yantram--सं० क्लो० वकयन्त्र । (see-vakayantra).

अधोरेचनः adho-rechanah--सं० पुं० आरग्वध वृक्ष । अमलतास का पेड़-हिं० । Cassia fistula (Tree of-).

अधोर्द्ध adhorddha--हिं० क्रि० वि० [सं०] ऊपर नीचे । तले ऊपर ।

अधोललाट चक्राङ्ग adholaláṭa-chakránga -हिं० संज्ञा पुं० (Inferior temporal gyrus).

अधोलोमः adholomah--सं० (हिं०) पुं० गुह्य स्थान के ऊर्ध्व भाग के केश को कहते हैं । झाँट, कामाद्रि केश-हिं० । (The hair on the groin).

अधोलंब adho-lamba–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) लंब । (२) साहुल ।

अधोवर्त्ती क्षुद्रांत्रीय धमनी adho-vartti kshudrántríya-dhamaní-हिं० स्त्री० (Lower mesenteric artery) छोटी आँतों के नीचे की धमनी ।

अधोवातावरोधोदावर्त्त adho-vátávaro-dhodávartta–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] रोग विशेष । अधोवायुके वेग को रोकने से उत्पन्न उदावर्त्त रोग । इस रोग के लक्षण ये हैं–मल मूत्र का रुक जाना, अफरा चढ़ना, गुदा-मूत्राशय-लिङ्गेन्द्रिय में पीड़ा तथा बादी से पेट में अन्य रोगों का होना ।

अधोवायुः adho-váyuh--सं० पुं०
अधोवायु adhováyu--हिं० संज्ञा पुं०
(१) अपानवायु । गुदा की वायु । (२) पाद । गोज़ । पर्दन । नीचेकी हवा । See–Apána-váyu.

अधोशाखा adho-shákhá–सं० स्त्री० (Lower extremity) निम्न शाखा, धड़ के नीचे की शाखा । इसमें नितंबास्थि, ऊर्वस्थि, जंघास्थि, अनुजंघा, पाली, कूर्च्च, प्रपाद तथा अँगुल्यस्थियाँ का समावेश होता है । प्रत्येक शाखा में ३१ अस्थियाँ हैं, दोनों में ६२ ।

अधोशिरा कुल्या adhoshirá kulyá-सं० स्त्री० देखो—शिराकुल्या ।

अधोशुक्तिका adho-shuktiká
अधो सीपाकृति adhosípákriti
-सं०हिं० स्त्री० (Inferor turtbinate) नासिका की बाहरी दीवार पर की तीन मुड़ी हुई अस्थियों में से नीचे वाली अस्थि । यह तीनों में सब से बड़ी है और एक पृथक् अस्थि है । इस अस्थि की शकल सीपी जैसी होती है ।

अधोहनुः adhohanuh–सं० पुं० नीचे का जाबड़ा । (Lower jaw) देखो—अधो हन्वस्थि ।

अधोहन्वस्थि adho-hanvasthi–हिं० संज्ञा स्त्री० नीचे के जबड़ेकी अस्थि । इ़ज़ामुल्-फ़क्कुल्-अस्फ़ल–अ० । उस्तख़्वानुल्-ज़ारहे-ज़ेरीं फ़ा० । मैण्डिबल (Mandible). इन्फ़ीरियर मैग्ज़िलरी बोन (Inferior maxillary bone)–इं० ।

यह चेहरे की अस्थियों में सब से बड़ी और मज़बूत अस्थि है और सब से नीचे के भाग में रहती है, ठुड्डी (ठोड़ी) इससे बनती है । यह अस्थि देशी जूते की नाल की भाँति मुड़ी हुई होती है ।

अधंतरी adhantarí–हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० अधः+अंतरी] मालखंभ की एक कसरत ।

अधः adhah–सं० त्रि० (अव्यय) निम्न । नीचे । तले । (Down, below.) ।–संज्ञा पुं० (१) अधोभाग, निम्न भाग । (२) योनि । वै० निघ० ।

अधःकर्षणम् adhah-karshaṇam–सं०क्लो० नीचे खींचना (Drawing Downwards.)

अधः काय adhah-káya-हिं० संज्ञा पुं०

[अधः=नीचे+काय=शरीर] कमर के नीचे के अंग। नाभि के नीचे के अवयव।

अधः कुन्तलः adhah-kuntalah–सं० पुं० अन्तर्लोम।

अधः कुक्षि देशः adhah-kukshideshah –सं० पुं० (Hypogastric region.) कुक्षि निम्नभाग। पेड़ू के नीचे का हिस्सा। इक़्लीम् ख़स्.ली, क़िस्म ख़स्..ली–अ०।

अधःकौक्षेय-प्लक्षम् adhah-koukshoya-plaksham–सं०पुं० कुक्ष्यधः भाग स्थित नाड़ी जाल। ज़ुफ़ीरह्-ख़स्..लिय्यह्–अ० (Hypogastric Plexus.)

अधः पतन adhah-patana–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१)। (Precipitation.) अधः क्षेपित वा तलस्थायी होना। (२) नीचे गिरना। (३) विनाश, क्षय, पतन। देखो–अधः पातन।

अधः पात adhah-pâta–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) अधः क्षेपित (-प), तलस्थित, नीचे गिरा हुआ। (Precipitate)। (२) नीचे गिरना। देखो–अधः पातन। (२) तलछट, गाद।

अधः पातनम् adhah-pâtanam–सं० क्ली०

अधः पातन adhah-pâtana–हिं० संज्ञा पुं०

अधःपातनम् इसका शाब्दिक अर्थ नीचे गिराना है। अधःक्षेपण तलस्थिरीकरण। (१) किन्तु, प्राचीन भारतीय रसायनशास्त्र की परिभाषा में इसका अभिप्राय "पारद शोधन के तीन विधानों में से एक" है। विधि—नवनीत (नैनुआ) नाम का गंधक और पारद इनको सम भाग लेकर जम्बीर के रस से मर्दन करें। फिर कंवांच की जड़, शोभाञ्जन की जड़, श्वेत अपामार्ग, सर्षप और सेंधा नमक (किसी किसी जगह पारद को त्रिफला क्वाथ, शोभाञ्जन बीज, चित्रक मूल, रक्त सर्षप और सेंधा लवण में मर्दन करने का विधान है।) के समान भाग कल्क को मिश्रित कर यंत्र के ऊपरी पात्र के भीतरी पेंदे में उक्त मिश्रित कल्क के साथ पारद का प्रलेप कर दें। यंत्र के जल-पूर्ण निम्न पात्र को पृथ्वी में गढ़ा बनाकर उसमें रखें और उसके ऊपर से पारद लिप्त पात्र को औंधा कर रख दें। दोनों पात्रों के मुख को मिलाकर मृदु मृत्तिका द्वारा उनकी संधियों को भली प्रकार बन्द कर दें। ऊपर के पात्र को उत्ताप देने पर पारद पृथक् होकर जल में गिरेगा। यह पारद शुद्ध होगा। पारद शोधन की इस क्रिया को अधःपातन और जिस यंत्र द्वारा यह क्रिया सम्पन्न होती है उसको आयुर्वेद में भूधरयंत्र कहते हैं। देखो—पारद।

"नवनीताह्वयं सूतमित्यादि।" र० सा० सं०।

(२) अर्वाचीन रसायनशास्त्र की परिभाषा में इससे अभिप्राय विलयन में से किसी द्रव्य का पात्र तल पर शनैः शनैः बैठना अथवा तलस्थायी होना है।

कुछ द्रव्य ऐसे होते हैं, कि यदि उन के विलयन पृथक् पृथक् शुद्ध जल में बनाए जाएँ, तो वह विलयन सर्वथा स्वच्छ और पारदर्शक होते हैं। पर यदि उनको मिला दिया जाए, तो उनमें कोई ऐसा परस्पर रासायनिक विकार होता है, कि एक अविलेय वस्तु बन जाती है, जो पहले विलयन को कलुषित कर देती है, और पुनः पात्र तल पर शनैः शनैः बैठ जाती है। इस प्रकार दो विलेय द्रव्यों के मेल से एक भिन्न अविलेय वस्तु का बनना और पात्र तल पर शनैः शनैः बैठना अधःपातन (अधः क्षेपण) कहलाता है, और जो द्रव्य पात्र तल पर बैठता है, उसे अधः पात (अधः क्षेप) कहते हैं।

पर्य्याय—अधःपातन—

प्रेसिपिटेशन Precipitation–इं०। तर्सीब–अ०। तहनशीं करना–उ०।

अधःपात—

प्रेसिपिटेट Precipitate–इं०। रूसोब, उकार, इकर अ०। दुर्द, तलछट, तहनशीं–उ०।

अधः पाश्चात्य चक्राङ्ग adhah-pâshchâtya-chakrânga–हिं० संज्ञा पुं० (Postero-inferior gyrus)

अधः पुटः adhah-putah–सं० पुं० चारोली वृक्ष। वै० निघ०।

अधः पुष्पी adhah-pushpí–सं० क्ली० (१)

गोजिह्वा क्षुप सं०। गोभी-हिं०। (Hieracinum) रा० नि० व० ४। (२) चोर पुष्पी तृण विशेष। नीले फूल की एक बूटी जिसे अंधाहोली भी कहते हैं।

संस्कृत पर्य्याय—अवाक्पुष्पी, मङ्गल्या, अमरपुष्पिका। रा०। -हिं० स्त्री० अनंतमूल नामक ओषधि। चोर काँटकी, चोर खड़िका, भाँटुइ, उकड़े, बटिया, लेङरा-बं०। हेटाहुली -गौड़। वै० निघ० सततज्वर, ब्रह्मदण्डी।

अधः प्रस्तरः adhah-prastarah-सं० पुं० तृणासन। वै० निघ०।

अधःशङ्ख चक्राङ्ग adhah-shankha-chakránga हिं० संज्ञा पुं० (Tempero-inferior gyrus).

अधः शयन adhah-shayana-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] पृथ्वी पर सोना।

अधः शल्यः adhah-shalyah-सं० पुं० (१) अपामार्ग क्षुप। (Achyranthes aspera) रा० नि० व० ४। भा० पू० १ भा०। (२) श्वेत अपामार्ग। Achyranthes Indica, *Roxb.* (The white variety of-) वै० श०।

अधः शाखः adhah-shákhah-सं० पुं० संसाराश्वत्थ वृक्ष। वै० श०।

अधः शेखरः adhah-shekharah सं० पुं० श्वेत अपामार्ग। Achyranthes aspera (the white variety of).

अध्मान adhmána-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (Flatulent) रोग विशेष। पेटका अफरना। आध्मान।

इस रोगमें पेट अधिक फूल जाता है, दर्द होता और अधोवायु का छूटना बन्द हो जाता है।

अध्यण्डा adhyandá }
व्यण्डा vyandá } -सं० स्त्री० (१) कपिकच्छु लता। केवाँच, कौंच, वानरी-हिं०। आलकुशी-बं०। (Mucuna pruriens, carpopogon pruriens)-ले०। देखो-आत्मगुप्ता या केवाँच। (२) भूम्यामलकी, भूमि आमला, भूँइँ आँवला। (Phyllanthus niruri). रत्ना०। (३) कोकिलाक्ष-सं०। तालमखाना (Hygrophila spinosa) मद० व० १। भा० पू०। प० मु०।

अध्यर्ध adhyardha-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) डेढ़। (२) वायु जो सबको धारण करने वाली और बढ़ाने वाली है और सारे संसार में व्याप्त है

अध्यर्वुदम् adhyarvudam-सं० क्ली० }
अध्यर्बुद adhyarbuda-हिं० संज्ञा पुं० }
रोग विशेष। जिस स्थानपर एक बार अर्बुद रोग हुआहो उसी स्थान पर यदि फिर अर्बुद हो तो उसे अध्यर्बुद कहते हैं।

यथा—सु० नि० ११ अ०। "यज्जायतेऽन्यत् खलु पूर्वजाते ज्ञेयं तदध्यर्बुदमर्बुदज्ञैः"

अध्यशनम् adhyashanam-सं० क्ली० }
अध्यशन adhyashana-हिं० संज्ञा पुं० }
(१) अजीर्ण पर भोजन करना। यथा-वै० निघ० दिनचर्या०। "अजीर्णे भुज्यते यत्तु तदध्यशनमुच्यते।" पहिला भोजन बिना पचे अर्थात् अजीर्ण रहते हुए और भोजन कर लेना अध्यशन कहलाता है। भा० म० ख० १ भा० अतीसा० चि०। वा० सू० ८ अ०। (२) अजीर्ण। अनपच। (Indigestion).

अध्यक्षः adhyakshah-सं० पुं० (१) क्षीरिका वृक्ष, राजादनी-सं०। खिरनी-हिं०। (Mimusops hexandra) श० र०। (२) महार्कवृक्ष अर्थात् बड़े मदार का पेड़। त्रि० (३) एक मानहै जो आधा कर्ष (१ तो०) के बराबर होता है। सि० य० र० पि० चि० एलादिगुटिका वृन्द।

-हिं० पुं० (१) स्वामी। मालिक। (२) नायक। सरदार। मुखिया। प्रधान। (३) अधिकारी। अधिष्ठाता।

अध्युषितः adhyushitah-सं० पुं० समस्त चक्षु रोग।

त्रि० उपविष्ट। आसीन।

अध्युष्ट adhyushṭa–हिं० वि० पुं० [सं०] बसा हुआ। आबाद।

अध्यूढ़ा adhyúrhá–सं० स्त्री० (Married woman) प्रथम विवाहिता स्त्री। वह स्त्री जिसका पति दूसरा विवाह करले। ज्येष्ठा पत्नी।

अध्रियामणी adhriyámaṇí–हिं० संज्ञा स्त्री० [?] कटार। कटारी। –हिं०।

अध्रुव adhruva–हिं० वि० पुं० [सं०] (१) चल। चंचल। चलायमान। अस्थिर। (२) अनिश्चित। अनित्य।

अध्रुषः adhrushah–सं० पुं० उक्त नाम का तालुगत मुख रोग विशेष। इस रोग में कड़ी सूजन, तालु प्रदेश में अधिक रक्तता, वेदना और ज्वर होता एवं यह रक्तविकार से उत्पन्न होता है। सु० नि० १६ अ०। यह रक्त दोषसे उत्पन्न होता है। इसमें तालु देश में लोहित वर्ण की अति स्थूल सूजन होती है जिससे तीव्र वेदना और ज्वर होता है। मा० नि०।

अध्वगभोग्यः,–ग्यः adhvaga-bhojyah,-gyah–सं० पु० आम्रातक वृक्ष।

अध्वगवृक्षः adhvaga-vrikshah–सं० पुं० (Spondias mangifera) आम्रातक वृक्ष, अम्बाड़ा।

अध्वगक्षमी adhvaga-kshamí–सं० पुं० (१) (See-Khecharah) खेचरः –सं०। (२) पक्षी–सं०, हिं०। (A bird) वै० निघ०।

अध्वगः adhvagah–सं० पुं० (१) (Camel) उष्ट्र–सं०। ऊँट–हिं०। (२) (Donkey) अश्वतर–सं०। खच्चर–हिं०। (३) बटोही, पथिक, यात्री, मुसाफ़िर।

अध्वजा adhvajá–सं० पुं० स्वर्णुलीलुप। See–Svarṇulí रा० नि० व० ४।

अध्वनिषेवणम् adhva-nishevaṇam सं० क्ली० अध्वचलन, भ्रमण। वै० निघ०। See–चंक्रमण (Chankramaṇa).

अध्वरा adhvará–सं० स्त्री० मेदा। (See–Medá.) भा० पू० १ ह० व०।

अध्वशल्यः adhva-shalyah–सं० पुं० अपामार्ग। चिचड़ी। (Achyranthes aspera) रा०।

अध्वशोषः adhva-shoshah–सं०(हिं०)पुं०
अध्वशोषि adhva-shoshi–हिं० संज्ञा पुं०
रोग विशेष। रास्ता चलनेसे उत्पन्न शोष (यक्ष्मा) रोग। नि०।

अध्वसिद्धकः adhva-siddhakah–सं० पुं० सिन्धुवार वृक्ष, सिन्दुवार। See Sindhuvárah. रा० नि० व० ४।

अध्वाण्डशात्रवः adhváṇḍa-shátravah–सं० पुं० श्योनाक वृक्ष–सं०। सलु, सोनापाठा–हिं०। (Calosanthes Indica, or Oroxylum Indicum. *Syn.*-Bignonia Indica.) श० च०।

अध्वान्तं adhvántam–सं० क्ली० सायंकाल (Evening, Eventide).

अध्वः adhvah–सं० पुं० (१) नेत्र वर्त्म, नेत्र पक्ष्म (Eye-lid)। (२) पथ, मार्ग, रास्ता।

अन ana–हिं० क्रि० वि० [सं० अन्] बिना। बग़ैर। वि० [सं० अन्य=दूसरा]

संज्ञा पुं० [सं०] (१) अन्न। अनाज। (२)दमुल् अख़्वैन–अ०। हीरादोखी, ख़ूनाख़राबा –हिं०। Dragon's blood (Dracœna Cinnabar, *Balf. f.*–) फा० इं० ३ भा०।

अन अक्वा सोडियम् क्लोराइड Unaqua Sodium chloride–ले० कालानमक। (Black Salt)–इं०।

अनअसी ana-asi–मेदा। See–Medá.

अन-इक्-कट्ट ana-ik-kaṭṭa–ता० बड़ा कवाँर। अगेविअमेरिकेना (Agave Americana).

अनऋतु ana-ritu–हिं० संज्ञा पुं० [सं० अन्+ऋतु] (१) विरुद्ध ऋतु। अनुपयुक्त ऋतु। वे

मौसिम। अकाल। असमय। (२) ऋतु-विपर्यय। ऋतु के विरुद्ध कार्य।

अ(उ)नक़ āa-āu-naq-अ० (ब० व०) अअ्नाक़ (ब० व०) ग्रीवा। नेक (Neck), सर्विक्स (Cervix)-इं०।

अनकब āanakab-अ० मत्स्यभेद, एक प्रकार की मछली। (A sort of fish).

अनक़र āanaqar-अ० मर्ज़न्जोश। See-Marzanjosh.

अनक़ली āanqali-यु० सलजम।

अनक़लीमन anaqalimana-यु० बहार जिसको हिन्दी में पाथा कहते हैं। यह बाबूना गाव का एक छोटा भेद है। लु० क०।

अनक़वानक़ूस ana-qavánaqúsa-यु० मरीहह् या दोक़। गाजर का बीज अथवा करफ़्स कोहीका बीज। लु० क०।

अनक़िलस anaqilasa-यु० मसूर सदृश एक बूटी है जो उष्ण प्रदेशों में उगती है। लु० क०।

अनक़ीली āana-qili-यु० सलजम।

अनक़ुर्रिह्म āanaqurrihm-अ०, **मह्बिल** Mah-bil-अ० } (Vagina) यद्यपि [अनक़=ग्रीवा+रहिम=गर्भाशय] का शाब्दिक अर्थ गर्भाशय की ग्रीवा है, तो भी प्राचीन तिब्बी परिभाषा में यह योनि के लिए प्रयुक्त होता था। जरायु के साथ इस नाली (योनि) का सम्बन्ध वैसा ही है जैसा कि सुराही का उसकी ग्रीवा के साथ। इसीलिए प्राचीन यूनानी चिकित्सकोंने इसको अनक़ुर्रिह्म नाम से अभिहित किया। उक्त नाली के बहिर्द्वार (छिद्र) या दरार को फ़र्ज और उक्त नाली को मह्बिल या अन्दाम निहानी कहते हैं।

अनक़ुर्रिह्म और रक़्बतुर्रिह्म का भेद—

उपर्युक्त दोनों शब्दों का अर्थ 'गर्भाशय की ग्रीवा' है। परन्तु, अनक़ुर्रिह्म तो योनि के लिए प्रयोग में आता है, पर रक़्बतुर्रिह्म अपने वास्तविक अर्थों में गर्भाशय की ग्रीवा के लिए प्रयुक्त होता है।

आधुनिक मिश्रदेशीय चिकित्सक रक़्बतुर्रिह्म के स्थान में अपने वास्तविक अर्थों में गर्भाशय की ग्रीवा के लिए अनक़ुर्रिह्म शब्द का प्रयोग करते हैं और अनक़ुर्रिह्म के स्थान में मह्बिल शब्द का, जो अधिक उपयुक्त एवं यथार्थ है।

नोट—डॉक्टरीमें अनक़ुर्रिह्म या गर्भाशयकी ग्रीवा के अर्थमें रक़्बतुर्रिह्म को सर्विक्स युटराइ (Cervix Uteri) और मह्बिल या अन्दाम निहानी अर्थात् योनि के अर्थ में अनक़ुर्रिह्म को वेजाइना (Vagina) कहते हैं।

देखो-योनि।

अनक़ूद ana-qúda-फ़ा०, यु० काली तुलसी। नमाम। लु० क०।

अनक़ूद āana-qúda-अ० सुशा। एक पौधा है। लु० क०।

अनक़ून ana-qúna-यु० सदा गुलाब। लु० क०।

अनक़ूस ana-qúsa-यु० नाशपाती लु० क०। (Pyrus communis).

अनकंप ana-kampa-हिं० संज्ञा पुं० देखो-अकंप।

अनक् कालिक anak-kálika-वृश्चिपर्णी।

अनगना anaganá-हिं० संज्ञा पुं० गर्भ का आठवाँ महीना।

अनग्ना anagná-सं० स्त्री० }
अनग्निका anágniká सं० स्त्री० } कपास -हिं०। कार्पासी-सं०। (Gossypium herbaceum, *Linn.*) इं० मे० मे०।

अनघः anaghah-सं० पुं० }
अनघ anagha-हिं०संज्ञा पुं० } सफेद सरसों -हिं०। गौर सर्षप-सं०। (Brassica juncea) रा० नि० व० १६। हिं० त्रि० पवित्र, शुद्ध।

अनघुल anaghula-हिं० वि० अविलेय (Insoluble).

अनघ्नः anaghnah-सं० पु० श्वेतसरसों-हिं०। गौर सर्षप-सं०। (Brassica juncea) वै० निघ०।

अनङ्गम,-कम् anngam,-kam-सं० क्लो० मन। (Mind) श० र०।

अनङ्गनिगड़ोरसः ananganigaro rasah -सं० पुं० ताम्बा, हीरा, मोती, हरताल, वैक्रांत (तुरमली), सूर्यकांत, माणिक्य इनकी भस्म, सोना, चाँदी, सोनामाखी और अभ्रक सत्व प्रत्येक समानभाग और सबके बराबर पारा और पारा मिलाकर सबके बराबर गंधक मिश्रित कर कपास के फूलों के रस से तीन भावना देकर सुखा लें। फिर आतशी शीशी में बन्द कर बालुका यंत्र में क्रम से मन्द, मध्य और तीव्र अग्नि से तीन दिन पकाएँ। फिर शीतल होने पर निकालें और सोलहवाँ भाग विष, काली मिर्च, कपूर, वंशलोचन, जावित्री, लवङ्ग और कस्तूरी की भावना दें तो यह सिद्ध होता है। मात्रा-१ रत्ती। गुण-दूध मिश्री के साथ खाने से नपुंसकता दूर होती है। रस० यो० सा०।

अनङ्ग मेखला गुटिका ananga mekhalá guṭiká-सं० स्त्री० देखो-परिशिष्ट भाग।

अनङ्गमेखलामोदकः anangamekhalá modakah-सं०पुं० देखो-परिशिष्ट भाग।

अनङ्ग वर्द्धकोरसः anangavarddhakorasah-सं० पुं० पारा और धत्तूर बीजको सम भाग ले, धत्तूरके बीजको तेल डाल कर खरल में घोटें, पुनः गंधक द्विगुण भाग मिला बारीक घोट कर रख लें। इसमें पारे की भस्म (चन्द्रोदय) मिलानी चाहिए। मात्रा-१-३ रत्ती। गुण-इसके सेवन से मनुष्य कामान्ध हो जाता है। रस० यो० सा०।

अनङ्ग सुन्दर रसः ananga-sundara-rasah-सं० पुं० वाजीकरणाधिकारोक्त रस विशेष। यथा-एक पल पारा और एकपल गंधक को तीन दिन तक लाल कमल के रस की भावना दें। तत्पश्चात् इसको प्रहर भर बालुकायंत्र में पकाएँ। पुनः उतार कर एक दिन रक्त अगस्त पुष्प रस तथा श्वेत कमल के रस में भावना दें। र० सा० सं०।

अनङ्गसुन्दरो रसः anangasundarorasah -सं०पुं० (१) पारा २ पल, गंधक २ पल, सुवर्ण भस्म १ कर्ष, ताम्रभस्म १ पल, चाँदी भस्म ४ निष्क। सबको एकदिन तक पंचामृत अर्थात् गिलोय, गोखरू, मूसली, मुण्डी और शतावरीके रसमें घोट कर बेर प्रमाण गोलियाँ बनाएँ। गुण-यह अत्यन्त पौष्टिक है। रस० मं०।

(२) शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक समान भाग लेकर तीन दिन तक कुमुदिनी के रस से भावना दें। पुनः सम्पुट के भीतर रखकर बालुका यंत्र में पकाएँ, फिर निकाल कर लाल रंग के अगस्त और सफेद कमल के रस से पृथक् पृथक् भावना देकर रक्खें।

मात्रा-३ रत्ती। इसके सेवन से मनुष्य १०० स्त्रियों से रमण करने की शक्ति प्राप्त कर सकता है। रस० यो० सा०। इस नाम का दूसरा योग र० मं०, रसायन सं० वाजीकरण प्रकरण में लिखा है।

अनङ्गुरः anangurah सं० पुं० बिना अंगुली वाला। अथर्व०। सू० ६। २२। का० ८।

अनचण्डई ana-chandai-ता० मोलक्-काय -ते० (Solanum Ferox)-इं० मे०मे०।

अनचन्द्र ana-chandra ते० अनसंड। (Acacia Ferruginea, *D. C.*) -ले०। स० फा० इं०।

अनज़ áanaz-अ० बकरी, छागी। (A she-goat). लु० क०।

अनजल्ली ana-jallí-ता० रानफनस-मह०। वन्य पनस, जंगली कटहल। Artocarpus Hirsuta, *Lam.*। फा० इं० ३ भा०।

अनजान anajána-हिं० संज्ञा पुं० (१) एक प्रकार की लम्बी घास जिसे प्रायः भैंसे ही खाती हैं और जिससे उनके दूध में कुछ नशा आ जाता है। (२) अज्ञान नाम का पेड़।

अनटीपण्डु anaṭí-paṇḍu-ते० केला, कदली। (Musa paradisiaca, *Linn.*) फा० इं० ३ भा०।

अनडुज्जिह्वा anaḍu-jjihvá-सं० स्त्री० गोजिह्वा,

गोभी-हिं० । गोजिया शाक-बं० । रा० नि० व० ४ । (Elephantopus, Scaber.)

अनडुह anaḍuha-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] बैल । वृष । (An ox).

अनडुही anaḍuhí-सं० (हिं० संज्ञा) स्त्री० स्त्री गवि । गाय । (A cow) देखो-गाय ।

अनड्वान् anaḍván-सं० पुं०, हिं० संज्ञा पुं० (A bull, an ox) वृष-सं० । बैल साँड़-हिं० । इसके पर्याय-बलीवर्द, वृषभ, वृष, अनड्वान्, सौरभेय, गौ, उक्षा और भद्र ये बैल के संस्कृत नाम हैं । भा० पू० । रत्ना० । (२) the Sun सूर्य । (उपनि०) ।

अनड्वाही anaḍváhí-सं० स्त्री० (A cow), स्त्री गवि-सं० । गाय-हिं० । इसके पर्याय-सुरभि, सौरभेयी, माहेयी और गौ ये गायके संस्कृत नाम हैं । हला० ।

अनणुः ananuh-सं० पुं०, क्ली० सूक्ष्म धान्य । सरुधान-बं० । वै० निघ० ।

अनत anata-हिं० वि० [सं०] न झुका हुआ । सीधा ।

अनत्रजनीय anatra-janíya हिं० वि० (Non-nitrogenous) नत्रजन विहीन । वे पदार्थ जिनमें नत्रजन नहीं होती जैसे-वसा (चरबी), शर्करा (शकर), श्वेतसार (मांड़),

अनद्यः anadyah-सं० पुं० गौरसर्षप-सं० । श्वेत सरसों-हिं० । (Brassica juncea). रा० ।

अनद्यतन anadyatana-हिं० वि० [सं०] अद्यतन के पहिले वा पीछे का ।

अननस ananas-म० । देखो अनन्नास ।

अननाश ananásha-बं० छोटा घीकुवार, छोटी ग्वार-हिं० । (Aloe litoralis) इं० मे० मे० ।

अननास ananása-हिं०, मल०, मह०, गु० अनन्नास, अनरस-हिं० । (Ananas sativus) इं० मे० मे० ।

अनन्तकः anantakah सं० पुं० (१) मूलक, मूली । (Raphanous sativus). (२) नलतृण-सं० । नरकट-हिं० । Phragmites karka । मद० व० १ ।

अनन्त गुण मण्डूरम् anantaguṇa mandúram-सं० क्ली०(नवायस मण्डूर)गन्धक, सुहागा, पारा, त्रिकुटा, त्रिफला पृथक् पृथक् सम-भाग लें और सर्व तुल्य लोह किट्ट शुद्ध मिलाएँ । पुनः सब से दूने गोमूत्र में पकाएँ और फिर सर्व तुल्य पुरातन गुड़ मिलाकर घोटें । मात्रा—८ माशे । पथ्य छाँछ और चावल खाना चाहिए ।

गुण—इसके सेवन से चय और पांडुरोग का नाश होता है । र० ० सा० ।

अनन्त मूलम् anantamúlam-सं० क्ली० (१) करालाख्य औषध । देखो-कराल । (२) सुगंधा । (३) वचा भेद । श० चि० । (४) अनन्ता । देखो- शा(सा-)रिवा ।

अनन्तमूली ananta-múlí-सं० क्ली० । (१) दुरालभा । (Alhagi Maurorum) । (२) रक्तदुरालभा Alhagi maurorum (the red variety of-) वै० निघ० ।

अनन्तरन्ध्रका ananta-randhraká- सं० स्त्री० खर्पर पोलिका । आस्के पिटे-बं० । वै० निघ० ।

अनन्तवातः ananta-vátah- सं० पुं० उक्त नाम का शिरोरोग विशेष । लक्षण जिसमें तीनों दोष कुपित होकर मन्या (गर्दन) की नाड़ी को तीव्र पीड़ा समेत अति पीड़ित कर, चक्षु, भौंह कनपटी में शीघ्र जाकर विशेष स्थिति करते हैं, और गण्ड स्थल की बगल में कंप, ठोंड़ी की जकड़न और नेत्र रोगों को करते हैं । इन तीनों दोषों से उत्पन्न हुए शिर रोग को "अनन्तवात" कहते हैं । मा० नि० ।

अनन्तः anantah-सं० पुं०,(१) दुरालभा । (Alhagi maurorum) वै० निघ० २ भा०, अनन्तादि चूर्णोक्त,सर्व्वज्वर प्रकरणोक्त । (२) सिन्धुवार वृक्ष अर्थात् सम्हालू (Vitex negundo) । (३) अभ्रक धातु । Talc (Mica). रा० नि० व० १३ । (४) आकाश ।

अनन्ता anantá-सं० (हिं० संज्ञा) स्त्री० (१) उक्त नाम की प्रसिद्ध लता विशेष। अनन्तमूल -हिं०, बं०। सु० मिश्र० अ०। उत्तर में यह शारिवा नाम से प्रसिद्ध है। रा० नि० व० १२। देखो-(शा-)सारिवा तथा श्यामलता (Sárivá)। च० द० पि० ज्व० चि० शिरोलेप। "कालेय चन्दनानन्ता।" भा० म० ख० ४ भा० गर्भ-चि०। "अनन्ता शारिवा रास्ना।" भा० म० ख० १ भा० ज्वर० शारीवादि। "अनन्ता बालकं मुस्तम्।" च० सू० ४ ३१ दश०। (२) दूर्वा, दूब। (Cynodon Dactylon)। हे० च० ४। (३) स्वर्ण-क्षीरी। भंभाँड़। सत्यानाशी। (Agremone Mexicana)। प० मु०। लाङ्गली, करियारी का पौधा। विषलाङ्गली-बं०। (Gloriosa Superba)। प० मु०। भा० पू० १ गु० व०। (५) दुरालभा, जवासा (Alhagi Maurorum)। प० मु०। भा० म० ख० ४ भा० मु० रो० चि०। "कल्कैरनन्ता खदिरारिमेद्······।" वा० १५ अ०, प्रियङ्ग्वादि-व०। प्रियङ्ग्वादि-दूर्व्वादि-व हेमा तथा अरुणा। "दूर्व्वानन्त निम्नवासात्मगुप्ता पथ्याद्र-ओ योजन वल्ल्यनन्ता।" (६) नीलदूर्व्वा। भा० पू० १। रा०नि० व० २३। (७) गोलोमी श्वेत दूर्व्वा। रा० नि० व० ८। (८) यवासा। (Alhagi Maurorum) भा० म० ४ भा० काकोल्यादि० व०।

"अनन्तां कुकुटी विम्बीम्।" दुरालभा के अभाव में यवासा ग्रहण करना चाहिए। (६) अग्निमन्थ।,अरणी (Premna Serratifolia)। (१०) गुडूची, गुरुच। (Tinospora Cordifolia)। (११) पीपर।

अनन्तामल anantámala-सं० हरताल। (Yellow orpiment).

अनन्तो ananto-बं० उश्बा।-हिं० सालसा, कपूरी। Hemidesmus Indicus, *R. Br.* (Country Sarsaparilla). स० फा० इं०।

अनन्तोमूल ananto-múla-बं० उश्बा। देखो-शारिवा। (Crountry Sarsaparilla). स० फा० इं०।

अनन्नास anannás-हिं० संज्ञा पुं० [ब्रैज़िलियन (अमेरिकन) नानस, पुर्त० अनानास] अनानास। अनन्नस, अनानास-द०। अनन्नास, पारवती, कौतुक-संज्ञक-सं०। अनानाश (स), अनारस, अनानस-बं०। ऐनुन्नास-अ०, फा०। अनानास सेटिवस (Ananas Sativus, *mill, Linn.*)-ले०। पाइन एप्ल (Pine apple)-इं०। अनानास (Ananas) -फ्रां०, पुर्त०, अमे०। अनाशप्-पज़म्,परङ्कि-थलई-ता०। अनासु-पण्डु, अननाश-पण्डु-ते०। कैत-चक्क, परङ्कि-चक्क-मल०। अनानसु हण्णु, अनासु, परङ्कि-काई-कना०। अन्निमस, अनारस, अनन्नास-गु०। अननस, अन्नास, औनास -मह०। अन्नासि-सिं०। नन्न-सी, नन्ना-सी -ब्र०।

अनन्नास वर्ग।

(*N. o. Bromeliaceæ.*)

उत्पत्ति स्थान—समस्त भारतवर्ष, प्रधानतः समग्र पूर्वी देशों में इसकी खेती होती है। अमरीका।

नामविवरण—इसकी बहुशः वर्नाक्युलर संज्ञाएँ अमेरिकन अनासी तथा नानस संज्ञा से व्युत्पन्न हुई हैं।

इसकी मालाबारी संज्ञा परङ्कि-चक्क का अर्थ युरूपीय कटहल (European jack fruit) है।

वानस्पतिक वर्णन—राम बाँस की तरह का एक पौधा जो दो फुट तक ऊँचा होता है। यह पौधा घृतकुमारी के समान द्विवर्षीय होता है। किन्तु, इसके पत्र अत्यन्त पतले होते हैं जिनकी रचना कठोर तन्तुओं से हुई होती है। पौधे के मध्य भाग से निकले हुए लघु प्रकांड पर छिलकेदार गावदुमी शक्ल की बालियाँ लगती हैं। जिन पर फल उत्पन्न होते हैं।

इनके ऊपर बहुत से छोटे छोटे कंटकमय पत्र होते हैं जिनको ताज कहते हैं। उन गावदुमी बालियों में बहुसंख्यक क्षुद्र नीले रंग के पुष्प आते हैं। पुष्पाभ्यंतर कोष त्रिपटल (तीन पंखड़ी युक्त) एवं पुष्पबाह्य कोष त्रिभाग युक्त होता है। पुष्पित होने के बाद ये क्रमशः मोटे और लम्बे होते जाते हैं और रस से भरे होते हैं। यह अंकुर पिंड नागरंग पीत वर्ण का एवम् खटमीठा स्वाद युक्त होता है।

रासायनिक संगठन—ब्युटिरेट ऑफ़ इथिल (Butyrate of ethyl) को ८ वा १० भाग स्पिरिट ऑफ़ वाइन के साथ योजित करने से अनन्नास का एसेंस प्रस्तुत होता है। अनन्नास स्वरस में प्रोटीड-पाचक सन्धान (अभिषव) होता है। तीन फ्लुइड आउंस यह स्वरस १० से १५ ग्रेन घनीभूत ऐल्ब्युमीन को पचा देता है। क्षार तथा अम्लीय घोलों (विलयन) में इसका समान और न्युट्रल (उदासीन) द्रवोंमें सर्वोत्तम प्रभाव होता है। स्वरस में एक भाँति का दधि-प्रवर्तक संधान (अभिषव) होता है।

भस्म में स्फुरिकाम्ल तथा गंधकाम्ल, चून मग्न, शैलिका, लौह और पांशु हरिद् एवं मैग्नहरिद् आदि होते हैं।

प्रयोगांश—पक्व वा अपक्व फल और पत्र।

औषध-निर्माण—तैल, स्वरस का एसेंस और पत्र का ताज़ा रस।

इतिहास, प्रभाव तथा उपयोग—

अमेरिका के दर्याफ़्त होने से पूर्व भारतीयों को अनन्नास का ज्ञान न था। सर्व प्रथम युरूप निवासियों को इन्डीज़ (१५१३) द्वारा इसका ज्ञान हुआ और सन् १५६४ ई० में पुर्तगाल निवासी ब्रैज़ील से इसको भारतवर्ष में लाए। अबुल्फ़ज़ल ने आईने अकबरी में इसका उल्लेख किया है। दार शकोह के लेखक ने भी इसका वर्णन किया है।

र्‍हीडी (Rheede) के कथनानुसार मालाबार में इसके पत्र को चावल के धोवन में उबाल कर इसमें (Pulvis Balcari) योजित कर जलोदरी को जल से मुक्ति प्राप्त करने के लिए व्यवहार कराते हैं। अपक्व फल सिरका के साथ गर्भपात कराने तथा उदरस्थ आध्मान को दूर करने के लिए व्यवहार किया जाता है।

मख़्ज़नुल् अद्वियह के लेखक मीर मुहम्मद हुसैन लिखते हैं—अनन्नास दो प्रकार का होता है—(१) साधारण और (२) क्षुद्र जो अत्यंत मधुर एवं सुस्वादु होता है। प्रकृति-सर्द व तर द्वितीय कक्षा में (किसी किसी के मत से १ कक्षा में उष्ण और २ कक्षा में तर है)। **हानिकर्त्ता**-सर्द व तर प्रकृति को, स्वर यंत्र तथा श्वासोच्छ्वास सम्बन्धी अवयवों को। **दर्पघ्न**-लवण तथा आर्द्रक का मुरब्बा (किसी किसी ने शर्करा वा सोंठ का मुरब्बा लिखा है)। **प्रतिनिधि**-सेब या बिही प्रभृति। **मुख्य कार्य**-पित्त (उष्ण) प्रकृतिको लाभप्रद है (कफज प्रकृति को नहीं)। **शर्बत की मात्रा**—२ तो० से ४ तो० तक।

गुण, कर्म, प्रयोग—अनन्नास पित्त की तीक्ष्णता का शामक और यकृत्, उष्ण आमाशय को शक्तिप्रद एवं विलम्ब पाकी है। आह्लादकर्ता (हृद्य) और हृदय को बल प्रदान करता एवं मूर्च्छा को दूर करता है। उष्ण व रूक्ष प्रकृति वालों के लिए बल्य एवं हृद्य है। इसके शर्बत, मुरब्बा, मिठाई और चटनी आदि पदार्थ बनाए जाते हैं। इसके मीठे चावल भी पकते है और यह अत्युत्तम आहार है।

इसकी शीतलता को कम करने के लिए इसके बारीक बारीक परत काट कर प्रथम उसको नमक के पानी से धोकर पुनः स्वच्छ जल से धोना चाहिए। फिर उस पर शर्करा एवं गुलाब जल छिड़क कर व्यवहार करना चाहिए। कहते हैं कि किंचित् सोंठ का चूर्ण मिलाने से भी वह उत्तम हो जाता है।

अनन्नास मस्तिष्क एवं आमाशय को बलप्रद और निर्बल तथा शीत प्रकृति को बल प्रदान करता है। म० अ०। तु०।

नोट—मख़्ज़न में अपक्व फल एवं उसके पत्र

के औषधीय उपयोग के सम्बन्ध में कोई वर्णन नहीं आया है।

अनन्नास पत्र का ताज़ा रस मराक्र कृमिघ्न और शर्करा के साथ विरेचक है। पक्क फल का रस स्कर्वीहर (Anti-scorbutic). मूत्रल, स्वेदक, मृदुभेदक और शैत्यकारक है तथा गेल्ब्यु-मिनीय पदार्थों के पचाने में सहायता पहुँचाता है। अपक्क फल का रस अम्ल, रक्तावरोधक, सशक्त मूत्रल और कृमिनाशक तथा रजः प्रवर्त्तक है। अधिक परिमाण में यह गर्भपातक है।

हिक्का प्रशमनार्थ इसके पत्तों का ताजा रस शर्करा के साथ व्यवहार में आता है। यह विरेचक भी है।

पक्क फल का रस ज्वरजन्य आमाशयिक क्षोभ को शांत करता है। कामला (Jaundice) में भी यह उपयोगी है।

अधिक परिमाण में अपक्क फल का रस गर्भाशयिक आकुञ्चन उत्पन्न करता है। अस्तु, गर्भवती स्त्रियों को इससे सख्त परहेज करना चाहिए।

अनन्नास का तेल या एसेन्स मिठाई बनाने में उसे सुस्वादु करने के लिए व्यवहृत होता है। यह जमेइक मद्य (Jamaica rum) को स्वाद प्रदान करने में भी व्यवहृत होता है। अनन्नास जैम बनाने में प्रयुक्त होता है। इं० मे० मे०।

इसके पत्र कृमिघ्न और फल गर्भशातक हैं।
(इं० ड्र० इं० पृ० ४६१)

भारतीय मेडिकल अफसरों की मुख्य सम्मतियों से, जिसका डिक्शनरी ऑफ़ एकॉनोमिक प्रॉडक्ट ऑफ़ इण्डिया (१०, २३८) में वर्णन आ चुका है, यह प्रगट होता है कि समग्र भारतवर्ष के दिहातियों में इसके पत्र एवं अपक्क फल के गर्भशातक प्रभाव में सामान्यतः विश्वास है। फा० इं० ३ भा० पृ० ५०६।

अनन्यज ananyaja-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव। (Cupid).

अनन्यपूर्वा ananyapúrvá-हिं० स्त्री० [सं०] (१) जो पहले किसी की न रही हो। (२) कुमारी। क्वारी। बिन ब्याही। (Virgin).

अनपकाय anapakáya-ते० कडुई तुम्बी, लौकी। (Lagenaria Vulgaris). इं० मे० मे०।

अनपच anapacha-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अन्=नहीं+पच=रचना] अजीर्ण। बदहज़मी। (Indigestion).

अनपत्य anapatya-हिं० वि० [सं०] [स्त्री० अनपत्या] निःसन्तान। लावल्द।

अ(इ)नब áanaba-अ० द्राक्ष फलम्-सं०। अंगूर, दाख-हिं०। Vitis Vinifera, Linn. (Fruits of-Grapes) स० फा० इं०।

अनब anaba-अ० बैंगन, भाँटा। (Solanum Melongana)

अनबहे-हिन्दी áanabahe hindí-अ०, फ़ा० पोपैया, पपीता-हिं०। अरंड खर्बूज़ा-सं०। देखो- **अरण्डखरबूज़ा**। Carica Papaya, *Linn.* (Fruit of) स० फा०-इं०।

अनबा áanabá-एक हिन्दी पौधा है जिसका फल गूगल सदृश होता है।

अनबिंधा anabidhá-हिं० वि० [सं० अ+बिद्ध] बिना बेधा हुआ। बिना छेद किया हुआ।

अनबुझा चूना anabujhá-chúná-उ०, हिं० चूर्णम् सं०। कलीका चूना, अशांत चूर्ण-हिं०। अनस्लेकड लाइम् Unslaked-lime-इं०।

अनबुल्जन áanabuljan-अ० फ़ाशरा।

अनबुत्थालिब áanabutthálib-यु० मकोय। (Solanum Dulcamara, Linn.) फा०-इं० २ भा०।

अनबुद्दुब áanabuddub-अ० एक छोटे पौधे का फल है जो बेर के बराबर, गोल एवं रक्तवर्ण का होता है और गुच्छों में लगता है। पत्ते अनार के पत्ते के सदृश होते हैं।

अनबुल्हियह् ánabul-hiyah-अ० हज़ार-जशान या कबर का फल।

अ(इ)नबु..स्स्.अ्लब āanabus-saālab–अ० मको (काला वा लाल)। (Solanum nigrum, *Bl.* or solanum rubrum, *Mill.*) स० फा० इं०। Nightshade–इं०।

अ(इ)नबु..स्स्.अ्लबे-अस्वद āanabus-saālabe-asvad–अ० मको, काला मको। (Solanum nigrum, *Bl.* not *Linn.*) स० फा० इं०।

अ(इ)नबु..स्स्.अ्लबे-अह्.मर āanabus-saālabe-aḥmar–अ० मको, लाल मको। (Solanum rubrum, *Mill.*) स० फा० इं०।

अनबु..स्स्.अ्लबे-कबीर āanabus-saālabe-kabíra–अ० बेलाडोना। सूची पं०–पं० प्लां०। Great Morel–इं०। म० अ० डॉ० १ भा०।

अनबु..स्स्.अ्लबे-मुखद्दिर āanabussaālabe-mukhaddir–अ०बेलाडोना। (Belladona).

अनबु..स्स्.अ्लबे-मुजन्निन āanabus-saāla.be-mujannina–अ० बेलाडोना। डेड्ली नाइटशेड (Deadly nightshade)–इं।

अनबु..स्स्.अ्लबे-मुनव्विम् āanabus-saālabemunavvim–अ० बेलाडोना।

अनबु..स्स्.अ्लबे-मुहलिक ānabus-saālabe-muhlika–अ० बेलाडोना। डेड्ली नाइटशेड (Deadly Nightshade) इं०।

अनबेधा anabedhá–हिं० वि० दे० अनबिंधा।

अनब्याह anabyáhá–हिं० वि० [सं० अन=नहीं+हिं० ब्याहा] (Unmarried) बिना ब्याहा। क्वाँरा। अविवाहित।

अनभिलाषः anabhi-láshah–सं० पुं० अनिच्छा,अरोचक,अन्नविद्वेष, अरुचि। (Aversion, dislike, want of appetite) रा० नि० व० २०।

अनम् āanam–अ० गुलनार। शकरदारी।

अनमद anamada–हिं० वि० [सं० अन+मद] मद रहित। अहंकार रहित। गर्वशून्य।

अनमना anamaná–हिं० वि० [सं० अन्य-मनस्क] [स्त्री० अनमनी] बीमार। अस्वस्थ।

अनमल anamal–बाकला।

अनमिल anamila–हिं०वि० [सं० अन=नहीं+मिल=मिलना] (१) बे मेल। (२) पृथक्। भिन्न अलग। निर्लिप्त।

अनमिलत anamilata–हिं० जो मिलती न हो।

अनमीलना anamílaná–हिं० क्रि० स० [सं० उन्मीलन=आँख खोलना] आँख खोलना।

अनमीवः anamívah–सं० पुं० अमीव, रोगरहित,रोगोत्पादक कीड़ोंसे रहित। अथर्व०। सू० २६। ६। का० २।

अनमेल anamela हिं० वि० [सं० अन+हिं० मेल] बिना मिलावट का। विशुद्ध। ख़ालिश।

अनयन anayana–हिं०वि० [सं०] नेत्रहीन। दृष्टिहीन। अंधा।

अनरनिया anaraniyá–यु० विलायती कासनी।

अनरब āanarab–सुमाक़। (Sumach.)

अनरस anaras–बं०, हिं० (१) अननास। Ananas Sativus, *Mill.* (Pine apple)। (२) जो रस रसनेन्द्रिय द्वारा स्पष्ट रूप से मालूम नहीं होता उसे अनरस या 'अनुरस कहते हैं। देखो—अनुरसः।

अनरस anarasa–हिं० संज्ञा पुं० [सं० अन=नहीं+रस] (१) रसहीनता। विरसता। शुष्कता। (२) रुखाई। कोप। मान।

अनरसा anarasá–हिं० वि० [सं० अन+रस] अनमना। माँदा। बीमार। –संज्ञा पुं० दे० अँदरसा।

अनराफेनूस anaráfenúsa–यु० एक बूटी है जिसके पत्ते गन्दना के समान होते हैं।

अनरुचि anaruchi–हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० अन+रुचि] (१) अरुचि। घृणा। अनिच्छा।

(२) भोजन अच्छा न लगने की बीमारी। मन्दाग्नि।

अनरूप anarúpa-हिं० वि० [सं० अन्=बुरा+रूप] (१) कुरूप। बदसूरत। (२) असमान। अतुल्य। असदृश।

अनर्जल anarjala-काश० आइरिस सोसन। Iris sosan (Iris Ensata).

अनलः analah-सं० पुं० } (१) चित्रक क्षुप,
अनल anala-हिं० संज्ञा पुं० }
चीता। (plumbago zeylanica). रा० नि० व० ६। भा० पू० १ भा० ह० व०। च० द० संग्रहणी चि० पाठादि चूर्ण। (२) लाल चीता, रक्त चित्रक। (Plumbago Rosea) र० सा० सं०। (३) भिलावाँ, भल्लातक वृक्ष। (Semecarpus anacardium.) रा० नि० व० ११। (४) पित्त। (Bile) रा० नि० व० २१। (५) देव धान्य। मद० व० १०। (५) अग्नि, आग (Fire).

अनलम् analam-सं० क्लो० भिलावाँ का बीज। semecarpus Anacardium (seeds of-) "अनल मरिच दूर्व्वा" भैष० कुष्ठ चि०।

अनलचूर्ण analachúrna-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] बारूद। दारू।

अनलनामा analanámá-सं० पुं० चित्रक वृक्ष, चीता। (Plumbago Zeylanica) वै० श०।

अनलपंख analapankha } -हिं० संज्ञा
अनलपक्ष analapaksha } पुं० [सं०]
एक चिड़िया। इसके विषय में कहा जाता है कि यह सदा आकाश में उड़ा करती है और वहीं अंडा देती है। इसका अंडा पृथ्वी पर गिरने से पहिले ही पक कर फूट जाता है और बच्चा अंडे से निकल कर उड़ता हुआ अपने माँ बाप से जा मिलता है।

अनलप्रभा anala-prabhá-सं० स्त्री० ज्योतिष्मती लता। मालकांगुणी (Cardiospermum halicacabum)। रा०नि०व० ३।

अनलमुख anala-mukha-हिं० वि० [सं०] जिसका मुख अग्नि हो। जो अग्नि द्वारा पदार्थों को ग्रहण करें। -संज्ञा पुं० (१) चित्रक,चीता। (Plumbago Zeylanica)। (२)भिलावाँ (Semecarpus Anacardium).

अनलरसः analarasah-सं पुं० पारे को तामेकी सफेद भस्मके साथ घोटकर पिप्टी बनाएँ। पुनः उस पिष्टी के बराबर गंधक मिलाकर घोंटें।

फिर पाठा, बच, कलिहारी, चित्रक, धत्तूर, थूहर और आक के रस से पृथक् पृथक् पुट दें तो यह अनल नामक रस सिद्ध हो। मात्रा-३ रत्ती।

गुण—इसे पीपल तथा गुड़ के साथ देने से गुल्म का नाश होता है। र० यो० सा०।

अनलविवर्द्धनी anala-vivarddhaní-सं० स्त्री० कर्कटिका-सं०। ककड़ी-हिं०। (A kind of cucumber) वै० श०।

अनलसूतेन्द्रो रसः analasútendrorasah -सं० पुं० शुद्ध पारा १ भाग, गंधक २ भाग, इनकी कज्जली करें। फिर विष्णुक्रान्ता, बच, पाठा, कलिहारी, मालकांगनी अथवा आकाशबेल और तितली (पीत वेणी) इनके रसों से पृथक् पृथक् एक एक दिन भावना दें। पुनः सबके रसों को मिलाकर १५ दिन तक बारीक घोंटें। फिर २ रत्ती प्रमाण की गोलियाँ बनाएँ।

सेवन विधि तथा गुण—घी, अदरख, या सम्हालू के रसके साथ खाने से घोर गुल्मका नाश होता है। र० यो० सा०।

अनली लिन्(लिः) anlí,-lina,-lih-सं०पुं० वक वृक्ष-सं०। अगस्त वृक्ष, अगस्तिया-हिं०। (Agati grandiflora) त्रिका०।

अनल्गे(जे)सिक analgesic-इं० अङ्गमर्दप्रशमनम्, वेदना शामक, पीड़ाहर। (Anodyne).

अनल्गेसिया analgesia-इं० अवसन्नता, स्पर्शाज्ञता। (Anæsthesia).

अनल्जीन analgen-इं० बेञ्ज् अनलजीन Benz-analgen, क्विन अनलजीन। (Quin-analgin) अवसन्नीन-हिं०। मुख़द्दिरीन-तिं०।

नॉट आफ़िशल

(*Not official.*)

लक्षण—यह एक श्वेत स्वादार, गंध रहित एवं स्वाद रहित चूर्ण है, जिसका रासायनिक संगठन और गुणधर्म एवं प्रभाव फेनेसीटीन के समान होता है। पर इसमें फेनोल के सिवाय क्विनोमीन का ऑकड़ा होता है।

घुलनशीलता—यह जलमें नहीं घुलता तथा ईथरमें भी करीब करीब नहीं घुलता और शीतल या उष्ण अलकुहाल (मद्यसार) में भी अति न्यून घुलता है। परन्तु, क्लोरोफॉर्ममें किसी प्रकार अधिक घुलता है।

प्रभाव—व्यथाशामक (वेदना नाशक)।

मात्रा—७॥ से १५ ग्रेन पर्यन्त (½ से १ ग्राम तक)।

अनवगाह anavagáha-हिं० वि० [सं०] [संज्ञा अनवगाहिता] अथाह। गंभीर। बहुत गहरा।

अनवगाहिता anavagáhitá-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] गंभीरता। गहराव।

अनवगाह्य anavagáhya-हिं० वि० दे० अनवगाह।

अनवच्छिन्न anavachchhinna-हिं० वि० [सं०] (१) अखंडित। अटूट। (२) पृथक् न किया हुआ। जुड़ा हुआ। संयुक्त।

अनवद्यरागः anavadyarágah-सं० पुं० माणिक्य भेद। केशर के रंग का एक प्रकार का मणि विशेष। कौटि० अर्थ०।

अनवम बीजी anavam-bíjí-अ० मुनक्का। (Dried grapes)

अनवय anavaya-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अन्वय] वंश। कुल। खानदान।

अनवस्थानः anavasthánah-सं० पुं० वायु। (Air) रा०।

अनवस्थित चित्तत्वम् anavasthita-chittatvam-सं० क्ली० (१) वायु रोग। (Nervous disease) वै० निघ०। (२) चित्तचांचल्य, उद्विग्नमन, चित्त की चञ्चलता (अस्थिरता)। (Restlessnes).

अनशनम् anashanam-सं० क्ली०
अनशन anashana-हिं० संज्ञा पुं०
लङ्घन, उपवास। (A fast, fasting) मा० नि०। अन्नत्याग। निराहार।

अनसखरी anasakharí-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० अन्=नहीं+हिं० सखरी] निखरी। पक्की रसोई। घी में पका हुआ भोजन।

अनस्थेटिक anæsthetic-इं० अवसन्नता-जनक, कायस्पर्शाज्ञताजनक। सुन्न करने वाला।

अनस्थेशिया anæsthesia-इं० अवसन्नता।

अनस्थेसीन anæsthesine-इं० इसको अजीर्ण रोग में ५ से १० ग्रेन की मात्रा में कीचट्स में डालकर देते हैं।

अनस्लैकड-लाइम unslaked-lime-इं० चूना। अनबुझा चूना। कली का चूना। अशांत चूर्ण। (Quicklime).

अनहद्नाद anahada-náda-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अनाहतनाद] योग का एक साधन।

अनहाइड्रस वल-फैट anhydrous-wool-fat-इं० सरेस (Gluten).

अनक्षः anakshah-सं० त्रि० अंध, अंधा। (Blind).

अनक्षि anakshi-सं० क्ली० कुचक्षु, कुत्सित चक्षु।

अनाक् áanáq-अ० बकरीका बच्चा। (A Kid).

अनाकर anákar-कुस्तु० अनाग़ालुस। See–Anághálus.

अनाकार्डिअम् anacardium-लै० भल्लातक।

अ(ए)नाकार्डिअम् आक्सिडेण्टेली anacardium occidentale, *Linn.* (Nut of Cashew nut)-लै० काजू। स० फॉ० इं०। फॉ० इं० १ भा०। मेमो०। See–Kájú.

अ(ए)नाकार्डिअम् लैटिफ़ोलिया anacardium latifolia-लै० भिलावाँ, भल्लातक।

Marking nut-tree. (Semecarpus anacardium).

अ(ए)नाकार्डिएसीई anacardiaceae-लै० भल्लातककी अथवा काजूवर्ग। (Anacards, Terebinths or Sumacs).

अनाकार्डिक एसिड anacardic acid-लै० भल्लातक्याम्ल, भिलावें का तेजाब। फा० इं० १ भा०।

अनाकार्डीयर anacardier-फ्रें० (१) काजू। Cashew-nut-tree (Anacardium occidentale, *Linn.*) फा० इं० १ भा०। (२) भल्लातक, भिलावाँ। The marking nut tree (Semecarpus Anacardium) इं० मे० मे०।

अनाक्रांत anákránta-हिं० वि० [सं०] [स्त्री० अनाक्रांता] जो आक्रांत न हो। अपीड़ित। रक्षित।

अनाक्रांतता anákrántatá-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] आक्रांतता का अभाव। रक्षा। अपीड़ा।

अनाक्रान्ता anákrántá-सं० स्त्री० कण्टकारी, कटेरी, भटकटैया-हिं०। सोलेनम् जेन्थोकार्पम् (Solanum Xantho-carpum) -लै०। र० मा०।

अनाका सोडिआई क्लोराइडम् anaqua-sodii chloridum-लै० सोचर नोन। sochal salt.

अनागत anágata-हिं० वि० [सं०] (१) न आया हुआ। अनुपस्थित। अविद्यमान। अप्राप्त। (२) आगे आने वाला। भावी। होनहार।

अनागतार्त्तवा anágatárttavá-सं० स्त्री० कन्या, अजात रजस्का, अरजस्का, गौरी, नग्निका, कुमारी, बालिका। जो स्त्री रजोधर्मिणी न हुई हो। (A little girl, a girl nine years old, a virgin.)। रा०निघ०१८।अ०।

अनागतावेक्षणम् anágatá-vekshanam -सं० क्ली० आगे इसे कहेंगे (या ऐसा कहेंगे) इसे अनागतावेक्षण कहते हैं। सु० उ० अ० ६५।

अनाग़लुस anághalus यु० } इसे नक़्ली
अनाग़ालुस anághálus " } भाषामें अनाकिर और फिरङ्गी में अनकालन कहते हैं। कोई कोई इसका युनानी नाम फ़ज़रियून और अरबी नाम हशीशतुल् अलक लिखते हैं। यह एक बूटी है। इसके स्वरूपके सम्बन्ध में बहुत मतभेद है। यह अराक और शाम आदि प्रदेशों में उत्पन्न होती है।

अनाग़ालिस anághális यु०, अ० अनाकिर -कुम्तु०। मरिजानह् -अ०। जोंकमारी, जैंघनी -हिं०। (Anagallis arvensis, *Linn.*) -लै०। फा० इं० २ भा०।

अनाग़ीलस anághilas-यु० मर्ज़ंजोश। see-marzanjosha

अनागैल्लिस आर्वेन्सिस anagallis arvensis, *Linn.* -लै० जैंघनी, जोंखमारी। उ० प० सू०। मे० मो०।

अनाग़ोरस anághoras-रू० मलवान्-यु०। खर्नूबुल् ख़िन्ज़ीर-मिश्र०। इसके फल को हब्बुलकुल्या कहते हैं। गुलेकर्नब के समान एक बूटी है जो शामादि देशों में उत्पन्न होती है। किसी किसी के विचारानुसार एक अन्य बूटी है जिसके पत्ते एवं शाखाएँ सँभालूके समान होती हैं। इसका वृक्ष बड़ा हो जाता है।

अनाचारिता anácháritá-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] निंदित आचरण। दुराचारिता।

अनाचारी anáchárí-हिं० वि० [सं० अनाचारिन्] [स्त्री०अनाचारिणी। संज्ञा अनाचारिता] आचारहीन, भ्रष्ट, बुरे आचरण का, पतित दुराचारी।

अनाचारः anácháraḥ-सं०पुं० (१) असत्कर्म्म, अनिष्टकर्म, दुराचार, कुव्यवहार, निंदित आचरण। (Undesired or evil or Improper conduct) वै० निघ०। (२) कुरीति, कुप्रथा, कुचाल।

अनाज anája-हिं० संज्ञा पु० [सं० अन्नाद] अन्न, धान्य, नाज, दाना, गल्ला।

अनाडेण्ड्रम् पेनिक्युलेटम् anadendrum Paniculatum-ले० थोलूया--अण्ड० टा०। मेमो०।

अनातङ्कः anátankah-सं० त्रि० अरोगी, नीरोग, रोग रहित, स्वस्थ। (Healthy). वै० श०।

अनातपः anátapah-सं० पुं०
अनातप anátapa-हिं० संज्ञा पुं० } आतपाभाव, छाया। (Shade) वै० श०। धूप का अभाव। त्रि० (१) आतप रहित। जहाँ धूप न हो। (२) तर, ठंडा, शीतल।

अनातीतस anátítasa-यु० करञ्ज। A plant (Galedupa arborea).

अनातुरः anáturah-सं० त्रि०
अनातुर anátura-हिं० त्रि० } [स्त्री० अनातुरा] अरोगी, निरोग, रोगरहित, स्वस्थ। (Free from sickness or pain, healthy) वै० श०।

अनात्मन् anátman-सं० पुं०
अनात्म anátma-हिं० संज्ञा पुं० } त्रि० आत्मा का विरोधी पदार्थ, अचित, पंचभूत। वि० आत्मा रहित, जड़।

अनात्मक दुःख anátmaka-dukha-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] सांसारिक आधि व्याधि, भव बाधा।

अनात्मधर्म anátma-dharma-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] शारीरिक धर्म। देह का धर्म।

अनात्मीकृत anátmíkrita-त्रि०बिना पचा या अपक्व अंश। (Unabsorbed).

अनादिल āanádila-अ० (ब०व०) अन्दलीब (ए० व०) बुलबुल (एक पक्षी विशेष)। (Nightingale.)

अनादील āanádíla-अ० बुलबुल का गोश्त। (Flesh of Nightingale).

अनाधृषः anádh rishah--निर्बल। अथर्व० सू० २१। ३। का० ६

अनान anán-बर० (Fagræa fragrans, Roxb.) मेमो०।

अनानसु हण्णु anánasu hannu-कना० अनन्नास, अनानास-हिं०।

अनानास anánás-हिं० अनन्नास। (Pine apple)-इं०। मो० श०।

अनानास सैटाइवस ananas sativus--ले० अनन्नास। (Pine apple)-इं०। मो०श०। फा० इं० ३ भा०।

अनाप्तः anáptah-सं० पुं०
अनाप्त anápta-हिं० त्रि० } (१) अविश्वस्त, अविश्वसनीय, अश्रेष्ठ। (२) अकुशल, अनिपुण, अनाड़ी।

अनाफेलिस नीलगिरियना anaphalis neelgerriana, D. C.-ले० यह पौधा तथा इसके अन्य भेदके पौधे नीलगिरि पर्वत पर क्षतमें प्रयुक्त हैं। इसके पत्र ऊर्णवत् लोमसे आच्छादित रहते हैं और वहाँ के दिहाती लोग उसे काटप्लास्टर या देशीय प्रस्तर (Country plaster) कहते हैं। ताजे पत्र को कुचल कर चिथड़े के भीतर रख कर वे इसको क्षत पर बाँधते हैं। डाइमाक।

अनाबस स्कैंडिअस anabus scandeous -ले०। कबई मछली। (Climbing perch) इं० मे० मे०।

अनाविद्ध anábiddha--हिं० वि० [सं०] (१) अनविंधा। अनछेदा। बिना छेद का। (२) चोट न खाया हुआ।

अनाबेबुर्रियह् anábeburriyah-अ०
उरूकुख़श्नह् āurúqa khashnah } फुफ्फुस प्रणालियाँ, वायु वा श्वास प्रणालियाँ। ब्राँङ्किओल्ज़ Bronchioles--इं०। म०ज०।

अनाबेसिस मल्टिफ्लोरा anabasis multiflora, Miq.-ले० बुहचोटि,मेश्रलाने,गोरलाने, शोरलान, लान, घालमे-पर्श०। मे० मो०।

अनामकम् anámakam-सं०क्ली० (Pile) अर्श रोग, बवासीर,। श० र०।

अनामक(स्त्री०-मिका) anámak (-miká) -सं० स्त्री० (१) Innominate बे नाम का। (२) अंगुली विशेष। अनामा।

अनामयम् anámayam सं० क्ली०
अनामय anámaya-हिं० संज्ञा पुं०

(१) Health रोगाभाव आरोग्य, निरोगता, स्वास्थ्य, तंदुरुस्ती, रोग हीनता। रा० नि० व० २०। (२) कुशलक्षेम।

हिं० वि० (१) निरामय, । रोगरहित। नीरोग चंगा। स्वस्थ। तन्दुरुस्त। (२) निर्दोष। दोष रहित।

अनामय anámaya-सं० त्रि० रोग रहित। अथर्व०। सू० १३। ७। का ४।

अनामयाः anámayáh-सं० त्रि० (ब० व०) रोग रहित। अथर्व०। सू० ८। १५। का० ६।

अनामल anámala-अ० (बहु० व०), अन-मिलह् (ए० व०) अंगुल्याग्र भाग या अंतिम (अग्र) पोरवे।

अनामा anámá-सं० पुं०, हिं० संज्ञा स्त्री० अनामिका। श० र०। See-Anámiká.
हिं० वि० स्त्री० (१) बिना नाम की। (२) अप्रसिद्ध।

अनामिका anámiká-सं० स्त्री०, हिं० संज्ञा स्त्री० कनिष्ठा और मध्यमा के बीच की अंगुली। सबसे छोटी उँगली के बगल की उँगली। अनामा। अंगुश्ते हल्क़ह्, बिन्सर-अ०। रिङ्ग फिंगर (Ring finger)-इं०। रा० नि० व० १८। हु० श० र० १ भा०।

अनामिका धमनी anámiká-dhamaní-हिं० संज्ञा पुं० (Innominate artery) एक धमनी विशेष।

अनामिका धमनी परिखा anámiká-dhamaní-prikhá-हिं० संज्ञा स्त्री० (Groove for innominate artery).

अनामिर्टा कॉक्युलस anamirta Cocculus, *W&A.*-ले० ककामरि-हिं०, कना०, ते०, बं०। काकफल-गु०, सं०। Cocculus Indicus। फा० इं० १ भा०। देखो—काकफल।

अनामिर्टीन anámirtin-इं० काकफलीन, काकफलसत्व। फा० इं० १ भा० देखो-काकफल।

अनामिष anámisha-हिं० वि० [सं०] निरामिष। मांस रहित।

अनार anára-हिं० संज्ञा पुं० [फ़ा०] एक पेड़ और उसके फल का नाम दाड़िम है।
प्युनिका ग्रेनेटम् (Punica Granatum, Linn.)-ले०। पॉमेग्रेनेट (Pomegranate)-इं०। ग्रेनेडियर कम्म्यून (Grenadier Commun)-फ्रां०। आनार, अनार का पेड़-हिं०। अनार का झाड़-द०। संस्कृत-पर्याय—दाड़िम वृक्षः, करकः (अ०), पिण्डपुष्पः, दाड़िम्बः, पर्व्वरुट् स्वाद्वम्लः, पिण्डीरः, फलशाड़वः, शुकवल्लभः (त्रि०), मुखवल्लभः, (श०्दमा०), रक्तपुष्पः (र०), डालिमः (अ० टी० भ०), शुकादनः (श०), दाडिमीसारः, कुट्टिमः, फलसाड़वः, फलषाड़वः, रक्तबीजः, सुफलः, दन्तबीजकः, मधुबीजः, कुचफलः, मणिबीजः, कल्कफलः, वृत्तफलः, सुनीलः नीलपत्रः, नीलपत्रकः, लोहित पुष्पकः, रक्तबीजः, दन्तबीजः। दाड़िम गाछ, डालिम गाछ-बं०। शज्रतुर्रुम्मान-अ०। दरख़्ते नार-फ़ा०। रुम्मान-सिरि०। क़ूतोनूस-यू०। मादलै-च्-चेडि-ता०। दानिम्म-चेट्टु, दाड़िम चेट्टु, दालिम्ब चेट्टु-ते०। मातलम्-चेटि-मल०। दालिम्बे-गिडा-कना०। दालिम्ब-झाड़-मह०। दाडम-नु-झाड़-गु०। देलुङ्गहा-सिं०। सले-बिङ्, तली-बिङ्-बर्मी। दाड़िम्ब-कों०। दालिम्ब-उत्०। डालम-राज०। दादमनु-झाड दालिम, दालिम्ब-उड़ि०। दालिम-आसा०। मादल, मीबी-उ० प० सू०। दार, दाडूनी, दाड़ियूम, दानू, दोआब, जामन, दाड़न, अनार-पं०। अनार, नरगोश, घरंगोई-पश्तु०।

जम्बू वर्ग।

(N. O. Lythraceæ or myrtaceæ)

उत्पत्ति स्थान—दक्षिण युरोप, अफरीका, मध्य-

एशिया (अरब ईरान, अफ़गानिस्तान, बलूचिस्तान, भारतवर्ष तथा जापान)। पश्चिम हिमालय और सुलेमान की पहाड़ियों पर यह वृक्ष आप से आप उगता है। यह सम्पूर्ण भारतवर्ष में लगाया जाता है। काबुल कंधार के अनार प्रसिद्ध हैं। भारतीय अनार वैसे नहीं होते।

वानस्पतिक वर्णन—यह पेड़ १५-२० फुट ऊँचा और कुछ छतनार होता है। इसके तने की गोलाई ३--४ फुट होती है। माघ या फागुन में इसके नए पत्ते लगते हैं। इसके पत्ते टहनियों के आमने सामने लगे रहते हैं। यह कुछ लम्बे नोकदार और सिरे पर गोलाई लिए होते हैं। इनके फूल की पंखड़ियाँ रक्तवर्ण की होती हैं और फूल अधिक तर एक एक स्थान पर लगते हैं। इसके फल की मध्य रेखा २ से ३॥ इञ्च लम्बी होती है। इसके फूल हर मौसम में लगते लेकिन चैत, वैशाख में बहुत लगते हैं। अषाढ़ से भादों तक फल पकते हैं।

रासायनिक संगठन वृक्ष एवं फलत्वक् में २२ से २५ प्रतिशत कषायीन (Tannin) होता है। वृक्ष मूल त्वक् में २० से २५ प्रतिशत प्युनिको टैनिक एसिड (दाड़िम-कषायिनाम्ल) मैनिट (Mannit), शर्करा, निर्यास, पेक्टीन, भस्म १५ प्रतिशत, एक प्रभावात्मक पैलीटिएरीन या प्युनीसीन (अनारीन) नामक तरल क्षारीय सत्व होता है और तैलीय द्रव आइसो पैलीटिएरीन या आइसोप्युनीसीन (अनारीनवत्) तथा मीथल पैलीटिएरीन व स्युडोपेलीटिएरीन (मिथ्या अनारीन) नामक दो प्रभाव शून्य क्षारीय सत्व होते हैं। दाड़िम कषायाम्ल (Punicotannic acid) को जब जलमिश्रित गंधकाम्ल (सल्फ्युरिक एसिड) में उबाला जाता है तब वह इलैजिक एसिड (Ellagic acid) और शर्करा में विलेय होता है।

नोट—जड़ की छाल में यह सत्व अपेक्षाकृत अधिकतर होते हैं; विशेषतः रक्त तथा श्वेतपुष्प वाले अनार में।

प्रयोगांश—मूल त्वक, वृक्षत्वक्, अपक्वफल, पक्वफल, बीज स्वरस, फलत्वक्, पुष्प, कलिकाएँ और पत्र।

इतिहास—चरक के छर्दिनिग्रहण एवं श्रमहर वर्ग में दाड़िमका पाठ आया है और वहां इसे वमन नाशक एवं हृद्य लिखा है। सुश्रुत में भी अनार का वर्णन आया है। तो भी इसकी जड़ की छाल के उपयोग का वर्णन किसी भी प्राचीन आयुर्वेदीय निघण्टु ग्रंथ में नहीं दिखाई देता। भावप्रकाश में इसकी जड़ को कृमिहर लिखा है।

बुकरात (Hippocrates) ने पोआसाइड नाम से अनार का वर्णन किया है। दीसकूरीदूस (Dioscorides) ने पराइपोआस के नाम से अनार की जड़ की छाल का वर्णन किया है। इसको वे कृमियों को मारने एवं उनके निकालने के लिए सर्वोत्तम ख्याल करते थे। अस्तु, आज भी इस औषध को उसी गुण के लिए व्यवहार में लाते हैं।

इसलामी हकीम सङ्कोचक होने के कारण इसके पुष्प एवं फल त्वक् को विभिन्न प्रकार से उपयोग में लाने के अतिरिक्त वे इसके मूल त्वक् को जो इसका सर्वाधिक धारक भाग है, कद्दूदाना के लिए अमोघ औषध होने की शिफ़ारिस करते हैं।

अनार का बीज आमाशय बलप्रद और गूदा हृदय एवं आमाशय बलप्रद ख्याल किया जाता है। दीसकूरीदूस (Dioscorides) एवं प्लाइनी (Pliny) के ग्रंथों में भी इसी प्रकार के वर्णन मिलते हैं। अत: ऐसा प्रतीत होता है कि अरब लोगों ने अनार के औषधीय गुणधर्म का ज्ञान अपने पूर्वजों से प्राप्त किए।

अनार की जड़ की छाल एवं फल का छिलका ये दोनों फार्माकोपिया ऑफ इंडिया में ऑफिशल हैं।

अनार (फल)

दाड़िम फलम्, दाडिमः-सं०। अनार, दारम, दारु-हिं०। प्युनिका ग्रेनेटम् Punica Granatum, *Linn*. (Fruit of Pomegr-

anate.)-ले०। पॉमेग्रेनेट Pomegranate. -इं०। अनार-द०। ग्रेनेडियर कल्टिव Grenadier Cultive.-फ्रां०। ग्रेनेट बॉम Granat baum.-जर०। अनार, डलिम्, दाड़िम, दाड़मी, दाड़म-बं०। रुम्मान्, राना -अ०। अनार, नार-फ़ा०। रुम्माना-सिरि०। क़ूलीनूस-यु०। दालिम्ब-तु०। मादलैप्-पज़म्, माडले-ता०। दानिम्म पण्डु, दाडिम-पण्डु, दालिम्ब-पण्डु-ते०। मातलम्--पज़म्-मल०। दालिम्बे-कायि-कना०। दालिम्ब, डालिम्ब -मह०। डारम, दाडम-गु०। देलुङ् या देलुङ् -सिं। सले-सि या तली-सी-बर०। दालिम्, दालिम्ब-उड़ि०। दालिम्-आसा०। अनार, दाड़िम-उ० प० सू०। पं० तथा पश्तु-देखो—

अनार वृक्ष। अनार, धालिम, धारिम्ब, डाड्-सिंध। चौन-काश०। दालिम्ब-कों०। दाडम -मारवाड़ी। मादल-द्राविड़ी। दालम्बि-कर्ना०।

उत्पत्तिस्थान—अनार।

वानस्पतिक वर्णन—अनार का फल गोलाकार किञ्चित् चपटा, अस्पष्टतः पटपार्श्व, सामान्य नागरंग के आकार का प्रायः बृहत्तर होता है जिसके सिरे पर स्थूल, नलिकाकार, ५-६ दंष्ट्राकार सपत्रयुक्त पुष्प वाह्य कोष लगा होता है। फल त्वक् सचिक्कण, कठोर एवं चर्मवत् होता है जो फल के परिपक्व होने पर धूसर पीतवर्ण का प्रायः सूक्ष्म रक्तरञ्जित होता है। फल की लम्बाई की रुख छः झिल्लीदार परदे होते हैं जो अक्षपर मिलते और फल के ऊर्ध्व एवं बृहत्तर भाग को बराबर कोषों में विभाजित करते हैं। उनके नीचे अव्यवस्थित गावदुमी चौड़ाई की रुख पड़ा हुआ एक परदा होताहै जो नीचेके लघुतर अधो भागको उससे (ऊर्ध्व भाग से) भिन्न करता है। यह ४ या ५ असमान कोषों में विभक्त होता है। प्रत्येक कोष स्थूल, स्पञ्जवत् अमरा से संलग्न बहुसंख्यक दानों से पूर्ण होता है जो ऊर्ध्व कोषों में पार्श्वीय, किन्तु अधः कोषों में केन्द्रीय प्रतीत होते हैं। दाने लगभग आध इंच लम्बे आयताकार या गावदुमी, बहुपार्श्व तथा एक पतले पारदर्शक कोष से आवृत्त और अम्ल, मधुर तथा स्वाद्वम्ल रक्त रसमय गूदे से आवरित लम्बे कोणाकार बीजयुक्त होते हैं।

नोट—(१) धन्वन्तरीय निघण्टुकार और सुश्रुताचार्य ने रस के विचार से इसे दो प्रकार का लिखा है अर्थात् (१) मधुर और (२) अम्ल। "द्विविधं तच्च विज्ञेयं मधुरञ्चाम्लमेव च।" (ध० नि०, सु० ४६ अ०)

परन्तु, यूनानी निघण्टुकार तथा भावमिश्र इसे तीन प्रकार का लिखते हैं, यथा—"तत्फलं त्रिविधं स्वादु स्वाद्वम्लं केवलाम्लकम्।" अर्थात्

(क) स्वादु, मधुर-हिं०। अनार शीरीं-फ़ा०। रुम्मान हुलुव्व (हलो)-अ०। स्वीट sweet -इं०। (ख) अम्ल, खट्टा-हिं०। अनार तुर्श-फ़ा०। रुम्मान हामिज़ -अ०। सावर sour-इं०।

(ग) स्वाद्वाम्ल, मधुराम्ल, खटमीठा-हिं०। अनार मैख़ोश-फ़ा०। रुम्मान मुज़्ज़-अ०।

(२) खट्टे अनार के वृक्ष में खट्टे ही अनार लगते हैं और मीठे में मीठे लगते हैं। अषाढ़ से भादों तक फल पकते हैं; परन्तु देश के हर भाग में ऋतु के अनुसार अलग अलग मौसम में फल पकते हैं। खट्टा अनार गुण में मीठे से बलवानतर होता है। यद्यपि इसकी प्रत्येक चीज़ अपने गुण में दूसरी चीज़ के बराबर होती है, तो भी कुछ कमी-बेशी ज़रूर है, जैसे, गूदा में पत्तों की अपेक्षा अधिक प्रभाव है और इससे अधिकतर प्रभाव निसपाल में है। फूल में कली से कम असर होता है। इसकी जड़ की छालमें सब से अधिक प्रभाव है।

इसके अतिरिक्त अनार के दो और भेद हैं, यथा—

(१) गुलनार का पेड़ (नर अनार)। Punica Granatum, *Linn.* (Male variety of.)। इसका पुष्प जिसको गुलनार कहते हैं, औषध के काम आता है। देखो—गुलनार। इसमें फल नहीं लगते।

(२) अनार जंगली—यह अनारका जंगली भेद है।

प्रयोगांश—दाड़िम (फल) त्वक्, दाड़िम्ब के फल का रस ।

औषध-निर्माण—(१) दाड़िमाष्टक (च० द०)

(२) रुब्बे अनार—ताजे अनारदाना का पानी लेकर आग पर पकाएँ । पाद शेष रहने पर उतार कर शीतल करके रक्खें ।

(३) रुब्बे अनार क़न्दी—ताजे अनारदाना के पानी में समान भाग खाँड़ मिलाकर आग पर शहद की चाशनी करें । मात्रा—२ तो० से ३ तो० तक ।

(४) शर्बत अनार—१ सेर मिश्री या खाँड़ की चाशनी में १ पाव रुब्बे अनार सादा या आधसेर अनार क़न्दी मिला दें । मात्रा—२ से ३ तो० तक ।

(५) शर्बत अनार तुर्श—जिस अनार का छिलका पतला और रंग सुर्ख हो, दाने उम्दा और मोटे हों, उसका छिलका उतार कर दानों से पानी निचोड़ लें और छान कर १ सेर पानी में सवापाव मिश्री मिलाकर शर्बत बनाएँ । आवश्यकतानुसार पानी में मिलाकर पिलाएँ । गुण—तृषाशामक होनेके सिवा मतली वमन और पित्तोत्क्लेश के लिए अत्यन्त लाभप्रद है ।

(६) शर्बत अनार शीरीं—अत्युत्तम मीठे अनार लेकर पानी निचोड़ लें । पावभर उक्त रस में आधसेर श्वेत शर्करा मिलाकर मुलायम आँच पर पकाएँ और शर्बत की चाशनी लें । मात्रा—२ तो० से ५ तो० तक ।

सेवन विधि—अवश्यकतानुसार शीतल जल में मिलाकर सेवन कराएँ ।

गुण—तृषाशामक एवं हृद्य ।

(७) शीतकषाय (नक़ूअ.)—५ तो० शुष्क अनारदाना को आध सेर पानी में तीन घंटा तक भिगाएँ । बाद को मल छान लें और काम में लाएँ । मात्रा-२ तो० से ५ तो० तक ।

फलत्वक्, मात्रा--१० से ३० ग्रेन (५ से १५ रत्ती) ।

अनार के गुण-धर्म तथा प्रयोग

आयुर्वेदीयमतानुसार

अम्ल, कषेला, मधुर, वातनाशक, ग्राही, दीपन, स्निग्ध, उष्ण तथा हृद्य है और कफ एवं पित्त का विरोधी नहीं है । खट्टा अनार रूक्ष है तथा पित्त एवं वात प्रकोपक है । मधुर अनार पित्त नाशक होने से उत्तम है । (च० फ० व० सू० २७ अ०)

अनार कषेला एवं फीका (अनुरस), अति पित्त कारक नहीं है तथा, दीपन, रुचिकारक, हृद्य एवं मलविबन्धकारक है । यह अम्ल तथा मधुर दो प्रकारका होता है । इनमें से मधुर त्रिदोष नाशक और अम्ल वात एवं कफ नाशक है । सुश्रुत सू० ४६ अ० ।

अनार स्निग्ध, उष्ण, हृद्य और कफ पित्त विरोधी है । धन्वन्तरीय निघण्टु ।

अनार मधुर अम्ल कषेला, वातनाशक, कफनाशक, पित्तनाशक, ग्राही, दीपन, लघु, उष्ण, शीतल, श्रमनाशक तथा रुचिकारक है और कास का नाश करने वाला है । अनार अम्ल, मधुर भेद से दो प्रकार का है जिनमें से प्रथम वात-कफ, नाशक और द्वितीय तापशामक, लघु एवं पथ्य है । अन्य ग्रंथों में इसको अम्ल, कषेला, मधुर, वातनाशक, ग्राही और दीपन लिखा है । रा० नि० व० ११ ।

अनार का फल तीन प्रकार का होता है । मीठा, मीठाखट्टा और केवल खट्टा । इसमें मीठा अनार त्रिदोषहर, प्यास, दाह, ज्वर, हृदयरोग, कंठरोग, मुख की गंध को नष्ट करता तृप्त करता, शुक्रकर तथा हलका, कषाय रस, ग्राही, स्निग्ध, स्मरणशक्तिवर्द्धक और बलकारक है । खट्टा और मीठा अनार अग्निदीप्तिकर, रोचक, किंचित्पित्तजनक, लघु और केवल खट्टा अनार पित्तकारी और वात कफ नाशक है । भा० ।

हृद्य, अम्ल, श्वास, रुचि तथा तृष्णा का नाश करने वाला है और कंठशोधक एवं पित्त कफ का बोध करानेवाला है । राज० ।

अनार श्रेष्ठ तथा वातादिक रोग नाशक है। अत्रि० १७ अ०।

दाडिम हृद्य, अम्ल, वातनाशक, दीपन, कषाय तथा कफ पित्त विरोधी है। मधुर अनार त्रिदोषनाशक और खट्टा एवं वात व कफ नाशक है। ज्वरनाशक, दीपन, पथ्य, लघुपाकी तथा अग्निप्रदीपक है। राजवल्लभ०।

अनार के वैद्यकीय व्यवहार

हारीत—मुख द्वारा रक्त स्राव में दाडिम फल त्वक् चूर्ण को चीनी के साथ चाटने से मुख द्वारा रक्तपात प्रशमित होता है। (चि० ११ अ०)।

चक्रदत्त—अरोचक रोग में अनार के फल का रस विट्-लवण-चूर्ण एवं मधु के साथ मुख में धारण करने से असाध्य अरुचि भी प्रशमित होती है। (अरोचक-चि०)

बंगसेन—(१) ज्वरकृत मुख वैरस्य में चीनी के साथ पिसा हुआ अनार दाना किंवा शर्करा मिश्रित अनार का रस, किसमिस तथा अनार के रस से डीला कर मुख में धारण करने वा गण्डूष करने से ज्वर रोगीके मुख की विरसता नष्ट होती है। (ज्वर-चि०)

(२) रक्तातिसार में अनार का रस (दाडिम बीज स्वरस),-कूटा हुआ ताजे कुटज त्वक् ८ तो० को ६४ तो० जल में पकावें। पाद (१६ तो०) शेष रहने पर उतार कर वस्त्र से छान लें। इसमें १६ तो० अनार का रस मिला कर पुनः पाक करें। जब यह लसिकावत् होजाए (अर्थात् राब की चाशनी लें।) तब उतार कर रक्खें। इस फाडिताकार वस्तु में से १ तो० लेकर तक्र के साथ सेवन करने से मृत्युमुख अतीसार रोगी भी जीवन लाभ करता है।

भावप्रकाश—आमाजीर्ण में दाडिम फल को भली प्रकार पीसकर पुराने गुड़ के साथ खाने से आमाजीर्ण प्रशमित होता है। यह अर्श प्रभृति गुद रोगों एवं कोष्ठबद्ध में प्रशस्त है। (अजीर्ण चि०।

यूनानी मतानुसार

प्रकृति-मीठा अनार प्रथम कक्षा में सर्द तर है। शीतल होने का कारण यह है कि इसमें अत्यधिक आर्द्रता होती है। और तर स्निग्ध होने का कारण यह है कि इसमें उफाण नहीं पैदा होता जो तरी को कम करने का कारण हो सकता है। अन्यथा यह मधुर न रहता प्रत्युत अम्ल हो जाता। किसी किसी के मत से यह शीतोष्ण (सम प्रकृति) है।

खट्टा अनार द्वितीय कक्षा में शीतल एवं रूक्ष है। शीतल होने का कारण यह है कि इसकी प्राकृतिकोष्मा उफाण के कारण लय हो जाती है तथा रूक्ष होने का कारण यह है कि इसमें आर्द्रता की कमी होती है। खटमिट्ठा अनार प्रथम कक्षा में सर्द व तर है। अनार के बीज—प्रथम कक्षा में शीतल एवं रूक्ष हैं।

हानिकर्त्ता—(मधुर) आमाशय तथा ज्वरी को। (अम्ल) शीत प्रकृति को, क़ुव्वत जाज़िबह (अभिशोषक शक्ति) को, यकृत् तथा वाह को। (स्वाद्वम्ल) शीत प्रकृति को। (दाडिमबीज) शीत प्रकृति को। दर्पनाशक-(मधुर) खट्टे अनार तथा शीत प्रकृति वालों को सोंठका मुरब्बा; (दाडिम बीज) जीरा। प्रतिनिधि-मीठे अनार की प्रतिनिधि खट्टा अनार, खट्टे अनार का मीठा अनार। खटमिट्ठा का कच्चा अंगूर और अनार बीज का सुमाक़ है। मात्रा-अनार बीज की मात्रा ६ माशे से ६ माशे तक।

गुण, कर्म, प्रयोग—अनार अपनी शीतलता एवं अम्लता के कारण पित्त का नाश करता है। और अपने क़ब्ज़ तथा रूक्षता के कारण इह् शाअ् (कोष्ठों) की ओर मल वहन को रोकता है। विशेष कर इसका शर्बत, क्योंकि इसमें तारल्यता कम होती है। इसके सम्पूर्ण भेदों में यहाँ तक कि अम्ल में भी क़ब्ज़ (संकोच) के साथ कांतिकारिणी शक्ति वा मलशोधकशक्ति (क़ुव्वतजिलाअ्) होती है खट्टे अनारमें उफाण तथा अम्लताके कारण कांतिकारिता (जिलाअ्) होती है। परन्तु, मधुर अनार में उक्त गुण होने का कारण यह है कि

उसमें सूक्ष्म ऊष्मा होती है जो कि मधुरता के लिए अत्यावश्यक है। क़ब्ज़ का कारण यह है कि सम्पूर्ण अनारों की प्रकृति में क़ब्ज़ अन्तर्निहित है जैसा कि जालीनूस ने इसकी व्याख्या की है।

इनके दानों को पका कर उसमें मधु मिलाकर प्रलेप करने से कर्णशूल, दाख़िस (अंगुल बेढ़ा) क़ुलाअ् (मुँह आना), आमाशयस्थ क्षत और दुष्ट व्रण के लिए उपयोगी है। क्योंकि उसमें क़ब्ज़ (संकोच) और कांतिकारिता होती है। शहद के साथ मिश्रित करने से जिलाअ् अधिक हो जाता और क़ब्ज़ बढ़ जाता है। क्योंकि मधु अपनी उष्णता के कारण संकोचकारिणी एवं संग्राहकीय शक्ति को शरीर के गम्भीर भागों में प्रविष्ट करा देता है।

खट्टे अनार में मीठे अनार की अपेक्षा अधिकतर रेचनी शक्ति है। यद्यपि दोनों रेचक हैं; क्योंकि दोनों में कांतिकारिणी शक्ति (क़ुव्वत जिलाअ्) पाई जाती है; तथापि खट्टे में रेचनी शक्ति के अधिक होने का कारण यह है कि इससे आँतों में क़ब्ज़ हो जाता है जो इद्रार (प्रवर्तन) पर मुश्तमिल होता है। इसके अतिरिक्त इसमें लज़्अ् (क्षोभ) भी है। मीठे अनार में रेचन के कम होने का कारण यह है कि इसकी रतूबत सूक्ष्म उष्मा के साथ होती है जो कोष्ठमृदुकारिणी तथा रेचनी शक्ति से खाली नहीं होती।

खटमिट्ठा अनार आमाशयिक प्रदाह को लाभ करता है। क्योंकि यह उसको सरदी पहुँचाता एवं पित्तोष्मा को शांति प्रदान करता है। क्योंकि खट्टे अनार के समान इसमें क्षोभ एवं तीक्ष्णता नहीं होती और न मीठे अनारके समान इससे आमाशय में उफान पैदा होता है और न पित्त की ओर इसकी प्रवृत्ति ही होती है। अतएव यह यातावयवों को हानि नहीं पहुँचाता।

खट्टा अनार अपनी स्तम्भिनीशक्ति तथा कषाय-पन के कारण कंठ एवं वक्ष में कर्कशता उत्पन्न करता है और मीठा अनार इन दोनों अवयवों को कोमल करता है। चूँकि इसमें सूक्ष्म उष्मा के साथ रतूबत होती है। इस हेतु से और अपने स्तम्भनसे यह वक्ष को शक्ति प्रदान करता है और अपनी कांतिकारणी (जिलाअ्) एवं मृदुकारिता के कारण कास को लाभ करता है। अमलसी (अनार बेदाना) जिसकी गुठली मृदु होती है, सर्वश्रेष्ठ है। अमलस वह जंगल है जिसमें कोई वृक्ष न उगा हो।

सब तरह के अनार मूर्च्छा को लाभ करते हैं। क्योंकि यह रूह तथा हृदयकी प्रकृतिकी समानता सम्पादित करते हैं और इसलिए भी कि ये हृदय को मलों से स्वच्छ करते हैं। नफ़ी०।

मीठा अनार—रुधिर उत्पन्नकर्त्ता, शुद्ध आहाररस उत्पन्नकर्ता, लघुआहार, आध्मानकर्त्ता, मलों को स्वच्छ कर्ता, उदर को मृदु करता तथा मूत्रकारक है और यकृत को शांति प्रदान करता, प्यास को शांत करता तथा कामोद्दीपन करता एवं उत्तमांगों को बल प्रदान करता है। त्वग् युक्त इसका अर्क दस्तों को बन्द करता है। सम्पूर्ण कर्मों में विलायती अनार उत्तम है।

अनार फल त्वक् भस्म कास को लाभ पहुँचाती है।

खट्टे अनार—वक्ष प्रदाह, आमाशय की गर्मी एवं यकृतोष्मा को प्रशमन करता है तथा रक्त प्रकोप एवं वाष्प को दूर करता है। ज्वरजन्य अतिसार एवं वमन को लाभप्रद है। यर्क़ान और शुष्क खर्ज् को लाभ करता तथा ख़ुमार एवं गर्मी की मूर्च्छा को लाभप्रद है।

खटमिट्ठा अनार—इसके गुण मीठे अनार के समान हैं। बल्कि यह उससे अधिकतर प्रभावशाली है। छिलका सहित इसके फल को कुचल कर निकाले हुए रस में शर्करा मिलाकर पीने से पैत्तिक वमन तथा अतिसार, खुजली और यर्क़ान में लाभ होता है और यह आमाशय को बल प्रदान करता और हिक्का को नष्ट करता है।

अनार का बीज—संकोचक, पाचक तथा क्षुधाजनक है और आमाशय को बल प्रदान करता, पैत्तिक मवाद को आमाशय प्रभृति पर

नहीं गिरने देता और पैत्तिक वमन, अतिसार तथा दोनों प्रकार की खुजली को लाभप्रद है।

अनार फल त्वक्

दाड़िम त्वक्, दाड़िमफल वल्कल, अनार के फल का छिलका, नि (मा) मपाल। पोस्त अनार–फा। क़श्रुर्रुम्मान–अ०। पॉमिग्रेनेट पील Pomegranate peel, पा० रिंड Pomegranate rind–इं०।

वर्णन–अनारके फलकी छाल के विषम, न्यूनाधिक नतोदर टुकड़े होते हैं जिनमें कतिपय दंष्ट्राकार नलिकामय पुष्पवाह्य कोष लगे होते हैं जिसके भीतर अब तक परागकेशर तथा गर्भकेशर आवृत होते हैं। यह $\frac{?}{२०}$ से $\frac{?}{१०}$ इं० मोटा सरलतापूर्वक टूट जाने वाला (टूटते समय जिससे कॉर्कवत् धीमा शब्द हो) होता है। इसका बाह्य पृष्ठ अधिक खरदरा एवं पीत धूसर वा किंचित् रक्तवर्ण का होता है। भीतर से यह न्यूनाधिक धूसर वा पीत वर्ण का, मधुमक्षिका गृहवत् और बीजखातयुक्त होता है। इसमें कोई गंध नहीं होती; अपितु यह तीव्र कषाय स्वादयुक्त होता है।

लक्षण—रक्ताभायुक्त पीतवर्ण। स्वाद–विकषा प्रकृति–मीठे की सर्द तर और खट्टे की प्रथम कक्षा में शीतल तथा रूक्ष। हानिकर्ता शीत प्रकृति को। दर्पघ्न–आर्द्रक। प्रतिनिधि–ज़रंवर्द (गुलाब का केशर)। सेवन का मात्रा–१ से २ तोला। प्रधान गुण– अर्श के लिए उपयोगी है

गुण, कर्म, प्रयोग—(१) गरमी की सूजन को लाभ करता और मसूड़ों को शक्ति प्रदान करता है। (२) अनार के सूखे छिलकों को पीसकर छिड़कनेसे काँचका निकलना बन्द हो जाता है। (३) अनार के फल को पीसकर गोला बना पुटपाक की विधि से पकाकर रस निचोड़ कर मधु मिला पीने से सब तरह के दस्त बन्द होते हैं। (४) अनार के फल का छिलका पुराने अतिसार तथा आमातीसारको मिटाता है। (५) पाँच तोले अनार के छिलके को सवासेर दूध में औटा १५ छटाँक रख छान दिन भर में ३–४ बार पिलाने से आमातिसार मिटता है। (६) खट्टे अनार के २ तोले छिलके और दो तोले शहतूत को औटा छान के पिलाने से पेट के कीड़े मरते हैं। (७) इसके छिलके की योनि में धूनी देने से मरा हुआ बच्चा बाहर निकल आता है। (८) इसके छिलके को छुहारे के पानी के साथ पीस कर लेप करने से सूजन बिखरती है। (९) अनार के छिलके और लौंगका काढ़ा पिलानेसे पुराना आमातिसार मिटता है। इस काम के लिए अनार के छिलके और इसकी जड़ की ताजी छाल लेनी चाहिए।

नव्यमत

एक अनार का रस प्रिय तथा ज्वर जन्य उत्ताप एवं तृष्णा आदि को शमन करने वाला है। ज्वर रोगी के सिवा यह हर एक रोगी और नीरोगी को लाभदायक है। मस्तिष्क, हृदय और यकृत् को अत्यन्त बलवान बनाता एवं शुद्ध रुधिर उत्पन्न करता है। अनार के दाने निकाल कर मज़बूत और झरझरे कपड़े में से निचोड़ कर केवल उसका रस पिलाएँ।

अत्यन्त मद्यपान जन्य यकृद्दोष में तीन तीन घंटे बाद अनार का रस निकाल कर पिलाते रहें।

कामला रोगी को प्रातः सायं ६–७ तोला अनार का रस और ६ माशे ज़रिश्क मिलाकर सेवन कराएँ।

वमन एवं उत्क्लेश विकार में खट्टे अनार का रस गुणदायक है।

विसूचिका रोगी के लिए खट्टे अनार का रस एक उत्तम औषध है। रस न प्राप्त होने पर रुब्ब या शर्बत का सेवन कराना चाहिए।

छोटे बच्चों को प्रति दिन प्रातः सायं एक-दो तोले एक समय अनार का पानी पिलाते रहें। ४० दिन तक ऐसा करने से जिस्म की रंगत सुर्ख निकल आती है।

अनार दाने का ताजा रस उदर शूल प्रशामक है।

जिसकी चमड़ी से तुरन्त रुधिर निकल आए ऐसे बच्चों की ज़ुबान का खून बन्द करने के लिए अनार खिलाना चाहिए।

बवासीर वालों को अनार खिलाना हितकारी है।

इसके रस में शकर मिलाकर कुछ गर्मकर पिलाने से वमन रुक जाता है।

अनार के रस में जीरा और शर्करा मिलाकर पिलाने से अरुचि मिटती है। अनार के दाने खाने से रुचि बढ़ती है।

खट्टे अनार के रस में कुछ मधु मिलाकर कान में टपकाने से कान का दर्द दूर होता है।

मीठे अनार का रस निकाल बोतल में भर कर धूप में रख दें। जब वह चाशनी जैसा होजाए तब उसका अंजन करने से सब तरह की आँखों की खुजली मिटती है और आँख की रोशनी बढ़ती है।

जिस ज्वर रोगी को प्यास बेचैनी, मतली, वमन एवं रेचन होता हो उसको रुब्ब अनार या शर्बत अनार का उपयोग लाभदायक सिद्ध होता है।

अनार का फूल (दाड़िमपुष्प)

दाड़िमपुष्पः-सं०। गुले अनार-फ़ा०। वर्दुर्रुम्मान-अ०। ग्रेनेटाइ फ्लोरीस Granati Flores-लै०। पॉमेग्रेनेट फ्लावर्स Pomegranate Flowers-इं०।

वह अनार जिसमें फल लगते हैं उसकी कली को अरबी में अक़्माउर्रुम्मान या जुंबज़ुर्रुम्मान कहते हैं। पर वह अनार जिसमें फल नहीं लगते उसके फूल को गुलनार कहते हैं।

गुणधर्म तथा उपयोग—"घ्राणात् प्रवृत्ते रुधिरे दाड़िमपुष्परसः—तथा दाड़िमपुष्प तोयम्।" अनार के फूल के रस का नस्य लेने से नासिका द्वारा रक्तस्राव अर्थात् नासार्स या नक्सीर को लाभ होता है। च० चि० ४ अ०।

अनार की वह कलियाँ जो निकलते ही हवा के झकोलों से वृक्ष से गिर पड़ती हैं, दस्तों के लिए हितकर हैं। क्योंकि ये अतिशय सङ्कोचक एवं छेदघ्न (मुजफ़्फ़िफ़) होती हैं, विशेष कर जलाई हुई। क्योंकि जलानेसे उनका शुष्ककारित्व अधिक हो जाता है। न०फ़ो०।

खट्टे अनार के शुष्क फूल को बारीक पीसकर अवचूर्णन करने से मसूड़ों से रक्तस्राव का होना रुक जाता है एवं यह व्रणपूरक है। म० अ०।

(१) इसके पुष्प में सङ्कोचक गुण है। अनार की कली को चूर्णकर ४ से ५ ग्रेन की मात्रा में देने से कास को लाभ होता है। (२)अनार की अविकसित ताजी कलियों को पीसकर चूर्ण किए हुए क्षुद्र एला बीज, पोस्त बीज तथा मस्तगी में मिश्रित कर शर्बत के साथ इसका अवलेह प्रस्तुत करें। बालकोंके पुरातन अतिसार एवं प्रवाहिका की चिकित्सा के लिए यह अमोघ औषध है। (Tukina).

अनार के फूल का रस और दूर्वा का रस इनको समान भाग सेवन करने से अथवा इसके लाल फूलों का रस नाक में टपकाने से या सुँघाने से नकसीर बन्द होती है।

अनार के सूखे फूलों को दस्त को बन्द करनेवाले योगों में डालने से इनका गुण बढ़ जाता है।

अनार और गुलाब के सूखे फूल लेकर पीस कर मंजन करने से मसूढ़ों का पानी बन्द हो जाता है।

इसकी कलियों का दो ढाई रत्ती चूर्ण खाँसी के लिए बहुत गुणदायक है।

अनारके ताजे फूल ४ तो०,मेथी सब्ज १०तो० इनको बारीक रगड़ कर ३ सेर पानी में पकाएँ। जब पककर लेई की तरह गाढ़ा गाढ़ा लुआब सा हो जाए तब शिर के बालों पर लेप करें। इसके दो घंटे बाद स्नान करें तो बाल घुँघराले और बारीक हो जाते हैं।

अनार की कली जो खिली न हो ताजी लेकर खूब कूटकर निचोड़ कर धूप या पानी की भाप पर शुष्क कर लें। मात्रा-३ माशे से ६ माशे तक।

दाड़िम मूल त्वक्

अनार की जड़ की छाल, अनार की छाल –हिं०। ग्रेनेटाइ कॉर्टेक्स (Granati Cortex)-लें०। पॉमेग्रेनेट बार्क (Pomegranate bark)-इं०। क़ुशुर्रुम्मान अ०। पोस्त अनार–फ़ा०।

नोट—इसकी तिब्बी, वैद्यक संज्ञाओं से यहाँ दाड़िम फलत्वक् (जिसे हिन्दी में नसपालो कहते हैं) नहीं समझना चाहिए; प्रत्युत यह दाड़िम वृक्ष के कांड तथा दाड़िम की जड़ की छालें हैं।

वानस्पतिक वर्णन—इसके छोटे छोटे धनुषाकार अर्थात् मुड़े हुए या नलीदार टुकड़े होते हैं जिनकी लम्बाई २ से ४ इंच तक और चौड़ाई आध इंच से १ इंच तक होती है। छाल का बाहरी पृष्ठ खुरदरा धूसराभ पीतवर्ण का और भीतरी पृष्ठ सचिक्कण पीतवर्ण का होता है। यह सरलतापूर्वक टूट जाता है। यह गंधरहित तथा स्वाद में कषाय किंचित् तिक्त होता है।

रासायनिक संगठन—इसमें पैलीटिएरीन या प्युनीसीन (अनारीन) नाम का एक द्रव क्षारीय सत्व होता है। देखो—अनारवृक्ष वर्णनान्तरगत रासायनिक संगठन।

संयोग-विरुद्ध—ऐलकेलोज़ (क्षारीय औषधें), मेटैलिक साल्टस (धातुज लवणें), लाइम वाटर (चूने का पानी, चूर्णोदक) और जेलेटीन (सरेश)।

प्रभाव—संकोचक तथा आंत्रकृमिहर।

औषध-निर्माण—(१) दाड़िम त्वक् क्वाथ, अनार की छाल का काढ़ा–हिं०। डिकॉक्टम् ग्रेनेटाइ कॉर्टेक्स (Decoctum Granati Cortex)-लें०। डिकॉक्शन ऑफ पॉमेग्रेनेट बार्क (Decoction of Pomegranate Bark)-इं०। मत्बूख़ क़शरुर्रुम्मान–अ०। जोशाँदहे पोस्त अनार–फ़ा०। निर्माण-विधि—पॉमीग्रेनेट बार्क (अनार की छाल) का १० नं० का चूर्ण ४ आउंस, परिश्रुत वारि के साथ १० मिनट तक क्वथित कर छान लें और इसमें इतना और परिश्रुत जल मिलाएँ कि प्रस्तुत क्वाथ पूरा एक पाइंट हो जाए। मात्रा– आधा से २ फ्लुइड आउंस=(१४·२ से ५६·८ क्युबिक सेंटीमीटर)।

(२) चूर्ण किया हुआ मूलत्वक् २ से ३ ड्राम कृमिघ्न रूप से।

(३) इसी का क्वाथ (२० में १)। मात्रा—३ से ६ फ्लु० आउंस।

(४) मूल त्वक् का तरल सत्व, मात्रा—चौथाई से २ फ्लु० ड्राम।

प्रभाव तथा उपयोग

आयुर्वेदीय मत से—(चरक रक्तार्श में दाड़िम त्वक्) अनार वृक्ष की छाल के काढ़ा में सोंठ का चूर्ण मिलाकर पिलाने से अर्श रोगी का रक्तस्राव विनष्ट होता है। (चि० ६ अ०)।

चक्रदत्त—(१) सरक्त अतिसार में दाड़िम त्वक्—कुटज और अनार वृक्ष की छाल इन दोनों का क्वाथ प्रस्तुत कर मधु के साथ सेवन करने से दुर्निवार्य रक्तातिसार में भी शीघ्र विजय प्राप्त होता है। (अतिसार चि०)।
(२) उपदंश में दाड़िम वृक्ष त्वक् (अनार वृक्ष की छाल) के चूर्ण द्वारा उपदंश के क्षत को अवचूर्णन करने से व्रणरोपण होता है। (उपदंश–चि०)।

भावप्रकाश—इसकी जड़ कृमिहर है।

यूनानी चन्नं नव्यमत अनार वृक्षकी छाल विशेषतः उसकी जड़ की छाल कद्दूदाना (Tapeworm) के लिए अत्युत्तम कृमिघ्न औषध है। इसको अधिक मात्रा में देने से वमन एवं रेचन आने लगते हैं। इसके उपयोग की सर्वोत्तम विधि निम्न है—

इसकी जड़ की छाल ५ तो०, जल २ सेर। इसका क्वाथ करें, जब एक सेर पानी शेष रहे उतार कर छान लें। इसमें से ५ तो० प्रातः काल खाली पेट सेवन करें (बालक को १ से २ फ्लु० ड्रा०) ऐसी ऐसी ४ मात्राएँ प्रति-आध आध घण्टा पश्चात् देनेके बाद एक मात्रा एरंड तैल का देकर आँतों को साफ कर दें।

इससे कद्दूदाना मर कर निकल जाता है। म० अ०। डिमक। इं० मे० मे०। आर० एन० चोपरा। पी० वी० एम०।

पुरातन अतिसार एवं प्रवाहिका में अनार की छाल तथा फल त्वक् के स्तम्भक गुण का उपयोग किया जा चुका है। आर० एन० चोपरा।

पैलोटिएरीन(*Pelletierine*).

($C_8H_{13}NO$)

(ऑफ़िशल Official)

लक्षण एवं परीक्षा—यह एक क्षारीय सत्व है जो दाड़िम की जड़ की छाल द्वारा प्राप्त होता है। इसके वर्ण रहित सूक्ष्म रवे होते हैं जो खुली वायु में या ऐसी शीशी में जो पूरी भरी न हो बहुत शीघ्र वर्णयुक्त हो जाते हैं। यह जल में विलेय होते हैं। मात्रा—५-१० ग्रेन।

पैलोटिएरीन सल्फास

Pelletierine Sulphas

प्युनिसीन सल्फेट Punicine Sulphate—इं०। अनारीन गंधेत्।

लक्षण एवं परीक्षा—यह एक भूरे रंग का शर्बती द्रव है जो जल में सरलतापूर्वक विलेय होता है। कभी कभी इसकी रवायुक्त डलियाँ होती हैं। इसको टेपवर्म (कद्दूदाना) को निकालने के लिए ५ से ८ ग्रेन की मात्रा में देते हैं। अस्तु, इसको बासी मुँह खिलाकर उसके दो घंटा पश्चात् कम्पाउंड टिंकचर ऑफ़ जैलप की एक पूरी मात्रा पिला देते हैं। (फ्रेंचकोडेक्स)

मात्रा—पूर्ण वयस्क को ५ से ८ ग्रेन तक; तेरह वर्ष के नवयुवक को २॥ से ४ ग्रेन तक और दो वर्ष के बच्चे के लिए $\frac{१}{२}$ से $\frac{४}{५}$ ग्रेन तक।

पैलोटिएरीनी टैनास

(*Pelletierinæ Tannas*)

पेलोटिएरीन टैनेट Pelletierine Tannate—इं०। अनारीन कषायेत।

लक्षण एवं परीक्षा—यह एक हलका विकृताकार पीत वा धूसर वर्ण का चूर्ण है जो अनार Punica granatum (*Myrtaceæ*) की जड़ एवं कांड की छाल द्वारा प्राप्त क्षारीय सत्व का टैनेट मिश्रण होता है। प्रभाव—कद्दूदाने (Tapeworm)के लिए कृमिघ्न है। मात्रा—२ से ८ ग्रेन (१३ से ५० सेंटीग्राम)।

यह अनार की जड़ एवं कांड की छाल की प्रतिनिधि स्वरूप व्यवहारमें आता है। यह छाल द्वारा प्राप्त चार क्षारीय सत्वों के टैनेट का मिश्रण है। यह जल में कम परन्तु एलकोहल (९०%) के ८० भाग में १ भाग विलेय होता है।

प्रभाव तथा उपयोग—कद्दूदाना (Tapeworm) पर इसका विशेष मारक प्रभाव होता है। पेलोटिएरीन नामक क्षारीय सत्व के विलयन (१०, ००० में १) में थोड़ी देर तक डुबो रखने से वह मृतप्राय हो जाता है। इनमें टैनेट अधिक पसंद किया जाता है। क्योंकि अल्प विलेय होने के कारण इसका अधिकांश अपरिवर्तित दशा में ही आमाशय से गुजर कर क्षुद्रांत्र में पहुँच जाता है, जहाँ कि इसका कृमि के साथ सम्पर्क होता है। इसका शुद्ध क्षारीय सत्व अथवा विलेय सल्फेट (गंधेत्) सम्भवतः आमाशय द्वारा अभिशोषित होकर कतिपय प्रकृति सम्बन्धी लक्षणों को उत्पन्न करता है, यथा—सिर चकराना, दृष्टिमांद्य, मांसपेशीस्थ आक्षेप और कायविस्तार। परन्तु टैनेट के सेवन के बाद ये लक्षण बहुत कम दीख पड़ते हैं। इसको उपवास के बाद ८ ग्रेन (४ रत्ती) की मात्रा में देना चाहिए और उसके एक या दो घंटे पश्चात् मृत कृमि को निकालने के लिए तीव्र रेचन जैसे जैलप (७॥ रत्ती) अथवा एक आउंस (२॥ तो०) एरंड तैल व्यवहार कराएँ (इससे कृमि भी निर्गत हो जाता जाता है और उदर एवम् सिर में दर्द भी नहीं होता)। थोड़ी मात्रा में टिटनस (धनुस्तम्भ) और पक्षाघात के कतिपय भेदों में पैलोटिएरीन सल्फेट का त्वगन्तःअंतःक्षेप किया जा चुका है। (Sir W. Whitla.).

नोट—इसके नूतन लवण तो विश्वास के योग्य होते हैं, परन्तु पुरातन होने पर ये खराब हो जाते हैं।

अनार फल त्वक् अथवा मूल त्वक् के क्वाथ से कभी कभी शिथिल कण्ठक्षत आदि रोगों में गण्डूष कराते हैं। इस हेतु इसकी जड़ की छाल के कल्क का कंठ में प्रलेप करते हैं। गुदा एवं जरायु सम्बन्धी क्षतों में इसका स्थानिक प्रयोग उपयोगी होता है।

इसकी जड़ की छाल श्वेत प्रदर तथा रक्तस्रण के लिए अत्यन्त गुणदायक है। इसको आधसेर जौ कुट करके ३–४ सेर पानी में धीमी आँच पर पकाएँ जब पाव भर पानी रह जाए तब उतार कर छान लें। इससे स्त्री अपनी योनि धोया करे। और मलमल का कपड़ा तर करके योनि में रक्खे।

अतीसार में इसकी छाल के क्वाथ में थोड़ी सी अफीम मिलाकर प्रयोग करने से बहुत लाभ होता है।

इसकी छाल के काढ़े में सोंठ और चन्दन का बुरादा छिड़क कर पिलाने से रुधिर युक्त संग्रहणी मिटती है।

अनार की जड़ को पानी में घिस कर लेप करने से शिर का दर्द दूर होता है।

इसकी छाल का चूर्ण बुरकाने से उपदंश की टांकी मिटती है।

इसकी छाल के काढ़े में तिलों का तेल डाल कर तीन दिन तक पिलाने से पेट के कीड़े बाहर निकल जाते हैं।

आँख आने में अनार का क्वाथ एक दो बुंद आँख में टपकाएँ। कुकरे में आँख के पपोटों को उलट कर उक्त काढ़े से आँख को धोने से अत्यन्त लाभ होता है। कर्णशूल तथा कान के भीतर की सूजन में अनार के काढ़े को कान में डालना चाहिए।

अनार के पत्ते

हारीत—चलित गर्भ में दाड़िम पत्र, अस्थिरगर्भा अर्थात् जिसका प्रायः गर्भस्राव हो जाता हो उस स्त्री के गर्भस्राव की आशंका के निवारणार्थ गर्भ से पाँचवें मास में अनार के पत्र, श्वेत चन्दन को दधि और मधु के साथ आलोड़ित कर सेवन कराएँ। (चि० ४६ अ०)।

रिसाला अमृत के कतिपय चुने हुए प्रयोग

इन योगों में मीठे अनार के पत्ते लेने चाहिए। अनार के ताजे पत्तों को पत्थर पर पीस कर रात को सोते समय हाथ की हथेलियों पर और पाँव के तलवों पर लेप करने से यह हाथ और पाँवकी जलन को दूर करता है।

अनार के १० तोले ताजे पत्तों को ऽ१ पानी में औटाएँ, ऽ॥ पानी शेष रहने पर छान कर दिन में दो तीन बार इसी पानी से गुदा धोने से गुदभ्रंश रोग दूर होता है। गर्भाशय के बाहर निकल आने पर भी इसका प्रयोग गुणदायक होता है।

गर्भाशय के बाहर निकल आने और गुदभ्रंश में अनार के हरे पत्तों को साया में सुखा कर बारीक पीस कपड़ छान कर ६–६ मा० प्रातः सायं ताजे जल से सेवन कराएँ।

अनार के ताजे पत्ते दो तोले, स्याह मिर्च १ माशा, दोनों को ऽ≈ पानी में पीस और छान प्रातः एवं इसी प्रकार सायंकाल में पिलाने से यह स्त्रियों के प्रदर रोग को दूर करता है।

अनार के दो तोले ताजे पत्तों को आधपाव पानी में रगड़ और छान कर पिलाना और अनार के पत्तों को पीस कर पेड़ू पर लेप करना गिरते हुए गर्भ को रोकता है।

अनार के पत्तों को साया में सुखा पीसकर कपड़ छान करके ६–६ मा० सुबह गौ की छाछ और शाम को ताजे पानी के साथ खिलाने से पांडु रोग दूर हो जाता है।

अनार के पत्तों को बारीक पीसकर थोड़ा सरसों का तेल मिलाकर उबटन के तौर पर दिन में एक बार प्रयोग करना खुजली को दूर करता है।

उपर्युक्त विधि के अनुसार सेवन करने अथवा पाव भर अनार के पत्तों को पाँच सेर पानी में औटाकर ४ सेर शेष रहने पर इससे नहाने से गरमियों में पित्ती निकलने को लाभ होता है।

अनार के दो तोले हरे पत्तों को आध पाव पानी में रगड़ और छान कर प्रातः सायं और रोग की अधिकता में दो पहर को भी सेवन करने से मिल (उरःक्षत) को लाभ होता है।

अनार के हरे पत्तों को आध पाव पानीमें पीस और छानकर प्रातः सायं पिलाने तथा अनार के हरे पत्तों को पत्थर पर बारीक पीसकर मस्तक पर लेप करने से नकसीर को लाभ होता है।

अनार के हरे पत्तों को कुचल कर निकाला हुआ रस १० तो०, गोमूत्र ६० तो०, तिल तैल १० तो०, तीनों को नरम आग पर पकाएँ। जब तेल मात्र शेष रह जाए तब आग पर से उतार कर और छानकर ठंडा होने पर शीशी में डाल रखें। इसको दो तीन बूंद थोड़ा गरम करके प्रातः और सायं कान में डालने से बहरापन, कान का दर्द और कानों की खुश्की और साँ साँ शब्द होना बन्द होता है।

अनार के पत्तों को कुचल कर निकाला हुआ रस १ सेर, बेल के पत्तों को कुचल कर निकाला हुआ रस १ सेर, गाय का घी १ सेर, तीनों को नरम आँच पर पकाएँ। केवल घी मात्र शेष रहने पर छान कर रखें। दो दो तोला यह घी गौ के पाव भर गरम दूध में मिलाकर प्रातः सायं पिलाना बधिरता को दूर करता है। दूध में आवश्यकतानुसार मिश्री या खांड़ मिला लें।

अनार के दो तोले ताजे पत्तों को आध सेर पानी में पकाकर आधपाव रहनेपर छानकर प्रातः सायं पिलाना और अनार के पत्तों को पानी में पीस टिकिया बनाकर बाँधना कंठमाला और गलगंड को दूर करता है। इसी भाँति सेवन करना भगन्दर में भी लाभप्रद है।

छाया में सुखाए हुए अनार के पत्ते ५ भाग और नवसादर १ भाग, दोनों को बारीक पीसकर कपड़छान करें, और ३-३ मा० प्रातः सायं ताजे पानी के साथ खिलाएँ। यह प्लीहा के लिए गुण दायक है।

अनारके पत्तोंको कुचल कर निकाला हुआ रस १ सेर और मि० आधसेरका शर्बत तय्यार करें। २-२ तोला यह शर्बत दिन में दो तीन बार चटाना आवाज के भारीपन, खाँसी, नजला तथा जुकाम (प्रतिश्याय) को दूर करता है।

अनार के पत्तों को छाए में सुखाकर बारीक पीसकर कपड़ छन करें और शहद के साथ जंगली बेर के समान गोलियाँ बना कर छाए में सुखाकर रक्खें। यदि शुद्ध शहद न उपलब्ध हो तो गुड़के साथ गोलियाँ बनालें। इन गोलियों को मुँह में रख कर चूसनेमें भी यह आवाज के भारीपन, खाँसी और नजला व जुकामको दूर करता है।

२ तो० अनार के पत्तों को आध सेर पानी में औटाएँ। जब आधपाव जल शेष रहे तब छान कर १ तो० खाँड़ मिलाकर प्रातः सायं सेवन करें। इससे आवाज का भारीपन खाँसी, नजला व जुकाम और दर्द सीना इत्यादि दूर होते हैं।

अनार के पत्तों को छाया में सुखा बारीक पीस कर कपड़छान करें और ६-६ मा० सुबह गौ की छाछ और शाम को ताजे पानी के साथ खिलाएँ। इससे पेटके कीड़े दूर होते हैं।

अनार के ताजे पत्तोंको कुचल कर रस निकालें और इससे कुल्ले कराएँ। इससे मुख, हलक़ और जबान का पकना, मसूढ़ोंसे खून और पीव का आना, जुबान और मुँह के छाले तथा ज़ख़्म दूर हो जाते हैं। रस निकालने के लिए यदि काफी पत्ते न मिल सकें तो पत्तों को दुगुने पानी में पीस और छान कर रस निकालें।

अनार के दो तोले पत्तों को १० तो० पानी में

रगड़ और छान कर सुबह इसी तरह शाम को पिलाना बवासीर के खून को बन्द करता है।

अनार के पत्तों को पीस कर टिकियाँ बनाकर जरा गरम करके घी में भून कर बाँधना बवासीर के मस्सों की जलन, दर्द और शोथ को दूर करता है और मस्सों को खुश्क करता है।

२ तोले अनार के पत्तों को १० तोले पानी में रगड़ और छान कर सुबह और शाम को पिलाना खून के वमन को रोकता है। इसी प्रकार सेवन करने से खून के दस्त भी बन्द होजाते हैं।

अनार के पत्तों को पानी में पीस कर लेप करने से पित्त का सिर दर्द दूर होजाता है। वात और कफ के सिर दर्द में अनार के पत्तों को पानी में पीस कर किञ्चित् गरम करके लेप करना चाहिए।

छाया में शुष्क किए हुए अनार के पत्ते ऽ॥, धनियाँ शुष्क ऽ॥ इनको बारीक पीस कर कपड़ छान करें, गेहूँ का आटा ऽ१ तीनों को मिला कर गाय के ऽ२ घी में भून कर ठंडा होने पर ऽ४ खाँड़ मिलाकर रखें। इसमें से १–१ छं० या पाचन शक्ति के अनुसार न्यूनाधिक मात्रा में प्रातः सायं गरम दूध के साथ खिलाना सिर के दर्द तथा सिर चकराने को दूर करता है।

अनार के दो तोले ताजे पत्तों को ऽ= पानी में रगड़ और छान कर प्रातः सायं पिलाना खूनी पेचिश को दूर करता है।

अनार के पत्तों को छायामें सुखा बारीक पीस कर कपड़ छान करें। ६ मा० प्रातः गौ की छाछ और सायं उसी छाछ के पनीर के साथ खिलाएँ। कामला में लाभप्रद है।

अनार के २ तोले हरे पत्तों को आधपाव पानी में रगड़ और छान कर सुबह इसी प्रकार शाम के वक्त पिलाना पेशाब के रास्ते खून आने में गुण-दायक है।

अनार के ताजे पत्तों को पत्थर पर बारीक पीस कर दिन में दो बार लेप करना दाद और चंबल को दूर करता है।

अनार के पत्तों को छाया में सुखा बारीक पीस कर कपड़ छान करके सुबह और शाम ६–६ मा० ताजे पानी के साथ खिलाना दाद, चंबल और खून की खराबी को दूर करता है।

अनार के पत्तों को पानी में पीस कर दिन में दो बार १–१ घंटे के लिए लेप करना गंज को दूर करता है।

अनार के ताजे पत्तों को कुचल कर निकाला हुआ रस १ सेर, अनार के ताजे पत्तोंकी चटनी ऽ= सरसों का तेल आधसेर, तीनों को मिलाकर नरम आँच पर पकाएँ। तैल मात्र शेष रहने पर आग पर से उतार और छान कर ठंडा होने पर शीशी में भरकर इस तैल को दिन में दो बार लगाना गंज और बालझड़ को दूर करता है। इस तेल की मालिश करने से चेहरे की कील झाँप और काले धब्बे भी दूर हो जाते हैं।

अनार के पत्रों को छाए में सुखा कर बारीक पीस कपड़ छान करें और १–१ तो० प्रातः सायं पानी के साथ खिलाने से आतशक (उपदंश) दूर होता है।

आधपाव अनार के ताजे पत्तों को कुचल कर १ सेर पानी में औटाएँ, आधसेर पानी शेष रहने पर छान कर इस पानी से दिन में दो तीन बार आतशक के जख्मों को धोना चाहिए।

अनार के पत्तों को छाए में सुखा बारीक पीस कपड़ छान करें और अनार के पत्रों को कुचल कर निकाले हुए रस में २१ दिन खरल करके शुष्क होने पर कपड़ छान करें। आतशक के ज़ख्मों को शुष्क करने के लिए यह एक अजीब चूर्ण है।

अनार के दो तोले ताजे पत्रों को आधसेर पानी में जोश देकर आधपाव पानी शेष रहने पर छान कर पाव भर गरम दूध में मिलाकर पिलाने से शारीरिक एवम् मानसिक क्लांति प्रशमित होती है। प्रातः एवम् रात्रि को सोते समय इसी भाँति सेवन करना अनिद्रा या स्वल्प निद्रा के लिए लाभदायक है। नींद आने के लिए भैंस का दूध सेवन करना अत्युत्तम है।

अनार के हरे पत्ते २ तोले को आध सेर पानी में पकाकर आधपाव शेष रहने पर छानकर १ तो० गोघृत और १ तो० खाँड़ मिलाकर सुबह और शाम पिलाने से मृगी दूर हो जाती है।

२ तोले अनार के हरे पत्तों को आधसेर पानी में रगड़ और छानकर सुबहशाम पिलाना सूजाक को दूर करता है।

अनार के पत्तों को कुचलकर निकाला हुआ रस एकसेर सत्यानाशी कटेरी को कुचल कर निकाला हुआ रस १ सेर, गोमूत्र १ सेर, काले तिलों का तेल २ सेर, अनार के पत्तों का कल्क आधसेर सबको मिलाकर आग पर चढ़ाएँ। केवल तेल मात्र शेष रहने पर आग पर से उतार और छान कर रक्खें। इस तेल को दिन में दो तीन बार फुलवरी (श्वित्र) के दागों पर लगाना गुणदायक है। इस तेल के लगाने से काले धब्बे, झीप, दाद, चंबल, भगंदर और कंठ-माला इत्यादि रोग दूर हो जाते हैं। इसे कोढ़ के ज़ख्मों पर लगाने से भी लाभ होता है।

इसको दिन में तीनबार लगाने से श्लीपद को लाभ होता है।

अनार के पत्तों के छाए में सुखाकर बारीक पीसकर कपड़छान करें। ६-६ मा० सुबह और शाम ताजे पानी के साथ खिलाने से श्वित्र (सफ़ेद कोढ़) दूर हो जाता है।

अनार के २ तोले हरे पत्तों को आधपाव पानी में रगड़ और कपड़छान कर सुबह इसी प्रकार शाम के वक्त पिलाने से यह सोम रोग को दूर करता है।

अनार के ६ माशे हरे पत्तों को २ तो० पानी में रगड़ और छानकर २ तो० शर्बत मिलाकर लाभ होने तक एक-एक घण्टा बाद पिलाना हैज़े के लिए अत्यन्त लाभप्रद है। यह वमन को भी बन्द करता है।

एक तो० अनार के हरे पत्ते और १ मा० कालीमिर्च, दोनों को ऽ= पानी में रगड़ और छानकर सुबह और शाम पिलाना, रक्तपित्त को दूर करता है।

अनार के पत्तों को छाया में सुखा बारीक पीसकर कपड़छान करें और १-१ तो० सुबह और शाम ताज़ा पानी के साथ खिलाएँ। इससे कोढ़ दूर हो जाता है।

साया में शुष्क कर बारीक पीस कर कपड़छान किए हुए अनार के पत्ते ६-६ मासा सुबह और शाम ताजा पानी के साथ खिलाना, प्रमेह और क़ुरह (क्षत) को दूर करता है।

साए में शुष्क किए हुए अनार के पत्ते ४ भाग, सेंधानमक १ भाग, दोनोंको बारीक पीस कर कपड़छान करें और ४-४ मा० दोनों समय भोजन से पहिले पानीके साथ खिलाएँ। यह भूख की कमी एवं बदहज़मी को लाभप्रद है।

अनार के पत्ते २ तो०, ऽ= पानी में रगड़ और छान कर पिलाना, मूर्च्छा को दूर करता है। यदि रोग चिरकालीन हो तो सुबह शाम दोनों वक्त पिलाएँ।

अनार के पत्ते १ तो०, गुलाब के ताजे फूल १ तो० (यदि ताजे फूल न मिलें तो शुष्क पुष्प ६ मा० ले लें), दोनों को ऽ॥ पानी में औटाएँ। ऽ= पानी शेष रहने पर छानकर एक तो० गोघृत मिला कर गरम गरम सुबह और शाम पिलाने से योषापस्मार (Hysteria) दूर होजाता है। इससे उन्माद को भी लाभ होता है।

अनार के हरे पत्ते १ तो०, गोखरू हरा १ तो० दोनों को ऽ≡ पानी में रगड़ और छानकर सुबह और शाम पिलाना पेशाब की रुकावट और जलन को दूर करता है।

२ तो० हरे पत्तों को ऽ= पानी में रगड़ और छान कर सुबह और शाम पिलाना लू लगने में लाभप्रद है।

अनार के पत्तों को छाए में सुखा बारीक कर कपड़ छान करें और एक-एक तो० सुबह और शाम ताजा पानी के साथ खिलाने से श्लीपद दूर होता है।

अनार के पत्तों को पानी में पीस कर लेप करना श्लीपद को लाभप्रद है। । इसका प्रलेप कनफेड़ के वरम को दूर करता है।

अनार के २ तो० पत्तों को ʃ॥ पानी में क्वथित कर ʃ= पानी शेष रहने पर छान कर ४ रत्ती सेंधानमक मिला सुबह और शाम पिलाने से भी यह कनफेड़ के वरम को दूर करता है।

अनार के २ तो० हरे पत्तों को ʃ॥ पानी में क्वथित करें जब ʃ। पानी शेष रहे तब छानकर ठंडा होने पर इससे गण्डूष कराने से यह खुनाक़ (Sore throat) को दूर करता है। आतशक में पारद सेवन से मुँह आने पर भी इसका उपयोग लाभदायक होता है।

अनार के २ तो० हरे पत्तों को ʃ॥ पानी में जोश देकर ʃ= रहने पर छानकर ठण्डा करके सुबह इसीतरह शामके वक्त पिलानेसे यह खुनाक़ (Sore throat) और मुँह आने में मुफ़ीद है।

अनार के पत्तों को छाए में सुखा बारीक पीस और कपड़ छान करके सुबह और शाम दाँत और मसूढ़ों पर मञ्जन रूप से लगाने से दाँतों के हिलने, मसूढ़ों से खून या पीव आने और मसूढ़ों के फूलने इत्यादि में लाभप्रद है।

ʃ= अनार के पत्तों को ʃ१ पानी में जोश देकर ʃ। पानी शेष रहने पर छान कर इससे जख्मों को धोने से उनसे खून आना बन्द हो जाता है और ज़ख्मोंका गन्दापन दूर हो वे शीघ्र भर जाते हैं।

इस प्रकार धोने से और पूर्वोक्त अनार पत्र तथा सत्यानाशी द्वारा प्रस्तुत तैल के लगाने से नासूर भी दूर हो जाता है।

अनारके पत्तों को छाएमें सुखाकर बारीक पीस कपड़छान करके ६–६ माशा सुबह शाम ताजे पानी के साथ खिलाना भी नासूर में लाभ करता है

अनार के पत्तों को पानी में पीसकर दिनमें दो बार लेप करना या अनार के पत्तों को पानी में भिगोकर बतौर पोटली आँखों पर फेरना दुखती आँखों को लाभ पहुँचाता है।

अनार की पत्तों को कुचल कर निकाले रस को कपड़े में छान कर दिन में दो बार चन्द क़तरे आँखोंमें टपकाना आँखों की सुर्खी, वरम, खुजली और गंदापन को दूर करता है।

अनार के १ सेर ताजे पत्तों को ८ सेर पानी में भिगोएँ। २४ घंटे बाद आग पर पकाएँ जब २ सेर पानी शेष रह जाए छान कर इस पानी को दुबारा आग पर चढ़ाएँ। जब शहद की तरह गाढ़ा हो जाए तब आग पर से उतार कर ठंडा होने पर शीशी में डाल रक्खें। इसे सलाई से सुबह और रात्रि में सोते समय आँखों में लगाना दुखती आँखों को लाभ करता है और आँखों की खुजली, ललाई, गंदापन, पलकों की खराबी, पानी जाना और कुकरों को दूर करता है। अधिक काल तक सेवन करते रहने से परवाल भी दूर हो जाते हैं। पत्ती को पानी में भिगोने से पहिले पानी से अच्छी तरह साफ कर लें जिससे मिट्टी आदि अलग हो जाएँ। यथासम्भव इसको ताम्र पात्र में तय्यार करें।

अनारकी हरी पत्तीका कुचलकर निकाला हुआ रस ४०-४० तो०, सुरमा स्याह २ तो०, दोनों को खरल करें। शुष्क होने पर कपड़छान कर रखें। इसको दोनों समय आँखों में लगाना आँखों के उपर्युक्त रोगों को दूर करता है।

अनार के हरे पत्तों को कुचल कर निकाला हुआ रस खरल में डाल कर खरल करें। जब शुष्क हो जाए तब कपड़े में छान कर रखें। प्रातः सायं सलाई द्वारा आँखों में लगाना पूर्वोक्त नेत्र रोगों में यह प्रयोग अधिकतर लाभप्रद है

सिंगरफ़ रूमी १ तो०, अनार के हरे पत्ते २ तो० दोनों को खरल करके ७ टिकियाँ बना कर छाया में शुष्क करें। तामे के टुकड़ों को आग पर गरम करके उस पर एक टिकिया रखकर जलाएँ और आतशक के रोगी को नंगा करके

उसके बदन पर एक कपड़ा लपेट कर कपड़े के भीतर वह तामे का गरम टुकड़ा रक्खें, जिस पर टिकिया पड़ी हो। जब धुआँ निकलना बन्द हो जाए और बदन पर खूब पसीना आचुके तो तेज हवा से बचा कर रोगी के ऊपर से कपड़ा हटा कर दूसरे कपड़े से पसीना साफ करदें। सात दिन तक यह प्रयोग करने से आतशक दूर हो जाता है।

औषध सेवन काल में गेहूँ और चने की रोटी घी के साथ खिलाएँ। अनार के हरे पत्तों को पत्थर पर बारीक पीसकर आग से जली हुई जगह पर दिन में दो तीन बार लेप करना लाभदायक है।

१० तोला अनार की पत्ती को कुचल कर २० तोला तिलों के तैल में जला कर काला होनेपर आग से उतार लें और छान कर रक्खें। आवश्यकता होने पर इस तेल को ७ बार पानी से धोकर मलहम सा तय्यार कर आग से जली हुई जगह पर लगाने से लाभ होता है।

भिड़, ततैया, मधु मक्खी, मकड़ी और बिच्छू प्रभृति से दंशित स्थान पर अनार के हरे पत्तोंको रगड़ कर लेप करना चाहिए।

तेजाब और भिलावेके तैल प्रभृति, तेज चीजों से जली हुई जगह पर उपर्युक्त प्रयोग उत्तम है। मकड़ी के विष में दर्द सर बुखार और दाह आदि कई रोग पैदा हो जाते हैं। इन सब में अनार के दो तोले ताजे पत्तों और दो माशे काली मरिच को आधपाव पानी में रगड़ और छान कर सुबह और तकलीफ की अधिकता की दशा में इसी तरह शाम को भी पिलाएँ।

अनार के पत्तों को छाया में सुखाकर बारीक पीसकर कपड़ छान करें। पित्त ज्वर में सुबह व शाम को ताजा पानी के साथ ६-६ माशा खिलाएँ, बात कफ ज्वर में गर्म पानी के साथ खिलाएँ।

टाइफ़ाइड (आंत्रिक सन्निपात ज्वर) में २ तो० अनारके पत्तों को आध सेर पानी में जोश दें, आध पाव पानी शेष रहने पर छानकर और ४ रत्ती सेंधा नमक मिलाकर सुबह और इसी प्रकार शाम को पिलाया करें।

अनार के पत्तों को छाया में सुखाकर बारीक पीसें और कपड़ छान कर के ६-६ माशा सुबह व शाम ताजे पानी के साथ पिलाएँ या १ तो० अनार के ताजे पत्र को ऽ= पानी में रगड़ और छान कर सुबह और शाम पिलाने से दिल के धड़कन को लाभ होता है। छाए में सुखाए हुए अनार में दही, नीम के पत्र १-१ तो०, छोटी इलायची और गेरू १-१ तो० सब को बारीक कपड़ छान कर और ४-४ मा० सुबह और शाम ताजे पानी के साथ सेवन कराने से दिल की धड़कन, धूप या उष्णताधिक्य के कारण शरीर में चिनगारियों के निकलने में बहुत लाभ होता है। इससे प्यास भी कम हो जाती है।

बढ़ी हुई प्यास में अनार के पत्तों को कुचल कर मुँह में रखकर चूसते रहना या १ तो० अनार के पत्तों को ऽ= पानी में रगड़ और छान कर सुबह शाम पिलाने से बहुत लाभ प्रतीत होता है।

अनार के पत्तों को पीस कर लेप करना स्तनों को दृढ़ करता है।

अनार के पत्तों को कुचल कर निकाला हुआ रस ऽ१, तिल तैल २० तो० दोनोंको गरम आँच पर पकाएँ, तैलमात्र शेष रहने पर उतार कर छान कर रखें। इसकी दिन में दो तीन बार मालिश करने से भी स्त्रियों के कुच कठोर हो जाते हैं, परंतु शीघ्र नहीं।

अनार के ताजे पत्तों को कुचल कर निकाला हुआ रस ऽ२, गाय का घी ऽ१, अनार के ताजे पत्तों का कल्क ऽ=, तीनों को मिलाकर नरम आग पर पकाएँ। जब पानी जल कर घी शेष रह जाए तब उतारकर कपड़े से छानकर ठण्डा होने पर मिट्टी के चिकने बर्तन में रख छोड़ें। यह घृत मेदाजनक, वीर्य एवं बुद्धिवर्द्धक है। ऽ। उष्ण गोदुग्ध में आवश्यकतानुसार मिश्री

मिला कर उक्त औषध २ तो० सुबह व शाम पिलानी चाहिए।

अनार कली anára-kalí—हिं० स्त्री० दाड़िम-कलिका, अनार की कली। Punica Granatum, *Linn.* (Buds of-pomegranate) देखो—अनार।

अनारका झाड़ anára-ká-jhára-द० दाड़िम वृक्ष, अनार का पेड़। Punica Granatum, *Linn.* । स० फा० इं०। देखो—अनार।

अनारकी कली anára-kí-kalí—हिं० संज्ञा स्त्री० दाड़िम कलिका। (Buds of pomegranate) देखो—अनार।

अनार की छाल anára-kí-chhál-हिं० संज्ञा स्त्री० दाड़िम त्वचा-सं०। क़श्रुर्रुम्मान-अ०। पोस्त अनार-फ़ा०। ग्रेनेटाइ कॉर्टेक्स (Granati cortex)-ले०। पॉमेग्रेनेट बार्क pomegranate bark-इं०। देखो—अनार।

अनारकेवा anára-kevá-फ़ा० खसखास, पोस्ता। (Poppy seeds).

अनारकोटीन anarcotine-इं० नारकोटीना Narcotina, नारकोटीन Narcotine। अवसन्नीन-हिं०। मुसकिरीन, मुख़द्दिरीन-अ०।

इसके वर्ण रहित, चमकीले तथा बड़े बड़े रवे होते हैं जो जल में तो अविलेय पर ईथर वा उबलते हुए मद्यसार अथवा अम्लीय (विलयन) में विलेय होते हैं। इसमें सुप्तताकारक गुण न होने के कारण इसे "अनारकोटीन" अर्थात् अनवसन्नीन कहते हैं। यह परियाय निवारक (एण्टि-पीरिऑडिक) है और इस विचार से यह क्वीनीन के समान है। अस्तु, जूड़ी तापों (एग्यू) में इसे क्वीनीन के स्थान में वर्तते हैं। मात्रा—१ से ३ ग्रेन तक।

अनारकोही anára-kohí—फ़ा० पहाड़ी अनारजो अधिक अम्ल होता है।

अनारगुली anára-gulí—फ़ा० गुलनार।

अनारतुर्श anára-tursh—फ़ा० खट्टा अनार (Sour Pomegranate).

अनारदश्ती anára-dashtí-फ़ा० जंगली अनार। (Wild Pomegranate).

रुम्मानबर्री, मज़-अ०। तुह्फ़ा महोदयके वचनानुसार हब्बुल् क़ुलक़ुल इसी का फल है और महज़नी तुह्फ़ाने लिखा है कि अनारदश्ती गोरखपुर (संयुक्तप्रांत) के आस पास बहुतायत से पैदा होता है। इसके तीन चार पत्ते भूमि से उत्पन्न होने के बाद ही पुष्प आजाते हैं जो गुलअनार के समान होते हैं और पत्ते कासनी के पत्तों के सदृश होते हैं।

अनारदाणा anára-dáṇá—राज० पु० दाड़िम-बीज, अनार का बीज। (Seed of pomegranate) देखो—अनार।

अनारदानह् anára-dánah-
अनारदाना anára-dáná—हिं० संज्ञा पु०

अनारका बीज। खट्टे अनारका सुखाया हुआ दाना। हब्बुर्रुम्मान-अ०। (Punica Granatum, *Linn.* (Seeds of-Pomegranate). स० फा० इं०। देखो—अनार। (२) रामदाना।

अनारदानहे-तुर्श anára-dánahetursh—फ़ा० खट्टा अनारदाना। (Seeds of sour pomegrante.)

अनारदानहे-दश्ती anára-dánahe-dashtí—फ़ा० हब्बुल् क़ुलक़ुल (ग्वार चिकना)। लु० क०।

अनारदानहे शीरीं anára-dánahe-shírín—फ़ा० मीठा अनारदाना।

अनारपुष्प anára-pushpa—हिं० पु० अनारका फूल। Punica granatum, *Linn.* (Flowers of-Pomegranate.)

अनारवृक्ष anára-vriksha—हिं० पु० अनार का पेड़। (Punica Granatum, *Linn.*).

अनारमुश्क anára-mushká-फ़ा० नारमुश्क, नागकेशर । (Mesua ferrea).

अनार मैखोश anára-maikhosha-फ़ा० खट्‌मिट्ठा अनार, स्वाद्वम्लदाडिम । (Pomegranate of a mixed taste of sour and sweet). देखो **अनार** ।

अनार वित्रतास anára-vitra-tísa-रू० फ़ाशरस्तीन । See-Fásharastína.

अनारशीरीं anára-shírín-फ़ा० मीठा अनार । (Sweet Pomegranate). देखो- **अनार** ।

अनारस anárasa-गु० **अनन्नास** । Ananas sativus, *Mill.* (Pine apple). स० फा० इं० ।

अनारहिन्दी anára-hindí-फ़ा० श्री फल, विल्व, बेल (Ægle marmelos). "बेलगिरी इसी का गूदा है ।"

अनारिक्ष anáriksha-सं० आकाश (Sky).

अनारिक्ष जलम् anárikshajalam-सं० क्ली० अन्तरीक्ष जल, वर्षा का जल ।

अनारी anárí-हिं० वि० [हिं० अनार] अनार के रंग का लाल ।

संज्ञा पुं० (१) लाल रंग की आँख वाला कबूतर । (२) एक पकवान । यह एक प्रकार का समोसा है जिसके भीतर मीठा या नमकीन पूर भरा जाता है ।

अनारीचह् anáríchah-फ़ा० एक अप्रसिद्ध बूटी है (ज़ुफ़रा भेद की).

अनार्जवः anárjavah-सं० पुं०
अनार्जव anárjava-हिं० संज्ञा पुं० } (१) रोग । (Disease) रा० नि० व० २० । (२) सिधाईका अभाव । टेढ़ापन । असरलता ।

अनार्तव anártva-हिं० वि० [सं०] [स्त्री० अनार्तवा] बिना ऋतुका । बेमौसिम । अनवसर ।

संज्ञा पुं० स्त्रियों के ऋतुधर्म का अवरोध । रजोधर्म की रुकावट ।

अनार्त्तः anárttah-सं० त्रि० अकालज, बेसमय, बिना ऋतु । (Untimely).

अनार्त्तव जलम् anárttava-jalam-सं० क्ली० जो जल बिना ऋतु अर्थात् चौमासे (वर्षा-ऋतु) के सिवा पौष आदि महीनों में बादलों द्वारा बर्षता है उसे "अनार्त्तवजल" कहते हैं । यह प्राणियों में वातादि तीनों दोषों को कुपित करता है । "अनार्त्तवं प्रमुञ्चन्ति वारि वारिधरास्तु यत् । तत्त्रिदोषाय सर्व्वेषां देहिनां परिकीर्तितम् ॥" भा० पू० वारि० व० । वर्षा ऋतु के सिवा अन्य ऋतु का जल अथवा वर्षा ऋतु के भी प्रथम वृष्टि का जल । यह जल पीने योग्य नहीं होता । वा० सू० ४ अ० श्लो० ७ ।

अनार्त्तवा anárttavá-सं० स्त्री०, हिं० वि० स्त्री० (Unmenstruating woman) जो ऋतुमती न हो । रजः शून्या, वह स्त्री जिसे मासिकधर्म न होता हो यथा-"अनार्तवस्तनापंडी" सु० सं० ३ अ० ३८ । "अनार्त्तवास्तनी षण्डी खरस्पर्शा च मैथुने ।" मा० नि० ।

अनार्य anárya-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अनार्या । संज्ञा अनार्यत्व, अनार्यता] (१) वह जो आर्य न हो । अश्रेष्ठ । (२) म्लेच्छ ।

अनार्य्यकम् anáryyakam-सं० क्ली० (१) अगर, अगुरुकाष्ठ । Aloe wood-इं० । हला० । (२) काष्ठागुरु । रा० नि० व० १२ । भा० पू० १ भा० क० व० । देखो—**अगर** ।

अनार्य्यजम् anáryyajam-सं० क्ली० अगर । अगुरु । Aloe wood-इं० । रा० नि० ।

अनार्य्यतिक्तः,-कः anáryyatiktah,-kah -सं० पुं० चिरायता, भूनिम्ब । (Gentiana Cherayta, *Roxb.*) अम० ।

अनार्ष anársha हिं० वि० [सं०] जो ऋषि प्रणीत न हो । जो ऋषिकाल का बना हुआ न हो ।

अनालगोलम् anála-golam-सं० पुं० (Ductless gland) प्रणालीविहीन ग्रन्थि ।

अनालीक़ी análíqí-रू० अञ्जरह्, उतञ्जन । Blepharis Edulis, *Pers.*)

अनाविलः anávilah-सं० त्रि०
अनाविल anávila-हिं० वि० } निर्मल, स्वच्छ, साफ, (Clean,pure).

अनावृत्त anávritta-हिं० वि० [सं०] [स्त्री० अनावृत्ता] जो ढँका न हो। अनावेष्टित। आवरण रहित। खुला। (२) जो घिरा न हो।

अनावंशः anávanshah-सं० पुं० मर्म्मविशेष। कें०। (A marmma.) See-Marmma

अनाशप्-पज़म anáshap-pazham-ता० अनन्नास। (Pine apple). रू० फा० इं०।

अनाशवादी anáshavádí—ता० गोभी। (Elephantopus scaber).-इं० मे० मे०।

अनाशोवदी anásho-vadí-ता० गोभी। (Elephantopus scaber). फा० इं० २ भा०।

अनासपण्डु anása-pandu-ते० अनन्नास। (Pine apple) स० फा० इं०।

अनासपुव्वु anása-puvvu-ते० अनासफल -हिं०। बादियाने ख़ताई-अ०, फ़ा०। Illicium anisatum, *Linn.* (Fruit of-star anise)-लें०। स० फा० इं०।

अनासफल anása-phala-हिं० सौंफ। अनसफल-द०। बादियान-बम्ब०। अरणाशुप-पू -ता०। बादियाने-ख़ताई-अ०। राज़ियानहे-ख़ताई, बादियाने-ख़ताई-फ़ा०। अनास पुव्वु -ते०। ननत-पोएन-बर्मी०। Illicium anisatum,Linn. (Fruit of-Star anise)-लें०। रू० फा० इं०। मेमो०। देखो—सौंफ।

नोट-उपर्युक्त फलका एक प्रकारके पुष्प के साथ सादृश्यता होने के कारण किसी किसी ग्रंथ में भ्रमवश इसका नाम "अनासफल" के स्थान में "अनासफूल" लिखा गया है। इसके अतिरिक्त किसी किसी फ़ारसी ग्रंथमें शब्द "अनास" तथा 'अनानास' अभेद रूप से उपयोग में लाए गए हैं; तदनुसार स्टार-एनीसी (अनासफल) का नाम ग़लतीसे गुले अनानास अर्थात् अनन्नासपुष्प लिखा गया है।

प्रभाव—इसका फल सुगन्धितयुक्त तथा वायुनिस्सारक है। परिस्रुत करने पर इसमें से सौंफ (Anise) के सदृश एक प्रकार का तैल प्राप्त होता है। इसी कारण यह सौंफ के स्थान में व्यवहृत होता है। मद्य को सुस्वादु बनाने के लिए इसे उपयोग में लाते हैं।

अनासफूल anása-phúla-हिं० देखो-अनासफल।

अनासाइक्लस पाइरीथ्रम anacyclus pyrethrum, *D. C.*)-लें० अकरकरा। (Pellitory) फा० इं० १ भा०। मेमो०।

अनासिकः anásikah-सं० त्रि० नासिकाहीन, नाक रहित, बिना नाक का, नकटा। (Noseclipt)

अनासिक anásika-हिं० वि० [सं० अ=नहीं +नासिका] अनासिकः।

अनासिर áanásira-अ० (ब० व०), उन्सुर (ए० व०) तत्व। देखो-एलीमेंट्स (Elements)-इं०।

अनासिर अर्बअह áanásira-arbaáah-अ० तत्व चतुष्टय। युनानी लोगों के निकट केवल चार मूल तत्व हैं। वे आर्यों के माने हुए पाँच तत्वों में से आकाश तत्व को तत्व नहीं स्वीकार करते, प्रत्युत वे इसे ख़लाऽ अर्थात् शून्य मानते हैं, पर नवीन अनुसन्धानों द्वारा यह बात भली भाँति सिद्ध हो चुकी है कि आकाश शून्य नहीं, प्रत्युत द्रव्यों की एक ऐसी दशा है जिसमें द्रव्य एक-रूप होते हैं। इसको अंग्रेज़ी में ईथरिक (Etheric) कहते हैं। देखो-तत्व वा आकाश।

अनासु anásu-कना० अनरस, अनन्नास। (Ananas sativus).

अनासुप्पा anásuppá-ता० बादियान ख़ताई। सौंफ(Illicium anisatum, *Linn.*).

अनासुप्पान anásuppán-ता० बादियान ख़ताई। सौंफ। (Illicium anisatum, *Linn.*)-इं० मे० मे०।

अनास्टेटिका हीरोकंटीना anastatica hierochuntina, *Linn.*-ले० कफ़ेमरियम, कफ़े-आयशा-फ़ा० । गर्भफूल-हिं०, गु० । फा० इं० १ भा० । देखो-कफ़ेमरियम् (Kafemariyam).

अनाह anáha-हिं० संज्ञा पुं० देखो-अनाहः ।

अनाहतम् anáhatam-सं० क्लो०
अनाहत anáhata-हिं० संज्ञा पुं० } (१) नूतन वस्त्र, नया वस्त्र (New cloth) । अ० । (२) शब्द योग में वह शब्द वा नाद जो दोनों हाथों के अंगूठों से दोनों कानों की लवें बन्द करके ध्यान करने से सुनाई देता है । देखो-शब्दयोग । (३) हठ योग के अनुसार शरीर के भीतर के छः चक्रों में से एक । इसका स्थान हृदय, रंग लालपीला-मिश्रित और देवता रुद्र माने गए हैं । इसके दलोंकी संख्या १२ और अक्षर 'क' से 'ठ' तक हैं ।

वि० (१) जिस पर आघात न हुआ हो । अक्षुब्ध । (२) अगुणित । जिसका गुणन न किया गया हो ।

अनाहत चक्रम् anáhata-chakram-सं० क्लो० हृदयचक्र, द्वादश-दल-कमल । ज़फ़ीरह् क़ल्बियह्-अ० । कार्डिएक प्लेक्सस (Cardiac plexus)-इं० । देखो-हृदयचक्र ।

अनाहत शब्दः anáhata-shabdah-सं० पुं० अनाहत चक्र में होने वाला शब्द ।

अनाहद वाणी anáhada-váṇí-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० अनाहत+वाणी] (१) घट में होने वाला आवाज़ । (२) आकाश वाणी । देववाणी । गगनगिरा ।

अनाहशूलम् anáha-shúlam-सं० क्लो० दर्द के साथ पेटका फूलना ।(Flatulent with pain).

अनाहारः anáharah-सं० पुं० (१) भोजन का अभाव वा त्याग । आहाराभाव (Abstinence, starvation) । हिं० वि० (१) भूखा, निराहार । जिसने कुछ न खाया हो । (२) जिसमें कुछ न खाया जाए ।

अनाहारी anáhárí-हिं० पुं० भूखा रहने वाला । भूखा । (Fasting).

अनाहूत anáhúta-हिं० वि० अनिमंत्रित, बिना-बुलाया हुआ, बिना न्योता दिए ।

अनाहः anáhah-सं० पुं० रोग विशेष, आ(अ) नाह रोग, मलमूत्र रोधक व्याधि, अफरा, पेट फूलना, आध्मान । (Flatulence).

अनिकर्रा anikarrá-ना० जिङ्गिनी, अजशृङ्गी, नेत्रशृङ्गी-सं० । (Odina wodier) इं० मे० मे० ।

अनिकेत aniketa-हिं० वि०
अनिकेता aniketá-सं० स्त्री० } गृहहीन, बिना घर का, स्थान रहित ।

अनिगीर्ण anigírṇa-हिं० वि० [सं०] जो निगला न गया हो ।

अनिगुण्डुमणि anigunḍumaṇi-ता० रक्त-कम्बल । (Adenanthera Pavonina).

अनिग्रह anigraha-हिं० वि० [सं०] पीड़ा रहित । नीरोग ।

अनिच्छः anichchhah-सं० त्रि० तृप्त इच्छा न होना । वै० निघ० । (Indifference.)

अनिच्छा anichchhá-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० अनिच्छित, अनिच्छुक] (१) इच्छा का अभाव । अरुचि । (२) अप्रवृत्ति ।

अनितून anitún-यु०
अनिथूम anithúm-यु० } सोआ-हिं० । शूद-फ़ा० । डिल (Dill)-इं० । फा० इं० २ भा० ।

अनिद्र anidra-हिं० वि० [सं०] निद्रारहित । बिना नींद का । जिसे नींद न आए ।

संज्ञा पुं० नींद न आने का रोग । प्रजागर ।

अनिद्रा anidrá-हिं० स्त्री० निद्रानाश, नींद न आना । (Insomnia, sleeplessness).

अनिद्राजनक anidrájanaka-निद्राहर, निद्रा-नाशक, निद्रा न्यूनकर ।

अनिद्रान्तक anidrántaka-हिं० वि० निद्राजनक। (Hypnotic).

अनिपीपुल anipípul-द० पीपल वृक्ष, अश्वत्थ वृक्ष। (Ficus Religiosa). इं० मे० मे०।

अनिफ़ anif-अ० नासिका रोगी। (Nose diseased.)।

अनिमा enema-हिं० संज्ञा स्त्री० देखो—एनिमा।

अनिमिषः animishah-सं० पुं०
अनिमेषः animeshah-सं० त्रि०
(१) मत्स्य। मछली। (A fish) त्रिका० मे० षचतुष्कं। (२) चक्षु रहित, निमेषशून्य।

अनिमिष animisha-हिं० वि० [सं०] निमेष रहित। स्थिर दृष्टि। टकटकी के साथ देखनेवाला।
क्रि० वि० (१) बिना पलक गिराए। एकटक। (२) निरन्तर।
संज्ञा पुं० मछली। (A fish)

अनिमेष animesha-हिं० वि०, क्रि० वि० दे० अनिमिष।

अनियारा aniyárá-हिं० वि० [सं० अणि=नोक+हिं०-आर (प्रत्य०)] [स्त्री० अनियारी] नुकीला। कटीला। पैना। धारदार। तीक्ष्ण। तीखा।

अनिरुद्धम् aniruddham-सं० क्लीं०
अनिरुद्ध aniruddha-हिं० संज्ञा पुं०
(१) पशु आदि बाँधने की रज्जु विशेष। (Rope,string)। —हिं० वि० अनिवारित, जो रोका हुआ न हो, अबाध। (Unobstructed)।

अनिरुद्धपथम् aniruddha-patham-सं० क्लीं० आकाश। (Sky) श०।

अनिर्दशा anirdashá-हिं० वि० स्त्री० [सं०] जिसको बच्चा दिए दस दिन न बीते हों।

नोट—इस शब्द का व्यवहार प्रायः गाय के सम्बन्ध में देखा जाता है। ऐसी गाय का दूध पीना निषिद्ध है।

अनिर्माल्या anirmályá-सं० स्त्री० पिण्डिका, पृक्का-सं०। पिड़िङ्ग शाक-बं०। पुरी-हिं०। Medicago esculenta, Roxb। रत्ना०।

अनिर्वाणः anirvánah-सं० पुं० कफ। (Phlegm) वै० निघ०।

अनिलः anilah-सं० पुं०
अनिल anila-हिं० संज्ञा पुं०
(१) वायु, पवन, हवा। (Air or wind)। (२) शेगुन गाछ-बं०। शाकतरु। रा० नि० व० २३।

अनिल anila-हिं० टफ्रोसिया टिंक्टोरिया (Tephrosia tinctoria, *Pers.*)-ले०। इसके पत्र रंग के काम में आते हैं। मेमो०।

अनिलकपित्थकः anila-kapitthakah-सं० पुं० स्थूल आम्रातक। (Spondias mangifera) वै० निघ०।

अनिलकारकः anila-kárakah—सं० पुं० काँजी भेद। वै० निघ०। See-Kánjí.

अनिलघ्नः,-कः anilaghnah-,kah-सं० पुं० बहेरेका पेड़, विभीतक वृक्ष। टर्मिनेलिया बेलेरिका (Terminalia belerica)-ले०। रा० नि० व० ११।

अनिलज्वरः anila-jvarah-सं० पुं० वातिक ज्वर, वातज्वर। यह साम और निराम भेद से दो प्रकार का होता है। च० द०। See-Vátajvara.

अनिलनिर्यासः anila-niryásah -सं० पुं० पियाल वृक्षः-सं०। नियबेरू, चिरौंजी का वृक्ष-हिं०। Buchanania latifolia ले०। चिवला-मह०। वै० निघ०।

अनिलपर्य्ययः anilaparyyayah-सं० पुं० वायु रोग (Nervous disease.)।

अनिलभुक् anila-bhuk-सं० पुं० सर्प, साँप, कीरा। स्नेक (Snake), सर्पेण्ट (Serpent)-इं०। वै० निघ०।

अनिलरसः anila-rasah-सं० पुं० (१) यह रस पांडु रोग में हित है। रस० र०।

(२) ताम्रभस्म, पारद भस्म, गन्धक, वत्सनाग प्रत्येक समान भाग ले चूर्ण कर चित्रक के क्वाथ से भावना दें और चौथाई पहर तक मन्द अग्नि (लघु पुट) में पकाएँ ।

मात्रा—२ रत्ती ।

गुण—इसके सेवन से शोथ और पांडु दूर होते हैं । रस० यो० सा० ।

अनिलरिपुः anila-ripuh-सं० पुं० एरंड वृक्ष, अरण्ड । (Ricinus communis) वै० निघ० २ भा० सन्धि० ज्व० चि० रास्नादि ।

अनिलसखः anila-sakhah-सं० पुं० अग्नि, आग । फ़ायर (Fire)-इं० ।

अनिलहरम् anila-haram-सं० क्लीं० कृष्णागुरु, काली अगर । वै० निघ० । Eagle wood (Aquilaria agallocha.) ।

अनिला anilá-सं० स्त्री० (१) नदी (River) । (२) खटिका, फूल खड़ी, सेतखड़ी । (Chalk) र० मा० ।

अनिलाजीर्णम् anilájírṇam-सं० क्लीं० वाताजीर्ण । वा० सू० ८ अ० । See-Vátájírṇa.

अनिलाटिका anilátiká-सं० स्त्री० रक्त पुनर्नवा । See-Rakta-punarnavá

अनिलान्तकः anilántakah-सं० पुं० इंगुदी वृक्ष । इङ्गोट, हिंगुआ । (Balanitis roxburghii) रा० नि० व० ८ ।

अनिलामयः anilámayah-सं० पुं० (१) वायुरोग, वात व्याधि । (Nervous disease) । (२) अजीर्ण ।

अनिलारिरसः aniláṛi-rasah-सं० पुं० (१) पारद १ तो०, गंधक २ तो० की कज्जलीकर अरंड और निर्गुण्डी के रस से १-१ दिन खरल करें । पुनः ताम्र के सम्पुट में रख कपरौटी कर बालुकायन्त्र में जंगली कंडे के चूर्ण की अग्नि दें । जब शीतल हो तब निर्गुण्डी, अरण्ड, चित्रक इनके रस की भावना दे रक्खें ।

मात्रा—१ रत्ती ।

गुण—सेंधानमक के साथ या मिर्च, घृत, त्रिकुटा, चित्रक के साथ खाने से वात रोग दूर होता है ।

(२) पारा, मैनशिल, हल्दी, शुद्ध जमालगोटे के बीज, त्रिफला, त्रिकुटा और चित्रक प्रत्येक समान भाग लें और गन्धक पारेसे दूना ले एकत्र चूर्ण करें । फिर दूर्वा, थूहर और भांगरा इनके रस, दूध और क्वाथ से भावना दें ।

मात्रा—१-२ रत्ती ।

गुण—इसके प्रयोगसे रेचन होगा । जब रेचन हो चुके तब हलका पथ्य मठे के साथ दें । कोई ठंडी वस्तु न दें । फिर शरीर में शक्ति आजाने पर इसी प्रकार उपर्युक्त रस को तब तक दें जब तक कि रोग शान्त न हो जाए । यह ८० प्रकार के वात व्याधियों को दूर करता है रस० यो० सा० ।

अनिलाशिन् aniláṣhin-सं० पुं०
अनिलाशी aniláṣhí-हिं० संज्ञा पुं०
अनिलाशः aniláshah-सं० पुं०
सर्प, साँप (A serpent) । -हिं० वि० हवा पीकर रहने वाला । (Air eater)

अनिलासः anilásah-सं० पुं० कृष्णकान्ता (Clitorea ternatea) । देखो-अपराजिता ।

अनिलेकायी anile-káyí-कना० हड़, हरीतकी । (Terminalia chebula) इं० मे० मे० ।

अनिलोचितः anilochitah-सं० पुं० नीलमाष, राजमाष, काली उड़द । (Dolichos sinensis) वै० निघ० ।

अनिष्ट anishṭa-हिं० वि० [सं] जो इष्ट न हो । इच्छाके प्रतिकूल । अनभिलषित । अवांछित । संज्ञा पुं० अहित । हानि ।

अनिष्टकर anishṭakara-हिं० वि० [सं]

[स्त्री० अनिष्टकरी] अपकारक, अहितकारी, अनिष्ट करनेवाला, हानिकारक, अशुभकारक।

अनिष्टा,-ष्ठा anishṭá, shṭhá-सं० स्त्री० नागबला, गुलसकरी। (Sida spinosa) रा० नि०।

अनिस anis-फ्रैं० राज़ियानह्-फ़ा०। राज़ियानज-अ०। Anise (Pimpinella anisum, Linn.)-लें०। फॉ० इं० २ भा०।

अ(आ)निसबाईबेरेल anis-biberrell-जर० सौंफ। (Pimpinella anisum) इं० मे० मे०।

अनिःसारा anih-sárá-सं० स्त्री० कदली वृक्ष, केले का पेड़ (Musa sapientum, *Linn.*)। कला गाछ-बं०। रा० नि० व० ११। वै० निघ०।

अनिसैक्री anisacre-फ्रैं० सुफेद जीरा, श्वेत जीरक।(Cuminum cyminum.) इं० मे० मे०।

अनिसो-किलस-कार्नोसस् anisochilus carnosus, *Wall.*-लें० पञ्जीरी का पात, सीता की पञ्जीरी-हिं०। पञ्जीरी का पत्ता-द०। स० फा० इं०। फॉ० इं० ३ भा०। मेमो०। इं० मे० मे०। इसके पत्र एवं पौधे औषध कार्य में आते हैं।

अनिसोमेलिस ओवेटा anisomelis ovata, R. Br. -लें० गोबुर। मेमो०। (Malabar catmint)-इं०। मोगबीर- द०। इं० मे० मे०।

अनिसोमेलीस डाइस्टिका anisomeles disticha-लें० मोगबीर। इं० मे० मे०।

अनिसोमेलीस फ्रुटिओसा anisomeles frutiosa-लें० मोगबीर। इं० मे० मे०।

अनिसोमेलीस मालाबेरिका anisomeles *malabarica, R.Br.*-लें० भूताङ्कुशम्-सं०। मोगबीरे का पत्ता-द०। मालाबार कैट मिंयट (Malabar catmint)-इं०। स० फा० इं०। गावज़ुबान-हिं०। मोगबिरकु, मभेरी, चीना, रगभेरी-ते०। पेमेरुत्ति-ता०। मेमो०।

अनिक्षुः anikshuh-सं० पुं० इक्षु विशेष (Saccharum spontaneus)। खागड़ा-बं०। र० मा०। अनाक्षुः। रत्ना०।

अनी ani-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० अणि=अग्रभाग, नोक] नोक, सिरा, कोर (The point or edge of any sharp instrument.). वि० तीखा, पैना, नोंक।

अनी ani-बर० (Red) रक्त, लाल-हिं०। सुर्ख, अह्मर-अ०।

अनीक़ āaniq-अ० (Neck, cervix). ग्रीवा। धड़ और शिरका मध्यस्थ कशेरुका।

अनीक़रूस aniqarús-यु० किर्मिज़।

अनीकस anikas-रू० शिगूफ़ा, कली। (Bud).

अनीकस्थः anikasthah-सं० त्रि० हस्ति-शिक्षाविचक्षण, कांचवान। मे० थचतुष्क। (An elephant driver).

अनीकाही anikáhi-सं० स्त्री० एक वृक्ष है। (A tree)

अनीकिनी ani-kini-हिं० स्त्री० सेना, भीड़, कटक, सैन्य। (An army, a force).

अनीकिनी anikini-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] कमलिनी। पद्मिनी। नलिनी।

अनीची anichi-तु० मोती (pearl)।

अनीतरून anitarún-रू० गंदना के समान एक बूटी है जो कठोर भूमि पर उगती है। A plant like Gandaná.

अनीदोतूस anidotús-यु० माजूनात (Confectiones)। देखो—मअ्जून।

अनीनशन् aninashan-सं० विनाश कर देते हैं। अथर्व०।

अनीमून anemone इं० शक़ायिक़ुन्नुमान, शक़ीक़-अ०। वायुपुष्प-सं०। पल्सटिल्ला (pulsatilla)-लें०। फा० इं० १ भा०।

अनीमून आब्ट्युज़ीलोबा anemone obtusiloba, *Don.*, Royle -लेo शक़ीक़-अo । वायुपुष्प-संo । रक्तनजोग, पाडर-पंo । फाo इंo १ भाo । इंo मेo प्लांo । ममाo ।

अनीमून डिसकलर anemone discolor -लेo रक्तनजोग, पाडर-पंo । काकरूज -कुमाo । इंo मेo मेo ।

अनीमून पल्सेटिल्ला anemone pulsatilla -लेo शक़ायिक़ुन्नुअ्‌मान-अo । वायुपुष्प-संo । (pulsatilla.)

अनीमून हार्टेन्सिस anemone hartensis -लेo । बिस्तान अफ़रोज़--फ़ाo । महूरा, कलग़ा ।

अनीमून हेपेटिका anemone hepetica -लेo लीवर वर्ट (Liver wort)-इंo ।

अनीमोनिक एसिड anemonic acid -इंo तेज़ाबे--शक़ायिक़ुन्नुअ्‌मान--अo । वायुपुष्पाम्ल--संo । फाo इंo १ भाo ।

अनीमोनीन anemonin-इंo जौहर शक़ीक़ -अo । वायुपुष्प सत्व-संo । फाo इंo १ भाo ।

अनीमोनोल anemonol--इंo पीत वायुपुष्प-तैल (Yellow anemone oil) । इंo फाo १ भाo ।

अनीली anili-संo स्त्रीo काशतृण । A species of grass (Saccharum spontaneum) रo माo । देखो—काशः ।

अनीलेमाट्युबेरोसा aneilema tuberosa, *Ham.*-लेo स्याह मुसली । ममाo ।

अनीलेमा स्केपीफ्लोरम् aneilema scapiflorum, Wight.-लेo स्याह मुसली । करेली -बंo । सीसमुलिया-गुo । इंo मेo प्लांo । देखो—मुसली ।

अनीसून anisúna }-हिंo संज्ञा पुंo [यूo]
अनीसूँ anisún } विलायती रज्दनी । सौंफ़-रूमी-उo । अनीसून (anison)--यूo । एनिस फ़्रुट (Anise Fruit), एनिस (Anise), एनिसीड (Ani-seed)-इंo । एनिसाई फ़्रुक्टस (Anisi Fructus), पिम्पिनेला एनिसम (pimpinella anisum, *Linn.*)-लेo । एनिस(Anis)-फ्रेंo । राज़ियानजुरूमी, राज़ियानजुश्शामी; (बीज) बज्रुर्राज़ियानजुरूमी, बज्रुर्राज़ियानजुश्शामी, हब्बुल् हलो, कमूनुल् हलो-अo । बादियान रूमी--फ़ाo । विलायती रधूनी-बम्बo ।

छत्रक वा शतपुष्पा वर्ग
(*N. O. Umbelliferæ.*)

उत्पत्ति स्थान—यह एक वार्षिक पौधा है जिसका मूल उत्पत्तिस्थान मिश्र और लीवांट है; परन्तु, अब यूरुप में विशेषकर रूस और स्पेन, हॉलैंड, बलगेरिया, फ्रांस, टर्की, साइप्रस तथा अन्य प्रदेशों में इसकी कृषि होती है । फ़ारस और भारतवर्ष में यह संयुक्तप्रांत और पंजाब के विभिन्न भागों तथा ओड़ीसा के थोड़े भाग में पाया जाता है । अनीसूँ अब उत्तरी भारतवर्ष में बोया जाता है । यद्यपि अब भारतवर्ष की भूमि इसकी प्रकृति के अनुकूल हो गई है तो भी वह इसका वास्तविक जन्मस्थल नहीं है ।

संज्ञा निर्णायक नोट—इंडियन मेडिसिनल प्लांट्स, इंडियन मेटीरिया मेडिका और इंडिजिनस ड्रग्स ऑफ इण्डिया इत्यादि ग्रन्थों में से किसीमें इसका संस्कृत नाम मधुरिका लिखा है तो किसी में शतपुष्प वा शताह्वा तथा किसी में उभय नामोंका उल्लेख आया है जो सर्वथा भ्रमकारक है । अनीसून उनसे भिन्न ओषधि है । मधुरिका वा मिश्रेया अर्थात् सौंफ़ (बादियान) Fennel (Foeniculum Capillaceum or Vulgare), शतपुष्प अर्थात् सोआ (शिबित्त) Dill (Peucedanum Graveolens), बादियाने ख़ताई star-anise(Illicium Verum) आदि और कतिपय अन्य ओषधियोंमें बहुत कुछ पारस्परिक सादृश्यता के कारण प्रायः ग्रन्थोंमें संज्ञा निर्णय में भूल किया गया है । इनकी विस्तृत व्याख्या के लिए यथा स्थान देखो । इसको बादियान रूमी इसलिए कहा जाता है कि इसकी शकल बादियान (सौंफ)एवं ज़ीरा के सर्वथा समान होती है ।

इतिहास—अनीसून अति प्राचीन ओषधियों में से है। अतएव सावफ़्रिस्तुस (Theophrastus) और दीसक़ूरीदूस (Dioscorides) आदि यूनानी तथा प्लाइनी (Pliny) प्रभृति रूमी चिकित्सकों ने भी इसका उल्लेख किया है। पर, ऐसा ज्ञात होता है कि प्राचीन हिन्दुओं को इस ओषधि का ज्ञान नहीं था; क्योंकि आयुर्वेदीय ग्रंथों में इसका उल्लेख नहीं पाया जाता है। अनुमान किया जाता है कि मुसलमान आक्रमणकारी इसे फ़ारस से अपने साथ लाए जहाँ से कि अब भी यह बम्बई के बाज़ारों में लाया जाता है।

वानस्पतिक वर्णन—इसका पौधा लगभग १ गज़ ऊँचा होता है। शाखाएँ घनाकार पतली होती हैं। पत्र एला-पत्रवत् किंतु छोटे एवं सुगंधियुक्त होते हैं। प्रत्येक शाखाके सिरे पर श्वेताभ पुष्प होते हैं, जिनके भीतर कोषावृत्त जीरा के समान छोटे छोटे बीज होते हैं। अनीसूँ के फल का आकार एक सा नहीं होता। उत्तम भूमि में होने वाला २ से $\frac{१}{१०}$ इं० लंबा होता है। सामान्यतः ये $\frac{१}{४}$ इं० लंबे और $\frac{१}{१२}$ इं० चौड़े होते हैं। ये किसी प्रकार गोल, अंडाकार, किनारों पर से दबे हुए, लोमश, ख़ाकी या भूरे रंग के और दो भागों में विभक्त होते हैं। इनके संधिस्थल पर एक छोटी सी डंडी होती है। प्रत्येक फल पर दस उभरी हुई रेखाएँ होती हैं। ये सौंफ से छोटे और रंग में उनकी अपेक्षा हरित एवम् श्यामाभायुक्त पीतवर्ण के होते हैं। इनकी गंध अत्यन्त प्रिय होती है। शुष्क बीजों को कूटने और फटकने पर इनके कोष भूसीकी तरह पृथक् हो जाते हैं। इनमें सर्वोत्तम प्रकार वह है जो आकारमें अपेक्षाकृत वृहत् एवं तीव्र सुगंधिमय हों और जिनके ऊपर से भूसीके समान छिलका न उतरे। क्योंकि इनका प्रभाव अधिकतया इनके कोष में ही है। स्वाद-सुगंधियुक्त, अत्यन्त प्रिय एवं मधुर।

परीक्षा—यद्यपि अनीसून के बीज, शतपुष्प (Dill), विलायती जीरा (कराविया), सौंफ (Fennel) और शूकरान (Conium) के समान होते हैं। तोभी, अपने विशेष वानस्पतिक लक्षणों द्वारा पहिचाने जा सकते हैं।

रासायनिक संगठन—फल में २ से ३ प्रतिशत उड़नशील तैल होता है जिसको अनीसून का तेल कहते हैं। इसमें एनीथोल (अनीसून सत्व) या एनिस कैम्फर (Anise camphor) ८० प्रतिशत, एनिस एल्डीहाइड (Anise aldehyde) तथा मीथिल-केविकोल (Methyl chavicol) होते हैं।

प्रयोगांश—औषध तुल्य इसके बीज (फल) ही अधिकतर व्यवहार में आते हैं।

प्रकृति—तीसरी कक्षा में रूक्ष और जालीनूस के दो भिन्न उद्धरणों के आधार पर इसकी उष्णता दूसरी या तीसरी कक्षा में है। परन्तु, म.ख़ज़नुल्-अद्वियह् के लेखक के मतानुसार यह दूसरी कक्षा में उष्ण और तीसरी कक्षा में रूक्ष है।

प्रतिनिधि—सोआ, आमाशय के लिए सौंफ और कामोद्दीपन हेतु तुरूमअञ्जुरह्। हानिकर्ता—तथा दर्पघ्न—वस्ति को हानिकर है और रुब्बुस्सूस (मुलेठी के सत) से उसका सुधार होता है। उष्ण प्रकृति वालों में शिरःशूल उत्पन्न करता है और सिकञ्जबीन से वह दूर होता है। मात्रा—१॥ मा० से ६ मा० तक। शर्बत की मात्रा ७ मा० से ६ मा० है।

औषध-निर्माण—युनानी चिकित्सा में इसके हर प्रकार के मिश्रण, यथा क्वाथ, अर्क, तैल, घनसत्व (रुब्ब), जुअ़्जून, शर्बत, चूर्ण, अनुलेपन, .हुमूल (पिचुक्रिया) और धूनी (धूपन) प्रभृति व्यवहार में आती हैं। इनमें से कतिपय मिश्रण निम्न प्रकार हैं—

(१) अनीसून का मिश्रित क्वाथ—अनीसून, .हुल्बह (मेथिका), लोबिया सुर्ख़ प्रत्येक १४ मा०, सुदाब १०॥ मा०। निर्माण-विधि—सबको तीनपाव पानी में क्वाथ करें। जब एक पाव रह जाए तब उतार कर साफ करें। सेवन-विधि—थोड़ा गुड़ मिलाकर सेवन करें। गुण-आर्त्तवप्रवर्तक और अवरोध उद्घाटक है।

(२) अर्क अनीसून—२० तो० अनीसून को अौकुट करके १ सेर जलमें भिगो दें। चौबीस घंटे पश्चात् यथाविधि अर्क खींचें।

मात्रा व सेवन-विधि—२ से ४ तो० तक दिनमें २ या तीन बार सेवन करें। गुण—बालकों के लिए विशेष कर लाभप्रद है। आमाशय, यकृत् तथा आंत्र के वायुजन्य रोगों के लिए अत्यन्त लाभदायक है।

(३) अनीसून का मिश्रित तैल - अनीसून ५ तो०, अकरकरा १ तो०, शिगूफ़ा इज़्ख़िर १ तो०, दारचीनी १ तो०, ऊद सलीब ६ मा० और कुचिला ३ मा०।

निर्माण-विधि—सम्पूर्ण द्रव्यों को १० तो० तिल तैलमें जला कर साफ़ करलें और यथाविधि मालिश करें।

गुण—पक्षाघात, शैथिल्य, अवसन्नता एवं आवयविक विकार के लिए लाभदायक है।

(४) अनीसून का मिश्रित चूर्ण—अनीसून ५ तो०, अजवायन ५ तो०, सोआ २ तो०, काला नमक २ तो०, और नौसादर ४ मा०।

निर्माण-विधि—सब औषधियों को कूट छानकर चूर्ण बनाएँ।

मात्रा व सेवन-विधि—इसमें से ३ मा० चूर्ण दिन में २ बार सेवन करें।

गुण—आमाशय, यकृत, आंत्र और जरायु के वायुजन्य वेदनाओं में लाभप्रद है। मूत्र लाता एवं आर्त्तव की प्रवृत्ति करता है।

(५) शर्बत अनीसून (मिश्रित)—अनीसून ३५ मा०, अफ़्सन्तीन १७॥ मा०, तुख़्म करफ़्स १०॥ मा०, तज ७ मा०, गुलाब ३५ मा० और बालछड़ २४॥ मा०।

निर्माण-विधि—सबको अधकुट करके १ सेर पानी में क्वथित करें। जब आधा रह जाए, मल छानकर तीनपाव मिश्री मिलाकर शर्बत की चाशनी करें। शीतल होने पर ७ मा० मस्तगी, रूमी बारीक पीस कर ऊपर छिड़क कर सेवन करें।

मात्रा—१॥ तो० से २ तो० तक।

गुण—आमाशय नैर्बल्य में लाभप्रद है। आमाशय, आध्मान एवं शूल को दूर करता है। प्लीहा एवं यकृत के रोध का उद्घाटक है तथा पेशाब जारी कराता है।

एलोपैथिक चिकित्सा में यह निम्न रूपों में प्रयुक्त होता है।

ऑफ़िशल योग

(Official preparations.)

(१) एनिसाई फ्रक्टस (Anisi Fructus) –लै०। एनिस फ्रूट (Anise Fruit) –इं०। अनीसून के बीज।

(२) एक्वा एनिसाई (Aqua anisi) –लै०। एनिस वाटर (Anise water) –इं०। अर्क अनीसून, अर्क़ बादियान रूमी।

निर्माण-विधि—एनिसफ्रूट (अनीसून के बीज) १ पौंड, पानी २ गैलन, अनीसून को कुचल कर और पानी में भिगोकर एक गैलन (८ पाइंट) अर्क़ खींचें। मात्रा-आधा से २ फ़्लुइड आउंस =(१४·२ से ५६·८ सी० सी०) एक वर्ष के बालक को १ से २ ड्राम।

(३) ऑलियम् एनिसाई (Oleum anisi)-लै०। ऑइल ऑफ़ एनिस (Oil of anise)-इं०। अनीसून तैल-हिं०। ज़ैत अनीसून-अ०। रोग़न अनीसून-फ़ा०।

यह एक उड़नशील तैल है जो एनिस फ्रूट (अनीसून) से अथवा स्टार एनिस (अनीसून नज्मी, बादियान ख़ताई) से प्रस्तुत किया जाता है। (यह दोनों ऑफ़िशल हैं)।

लक्षण—यह एक वर्ण रहित वा किञ्चित् पीत वर्ण का तैल है जिसका स्वाद एवम् गंध अनीसून के समान होती है।

आपेक्षिक गुरुत्व ·९७७ से ·९८३ तक। १००° से १५०° शतांशके ताप पर इसके रवे बँध जाते हैं।

रासायनिक संगठन इसमें (१) ७५ प्रतिशत एनीथोल (अनीसून सत्व), (२) एनिसिक एल्डिहाइड और (३) मीथिल केविकोल होता है।

प्रभाव—आक्षेपहर और वायुनिस्सारक।

मात्रा—आधा से ३ बुंद ('०३ से '२ घन शतांशमीटर)।

यह टिंकचूरा कैम्फोरी कम्पॉजिटा, टिंकचूरा ओपियाई एमोनिएटा और निम्नोल्लिखित मिश्रणों में पड़ता है।

(४) स्पिरिटस एनिसाई (Spiritus anisi)–लै०। स्पिरिट ऑफ़ एनिस (Spirit of anise)–इं०। रूह अनीसूँ, रूह बादियान रूमी।

निर्माण-विधि—ऑइल ऑफ ऐनिस १ भाग, ऐलकोहल (९० %) ९ भाग दोनों को मिला लें। यदि निर्मल न हो तो विचूर्णित अभ्रक मिलाकर हिलाने के बाद छान लें।

प्रभाव—आक्षेपहर और वायुनिस्सारक।

मात्रा—५ से २० बुंद=(·३ से १·२ घन शतांशमीटर)। एक वर्ष के बालक को ५ बुंद।

नॉट ऑफ़िशल योग
(Not Official Preparations.)

(१) एलिक्सिर एनिसाई (Elixir Anisi)–लै०। एनिसीड कॉर्डियल (Aniseed Cordial)–इं०। अक्सीर अनीसून, मुफ़र्रिह् अनीसून।

निर्माण-विधि—एनिथोल '३५ भाग, ऑइल ऑफ़ फेनेल '०५ भाग, स्पिरिट ऑफ़ बिटर आमंड १'२५ भाग, ऐलकोहल (९०%) २४ भाग, सिरप ६२' ५ भाग, मैग्नेशियम कार्बोनेट १' ५ भाग, डिस्टिल्ड वाटर आवश्यकतानुसार या इतना जितने में सारी औषध पूरी १०० भाग हो जाए।

मात्रा—मध्यम मात्रा बालकों के लिए १५ बुंद=(१ घन शतांश मीटर)।

(२) एसेंशिया एनिसाई (Essentia Anisi)–लै०। एसेन्स ऑफ़ एनिस (Essence of Anise)–इं०। रूह अनीसून, रूह बादियान रूमी।

निर्माण-विधि—ऑइल ऑफ़ एनिस १ भाग, रेक्टिफ़ाइड स्पिरिट ४ भाग दोनों को मिला लें। (ब्रि० फा० सन् १८८५ ई० के अनुसार)।

नोट—उपर्युक्त स्पिरिटस एनिसाई की अपेक्षा इस एसेंस की शक्ति लगभग द्विगुण है।

(३) एनिसिक एसिड (Anisic Acid)–अनीसूनाम्ल, अनीसून की तेज़ाब। हम्ज़ुल् अनीसून, तेज़ाब बादियान रूमी।

अनीसून के तैल वा सत्व को ऑक्साइड (उष्मिद्) करने से यह अम्ल प्राप्त होता है। इसके चमकदार, वर्णरहित एवं सूचिकाकार पतले रवे होते हैं।

(४) सोडियम् एनिसेट (Sodium Anesate)–यह एक रवादार एवं सूक्ष्म सुगन्धिमय चूर्ण होता है जो सोडियम् को एनिसिक एसिड में मिलाने से बनता है।

घुलनशीलता—यह एक भाग ५ भाग जल में और एक भाग २४ भाग ऐलकोहल (९०%) में विलेय होता है।

नोट—कहते हैं कि एनिसिक एसिड (अनीसूनाम्ल) और सोडियमएनिसेट सैलिसिलिक एसिड के समान पचननिवारक और ज्वरघ्न प्रभाव रखते हैं।

एनीथोल (Anethol.)
अर्थात्
अनीसून का सत्व

एनीथोल (Anethol)–लै०। एनिस कैम्फर (Anise Camphor)–इं०। अनीसून सत्व, अनीसून कर्पूर–हिं०। जौहर अनीसून, काफ़ूर अनीसून। यह स्टियरॉप्टीन अर्थात् वालेटाइल या उड़नशील तैल का सांद्रांश है। यह अनीसून तैल तथा बादियान खताई हर दो तेलों से प्राप्त होता है।

नोट—वॉलेटाइल ऑइल अर्थात् अस्थिर तैल में जो जम जाने वाली वस्तु होती है उसको डॉक्टरी परिभाषा में स्टियरॉप्टीन कहते हैं जिसका सामान्य उदाहरण कपूर है। अतएव अनीसून सत्व को भी अंगरेज़ी में एनिसाई कैम्फर अर्थात् अनीसून का कपूर कहते हैं।

लक्षण—एनीथोल की श्वेत रवेदार डलियाँ होती हैं जिनसे अनीसून की तीव्र सुगन्धि आती है। स्वाद—किञ्चिन्मधुर । यह ६८° फारनहाइट के उत्ताप पर पिघल जाता है। द्रव रूप में यह वर्णरहित होता है और इसमें से सूर्यरश्मि वक्रीभूत होकर गुज़रती है।

विलेयता—यह एक भाग लगभग ३ भाग ऐलकोहल (९०$^0/_0$) में विलेय होता है।

मात्रा—१ से २ बुंद=(·०६ से ·१२ घन शतांश मीटर) ।

अनीसून के प्रभाव तथा उपयोग

यूनानी मतानुसार—(१) यह वृक्क, वस्ति, जरायु एवं प्लीहा व यकृत् के अवरोधों का उद्घाटक है। क्योंकि यह चरपरा और तेज़ है और इसका कर्म रोधोद्घाटन है। (२) अपने संशोधक, विलायक और उत्तापजनक प्रभाव के कारण यह वायुनिस्सारक है, विशेषकर जब यह भुना हुआ हो। क्योंकि भूनने से इसकी आर्द्रता कम हो जाती है एवं इसकी तीक्ष्णता बढ़ जाती है। (३) मुख तथा हस्तपाद के मंदशोथ के लिए लाभदायक है। क्योंकि यह प्रवर्त्तनकर्त्ता है और अवरोधउद्घाटन एवं किञ्चित् संकोच द्वारा यकृत को शक्ति प्रदान करता है। (४) नेत्र में लगाने से पुरातन सबल रोग को लाभदायक है। क्योंकि यह उसके माद्दाओं लय करता है। (५) शिरः शूल होता तथा सिर चकराता हो, ऐसी दशा में इसका नस्य एवं धूपन (धूनी) अत्यन्त गुणदायक है। क्योंकि यह उनके माद्दों को लय करता है।

(६) यदि इसको गुल रोग़न में खरल करके कान में डालें तो अपने थोड़े संकोच के कारण ठोकर या चोट के द्वारा उत्पन्न हुए कर्ण क्षतको अच्छा करता है और विलायक शक्ति से कर्णशूल को दूर करता है।

(७) रोध उद्घाटन तथा उष्मा बाहुल्य से मूत्र, आर्तव और जरायुस्थ आर्द्रता का रेचक है।

(८) श्लेष्मज तृषा को प्रशमन करता है। क्योंकि यह श्लेष्मा को पिघलाता एवं लय करता है।

(९) स्तन्यजनक एवं शुक्रवर्द्धक है। क्योंकि आहारीय पथ्यों को मुष्क तथा स्तन की ओर उद्घाटित कर देता है।

(१०) विषदोषघ्न है। क्योंकि मूत्र तथा आर्त्तव के प्रवर्त्तन द्वारा स्रोतों को विष से शुद्ध कर देता है।

(११) प्रायः यह उदरीय विष्टंभ उत्पन्न कर देता है। क्योंकि यह रूक्षताजनक एवं प्रवर्तक है और आहार को अवयवों की ओर प्रविष्ट करा देता है जिससे आंत्र में रूक्षता उत्पन्न हो जाती एवं क़ब्ज़ हो जाता है। (नफ़ी०)

नव्यमत—एलोपैथिक मेटिरिया मेडिका-(एनिथम तथा एनिसम), डिल (सोआ, शतपुष्प), एनिस (अनीसून), कोरिएण्डर (धान्यक), फेनेल (सौंफ मधुरिका) और कारवी अर्थात् करावे (Caraway) प्रभाव में समान हैं। ये सशक्त पचननिवारक हैं। अधिक मात्रा में ये सार्वाङ्गीय उत्तेजक हैं तथा विरेचक औषधों के ऐंठन के निवारणार्थ वायुनिस्सारक रूप से और बालकों के उदरशूल एवं आध्मानजन्य पीड़ा के लिए इनका व्यवहार किया जाता है। इस हेतु अनीसून अधिकतर उपयोग में आता है। सम्भवतः इन अन्तिम दशाओं में ये परावर्त्तित क्रिया द्वारा आक्षेपहर प्रभाव करते हैं। थोड़ी मात्रा में इनसे आमाशयिक रस का और सम्भवतः अग्न्याशयिक रस का भी स्राव बढ़ जाता है। श्वास द्वारा निःसरित होते समय श्वासोच्छ्वास सम्बन्धी कलाओं को उत्तेजित कर इन सबका निर्बल कफघ्न (श्लेष्मानिस्सारक) प्रभाव होता है। पूर्ण (वयस्क) मात्रा में इनमें मन्द निद्राजनक शक्ति है। किन्तु, यदि इनको अन्तःक्षेप द्वारा सीधे रुधिराभिसरण में पहुँचाया जाए तो इनका सशक्त हृदयावसादक प्रभाव होता है। (सर वि० हिटला)

डॉ० के० एम० नद्कारणी—फल जिनसे अनीसून के बीज तैयार किए जाते हैं, अजीर्ण रोग की एक विश्वस्त औषध है। अनीसून के फल व तैल की सुगंधि, दीपन पाचन और वायु-निस्सारक प्रभाव का बड़ा आदर किया जाता है। सब उड़नशील तैलों के सदृश इसका तैल उत्तेजक एवं कफघ्न है। आध्मान जनित उदर-शूल में उदर तथा शिरोशूल की अवस्था में सिर में इसके तैल का स्थानिक प्रयोग होता है। इसके बीज सुपारी के साथ चबाए जाते हैं और इसकी चटनी आहार में काम आती है। आन्त्र-विकार एवं वायुप्रणालीय प्रतिश्याय में भी, विशेषकर बालकों में, जब कि उग्रावस्था व्यतीत हो चुकी हो, उस समय यह उपयोगी होता है। अनीसून के बीज ½ ड्राम, शर्करा तथा हरीतकी प्रत्येक १–१ ड्राम। इनका चूर्ण उत्तम कोष्ठमृदु-कर (Laxative) है। अनीसून के बीज और करावियां (Caraway) को समभाग ले भूनकर चाय की चम्मच भर की मात्रा में भोजनोपरांत सेवन करें। यह उत्तम पाचक है। चूर्ण किए हुए बीज की मात्रा–१० से ३० ग्रेन (५–१५ रत्ती) है। शीतकषाय एवं परिस्रुत जल (८० में १) की मात्रा–१ से २ आउंस (½ से १ छ०)। तैल की मात्रा—४ से २० बुंद शर्करा पर डालकर दें। (इं० मे० मे०)

अनु anu–उप० [सं०] जिस शब्द के पहिले यह उपसर्ग लगता है उसमें इन अर्थों का संयोग होता है। (१) पीछे। जैसे, अनुगामी, अनु-करण। (२) सदृश। जैसे, अनुकाल, अनुकूल, अनुरूप, अनुगुण। (३) साथ। जैसे, अनुकंपा, अनुग्रह, अनुपान। (४) प्रत्येक। जैसे, अनु-क्षण, अनुदिन। (५) बारंबार। जैसे, अनुगुणन, अनुशीलन। संज्ञा पुं० दे० अणु। इसके विप-रीत "अभि" आता है।

अनुकः anukah–सं० पुं०
अनुक anuka–हिं० संज्ञा पुं० } (Cupid-inous, Lustful) कामुक, कामातुर, कामी, वि-षयी। अ०।

अनुकदली anukadalí–सं० पुं० कदली वि-शेष, केला। लोखण्डीकेल मह०। A Plan-tain tree.

अनुकम्पा anukampá–हिं० स्त्रि० (Tend-erness) दया, कृपा।

अनुकर्णम् anukarṇam–सं० क्ली० कर्ण समीप, कान के पास। वा० शा० ४ अ०।

अनुकर्ष anukarsha–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] आकर्षण। खिंचाव।

अनुकर्षणम् anukarshaṇam–सं० क्ली०
अनुकर्षण anukarshaṇa–हिं० संज्ञा पुं० } (१) पानपात्र। (a glass, a drinking vessel) हारा०। (२) अनुकर्ष, अनुकर्षण। खिंचाव।

अनुकल्पः anukalpah–सं० पुं० किसी औ-षध के अभाव में उक्त औषध के गुण के समान अन्य औषध का ग्रहण। प्रतिनिधि या बदल। (an alternative)-इं०।

अनुकूट प्रवर्द्धन anukúṭa-pravarddha-na–हिं० संज्ञा पुं० (Jugular pro-cess).

अनुकूल anukúla–हिं०वि० सात्म्य, मुआफ़िक़। (Favourable).

अनुकूलका anukúlaká–सं० स्त्री० क्षुद्रदन्ती, छुद्रदन्ती, जमालगोटा भेद। वै० निघ०। Croton Tiglium, *Linn.* (the small var.)

अनुकूलन anukúlana–हिं०
अनुकूलना anukúlaná–हिं० क्रि० स० } (१) (Accomodation) अप्रतिकूल होना। मुआफ़िक़ होना। (२) पक्ष में होना। हितकर होना।

अनुकूल सन्धिः anukúla sandhih–सं०पुं० अल्पसन्धिः (Amphiarthrosis, yiel-ding joint.)

अनुकूला anukúlá–सं० स्त्री० ह्रस्व (लघु) दन्ती वृक्ष, क्षुद्र दन्ती। रा० नि० व० ६।

अनुकूलिनी anukúliní-**सं० स्त्री०** क्षुद्रदन्ती। Croton Tiglium, *Linn.* (A small var. of-).

अनुकंपा anukampá-**हिं० संज्ञा स्त्री०** [सं०] [वि० अनुकंपित] सहानुभूति।

अनुक्त anukta-**सं०, हिं० वि०** जिसका वर्णन न किया गया हो। जो न कहा गया हो। (Not Spoken, not told).

अनुक्त द्रव anukt-adrava-**हिं० वि०** निद्रव, जहाँ स्वरसादि पतले पदार्थोंका वर्णन नआया हो।

अनुक्त परिमाण anukta-parimáṇa—**सं० त्रि०, हिं० वि०** जहाँ द्रव्यों का परिमाण (मान) न दिया गया हो।

अनुक्रम anukrama-**सं० पुं०** विधान, कायदा। (method, order).

अनुखाल anukhála-**हिं० पुं०** खाई, खाड़ी, नाला। (A creek).

अनुगः anugah-**सं० पुं०** } परिचारक, से-
अनुग anuga-**हिं० संज्ञा पुं०** } वक। (An attendant.) **ग्लाo**। -**हिं० वि०** (following.) पश्चाद्गामी, पीछे चलने वाला, अनुगामी, अनुयायी, पैरोकार।

अनुगत anugata-**सं० पुं०, -हिं०वि०** [संज्ञा अनुगति] (१) पीछे पीछे चलने वाला, आश्रित, अनुगामी, अनुयायी (Dependant on)। (२) अनुकूल। मुआफ़िक। -**हिं० संज्ञा पुं०** सेवक, अनुचर।

अनुगमन anugamana-**हिं० संज्ञा पुं०** [सं०] पीछे चलना। अनुसरण। (२) समान आचरण। (३) सहवास। संभोग।

अनुगामी anugámi-**हिं० वि०** [सं०] [स्त्री० अनुगामिनी] (१) पीछे चलने वाला, पश्चाद्वर्त्ती (Followrig)। (२) समान आचरण करने वाला। (३) सहवास वा सम्भोग करने वाला।

अनुघात anugháta-**हिं० संज्ञा पुं०** [सं०] नाश। संहार।

अनुचिबुक anuchibuka-**हिं० संज्ञा पुं०** ठोढ़ी या ठुड्डी के नीचे का भाग।

अनुच्छ्वासः anuchchhvásah-**सं० पुं०** श्वासरोध, साँस बन्द होना, दम बन्द होना, दम घुटना। इख्तिनाक़-**अ०**। (Asphyxia)

अनुज anuja-**हिं० वि०** [सं०] जो पीछे उत्पन्न हुआ हो। —**संज्ञा पुं०** [स्त्री० अनुजा] (१) छोटा भाई। (२) एक पौधा। स्थलपद्म।

अनुजम् anujam-**सं० स्त्री०** (Root stock of Nymphæa lotus.) पौण्डरीक (कमल नाल) नामक गंध द्रव्य विशेष। पुण्डरिया-**बं०**। रा० नि० व० १२।

अनुजस् anujas **सं० पुं०** पुण्डरिया, कमल-नाल। (The root stalk of Nymphæa lotus.)

अनुजा anujá-**सं० स्त्री०** त्रायमाणलता। गोओ-यालियालता-**बं०**। रा० नि० व० ५। बला-डुमुर-**बं०**। भा० पू० १ भा० गु० व०। Thalictrum Fliosam। **देखो—** त्रायमाणा।

अनुजात anujáta-**सं०पुं०** वह सन्तान जो पिता के गुण रखती हो। अथर्व०। सू० ६। का० ८।

अनुजिघ्रम् anujighram-**सं०** गंध लेकर। अथर्व०।

अनुजंघास्थि anujanghásthi-**हिं० संज्ञा स्त्री०** टाँग या जंघा की दोनों लम्बी अस्थियों में से वह जो अंगुष्ठ (शरीर की मध्यरेखा के निकट) की ओर रहती है। फिब्युला Fibula **इं०**।

अनुज्ज्वल मण्डल anujjvala-maṇḍala (Non-Luminous Zone) ज्वाला के मण्डलों में से वह जो उसके उज्ज्वल मण्डल के सर्वतः बाहर स्थित है। इसमें ओषजन के आधिक्य के कारण कज्जल कणों का ज्वलन सम्यक् रीतिसे होता रहता है। एतदर्थ इसमें उज्ज्वलता की न्यूनता होती है, परन्तु ताप सब से अधिक होता है। **देखो—ज्वाला**।

अनुतक्रम् anutakram-**सं० क्ली०** तक्रानुपान। "जग्ध्वा तक्रं पिबेदनु।" सि० यो० पाण्डु चि० वृन्दः।

अनुतन्त्री anutantri-सं० स्त्री० पिंगला नाड़ी। (Sympathetic nerve)

अनुतन्त्री पद्धतिः anutantri-paddhatih -सं० स्त्री० पिंगल नाड़ी मंडल। (Sympathetic system)

अनुतप्त anutapta-हिं० वि० [सं०] (१) तपा हुआ। गर्म।

अनुतर्षः anutarshah-सं० पुं० (१) तृष्णा (Thirst)। (२) मद्य पीनेका पात्र, सुरापान पात्र। भैष०। मे० ष चतुष्कं।

अनुताप anutápa-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अनुतप्त] तपन। दाह। जलन।

अनुतापिकाण्ड anutápikánda-सं० पुं० पिंगल कांड। (Sympathetic trunk)

अनुतापिनीपद्धतिः anutápiní-paddhatih -सं० स्त्री० पिंगल मंडल। (Sympathetic system).

अनुत्क्लेशः anut-kleshah-सं० पुं० उत्क्लेशाभाव, वमनावरोध। च० सं० विसूची०।

अनुत्थित विद्धा "शिरा" anutthita-viddhá "shirá"-सं० स्त्री० ठीक पट्टी न बाँधने के कारण जिसकी शिरा न उठी हुई हो वह वेधित की हुई। इससे रुधिर नहीं निकलता। सु० शा० ८ अ०।

अनुत्रिकास्थि anutrikásthi-हिं० स्त्री० पुच्छास्थि, गुदास्थि, चञ्चु अस्थि। उस् उस्, अज़्उस् उस्, अज़्‍ मुलउस् उस-अ० दुमग़ज़ह्, उस्तख़ाने दुम-फ़ा०। दुमची की हड्डी-उ०। त्रिकास्थि के नीचे रहने वाली एक छोटी सी अस्थि है जो वस्तुतः चार छोटी छोटी अस्थियों के जुड़ने से बनी है। इस अस्थि में न कोई छिद्र होता है न कोई नली। इसका स्वरूप कोकिल चञ्चुवत होता है। इसलिए अँगरेजी में इसको कॉक्सिक्स (Coccyx) कहते हैं।

अनुदर anudara-हिं० वि० [सं०] [स्त्री० अनुदरा] कृशोदर। दुबला पतला।

अनुद्धत anuddhata-हिं० वि० [सं०] जो उद्धत न हो। अनुम। सौम्य। शांत।

अनुद्भूत ताप anudbhúta tápa-हिं० पुं० लेटेण्ट हीट ऑफ़ वेपराइज़ेशन (Latent-heat of vapourisation) वह ताप जो किसी तरल द्रव्य को वाष्पीय रूप में परिणत करने में व्यय हो; किन्तु, जिसका कोई प्रत्यक्ष फल विदित न हो, उस द्रव्यको वाष्पीय "अनुद्भूत ताप" कहते हैं। उदाहरण-यदि आप एक बर्तनमें जल लेकर उसे गर्म करना आरम्भ करें तो जैसा आप जानते हैं, उसका तापक्रम बढ़ने लगेगा और बढ़ते बढ़ते वह १०० ° सें० तक पहुँचेगा। उस समय जल उबलने लगेगा। परन्तु उस समय एक बड़ी विलक्षण बात देखने में आती है। जल के तापक्रम का बढ़ना बन्द हो जाता है, आप चाहे आँच दुगुनी या तिगुनी कर दें परन्तु तापक्रम वही १०० ° पर ठहरा रहेगा और जब तक सारा जल भाप में परिणत न हो जाएगा वहीं ठहरा रहेगा परन्तु आप जो ताप देते जा रहे हैं वह कहाँ चला गया? इसका यही उत्तर हो सकता है कि वह किसी अप्रगट रीति से जल को तरल से भाप बनाने में व्यय हो रहा है। इसे 'अनुद्भूत ताप'' कहते हैं। भौ० वि०।

अनुद्वाह anudváha-हिं०पुं० अविवाह,कुमारपन। (Virginity)।

अनुधावन anudhávana-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अनुधावक, अनुधावित, अनुधावी] (१) पीछे चलना, अनुसरण, (२) अनुसन्धान। खोज।

अनुनाद anunáda-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अनुनादित] प्रतिध्वनि, गूँज, गुंजार।

अनुनादित anunádita हिं० वि० [सं०] प्रति ध्वनित। जिसका अनुनाद या गूँज हुई हो।

अनुन्मदितः anunmaditah-सं० पुं० }
अनुन्मदितम् anunmaditam-सं० क्ली० }
उन्माद रहित। अथर्व०। सू०१११। २। का० ६। अथर्व०। सू०१११। १। का० ६।

अनुपकार anupakára–हिं० संज्ञा पुं० [सं० [वि० अनुपकारक, अनुपकारी] अपकार, हानि ।

अनुपकारी anupakárí–हिं० वि० [सं०] (१) उपकार न करने वाला । अपकार करने वाला । हानि करने वाला । (२) फजूल, निकम्मा

अनुपजः anupajah–सं० त्रि० अनुप देश में उत्पन्न हुआ । देखो–अनूपवर्गः (Anúpavargah)।

अनुपदीना anupadíná–सं० स्त्री० उपानह, जूता, खड़ाऊँ इत्यादि । हला० ।

अनुपल anupal–हिं० पुं० सेकेण्ड काल-मान विशेष । (A second of time).

अनुपशयः anupashayah सं० पुं०
अनुपशय anupashaya–हिं० संज्ञा पुं०
(What increases the disease)
(१) उपशय के विपरीत, व्याध्यसात्म्य औषधान्न-विहार आदि अर्थात् वह औषध, अन्न तथा विहार जो रोगी के रोग के ख़िलाफ़, हानिकारक अथवा असात्म्य (अर्थात् जो उसके अनुकूल न हो) हो उसे अनुपशय कहते हैं ।
(२) रोग-ज्ञान के पाँच विधानों में से एक जिसमें आहार विहार के बुरे फल को देख यह निश्चय किया जाता है कि रोगी को अमुक रोग है । मा० नि० । दे० उपशय ।

अनुपात anupáta–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (Ratio) सम, बराबर का सम्बन्ध, गणित की त्रैराशिक क्रिया । तीन दी हुई संख्याओं के द्वारा चौथी को जानना ।

अनुपानम् anupánam–सं० क्लो०
अनुपान anupána–हिं० संज्ञा पुं० } रा० नि० व० २० । अनुपान का प्राथमिक अर्थ वह तरल था जो औषध सेवनोपरांत व्यवहार में लाया जाता है । परन्तु, बहुत काल से अब यह उस द्रव पदार्थ के अर्थ में प्रयुक्त होने लगा, जिसके साथ औषध सेवन की जाती है । दूसरे शब्दों में इससे वह द्रव अभिप्रेत है जो सेवन की गई हुई औषध को पथप्रदर्शक का काम देता है ।

वह वस्तु जिसके साथ औषध खाई जाए । वह वस्तु जो औषध के साथ या ऊपर से खाई जाए । औषधांगपेय विशेष ।

बद्रिक़ह, मुबद्रिक्–अ० । पेशदारू–फ़ा० । विहिकल Vehicle–इं० ।

नोट—यह बात सिद्ध है कि यदि किसी तरल वस्तुके साथ औषध सेवनकी जाए तो इसका शीघ्र प्रभाव होगा और वह औषध को शरीर में उसके अभीष्ट प्रदेश तक प्रविष्ट करानेमें सहायक होगी। यही कारण है कि प्रायः सभी औषधें किसी न किसी तरलके साथ सेवनकी जाती हैं । वह वस्तु जो अनुपान रूपसे व्यवहारमें लाई जाए, रोग पर उसका भी प्रभाव औषध तुल्यही होना चाहिए । कतिपय रोगों के प्रशस्त अनुपान निम्न हैं:—

वात रोग—स्निग्ध तथा उष्ण द्रव्य ।
श्लेष्म व्याधि—रूक्ष तथा उष्ण पदार्थ ।
पित्त रोग—स्निग्ध वस्तु ।
स्नेहपान में—उष्ण जल इत्यादि । मद० व० १३ ।

चूर्ण, अवलेह, गुड़िका और कल्क के अनुपान की मात्रा वात, पित्त तथा कफ के प्रकोपमें क्रमशः ३, २ तथा १ पल है ।

(शाङ्ग० म० ख० ६ अ०)

श्लेष्म ज्वर—मधु, पान (पत्र) का रस, आर्द्रक स्वरस और तुलसी के पत्र का रस वा क्वाथ ।

पित्तज्वर—पटोलफल स्वरस, क्षेत्रपर्पटक स्वरस वा क्वाथ, गिलोय का स्वरस, निम्बत्वक् क्वाथ वा स्वरस ।

वातज्वर—शहद, गिलोय का रस, पटसन (लाल पटुआ) तथा चिरायता का शीत कषाय और तुलसीपत्र स्वरस वा क्वाथ ।

विषम-ज्वर—मधु, पीपल (पिप्पली) का चूर्ण, शेफालिका (हरसिंगार) के पत्ते का रस, बिल्वपत्र स्वरस, बिल्व (मूल) चूर्ण,

नागरमोथा, कुटज बीज (इन्द्रयव), पाठा (अम्बष्ठा) मूल, आम्र बीज, दाड़िम्ब (अनार) मूल वा फल त्वक्, धवपुष्प और कुटज (वृक्ष) त्वक् ।

यक्ष्मा, कफज श्वास, प्रतिश्याय और तत्सम अन्य रोग–वासक अर्थात् अड़ूसे के पत्तेका रस, तुलसी पत्र स्वरस, पान का रस, आर्द्रक स्वरस, अड़ूसे की छाल का क्वाथ, बाभुनहाटी, मुलेठी, कण्टकारी, कट्फल और कुष्ठ इनमें से किसी का क्वाथ; वचावीज चूर्ण, तालीसपत्र, पिप्पली (पीपल), काकड़ासिंगी और वंशलोचन इनमें से किसी एक का चूर्ण ।

वातप्राधान्य श्वास—बहेड़े का क्वाथ अथवा चूर्ण मधु के साथ ।

रक्तातीसार तथा रक्तपित्त—अड़ूसे के पत्तों का रस, अयापान–पत्र स्वरस, दाड़िम्ब (अनार) पत्र स्वरस और कुलहला पत्र स्वरस; गूलर का फल, कुटज वृक्ष की छाल और दूर्वा का रस, बकरी का दूध और मोचरस का चूर्ण ।

शोथ रोग—विल्व पत्र स्वरस, श्वेतापामार्ग का क्वाथ अथवा स्वरस, शुष्क मूली का क्वाथ और कालीमरिच का चूर्ण तथा अर्क मकों वा मकों स्वरस ।

पाण्डु वा रक्ताल्पता और स्त्रियोंके दारिद्र्य रोग—क्षेत्रपर्पटक स्वरस और गिलोय का रस ।

विरेचन योगों में--निशोथ का चूर्ण, दन्ती की जड़ का चूर्ण, सनाय (सोनामुखी) के पत्तों का क्वाथ वा चूर्ण, कटुकी का क्वाथ, हरीतकीका शीतकषाय उष्ण जल और उष्ण दुग्ध ।

मूत्रोद्घाटन अर्थात् मूत्रप्रवर्त्तक योगों के अनुपान-स्थल पद्म के पत्तों का रस, पाथरकुची के पत्तों का रस, कलमीशोरा का विलयन, कबाचीनी का चूर्ण और गोखरू, कुशमूल, कास मूल, खस की जड़ तथा इक्षुमूल इनका क्वाथ ।

बहुमूत्र (मूत्रातीसार)—गूलरके बीज का चूर्ण, जम्बु के बीज का चूर्ण और मोचरस का चूर्ण, तोरई के भूने हुए फल का रस और कन्दूरी (कुन्दरू) की जड़ का रस ।

पूयमेह (सूज़ाक)—गिलोय का रस, कच्ची हल्दी का रस, आमला का रस, लघु शाल्मलीवृक्ष स्वरस, दारुहरिद्रा का चूर्ण, मँजीठ और अश्वगंध का काढ़ा, सफेद चन्दन का कल्क, बबूल के गोंदका हिम, कदम्ब की छाल का रस और कसेरू का रस ।

श्वेतप्रदर—गिलोय का रस, अशोक की छाल का क्वाथ और रक्तस्थापक औषधें ।

रजःप्रवर्त्तक योगों के साथ--घृतकुमारी के पत्तों का रस या मुसब्बर (एलुआ), बाँस की छाल का शीत कषाय, कर्णिकार(उलट कम्बल)के पत्रका रस, कलिहारी (लाङ्गलिका) के पत्र का रस और जवापुष्प का रस ।

अजीर्ण व अग्निमांद्य--अजवाइन, वनयमानी और सौंफ का फाण्ट, पीपल, पीपलामूल कालीमरिच, चव्य, सोंठ और हींग इनका चूर्ण ।

आन्त्रीय कृमिनाशक योगों के साथ—वायविडंग का चूर्ण, अनार की जड़ का काढ़ा, अनन्नासके पत्तों का रस तथा खजूर, भिण्डी और चम्पाके पत्तियोंका रस, घेंटू और निर्गुण्डी का रस ।

छर्दिघ्न योगों में अनुपान--बड़ी इलायचीका चूर्ण वा क्वाथ ।

वायु रोग--त्रिफला का हिम, शतमूली का रस, बरियरा (बला) का काढ़ा, भूमिकुष्माण्ड का रस और आमला या त्रिफला का फांट ।

शुक्रवर्द्धक तथा वृष्य अनुपान--नवनीत (मक्खन), मांस रस, दुग्ध, केवाँच के बीज, विदारीकन्द, अश्वगन्ध, सेमल के मूसला का रस और अनन्तमूल का रस ।

रोगी और रोग दोनों की दशा का भली प्रकार विचार कर अनुपान चुनना चाहिए, क्वाथ और फांट की मात्रा १ छं० (२ आउंस), औषधियों के निचोड़े हुए रस की मात्रा १ या २ तो० और चूर्ण की मात्रा १ या आध आना भर लेनी चाहिए । जब चूर्ण अनुपान रूप से व्यवहार में लाए जाएँ तब उनको मधु में मिला कर चाटें । पित्तोल्बणता की दशा को छोड़कर शेष सभी

दशाओं में शहद को अनुपान रूप से प्रयोग करें।

उपयुक्त अनुपानों को केवल उस दशामें काम में लाएँ, जब कि औषध वटिका अथवा चूर्ण रूप में बरती जाए। किन्तु, जब मोदक, गुग्गुल और औषधीय पाक प्रभृति का उपयोग किया जाए तब शीतल या उष्ण जल अथवा उष्ण दुग्ध को अनुपान रूप से व्यवहार में लाया जाए। सभी औषधीय घृतों में चवन्नी भर शर्करा योजित कर लगभग एक छटाँक अर्धोष्ण दुग्ध के साथ सेवन करें। बहुत से घी बिना शर्करा के भी उपयोग में आते हैं।

(२) अष्टांग हृदय से अनुपान का संक्षिप्त वर्णन।

"विपरीतं यदन्नस्य गुणैः स्याद् विरोधि च"। वा० सू० अ० ६। श्लो० ५१।

खाद्य पदार्थों के विपरीत गुण वाले अविकारी द्रव्यों का अनुपान सदा ही हितकारी है।

जैसे रुक्ष का स्निग्ध, स्निग्ध का रुक्ष, गरम का ठंडा, ठंडे का गरम, खट्टे का मीठा, मीठे का खट्टा इत्यादि ! परन्तु ऐसा विपरीत सम्बन्ध न होना चाहिए। जैसा दूध और खटाई का होता है।

अनुपान का कर्म—अनुपान से उत्साह, तृप्ति शरीर में अन्न रस का संचार, दृढ़ता, अन्न-संघात, शिथिलता, क्लिन्नता और अन्न का परिपाक होता है।

अनुपान के अयोग्य रोग—जत्रु (ग्रीवा और वक्षःस्थल) के ऊपर वाले अंगों में होने वाले रोगों में अनुपान अहित होता है। जैसे—श्वास, खाँसी, उरःक्षत, पीनस, अत्यन्त गाने वा बोलने के सम्बन्ध में वा स्वरभेद में अनुपान हितकारी नहीं है।

अनुपानके अयोग्य रोगी—जिनका शरीर विसर्पादि रोगों से क्लिन्न हो गया हो अथवा जो नेत्र और क्षत रोगों से पीड़ित हों उन्हें पीने के पदार्थ त्याग देने चाहिए। स्वस्थ और अस्वस्थ सभी लोगों को पान और भोजन के पश्चात् अधिक बोलना, मार्ग चलना, नींद लेना धूप में जाना, अग्नि तापना, सवारी पर चढ़ना, पानी में तैरना और घोड़े आदि पर चढ़ना इत्यादि प्रत्येक काम त्याग देना चाहिए। वा० सू० अ०६।

अनुपार्श्व सरित्का anupárshvasaritká-सं० स्त्री० (Collateral Fissure).

अनुपालुः anupáluh-सं० पुं० अनुपदेशज आलू, पानीयालुक, बन आलू। रा० नि० व० ७। See-Pániyáluh.

अनुपुष्पः anupushpah-सं० पुं० (१) शरतृण-सं०। सरपत-हिं०। Penreed grass (Saccharum sara). श० च०। (२) खड्गतृण। (३) वेतसः। Common cane (Calamus rotong.)

अनुप्त anupta-हिं० वि० [सं०] जो बोया न गया हो। बिना बोया हुआ।

अनुप्रस्थ anuprastha-सं० पुं० (Horizontal, transverse) समस्थ, व्यत्यस्थ, आड़ा, चौड़ाई की रुख। मुस्तअरिज़, अरीज़-अ०।

अनुप्रस्थ बृहदन्त्रम् anuprastha-vrihadantram-सं० क्लो०
अनुप्रस्थ बृहत् अन्त्र anuprastha-vrihat antra-हिं० संज्ञा स्त्री० (Transverse-colon) बृहद् अन्त्र का समस्थ या आड़ा भाग। बृहद् अन्त्र का वह भाग जो यकृत् तक पहुँच कर बाँई ओर को मोड़ खाता है और नाभि प्रदेश में होता हुआ प्लीहा तक पहुँचता है। बृहद् अन्त्र का दूसरा भाग जो व्यत्यस्त या आड़ा (चौड़ाई की रुख) यकृत् से प्लीहा की ओर जाता है। क़ोलून मुस्तअरिज़-अ०।

अनुप्राशन anupráshana-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] खाना। भक्षण।

अनुबन्धः anubandhah-सं० पुं० (१) वात, पित्त और कफ में से जो अप्रधान हो।

(२) बंधन। लगाव। (३) अनुसरण। (४) आरम्भ।

अनुबन्धी anubandhí-सं० स्त्री० (१) तृष्णा, प्यास (Thirst)। (२) हिक्का, हिचकी। (Hiccup) मे०। -हिं० वि० [अनुबंधिन्] [स्त्री० अनुबंधिनी] (१) लगाव रखने वाला, संबन्धी। (२) फलस्वरूप, परिणाम स्वरूप।

अनुबोध anubodha-हिं०संज्ञा पुं० गंधोद्दीपन।

अनुभासः anubhásah-सं०पुं० काक विशेष। (A kind of crow) वै० निघ०।

अनुभूत anubhúta-हिं० वि० (Experienced) परीक्षित। सिद्ध। तजरबा किया हुआ। आजमूदा। (२) जिसका अनुभव हुआ हो।

अनुभूत चिकित्सा anubhúta-chikitsá -हिं० वि० परीक्षित इलाज।

अनुभूत योग anubhúta-yoga-हिं० वि० परीक्षित योग।

अनुभूत लाक्षादितैल anubhúta-lákshádi-taila-सं० पुं० एक सेर लाख को चार सेर पानी में औटाएँ। जब एक सेर जल शेष रहे तब उतार कर छान लें। पुनः इसमें १ सेर शुद्ध तिल तैल डालें, और चार सेर दही का जल डालें। फिर सौंफ, असगन्ध, हल्दी, देवदारु, रेणुका, कुटकी, मुर्वा, कूट, मुलहठी, मोथा, चन्दन, रास्ना प्रत्येक एक एक तोला लें, इन सब का कल्क करके उक्त तैल में डाल मन्द मन्द अग्नि से पचाएँ, फिर सिद्ध कर रक्खें। इसके मर्दन से विषमज्वर, खुजली, देह का दर्द दुर्गन्ध, तथा अंगों का स्फोटक इत्यादि दूर होते हैं।

(यो० त० ज्वर० चि०)

अनुभूतिः anubhútih-सं०स्त्री० त्रिवृता, त्रिवृत् -सं०। निशोत, निसोथ-हिं०। तेउड़ी-बं०। Ipomœa turpethum। दे० त्रिवृत् (ता, द्वया)।

अनुमतम् anumatam-सं० क्ली० जहाँ पराए मत का निषेध नहीं किया जाए (स्वीकार किया जाए) उसे "अनुमत" कहते हैं; जैसे—किसीने कहा कि सात रस होते हैं और दूसरे ने इसे मान लिया, यही अनुमत हुआ। सु० उ० ६५ अ०। सम्मत, स्वीकृति, एक मत।

अनुमति anumati-हिं० स्त्री० अनुज्ञा, आज्ञा, सम्मति। (An order, advice).

अनुमस्तिष्कम् anumastishkam-सं०क्ली० अणुमस्तिष्कम्(Cerebellum).

अनुमान anumána हिं० पुं० अटकल, विचार, भावना, क़यास। (Inference, guess)

अनुमानी anumání-यु० मद्य और शहद मिला हुआ (Wine and honey mixed)।

अनुमाली anumálí-यु० एक प्रकार का मद्य जिसको अङ्गूरको निचोड़ कर बिना पकाए (मद्य) प्रस्तुत करते हैं।

अनमेसा anumesá-रू० गुले-लाला, वायुपुष्प। शक़ायिक़ुन्नुअमान-अ०। (Pulsatilla). देखो-पल्साटिल्ला।

अनुयवः anuyavah-सं० पुं० (१) जो यव में न्यून हो उसे "अनुयव" कहते हैं। वा०। (२) निःशूक यव, शूक रहित यव, टूँड़ रहित जौ। हेमा०। (३) क्षुद्रयव, यह जौ की अपेक्षा गुणहीन होता है। वा० सू० अ० ६ शूक धान्यवर्ग। (A sort of Barley).

अनुयोजनम् anuyojanam-सं० क्ली० (Apposition).

अनुरस anurasa-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] गौण रस। अप्रधान रस। वह स्वाद जो किसी वस्तु में पूर्ण रूप से न हो। वा० सू०।

अनुराधा anurádhá-हिं० स्त्री० २७ नक्षत्रों में से १७ वाँ नक्षत्र। The 17th Nakshatra or lunar mansion, designated by a row of oblations (Stars in Libra).

अनुरुहा anuruhá-सं०स्त्री० नागरमुस्ता-सं०। नागरमोथा-हिं०। (Cyperus pertenuis).

अनुरेवती anurevatí-सं० स्त्री० (Small var. of Croton Tiglium, *Linn.*) क्षुद्रदन्ती । रा० नि० व० ६ ।

अनुरोध anurodha-हिं० पुं० अपेक्षा, बाधा, पक्षपात, उपरोध । (Obligingness) ।

अनुलासः anulásah सं० पुं० } मयूर-
अनुलास्यः anulásyah-सं० पुं० } पक्षी, मोर । (A peacock)

अनुलिप्त anulipta-हिं० त्रि० (Smeared) लिप्त, अभिषिक्त, पोता हुआ ।

अनुलेपः anulepah-सं० पुं० } (१)
अनुलेपनम् anulepanam-सं० क्लो० } लेपन, किसी तरल वस्तु की तह चढ़ाना । (२) To plaster लीपना, पोतना । (३) (Cosmetic) सुगन्धित द्रव्यों वा औषधों का मर्दन । उबटन करना, घटना, लगाना, अंगराग, लेप (न), चन्दन आदि वा गंधद्रव्य आदि का लेपन । मुहस्सिन, गुम्जह-अ० । हुस्नअफ़्ज़ा, रूशोयह । ग़ाज़ह, उब्टना-फ़ा० ।

इसके गुण—अनुलेपसे तृषा, मूर्च्छा, दुर्गंधि, श्रम और वात दूर होते हैं तथा सौभाग्य, तेज, त्वचा, वर्ण, प्रीति, ओज और बल की वृद्धि होती है । मद० व० १३ । अनुलेपन बल्य तथा तेज एवं सौभाग्य का देने वाला है । पूर्व आचार्यों ने इसे त्वच्य, प्रीति का देने वाला, तृषा, मूर्च्छा एवं श्रम का नाश करने वाला तथा वातनाशक कहा है । वै० निघ० । प्रीतिकारक, ओज का देने वाला, शुक्रवर्द्धक, दुर्गंधिनाशक तथा श्रम, पाप और तन्द्रा का नाश करने वाला है । राज० ।

अनुलोम anuloma-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] ऊपर से नीचे की ओर आने का क्रम । सीधा क्रम से, अवरोही, जाति विशेष ।

अनुलोमन anulomana-हिं० संज्ञा पुं० }
अनुलोमनम् anulomanam-सं० क्लो० }
(१) अनुलोमकरण । वह औषध जो मलादि धातुओं को यथा मार्ग प्रवृत्त करे, जो मलादि धातुओं का पाक करके और वात द्वारा हुए मल के बंध को तोड़ फोड़ के यथा मार्ग नीचे ले जाए उसे "अनुलोमन" कहते हैं, जैसे-हरड़ । भा० ।

(२) कोष्ठबद्धता को दूर करने वाला रेचक वा भेदक औषध ।

अनुल्की anulkí-सं० स्त्री० (१) हिक्का, हिचकी (Hiccup, Hiccough) । (२) तृष्णा, तृषा, पिपासा (Thirst) । मे० ।

अनुल्वण anulvana-सं० त्रि० फटा सा न दिखने वाला । यह चन्दन का एक विशेषण है । कौटि० अर्थ० ।

अनुवंधी anuvandhí-सं० स्त्री० प्यास, तृषा । (Thirst).

अनुवासः anuvásah- } सं० पुं०,
अनुवासनः anuvásanah- } क्लो० (१)
अनुवासनकः anuvásanakah } Fragrant सौरभ, सुगंधि, सुवास । (२) स्नेह वस्ति । (Oily enemata) । (३) स्नेहन । (४) धूपन । मे० । जो स्नेह अर्थात् चिकनाई प्रदान करे उसे "अनुवासन" कहते हैं । इसकी मात्रा दो पल का आधा अर्थात् एक पल (४ तो०) है । भा० । दे० अनुवासन वस्तिः ।

अनुवासन वस्तिः anuvásana-vastih-सं० पुं० (Oily enemata) स्नेह वस्ति, मात्रावस्ति । पिचकारी द्वारा गुदा मार्ग (रेक्टम) से तरल पदार्थ अन्दर पहुँचाने का नाम "वस्ति" (पिचकारी डूश, एनिमा) है । देखो-वस्ति ।

इस का एक भेद "अनुवासन वस्ति" भी है । यह वस्ति घी तेल आदि स्नैहिक पदार्थों से की जाती है । इसलिये इसे स्नेहवस्ति भी कहते हैं ।

आयुर्वेद शास्त्रमें सोना आदि धातुओं और बाँस, नल, सींग तथा जानवरों की आँतड़ी, अण्डकोष आदि से वस्ति बनानेकी क्रिया लिखी हैं; परन्तु, आजकल अंग्रेज़ी दवा बेचने वालों के यहाँ जो रबर की नली वाली वस्ति मिलती है, उसी से समस्त प्रकार का वस्ति कर्म सिद्ध हो सकता है ।

बलवान मनुष्यों को वस्ति देने के लिए

६ पल, मध्यम बल वालेको ३ पल, और निर्बल मनुष्य को वस्ति देने के लिए १॥ पल स्नेह लेना चाहिए।

अनुवासन वस्ति का एक भेद मात्रावस्ति भी है, इसमें १ पल से २ पल तक स्नेह लिया जाता है।

अनुवासन वस्ति रूक्ष और वात रोगी के लिए हितकारक है। परन्तु रोगी की जठराग्नि तीव्र हो, तभी यह वस्ति देनी चाहिए। मन्दाग्नि, वाले कुष्ठरोगी, प्रमेही, उदर रोगी और स्थूल शरीर वाले पुरुष को स्नेहवस्ति कदापि न देनी चाहिए।

स्नेह वस्ति वसन्त ऋतु में सायंकाल में और ग्रीष्म, वर्षा तथा शरद ऋतु में रात में देनी चाहिए। पहिले रोगी को विरेचन दें, फिर ६ दिन बाद पूर्ववत् शक्ति आने पर स्नेह वस्ति देनी चाहिए। जिस रोज स्नेह वस्ति देनी हो, उस दिन रोगी के शरीर में तैल मर्दन करके पानी की भाप से पसीना देना चाहिए। और चावलों की पतली पेया आदि शास्त्रोक्त भोजन कराके ज़रा देर टहलना चाहिए, इसके बाद यदि आवश्यकता हो तो मल मूत्रादि त्याग करके यथाविधि वस्ति देनी चाहिए। उस रोज रोगी को अधिक स्निग्ध भोजन देना हानिकारक है।

वस्ति लेने के समय रोगी को छींकना, जँभाई लेना, खाँसना आदि कार्य न करने चाहिए।

स्नेह वस्ति लेने के बाद रोगी को हाथ पैर सीधे फैलाकर लेट रहना चाहिए। यदि स्नेह वस्ति का स्नेह मल युक्त होकर २४ घंटे के अन्दर स्वमेव बाहर न निकले, तो रोगी को तीक्ष्ण निरूहण वस्ति, तीक्ष्ण फलवर्ति (शाफ़ा), तीक्ष्ण जुलाब और तीक्ष्ण नस्य देनी चाहिए।

वस्ति देने के बाद यदि समस्त स्नेह बाहर आ गया हो और रोगी की जठराग्नि तीव्र हो तो उसे सायंकाल में पुराने चावल का आहार देना चाहिए।

अनुवासनोपयोग anuvásanopayoga-सं० पुं० अनुवासनोपग वर्ग।

अनुवासनोपवर्गः anuvásanopavargah-सं० पुं० षड् विंशदशक-नाम कषायवर्ग। वह दस औषधियाँ जो अनुवासन के लिए उपयोगी हैं। यथा—(१) रास्ना, (२) देवदारु, (३) बेल, (४) मैनफल, (५) सौंफ, (६) श्वेत पुनर्नवा, (७) लाल पुनर्नवा, (८) अरनी, (९) गोखरू और (१०) सोनापाठा। च० सू० ४ अ०।

अनुवासाख्यः anuvásákhyah-सं० पुं० अनुवासन। वै० निघ०।

अनूवृजौ anúvrijou-सं० पुं० फेफड़े, प्राशि, फुप्फुस द्वयम्। चमौ-सं०। अथ०। सू० ६। ४। १२।

अनुवेदना anuvedaná-सं० स्त्री० समवेदना, सहानुभूति। (Sympathy).

अनुवेल्लितम् anuvellitam-सं० क्ली० शास्त्र व्रण बन्धन भेद। सु० सू० १८ अ०।

अनुशय anushaya-हिं० संज्ञा पुं० पश्चात्ताप, अनुताप, द्वेश।

अनुशयी anushayí-सं० स्त्री० क्षुद्ररोगान्तर्गत पादरोग विशेष।

लक्षण—जो फोड़ा गहरा हो, आरम्भ में थोड़ा सा दीखे, ऊपरसे त्वचाके रंग ही का हो (भीतर चक्करदार हो) और भीतर ही से पकता जाए उसे वैद्य पैरका "अनुशयी" कहते हैं। इसको कफसे उत्पन्न जानना चाहिए। "कफादन्तः प्रपाकां तां विद्यादनुशयी भिषक्"। सु० सं० अ० १३।

चि—श्लेष्म विद्रधि के समान इसका उपचार करना चाहिए। भा० पा० गो० चि०।

अनुशस्त्रम् anushastram सं० क्ली० त्वक् सार, स्फटिक, काच, जलौका, अग्नि, क्षार तथा नख आदि रूप शस्त्र। यह शिशु एवं भीरू प्रभृति के लिए होता है। सु० सू० ८ अ०।

अनुष्ठान शरीर anushthána-sharíra-हिं० संज्ञा पुं० लिंगदेह, आद्यदेह, पुरुषचिन्ह।

अनुष्णम् anushnam-सं० क्ली० उत्पल,

नीलकमल, कुमुद। रा० नि०। (Blue lotus).

अनुष्णवल्लिका anushna-vallika
अनुष्णवल्ली anushna-valli } —सं० स्त्री० नाल दूर्व्वा, नीली दूब। रा०नि० व० ८। (See-Níla-dúrvvá)

अनुसंधान anusandhána-हि० पुं० खोज, तलाश। (Search)

अनुसार्य्यकम् anusáryyakam-सं० क्लीo सुगंध द्रव्य विशेष। छड़ीला-महo। Nardostachys Jatamansi, D. C.। वैं० श०।

अनुह anuha
अनूह anúha } -अ० श्वास लेना, दमबढ़ना, खाँसना, खंकारना, दमा। (Dyspnœa).

अनूक anúka
अनूकम् anúkam
अनूक्यम् anúkyam } --सं० पुं० पसली, पर्शुका (Ribs)। कुरुकराशि। शतप० ३२ अ० ४।

अनूक anúka-हिं० संज्ञा पुं० (१) पीठ की हड्डी। (२) कुल, वंश। (३) गत जन्म, पूर्व जन्म।

अनूक़ anúqa-अ० (A bird) धेनुक पक्षी, हरकीलह्। See-dhenuka।

अनूचानः anúchánah-सं० पुं० (१) अंगसहित वेद का अध्ययन करने वाला उत्तम वैद्य। (२) वह जो वेद वेदांग में पारंगत हो कर गुरुकुल से आया हो। स्नातक।

अनूढ़ा anúrhá-हि० स्त्री० कुमारी, कुवाँरी, अविवाहिता स्त्री। (Virgin, maiden).

अनूढ़ागामी anúrhá-gámí-हिं० पुं० लम्पट, व्यभिचारी, छिनरा।

अनूतीलून anútilúna-यु० एक अप्रसिद्ध बूटी है जो कद्दू के समान, पर फल रहित होती है। (A plant).

अनूदिया aanúdiyá-कड़वा(-न्द्रा)ल का रस (उसारहेक़िस्स् उलहिमार)। (Succus Elaterinum).

अनूप anúpa-हिं० संज्ञा पुं० }
अनूपः anúpah-सं० पुं० } (१) (A buffalo) महिष, भैंस। मे० पत्रिक। (२)अम्बु(जल)प्राय देश, जलप्लावित देश, सजल देश, वह स्थान जहाँ जल अधिक हो। मे०। अनूप देश के लक्षण—जिस प्रदेश में जल तथा वृक्ष बहुत हों और जहाँ वात कफ के रोग होते हों उस देश को अनूप देश कहते हैं।

गुण—गुरु, सान्द्र, पिच्छिल, मधुर, कफकारक तथा स्निग्ध हैं और प्रमेह, गलगण्ड, श्लीपद, (फीलपाव) और छर्दि आदि रोगों का उत्पादक है। रा० नि०।

राजवल्लभ के मत के अनुसार स्निग्ध, शीतल वात तथा कफकारक और भारी है।

वि० [सं०]जलप्राय। जहाँ जल अधिक हो।

अनूपजम् anúpajam-सं० क्लीo (१) अनूपज-हिं० पुं०। आर्द्रक, अदरक, आदी। (Zingiber officinalis, Roxb.) रा० नि० व० ६। -पुं० (२) वृक्ष विशेष। आनारस गाछ-बं०। वैं०निघ०। -त्रि० अनूप देश में उत्पन्न होने वाले द्रव्यमात्र।

अनूपदेशः anúpadeshah-सं० पु० अनूप लक्षण युक्त प्रदेश। वे प्रदेश जिनमें अनूप के से लक्षण हों। देखो-अनूपः। See-Anúpah.

अनूपमांसम् anúpa-mánsam-सं० क्लीo अनूपदेशस्थजन्तुमांस। अनूप देश में होने वाले जन्तुओं का मांस। देखो-आनूपमांसम्। See-ánúpamánsam.

अनूफ़ोतानस anúfotánas-यु० गोह, सूसमार (A guana)। See Súsamára.

अनूमा anúmá-यु० रतनजोत। (Alkanet).

अनूयस anúyas-अशरास। See-Ashrás.

अनूशरा anúshará–मु० जपा, अड़उल। (Hibiscus Rosa Sinensis).

अनूष्णम् anúshṇam–सं० क्लो० उत्पल, नोल कमल (Blue lotus)। शुन्दिफुल, शालाल–बं०। रा० नि० व० १०।

अनूस anús–यु० सराकोही, पहाड़ी सरो।

अनृजुः anrijuh–सं० त्रि० शठ, असरल। –पुं० तगर पुष्प वृक्ष। See–shaṭham

अनेक aneka–हिं०वि० अधिक,बहु,भूरि (many, much, abundant).

अनेकदिग्वायुः aneka-digváyuh –सं०पुं० (A whirlwind)। विष्वग्वायु, घूर्णित वायु, बवंडर, घूमती हुइ हवा।

अनेकपः anekapah–सं० पुं० गज, हाथी (An elephant)। मद०व० ११।

अनेकरूप aneka-rúpa } –हिं०संज्ञा पुं०
अनेकाकार aneká-kára } नाना रूप, भाँति भाँति के रूप, बहुरूप। मल्टिफॉर्म Multiform–इं०।

अनेकान्तः anekántah–सं० त्रि० } जो
अनेकांत anekánta–हिं० वि० } स्थिर न हो। चंचल। –सं० पुं० कोई ऐसा कहे और कोई अन्यथा (और तरह) वह "अनेकार्थ" कहलाता है। जैसे कोई आचार्य द्रव्य को प्रधान मानते हैं कोई रस को प्रधान कहते हैं, कोई वीर्य को और कोई विपाक को प्रधान कहते हैं। सु० उ० अ० ६५। "क्वचित्तथा क्वचिदन्यथेति यः सः।"

अनेगुन्दुमनी anegundumani ता० कुचन्दन, कम्बोजी–सं०। रक्त कम्बल, रञ्जन–बं०। अडेनऐन्थरा पैवोनीना (Adenanthera Pavonina)–ले०। इं० मे० मे०।

अनेनेग्गिलु aneneggilu–कना० बड़ा गोखरू–हिं०, द०, गु०, बं०। पेडेलियम म्युरेक्स (Pedalium Murex)–ले०। इं० मे० मे०।

अनेडमूकः anedamúkah–सं० त्रि० (१) जो शब्द न सुन सके, वाक्श्रुति रहित, बहिरा, बधिर। डेफ (Deaf)–इं०। मे०। (२) अन्धा। ब्लाइंड (Blind)–इं०।

अनेमल anemal–सं० क्लो० (Enamel).

अनेमुई anemuí–ता० असन वृक्ष–हिं०। See–Asana.

अनेमोनीन anemonin–इं० काकरुज सत्व, अनोमोनीन, रत्तन जोग सत्व–हिं०। जौहर शक़ायिक़–अ०। यह उपर्युक्त औषध अनीमून ऑब्ट्युज़िलोबा (Anemone Obtusiloba) अथवा पल्साटिल्ला (Pulsatilla) अर्थात शक़ायिक़ वा रत्तनजोग के पौधे का सत्व है, जो १५२° के उत्ताप पर पिघल कर तुल्यचातुर्भुजीय रवारूप में तलस्थाई हो जाता है। वाष्प के साथ उड़नशील होता है और साधारण ताप क्रम पर वायु में खुला रहने पर यह शनैः शनैः अनीमोनिक एसिड में परिणत हो जाता है।

प्रभाव–चरपरा और फोस्काजनक। अनीमोनीन विषैला पदार्थ है। इसके प्रयोग से मध्यस्थ वातमण्डल वातग्रस्त (पैरालाइज़्ड) हो जाता हैं। इं० मे० मे०। फा० इं०।

अनेसाइक्लस पाइरेथ्रम anacyclus pyrethrum–ले० अकरकरा। (Pellitory).

अनैक्-कट् रज़ई anaik-kaṭ-razhai–ता० राकसपत्ता, कराटाल। (Agave americana).

अनैच्छिक anaichchhika–हिं० वि० स्वाधीन, गैर इरादी, मुत्तहरिक बिला इरादह्–अ०। इन्वॉलण्टरी Involuntary, ऑटोमैटिक Automatic–इं०। शरीर की दो गतियों में से वह जो हमारी इच्छा के अधीन न हों।

हम उनको अपनी इच्छा से रोक नहीं सकते और जब वे न होती हों या होनी बन्द होजाएँ तब हम अपनी इच्छा से उनको रोक नहीं सकते। ये और ऐसी ऐसी और गतियाँ इच्छा के अधीन न होने के कारण स्वाधीन या अनैच्छिक कही जाती है।

अनैच्छिक पेशी anaichchhika-peshí }
अनैच्छिक मांस anaichchhika-mánsa }
हिं० स्त्री०, हिं० पुं० (Involuntary muscle) स्वाधीन मांस, अनैच्छिक मांस।

अज़लह ग़ैर इरादी-अ० । अनैच्छिक मांस से हृदय-नालियों, मार्गों और आशयों की दीवारें बनी हुई हैं।

अनैच्छिक मांस सेल anaichchhika-mánsa-sela-हिं० पुं० स्वाधीन मांस सेल। (Involuntary muscular cell) यह सेलें लम्बी होती हैं; बीच में से मोटी होती हैं और सिरों पर पतली और नोकीली। उनकी लम्बाई $\frac{1}{450}$ से $\frac{1}{600}$ इञ्च तक और मोटाई $\frac{1}{2000}$ से $\frac{1}{3000}$ इंच तक होती है। प्रत्येक सेल में अंडाकार या सलाकाकार मींगी होती है। प्रत्येक सेल से वात मंडल का एक सूक्ष्म तार लगा रहता है।

अनैनरुञ्जी anai-nerunjí-ता० बड़ा गोखरू। (Pedalium Murex, *Linn.*). फा० इं० ३ भा०।

अनैन्द्रिक anaindrika-हिं० वि० निरिन्द्रिक, निरावयविक। (Inorganic).

अनैन्द्रिक दोष anaindrika-dosha-हिं० पुं० अनैन्द्रिक अशुद्धि। Inorganic Impurities.

अनैन्द्रिक द्रव्य anaindrika-dravya-हिं० पुं० अनैन्द्रियक पदार्थ। (Inorganic Substances)

अनैन्द्रियक पदार्थ anaindriyaka-padártha-हिं० संज्ञा पुं० सृष्टि में पाए जाने वाले दो प्रकार के पदार्थों में से वह जिसकी उत्पत्ति में प्राणिवर्ग का कोई हाथ नहीं, जैसे जल, वायु, मट्टी, लवण, शोरक, गन्धकाम्ल, स्वर्णादि धातु वा अधातु। इनऑर्गेनिक सब्सटेन्स Inorganic substance-इं०। जमादी-अ०।

अनैन्द्रियक रसायन anaindriyaka-rasáyana-हिं० संज्ञा पुं० (Inorganic chemistry) रसायनका वह विभाग जिसमें अनैन्द्रियक पदार्थों का वर्णन होता है।

अनैपुलियमरम् anaipuliyamaram-ता० गोरख इमली। (Adansonia Digitata, *Linn.*) इं० मे० मे० रू० फा० इं०। फा० इं०।

अनैपुलियरोय anaipuliyaroya-ता० गोरख इमली। (Adansonia Digitata, *Linn.*) मेमो०।

अनैफ़ anaif-अ० जिसकी नासिका में व्यथा हो अथवा चोट लगी हो।

अनोकहः anokahah-सं० पुं० वृक्ष, पेड़। ट्री (Tree)-इं०। गाछ-बं०।

अनोजीसस अक्युमिनेटा anogeissus acuminata, *Wall.*-ले० चकवा-बं०। पाँचो, पासी-उड़ि। नुम्मा-ता०। पाची-साँगु, पाशी, पाँसी-ते०। फास म०। यों-ब०। इसके पत्र रङ्ग के काम मे आते हैं। मेमो०।

अनोजीसस लेटिफोलिआ anogeissus latifolia, *Wall.*-ले० धवः। (Conocarpus Latifolia)

अ(ए)नोडाइन anodyne-इं० वेदनानाशक, व्यथाशामक, अ३मर्द्द प्रशमनम्। (Analgesic).

अनोना anoná-हिं० वि०(१)अलोना, नोन रहित। साल्टलेस (Saltless)-इं०। हिं० को०। -स्त्रि०। (२) अतिबला, कंघी। अब्युटिलन इण्डिकम् (Abutilon Indicum) -ले०। इं० मे० मे०।

अनोना डयुमोसा unona dumosa, *Roxb.* -ले० तुबाई चारह्। (Unona bushy). इं० हैं० गा०।

अनोना नेरम unona narum-ले० अज्ञात।

अनोना बुशी unona bushy-इं० तुबाई चारह्

(Unona dumosa, *Roxb.*–लै० । इं० हैं० गा० ।

अनोना म्युरिकेटा anona muricata–लै० यह आतृप्य वर्ग (या सीताफल वर्ग) अर्थात् (Anonaceae) की वनस्पति है। इसका मूल उत्पत्तिस्थान पश्चिमी द्वीप समूह है, परंतु अब यह पूर्वी भारतवर्ष में भी लगाई गई है।

गुणधर्म—पक्कफल में प्रिय व किंचित् अम्ल गूदा होता है जिससे ज्वर में शैत्यकारक प्रपानक प्रस्तुत किया जाता है। अपक्कफल–अत्यन्त संकोचक होता है और आन्त्रिक असुस्थता एवं स्कर्वी की दशामें व्यवहारमें आता है। त्वक् संकोचक है तथा मूल- बल्य शव अर्थात् मृत शरीर जन्य विषाक्तता (Plomaine-poisoning) में बरती जाती है, विशेषतः सड़ी हुई मछलियों के खानेके बाद। पत्र कृमिघ्न रूपसे और पूयजनन हेतु इसका बहिःप्रयोग होता है। इं० मे० मे०।

अनोना रेटिक्युलेटा anona reticulata, *Linn.*–लै० रामफल–द०, । नोना–बं० । मेमा० । शरीफा Bullocks heart–इं०। इं० हैं० गा० । Citron–इं० ।

अनोना लॉङ्ग लीवड unona, long-leaved, –इं० कलाकुरा । (unona longifolia, *Pro.*, *Lind.*)–लै०। इं० हैं० गा०।

अनोना लोंङ्गि फोलिआ unona, longifolia, *Pro.*, *Lind.*–लै० कलाकुरा। (Unona, long-leaved, R.)–लै०। इं० हैं० गा०।

अनोना स्कामोसा anona squamosa, *Linn.*–लै० शरीफा, सीताफल, आतृप्य।

अनोनेसीई anonaceae–लै० आतृप्य वा सीताफल वर्ग।

अनोफ़िलिज़ anopheles–इं० यह रोगको एकसे दूसरे मनुष्य तक पहुँचाने वाला एक विशेष जाति का मच्छर है।

अनोप्ल्युरा लेण्टाइस्सी anopleura lentisci –लै० अफिस। फा० इं० १ भा० ३८१। देखो– पिस्ता।

अनोरस्मा anorasmá–अ० धामनीयार्बुद। देखो–अबुरस्मा।

अनोशदारू anosha-dárú | **नोशदारू** nosha-dárú– अ० कृ० माजून के समान एक यौगिक औषध है, जिसका प्रधान अवयव आमला है। इसकी निर्माण-विधि–पक्क आमला ताजा तौलकर जल में पकाकर भली भाँति मलकर इसके बीज पृथक् करें और झरझरे कपड़े में छानें जिससे रेशे को छोड़कर आमले का गूदा निकल आए। तत्पश्चात् बीज तथा रेशेको तौलें और इस प्रकार कुल आमले के भार में से इनके (रेशे के) भारको घटाकर आमलेके गूदेका भार मालूम करें। इस गूदे के भार से दुगनी मिश्री (अथवा कोई अन्य शुद्ध शर्करा) मिलाकर चाशनी करें। पक्क होनेपर अभी जब कि यह कुछ कुछ गर्म ही अन्य रहे, इसमें औषधों के चूर्ण मिश्रित करें। और यदि आमला शुष्क हो तो उसके बीज निकाल, मापकर धो डालें, जिसमें वह धूल प्रभृतिसे रहित होकर शुद्ध हो जाए। इसके पश्चात् उसे इतने गोदुग्धमें भिगोएँ जिसमें आमले डूब जाएँ। चार प्रहर पश्चात अधिक जल डालकर उबालें जिससे आमले का कषैलापन एवं दुग्ध की चिकनाई दूर हो जाए। पुनः अन्य स्वच्छ जल में उबाल कर उपरोल्लिखित नियमानुसार "अनोशदारू" प्रस्तुत करें।

अनौम anouma–अ० निद्रापूर्ण, जिसके नेत्रों में निद्रा भरी हो। निद्रालु। निद्रित। (Sleepy, sleeping)

अनंग ananga–हिं० वि० [सं०] [क्रि० अनंगना] बिना शरीर का। देह रहित।

संज्ञा पुं० कामदेव (Cupid)। दे०- अनङ्गम्।

अनंगक्रीड़ा ananga-krírá–हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] (१) रति। संभोग। (Coition)

अनंगवती anangavatí–हिं० वि० स्त्री० [सं०] कामवती, कामिनी।

अनंगारि anangári–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव के बैरी। शिव।

अनंगी anangí–हिं० वि० [सं० अनङ्गिन्] [स्त्री० अनंगिनी] अंग रहित। बिना देह का। अशरीर।

संज्ञा पुं० कामदेव। (Cupid).

अनंत ananta–हिं० संज्ञा पुं० दे०—अनन्तः।

अनंतमूल anantamúla–हिं० संज्ञा पुं० [सं० अनन्तमूलम्]

अनंता anantá–हिं० वि० स्त्री० [सं०] जिसका अंत वा पारावार न हो।

संज्ञा स्त्री० (१) पृथ्वी। (२) अनन्तसूत्र देखो—अनन्ता।

अनंदी anandí–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) एक प्रकारका धान। (२) दे०–आनन्दी।

अनंभ anambha–हिं० वि० [सं० अन्=नहीं + अम्भ = जल] बिना पानी का।

अनंशुमत्फला ananshumatfalá–सं० स्त्री० कदलीवृत्त, केला का पेड़। (Musa sapientum, *Linn.*) जटा०।

अन् an–अव्य० [सं०] संस्कृत व्याकरण में यह निषेधार्थक 'नञ्' अव्यय का स्थानादेश है और अभाव वा निषेध सूचित करने के लिए स्वर से आरम्भ होने वाले शब्दों के पहिले लगाया जाता है। उ०–अनन्त, अनधिकार, अनीश्वर। पर हिन्दी में यह अव्यय वा उपसर्ग, कभी कभी सस्वर होता है और व्यंजन से आरम्भ होने वाले शब्दों के पहिले भी लगाया जाता है। उ०–अनहोनी, अनबन, अनरीति इत्यादि।

अन्त anta–हिं० पुं० नाश स्वरूप, शेष, समाप्ति, सीमा, निकट, मृति। (End, completion, death.)

अन्तकः antakah–सं० पुं० (१) काञ्चनार वृक्षः–सं०। कचनार का पेड़–हिं०। (Bauhinia Variegata, Linn.) भा० गु० व०। (२) नाशकर्त्ता, काल (the Supposed regent of death)। (३) सन्निपात ज्वर विशेष। इसके लक्षण—अंगोंका टूटना भ्रम, कम्प और शिरका हिलना, खाज तथा रोना, कुछ का कुछ बकना, संताप, हिचकी का आना जिसमें ये लक्षण हों उसको असाध्य अन्तक सन्निपात जानना चाहिए। इसकी अवधि १० दिन की है, जैसे–"अन्तके दश वासराः।" मा० नि०।

उक्त सन्निपात के लक्षण भावमिश्र महोदय ने निम्न प्रकार वर्णन किए हैं, यथा—जिस मनुष्य के अन्तक नामक सन्निपात कुपित होता है, उसके शरीर में बहुत सी गाँठें पड़ जाती हैं, उदर वायु से भर जाता है, निरन्तर श्वास से पीड़ित रहता है और अचेत रहता है। भा० म० १ भा०।

अन्तकोटर पुष्पी antakoṭara-pushpí-सं० स्त्री० नील बोना–बं०।

अन्तड़ी antarí | **अन्त्री** antrí– } -हिं० स्त्री० आँतें, आन्त्र। (Intestines, Bowels, Entrails, Gut.)

अन्तरम् antaram–सं० क्ली० अवकाश, छिद्र, मध्य; बीच; दूर, भीतर। (Interval, hole or rent, midst).

अन्तमल antamala–सं० (१) मद्य, मदिरा (Wine)। (२) मल, विष्ठा (Fœces)।

अन्तमात्रिका धमनी antamátrika-dhamaní–हिं० स्त्री० (Internal carotid artery) ग्रैवान्तरिक धमनी। शिर्यान सुबाती गाइर–अ०।

अन्तमल antamala | **अन्तमूल** antamúla } –हिं० संज्ञा पुं० काला मदार। [सं० अन्तर्मलः] जंगली पिक्वन (–क्वा–)। टाइलोफोरा अस्थमेटिका Tylophora asthmatica, *W. & A.*, एस्क्लिपियस अस्थमेटिका Asclepias Asthamati-

ca, *Willd.*, Roxb.–ले०। इंडियन इपीकेक्वाइना Indian Ipecacuanha–कंट्री इपिकेक्वाइना प्लांट Country Ipecacuanha plant-इं०। संस्कृत पर्याय–मलाण्डः, अण्डमलः, पूति, अम्भपर्णः, रोमशः (भा०); अन्तर्पाचक, मलान्तः, अन्तर्मलः, अण्डपर्णः, लोमशः। पित्-काडी–द०। इर्कुज़्ज़हब हिन्दी -अ०। अन्तोमुल–बं०। पितमारी, खड़की रास्ना, अन्थमुल, पितकाड़ी–बम्ब०। पितकाड़ी, खड़की रास्ना--मह०। मेण्डी –उड़ि०। नच्--चुरुप्पान, नञ्--मुरिञ्चान, नाय्--पालै, पैय्प्-पालै--ता०। वेरिपाल, कुक्कपाल--ते०। वल्लि-पाल--मला०। बिनुनुग–सिं०। अड़ु-मुतद्-कना०।

शारिवा वा मूलिनी वर्ग
(*N. O. Asclepiadeæ.*)

उत्पत्ति स्थान—उत्तरी तथा पूर्वी बंगाल, आसाम से वर्मा पर्यंत, दकन (वा दक्षिण भारतवर्ष) और लंका।

पर्याय-निर्णायक नोट अन्तोमुल (अन्तमल, अन्तमूल–हिं०) तथा अनन्तोमूल (अनन्तमूल–हिं०) इन दो बंगला भाषा के शब्दों के उच्चारण में बहुत कुछ समानता होने के कारण ये भ्रमवश एक दूसरे के लिए प्रयोग किए जाते हैं। परन्तु, इनमें से प्रथम अर्थात् अन्तोमुल जंगली पिकक Country Ipecacuanha(Tylophora Asthamatica) और दूसरा शारिवा वा अनन्तमूल Country Sarsaparilla (Hemidesmus Indicus, R. Br.) के लिए प्रयोग किया जाना चाहिए।

वानस्पतिक वर्णन—यह शारिवा की जाति का एक बहुवर्षीय लता है। मूल एक लघु काष्टमय ग्रंथि है जिससे बहुसंख्यक सूत्रमय जड़ें निकल कर नीचेकी ओर जाती हैं। यह २ से ५ वा ६ इंच या अधिक लम्बी और $\frac{१}{२४}$ या $\frac{१}{१२}$ इं० व्यासमें और अत्यन्त कर्कश अर्थात् टूटनेवाली (भंगुर) होती हैं। सौत्रिक जड़ोंकी संख्या विभिन्न होतीहै। ये ५ से १५ या २० और कभी इससे भी अधिक होती हैं। ये अस्पष्ट वर्ण की अथवा धूसर श्वेत वर्ण की होती है। जड़ें प्रायः अशाखी होती हैं। पर साधारणतः उनसे बहुत पतले लोमवत् तन्तु या क्षुद्र मूल लगे रहते हैं।

इससे २ से ३ आकाशी धड़ (कांड) निकलते हैं। कांड, अनेक, दाएँ बाएँ लिपटे हुए साधारणतः कुक्कुट-पराकार, कभी कभी हंस के पर के समान मोटे शाखायुक्त, किञ्चित् लोमश होते हैं। पत्र सम्मुखवर्ती, पत्र-प्रांत समान अर्थात् अखंड (जड़के समीप प्रायः व्यत्यस्त) २ से ३॥ वा ५ इं० दीर्घ और १॥ से २॥ इं० चौड़ा, आयताण्डाकार, डंठल(पत्रवृंत)के पास कभी कभी तथा कुछ हृदयाकार, किञ्चित् नोकीला, ऊपरका भाग(उदर)चिकना और नीचेका भाग(पृष्ठ)किञ्चित् लोमश और डंठल युक्त होता है। पत्रवृंत (डंठल) लघु, आधा से $\frac{३}{४}$ इं० लम्बा, लोमश किञ्चित् नलिकाकार होता है। पत्र शुष्कावस्था में अधिक पीले सख्त और पीताभहरित वर्ण के होते हैं। उनमें किसी प्रकार की अप्रिय गंध नहीं होती। स्वाद बहुत कम होता है। पुष्प सूक्ष्म, तारा के सदृश प्रातः सायं तथा रात्रि में विकसित होते, परन्तु दिन में जब सूर्य का प्रखर उत्ताप होता है तब वे कुम्हला जाते हैं। ये वृन्तयुक्त, छत्रकाकार और पुष्पावल्यावरण युक्त होते हैं। पुष्पवृंत कक्षीय साधारण, सामान्यतः विषमवर्ती, पत्रवृंत की अपेक्षा दीर्घतर होते हैं। छत्रक (Umbel) साधारणतः मिश्रित, विषम, आधार पर पुष्पावल्यावरण (Involucres) द्वारा घिरे होते हैं। पुष्पावल्यावरण (Involucres) अत्यन्त लघु और स्थायी होता है। पुष्पवाह्यावरण बीजकोषाधः, स्थायी, बहुसपलीय (Polysepalous) होता है। सपल (Sepals) ५, लघु, $\frac{१}{१२}$ से $\frac{१}{८}$ इंच लम्बे, हरित वा पीतहरित होते हैं। पुष्पाभ्यंतर-कोष, बीजकोषाधः एवं बहुदलीय होता है। दल ५, त्रिकोणाकार, $\frac{१}{१२}$ से $\frac{१}{८}$ इंच लम्बे, कभी कभी एवं किञ्चित् पीछे को झुके हुए; पीले (सिवाय आधार के सामीप्य भीतरी भाग के जहाँ वे गुलाबी रंग के

अथवा गुलाबी रंग के चिह्नों से युक्त) होते हैं। पराग--केशर तथा गर्भकेशर परस्पर संप्रक्त होकर एक हो जाते हैं जिसका व्यास लगभग $\frac{1}{12}$ इंच होता और जो पंच पीताभ उभरी हुई रेखाओं से अंकित होता है। बीजकोष (डिम्बाशय) दो होते हैं। शिम्बी युग्म, एक दूसरी के सम्मुख और आधार पर किञ्चित् चिपकी हुई, एक ओर गावदुमी, २ से ४ इंच लम्बी, मध्य में लगभग $\frac{1}{5}$ इंच मोटी, चिकनी, एक कपाटयुक्त और स्फुटित होने वाली होती है। बीज लोमश जिसके ऊपरके सिरे वा आधार पर रूईका एकगुच्छा होता है, लघु, अत्यन्त पतला, रक्ताभायुक्त धूमर वर्ण का और किञ्चित् अंडाकार होता है। इसका पौधा वर्ष भर पुष्पमान रहता है, विशेषतः उस समय जब कि लगाया जाता है।

इस पौधेके दो भेद होते हैं। यह केवल आकार एवं कुछ अन्य साधारण लक्षणों में एक दूसरे से भिन्न होते हैं। जब इनको एक अवस्था में रक्खा जाता है तब इनमें से एक दूसरे से सदा बड़ा होता है। बड़ी जाति में पुष्पदल वृहत्तर एवं न्यूनाधिक परावर्तित और कभी कभी किञ्चित् लिपटे हुए भी होते हैं। पुरातन पत्र अधिक चौड़े, पतले, गम्भीर वर्ण के और कुछ कुछ पीछे की ओर झुके होते हैं।

इस पौधे की जड़ के सम्बंध में ऐसा प्रतीत होता है कि कतिपय ग्रंथों में यह एक दूसरी जड़ के साथ मिलाकर भ्रमकारक बना दिया गया है। उदाहरण के लिए मेटीरिया मेडिका खंड २ पृ० ८३ पर लिखे हुए वाक्य को ही लीजिए जो इस प्रकार है—

"The root of this plant, as it appears in the Indian bazars, is thick, twisted, of a pale colour, and of a bitterish and somewhat nauseous taste."

अर्थात् इस पौधे की जड़ जो बाजारोंमें दिखाई देती है, मोटी, बलखाई हुई, अस्पष्ट वर्ण की और किञ्चित् तिक्त एवं कुछ कुछ उत्क्लेशजनक स्वादयुक्त होती है।

प्रथम तो इसकी जड़ें विक्रयार्थ बाजारों में नहीं आतीं और द्वितीय यह कि इसकी जड़ें पूर्वोक्त वर्णनके अनुसार नहीं होतीं। देखो—वानस्पतिक वर्णनांतर्गत मूल वर्णन।

रासायनिक-संगठन—इसके पत्र का घन शीतकषाय स्वाद में किञ्चित् चरपरा होता है। पत्र एवं मूल में टाइलोफोरीन (Tylophorine) अर्थात् अंतमलीन नामक एक क्षारीय सत्व और दूसरा एक वामकसत्व ये दो प्रकार के सत्व पाए जाते हैं। टाइलोफोरीन जलमें तो कम परन्तु मद्यसार एवं ईथर में अत्यन्त विलेय होता है।

प्रयोगांश—शुष्क पत्र तथा मूल।

औषध-निर्माण—(१) पत्र का अमिश्रित चूर्ण Simple Powder of Tylophora Leaves (Pulvis Tylophoræ Foliæ Simplex)—पत्र जड़ की अपेक्षा कठिनतापूर्वक चूर्ण किए जा सकते हैं। पहले उनको धूपमें अथवा सैंडबाथ (बालुकाकुंड) पर रखकर भलीप्रकार सुखालें। फिर चूर्णकर वस्त्रपूत करलें। इस स्थूल चूर्ण को पुनः विचूर्णित करें और पुनः बारीक चलनी वा वस्त्र से छान लें तथा बन्द मुँह की बोतल में सुरक्षित रक्खें। मात्रा—मूल चूर्णवत्।

(२) जड़ का अमिश्रित चूर्ण Simple Powder of Tylophora Root (Pulvis Tylophoræ Simplex)—सामान्य विधि से तैयार कर बन्द मुख के बोतल में रक्खें। मात्रा—वामक प्रभाव के लिए ४० से ५० ग्रेन (२० रत्तीसे २५ रत्ती तक); प्रवाहिका में १५ से ३० ग्रेन (७॥ रत्ती से १५ रत्ती) या इससे अधिक। कफनिस्सारक रूप से $\frac{1}{2}$- ग्रेन।

(३) अभ्यङ्ग वा उद्वर्तन (Liniment).

(४) टाइलोफोरीन नामक सत्व।

प्रतिनिधि—यह इपिकेक्वाइना की उत्तम प्रतिनिधि है और प्रायः उन सम्पूर्ण दशाओं में

जिनमें इपिकेक्वाइना व्यवहृत होता है, इसका उपयोग किया जाता है।

इतिहास, गुणधर्म तथा उपयोग—यद्यपि ऐसा प्रकट होता है कि भारतवर्ष के उस प्रांत के निवासी जिसमें अन्तमूल होता है, इसके औषधीय गुणधर्म से अति प्राचीन काल से परिचित हैं; तथापि इसके व्यापारिक द्रव्य होने का हमारे पास कोई प्रमाण नहीं और न किसी प्रामाणिक हिन्दू अथवा इस्लामी निघण्टु ग्रन्थों में इसका वर्णन आया है। किसी किसी ग्रंथ में भावप्रकाशोक्त मलाण्ड शब्द इसके पर्य्याय स्वरूप लिखा है। भावप्रकाशकार मलाण्ड का गुण इस प्रकार लिखते हैं— "वामनः स्वेदजननः कफनिर्हरणस्तथा।" अर्थात् मलाण्ड वामक, स्वेदजनक और श्लेष्मनिस्सारक है। ये सम्पूर्ण गुण अन्तमूल में विद्यमान हैं। अतः मलाण्ड को अन्तमूल मानना हमें अनुपयुक्त नहीं प्रतीत होता।

रॉक्सबर्ग लिखते हैं —कारोमण्डल तट पर अन्तमूल की जड़ इपिकेक्वाइना की प्रतिनिधि रूप से प्रायः प्रयोग में लाई जा चुकी है। मैंने प्रायः इसका सेवन कराया और सदा इससे वे ही प्रभाव उत्पन्न होते हुए पाया, जिनकी इपिकेकाइनाके द्वारा होनेकी आशाकी जाती है। दूसरों से इसके अनुसार प्रभाव होने की भी मुझे प्रायः सूचनाएँ मिलीं। सन् १७८०–८३ ई० के युद्धकाल में अभाग्यवश हैदरअली द्वारा बन्दीकृत यूरोपियनों के लिए यह अत्यन्त उपयोगी औषध सिद्ध हुई। अधिक मात्रा में वामक, थोड़ी मात्रा में और बारम्बार प्रयोग करने से विरेचक, उभय विध यह अत्यन्त प्रभावात्मक सिद्ध हुआ।

डॉक्टर रसेल (Dr. Russell) को मद्रास के फिज़िशन जनरल (चिकित्सकों के अधिनायक) डॉक्टर जे० एण्डरसन (Dr. J. Anderson) ने सूचित की कि उनको इसके युरोपीय तथा देशी दोनों सेनाओं द्वारा प्रवाहिका में, जिसने उस समय सेनामें संक्रामक रूप धारण की थी, सफलतापूर्ण उपयोग किए जाने का बहुत वर्ष पूर्व से ज्ञान है। ऐसा मालूम होता है कि इपिकेक्वाइना सर्वथा समाप्त हो चुका था और डॉक्टर एण्डरसन ने देशी चिकित्सकों को चिकित्सा में अपनी अपेक्षा अधिकतर सफलता प्राप्त करते हुए पाकर उन्होंने सहज पक्षपातशून्य हृदय से स्वीकार किया कि उनसे शिक्षा ग्रहण करनेमें मुझे कोई लज्जा नहीं। और उन्होंने उनके बतलाए हुए पौधे को अधिक परिमाण में एकत्रित करके उनकी जड़ का एक बड़ा गट्ठा मद्रास को भेजा। वस्तुतः यह हिन्दू मेटिरिया मेडिका (आयुर्वेदीय निघण्टु) का वह द्रव्य है जिसकी ओर अत्यन्त ध्यान देने की आवश्यकता है। (फ्लोरा इंडिका खं० २, पृष्ठ ३४, ३५)

ऐन्सली लिखते हैं —इसकी जड़ श्लेष्मनिस्सारक (कफघ्न) तथा स्वेदक प्रभाव के लिए अत्यन्त प्रशस्त है। इसका शीतकषाय (Infusion) आधे चाय की चम्मच की मात्रा में कफ पीड़ित बालकों को वमन कराने के लिए प्रायः प्रयोग किया जाता है। इपिकेक्वाइना के कुछ कुछ समान गुण रखने के कारण प्रवाहिका जन्य विकारों में यह लाभदायक औषध ज्ञात हुई और लोअर इंडिया के युरोपीय चिकित्सकों द्वारा समय समय पर इसका अत्यंत लाभदायक प्रयोग किया गया। (मेटिरिया मेडिका ऑफ़ इंडिया, २, पृ० ८३)

डॉक्टर मोहीदीन शरीफ़—इस देश के कालबेलियों (सपेरों) में यह सर्पदंश आदि के अगद होने के लिए बहुत प्रसिद्ध है। उनका कहना है कि जब नकुल को सर्प काट लेता है तो वह इसी पौधे की शरण लेता है। देशी लोग इसके वामक प्रभाव से परिचित हैं, किन्तु वे इसका बहुत कम उपयोग करते हैं। इस पौधे का कोई अंग बाज़ार में नहीं बिकता। उपयोग में लाने के लिए इसके एकत्रित करनेकी आवश्यकता होती है।

कांड एवं फली सहित उक्त पौधे का सर्वांग वामक है। परन्तु जड़ एवं पत्र केवल सर्वोत्तम ही नहीं, प्रत्युत उपयोग के लिए सरलतापूर्वक चूर्ण भी किए जा सकते हैं।

पुनः प्रवाहिका में तथा कएठ्य एवं स्वेदक रूप से इसको जड़ इपिकेकाइना की कहीं सर्वोत्तम प्रतिनिधि है।

चार वर्ष हुए जब मुझे कतिपय देशी दवाओं की आलोचना का अवसर प्राप्त हुआ, तब अन्तमूल के सम्बन्ध में मेरे विचार निम्न प्रकार थे।

वामक रूप से तथा अधिक मात्रा में प्रवाहिका की चिकित्सा में दोनों प्रकार से इपिकेकाइना को प्रतिनिधि स्वरूप में पाए जाने वाली एतद्देशीय औषधों में यह सर्वोत्तम है। २० से ४० ग्रेन (१० से २० रत्ती) इसका चूर्ण और इतनी ही बुंद की मात्रा में टिंक्चूरा ओपियाई २४ घंटों में दिन में तीन-चार बार सेवन कराने से यह उतना ही शीघ्र एवं सफलतापूर्वक रोग का निराकरण करता है जितना शीघ्रकि इपिकेकाइना। श्वास रोग में वामक या कएठ्य रूपमें भी इसका उपयोग इपिकेकाइना की अपेक्षा उत्तम रहता है।

सर्पदंश के अगद स्वरूप कोई अन्य औषध की अपेक्षा एमोनिया के बाद अन्तमूल पर मेरा अधिक विश्वास है। जब तक स्वतन्त्र वमन न आने लगें तब तक इसका ताजा रस अधिक मात्रा में थोड़ी थोड़ी देर पर देते रहें। इसके बाद सशक्त एवं सर्वांगिक उत्तेजक का व्यवहार करें।

देशी औषधों के अपने अधिक विशाल अनुभव के पश्चात् मैंने अन्तमूल को सर्वोत्तम ही नहीं, प्रत्युत भारतीय ४, ५ सर्वोत्कृष्ट वामक ओषधियों में एक पाया।

कतक (निर्मली) तथा मदनफल के पश्चात् इसका दर्जा आता है। यद्यपि इसका सर्वांश वामक है तथापि प्रवाहिका में केवल इसकी जड़ उत्तम रोगनिवारक कार्य करती है। उक्त रोग में इसका प्रभाव कतकवत् होता है। (स० फा० इं० पृ० ३६३)

डॉ० फिकंपत्रिक (Cat. of mysore drugs) में लिखते हैं—यदि प्रबल वमन की आवश्यकता हो तो २० से ३० ग्रेन की मात्रा में उक्त ओषधि को एक या आध ग्रेन टार्टर इमेटिक के साथ दें। मैं शुष्क पत्र का चूर्ण औषध रूप से व्यवहार करता हूँ।

कोंकड़ में १ से २ तो० तक रस वामक रूप से व्यवहार किया जाता है। शुष्क कर इसकी मूँग के बराबर वटिकाएँ प्रस्तुतकर भी प्रवाहिका में बरती जाती हैं। पर्याप्त मल प्रवर्तन हेतु एक गोली काफ़ी है। इंडियन फार्माकोपिया में इसका पत्र ऑफ़िशल है। (फा० इं० २ भा० पृ० ४३६)।

डा० नद्कार्णी प्रभाव में पत्र से जड़ श्रेष्ठ है। ये कोष्ठमृदुकर (Laxative) और प्रवाहिका में १५ ग्रेन की मात्रा में उत्तम औषध हैं। इनको साधारणतः चूर्ण रूप में किंचित् बब्बूर निर्यास तथा अफीम १ ग्रेन के साथ मिलाकर व्यवहार करते हैं। शिरोरोग एवं वात वेदना में शिर में इसकी जड़ का प्रलेप करते हैं। कास तथा अन्य उन शिरोविकारों में जिनमें साधारणतः इपिकेकाइना व्यवहृत होता है। यह अत्यन्त लाभदायक पाया गया है। अतीसार तथा प्रवाहिका की प्रथमावस्था में भी जब कि ज्वर विद्यमान हो इनको १० ग्रेन की मात्रा में १ आउंस जल के साथ तथा उसमें १ ड्राम कीकर का लुआब और आवश्यकतानुसार $\frac{1}{4}$ ग्रेन अफ़ीम मिलाकर दिया जा सकता है। यदि विषम अथवा मलेरिया ज्वर हो तो इसके साथ क्वीनीन (कुनैन) सम्मिलित कर देना चाहिए। श्वासोच्छ्वास विकार तथा कुकुरखाँसी (Whooping Cough) की प्राथमिक अवस्था में इसे ५ ग्रेन की मात्रा में दिन में तीन बार अकेले अथवा आधा ड्राम मुलेठी के शर्बत में आधा आउंस जल मिलाकर इसके साथ दिनमें तीन बार सेवन करें। यह रक्तशोधक तथा परिवर्तक रूप से अति प्रख्यात है और आमवात में इसका उपयोग किया जाता है। यह तिक्त सुगन्धित तथा उत्तेजक है। यह औपदंशीय आमवात में भी प्रयुक्त होता है। स्थानिक रूप से यह प्रशामक है और संधिवात जन्य वेदना निवारणार्थ प्रयोग में आता है। इं० मे० मे०।

श्वास, कास और प्रवाहिका में अन्तमूल के पत्ते के क्वाथ (१० में १) तथा इसकी जड़ के शीत-कषाय की परीक्षा की गई । उक्त रोगों में ये अत्यन्त लाभदायक पाए गए । (Ind. Drugs Report, Madras.)

यह औषध बंगाल फार्माकोपिया (१८४४) और फार्माकोपिया ऑफ इंडिया (१८६७) में प्रविष्ट है। विस्तार के लिये देखो-फार्माकोग्राफिया फकोजर महोदय रचित पृ० ४८७ ।

आर० एन० चोपरा—यह पौधा नीची एवं रेतीली भूमि में साधारण रूप से मिलता है। यह ओषधि देशी चिकित्सा में विस्तृत रूप से व्यवहार में आ चुकी है। इस लिए इसके पत्र एवं जड़ अत्युत्तम ख्याल की जाती हैं । इसके सूखे पत्तों को १० से २० ग्रेन की मात्रा में दिन में २-३ बार देने से कहा जाता है कि प्रवाहिका में उपयोगी है। पुरातन कास में कफघ्न रूप से भी यह लाभप्रद है। (इं० ड्र० इं० पृ० ६००)।

अन्तमोरा anta-morá-बं० मरोड़फली, आवर्तकी, आवर्तनी। (Helicteres Isora, Linn)। मुगश्रृङ्ग-गु०, सं० ।

अन्तर antara-हिं०, संज्ञा पुं० (१) एक कीड़ा जो बैलों को काटता है । -जय० (२) दूतर । अमृ० सा० ।

अन्तरङ्ग antaranga-कुम्भिका । -सं० भीतरी अंग । अथर्व० । सू० ७ । ८ । का० ६ ।

अन्तरगङ्गा,-ङ्गे antara-gangá,-ge-कना०, द० जलकुम्भी । (Pistia stratiotes, Linn.) मे० मो० ।

अन्तर तामर antara-támar-ते० जलकुम्भी। (Pistia stratiotes, Linn.) मेमो० । इं० मे० मे० ।

अन्तर नायनी antara.náyaní-सं० स्त्री० अन्तर वाहिनी । (Adductor).

अन्तर नायनी पेशी antara-náyaní-peshí
अन्तर वाहिनीपेशी antara-váhiní-peshí
सं० स्त्री० किसी अंग को मध्य रेखा की ओर ले जाने वाली पेशी (जैसे बाहुको वक्षकी ओर और एक जाँघ को दूसरी जाँघ की ओर ले जाने वाली)। एड्डक्टर (Adductor muscle)-इं० । अ़ज़लह् मुक़र्रिबह्-अ० ।

अन्तरपडत antara-paḍata-हिं० पुं० योनि का भीतरी पर्दा। बं० कल्प० ।

अन्तरपाचक antara-páchaka-सं० पुं० अन्तमूल (Tylophora asthamatica). इं० मे० मे० ।

अन्तरम् antaram-सं० क्ली० अवकाश । छिद्र । मध्य । मे० रत्रिक ।

अन्तरमुख antaramukha-हिं० पुं० जहाँ गर्भाशय की ग्रीवा तथा उसके अन्दर का भाग मिलता है उसको "अन्तरमुख" कहते हैं। बं० कल्प ।

अन्तर लसिका antara-lasiká-हिं० स्त्री० (Endolymph).

अन्तर वाहिनी antara-váhiní-सं० स्त्री० अन्तरनायनी । (Adductor).

अन्तर वाह्य कृमिनाशक antara-váhya-krimi-náshaka हिं० पु० ।

अन्तरा antará-हिं० पुं० चरण, मध्य, पद, निकट, बीच, बिना । (In the middle, among; near at hand; without, except) ।

अन्तरा ज्वर antará-jvara
अन्तरातप antarátapa
-हिं०संज्ञा पुं० (Tertian-fever) वह ज्वर जो बीच में एक एक दिन का अंतर देकर चढ़े । एकतरा ज्वर, अँतरिया बुख़ार, तिजारी बुख़ार । देखो—तृतीयकः ।

अन्तरात्मा antarátmá-हिं० पुं० जीवात्मा, प्राण । (The internal and spiritual part of man, the soul).

अन्तरापत्या antarápatyá-सं० स्त्री० गर्भिणी, गर्भवती । हामिलह्, हाबिलह्, हुब्ला -अ० । प्रेग्नेण्ट (Pregnant)-इं० ।

अन्तरामिषीयः antrámishíyah-सं० पुं० (Endomysium) मांसान्तरीय ।

अन्तराय antaráya–हिं० पुं० बाधा, विघ्न, रुकावट। (Obstruction.)

अन्तरायामः antaráyámah–सं० पुं० आक्षेपक भेद। एक रोग जिसमें वायु कोप से मनुष्य की आँखें, ठुड्डी और पसुली स्तब्ध हो जाती है और मुँह से आपही आप कफ गिरता है तथा दृष्टिभ्रम से तरह तरह के आकार दिखाई पड़ते हैं।

लक्षण—जब बलवान वायु अन्तरायाम को करती है तथा अङ्गुली, गुल्फ (पाँवकी गाँठ, गट्टा), पेट, हृदय, वक्षःस्थल और गलेमें रहने वाली वायु वेगवान होकर स्नायु समूह (नाड़ीसमुदाय) को भी कम्पित करती है तो उस समय उस मनुष्यकी आँखें पथरा जाती हैं, ठोड़ी जकड़ जाती है, पसलियों में टूटने की सी पीड़ा होती है। कफ का वमन करता और वह छाती से (आगे की ओर) कमान के समान नत हो जाता है। भा०। मा० नि०।

अन्तरालम् antarálam सं० पुं०
अन्तराल antarála हिं० संज्ञा पुं०
(१) अन्दर, अन्तर (Interspace)(२) घेरा, घिरा हुआ स्थान। आवृत्त स्थान। (Included space)। (३) बीच।

अन्तरावयव antarávayava–हिं० संज्ञा पुं० स्त्री की वस्ति का आभ्यंतरीय भाग जिसमें गर्भाशय तथा गर्भाशय के बंधन, स्त्री अण्ड, फलवाहिनी और योनिमार्ग का समावेश होता है। यं० कल्प०।

अन्तरिच्छ,-क्ष antarichchha,-ksha–हिं० संज्ञा पुं० आकाश (The sky, atmosphere)।

अन्तरित antarita–हिं० वि० भीतरी, आन्तरिक (Inward,internal.)।

अन्तरिया antariyá–हिं० स्त्री० तिजारी, तीसरे दिन जाड़ा देकर आने वाला ज्वर, अन्तरात (A tertian ague.)। देखो–तृतीयकः।

अन्तरि(री)क्षम् antari,-ri,-ksham–सं० क्ली० पृथ्वी और सूर्यादि लोकोंके बीचका स्थान। कोई दो ग्रहों वा तारों के बीच का शून्यस्थान। आकाश, गगन, शून्य, नभ, व्योम, अभ्र रोदसी। (The sky or atmosphere). रा० नि० व० १३।

अन्तरी antari–हिं० स्त्री० अन्त्र। (Intestines.)

अन्तरीप antaripa–हिं० संज्ञा पुं० (१) द्वीप, टापू। (२) A Promontory, cape) रास। पृथ्वी का वह नोकीला भाग जो समुद्र में दूर तक चला गया हो।

अन्तरीय antariya –सं० हिं० वि० बिचला,
अन्तः antah
भीतर का, अन्दर का, भीतरी, मध्य। (Inward, internal) जो चीज़ शरीर में मध्य रेखा की ओर रहती है उसके लिए छेदन शास्त्र की परिभाषा में अंतरीय या अंतः शब्द का प्रयोग होता है। इन्सी, अन्दरूनी –अ०।

अन्तर्मुखम् antarmukham–सं० क्ली० (१) व्रण विस्रावणास्त्र विशेष। अत्रि०। कुशपत्र और आटी मुख के समान अन्तर्मुखनामक शस्त्र स्राव के लिए उपयोग में लाया जाता है। इसका फल डेढ़ अंगुल होता है। (२) कुशाटा के सदृश ही एक अर्द्ध चन्द्रानन शस्त्र होता है, यह भी स्राव के निमित्त काम आता है।

अन्तर्मुखी antarmukhí–सं० स्त्री० स्त्री योनि रोग विशेष। च० चि०।

अन्तर्लसीका antarlasíká–सं० स्त्री० (Endolymph).

अन्तर्वत्नी antarvatní–सं० स्त्री० गर्भिणी, गर्भवती। (Pregnant)। अम०।

अन्तर्वमिः antarvamih–सं० स्त्री० अपरिपाक, अजीर्ण। (Dyspepsia) त्रिका०।

अन्तर्विद्रधिः antarvidradhih–सं० पुं० जठरांतरस्थ विद्रधि रोग।

निदान व लक्षण–भारी अन्न का भोजन करने से, असात्म्य (जो अपने को प्रतिकूल हो), विरुद्ध

भोजन, सूखाहुआ शाक और खट्टे पदार्थों को खाने से, अत्यंत मैथुन करने से, श्राम से, मल मूत्रादि वेगों को रोकने से, अत्यंत उष्ण पदार्थों से, दाहजनक पदार्थों से, अलग अलग अथवा सब एकत्र मिलकर कोपको प्राप्त हुए दोष गुदाके भीतर, वंक्षण संधियों के भीतर, कोखमें, बगल में, प्लीहा और यकृत में, हृदय में अथवा तृषा लगने के स्थान के भीतर साँप की बाँबी और ऊँचे गुल्म के समान विद्रधि उत्पन्न करते हैं। इन विद्रधियों के लक्षण बाहर की विद्रधियों के समान जानना चाहिए। भा० म० २। विद्रधिः

अन्तर्वृद्धिः antarvriddhih--सं० पु० अंत्रवृद्धि रोग, आँत उतरनेका रोग। (Hernia).

अन्तर्वेधः antarvedhah--सं० पु० मर्मभेद, मर्म्म पीड़ा। (Serious Pain.)

अन्तल antala--कना० रीठा। (Sapindus Trifoliatus) फा० इं० १ भा०।

अन्तलीस antalís--यु० एक बूटी है जो वृक्ष तथा घास के मध्य होती है। इसके पत्ते मसूर के पत्तों के समान होते हैं और इसकी शाखाएँ अत्यंत खुरदरी और एक बालिश्त के बराबर होती हैं। (A plant.)

अन्तशय्या antaṣhayyá--सं० स्त्री० मरण, मृत्यु। (Dying, death). मे०। (२) मृत्युशय्या, मरण खाट, भूमिशय्या। (३) श्मशान, मसान, मरघट।

अन्तश्श्रोत्रम् antaṣhṣhrotram--सं० क्ली० अंतःस्थकर्ण। (Internal ear.)

अन्तश्श्रोत्रमार्गः antaṣhṣhrotra-márgah--सं० पु० (Internal Acoustic Meatus) अंतःस्थकर्ण सुरंगा। कर्णान्तरनाली।

अन्तश्श्रोत्रमार्गद्वारम् antaṣhṣhrotra-márga-dwáram--सं० क्ली० (Porus Acousticus Internus). कर्णान्तर द्वार।

अन्तस्तल antastala } -सं० हिं० पु० भीतरी
अन्तस्थल antasthala } भाग। भीतरीतल। (Endplates, Internal Surface).

अन्तस्त्वक् antastvak--सं० पु० (१)अन्तरकला (Epithelium)। (२) अधःत्वक् (वृक्ष)।

अन्तस्नेहफला auta-sneha-phalá-सं० स्त्री० श्वेत कंटकारी, सफेद भटकटाई, श्वेत कंटकारिका (री), श्वेत कंटारिका।

अन्तस्सुषिर antassushira--सं० पु० भीतरी छिद्र। (Hollow).

अन्तामरा antámará--बं० मरोड़फली, मरोड़ी, अइता-गों०, हिं०। (Helicteres Isora, Linn.) इं० मे० प्लां०।

अन्तावसायी (इन्) antávasáyí--सं० पु० (१)नापित, नाई, हज्जाम। (A Barber, a shaver) मे०। (२) हिंसक। चांडाल।

अन्तिक antika --हिं० पु० समीप, पास।

अन्तिका antiká--सं० स्त्री० (१) सातला, सीकाकाई (Acacia concinna, D. C.)। (२) चुल्लि। मे० कत्रिकं।

अन्तिम antima--हिं० वि० [सं०](Final, ultimate) जो अंत में हो, आख़िरी। सबसे पिछला, सबसे पीछे का। (२) चरम। सबसे बढ़के।

अन्तुलह् antulah--अंदलुसी० एक बूटी है। यह दो प्रकार की होती है। (१) अंतुलहे बैज़ाअ् तथा (२) अंतुलहे सौदाअ्।

अन्तुलहे बैज़ाअ् antulahe-baizáa--अंदलुसी० साधारण इन्दुलसी (Spainish) लोग इसको भी फ़हीक़ कहते हैं। इसके पत्ते सनाय के पत्तों के समान होते हैं, गंध तीक्ष्ण, सुगंधियुक्त और स्वाद मधुर होता है। इसके पत्ते उपयोग में आते हैं। ये समस्त विषों के अगद हैं। यह बूटी इंदुलस (Spain), चीन, तिब्बत और भारतवर्ष के पर्वतों में उत्पन्न होती है।

अन्तुलहे सौदाअ् antulahe-soudáa--अंदलुसी० इसको जदवार, इंदुलसी (Spainish)

में फड़ीक और हिन्दी मे निर्विसी कहते हैं। इसके मूल शाखा में शाखा युक्त और बड़े होते हैं। पत्र मकोपत्र सदृश, किंतु रक्त आभायुक्त होते हैं। किसी किसी के मतानुसार हंसराज के पत्तों के समान होते हैं। स्वाद–तिक्त।

अन्तू-कल-डुम्बो antú-kala-dumbo–ता० दोपातालता (Ipomaea biloba, *Forsk.*)। फा० इं० २ भा०।

अन्तोमूल antomúla–बं० अन्तमूल। (Tylophora Asthamatica-)

अन्तरीय उदरच्छदा antaríya-udarachchhadá–हिं० स्त्री० (Transversalis Abdominis) अन्तः उदरच्छदा।

अन्तरीय जननेन्द्रिय antaríya-jananedriya–हिं० संज्ञा स्त्री० (Internal organ of generation) वह जननेन्द्रिय जो वस्ति गह्वर के भीतर रहती है और इस कारण बाहर से दिखाई नहीं देती जैसे शुक्राशय, शुक्रप्रणाली, प्रोस्टेट, शिश्नमूल ग्रंथि।

अन्तरीय नाड़ी-कोष antaríya-nárí-kosha–हिं० संज्ञा पुं० (Internal capsule)

अन्तरीय पटल antaríya-paṭala–हिं० संज्ञा पुं० भीतरी परदा। (Inner coat)

अन्तरीय पटल शोथ antaríyapaṭala-shotha–हिं० संज्ञा पुं० (Choroiditis) नेत्र के भीतरी परदे की सूजन।

अन्तरीय पृष्ठ antaríya-prishṭha–हिं० पुं० भीतरी पृष्ठ, अन्तस्तल। (Internal surface).

अन्तरीक्ष antaríksha–हिं० पुं० आकाश। (The sky or atmosphere)

अन्तरीक्ष जलम् antaríksha-jalam
अन्तरिक्ष जलम् antariksha-jalam
–सं० क्ली० आकाशजल, गगनाम्बु, गगनोदक, नीहारजल, वर्षा (वृष्टि) जल। (Rain water.)

अन्तरुहा anta-ruhá–सं० स्त्री० श्वेत दूर्वा, सफेद दूब। See–shveta-dúrvvá.

अन्तरोत्पादक antarotpádaka–हिं०(Entoderm)

अन्तर्गत antargata–हिं० पुं० (In the midst.) भीतरी। शामिल, अन्तर्भूत।

अन्तर्गति antargati–हिं०स्त्री० (Inward Sensations) मन की तरङ्ग। (Forgotten.) विस्मरण।

अन्तर्जङ्घास्थि antarjanghásthi–हिं०स्त्री० Shin-bone (Tibia) जङ्घास्थि, टाँग की दो अस्थियों में से अङ्गुष्ठ (शरीर की मध्यरेखा के निकट) की ओर की अस्थि। क़स्बहे कुब्रा, अङ्-मुल् क़स् वत्–अ०।

अन्तर्जठरम् antarjaṭharam–सं० क्लो० कोष्ठ, कोठा। कुक्षिमध्य, कोख। अम०।

अन्तर्जानु महराब antarjánu-maharába–हिं० पुं० (Inner condylar notch) घुटनों के अन्तरीय हड्डी की महराब।

अन्तर्दधनम् antar-dadhanam–सं० क्लो० सुराबीज, किण्वक। येस्ट Yeast–इं०। श० च०।

अन्तर्दाहः antardáhah–सं० (हिं०) पुं० (१) शरीराभ्यान्तरदाह। शरीर के भीतर दाह होना, छाती की जलन, कोष्ठ संताप, कोठे के भीतर की जलन। रा० नि० व० २०। (२) सन्निपात ज्वर विशेष।

लक्षण—जिस सन्निपात ज्वर में मनुष्य शरीर के भीतर दाह हो, ऊपर से शीत लगे, सूजन, बेचैनी, श्वास और सम्पूर्ण शरीर जला सा हो जाए उसे "अन्तर्दाह" सन्निपात ज्वर से पीड़ित जानना चाहिए। भा० म० १ भा०।

अन्तर्द्वार antar-dvára–हिं० पुं० भीतरी दरवाजा (केवाड़)। (A private door)

अन्तर्धर्मा antardharmá–सं० स्त्री० (Endoderm or Hypoblast.) अन्त-र्बलिष्टा।

अन्तर्धूमः antardhúmah–सं० त्रि० मुख बँधे हुए हंडिका के भीतर अग्नि जलाने से उत्पन्न हुआ धूम। च० द० ग्रहणी चि० चित्रकक्षार।

अन्तर्पट antarpaṭa–हिं० पुं० ओट, आड़, टट्टी, पर्दा। (A curtain, a skreen.)

अन्तर्बलिष्टा antarbalishṭá–सं० स्त्री० (Endoderm or Hypoblast.) अन्तर्धर्मा।

अन्तर्बेल antarbela–कों० अकासबेल (Cuscuta Reflexa.)।

अन्तर्भूत antarbhúta–हिं० वि० [सं०] मध्यगत, मध्य में स्थापित। (In the midst.) अन्तर्गत। शामिल। -संज्ञा पुं० जीवात्मा। जीव।

अन्तर्मणिक antarmaṇika—हिं० पुं० (Styloid process of ulna.) अन्तः प्रकोष्ठास्थि के शिर के पासका एक छोटा नोकीला उभार जो अंगुली से टटोल कर मालूम किया जा सकता है।

अन्तर्मलः antarmalah–सं० पुं० (१) मलांत वृक्ष, अन्तमूल। कश्चिदत्रिः। See–Antamúla। (२) भीतर का मल। पेट के भीतर का मैला।

अन्तर्महानादः antarmahá-nádah–सं० पुं० शङ्ख। (A Conch.).

अन्तर्मुखी antarmukhí–सं० स्त्री० योनिरोग विशेष। यदि स्त्री बहुत भोजन करके विषम रीतिसे बैठ कर पुरुषसेवन में प्रवृत्त हो तो वायु भुक्त अन्नसे प्रपीडित होकर योनि के स्रोत में अवस्थित होकर योनि के मुख को टेढ़ा कर देता है। ऐसा होने से योनिकी हड्डी और मांसमें घोर वेदना होने लगती है। इस रोग का नाम अन्तर्मुखी योनि व्यापत् है। वा० उ० अ० ३३।

अन्तर्लोहिता antarlohitá–सं० स्त्री० ऐसा रोगी जिसके भीतर रुधिर भर जाने से हाथ पाँव श्वास और मुख ठंडे हो गए हों, आखोंमें ललाई, देह में पांडु वर्णता और अफरा भी हो तो उसे अन्तर्लोहिता कहते हैं। यह सदा दुश्चिकित्स्य होती है। वा० उत्तर० अ० २६।

अन्तः उदरच्छदा पेशी antah-udarachchhadá-peshí–सं० स्त्री० उदरच्छदा अन्तःस्था। (Transveralis Abdominis).

अन्तः उपाङ्गीया antah-upángíyá-सं० स्त्री० (Internal angular artery). धमनी विशेष।

अन्तः अंस नाड़ी antah-ansa-nárí–हिं० स्त्री० कंधे की भीतरी नाड़ी। (Deep nerve of the shoulder.

अन्तः कण्ठगाशिरा antah-kaṇṭhagáṣhirá हिं० स्त्री० (Internal jugular vein) गले की अन्दर वाली अशुद्ध रक्त नाली।

अन्तः कण्ठशल्यावलोकिनी antah-kaṇṭhaṣhalyávalokiní–सं० स्त्री० नाड़ी यंत्र विशेष। यह दश अंगुल परिमाण की होती है। अत्रिः।

अन्तः करणम् antah-karaṇam-सं० क्ली० (१) अन्तरिन्द्रिय, भीतरी अवयव, हृदय, मन, अन्तरात्मा। (२) भीतरी चार इन्द्रियाँ (बुद्धि अहंकार, चित्त और मन) अन्तः करण अर्थात् भीतर के ४ औज़ार कहलाती हैं। (The understanding, the heart, the will, the conscience, the soul.) देखो–अंतः करण।

अन्तः करतली नाड़ी antah-kartalí-nárí–हिं० स्त्री० (Deeper nerve. of hand.) हथेली की गहरी नस।

अन्तः कर्त्तनक antah-karttanaka–हिं० संज्ञा पुं० कर्त्तनक दंतोंमें से भीतरी दाँत, अंतः छेदक दन्त। (First molar.)

अन्तः कुटिलः antah-kuṭilah–सं० पुं० (The conch shell) शंख। शांक-बं०। See–shankha.

अन्तः कूर्परिका धमनी antah-kúrpariká-dhamaní–सं० स्त्री० (Medial cubital). तन्नामक धमनी विशेष।

अन्तः कूर्परिका शिरा antah-kúrpariká-shira–सं० स्त्री० तन्नामक शिरा विशेष,

अन्तः कोटरपुष्पी,-ष्पिका antah-koṭara pushpí, shpiká–सं० स्त्री० नील वृक्षा, छगलांत्री–सं०। छागलबेंटे–बं०। प० मु०। रत्ना०। देखो-छगलांत्री (Chhagalántrí).

अन्तः जानु पिण्ड antah jánu-pinda–हिं० पुं० (Inner tuberosity) घुटनों पर जंघास्थि का मोटा उभार।

अन्तः जंघासा की आंतरिक शाखा antah-janghásá–kí–ántarika–ṣhákhá–सं० स्त्री० (Deep tibial nerve, inner branch) पैरकी नाड़ी की भीतर की शाखा।

अन्तः जंघासा की बाह्य शाखा antah-janghásá-kí-váhya-ṣhákhá—हिं० स्त्री० (Deep tibial nerve outer branch) पैर की नाड़ी की बाहरी शाखा।

अन्तः जंघासा नाड़ी antah-janghásá—nárí-हिं० स्त्री० (Deep tibial nerve) टखने (पैर) की गहरी नस।

अन्तः जंघासा पेशी antah-janghásá-peṣhí–हिं० स्त्री० (Inner part of the soleus muscle) टखने की अन्दर की पेशी।

अन्तः जंघास्थि antah-janghásthi–हिं० स्त्री० (Tibia) टखने की अन्दर की हड्डी।

अन्तः जंघीया धमनी antah-janghíyá-dhamaní–हिं० स्त्री० (Inner artery of the thigh) जाँघ के अंदर वाली धमनी।

अन्तः जंघीया नाड़ी antah-janghíyá-nárí–हिं० स्त्री० (Deep nerve of the thigh.) जांघ के अन्दर की नाड़ी।

अन्तः जंघीया शिरा antah-janghíyá-ṣhirá–हिं० स्त्री० (Internal saphenous vein) जाँघ के अन्दर वाली अशुद्ध रुधिर की नली।

अन्तःत्रिपार्श्विका antah-tripárṣhviká–हिं० संज्ञा स्त्री० (Internal or first cuneiform) कूर्चास्थियों में से एक (प्रथमा) त्रिपार्श्विक अस्थि विशेष।

अन्तः पटल antah-paṭala–हिं० पुं० (Retina) नेत्र का जालदार परदा। शबक़ियह्, तबक़हे शब्क़ियह्–अ०।

अन्तः पदवी antah-padaví–सं० स्त्री० सुषुम्ना नाड़ी। (Spinal cord). वं० श०।

अन्त पाती antah-pátí–हिं० वि० (Medial) बीच वाला, मध्यवर्ती, अन्तर्गत।

अन्तः पादतलिकी धमनी antah-pádata-likí-dhamaní–सं० स्त्री० धमनी विशेष।

अन्तः पूणुकः antah-púṇukah–सं० पुं० (Endoneurium).

अन्तः प्रकोष्ट चालिनी नाड़ियाँ antah-p-rakoshṭa--chálimí---náriyán–हिं० स्त्री० (ब० व०) (Deep nerves of the lower arm) अग्रबाहु (हाथ) के अन्दर की नाड़ियाँ।

अन्तः प्रकोष्ठास्थि antah-prakoshṭhá-sthi–सं० स्त्री० दोनों प्रकोष्ठास्थियों में से कनिष्ठा की ओर की अस्थि। (Ulna)

अन्तः प्रकोष्ठिका धमनी antah-prakoshṭhiká-dhamaní–सं० स्त्री० (Ulnar artery) अग्रबाहु (हाथ) की अन्दर वाली रुधिर नाली।

अन्तः प्रकोष्ठ (-ष्ठिका) नाड़ी antah-prakoshṭha-nárí–हिं० संज्ञा स्त्री०, (Ulnar nerve). भीतरी प्रकोष्ठ नाड़ी।

अन्तः प्रकोष्ठिकाशिरा antah-prakoshth-iká-shirá-सं० स्त्री० (Basilic vein). शिरा विशेष ।

अन्तः प्रगण्ड चालिनी antah-pragaṇḍa--cháliní-हिं० स्त्री० (Deep nerves of the upper arm) भुजा को अन्दर की नाड़ियाँ ।

अन्तः प्रगण्डीया शिरा antah-pragaṇḍ-íyá-shirá-सं० स्त्री० शिरा विशेष ।

अन्तः प्रविष्ठ योनि antah-pravishṭha-yoni-सं० स्त्री० वह योनि जो भीतरकी तरफ चली गई हो ।

अन्तः प्राचीर antah-práchíra-सं० (हिं० संज्ञा) पुं० (Inner wall) भीतरी दीवार ।

अन्तः फल antah-phala-हिं० संज्ञा स्त्री० अण्ड, आण्ड-हिं० । ओवरी(Ovary)-इं० । यह गर्भाशय के प्रत्येक बाजू (बगल) में एक एक पृथुबन्ध के बीचमें स्थित बादाम की आकृति के स्त्री अंड को कहते हैं । इनकी लम्बाई आधइञ्च चौड़ाई ½ इञ्च और मुटाई आधा इञ्च होती है। बं० कलप० । देखो-डिम्बाशय ।

अन्तः शरीर antah-sharíra-हिं०पुं०आत्मा, चिदात्मा। (The internal & Spiritual part of man, the conscience, the soul).

अन्तःशिरोधीया धमनी antah-shirodhí-yá-dhamaní-सं० स्त्री० (Internal carotid artery) तन्नामक धमनी विशेष ।

अन्तःश्रोणिगाधमनी antahshroṇigá-dha-maní-सं० स्त्री० (Internal iliac artery, Hypogastric) पेड़के आंतरिक अंगों को पोषण करने वाली धमनी ।

अन्तः श्रोणिगा शिरा antah-shronigá-shirá-सं०स्त्री० वस्ति देश की शिरा । (Internal iliac vein, Hypogastric vein)

अन्तःश्रोत्र धमनी antahshrotra-dhamaní-सं० स्त्री० (Internal Auditory artery.) अन्तःस्थकर्ण धमनी ।

अन्तःश्रोत्रम् antahshrotram-सं० क्ली० अन्तःस्थकर्ण । अंतर्कर्ण। (Internal ear).

अन्तःश्रोधीयाशिरा antah-shrodhíyá-shirá-सं० स्त्री० शिरा विशेष ।

अन्तः श्वसनम् antah-shvasanam-सं० क्ली० निःश्वास, श्वास लेना, उच्छ्वास, अंतर्मुख श्वास । (Inspiration) । वायु का नासिका में से होकर फुप्फुसों के भीतर प्रवेश करना (इससे छाती फैल कर पहिले से बड़ी हो जाती है) ।

जवान मनुष्य एक मिनट में १६-१७ श्वास लिया करता है ।

अन्तः श्वेत antahshveta-हिं० पुं० हाथी, गज । (An elephant).

अन्तः सत्त्वा antah-sattvá-सं० स्त्री०, हिं० संज्ञा पुं० (१) (Somecarpus anacardium) भल्लातक वृक्ष, भिलावें का पेड़ । -हिं० वि० गर्भिणी, गर्भवती । (A pregnant female) श० च० ।

अन्तः सुषुम्ना शोथ antah-sushumná-shotha-हिं०संज्ञा पुं०(Polio-myelites)

अन्तः स्तनीया antah-staníyá-सं० स्त्री० स्तन को पोषण करने वाली । (Internal mammary artery).

अन्तः स्थकर्ण antah-sthakarṇa-हिं०पुं० (Internal ear) गहन, अंतः कर्ण ।

अन्तः क्षेप antah-kshepa-हिं० संज्ञा पुं० [सं०अन्तः+क्षिप् फेंकना] (Injection) इञ्जेक्शन। इसका शाब्दिक अर्थ 'भीतर फेंकना' है । परन्तु अर्वाचीन वैद्यकीय परिभाषा में किसी तरल द्रव्य का शरीर के किसी भाग के भीतर सूचीवेध (इंजेक्शन सिरिञ्ज) द्वारा अथवा तद्वत् किसी अन्य यंत्र द्वारा प्रविष्ट करना (सूचिकाभरण) अन्तःक्षेप कहलाता है । सूचिवेध । सूचिकाभरण । इञ्जे-अ० । देखो—सूचिवेध ।

अन्त्य antya-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] शेष का, नीच, अधम जाति, जघन्य। A shúdra or man of the fourth tribe।

वि० अंत का। अंतिम। आखिरी। सब से पिछला।

अन्त्यकोष्टकः antya-koshṭakah-सं०पुं० (Terminal Ventircle) आखिरी कोष्ठ।

अन्त्यगण्डुः antya-ganḍuh-सं०पुं० (Terminal Ganglion) अंतिम गण्ड।

अन्त्यतन्तुः antya-tantuh-सं० पुं०

अन्त्यपुष्पा antya-pushpá-सं० स्त्री० धातकी वृक्ष, धव का पेड़। (Anogeissus latifolia) वै० निघ०।

अन्त्यफलकम् antya-phalakam-सं०क्ली० (Motor end-plate)

अन्त्याङ्गम् antyángam-सं०पुं० अंतके यंत्र। (End organ).

अन्त्यः antyah-सं०पुं० मुस्ता, मोथा। (Cyperus rotundus)।

अन्त्रम् antram-सं० क्ली० } प्राणियोंके पेट
अन्त्र antra-हिं० संज्ञा पुं० } के भीतर की वह लम्बी नली जो गुदा मार्ग तक रहती है। खाया हुआ पदार्थ पेट में कुछ पच कर फिर इस नली में जाता है और मल वा रद्दी पदार्थ बाहर निकाला जाता है। मनुष्य की आँत उसके डील से पाँच व छः गुनी लम्बी होती है।

पर्य्याय—पुरीतत् (रा० नि० व० १८), आंत्र-सं०। अँतड़ी, अंत्र, आँत, रोधा, अंत्री -हिं०। मिआअ् (ए० व०), अम्आअ् (ब० व०), मसार्‌ (ए० व०), मस्‌रीन (ब० व०)-अ०। इन्टेस्टाइन Intestine (ए० व०), इन्टेस्टाइन्ज़ Intestines (ब० व०); बॉवेल Bowel (ए० व०), बॉवेल्ज़ Bowels (ब० व०)-इं०।

नोट—आकार तथा परिमाण के अनुसार आँतें दो प्रकार की होती हैं—

(१) छोटी और (२) बड़ी। पुनः इनमें से प्रत्येक के ३-३ भेद होते हैं। देखो-क्षुद्रांत्र व बृहदांत्र।

अन्त्रअन्योन्यानुप्रविष्ट antra-anyonyánupravishṭa-हिं० संज्ञा पुं० आँत का एक भाग से दूसरे भाग में उतर जाना। इस विकार में ऊपर के आँत्र का भाग, अधःस्थित आंत्र भाग के पोले स्थान में घुस जाता है। आंत्र के उस भाग को जो प्रवेश करता है प्रवेशक (Intussusceptum) और जिस आंत्र के पोले स्थान में वह प्रविष्ट होता है उसको ग्राहक (Intussuscipiens) कहते हैं। आन्त्रान्त्र प्रवेश।

पर्य्याय—आँतों में बल पड़ना, आंतों में गिरह पड़ जाना। इल्तिवाउल्अम्आअ्, इल्तिवाउल् अम्आअ्, एलाऊस, कोलञ्ज इल्तिवाई, मग़्स रब्व इह्'म, इन्गिमादुल् अम्आअ्, तग़म्मदुल् अम्आअ्-अ०। इन्टस् सप्शन (Intussusception , ईलियस Ileus, वॉलव्युलस Volvulus, इनवैजिनेशन Invagination-इं०।

पर्य्याय-निर्णायक नोट—एलाऊस वस्तुतः यूनानी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ बलखाना वा आवर्त्तन है। एलोपैथिक परिभाषा में इन्टस्सप्शन तथा वॉलव्युलस सामान्यतः स्थूल एवं क्षुद्र दोनों प्रकार की आँतों के व्यावर्त्तन के लिए प्रयोग में आते हैं। परन्तु, ईलियस मुख्यतः केवल ऊर्ध्व क्षुद्रांत के आवर्त्तन के लिए प्रयुक्त होता है।

उक्त अन्त्रान्त्रप्रवेशन की क्रिया लघ्वान्त्र और स्थूलान्त्र की सन्धि स्थान में हुआ करती हैं। लघ्वान्त्र का भाग स्थूलांत्र के भीतर कभी कभी इतने वेग से प्रविष्ट हो जाता है या खिंचा हुआ चला जाता है कि उसके परत एकदम गुदद्वार के मुख तक पहुँच जाते हैं। कभी कभी लघ्वांत्र का एक भाग उसी के अन्य भाग में प्रविष्ट हो जाता है, इस प्रकार को लघ्वांत्रिक (Enteric) कहते हैं। और कभी कभी

स्थूलांत्र का एक भाग उसी के अन्य भाग में प्रविष्ट होजाता है, इसे स्थूलांत्रिक(Colica) कहते हैं। ५० प्रतिशत से भी अधिक रोगियों में अधर क्षुद्रांत्र और अंत्रपुट को बृहदांत्र में प्रविष्ट होते हुए देखा गया है। इस प्रकार की अंत्रप्रवेशन क्रिया को अधःक्षुद्रांत्रपुटिक (Ileocaecalis) कहते हैं। इसीप्रकार अधर क्षुद्रांत्र, उत्तर क्षुद्रांत्र तथा द्वादशांगुलांत्र का भी व्यावर्त्तन होता है। किसी किसी में अधर क्षुद्रांत्र अपने एक अन्य भाग में प्रविष्ट होकर अधरक्षुद्रांत्रपुटिक कपाट से गुज़र कर बृहदांत्र में पहुँच जाती है। इसको अधरक्षुद्रबृहदांत्रिक (Ileocolica) कहते हैं।

निदान

आंत्र प्रदाह, आंत्र क्षत तथा आंत्रस्थ मांसार्बुद के कारण आंत्रावरोध होना, आंत्र के ऊर्ध्व भाग का अधःभाग में उतर जाना और अंत्रवृद्धि में आंत्रावरोध का हो जाना प्रभृति।

लक्षण

तीव्र, आशुकारी, आंत्रांत्रप्रवेशजन्य आंत्रावरोध विशेषकर छोटे बच्चों में पाया जाता है। इसके कारण बच्चों को कभी कभी आक्षेप होता होता है। रोगी का सख्त मलावरोध होता है, बार बार वमन आता है, अंततः वमन में मल विसर्जित होने लगता है जो इस रोग का एक नैदानिक लक्षण है। उदरशूल होता है और उदराध्मान द्वारा वह फूलकर ढोलवत् हो जाता है। रक्त और श्लेष्मा मिश्रित मल निकलता, रोगी अत्यधिक कँखता रहता और बलक्षय आदि लक्षण होते हैं। बलक्षय से बालक २४ घंटे में गत प्राण हो जाता है। यदि उक्त अवधि के भीतर गत प्राण न हो तो उदरककलाप्रदाह के लक्षण (श्वास, हिक्का, तीव्र ज्वर, हृदय की त्वरित गति इत्यादि)होते हैं। विकारी स्थल एक उभार सा मालूम होता है। रोगी अत्यंत तड़फड़ाता है और बड़े कष्ट से प्राण निकलते हैं।

रोग विनिश्चय

बाल्यकाल एवं अत्युग्र अंत्रअन्योन्यानुप्रविष्ट की दशा में प्रागुक्त लक्षणों को भली प्रकार देखने से सरलतापूर्वक इसका निदान हो जाता है। परंतु कतिपय अति पुरातन दशाओं में, जो प्रौढ़ावस्था में होता है, इसका निदान करना सर्वथा सरल नहीं। इसका स्वरूप चिरकारी आंत्रावरोध जैसा ही व्यक्त होता है। उदर को चीरकर देखने पर ही इसका वास्तविक रूप समझ में आ सकता है।

चिकित्सा

इस रोग में कदापि विरेचन न देना चाहिए। बल्कि प्रारम्भ में जब शूल, आध्मान और अधिक बलक्षय हो तब उष्ण जल, तैल वा तैल व पतले मंड की बस्ति देनी चाहिए अथवा धौंकनी द्वारा आंतों में वायु प्रविष्ट कराना या रोगी को उलटा करके बलपूर्वक हिलाना उपयोगी होता है। परंतु, जब वेदना व आध्मान अत्यधिक हों और बलक्षय एवं निर्बलता असीम हो उस समय सिवा शल्यक्रिया अर्थात् चीर फाड़की चिकित्साके और कोई उपाय नहीं। अस्तु, जितनाशीघ्र ऑपरेशन किया जाए उतना ही अच्छा हो। परंतु इसे कोई दक्ष शल्यशास्त्री ही कर सकता है।

नोट—बस्तिदान काल में सेर सवासेर उष्ण जल बस्तियंत्र की नली द्वारा अंत्र में दूर तक पहुँचाना चाहिए। जल बाहर निकल आने पर उदर को नीचे से ऊपर की ओर धीरे धीरे मलना चाहिए। यदि रोगी को उलटा कर हिलाना हो तो पहिले उसको ईथर वा क्लोरोफॉर्म सुँघाकर विसंज्ञ कर लेना चाहिए।

आयुर्वेद के अनुसार उदावर्त रोगाधिकारमें वर्णित चिकित्सा,कुछ अंशमें, इसरोग के प्रतीकारार्थ सफलीभूत हो सकती है। अस्तु, खूब सोच समझ कर तदनुसार कोई औषध की व्यवस्था करने से रोगी लाभ अनुभव करता है और वह चीर फाड़ के बखेड़े से बच जाता है। किंतु दवा का प्रबंध यथासम्भव शीघ्र ही करना चाहिए।

प्राचीन यूनानी चिकित्सकों ने चूँकि इसके वास्तविक रूप को समझने में धोखा खाया; अतएव उन्होंने इसकी चिकित्सा अवरोध जन्य

उदरशूल के समान लिखी है। उदाहरणार्थ–विरेचन का प्रयोग और वस्तिदान या पेट पर शृङ्गी (सींघिया) लगाना आदि। परंतु जैसा कि वर्णन हुआ इस रोग में विरेचन देना अत्यंत हानिकारक है। इसलिए प्राक्कथित डॉक्टरी चिकित्सा की ही शरण लेनी चाहिए।

पथ्य—रोगी को थोड़ा, स्निग्ध एवं उष्ण और पतला आहार दें। दूध में सोडावाटर मिला कर या दूध में अंडे फेंटकर या पतला साग, अरारूट, यख़नी (मांसरस) अथवा शोरबा प्रभृति थोड़ी थोड़ी मात्रा में तीन–तीन चार–चार घंटे बाद दें। यदि इतने पर भी न पचे तो पोषक वस्ति द्वारा रोगी का पोषण करें।

अन्त्रकणिका antra-kaniká-सं० स्त्री० गेंदा, पद्मचारिणी। (Tagetes Erecta).

अन्त्रकूजः antrakújah–सं० पुं० वायुरोग विशेष। नाड़ी शब्द। (Rumble) सु० नि० १ अ० १६ श्लो०।

अन्त्रकूजनम् antra-kújanam–सं० क्ली० (Rumble) आंत्रध्वनि, आँतोंका शब्द, पेट में गुड़ गुड़ (गड़गड़) आदि शब्द होना, आँतों की गुड़गुड़ाहट, अंतड़ियों की कुड़कुड़ाहट।

अन्त्रच्छदा कला antrachchhadá-kalá –हिं० संज्ञा स्त्री० (Omentum)-अंत्रच्छदाकला।

अन्त्रताम्रा antra-támrá–सं० स्त्री० गेंदा, पद्मचारिणी। (Tagetes Erecta).

अन्त्रधारक कला antra-dháraka-kalá–हिं० संज्ञा स्त्री० उदरच्छदा कला का वह भाग जो आँत को पृष्ठवंश के साथ बाँधता है। मेसेण्टरी Mesentery–इं०। मासारीक़ा-अ०। देखो–मासारीक़ा।

अन्त्र परिशिष्ट antra-prishishta–सं० हिं० पुं० उपांत्र (Appendix), वृहत् अंत्रके आरंभिक थैली जैसे भाग (अंत्रपुट) में दो तीन इञ्च लम्बी एक पतली नली लगी रहती है, उस नली को उपांत्र या अंत्रपरिशिष्ट कहते हैं। उपांत्र का क्या विशेष काम है यह अभी किसी को ठीक तौर से मालूम नहीं। सब मनुष्यों में इसकी लम्बाई एक ही जैसी नहीं होती; किसी में यह ½ इञ्च से अधिक लम्बी नहीं होती किसी में ८ इञ्च लम्बी भी होती है। इस नली का कभी कभी प्रदाह हो जाता है; और फोड़ा भी बन जाता है तब इसको काटकर निकाल देनेकी आवश्यकता होती है। देखो—उपांत्र।

अन्त्रपाचम् antra-pácham-सं० क्ली० स्थावर विषांतर्गत त्वक् (छाल) और सार तथा निर्यास (गोंद) विष विशेष। सु० कल्प० २ अ० श्लो० ७।

अन्त्रपुच्छ antra-puchchha-हिं० संज्ञा पुं० (Appendix) अन्त्रपरिशिष्ट।

अन्त्रपुट antra-puta–हिं० संज्ञा पुं० सीकम् Caecum–इं०। (मिआअ्) अअ्वर–अ०। रोदहे चहारम्, रोदहे कोर, कानी आँत–उ०।

चतुर्थ आँत, यह वृहद् अंत्र में की वह आँत है जो अधरक्षुद्रांत्र के बाद थैली की शकल में स्थित होती है। आँतों के विरुद्ध दो मार्गों के स्थान में इसमें केवल एक ही मार्ग होता है। इसीलिए अरबी में इसको अअ्वर अर्थात् एक चक्षु या कानी आँत कहते हैं। अन्त्रवृद्धि में प्रायः यही आँत अंडकोषों में उतर आती है; क्योंकि अन्य आँतों के समान यह बंधक सूत्रों द्वारा बँधी नहीं होती।

अन्त्ररुत्सेचनापः antra-rutsechanápah –सं० पुं० सैंड़ाधावरोधक, पचननिवारक। (Antiseptic.)

अन्त्रवचा antravachá–सं० हिं० स्त्री० चोबचीनी (Smilax glabra, Roxb.)

अन्त्रवल्लिका antra-vallika–सं० स्त्री० महिषवल्ली। रा० नि० व० ६।

अन्त्रवल्ली antravallí–सं० स्त्री० सोमवल्ली लता। वै० श०।

अन्त्रविद्रधि antravidradhi–सं० हिं० स्त्री० उपांत्र प्रदाह, (Appendicitis)

अन्त्रवृद्धि antra-vriddhi-हिं० संज्ञा स्त्री०
अन्त्रवृद्धिः antra-vriddhih-सं० स्त्री०
अंत्रांडवृद्धि, आंत्रवृद्धि। (Intestinal Hernia, Hernia)। फ़त्क़ मिआई, फ़त्क़ मिश्र्वी-अ०। आँत का फ़त्क़-उ०। आँत उतरना आँत उतरने का रोग। एक रोग जिसमें आँत का कोई भाग ढीला होकर नाभि के नीचे उतर कर फोते में चला आता है और फोता फूल जाता है, जिससे अण्डकोष में पीड़ा उत्पन्न होती है। अतएव केवल लक्षणकी ओर ध्यान रखकर आयुर्वेद में इसे वृषण विकारांतर्गत मान लिया गया है। परंतु अण्डवृद्धि एक अलग रोग है जिसको डॉक्टरीमें ऑर्काइटिस (Orchitis) अर्थात् अण्डप्रदाह कहते हैं। देखो—वृद्धि।

नोट—चिकित्सा प्रणालीत्रय के ग्रंथों के गवेषणापूर्ण तुलनात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है कि आयुर्वेदीय चिकित्सा ग्रंथों में वृद्धि शब्द का प्रयोग जिन अर्थों में होता है प्रायः उन्हीं अर्थों में अँगरेज़ी शब्द हर्निया (Hernia) और अरबी फ़त्क़ का होता है। यद्यपि ये तुल्यार्थक नहीं और न इनका सर्वांश में समान भावों के लिए उपयोग ही होता है, तोभी अल्प सामान्य भेदोंके सिवा इनमें समानता काही अधिक भाव सन्निविष्ट है। अस्तु इनका पूर्णतः समान अर्थों में प्रयोग करना हमें श्रेष्ठतर जान पड़ता है। पूर्ण विवेचन के लिए देखिए वृद्धि।

तीनों चिकित्सा प्रणाली के मत से अंत्रवृद्धि वृद्धिरोग का केवल एक भेद मात्र है।

निदान लक्षण—वातप्रकोपक आहार करने, शीतल जल में डुबकी लगाकर नहाने, मल मूत्र के वेग रोकने अथवा मल मूत्र का वेग न होते हुए बलपूर्वक उनके प्रवर्तन करने, बलवान के साथ युद्ध करने, अधिक बोझ उठाने, अत्यंत मार्ग चलने, अङ्गों के टेढ़ा मेढ़ा चलाने इत्यादि कारणों से तथा अन्य वातप्रकोपक कारणों द्वारा प्रकुपित वात क्षुद्रांत्रीय अवयवों को विकृत (संकुचित)कर उनको जब अपने स्थान से नीचे लेजाता है तब वे वंक्षण की संधि में स्थित हो वहाँ गाँठ के समान सूजन को प्रकट करते हैं। इसे ही अन्त्रवृद्धि कहते हैं। फिर वहाँ ग्रंथि रूप से स्थित हो कुछ काल में यह फलकोषों में प्राप्त होती है। इसकी चिकित्सा न करने से आध्मान, पीड़ा तथा स्तम्भयुक्त मुष्कवृद्धि उत्पन्न होती है। मा० नि० वृद्धि०।

चूँकि आंत्रवृद्धि रोग कभी तो जातज होता है और कभी सम्पादित। अस्तु, इसके हेतु भी दो प्रकार के होते हैं। अर्थात् एक जातज और दूसरा संपादित। अब इनमें से प्रत्येक का पृथक् पृथक् सविस्तार वर्णन किया जाता है:—

(१) जातज या सहज अर्थात् पैदायशी कारण-

(क) विटप प्रदेश में अण्डमार्ग का बंद न होना, बालकों में अण्ड का वृषण में देर से अथवा कम उतरना।

(ख) उदर की दीवार तथा मांस पेशियों का जन्म से कमज़ोर होना और वंक्षण की नाली प्रभृति के छिद्रों का कोमल होना।

(ग) आंत्र के बंधन अथवा उस पर की वसामय झिल्ली का अस्वाभाविक रूप से लम्बा होना भी इस रोग का हेतु है।

(घ) सहज रूप से उदर की दीवार के कतिपय मांसपेशियों के सम्मुख छिद्र या दरार का रह जाना जिनके मार्ग से अंत्र (वा वसा) प्रभृति ऊपर को उभर आती है। उदरीय वृद्धि का प्रायः यही कारण हुआ करता है।

(ङ) जन्म काल में नाभि का विकृत रह जाना, जिससे नाभ्यंत्रवृद्धि होती है।

(२) संपादित हेतु

(क) उदर पर चोट का लगना।

(ख) शस्त्रक्रिया करने के पश्चात् क्षत का यथार्थ रूप से पूरित न होना।

(ग) अधिक भार वहन, अधिक भार उठाना विशेषतः उठाकर सीधे खड़ा हो जाना या चलना, क्योंकि उक्त अवस्था में उदर पर जोर पड़ता है, विषमांग प्रवर्तन, खाँसने आदि चेष्टाओं से

(इन कारणों से वात प्रकुपित होने के कारण) वे छिद्र और भी बड़े हो जाते हैं, तथा उन्हीं के द्वारा काल पाकर बड़ी अँतड़ियों का (अथवा छोटी अँतड़ियों का भी) कुछ भाग नीचे उतर कर सरल मार्ग से वंक्षण संधि से होते हुए वृषणों में प्रवेश कर जाता है। ऐसी स्थिति में जब उन छिद्रों में आकुञ्चन की क्रिया होती है तब उन अँतड़ियों में दबाव के पड़ने से अत्यन्त वेदना होती है।

चिरकारी कास, अत्यन्त श्रम और चिरकारी मलावरोध इत्यादि कारणों से भी यह रोग हो जाता है।

(घ) जठरस्नायु को दुर्बल या शिथिल करने वाले कारण—मेदोवृद्धि, आंत्रपतन रोग इत्यादि।

(ङ) वस्त्यश्मरी प्रभृति के कारण जब मूत्रावरोध हो, जिससे मूत्रोत्सर्ग काल में काँखना या या ज़ोर लगाना पड़े, तब भी प्रायः यह शिकायत हो जाती है।

(च) गर्भावस्था में उदर की दीवार पर ज़ोर पड़कर उसके तनने से भी उदरांत्रवृद्धि की उत्पत्ति होती है।

(छ) उसी प्रकार वृद्धावस्था में जब उदर शिथिल होकर तोंद निकल आता है तब उम्र कास प्रभृति से इस रोग के होने का भय होता है।

(ज) स्थूल या मेदावी व्यक्तियों को भी यह रोग अधिक हुआ करता है। क्योंकि उदरस्थ मेदवृद्धि के कारण उदरीय अवयवों पर भार पड़ कर पेट तना रहता है, इत्यादि।

वृद्धि के भाग

प्रत्येक वृद्धि सम्बन्धी अर्बुद के तीन भाग होते हैं। यथा—(१) ग्रीवा, (२) गात्र और (३) मुख।

अस्तु आँत का हिस्सा जहाँ निकलता है उसको ग्रीवा और जहाँ ठहरता है उसे गात्र कहते हैं। कई बार ग्रीवा के तंग होने के कारण या ग्रीवा का मुख बंद हो जाने के कारण अंत्रवृद्धि विन्यस्त नहीं हो सकती।

अंत्रवृद्धि भेद

स्थानानुसार एवं विविध लक्षणों से युक्त होने के कारण अंत्रवृद्धि रोग कई प्रकार का होता है। यहाँ उनमें से प्रत्येक का विस्तृत वर्णन किया जाता है :—

(१) वंक्षणांत्रवृद्धि—जब अन्त्रच्छदा कला वंक्षण स्थान में विदीर्ण हो जाए, जिसमें कोई वस्तु (अंत्र या वसा प्रभृति) उदर में से नीचे आकर वंक्षण अर्थात् चड्डे की नली में रुक जाए, किंतु अंडकोष में न उतरे, तब उसको उक्त नाम से अभिहित करते हैं। अरबी में इसे फ़त्क़ुल् उर्बिय्यह् वा फ़त्क़ फ़ख़्ज़ी तथा अँगरेज़ी में ब्युबोनोसील (Bubonocele) कहते हैं।

नोट—ज्ञात रहे कि वंक्षण में दो प्राकृतिक नलियाँ होती हैं—(१) वंक्षण नलिका (Inguinal canal)–इस मार्ग से होकर अंड अपनी डोरी (अण्डधारक रज्जु) से अण्डकोष में उतरता है। और (२) ऊर्ध्व नलिका (Femoral canal) इसके रास्ते उरु की रगें गुज़रती हैं। अस्तु जब उदर में से अन्त्र वा वसा वंक्षण नलिका में उतर कर उभर आए तब उसको वंक्षणांत्रवृद्धि कहते हैं और यदि वह ऊर्ध्व नलिका (जो वंक्षण के बाहर की ओर स्थित है) में उतर कर उभर आए तो उसको ऊर्ध्वांत्रवृद्धि कहते हैं। अब इनमें से प्रत्येक का अलग अलग वर्णन किया जाता है।

वंक्षणांत्रवृद्धि

चड्डेका फ़त्क़–उ०। फ़त्क़ुल् उर्बिय्यह्–अ०। इंग्विनल हर्निया (Inguinal hernia) –इं०। इसके मुख्य ४ भेद हैं—

(१) वंक्षण सरलांत्रवृद्धि, (२) वंक्षण तिर्यग् (असरल) अन्त्रवृद्धि, (३) सहजांत्रवृद्धि और (४) कोषाकार वृद्धि। रोग की उत्पत्ति के विचार से पुनः इनकी ये अवस्थाएँ होती हैं। अस्तु, यदि वृद्धि वंक्षण की नली के भीतर ही रहे, बाहर न निकले तो उसे अपूर्ण अन्त्रवृद्धि, अरबी में फ़त्क़ नाक़िस् तथा अँगरेज़ी में इन्कम्प्लीट हर्निया (Incomplete

hernia) वा ब्युबोनोसील (Bubonocele) कहते हैं। और जब वह बाहर निकल आए तब उसको क्रमशः पूर्ण अन्त्रवृद्धि, फ़त्क़ कामिल तथा कम्प्लीट हर्निया (Complete hernia) कहते हैं। चूँकि पुरुषोंमें यह अण्डकोष में चली जाती है। अस्तु इसको अण्डकोषवृद्धि (मुष्क वृद्धि) फ़त्क़ सिफ़्न वा फ़ोतह् का फ़त्क़ और स्क्रोटल हर्निया (Scrotal hernia) कहते हैं। स्त्री के शरीर में यह वंक्षण या उरुसंधि के कुछ नीचे प्रकट होती है। स्त्रियों की अपेक्षा यह पुरुषों को ही हुआ करती है। इसे आयुर्वेद में ब्रध्न कहा गया है। इनमें से यहाँ प्रत्येक का पृथक् पृथक् वर्णन किया जाता है—

(क) तिर्यग् वंक्षण-अंत्रवृद्धि

चड्ढेका तिर्छा फ़त्क़–उ०। फ़त् कुल् उर्बियह् मुन्हरिफ़–अ०। ऑब्लीक इंग्वीनल हर्निया (Oblique inguinal hernia)–इं०।

इस प्रकार की आंत्रवृद्धि वंक्षण प्रणाली (Inguinal canal) में होती है, उससे बाहर नहीं निकलती। लक्षण-इस प्रकार की वृद्धि में रोगी के खड़े होने या खाँसने से वंक्षण की नाली के भीतर उभार प्रतीत होता है। यदि नाली के भीतर अंगुली प्रविष्ट कर रोगी को खाँसने की आज्ञा दें तो खाँसने से अंगुली पर उक्त वृद्धि के आघात का बोध होता है। इस भाँति की तिर्यग् वंक्षण वृद्धि में वृद्धि अण्डाकार होती है। उस पर छः परत होते हैं। कौक्षेयी धमनियाँ और अण्डधारक रज्जु उक्त वृद्धि के पीछे तथा अण्डकोष उसके नीचे होते हैं।

(ख) सरल वंक्षण-अन्त्रवृद्धि

चड्डेका सीधा फ़त्क़–उ०। फ़त्कुल् उर्बियह् मुस्तक़ीम–अ०। डायरेक्ट इंग्वीनल हर्निया (Direct inguinal hernia)–इं०।

लक्षण–इस प्रकार की वृद्धि में आंत्र प्रभृति वंक्षण नलिका में से न निकल कर उसके बहिश्छिद्र के पीछे से निकलती हैं। इस दशा में वृद्धि अत्यन्त स्थूल होती है। तिर्यग् वृद्धि के समान इस पर भी छः परदे होते हैं। इस तरह की वृद्धि में कौक्षीय धमनियाँ और अण्डधारक रज्जुएँ वृद्धि की ग्रीवा की वाह्य ओर और अण्ड पीछे की ओर स्थित मालूम होते हैं। वृद्धि अर्बुदाकार गोल शकल की उपस्थमूल के समीप स्थित होती है।

(ग) जातज वा पैदायशी (सहज) अंत्रवृद्धि

पैदायशी फ़त्क़–उ०। फ़त्क़ मौलूदी–अ०। कन्जेनिटल हर्निया (Congenital hernia)–इं०।

यह भी एक प्रकार की तिर्यग् अंत्रवृद्धि है जो जन्म काल अथवा जन्मके पश्चात् उपस्थित होती है। इस में वसा वा अंत्र का भाग फ़ोतों के साथ अंडवेष्ट में उतर आता है और उसके कोषों में रहता है। इसकी थैली उक्त वेष्टके परदों से बनती है और अंत्र अण्ड के पीछे रहती है। इस प्रकार की वृद्धि की रसौली (अर्बुद) गोल और उसकी ग्रीवा संकुचित होती है। यद्यपि अण्ड वृद्धि से पृथक् होते हैं। परन्तु, उससे आवृत्त होते हैं। इसके साथ अण्डकोष में जल संचित (कुरण्ड–हाइड्रोसील) भी होता है।

नोट—गर्भावस्था में अण्ड उदरमें उदरच्छदाकला (परिविस्तृत कला) के पीछे और वृक्क के नीचे रहते हैं। पाँचवें मास में वृषण की गोलियाँ वृषणों में उतरती हैं। किसी किसी के मत से ५ या ६ मास होजाने पर ये गुठलियाँ उदर गह्वर से वस्ति गह्वर में आती हैं, फिर सातवें मास में कमर के सामने और आठवें मास में अपने वृषण स्थान में उतर पड़ती हैं। जब अण्ड उदर में से उतर कर अण्डकोष में आता है, तब उस पर उदर की दीवार के मांस एवं सौत्रिक पाँच कोषों के अतिरिक्त एक कोष उदरककला (Peritoneum) का भी होता है। इसके दो भाग होते हैं। प्रथम वह जो अण्डधारक रज्जु को आच्छादित करता है और द्वितीय जो अण्ड को आवरित करता है। जन्म के बाद अण्डधारक रज्जु को आच्छादित करने वाला उदरक कला का भाग नष्ट हो जाता है और अण्डवाला भाग

अण्डवेष्ट का निर्माण करता है। परन्तु जातज अंत्रवृद्धि में अण्डधारकरज्जु वाला उदरककला का भाग नष्ट नहीं होता। अतएव उदरक कला तथा अण्डवेष्ट के बीच रास्ता रह जाता है जिससे होकर उदर से वसा वा अंत्र उतर आती है।

कोषयुक्त वृद्धि—कीसह्दार फ़त्क़-उ०। फ़त्क़ युकस्स–अ०। इन्सिस्टेड हर्निया (Incysted Hernia)–इं०।

यह भी एक प्रकार की जातज वृद्धि ही है जिसमें अण्डधारकरज्ज्वाच्छादक उदरककला का भाग एक पर्दे के कारण थैली बन जाता है। यह थैली साधारणतः अण्डवेष्ट के पीछे रहती है इस प्रकार की वृद्धि का जातज वृद्धि से निदान करना कठिन होता है। क्योंकि दोनों के लक्षण समान होते हैं।

स्थानानुसार इसके कतिपय अन्य भेद होते हैं जिनमें से प्रत्येक का यहाँ क्रमशः वर्णन किया जाता है, यथा—

उदरीय वृद्धि—पेट का फ़त्क़-उ०। फ़त्क़ बत्नी,फ़त्क़ मराक़ुलबत्नी–अ०। ऐब्डोमिनल हर्निया Abdominal hernia-इं०।

इस प्रकार की वृद्धि में नाभि के गिर्द उदरक कला के फट जाने के कारण वसा वा अन्त्र ऊपर को उभर आती है।

(२) नाभ्यंत्र-वृद्धि—नाफ़ का फ़त्क़-उ०। फ़त्क़ सुर्री, फ़त्क़ सुर्रतो, नुतूउल्-सुर्रह्-अ०। अम्बिलाइकल हर्निया Umbilical hernia, ऑमफैलोसील Omphalocele-इं०।

इस प्रकार की वृद्धि में नाभिस्थल पर उदरक कला के फट जाने के कारण वसा वा अन्त्र ऊपर को उभर आती है। इस लिए नाभि भी उभरी हुई मालूम होती है। ऐसे रोगी को भारतवर्ष में सूण्डा (पं० में धुन्नल) कहते हैं। इसके तीन प्रकार हैं :—

१—जन्मतः बाल्यावस्था में होने वाली,
२—प्रौढ़ावस्था में होने वाली और
३—वृद्धावस्था में होने वाली।

(३) अंत्रवृद्धि—आँत का फ़त्क़-उ०। फ़त्क़ मिआई, फ़त्क़ मिआ़वी–अ०। इन्टेस्टाइनल हर्निया Intestinal hernia-इं०।

यह वही प्रकार है जिसका वर्णन हो रहा है। आयुर्वेद में केवल एक इसी प्रकार की अन्त्रवृद्धि का वर्णन किया गया है। देखो—वृद्धिः।

(४) सक्थि वृद्धि (ऊर्ध्वन्त्र वृद्धि)—रान का फ़त्क़-उ०। फ़त्क़ फ़ख़्ज़ी–अ०। फेमोरल हर्निया Femoral hernia-इं०।

इस प्रकार की वृद्धि में वंक्षण के बाहर (उरु या जानु के ऊपरी भाग) की ओर उरु की नाली (Femoral Canal) में वसा वा अंत्र बाहर को उभर आती है। इस प्रकार का फ़त्क़ प्रायः स्त्रियों को हुआ करता है। जिस स्त्री के कई बच्चे हो गए हों उसको प्रायः यह विकार होता है।

लक्षण–वंक्षणके बाहरकी ओर उरुके ऊर्ध्व भाग में एक गोल उभार वा सूजन जान पड़ती है और खाँसते समय संक्षोभ इत्यादि लक्षण होते हैं।

नोट—पूर्व यूनानी चिकित्सकों ने इस प्रकार की वृद्धि (फ़त्क़) को भी वंक्षणस्थवृद्धि (फ़त्क़ उर्बिय्यह्) संज्ञा से ही अभिहित किया है; परन्तु इसको ऊर्ध्वस्थवृद्धि (फ़त्क़ फ़ख़्ज़ी) कहना अधिक उपयुक्त एवं उचित है। डॉक्टरी में इसको फेमरलसील (Femoralcele) भी कहते हैं।

(५) अंडकोष वृद्धि (अंत्रांडवृद्धि)—फ़ोते का फ़त्क़-उ०। फ़त्क़ सफ़नी, क़ीलह्, उद्रह्, कर्ब–अ०। स्क्रोटल हर्निया (Scrotal hernia-इं०।

इस प्रकार की वृद्धि में अंडकोष में अंत्र उतर आता है।

नोट—अंडकोष में पानी उतरने को कुरण्ड Hydrocele (मूत्रज वृद्धि) और वायु उतरने को वातज वृद्धि Physocele कहते हैं। देखो—वृद्धिः।

(६) गुह्येन्द्रिक वृद्धि—शर्मगाह की

फ़त्क़-उ०। फ़त्क़ुल् इस्त्रहियाई-अ०। प्युडेण्डल हर्निया Pudendal hernia-ई०।

इस प्रकार की वृद्धि में बसा या अन्त्रका कोई भाग गुह्येन्द्रिय की ओर उतर आता अर्थात् उभर आता है।

(७) जठरस्थ वृद्धि—वेण्ट्रल हर्निया Ventral hernia-ई०।

यह वृद्धि नाभि के ऊपर होती है।

दबने वाली वृद्धि

दबने वाला फ़त्क़-उ०। फ़त्क़ ग़िमाज़ी-अ०। रेड्युसिबल हर्निया Reducible hernia-ई०।

इस प्रकारकी वृद्धि चित लेटने पर आप ही या हाथ से उसको (आंत्रवृद्धि को) विन्यस्त करने पर दूर हो जाती है, केवल उस समयके जब ग्रीवा का मुख बंद हो या तंग। खाँसने या खड़े होनेकी दशा में वह फिर प्रकट होती है। रोगी के खाँसते समय यदि शोथस्थल पर हाथ रक्खा जाए तो वह फैलता हुआ मालूम होता है। खाँसने से शोथ पर एक तरंग सी मालूम होती है। यह शोथ उदर की दीवार से जुड़ा हुआ प्रतीत होता है।

अंत्रवृद्धि होने की दशामें शोथ गोल, कोमल, और नमनीय(लचकदार) होता है। हर्निया को विन्यस्त करने पर यदि आँत होगी तो गड़गड़ शब्द करेगी और झटके के साथ उदर गह्वर के भीतर प्रविष्ट होगी। मेदवृद्धि होने पर उभार चपटा, ढीला और विषम होता है और विन्यस्त करने पर धीरे धीरे उदर में प्रविष्ट होता है।

न दबने वाली वृद्धि

न दबने वाला फ़त्क़-उ०। फ़त्क़ आसी-अ०। इर्रेड्युसिबल हर्निया Irreducible hernia-ई०।

इस प्रकार की वृद्धि में उतरी हुई वस्तु (अंत्र प्रभृति) दबाने से अपनी जगह पर लौट नहीं जाती, अपितु दिन दिन बढ़कर विविध प्रकार के दुःखों का कारण होती है। इस प्रकार की वृद्धि पाशित वृद्धि में परिणत होकर अशुभ लक्षणों को उत्पन्न कर देती है।

लक्षण—उदर में शूल, चूसनवत् पीड़ा, आध्मान, मलबद्धता इत्यादि नानाप्रकार के उपद्रव खड़े हो जाते हैं। ऐसी स्थितिमें, उस अँतड़ी को ऊपर स्वस्थान में पहुँचाने का प्रारम्भिक उपाय तो करना ही चाहिए, किन्तु साथ ही साथ उसमें शोथ न आने पाए इसका भी उपाय करते रहें। रोगी को अल्पाहार करना तथा पड़े रहना चाहिए। इधर उधर घूमना और खड़ा रहना हानिकर है।

शोथयुक्त वृद्धि

सूजा हुआ फ़त्क़, मुतवर्रम फ़त्क़-उ०। फ़त्क़ वर्मी-अ०। इन्फ्लेमड् हर्निया Inflamed herina-ई०।

इस प्रकार की वृद्धि में उतरी हुई वस्तु (आँत प्रभृति) में शोथ हो जाता है। अस्तु, विकारी स्थल पर सूजन होती और उसमें पीड़ा, उष्णता तथा रक्तवर्णता हो जाती है और उदरक कला के प्रदाह के लक्षण भी प्रारम्भ हो जाते हैं। सूजन के बाद अवरोध के लक्षण उत्पन्न होजाते हैं; तीव्र वेदना होती और प्रायः न्यूनाधिक ज्वर, वमन, अजीर्ण मलबद्धतादि लक्षण हो जाते हैं। इसमें अन्त्र भाग विन्यस्त नहीं हो सकता है।

अवरोधजन्य वृद्धि

सुद्दह् वाला (दार) फ़त्क़-उ०। फ़त्क़ सुद्दी-अ०। इन्कार्सिरेटेड हर्निया Incarcerated hernia-ई०।

यह वृद्धि की एक अवस्था है जिसमें उतरी हुई वस्तु (आँत प्रभृति) कोष की ग्रीवा में किसी प्रकारका अवरोध होने अथवा किसी अन्य कारण से उसका विन्यास नहीं हो सकता। उस में अत्यंत वेदना होती है। कभी कभी तीव्र उदावर्त्त के लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं। इस प्रकार की वृद्धि वृद्ध व्यक्तियों को हो जाया करती है।

पाशित वा अवरुद्ध आंत्रवृद्धि

फँसा हुआ फ़त्क़-उ०। फ़त्क़ इख़्तिनाक़ी-अ०। स्ट्रैंगुलेटेड हर्निया Strangulated hernia-ई०।

इस प्रकार की वृद्धि में उतरी हुई वस्तु (आंत्र प्रभृति) शोथयुक्त होकर छिद्रों में रुकी तथा फँस जाती है। वह (अन्तड़ी) ऊपर को नहीं जाती, प्रत्युत उसका कुछ भाग, वंक्षण संधि के आभ्यन्तरिक छिद्रों में दृढ़ताके साथ अटक जाता है तथा अत्यन्त वेदना को करता है। कोई इसी को "अघन या बद" कहते हैं। यह अंत्रवृद्धि की वह एक तीसरी अवस्था है जिसकी उपेक्षा करने से मृत्यु अवश्यम्भावी होती है।

लक्षण—मलावरोध तथा उदराध्मानवत् शूल होता और बारबार दस्तकी हाजत होती है। किन्तु दस्त नहीं उतरता या बहुत ही कम होता है। पुनः वमन आते हैं। पहिले आमाशयस्थित सब आहार मुख द्वारा बाहर निकल पड़ता है। फिर अम्ल तथा तिक्त ऐसा पित्त निकलता है, फिर कुछ श्वेत पदार्थ (कदाचित् यह रस ही निकलता हो) निकलता है। बाद में मल के समान दुर्गंधित पदार्थ निकलता है—अर्थात् पुरीषावरोध जन्य उदावर्त के प्रायः सब लक्षण इसमें दिखाई पड़ते हैं।

यथा—

आटोप शूलौ परिकर्त्तिका च संगः पुरीषस्य तथोर्ध्ववातः।
पुरीष मास्यादथवा निरेति पुरीष वेगेऽभिहते नरस्य॥

तदनन्तर वृषण या वंक्षण स्थित शोथ पत्थर के समान कठोर हो जाता है; किन्तु धीरे धीरे बढ़ता ही जाता है। रोगी का चेहरा काला पड़ जाता है। वमन बन्द नहीं होते, रोगी को किसी प्रकार चैन नहीं पड़ता, वह निराश हो जाता है। नाड़ी की गति मंद पर रह रह के चपल होती है। हिक्का की भी प्रबलता होती है।

कुछ काल पश्चात् वह सूजन या गाँठ कुछ श्याम वर्ण की होती है, वेदना कुछ शमन हुई सी जान पड़ती है, रोगी की जीवनाशा कुछ पल्लवित सी होती है कि तुरन्त ही यमराज उसका समूल नाश कर देते हैं।

अन्त्रवृद्धि की असाध्यता

वह अंत्रवृद्धि (उपलक्षणात्मक अंडवृद्धि) जिसमें अफरा, पीड़ा और जड़ता हो; उसकी चिकित्सा न करने पर यदि अंडकोष को दबाने पर उसमें की वायु आँतों समेत ऊपर को चढ़ जाए और छोड़ने पर नीचे उतर कर अण्डकोषों को फुला दे और उसमें उक्त सभी वात के लक्षण मिलते हों तो वह अंत्रवृद्धि असाध्य है। जैसा कि लिखा है—

उपेक्षमाणस्य च मुष्कवृद्धिमाध्मान रुक् स्तम्भवतीं स वायुः। प्रपीडितोऽन्तः स्वनवान् प्रयाति प्रध्मापयन्नेति पुनश्च मुक्तः॥
अन्त्रवृद्धिर साध्योऽयं वातवृद्धिसमाकृतिः।
मा० नि०।

यहाँपर यह बात ध्यान रखने योग्य है कि आयुर्वेदीयमतानुसार अंत्रजवृद्धि और मूत्रजवृद्धि दोनों वात के ही कारण से होती हैं। केवल उत्पत्ति के हेतु पृथक् पृथक् हैं। अर्थात् मूत्र संधारणादि से कुपित हुआ वात मूत्रज वृद्धि करता है, और भार हरण, विषमांग प्रवर्तनादि से कुपित वायु अंत्रज वृद्धियों (Intestinal Hernia) को करता है। जैसा कि लिखा है—

मूत्रांत्रजावप्य निलाद्धेतुभेदस्तु केवलम्।

अंत्रवृद्धि में वृषणान्तर्गत अण्ड या ग्रंथि में किसी प्रकार शोथ या प्रदाह प्रभृति नहीं होता और जो वेदना होती है, वह सदैव नहीं होती; किंतु जब होती है तब बहुत असह्य होती है।

चिकित्सा

आयुर्वेदीय मतानुसार—

आँतें जब तक अंडकोष में न उतरी हों तब तक वात वृद्धि के सदृश चिकित्सा करें। यथा—
अंत्रहेतु के।

फलकोशम सम्प्राप्ते चिकित्सा वात वृद्धिवत्।
वा० चि० अ० १३।

यदि रोगी को क़ब्ज़ियत रहती हो तो उसकी जठराग्नि दीपन करने के लिए वस्तिकर्म के द्वारा नारायण तैल का प्रयोग करें।

अंत्रवृद्धिमदीप्ताग्ने वस्तिभिः समुपाचरेत्।
तैलंनारायणंयोज्यं पानाभ्यंजन वस्तिभिः॥

अंडकोष में आँतों के उतर आने की दशा में निम्नांकित उपचार करें।

सुकुमार नामक रसायन वाग्भट्टोक्त तथा गंधर्वहस्त तैल इस रोग में उत्तम प्रमाणित होते हैं। अस्तु इनमेंसे किसी एक का नियमपूर्वक उपयोग करने से लाभ होता है।

गोमूत्रयोग—गोमूत्र १॥ से २ तो० में गूगल (१ से ३ मा०) अथवा एरण्ड तैल १ से १॥ तो० मिलाकर नित्य सवेरे पान करने से अंत्रवृद्धि का नाश होता है। यह योग वातज वृद्धि पर भी अच्छा काम देता है।

रास्नादि क्वाथ—

रास्ना, गिलोय, खिरेंटी, मुलहटी, गोखरू, और एरण्ड की जड़, इनको समभाग लेकर, यवकुट चूर्ण करलें। नित्य प्रातः २ से ४ तो० तक चूर्ण लेकर उसमें ३२ से ६४ तो० तक जल डालकर मन्दाग्नि से औटाएँ। जब ४ तो० या ८ तो० जल शेष रहे तब उतार कर छान लें। फिर उस में एरण्ड तैल १ या २ तो० डालकर पान करने से (७ या १४ दिन तक) अवश्य लाभ होता है। यथा शार्ङ्गधर—

रास्नामृतावलावर्षा गोकण्टेरण्डजः शृतः।
एरंडतैल संयुक्तो वृद्धिमंत्र भवांजयेत्॥

लाख कचनार के बीज, सोंठ, देवदारु, गेरू, कुंदरू, इनको काँजी में पीस कर अण्डकोश पर गरम गरम प्रलेप करने से अंत्रवृद्धि दूर होती है, यथा—

लाक्षा कान्चनका बीजं शुंठी दारु गैरिकम्।
कुन्दरू कांजिकैर्लेप्यमुष्णमंत्र विवर्द्धने॥
(योगचिन्तामणिः)

पीपल, जीरा, कूठ, बेर सुखाया हुआ, गोबर, इनको काँजी में मिला कर लेप करने से भी उपरोक्त परिणाम होता है। यथा—

पिप्पली जीरकं कुष्ठं बदरं शुष्क गोमयम्।
कांजिकेन प्रलेपैरन्त्रवृद्धि विनाशनः॥
(वृ० नि० र०)

बालकों की अंत्रवृद्धि पर केवल पलाश की छाल व काढ़ा पिलाने से ही लाभ होता है। यथा—

अन्त्रवृद्धिप्रशमनाय किंशुकत्वक्कषायमपि।
पाययेच्छिशुम्॥ (वैद्य मनोरमा)

करंज के बीजों को सिलपर पीसकर उसमें थोड़ा अरंडी का तेल मिलाएँ। फिर इस मिश्रण को तम्बाकू के पत्ते पर गाढ़ा गाढ़ा लेप कर वह पत्ता वृषण पर रात्रि के समय बाँध देने से भी अंत्रवृद्धि में लाभ होता है।

छोटे बालकों की अंत्रवृद्धि या कुरण्टक रोग पर इन्द्रायन अच्छा काम देता है। यथा—

इन्द्रवारुणिका मूलं तैलं पुष्करजं तथा।
संमर्द्य च स गोदुग्धं पिबेज्जंतुः कुरण्टके॥
(वृ० नि० रत्नाकर)

एलोपैथी मतानुसार—

प्रायः सभी प्रकार के अंत्रवृद्धि रोग दुःसाध्य एवं अत्यंत भयावह होते हैं। अकस्मात् अवरोध उत्पन्न होने से शोथ होकर यह रोगी के प्राण नाश का कारण हो सकता है, अस्तु इसके उचित उपचार में विलम्ब व आलस्य करना यथार्थ नहीं।

यद्यपि वृषणोंमें उतर आई हुई अँतड़ीके भाग को फिर से पूर्ववत् दाबकर ऊपर चढ़ाना अति कठिन कार्य है तथापि उष्ण जल में बैठकर अथवा वृषणों पर बर्फ़ आदि का उपयोग कर छिद्रों के मार्ग में पारावत फँसी हुई अँतड़ी के बंधन को ढीला किया जा सकता है तथा अँतड़ी के उस भाग को कुछ संकुचित कर, युक्तिपूर्वक ऊपर को चढ़ाया भी जा सकता है। परंतु यदि उपर्युल्लिखित बंधन का दबाव अधिक ज़ोर का हो और चिकित्सा करने में बहुत देर हो गई हो तो शस्त्र क्रिया करना अधिक उपादेय है।

यद्यपि इसकी वास्तविक चिकित्सा शल्य ही है, जो केवल बच्चों और युवाओं पर ही सफलीभूत होती है; तो भी ऐसा न हो सकने पर इसका याप्योपचार ट्रस (Truss) अर्थात् पट्टी लगाना है। अस्तु, विविध प्रकार की अंत्रवृद्धि के लिए नाना भाँतिकी पट्टियाँ डॉक्टरी औषध विक्रेताओंकी दूकानों से मिल सकती हैं। पट्टी चाहे किसी प्रकार अथवा किसी भी वस्तु से निर्मित हो उसकी विशेषता यह है कि उसके लगाने से न तो त्वचा को किसी प्रकार की हानि पहुँचे, न वृद्धि

उतरने ही पाए और न उससे शारीरिक चेष्टा में किसी प्रकारकी बाधा उपस्थित हो और न उसके निरंतर उपयोगसे छिद्रका प्रसार ही हो। ठीक मापकी पेटी यदि किसी अन्य स्थान से मँगाना हो तो वृद्धि भेद और यथार्थ माप लिखना चाहिए।

ऊर्ध्वान्त्रवृद्धि में माप लेने का नियम यह है—पेडू की अस्थि की ऊर्ध्व धारा से लगभग १ इंच नीचे वृद्धि के छिद्र तक पेडू की परिधि को नाप लें। इस नापके अनुसार पेटी मँगवानी चाहिए। पेटी प्रत्येक पुरुष की मोटाई पर निर्भर है। पेटी से वृद्धावस्था में स्थायी आराम नहीं होता जब तक ट्रस (पेटी) लगी रहे तब तक आँत का हिस्सा नहीं उतरता, जब वहाँ ये न लगाई जाएँ तो फिर आँत का हिस्सा उतर आता है। परंतु यदि बाल्य एवं युवावस्था में प्रारम्भ से ही निरंतर १–२ वर्ष तक पेटी लगी रहे और उतने कालमें एक बार भी आँतका भाग न उतरा हो तो वह मार्ग सदैव के लिए बंद होजाता है एवं रोगी स्वास्थ्य लाभ करता है। तो भी स्वस्थ होजाने के बाद भी रोगी को वर्ष दो वर्ष तक पेटी लगाते रहना चाहिए, जिसमें रोग के पुनराक्रमण की शंका न रहे।

पेटी लगाने से यद्यपि प्रारम्भमें किञ्चित् कष्ट अनुभव होता है। पर दो चार दिवस में ही वह दूर हो जाता है। रात्रि में सोते समय पेटी को उतार देना चाहिए शेष सभी काल में उसको लगाए रहना चाहिए। प्रातः काल शय्या से उठने से प्रथम उसे लगा लेना चाहिए जिसमें वृद्धि के बार बार बाहर आने से उसका छिद्र बड़ा न हो जाए। अन्यथा पेटी लगाने का लाभ नष्ट होता रहेगा। पेटी की गद्दी अर्थात् पिचु भाग को स्वच्छ एवं शुष्क रखना चाहिए। उस पर कभी कभी खड़िया मिट्टी वा जिंक ऑक्साइड (यशद भस्म) अवचूर्णित कर दिया करें जिसमें क्लेश तथा भार से वहाँ की त्वचा निर्बल एवं क्षतयुक्त न हो जाए।

टिप्पणी

यह उपर्युक्त उपाय विन्यस्त होने वाली अन्त्रवृद्धि के लिए है। अस्तु, यह स्मरण रहे कि पेटी लगाने से पूर्व रोगी को उत्तान लिटाने और टाँग सिकोड़ने से आँत वा परिविस्तृत कला का आया हुआ भाग स्वयमेव यथा स्थान चला जाता है। इस प्रकार उनको विन्यस्त करके फिर पेटी लगाएँ।

यदि इस प्रकार वे यथा स्थान प्रविष्ट न हों तो वृद्धि को वाम हस्त की उँगलियों से पकड़ कर दाहिने हाथ से उनको धीरे धीरे भीतर प्रविष्ट करें। किंतु यह स्मरण रखें कि जो भाग सबसे पीछे उतरा हो वह सबसे पहिले भीतर जाए यदि इस प्रकार भी सफलता न हो तो क्लोरोफॉर्म सुँघाकर यह क्रिया करें।

इस भाँति पेशियों को शिथिल कर हर्निया भीतर प्रविष्ट की जा सकती है।

यदि वृद्धि विन्यस्त न होने योग्य (न दबने वाली अर्थात् यथास्थान न लौट जाने योग्य) हो तो पेटी का पिचुभाग वा गद्दी ऐसी हो जो उसकी पूर्ण रक्षा कर सके और उस पर किसी प्रकार का भार न पड़े। इस प्रकार की वृद्धि में शोथ हो जाने पर रोगी को सुखपूर्वक लिटाए रखें, किसी प्रकार की गति न करने दें। उसकी जानु के नीचे एक बड़ा सा तकिया रखें, जिसमें हर्निया का छिद्र ढीला होकर वेदना कम हो जाए। वस्त्र वा रबड़ की थैली में बर्फ़ भरकर शोथ युक्त स्थान पर रखें और आध आध घंटा पश्चात् वृद्धि को धीरे धीरे नीचे और पीछे को दबाएँ। ऐसा करने से प्रायः हर्निया अपने स्थान पर चली जाती है और रोगी के प्राण बच जाते हैं। वेदना हरणार्थ मॉर्फीन (अहिफेनीन) और ऐट्रोपीन (धत्तूरीन) का त्वक्स्थ अन्तःक्षेप करें, अथवा एक एक ग्रेन अहिफेन आध आध घंटा के अन्तर से तीन चार बार दें। परन्तु, खाने को कुछ न दें और विरेचन किसी दशा में न दें। २४ घंटे हर्निया के फँसे रहने पर फिर उसमें शोथ होकर रोगी के प्राणांत हो जाने की आशंका होती है। अस्तु, यदि उसमें अवरोध प्रभृति हो तो तत्काल वस्तिक्रिया करनी चाहिए। तदनन्तर उस पर बर्फ़ लगाना चाहिए।

नोट—अंत्रवृद्धि रोगी को बहुत इहतियात से विरेचन लेना चाहिए। यथासम्भव उसका न लेनाही उत्तम है। मलावरोध होने की दशा में उष्ण जल द्वारा वस्ति लेनी चाहिए।

अन्त्रवृद्धि के लिए—डॉक्टरी चिकित्सा में प्रयुक्त होने वाली अंकित औषधें—

टार्टार इमेटिक, क्लोरोफॉर्म, ईथर, ओपियम् (अहिफेन), प्रम्बाई एसीटास,, टबेकम् (तम्बाकू), उष्ण स्नान, रक्तमोक्षण और बर्फ़।

अन्त्रवेल antra-vela--सं० एक हिन्दी दवा है (An indigenous drug.)

अन्त्रश्छदा कला antraṣhchhadá-kalá-हिं० संज्ञा स्त्री० अंत्रच्छदा कला, आंत्रावरण, जठरावरण। ओमेण्टम् Omentum, एपिप्लून Epiploon, कॉल Caul-इं०। सर्ब-अ० बाशोनिहे पियह्, चादर पियह्-फ़ा०।

नोट—कॉल उस झिल्ली को भी कहते हैं जो जन्मसकाल में शिशु के शिर पर लिपटी हुई निकलती है। वस्तुतः यह अंत्रावरण का एक भाग है।

उदर की वसामय झिल्ली जो आँतों पर फैली होती है। वास्तव में यह उदरच्छदा कला का ही एक भाग है जो उसके नीचे आमाशयिक द्वार से क़ोलून तक परिस्नृत होता है।

इसके दो भाग हैं—

(१) बृहद् अंत्रच्छदा कला (सर्ब कबीर) जो आमाशय के बृहन्मुख से आरंभ होकर कोलून तक जाती है इसको अँगरेज़ी में ग्रेट ओमेण्टम् (Great omentum) कहते हैं।

(२) क्षुद्र अंत्रच्छदा कला (सर्ब सग़ीर) जो आमाशय के क्षुद्रमुख से आरम्भ होकर यकृत तक जाती है। अंगरेज़ी में इसको लेसर ओमेण्टम् (Lesser omentum) कहते हैं।

अन्त्रश्छदाकला छेदन antraṣhchhadá-kalá-chhedana-हिं० संज्ञा पुं० अंत्रच्छदा कला का काटना। क़त्अ सर्ब-अ०। ओमेण्टेक्टॉमी Omentectomy-इं०।

अन्त्रश्छदाकला प्रदाह antraṣhchhadá-kalá-pradáh-हिं० संज्ञा पुं० अंत्रच्छदा कला (आँतों को आच्छादित करने वाली झिल्ली) की सूजन। ओमेण्टाइटिस Omentitis-इं०। इल्तिहाब सर्ब, वर्म सर्ब-अ०।

अन्त्रश्छदिक वृद्धि antraṣhchhadika-vridhi-हिं० संज्ञा स्त्री० अंत्रच्छदा कला के किसी भाग का उतर आना। एपिप्लोसील Epiplocele-इं०। फ़त्क़ सर्बी-अ०।

अन्त्रशोधक antraṣhodhaka-हिं० वि० पुं० आंत्र पचननिवारक। दाफ़िआते तअफ़्फ़ुने अम्आअ्-अ०। Intestinal antiseptics-इं०। आंत्रस्त द्रव्यों में अभिषव (ख़मीर) अथवा सड़ाँध पैदा न हो या उनमें सड़े हुए द्रव्यों को अभिशोषित होने से रोकें इस हेतु कभी कभी पचननिवारक (Antiseptic) औषधों का उपयोग होता है। अस्तु समस्त आमाशय-पचननिवारक (Gastic antiseptics) तथा दुग्धाम्ल (Lactiacid) और सैलोल (Salol) और केलोमेल इस प्रयोजन के लिए व्योहार किए जाते हैं।

नोट आंत्रस्थ द्रव्यों का (जब कि वे शरीरमें होते हैं) कीट रहित (Disinfectant) करना सम्भव है या नहीं? यह बात अब तक संदेहपूर्ण है। यदि यह सम्भव हो तो यह लाभप्रद भी है या नहीं? क्यों कि आंत्र के भीतर सूक्ष्माणु विद्यमान होते हैं जो सामान्य अवस्थामें आंत्र की पाचनक्रिया के सहायक होते हैं। पर तो भी ऐसी औषधों के प्रयोग का यत्न किया जा रहा है। और उसमें किसी सीमा तक सफलता भी हुई है।

अन्त्रशोषान्तकः antraṣhoshántakah-सं० पुं० नीबू, सहिजन, दुग्धवल्लरी (चमार दूधी) चिरायता, गिलोय, शतावरी, अर्जुनमूल, त्रिफला, विदारीकंद, बला, असगंध, मुसली, वायविडंग इनके रस द्वारा कांत लोह में पृथक् पृथक् कई

बार भावना देकर वाराहपुट को आँच दें। पुनः इस भस्म के समान सीसभस्म, अभ्रक, सुवर्ण, ताम्र तथा लोह भस्म लें और खपरिया कांतलोह से आधा भाग मिलाकर उपर्युक्त द्रव्यों के क्वाथ तथा घिकुवार के रस की भावना देकर रख लें। मात्रा–३ रत्ती।

गुण–यह अंत्रशोथ, फुफ्फुसप्रदाह, जीर्ण ज्वर, धातुक्षय, राजयक्ष्मा, श्वास, गुल्म, अरुचि, अतिसार, संग्रहणी को नष्ट करता और बल की वृद्धि करता है। र० यो० सा०।

अन्त्रश्छदा शिरा antrashchhadá-shirá –सं० स्त्री० अंत्र से अशुद्ध रक्त को ले जाने वाली शिरा।

अन्त्रसंकोचक antra-sankochaka–हिं० वि० पुं० इन्टेस्टाइनल एस्ट्रिञ्जेण्ट्स (Intestinal astringents). वे औषधें जो आंत्र के कृमिवत् आकुंचन को शिथिल एवं उनके रसों को कम करती हैं।

अन्त्रसंधि antra-sandhi–हिं० स्त्री० दोनों आँतों का जोड़।

अन्त्रहानिकर antra-háni-kara–हिं० देखो–मुज़िरात अम्आअ्।

अन्त्रक्षय antra-kshaya–हिं० संज्ञा पुं० (Intestinal Tuberculosis) यह रोग एक प्रकार के यक्ष्मा कीट के अन्त्र में प्रवेश करने से होता है। देखो–राजयक्ष्मा।

अन्त्रांडवृद्धि antránda-vriddhi–हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] (Scrotal hernia) देखो–अन्त्रवृद्धि।

अन्त्रादः antrádah–सं० पुं० आभ्यन्तर कृमि (Internal worm)। देखो–कृमिः। मा० नि०। शार्ङ्ग ७ अ०।

अन्त्राधः धमनी antrádhah-dhamaní–हिं० संज्ञा स्त्री० (Inferior mesenteric artery.). वह धमनी जो अंत्रधारक कला से नीचे स्थित है।

अन्त्राधः शिरा antrádhah-shirá–हिं० संज्ञा स्त्री० (Inferior mesenteric vein). वह शिरा जो अन्त्रधारक कलासे नीचे स्थित है।

अन्त्राधः पेशी antrádhah-peshí–सं० स्त्री० (Inferior mesenteric muscle) वह पेशी जो अन्त्रधारक कलासे नीचे स्थित है।

अन्त्रान्त-अन्त्रसंधि antránta-antra-sandhi–हिं० स्त्री० (Cæcum) दोनों आँतों का जोड़। देखो–अन्त्रपुट।

अन्त्रालजी antrálaji (मा०)
अन्ध्रालजी andhrálaji (सु०) –सं० स्त्री०
वात श्लेष्म जन्य क्षुद्ररोग विशेष। लक्षण–वह फुन्सी जो कठिन, मुख रहित, ऊँची, गोल, मण्डलाकार तथा अल्पपाक (राध) युक्त हो। यह कफ और वात के प्रकोप से होती है। मा० नि० क्षुद्ररो०।

अन्त्री antrí–सं० स्त्री० वृद्धदारक लता, वृद्धदारु, विधारा। (See–Vidhárá.) फा० इं० २ भा०। अ० टी०। –हिं० संज्ञा स्त्री० अन्त्र, आँत, अँतड़ी। (Intestine.)

अन्त्रोर्ध्व धमनी antrordhva-dhamaní –हिं० संज्ञा स्त्री० (Superior mesenteric artery.) वह धमनी जो अन्त्रधारक कला से ऊपर स्थित है।

अन्त्रोर्ध्व शिरा antrordhva-shirá–सं० स्त्री० (Superior mesenteric vein) वह शिरा जो अन्त्रधारक कला से ऊपर स्थित है।

अन्थकम् anthakam–सं० क्ली० अङ्गार। (A firebrand; embers.) रत्ना०।

अन्थाइलिस anthyllis–यु० रुद्रवन्ती, रुदन्ती–हिं०। (Cressa cretica, Linn.) फा० इं० २ भा०। देखो–रुदन्तिका (न्ती)।

अन्थीनर्लू anthínarlú–ता० गुलेअब्बास –फा०, इं० बा०। (Mirabilis jalapa, Linn.) फा० इं० ३ भा०।

अन्थेमिक एसिड anthemic Acid–इं० बाबूने का सत, बाबूने का तेजाब। इसके सूचिकाकार वर्णरहित रवे होते हैं। गंध–बाबूना के समान ग्राह्य। स्वाद–अत्यन्त कड़ुआ। यह जल, मद्यसार, ईथर एवं क्लोरोफार्म में घुल जाता है। इसको वर्नर (Werner) महोदय ने सन्

१८६७ ई० में बाबूना पुष्प से विशेष प्रक्रिया द्वारा प्रस्तुत किया था। फा० इं० २ भ.०। देखो—बाबूना।

अन्थेमिस आर्वेन्सिस anthemis Arvensis, Linn.)-ले० बाबूनह, शज्रतुल्-काफ़ूर। फा० इं० २ भा०। देखो—बाबूना।

अन्थेमिस किआ anthemis chia, Linn. -ले० बाबूनह् भेद। फा० इं० २ भा०।

अन्थेमिस नोबिलिस anthemis nobilis-ले० बाबूनह्, शज्रतुल्-काफ़ूर। फा० इं० २ भा०।

अन्थेमीडीन anthemidin-इं० बाबूनह् के तेज़ाब को मद्यसार में घोलने पर जो पदार्थ तलस्थायी होजाता है उसमें एक प्रकार का स्वाद रहित, रवायुक्त सत्व होता है, जिसे 'अन्थेमीडीन' कहते हैं। यह मद्यसार, ईथर और क्लोरोफॉर्म में अविलेय होता है, किन्तु एसीटिक एसिड (सिरकाम्ल) में विलीन हो जाता है। फा० इं० २ भा०।

अन्थेमून anthemon-यु० बाबूनह् भेद। फा० इं० २ भा०।

अन्थेरिकम ट्युबरोसम anthericum Tuberosum, Roxb.-ले० ख़ुन्सा-अ०,फ़ा०, यु०। (Asphodel) फा० इं० ३ भा०।

अ (ऐ) न्थेल्मिण्टिक anthelmintic इं० क्रमिघ्न, क्रमिहर, क्रमिनाशक। (Medicine) of use against intestinal worms.। देखो—क्रमिघ्न।

अ (ऐ) न्थोसिफैलस् कडम्बा anthocephalus cadamba, *Miq.H.K,Br.* कदम्ब, कदम। इं० मे० प्लां०।

अ(ऐ)न्थ्रिस्कस सेरीफ़ोलिअम् anthriscus cerefolium, *Hoffm.*-ले०। अत्रीलाल-इं० बा०। फा० इं० २ भा०। देखो—आतरीलाल।

अन्थ्रैक्स anthrax-इं० देखो—ऐन्थ्रैक्स।

अन्दम āandam-अ० (१) पतंग (Cæsalpinia sappan, Linn.) बक्कम। (२) (Kino) दम्मुल अख़्वैन-अ०। हीरादोखी-हिं०। (३) Red sandal wood. सन्दलसुर्ख़, रक्तचन्दन। इं० हैं० गा०।

अन्दरूमाख़ुस andarumákhus-अ० (Andromachus) हकीम बुक़रात के बाद उनके समकालीन एक प्रसिद्ध युनानी हकीम हुए हैं। यह यूनान के महाराजाधिराज के निजी चिकित्सक (राजवैद्य) थे। इन्हों ने एक अगद निर्मित किया था जो "अन्दरूमाख़ी" नाम से प्रसिद्ध है। यह नब्बे ६० वर्ष की अवस्था में स्वर्गवासी हुए।

अन्दलीब āandalíba-अ० बुलबुल, एक पक्षी विशेष। (Nightingale.)।

अन्दलुस andalus-अ० हस्पानिया। स्पेन Spain-इं०। अरब के लोग स्पेन (Spain) को अन्दलुस कहते हैं। अन्दलूसियह् वस्तुतः स्पेन का एक प्रान्त था, जिसको ख़लीफ़ा वलीद के समयमें ज़याद के पुत्र तारक़ ने सन् ७१० ई० में सर्व प्रथम विजय किया था। इसी सम्बन्ध से अरब लोग स्पेन को अन्दलुस कहते हैं। इस देश में बड़े बड़े नामवर हकीम वा चिकित्सक उत्पन्न हुए। इनमें से किसी किसी का परिचय इस कोष में दिया जाएगा। चूँकि "स्पेन" यूरोप महाद्वीप में स्थित है; अतः इस मुल्क के हकीमों एवं वैद्यों को पश्चिमी हकीम भी कहते हैं।

अन्दाब andáb-अ० व्रण चिह्न, क्षतों के दाग़।

अन्दाम andám-अ० शरीर; अवयव; रूप। (Body, an organ.)

अन्दाम दाना andám-dáná-फ़ा० तर्जनी अँगुली। फोर फिङ्गर Fore Finger-इं०।

अन्दाम पेश andám-pesha } -फ़ा०
अन्दाम शर्म andám-sharma } स्त्री गुह्यभाग, भग। अन्दामनिहानी, शर्मगाहे मर्द या औरत-अ०। (Pudendum, Vulva).

अन्दिका andiká-सं० स्त्री० चुल्लि। अ०टी०। See-Chulli.

अन्द्रनी andrani-सम्हालू, निर्गुण्डी। (Vitex Negundo.)। इं० है० गा०।

अन्धः andhah–सं० त्रि० (१) नेत्रहीन, अंधा (Blind)। –क्लो० (२) तिमिर, अंधकार (Darkness.)। मे० धद्विकं। (३) (न्धस्) अन्न। रा० नि० व० २०। (४) जल (Water)। भरत०। (५) भात, ओदन, भक्त (Boiled rice)। वृ० नि० र० कृ० व०।

अन्धकः andhakah–सं०पुं० तुम्बुरु, धनियाँ (नैपाली)। (Xanthoxylon alatum) भा० पू० १ भा० ह० व०।

अन्धकाकः andha-kákah–सं० पुं० (A bird) काकाकार पक्षी। पानकौड़ि–बं०। भेदाजुया–म०। त्रिका०।

अन्धकारः andha-kárah–सं० पुं० अँधेरा, आलोकाभाव (Darkness)। इसके निम्न पर्य्यायवाची शब्द हैं, जैसे—ध्वान्तं, तमिस्रं, तिमिरं, तमः (अ०), भूच्छाय (रा०),अंधतमासं अंधतामसं, सन्तमसं, अवतमसं। गुण— भय, दृष्टि, तेज तथा अवरोधकारक और रोग-जनक। राज०।

नोट—महाअंधकार को अंधतमस, सर्व्व-व्यापी वा चारों ओर के अंधकार को संतमस और थोड़े अंधकार को अवतमस कहते हैं।

(२) उदासी। कांतिहीनता।

अन्धकूपः andha-kúpah–सं० पुं० (१) मोह (Loss of consciousness or sense)। (२) अंधा कुआँ। (A blind well)

अन्धतमस andha-tamasa–हिं० पुं० अत्यन्त अन्धकार। (Great darkness).

अन्धता andhatá–सं० स्त्री० (१) पित्तरोग (Biliary disease)। वै० निघ०। (२) अन्धापन। (Blindness)

अन्धपुष्पी andha-pushpí–हिं० संज्ञा स्त्री० अन्धाहुली, अर्क-पुष्पी, अर्काहुली।

अन्धपूतना andha-pútaná–सं० स्त्री० बालक ग्रहपीड़ा विशेष। इसके लक्षण निम्न हैं, यथा– जो बालक स्तन से द्वेष रक्खे (अर्थात् माता के स्तन को नहीं पीवे) तथा अतिसार, खाँसी, हिचकी, वमन और ज्वर इनसे पीड़ित हो, वर्ण बिगड़ जाए, सोते समय नीचे को मुख करके सोए, खट्टी खट्टी गंध आए, ऐसे बालकको अंध पूतना से पीड़ित कहते हैं।

चिकित्सा—तिक्त द्रुम अर्थात् निम्बादि तिक्त रसयुक्त वृक्षों के पत्र से सिद्ध किए हुए जल से स्नान, सुरादि साधित तैल तथा पिप्पली आदि द्वारा साधित घृत के उपयोग द्वारा उपर्युक्त सम्पूर्ण विकार शमन होते हैं। सु० उ० २७। ३३ अ०।

अन्धमूषा andha-músha–सं० स्त्री० औषध पाकार्थ यन्त्र विशेष। इसे वज्रमूषा भी कहते हैं।

विधि—दो भाग तिनकों की भस्म, एक भाग बाँबी की मिट्टी, एक भाग लोह किट्ट, एक भाग सफ़ेद पत्थर का चूरा और कुछ मनुष्य के बाल डालें। सब को एकत्र कर बकरी के दूध में औटा दो पहर पर्यन्त अच्छी तरह घोटें, पीछे उस मिट्टी का गौ के थन के सदृश गोल और लम्बी मूषा बनाएँ। पीछे इसका ढकना बनाकर धूप में सुखा इसमें पारा भर ढकने से ढक दें और सन्धियों को उसी मिट्टी से बंद करें। यह पारा मारने को वज्रमूषा कहा है। इसी को अंध-मूषा कहते हैं। र० सा० सं०। कश्चिद्वैद्यः।

अन्धमूषिका andha-múshiká–सं० स्त्री० (१) देवताड़ वृक्ष। (See–Devatára)। (२) तृण विशेष। (A grass.) श० च०।

अन्धरन्ध्रम् andha-randhram–सं० क्ली० अन्त्रपुट छिद्र। (Foramen cæcum).

अन्धला andhalá– } –हिं० वि० अचक्षु, बिना
अन्धा andhá– } आँख का। (Blind)

अन्धस्थानम् andha-sthánam–सं० क्ली० }
अन्धस्थान andhasthána–हिं० संज्ञा पुं० }
अँधेरा स्थान। (Blind spot).

अन्धसुदर्शक अञ्जनम् andha-sudarshaka anjanam–सं० क्ली० कृष्ण सर्प १, काले बिच्छू ५ लेकर एक दूधके कलश में २१ दिन पर्यंत

श्वेत कर मथें। उसमें से निकाले हुए मक्खन को मुर्गे को खिलाकर पुष्ट करें। उसका बीट ले अञ्जन करने से अन्धता दूर होती है। वं० से० सं० नेत्र रो० चि० ।

अन्धाहिः andháhih-सं० पुं० कुँचिया मीन। कूँचेमाछ, जलमेटे-बं०। त्रिका०।

अन्धाहुली andháhulí-सं० स्त्री० आहुल्य नामक शिम्बी-फल वनस्पति विशेष। भुञ्जित खड़-हिं०। तरवड़-काश०, मह०। See-áhulyam.

अन्धाहिक andháhika-अन्धा साँप। एक प्रकार का साँप। कौटि० अर्थ०।

अन्धिका andhiká-सं० स्त्री० (१) सर्षपी, सफेद सरसों। (२) स्त्री विशेष। (A woman) मे० कत्रिकं। (३) नेत्र रोग विशेष (An eye-disease.).

अन्धियार,-रा andhiyára,-rá-हिं० पुं० अंधेरा। (Dark, darkness).

अन्धुक andhuka-हिं० पुं० जंगली अंगूर-द०। आमोलुका-बं०। इण्डियन वाइल्ड वाइन Indian wild vine)-इं०। वाइटिस इण्डिका (Vitis Indica, *Linn.*)-ले०। विग्नी डी' इण्डी (Vigne d' Inde) -फ्रां०। युवोस डास ब्युगिऑस (Uvas dos bugios)-पुर्त्त०। शेम्बर-वल्लि --ने०। चेम्बार-वल्लि-मल०। राग-ज्ञान, कोले जान-मह०। मार-सम्बर-कों०।

द्राक्षावर्ग

(*N. O. Ampelideæ*)

उत्पत्तिस्थान—पश्चिम प्रायद्वीप, मध्य भारतवर्षीय पठार, बङ्गाल, मालाबार तथा ट्रावनकोर।

वानस्पतिक-विवरण—यह एक वृहत् आरोही पौधा है जिसमें चिरायु (बहुवर्षीय) कंदमूल होता है। उक्त पौधे के पत्र पुष्प तथा समग्र आकृति द्राक्षा का स्मरण दिलाती है। इसका मूल कन्द के वृहद् गुच्छों का समूह है जो माध्यमिक मूल-तन्तुसे लगा रहता है। कंद एक से दो फीट लम्बे, शंक्वाकार (दोनो सिरों पर), ताजे होने पर अधिकाधिक व्यास (चौड़ाई) २-३ इंच; बाहरसे वे धूसर वर्णीय ऊर्ध्वचर्म से आच्छादित होते हैं जिन पर वृत्ताकार घेरों में स्थित सूक्ष्म मस्सावत् उभार होते हैं; भीतर से वे रक्त वर्णीय एवं सरस होते हैं। परत (पत्ता) काटने पर एक स्थूल घेरा युक्त त्वक् भाग सरलतापूर्वक पृथक् किए जाने योग्य और माध्यमिक मज्जामय भाग चुकन्दरवत् दीख पड़ता है।

सूक्ष्मदर्शक से जड़ की परीक्षा करने पर वह पतली दीवार के पैरेनकाइमा (Parenchyma) से बने दीख पड़ते हैं जिनके कोषों में वृहदायताकार श्वेतसारीय कण तथा सूच्याकार रवों के असंख्य गट्ठे (Bundles) होते हैं। मूल तथा मूल त्वक् के बाहरी भाग में असंख्य बड़े बड़े कोष्ठ होते हैं।

स्वाद—कुछ कुछ मधुर, लुआबी तथा कसैला। कंद चूर्ण तथा पांशु (Potash) लवणों से पूर्ण होते हैं। ताजी अवस्था में ऑग्ज़ेलेट ऑफ लाइम की सूचियों द्वारा उत्पन्न यांत्रिक क्षोभ के कारण वे चरपरे होते हैं।

इतिहास तथा उपयोग—र्‌हीड़ी के मत से इसकी जड़का रस नारियलके मज्जाके साथ रोधोद्घाटक (Depurative) तथा शर्करा के साथ रेचक रूप से व्यवहार किया जाता है। कोंकण के हिन्दू लोग इसके क्वाथ को ½ से १ आउंस की मात्रा में परिवर्तक रूप से भी प्रयोग में लाते हैं।

उनका विचार है कि यह रक्त शुद्धिकर्त्ता, मूत्रल प्रभावकर्त्ता और स्रावों (की क्रिया) को स्वस्थता प्रदान करता है।

गोवील (बं०) Vitis latifolia का कंद भी उसी हेतु उपयोग में आता है। (फा० इं० १ भा०। इं० मे० मे०) इसके मूलस्वरसको तैलके साथ मिलाकर चक्षु रोगोंके लिए एक उत्तम प्रलेप प्रस्तुत करते हैं। और नारिकेल दुग्ध के साथ मिलाकर इसको कारबंकल तथा अन्य प्रकार के दुष्ट व्रणों पर लगाते हैं। इं० मे० मे०। यह परिवर्तक तथा मूत्रल है। इं० डू० इं०।

अन्धुलः andhulah-सं० पु०
अन्धुल andhula-हिं० संज्ञा पुं०
शिरीष वृक्ष, सिरिस का पेड़ (Albizzia lebbeck.)। श० च०।

अन्धेरा,-री andherá,-rí-हिं० पु०, स्त्री० अँधियारा। (Darkness).

अन्नम् annam-सं० क्लो०
अन्न anna-हिं० संज्ञा पुं०
(१) Grain, Corn शस्य, अनाज, नाज, धान्य। दाना, गल्ला। (२) (Food material) खाद्य पदार्थ, व्रीहि एवं यव आदि खाद्य द्रव्य मात्र। चर्व्य, चोष्य, लेह्य और पेय भेद से यह चार प्रकार का होता है। किसी किसी ने निष्पेय, निःचर्व्वण, अचोष्य और अखाद्य इन चार और भेदों को मिलाकर इसको ८ प्रकार का लिखा है।

राजनिघण्टुकार भी चर्व्य आदि भेद से अन्न को ८ प्रकारका लिखते हैं। रा० नि० व० २०। (३) पकाया हुआ (अन्न)। भक्त। भात। **संस्कृत पर्याय**—भक्तं, अन्धः,भिस्सा (अटी), अद्ं, कसिपुः, जीवातुः (ज), कूरं (रा), जीवनकं (हे), कूरं, आपूष्टिकं, जीवंति, प्रमादनं (शब्द र०)। इसको पाँच गुने जल में पकाना चाहिए। अन्न पंच गुण में सिद्ध करणीय है। च० द० ज्वर० चि०। प०प्र० २ ख०। स्विन्न तण्डुल। पक्वचावल (Boiled rice)। यथा—सतुष (भूसीयुक्त) अनाज को धान्य और तुषरहित पक्व को अन्न कहते हैं, खेत में जो हो उसको शस्य और तुषरहित को कच्चा कहा है। वशिष्ठ। जिस प्रकार जलदाम (जल की मात्रा) के अनुसार अन्न के चार भेद होते हैं। उसी प्रकार भक्त, विलेपी, यवागू और पेया भेद से भक्त चार प्रकार का होता है। प्रयोग रत्नाकरः। **अन्न के गुण**—अग्निकारक, पथ्य, तर्पण, मूत्रल, और हलका। **बिना धोया हुआ और बिना माँड निकाला हुआ अन्न**—शीतल, भारी, वृष्य और कफजनक है। **भली प्रकार धोया हुआ अन्न**—उष्ण, विशद और गुणकारक है। **भूजिया चावल का भात**—रुचिकारक,सुगंधि, कफघ्न और हलका है। **अत्यन्त गीला**—ग्लानिकारक और तण्डुलान्वित दुर्जर होता है। मद० व० ११। ६। अम्लधान्य में पकाया हुआ भक्त लघु, अग्निप्रदीपक और रुचिकारक है। वै० निघ०।

मथित युक्त भक्त—स्वादु शीतल, रुचिकारक, अग्निदीपक, पाचक एवं पुष्टिकर है तथा ग्रहणी, अर्श और शूल नाशक है।

रात्रि में खाया हुआ अन्न—रुचिकारक, तृप्तिजनक, दीपन और अर्श का नाश करने वाला है।

मुद्गयूष युक्त अन्न—कफज्वर, और शर्करा मिला हुआ पित्तज्वर में हित है।

लाज भक्त—लघु, शीतल, अग्निजनक, मधुर वृष्य, निद्राकारक, रुचिजनक और व्रणशोधक है।

यवान्न (यव)—भारी, मधुर, वृष्य तथा स्निग्ध है और गुल्म, ज्वर, कण्ठरोग, कास और प्रमेह नाशक है।

खेचरान्न (खिचड़ी)—तर्पण, भारी, वृष्य और धातुवर्धक है।

यौगन्धरान्न (यावनालान्न अर्थात् ज्वार का भात)-भारी, धन तथा काम और श्वास की प्रवृत्ति करने वाला है।

कोद्रवान्न (कोदों का भात)—रुचिकारक, मधुर, प्रमेहनाशक और मूत्र विकार नाशक तथा तृषानाशक है और वमन, कफ, वात एवं दाह नाशक है।

श्यामाकान्न (साँवाँ का भात)—रुचिकर, लघु, रूक्ष, दीपन, बल्य एवं वातकारक है और प्रमेह, गलरोग तथा मूत्रकृच्छ्र नाशक है।

नीवारान्न—रुचिप्रद, लघु, दीपन, गुरु तथा वातकारक है। और यकृत, प्लीहा, श्वास एवं व्रणनाशक है।

कुलत्थान्न (कुलथी)—मधुर, रूक्ष, उष्ण, लघु, पाक में कटु तथा दीपन है और कफ, वात, कृमि रोग और श्वासनाशक है।

माषान्न (उड़द)—दुर्जर (कठिनतापूर्वक पचने वाला), भारी, मांस बर्द्धक और वृष्य तथा वातनाशक है।

शिम्ब्यन्न मधुर तथा रूक्ष है और वात पित्त प्रकोपक है।

वैदलान्न—भारी और रुचिकारक है।

आढक्यन्न (अरहर)—भारी है तथा कफ पित्त नाशक है।

मत्स्यौदन (मीनपक्व भक्त, मछली का पोलाव) कफकारक, त्रिदोषजनक और मन्दाग्निकारक है।

शाकान्न—लेखन, रूक्ष तथा उष्ण है और दोषद्रावक अर्थात् दोषों को पतला करने वाला है।

मांसौदन (मांस सिद्धौदन, मांस का पोलाव)—धातुवर्द्धक, स्निग्ध और भारी है।

फलान्न (फलान्न)—रुचिकारक, भारी और फल के समान गुण वाला है अर्थात् जिस फल में वह तय्यार किया गया है उसी के समान गुण करता है।

साधारण साठी चावल का भात—दीपन, बल्य, पाचन, त्रिदोषनाशक तथा क्षय और विष का नाश करनेवाला है।

नवान्न (नवीन अन्न)—मधुर, स्निग्ध, गुरु तथा मलस्तम्भक अर्थात् मलावरोधक है और रक्त, पित्त नाशक है।

उष्णान्न (गरम)—दीपन, लघु, श्रमकारक तथा मदात्यय, रक्तपित्त, प्रमेह और वातकारक है एवं कास, श्वास, कृमि, आध्मान, गुल्म, जड़ता, क्षत और कास का हरण करनेवाला है।

शीतान्न (शीतल)—शीतल तथा लालास्रावक है और मन्दाग्नि, प्रमेह, मूर्च्छा आदि का हरण करने वाला है। वै० निघ०।

क्लिन्नान्न (गीला अन्न)—दुर्जर (कठिनता से पचने वाला) और ग्लानिकारक है।

(४) वह जो सबको भक्षण वा ग्रहण करे। (Omnivorous) हमा ख़ोर--फ़ा। आकिलुसाइरिल् माकूलात--अ०।

(५) सूर्य्य (The sun).

(६) पृथ्वी (The earth).

(७) प्राण (Prána).

(८) जल (Water).

अन्नअ्नाउल् अख़्ज़र annaānaāul-akhzar—अ० पुदीनारूमी, पुदीनासुम्बुली। Spearmint (Mentha viridis)। म० अ० डॉ० २ भा०।

अन्नअ्नाउल् मुजअ्अद annaānaāul-mujaāāada—अ० पुदीना पेचीदा। (Mentha crispa).

अन्नअ्नाउल् फ़िल्फ़िली annaānáāul-filfilí—अ० पुदीना फ़िल्फ़िली, पुदीना पिप्पली। Peppermint (Mentha piperata).

अन्नअ्नाउल् बर्री annaānáāul-barrí—अ० पुदीना बर्री, अरण्य पुदीना। Horsemint (Mentha sylvestris).

अन्नअ्नाउल् माई annaānáāul-mái—अ० पुदीना नहरी। (Mentha aquatica).

अन्नअ्नाउल् मुस्तदीरुल् औराक़ annaānáāul-mustadírul-ouráqa—अ० गोल पत्रीय पुदीना। (Mentha rotundifolia).

अन्नअ्नाउर्रूमी annaānáāurrúmí—अ० पुदीना रूमी, पुदीना सुम्बुली। Spearmint (Mentha viridis).

अन्नकालः annakálah—सं० पुं० भोजन का समय, आहार काल। रस, दोष तथा मलोंका परिपाक होनेपर जबही क्षुधा प्रतीत हो चाहे वह काल वा अकाल हो वही अन्नकाल अर्थात् भोजन का समय कहा गया है। भा०।

अन्नकोष्ठः annakoshṭhah—सं० पुं० कोठिला, खाता, तण्डुल धान्य आदि सुरक्षित रखने का आधार। (A storehouse) गोला, बराई—बं०।

अन्नगंधिः annagandhih—सं० पुं० अतीसार रोग, मलभेद। हगवण—मह०। (Diarrhœa) त्रिका०।

अन्नजम् annajam—सं० क्लीं० त्रैदिवसिकान्नमण्ड तीन दिन का भक्त मण्ड (भात का माँड़)। तिन दिव साँचीं शिलीपेज—मह०।

अन्नजल annajala } --हिं० पुं० अन्नपानी,
अन्नपानी annapání } खाना पीना। (Victuals & drink.)

अन्नजा annajá–सं० स्त्री० हिक्का का एक भेद। (A kind of hiccup).

लक्षण– अत्यंत अन्न पानी के सेवन करने से एक साथ प्राणवायु दबकर ऊर्ध्वगति होकर (हिक् हिक्) शब्द करती है । उसको वैद्य अन्नजा हिक्का कहते हैं। भा० म० ख० २।

अन्नदोष annadosha–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) अन्न से उत्पन्न विकार। जैसे, दूषित अन्न खाने से रोग इत्यादि का होना। (२) निषिद्ध स्थान वा व्यक्ति का अन्न खाने से उत्पन्न दोष वा पाप।

अन्नद्रवशूलः annadravashúlah–सं० पुं० क्ली० }
अन्नद्रवशूल annadrava-shúla-हिं० संज्ञा पुं० }
परिणामशूल, पेट का वह दर्द जो सदा बना रहे, चाहे अन्न पचे या न पचे और जो पथ्य करने पर भी शांत न हो। लगातार बनी रहने वाली पेट की पीड़ा। इसके लक्षण निम्न प्रकार हैं, जैसे—भोजन के पचने पर या पचते समय अथवा अजीर्ण हो अर्थात् सब काल में जो शूल उत्पन्न हो उसको "अन्नद्रवशूल" कहते हैं। यह पथ्यापथ्य से भोजन करने या नहीं भोजन करने प्रभृति नियमों के द्वारा शांत नहीं होता। इससे तब तक चैन नहीं पड़ता जब तक वमन के द्वारा पित्त निःसरित नहीं हो जाता। मा० नि०। देखो—पङ्क्तिशूलः।

अन्नद्रवशूलनाशक annadrava-shúlanáshaka-हिं० वि० पुं० पंक्तिशूलहर।

अन्नद्रवाख्यः annadravákhyah–सं० पुं० अन्नद्रवशूल। मा० नि०।

अन्नद्वेष annadvesha-हिं० संज्ञा पु० [सं०] [वि० अन्नद्वेषी] अन्न में रुचि न होना। अन्न में अरुचि, भूख न लगना। (Disgust)

अन्नधर कला annadhara-kalá–हिं० स्त्री० (१) (Pyloric valve) आमाशय दक्षिणांश कपाट। (२) (Pyloric sphincter.) आमाशय दक्षिणांश संकोचक।

अन्ननाड़ी anna-nárí–सं० स्त्री० (Œsophagus) अन्नपाक नाड़ी। यह कला एवं पेशी द्वारा निर्मित और २० हाथ लम्बी होती है। इसका काम अन्न पचाना है, इसलिए इसको पाक नाड़ी कहते हैं। इसके ऊपर के भाग का नाम मुख और नीचे का नाम गुदा है। इसमें कण्ठ से आमाशय तक जो भाग है उसको अन्ननाड़ी कहते हैं। आत्रेयः। देखो—अन्नप्रणाली।

अन्ननाली,-डी annanálí–सं० स्त्री० (१) (Alimentary canal with its appendages) अन्नप्रणाली। (२) (Alimentary system) पाचक संस्थान।

अन्नन्नस annannasa–द० अनन्नास। (Ananas sativus) । मो० श०।

अन्नप्रणा (ना) ली annapraná,-ná, lí–सं० स्त्री० अन्ननाड़ी। (Œsophagus, gullet, Digestive tube) मरी-श्रा०।

अन्नप्रणाली annapranálí–हिं० स्त्री० (Œsophagus) गला या कंठसे आरम्भ होकर आमाशय या पाकस्थली पर अंत होने वाली एक नली विशेष। इसकी लम्बाई १० इंच के लगभग होती है; ग्रीवा और वक्ष में होती हुई यह उदर में पहुँचती है और अन्नमार्ग के तीसरे भाग से जा मिलती है। अन्न प्रणाली में किसी प्रकार का पाचक रस नहीं बनता। इस नली का काम केवल भोजन को कंठ से आमाशय तक पहुँचाने का है।

अन्नप्रणाली का अधोभाग annapranalí-ká-adhobhága–हिं० पुं० (Lower end of Œsophagus) आहार के मार्ग का मेदे के ऊपर का हिस्सा।

अन्नप्रणालीपरिखा annapranálí-parikhá–हिं० संज्ञा स्त्री० (Groove for œsophagus) वह नली जिसमें अन्नप्रणाली पड़ी रहती है।

अन्नप्राशनम् annapráshanam–सं० क्ली० }
अन्नप्राशन annapráshana-हिं० संज्ञा पुं० }

छठवें या आठवें महीने बालक का अन्न आहार करना । आ० । बच्चों को पहिले पहिल अन्न चटाने का संस्कार । चटावन । पसनी । पेहनी । (Ceremony of giving Farinaceous food to a baby for the first time).

नोट—स्मृति के अनुसार छठे वा आठवें महीने बालक को और पाँचवें वा सातवें महीने बालिका को पहिले पहिल अन्न चटाना चाहिए ।

अन्नवेदि annabedi—ना० हीराकसीस । (Ferri sulphas) स० फा० इं० ।

अन्नभेदि anna-bhedi—मल०, ते० कसीस, हीराकसीस । Ferri sulphas. (Sulphate of iron or green vitriol) स० फा० इं० ।

अन्नमण्डः annamaṇḍah—सं० पुं० (Rice gruel) माँड़, भक्तमण्ड, मण्ड, भात का माँड़ । भातेर माड़—बं० । देखो—मण्डः (Maṇḍah) । गुण—क्षुद्बोधक (क्षुधा पैदा करता), वस्तिविशोधक (मूत्रल), प्राणप्रद तथा शोणितवर्द्धक है । ज्वरनाशक, कफ पित्त नाशक और वायु नाशक है । ये आठ गुण मण्ड (माँड़) में पाए जाते हैं । च० द० अग्निमां० चि० ।

अन्नमयः annamayah—सं० पुं० (Physical body) स्थूल शरीर । देखो—शरीर ।

अन्नमयकोशः anna-maya-koshah—सं० पुं० (Physical body) वेदांत के अनुसार पञ्च कोषोंमें से अन्तिम (पाँचवाँ) कोश विशेष । (यह पञ्चतत्वमय तथा त्रिगुणात्मक होता है) अन्न से बना हुआ त्वचा से लेकर वीर्य्य तक का समुदाय । स्थूल शरीर । देखो—शरीर ।

अन्नमल annamala—हिं० संज्ञा पुं०
अन्नमलम् annamalam—सं० क्ली०

(१) पुरीष मल, विष्ठा (Excrement, Fæces) । (२) मद्य, सुरा, यव आदि अन्नोंसे बनी शराब । (Wine) वै० श० ।

अन्नमार्ग anna-márga—हिं० संज्ञा पुं० आहार पथ, अन्नपाक नाड़ी । कनात् ग़िज़ाइय्यह्, कनात हज़्मिय्यह्—अ० । ग़िज़ा या हज़्म की नाली—उ० ।

एलिमेण्टरी कैनाल (Alimentary canal), डाइजेस्टिव ट्रैक्ट (Digestive tract)—इं० ।

शरीर की नलियों में से वह जिसमें पचने तक भुक्त पदार्थ रहता है । यह नली बहुत लम्बी होती है । इसका आरम्भ मुख से होता है । और इसका अन्त नीचे जाकर मलद्वार पर होता है । प्रौढ़ावस्था में मुख से मलद्वार तक अन्नमार्ग की लम्बाई २८-२९ फ़ुट (नौ दस गज) के लगभग होती है ।

अन्नरसः anna-rasah—सं० पुं० (१) (Rice-gruel) मण्ड, माँड़, भात का माँड़, भक्तमण्ड । वै० श० । (२) आहार-रस । (Chyle).

अन्नलिप्सा anna-lipsá—सं० स्त्री० अन्न भोजन(खाने) की इच्छा, भूख, क्षुधा । (Appetite, Hunger) वै० निघ० । "प्रकृति गामिमनोऽन्नलिप्सा ।" च० द० ।

अन्नवहा annavahá—सं० स्त्री० धमनी युगल, अन्नवाहि स्रोत द्वय (इनकी जड़ आमाशय और अन्नवाहिनी धमनी हैं) । इनसे भोजन किया हुआ अन्न उदर में पहुँचाया जाता है । सु० शा० ९ अ० ।

अन्नवाहि स्रोतः anna-váhi-srotah—सं० क्ली० गलनाड़ी, अन्नप्रणाली, कंठनलिका । (Esophagus) गलार नली—बं० । वै० श० ।

अन्नविकारः anna-vikárah—सं० पुं०
अन्नविकार anna-vikára—हिं० संज्ञा पुं०

(१) विष्ठा, मल (Excrement, Fæces) । (२) शुक्र, वीर्य (Seminal secretion, semen) । (३) भक्तविकृति, Rice gruel) मण्ड, मांड़ । (४ अन्न का परिवर्तित रूप । अन्न पचनेसे क्रमशः बनेहुए रस, रक्त, मांस, मज्जा, चरबी, हड्डी और शुक्र आदि ।

अन्नविपाक नाड़ी anna-vipákanárí-सं० स्त्री० (Œsophagus) अन्ननाड़ी, पाकनाड़ी, अन्न प्रणाली। आत्रेयः।

अन्नशेषः anna-sheshah-सं० पुं० उच्छिष्टान्न, जूठा, छोड़ा हुआ भोजन। एटों भात-बं०। (Food left or rejected).

अन्नहीन annahína-हिं० वि० अन्न रहित। (Destitute of food).

अन्ना anná-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० अम्ब] (१) धात्रिपति (The husband of a nurse)। (२) धात्री, धाय, दाई, दूध पिलाने वाली स्त्री (A midwife)। [सं० अग्नि] एक छोटी अँगीठी वा बोरसी जिसमें सुनार सोना आदि रखकर भाथी के द्वारा तपाते वा गलाते हैं।

अन्नाजीर्णम् annájírṇam-सं० क्लो० (१) आमाजीर्ण, भुक्त अन्न का अजीर्ण। भा० म० १ भा० आमातीसा०। "अन्नाजीर्णात्प्रद्रुताः क्षोभयन्तः।" (२) तन्नामक शूलरोग।

अन्नाद annáda-हिं० वि० अन्न खानेवाला, अन्नाहारी।

अन्नाद्यम् annádyam-सं० क्लो० (१) अन्न, भात। रा० नि० व० २०। (२) धान्य।

अन्नाभेदि annábhedi-कना० हीराकसीस, कसीस-हिं०। (Ferri sulphas)-ले०। स० फा० इं०।

अन्नावृत वायुः annávrita-váyuh-सं० पुं० वायु के अन्नसे आवृत्त होनेपर भोजन करनेसे कुक्षि में शूल होता है और अन्न के पचने पर वेदना की शांति होती है। "भुक्तेकुक्षौरुजा जीर्णे शाम्यत्यन्नावृतेऽनले।" वा० नि० अ० १६।

अन्नाशयः annáṣhayah-सं० पुं० उदर। (Abdomen).

अन्नास annása-द०
अन्नासि annási-सिं०
अन्निनस anninas-गु०
} अनन्नास। (Ananas sativus, *Mill.*) स० फा० इं०।

अन्नी anní-हिं० स्त्री० दाई, धात्री। (A nurse or female attendant on a child).

अन्नेटो annatto-इं० सेन्दूरिया-हिं०। लटकन-बं०। (Bixa orellana)-ले० इं० मे० मे०। फॉ० इं० १ भा०।

अन्नेटोबुश annatto-bush-इं० सेन्दूरिआ-हिं०। (Bixa orellana, *Linn.*)-ले०। फॉ० इं० १ भा०।

अन्नेस्ली स्पाइनस anneslea, spinous-इं० मखाना। इं० हैं० गा०।

अन्नेस्ली स्पाइनोसा anneslea, spinosa *Dr. Wall.* Included by Prof. Lindley in plants "imperfectly known"-ले० मखाना। एक अप्रसिद्ध क्षुप है। इं० हैं० गा०।

अन्नोदवहा annodavahá-सं० स्त्री० अन्न और जल को भीतर ले जाने वाली नली।

अन्पल anpal-मल० कँवल, छोटा कमल, कुइबेरा, कुमुदिनी-हिं०। नीलोफ़र-अ०, फ़ा०। (Nymphæa Edulis, *D. C.*) स० फा० इं०।

अन्पाज़म anpázham-मल० अमड़ा, अम्बाड़ा, आम्रातक, आमूरेका पेड़-हिं०। (Spondias mangifera, *Pers.*) स० फा० इं०।

अन्फ़ anf-अ० (Nose) नासिका-हिं०। इसके बहुवचन निम्न हैं, यथा-आनाफ़, उनूफ़ आनिफ़।

अन्फ़क़ह् anfaqah-अ० दाढ़ीकी बच्ची, निम्नोष्ठ और चिबुक के मध्य के केश।

अन्फ़ख़ anfakh-अ० प्रदाह युक्त प्राणी, वह मनुष्य जिसके अण्डकोष में प्रदाह हुआ हो।

अन्फ़स् anfas-अ० भ्रूणबाह्यावरण। (Chorion).

अन्फ़ुल्बर्द anfulbarda-अ० शीताधिक्य, ठंडककी अधिकता। (Excessive cold).

अन्मस anmasa-गु० वस्ति-हिं०। मसानह-अ०। (Bladder)-इं०।

अन्मिल annila
अन्मेल anmela } विरुद्ध, विपरीत। (Heterogenous).

अन्मिलह anmilah–अ० अंगुल्याग्र, अंगुली का अग्र पोर्वा। इसके बहुवचन–अन्मिलात वा अनामिल हैं। (The top of the finger.)

अन्य anya–हिं० वि० भिन्न, पृथक, पर। (Another, different.)

अन्यकारुका anya-káruká–सं० स्त्री० शकृत् कीट, पुरीषज कृमि, पाखाने का कीड़ा। हारा०।

अन्यतः anyatah–हिं० क्रि० वि० [सं०] (१) किसी और से। (२) किसी और स्थान से, कहीं और से।

अन्यत्र anyatra–हिं० वि० [सं०] और कहीं (जगह),स्थानान्तर। दूसरी जगह।

अन्यतोपाक anyatopáka–हिं० संज्ञा पुं० [सं० अन्यतोवात] दाढ़ों, कान, भौं इत्यादि में वायु के प्रवेश होने के कारण आँखों की पीड़ा।

अन्यतोवातः anyatovátah–सं० पुं० अक्षिगत रोग विशेष (An eye-disease.)। जो वायु निज स्थित स्थान से अन्यत्र वेदना उत्पन्न करे उसे "अन्यतोवात" कहते हैं, जैसे—घांटी, कान, शिर, हनु और मन्या (गर्दन) की नसों में अथवा अन्य स्थानों में स्थित वायु भौंवों अथवा नेत्रों में तोद, भेद आदि पीड़ा करता है। मा० नि० नेत्रसर्वगत रो०।

अन्यपुष्टः anyapushṭah–सं० पुं०
अन्यपुष्ट anyapushṭa–हिं० संज्ञा पुं० } [स्त्री० अन्यपुष्टा] (१) वह जिसका पोषण अन्य के द्वारा हुआ हो। कोइल, काकपाली, कोकिल। The black or Indian Cuckoo (Cuculus)।

नोट—ऐसा कहा जाता है कि कोयल अपने अंडों को सेने के लिए कौवों के घोंसलों में रख आती है।

(२) परपालित, दूसरों के द्वारा पालित।

अन्यपूर्वा anya-púrvá–सं० स्त्री० दो बार ब्याही हुई। (Twice married.) वह कन्या जो एक को ब्याही जाकर वा वाग्दत्त होकर फिर दूसरे से ब्याही जाए। इसके दो भेद हैं—पुनर्भू और स्वैरिणी।

अन्यभृत् anya-bhrit–सं० पुं० (१) कोकिल, कोयल (Cuckoo)। हला०। (२) काक (a crow)। हे० च०।

अन्यभृतः anya-bhritah–सं० पुं० कोकिल, कोयल (A cuckoo)। रत्ना०।

अन्यलोहम् anya-loham–सं० क्लो० (Bronze) कांस्यधातु, काँसा। वै० निघ०।

अन्या anyá–सं० स्त्री० हरीतकी, हरड़ (Terminalia Chebula.)। वै० निघ०।

अन्याब anyáb–अ० (ब० व०), नाब (ए० व०) रदनक (Canine tooth)।

अन्येद्यु anyedyu–हिं० क्रि० वि० [सं०] [वि० अन्येद्युक] दूसरे दिन।

अन्येद्युक anyedyuka–हिं० वि० [सं०] दूसरे दिन होने वाला।

अन्येद्युष्कः anyedyushkah–सं० पुं०
अन्येद्युःज्वर anyedyuh-jvara–हिं० संज्ञा पुं० } उरस्थ श्लेष्मजन्य ज्वर विशेष। वह ज्वर जो दिन रात्रि में एक समय आता है। मा० नि०। यह एक प्रकारका मलेरिया (विषम वा शीतपूर्व) ज्वर है जिसका दौरा हर रोज़ होता है। उक्त ज्वर में एक बारी से दूसरी बारी तक २४ घंटे अर्थात् एक दिन का अन्तर पड़ता है। इसलिए इसको रोज़ाना का बुख़ार (आह्निक ज्वर) भी कहते हैं। वर्षा ऋतु के बाद होने के कारण इस को मौसमी या फ़सली बुख़ार भी कहते हैं। एकाहिक तप, एकतरा, जाड़ा बुख़ार–हिं०। रोज़ाना नौबती बुख़ार–उ०। तपे हररोज़–फ़ा०। नायब, हुम्मा मुवाज़िबह्–अ०। कोटिडियन फीवर (Quotidian Fever)–इं०।

अन्योदर्य anyodarya–हिं० वि० [सं०] [स्त्री० अन्योदर्या] दूसरे के पेट से पैदा। 'सहोदर' का उलटा।

अन्योन्य anyonya–हिं० सर्व० [सं०]परस्पर, उभयतः। (Reciprocal, mutual).

अन्योन्यलङ्घनम् anyonya-langhanam

-सं० क्लो० (Decussation) परस्पर एक दूसरेको पार करना (काटना)।

अन्योन्याश्रय anyonyáshraya-हिं० पुं० सापेक्ष, परस्परका सहारा। एक दूसरेकी अपेक्षा।

अन्वय anvaya-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अन्वयी]। (१) परस्पर सम्बन्ध,। तारतम्य। (२) संयोग। मेल। (३) वंश। खानदान।

अन्वह anvah-हिं० पुं० नित्य, प्रतिदिन। (Every day).

अन्वाम anváma-अ० (बहु० व०), नौम (ए० व०)। निद्रा। नींद। (Sleep, narcosis, stupor).

अन्वाशनम् anváshanam-सं० क्ली० (१) कर्म्मशाला। हला०। (२) स्नेह वस्ति (Oily enemata)। देखो—अनुवासन वस्तिः।

अन्वासन anvásana-हिं० पुं०
अन्वासनम् anvásanam-सं० क्लो०
अनुवासन, स्नेहवस्ति। (Oily enemata).

अन्वाहिकः anváhikah-सं० त्रि० प्रात्यहिक, प्रति दैनिक, रोजाना। (Daily, quotidian.)

अन्वित anvita-हिं० वि० [सं०] युक्त, मिला हुआ, सहित, शामिल।

अन्शर anshara-अ० मदार, आक। (Calotropis gigantea).

अन्स áansa-अ० अर्जुन। (Terminalia Tomentosa or Arjuna)

अन्सल áansal
अन्सलान áansalána
-अ० विलायती काँदा। विलायती जंगली काँदा-हिं०। पियाज़े दश्ती-फ़ा०। Scilla (Squill) स० फा० इं०। देखो—अरण्य पलाण्डुः।

अन्सले-हिंदी áansale-hindí-अ० काँदा, जंगली पियाज़-हिं०। पियाज़े दश्ती हिन्दी--फ़ा० Urginea Indica, *Kunth.*; Scilla Indica, *Roxb.* (Bulb of-Indian Squill) स० फा० इं०। देखो—अरण्य पलाण्डुः।

अनसण्ड्रा ansandrá-तेल० खैर-नैपा०। वेल-वैलम्-ता०। (Acacia-Ferruginea, *D. C.*)।

अन्सारिशा ansárishá-बं० हुलहुल। आदित्य-भक्ता। (Cleome Pentaphylla). इं० मे० प्लां।

अनहैलोनियम् anhalonium-लै० मस्केल बटन्स (Muscale Buttons).

अनहैलोनियम लीवीनिआई Anhalonium lewinii-लै०।

(N. O. Cactaceæ)

उत्पत्तिस्थान—वेस्ट इण्डीज़।

प्रयोगांश—पुष्प।

इंद्रिय व्यापारिक कार्य—इसका प्रारम्भिक प्रभाव अवसादक होता है। इससे नाड़ी-स्पन्दन निर्बल एवं शिथिल होजाता है। (प्रायः ४० प्रति मिनट से न्यून) और शरीर वाह्य तल शीतल पड़ जाता है। प्रहर्षण (या शिश्नोत्थान) बिना वीर्य स्खलित होता है।

उपयोग—सिरिअस (Cereus grandiflorus and cereus "cactus" bonplandii) की अपेक्षा यह कहीं उत्तम हृदोत्तेजक तथा उत्तम घन हृदयबलप्रद औषधि है। उग्र हृच्छूल, फुफ्फुसौप, श्वासावरोध में कदाचित् २ या ३ बुंद इसके तरल सत्वको जब तक कि लाभ प्रदर्शित न हो, कभी कभी उपयोग में लाना चाहिए; तदनन्तर बढ़ाने के स्थान में थोड़ी मात्रा उपयोग में ला सकते हैं। इसके उपयोग से उत्थान बिना वीर्य स्खलित होने लगता है। अस्तु, उक्त अवस्थाओं में इसके विरामरहित अधिक कालीन उपयोग से बचना चाहिए। अधिक वातल प्रकृति वाले व्यक्तियों में इसका उपयोग चतुरतापूर्वक करना चाहिए। शिथिल (कफ), लसीका या रक्त प्रकृति वालों में यह अधिक स्वतन्त्रतापूर्वक उपयोग में लाइ जा

सकती है। डिजिटेलिस की यह उत्तम सहायक औषधि है। (पी० वी० एम०)

अन्वान्त्रयम् anvántrayam-सं० क्ली० आँतों में उत्पन्न होने वाले विशूचिका के कीड़े। अथर्व०। सू० ३१। ५। का० २।

अन्वीक्षण anvíkshana-हिं० संज्ञा पुं०[सं०] (१) ध्यान से देखना। गौर। विचार। (२) अनुसंधान। तलाश।

अन्वीक्षा anvíkshá-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] (१) ध्यानपूर्वक देखना। (२) खोज, ढूँढ़, तलाश।

अप apa-उप० [सं०] उलटा; विरुद्ध, बुरा, अधिक। यह उपसर्ग जिस शब्द के पहिले आता है उसके अर्थ में निम्न लिखित विशेषता उत्पन्न करता है।

(१) निषेध। उ०-अपकार। अपमान।

(२) अपकृष्ट (दूषण)। उ०-अपकर्म। अपकीर्ति।

(३) विकृति। उ०-अपकुक्षि। अपांग।

(४) विशेषता। उ०-अपकलंक। अपहरण।

अपक apaka-हिं० संज्ञा पुं०[सं० अप्=जल] पानी, जल। -डिं०।

अपकर्ष apakarsha }
अपकर्षण apakarshana } -हिं०संज्ञा पुं०

(१)नीचेको खींचना, गिराना, टानना। (२) बहिर नायन, शरीर की मध्य रेखा से दूर लेजाना। Abduction, Drawing away from the median line). (३) निराकरण हटाया जाना। (Repulsion).

अपकर्षणी apakarshaní-सं० स्त्री०(Abductor). बहिरनायनी, शरीर की मध्य रेखा से दूर ले जाने वाली।

अपक्क apakka }
अपक apaka } -हिं० वि० कच्चा, अपूर्ण। (Raw, unripe, imperfect, immature.)

अपक्कता apakkatá-हिं० स्त्री० अपक्कता, कच्चापन। (Immaturity).

अपक्रम apakrama-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] भागना, छूटना। व्यतिक्रम. क्रमभंग, अनियम।

अपक्रीता apakrítá-सं० त्रि० दूर देश से द्रव्य के बल से प्राप्त की गई। अथर्व०। सू० ७। ११। का० ८।

अपक्वः apakvah-सं० त्रि० }
अपक्व apakva-हिं० वि० } (१) (Unripe) बिना पका हुआ, आम, अशृत, अपक्क, कच्चा, असिद्ध। प० प्र०। (२) (Undigested) बिना पचा, अनात्मीकृत।

अपक्व कदली apakva-kadalí-सं० स्त्री० (Unripe-plantain)अपक्क रम्भा, कच्ची कदली(केला)। जुग केलें-मह०। काँचा कला -बं०। गुण--कच्चा केला मलस्तम्भ करने वाला अर्थात् काबिज़, तिक्त, कषेला, स्वादयुक्त तथा रूक्ष एवं रक्तपित्त और तृषानाशक है। प्रमेह, नेत्ररोग, रक्तातिसार तथा ज्वर नाशक है। वै० निघ०।

अपक्वमांसम् apakva-mánsam-सं० क्ली० (Raw-flesh) असिद्ध मांस, कच्चा मांस। गुण--कच्चा मांस रक्तदोषकारक और वातादि दोष जनक है ऐसा मांसविदों का मत है। वै० निघ०।

अपक्व वस्तु apakva-vastu-सं० क्लो० (Raw objects) असिद्ध वा अशृत वस्तु। र० मा०।

अपक्वक्षीरम् apakva-kshíram-सं० क्लो० (Nonboiled-milk) अपक्क दुग्ध, कच्चा दूध। गुण—यह अभिष्यन्दी और भारी होता है।

अपग apaga-अ० कली का चूना, अशांत चूर्ण। (Calx, Lime, quick lime). इं० मे० मे०।

अपगत apagata-हिं० वि० [सं०] (१)दूर गया हुआ, दूरीभूत, हटा हुआ, गत। (२) पलायित, भागा हुआ, पलटा हुआ। (३) मृत, नष्ट।

अपगमनम् apagamanam } --सं० पुं०,
अपगम apagama } हिं० पुं०
(१) वियोग, अलग होना। (२) दूर होना, भागना। (Diverging).

अपगामितन्तुः apagámi-tantuh--सं० पुं० चेष्टा वहा नाड़ी (Efferent Fibre)।

अपघनः apaghanah--सं० पुं० अङ्ग, शरीरावयव। (An organ) अम०।

अपघातः apaghátah--सं० पुं० अस्वाभाविक मरण। हत्या, बध, मारना, हिंसा।

अपघातक apaghátaka } -हिं० वि०[सं०]
अपघाती apagháti }
घातक, विनाशक, विनाश करने वाला।

अपगा apagá--सं० वि० अन्यत्र जाने वाला। अथर्व। सू० ३०। २। का० २।

अपंग apanga--हिं० वि० [सं० अपांग = हीनांग] (१) अंगहीन, न्यूनांग। (२) लँगड़ा, लूला।

अ (ओ) पङ्ग a-o-pang-बं० अपामार्ग, चिरचिरा। (Achyranthes Aspera, *Linn.*)

अपच apacha-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] न पचनेका रोग। अजीर्ण। बदहज़मी। (Dyspepsia)

अपचय apachaya-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] टोटा, घाटा, क्षति, हानि (Loss, detriment)। (२) व्यय, कमी, नाश।

अपचायितः apacháyitah-सं० पुं० रोग, व्याधि (Disease)।

अपचारः apachárah-सं० पुं० }
अपचार apachára-हिं० पुं० }
(१) अजीर्ण (Dyspepsia.)। (२) दोष, भूल। (३) कुपथ्य। स्वास्थ्यनाशक व्यवहार। (४) कुव्यवहार (An error).

अपचिताम् apachitám-सं० स्त्री० अप बुरे माद्दे के संचय से उत्पन्न। अथर्व०। सू० २५। १ का० ६।

अपची apachí-सं० स्त्री० (a kind of Scrofula) गण्डमाला नाम के कंठ रोग का एक भेद। कंठमाला की वह अवस्था जब गाँठें पुरानी होकर पक जाती हैं और जगह जगह पर फोड़े निकलते और बहने लगते हैं। इसके लक्षण—ठोड़ी की अस्थि, काँख, नेत्र के कोये, भुजा की संधि, कनपुटी और गला इन स्थानों में मेद और कफ (दूषित हो) स्थिर, गोल, चौड़ी, फैली, चिकनी, अल्प पीड़ा वाली ग्रंथि उत्पन्न करते हैं। आमले की गुठली जैसी गाँठें करके तथा मछली के अण्डों के जाल जैसी त्वचाके वर्ण की अन्य गाँठें करके उपचीयमान (संचित) होता है इससे चय (संचय) की उत्कर्षता से इसे अपची कहते हैं।

यह अपची रोग खाज युक्त होता है, और अल्प पीड़ा होती है। इनमें से कोई तो फूटकर बहने लग जाते हैं और कोई स्वयं नाश हो जाते हैं, यह रोग मेद और कफ से होता है। यदि यह कई वर्षों का हो जाए तो नहीं जाता। सु० नि० ११ अ०। अथ०। सू० ८३। ३। का० ६।

चिकित्सा—

इस रोग में वमन विरेचन के द्वारा ऊपर और नीचे के अंगों का शोधन करके दन्ती, द्रवन्ती, निशोथ, कोसातकी (कड़वी तरोई) और देवदाली इन सब द्रव्यों के साथ सिद्ध किया हुआ घृत पान करना चाहिए। कफ मेद नाशक धूप, गण्डूष और नस्य का प्रयोग हितकारी है। नस (शिरा) में नश्तर लगाकर रुधिर निकालें और गोमूत्र में रसौत मिलाकर पान कराएँ।

अपची नाशक तैल

(१) कलिहारी की जड़ का कल्क १ मा०, तेल ४ मा०, निर्गुण्डी का स्वरस ४ भाग। इन सबको विधिवत् पकाएँ। नस्य द्वारा इसका सेवन करने से अपची रोग छूट जाता है।

(२) वच, हड़, लाख, कुटकी, चन्दन इनके कल्क के साथ सिद्ध किया हुआ तेल पान करने से अपची निर्मूल होती है।

(३) गौ, मेंढा और घोड़े के खुर जलाकर राख करलें। इसे कड़वे तैल में मिलाकर अपची पर लेप करें।

(४) काला सर्प वा अपने आप मरा हुआ कौवा इनकी राख को इंगुदी के तेल में मिलाकर लेप करनेसे विशेष लाभ होता है। वा० उ० अ० ३० ।

अपच्छी apachchhí हिं० संज्ञा पुं० [सं० अ=नहीं+पक्षी=पक्ष वाला] विरोधी, विपक्षी, शत्रु वि० बिना पंख का, पक्ष रहित ।

अपजात apajáta-सं० पुं० वह संतान जो पिताके अधम गुण रखती हो। अथर्व० । सू० ६ । का० ८ ।

अपञ्चीकृत apanchíkrita-हिं० वि० पुं० सूक्ष्म भूत ।

अपटक apaṭaka-हिं० वि० पुं० हस्तपाद पक्षाघात ग्रस्त (वातग्रस्त) । (Paralytic)

अपटन apaṭana-हिं० संज्ञा पुं० देखो—उब-टन ।

अपटुः apaṭuh-सं० त्रि० अपटु-हिं० वि० (१) रोगी, बीमार (Diseased) । रा० नि० व० २० । (२) निर्बुद्धि, अनाड़ी ।

अपडा apaḍá-सं० स्त्री० अश्मन्तकवृक्ष । See-Aṣbmantaka,-kah-

अपण्य apaṇya-हिं० वि० [सं०] न बेचने योग्य ।

अपतन्त्रः apatantrah
अपतन्त्रकः apatantrakah } -सं० पुं०

स्वनामाख्यात वातव्याधि विशेष । एक रोग जिसमें शरीर टेढ़ा हो जाता है। लक्षण—अपने कारणों (रूक्षादि) से प्रकुपित हुई वायु यदि अपने निज स्थान को छोड़ ऊपर जाकर हृदय को पीड़ित करे, फिर मस्तक और कनपुटियों में पीड़ा करे, शरीर को धनुष के समान टेढ़ा कर दे तथा कम्पित करे और चित्त को मोहयुक्त करदे, रोगी बड़े कष्ट से श्वास ले, आँखें चढ़ी रहें अथवा उपर को लगी रहें, कबूतर के समान शब्द करे और बेसुध हो जाए, तो उसको अपतन्त्रक रोग कहते हैं। मा० नि० वा० व्या० ।

चिकित्सा—अपतन्त्रसे पीड़ित मनुष्यकी तृप्ति विरुद्ध क्रिया न करें और कभी भी निरूहवस्ति तथा वमन का सेवन न कराएँ; परन्तु कफ तथा वायुसे घिरी हुई उन श्वास को चलाने वाली नाड़ियों को तीक्ष्ण प्रधमन (तीक्ष्ण चूर्ण का नस्य) देकर खोल दें। नाड़ियों के खुल जाने से रोगी संज्ञा को प्राप्त होता है।

अपतर्पण apatarpana-हिं० पुं० भूखा रहना, लंघन। (Fasting).

अपत apata-हिं० वि० [सं० अ=नहीं+पत्र, प्रा० पत्त, हिं० पत्ता] (१) पत्र हीन । बिना पत्तों का । (२) आच्छादनरहित, नग्न ।

अपतिः apatih-सं० स्त्री० पतिहीन । अथर्व० ।

अपतर्पणम् apatarpanam-सं० क्लीं० (१) अपतर्पण, लङ्घन, तृप्त्यभाव, भूखा रहना, उपवास करना । (२) कार्श्य, कृशीकरण, स्थौल्य-हरण, स्थूलता को दूर करना, दुर्बल करना। यह दो प्रकार की चिकित्साओं में से एक है । इसका उलटा संतर्पण (बृंहण) है। अग्नि, वायु और आकाशात्मक पदार्थ अर्थात् उक्त महाभूतों से उत्पन्न हुई औषध अप-तर्पण होती हैं। इसके दो भेद होते हैं—(१) शोधनापतर्पण । वह जो शरीरस्थ वातादिक दोषों को बाहर निकाल देता है। ये पाँच प्रकार के होते हैं, यथा—१-निरूह (गुदा में पिचकारी लगाना), २-वमन, ३-विरेचन, ४-शिरो विरे-चन और ५ रक्तस्रुति (फ़स्द खोलना)। (२) शमनापतर्पण—वह औषध जो शरीरस्थ वातादिक दोषों को बाहर नहीं निकालती और अपने प्रमाण से स्थित वातादिक दोषों को उत्क्लेपित भी नहीं करती, प्रत्युत विषम दोषों को समान भाव में ले आती है। उसको संशमन औषध कहते हैं। यह सात प्रकार की होती है, यथा—पाचन, दीपन, क्षुधानिग्रह, तृष्णानिग्रह, व्यायाम, आतप और वायु। वा० सू० अ० १४ । हारा० । च० द० रक्तपित्त-चि० ।

(३) व्रण के उपशमनार्थ प्रारम्भिक उपक्रम । सु० चि० १ अ० ।

अपतानः apatánah
अपतानकः apatánakah } -सं० पुं०, हिं० संज्ञा पुं०

स्वनामाख्यात वातव्याधि रोग विशेष एक रोग जो स्त्रियों को गर्भपात तथा पुरुषों को विशेष रुधिर निकलने वा भारी चोट लगने से हो जाता है। इसमें बारबार मूर्च्छा आती है और नेत्र फटते हैं तथा कंठ में कफ एकत्रित होकर घरघराहट का शब्द करता है।

लक्षण—वायु कुपित होकर मनुष्य की दृष्टि-शक्ति एवं संज्ञा को नष्ट कर देती, कण्ठ में घुरघुर शब्द करती है और जब वायु हृदयको त्याग देती है तब सुख होता है और जब पकड़ लेती है तब फिर बेहोशी हो जाती है। इस दारुण रोग को अपतानक कहते हैं। मा० नि० वा० व्या०।

असाध्यता—गर्भ की उत्पत्ति से एवं रुधिरके बहुत निकलने से उत्पन्न हुआ और अभिघात से उत्पन्न हुआ "अपतानक" नहीं आरोग्य होता।

चिकित्सा—अपतानक रोगसे पीड़ित मनुष्यों के नेत्रों में से यदि पानी बहता हो, कम्प नहीं होता हो और खाटपर न पड़ा हो तो इसमें पहले ही तत्काल चिकित्सा करनी चाहिए। दशमूल डालकर पकाया हुआ पानी अपतानक रोगी के लिए हित है। तैल की मालिश, स्वेद और तीक्ष्ण नस्य द्वारा स्रोतोंके शोधन के पश्चात् घी पिलाना हितकारक है। विशेष देखो—वात व्याधि।

अपत्यम् apatyam--सं० क्लो०
अपत्य apatya--हिं० संज्ञा पुं०

सन्तान, पुत्र वा कन्या। (Offspring, male or female).

अपत्यकामा apatyakámá--हिं० त्रि० स्त्री० पुत्र की इच्छा रखने वाली।

अपत्यजीवः apatya-jívah--सं० पुं० (Putranjiva Roxburghii) पुत्र जीव वृक्ष। जियापुता गाछ-बं०। रा० नि० व० ६। देखो—पुत्रजी (आ) वः।

अपत्यदा apatyadá--सं० स्त्री० पुत्रदालता, लक्ष्मणा। (see-putradá)। रा० नि० व० ४।

अपत्यपथः apatya-pathah--सं० पुं० योनि (Vagina)। हे० च०।

अपत्यशत्रुः apatya-shatruh--सं० पुं०, हिं० संज्ञा पुं० जिसका शत्रु अपत्य वा संतान हो। कर्कट, केंकड़ा। (Crab) श० च०।

नोट—अंडा देने के बाद केकड़ी का पेट फट जाता है और वह मर जाती है। (२) अपत्य का शत्रु। वह जो अपने अंडे बच्चे खाजाए। साँप।

अपत्यसिद्धिकृत् apatya-siddhi-krit--सं० पुं० (Putrajiva Roxburghii) पुत्र जीव वृक्ष। देखो—पुत्रजीवः। वै० निघ०।

अपत्र apatra--हिं० वि० पत्र रहित, बिना पत्तों का।

अपत्रवल्लिका apatra-vallíká--सं० स्त्री० महिषवल्ली, सोमलता विशेष। लघु सोमवल्ली -म०। रा०नि०व० ३। See--Mahisha-vallí

अपत्रा apatrá--सं० स्त्री० पुष्प वृक्ष विशेष। महाराष्ट्र में यह "नेवती" नाम से प्रसिद्ध है। वै० निघ०।

अपतृष्णा apatrishná--सं० स्त्री० व्यर्थ लालच।

अपथम् apatham--सं० क्ली० अपथ-हिं० संज्ञा पुं० (१) योनि। (Vagina) श० र०। (२) कुमार्ग, बुरारास्ता। (A bad road)

अपथ्यम् apthyam--सं० त्रि०
अपथ्य apathya--हिं० त्रि०

जो पथ्य न हो। स्वास्थ्यनाशक। (Indigestible, unwholesome)।

सं० क्ली०, हिं० संज्ञा पुं० (१) व्यवहार जो स्वास्थ्य को हानिकर हो। रोग बढ़ाने वाला आहार विहार।

(२) अहितकर वस्तु। रोग बढ़ाने वाला भोजन।

अपथ्य ज्वरः apathya-jvarah--सं० पुं० कुपथ्य से होने वाला ज्वर। अपथ्य और मद्य-

जन्य हेतु ज्वर के हेतु पित्त को प्रकुपित करते हैं, जिससे दाह, शैत्य, शिरःशूल और कांष्ठ की वृद्धि, तीव्र वेदना, खुजली, मल का अधिक निकलना अथवा उसका अत्यन्त बंध जाना आदि लक्षण अपथ्य जन्य ज्वर में होते हैं। वै० निघ० २ भा० ज्व० ।

अपद apada–हिं० वि० } पादहीन,
अपदः apadah–सं० त्रि० } पंगु, कर्मच्युत (Lame)। –पुं० बिना पैर के रेंगने वाले जंतु। जैसे, (१) सर्प, केंचुआ, जोंक आदि। (२) सर्प (Snake)।

अपदरुहा apada-ruhá } –सं० स्त्री०
अपदरोहिणी apadarohiní } वन्दा। वांदरा–बं०। बादांगुल–म०। व० निघ०। A parasite plant (Epidendrum tessellatum.)

अपदस्थ apadastha–हिं० वि० कर्मच्युत, पदच्युत।

अपदारथ apadáratha–हिं० पुं० अयोग्य वस्तु।

अपदेवता apadevatá–सं० स्त्री०, हिं० संज्ञा पुं० प्रेत, पिशाचादि। दुष्ट देव। दैत्य। राक्षस असुर।

अपदेशः apadeshah–सं० (हिं० संज्ञा) पुं० "अनेन कारणेनेत्यपदेशः" अर्थात् इस कारणसे यह होता है इसे "अपदेश" कहते हैं। जैसे कहते हैं कि मीठा खाने से कफ बढ़ता है अर्थात् कफ वृद्धि का हेतु मधुर रस है। सु० उ० ६५ अ० १३ श्लो०।

अपद्रव्य apadravya–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] निकृष्ट वस्तु। बुरी चीज़। कुद्रव्य। कुवस्तु।

अपध्वंसक apadhvansaka–हिं० वि० (१)घिनौना। (२) नाश करने वाला, क्षयकारी।

अपनयन apanayana–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अपनीत] (१) दूर करना। हटाना। (२) स्थानांतरित करना। एक स्थान से दूसरे स्थान पर लेजाना। (३) खंडन।

अपनीत apauíta–हिं० वि० [सं०] दूर किया हुआ। हटाया हुआ। निकाला हुआ।

अपवश्य apabashya } -हिं० वि० पुं०
अपवस-श apabasa,-sha } स्वाधीन, मन्मुखी (Independent)।

अपवाहुकः apabáhukah–सं० पुं० }
अपवाहुक apabáhuka–हिं० संज्ञा पुं० } एक रोग जिसमें बाहुकी नसें मारी जाती हैं और बाहु बेकाम हो जाता है। अपवाहुक, वात कफ जन्य अंसगत वात व्याधि, भुजस्तम्भ रोग विशेष। लक्षण—कंधे अथवा खवों में रहने वाली वायु खवों के बंधन को सुखा देती है। उस के बंधन के सूखने से अत्यंत वेदनावाला अपवाहुक रोग उत्पन्न होता है। मा० नि०। बाहु में रहने वाली वायु उस में रहने वाली शिराओं को संकुचित करके अपबाहुक रोग को उत्पन्न करती हैं। भा० प्र० २ ख०।

चिकित्सा

इस रोग में नस्य तथा भोजन के पश्चात् स्नेह पान हित है। वा० चि० अ० २०।

अपभ्रंश apabhransha–हिं० पुं० बिगड़ा हुआ शब्द। (Corruption, Common or vulgar talk).

अपमुमूर्षु apamumúrshu–सं० हिं० पुं० जलमें डूब कर मरणोन्मुख हुआ रोगी।

अपर apara–हिं० वि० [सं०] [स्त्री० अपरा] (१) जो पर न हो, पहिला, पूर्व का, पिछला, जिससे कोई पर न हो। (२) अन्य, दूसरा, भिन्न। मे० रत्रिक०।

अपरपिण्डतैलम् aparapinda-tailam–सं० क्ली० बला (खिरेंटी) पृष्टपर्णी, गङ्गेरन, गिलोय, और शतावर। इनके कल्क तथा क्वाथ से सिद्ध किए हुए तैल के अनुवासन (पिच, कारी) लेने से प्रबल वातरक्त का नाश होता है। भा० प्र० मध्य खण्ड २ वातरक्त–चि०।

अपरतंत्र aparatantra–हिं० वि० [सं०] जो परतंत्र वा परवश न हो, स्वतंत्र, स्वाधीन, आज़ाद।

अपमार्जन apamárjana–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] शुद्धि । सफाई । संस्कार । संशोधन ।

अपमुख apamukha–हिं० वि० [सं०] [स्त्री० अपमुखी] जिसका मुँह टेढ़ा हो । विकृतानन, टेढ़मुहाँ ।

अपमृत्यु apamrityu–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] अकालमृत्यु कुमृत्यु, कुसमय मृत्यु, अल्पायु, जैसे बिजली के गिरने, विष खाने, साँप आदि के काटने से मरना ।

अपयोग apayoga–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) कुयोग, बुरायोग । (२) नियमित मात्रा से अधिक वा न्यून औषध पदार्थों का योग । (३) कुशकुन, असगुन । (४) कुसमय, कुबेला ।

अपरकाय aparakáya–हिं० संज्ञा पुं० शरीर का पिछला भाग ।

अपरना aparaná–हिं० स्त्री० अपामार्ग । वि० बिना पत्ते वाली । (Leafless).

अपरम् aparam–सं० क्ली० हाथी के पीछे का अर्द्ध भाग, गजपश्चादर्ध । हाथी का पिछला भाग, जंघा, पैर इत्यादि ।

अपरस aparasa–हिं० संज्ञा पुं०, उ० चम्बल । सक्फिय्यह्, सद्फिय्यह्, क़श्फ़ुलजिल्द–अ० । सोरायसिस (Psoriasis)–इं० । चर्मरोग भेद । एक चर्मरोग जो हथेली और तलवे में होता है । इसमें खुजलाहट होती है । और चमड़ा सूख सूख कर गिरा करता है । विचर्चिका ।

चिकित्सा

(१) गोधूम (गेहूँ) ८४ सेर लेकर पाताल यन्त्र द्वारा तैल निकालें । इस तेल के लगाने से अपरस नष्ट होता है ।

(२) आक का दूध १ छटाँक, बकुची का तेल १ पाव, सेंहुड़ के दूध १ छटाँक को एक पाव तिल तैल मिलाकर सिद्ध करें इसके लगाने से अपरस दूर होता है ।

(३) आठिल की जड़ की छाल लेकर स्वरस निकालें और उसे भेंड़ (मेष) के १ छटाँक घी में पकाएँ, फिर काम में लाएँ ।

(४) सिन्दूर ६ माशा को भेड़ के घी में घोटकर रक्खें । इसके उपयोग से अपरस दूर होता है ।

अपरा aparā–सं० स्त्री०, हिं० संज्ञा स्त्री० (१) (Placenta) खेड़ी, आँवल । भा० म० ४ भा० प्रसूतोपद्रव-चि०। अमरा-सं०। (२) पदार्थ विद्या । (३) पश्चिम दिशा । (४) पञ्चतन्मात्र, मन, बुद्धि और अहंकार इनको अपरा कहते हैं । वि० [सं०] दूसरी ।

अपराजित aparájita–सं० लहसुनिया । हिं० वि० [स्त्री० अपराजिता] (Inconqurable) जो जीता न जाए । जो पराजित न हुआ हो ।

संज्ञा पुं० विष्णु ।

अपराजित धूपः aparájita-dhúpah–सं० पुं० यह धूप सब प्रकार के ज्वरों का नाश करने वाला है । गुग्गुल, गंधतृण, बच, सर्ज, निम्ब, आक, अगर और देवदारु । च० द० ज्व० चि० ।

अपराजिता aparájitá–हिं० संज्ञा स्त्री०[सं० स्त्री०](१) यह कोयलकी बेल का साधारण नाम है ।

क्लिटोरिया टर्नेटिया (Clitorea Ternatea, *Linn.*)-ले० । बटर फ्लाई पी Butterfly pea, विंग्ड-लीव्ड क्लिटोरिया (Winged -leaved Clitoria), इण्डियन मेज़ेरीन (Indian Mezereon)–इं० । क्लिटोरिया डी टर्नेटी Clitoria de Ternate–फ्रां० । फियुला-क्रिका Feula-criqua–पुर्त० ।

संस्कृत पर्याय—आस्फोता, गिरिकर्णी, विष्णुक्रांता (अ०), गिरिशालिनी (के०), दुर्गा (श०), अस्फोटा (अ० टी०), गवाक्षी, अश्वखुरी, श्वेता, श्वेतभण्टा, गवादनी (र०), अद्रिकर्णी, कटभी, दधि पुष्पिका, गर्दभी, सित पुष्पी, श्वेतस्पन्दा, भद्रा, सुपुत्री, विषहन्त्री, नगपर्य्याय कर्णी, अश्वाह्लादखुरी । अपराजिता, कवाठेंठी, कोयल, विष्णुक्रांति, कालीज़ीर–हिं० ।

अपराजिता–बं० । माज़रियूने हिन्दी–अ० । नबात बीख़े ह्यात–फ़ा० । फीकी की जड़ का झाड़, घुट्टी की जड़ का झाड़, फीकी–द०, हिं० । काक्कणङ्-कोडि, कवछी, कुरु विलइ-ता० । नल्ल-विष्णुक्रांत, विष्णुक्रांत, दिन्टन, नल्लनेल गुम्मिरि, तेल्ल, मेल्ल, तेल्लदिण्टन, नीलदिण्टन–ते० । अरल, शङ्ख-पुष्पम्, काक्कणम्-कोटि, काकवल्लि–मल० । कत्तरोदु–सिं० । गोकर्ण (-र्णी) काजलि–मह०, बम्ब० । काळी पारटरी–मह० । गरणी–गु० । कर्णिके, शंखपुष्प, विष्णु–कान्टि–सुप्पु, कीर गुम्म, गोकर्ण मूल–कना० । धन्त्र–पं० । बिलीय गिरि कर्णिके, नील गिरि कर्णिके–कु० । आरल –माला० ।

अपराजिता बीज

क्लिटोरिया टर्नेटिया Clitorea ternatea Linn. (Seeds of.)–ले० । अपराजिता के बीज, कवाँठी के बीज–हिं० । फीकी की जड़ के बीज, घुट्टी की जड़ के बीज–द० । अपराजितार बीज—बं० । बज़्रुल् माज़रियूने-हिंदी–अ० । तुख़्मे–बीख़ेहयात्–फ़ा० । काक्कण-क्कोडि-विरै-ता० । दिण्टन–वित्तुलु-ते० ।

शंगवित्त, काक्कणम्-वित्त, काक-वित्त–मल० । कत्तरोदु-बीज-सिं० ।

नोट—अपराजिता शब्द से निघण्टु में अश्व-खुरक, बला मोटा, विष्णुक्रांता, शुक्लांगी, शेफालिका या शंखपुष्पी ली जाती है । अश्वखुरकः गिरिकर्णिका, कटभी, श्वेता, आदि नाम से कही जाती है ।

शेफालिका—गिरिसिन्दुक या श्वेत सुरमा कहाती है । यह विषघ्न है ।

शिम्बी या बब्बूर वर्ग

(*N. O. Leguminosæ*)

उत्पत्तिस्थान—सम्पूर्ण भारतवर्ष ।

संज्ञा निर्णय—अरबी संज्ञा माज़रियूने-हिंदी का अर्थ हिन्दी माज़रियून (Indian Mezereon) है और यही संज्ञा मदरास में अपराजिता के लिए व्यवहारमें आती है, क्योंकि उन्होंने मान लिया है कि इसकी जड़ में माज़-रियून की जड़ के समान प्रभाव है ।

दक्खिनी संज्ञाएँ काली-ज़िर्की वा काली ज़िर्की के बीज तथा सुफेद ज़िर्की व सुफ़ेद ज़िर्की के बीज कभी कभी अपराजिता बीज के लिए कतिपय ग्रन्थों में ही नहीं व्यवहार में लाई गई हैं. प्रत्युत किसी किसी बाजार में भी उनका व्यवहार किया जाता है । परंतु वे असंदिग्ध रूपसे कालादाना और उसके लाल भेद की यथार्थ संज्ञाएँ हैं, अतः उन्हें उन्हीं तक सीमित रहने देना चाहिए ।

काकमल्लु मलयालिम भाषा का शब्द है जिसका अर्थ काकलता होता है और यह इस-लिए है कि इसके पुष्प का रंग काक वर्णवत् होता है । परंतु हॉर्टस मालाबारिकस (Hortus malabaricus) तथा अन्य ग्रंथों में यह नाम म्युकुना जायगैंटिया (Mucuna gigantea) के लिए प्रयोग में लाया गया है ।

तामिल शब्द काक्कणङ् वा काक्कटाङ् प्रायः अपराजिता तथा कालादाना दोनों के लिए समान रूप से व्यवहार में आते हैं, परन्तु यथार्थतः वे अपराजिता के ही नाम हैं । अतः उनको इसी के लिए प्रयोग करना चाहिए, कालेदाने के बीज उस नाम के अंतर्गत आए हुए नामों से सरलता-पूर्वक पहचाने जा सकते हैं ।

डिमक (१ म खंड ४५६ पृ०) महोदय अपराजिता का संस्कृत नाम गोकर्ण लिखते हैं । परन्तु, किसी भी प्रचलित वैद्यक ग्रंथ में इसकी उक्त संज्ञा का उल्लेख नहीं मिलता । ऐसा प्रतीत होता है कि "गिरिकर्णिका वा गिरिकर्णी" को भ्रमवश "गोकर्ण" लिख दिया गया है । 'गोकर्णी' वा 'गोकर्ण' अपराजिता का महाराष्ट्री नाम है ।

सकल नव्य लेखकों ने एक स्वर से कालेदाने के बीज को अपराजिता बीज के सर्वथा समान होने का उल्लेख किया है । परन्तु, कालादाने का गात्र एवं वर्ण रुक्ष कृष्ण होता है; इसके विपरीत अपराजिता के बीज का गात्र चिकना एवं कृष्ण वर्ण का होता है ।

वानस्पतिक-वर्णन — अपराजिता एक प्रकार की वृक्षाश्रित बहुवर्षीय लता है। प्रायः शोभार्थ इसे उद्यानों में लगाते हैं। यह बहुशाखी एवं क्षुपमय होती है। मूल किञ्चिद् गूदादार गावदुमी शाखायुक्त होता है। प्रकाण्ड अनेक दाहिने से बाएँ को लिपटे हुए छोटे पौधों में मृदुलोमयुक्त Pubescent) होते हैं। पत्र छोटे प्रायः गोल वा अंडाकार, विषम पंजाकार, एक सींक की दोनों ओर जोड़े जोड़े होते हैं। प्रायः कुल २--३ किसी किसीमें ४ जोड़े होते हैं, किंतु उनके सिरेपर अर्थात् अग्रभाग पर एक अयुग्म पत्र होता है। पुष्प बड़े, श्वेत वा नीले (वा रक्त), डंठलयुक्त (सवृन्त) उलटे ब्रैक्टियोलेट होते हैं। पुष्पवृन्त लघु, लगभग चौथाई इञ्च लम्बा, कर्णाग्र, अकेला एक पुष्पयुक्त होता है। ब्रैक्टिओलस किञ्चिद् गोल, पुष्प-वाह्य-कोष के आधार से संलग्न होते हैं। पुष्प-वाह्य-कोष पुष्पाभ्यन्तर कोष का ⅓ लम्बा, पंचशिखर युक्त, विषम, स्थाई, बीज-कोषाधः होता है। पुष्पाभ्यन्तर-कोष तितलीस्वरूप, वृहदोर्ध्व पटल (Vexillum) बड़ा, सिरा गोलाकार शिखरयुक्त; वहिः, नीला, (मध्यभाग पीताभायुक्त श्वेतवर्ण का), पक्ष (Alœ) अंडाकार अत्यन्त पतला और संकुचित डंठलयुक्त, तरणिका (Keel) कुछ कुछ बूट के आकार के दो पतले सूत्रवत् डंठल से युक्त होते हैं। नरतंतु वा पुंव पराग केशर या पराग की तीली (Stamens) ५ से १० वा इससे भी अधिक, दो स्थानों में स्थित (Diadelphous) होते हैं जिनमें एक पृथक रहता है और शेष तन्तुओं द्वारा आपस में मिले रहते एवं बीजकोषाधः होते हैं। परागकोष वा पराग की घुण्डी (Anthers) बहुत सूक्ष्म, गोलाकार और श्वेत होती है। नारितंतु वा गर्भकेशर (Style) साधारण, परागकेशर की अपेक्षा लंबे, किञ्चित् वक्र, सिरेपर परिविस्तृत होते हैं। शिम्बी वा छीमी (Legume) २ से ३ इंच लम्बी और चौथाई इंच चौड़ी, चिपटी, सीधी, कुछ कुछ लोमश, द्विकपाटीय (दो छिलके युक्त), एक कोष युक्त (पर कोष की दीवारों से बहुत से भागों में विभाजित होती हैं, जिनमें से प्रत्येक में एक एक बीज होता है) और बहुबीजयुक्त होता है।

बीज आयताकार ⅙ इंच लम्बे, चिकने, कृष्ण वा हरिताभायुक्त धूसर वा धूसरवर्ण के होते हैं। यह सदा पुष्पित रहती है।

पुष्पभेद से यह दो प्रकार की होती है—(१) वह जिसमें सफेद फूल लगते हैं श्वेतापराजिता श्वेतगिरिकर्णिका। विष्णुकान्ता। सफेद कोयल और (२) वह जिसमें नीले फूल आते हैं नीलापराजिता, नील गिरिकर्णिका, कृष्णक्रांता, नीली कोयल आदि नामों से संबोधित की जाती है।

नीलापराजिता का एक और उपभेद होता है जिसमें दोहरे फूल लगते हैं।

नोट—इन विभिन्न प्रकार के अपराजिता के बीजों के प्रभावमें कोई प्रकट भेद नहीं और यदि कुछ होता है तो वह इसकी सफेद जातिके बीजमें हो सकता है। किंतु इनमें वह बीज जो दूसरे की अपेक्षा अधिक गोल एवं मोटे होते हैं, प्रभावमें अधिकबलशाली सिद्ध होंगे पुनः चाहे वे किसी जातिके हों।

रासायनिक संगठन—मूलत्वक्-में श्वेतसार, कषायिन और राल; बीजमें एक स्थिर तैल, एक तिक्त राल (जो इसका प्रभावात्मक सत्व है।), कषायाम्ल (Tannic acid), द्राक्षौज (एक हलका धूसर वर्ण का राल) और भस्म (६ प्रतिशत) प्रभृति होते हैं। बीज वाह्यत्वक् टूट जाने वाला (भंगुर) होता है। इसमें एक दौल होता है जो कणदार श्वेतसार से पूर्ण होता है।

प्रयोगांश—जड़ की छाल, बीज और पत्र।

औषध-निर्माण-(१) बीज का **अमिश्रित चूर्ण**-Simple Powder of Clitorea Seeds (Pulvis Clitoreœ Simplex).

निर्माण-विधि —साधारण तौर पर चूर्ण कर बारीक चलनी या कपड़े से छानकर बोतल में भरकर सुरक्षित रक्खें।

मात्रा—१ से १॥ ड्राम तक (२-४ आना)।

गुण—इतनी मात्रा से ५ या ६ दस्त खुलकर

आएँगे और इसकी मात्रा २ ड्राम पर्यन्त करने से दस्तों की संख्या बढ़ाई जा सकती है। इतने से साधारणतः ८ या ६ दस्त आएँगे।

(२) अपराजिताके बीजका मिश्रित चूर्ण-Compound Powder of Clitorea Seeds (Pulvis Clitoreæ Compositus).

निर्माण-विधि—अपराजिता के बीज, सैंधव या क्रीम ऑफ़ टार्टार इनको चूर्ण कर इनमें से प्रत्येक ७ औंस लें; सोंठ या कुलंजन क्षुद्र का चूर्ण एक आउंस इनको एक साथ भली प्रकार रगड़कर बारीक चलनी या कपड़े से चालकर बंद बोतल में सुरक्षित रक्खें।

मात्रा—१॥ ड्राम से २ ड्राम तक।

(३) शीत कषाय (Infusion)—(८ में १)।

मात्रा—१ से २ आउंस।

(४) एलकोहलिक एक्सट्रैक्ट।

(५) क्वाथ।

(६) पत्र एवं मूल स्वरस।

(७) सूखी हुई जड़की छालका चूर्ण। मात्रा-१ से ३ ड्राम।

प्रतिनिधि—काला दाना व लालदाना, जलापा तथा कॉन्वॉल्व्युलस के बीजको यह उतम प्रतिनिधि है। भेद केवल इतना है कि यह अधिक अग्राह्य एवं चरपरी होती हैं।

अपराजिता के प्रभाव तथा प्रयोग

आयुर्वेद की मत से—दोनों गिरिकर्णी (श्वेतापराजिता तथा नीलापराजिता) तिक्त, पित्त के उपद्रव को प्रशमन करने वाली, चक्षुष्य, विष-दोषनाशक तथा त्रिदोषशामक होती हैं। गिरिकर्णी (अपराजिता) शीतल, तिक्त पित्तोपद्रव-नाशक, विष तथा नेत्र के विकारों को शमन करने वाली और कुष्टरोग को नष्ट करने वाली है।

(धन्वन्तरीय निघंटु)

गिरिकर्णी (अपराजिता) हिम, तिक्त, पित्तोपद्रव नाशक, चक्षुष्य, विषदोषशामक और त्रिदोष को शमन करने वाली है। नीलाद्रिकर्णी (नीलापराजिता) शीतल,तिक्त है, रक्तातिसार, ज्वर तथा दाह को नष्ट करने वाली तथा विष, वमन, उन्माद, भ्रमरोग, श्वास और अतिकास रोग को हरण करनेवाली है। राज०।

कटु, तिक्त, कफ वातनाशक, सूजन को दूर करने वाली, खाँसी को नष्ट करने वाली और कण्ठ्य अर्थात् कण्ठ को शुद्ध करने वाली है। राज०।

अपराजिता कटु, मेध्य शीतल, कण्ठ्य, दृष्टि को प्रसन्नताकारक तथा कुष्ठ, शूल, त्रिदोष, आम, शोथ, व्रण और विष को नष्ट करनेवाली है तथा कसेली, पाकमें कटुक (चरपरी) व तिक्त है तथा स्मृति और बुद्धिदायक है। भा०।

अपराजिता के प्रयोग

यह पृश्नि (चितकबरे, कौड़िया साँप), वभ्र नामक साँप और बिच्छू के विष की नाशक है। अथर्व०। सू० ४। १५। का० १०।

चरक--दर्वीकर सर्प के काटने पर सिन्धुवार (श्वेत निर्गुण्डी) वृक्ष की जड़ की छाल और श्वेत अपराजिता की जड़ की छाल इनको जल के साथ पीस कर पिलाएँ। (चि २५ अ०)।

चक्रदत्त—(१) श्वेतापराजिता की जड़की छाल के रस को तण्डुलोदक के साथ गोघृत के योग से पान कराएँ। इससे भूतोन्माद शमन होगा। (उन्माद चि०)

(२) सफेद कोयल की जड़ को पीसकर गो घृत मिला गलगण्ड रोगी को पिलाएँ।

(गलगण्ड चि०)।

शार्ङ्गधर—परिणाम शूल में चीनी, मधु और गोघृत के साथ विष्णुक्रांता की जड़ का कल्क ७ दिन तक सेवन करने से परिणामशूल नष्ट होता है। (२ खं० ५ अ०)।

वंगसेन—शोथरोग में श्वेत वा नील अपराजिता की जड़ की छाल को उष्ण जल में पीसकर पान करने से सूजन जाती रहती है। (शो० स० २११ वृ०)।

हारीत—वल्मीक श्लीपद रोगमें गिरिकर्णिका अर्थात् अपराजिता की जड़ की छाल को पीसकर लेप करें। (चि० ३३ अ०)

जलोदर एवं प्लीहा व यकृत वृद्धि में—अपराजिता की जड़, शंखिनी, दन्तीमूल और नीलिनी। इनको समभाग लेकर जल के साथ इमलशनवत् प्रस्तुत करें और गोमूत्र के साथ सेवन करें।

वक्तव्य

सुश्रुत में दर्वीकर सर्प की चिकित्सा में अन्य द्रव्यों के साथ अपराजिता का प्रयोग दिखाई देता है, यथा—'श्वेत गिरिह्वा करिणी सितात्व' (क०५ अ०)। सुश्रुतोक्त शोथ एवं उन्माद की चिकित्सामें अपराजिताका उल्लेख नहीं है। सुश्रुत के सूत्र स्थान के ३९ वें अध्याय के वामक द्रव्यों की तालिकामें अपराजिता का नाम नहीं आया है; किंतु शिरोविरेचन वर्ग की ओषधियों में अपराजिता का उल्लेख है। यथा—

"करवीरादीनामर्कान्तानां मूलानि"

वाक्य में अपराजिता के मूल को शिरोविरेचक माना गया है।

चरकोक्त वान्तिकर द्रव्यों में अपराजिता का पाठ नहीं है (वि० ८ अ०)।

चरक में सुश्रुतवत् शिरोविरेचन द्रव्यों के वर्ग में इसका पाठ आया है। (सू० ४ अ०)। चरकोक्त शोथ चिकित्सा में अपराजिता का प्रयोग नहीं दिखाई देता। किंतु उन्माद चिकित्सा में द्रव्यांतर के साथ इसका प्रयोग आया है। चक्रदत्त के शोथ और शूल की चिकित्सा में अपराजिता का प्रयोग नहीं है।

नव्यमत

डिमक महोदय के कथनानुसार विरेचक व मूत्रल गुणों के कारण इसको माज़रियूने हिंदी (Indian mezereon) नाम से अभिहित किया गया है। किंतु यहाँ पर यह बतला देना आवश्यक प्रतीत होता है कि माज़रियून उदरीय शोथको दूर करने के लिए व्यवहार में लाया जाता है। और यह फार्माकोपिया वर्णित माज़रियून नहीं है।

वे और भी लिखते हैं कि कोंकण में इसकी जड़ का रस दो तोला की मात्रा में शीतल दुग्ध के साथ पुरातन कास में कफघ्न (कफनिस्सारक) रूप से व्यवहार में आता है। इससे उत्क्लेश (मतली) तथा वमन जनित होता है। अर्द्धावभेदक में श्वेतापराजिता की जड़ का रस नकुओं द्वारा फूँका जाता है।

एन्सली विषमिपाजननार्थ किंवा वामक प्रभाव के लिए घुंड़िकास वा स्वरघ्नी कास (Croup) में अपराजिता की जड़ के उपयोग का वर्णन करते हैं।

"बेंगाल डिस्पेंसेटरी" नामक पुस्तकके रचयिता बहुत से प्रयोगों के पश्चात् अपराजिता के वांतिकरत्व गुण को अस्वीकार करते हैं। वे लिखते हैं कि अपराजिता की जड़ का "एल्कोहलिक एक्सट्रैक्ट" ५ से १० ग्रेन की मात्रा में शीघ्र विरेचक सिद्ध हुआ। किंतु इसके सेवन से रोगी के पेट में दर्द (ऐंठन) एवं बारम्बार मल त्यागने की इच्छा होती है और बहुत वेदना के बाद थोड़ा मल निकलता है। सुतरां वे इसे व्यवहार करने का परामर्श नहीं देते।

सर्व प्रथम इसका बीज टर्नेटी (Ternate) द्वीप से जो मलक्काद्वीपों में से एक है, इंगलैंड में लाया गया। अस्तु, इस पौधेका यह प्रधान नाम हुआ। हेंस (Haines) इसके (नीलापराजिता पुष्प) टिंकचर को लिट्मस (रागद्योतक) की प्रतिनिधि बतलाते हैं। (फा० इं० १ खंड, ४५९--४६०)।

डॉ० आर० एन० खोरी—अपराजिता की जड़, स्निग्ध, मूत्रकारक एवं मृदुरेचक है और पुरातन कास, जलोदर, शोथ एवं प्लीहा व यकृत विवृद्धि तथा ज्वर और स्वरघ्नी कास (Croup) में व्यवहृत होती है। अपराजिता की जड़ का शीत कषाय स्निग्ध (Demulcent) रूप से वस्ति तथा मूत्र प्रणालीस्थ क्षोभ और कास में व्यवहार किया जाता है। अर्द्धावभेदक अर्थात् अधकपाली रोग में इसकी ताजी जड़ के रस का नस्य देते हैं। इसका ऐक्सट्रैक्ट शीघ्र रेचक तथा कालादाना, गुलबास बीज और जलापा की उत्तम प्रतिनिधि है। (मेटिरिया मेडिका ऑफ इंडिया २ य खंड २०६ पृ०)।

मि० मोहीदीन शरीफ़ स्वानुभव के आधार पर इसकी जड़ की छाल के १–२ ड्राम की मात्रा के शीत कषाय की वस्ति एवं मूत्रप्रणाली जन्य क्षोभों में स्निग्ध प्रभाव करने की बड़ी प्रशंसा करते हैं। साथ ही इसका मूत्रजनक और किसी किसी में मृदुरेचक प्रभाव होता है।

इसके बीज रेचक हैं। फा० इं०।

इसके पत्र का शीत कषाय विस्फोटक (Eruptions) में व्यवहृत होता है। वैट०।

इसके पत्ते के रस को आर्द्रक के साथ मिलाकर तपेदिक (Hetic fever) में स्वेद आनेकी हालत में व्यवहार करते हैं। टेलर।

कर्णशूल में विशेषतया उस अवस्था में जब कि कान के आस पास की ग्रंथियाँ सूज गई हों, तब कान के चारों ओर अपराजिता के पत्ते के रस में सेंधानमक मिलाकर गरमागरम लेप करें। ए० सी० मुकर्जी।

डॉ० नड्कारिणी—अपराजिता के बीज को भून कर चूर्ण प्रस्तुत करें। इसको जलोदर और प्लीहा व यकृत विवृद्धि में २० से ६० ग्रेन (१५ से ३० रत्ती) की मात्रा में प्रयुक्त करें। साधारणतः इसको इस प्रकार बर्तते हैं—२ भाग क्रीम ऑफ़ टार्टार, १ भाग सोंठ और १ भाग अपराजिताके बीज, इनका चूर्ण बनाएँ। मात्रा–½ से १ ड्राम।

उपयोग–इनको दृष्टिनैर्बल्य, कंठक्षत, श्लेष्मविकार, अर्बुद, त्वग्दोष तथा शोथ आदि रोगों में बर्तते हैं।

एक दो वा अधिक बीजों को भूनकर फिर मानुषी दुग्ध में पीसकर वा घीमें भूनकर बालकों के उदरशूल तथा मलावरोध में देते हैं। जड़ का एल्कोहलिक एक्सट्रैक्ट भी एक से दो ड्राम की मात्रा में उपयोगी है। (इंडियन मेटिरिया मेडिका पृष्ठ २२१--२२२)।

आर० एन० चोपरा—अपराजिता की जड़ मलशोधक तथा मूत्रल है और सर्प के विष में प्रयुक्त होती है।

(इं० ड्र० इं० पृ० ४७६)।

अपराजिता की पत्ती का कल्क प्रस्तुत कर नाखून खोरह् अर्थात् नरकहिया (Whitlow) फोड़े पर बाँधने और निरन्तर जल से तर रखने से बहुत शीघ्र लाभ होता है। परीक्षित।

(२) पीत निर्गुण्डी। (३) जयन्ती वृक्ष। रा० नि० व० २३, ४। (४) शालपर्णी। भा० पू० २ भा०। (५) श्वेत सिंधुवार। (६) ब्राह्मी। (७) एक प्रकार की शमी। रा० नि० व० ८। (८) शेफालिका। रा० नि० व० ४। (९) शङ्खिनी। (१०) एक प्रकार का ग्रपुषा। (११) एक प्रकारका हपुषा। रा० नि० व० ४।

अपराजिता धूपः aparájitá-dhúpah–सं० पुं० बिनौला, मोरपंख, बड़ी कटेरी, शिवनिर्माल्य, तगर, तज, वंशलोचन, बिल्ली का विष्ठा, धान के तुष (भूसी), वच, मनुष्य के बाल, काले साँप की केंचुली, हाथीदाँत, गौ का सींग, हींग, मिर्च, इन्हें बराबर लेकर धूप बनाएँ। यह धूप पसीता, उन्माद, पिशाच, राक्षस, देवता का आवेश, ज्वर इन सबका नाश करता है। गृह में इनकी धूप (धूनी) दें तो सब बालग्रहों को दूर करता है और पिशाच तथा राक्षसों को निकालकर सब ज्वरों को नाश करता है। यो० चिन्ता म०।

अपराजितायोगः aparájitáyogah–सं० पुं० सफेद कोयल की जड़ को पीस प्रातः काल पीएँ तो गलगण्डरोग नष्ट होता है। इसके ऊपर से शुद्ध गोघृत पीएँ और पथ्य से रहें। योग० त० गल० ग० चि०।

अपराजितालेहः aparájitálehah–सं० पुं० (१) काकड़ासिंगी, कचूर, पीपल, भारंगी, गुड़, नागरमोथा, जवासा, तैल इनका लेह (चटनी) बना चाटने से वात की खाँसी नष्ट होती है। चक्र० द०।

(२) मजीठ २ तो०, कुड़ा ८ तो०, भांगरा की जड़ २ तो० इन्हें कूट कर ६४ तो० जल में पकाएँ। जब चतुर्थांश शेष रहे तो छानकर रस निकालें और उसमें ८ तो० मिश्री, बकरी का दूध १६ तो०, बेलफल, अतीस इनका चूर्ण

१–१ तो० मिला तथा नागरमोथा, इन्द्रजौ १–१ तो० मिलाकर पकाएँ। जब चटनी सी हो जाए तब उतार रक्खें। इसके सेवनसे ग्रहणी, अतिसार दूर होते हैं।

(३) मजीठ २ तो०, कुड़े की छाल ८ तो०, भांगरामूल १ तो० इन्हें कूट कर १०२४ तो० जल में पकाएँ जब चौथाई रहे तो इसमें १६ तो० बकरी का दूध मिलाकर पकाएँ। जब गाढ़ा चटनी के तुल्य हो जाए तब इसमें सोंठ, अतीस, नागरमोथा, इन्द्रजौ, एक एक तोला मिला कर रक्खें। इसे खाएँ और ऊपर से काँजी, खटाई इनमें सिद्ध मांस खाएँ और बकरी का दूध पिएँ तो संग्रहणी, तथा अतिसार दूर हो। वङ्गसे-सं० संग्रहणी-चि०।

अपराधीन aparádhína–हिं० वि० स्वाधीन। (An voluntary).

अपरापातन apará-pátana–सं० पुं० आँवल गिराना, खेड़ी गिराना। सु०सं० शा० अ० १०।

अपरायुः aparáyuh संपुं० भ्रूणांतरावरण। (Amnion).

अपराह्णः aparáhṇah सं० पुं०
अपराह्ण aparáhṇa–हिं० पुं०
(Afternoon) दिवस शेष भाग, तीसरा पहर। दिन का पिछला भाग, दोपहर के पीछे का काल यह काल प्रावृट् काल के समान होता है। सु० सू० ६।

अपरिक्लिन्न apariklinna–हिं० वि० [सं०] शुष्क। सूखा।

अपरिगृहीता aparigrihítá–सं०(हिं०) स्त्री० अविवाहिता स्त्री, रखेली स्त्री।

अपरिचालक aparichálaka–हिं० वि० पुं० रोधक, अवाहक। जो विद्युत धाराका वाहक न हो। (Nonconductors-insulator.)

अपरिच्छद aparichchhada
अपरिच्छन्न aparichchhanna
अप्रच्छन्न aprachchhanna
–हिं० वि० [सं०] आच्छादन रहित, आवरण रहित। जो ढका न हो। नंगा। खुला।

अपरिच्छिन्न aparichchhinna–हिं० वि० [सं०] (१) जिसका विभाग न हो सके। अभेद्य। (२) जो अलग न हुआ हो। मिला हुआ। (३) असीम सीमा रहित।

अपरिणत apariṇata–हिं० वि० [सं०] (१) अपरिपक्व। जो पका न हो। कच्चा। (२) जिसमें विकार और परिवर्त्तन न हुआ हो। विकार शून्य। ज्यों का त्यों।

अपरिणामी apariṇámí–हिं० वि० [सं० अपरिणामिन्] [स्त्री० अपरिणामिनी] परिणाम रहित। विकार शून्य। जिसकी दशा में परिवर्त्तन न हो।

अपरिणीत apariṇíta–हिं० वि० [सं०] [स्त्री० अपरिणीता] अविवाहित, क्वारा। (Bachelor).

अपरिणीता apariṇítá–हिं० वि० स्त्री० क्वारी, अनूढ़ा। (Maid, virgin, unmarried girl).

अपरितुष्ट aparitushṭa–हिं० वि० [सं०] असन्तुष्ट, तृप्तिरहित। (Dissatisfied.)

अपरिपक्क aparipakka–हिं० वि० [सं०] (१) जो परिपक्व न हो। अपक्व, कच्चा। (Unripe) । (२) जो भली भाँति पका न हो। डेंभर। अधकच्चा। यौ०–अपरिपक्व कषाय।

अपरिपूर्णयोग aparipúrṇa-yoga–हिं० पुं० (Unsaturated compound). ऐन्द्रियक रसायन के अनुसार यदि कार्बन वा किसी अन्य तत्व के परमाणु के साथ अन्य तत्व के संयोग से उसकी कोई शक्ति वा स्थान रिक्त हो तो उसे अपरिपूर्ण योग कहते हैं, जैसे–एसीटिलीन जो कज्जलन के एक और उदजन के दो परमाणुओं का एक यौगिक है।

अपरिपूर्णविलयन aparipúrṇa-vilayana –हिं० पुं० (Unsaturated-solution) रसायन शास्त्रानुसार जब किसी द्रव में विलेय पदार्थ का विलयन करते समय उस पदार्थ का घुलना बन्द न हो अर्थात् वह घुलता हो रहे, तो वह विलयन अपरिपूर्ण विलयन कहलाता है।

अपरिमाण aparimána } -हिं० वि० [सं०]
अपरिमित aparimita }
परिमाणहीन, असंख्यात, अनंत। (Unlimited).

अपरिमेय aparimeya-हिं० वि० [सं०] जिसका परिमाण न पाया जाए। जिसकी नाप न हो सके।

अपरिम्लानः aparimlánah-सं० पुं० (The red var. of Barleria prionites) रक्त अम्लान पुष्प वृक्ष। लाल कटसरैया।-हिं०वि० जो न कुम्हलाया हो, ताज़ा खिला हुआ। (Newly opened).

अपरिवर्त्तनीय aparivarttaníya-हिं०वि० [सं०] (१) जो परिवर्तन के योग्य न हो। जो बदल न सके।

(२) जो बदले में न दिया जा सके।

अपरिवृत्त aparivritta-हिं० वि० [सं०] जो ढका या घिरा न हो। अपरिच्छन्न।

अपरिष्कार aparishkára-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अपरिष्कृत] (१) संस्कार का अभाव असंशोधन। सफ़ाई वा काट छाँट का न होना। (२) मैलापन (३) भद्दापन।

अपरिष्कृत aparishkrita-हिं० वि० [सं०] (१) जिसका परिष्कार न हुआ हो। जो साफ़ न किया गया हो। (२) मैला कुचैला। (३) बेडौल, भद्दा।

अपरिसर aparisara-हिं० वि० संकीर्ण, संकुचित। (Crowded).

अपरीक्षित aparíkshita-हिं० वि० [सं०] [स्त्री० अपरीक्षिता] जिसकी परीक्षा न हुई हो। जो परखा न गया हो। जिसकी जाँच न हुई हो। जिसके रूप, गुण, परिमाण और वर्ण आदि का अनुसंधान न किया हो।

अपरूप aparúpa-हिं० वि० [सं०] (Deformed) कुरूप बदशकल। भद्दा। बेडौल। (२) [अपूर्व का अपभ्रंश] अद्भुत। अपूर्व।

अपरेद्युः aparedyuh-सं० [अव्यय] पर दिन।

अपरेशन apareshana-हिं० संज्ञा पुं० [अं० ऑपरेशन] (Operation) शस्त्र चिकित्सा। चीरफाड़।

अपरोक्ष aparoksha-हिं० पुं० प्रत्यक्ष, समक्ष। (Present.)

अपर्णा aparná-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] अपरना, पत्रशून्य। (Leafless).

अपर्याप्त aparyápta-हिं० वि० [सं०] अयथेष्ट, अपूर्ण, स्वल्प, थोड़ा, काफ़ी नहीं। (A little, not enough.)।

अपर्व्वदण्डः aparvva-dandah-सं० पुं० रामशर, सरपत। (Saccharum sara) रा० नि० व० ८।

अपर्स aparsa-हिं० संज्ञा पुं० कुष्ठ, कोढ़। (leprosy)। दे० अपरस।

अपर्स apurs-बिलूच०, शर्बत-हिमा०। धूपी। धूपड़ी, चन्दन-नैपा०। (Juniperus excelsa) मे० मो०।

अपलक्षण apalakshana-हिं० संज्ञा पुं० (१) अपशकुन। (२) (A Bad Sign) कुलक्षण। बुरा चिन्ह। दोष। (३) दुष्टलक्षण।

अपलक्षणा apalakshaná-हिं० वि० स्त्री० [सं०] बुरे लक्षण वाली। दुष्ट लक्षण। (of a bad sign, ominous.]

अपलापः apalápah-सं० पुं० } [वि० अपला-
अपलाप apalápa-हिं० संज्ञा पुं० }
पित] यह पेट और छाती (अर्थात धड़) के मर्मों में से एक शिरा मर्म है जो (अंसकूट कंधों) से नीचे तथा पार्श्वों (पँसवाड़ों) के ऊपर एक एक दोनों ओर स्थित है। सु० शा० ६ अ०।

अपलाषिका apaláshiká-सं० स्त्री० पिपासा, प्यास (Thirst)। हे० च०।

अपवनम् apavanam-सं० क्ली० } कृत्रिम
अपवन apavana-हिं० संज्ञा पुं० } वन,
(An artificial garden.) उपवन, बाग। हे० च०।

अपवरकः apavarakah-सं० पुं० गर्भगृह। (Inner room.) हला०। See-Garbhagriha.

अपवर्गः apa-vargah-सं० पुं०
अपवर्ग apavarga-हिं० संज्ञा पुं०
(१) अभिव्याप्य में से अपकर्षण करने को "अपवर्ग" कहते हैं, जैसे—विष-शास्त्र-विदों के सम्मुख सिवा कीट विष वालों के विषोपसृष्ट स्वेद योग्य नहीं होते। इसमें से "विषोपसृष्ट अस्वेद्य अर्थात् स्वेदन क्रिया के अयोग्य होते हैं" यह वह व्यापक है जिसमें से कीट विष वाले पृथक् कर दिए गए। सु० उ० ६५ अ० श्लो० १६। (२) मोक्ष, मुक्ति--हिं०। Liberation Deliverance.-इं०। (३) त्याग।

अपवर्त्तन apavartan-हिं० संज्ञा पुं० परिवर्तन, उलटफेर, पलटाव।

अपवर्त्तित apavartita-हिं० वि० [सं०] बदला हुआ। पलटाया हुआ। लौटाया हुआ।

अपवश apavasha-हिं० वि० [हिं० अप= अपना+सं० वश] अपने अधीन। अपने वश का। स्वाधीन। (Voluntary) परवश का उलटा।

अपविद्ध apaviddha-हिं० वि० [सं०] (१) त्यागा हुआ। त्यक्त, छोड़ा हुआ। (२) बेधा हुआ, विद्ध। (३) चूर्णित।

अपविषा apavishá-सं० स्त्री० निर्विषतृण, निर्व्विषी। (Curcuma zedoariæ.) रा० नि०।

अपशोकः apa-shokah-सं० पुं० अशोक वृक्ष। (Saraca Indica.) रा० नि० व० १०।

अपष्ट apashta-हिं० वि० अस्पष्ट, गुह्य। (Not clear, hidden).

अपसरण apasarana-हिं० पुं० प्रस्थान, चला जाना।

अपसर्जन apasarjana-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] विसर्जन। त्याग।

अपसव्यः apasavyah-सं० त्रि०
अपसव्य apasavya-हिं० वि०
(१) दक्षिण, दाहिना (Right.)। (२) प्रतिकूल, उलटा, विरुद्ध (Opposite)। सव्य का उलटा। मे०।

अपसार apasára-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अप्= जल+सार] (१) अंबुकण। पानी का छींटा। (२) पानी की भाप।

अपवाहक apaváhaka-हिं० वि० [सं०] स्थानांतरित करने वाला। एक स्थान से किसी पदार्थ को दूसरे स्थान पर ले जाने वाला।

अपवाहन apaváhana-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] स्थानांतरित करना। एक स्थानसे दूसरे स्थान पर ले जाना।

अपवाहित apaváhita-हिं० वि० [सं०] एक स्थान से दूसरे स्थान पर लाया हुआ। स्थानांतरित।

अपवाहुक apaváhuka-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] देखो—अपबाहुकः।

अपशकुन apashakuna-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] कुसगुन। असगुन।

अपशब्द apashabda-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] पाद। अपान वायु का छूटना। गोज़। पर्द्दन।

अपसर्पण apasarpana-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अपसर्पित] पीछे सरकना। पीछे हटना।

अपसर्पित apasarpita-हिं० वि० [सं०] पीछे हटा हुआ। पीछे सरका हुआ।

अपसारण apasárana-हिं० पुं० (भौ० वि०) (Repulsion.) अपकर्षण।

अपस्कम्भः apaskambhah—सं० पुं० (Symplocos racemosa) लोध। अथर्व०। ४। ६। ४।

अपस्करः apaskarah-सं० पुं० (१) मलद्वार, चूति। एनस (Anus)-इं०। (२) विष्ठा, पुरीष। (Fæces) धरा०।

अपस्तम्भ (म्ब) मर्म्म apastambha,-mbamarmma-सं० क्लो० उदर और वक्षस्थ मर्मों में से एक शिरा मर्म विशेष। यह उर (हृदय)

की दोनों ओर वायु को वहाने वाली दो नाड़ियाँ "अपस्तम्भ" नामक दो मर्म हैं। सु० शा० अ० ६।

अपस्तम्भिनी apastambhiní-सं० स्त्री० शिवलिङ्गिनी लता, शिवलिङ्गी। (Bryonia). वै० निघ०।

अपस्मारः,—"स्मृतिः" apasmárah,-smritih—सं० पुं० अपस्मार-हिं० संज्ञा पुं० [वि० अपस्मारी] स्वनामाख्यात प्रसिद्ध वात व्याधि, परियाय से होने वाला एक रोग विशेष। इसमें हृदय काँपने लगता है और आँखों के सामने अँधेरा छा जाता है। रोगी काँप कर पृथ्वी पर मूर्च्छित हो गिर पड़ता है। उसके हाथ पाँव में आकुंचन होता और मुँह से झाग आता है।

पर्याय—अंग विकृति, लालाध, भूत विक्रिया मृगी-सं०, हिं०,-बं०। मिरगी-हिं०, उ०। फेफ़रे-म०। सरअ-अ०। म.र्ज़ काहनी, म.र्ज़ साक़त। अबर क़लसा; अब्र अक़लसा-यु०। एपिलेप्सी Epilepsy, एपिलेप्सिया Epilepsia-इं०। मॉर्बस कॉमिटिएलिस Morbus-comitialis, सासर मेजर Sacer major-इं०। एपिलेप्सी Epilepsie, हॉट मैल Haut mal-फ्रां०। फालसुख़्ट Fallsucht-जर०।

पर्याय-निर्णायक नोट—इस रोग में स्मृति नष्ट हो जाती है। इसलिए इसको अपस्मार कहते हैं।

सरअ के शाब्दिक अर्थ गिर पड़ना, गिरना गिराना आदि हैं। परन्तु, तिब्ब की परिभाषा में मृगी को कहते हैं। इस रोग में संज्ञा व चेष्टा-वहा इंद्रियाँ अव्यवस्थित हो जाती हैं, ऐच्छिक मांस पेशियों में आकुञ्चन होता है और रोगी मूर्च्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़ता है। इसी कारण इसको उक्त नाम से अभिहित करते हैं। फ़ारसी में इसको नैदुलान कहते हैं।

नोट—शेष शब्दों की व्याख्या क्रमशः उन उन शब्दों के सामने की जाएगी।

निदान व सम्प्राप्ति

प्रायः यह रोग पैतृक होता है। परन्तु शिशुओं में दाँत निकलना, उदरीय कृमि, अकस्मात भय का होना, युवा पुरुषों में अति मैथुन, हस्तमैथुन, मस्तिष्क को आघात पहुँचना, मस्तिष्क वा मस्तिष्कावरक प्रदाह, चिंता, शोक, मानसिक श्रम की अधिकता, मद्यपान, उपदंश, वातरक्त वा सन्धिवात और रक्तविकार इत्यादि नासिका, कंठ, आंत्र और जननेन्द्रिय में किसी चिरकारी क्षोभक व्याधि की उपस्थिति, स्त्रियों में मासिक दोष आदि इसके कारण हैं।

लिखा भी है—

चिन्ता शोकादिभिः क्रुद्धा दोषा हृत्स्रोतसिस्थिताः।
कृत्वा स्मृतेरपध्वंसमपस्मारं प्रकुर्व्वते॥

अर्थात्—चिंता,शोक और भयके कारण कुपित एवं हृदय में स्थित हुए दोष (त्रय) स्मृति का नाश कर अपस्मार रोग को करते हैं। तथाच्च वाग्भट्टः—

स्मृत्यपायोह्यपस्मारः संधि सत्वाभि संप्लवात्
जायतेऽभिहते चित्ते चिंता शोक भयादिभिः।
उन्मादवत्प्रकुपितैश्चित्तदेह गतैर्मलैः॥
हते सत्वे हृदि व्याप्ते संज्ञावाहिषु खेषु च।
× × × ×

(वा० उ० अ० ७)

अर्थात्—जिस रोग में स्मृति का नाश हो जाता है, उसे अपस्मार कहते हैं। बुद्धि और सत्वगुण में विप्लव होने के कारण चिंता, शोक और भयादि द्वारा आक्रमित हुआ चित्त तथा उन्माद के सदृश चित्त और देह में रहने वाले प्रकुपित दोषों से सत्व गुण नष्ट होकर, हृदय और संज्ञावाही संपूर्ण स्रोतों में व्याप्त हो जाता है; इसीसे स्मृति का नाश होकर अपस्मार उत्पन्न होता है।

अपस्मार के भेद—

वैद्यक शास्त्रानुसार यह चार प्रकार का होता है, यथा—

अपस्मार इति ज्ञेयो गदो घोरश्चतुर्विधः।

(मा० नि०)

या "स च दृष्टश्चतुर्विधः"
वातपित्त कफैर्नृणांचतुर्थः सन्निपाततः।
(सु०)

अर्थात्—(१) वातज, (२) पित्तज, (३) कफज और (४) सन्निपातज। (यह रोग नैमित्तिक है)

डॉक्टरी मत से यह दो प्रकार का होता है—(१) ग्रैण्डमाल (Grand Mal) या हॉट माल (Haut Mal) अर्थात् उग्र अपस्मार या सरअ शदीद और (२) पेटिट माल (Petit Mal) अर्थात् साधारण अपस्मार या सरअ ख़फ़ीफ़। परंतु इस रोगका इससे भी एक साधारण प्रकार वह है जिसको अंगरेज़ी में एपिलेप्टिक वर्टिगो (Epileptic Vertigo) अर्थात् आपस्मारिक शिरोघूर्णन या दुवार सरई कहते हैं। इससे भिन्न अपस्मार की एक और अवस्था है जिसको अंगरेज़ी में स्टेटस एपिलेप्टिकस (Status Epilepticus) अर्थात् आपस्मारिकावस्था या सरअ मुतवातिर कहते हैं। इसके अतिरिक्त बच्चोंके अपस्मारको बाल अपस्मार वा शिश्वपस्मार तथा अंगरेज़ी में इन्फेण्टाइल कन्वल्शन (Infantile convulsion) और अरबी में सुउ्ल् अतफ़ाल या उम्मुस्सिब्यान आदि नामों से पुकारते हैं।

नोट—यूनानी भेदों के लिए देखिए सरअ।

पूर्व रूप

जो किसी किसी समय रोगाक्रमण काल के बहुत समीप उपस्थित होता है; यहाँ तक कि रोगी अपने आपको सँभाल नहीं सकता और कभी उससे एक वा दो दिवस पूर्व उपस्थित होता है। पूर्वरूप में से यह एक प्रधान लक्षण है कि रोगी को अपने शरीर के किसी मुख्य भाग साधारणतः हस्तपाद की अंगुलियों या पेट पर से सुरसुराहट मालूम होती है, जो वहाँ से आरंभ होकर ऊपर को जाती हुई शिर तक पहुँचते ही रोगी को मूर्च्छित कर देती है और रोग का दौरा हो जाता है। उक्त प्रकार की सुरसुराहट को डॉक्टरी की परिभाषा में ऑरा एपिलेप्टिका (Aura Epileptica) अर्थात् नसीम सरअ (मृगी की सुरसुराहट) कहते हैं। इसके अतिरिक्त रोगाक्रमण से पूर्व शिरोशूल एवं शिरोघूर्णन होता है अथवा नासिका से एक प्रकार की गंध आने लगती है और आँखोंके सामने चिनगारियाँ सी उड़ती प्रतीत होती हैं। कभी दौरे से पूर्व भयावह रूप दिखाई देते और कर्णनाद होता है, बुद्धि भ्रंश एवं किञ्चित् निर्बलता होती, कभी ज्वरका वेग होता और कभी आक्षेप होकर शिर किञ्चित् एक कंधे की ओर झुक जाता है, जो एक प्रधान लक्षण है। कभी कभी कोई रूप प्रगट नहीं होता। आयुर्वेद में भी प्रायः यही बातें लिखी हैं, यथा—

हृत्कम्पः शुन्यता स्वेदो ध्यानं मूर्च्छा प्रमूढ़ता।
निद्रानाशश्च तस्मिंश्च भविष्यति भवत्यथ॥
मा० नि०।

अर्थात्—हृदय का काँपना, हृदयकी शून्यता, स्वेदस्राव, विस्मित सा रहजाना, मूर्च्छा (मनोमोह), अत्यन्त अचेतता और अनिद्रा आदि लक्षण अपस्मार रोग होने से पूर्व होते हैं।

रोगाक्रमणकालीन सामान्य लक्षण

जब इस रोग का आक्रमण होता है तब रोगी साधारणतः एक चीख़ मारकर और मूर्च्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़ता और तड़पने लगता है। हस्तपाद आकुंचित होकर मुखमण्डल भयावह और नीलवर्ण का हो जाता है, नेत्रपिण्ड ऊपर को फिर जाते एवं निश्चेष्ट हो जाते हैं। परन्तु, कभी कभी उनमें गति भी होती है, हृदय धड़कता है, श्वास कष्ट से आता और मुँह से झाग आता है। कभी जिह्वा दाँतोंके भीतर आकर कट जाती है। मूर्च्छितावस्था में ही मल व मूत्र का प्रवर्त्तन और शुक्र का स्खलन हो जाता है। फिर एक ओर से हस्तपाद में एक झटका सा लगकर आक्षेप प्रशमित हो जाता है तथा रोगी एक सर्द आह भरकर कुछ काल तक मूर्च्छित पड़ा रहता है। तदनन्तर ज्ञान होने पर उसकी बुद्धि ठिकाने नहीं रहती। अपितु, क्लान्ति, शिरोशूल, शिरोभ्रमण, अजीर्ण स्थानिक आक्षेप या पक्षाघात तथा बुद्धिभ्रंश आदि विकार शेष रह

जाते हैं। उन्मत्तके समान कभी कभी रोगीको क्षोभ उत्पन्न हो जाता है। रोगाक्रमण काल ३ मिनट से १० मिनट पर्यन्त और कभी आध घंटा तक होता है।

इस रोग के वेगकी न्यूनाधिकता विभिन्न व्यक्ति में एवं एक ही व्यक्तिको भिन्न भिन्न कालमें विभिन्न होती है। यथा—

पक्षाद्वाद्वादशाहाद्वा मासाद्वा कुपिता मलाः।
अपस्मारायकुर्वंति वेगं किञ्चिद्यान्तरम्॥
देवे वर्षत्यपियथा भूमौ बीजानि कानिचित्।
शरदि प्रतिरोहन्ति यथा व्याधि समुछ्रयः॥
मा० नि०।

अर्थ—वात आदि दोषों के प्रकुपित होने से वातज का दौरा बारहवें दिन, पित्तज का पन्द्रहवें दिन और कफज का तीसवें दिन होता है। कभी कभी उपर्युक्त अवधि को छोड़कर न्यूनाधिक दिनों में भी होता है। उदाहरणार्थ—जैसे चौमासे में मेघ के बरसने पर भी भूमि में पड़े हुए गेहूं चने आदि बीज शरदऋतु में उगते हैं। उसी प्रकार सम्पूर्ण रोगोंके बीज रूप वात आदिक दोष कभी किसी मृगी आदि रोग विशेष के निदान आदि के संयोग होने से उस रोग को प्रकट करते हैं।

अतः एक रोगी को १७ वर्ष पर्यंत प्रति दिन रात्रि को एक बार इसका वेग होता रहा और एक अन्य ऐसे रोगी को हर रात्रि को १० बार रोग का वेग होता रहा तथा एक तीसरे को ६१ वर्ष की अवस्था में केवल ७ बार वेग हुआ।

पेटिट माल अर्थात् सामान्य प्रकार की मृगी अन्य नौबती रोगों के सदृश कभी नियत काल पर सप्ताह में एक बार या मास में एक बार होती है। कभी मृगी का वेग स्वप्नावस्था में हो जाता है जिससे रोगी अथवा किसी अन्य व्यक्ति को उसकी सूचना तक भी नहीं होती। स्टेटस एपिलेप्टिका मृगी रोग की वह अवस्था है जिसमें क्षण क्षण में वेग होते हैं। एक वेग का अंत भी नहीं होने पाता कि दूसरे वेग का आरम्भ हो जाता है। यह दशा अत्यंत शोचनीय होती है। एपिलेप्टिक वर्टिगो (आपस्मारिक शिरोघूर्णन) अर्थात् मृगी के कारण शिरोभ्रमण—इसमें रोगी को क्षण भर के लिए चक्कर आकर किञ्चित् मूर्च्छा आ जाती है। किसी किसी रोगी को इसका वेग इतना अल्प होता है कि समीपस्थ तथा ध्यान देने वाले व्यक्तियों को उसका पता नहीं लगता। और किसी किसी में अल्पसी विसंज्ञता होकर मुखमण्डल एवं ग्रीवा का तशन्नुज (आक्षेप) उपस्थित हो जाता है, नेत्रकनीनिका प्रसरित हो जाती है और एक गम्भीर श्वास लेकर रोगी होश में आकर काम में लग जाता है।

दोषानुसार अपस्मार के लक्षण

वातापस्मार—वात के अपस्मार में रोगी काँपता, दाँत पीसता व चबाता, फेन का वमन करता अर्थात् मुख से झाग डालता, खर श्वास लेता और कठोर (रूक्ष), धूसर व लाल, काले रंग के मनुष्यों को देखता है अर्थात् उसे ऐसा प्रतीत होता है मानो कोई उक्त वर्ण वाला मनुष्य उसके ऊपर दौड़ा आता है। मा० नि०। वातज अपस्मार में रोगी का पाँव काँपने लगता है, बार बार गिरता पड़ता है तथा ज्ञान के नष्ट हो जाने से वह विकृत स्वर से रुदन करने लगता, आँखें गोल सी हो जातीं, श्वास लेता, मुख से झाग डालता, काँपने लगता, शिर को घुमाता, दाँतों को चबाता, कन्धों को ऊंचे करता और अंग को चारों ओर फेंकता है। देह में विषमता हो जाती और सम्पूर्ण अंगुलियाँ टेढ़ी पड़ जाती हैं। आँखें त्वचा, नख और मुख रूक्ष, श्याव, अरुण वा काले पड़ जाते हैं। रोगी को चंचल, कर्कश, विरूप और विकृतानन सम्पूर्ण वस्तु दिखाई देने लगती है। वा० उ० अ० ७।

पित्तापस्मार—पित्तापस्मारी के मुखके झाग, देह, मुख और आँखें पीली हो जाती हैं। वह समग्र वस्तुओं को पीतलोहित वर्णान्वित देखता है अथवा उसे ऐसा दीखता है मानो कोई पीले रंग का मनुष्य सामनेसे दौड़ा आता है, यथा—"पीतोमामनुधावति"—सुश्रुत, और तृषायुक्त होकर वह सम्पूर्ण जगत् को इस भाँति देखता है मानो वह उष्णता एवं अग्नि से व्याप्त हो।

मा० नि० । बारबार चेत कर लेना, त्वचा का पीला पड़ जाना, भूमि को खोदने लगना, प्यास का लगना और भयानक, प्रदीप्त एवं क्रोधित रूप देखना आदि लक्षण वाग्भट्ट महोदय ने अधिक लिखे हैं।

कफापस्मार—कफ की मृगी वाला रोगी सफेद रंग के रूप को देखकर (मानों कोई श्वेत वर्ण का मनुष्य सामनेसे उसके पास दौड़ा आता है ऐसा देखकर-सुश्रुत) मूर्च्छित हो जाता है। रोगी का मुख, मुख का झाग, नेत्र और अंग सफ़ेद हो जाते हैं, शरीर शीतल हो जाता है, रोमहर्ष होता और देह में भारीपन होजाता है। श्लैष्मिक मृगी का रोगी अन्यान्य मृगी वालों की अपेक्षा देर में चैतन्य होता है। मा० नि०। मुख से लार का अधिक गिरना और नख का श्वेत हो जाना वाग्भट्ट ने अधिक लिखे हैं। वा० उ० ७ अ० ।

त्रिदोषज वा सान्निपातिक अपस्मार और अपस्मार की असाध्यता—

जिसमें तीनों दोषों के लक्षण मिलें उसे त्रिदोषज अपस्मार कहते हैं। यह तथा क्षीण पुरुष का पुराना अपस्मार भी असाध्य है। जो बहुत कांपे, क्षीण हो और जिसकी भौंह चलायमान हो और नेत्र टेढ़े हो जाएँ ऐसे अपस्मार रोगी असाध्य हैं। मा० नि० ।

पैतृक अपस्मार को कम लाभ हुआ करता है। अन्य प्रकार की वात व्याधियों की अपेक्षा मस्तिष्कविकार जन्य अपस्मार, चाहे वह औपदंशिक हो या न हो, अधिकतर चिकित्स्य होता है। दन्तोद्भेजन्य या आन्त्रविकारजन्य शैशव काल से आरम्भ होने वाला अपस्मार और जिसे बहुत काल हो गए हों, लगभग असाध्य होते हैं।

रोग विनिश्चय

अपस्मारके लक्षण निम्न लिखित कतिपय रोगों के लक्षण के बहुत कुछ समान होते हैं। अस्तु, इसके निदान करने में उनका विचार कर लेना अत्यावश्यक है:—

(१) अपस्मार तथा शिरोभ्रमण—

अपस्मार रोगी अकस्मात पृथ्वीपर गिर पड़ता है और उसके हस्तपाद आक्षेपग्रस्त हो जाते हैं एवं उसके मुख से कफ जारी होता है। इसके विपरीत शिरोघूर्णन में यद्यपि रोगी चक्कर खाकर गिर पड़ता है तो भी न उसके हस्तपाद आक्षेपग्रस्त होते हैं और न तो मुख में झाग ही आता है।

(२) अपस्मार और योषापस्मार—

देखो – योषापस्मार ।

(३) अपस्मार और आक्षेपक—

देखो—आक्षेपक ।

स्वास्थ्य संरक्षण

रोगारम्भ से पूर्व जिस स्थान पर सुरसुराहट का बोध हो उससे ऊपर एक रूमाल या पटका कसकर बाँधना और वेग से पूर्व उक्त क्रिया का दोहराना या उक्त स्थल पर चुटकी लेना, सर्दी, गर्मी अथवा बिजली लगाना या ब्लिस्टर लगाना (फोस्का उत्पन्न करना) या उस स्थल की नाड़ी का छेदन करना, प्रायः लाभदायक सिद्ध होता है।

दोनों हाथों को उष्ण जल में रखना मन्या पर बर्फ़ लगाना, ५ १० मिनट तक उछलना कूदना या ज़ोर से पढ़ना, वस्तिदान, वमन कराना या विरेचन देना, २० ग्रेन क्लोरल एक आउंस पानी में मिलाकर पिलाना या $\frac{1}{3}$ ग्रेन मॉर्फिया (अहिफेन सत्व) और $\frac{1}{40}$ ग्रेन ऐट्रोपीन (धत्तूरीन) का त्वगन्तरीय अन्तःक्षेप करना, आदि में मूर्च्छा न होनेपर अवयवोंको बलपूर्वक खींचना और शिर विपरीत दिशा की ओर घुमाना, श्वासावरोध में ईथर, क्लोरोफॉर्म या नाइट्रेट ऑफ इमाइल सुँघाना इत्यादि उपाय रोग प्रतिषेधक रूप से उपयोगी सिद्ध हुए हैं।

रोगी के शिर को तीव्र गतिसे सुरक्षित रक्खें। कठिन परिश्रम, अधिक अध्ययन, अति मैथुन आदि से तथा मद्यपान एवं अधिक सर्दी गर्मी से परहेज करना चाहिए। गतिशील एवं घूमती हुई

चीज़ को देखना, ऊँचाई पर चढ़कर नीचे देखना, दौड़ना या घोड़े पर सवार होकर उसे दौड़ाना, स्नानागार के भीतर अथवा जिस ओर से गंदा वायु आता हो उस ओर बैठना, मधुर, स्निग्ध व गुरु (दीर्घपाकी) एवं उष्ण आहार का सेवन करना, दिन में सोना, मेघ का गरजन सुनना, विद्युत की चमक को देखना और वर्षा में भीगना इत्यादि ये सब हानिकारक हैं।

रोग के वेग से पूर्व जिस स्थल पर सुरसुराहट अनुभव हो वहाँ पर कपड़ा या रूमाल बाँधें या उक्त स्थल पर कोई भक्षक (वा दाहक) औषध लगाकर क्षत उत्पन्न करें। भक्षक योग अर्थात् (कॉष्टिक)–रक्त मिर्च, राई और फ़र्फ़्यून इनको सम भाग लेकर खूब कूटकर भिलावें के तैल में मिलाकर उक्त स्थल पर रखकर बाँध दें।

वेग के प्रारम्भ में रोगी के आक्षेपयुक्त अवयव को खींच कर पूर्व अवस्था पर ले आना प्रायः वेग को कम कर देता और कभी कभी रोक भी देता है।

सऊन अजीब (विलक्षण नस्य)—बासमती चावल को आवश्यकतानुसार लेकर आकदुग्धमें तर करके सुखालें। फिर बारीक पीस कर रखलें।

मात्रा व सेवन-विधि—एक रत्ती इस दवा को किसी नली (या इन्सफ़्लेटर) द्वारा नासिका में फूकें।

प्रभाव व उपयोग–प्रतिश्याय, कफज शिरोवेदना, समलवायु, (इसाबह), अर्द्धावभेदक, अपस्मार, बालापस्मार और मूर्च्छा में लाभदायक है। **सूचना**—नियत मात्रा से अधिक कदापि सेवन न कराएँ। यदि एक बार में लाभ न हो तो दस पंद्रह मिनट बाद पुनः उतना ही प्रयोग में लाएँ।

अपस्मार के वेग (दौरे) की चिकित्सा

जब मृगी का वेग हो, तब रोगीको ऐसे गृह में जिसमें शुद्ध वायु का प्रवेश हो, सुरक्षित रूप से कोमल स्थान पर सुखपूर्वक लिटाएँ। ग्रीवा, वक्ष तथा उदर के बंधनको ढ़ीला कर दें, शिर को ऊँचा रखें, और दाँतों के बीच में बोतल का कॉर्क (काग) या कपड़े की गद्दी रखदें। जिसमें जिह्वा दाँतों तले आकर कट न जाए। फिर किसी उपयुक्त नस्य वा अञ्जन का प्रयोग कराएँ। कभी नाइट्रेट ऑफ इमाइल को ५ बुंद की मात्रा में सुँघाने से वेग की तीव्रता कम होजाती है। रोगी के शिर पर शीतल जल अथवा बर्फ़ लगाएँ। मुखमण्डल पर शीतल जल के छींटे मारें और जब रोगी सर्वथा निश्चेष्ट होजाए तब उसको उसी दशा में लेटा रहने दें। तत्क्षण मूर्च्छा निवारण का यत्न न करें। ज्ञान होने पर दो तीन घंटे तक उसकी रक्षा करें। क्योंकि कभी कभी वेग के पश्चात् रोगी मूढ़मति होकर उन्मत्त के समान निंदित कामों को करने लगता है। वेग की शांति के पश्चात् प्रायः शिरोशूल हुआ करता है। तदर्थ फिनेसेटीन को ५ ग्रेन (२॥ रत्ती) की मात्रामें देनेसे प्रायः लाभ हो जाता है।

वेग काल में हकीम लोग प्रायः हींग और जुन्दबेदस्तर को सिकंजबीन असली में घिसकर इसके कुछ बुंद कान में टपकाते हैं अथवा कुन्दश, श्वेत कटुकी या इन्द्रायन का गूदा या काली मरिच या कलौंजी, सोंठ, मुर्मकी, फ़र्फ़्यून अथवा जुन्दबेदस्तर आदि में से जो उपलब्ध हो उसको घिसकर नस्य दें या सुदाब को सुँघाएँ अथवा ऊदसलीब जलाकर उसका धूम्र नासिका में सुँघाएँ।

विराम कालीन चिकित्सा

अपस्मार के वेग के प्रशमित होने और उसके स्वरूप एवं कारण का ज्ञान हो जाने पर तदनुकूल चिकित्सा की व्यवस्था करनी चाहिए। अस्तु, दोषों से आवृत्त बुद्धि, चित्त, हृदय और सम्पूर्ण स्रोतों के प्रबोध करानेके निमित्त तीक्ष्ण वमनादि का दोषानुसार प्रयोग करें। यथा—

वातिकं वस्ति भूयिष्ठैः पैत्तं प्रायो विरेचनैः।
श्लैष्मिकं वमनप्रायैरपस्मारमुपाचरेत् ॥

(चा० उ० ७ अ०)

अर्थात्—वातिक अपस्मार में वस्ति प्रधान,

पैत्तिक अपस्मार में विरेचन और कफज में वमन-प्रधान चिकित्सा द्वारा उपचार करें।

वमन विरेचनादि द्वारा सब तरह से शुद्ध हुए तथा पेया पानादि द्वारा संसर्गी करके सम्यक् आश्वासन किए हुए रोगी को अपस्मार की शांति के निमित्त उचित संशमन औषधों का उपयोग करना आवश्यक है।

बालकों के आन्त्रस्थ कृमिविकार या दन्तोद्भेद होने की दशा में उनका उचित उपचार करें। युवाओं के आमाशय, आंत्र तथा यकृत की क्रिया को ठीक करें। किसी रोग के कारण यदि कोई दाँत खराब हो गया हो तो उसका उचित उपाय करें। मलावरोध न होने दें; क्योंकि इससे साधारणतः रोगका वेग हो जाया करता है। तम्बाकू, कहवा, चाय, मद्य एवं अन्य उत्तेजक औषधों से बिलकुल परहेज कराएँ। अधिक अध्ययन एवं कठिन श्रम से बचें। उद्वेग तथा वासनाओं विशेषकर काम वासनाओं से एवं अन्य दुर्व्यसनों से सख्त परहेज़ करें। चिंता, शोक, भय और क्रोध प्रभृति मनोविकारों का अवलम्बन करना, अपवित्रता तथा विरुद्ध, तीक्ष्ण, उष्ण यथा मांस और अंडे प्रभृति तथा भारी आहार करना अपस्मारी के लिए अहितकर हैं। स्त्रियों के अनियमित मासिक स्राव को स्वास्थ्यावस्था पर ले आएँ।

ताजी तरकारी और दूध प्रभृति आहार अधिकतर उसकी प्रकृति के अनुकूल होते हैं। साफ स्वच्छ वायु में रहना, दैनिक शीतल जल से स्नान करना, प्रातः सायं वायु सेवन के लिए जाना, अधिक सोना, पथ्य लघु शीघ्रपाकी आहार का सेवन और स्वास्थ्य संरक्षण सम्बंधी नियमों का पालन करना अत्यंत उपयोगी है। अपराजधूपन, अञ्जन, नस्य, शिराव्यधन (फ़सद खोलना), भय दिखाना, बंधन, भय, तर्जन, ताडन, हर्ष, धूम्रपान, धैर्य देना, स्नान, मर्दन और विस्मय आदि भी उसके लिए हित हैं एवं लाल शालिधान्य का चावल, मूँग, गेहूँ, प्रतन, घृत, कूर्म (कछुए)का मांस, धन्वरसा, दुग्ध, ब्राह्मी के पत्र, वच, पटोल, श्वेत कुष्मांड, वास्तुक, दाड़िम, शोभाञ्जन (सहिंजन), नारिकेल, द्राक्षा, आमला, परुषक (फालसा), तैल, गदहे और घोड़े का मूत्र, आकाश जल और हरीतकी ये अपस्मार रोगी के लिए पथ्य एवं अत्यंत हितकारक हैं। चिंता, शोक, भय, क्रोध आदि मनोविकार, अपवित्रता और सम मत्स्य, विरुद्ध अन्न, तीक्ष्ण, उष्ण और भारी भोजन ये अपस्मारी के लिए अहित हैं।

देश काल, अवस्था और प्रकृति आदि का विचार करके आवश्यकतानुसार निम्न योगों में से किसी एक के उचित मात्रा में उपयोग करने से अपस्मार में लाभ होता है :—

अपस्मार गजाङ्कुश, अपस्मारारि, कल्याण चूर्ण, सूतभस्म प्रयोग, वातकुलान्तक, चण्ड भैरव, इन्द्र ब्रह्मवटी, कुष्माण्ड घृत, स्वल्प पञ्च गव्य घृत, बृहत् पञ्चगव्य घृत, महा चैतस घृत, ब्राह्मीघृत और पलङ्कषाद्य तैल, सिद्धार्थक तैल, कुमारी आसव तथा चतुर्मुख रस इत्यादि।

नोट—योग, सेवन-विधि व अनुपान प्रभृति क्रमानुसार दिए जाएँगे।

यूनानी वैद्यक की मत से रोग के मूलभूत कारण को दूर करें। भोजन से पूर्व व पश्चात् लघु श्रम विशेषकर अधोशाखाओं का मर्दन लाभदायक है। श्रम काल में शिर को गति न दें। वक्ष व उदर से दोनों पिंडलियों तक किसी मोटे वस्त्र से इतना मर्दन करें जिसमें अवयव राग युक्त हो जाएँ। आह्निक मध्यम अवगाहन करें।

चिकित्सा

(१) मिश्रित दवाएँ—

नोट—अमिश्रित दवाएँ आगे वर्णित हैं।

ख़मीरह् गावज़ुबान अम्बरी जद्वार ऊ़द सलीब वाला ४ मा०, अर्क़ गज़र (गर्ज़रार्क) वा अर्क़ गावज़ुबान प्रत्येक ६ तो० और शर्बत अबरेशम २ तो० के साथ देना अपस्मार में लाभप्रद है।

अतीफ़ल उस्तोखुद्दूस ७ मा० को अर्क़ मुण्डी

५ तो० तथा अर्क़ गावज़ुबान ७ तो० के साथ देने से लाभ होता है।

मअ्ज़ून ज़बीब ७ मा० को अर्क़ गावज़ुबान १२ तो० के साथ देना प्रायः लाभदायक होता है।

मअ्ज़ून फ़ैकरा ७ मा० अर्क़ बादियान व अर्क़ गावज़ुबान प्रत्येक ६ तो० के साथ उपयोगी है।

मुफ़र्रिह शेखुर्रईस ३ मा० को ५ मा० शीरह् गावज़ुबान १२ तो०, अर्क़ गावज़ुबान और ४ तो० ख़मीरा बनफ़्सा के साथ देना लाभप्रद होता है।

मअ्ज़ून आक़र्क़र्हा ३ मा० या मअ्ज़ून कुनार ५ मा० अथवा मअ्ज़ून सूतिरा ४ मा० को अर्क मुण्डी या अर्क़ गावज़ुबान प्रभृति के साथ देना लाभदायक है।

सरअ् मिअ्दी व सरअ् मराक़ी
अर्थात्
आमाशयिक वा औन्मादिक अपस्मार

इसमें आमाशय तथा यकृत् का ध्यान रखकर चिकित्सा करें। अस्तु, अयारिज फ़ैक़रा, गुलकंद, मस्तगी, पुदीना और अफ़्सन्तीन प्रभृति औषधों द्वारा आमाशय को बल प्रदान करें तथा लघु और शीघ्रपाकी आहार की योजना करें। यदि रोगी के रक्त प्रकृति होने अथवा रोगिणी के ऋतुस्राव के अवरुद्ध हो जाने से शरीर में शोणित का प्रकोप हुआ हो तो साफ़िन नाम्नी शिरा का वेधन करें (फ़स्द खोलें) या पिंडलियों पर भरी सींगियाँ (शृङ्गी) लगाएँ तथा विरेचन दें।

मधुर एवं उष्ण आहार व मादक द्रव्यों से परहेज़ कराएँ और अनारदाना ज़रिश्क या सुमाक़ अथवा आबग़ोरह् मिलाकर शीतल आहार दें। यदि रोगी शीतल और कफ प्रकृति हो जिसके ये लक्षण हैं, ज्ञान विभ्रम, शिरःगौरव एवं वेग काल में मुख में कफ की अधिकता हो, अवयव शिथिल वा आलस्य पूर्ण हों तो निम्न लिखित मुन्ज़िज व विरेचन देकर श्लेष्मा का शोधन करें।

उस्तोख़ुद्दूस	५ मा०
बादरञ्जबूया पत्र (बिल्लीलोटनका पत्ता)	५ मा०
बादियान (सौंफ)	५ मा०
ऊदसलीब	५ मा०
ज़ूफ़ा ख़ुश्क	५ मा०
अनीसूँ	५ मा०

सेवन-विधि—इनको रात में उष्ण जल में भिगोकर प्रातःकाल मल छानकर गुलक़ंद २ तो० सम्मिलित कर रोज़ाना प्रातः काल पिलाएँ और सायंकाल उसके साथ यह योग दें, यथा—

जदवार	१ मा०
ऊद सलीब	१ मा०
ख़मीरा गावज़ुबान	१ तो०

मिलाकर रजत पत्र एक अदद सम्मिलित करके प्रथम पिलाएँ और ऊपर से शीरा बादियान ७मा०, अंजीर ज़र्द ३ अदद, अर्क़ बादियान, अर्क मको प्रत्येक ६ तो० में निकालकर ख़मीरा बनफ़शा २ तो० मिलाकर पिलाएँ और उक्त योग को कम से कम सात दिवस पर्यन्त पिलाएँ। आठवें दिन उक्त मुन्ज़िज में सफ़ेद निशोथ, सनायमक्की, गुलेसुर्ख़ प्रत्येक ७ मा०, मग़ज़ फ़लूस ख़यार शंबर (अमलतासफलमज्जा) ५ तो०, तुरंजबीन (यवास शर्करा), शकर सुर्ख़ प्रत्येक ४ तो०, मग़ज़ बादाम ५ अदद या रोग़न बादाम ६ मा० मिलाकर विरेचन दें। दूसरे और तीसरे विरेचन में मुख्यतः मस्तिष्क शुद्धि हेतु उक्त रेचन के अतिरिक्त रात्रि को नियमानुसार हब्ब अयारिज ६ मा० सेवन कराएँ। शुद्धि हेतु निम्नांकित वटिकाओं में से किसी एक को व्यवहार में लाएँ।

(१) हब्ब मुनक़्क़ा दिमाग़ (मस्तिष्क शोधनी वटी)–सिब्र ज़र्द (पीत एलुआ), ग़ारीक़ून, तुर्बुद सफ़ेद (श्वेत निशोथ) प्रत्येक ३॥ मा०, हब्बुन्नील १॥ मा०, सक़मूनिया मुशव्वी (भुलभुलाया हुआ सक़मूनिया) ४ रत्ती, इन्द्रायण मज्जा २ मा०, सबको कूट छानकर शुद्ध मधु में गूँध कर चने प्रमाण गोलियाँ बनाएँ। आवश्यकतानुसार ७ मा० औषध को अर्क बादियान या उपयुक्त योग के साथ प्रयोग कराएँ।

(२) हुब्ब सरअ (अपस्मार वटी)—

ग़ारीक़ून, उस्तोख़ुद्दूस, अफ़्तीमून, बसफ़ाइज, सैंधव, ऊदसलीब प्रत्येक १ मा०, इन्द्रायन का गूदा, निशोथ, सक़मूनिया मुशव्वी, पीत हरड़ का बक़्कल और कतीरा प्रत्येक २ मा०, अयारिज फ़ैक़रा ५ मा० सबको पीस कर गोलियाँ बनाएँ।

सेवन-विधि व मात्रा—७ मा० उक्त औषध को अर्क़ मको वा अर्क़ बादियान के साथ सेवन कराएँ।

जब अभीष्ट शुद्धि हो जाए तब निम्न लिखित योगों में से किसी एक का सेवन कराएँ। इनमें से प्रत्येक परीक्षित है—

(१) मअ्जून ज़बीब—इसको मुहम्मद ज़करिया राज़ी ने अत्यन्त परीक्षित बतलाया है।

अफ़्तीमून, उस्तोख़ुद्दूस, अकरकरा, बसफ़ाइज फ़िस्तक़ी प्रत्येक ३ तो० को कूट छान कर ज़बीब मुनक़्क़ा डेढ़ पाव में या सिकंजबीन असली डेढ़पाव में मिलाकर मअ्जून बनाएँ। मात्रा—१ तो० से १॥ तो० तक।

(२) हलेलह् ज़र्द, हलेलह् काबुली, बलेलह् (बहेड़ा), आमला, उस्तोख़ुद्दूस प्रत्येक तीन तो०, उद सलीब १॥ तो०, आक़रक़रहा १॥ मा० मवेज़ मुनक़्क़ा ॥ऽ सेर सब दवाओं को कूट छानकर और मवेज़ मुनक़्क़ा को सिल पर पीस कर मिलालें और किञ्चिद् उष्ण करके रख लें।

मात्रा व सेवन-विधि—७ मा० इस औषध को जल के साथ सेवन करें।

उपयोग—अपस्मार को दूर करता है।

(३) सफ़ूफ़ सरअ मुरक्कब

(यौगिक अपस्मार चूर्ण)—

काबुली हड़ का बक़्कल, हरड़ की छाल, गुठली निकाला हुआ आमला, काली हड़ प्रत्येक ३ तो०, निशोथ, बसफ़ाइज फ़िस्तक़ी और उस्तोख़ुद्दूस प्रत्येक १॥ तो०, पोटासियम् ब्रोमाइड, सोडियम् ब्रोमाइड प्रत्येक २ तो० ८ मा० सबको बारीक पीस परस्पर मिलालें।

मात्रा व सेवन-विधि—६ मा० प्रातः काल अर्क़ बादियान १२ तो० के साथ फाँक लिया करें।

प्रभाव तथा उपयोग—सम्पूर्ण वातज (सौदावी) मस्तिष्क विकारों यथा मालीख़ोलिया, अपस्मार और अनिद्रा प्रभृति को लाभदायक है। इख़्तिनाक़ (कंठावरोध) को भी लाभ प्रदान करता है।

(४) अक्सीर सरअ—संखिया, मनुष्य के शिर की खोपड़ी भस्म की हुई, आक़रक़रहा, हिंगु, ऊद सलीब, जदवार ख़ताई प्रत्येक ७ मा०, शुद्ध आमलासार गंधक १॥ मा०, सोंठ ३॥ मा०, शकर ४ मा०, सबको भृंगराज स्वरस में ३ दिन लगातार खरल कर एक एक रत्ती की गोलियाँ बनालें।

मात्रा व सेवन-विधि—एक गोली सुबह, एक शाम को अर्क़ मुण्डी ६ तो० के साथ खिलाएँ। गुण—अपस्मार के लिए अत्यन्त लाभदायक है।

(५) दवाए जुनून एक प्रसिद्ध औषध है जो उन्माद, मूर्गी और योषापस्मार के लिए विशेष रूप से लाभदायक है। स्वर्गवासी डॉक्टर जेबुर्रहमान प्रिंसिपल तिब्बिया कॉलेज लाहौर इस औषध को अधिकता के साथ प्रयोग करते थे।

हिन्दुस्तानी दवाख़ाना देहली प्राचीन औषधों को नवीन रंग रूप में पेश कर देश एवं कला की असीम सेवा कर रहा है। अतः उसने उक्त औषध की नव्य विधानानुसार खोज पड़ताल की है और उसका प्रभावात्मक सार प्राप्त किया है। यह क्रियात्मक सार ब्रोमाइड की तरह श्वेत है; किन्तु उससे अपेक्षाकृत अधिक प्रभावशाली एवं लाभदायक होने के सिवा उसके प्रत्येक हानिकारक गुणों से रहित है। ब्रोमाइड के समान इसके अधिक उपयोग से किसी प्रकार की हानि की सम्भावना नहीं। इससे असीम शांति लाभ होता और तत्क्षण नींद आजाती है।

अवयव व विधि—छोटी चन्दन (यह एक बूटी है जो बिहार और बंगाल में मिलती है)

को मय पत्र व फल को छाया में शुष्क कर और बारीक पीस कर रखलें।

मात्रा व सेवन-विधि—आवश्यकतानुसार २–२ मा० साधारण जल वा अर्क गावज़ुबान के साथ प्रातः सायं सेवन कराएँ।

प्रभाव व उपयोग—शामक व निद्राजनक। मृगी, उन्माद और योषापस्मार में अत्यन्त लाभप्रद है।

डॉक्टरी मत से—मृगी की चिकित्सा में अब तक जितनी औषधें ज्ञात हुई हैं, उन सब में ब्रोमाइड्स (ब्रोमाइड ऑफ़ पोटासियम्, ब्रोमाइड ऑफ सोडियम् और ब्रोमाइड ऑफ़ अमोनियम् इत्यादि) अपेक्षाकृत अधिक लाभदायक सिद्ध हुए हैं। इनके प्रयोग से कभी कभी तो रोगी को बिलकुल लाभ हो जाता है। किन्तु, प्रायः रोगियों को औषध सेवन काल में रोग का वेग रुक जाता है, पर औषध का सेवन बन्द कर देने के थोड़े काल पश्चात् पुनः रोग का आक्रमण होने लगता है।

सामान्य प्रकार की मृगी की अपेक्षा उग्र प्रकार में और रात्रि की अपेक्षा दिनके वेगमें यह औषध अधिक लाभदायक होती है। किसी किसी रोगी में कुछ काल के सेवन के बाद ब्रोमाइड्स का प्रभाव अधिक काल स्थाई नहीं रहता और अल्प संज्ञक रोगियों में यह कुछ लाभ हो नहीं प्रदर्शित करता। तिस पर भी यह अन्य औषधों की अपेक्षा अवश्यमेव अधिक गुणप्रद है। इसकी मात्रा रोगी तथा रोगावस्था के अनुकूल होनी चाहिए। क्योंकि किसी किसी रोगी में इस औषध के सहन की अधिक क्षमता होती है और किसी को अल्प। युवा की अपेक्षा बालक को इसकी अधिक क्षमता होती है। परन्तु पुरुष की अपेक्षा स्त्री को कम।

ब्रोमाइड को थोड़ी मात्रा में प्रारम्भ करना उत्तम है। अस्तु एक युवा रोगी को १५ से ३० ग्रेन (७॥ से १५ रत्ती) की मात्रा में दिन में तीन बार देना प्रारम्भ करें। आवश्यकतानुसार इस मात्रा में न्यूनाधिकता कर सकते हैं। अर्थात यदि रोगी के वेग में कमी आजाए तो औषध की मात्रा किञ्चित् कम कर दें और यदि वेग बढ़ जाए तो औषध की मात्रा बढ़ा दें। पर यदि ३०–३० ग्रेन दिन में तीन बार देने से रोग का वेग न रुके तो इस औषध से लाभ की कम आशा होती है। उक्त औषध का लाभदायक होना अधिकतर उसके शुद्ध और उत्तम होनेपर निर्भर है।

खराब औषधसे साधारणतः लाभ नहीं होता। इसलिए इस औषध को विश्वस्त कार्यालय द्वारा निर्मित एवं विश्वसनीय दूकान से खरीदनी चाहिए।

यदि रोग का वेग किसी विशेष समय होता हो, उदाहरणतः दिन के दो बजे, तो ऐसी दशा में औषध की एक बड़ी मात्रा (१ ड्राम) रोग के वेग से चार घंटे पूर्व देनी चाहिए। जब वेग रात्रि को स्वप्न में किसी समय होता हो तब उक्त औषध को ५०–६० ग्रेन की मात्रा में रात को सोते समय दें और यदि प्रातः काल निद्रा भंग होने पर वेग होता हो तो ३० या ४० ग्रेन ब्रोमाइड्स रात्रि को सोते समय दें और ऐसी ही एक मात्रा औषध प्रातः काल रोगी को जागते पिलाएँ।

जब ब्रोमाइड्स को दो तीन बार दैनिक देना हो तब भोजन के १ घंटा बाद देना अधिक उत्तम है। आमाशय तथा आंत्र पर इसका क्षोभक प्रभाव न हो तथा मुख मण्डल आदि पर मुँहासे न निकलें, इस हेतु इसके साथ थोड़ी मात्रा में संखिया मिलाकर देना चाहिए। परन्तु जब इसका तात्कालिक एवं विश्वसनीय प्रभाव अभीष्ट हो तब इसे एक ही बड़ी मात्रा में खाली पेट देना अधिक उत्तम होता है जिसमें यह तत्काल रक्त में अभिशोषित हो जाए।

अपस्मारीमें ब्रोमाइड्सको इसके प्रयोग द्वारा पूर्ण प्रभाव प्राप्त होने से प्रथम ही बन्द कर देना उचित नहीं। इसके विरुद्ध इसको अधिक मात्रा में अधिक काल तक सेवन कराते जाना व्यर्थ ही नहीं, प्रत्युत हानिकारक भी है। क्योंकि शरीर में जब इसका पूर्ण प्रभाव हो लेता है तब यदि

इसकी मात्रा कम न की जाए तो ब्रोमिज़्म (ब्रोमाइड द्वारा विषाक्तता) के अप्रिय लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं। (इसके लिए देखो—ब्रोमाइड)।

ब्रोमाइड्स को उपयोग सम्बन्धी कतिपय आवश्यकीय सूचनाएँ—

(१) विस्मृति वा बुद्धिभ्रंश प्रभृति वस्तुतः स्वयं अपस्मार के सामूहिक वा सम्मिलित लक्षण होते हैं। अतः उनको ब्रोमाइड्स द्वारा विषाक्तता के लक्षण मानना भूल है।

(२) ब्रोमिज़्म (ब्रोमाइड्स द्वारा विषाक्तता) के विषैले प्रभावसे बचनेके लिए उनके साथ संखिया वा बेलाडोना वा स्ट्रिकनीन (कारस्करीन) इत्यादि को सम्मिलितकर उपयोग में लाना लाभदायक है।

(३) जब तक ब्रोमाइड्स का पूरा पूरा प्रभाव न हो जाए अर्थात् औषध के विषैले प्रभाव प्रारम्भ न हो जाएँ, तब तक उसके उपयोग को स्थगित कर देना महान भूल है।

(४) मुखमण्डल वा पृष्ठ पर केवल मुँहासों अर्थात् रक्तवर्ण के दानों का निकल आना इस बात का प्रमाण नहीं हो सकता कि शरीर में औषध का पूर्ण प्रभाव हो चुका है अथवा उसका विषैला प्रभाव प्रकट हो गया है। क्योंकि किसी किसी व्यक्ति में ब्रोमाइड्स को थोड़ी मात्रा में देने से भी मुँहासे निकल आते हैं। अतएव प्राक्कथित अन्य लक्षणोंका ध्यान रखना भी आवश्यकीय है।

(५) ब्रोमाइड्स के सेवन काल में यदि रोगी को लवण रहित आहार दिया जाए तो औषधका प्रभाव शीघ्र तर एवं श्रेष्ठतर होता है। क्योंकि आहार में लवण के न रहने से यह औषध शारीर एवं वाततन्तुओं में भली प्रकार अभिशोषित होती है। ऐसी दशा में इसकी थोड़ी मात्रा भी पूर्ण लाभ प्रदर्शित करती है। अस्तु, कतिपय डॉक्टरों के अनुभव इस बात के समर्थक हैं कि ऐसी अवस्था में ब्रोमाइड्स को या केवल सोडियम् ब्रोमाइड को ३० ग्रेन की मात्रा में प्रति दिन सेवन कराने से ८ दिनके भीतर भीतर रोग के वेग रुक गए।

(६) ब्रोमाइड्स का प्रयोग कितने काल तक जारी रखना चाहिए? रोग के वेग के रुक जाने के बाद तीन वर्ष तक ब्रोमाइड्स के प्रयोग को जारी रखना चाहिए। परन्तु तीसरे वर्ष में धीरे धीरे उसकी मात्रा घटा देनी चाहिए। अस्तु, एक वर्ष तक तो औषध का अविच्छिन्न प्रयोग में लाना चाहिए और फिर सप्ताह में एक दो दिन नागा करा देना चाहिए। डेढ़ वर्ष पश्चात् प्रति दूसरे दिन औषध देनी चाहिए और दो वर्ष पश्चात् सप्ताह में दो बार औषध देना पर्याप्त है।

(७) जब पैतृक ट्युबर कलोसिस (क्षय) के कारण या अभिघात जन्य वा गिर जाने से मस्तिष्क को आघात पहुँचने के कारण मृगी होती है अथवा बालकों को दन्तोद्भेद जन्य तथा युवाओंमें उपदंश जन्य मृगी होती है तब उक्त अवस्था में रोग के मूल कारण को तदोक्त उपचार द्वारा दूर करना चाहिए। उन रोगों के उचित उपचार द्वारा अपस्मार को भी लाभ हो जाता है। अस्तु, उपदंश जन्य मृगी में पुटासियम् आयोडाइड से लाभ होता है और इसी प्रकार औरों को भी। अतएव जब तक असल रोग का उचित उपाय न किया जाए तब तक ब्रोमाइड्स के उपयोग द्वारा कुछ भी लाभ नहीं होता। इसी प्रकार स्त्रियों में जब ऋतु दोष वा मानसिक विकार के कारण यह रोग हो अथवा पुरुषों में जब हस्तमैथुन इसका कारण हो तो जब तक रोग के मूलभूत कारण सर्वथा दूर न हो लें तब तक केवल ब्रोमाइड्स के उपयोग से इस रोग को बिलकुल आराम नहीं होता।

(८) ब्रोमाइड्स से अभिप्राय है—(क) ब्रोमाइड ऑफ़ पुटासियम्, (ख) ब्रोमाइड ऑफ़ सोडियम्, (ग) ब्रोमाइड ऑफ़ अमोनियम्, (घ) ब्रोमाइड ऑफ़ स्ट्रॅांशियम् और (ङ) ब्रोमाइड ऑफ़ लीथियम् प्रभृति। कोई डॉक्टर तो इनमें किसी एक को अकेले ही देना अधिक उत्तम

ख्याल करते हैं; किन्तु उनमें से अधिकांश प्रथम तीन को मिलाकर देते हैं।

(६) जिन अपस्मार रोगियों को ब्रोमाइड्स से किञ्चिन्मात्र भी लाभ नहीं होता, उनको बोरेक्स (टंकण) के उचित उपयोग से प्रायः लाभ हो जाता है। इसलिए इस औषध की अवश्य परीक्षा करनी चाहिए। इसके अतिरिक्त कतिपय अन्य औषध यथा ब्रोमीपीन, जिंक ऑक्साइड (यशद भस्म, यशदोषिद), कस्तूरी, कपूर, भंग, हींग और बालछड़ प्रभृति इस रोग की चिकित्सा में बरती जाती हैं और कभी कभी इनसे लाभ होता है।

(१०) अपस्मारी को यदि मलेरिया ज्वर (विषम ज्वर) हो तो ज्वर को रोकने के लिए उसे क्वीनीन सलफेट नहीं देना चाहिए। क्योंकि मृगी में प्रायः उससे हानि होती है। अस्तु, उसके स्थान में क्वीनीन वेलेरिएनेट या क्वीनीन आर्सिनेट को उचित मात्रा में देना चाहिए।

कतिपय अन्य औषध

(१) कामवासना तथा मैथुनाधिक्य वा हस्तमैथुन आदि कारणों से हुए अपस्मार में मॉनोब्रोमेट ऑफ़ कैम्फर (Monobromate of Camphor) को २-२ ग्रेन की मात्रा में दिन में ३ बार देने से और क्रमशः इसको ५ ग्रेन के स्थान में १०-१५ ग्रेन तक बढ़ाकर देने से प्रायः लाभ होता है। इस दवा को २-२ ग्रेनकी पर्लीज़ (मुक्तिकावत् वटिका) की शकल में देना उत्तम है।

(२) रजःरोध जन्य मृगी में यह गोलियाँ लाभदायक हैं—

एक्सट्रैक्टाई न्युसिसवामिकी	१० ग्रेन
पिल्युली एलोज़ एट मिरही	२ ड्राम

दोनों को मिलाकर ३६ गोलियाँ बनाएँ। १-१ गोली दिन में दो बार प्रातः सायं भोजन के बाद दें।

(३) यदि अपस्मार रोगी अनीमिक (रक्ताल्पता का मरीज़) हो तो उसको लौह के हलके योग देने चाहिए।

उदाहरणतः— फेराई एट एमोनिया साइट्रास या रेडयूस्ड आयर्न या स्टील वाइन प्रभृति देना लाभदायक होता है। मत्स्य तैल भी (यदि पच जाए) साधारण मृगी में लाभदायक है।

(४) वेग के पश्चात् यदि रोगी अधिक काल तक मूर्च्छित पड़ा रहे तो उसके सिर पर बर्फ़ और गुद्दी (मन्या) पर ब्लिष्टर लगाना लाभप्रद होता है।

(५) स्टेटस एपिलेप्टिकस (Status Epilepticus) अर्थात् अविच्छिन्न अपस्मार जिसमें रोगवेग मूर्च्छा में अंत होता है तथा मूर्च्छा रोगवेग में। यह दशा अत्यन्त भयावह व घातक होती है। इसमें रोगी को सुरक्षित रूप से क्लोरोफॉर्म या ईथर सुँघाना या मार्फीन (अहिफेनीन) $\frac{१}{४}$ ग्रेन और ऐट्रोपीन $\frac{१}{१००}$ ग्रेन वा हायोसीन हाइड्रोब्रोमेट $\frac{१}{१००}$ ग्रेन का त्वक्स्थ अन्तःक्षेप करना या क्लोरल हाइड्रेट ४० ग्रेन को ४ आउंस पानी में विलीन करके इसकी वस्ति (एनिमा) करना लाभदायक है।

अपस्मार तथा सर्प-विष

अपस्मार में ८-८ दिवस के अन्तर से सर्पविष (Cobra venom) के $\frac{१}{२००}$ ग्रेन की मात्रा का ३-५ त्वगन्तः अन्तःक्षेप करें। फिर १४-१४ दिवस के अंतर से $\frac{१}{७५}$ ग्रेनकी मात्रा का दो अन्तःक्षेप और करें। बस यह काफ़ी है; अन्यथा १-१ मास के अंतर से इसकी $\frac{१}{२५०}$ ग्रेन की मात्रा का १ वा अधिक अन्तःक्षेप और करें। इतने पर भी यदि लक्षण विद्यमान हों तो इसको $\frac{१}{२५}$ ग्रेन की मात्रा में या रोगी की अवस्था, प्रकृति वा रोग के वेग के अनुसार इसकी मात्रा कम कर अन्तःक्षेप द्वारा प्रयुक्त करें।

यह क्रोटेलस हॉरिडस (Crotalus horridus) या रैटल स्नेक (Rattle snake) जाति के साँप के विष से प्रस्तुत किया

जाता है। जीवित साँप का विष निकाल कर उसको बेल-जार में रख कर धूप में शुष्क कर लेते हैं। इसके ऐम्पुल्स बनाए जाते हैं जिसमें ग्लीसरीन और जल का विलयन सम्मिलित होता है। उक्त विलयन में पचननिवारक रूप से ट्रिके-सोल (Tricesol) भी योजित किया जाता है।

फुफ्फुस विकार, राजयक्ष्मा और श्वास में भी त्वगन्तः अन्तःक्षेप द्वारा प्रयुक्तकर इसकी परीक्षा की गई है। आभ्यन्तर रूप से इसका क्वचित ही प्रयोग होता है। (Extra Pharmacopœa of Martindale).

नोट—आयुर्वेदीय चिकित्सा में आभ्यन्तर और बहिर दोनों प्रकार से इसका प्रयोग होता है। देखो—सर्प।

कतिपय अन्य परीक्षित योग—

(१) जुन्दबेदस्तर	६ मा०
कस्तूरी	६ मा०
जटामांसी	१ तो०
नौसादर	१ तो०
उष्ट्र नासिका कीट	४ मा०

इन सम्पूर्ण औषधों का चूर्ण कर हस्ति विष्ठा के रस से सप्ताह पर्यन्त खरल कर ३ रत्ती प्रमाण की वटिकाएँ प्रस्तुत करें।

सेवन-विधि—पान के रस से आवश्यकता-नुसार १ से ३ गोली तक सेवन कराएँ।

(२) वच	१ तो०
ब्राह्मी	१ तो०
लशुन	१ तो०
हिंगु	६ मा०
कर्पूर	६ मा०
धत्तूर बीज	६ मा०
इन्द्रायन का गूदा	१ तो०
काली मरिच	१ तो०
अजमोद	१ तो०

इन सबको कूट छान कर चूर्ण प्रस्तुत करें। फिर हस्तिविष्ठा के रस से सप्ताह पर्यन्त खरल कर ६ रत्ती प्रमाण की गोलियाँ बनाएँ।

अनुपान पान का रस

मात्रा—१ रत्ती से ४ रत्ती तक।

(३) भवलबरूया का येन केन प्रकारेण उपयोग अत्यंत लाभप्रद सिद्ध होता है। देखो—भवलबरूआ।

(४) डॉक्टरी योग—

अमोनिया ब्रोमाइड	५ ग्रेन
अमोनिया वेलेरिएना	१०ग्रेन
स्पिरिट कैम्फर	१५ बुंद
सोडा बाइ कार्ब	१० ग्रेन
एक्वा एनीसा	१ आउंस

यह एक मात्रा है।

ऐसी ही तीन मात्रा औषध प्रातः, मध्याह्न और सायं को देनी चाहिए।

अपस्मार में प्रयुक्त होने वाली मिश्रित और अमिश्रित औषधें।

(अमिश्रित औषध)

आयुर्वेदीय—

वच, अड़ूसा, पलाण्डु, श्वेत कुष्माण्ड, कर्पूर, ब्राह्मी, श्वेत सर्षप, शङ्खपुष्पी, धत्तूर, छागमूत्र, काकफल (काक नासिका), तेजबल (उगरू —बं०, सं०), कुसरुण्ट (बुन्दर-बम्ब०), कर्पास, गंधक और उसके योग, भल्लातक, रीठा, जल ब्राह्मी, खुरासानी अजवाइन, बेण्डार्ली (Club Moss), शोभाञ्जन, जटामांसी, केतकी (केवड़ा), अजमोदा, सोडियम और उसके लवण।

यूनानी—

(१) टङ्कण भुना हुआ १ से २ माशे तक ६ माशे शुद्ध शहद में मिलाकर कुछ दिवस पर्यंत प्रतिदिन प्रातःकाल खिलाना इस रोग में लाभ-प्रद है।

(२) हिंगु १ से २ माशे मधु ६ माशे या सिकञ्जबीन अन्सूली (सिकञ्जबीन बनपलाण्डु) २ तोला में मिलाकर हर प्रातःकाल को चटाना लाभदायक है।

(३) बादरंजबूया (बिल्लीलोटन) ३ माशे ६ माशे मधु में मिलाकर प्रति दिवस प्रातःकाल चटाना गुणप्रद है।

(४) कलौंजी १ माशे पीसकर सिकंजबीन अन्सली २ तोला या मधु ६ माशे में मिलाकर देना भी उपयोगी है ।

(५) सोसन की जड़ ७ माशे का क्वाथ कर २ तोला शर्बत अबरेशम के साथ देना गुणकारक है ।

(६) जंगली तितली ५ माशे, अंगूर का रस २ तो० और अर्क गावजुबान ६ तो० के साथ देने से लाभ होता है ।

(७) अकरकरा १ से २ माशे पीसकर सिकंजबीन अन्सली २ तो० के साथ देने से लाभ प्रदर्शित होता है ।

डॉक्टरी औषध—

ऑलियम् क्रोटनिस (जयपाल तैल), अमोनिया वेलेरियाना, ऑलियम् मडुइ, ऑलियम् टेरेबिन्थीनी, अर्जेण्टाई नाइट्रास, आर्टिमिशिया, अमोनिया ब्रोमाइड, अमोनिया कार्बोनास, अर्जेण्टाइ क्लोराइडम्, अर्जेंटाइ नाइट्रास, आर्सेनिक, एण्टिपाइरीन, ईथीलीन ब्रोमाइड, एपोमॉर्फाइनि, एमाइलनाइट्रास, एसाफिटिडा (हिंगु), एलिटेरियम्, एलोज़ (मुसब्बर), एलेक्ट्रिसिटि, (विद्युत्), कुप्राइ अमोनिया सल्फास, कुप्राइ सल्फास, कैम्फर (कपूर), कैष्टर (एरंड), क्विनाइन, क्लोरोफॉर्म, कोनियम्, क्वीन आर्सेनेट, केलोमेल, कालोसिन्थिस, ज़िन्साई ऑक्साइडम्, जिन्साई सल्फास, जिंक लैक्टैट, जिन्साइ वेलेरियानम्, जिंक साइट्रेट, डाइकपिंग, नक्स वॉमिका (कारस्कर), धारा स्नान, नाइट्रोग्लीसिरीन, डिजिटेलिस, पोटाशियम ब्रोमाइडम, प्लम्बाइ नाइट्रास, फॉस्फर्स, फेरि को०, बिस्मथम् एलबम्, बेलाडोना, बोरक्स, ब्रोमाइडम्, मस्क (कस्तूरी), ब्रोमीपीन (ब्रोमीनोल), मष्टर्ड (राई), ल्युमिनोल, वेलेरियन, विराट्राम एलबम्, साम्बल, सोडिआइ ब्रोमाइडम्, स्ट्राँशियम ब्रोमाइडम, सिरियाइ अक्जालास, स्ट्रेमोनियाइ (धुस्तर), स्टानाइ क्लोराइडम, लीथियम ब्रोमाइडम, हाइड्रोब्रोमिक एसिड, हाइड्रोक्लोरिकम और जिंक साइट्रेट, जिंक लैक्टेट, ऐण्टिपाइरीन इत्यादि ।

(२) अश्व अपस्मार—

घोड़े की मृगी के लक्षण—अपस्मारी अश्व अकस्मात् पृथ्वी पर गिर पड़ता है । नेत्र स्तब्धता, विसंज्ञता आदि लक्षण होते हैं और जो शीघ्र स्वस्थ हो जाता है उसको अपस्मार से पीड़ित जानना चाहिए ।

चिकित्सा—कुशल वैद्य को इसमें सम्पूर्ण उन्मादोक्त क्रिया का अवलम्बन करना चाहिए । ऐसे घोड़े को अत्यन्त पुराना घी पिलाना लाभदायक है । जयदत्तः ।

अपस्मार गजाङ्कुशः apasmára-gajánkuṣhah–सं० क्ली० हींग, काला नमक, त्रिकुटा इनको सम भाग लेकर पृथक् पृथक् एक एक दिन गोमूत्र में घोटें । फिर उसमें ४ मा० शुद्ध मूर्च्छित पारा मिलाकर घोटकर रक्खें । मात्रा—१ मा० । इसके सेवन से अपस्मार और उन्माद का नाश होता है । र० यो० सा० ।

अपस्मारारिः apasmárárih-सं० पुं० नीलाथोथा, पारा, गन्धक, सम भाग लेकर बहु काल पर्यन्त गिलोय के रस में घोटें, फिर सावधानी के साथ शरावों में बन्द करके कपड़मिट्टी कर २-३ जंगली कण्डों की आग दें । फिर निकाल कर १ दिन केले के रस से घोटें तो यह सिद्ध होगा ।

मात्रा—२ रत्ती । इसे ब्राह्मी या घृत के योग से देने से अपस्मार दूर होता है । इसमें ककारादि वर्ग वा स्त्री सहवास से परहेज करना चाहिए । र० यो० सा० ।

अपस्मारी apasmárí–हिं० वि० [सं०] जिसे अपस्मार रोग हो ।(Epileptic.)

अपस्वरम् apasvaram–(अव्य०), अपशब्द, स्वाभाविक स्वर से नीचा स्वर, हीनस्वर । (Low-voice) वा० शा० ५ अ० ४० श्लो० ।

अपह apaha–हिं० वि० [सं०] नाश करने वाला । विनाशक ।

यह शब्द समासांत पद के अन्त में प्रायः आता है । जैसे, क्लेशापह । रोगापह । ज्वरापह ।

अपहा apahá–अपहा (प्रत्यय) हन्ता, मार डालने वाला। हत्यारा, हिंसक, वधिक। (Killer, -cide).

अपक्ष apaksha–हिं० वि० (१) पक्ष रहित, निःसाहाय्य (helpless)। (२) पंख रहित।

अपक्षिप्त apakshipta–हिं० वि० [सं०] (१) अपक्षेपण की क्रिया द्वारा पलटाया वा फेका हुआ। (२) फेका हुआ। गिराया हुआ। पतित।

अपक्षेपण apakshepaṇa–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अपक्षिप्त] फेकना। पलटाना। (२) गिराना, च्युत करना। (३) पदार्थ विज्ञान के अनुसार प्रकाश (तेज) और शब्द की गति में किसी पदार्थ से टक्कर खाने से व्यावर्त्तन होना, प्रकाशादि का किसी पदार्थ से टकरा कर पलटना। (४) वैशेषिक शास्त्रानुसार आकुञ्चन, प्रसारण आदि पाँच प्रकार के कर्म्मों में से एक।

अपाकः apákah–सं० पुं०
अपाक apáka–हिं० संज्ञा पुं० } (१) (Indigestion) अजीर्ण, अपच। (२) पाकाभाव (कच्चापन)। Immaturity (३) उदरामय। आँव, आम।

अपाकरण apakaraṇa–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अपाकृत]। पृथकरण। अलग करना।

अपाकशाकम् apákaṣhákam–सं० क्लो०
अपाकशाक apákaṣháka–हिं० संज्ञा पुं० } अदरक, आर्द्रक, आदी। आदा-बं०। आले'-मह०। (Green ginger) रा० नि० व० ६।

अपाङ्गः apángah–सं० त्रि०
अपाङ्ग apánga–हिं० वि० } (१) अंग भंग, अङ्गहीन (Crippled)। मे०। संज्ञा पुं० (२) Canthus (The outer corner of the eye) नेत्र प्रान्त। रा० नि० व० १८। (३) तिलक। तिल। (Sesamum Indicum) मे० गत्रिकम्। (४) ग्रीवा से ऊपर के मर्मों में से उक्त नाम के दो मर्म्म विशेष। सु० शा० ६ अ०। (५) आँख की कोर (या कोना), नेत्र कोण, कटाक्ष। (Corner of an eye)। (६) दोनों नेत्रोंके बाहर की ओर भौंवों की पुच्छोंके नीचे उक्त नामके दो मर्म हैं। वा० शा० ४ अ०। (७ -बं० लट-जीरा, अपामार्ग, चिर्चिटा। (Achyranthes aspera).

अपाङ्गकः apángakah–सं० पुं० अपामार्ग क्षुप, चिर्चिटा-हिं०। आपाङ्-बं०। (Achyranthes aspera) लं०। श० र०।

अपाङ्गकमूलम् apángaka-múlam-सं० क्लो० देखो—अपाङ्गमल।

अपाङ्गमूल apángamúla–बं० अपामार्ग की जड़। Achyranthes aspera (*Root of–*).

अपाङ्गदर्शन apánga-darṣhana–हिं० पुं० तिरछी नजर से देखना। (A side glance, a leer, a wink).

अपाङ्ग्या apángyá सं० स्त्री० (Zygomatico arbital)

अपाचीनम् apáchínam–सं० क्लो० दूर करना। नष्टकरना। अथर्व०।

अपाटवम् apáṭavam–सं० क्लो०
अपाटव apáṭava–हिं० संज्ञा पुं० } (१) अपाटव, रोग, बीमारी। (A disease). (२) जाड्य, जड़ता, शीतलता। (Anæsthesia) रा० नि० व० २०। (३) बादा, भूख। (Hunger)। (४) मद्य, शराब। (५) पटुताका अभाव। अकुशलता अनाड़ीपन। (६) अचंचलता। मंदता सुस्ती। (७) कुरूपता। बदसूरती।

वि० (१) रोगी, बीमार। (२) जड़। (३) भूखा। (४) अपटु, अनाड़ी। (५) अचंचल। (६) कुरूप।

अपात apáta–सं० वनराज (Bauhinia racemosa, *Lam.*, *Hook. etc.*) फॉ० इं० १ भा० ५३७ पृ०। –हिं०वि० पत्रशून्य।

अपादान apádána–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) हटाना। अलगाव। विभाग। (२) ग्रहण। (The taking from a thing).

अपानः apánah–सं० पुं० (१) –क्ली० गुदा, मलद्वार, चूति। एनस। (Anus)–इं०। वा० नि०अ० १८। वा० सू० ११ अ०। (२) अपान देशीय पवन, गुदा में रहने वाली अपान वायु। अम०। (३) अपान अर्थात् मन्या पृष्ठ, पृष्ठांत तथा पार्ष्णि (एणी) में जाने वाली वायु। हे० च० ४। (४) दस वा पाँच प्राणों में से एक। इन्हीं तीन वायुओं में से कोई किसी को और कोई किसी को अपान कहते हैं--(क) वायु जो नासिका द्वारा बाहर से भीतर की ओर खींची जाती है। (ख) गुदास्थ वायु जो मल मूत्र को बाहर निकालती है। (ग) वह वायु जो तालु से पीठ तक और गुदा से उपस्थ तक व्याप्त है। (५) वायु जो गुदा से निकले। देखो—वात(वायु)।

अपानम् apánam–सं० क्ली० (Anal orifice) गुदा, मलद्वार, चूति।

अपान त्वक् संकोचनी apána-tvak-sankochaní–सं० स्त्री० (Corrugator cutis ani) मलद्वार सङ्कोचनी।

अपाकेष्टाः apákeshtáh–सं० पुं० अकेला। अथर्व०। सू० ६। १४। का० ८।

अपान-देशः apána-deshah–सं०पुं० गुददेश। (Anal region). वा० निघ०।

अपान नाली apána-nálí–सं०स्त्री० (Anal canal) गुदा।

अपान वायु apána-váyu–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) पाँच प्रकार की वायु में एक।

अपान वायु के कर्म—रुक्ष और भारी अन्न के खाने से मल मूत्रादि के वेग रोकने से, सवारी पर अधिक बैठने से, अधिक चलने से, अगम्य स्थानों में जाने से, अपानवायु कुपित होकर मूत्र-दोष, शुक्र दोष, अर्श और गुदभ्रंश तथा अन्य कष्टसाध्य पक्वाशयगत रोगों को उत्पन्न करता है। वा० नि० अ० १६।

(२) गुदास्थ वायु। पाद। पर्दन। गोज़।

अपां धातुः apándhátuh–सं० पुं० रस, जल, मूत्र, स्वेद, मेद, कफ, पित्त और रक्त इत्यादि। भा० म० १ भा० अतिसा० चि०। "संशम्या-पांधातुरग्निः प्रवृद्धः।"

अपांपित्तम् apánpittam–सं० क्ली० चित्रक वृक्ष, चीता। (Plumbago Zeylanica). अम०।

अपानोन्नमनी apánonnamaní–सं० स्त्री० (Levator ani). गुदोत्थापिका। एक पेशी विशेष।

अपा-पित्तम् apá-pittam–सं०क्ली० चीता वृक्ष, चित्रक। (Plumbago Zeylanica).

अपामार्गः apámárgah–सं० पुं०
अपामार्ग apámárga–हिं० संज्ञा पुं०
चिचड़ा(–रा), चिर्चिरा, लटजीरा, चिचड़ी, ऊँगा, ऊँगी, अंझाझारा–हिं०। अकिरैन्थीस, एस्परा (Achyranthes Aspera, Linn.), अकिरैन्थीस इंडिका Achyranthes Indica. Roxb., बाइडेण्टेटा Bidentata, अकीरैन्थीस ऑब्ट्युज़िफ़ोलिया Achyranthes Obtusifolia, *Lamb*, अकीरैन्थीस स्पिकेटा Achyranthes Spicata *Burm.*–ले०। रफ चैफ़ ट्री Rough Chaff tree, प्रिक्ली चैफ़ फ्लावर Prickly chaff Flower–इं०। अथर्व० सू० १७। ८। का० ४। सु० सू० ३९ अ० शिरो चि०।

संस्कृत पर्याय—शैखरिकः, धामार्गवः, मयूरकः, प्रत्यक्पर्णी, कीशपर्णी, किनिही, खर-मुञ्जरी (प्र) अपाङ्गकः, किणिः, कीशपर्णः, चमत्-कारः, (शब्द र०), शैखरेयः, अधामार्गवः, केशपर्णी (अ० टी०), स्थलमञ्जरी, प्रत्यक्पुष्पी क्षारमध्यः, अधोघंटा, शिखरी (र०), दुर्ग्रहा (भा०), दुर्ग्रहः, अध्वशल्यः, कान्तीरकः, मर्कटी, दुरभिग्रहः, वाशिरः, पराक्पुष्पी, कण्टी, कर्कटपिप्पली, कटु मञ्जरिका, अघाटः, खरकः, पाण्डुकण्टकः, माला कण्टकः, कुब्जः, मालाकण्टः,

आघाटः, प्रत्यक्पुष्पी, खरमञ्जरी, पंक्तिकण्टकः, रक्तबिन्दुः, अल्पपत्रकः, स्तवकः, किणिही, तथा व्रणहन्ता। अपाङ्, चिर्चिरि, ओपङ्, आपाङ् -बं०। अत्कुमह्-अ०। खारे-वाज़ूनह्, खारे-वाज़ूँ-फ़ा०। पुटकण्ड, फुटकण्डा, कुत्री-पं०। चिर्चिरी-विहा०। अगाड़ा, अघाड़ा-द०। नायुरिवि, शिरु-कडलाडी-ता०। उत्त-रेणि, अघिटश, अपामार्गमु, प्रत्युक्-पुष्पि, दुच्चीणिके -ते०, तै०। कटलाटि, कडालाडि-मल०। उत्राणि-गिडा, उत्तराणि, उत्तैरणि, उत्तरणे -कना०। उत्राणिच-भाड, आघाड़ा, आघेड़ा (पांडर अघाड़ा=श्वेतापामार्ग) -मह०। अघेड़ो, भिंजरवट्टो-गु०। गस्करल-हेब्बो-सिं०। किव-ला-मौ, कुने-ला-मौ-बर्मी०। सुफ़ेद आँधीझाडो, आँधा-झाडा-मा०। अंधाझोळी -राज०। उत्तरणे-का०। उत्तैरणि-कों०। अघाड़ा, चिचिया-बम्ब०।

तण्डुलीय वर्ग
(*N. O. Amarantaceæ*)

उत्पत्ति-स्थान—सर्वत्र भारतवर्ष तथा एशिया के वे भाग जो उष्ण कटिबन्ध पर स्थित हैं।

संज्ञा-निर्णय—डिमक महोदय (२ य खंड १३६ पृ०) "अध्वशल्य" शब्द का अर्थ "Roadside rice" अर्थात् पथिपार्श्वस्थ तण्डुल (मार्ग के किनारे का चावल) करते हैं। परन्तु शल्य शब्द का अर्थ तण्डुल नहीं, प्रत्युत शरीर में जिससे कुछ भी पीड़ा उत्पन्न हो उसको शल्य कहते हैं। डल्वण मिश्र लिखते हैं :— 'यत्किञ्चित् अवाधकरं शरीरे तत्सर्व्वमेव प्रवदन्ति शल्यम्' (सू० टी० १म अ०)। अपामार्ग की मञ्जरी कर्कश होती है और उसका वस्त्र वा गात्र से स्पर्श होने से क्लेशप्रद होती है इस कारण उसको मार्ग का शल्य कहा गया है।

खोरी महोदय (१ म० खं० । ५०४ पृ०) अपामार्ग का यह अर्थ करते हैं,-अप या आव= जल+मार्ग=रजक, धोबी (Apa or ab water and márga a washerman)। यह अर्थ अपूर्व है। मार्ग शब्द का रजक अर्थ कहीं भी देखने में नहीं आता। उपरोल्लिखित कल्पित अर्थ के निर्देश द्वारा खोरी महोदय ने यह बुझाना चाहा है कि अपामार्गक्षार द्वारा रजक (धोबी) वस्त्र को परिष्कृत करता है। अमरकोष के टीकाकार भानुजी दीक्षित कृत "अपमार्ज्-न्त्यनेन" इस अर्थ द्वारा जहाँ खोरी महोदय के उद्देश्य की सिद्धि हो जाती है, वहाँ उन्होंने उक्त कल्पित अर्थ की रचना करने का क्लेश क्यों स्वीकार किया?

वानस्पतिक-वर्णन—अपामार्ग एक प्रकार का फलपाकांत क्षुप है। यह वर्षा का प्रथम पानी पड़ते ही अंकुरित होता है, वर्षा में बढ़ता, शीत काल में पुष्प व फल से शोभित होता और ग्रीष्म ऋतु के सूर्य ताप द्वारा फल के परिपक्व होने के साथ ही सूख जाता है। इसका क्षुप १॥ या २ फुट दीर्घ और कभी कभी इससे भी अधिक उच्च होता है।

काण्ड वा साधारण वृन्त सीधा, खड़ा, चिपटा, चौकोना (रक्त अपामार्ग की शाखाएँ रक्त वर्ण की होती हैं), धारीदार और लोमश होता है। पार्श्विक शाखाएँ (पार्श्व वृन्त,) युग्म, परिविस्तृत; पत्र अति सूक्ष्म शुभ्रवर्ण के रोम से आवृत्त, अण्डाकार, पत्र प्रान्त सामान्य, अधिक कोणीय, नोकीले आधार पर पतले (रक्तापामार्ग के पत्र पर रक्तविन्दुवत् दाग होते हैं); पत्रवृन्त (पत्ते की डंडी) लघु; दोनों प्रकार के अपामार्ग की मञ्जरियाँ दीर्घ, कर्कश (इसी कारण इसका 'खरमञ्जरी' नाम पड़ा); पुष्प लघु, हरित वा लाल तथा बैंगनी मिले हुए रंग के जो मयूर कंठवत् होते हैं। इसीलिए इसको मयूरक नाम से अभिहित किया गया है। ब्रैक्ट्स कठोर तथा कण्टकाकीर्ण होते हैं। फल के भीतर बीज होता है। यह आयताकार, धूसर वर्ण का, $\frac{१}{१०}$ से $\frac{१}{८}$ इंच लंबा (बीज) होता है। तण्डुलवत् होने के कारण इसको अपामार्ग तण्डुल कहते हैं। इसका स्वाद तिक्त होता है।

श्वेत, कृष्ण और रक्त भेद से अपामार्ग तीन

प्रकार का होता है। ये सब गुण में भी भिन्न भिन्न होते है। (रा० नि०)

रासायनिक संगठन—बीज में अधिक परिमाण में क्षारीय भस्म होती है जिसमें पोटास वर्तमान होता है। (मेटिरिया मेडिका ऑफ़ इंडिया-आर० एन० खोरी, २. ५०४)।

प्रयोगांश—क्षुप (पञ्चांग) अर्थात् शाखा, पत्र, मूल, तथा बीज।

औषध-निर्माण—(१) पत्ते का स्वरस, मात्रा-१ तो०। (२) क्काथ तथा शीत कषाय, मात्रा-१ छ० से २ छ०। (३) मूल, मात्रा-४ मा० से ६ मा० तक। (४) बीज चूर्ण, मात्रा-४ आने से ६ आने तक (वज़न में)। (५) क्षार। (६) मूल चूर्ण। (७) मूल कल्क। (८) औषधीय तैल।

इतिहास—शुक्ल यजुर्वेद के अनुसार वृत्र एवं अन्य दैत्यों को मार डालने के बाद नमुचि द्वारा पराजित हुआ और उसे किसी सान्द्र वा द्रव पदार्थ से तथा न दिन में और न रात में ही कभी न मारने का वचन देकर उससे संधि कर ली। परन्तु इन्द्र ने कुछ फेन एकत्रित किए जो न द्रव हैं और न सांद्र और नमुचि को प्रातः सूर्य्योदय और रात्रिके मध्यकाल में मार डाला। उस दैत्य के सिर से अपामार्ग का क्षुप उत्पन्न हुआ जिसकी सहायता से इन्द्र सम्पूर्ण दैत्यों के वध करने में समर्थ हुआ। अब यह पौधा अपने प्रबल जादूमय प्रभाव के लिए प्रसिद्ध है और ऐसा माना जाता है कि बिच्छू एवं सर्प को वातग्रस्त (स्तब्ध) कर यह उनके विरुद्ध उनसे हमारी रक्षा करता है। नरकचतुर्दशी वा दिवाली के त्योहार के पहिले दिन की सुबह को अत्यन्त तड़के स्नान के समय इसको शरीर के चारों ओर घुमाते हैं। अथर्वेद में भी अपामार्ग का विस्तृत बर्णन आया है। (देखो—अथर्व०। सू० १७। ८। का० ४।)

अपामार्ग के प्रभाव तथा प्रयोग।

आयुर्वेद की दृष्टि से—

अपामार्ग स्वाद में तिक्त और कटु, उष्ण वीर्य्य, कफ नाशक, ग्राही तथा वामक है और बवासीर, खुजली, उदररोग, आम तथा रक्त का हरण करने वाला है। "रक्तापामार्ग शीतल, कटुक, कफ वात नाशक, वामक तथा संग्राही है और व्रण, खुजली और विष को नष्ट करने वाला है। धन्वन्तरीय निघंटु। रा० नि० व० ४।

सर अर्थात् विरेचक और तीक्ष्ण है। वा० सू० १५ अ० शिरोविरेचन।

"पृश्निपर्णी त्वपामार्गः।" च० द० सन्निपात ज्व० चि०।

अपामार्ग दस्तावर, तीक्ष्ण, दीपक, कड़वा, चरपरा, पाचक और रोचक है तथा वमन, कफ, मेद के रोग, वायु, हृद्रोग, अफरा, बवासीर, खुजली, शूल, उदर रोग और अपची रोग को नष्ट करता है। रक्तापामार्ग वातकारक, विष्टंभी कफवर्द्धक, शीतल और रूक्ष है। यह पूर्वोक्त अपामार्ग की अपेक्षा गुण में न्यून है। अपामार्ग के फल (चावल) खाने से जीर्ण नहीं होते अर्थात् पचते नहीं हैं, पाक में चरपरे, मधुर विष्टंभी, वातकर्ता, रूखे और रक्तपित्त को दूर करने वाले हैं। भा० पू० १ भा०।

अपामार्ग अग्नि के समान तीक्ष्ण, क्लेदन और परम स्रंसन है। राजवल्लभः।

अपामार्ग के पत्र रक्तपित्त नाशक हैं। मद० व० १।

श्वेत अपामार्ग स्वादमें तिक्त, ग्राहक, दस्तावर, किंचित् कटु, कांतिकारक, पाचक तथा अग्नि प्रदीपक है और वमन में एवं नस्य के लिए श्रेष्ठ है। कफ, कण्डू (खुजली), उदर रोग और अत्यन्त बुरे प्रकार के रक्त रोगों, मेद रोगों, उदर रोगों तथा वात, सिध्म, अपची, दद्रु, वमन और आम रोगों को नष्ट करनेवाला है। रक्तापामार्ग किंचित् चरपरा तथा शीतल है और मन्यावष्टंभ (मन्यास्तम्भ, गर्दन का जकड़ जाना), वमन, वात एवं विष्टंभकारक और रूक्ष है तथा व्रण, विष, वात, कफ और खुजली का नाश करता है।

अपामार्ग का बीज (चावल) पाकमें दुर्जर है अर्थात् यह पचता नहीं है, रस में मधुर, शीतल,

मलावरोधक, रूक्ष, वान्तिकारक और रक्तपित्त को दूर करने वाला है। अपामार्ग जल तिक्त, शोथ और कफनाशक है तथा कास, वात और शोष (सूखा) का नाश करता। वै० निघ०।

अपामार्ग के वैद्यकीय उपयोग

चरक—शिरोविरेचक वस्तुओं में अपामार्ग तण्डुल (चिचड़ी का बीज) श्रेष्ठ हैं। (सू० २५ अ०)।

सुश्रुत—(१) अर्श में अपामार्ग मूल (चिचड़ी की जड़) को चावल के धोवन में पीसकर मधु के साथ प्रति दिन सेवन करें। (चि० ६ अ०)। टीकाकार डल्वण-लिखते हैं—"अपामार्ग मूल योगः पित्त रक्तार्शसि। गयदास कफानुबंध रक्तेजेषु।" अर्थात् पित्तज रक्तार्श वा कफानुबंध रक्तार्श रोगी को इस औषध का सेवन करना चाहिए। (२) कृमि रोग में स्नेह वस्ति लेने के बाद शिरीष और अपामार्ग का रस मधु के साथ सेवन करें। (उ० ५४ अ०)।

चक्रदत्त—(१) सद्योव्रण द्वारा रक्तस्राव होने की दशा में, अर्थात् शरीर के किसी भाग के कट जाने के कारण जब वहाँ रुधिर स्राव होने लगे तब अपामार्ग के पत्र का रस प्रचुर परिमाण में लेकर क्षत के मुख को सेचन करने से रक्तस्रुति बन्द हो जाती है। (व्रण शोथ चि०)। (२) कर्णनाद तथा बधिरता में अपामार्ग क्षार—अपामार्ग के अन्तर्धूमदग्ध क्षार के जल तथा कल्क में तिल के तैल को डालकर यथा विधि तैल प्रस्तुत करें। इस तेल को कान में भरने (कर्णपूरण) से कर्णनाद तथा बधिरता रोग नष्ट होते हैं। (कर्ण रोग चि०)। (३) नूतन लोचनोत्कोप अर्थात् अभिष्यंद वा आँख आने में अपामार्ग मूल ताँबा के बरतन में किंचित् लवण मिश्रित दही के तोड़ को अपामार्ग की जड़ से घिसकर उस जल को आँख में भरने से अभिष्यंद रोग को लाभ होता है। (नेत्र रोग चि०)।

भावप्रकाश—विसूचिका में अपामार्गमूल—अपामार्ग की जड़ को जल के साथ पीस कर पान करने से विसूचिका रोग दूर होता है। (म० खं० २ भा०)।

शार्ङ्गधर—रक्तार्श में अपामार्ग के बीज को चावल के धोवन के साथ पीसकर पीने से रक्तार्श (खूनी बवासीर) नष्ट होता है, इसमें कोई संशय नहीं। (द्वि० खं० ५ म० अ०)।

वङ्गसेन—(१) उन्माद रोग में अपामार्ग श्वेत पुष्प की बरियारा की जड़ की छाल १ तो०, अपामार्ग की जड़ २ तो०। इनको एकत्र कूटकर ऽ१॥ जल एवं ऽ॥ गोदुग्ध के साथ क्वाथ प्रस्तुत करें। शीतल होने पर इसे प्रातःकाल सेवन करें। इससे घोर उन्माद रोग की तत्काल शांति होती है। (उन्माद चि०)।

(२) आगन्तुक व्रण रोपणार्थ अपामार्ग मूल—बरियारा एवं अपामार्ग की जड़ के कल्क द्वारा तैल पाक करें। इसे नूल तैल कहते हैं। यह आगन्तु व्रण का रोपण करने वाला है।

(आगन्तुव्रणाधिकार)।

हारीत—(१) निद्रानाश रोगमें अपामार्ग और काकजङ्घा द्वारा प्रस्तुत क्वाथ के सेवन से शीघ्र नींद आ जाती है। (चि० १६ अ०)। (२) शोथ रोग में अपामार्ग तथा कोकिलाक्ष के क्वाथ द्वारा वाष्प स्वेद वा वहाँ पर पिंड स्वेद करना शोथ रोगी के लिए हितकर है। (चि० ३६ अ०)।

वक्तव्य

चरक में सूत्रस्थान के चतुर्थ अध्याय के क्रिमिघ्न तथा वमनोपगवर्ग में अपामार्ग का पाठ दिया है। चरकोक्त अर्श चिकित्सा में अपामार्ग का नामोल्लेख नहीं है। शोथ चिकित्सा के "मयूरकं मागधिकां समूलां" पाठमें मयूरक नाम से अपामार्ग का प्रयोग आया है। सुश्रुतोक्त शोथ चिकित्सा में अपामार्ग का उल्लेख नहीं है। चक्रदत्त के लिङ्गार्श चिकित्सा में तथा भल्लातक-लौह में अपामार्ग का व्यवहार हुआ है; परन्तु शोथमें इसका उल्लेख नहीं है। चरक के विमान स्थान के आठवें अध्यायमें वर्णित वान्तिकर द्रव्यों

के अन्तर्गत अपामार्ग का पाठ आया है। विमान के प्रथम अध्याय के कृमिहर पथ्योपदेश के वर्णन में अपामार्ग के स्वरस में शालिचावल की पिट्ठी तैयार कर उसके सेवन करने की व्यवस्था दी गई है।

चरकोक्त—उन्माद चिकित्सा में "पिष्ट्वा तुल्यमपामार्गम" इत्यादि पाठ में अञ्जनार्थ अपामार्ग व्यवहृत हुआ है। पर इसके सेवनकी विधि नहीं दिखाई देता। सुश्रुतोक्त उन्माद चिकित्सा में इसका नामोल्लेख नहीं है। सुश्रुत ने शिरोविरेचन वर्ग में अपामार्ग का पाठ दिया है। (सू० ३९ अ०)। सुश्रुत सूत्रस्थान के ११ वें अध्याय में जहाँ क्षारजनक समग्र उद्भिद औषधों का नाम आया है, वहाँ अपामार्ग का उल्लेख है। अपामार्ग व्रण के लिए उपयोगी है। अतएव इसका नाम "किणिही" (व्रण हन्ता) हुआ।

अपामार्ग के सम्बन्ध में यूनानी तथा नव्य मत।

प्रकृति—१ कक्षा में शीतल तथा रूक्ष।

हानिकर्त्ता—उष्ण प्रकृति को और क्षुधा को मन्द एवं नष्ट करता है। दर्पघ्न—अनार का पानी सिकंजबीन, काँजी और आबगोरह्।

प्रतिनिधि—प्रायः गुणों में मेष मांस।

मुख्य प्रभाव—कामोद्दीपक, हर्षोत्पादक और शुक्र जनक। मात्रा—शक्त्यानुसार।

गुण, कर्म, प्रयोग—यदि ६ मा० इसके पत्र को काली मिर्च के साथ पिएँ और उसके बाद घीप्लुत रोटी खाएँ तो रक्तार्श को लाभ हो। यह आर्त्तवरुद्धक और प्रायः त्वग्रोगों, रक्त दोष, एवं नेत्र की धुंधता को लाभप्रद है।

अपामार्ग संकोचक, (संग्राही) मूत्रल और परिवर्तक है। रजः स्राव, अतिसार और प्रवाहिका में इसका उपयोग किया जाता है। अपामार्ग क्षार अगंभीर शोथ, जलोदर, चर्मरोग और ग्रन्थि वृद्धि तथा गलगंड आदि रोगों में प्रयोजनीय है। अपिच शुष्क कास में इसके सेवन से यह श्लेष्मा को तरल (द्रवीभूत) करता है। सर्प, कुक्कुर किंवा अन्यान्य विषधर-प्राणि दंशन जन्य विष दोष निवारण के लिए अपामार्ग बहुत प्रख्यात है। एतदर्थ यह सेवन व लेपन उभय प्रकार से व्यवहार में आता है। कभी कभी अपामार्ग का स्वरस दन्तमूल में एवं इसका कल्क फूली रोग में अंजन रूप से प्रयुक्त होता है। (मेटिरिया मेडिका ऑफ इंडिया २ य० खं०, ४०५ पृष्ठ)

अपामार्ग के मूत्रल गुण से इस देश के लोग भली प्रकार परिचित हैं। यूरोपीय चिकित्सकगण शोथ रोग में अपामार्ग की उपयोगिता स्वीकार करते हैं। मूल शाखापत्र सहित आध छटाँक, अपामार्ग को पाँच छटाँक जल में १५ मिनट तक क्वथित करें। इसमें से आध छटाँक से लेकर एक छटाँक की मात्रा तक दिन में तीन बार सेवन करें (फा० इं० पृष्ठ १८४)

अपामार्ग की जड़ एक तोला रात्रि को सोते समय सेवन करने से नक्तांधता (रतौंधी) जाती रहती है। फा० इं० ३ भा०।

इसका शुष्क पौधा बालकों के उदर शूल में दिया जाता है। पूयमेह (सूज़ाक) में भी इसका संकोचक रूप से उपयोग होता है। (स्टयुवर्ट)

मेजर मैडेन (Madden) लिखते हैं—"अपामार्ग की पुष्पमान मञ्जरियाँ वृश्चिक विष से रक्षा करने वाली ख्याल की जाती हैं। इसकी टहनी पास रहने से वह स्तब्ध हो जाता है।"

भस्म में अधिक परिमाण में पोटास होता है। इससे यह कला सम्बन्धी कार्योंके लिए भी उतना ही उपयोगी सिद्ध होता है जितना कि औषध के लिए। हरताल के साथ मिलाकर व्रण तथा शिश्न एवं शरीर के अन्य स्थल पर होने वाले मसक के लिए इसका बाह्य उपयोग (लेप) होता है।

उदय चन्द्रदत्त महोदय कई रोगों के लिए अपामार्गक्षारतैल के उपयोग का वर्णन करते हैं।

डॉक्टर बीडी (Bidie) कहते हैं--"कतिपय आंग्ल चिकित्सक गण क्काथ रूप से इसके व्यक्त मूत्रल गुण को स्वीकार करते हैं।"

डॉक्टर कॉर्निश (Dr. Cornish) ने जलोदर में इसका उपयोग किया और इसे उपयोगी पाया।

सिंध के जंगली दिहाती लोग बबूर-कण्टक जन्य क्षतों में इसका उपयोग करते हैं। मुरे।

बिहार में जब किसी व्यक्ति को कुकुर काट लेता है तब उसको अपामार्ग की पुष्पमान मञ्जरियों में किञ्चित् शर्करा मिलाकर बनाई हुई गोलियों का मुख्य रक्षक औषध रूप से व्यवहार करते हैं। (बैलफार)

यह चरपरा एवं मृदुरेचक है तथा जलोदर, अर्श, विस्फोट और त्वग्रोगों में उपयोगी ख्याल किया जाता है। इसके बीज और पत्र वामक ख्याल किए जाते हैं तथा जलत्रास और सर्पदंश में उपयोगी हैं। टी० एन० मुकर्जी।

डॉ० नदकारणी—अपामार्ग का क्काथ (अपामार्ग २ आउंस=१ छं० तथा जल १॥ पाइंट) उत्तम मूत्रल है और वृक्कीय जलोदर में लाभदायक पाया गया है। उदरशूल तथा आंत्र विकारों में इसके पत्ते का रस भी उपयोगी है।

अधिक मात्रा में गर्भपात वा प्रसववेदना उत्पन्न करता है। इसके ताज़े पत्तों को पीसकर गुड़ के साथ कल्क प्रस्तुत करें अथवा काली मरिच एवं लहसुन (रसोन) के साथ मिश्रित कर वटिकाएँ बनाएँ। इसके सेवन से विषम ज्वरों विशेष कर चातुर्थक ज्वरों में लाभ होता है।

इसके पत्तों का ताज़ा रस सूर्यताप द्वारा शुष्क कर इसका गाढ़ा सत्व प्रस्तुत करके इसमें थोड़ा अफ़ीम मिलाकर सेवन कराएँ। प्रारम्भिक औपदंशीय क्षतों के लिए यह उत्तम अनुलेपन है।

बीजों के सहित इसकी मंजरियाँ प्रायः श्लेष्मानिस्सारक रूप से व्यवहार की जाती है।

इसके बीज और दुग्ध द्वारा प्रस्तुत क्षीर (खीर) मस्तिष्क रोगों के लिए उत्तम औषध है।

स्नान करने के बाद रविवार के दिन एवं पुष्य नक्षत्र में लाई हुई और कोने में लटका कर रखी हुई इसकी जड़, उत्तेजना सहित प्रसव वेदना में तथा शीघ्र प्रसव कराने के लिए उपयोग की जाती है। वेदनाकाल में इसको स्त्री के केशों वा उसकी कटि में बाँधते हैं। प्रसव होजाने के पश्चात् इसे तुरंत निकाल कर धारा प्रवाह जल में फेंक देते हैं। (इं० मे० मे० पृ० १९--२०)

अपामार्ग की पुष्पमान मञ्जरियों वा बीज को जल के साथ पीस एवं कल्क प्रस्तुत कर विषधर सर्प एवं सरिसृप दंश में इसका बहिर प्रयोग किया गया है। चूर्ण किए हुए पत्र का क्वाथ मधु वा मिश्री के साथ सेवन करना अतिसार तथा प्रवाहिका की प्रथमावस्था में उपयोगी है। (इं० ड्र० इं० पृ० ५६५—आर० एन० चोपरा)

अपमार्ग की जड़को पानी में खूब बारीक पीस कर पेड़ू के नीचे रान तथा गुह्येंद्रिय पर प्रलेप कर दें तो शीघ्र बच्चा पैदा हो जाता है। इसको स्त्री के पाँव पर प्रलेप करने से भी यह बातहोती है। चिचड़ीके पत्र तथा बीज, प्रत्येक १-१ तो० को सुखा कर तम्बाकू की तरह हुक्का पर पीने से श्वास व पुरातन कास को बहुत लाभ होता है।

चिचड़ी का बीज ३ माशा कूट कर समान भाग शर्करा मिलाकर जल के साथ सेवन करने से रजःस्राव का अवरोध होता है।

इसकी जड़, बीज एवं पत्र को कूट कर चूर्ण बना और समान भाग शर्करा मिलाकर इसमें से ६ माशा की मात्रा में जल के साथ सेवन कराने से रक्तार्श नष्ट होता है। इसके ताजे पत्ते एवं जड़ को तिल तैल में मिलाकर व्यवहार करना कण्डु रोगी को अत्यंत लाभदायक है। उभय प्रकार की पुरानी से पुरानी खुजली को आराम हो जाता है।

६ माशा इसकी ताजी जड़ पानी में घोट कर पिलाने से वृक्काश्मरी को लाभ होता है। वस्ति से पथरी को टुकड़े टुकड़े कर निकाल देता है। वृक्कशूल की यह अव्यर्थ महौषध है।

इसकी ताजी जड़ के दैनिक दन्तधावन से दाँत मोती की तरह सफ़ेद हो जाते हैं। मुँह से

कफ निर्गत होता है। यह दंतशूल की शर्तिया दवा है। दाँतों के हिलने और मसूढ़ों के कमज़ोर होने को दूर करता है। विशेषकर मुखदुर्गंधि के लिए अत्यंत लाभदायक है।

इसकी जड़ पीसकर लगाने से स्तंभन होता है। इसके बीजों की खीर पका कर खाने से कई दिन तक क्षुधा नहीं लगती और शक्ति भी यथावत बनी रहती है।

इसकी जड़ पीस कर स्तन पर प्रलेप करने से दूध बहुत उतरता है। हस्तपाद पर मलनेसे क्षय रोग को लाभ होता है।

इसकी जड़ की भस्म लगाने और खाने से कण्ठमाला को आराम होता है।

इसके पत्तों का रस नासूर (नाड़ीव्रण) को भरता है।

इसके पुरातन वृक्ष की ग्रंथि में एक कीट निकलता है। इसको घिसकर पिलाने से बच्चों का डब्बा रोग दूर होता है।

भस्मक रोग में जिसमें तीक्ष्णाग्नि के कारण अत्यधिक क्षुधा लगती है उसमें अपामार्ग तण्डुल चूर्ण १ तो० फाँक लेने से वह जाती रहती है।

चिचड़ी की जड़ ६ मा०, कुकरौंधा के पत्र ६ मा० इनको सफ़ेद जीरा के साथ पीसकर उसमें १मा० काले नमक का चूर्ण मिलाकर सेवन करने से उदरशूल, उदर जन्य वायु के लिए अत्यंत लाभप्रद और परीक्षित है।

अपामार्गके विभिन्न अंगों द्वारा कतिपय धातुओं की भस्मों के निर्माण-क्रम-

(१) अक़ीक़ भस्म—अपामार्ग के एक पाव कल्क में एक तोला अक़ीक़ रखकर कपड़-मिट्टी कर सूखने पर निर्वात स्थान में ७-८ सेर अरने उपलों की अग्नि दें। शीतल होने पर निकालें। बस अपूर्व भस्म तैयार मिलेगी। **मात्रा**—२ रत्ती। **सेवन-विधि**—गाय के मक्खन (गो नवनीत) के साथ सेवन करें। **गुण**—हृदय की निर्बलता में उपयोगी है।

(२) सोमल भस्म—२ तो० संखिया को शीशी में डालकर उसमें इतना आक का दूध डालें कि वह डूब जाए। तदनन्तर २१ रोज तक भूमि के भीतर गाड़ रक्खें। फिर एक बड़ी लोहे की कड़ाही में एक सेर अपामार्ग की भस्म बिछा कर हाथ से दबा दें। उसके बीच में संखिया को रखकर ऊपर से एक सेर उक्त भस्म और बिछाकर चारों ओर से भली प्रकार दबा दें। फिर उसपर ४ सेर रेत (बालू) डाकर चूल्हा पर रखकर नीचे आग जला दें और रेत के ऊपर मकाई के कुछ दाने रख दें। ४ पहर अग्नि देने पर मकाई के दाने खिल जाएंगे। बस अग्नि देना बन्द कर दें। दूसरे दिन जब वह अच्छी तरह शीतल हो जाए तब उसको धीरे-धीरे निकाल लें। श्वेत रंग की संखिया की भस्म प्रस्तुत होगी। **मात्रा**-१ चावल का चतुर्थ भाग। **गुण**—श्वास के लिए अपूर्व औषध है। इसके अतिरिक्त बहुशः अन्य रोगों में भी उपयोगी है।

(३) संखिया भस्म की सरल विधि—एक मिट्टी क बर्तन में १० तोला अपामार्ग की भस्म बिछाकर उसपर एक तोले समूचे संखिया की डली जो २१ दिन तक मदार के दूध में तर करके रक्खी हो, रख दें। ऊपर से १० तोले और उक्त भस्म को डालकर हाथ से भली प्रकार दबा दें और बर्तन का मुँह बन्द करके ऊपर से तीन कपरौटी करके सुखाएँ। सूख जाने पर उस को १० सेर घरेलू उपलों में रखकर आग दें। शीतल होने पर धीरे से खोलकर निकाल लें। **गुण**—कफज रोगोंके लिए अत्यन्त लाभप्रद है।

(४) हिंगुल की भस्म—शिंगरफ़ रूमी २ तो० खरल में डालकर २० तो० आक के दूध के साथ खरल करें। जब सम्पूर्ण दुग्ध समाप्त हो जाए तब टिकिया बनाकर छाया में शुष्क करें। फिर मिट्टी के शराव में १० तो० चिरचिटा की राख बिछाकर उसपर हिंगुल की टिकिया रखकर ऊपर से १० तो० उक्त राख डाल कर हाथ से दबा दें। फिर ढक्कन देकर तीनबार कपड़ मिट्टी करने के पश्चात् शुष्क करें और १० सेर घरेलू उपलों में रखकर आग दें। शीतल

होने पर निकाले । हिंगुल की सर्वोत्तम भस्म प्राप्त होगी ।

गुण—शरद् ऋतु में इसके सेवन करने से सर्दी कम लगती है और कामशक्ति का पुनरावर्तन होता है । कतिपय रोगों के लिए अत्युत्तम है ।

(५) हड़ताल व अभ्रक की भस्म—हड़ताल वरकी ४ तो०, अभ्रक ४ तो० दोनों को खरल में डालकर अपामार्ग जल २० तो० के साथ घोटकर सुखा लें । फिर मिट्टी के बर्तन में रखकर कपड़मिट्टी करके चूल्हे के भीतर डाल दें । दो घंटे के बाद निकाल कर दोबारा खरल में २० तो० उक्त जल के साथ फिर खरल करें । जब शुष्क होने पर हो तब बर्तन में डालकर बंद करके यथाविधि पहिले दो घण्टा तक चूल्हा में दबा दें । शीतल होने पर तीसरी बार पुनः वैसा ही करें । अत्युत्तम धूसर वर्ण की भस्म प्रस्तुत होगी ।

मात्रा–½ रत्ती से २ रत्ती तक । सेवन-विधि–शर्बत बज़ूरी अथवा किसी अन्य उचित अनुपानके साथ सेवन करें । गुण—यह प्राचीन से प्राचीन ज्वर की अमोघ औषध है । श्वास काठिन्य एवं कास के लिये अकसीर का काम देती है । इससे आह्निक, द्वयाह्निक, तृतीयक, चातुर्थक आदि विषम ज्वर नष्ट भ्रष्ट हो जाते हैं ।

अपामार्गजटा apámárga-jaṭa–सं० स्त्री० अपामार्ग मूल, चिर्चिटा की जड़ । Achyranthes Aspera (*Root of.*) । सि० यो० तृतीयक ज्वर श्लोकण्ठः । "अपामार्ग जटा कोट्यां ।" च० द० सन्निपातज्व० चि० । अपामार्ग की जड़ का बाँधना तृतीयक ज्वर के लिए हितकारक है । अपामार्ग मूल को भली प्रकार धोकर बाएँ हाथ में बाँधने से सब प्रकार के ज्वरों का नाश होता है । वैद्यक ।

अपामार्ग तण्डुलः apámárga-tandulah –सं० पुं० अपामार्ग बीज, चिर्चिटा का बीज । Achyranthes Aspera (Seeds of–) च० सू० ५ अ० ।

अपामार्गतैलम् apámárga-tailam-सं० क्ली० एक औषधीय तैल जो शिरोरोगमें काम आता है । अपामार्ग बीज, सोंठ, मिर्च, पीपल, हलदी, हींग, ग्रवक, विडंग इनका कल्क कर गोमूत्र के साथ यथाविधि तैल पकाकर नस्य लेने से शिर में उत्पन्न कृमियाँ नष्ट होती हैं । इसमें तैल ४ श० और कल्क १ श० लेना चाहिए । प्रयो॰गा० । च० द० । बं० से० सं० शिरोरो० चि० ।

नोट—ग्रवक=नकछिकनी ।

अपामार्ग बीजादि चूर्णः apámárga-bíjádi-chúrṇah–सं० पुं० चिर्चिटाके बीज, चित्रक, सोंठ, हड़, मोथा, चिरायता, प्रत्येक सम भाग ले चूर्णकर सर्व तुल्य गुड़ मिलाएँ । इसे भोजनांत में १ कर्ष खाकर जब भोजन जीर्ण होजाए तो ऊपर से तक्र पीएँ । वृ० नि० र० ।

अपामार्गमु apámárgamu–ते० अपामार्ग, लटजीरा–हिं० । (Achyranthes Aspera, *Linn.*) स० फा० इं० ।

अपामार्गक्षारः apámárga-kshárah–सं० पुं० अपामार्ग द्वारा प्रस्तुत क्षार । आठ प्रकार के क्षारों में से एक । गुण–यह गुल्म तथा शूल नाशक है । भा० पू० १ भा० ह० व० ।

अपामार्ग क्षार तैलम् apámárga-kshára-tailam–सं० क्ली० (१) एक औषधीय तैल जो कर्णरोग में प्रयुक्त होता है । तिल के तैल में अपामार्ग (चिर्चिटा)क्षार जल और अपामार्ग (की जड़) से बनाए हुए कल्क को सिद्ध करके कान में डालने से कर्णनाद और बहिरापन दूर होता है ।

नोट—तिल तैल ४ श० । अपामार्गक्षार २ श० । जल १६ श० । २१ बार परिस्रावित करके क्षारवारि (क्षार जल) प्रस्तुत करलें । (मतान्तर–क्षार परिमाण २६ प०, जल १८ श० और कल्क द्रव्य १ श०) ।

च० द० कर्ण–रो० चि० । भैष० र० कर्ण रो० चि० ।

(२) १६ श० अपामार्ग क्षार को २४ श० जलमें २१ बार परिस्रावित कर और तैल १६ श० लें । तैल जल न जाए इसलिए अपामार्ग क्षार में उसका कल्क डालें और पिण्डीभूत कल्क से

पृथग्भूत तैल ही ग्रहण करें। उसे गारे नहीं। प्रयोगाः।

अपामार्गादिकल्कम् apámárgádikalkam -सं० क्लो० (१) चिरचिटा की लुगदी। (२) चिरचिटे के बीज को चावल के धोवन से खाएँ तो रक्तार्श दूर हो। वृ० नि० र०।

अपाय apáya-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अपायी] (१) विश्लेष। अलगाव। (२) नाश। (३) उपद्रव। -वि० [सं० अ=नहीं +पाद, प्रा० पाय=पैर] बिना पैर का। लँगड़ा। अपाहिज।

अपारदर्शक apára-darshaka-हिं० वि० (भौ० वि०) अदर्शक, अस्वच्छ। ग़ैर शफ़्फ़ाफ़-अ०। ओपेक। (Opaque)-इं०। वे पदार्थ जिनमें से प्रकाश बिलकुल न जा सके अर्थात् जिनमें से प्रकाश की रेखाएँ नहीं गुजर सकें। जैसे लकड़ी, लोहा, चमड़ा इत्यादि।

अपालापमर्म apálápamarmma-सं०क्ली० पृष्ठवंश (कशेरुक) और वक्ष के मध्य भाग में दोनों ओर कंधों के अधोभाग में "अपालाप" नाम के दो मर्म हैं। इनके विद्ध होने से कोष्ठ रुधिर से भर जाता है और इसी रुधिर को राध (पूय, पीब) में परिणत होनेपर रोगी मर जाता है, अन्यथा नहीं। वा० शा० ४ अ०।

अपावर्तन apávartana-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) पलटाव। वापसी। (२) भागना। पीछे हटना। (३) लौटना।

अपासनम् apásanam-सं० क्ली० मारण। अम०।

अपाह(हि)ज apáha,-hi-ja-हिं० वि० [सं० अपभञ्ज, प्रा० अपहज्ज] (१) (Lazy, cripple,) अंगभंग। खंज। लूला, लँगड़ा। (२) आलसी-बेकार।

अपि api-अव्य० [सं०] (१) निश्चयार्थक। भी। ही। (२) निश्चय ठीक।

अपिङ् apin-बर० (ए० व०) वृक्षः-सं०। (Tree, shrub, or Herbaceous plant.)

अपिङ्मियाआ apin-miyáá-बर० (ब० व०) वृक्षाः-सं०। (Trees, shrubs or Herbaceous plants.)

अपिंडी apindí-हिं० वि० [सं०] पिंडरहित। बिना शरीर का। अशरीरी।

अपिधान apidhána-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] आच्छादन। आवरण। ढकन। पिहान।

अपिनद्ध apinaddha-हिं० वि० [सं०] [स्त्री० अपिनद्धा] बँधा हुआ। जकड़ा हुआ। ढँका हुआ।

अपिहित apihita-हिं० वि० [सं०] [स्त्री० अपिहिता] आच्छादित। ढँका हुआ। आवृत्त।

अपीन apína-हिं० वि० हलका, क्षीण, कृश (Light, Lean)। -संज्ञा पुं० अफीम (Opium)

अपीनस apínasa-हिं० पुं०
अपीनसः apínasah-सं०पुं० }
नासिका रोग विशेष। पीनसरोग भेद।

लक्षण—जिस मनुष्य की नाक रुकी हुई सी हो, धुँवा से घुटी हुई सी, पकी हुई और क्लेदित गीली सी हो और सुगंध एवं दुर्गन्ध को न मालूम कर सके उसे अपीनस का रोगी जानना चाहिए। यह विकार कफ वायु से होता है और प्रायः लक्षण प्रतिश्याय के से होते हैं। सु० चि० २२ अ०। च० चि०। (Dryness of the nose, want of the pituitary secretion & Loss of smell).

अपीनस में कफ बढ़कर नासिका के सम्पूर्ण स्रोतों को रोक कर घुर्घुर श्वास युक्त और पीनस से अधिक एक प्रकार का रोग उत्पन्न कर देता है, जिसे अपीनस कहते हैं।

लक्षण—इसमें रोगी की नासिका भेड़ की नासिका की तरह झरा करती है। तथा पिच्छिल पीला, पका हुआ और गाढ़ा गाढ़ा नासिका का मल निरंतर निकलता रहता है। वा० उ० अ० १६।

अपीय apíya-हिं० वि०-अपेय, पान निषिद्ध। Unfit to be drunk, forbidden liquor).

अपित्तम् appittam—सं० क्लीं० चित्रक, चीता। (Plumbago zeylanicum). अम०।

अपुङ्ग apunga—छों० नाग०, संता० तुलतुली, सिदोरी—बम्ब०। (Holostemma rheedii) इं० मे० मे०।

अपुच्छ apuchchha—हिं० वि० पुच्छ रहित। (Tailless).

अपुच्छा apuchchhá—सं० स्त्रीं० शिशपावृक्ष—सं०। शीशव (-म-)-हिं०। A timber tree. (Dalbergia Sísú)

अपुत्र aputra—हिं० वि० [सं०] जिसके पुत्र न हो। निःसंन्तान। पुत्रहीन। निपूता।

अपुरुष apurusha—हिं० वि० पुं० [सं०] पुरुषत्वहीन, नपुंसक। (Impotent)

अपुष्टः apushtah—सं० त्रि० अपरिपक्व, कच्चा। (Immature).

अपुष्पः apushpah—सं० पुं० उदुम्बर वृक्ष, गूलर। (Ficus glomerata).

अपुष्पफलदः apushpa-phaladah-सं० पुं० पनसवृक्ष, कटहल। (Artocarpus integrifolia) फणस—म०। रा० नि० व० ११। बिना पुष्प के फल लगने वाले वृक्षमात्र। (Flowerless tree) रा० नि०।

अपुष्पित apushpita—हिं० वि० [सं०] पुष्प रहित, बिना फूले हुए। Without flowers (a tree or plant), not bearing flowers, not in flowers.

अपूत apúta—हिं० वि० [सं०] अपवित्र। अशुद्ध। -वि० [सं० अपुत्र, पा० अपुत्त] पुत्र-हीन। निपूता।

अपूपः apúpah—सं० पुं०
अपूप apúpa—हिं० संज्ञा पुं०

(१) पिष्टक। पूरी, पूड़ी, पुआ—हिं०। पुलि पिटे—बं०। घारणे-म०। कोई कोई इसे पाव रोटी कहते हैं। पूरब में इसे रोट अथवा सुहारी कहते हैं। हला०। बारीक पिसे हुए गेहूँ के आटे में गुड़ मिलाकर जल से भली भाँति मर्दन कर गोलाकार बेलें और पीछे इसको घी में पकाएँ। इसे ही 'अपूप' प्रभृति नामों से अभिधानित करते हैं। इसे बलकारक, हृद्य, रुचिकारक भारी, वृष्य, तुष्टि देनेवाला पित्त और वायु को शमन करने वाला तथा मधुर कहा है। वै० निघ०।

(२) गोधूम, गेहूँ। (Wheat) रा० नि० व० १६। (३) इंद्री। "इन्द्रियम् अपूपः"। ऐ० २। २४। अथर्व०। सू० ६। ४। का० १०।

अपूप्यः apúpyah—सं० पुं० (१) गोधूम, गेहूँ (Wheat)। (२) गोधूम चूर्ण, गेहूँ का आटा, मयदा। (Wheat flour).

अपूरणी apúraní—सं० स्त्रीं० (१) शाल्मली वृक्ष। सेमल (-र)-हिं०। (Bombax Malabaricum) श० च०। (२) कार्पास वृक्ष, कपास। (Gossypium Indicum).

अपूर्ण apúrna—हिं० वि० अधुड़ा। (Imperfect).

अपूर्ण-मण्डलम् apúrna-mandalam—सं० क्लीं० अधुड़ा घेरा, अर्द्ध वृत्त। (Imperfect circle).

अपूर्वोरसः apúrvorasah—सं० पुं० कर्पूर-रसः,—उत्तम हींग १० तो० लेकर इसकी २ मूषा बनाकर उनके भीतर २ तो० शुद्ध पारद डालकर दूसरी मूषा को ऊपर रखकर कपड़मिट्टी कर दें। ऊपर वाली मूषा के तल में पहले से ही एक बारीक छिद्र कर लें, फिर एक हाड़ी में नीचे थोड़ा सा यवक्षार और समुद्रलवण रख कर बीच में ऊपर वाला यंत्र धरकर ऊपर वही क्षार और लवण रखकर यंत्र को तिरोहित कर दें, उसके ऊपर साफ ठीकरे ढककर दूसरी हाँड़ी ऊपर रखकर कपड़ मिट्टी कर दें। फिर उसको सूखने पर चूल्हेपर रखकर ८ पहर तक साधारण आँच देना और ठण्डा हो जाने पर उन खपड़ों में लगी हुई सुवर्ण के सदृश चमकीली नजन में पूरी पारद भस्म मिलेगी। उसको बारीक कपड़े में रखकर पोटली बनाकर दोपहर तक दूध में

स्वेदित करें। फिर निकाल कर अच्छी तरह सुखा लें। मात्रा—आधी रत्ती। गुण—यह क्षयादि रोगों को समूल नष्ट करता और जठराग्नि को प्रदीप्त करता है। रस० यो० सा०।

अपृक्त aprikta–हिं० वि० [सं०] (१) बेमेल। बिना मिलावट का। असंबद्ध। बिना लगाव का। (२) खालिस। ३ केला।

अपेकः apekah–सं० पुं० दुरालभा, धमासा। (Alhagi maurorum).

अपेण्डिक्स appendix–इं० उपांत्र, अन्त्र-परिशिष्ट।

अपेण्डि-साइटिस appendicitis–इं० उपान्त्र प्रदाह, अन्त्रपुच्छ प्रदाह, अन्त्रपरिशिष्ट प्रदाह।

अपेत राक्षसी apeta-rákshasí–सं० स्त्री० (१) तुलसी क्षुप। (Ocimum Sanctum). रा० नि० व० १०। (२) कृष्ण तुलसी। काली तुलस–मह०। भा० पू० १ भा० गु० व० वर्वरी। (३) बाबुई तुलसी। (Ocimum Basilicum)। र० मा०।

अपेय apeya–हिं० वि० [सं०] न पीने योग्य, पान निषिद्ध। Unfit to be drunk, forbidden (Liquor).

अपेहिवातः apehi-vátah–सं० पुं० प्रसारणी। गंधाली–हिं०। (Pœderia Fœtida, *Linn.*). फा० इं०।

अपोएन् apoen–बर० (ए० व०)
अपोएन्-मियाआ apoen-miyáá–बर० (ब.व.)
पुष्प। फूल। (Flowers) स० फा० इं०।

अपोगण्डः apogandah–सं० त्रि०
अपोगंड apoganda–हिं० वि०
(१) बलिभ, वृद्ध पुरुष। (२) पंगुकाय। विकलांग। –पुं० शिशु। मे० डचतुष्कं। –वि० (१) सोलह वर्ष के ऊपर की अवस्था वाला। (२) नाबालिग़।

अपोदक apodaka–सं० पुं० रेगिस्तानी साँप। अथर्व०। सू० १३। ६। का० ५।

अपोदिका apodiká–सं० स्त्री० पूतिका शाक, पोय (-ई) का साग। अ० टी०। Basella-alba & rubra (Malabar night-shade).

अपोनोगेटन मॉनोस्टिकॉन aponogeton monastychon–ले० घेचू –हिं०। इं० हैं० गा०।

अपोनोगेटन मॉनोस्टेकिअम् aponogeton monostachyum, *Linn.*–ले० घेचू –हिं०। काकाङ्गी–सं०। नमा–ते०। इसकी जड़ आहार के काम आती है। मेमो०।

अपोनोगेटन, सिम्प्ल स्टॉक्ड aponogeton, Simple stalked–इं० घेचू। इं० है० गा०।

अपोरोसा वाइलोसा aporosa villosa, *Baill.* ले० या-मेइन–बर०। इसका गल तथा छाल प्रयोग में आती है। गोंद रंग के काम में आता है। मेमो०।

अपोलाइसीन apolycin–इं० यह एक पीताभा-युक्त श्वेत स्फटिकीय चूर्ण है जो जल में विलेय होता है। यह फीनेसीटीनके समान प्रभाव करता है। इसे अहोरात्रि में १२० ग्रेन (६० रत्ती) तक की मात्रा में भी प्रयोग करने से यह कोई हानिकारक प्रभाव नहीं करता; किन्तु इसका वेदनाशामक प्रभाव उसकी (फीनेसीटीन) अपेक्षा निर्बल होता है। यह शोधक अर्थात् पचननिस्सारक भी है, पर इसको बहुधा ज्वरनाशक तथा वेदनाशामक प्रभाव के लिए ही उपयोग में लाते हैं। कभी कभी काउ बटर (गो–नवनीत) के साथ इसकी वर्तिका बनाकर भी प्रयोग में लाते हैं।
मात्रा—१० से ३० ग्रेन (५ से १५ रत्ती)।

अपोहन apohana–हिं० पुं० तर्क के द्वारा बुद्धि को परिमार्जित करना।

अपौरुष apourush–हिं० पुं० साहस हीन, नपुंसक, असाहस, पुरुषार्थ हीन। (Impotent).

अपांग apánga–हिं० संज्ञा पुं० जहाँ दोनों पलक आपस में एक दूसरे से जुड़ते हैं, उस स्थान को कोया वा अपांग कहते हैं।

अपांनपात् apán-napáta--सं० पुं० विद्युत सम्बन्धी अग्नि। अथर्व०।

अपः (स) apah,-s-सं० क्ली० (१) जल, पानी (water.)। (२) जल धारा। अथ०। सू० २३। २। का० ६।

अप् ap-सं० स्त्री०
अप् ap-हिं० संज्ञा पुं० } जल,पानी। (Water)।(उप०) निम्न, अधः, नीच,बुरा, विकृत, त्याग, हर्ष। इसके विरुद्ध अर्थ में "अधि" प्रयुक्त होता है।

अप्नम् (स्) apnam,-as-सं० क्ली० जल। Water (Aqua).

अप्पकोवय्,-कलुङ्ग appakovay,-kalung -ता० कुकुम-डुण्ड ते०। रिहन्कोकार्पा फीटीडा (Rhynchocarpa Fœtida, *Schrad.*), ट्रिकोसैन्थीस नर्विफोलिया (Trichosanthes nervifolia, *Linn.*), ट्रि० डायोइका (T. Dioica, *Roxb.*), ब्रायोनिया पिल्सा (Bryonia pilsa, *Roxb.*) -ले०।

कुष्माण्ड वर्ग

(*N. O. Cucurbitaceæ.*)

उत्पत्ति-स्थान—गुजरात, दकन प्रायद्वीप, और मालाबार की पहाड़ियाँ।

उपयोग—ऐन्सली का वर्णन है कि इसकी जड़ का माजून में अर्श की दशा में अन्तः प्रयोग होता है और दोषिक श्वास में स्नेहजनक रूप से इसका चूर्ण व्यवहार में आता है।

इसकी जड़ लगभग मनुष्य की अँगुली के बराबर होती है तथा हलकी धूसर वर्ण की और स्वाद में मधुर एवं लुआबी होती है।

अप्पेल appel-मल० अरणी। (Premna Integrifolia). इं० मे० मे०।

अप्पो appo-बम्ब० अफ़ीम। (Opium) फॉ० इं० १ भा०।

अप्यय apyaya-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) अपगमन। (२) लय। नाश।

अप्रकाण्डः aprakáṇḍah-सं०पुं० (१) कांड-रहित वृक्ष,(प्रकांड)धड़ रहित वृक्ष,तनारहित वृक्ष। (Stemless tree)। (२) झिण्टिका आदि। अम०। -हिं० वि० कांड (तना) रहित (Stemless).

अप्रकाश aprakásha-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अप्रकाशित, अप्रकाश्य] प्रकाश का अभाव। अंधकार।

अप्रकृत aprakrita-हिं० वि० [सं०] (१) अस्वाभाविक। (२) बनावटी। कृत्रिम। गढ़ा हुआ।

अप्रकृष्टः aprakrishṭah सं० पुं० काक। (A crow)। श० र०। -त्रि० अधम (Inferior, vile)।

अप्रखर aprakhara-हिं० वि० [सं०] मृदु। कोमल।

अप्रचङ्कशा aprachankashá-सं० पुं० लँगड़ा लूला और आँखों से लाचार। अथर्व०। सू० ६। १६। का० ८।

अप्रच्छन्न aprachchhanna-हिं०वि० [सं०] (१) जो प्रच्छन्न न हो। खुला हुआ। अनावृत। (२) स्पष्ट। प्रगट।

अप्रजाता aprajátá-हिं०वि० स्त्री० (Nullipara) जिस स्त्री के कभी सन्तान न हुई हो अथवा जिसने गर्भ धारण न किया हो।

अप्रजास्त्वम् aprajástvam-सं०क्ली० संतान न होना। अथर्व०सू० ६। २६ का० ६।

अप्रतिकार apratikára-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अप्रतिकारी] उपाय का अभाव। तदबीर न होना। -वि० जिसका उपाय या तदबीर न हो सके। लाइलाज।

अप्रतीकार apratíkára-हिं० संज्ञा पुं० देखो-अप्रतिकार।

अप्रतिकारी apratikárí-हिं० वि० [सं०] अप्रतिकारिन्] [अप्रतिकारिणी] उपाय या तदबीर न करने वाला।

अप्रतिकार्य्यः apratikáryyah-सं० त्रि० दुश्चिकित्स्य। (Incurable).

अप्रतिभ apratibha-हिं० वि० [सं०](१) प्रतिभा शून्य। चेष्टाहीन। उदास। (२) स्फूर्ति-शून्य। मन्द। सुस्त।

अप्रत्यक्ष apratyaksha-हिं० वि० [सं०] (१) अलक्षित, अदृष्ट, जो देखा न जाए। (Invisible, Absent)। (२) छिपा। गुप्त।

अप्रति साराख्य अञ्जनम् apratisárákhya-anjanam-सं० क्लीं० कालीमिर्च १० अदद, स्वर्णमाक्षिक आधा पिचु, नीलाथोथा आधा पल, मुलहठी एक पिचु इन सबको दूध में भिगोकर अग्नि में भस्म करलें। गुण-यह तिमिर रोग की परमोत्तम औषध है। वा० उ० अ० १३।

अप्रधान apradhána-हिं० वि० [सं०] (१) कनिष्ठ, क्षुद्र, मुख्यनहीं, जघन्य (Subordinate, secondary)। (२) जो प्रधान वा मुख्य न हो। गौण। साधारण। सामान्य।

अप्रभा aprabhá-हिं० स्त्री० प्रभाहीन, प्रकाश शून्य। (Want of splendour).

अप्रमेय aprameya-हिं० वि० [सं०] जो नापा न जा सके। अपरिमित। अपार। अनंत।

अप्रयुक्त aprayukta-हिं० वि० [सं०] जिसका प्रयोग न हुआ हो। जो काम में न लाया गया हो। अव्यवहृत।

अप्ररोहता aprarohatá-हिं०

अप्रसन्न aprasanna-हिं० वि० असंतुष्ट, दुखित, नाराज, अनच्छ, मैला। (Displeased).

अप्रसवधर्म्मी aprasava-dharmmí-सं० त्रि० अप्रसव धर्मवाला पुरुष, क्योंकि आत्मा में से कुछ उत्पन्न नहीं होता इससे यह प्रसवधर्मी नहीं है। अबीजधर्म्मी। मध्यस्थधर्मी। सु० शा० १ अ०।

अप्रहतः aprahatah-सं० त्रि०
अप्रहत aprahata-हिं० वि० }
(१) मालक्षेत्र, केदार भूमि। मालभूमि-म०। (२) जो भूमि जोती न गई हो। खिल (अपहृत) भूमि। रा० नि० व० २।

अप्राकृत aprákarita-हिं० वि० [सं०] जो प्राकृत न हो। अस्वाभाविक। असामान्य। असाधारण।

अप्राकृतिक aprákritika-हिं० वि० [सं० अस्वाभाविक, प्रकृति विरुद्ध। (Unnatural).

अप्राकृतिक संयोग aprákritika-sanyoga -हिं० पुं० अस्वाभाविक मैथुन, गुद मैथुन, पशु मैथुन आदि।

अप्राजिता aprájitá-बं०, हिं० अपराजिता, विष्णुकान्ता, कवाँठी। (Clitorea ternate, *Linn.*) स० फा० इं०।

अप्राजितार बीज aprájitára-bíja-बं०
अप्राजितेके बींज aprájite-ke-bínja-हिं० पुं० }
अपराजिताका बीज। Clitorea ternatea, *Linn.* (*Seeds of*–) स० फा० इं०।

अप्राजितारमूल aprájitára-múla-बं० अपराजिता की जड़। The root of Clitorea ternatea, *Linn.*

अप्राण apráṇa-सं० त्रि० विना प्राण का। निर्जीव। मृत। अथर्व०। सू० ६। ६। का ८।

अप्राप्तक apráptaka-सं० एक प्रकारका सोना। उत्तम जाति के सुवर्णों में से जो सोना कुछ पीला सा अर्थात् भुरभुरा और सफ़ेद रह गया हो वह अप्राप्तक कहलाता (याने संशोधन आदि के समय यह ठीक ठीक शुद्ध नहीं होता) है। इसके शोधन की विधि भी कौटिल्य ने दी है। विस्तार भयसे उसे यहाँ नहीं दिया गया। कौटि० अर्थ०।

अप्रिय apriya-(सं०) हिं० वि० [सं०] [स्त्री० अप्रिया] अहित, (Disagreeable, unfriendly) अप्यारा, अनचाहा। जो प्रिय न हो। अरुचिकर। जो न रुचे। जो पसंद न हो।

अप्रिया apriyá-सं० स्त्री० (१) शृङ्गी मत्स्य, सिङ्गी मछली (Singí fish)। (२) वोदालि मत्स्य।

अप्रीति aprίti-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] (१) अरुचि। (Indifference; dislike). (२) अप्रेम। (३) बैर। विरोध।

अप्रीतिकर aprítikar-हिं० पुं० अरुचिकर। निठुर, कठोर।

अप्रेतराक्षसी apreta-rákshasoí-सं० स्त्री०

तुलसी वृक्ष। (Ocimum Sanctum) र० मा०।

अप्रोटः aproṭah—सं० पुं० भारद्वाज पक्षी। वै० नि०। A bird named Bhára-dvája.

अप्रौढ़ aprourha—हिं० वि० [सं०] (१) जो पुष्ट न हो। कमज़ोर। (२) कच्ची उम्र का। नाबालिग़।

अप्सरसः apsarasah—सं० पुं० (१) उत्तम स्त्रियाँ। (२) जल धाराएँ। अथर्व०। सू० १११। ४। का० ६। (३) जल में फैलने वाले रोगोत्पादक कीट। अथर्व०। सू० ३७। ३। का० ४।

अप्सरा apsará—हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] अंबुकण। वाष्पकण।

अफ़ई afaái—अ० यह अरबी संज्ञा "अफ़उल तफ़ज़ील" का अपभ्रंश है। काला सर्प, कृष्ण सर्प। यह लाल वा काला होता है और इसके शरीर पर सफेद एवं भूरे विन्दु होते हैं। यह लगभग १८ गिरह लम्बा होता और एक हाथ ऊँचा खड़ा हो जाता है। जिस मनुष्य को यह काट लेता है, उसकी आँखें निकल पड़ती हैं। इसका विष इतना तीव्र होता है कि इसका काटा हुआ मनुष्य कभी कभी तो केवल १० ही श्वास ले पाता है। इसके चार भेद होते हैं :—

(१) कौड़ियाला और (२) परोला। इनके अतिरिक्त इसके दो अन्य भेद हैं जिनमें बहुत थोड़ा अन्तर होता है।

अफ़क्क afakka—अ० निम्न हनु के दोनों भागों के मिलने का स्थान। निम्न हनु संधि।

अफ़ञ्जनोश afanjanosh, **फ़ञ्जनोश** fanjanosha —अ० पञ्जनोश से अरबी बनाया हुआ शब्द है, जिसका अर्थ पञ्चपाचक (द्रव्य) है। एक मअ्जून का नाम है जिसका प्रधान अवयव मसबूर है। See—Fanjanosha.

अफ़द áafada—अ० पारावत, कबूतर या उसके समान पक्षी। (A pigeon or a bird of the same kind.)

अफ़न áafana, **उफ़ूनत** áufúnata, **ननानन** natánata —अ० पचन, सड़ाँध, सड़ना गलना, दुर्गंध उत्पन्न करना, तिब की परिभाषा में किसी तरल द्रव्य का शारीरोष्मा के प्रभाव से सड़ाँध में परिणत होने की ओर रुख करना (प्रवृत्त होना) है, परन्तु अभी उसके स्वरूप एवं प्रकार में कोई अन्तर न आया हो। क्योंकि स्वरूप आदि का परिवर्तित हो जाना इस्तहालह कहलाता है। प्युट्रिफ़ैकेशन (Putrifaction), प्युट्रिसेन्स (Putriscence) —इं०।

अफ़फ़ङ्गेसिक्ट affengesict—जर० बकुल, मौलसरी। A tree (Mimusops elengi). इं० मे० मे०।

अफ़यून afayúna—हिं० संज्ञा स्त्री० देखो—अफ़ीम।

अफ़यूनी afayúni—हिं० वि० देखो—अफ़ीमची।

अफ़यूम afium, **अफ़्फ्यूम** affium —जर० पारसीक अजवाइन, अजवाइन, ख़ुरासानी। (Hyocyamus) इं० मे० मे०।

अफ़यूस afayúsa—यु० जंगली मूली, अरण्य-मूलक। (Wild Radish.)

अफ़र áafara—अ० मायाफल, माज़ू। (Galla.)

अफ़रञ्जमिश्क afaranja-mishka—अ० रामतुलसी। (Ocimun Gratissimum, *Linn.*)। देखो—तुलसी।

अफ़रग़ञ्ज afara-ghanja—अकासबेल, अमरबेल। (Cuscuta Reflexa.)

अफरना apharaná—हिं० क्रि० अ० [सं० स्फार=प्रचुर] पेट का फूलना।

अफरा aphará—हिं० संज्ञा पुं० [सं० स्फार= प्रचुर] (१) फूलना। पेट फूलना। (२) अजीर्ण वा वायुसे पेट फूलनेका रोग, आध्मान। (Flatulent).

अफ़र्गमा afarghamá, **दियाफ़्रग़्मा** diyáfraghmá —अ० वक्षोदरमध्यस्थ पेशी—हिं०। डायाफ्रम (Diaphragm.), मिड्रिफ़ (Midriff.) -इं०।

अफ़र्ब्यून afarbyúna-यु० फ़र्ब्यून (-फ़्यू), फ़र्ब्यून-अ०। सेहुँड़ दुग्ध, थूहर का शुष्क दुग्ध-हिं०। यूफ़ार्बियम (Euphorbium) -लें०।

अफ़र्वी afarví-तु० बेदग्याह (एक गाँठदार वृक्ष या घास)। (A knotty grass.)

आफ़ल āafala-अ० स्त्री गुह्य भागस्थ अन्त्रवृद्धि रोग, (स्त्री) गुह्येन्द्रिक वृद्धि। पुरुषके अण्डकोष में जिस प्रकार आँत उतर आती है उसी प्रकार स्त्रियों के गुह्य भाग में भी आँत उतर आती है। प्युडेण्डल हर्निया (Pudendal Hernia) -इं०। देखो—अन्त्रवृद्धिः।

अफलः aphalah-सं० पुं०
अफल aphala-हिं० पुं०
अफल, फलहीन वृक्ष, बाँझ वृक्ष। (Fruitless tree, barren)। जिसमें फल नहो। बिना फल का। हे० च० ४ का०। त्रि०, हिं०त्रि० (१) जो नहीं फलता, फल रहित (ओषधि। श० च०। अथर्व०। सू० ७। २७। का० ८। (२) व्यर्थ, वृथा।-हिं०पुं० झावू (-ऊ) का वृक्ष। (३) बाँझ, बन्ध्या।

अफलता aphalatá-हिं० स्त्री० फलहीनता, बाँझपन। (Barrenness, sterility)

अफला aphalá-सं० (हिं० संज्ञा) स्त्री० (१) भूम्यामलकी, भुई आमला (Phyllanthus niruri)। (२) काष्ठ धात्री वृक्ष। (Emblic officinalis) भा०। रा०नि० व० ११। (३) लघुकारवेल्लक। The small var. of (momordica muricata)। (४) आमलकी वृक्ष, आम(आँव-)ला। (Phyllanthus Emblica) भ.० पू० १ भा०। (५) घृत कुमारी, घीकुवार (Aloe Barbadensis) श० च०।

अफलित aphalita-हिं वि० [सं०] जो फला न हो जिसमें फल न लगे। फल हीन। (Not in fruit, A fruitless tree)

अफलिनी aphaliní-सं० स्त्री० सन्तान रहित, बन्ध्या "तरुण्याः फलिनी भवेत्"। सु० सं० उ० अ० ३८। See-Bandhyá

अफ़संतीन afasantína-हिं० संज्ञा पुं० [यू०] देखो-अफ़सन्तीन।

आफ़ा āafá
आफ़ाय āafáya
-अ० (१) गदहे का बच्चा। (२) शुतुर्मुर्ग के पर।

अफ़ाग़ियह् afághiyah-अ० हिना पुष्प, मेंहदी का फूल। (Myrtle flower.)

अफ़ातीस afátísa-यु० मूली, मूलक। (A radish.)

आफ़ादार्मून āafádármúna-यु०हब्बुल्क़ुल्क़ुल। (See-habbul-qulqul.)।

आफ़ाफ़ह् āafáfah-अ० गुदद्वार, चूति-हिं०। एनस (Anus.)-इं०।

आफ़ायद āafáyada-सी० मग़ास्। See-Maghása.

आफ़ार āafára-अ० क़ुतुलब। क़ातिल अब्यह।

आफ़ारह् āafárah-अ० (टेंट) कपासका फल। Fruit of (Gossypium Indicum.)

आफ़ारहम āafáraham-अ० बलिष्ट ऊँटनी।

अफ़ारीक़ून afáríqúna-यु० (१) चने के बराबर एकफल है जो हरित वर्णका होता है परन्तु अधिक गोल नहीं होता। इसको अरबीमें "मवेजज अस्ली" कहते हैं। (२) माज़रियून या (३) ज़ैतुन का फूल।

अफ़ारीन afárína-यु० बुलसकी, हशीशतुल्म-फ़ई (बूटी है)। (A plant.)

अफ़ावियह् afáviyah-अ० (Spice)मसाला, वे सुगंधित द्रव्य जो खाने की वस्तुओं में प्रयुक्त होते हैं, जैसे—दालचीनी आदि।

अफ़ासून afásúna-यु० (१) मूली का तेल। (२) बेद का वृक्ष।

आफ़िज् āafij-अ० (ए० व०), अफ़्फ़ाज़ (ब० व०) अन्त्र, आन्त्र, आँत। इन्टेस्टाइन (Intestine)-इं०।

आफ़िन āafina-अ० मैला, दुर्गन्ध युक्त, वह स्नेहमय द्रव्य जो शारीरोष्मा के प्रभाव से दुर्गन्ध

युक्त हो गए तथा सड़ गल गए हों; लेकिन अभी उनके स्वरूपादि में कोई अन्तर न आया हो। मीफाइटिक (Mephitic)-इं०।

अफिन aphin-बं०
अफिम aphim-द०, बं० } अफीम (Opium).

अफिरञ्जमुश्क afiranja-mushka-अ० फ़रञ्जमिश्क, रामतुलसी। (Ocimum Gratissimum, *Linn.*)

अफ़िस âafisa-अ० बिकठा, कषैला। यह पद स्वाद के लिए विशेषण के तुल्य प्रयोग में आता है। ऐस्ट्रिंजेण्ट (Astringent)-इं०।

अफ़ी.कुत्स afiquts
अफ़ीनी.कुत्स afíniquts } -यु० एक अप्रसिद्ध बूटी है। (An unimportant plant.).

अफ़ी.कुन afiqúna-यु० अजवाइन खुरासानी। (Hyocyamus).

अफीण,-म afín,-m-गु० अफीम। (Opium) स० फा० इं०।

अफीणनु-डोडवाँ aphínanu-ḍoḍaván-गु० पोस्ते का डोंड। (Poppy capsules.)

अफीन aphína-मह०
अफीनम् aphínam-सं० क्ली०
अफीम aphíma-सं० (हिं० संज्ञा) स्त्री०
अफ़ीम afíma-द०
[यू० ओपियन, अ०-अफ़्यून]. (Opium)। अफीम पोस्ते का दूध है, खसखस क्षीर। देखो-पोस्ता।

अफ़ीमची afímachí-हिं० संज्ञा पुं० [अ० अफ़्यून+ची 'प्रत्य०'] अफ़ीम खाने वाला। वह पुरुष जिसे अफीम खाने की लत हो।

अफ़ीमी afímí-हिं० वि० [अ० अफ़्यून] अफ़ीमची।

अफीम पाकः aphíma-pákah-सं० पुं० अकरकरा, केशर, लवङ्ग, जायफल, भंग, सिंगरफ इन्हें समभाग लेकर सबकी आधी शुद्ध अफीम डालें, प्रथम अफीम को दोलायन्त्र द्वारा दुग्ध में शुद्ध करें, तदनन्तर सब औषधों से छः गुणी मिश्री की चासनी कर और औषधों को मिलाकर अच्छी तरह मर्दन करें। पुनः एक एक टंक की गोलियाँ बनाएँ। रात्रि को स्त्री सहवास से दो घड़ी पूर्व इस गोलो को मुख में रक्खें या भक्षण करें। इसके सेवन से पुष्ट हो मनुष्य ऊँचे अंग वाला होता है और स्त्री उसमें प्रसंग की शक्ति का संचार होता है। यो० चि०।

अफ़ीमीदून afímídúna-यु० अप्रसिद्ध बूटी है। (An unimportant plant). यह वृत्त एवं घास के बीच होती है। इसकी एक बारीक डाली होती है।

अफीमु aphímu-कना० अफीम। (Opium).

अफ़ीमूना afimúná-यु० दालचीनी। Cinnamomum zeylanicum *Nees.* (*Bark of*-Cinnamon).

अफ़ीलन afílan
अफ़ीलून afílúna
अफ़ील्यून afílyúna } -यु० पहाड़ी जौहरी जवाइन, दर्मिनह्, कोही।

अफ़ीसूस afísúsa-अ०-अज्ञात।

अफुल्ल aphulla-हिं० वि० [सं०] अविकसित, बेखिला।

अफू aphú
आफू áphú } -म०, हिं० संज्ञा स्त्री० अफीम। (Opium.)

अफेन aphena-हिं० वि० [सं०] बिना फेन, कफ रहित। (Foamless.) -पुं० [सं०] अफीम। (Opium).

अफेनम् aphenam-सं० क्ली० अफीम, अहिफेन। (Opium.)

अफेनफलम् aphena-phalam-सं० क्ली० अहिफेन फल, पोस्ते की ढोंढ़। (Poppycapsules) भैष० स्त्री० रोग चि०।

अफेलम् aphelam सं० क्ली० आफूक, अफीम अहिफेन। (Opium)। वै० नि०।

अफ़ौत afouta-अ० (१) जिसका मुख बड़ा हो, चौड़े मुँह वाला, (२) जिसके दन्त, ओष्ठ तक हों अर्थात् मुँह से बाहर निकले हुए हों।

अफ़्आल afáála-अ० (ब० व०) फ़िअ़्ल (ए० व०) क्रिया, कार्य, काम। शक्ति द्वारा जो कुछ प्रगट हो उसे क्रिया (फ़िअ़्ल) कहते

हैं। अस्तु, मनुष्य शरीर में जितनी प्रकार की शक्तियाँ हैं उतनी ही प्रकार की क्रियाएँ हैं।

अफ़्आल तबइय्यह् afáála-tabáiyyah-अ० (१) प्राकृतिक शक्ति सबन्धी क्रियाएँ। (२) शरीर के सम्पूर्ण प्राकृतिक कार्य, जैसे—आहार, पान, सोना, जागना, उठना, बैठना, चलना, फिरना, देखना, सुनना, सोचना, समझना, इत्यादि।

अफ़्आल दिमाग़ियह् afáála-dimághiyah -अ० मास्तिष्क क्रियाएँ, दिमाग़ी काम, जैसे—विवेक, विचार इत्यादि।

अफ़्आल नफ़्सानिय्यह् afáál-nafsániyy-ah-अ० मानसिक क्रियाएँ, वे क्रियाएँ जो मानसिक शक्तियों द्वारा प्रगट होती हैं। अस्तु, पञ्च ज्ञानेन्द्रियों की क्रियाएँ, यथा—देखना, सुनना, स्वाद लेना, स्पर्श करना और सूँघना आदि और अन्तःकरण चतुष्टय की क्रियाएँ (हवास ख़म्सह् बातनी के अफ़्आल), जैसे—सोचना, स्मरण रखना और विचार करना आदि इसी के आधीन हैं।

अफ़्आल बसीतह् afáál-basitah अ० अफ़्आल मुफ़्रिदह्, अमिश्रित क्रियाएँ, सामान्य क्रियाएँ।

अफ़्आल मुफ़्रिदह् afáál-mufridah-अ० साधारण क्रियाएँ जो केवल एक ही शक्ति द्वारा प्रगट हों, जैसे—चाक्षुषी, जो दृष्टि शक्ति द्वारा प्रगट होती हैं और श्रावण क्रियाएँ जो श्रवण शक्ति द्वारा उद्भूत होती हैं।

अफ़्आल मुरक्कबह् afáál-murakkabah -अ० संयुक्त क्रियाएँ जो दो अथवा अधिक शक्तियों द्वारा उद्भूत हों, जैसे—ग्रास गिलन, जो कंठ की गिलन शक्ति तथा आमाशय की आकर्षण शक्ति द्वारा सम्पादित होती हैं।

अफ़्आल हैवानिय्यह् afáál-haiváníyyah -अ० प्राणशक्ति सम्बन्धी क्रियाएँ जो प्राणशक्ति द्वारा प्रगट हों, जैसे—हार्दिक एवं धामनिक गति प्रभृति।

अफ़्आलुल् अद्वियह् afáálul-adviyah -अ० (१) औषध-कार्य-विज्ञान, द्रव्य-गुण-शास्त्र। (२) प्रभाव, गुणधर्म। फ़ार्माकोलॉजी (Pharmacology)-इं०।

अफ़्ऊमा afáúmá-अ० चक्षुक्षत। आँख का एक प्रकार का भयानक क्षत।

अफ़्क़ afq-अ० ख़त्नह् करना (मुसलमानों के यहाँ यह एक धार्मिक रसम है जिसमें बच्चे की शिश्नाग्र त्वचा काटी जाती है)। सर्कमसिज़न (Circumcision)-इं०।

अफ़्कल afkal-अ० कुण्ड, समाज। तिब की परिभाषा में "कम्पन, कँप-कँपी" को कहते हैं। राइगर (Rigor)-इं०।

अफ़्कानह् afkánah-अ० अपूर्ण शिशु (भ्रूण) जो माता की उदर से गिर पड़े।

अफ़्तस aftas-अ० चपटी नासिका वाला। (Flat nosed.)

अफ़्तह aftah-अ० चौड़ी नासिका वाला। (Broad nosed.)

अफ़्तीऊस aftíáús
अफ़्तीक़ूस aftíqús
अक़्तीऊस aqtiáús
-यु० नाइबह्। तिब की परिभाषा में राजयक्ष्मा (तपेदिक) को कहते हैं। हेक्टिक फ़ीवर (Hectic Fever) -इं०।

अफ़्तीमून aftímúna-अ० [यू० एपिथिमून] हिं० संज्ञा पुं० अकासबेल विलायती, अमरबेल विलायती-हिं०। कस्क्युटा एपिथिमम् (Cuscuta Epythymum, *Linn.*)-ले०। दी लेसर डॉडर The Lesser Dodder-इं०। शअ्रतुल्जब्अ; सबउश्श्अ्र-अ०। अफ़्तीमूने-विलायती-फ़ा०। शियून-तु०।

(*N. O. Convolvulaceæ*)

उत्पत्ति-स्थान—युरोप, पश्चिम एवं मध्य एशिया और फ़ारस। **नोट**—इसमें तथा भारतीय अकाशबेल में सिवाय स्थान भेद के और कोई अन्तर नहीं है। अतः इसके वानस्पतिक वर्णन आदि के लिए देखो-**अकाशबेल**,

रासायनिक संगठन—क्वरसेटीन (Quercetin), राल, एक क्षारीय सत्व तथा कस्क्युटीन

(Cuscutine)। (फा० इं० २ भा पृ० ४५७),

इतिहास—दीसक़ुरीदूस (Dioscorides) ने इस नाम के जिस पौधे का वर्णन किया है वह अस्पष्ट है। प्लाइनी का वर्णन उससे बहुत कुछ स्पष्ट है।भारतवर्ष में जो ओषधि अफ़्तीमून नाम से बिकती है उसका आयात यहाँ फ़ारस से होता है। यह सम्भवतः कस्क्यूटा यूरोपिया (Cuscuta Europea, *Linn.*) की ही एक बड़ी जाति मालूम होती है, जिसकी जन्मभूमि युरोप, पश्चिम तथा मध्य एशिया है।

प्रकृति—तीसरी कक्षा में उष्ण और प्रथम में रूक्ष है। **हानिकर्त्ता** – उष्ण व पित्त प्रकृति वालों को एवं युवा पुरुषों को। यह मूर्च्छा और अत्यंत तृषाजनक है। **दर्पघ्न** – रूब्ब (घन सत्व) सेब व अनार या शर्बत संदल और केशर। कतीरा एवं रोग़न बादाम में मलने से इसके अवगुण दूर हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त यह रूक्षता उत्पन्न करता है। उक्त विकार के शमनार्थ इसको किसी आर्द्रताजनक द्रव्य जैसे गुलबनफ़्शह् या गावज़ुबान के साथ मिलाकर देना चाहिए। कोई कोई कहते हैं कि फुफ्फुस के लिए भी अहितकर है। उसके दूर करने के लिए इसको समग़ अरबी (बबूर निर्यास) वा कतीरा के साथ प्रयोग करना चाहिए। **प्रतिनिधि**—लाजवर्द, निशोथ पित्तपापड़ा,उस्तोख़ुद्दूस और बिस्फ़ाइज। **मात्रा**–६मा० से १ वा १॥ तो० तक। क्वाथ में साधारणतः यह ६ मा० से १ तो० तक व्यवहार में आता है और इसको पोटलीमें बाँधकर डाला जाता है। एक या दो जोश देकर पोटली को निकाल लेना चाहिए।

गुण, कर्म, प्रयोग– अफ़्तीमून अपनी उष्णता व रूक्षताके कारण आध्मान को दूर करता है। अधेड़ और वृद्ध मनुष्यों के अनुकूल है। क्योंकि उनकी प्रकृति को साम्यावस्था पर लाता है। सौदावी (वातज) व्याधियों को दूर करता और सौदा (वात) एवं बलग़म (श्लेष्मा) के दस्त लाता है। अतएव मृगी और मालीख़ौलिया के लिए उपयोगी है तथा अपनी उष्णता व रूक्षता के कारण युवाओं और उष्ण प्रकृति वालों में तृषा उत्पन्न करता है। यह उनमें मुखशोष उत्पन्न करता है। इसलिए इसके साथ मुलहठी, बनफ़्शह् और मधुरवा.दि तैल के समान तरी पहुँचानेवाली वस्तुएँ मिलानी चाहिएँ। (त० न०)

यह शोथलयकर्त्ता, रोधोद्घाटक, प्रायः मास्तिष्क रोगोंको लाभप्रद, रक्तशोधक और प्रायः त्वग् रोगों को लाभप्रद है। प्लीहा वृद्धि में इसका प्रलेप लाभदायक है।

इसको साधारणतः माउज्जुब्न के साथ या दूध में क्वथित कर उस दूधका प्रयोग कराया जाता है।

इसे वायुनिःसारक भी बतलाया जाता है तथा अङ्गमर्दप्रशमन रूप से इसका स्थानिक उपयोग होता है। मख़्ज़नुल् अद्वियह् में इसके गुण तथा उपयोग का सविस्तार वर्णन आया है। उसका सारांश ऊपर दे दिया गया है। विस्तार भय से उन सब को यहाँ स्थान नहीं दिया गया। नव्य चिकित्साप्रणाली में विभिन्न प्रकार के अफ़्तीमून में से सम्प्रति किसी का प्रयोग नहीं होता।

कुशूस (अफ़्तीमून बीज)

कुशूस.	–अ० कसूस, अमरलता के बीज–हिं०, उ०।
अकशूस.	
कुशूस.।	
ब.ज्रुल्कुशूस.	

तुख़्मे कसूस, तुख़्मे वर्श–फ़ा०। अरबी कुशूस. से ही मध्यकालीन लेखकों का लेटिन पद कस्क्युटा (Cuscuta) व्युत्पन्न है।

नोट—यह अकाशवेल का पर्यायवाची शब्द है; परन्तु भारतीय बाज़ारों में कसूस अफ़्तीमून (फ़ारसी) के बीज के लिए प्रयोग में आता है।

वर्णन – इसके बीज में उस पौधे के क्षुद्र एवं आयताकार पत्र तथा कण्टक मिले होते हैं जिस पर कि अफ़्तीमून उत्पन्न हुआ होता है और उस पौधे के कांड के कुछ भाग एवं पुष्प भी मिले

जुले पाए जाते हैं। बीज चार, हलके, भूरे रङ्ग के, एक ओर उन्नतोदर और दूसरी ओर नतोदर, लगभग मूलक बीजाकार (मूली के बीज इतने बड़े) के गोलाकार ढोंढ से आवृत्त होते हैं। इसका स्वाद—तिक्त होता है।

नोट—मीरमुहम्मद हुसेन इस औषधि का भारतीय अकाशबेल से समानता दिखलाकर लिखते हैं कि यह पीत वर्ण का होता है और कँटीले एवं अन्य प्रकार के पौधों पर उगता है। इसमें बहुत सूक्ष्म, श्वेताभायुक्त पुष्प आते हैं। बीज मूलक बीज की अपेक्षा लघु, लगभग गोल और लालिमायुक्त पीतवर्ण के होते हैं। इसके गुण अफ़्तीमून के सदृश वर्णन किए गए हैं।

रासायनिक संगठन—क्वरसेटीन (Quercetin) के अतिरिक्त ग्ल्युकोसाइडल रेज़िन, एक क्षारीय सत्व, एक कषाय पदार्थ, मोम और तैल।

प्रकृति—उष्ण व रूक्ष।

हानिकर्त्ता—प्लीहा तथा फुफ्फुस को।

दर्पघ्न—सिकंजबीन, शहद तथा कासनी के बीज।

प्रतिनिधि—अफ़्सन्तीन व बादरूज।

मात्रा—७ मा० (शर्बत)।

गुण, कर्म, प्रयोग—माद्दा से शुद्ध करता और आमाशय व आंत्र को खोलता है। दोषिक ज्वरों को लाभप्रद है। और खूब पेशाब लाता है तथा उत्तम स्वेदक व रजःप्रवर्त्तक है। दुग्धवर्द्धक तथा प्रकृति को मृदुकर्त्ता और मलों का प्रवर्त्तक है। निर्विषैल।

औषध-निर्माण—इत्‌रीफ़ल, वटिकाएँ, चूर्ण, सिकंजबीन, अर्क़, मअ्‌जून, क्वाथ इत्यादि की शकल में इसके बहुशः मिश्रण हैं।

अफ़्दअ afdaá—अ० जिसका टखना या पहुँचा भीतर को मुड़ा हुआ हो।

अफ़्दज़ afdaz—अ० एक अप्रसिद्ध औषध है।

अफ़्न afna—अ० मास्तिष्क दौर्बल्य, बुद्धिहीनता।

अफ़्नान afnán—फ़ा० फ़रासियून। See—Farásiyún.

अफ़्नीक़ून afníqún—यु० एक बूटी है जो गेहूँ के तथा अन्य खेतोंमें उत्पन्न होती है। इसके पत्ते तितली (सुदाब) के पत्तों के समान होते हैं।

अफ़्नीन afnín—रू० फ़र्फ़्यून-अ०। सेहुँड़, थूहर। (Euphorbium).

अफ़्फ़ियून affiún—मला० }
अफ़्फ़ीनी affíní—कना०, कों० } अफ़ीम। (Opium) इं०मे०मे०।
अफ़्यून afyún—अ०कृ०, अ० }
स० फ़ा० इं०; देखो—पोस्ता।

अफ़्यून आबकारी afyúna-ábkarí—अ० ठीका की अफ़ीम। इसके वर्गाकार टुकड़े होते हैं और भारतवर्ष में इसकी बिक्री होती है।

अफ़्यून ईरानी afyúna-írání—अ० ईरान की अफ़ीम।

अफ़्यून का पलस्तर afyúna-ká-plastar—अफ़ीम का पलस्तर (Opium plaster)। अफ़ीम का बारीक चूर्ण १ आउंस (२॥ तो०) रेज़िन प्लास्टर ९ आउंस (२२॥ तो०), रेज़िन प्लास्टर को वाटरबाथ (जलकुण्ड) के द्वारा पिघलाकर इसमें अफ़ीम धीरे धीरे मिलाएँ। शक्ति—१० भाग में १ भाग अफ़ीम। प्रभाव व प्रयोग—वेदना शमनार्थ इसको स्थानीय रूप से उपयोग में लाते हैं।

अफ़्यून काहू afyúna-káhú—फ़ा० देखो—लेक्टयुकेरिअम् (Lactucarium.)

अफ़्यून क़ुस्तुन्तुनियह् afyúna-qustuntuniyah—अ० क़ुस्तुन्तुनिया की अफ़ीम।

अफ़्यून चीनी afyúna-chíní—अ० चीन देशीय अफ़ीम (China opium.)। देखो—अफ़ीम।

अफ़्यून ज़ख़ीरह् afyúna-zakhírah—अ० गोले की अफ़ीम। यह भारतीय अफ़ीम का एक भेद है जो चीन देश को भेजा जाता है। देखो—अफ़ीम।

अफ़्यून तुर्की afyúna-turkí अ० अफ़्यून रुमनी। देखो—अफ़ीम।

अफ़्यून मुहम्मस afyún muhammas—फ़ा० भुनी हुई अफ़ीम। इसके भूनने की विधि "तह्‌मीस" में देखो।

अफ़्यून मुदब्बर afyún mudabbar-फ़ा० अफीम को गुलाब जल में भिगोकर छानें, पुनः इतना पकाएँ कि गोली बाँधने के योग्य हो जाए। आयुर्वेदिक विधि के लिए देखो—पोस्ता।

अफ़्यून स्मर्ना afyúna-smarna-फ़ा० अफ़्यून तुर्की, एशिया कोचक की अफ़ीम, Turkey opium, Smyrna (Levant) opium. इसके टुकड़े चौथाई आउंस से लेकर अर्ध पाउण्ड तक भारी होते हैं जिनपर पोस्ते के पत्ते लिपटे हुए और उनपर चूकाबीज छिड़के हुए होते हैं।

अफ़्यून हिन्दी afyúna-hindí-फ़ा० सरकारी अफीम। यह तीन प्रकार की होती है, (१) गोले की अफ़ीम, (२) अफ़्यून आबकारी और (३) औषधीय अफ़ीम। इसकी छोटी छोटी डलियाँ अथवा चूर्ण होता है। यह पटना में बनता है। इनके अतिरिक्त अफ़्यून मिश्री, युनानी, अंगरेज़ी, जर्मनी और फ्रांसीसी भी होते हैं।

अफ़्यूर afyúr-यु० बीज। (Seed).

अफ़्यूर सफ़्साफ़न afyúr-safsáfan-यु० तुख़्म ख़ुब्बाज़ी। See-khubbází.

अफ़्यूस afyús-यु० जंगली मूली। (wild radish).

अफ़्रज afraj-अ० जिसके अग्रदन्त बाहर निकले हुए हों।

अफ़्रंजी afranjí-अ० क्रू० (अफ़्रंगी से), मिश्र के लोग उपदंश रोग के लिए बोलते हैं। (Syphilis.)

अफ़्रम afram-अ० पोपला, जिसके दाँत टूट गये हों।

अफ़्रास्यून afrásyún-यु० विषखपरा (हिन्द-क़्क़ी),पुनर्नवा। (Boerhavia Diffusa).

अफ़्रीक़ afríq-अ० १७ से २० औक़ियह् तक का माप या वजन (=४७ तो० ६ मा०)।

अफ़्रीकन ऐरो पॉइज़न african arrow, poison-इं० स्ट्रोफैन्थस (Strophanthus.).

अफ़्रीक़ी ज़हर पैकाँ afríqí-zahra-paikáń यु०, (Strychnos Bordean).

अफ़्रीदस afrídas-यु० इज़्ख़िर। See-Izkhir.

अफ़्रीस्मूस afrísmús-अ० सतत शिश्न प्रहर्षण अर्थात् बिना कामेच्छा के भी सदा शिश्न का प्रहृष्ट (दृढ़, उत्तेजित) रहना। देखो—फ़र्सीमूस। प्रायापिज़्म (Priapism)-इं०।

अफ़्रूदीजान afrúdiján-यु० मिट्टी भेद। (A kind of earth.)।

अफ़्रूसालीस afrúsálís- }
अफ़्रूसाल्यूस afrúsályús— } -यु० चन्द्रकान्त (हज्रुल् क़ुमर) एक प्रकार का पत्थर है। (A kind of stone.)

अफ़्लज aflaj-अ० वह मनुष्य जिसका निम्न ओष्ट फटा हुआ हो अर्थात् जिसके अधः ओष्ट में चीरा पड़ी हो।

अफ़्लञ्जह aflanjah }
फ़्लञ्जह flanjah } -अ० फूल, फिरंगी पुष्प। ये रक्त राई के समान बीज हैं अर्थात् एक प्रकार के पीत बीज होते हैं। सर्वोत्तम वे होते हैं जिनको हाथमें मलनेसे सेब की गंध आए। इनका स्वाद तिक्त होता है। ये प्रायः इतरोंमें प्रयुक्त होते हैं। मअ्जून आदिमें भी डाले जाते हैं। उद्भवस्थान-भारतवर्ष।

अफ़्लातन aflátan-अ०, यु० मुक़्ल, मुक़्ले, अर्ज़क़। गूगल-हिं०, द०। गुग्गुलुः-सं०। (Balsamodendron agallocha, W. & A. (Resin of-Bdellium) स० फा० इं०।

अफ़्लातून aflátúna-यू० }
फ़्लातुन flátuna-अ० } प्लेटो Plato -इं०।

यूनानी भाषा में अफ़्लातून का अर्थ प्रकाण्ड विद्वान् है। यह एक प्रख्यात हकीम थे। आपका जन्म ईसवी सन् से ४२७ वर्ष पूर्व एथेन्ज़ (यूनान की राजधानी) नगर में हुआ। आपके पिता यूनान के प्रतिष्ठित व्यक्तियों तथा हकीम अस्क़्लीबियूस (Asclepios) की संतानों में से थे। अपने कालके आप

प्रसिद्ध दार्शनिक और चिकित्साशास्त्र के प्रमुख एवं कुशल पंडित थे। आपको गणितशास्त्र से भी बहुत प्रेम था। आप सुकरात के अनुयायी और अरस्तू के गुरु थे। ईसवी सन् से ३४७ वर्ष पूर्व एकासी ८१ वर्षकी अवस्था में आपका देहांत हुआ। आपने अनेक ग्रन्थों की रचना की जिनमें से कई एक आज भी उपलब्ध हैं।

अफ्लार्तस aflártasa-यु० छोटी माईं का वृक्ष, फ़रासवृक्ष। (Tamarix Orientalis, *Vahl.* (*Galls of*-Tamarix Galls.)

अफ्लासून aflásúna-यु० मूली का तैल। (Radish oil).

अफ्लीकान aflikána }
अफ़ीकान afíkána } -अ० (१) चिबुक की दोनों अस्थियों के किनारे जो मिल गए हैं। (२) कंठ में कव्वे के पास जो मांस के दो लोथड़े हैं।

अफ्लीज aflíja-अ० पक्षाघात का रोगी, फ़ालिज का रोगी। (Paralytic.)

अफ्लूनिया aflúniyá }
फ़लूनिया falúniyá } -अ० एक मअ्जून का नाम है जो अपने रूमी आविष्कर्ता हकीम अफ़्लून के नाम से प्रसिद्ध है। यह वेदनाशामक है।

अफ़्वात afváta-अ० अंगुलियों के बीच की दूरी। (Distance between fingers)

अफ़्वाफ़ afváfa-अ० (ब० व०), फ़ोफ़ (ए० व०) नखों के किनारों के श्वेत बिन्दु।

अफ़्वोलून afvolúna-बरब० बरमेह (एक अप्रसिद्ध वृक्ष)। (An unimportant tree.)

अफ़्शर्नीकी afsharníkí-यु० शुकाई (भा० बाज़ा०)। The herb. (See-shukái)

अफ़्शसीकी afshasíkí-फ़ा० अज्ञात है।

अफ़्शुरज afshuraja }
अफ़्शुरूज afshurúja } -अ० अफ़्शुरह् या अफ़्शुर्दह् का अ० कृ० पद है। जिसका अर्थ ताजा फल अथवा वनस्पतियों का निचोड़, अर्थात् निचोड़ा हुआ रस, स्वरस अथवा अर्क़ होता है।

अफ़्शुरह् afshurah-फ़ा० वस्तुतः "अफ़्शुर्दह्" है। पर प्रयोगाधिक्य के कारण "अफ़्शुरह्" हो गया है। फलों का निचोड़ा हुआ जल। juice (Succus).

अफ़्शुर्दह् afshurdah-फ़ा० रस, स्वरस, निचोड़-हिं०। juice (Succus).

अफ़्शुर्दहे बङ्क afshurdahe-banka-फ़ा० अजवाइन खुरासानी का रस। (Juice of Hyoscyamus).

अफ़्शुर्दहे शौकरान afshurdahe-shoukarána-फ़ा० कोनाइम अर्थात् शौकरान का रस। (Juice of conium).

अफ़्स áafs-अ० माजूफल, माफल-हिं०। मायी, मायिका-सं०। Galls (Galla).

अफ़्सन्तीन afsantín-अ०,रू०,यु०(हिं०पुं०) आर्टिमिसिया एब्सिन्थियम् Artemisia Absinthium, *Linn.*, एब्सिन्थियम् वल्गेरी Absinthium Vulgare, *Coertn.*, आर्टिमिसिया ऑफ़िशिनल Artemisia officinal, *Lam.*, आर्टिमिसिया Artemisia (शुष्क क्षुप) -लै०। वर्म वुड Worm Wood, मग-वर्ट Mug-wort, दी एब्सिन्थ (the absinth)-इं०। ख़तरक़-अ०। एप्सिन्थियून (Apsinthion)-यू०। मूय ब ख़ुशह्, मर्वह्-फ़ा०। विलायती अफ़्सन्तीन-हिं०, द०। (पार्वतीय अफ़्सन्तीन; खल; (बुरे प्रकार का) वसीह्-मिश्र०।

मिश्र वा सेवती वर्ग

(*N. O. Compositæ.*)

उत्पत्ति स्थान—उत्तरी अफ़रीक़ा, दक्षिण अमेरिका, यूरुप के कतिपय पार्वतीय प्रदेश, एशिया में साइबेरिया, मंगोलिया, ख़ुरासन और भारतवर्ष के कतिपय पर्व्वतीय प्रदेश, काशमीर तथा नैपाल इत्यादि।

वानस्पतिक-वर्णन—यह शीह् वा दौना के प्रकार की एक बूटी है। कांड-तृण कांडवत् सरल एवं शाखामय होता है। शाखा-श्वेत लोमों से आवृत होता है। शाखा पर असंख्य

पत्र लगे होते हैं। पत्र—दोनों ओर रेशमवत् लोमों से युक्त होने के कारण रजत वर्ण के और लगभग २ इंच दीर्घ होते हैं। पुष्प—सूक्ष्म, पीताभ श्वेत और गुले बाबूना के समान होता है, जिसके मध्य में एक प्रकार का पीलापन होता है। इसमें छोटे छोटे गोल दाने अर्थात् फल लगते हैं जिनके भीतर बारीक बीज भरे होते हैं। इसके अनेक भेद हैं जिनका वर्णन यथा स्थान होगा। गंध तीव्र एवं अग्राह्य और स्वाद अत्यन्त तिक्त होता है।

प्रयोगांश—इसके पत्र एवं पुष्पमान शाखाएँ औषध कार्य में आती है।

रासायनिक संगठन—इसमें १॥ प्रतिशत एक उड़नशील तैल जिसका सान्द्र भाग एब्सिन्थोल (Absinthol) कहलाता है। इसके अतिरिक्त इसमें एक रवादार (स्फटिकीय) सत्व जिसको एब्सिन्थीन (Absinthin) कहते हैं और ½ प्रतिशत एक तिक्त राल और ५ प्रतिशत एक हरित राल आदि पदार्थ होते हैं।

घुलनशीलता—एब्सिन्थीन (Absinthin) अत्यन्त कटु, श्वेत वा पीताभ धूसर वर्ण का एक ग्ल्युकोसाइड है जो मद्यसार (Alcohol) वा सम्मोहनी (Chloroform) में अत्यन्त विलेय, किंतु ईथर तथा जल में अल्प विलेय होता है। अफ़सन्तीन के शीत कषाय (Infusion) को कषायीन द्वारा तलस्थायी करने से एब्सिन्थीन प्राप्त होता है।

संयोग-विरुद्ध (Incompatibles)—आयर्न सल्फास (हीरा कसीस), जिंक सल्फास (तूतिया श्वेत), प्लम्बाई एसीटास और अर्जेण्टाई नाइट्रास।

औषध-निर्माण—पौधा, १० से ६० ग्रेन।
शीतकषाय-(१० में १), मात्रा-½ से १ आउंस। **तरल सत्व**—५ से ६० बुंद तक (पूर्ण वयस्क मात्रा)। **टिंक्चर**-(८ में १), मात्रा ½ से १ ड्राम तक। **तैल**-मात्रा, ½ से ३ बुंद।

सुगंधित मद्य-(एक फरासीसी मद्य जिसको वाइनम एरोमैटिकम् एब्सिन्थियम् कहते हैं। इसमें मार्जोरम् अञ्जेलिका, एनिस प्रभृति सम्मिलित होते हैं)। यह मस्तिष्कोत्तेजक है इसके अधिक सेवन से एब्सिन्थिज़्म (Absinthism) अर्थात् अफ़सन्तीन द्वारा विषाक्तता उत्पन्न हो जाया करती है जिसके लक्षण निम्न हैं—

रोगी को कठिन गरमी मालूम होती है हृदय धड़कता है नाड़ी की गति तीव्र हो जाती है और श्वास जल्द आता है इत्यादि।

नोट—यूनानी चिकित्सा में यह तैल, मद्य, शर्बत, अनुलेपन, अर्क़, टिकिया, क्वाथ, तथा मअ्जून प्रभृति मिश्रण रूपों में व्यवहृत होता है।

अफ़सन्तीन के एलोपैथिक (डॉक्टरी) चिकित्सा में व्यवहृत होने वाले मिश्रण—
(डॉक्टरी में ये मिश्रण नॉट ऑफ़िशल हैं)

(१) एक्स्ट्रैक्टम् एब्सिन्थियाई, मात्रा-२०से ३० ग्रेन।
(२) एका " " ½ से १ औंस।
(३) एक्सट्रैक्टम् " " ५ से १५ ग्रेन।
(४) एक्सट्रैक्टम् एब्सिन्थियाई लिक्विडम्, मात्रा-१५ से ४५ बुंद।
(५) इन्फ्युज़न एब्सिन्थियाई " १ से २ औंस।
(६) ऑलियम् " " १ से ५ बुंद।
(७) टिंक्चूरा " " ½ से २ ड्राम।
(८) " कम्पॉजिटा " १ से ४ ड्राम।

नोट—यद्यपि युरोप के कतिपय प्रदेशों में इस औषधि के उपयुक्त मिश्रण प्रयोग में लाए जाते हैं, तथापि अधिकतर इसका टिंक्चर ही व्यवहार में आता है। यह एक भाग वर्मवुड (अफ़सन्तीन) और १० भाग मद्यसार (६०%) से निर्मित किया जाता है।

अफ़सन्तीन के प्रभाव तथा उपयोग।

आयुर्वेद की दृष्टि से—

यद्यपि अफ़सन्तीन और इसकी कतिपय जातियाँ भारतवर्ष में उत्पन्न होती हैं और उनका वर्णन भी आयुर्वेदीय ग्रंथों में आया है; तथापि अफ़सन्तीन का वर्णन किसी भी आयुर्वेदीय ग्रंथ में नहीं मिलता। इसकी अन्य

जातियाँ निम्न हैं—(१) **दमनक** वा दौना (Artemisia Scoparia or Indica), (२) **नागदमनो** (Artemisia Vulgaris), (३) **शोह** वा **किर्माला** (Artemisia Maritima) और (४) परदेशी दौना (Artemisia Persica) इत्यादि। इनके लिए उन उन नामों के अन्तर्गत वा आर्टिमिसिया देखो।

यूनानी मत से—

प्रकृति—यह प्रथम कक्षा में उष्ण और द्वितीय कक्षा में रूक्ष है। हानिकर्त्ता—मस्तिष्क व आमाशय को निर्बल करता, शिरः शूल उत्पन्न करता तथा रूक्षता की वृद्धि करता है। दर्पघ्न—अनीसून, मस्तगी, नीलोफ़र या शर्बत अनार। प्रतिनिधि—ग़ाफ़िस और असारून। **मात्रा**—३ मा० से ७ मा० तक। चूर्ण रूप में सामान्यतः ४-४॥ मा० और क्वाथ रूप में ६-७ मा० तक प्रयोग में ला सकते हैं।

गुण, कर्म, प्रयोग—(१) रोधोद्घाटक है। क्योंकि इसमें कटुता और चरपराहट है। (२) संकोचक है। क्योंकि इसमें कषायपन है; और कषायपन (वा क़ब्ज़) पृथ्वी तत्व के कारण प्राप्त होता है और पृथ्वी तत्व रूक्ष होता है। इसके अतिरिक्त इसमें कटुता भी है और कटुता भी तीक्ष्ण एवं तीव्र पार्थिव तत्व ही से हुआ करती है और यह स्पष्ट है कि तीक्ष्ण पार्थिव तत्व के भीतर रूक्षता का प्राधान्य होता है। इसके अतिरिक्त इसके स्वाद में चरपराहट भी है और यह अग्नि तत्व के कारण हुआ करता है। इस कारण से भी यह रूक्ष है। अतएव इससे यह निष्पन्न हुआ कि अफ़्सन्तीन दो प्रकार के सत्वों के योग द्वारा निर्मित हुआ है—(१) उष्ण सत्व-कटु, सारक और चरपरा है और (२) दूसरा सत्व पार्थिव एवं संकोचक है। (३) मूत्र एवं आर्त्तवप्रवर्त्तक है। क्योंकि इसके भीतर तल्तीफ़ (मलशोधन,द्रवजनन) और तफ़्तीह (अवरोध उद्घाटन) की शक्ति है। (४) पित्त को दस्तों के द्वारा विसर्जित करता है। क्योंकि इसमें जिला (कांतिकारिणी) शक्ति विद्यमान है जो इसके भीतर कड़ुआहट के कारण पाई जाती है। स्तम्भिनी (क़ाबिज़ह्) शक्ति भी इसमें वर्तमान है जो अवयव को आकुञ्चित एवं बलिष्ट करती है। इससे क़ुव्वत दाफ़िअह् (प्रक्षेपक वा उत्सर्जन शक्ति) को शक्ति मिलती है और (दस्त आ जाते हैं)। (५) इसका स्वरस आमाशय के लिए हानिकर है। क्योंकि यथार्थतः स्वरस अफ़्सन्तीन के अवयव से अधिक उष्ण एवं तीक्ष्ण होता है। इसलिए कि स्वरस में पार्थिवांश जो कि शीतल होता है, नहीं आता। अतएव इसका स्वरस अपनी तीक्ष्णता एवं उष्णता के कारण आमाशयिक द्वार को शक्ति प्रदान करता है। बल्कि इसके जिर्म (फांक) में शेष रह जाता है और निचोड़े हुए रस में नहीं निकलता। (६) हाँ! स्वरस में अफ़्सन्तीन की अपेक्षा अधिकतर लयकारिणी(विलायक) तथा अवरोधोद्घाटकीय शक्ति होती है, जिसके कारण यह कामला (यर्क़ान) के लिए लाभदायक है। इसका जिर्म और इसका शर्बत आमाशय एवं यकृत् को बलप्रद है। जिर्म के बल्य होने का कारण यह है कि उसके भीतर स्तम्भिनी (क़ाबिज़ह) शक्ति काफ़ी होती है। अतएव वह प्रति दो अवयवों को शक्ति प्रदान करता है। शर्बत इसलिए बल्य है कि उसमें स्तंभक (क़ाबिज़) एवं सुगन्धित ओषधियाँ सम्मिलित की जाती हैं। उसमें क्षोभ एवं तीक्ष्णता भी नहीं होती। शर्बत बनाने की कई विधियाँ हैं। कोई इस प्रकार बनाता है:—अफ़्सन्तीन को अंगूर के शीरा में भिगो देते हैं और तीन मास तक छोड़ रखते हैं। और कोई इस तरह बनाता है कि अफ़्सन्तीन को सुगन्धित दवाओं के साथ दो मास पर्यन्त अंगूर के शीरे में भिगो रखते हैं अतः यह शर्बत अपने स्तम्भक एवं क्षोभ रहित सौरभ के कारण आमाशय और यकृत् को शक्ति प्रदान करता है। (१) अफ़्सन्तीन अर्श के लिए उपयोगी है। क्योंकि अर्श का रोग स्थल चूँकि मुख तथा आमाशय से दूर स्थित है और वहाँ तक इसकी शक्ति निर्बल होकर पहुँचती है। इस लिए

इसकी उष्णता वहाँ ऐसी न होगी कि रूक्षता की वृद्धि कर मस्सों को कठिन बना सके; प्रत्युत उस सूक्ष्म उष्मा के कारण **तलय्यिन** (मृदुता), **तह्लील** (विलेयता) और **तस्ख़ीन** (गर्मी) प्राप्त होगी । (८) और अपनी तल्तीफ़ (संशोधन वा द्रावण), तहलील (विलायन) और इद्रार (प्रवर्तन, रेचन) के कारण विषमज्वरों को लाभदायक है । (९) इसके क्वाथ का वाष्प स्वेद (भफारा) करने से कर्णशूल प्रशमित होता है । क्योंकि यह वायु को लयकर्त्ता और श्लेष्मा को मृदु एवं लय करता है । और पैत्तिक दोषों को भी निकाल डालता है ।(१०) चूँकि अफ़्सन्तीन के भीतर कड़ुआहट है । अतः यह उदर की कृमियों को मार डालता है । (त०न०)

संक्षेप में यह बल्य, संकोचक, रोधोद्घाटक, संकोचक, प्रवर्त्तक वा रेचक, ज्वरघ्न, उदरकृमिनाशक, मस्तिष्कोत्तेजक और कीटाणुनाशक है । आमाशयावसान, आध्मानजन्य पाचन विकार, आंत्रकृमि, परियाय-ज्वर निवारण हेतु, श्लेष्म स्राव, रजःरोध, रजः स्राव, शिरोरोग यथा शिरः शूल, पक्षाघात, कम्पन, अपस्मार, सिर चकराना, मालीख़ोलिया इत्यादि तथा कर्ण रोगों और यकृत् एवं प्लीहा आदि रोगों में इसका व्यवहार होता है ।

एलोपैथिक वा डॉक्टरी मतानुसार—

प्रभाव—अफ़्सन्तीन (पौधा) तिक्त बल्य, सुगन्धित, आमाशय बलप्रद अर्थात् अग्निप्रदीपक, ज्वरघ्न, कृमिघ्न (आंत्रस्थ), मस्तिष्कोत्तेजक, रजः प्रवर्त्तक, अवरोधोद्घाटक, स्वेदक, पचननिवारक, और किञ्चित् निद्राजनक है । (तैल) अधिक काल तक सेवन करने से यह निद्राजनक विष (Narcotic poison) है ।

उपयोग—आमाशय बल्य रूप से इसको आमाशय की निर्बलता के कारण उत्पन्न अजीर्ण एवं आध्मानजन्य अजीर्ण में देते हैं । कृमिघ्न रूप से इसको केचुओं (Round worms) और सूती कीड़ों (Thread worms) के निःसारण हेतु व्यवहारमें लाते हैं । ज्वरघ्न रूप से इसको विषमज्वरों (Intermittent fevers) में प्रयुक्त करते हैं । रजः प्रवर्तक रूप से इसको रजःरोध तथा कष्टरज में देते हैं । मस्तिष्कोत्तेजक रूप से इसको अपस्मार और मस्तिष्क नैर्बल्य इत्यादि रोगों में देते हैं ।

नोट—आमाशय तथा आंत्र की प्रदाहावस्था में इसका उपयोग न करना चाहिए ।

अफ़्सन्तीन को गरम सिरका में डुबोकर मोच आए हुए अथवा कुचल गए हुए स्थान की चारों ओर बाँधते हैं । आक्षेप निरोध के लिए भी इस पौधे के कुचल कर निकाले हुए रस को सिर में लगाते हैं । शिरोवेदना में शिर को तथा संधिवात और आमवात में संधियों को पूर्वोक्त विधि द्वारा सेंकते भी हैं । एब्सिन्थियम् तिक्त आमाशय बलप्रद है । यह क्षुधा की वृद्धि करता और पाचन शक्ति को बढ़ाता है । अजीर्ण रोग में इसका उपयोग करते हैं । यह योषापस्मार (Hysteria). आक्षेप विकार यथा अपस्मार, वात तान्त्विक क्षोभ, वात तन्तुओं की निर्बलता (वात नैर्बल्य) में तथा मानसिक श्रांति में भी व्यवहृत होता है । कृमिघ्न प्रभाव के लिए इसके शीत कषाय की वस्ति देते हैं । कृमिनिस्सारक रूप से इस पौधे का तीक्ष्ण क्वाथ प्रयुक्त होता है । बालकों की शीतला में इसका मन्द क्वाथ देते हैं । त्वग् रोगों एवं दुष्ट व्रणों में टकोर रूप से इसका बहिर प्रयोग होता है । (इं० मे० मे० पृ० ८४-डॉ० नदकारणी कृत । पी० वी० एम०).

सिंकोना के दर्याफ़्त से पूर्व विषमज्वरों में इसका अत्यधिक उपयोग होता था । वातसंस्थान पर इसका सशक्त प्रभाव होता है । शिरोशूल एवं इसके अन्य वात संबन्धी विकारों को उत्पन्न करने वाली प्रवृत्ति से काश्मीर तथा लेदक के यात्री भली प्रकार परिचित हैं । क्योंकि जब वे देश के उस विस्तृत भाग से जो उक्त पौधे से आच्छादित है, यात्रा करते हैं, तब उनको यह महान कष्ट सहन करना पड़ता है । (वैट्स डिक्शनरी १ खं० ३२४ पृ०)

अफ़्सन्तीनुल् बह्र afsantínul-bahar-अ० (Artemisia Maritima, *Linn.*) शोह, शरीफ़ून-अ०। दर्मनह-फ़ा०। किर्माला -हिं०।

अफ़्सन्तीने हिन्दी afsantíne-hindi-फ़ा० (Artemisia Indica, *Willd.*) ग्रंथिपर्णी-सं०।

अफ़्सीह āafsih-अ० बलूत भेद। See-Balúta.

अफ़्सुल् अबैज़ āafsul-abaiza-अ० माजूफल। (White galls.)

अफ़्सुल् अख़्ज़र āafsul-akhzara-अ० माजूफल, मायाफल। (Green galls.)

अफ़्सुल अर्ज़क़ āafsul-arzaq-अ० नील माजूफल। (Blue galls.)

अफ़्सुल् अस्वद āafsul-asvada-अ० श्याम माजूफल (मायाफल)। (Black galls.)

अफ़्सुल् बलूत āafsul-balúta-अ० माजूफल, मायाफल -हिं०। Galls (Galla.).

अबका abaká-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अबका=सेवार] एक पौधा जिसके डंठल की छाल रेशेदार होती है और रस्सी बनाने के काम आती है। खूद्ड़ का मैनिला पेपर बनता है। यह पौधा फिलिपाइन देश का है। अब इसकी खेती अण्डमन टापू और आराकान की पहाड़ियों में भी होती है। इसकी खेती इस प्रकार की जाती है। इसकी जड़ से पेड़ के चारों ओर पौधे भूफोड़ निकलते हैं। जब वे पौधे तीन तीन फुट के हो जाते हैं तब उन्हें उखाड़ कर खेतों में ८।६ फुट की दूरी पर लगाते हैं। तीन चार साल में इसकी फ़सल तैयार होती है, तब इसे एक एक फुट ऊपर से काट लेते हैं। डंठलों से इसकी छाल निकाल ली जाती है और साफ़ करके रस्सी आदि बनाने के काम में आती है। हिं० श० सा०।

अबकेशी aba-keshí-हिं० वि० अफल, फलरहित, बाँझ। Without fruit, barren (A tree).

अबखरा abakhará-हिं० संज्ञा पुं० [अ०] भाप। वाष्प। (Vapour).

अबखोरा abakhorá-हिं० संज्ञा पुं० दे०—आबखोरा।

अबज़ abaz } -अ० अभ्यन्तर जानु, घुटने का
माबज़ mábaz } पिछला या मध्य रेखा की ओर का भाग या तल। पॉप्लीज़ (Poples)-इं०।

अबटन abatana-हिं० संज्ञा पुं० दे०—उबटन।

अबद āabad-अ० एक सुगंधित पौधा है। (An aromatic plant.)

अब-दातक abadátak-सं० लामज्जकम्। (Andropogon laniger.)

अबद्ध abaddha-हिं० वि० [सं०] जो बँधा न हो। मुक्त।

अबनी abaní-हिं० स्त्री० धरती, पृथ्वी। (The earth, the world).

अबब āabab-अ० काकनज भेद जिसको हब्बुल्लहु कहते हैं। (२) नक़्क़ा Physic nut (Jatropha glauca)। इसके बीज से एक प्रकार का उत्तेजक तैल प्राप्त होता है जो आमवात तथा पक्षाघात के लिए लाभप्रद है। इं० हैं० गा०।

अबमकाजी abamakájí-तु० ख़ुब्बाज़ी। See-khubbází.

अबयी abayee-मह० महाशिम्बी-सं०। श्वेत सेम-हिं०। (Canavallia ensiformis)

अबरक abarak-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अभ्रकम्] (१) Talc (Mica) अभ्रक, भोडल। (२) एक प्रकार का पत्थर जो खान से निकलता है और बरतन बनाने के काम में आता है। यह बहुत चिकना होता है। इसकी बुकनी चीज़ों के चमकाने के लिए पालिस वा रोग़न बनाने के काम में आती है।

अबरक भस्म abarak-bhasma-हिं० स्त्री० अभ्रक की भस्म। (Calcinated talc.)

अबरक़लया abar-qalayá-यु० पालक। (Spinace aoleracea).

अबरख abarakha-हिं० संज्ञा पु० अभ्रक, भोडल । Talc (Mica).

अबरञ्जमिश्क abaranjamishka-अ० कृ० फ़रञ्जमिश्क-अ० । रामतुलसी-हिं० । Ocimum (gratissimum).

अबरन abaran-हिं० वि० [सं० अवर्ण] बिना रूप रंग का । वर्णशून्य ।

अबरम् abaram-सं० क्ली० अन्तर्वस्त्र । मे० रत्रिकं ।

अबरस abarasa-हिं संज्ञा पु० [फ़ा०] (१) घोड़े का एक रोग जो सब्ज़े से कुछ खुलता हुआ सफेद होता है । (२) घोड़ा जिसका सब्ज़ेसे कुछ खुलता हुआ सफेद रंग हो । वि० सब्ज़े से कुछ खुलता हुआ सफेद रंग का ।

अबरावृत्तिः abarávrittih-सं० स्त्री० एक अम्ल फल है । (An aciduous fruit).

अबरी abarí-हिं० संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] पीले रंग का एक पत्थर । जैसलमेरी ।

अबर्क़ abarq-अ० अबरक या शफ़्नीन दरियाई (एक जानवर है) या कोई फ़ारसी दवा है ।

अबर्क़ल्सा abarqalsá-यु०
अब्रअक़लसा abra-aqalasá-यु०
भयानक मृगी । युक़ुलस यूनानका एक अन्यायी तथा हिंसक राजा था । इस रोग का नाम अबरक़ल्सा उसी के नाम पर रक्खा गया है । क्योंकि यह भी एक भयंकर रोग है । एपिलेप्सिया ग्रेविअर (Epilepsia Gravior).

अबर्ख़ abarkha-अबर्क़, अभ्रक । Talc (Mica).

अबर्दान abardána-अ० सुबह और शाम का समय । प्रातः सायंकाल । (Morning & the evening).

अबर्नी abarní-रू० लोफ़ (जिसे हिंदी में मुस्तकन्द कहते हैं, यह एक वनस्पति है) ।

अबर्नेथीज़ पिल्ज़ abernethy's pills-इं० मर्करी पिल ३ ग्रेन, कम्पाउण्ड एक्सट्रैक्टऑफ़ कॉलोसिन्थ २ ग्रेन, दोनों की एक गोली बनाले और ऐसी एक गोली रात को सोते समय दें । यह उस क़ब्ज़ रोग में जिसमें यकृद् विकार भी हो अत्यन्त लाभदायक है ।

अबर्ब्यून abarbyúna-यु० फ़र्फ़्यून-अ० । सेहुँड़, थूहर । (Euphorbium.).

अबर्स abarsa-यु० गुले सौसन । See-Sousana.

अबलख़ abalakha-हिं० वि० [सं० अवलक्ष =श्वेत] कबरा । दो रंगा । सफ़ेद और काला अथवा सफ़ेद और लाल रंग का ।

अबलखा abalakhá-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० अवलक्ष] एक पक्षी जिसका शरीर काला होता है, केवल पेट सफ़ेद होता है । इसके पैर सफ़ेदी लिए हुए होते हैं । चोंच का रंग नारंगी होता है यह संयुक्त-प्रांत, बिहार और बंगाल में होता है और पत्तियों और परों का घोंसला बनाता है । एक बार में चार पाँच अंडे देता है इसकी लंबाई ६ इंच होती है ।

अबलः abalah-सं० पु० वरुण वृक्ष, बरना । A tree (Capparis Trifoliata).

अबलह्ह abalahh
ख़शिनुस्सौत khashinussouta
-अ० भर्राए हुए शब्द वाला, बैठे हुए शब्द वाला । स्ट्रिड्युलस (Stridulous)-इं० ।

अबलासः abalásah-सं० पु० (१) कफकारी (२) बलनाशक । अथर्व० । सू० २ । १८ । का० ८ ।

अबलासेन abalásena-हिं० संज्ञा पु० कामदेव । (Cupid).

अबाख़िस abákhis-अ० पोर्वे, पर्व्व-सं० । डिजिट्स (Digits)-इं० ।

अबाज़ीर abázira
तवाबिल tavábil
-अ० अब्ज़ार का (ब० व०) और अब्ज़ार है बहुवचन बज़्र का जिसका अर्थ बीज है । लेकिन तिब्ब की परिभाषा में अब्ज़ार या अबाज़ीर उन बीजों या तर वा शुष्क बीजों को कहते हैं जो आहार में मसाला

रूप से उसको स्वादिष्ट एवं सुगन्धयुक्त करने के लिए डाले जाते हैं।

उदाहरणतः—जीरा, कालीमिर्च, लौंग, दालचीनी, और धनियाँ प्रभृति। स्पाइसेज़ (Spices), सीज़निङ्ग्ज़ (Seasonings) -इं०।

अबाती abátí-हिं० वि० [सं० अ=नहीं+वात=वायु] (१) बिना वायु का। (२) जिसे वायु न हिलाती हो।

अबानस abánasa-यु० आबनूस। See-ábanús.

अबाबील ababíla-हिं० संज्ञा स्त्री० [अ०] स्वालो (Swallow) इं०। काले रंग की एक चिड़िया। इसकी छाती का रंग कुछ खुलता होता है। पैर इसके बहुत छोटे छोटे होते हैं जिस कारण यह बैठ नहीं सकती और दिन भर आकाश में बहुत ऊपर झुंड के साथ उड़ती रहती है। यह पृथ्वी के सब देशों में होती है। इनके घोंसले पुरानी दीवारों पर मिलते हैं। पर्याय-कृष्णा। कन्हैया। देव दिलाई। सयानी, सियाली, पित्त देवरी-हिं०। कफ़ अबाबील, ख़ुत्ताफ़ (ख़ुतातीफ़-बहु०), अ़स्फ़ूरुज्जनह्, ज़नीव-अ०। परसत्वक, फरस्तूक, बाबुवानह्-फा०। शालीतून, ख़ालीदून-यु०। क़रला नफ़्ख़ तु०। खजला-बं०मो०।

प्रकृति—इसका मांस तीसरी कक्षा के अव्वल मर्तबा में उष्ण व रूक्ष है। भस्म शीतल व रूक्ष होती है। विट् अत्यन्त उष्ण व रूक्ष होता है। रंग—स्वयं श्यामाभायुक्त धूमर और इसका मांस श्यामाभायुक्त होता है। स्वाद—अन्य पक्षियों के मांस के समान किंतु कुछ नमकीन। हानिकर्त्ता--गर्भवती तथा उष्ण अर्थात् पित्त प्रकृति को। दर्पघ्न—घृत व दुग्ध एवं सर्दतर वस्तुएं। प्रतिनिधि—ग्रन्थों में इसकी प्रतिनिधि का वर्णन नहीं। किंतु, चक्षु रोगोंमें जतूका का मग़ज़। मुख्य कार्य—चक्षु रोगों के लिए अत्यन्त लाभदायक है और रक्तालपतानाशक है।

गुण, कर्म, प्रयोग—इसके मांस का कबाब अवरोधोद्घाटक और रक्तालपता एवं प्लीहा संबन्धी रोगों और वस्त्यश्मरी के लिए लाभदायक है। एक मिस्क़ाल (४॥ मा०) की मात्रा में इसके शुष्क पिसे हुए चूर्ण को फाँकना दृष्टिशक्तिवर्द्धक है। और दो दिरम नमक सूए ख़ुनाक़ के लिए लाभदायक है। इसकी भस्म का गंडूष वा शहद के साथ प्रलेप करना उपजिह्वा (कौवा) और कंठगत सम्पूर्ण व्याधियों को नष्ट करता है। इसके बच्चे की भस्म को रुधिर में मिलाकर अथवा इसका मस्तिष्क मधु में मिलाकर नेत्रमें लगाना चक्षुष्य है और मोतियाबिन्दु की आरम्भिक अवस्था में लाभप्रद है। नाख़ूना, फूली और सबल के लिए लाभदायक है। इसका ताज़ा रक्त अत्यन्त कांतिदायक एवं त्वचागत चिह्नोंका नाश करने वाला है। गौ पित्त के साथ बालों को सफ़ेद करता है। इसके झोंफ को जलाकर उसमें से एक मिसक़ाल (४॥ मा०) की मात्रा में पिलाने से बन्ध्यत्व का नाश होता है और इसके पित्त का नस्य बालों को काला बनाता है; परंतु मुँह में दुग्ध रक्खें जिससे कि दाँत काले न हों। इसके नेत्र को चमेली के तेल में रगड़ कर पेड़ू पर लगाना बन्ध्यत्व के लिए परीक्षित है। म० अ०।

इसके शिर को जलाकर भस्म प्रस्तुत कर मद्य में डाल दें। इससे नशा न होगा। इसकी विष्ठा को श्वेत बालों पर लगाने से बाल काले हो जाते हैं। यदि किसी के बाल असमय श्वेत हो गए हों तो इसके पित्त का नस्य देने से वे काले हो जाते हैं।

अबाबीलों में मिश्री अबाबील उत्तम होता है। इनके अंडे बल्य तथा कामोद्दीपक होते हैं। घोंसलों से कफ़्फ़े अबाबील प्राप्त होता है। इसको ख़ानहे अबाबील और अबाबील मिश्री, सूए अबाबील और अबाबील की मस्ती कहते हैं। इसकी प्रकृति उष्ण व रूक्ष है। यह अत्यंत कामोद्दीपक, शुक्रमेहघ्न, हृद्य और नाड़ियों को बल प्रदान करने वाला है। यह मुर्गी के खुले हुए चोंच के समान होता है। कोई सफ़ेद रंग का और कोई

रक्त वर्ण का होता है। सफ़ेद रंग वाला शुद्ध पंजाबी सालब मिश्री जैसा कठोर होता है। किंतु शुष्क होने पर सरलता से टूट जाता है।

योग—

(१) अबाबील के मांस को शुष्क करके चूर्ण करें और ४॥ मा० जल के साथ सेवन करें। गुण—दृष्टि शक्ति को अत्यन्त लाभ प्रद है। प्लीहा वृद्धि को लाभदायक और अश्मरीद्रावक है। यदि इसको ऋतुस्नाता स्त्री को खिलाया जाए तो सम्पूर्ण आयु भर रजः स्राव न होगा और न गर्भाधान होगा।

(२) अबाबील की विष्टा को शुष्क कर चूर्ण कर और जैतून के तैल में मिलाकर झाईं तथा मुहाँसों पर लेप करने से लाभ होता है। गालों पर मलने से यह उसको सुर्ख़ करता है।

(३) अबाबील के शिर को शुद्ध मधु में मिलाकर नेत्र में लगाने से आरंभिक मोतियाबिंदु में लाभ होता है।

(४) अबाबील के हृदय को शुष्क करके चूर्ण करें। इसमें सम भाग शर्करा योजित कर दुग्ध के साथ सेवन करने से कामोत्तेजक प्रभाव होता है।

(५) अबाबील के रुधिर को बिना सूचित किए स्त्री को खिलाने से कामावसान होता है।

अबाबूस ababús-**यु० मूली, मूलक**। (Radish).

अबामरून abámarún-**यु० चकोर** (एक पक्षी है)। See-chakora.

अबार āabár-**अ० ऊँट, उष्ट्र**। (A camel.)

अबॉर्टिफशेण्ट abortifacient-**इं०** }
अबॉर्टिव abortive-**इं०** }
गर्भपातक, गर्भशातक। See-**गर्भपातक**।

अबॉर्टिव पेपर कॉर्न्स abortive pepper corns-**इं० पोकल मिरी-हिं०, मह०**। पाइपर ट्रायोइकम् (Piper Trioicum.) -**ले०**। **इं० मे० मे०**।

अबॉर्न ब्लैटरराइजर फ्लूजेल सेमेन aborn blattriger flugel samen-**जर०** मुचकुन्द-**सं०, हिं०**। (Pterospermum Acerifolium.)। **इं० मे० मे०**।

अबॉर्शन abortion-**इं० गर्भपात, गर्भस्राव**। (Miscarriage.).

अबाल abála-हिं० वि० [सं०] (१) जो बालक न हो। जवान। (२) पूर्ण, पूरा।

अबाली abálí-हिं० संज्ञा स्त्री० [देश०] एक पक्षी जो उत्तरीय भारत और बम्बई प्रान्त तथा आसाम, चीन और स्याम में मिलता है। यह अपना घोंसला घास या पर का बनाता है। बैंगनकुटी।

अबालुकः abálukah-**सं० पुं० पानीयालुक**। रा० नि० व० ७। See-Páníyáluh.

अबास āabás-**अ० शेर, सिंह**। (Lion.)

अबासी āabásí-**अ० जाती, गुलेअब्बासी**। (Mirabilis jalapa.)

अबिक्त abikt-**हिं० वि० गुप्त, अबोधनीय, अबोधगम्य**। (Hidden, unintelligible.)

अबिङ् abin-**सिं० अफीम**। (Opium.) स० फा० इं०।

अबिचल abichal-**हिं० अचल, गतिशून्य अविचल**। (Motionless, Immovable.)

अबिरञ्ज abiranj-**अ०,फ़ा० बिरञ्ज काबुली**।

अबिरञ्जबीन abiranja-bíná-**यु० शौकतुल्यहूद -अ०**। एक काँटादार वृक्ष है। (A spinous-tree.)

अबिरञ्जमुश्क abiranjamushka-**अ०,फ़ा० फरञ्जमिश्क, रामतुलसी**। (Ocimum gratissimum.)

अ(इ)बरत āa(āi)brata-**अ० अश्रु, आँसू डबडबाना, आँसू बहना, रोने की हिचकी। टीयरिंग** (Tearing.)-**इं०**।

अबिला abilá-**सं० स्त्री० मेषी**। **भेड़ी-हिं०**। (A she-sheep.)

अबिशून abishún-**यु० रातीनज, राल, धूप**। (Resin).

अबिंधन abindhana-**हिं० संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र**। (Sea)

अबिद्ध abiddha-हिं० वि० [सं० अविद्ध] अनवेधा । बिना छिदा हुआ । देखो—**अविद्ध** ।

अबिद्धकर्णी abiddhakarṇí-हिं० संज्ञा स्त्री० देखो—**अविद्धकर्णी** ।

अबिरल abirala-हिं० वि० देखो—**अविरल** ।

अबीक़ूमा abíqúmá } -अ० कनी-
.सूफ़ी ṣúfí } निका के
बाह्य पटल का व्रण जो ऐसा प्रतीत होता है कि नेत्र के ऊपर एक छोटा सा सफ़ेद ऊन (पश्मे सू.फ़) का टुकड़ा रक्खा है । इसी कारण इसको सूफ़ी भी कहते हैं । अल्सर ऑफ कॉर्निआ (Ulcer of cornea)-इं० ।

अबीज़ एक्सेल्सा abies excelsa-ले० लालसिरस हिन्दी, लाहूली, लाली (मारदारी) -हिं० । मेमो० । इसका गोंद औषध तुल्य काम में आता है ।

अबीज़ केनाडेन्सिस abies cannadensis -ले० शूकरान । हेमलॉक (Hemlock), स्प्रस (Spruce)-इं० । See- Shúkrána.

अबीज़डयुमोसा abies dumosa, Loudon. -ले० चङ्गआर्सी धूप-नेपा० । तंगसिंग-भूटा० । सेमडंग-लेप० । प्रयोगांश—राल और गोंद । मेमो० ।

अबीज़ खटरो abies khatro-ले० रातियानज राल, धूप । (Resin.).

अबीज द्राक्षा abíja-drákshá-सं० स्त्री० किशमिश । (Raisin).

अबीज़बालसेमी abies balsame-ले० बालसम ।

अबीज़ वेब्बिआना abies webbiana, *Lindl.* -ले० तालीसपत्र-हिं० । (Himalayan Silver Fir) फा० इं० ३ भा०, मेमो०; इं० मे० मे० ।

अबीज़ स्मिथिआना abies smithiana, *Forbes.*-ले० राव, सिरस-हिं० । रेवड़ी, बनलूदर -पं०, हिं० । See- shirísha

अबी.त् āabít-अ० (१) शुद्ध ताज़ा रक्त । (Pure fresh blood) ।-रसायनी० पारद (Hydrargyrum.)

अबीर āabíra-अ०, हिं० (१) अभ्रक (Talc)। (२) यौगिक सुगंधित चूर्ण (An aromatic compound powder) कोई कोई भ्रमवश केशर को कहते हैं । स० फा० इं० ।

अबीर abíra-हिं०संज्ञा पुं० [अ०] [वि०अबीरी] (१) रंगीन बुकनी जिसे लोग होलीके दिनों में अपने इष्ट मित्रों पर डालते हैं । यह प्रायः लाल रंगकी होती है और सिंघाड़े के आटेमें हल्दी और चना मिलाकर बनती है । अब अरारोट और विलायती बुकनियों से तैयार की जाती है । गुलाल ।

(२) कहीं कहीं अभ्रक के चूर्ण को भी जिसे होली में लोग अपने इष्ट मित्रों के मुख पर मलते हैं अबीर कहते हैं । बुक्का ।

(३) श्वेत रंग की सुगंध मिली बुकनी जो बल्लभ कुल के मंदिरों में होली में उड़ाई जाती है ।

अबीरी abírí-हिं० वि० [अ०] अबीर के रंग का । कुछ कुछ स्याही लिए लाल रंग का ।

संज्ञा पुं० अबीरी रंग ।

अबीरमायह् āabíra-máyah-अ० एक सुगंधित यौगिक औषध है जो चन्दन, गुलाब और कस्तूरी से बनाई जाती है ।

अबीरी abírí-अ० हब्बुल् आस, विलायती मेहदी, बर्ग मोरद । (Myrtus Communis). मेमो० ।

अबीलस abílasa } -अ०
स.र्ब sarb } उदरच्छदा
कला । ओमेण्टम (Omentum), एपिप्लून (Epiploon)-इं० ।

अबीलीमिया abílímiyá-अ० बुरे प्रकार की मृगी जिसमें आरम्भ ही से सम्पूर्ण शरीर में तनाव उपस्थित होता है । विपरीत इसके अन्य प्रकार की मृगी रोग में तनाव मृगी के अधीन होता है । स्टेटस एपिलेप्टिकस (Status epilepticus)-इं० ।

अबीसह् āabísah **अ०** सत् या क्रत शुष्क।

अबुअमारह् abu-āamárah-**अ०** एक शिकारी पक्षी है जो बाज से छोटा होता है, (चर्ग)।

अबुअरक abu-araka } -**यु०** पीलू। Salvadora oleoides, *Dcne.*-**लै०**। **फा० इं० २ भा०**।
अबुअराक abu-aráka

अबुअलस abu-āalasa-**रू०** गुलेखैरी, गुले खैरू, गुलेखित्मी। एक पुष्प है जो रात्रि में पुष्पित होता है। (Althaea officinalis, *Linn.*)

अबुअवारस abu-āavárasa-**अ०** जंगली गाजर, वन्यगर्ज्जर। (wild carrot).

अबुअश्जअ abu-ashjaā } -**अ०** ऊँट उष्ट्र। केमल (Camel) -**इं०**।
अबुहरून abu-harún
अबुसफ़र abu-safar
अबुकअ्ब abu-kaāb

अबुउमर abu-āumara-**अ०** पलंग-**फ़ा०**। चीता, तेंदुआ। (Tiger.)

अबुउमरा abu-āumará-**अ०** चर्ग पक्षी। (A bird).

अबुउमरान abu-āumarána-**अ०** दर्शन (एक पक्षी है)। (A bird.)

अबुउमरान मूसा बिन मैमून abu-āumará-na-músá-bin-maimún-**अ०** (Abu Umran Musa Ben Maimun or Maimunedes Rabbi Moses Bin Maimun) **सन् पैदाइश ११३५ ई० और सन् मृत्यु १२०४ ई०। इन्होंने कई पुस्तकें, जैसे किताबुस्सम्मियात व तिर्याक़ात (अगदतन्त्र) आदि लिखी थीं जिसके अनुवाद लैटिन तथा अंग्रेज़ी में किए गए हैं।**

अबुउमारह् abu-āumárah-**अ०** एक शिकारी पक्षी है।

अबुकअ्ब abu-kaāb-**अ०** ऊँट। (A camel)

अबुक़ल्मून abu-qalmún-**अ०** गिर्गिट। (A chameleon.)।

अबुकसीर abu-kasíra-**अ०** एक पक्षी है। (A bird.)

अबुकहला abu-kahlá-**अ०** रतनजोत। (Alkanet.)

अबुक़ानस abu-qánasa-**यु०** एक बूटी की जड़ है जिससे वस्त्र प्रक्षालन किया जाता है।

अबुक़ुस्तुस abu-qustus-**यु०** एक वनस्पति है, जो मिश्र तथा शाम में फ़ासूलरूमी के नाम से प्रसिद्ध है। यह अर्तनीसा की जड़ के समान होता है। इसमें वस्त्र धोते हैं।

अबुखतार abu-khatára-**अ०** तीतर। A partridge (Perdix Francolinus).

अबुखलस abu-khalasa } -**अ०** रतन, जोत (Alkanet.)।
अबुखलसा abu-khalasá

अबुज़न्दीक़ abu-zandíqa-**अ०** गिगिट, गिरगिट। (A chameleon.)।

अबुज़बाद abu-zabáda-**अ०** गर्दभ, गदहा -**हिं०**। ख़र-**फ़ा०**। (An ass.)

अबुजरादह abu-jarádah-**अ०** एक पक्षी है जो अराक़ और शाम में होता है।

अबुजसान abu-jasán-**अ०** अज़दहा, अजगर। (The boa constrictor.)

अबुजहल abu-jahla-**अ०** चीता। (Tiger.)

अबुत्तिब abuttib-**अ०** प्रसिद्ध युनानी हकीम बुक़रात का उपनाम है। फ़ादर ऑफ़ मेडिसिन (Father of medicine.)-**इं०**।

नोट—बुक़रात शब्द वस्तुतः हिब्बुक़रात (Hipperate.) था; किन्तु "ह" के गिर जाने से बुक़रात रह गया, पर आंग्ल भाषा में अभी तक यही नाम है। देखो—बुक़रात।

अबुदायत abu-dáyat } -**अ०** गीदड़, शृगाल। A jackal (Canis aureus.)
अबुदाल abu-dál

अबुनमामह abu-namámah-**अ०** हुद्हुद (कठबढ़ई)। (A bird.)

अबुन.स्रुल् फ़ाराबी abu-nasrul-fárábí-**अ०** अबुनस्र कसीत मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन उद्र-

निश्र, बिन तुर्खान नाम था। यह ख़ुरासान के फ़ाराब प्रदेश के रहने वाले थे। प्रारम्भ में यह दमिश्क के एक बगीचे में माली का काम करते थे। पर स्वभावत: इनके हृदय में विद्या से प्रेम था। अतएव रात्रि में चौकीदारों के लालटेन की प्रकाश में ये पुस्तकों का अध्ययन किया करते थे। ये अपने समय के अखंड दार्शनिक और संगीत के प्रमुख विद्वान थे। आपने १३ पुस्तकें लिखी हैं।

अबुनामून abu-námún–यु० क़फ़्रुलयहूद (A kind of stone.)। See–qa-frul yahúda.

अबुनास abu-nás-अ० पोस्ता। (Papaver Somniferum, *Roxb.*)

अबुबकर इब्नबाजह् abu-bakar-ibna-bájah –अ० इब्नबाजह्। See–Ibna–bájah.

अबुबकर ज़करिया राज़ी abu-bakar-zak-riyá-rázi–अ० ज़क्रिया राज़ी। See–Zakriyá rází.

अबुबरा abu-bará–अ० समूल (–र)। एक पक्षी है। (A bird called samúla.)

अबुबल्क़िया abu-balqiyá–यु० सार्वांगिक या व्यापक पक्षाघात। वह पक्षाघात जो मुखमंडल के सिवाय सम्पूर्ण शरीर में हो। पक्षाघात, वातग्रस्तता। जेनरल पैरेलिसिस (General Paralysis.)–इं०।

अबुमन्सूर abu-mansúr अ० अबुमन्सूर मुवफ़्फ़िक़ बिन अली हरवी (abu mansúr muwaffik bin Haravi.)। इनकी पुस्तक इल्मुल् अद्वियह् अपने समय की अत्यंत विश्वसनीय एवं लाभदायी कृति है जिसमें बहुत सी भारतीय औषधों का भी वर्णन मौजूद है। इसमें लगभग ५०० औषधों का वर्णन विद्यमान है।

अबुमर्दान abu-mardán–अ० इब्न ज़ुहर। See–Ibn zuhr.

अबुमल्यून abumalyún–यु० सफ़ेदा, सुपेदह्। White Lead (Plumbi carbonas)

अबुमालिक abu-málik–अ० गृद्ध, गिद्ध। (Eagle, a vulture.)

अबुमिस्तार abu-mistár–अ० मद्य, सुरा। (Wine).

अबुमुक़ाबिल abu-muqábil–अ० गाजर। (A carrot.)

अबुयुहा abu-yuhá–अ० (१) गिद्ध (A vulture.)। (२) अज़्दहा, अजगर। (Boa Constrictor.)

अबूरस्मा abúrasmá–अ० एन्युरिस्मा Aneu-risma-इं०। इनोरस्मा, इनोरज़्मा, उमुद्दम। शाब्दिक अर्थ रक्तस्रुति अर्थात् रक्त का बहना है। परन्तु, प्राचीन तिब्बी परिभाषा के अनुसार एक प्रकार का रोग जिसमें आघात वा क्षत प्रभृति के कारण त्वचा के नीचे किसी स्थल की धमनी फट जाती है जिससे धमनीसे रक्त एवं वायु निकल कर त्वचा के नीचे एकत्रित हो जाते हैं और वहाँ एक उभार बन जाता है।

उक्त उभार का यह विशेष गुण है कि वह दबाने से दबा रहता है अर्थात् जब उसको दबाया जाता है तब त्वगधरीय एकत्रित वायु और रक्त पुनः धमनियों में लौट जाते हैं। तथा दबाव हटाने से वे पुनः उक्त स्थान में एकत्रित हो जाते हैं।

अन्ताकी के वचनानुसार उक्त उभार का प्रादुर्भाव कभी तो शिरा के फटने से और कभी धमनीके फटनेसे होता है। अतः शिराजन्य उभार में उसका रंग श्यामाभायुक्त (स्याही मायल) और धामनिक में रक्ताभायुक्त होता है। और इसके साथ ही उक्त स्थल पर शिरास्थित स्पंदन का बोध होता है। अस्तु, शिरा प्रसार काल में यह उभार बढ़ जाता है और शिरा संकोच काल में यह घट जाता है।

डॉक्टरी नोट—एन्युरिस्मा जिसको इनोरज़्मा भी कहते हैं, वस्तुतः युनानी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ धामनिक अर्बुद (रसौली) है। जिन लोगों ने इसको अबूरस्मा लिखा है वास्तव में उनको उक्त शब्द में सन्देह उपस्थित हुआ है। आधुनिक चिकित्सक (डॉक्टर) इस

को धामनीयाव्र्बुद मानते हैं जो धमनी की दीवाल के प्रसार के कारण उत्पन्न होता है। इस रोग में जहाँ धामनीयाव्र्बुद का उभार होता है वहाँ हाथ लगाने से धामनिक स्पन्दन का बोध होता है। उरोवीक्षणयन्त्र (Stethoscope) अथवा कान लगाने से वहाँ एक प्रकार का शब्द सुनाई दिया करता है।

नोट—अबूरस्मा के प्राचीन चिकित्सकों द्वारा कथित अर्थ अर्थात् त्वगधः रक्तस्रुति का समानार्थक अंगरेज़ी शब्द एक्स्ट्रावज़ेशन ऑफ ब्लड (Extravasation of Blood.) है।

अबुरुमाज abu-rumáj--अ० बाक़ला। Garden bean (Vicia Faba.)

अबुर्रबीअ aburrabíā--अ० हुद्‌हुद (कठबढ़ई)। (A bird.)

अबुलअब abulaāba-अ० } गीदड़, शृगाल। (A jackal)
अबुलीस abulísa-अ० }

अबुल् अख़्ज़ abul-akhz--अ० बाशह् (जर्रह्)।

अबुल् अख़्ज़र abul-akhzar--अ० दर्शान (एक पक्षी है)। (A bird.)

अबुल् अख़्बार abul-akhbár--अ० हुद्‌हुद (कठबढ़ई)। (A bird.)

अबुल् अज्साद abul-ajsád--अ० (रसा० पारि०) गंधक। (Sulphur.)

अबुल् अम्र abul-amra--अ० पलंग--फ़ा०। चीता, तेंदुआ। (A Tiger).

अबुल् अर्वाह abul-arváh--अ० (रसा०) पारद। (Hydrargyrum.)

अबुल् अस्फ़र abul-asfar--अ० जायफल। जातीफल (Nutmeg.)

अबुल् अस्वद abul-asvad--अ० नबीज़, एक प्रकार का हलका मद्य।

अबुल् क़ादिम abul-qádim--अ० गिर्गिट। (A chameleon.)

अबुल् क़ासिम ज़हरावी abul-qásim-zahráví--अ० ज़हरावी। See--Zahráví.

अबुल् क़त्ताफ़ abul-quttáf--अ० चील (प्रसिद्ध पक्षी)। (A kite.)

अबुल् ख़ज़ीब abul-khazíb-अ० मांस, गोश्त। (Flesh, meat.)

अबुल् ग़ज़ब abul-ghazab--अ० चीता, तेंदुआ। (A tiger.)

अबुल् जहीम abul-jahím--अ० रीछ, भालू भल्लूक। (A bear.)

अबुल् जेब abul-jeb--अ० नमक वा नमकीन मछली।

अबुलन्‌ज़्ज़ारह abul-nazzárah-अ० ऐनक लगाने वाला।

अबुल फ़ज़ील abul-fazíla -अ० ममोलह (एक पक्षी है)। (A bird.)

अबुलफ़र्ज बिनुत्तय्यब abul-farja-binuttaiyyaba-अ० इमाम ज़मानहे फ़ैल सूफ़ अस्र, उल्लामहे अहद, अबुलफ़र्ज अब्दुल्लाह बिनुत्तैयब। ये इनके नाम थे। यह धार्मिक दृष्टि से ईसाई, और अपने काल के प्रसिद्ध एवं कुशल चिकित्सक थे। यह शैख़ुर्रईस बू अली सीना के समकालीन थे। शैख़ स्वयं भी इनके वैद्यक सम्बन्धी लेखों की प्रशंसा एवं प्रतिष्ठा करते थे। विभिन्न विषयों पर इन्होंने लगभग ५० ग्रंथ लिखे हैं।

अबुलफ़वाख़्त abul-favákhta--अ० दर्शान (एक पक्षी है)। (A bird.)

अबुल्बहर abul-bahra--अ० कर्कट, केकड़ा-हिं०। सर्तान--अ०। (Crab)

अबुलमलीह abul-malíh-अ० चिड़ियों (गौरैयों) में से एकपक्षी है। परन्तु यह उनसे बड़ा और सुन्दर एवं ताजदार होता है। ममोलह, पातर खञ्जन।

अबुलमसीह abul-masíh-अ० ताजी मछली। (Fresh fish)

अबुलमुसाफ़िर abul-musáfira-अ० पनीर, चीज़। (Cheese)-इं०।

अबुलवसास abul-vasása-अ० } नेवला। Mongoose (Vivera mungo)
अबुल् हुक्म abul-hukma-अ० }

अबुव्वा abuvvá-अ० अज्ञात ।

अबुशफ़ीक़ abu-shafíqa-अ० गिर्गिट । (A chameleon.).

अबुशिशफ़ा abu-shshifá-अ० शकर, शर्करा । Sugar (saccharum).

अबुसबअ abusabaā-अ० मकड़ी जैसा एक जानवर है, जिसके अधिक पैर होते हैं । जंगली तथा दरियाई भेद से यह दो प्रकार का होता है । सक़्लाकन्दरिया ।

अबुस् समरून abu-sa marúna--रू० नग़ज़ नाम का एक पक्षी है । देखो—नग़ज़ ।

अबुसहल मसीही abu-sahla-masíhí-अ० अबुसहल ईसा बिन युहा मसीही । यह जर्जान (गोरगान) के निवासी तथा चिकित्सा कला में प्रवीण थे । आपके ग्रन्थ उच्चकोटि के हैं । कहते हैं कि मसीही चिकित्सा कला में शेख़ुर्रईस बूअली बिन सीना के गुरु थे और ख़ुरासान में वहाँ के राजा के मुख्य चिकित्सक रहे हैं । चालीस वर्ष की अवस्था में इनकी मृत्यु हुई । आपकी रचनाओं में "किताबुल् माइतह्" श्रेष्ठतर रचना है ।

अबुस्सिलत abu-ssilata--अ० चील--हिं० । काइट (Kite)-इं० ।

अबुहज़ाज़ब abuhajázaba--अ० गिर्गिट । (A chameleon.) ।

अबुहरून abu-harúna-अ० ऊँट । केमल (Camel.)-इं० ।

अबुहुमरा abu-humará--अ० रतनजोत । (Alkanet.) ।

अबूक abúka-अ० पारद--सं०, हिं० । (Hydrargyrum) इं० मे० मे० ।

अबूतमरून abú-tamarúna-रू० नग़ज़ पक्षी (A bird.)

अबूती abútí-सं० स्त्री० भैंस के गोबर की राख ।

अबूतीलून abútílúna-अ० कद्दू के समान एक बूटी है ।

अबूनस abúnasa-अ० एक नाप विशेष (=६ रत्ती) ।

अबूस abúsa-अ० नीलाथोथा, तूतिया । (Blue vitriol.)

अबूस āabúsa-अ० शेर, सिंह । (A lion.)

अबेद्यः abedyah-सं० पुं० मत्स्य, मछली । Fish (pisces.)

अबेध abedha-हिं० वि० [सं० अविद्ध] जो छिदा न हो । बिना बेधा । अनबिधा ।

अबेर मुर्देय abermuradeya-फ़ा० अब्र-मुर्देह् (फ़ा०) का अपभ्रंश है । मुआबादल, अस्फ़ञ्ज, अस्पञ्ज । Spongia officinalis -लें० । दी स्पाञ्ज (The sponge)-इं० ।

अबेलिआ ट्रिफ्लोरा abelia triflora, *Dr. Wall.* लें० कमकी । (Abelia three-flowered)

अबेलिया थ्रीफ्लावर्ड abelia, three flowered-इं० कमकी (Abelia triflora, *Dr. Wall.*)

अबैज़ abaiza-अ० श्वेत, सफेद, उजला । इसके २ भेद हैं, (१) **अबैज़ हक़ीक़ी** और (२) **अबैज़ मुशफ़्फ़फ़** । ह्वाइट White--इं० ।

अबैज़ मुशफ़्फ़फ़ abaiza-mushaffafa }
अबैज़ मजाज़ी abaiza-majází }
--अ० स्वच्छ श्वेत, जिसमें आरपार दिखाई दे, जैसे जल या शीशा । ट्रैन्सपेरेण्ट (Transparent)--इं० ।

अबैज़ हक़ीक़ी abaiza-haqíqí--अ० इसका अर्थ शुद्ध श्वेत, अस्वच्छ श्वेत, दुग्ध के समान श्वेत है । पर तिब की परिभाषा में दुग्धके समान श्वेत वर्ण के क़ारोरह (मूत्र) को कहते हैं । देखो—बौल लब्नी । (१) ओपेक Opaque (२) काइलस युरिन (Chylous urine) -इं० ।

अबैदी abaidí-रू० नासपाती । A pear (Pyrus communis)

अबैशून abaiṣhúna--यु० रातीनज, राल, धूप। (Resin.)

अबोली abolí--म० झिएटी, कोरएटा, पियाबाँसा। (Barlaria prionitis.)

अबौलो aboulo-अ० एक माप विशेष (=६ जौ =३ रत्ती)।

अब् ab–बालछड़ (सुम्बुलुत्तीब)। (Nardo stachys jatamansi, *D. C.*)

अब्अब् āabāab-अ० नर हिरन (हरिण)।

अब्अबह् āabāabah-अ० रक्त ऊर्ण। लाल ऊन। (Red wool.)

अब्आदे स.लास.ह् abáde-salásah }
अक़्तारे स.लास.ह् aqtáre-salásah }
-अ० परिमाण त्रय अर्थात् लम्बाई, चौड़ाई गहराई, (ऊँचाई)। डाइमेन्शन्स (Dimentions,-sions)-इं० ।

अब्क़ abqa-अ० गुले निलोफ़र या भंग।

अब्कम abkam }—अ० गुङ्गा, गूँग।
अख़्रस akhrhsa } डम्ब (Dumb)-इं०।

अब्क़र āabqara-अ० (१) सोसन श्वेत। (२) मज़ओश।

अब्क़स āabqasa } -यु० एक छोटा जानवर
अब्क़स् āabqasa } है। (A small animal).

अब्कह् āabkah-अ० इज़्ख़िर भेद। See-Izkhir

अब्क़ार āabqára-अ० लम्बा उन्नाब।

अब्क़ुस āabqúsa-यु० एक छोटा जानवर है। (A little animal.)

अब्ख़र abkhara-अ० मुख दुर्गन्धि। मुखदौर्गन्ध्य रोगी।

अब्ख़रह् abkharah-अ० (ए० व०), बुख़ार (ब० व०)। वाष्प। भाफ। वेपर (Vapour)-इं०।

अब्ख़रह् फ़ासिदह् abkharah-fásidah -अ० दुर्गन्ध वाष्प। मियास्म (Miasm) -इं०।

अब्ज abja-हिं० संज्ञा पुं० }
अब्जः abjah-सं० पुं० }
(१) (Barringtonia Acutangula, *Roxb.*-ले०। इं० हिं० गा०। (निचुल वृक्ष, हिज्जल वृक्ष, समुद्रफल, इज्जल, ईजड़। (२) शङ्ख। Conch-इं०। (३) धन्वन्तरि। (The physicians of the gods.) सर्वत्र मे० जद्विकं। (४) चन्द्रमा। मून (The moon)-इं०। (५) कपूर। (Camphor)। (६) एक संख्या। सौ करोड़ : अरब। (७) अरब के स्थान पर आने वाली संख्या।

अब्जम् abjam-सं० क्लो० }
अब्ज abja-हिं० संज्ञा पुं० }
(१) जल से उत्पन्न वस्तु। (२) पद्म, कमल (The nymphæa or lotus) प० मु०। रा० नि० व० १०।

अब्जकर्णिका abja-karniká-सं० स्त्री० कमल-बीज कोश। कमल का छाता (Lotus capsule) वै० निघ०।

अब्जकेशरः abja-kesharah-सं० पुं० पद्म-केशर। कमल की तुरी। च० द०।

अब्जबाँधव abja-bándhava-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य्य। (The sun)

अब्जभोगः abja-bhogah-सं० पुं० कमल कन्द। श० च०।

अब्जवीजभृत् abja-víja-bhrit-सं० पुं० श्वेत करवीर वृक्ष, सफ़ेद कनेर। वै० निघ०। Nerium odorum (The white var. of-)

अब्जहस्त abja-hasta-हिं० संज्ञा पुं० सूर्य्य। (The sun).

अब्ज़ार abzára-अ० यह "बज़्र" का बहुवचन है और इसका बहुवचन अबाज़ीर है। (१) "बज़्र" का अर्थ बीज है। (२) एक पौधा है और (३) मसाला को भी कहते हैं।

अब्ज़ारुल्फ़ितर abzárul-fitara-अ० (१) सदाबहार या (२) सदाबहार के बीज। या

(३) कोई स्याह, तर और बारीक रेशेदार बेल (लता) है।

अब्जाह्वम् abjáhvam-सं० क्लीं० बालक,ह्रीवेर, सुगन्धबाला (Pavonia odorata) बाला-बं०, मे०। वैं० निघ०।

अब्जिनी abjiní-सं० स्त्री०, हिं० संज्ञा स्त्री० (१) पद्मिनी, नीलोफ़र-हिं०। पद्मेर झाड़ बं०। Nymphæa lotus। (२) पद्म-समूह। कमल-वन। (३) पद्मलता।

अब्टना abṭaná-हिं०स्त्री० (Artimisia Elegans, Roxb.)

अब्दः abdah-सं० पुं०
अब्द adda-हिं० संज्ञा पुं० } (१) मुस्तक, मुस्ता, मोथा -हिं०। Cyperus rotundus-लै०। सि० यो० ज्वर० किराताद्धि। च० द० वात ज्व० चि०। (२) नागरमुस्ता (-स्तक), भद्रमुस्तक (-स्ता)-सं०। नागरमोथा-हिं०। Cyperus Pertenuis-लै०। मद० १ व०। (३) मेघ बादल। Cloud-इं०। मे०दद्विकं। -क्लीं० (४) अभ्रक-हिं०,सं०। Talc-इं०। र० मा०। (५) वर्ष, साल, सम्वत्सर (A year)। (६) कपूर (Camphor)। (७) आकाश।

अब्दअ् abdaā-रू० दम्मुल्अख़्वैन। किसी किसी के मत से केशर।

अब्दनादः abda-nádah-सं० पुं० (१) मेघनाद क्षुप। काँटा नटे-बं०। (See-Meghanáda)।-स्त्री०(२) शङ्खिनी। (३) भेकी। तान्दुजल-मह०। See-shankhiní। वैं० निघ०।

अब्दसारः abda-sárah-सं० पुं० कर्पूर भेद। (A kind of Camphor). रा० नि०।

अब्दहुल्लु abdahullu-कना० मोथा, मुस्तक -हिं०। Cyperus Rotundus-इं०।

अब्दान abdána-अ० (बहु० व०) बदन (ए० व०)। शरीर-हिं०, सं०। बॉडीज़ (Bodies)-इं०।

अब्दुल् जिन्न āabdul-jinna-अ० काबूस रोग। See-kábúsa.

अब्धिः abdhih-सं० पुं०
अब्धि abdhi-हिं० संज्ञा पुं० } अब्धि, सागर सिन्धु, समुद्र, अर्णव। दी ओशन (The Ocean)-इं०। रत्ना०। (२) सरोवर। ताल।

अब्धि कफः abdhi-kaphah-सं० पुं०
अब्धि कफ abdhi-kapha-हिं० संज्ञा पुं० } समुद्रफेन। कट्ल फ़िश बोन (Cuttle-fish bone)-इं०। भा० पू० १ भा० ह० व०। (२) समुद्रशोष (Argyreia Speciosa, *Sweet.*)

अब्धिजः abdhijah-सं० पुं०
अब्धिज abdhija-हिं० संज्ञा पुं० } (१) समुद्र से पैदा हुई वस्तु। (२) समुद्रफेन (Cuttle-fish bone)। रत्ना०। (३) (-जौ), अश्विनीकुमार (Ashviníkumára)। (४) शंख। (५) चन्द्रमा।

अब्धिजा abdhijá-सं० स्त्री० सुरा। (Spirituous liquor.) हे० च०।

अब्धिडिण्डीरः abdhi-ḍinḍírah-सं० पुं० समुद्रफेन। (Cuttle-fish bone.) वैं० निघ०।

अब्धिफलम् abdhi-phalam-सं० क्लीं० समुद्रफल, समुद्रजात फल। (Barringtonia acutangula).

अब्धिफेनः abdhi-phenah-सं० पुं० समुद्रफेन। (Cuttle-fish bone.) रा० नि०।

अब्धिमंडुकी abdhi-Maṇḍukí-सं० स्त्री०
अब्धिमंडुकी abdhi-maṇḍúkí-हिं० संज्ञा स्त्री० } मोती की सीपी-हिं०। झिनुक-बं०। मुक्तास्फोट,शुक्तिका-सं०। मोती सीप-मह०। (Pearl oyster) हे० च० ४ का०।

अब्धिवृक्षः abdhi-vrikshah-सं० पुं० शाखिमूल वृक्ष। काका तोदाली।

अब्धिसारः abdhi-sárah-सं० पुं० रत्न। (A jewel.) वैं० निघ०।

अब्ब āabba-अ० जल पीना, घूँट घूँट जल पीना। क्षण क्षण में जल पीना, या एकदम से पानी

पीना, पशुओंके समान मुँह लगाकर जल पीना। सिपिंग (Sipping)-इं०।

अब्बल abbal -द० हाऊबेर, अभल। (Juniperus communis.) इं० मे०मे०।

अब्बास abbása-हिं० संज्ञा पुं० [अ० अब्बास] [वि० अब्बासी] (Mirabilis jalapa.) एक पौधा जो तीन फुट तक ऊँचा होता है। इसकी पत्तियाँ कुत्ते के कान के तरह लम्बी और नुकीली होती हैं। कुछ लोग भूल से इसकी मोटी जड़ को चोबचीनी कहते हैं। इसके फूल प्रायः लाल होते हैं पर पीले और सफ़ेद भी मिलते हैं। फूलों के झड़ जाने पर उनके स्थान पर काले काले मिर्च के ऐसे बीज पड़ते हैं। देखो—गुल अब्बास।

अब्बास āabbás-अ० शेर, सिंह। लायन (Lion)-इं०। (२) गुले अब्बास (Mirabilis jalapa, *Linn.*)

अब्बासी abbási-हिं० संज्ञा स्त्री० [अ० अब्बासी] (१) जाती, गुले-अब्बासी (Mirabilis jalapa, *Linn.*)। (२) मिश्र देश की एक प्रकार की कपास।

अब्बे abbe-सिं० राई, राजसर्षप। (Sinapis juncea.) इं० मे० मे०।

अब्भक्ष abbhaksha-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] पानी का साँप। डेड़हा साँप।

अब्भ्रम् abbhram-सं० क्ली० (१) अभ्रधातु, अभ्रक। Talc (Mica.)। (२) मुस्ता (-स्तक), मोथा। (Cyperus rotundus.) रा० नि०।

अब्युटिलन अविसीनी abutilon avicennœ, *Gœrtn.*-ले० अबूतीलून, कद्दू। फा० इं० १ भा०। इसके तन्तु काम में आते हैं

अब्युटिलन इण्डिकम् abutilon Indicum, *G. Don.*-ले० कंघी, अतिबला। फा० इं० १ भा०। इं० मे० मे०।

अब्युटिलन एशियाटिकम् abutilon Asiaticum-ले० कंघी, अतिबला। इं० मे०मे०।

अब्युटिलन ग्रेविओलेन्स abutilon Graveolens, *W. & A.*-ले० बड़ी कंघी -हिं०, बं०।

अब्युटिलन पॉलिएंड्रम् abutilon polyandrum, *Schlect.*-ले० वेलाई थूथी -ता०। मेमो०।

अब्युटिलन म्युटिकम् abutilon muticum, *G. Don.*-ले० बला भेद। इसका रेशा काम आता है। फा० इं० १ भा०। मेमो०।

अब्यून abyún-यु० अफ़्यून, अफ़ीम। (Opium.)

अब्र abra-हिं० संज्ञा पुं० [फ़ा०। सं० अभ्र] मेघ, बादल। (Cloud.)

अब्रक abrak-फ़ा० अभ्रक। Talc (Mica).

अब्रक़ abraq-अ० (१) अभ्रक (Mica) (२) शक़्नीन दरियाई (एक जानवर है)। (३) कोई फ़ारसी दवा है।

अब्रक़ल्या abra-qalyá-यु० पालक। (Spinacea oleracea.)

अब्रकाकिया abra-kákiyá-यु० मकड़ी का जाला। (A web, spider's web.)

अब्रकुह्न abra-kuhna-फ़ा० अस्फ़ञ, मुआबादल। (sponge.)

अब्रगी abrugi } -सिरांपिञ्चन० कान-
अब्राँङ्ग abrong } फात-हिं०। Cardiospermum Halicacabum, *Linn.* -ले०। फा० इं० १ भा०।

अब्रद abrad-अ० अत्यन्त शीतल। (ए० व०) अबारिद (ब० व०)।

अब्रनी abraní-रू० (१) लोफ़। (२) मुरतकन्द-हिं०। (एक वनस्पति है)।

अब्रब āabrab-अ० सुमाक़ (sumac.)।

अब्रबियह् āabra-biyah-अ० सुमाक़ियह्।

अब्रब्यून abrabyún-यु० फ़र्ब्यून-अ०। सेहुँड़, थूहर। (Euphorbium.)

अब्रमुर्दह् abra-murdah-फ़ा० अस्फ़ञ्ज, मुआबादल। (sponge.)

अब्रश abrash-अ० वह मनुष्य जिसकी त्वचा पर श्वेत चित्तियाँ पड़ी हों। स्पॉटेड (Spotted.) -इं०।

अब्रस् abraṣ–अ० श्वित्र रोगी, श्वेत कुष्ठ का रोगी, चितकबरा। ल्युकोडर्मिक (Leucodermic.)–इं०।

अब्रस abras–यु० गुले सौसन। See–sousan.

अ(प)ब्रस प्रीकेटोरिअस abrus precatorius–लै० गुञ्जा–सं०। घुँघची, रत्ती, गुञ्जा –हिं०। Indian liquorice–इं०। इं० मे० मे०। फा० इं० १ भा०।

अब्रह्मचर्य्यकम् abrahma-charyyakam –सं० क्ली० मैथुन। क्वाइशन (Coition), कप्युलेशन (copulation)–इं०। त्रिक०।

अब्राज़ abráza–शामी० सूरिंजान की घास। पश्चिमी भाषा में सदाबहार को कहते हैं।

अब्रिक एसिड abric-acid–इं० गुञ्जाम्ल। डाक्टर वार्डेन (Dr. warden) महोदय ने गुञ्जावीज द्वारा इसे पृथक् किया था। उनके मतानुसार इस तेजाब का फ़ॉर्म्युला (रासायनिकि सूत्र) इस प्रकार है, यथा—(क^२१ उद^२४ नत्र^१ ऊ^४)। इसमें कोई प्रभाव नहीं (inert) होता है। फॉ० इं० १ भा०।

अब्रिन abrin–इं० एक प्रोटीड अवयव जो गुञ्जा बीज में वर्तमान रहता है। और गुञ्जा के समस्त इन्द्रियव्यापारिक गुणधर्म रखता है। फॉ० इं० १ भा०। यह गुञ्जा का मुख्य प्रभावात्मक अंश है।

अब्रिय्यह् abriyyah–अ० हब्रिय्यह् क़श्रुरास, हज़ाज़। सबूसहे सर–फ़ा०। सर की वफ़ाअ्, सर की भूसी–उ०।

सीबोरिआ (Seborrhæa,), स्कर्फ़ (Scarf), डैण्ड्रफ़ (Dandruff), फ़र्फ़र (Furfur)–इं०।

अब्री āabrí–अ० बेर का वृक्ष जो नहरों के किनारे उगता है।

अब्रीमून abrímúna–रू० ईरसा, पुष्करमूल। (Orris root.)

अब्रुज abrúja–अ० रँग।

अब्रुता abrútá–सिं० दर्मनह् (जौहरी जवाइन), शीह्, अफ़्सन्तीनुल बह्र। (Artemisia maritima, *Linn.*)

अब्रुद abrúda–फ़ा० सुम्बुल। (Hyacinthus Orientalis.)

अब्रुन abrúa–यु० सदाबहार (हयुल् आलम)।

अब्रुनास āabrúnása–यु० अब्रूस, बरवाक़ो। (An unimportant plant).

अब्रुनी āabrúní–खुन्सा। (Asphodelus fistulosus, *Linn.*)

अब्रुयून abrúyúna–यु० छड़ीला (उश्नह्)। (Nardostachys jatamansi).

अब्रुस āabrúsa–यु० बरवाक़ी। (An unimportant plant.)

अब्रे अंबर abre-ambara–हिं० संज्ञा पुं० दे० अम्बर।

अब्रेज़ abreza–अ० शुद्ध स्वर्ण, ख़ालिस सोना। (Pure gold.)

अब्रेशम abresham–फ़ा०, अ० आबरेशम, क़ज़, अबरेसम। कोषकारजम्, कौषा (रेशम); कोषकार, कोशकृत् (रेशमकीट); कौशे (षे)य (रेशमी अर्थात् कोषोत्थवस्त्र)–सं०। रेशम–हिं०। पट–बं०। बॉम्बिस मोराइ (Bombys Mori)–लै०। सिल्क पॉड (Silk-pod), रॉ सिल्क कोकून (Raw silk cocoon), सिल्क वर्म-मॉथ Silk-worm moth, सिल्क Silk–इं०। सेरकोस serikos–ज़र०। रेशम की कीडी–द०। रेशम ना-पोटन–बम्ब०, गु०। पटलू-पुची–ता०मह०। पुट्टुपुरुग, नर-पुट्टिओ–ते०। रेशमी-हुल-कना०। रेशी-चि कीड-मह०, कों०।

अबरेशम वस्तुतः एक कीड़े का घर है, जिसको वह अपने मुख के लार द्वारा अपने ऊपर बनाता है। यह कीट शहतूत के वृक्षों पर उनके पत्रों को खाकर अपना जीवन निर्वाह करता है। वह कीटजो बदरी (बेर)वृक्ष पर लगाया जाता है उसको लैटिन में बॉम्बिस माईलेटा (Bombys myletta) कहते हैं। रेशम का कोषा (रेशम-

कीट गृह) वा अण्डाकार कोष एक प्रकार का आवरण है जिसका निर्माण कीट आकार परिवर्तन काल में करते हैं।

लक्षण—यह कोआ की शकल में एवं श्वेताभायुक्त पीतवर्ण का और स्वाद रहित होता है। इसके भीतर रेशम का मृत कीट होता है। इसलिए इसको क़ैंची (कर्त्तरी) से काट कर और इसके भीतर से मरे हुए कीड़े को निकाल कर औषध कार्य में वर्तते हैं।

प्रकृति-- प्रथम कक्षा में उष्ण एवं रूक्ष होता है। किसी किसी ने इसको शीतोष्ण (सम प्रकृति) लिखा है। हानिकर्त्ता-इसके बने वस्त्र का प्रयोग करने से त्वचा पतली हो जाती है। दर्पघ्न-इसके वस्त्र में रुई के सूत का मिश्रण। प्रतिनिधि-जला कर धोई हुई मुक्तिका (मोती)। मात्रा-३॥ मा० से १०॥ मा० तक। क्वाथ एवं शीतकषाय साधारणतः ७ मा० व्यवहार किया जाता है।

गुण, कर्म, प्रयोग—अपनी ख़ासियत (सहकारिणी शक्ति) से यह आह्लादजनक है। इसकी तारल्यकारिता अपनी उष्मा के द्वारा प्रसन्नता उत्पन्न करने में ख़ासियत की सहायता करती है। फलतः रूह में प्रसार का उदय होता है। और यह अपनी उष्णता एवं रूक्षता के कारण उसकी रतूबत (संक्लेद)को अभिशोषित कर लेता है जिससे रूहमें कठोरता एवं शक्ति आ जाती है। इससे रूह में स्वच्छता एवं प्रकाश का उदय होना आवश्यक है। यह बात विशेषकर अबरेशम ख़ाम (कच्चे रेशम) में होती है; क्योंकि पकाते समय इसकी मनोल्लासकारिणी शक्ति बहुधा जल मे स्थानांतरित हो जाती है। इसलिये खरल की हुई किसी किसी औषध को उक्त जल में भिगोकर तीक्ष्ण धूप में रक्खा जाता है जिससे उक्त औषध सम्पूर्ण जल को अभिशोषित करके उससे मनोल्लासकारिणी शक्ति ग्रहण कर लेती है। तदनंतर शुष्क कर प्रयोग में लाई जाती है।

इसका वस्त्र धारण करने से परंपरागत जूओं की उत्पत्ति रुक जाती है। क्योंकि अबरेशम अंडों को ख़राब कर देता है जिससे जूएँ नहीं पैदा होने पातीं। चूँकि यह सरदी तथा गरमी में मुअ्तदिल (समप्रकृति) है इसलिए इसको धारण करने से शरीर उष्ण नहीं होता और इसी कारण अंडे सेए नहीं जा सकते। इसके विपरीत रूई के वस्त्र से शरीर गरम हो जाता है (और अंडे उस गरमी में भली प्रकार सेए जाते हैं)। (त० नफ़ा)

जलाया हुआ अबरेशम प्रायः चक्षु रोगों यथा अश्रुस्राव एवं नेत्रकंडू में उपयोगी है। अबरेशम मानस, प्राकृतिक एवं प्राणात्मा (रूह नफ्सानी, तबीई व हैवानी)को प्रसन्नकर्त्ता, स्मरणशक्ति तथा मेधा को बलवानकर्त्ता है। चक्षु रोगों, मूर्च्छा, काठिन्य अर्थात् मेदा की सख़्ती और फुफ्फुस को बल प्रदान करता है, चेहरे के वर्ण को निखारता और रोधों का उद्घाटन करता है। प्रकृति को मृदु करता, रतूबतों अर्थात् द्रवों को अभिशोषण करता तथा (क्लेदाभिशोषक) उत्तमांगों को बलप्रदान करता है। यह तारल्यताजनक वा द्रावक (मुलत्तिफ़) एवं अभिशोषणकर्त्ता (मुनश्शिफ़) है। इसका वस्त्र धारण करने से शरीर स्थूल होता और जूएँ नहीं पड़तीं। किन्तु, यह त्वचाको कोमल करता है। म० अ०। यह हृदय को बल प्रदान करताएवं भ्रम तथा मूर्च्छा रोग में विशेषकर लाभप्रद है।

अब्रेशम जलाने की विधि—रेशम को बारीक कतर कर मिट्टी के बरतन में आग पर रक्खें और हिलाते रहें। जब भुनकर पिसने योग्य हो जाए तब उतार लें। देखो-तह्मीस् अब्रेशम।

यह शोणितस्थापक, बल्य तथा संकोचक रूप से अतिरज (रक्तप्रदर), श्वेत प्रदर एवं पुरातन अतिसार में स्राव को रोकने के लिए व्यवहार किया जाता है। इ० मे० मे०। इ० ड्र० इं०। यह अन्य संकोचक औषधों के साथ सामान्यतः प्रयोग किया जाता है। और साधारणतः सरदी एवं चक्षु रोग में प्रयुक्त होने वाले मोदकों में पड़ता है। इ० मे० मे०।

नोट—एलोपैथिक चिकित्सा में इसका औषधीय उपयोग नहीं होता है।

औषध-निर्माण—ख़मीरा, चूर्ण, शर्बत, मद्य तथा हृद्य (मुफ़र्रिहात) अर्थात् मनोल्लासकारी औषध प्रभृति। परन्तु अधिकतर निम्नलिखित ख़मीरे और शर्बत आदि में प्रयुक्त होता है।

(१) ख़मीरा अब्रेशम सादा-योग एवं निर्माण-विधि—कतरा हुआ अबरेशम २ तो०, ऊद ग़र्की ४ मा०, बालछड़, पोस्त तुरंज, मस्तगी लौंग, एला, तेजपत्र प्रत्येक ५ मा०, श्वेतचन्दन ६ मा०, अबरेशम सहित सम्पूर्ण औषध को कपड़ा में बाँध कर अर्क़ गावज़ुबान, गुलाब, आब सेब शीरीं, आब बिही शिरीं, आब अनार शीरीं प्रत्येक १४ तो० तथा वर्षा जल २ सेर में क्वाथ करें। जब पानी जल जाए तब एक पाव मधु और ३ पाव श्वेत शर्करा मिलाकर ख़मीरा की चाश्नी प्रस्तुत कर लें।

मात्रा व सेवन-विधि—इसमें से ५ मा०, अर्क़ गावज़ुबान १२ तो० वा अन्य उचित अनुपान के साथ सेवन करें। गुण—हृदय तथा मस्तिष्क को बलवान बनाता और दृष्टि शक्ति के लिए उपयोगी है। इसके प्रयोग से मूर्च्छा, दिल की धड़कन और भ्रम आदि दूर होते हैं।

(२) ख़मीरा अबरेशम हकीम इर्शादवाला।
(३) ख़मीरा अबरेशम शीरा उन्नाबवाला।
(४) ख़मीरा अबरेशम ऊद मस्तगीवाला।

इनके तथा अन्य ख़मीराओं के लिए देखो—ख़मीरा।

(५) शर्बत अब्रेशम सादा-योग एवं निर्माण-विधि—कतरा हुआ अबरेशम आध सेर, श्वेतचन्दन, बालछड़ प्रत्येक ६ मा०, मस्तगी, लौंग, छोटी इलायची, तेजपत्र, ऊद हिन्दी प्रत्येक ६॥ मा०, अर्क़ गावज़ुबान, अर्क़ बेदमुश्क, अर्क़ गुलाब प्रत्येक १-१ सेर, आब सेब, आब बिही, आब अनार, आब अमरूद, सफेद बूरा, मधु १-१ सेर। यथाविधि शर्बत प्रस्तुत करें।

मात्रा व सेवन-विधि—इसमें से २ तो० शर्बत अर्क़ गावज़ुबान ७ तो० और अर्क़ बेदमुश्क ५ तो० के साथ सेवन करें। गुण—मस्तिष्क एवं हृदय को बलप्रद है तथा मूर्च्छा और भ्रम को दूर करता है।

अब्रैस्टोल abrastol-इं० (Asaprol) यह धूसर वर्ण का एक चूर्ण है जो जल तथा मद्यसार (alcohol) में सरलतापूर्वक विलीन हो जाता है। विस्तार के लिए देखो नैफ़थाल (Naphthol.)।

अब्रोङ्ग abrong--यू० अब्रगी। किसी किसी के मतानुसार कर्णस्फोटा (सं०), कनफोड़ी (हिं०) और डाइमॉक महोदय लेखक "फार्माकोग्रैफिया इण्डिका" के मतानुसार "चित्र-तण्डुल"--सं० (spotted grain) अथवा लेटिन एम्बेलिया रीबीस (Embelia Ribes) का बीज है। फा० इं० १ भा०।

अब्रोमा ऑगस्टा abroma augusta-ले० ओलक तम्बोल-बम्ब०। उलटकम्बल, ओलट कम्बल-बं०। पीवरी, द्रुमोत्पल-सं०। डेविल्स काटन Devil's cotton-इं०। फा० इं० १ भा०। इं० मे० मे०।

अब्रोमा फ़ैस्ट्युओज़म् abroma Fastuosum-ले० उलटकम्बल-बं०। Devil's cotton. । इं० मे० मे०।

अब्ल abla-फा० कापाल अग्रा, इलायची। (Cardamum.) इं० है० गा०।

अब्ल āabl-अ० (१) मांसल भुज, स्थूल भुजा। (२) वह मनुष्य जिसके डण्ड पुष्ट हों।

अब्लम् ablam-हिं० सं० क्ली० मक्खन सेम। (Dolichos Gladiatus.)-ले०। इं० है० गा०।

अब्लह् aalah-अ० मूर्ख, सीधा आदमी, भोला-भाला मनुष्य। ईडिअट (Idiot)-इं०।

अब्ला āablá-पथरी, श्वेत अश्मकण, सुफ़ेद संगरेज़े।

अब्शउल्अम्राज़ abshaāul-amráz-अ० अत्यन्त बुरा एवं कठिन रोग। मैलिग्नैण्ट डिज़ीज़ (Malignant Disease.) -इं०।

अब्स aabs-अ० (१) कुचरित्र, दुराचरण, कुव्यवहार। (२) शाबानक।

अब्सक़यून absaqyún-रू० अफ़्सन्तीन। (Absinthium.)

अब्सार abṣár-अ० (ब० व०), बस्र (ए० व०)। दृष्टि, निगाह, नज़र। साइट (Sight), विज़न (Vision)-इं०।

अब्सैसरूट abscess-root-इं० पॉलिमोनियम रेप्टेंस (Polemonium Reptans.)-लें०।

अब्हर abhar-अ० अवरती। महाधमनी। एवोर्टा (Aorta)-इं०।

अब्हाम abhám-अ० अंगुष्ठ, अँगूठा। इसका बहुवचन "अबाहम" है। थम (Thumb.)-इं०।

अभक्त abhakta-हिं० वि० [सं०] (१) भक्ति रहित। शठ। (२) अरुचि (Want of desrie.)

अभक्तच्छन्दः abhakta-chchhandah-सं० पुं० अरोचक भेद। जिसमें अन्न में रुचि न हो। See--Arochaka.

अभग्न abhagna-हिं० वि० [सं०] अखंड। जो खंडित न हो। समूचा।

अभञ्जन abhanjana-हिं० वि० [सं०] जिसका भंजन न हो सके। अटूट। अखंड।

संज्ञा पुं० द्रव वा तरल पदार्थ जिनके टुकड़े नहीं हो सकते, जैसे जल, तैल आदि।

अभयम् abhayam-सं० क्लो० } उशीर,
अभय abhaya-हिं० संज्ञा पुं० } खस, वीरणमूल (Andropogon muricatus.) रा० नि० व० १२, मद० व० ३, अम, भैष० कुष्ठचि० कन्दर्पसार तैल।

अभयदा abhayadá-सं० स्त्री० (Phyllanthus Niruri, *Linn.*) भूम्यामलकी भुँई आमला। भूम आंवली-मं०। वैं० निघ०।

अभयनृसिंह रसः abhayanrisinh-rasah-सं० पुं० यह रस अतिसार तथा ग्रहणीमें हित है। योग-(१)हिंगुल, त्रिकटु विष, जीरा, सुहागा, पारद, गन्धक, अभ्रक भस्म, शंख भस्म समभाग और अहिफेन सर्वतुल्य मिलाकर नीबू के रस से मर्द्दन करें। मात्रा—१ रत्ती। अनुपान—जीरा का चूर्ण और शहद। र० यो० सा०। (२) गंधक और अभ्रक इनको समभाग लेकर इन सब के बराबर अफीम शुद्ध लेवें। और इन सबको काग़ज़ी नीबू के रस में घोट कर गुञ्जा प्रमाण गोली बनाएँ। मात्रा—१ गोली। अनुपान—जीरा का चूर्ण और मधु।

(३) शिङ्गरफ, मीठातेलिया, सोंठ, मिर्च, पीपर, जीरा, भूना सोहागा, अभ्रक भस्म इन्हें समान भाग लें, शुद्ध पारा १ भाग, सर्व तुल्य ब्राह्मी (मण्डूकपर्णी) लें, पुनः चूर्ण कर नीबू के रस में खरल कर १ या २ दो रत्ती प्रमाण गोलियाँ बनाएं, जीरा शहद के साथ देने से सन्निपातातिसार, ज्वरातिसार, बिना ज्वर का अतिसार तथा सर्व प्रकार के अतिसार, संग्रहणी, का नाश होता है। भैष० र० अतिसार० चि०

अभया abhayá-सं० (हिं० संज्ञा) स्त्री० (१) (Terminalia chebula, *Retz*) हरीतकीविशेष। एक प्रकारकी हरीतकी वा हड़ जिसमें पाँच रेखाएँ होती हैं। हरड़। प० मु०, रा० नि० व० ११; भा० पू० १ भा०; वा० सू० ३५ अ० वचादि व०; च० द० कफ ज्व० चि० आमलक्यादि। (२) श्वेत निर्गुण्डी। (३) मञ्जिष्ठा। (४) जयन्ती। (५) जया, भंग। (६) मृणाल। (७) काञ्जिक। (८) काञ्चन वृक्ष द्वय। रा० नि० व० १७।

अभयावटकः abhayávaṭakah-सं० पुं० हड़ ४ तो०, हड़ की छाल ४ तोला आमला ४ तोला, बहेडा ४ तो०, त्रिकुटा ४ तो०, अजमोद, चव्य, चित्रक, वायबिडंग, अम्लवेतस, वच, सेंधालवण प्रत्येक दो दो तो०, तेजपात इलायची १-१ तो०, दालचीनी १ तो० ले महीन चूर्ण बना इसमें १ तो० पुराना गुड़ मिला एक तो० की गोलियाँ बनाएँ, गुण-इसके सेवन से प्लीहोदर, अर्श, गुल्म, उदररोग, पाण्डु, कामला,

मन्दाग्नि इन सबका नाश होता है। बङ्ग० से० सं० प्लीहोदर चि०।

अभयादि गुग्गुलः abhayádiguggulah -सं० पुं० हड़, आमला, मुनक्का, शतावर, ब्रह्मदण्डी, अनन्तमूल दोनों, मजीठ, हल्दी, दारु हल्दी, वच इन्हें समान भाग ले, आठ मुट्ठी गुगुल लेकर एक वस्त्र में बाँध २४ शेर पानी में पकाएँ, जब चौथाई शेष रहे उतारें, पुनः उस गुगुल को काढ़ा के जल में पकाएँ, जब सिद्ध हो ले तब उसमें मुस्ली, मुलहठी, मुरामांसी, दालचीनी, इलायची, पत्रज, केशर, वायबिडङ्ग, लवंग, जवासा, निसोथ, त्रायमाण, सोंठ, मिर्च, पीपर, इन सब का बारीक चूर्ण चार २ तोले उक्त गुगुल में छोड़कर अच्छी तरह मेलन कर रक्खें। इसे शहद के साथ सेवन करने से स्नायविक तथा मस्तिष्क सम्बन्धी प्रत्येक बीमारियाँ दूर होती हैं। भैष० र० परिशिष्टम्।

अभयादिगुटी abhayádigutá-सं० स्त्री० आम वात में प्रयुक्त होने वाला योग। वृ० नि० र० भा० ५ आमवा० चि०।

अभयादि चतुस्सम वटी abhayādi-chatussama-vatí-सं० स्त्री० हड़, सोंठ, मोंथा, गुड़, प्रत्येक समान भाग ले गुटिका बनाएँ। यह त्रिदोष, आमातिसार, अफरा, विवन्ध, हैजा, कामला, और अरुचि को नष्ट करती तथा अग्नि को शीघ्र दीप्त करती है। वृ० यो० त०।

अभयादिचूर्ण abhayádichúrṇa सं० पुं० हड़, अतीस, हींग, सोंचल, त्रिकुटा, इनको समान भाग ले चूर्ण बनाएँ। गुण—कफज अतिसार नाशक है। वृ० नि० र०।

अभयादि क्वाथः abhayádi kváthah-सं० पुं० हड़, आमला, चित्रक और पीपल इनका क्वाथ पाचक भेदक और कफ ज्वर नाशक है। वृ० नि० र०।

अभयादिमोदकः abhayádi-modakah -सं० पुं० हड़, पीपल, पीपलामूल, मिर्च, सोंठ, तज, पत्रज, मोथा, विडंग, आमला, प्रत्येक १-१ कर्ष लें; दन्ती ३ कर्ष, मिश्री ६ कर्ष, निशोथ २ पल, इनका चूर्ण करके शहद से मोदक प्रस्तुत करें। मात्रा—१० मा०। गुण—शीतल जल से खाने से उत्तम विरेचन होता है और इसके प्रभाव से पांडु, विष, दुर्बलता, जंघा के रोग, शिरोरोग, मूत्रकृच्छ्र, अर्श, भगंदर, पथरी प्रमेह, कुष्ठ, दाह, शोथ और उदर रोग नष्ट होते हैं। यो० चि०।

यो० त० विरेचन० अ०। सु० सं० चि० अ०। वङ्गसेन सं०। शा० ध० सं० उ० खं० अ० ४

अभयादियोग abhayádi-yogah सं० पुं० गुल्म रोग में प्रयुक्त योग। वृ० नि० र०। भा० गु० चि०।

अभयारिष्टः abhayárishṭah-सं० पुं० (१) हड़ १ तुला (५ सेर) मुनक्का (दाख) आधा तुला (२॥ सेर), वायविडंग, महुआ पुष्प, चालीस चालीस तोले लें, ४ द्रोण (६४ सेर) जल में पकाएँ। जब एक द्रोण शेष रहे तो पवित्र रस को ठंडा कर इसमें गुड़ १ तुला (५ सेर) छोड़ें। पुनः गोखरू, निशोथ, धनियाँ, धव पुष्प, इन्द्रायण, चव्य, सोंफ, सोंठ, जमालगोटा (दन्ती), मोचरस, प्रत्येक आठ आठ तोला ले एक बड़े मिट्टी के पात्र में चूर्ण कर छोड़ मुख बंद कर एक मास पर्यन्त रख छोड़ें जब रस शुद्ध हो छान कर रक्खें। इसे बल तथा अग्नि का विचार करके सेवन करे तो बवासीर, आठ प्रकार के उदर रोग, मूत्र तथा मल की रुकावट, इन्हें दूर कर अग्नि की वृद्धि करे। (भैष० र० अर्शः चि०)

(२) हड़ ३२ तो०, आमला ६४ तो०, कैथ की छाल ४० तो० गंडूभाकी जड़ (इंद्रायण मूल) २० तो०, वायविडंग, पीपल, लोध, मिर्च, एलुवा इन्हें आठ आठ तो० लेकर ४०१६ तो० जल में पकाएँ, जब १०२४ तो० जल शेष रहे तो उसे वस्त्र से छान लें और उसमें २०० तो० गुड़ डाल कर १५ दिन तक घृत के पात्र में रक्खें। मात्रा—४ तो०। प्रयोग-इसे उचित मात्रा में सेवन करने से गुदा के मस्से नष्ट हो जाते हैं। और यह संग्रहणी, पांडु, तिल्ली, गुल्म, उदर रोग, कुष्ठ, सूजन, अरुचि को दूर करता है तथा बल वर्ण

और अग्निकी वृद्धि करता है। इससे कामला, सुफेद कुष्ठ, कृमी, ग्रंथि, अर्बुद, क्षुद्ररोग, ज्वर, राजयक्ष्मा में भी दें। बंगसेन सं० अर्श० चि०। वा० अर्श० चि०।

नोट—वाग्भट्ट जी ने इसमें १ प्रस्थ आमले का रस गुड़ डालने के समय छोड़ने को कहा है।

अभयालवणम् abhayá-lavaṇam-सं० क्ली० पारिभद्र (नीम), पलास, सफेद मदार, सेहुड़, चिर्चिटा, चित्रक दोनों, वरना (वरुण), अरनी, लाल मदार, गोखरू, छोटी कटेली, बड़ी कटेली, करंज, श्वेत अनन्तमूल, कड़ुई तरोई, पुनर्नवा, इनका जड़, पत्ते, डालियाँ, समेत लेकर ऊखल में कूट के पुनः तिल की नाल लेकर अग्नि में भस्म करें, पुनः नये पात्र में १०२४ तोले पानी डाल उसमें भस्म डालकर पकाएँ जब चौथाई शेष रहे तब खार के विधि से खार तैयार करें। यही क्षार ६४ तो० नमक ६४ तो० हड़ ३२ तो० इनके बराबर पानी और गोमुत्र मिला के मंद मंद अग्निसे पकाएँ, जब कुछ गाढ़ा हो ले तब जीरा, सोंठ, मिर्च, पीपल, हींग, अजवाइन, पुष्कर मूल, कचूर, इन्हें दो दो तोले ले चूर्ण कर उक्त घनीभूत औषध में मिलाएँ, तो यह अभया लवण तैयार हो अग्नि बल को बिचार सेवन करने से अनेक प्रकार के उदर (कोष्ठरोग), यकृत, प्लीहा, उदर रोग, अफरा, गुल्म, अष्ठीला, मन्दाग्नि, शिरोरोग, हृद्रोग, शर्करा, पथरी रोग, इन्हें उचित अनुपान से दूर करता है। भैष० र० प्लीह० यकृत० चिकि० बं० से० सं०।

अभयादिलेहः abhayádilehah-सं० पुं०, हड़, पीपल, दाख, मिश्री, धमासा, इनका मधु के साथ अवलेह बना चाटने से मूर्च्छा, कफ, अम्ल-पित्त, तथा कण्ठ और हृदयकी दाह नष्ट होती है। यो० र० आम्लपि० चि०।

अभयावटी abhayá-vaṭí--सं० स्त्री० हड़, मिर्च, पीपल, भूना सुहागा इन्हें समान भाग लें, इन सब के चूर्ण के बराबर धतूरे का फल लें, और सेहुँड के दूध के साथ खरल कर पकी हुई मटर प्रमाण गोलियां बनाएँ, पश्चात् २ गोली और एक हड़ मिलाके चावलों के पानी से महीन पीस कल्क बना खाएँ, तो उत्तम जुलाब हो, इसके ऊपर गर्म जल पीने से तब तक दस्त आते रहेंगे जब तक कि शीतल जल न पिया जाए। इससे जीर्ण ज्वर, तिल्ली, आठ प्रकार के उदररोग, बातोदर और हर प्रकार के अजीर्ण, कामला, पाण्डुरोग, कुम्भ कामला इन रोगों को नष्ट करती है। भैष० र० उदर० रो० चि०।

अभयाविरेचन abhayá-virechana--सं० पुं० हड़, पीपल, समान भाग ले चूर्ण कर गरम पानी के साथ खाने से अल्प २ बार २ होने वाला प्रबल और शूल युक्त अतिसार नष्ट होता है। सु० सं० उ० अ० ४०।

अभयाष्टकम् abhayáshṭakam-सं० क्ली० अष्ट हरीतकी भक्षण। पहिले दो खाएँ फिर दो और खाएँ। इसी प्रकार दो दो हरड़ करके ८ हरड़ खाकर सो रहें। इसी प्रकार ३ सप्ताह रात्रि में अभयाष्टक का प्रयोग करनेसे पुनः यौवन की प्राप्ति होती है।

अभरख abharakha-म०, गु० अभ्रक, अबरख। (Mica.)।

अभल abhal-अ० हूवेर, हाऊबेर। हपुशा-सं० (Juniperus.)।

अभक्ष abhaksha-हिं० वि० देखो—अभक्ष्य।

अभक्ष्य abhakshya हिं० वि० [सं०] अखाद्य। अभोज्य। जो खाने के योग्य न हो।

अभावः abhávah-सं० (हिं०) पुं० (१) असत्व अनस्तित्व, असत्ता, अविद्यमानता (Non-existence, non-entity.)। (२) मरण, नाश, ध्वंस (Annihilation, death)। मे० वत्रिकं। एक उपसर्ग जो शब्दों में लगकर उनमें इन अर्थों की विशेषता करता है।

अभि abhi-हिं० [सं०] (उपसर्ग) चैाफेरा, आगे, चिह्न, घर्षण, अभिलाष "अनु" के विपरीत- इसका उपयोग होता है। Before,

against, with respect to.

(१) सामने, उ०–अभ्युत्थान । अभ्यागत ।

(२) बुरा, उ०–अभियुक्त ।

(३) इच्छा उ०–अभिलाषा ।

(४) समीप, उ०–अभिसारिका ।

(५) बारंबार, अच्छी तरह, उ०–अभ्यास ।

(६) दूर, उ०–अभिहरण ।

(७) ऊपर, उ०–अभ्युदय ।

अभिक abhika–हिं० वि० [सं०] कामुक । कामी । विषयी ।

अभिगमन abhi-gamana–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] सहवास, संभोग ।

अभिगामी abhi-gámí–हिं० वि० [सं०] [स्त्री० अभिगामिनी] सहवास वा संभोग करने वाला उ०–ऋतुकालाभिगामी ।

अभिघातः abhi-ghátah–सं० पुं० }
अभिघात abhi-gháta–हिं० संज्ञा पुं० }

(१) (Wound or blow) अभिघात हिं० पुं० । आघात, चोट पहुँचना, ताड़न, दाँत से काटना । प्रहार, मार । शस्त्र, मुक्का, (घूँसा) और लाठी आदि की चोट का नाम अभिघात है । भा० म० २ आगन्तुक ज्वर लक्षण । "अभिघाताभिषङ्गाभ्याम ।" (२) पुरुष की बाईं ओर और स्त्री की दाहिनी ओर का मसा ।

अभिघात ज्वरः abhi-gháta-jvarah–सं० पुं० (Acquired or Accidental fever.) आघात जन्य आगन्तुक ज्वर अर्थात् तलवार, छुरा, मुक्का, लाठी औ शस्त्र आदि के लगने से उत्पन्न ज्वर । "अभिघाताभिचाराभ्यां–आगन्तुर्जायते ।" मा० नि० (आग०) ज्वर ।

आघात से प्रकुपित हुई वायु रक्त को दूषित कर व्यथा, शोफ वैवर्ण्य और वेदना सहित ज्वर को करती है । च० ।

उक्त ज्वरों में दोष ज्वर के उत्पादक नहीं होते, अपितु वे पश्चात् को उनके परिणाम स्वरूप होते हैं । सारांश यह कि सर्व प्रथम आघात के कारण ज्वर उत्पन्न हो जाता है । फिर उस से दोषों का प्रकोप होता है ।

अभिघार abhi-ghára–हिं० संज्ञा पुं० }
अभिघारः abhi-gharah–सं० पुं० }

(१) (Ghee, clarified botter.) घृत, घी । तूप-म० । रा० नि० व० १५ । (२) घी से छौंकना व बघारना ।

(३) सींचना, छिड़कना ।

अभिचारः abhi-chárah–सं० पुं० }
अभिचार abhi-chára–हिं० संज्ञा पुं० }

(An incantation to destroy.) हिंसाकर्म, मारणमन्त्र-विशेष । मन्त्र आदि द्वारा मारण आदि प्रयोग करना । किसी शत्रु की की हुई कृत्य आदि का उत्पन्न करना, किसी प्रकार का अपघात, जादू से मूँठ चलाने का नाम अभिचार है । भा० म० २ आगन्तुक ज्वर लक्षण मा० नि० ज्व० । मंत्र आदि द्वारा उत्पन्न पीड़ा र० मा० । यन्त्र मन्त्र आदि अवपीड़न, "अभिचाराभिशापोत्थैः ।" रत्ना० ।

अभिचार abhichára–सं० पुं० तंत्र के प्रयोग जो छः प्रकार के होते हैं—मारण, मोहन, स्तंभन विद्वेषण, उच्चाटन और वशीकरण ।

अभिचारक abhcháraka–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] यंत्र मंत्र द्वारा मारण, उच्चाटन आदि कर्म वि० यंत्र मंत्र द्वारा मारण उच्चाटन आदि करने वाला ।

अभिचार ज्वरः abhi-chára jvarah–सं० पुं० (Fever producedy incanta tions) विपरीत मंत्रके जपने से, लोहे के श्रुवा से मारणार्थ सर्षपादिक होम वा कृत्य के प्रयोग करने से जो ज्वर प्रकट होता है, उसे "अभिचार ज्वर" कहते हैं ।

अभिचारी abhi-chári–हिं० वि० [सं० अभिचारिन] [स्त्री० अभिचारिणी] यंत्र मंत्र आदि का प्रयोग करने वाला ।

लक्षण—इससे तथा अभिशाप से उत्पन्न ज्वर में मोह और प्यास होती है । मा० नि० ज्व० ।

अभितापः abhi-tápah–सं० पुं० (१) सर्वाङ्ग ताप (General heat) । (२) अश्वज्वर (Horse fever) । गज० वै० ।

अभिद्रव जन abhi-drava-jana–हिं० पुं० उद्‌जन। हाइड्रोजन (Hyrodgen)-इं०।

अभिद्रव हरिक abhi-drava-harika-हिं० पुं० हाइड्रो-क्लोरिकाअम्ल, लवणाम्ल, उदहरिकाम्ल, नमक का तेज़ाब। Hyorochloric Acid.

अभिधान abhidhána--हिं० संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अभिधायक, अभिधेय] (१) नाम, संज्ञा। (२) शब्द कोष शब्दार्थ ग्रन्थ। (A name, a vocabulary, a dictionary.)।

अभिनव abhi-nava--हिं० वि० [सं०] नवीन नया, टटका, नव्य, नूतन। रीसेण्ट(recent) न्यु (new) (२) ताज़ा। (Fresh)।

अभिनव कामदेवो रसः abhinva-káma-devo-rasah-सं० पुं० पारा, गन्धक १ तो०, समानभागमें लेकर रक्त कमल पुष्प रसमें तीन दिन तक भावित करें। फिर ४ मा० गन्धक मिलाकर पूर्ववत् उक्त कमल और शंखिनी के रस से पृथक् पृथक् भावना देवें, फिर शुष्क कर आतशी शीशी में भरकर बालुका यंत्र द्वारा ३ प्रहर पकावें मात्रा—१ रत्ती। यह पित्त जनक प्रत्येक रोगों को दूर करता है। र० यो० सा०।

अभिनवकामेश्वरः abhi-nava-kamehva-rah--सं० पुं० वाजीकरण औषध विशेष। देखो—अभिनव कामदेवो रसः।

अभिनि abhini-ते० अफीम (Opium.)। स० फा० इं०। इं० मे० मे०।

अभिनिवेश abhinivesh–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अभिनिवेशित, अभिनिविष्ट] (१) प्रवेश। (२) मनोयोग। लीनता। (३) प्रणिधान। मृत्यु शंका। गति। पैठ।

अभिनी abhini–द० अफीम (Opium.)

अभिन्नाशयः abhinnáshayah--सं० पुं० शरीर के भीतरी कोठों का शुद्ध रूप अर्थात् जो विदीर्ण न हुए हों। वा० उत्तर० अ० २६।

अभिन्यासः,-कः abhinyásah,-kah–सं० पुं० सन्निपात ज्वर का एक भेद जिसमें वातादि तीनों दोष कुपित होकर छाती में रस के बहने वाली नाड़ियों के छिद्रों में गमन करते हुए तथा अपक्व रस से मिले हुए और अत्यन्त बढ़े हुए आपस में विशेष गुथे हुए चक्षु, कर्ण, नासा, जिह्वा, त्वचा तथा मन में जाकर अति भयङ्कर तथा कठिन अभिन्यास ज्वर को उत्पन्न करते हैं। उक्त ज्वर में रोगी के कानों से सुनना, नेत्रों से दीखना बन्द हो जाता है और किसी प्रकार की चेष्टा (कर चरण प्रभृति चालन), रूप का दीखना, दृष्टि ज्ञान, गंध ज्ञान, शब्द ज्ञान मालूम नहीं होता तथा रोगी बार बार शिर को इधर उधर पटकता है और अन्न की इच्छा नहीं करता। अप्रगट शब्द का बोलना, देह में सूई बिधने की सी पीड़ा होना और बार बार करवट लेना, बहुत कम बोलना, ये लक्षण होते हैं। यह अभिन्यास ज्वर विशेष कर असाध्य होता है और कोई एक आध रोगी यथावत चिकित्सा होने पर बच भी जाता है उसको अभिन्यास सन्निपात ज्वर कहते हैं। मा० नि० ज्व०।

जिस सन्निपात ज्वर में सब दोष अत्यन्त बलवान और तीव्र हों, अत्यन्त बेहोशी हो, निश्चेष्टता हो, अत्यन्त विकलता तथा श्वास हो, अधिकतर मूकता (गूँगापन) हो, दाह हो, मुख चिकना हो, अग्नि मन्द और बल की हानि हो उसे वैद्यों ने "अभिन्यास" कहा है। भा० म० खं० २ सन्निपा० ज्वर०। देखो—सन्निपात।

अभिन्नपुट abhinna-puaṭ–हिं० संज्ञा पुं० नया पत्ता।

अभिन्यास हरो रसः abhinyása-haro-rasah-हिं० संज्ञा पुं० शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, लौह भस्म, चांदी भस्म इन्हें सम भाग लेकर, धुरधुर, सम्हालू, तुलसी, विष्णुकान्ता,

अग्निपर्णी, अदरख, चित्रक, भांग, अरनी, मकोय इनके रसों में तीन दिन पर्यंत खरल करें, पुनः पञ्चपित्त (मोर, भैंसा, बकरी, सुअर और रोहू मछली) की भावना देवें, तदनन्तर बालुकायंत्र में अन्ध मूषा में बन्द कर एक दिन तक पचाएँ, जब स्वांग शीतल हो बारीक चूर्ण कर रक्खें। मात्रा—१ से ८ रत्ती। गुण—अदरख के रसके साथ दें और निर्गुण्डी, दशमूल और त्रिकुटा का क्वाथ काली मिर्च मिलाकर पिलाएँ तो त्रिदोषज ज्वरों को दूर करे।

पथ्य—बकरी का दूध और मूंगका यूष दें। वृ० रस० रा० सु०।

अभिपीड़नम् abhipíḍanam–सं० क्लो० अभिचार (An incantation to destroy.)

अभिमन्थः,-मन्युः abhimanthah,-manyuh –सं० पुं० नेत्ररोग। आई डिज़ीज़ (Eye disease)। त्रिका०। देखो—अधिमन्थ।

अभिमर्दः abhimardah–सं० पुं० अवमर्द, पीड़न, पीड़ा (Pain.)।

अभिमर्दन abhimardana हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) पीसना। चूरचूर करना। (२) घस्सा। रगड़। युद्ध।

अभिमर्षणम् abhi marshaṇam–सं० क्लो० (१) यक्ष पिशाच आदि भूतकृत पीड़ा। र० मा०। (२) मनन, चिन्तन; (३) परस्त्री गमन, परदारगामी।

अभिमानितम् abhimánitam–सं० क्ली० मैथुन, स्त्री संग। क्वाइशन (Coition.), कप्युलेशन (Copulation.)। त्रिका०।

अभिमुख abhimukha–हिं० क्रि० वि० [सं०] सम्मुख, आगे, सामने, समक्ष (Present, facing.)

अभिरुचि abhimukha–हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] अत्यन्त रुचि। पसन्द। प्रवृत्ति। तुष्टि, भलाई, आस्वाद, चाह, रसज्ञान (Taste.)

अभिरूपः abhirúpah–सं० पुं० }
अभिरूप abhirúpa हिं० वि० } (१) बुध, पंडित, विद्वान। (२) रम्य, रमणीय, मनोहर, सुन्दर। (३) कामदेव। मे० पचतुष्कं।

अभिरोग abhiroga–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] चौपायों का एक रोग जिसमें जीभ में कीड़े पड़ जाते हैं।

अभिल कपित्थः abhila-kapitthah–सं० पुं० आम्रातक वृक्ष, अम्बाड़ा, अमड़ा (Spondias mangifera.)

अभिलषिक रोग abhilashika-roga–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] वातव्याधि के चौरासी भेदों में से एक।

अभिलावः abhilávah–सं० पुं० छेद, स्रोत (Hole, pore.)। अम०।

अभिलाषः abhiláshah–सं० पुं० }
अभिलाष abhilásha–हिं० संज्ञा पुं० }
[वि० अभिलाषिक, अभिलाषी, अभिलाषुक, अभिलाषित]। (१) रमणेच्छा, प्रियसे मिलने की इच्छा। वियोग। र० र०। (२) आकाँक्षा, कामना, इच्छा, स्पृहा (Desire.) मनोरथ, चाह।

अभिव्यापक abhivyapaka–हिं० वि० [सं०] [स्त्री० अभिव्यापिका] पूर्ण रूप से फैलनेवाला (Diffusible.)

अभिशप्त abhi-shapt–हिं० वि० [सं०] शापित। जिसे शाप दिया गया हो।

अभिशापित abhishápita–हिं० वि० [सं०] देखो—अभिशप्त।

अभिशस्तिपाः abhishastipáh–सं० निंदनीय पाप जय रोगों से रक्षा करने वाला। अथर्व०। सू० ७। १४। का० ८।

अभिशापः abhishápah–सं० पुं० }
अभिशाप abhishápa–हिं० संज्ञा पुं० }
[वि० अभिशापित, अभिशप्त] शाप, अनिष्ट प्रार्थना, बद दुआ, ब्राह्मण, गुरु, वृद्ध और सिद्ध आदि के शाप का नाम "अभिशाप" है। भा० म० २। मा० नि० ज्व०।

अभिशोचनम् abhisho-chanam–देखो—

अभिषङ्गः abhi-shangah-सं० पुं०
अभिषंग abhishanga-हिं० संज्ञा पुं०
(१) काम, शोक, भय, क्रोध, और भूतादिकों के आवेश होने का नाम अभिषंग है। भा० म० २ आगन्तुज्वर० लक्षण। (२) भूत, विष, आदि सम्बन्ध। यक्ष पिशाच आदि द्वारा उत्पन्न पीड़ा। र० मा७। (३) दृढ़ मिलाप आलिंगन (४) आक्रोश, निन्दा, कोसना। (५) पराजय।

अभिषङ्ग ज्वरः abhishang-jvarah-सं० पुं० ज्वर विशेष जो भूत आदि के आवेश से होता है। यह काम आदि जन्य भेद से ६ प्रकार का होता है। शाङ्ग०। भा० म० २ आगन्तुक ज्वर०। मा० नि० ज्वर। ज्व० च० ज्व० नि०।

अभिषवम् abhishavam-सं० क्लीं०
अभिषव abhishava-हिं० संज्ञा पुं०
(१) काञ्जिक, काँजी (See-Kánjí) रा० नि० व० १५। (२) ताड़ी (सुराभेद) सेन्धी-हिं०। ताड़ाची दारू-मह०। ताँडी। (Toddy)-इं०। पुं० (३) यज्ञ में स्नान (४) मद्य सन्धान। मे० वचतुष्कं। (५) सोमरस पान। मद्य खींचना। शराब चुआना। (६) सोमलता को कुचल कर गारना।

अभिषिक्त abhi-shikt-हिं० वि० [सं०] [स्त्री० अभिषिक्ता] कर्म में नियुक्ति, कृताभिषेक (Anointed to office, enthroned.)

अभिषुकम् abhi-shukam-सं० क्लीं० (१) कावेल आदि प्रसिद्ध फल विशेष। पेस्ता-बं०। च० चि० च्यवनप्राश। पुं०, (२) कावेल वृक्ष। सु०।

अभिषुतम् adhi-shutam-सं० क्लीं० पराडाकी। शांडाकी, काञ्जिक विशेष। अम०। देखो-काँजी। (Kánjí)।

अभिषुविक्रान्तम् abhi-shuvi-krántam -सं० पुं० माधवी सुरा, माध्वी सुरा। (A kind of wine) देखो—माधवी। वैं०निघ०

अभिषेकः abhi-shekah-सं० पुं०
अभिषेचनम् abhishechanam-सं० क्लीं०
(१) ऊपर से जल डाल कर स्नान करना। शान्ति स्नान। जल से सिञ्चन। छिड़काव (Bathing, sprinkling-)

अभिष्यन्द abhi-shyanda-हिं० पुं०
अभिष्यन्दः abhi-shyandah-सं० पुं०
नेत्र रोग भेद। (१) नेत्रशूल रोग। आँख आनी। चक्षु पीड़ा। Ophthalmia, conjunctivitis) आँख का एक रोग जिसमें सूई छेदने के समान पीड़ा और किरकिराहट होती है। आँखें लाल होती हैं। और उनमें पानी और कीचड़ बहता है। वात आदि भेद से यह चार प्रकार का होता है। देखो—नेत्राभिष्यन्दः। (२) अतिवृद्ध। (३) अस्राव; स्राव, बहाव मे० दचतुष्कं।

अभिष्यन्दी abhi-shyandí-सं० त्रि० (१) दोष, धातु तथा मल आदि स्रोतों को क्लेदयुक्त करने वाला, छिद्रों को आर्द्र (नम, तर) करने वाला।

कुसुमा० टी० ज्वर। (३) स्रोतः स्रावि द्रव्य। वा० टी० हेमाद्रि०। (३) कफकारक पदार्थ। लक्षण—जो द्रव्य अपने पिच्छल और भारीपन से रस वाहिनी शिराओं को रोक कर शरीर में भारीपन करता है। उस पदार्थ को "अभिष्यन्दी" कहते हैं, जैसे—दही। भा० मि० प्र० खं० १।

अभिसरः abhisarah-सं० पुं० (१) परिचारक। (२) (An attendant) सहचर; अनुचर। (३) मददगार। संगी, साथ रहने वाला, साथी। रत्ना०। प्राणाभिसर। च० द० सू० ६ अ०।

अभिसरण-,न abhisarana,-n-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अभिशरण] आगे जाना। (२) समीप गमन।

अभिसरना abhisaraná-हिं० क्री० अ० [सं० अभिसरण] संचरण करना। जाना। (२) किसी वांछित स्थान को जाना।

अभिसारना abhisáraná-हिं० क्रि० अ० [सं० अभिसारणम्] (१) गमन करना। जाना। घूमना।

अभिसारः abhisárah–सं० पु० अभिसार हिं० संज्ञा पु ० (१) शकुली मत्स्य [शाल माछ बं० मद० व० १२ । (२) बल (Strength) धन्व० मत्स्य, मछली (Fish) [वि० अभिसारिका अभिसारी] ।

अभिसोचनम् abhisochanam–सं० क्ली० कोसना । अथर्व० सू० ६ । ७ । का० ४

अभिहिता abhithitá–सं० स्त्री० जल पिप्पली जल पीपर । वै० नि० ।

अभिज्ञः abhijnyah–सं० त्रि०
अभिज्ञ abhijnya–हिं० वि०
(१) जानकार । विज्ञ । (३) निपुण । कुशल

अभिज्ञान abhijynána–हिं० संज्ञा पु ० [सं०] [वि० अभिज्ञात] (१) स्मृति । ख्याल । (२) वह चिन्ह जिससे कोई चीज़ पहिचानी जाय । लक्षण । पहिचान । (३) निशानी । परिचायक । चिन्ह ।

अभीकः abhíkah–सं० पु ०
अभीक abhíka–हिं० वि०
कामुक (Cupidinous, lustful मे० कत्रिकं । (२) निर्भय, निडर, लंपट ।

अभीरणी abhírani–सं० स्त्री० दुन्दुभ सर्प (A serpent named dundubha) वै० निघ० ।

अभीरु abhíru–सं० स्त्री० (१) शत मूली । सतावर–हिं० । (Asparagus racemosus) वा० सू० १५ अ० दूर्वादिव० सि० यो० यक्ष्म० चि० त्रयोदशांगे । (२) महाशतावरी । रसे० चि० ८ अ० ।

अभीरूपत्री-त्रिका abhírúpatri,-triká–सं० स्त्री० शतावरी, सतावर, (Asparagus racemosus) अम० ।

अभीशुः,-षुः abhíshuh,-shuh–सं० पु० प्रग्रह, लगाम, डोर, मे० ।

अभीषङ्गः abhísangah–सं० पु० आक्रोश, अभिषङ्ग, शाप । (Curse) ।

अभीष्ट abhíshta–सं० पु०
अभीष्टः abhíshtah–हिं० संज्ञा पु०
(१) तिलक क्षुप । तिल हिं० । (Sesamum Indicum) रा० नि० व० १० (२) वि० इच्छित, वाँछित । मनोरथ, मन चाही बात (Wished for, Desired)

अभीष्टगन्धकः abhíshta-gandhakah-सं० पु ० माधवी लता । मद० व० ३ । See–Mádhavilatá

अभीष्टा abhíshta--सं० स्त्री० रेणुक, गन्ध, द्रव्य, रेणुका । श० च० । See–renuká

अभुक्तः abhuktah--सं० त्रि०
अभुक्त abhukta--हिं० वि०
न खाया हुआ । उपवास किया हुआ । (Starved, fasted) अजीर्णस्य दिवा निद्रा पाषाणामपि जीर्य्यति वै० निघ० । (२) न भोग किया हुआ ।

अभुग्नः abhugnah--सं० त्रि० नीरोग, स्वस्थ (Healthy)

अभुलास abhulás--सिंध० हब्बुलाआस, विलायती मेंहदी है ।

अभेड़ा abhedá--गु० अमड़ा, अम्बाड़ा (Spondias mangifera)

अभेद adheda–हिं संज्ञा पु० [सं०] [वि० अभेदनीय, अभेद्य] (१) भेद का अभाव । अभिन्नता । एकत्व । (२) एक रूपता । समानता । वि० (१) शून्यभेद । एक रूप । समान । वि० [सं० अभेद्य]

अभेदनीय abhedaniya–हिं० वि० [सं०] दे० अभेद्य ।

अभेद्यम् abhedyam--सं० क्ली०
अभेद्य abhedya--हिं० संज्ञा पु०
(१) हीरक, हीरा । Diamond डाइमण्ड इं० रा० नि० व० १३ । देखो—वज्रम् । हिं० वि० (१) अभेदनीय । जिसका भेदन वा छेदन न हो सके । जिसके भीतर कोई चीज़ घुस न सके जिसका विभाग न हो सके । Indivisible, Inseparable (२) जो टूट न सके । अखंडनीय ।

अभेषजम् abheshajam–सं० क्ली० विपरीत औषध, उलटी दवा । बाधन तथा अनुबाधन

भेद से यह दो प्रकार का होता है। च० चि० १ अ०।

अभोज abhoja–हिं० वि० [सं० अभोज्य] न खाने योग्य।

अभोजनम् abhojanam–सं० क्ली० (Fasting) अभोजन–हिं० पुं०। उपवास, अभोजन, भोजनाभाव, अनाहार। संग्रहः।

अभोज्य abhojya–हिं० भोजन के अयोग्य (Unfit to be eaten)

अभौतिक abhoutika–हिं० वि० [सं०] (१) जो पंचभूत का न बना हो। जो पृथ्वी। जल, अग्नि आदि से उत्पन्न न हो।

अभ्यक्त abhyakta–हिं० वि० [सं०] (१) पोते हुए। लगाये हुए। (२) तैल वा उबटन लगाए हुए।

अभ्यङ्क abhyankah–सं० पुं० तिल कल्क।

अभ्यङ्गः abhyangah–सं० पुं०
अभ्यङ्ग abhyanga–हिं० संज्ञा पुं० } [वि० अभ्यक्त, अभ्यंजनीय] (१) लेपन चारों ओर पोतना। मल मल कर लगाना। उद्वर्तन। (२) तैल (आदि) मर्दन। तेल लगाना। तैल लेपन। स्नेहनः

(१) कमल पत्र, तगर, चिरौंजी दारुहल्दी, कदम्ब, बेर की मिंगी, इनकी मालिश करने से मुख कमलवत हो जाता है। (२) जौ राल, लोध, खस, रक्त चन्दन, शहद, घी, गुड़ इनको गोमूत्र में पकाएँ। जब कलछी से लगने लगे तब उतार लें। इसका मर्दन करनेसे नीलका व्यंग और मुख दूषिकादि रोग दूर होकर मुख मण्डल कमल सदृश हो जाता है और पांव कमल दल के तुल्य हो जाते हैं। वा० उ० अ० ३२।

अभ्यङ्गादिः–चौगुने बकरा के मूत्र में गौ के गोबर का रस मिलाय उसमें सिद्ध किया हुआ तैल (सरसों का तैल) मालिश, पान, तथा उत्सादन में श्रेष्ठ है।

चक्र० द० अपस्मार० चि०।

अभ्यङ्गादि समान्योपायः—अभ्यङ्ग, स्नेह, निरुहवस्ति, स्वेदकर्म, उपनाह, उत्तरवस्ति, सेकें, इन्हीं को तथा वातनाशक स्थिरादिगण से सिद्ध किए रसों को वात के मूत्रकृच्छ्र में दें।

गिलोय, सोंठ, आमला, असगन्ध, गोखरू, इन्हें वात रोगी तथा शूलयुक्त मूत्रकृच्छ्र वाले मनुष्य को पिलाएँ।

सेंक, गोता लगाना, शीतल लेप, ग्रीष्म ऋतु के योग्य विधान, वस्ति कर्म, दूध के पदार्थ, दाख, विदारीकन्द, गन्ने का रस तथा घृत इन्हें पित्त के रोगों में बरतें।

कुश, काश, सर, डाभ, ईख ये तृण पञ्चमूल पित्त के मूत्रकृच्छ्र को हरता तथा वस्ति का शोधन करता है। इनमें सिद्ध दूध पान करने से लिङ्ग में उपजे हुए रक्त को दूर करता है।

चक्र० द० मूत्रकृच्छ्र० चि०।

गुण—जल सींचने से जिस प्रकार वृक्षमूल में अँखुए बढ़ते हैं उसी प्रकार स्नेहसिंचन (तैलाभ्यंग) से धातुओं की वृद्धि होती है। शिरा, मुख, रोमकूप तथा धमनी द्वारा तर्पण होता है। सुश्रु०। मनुष्य को उचित है कि प्रति दिन अभ्यंग अर्थात् तैल मर्दन करता रहे। क्योंकि इससे बुढ़ापा, थकावट तथा वातरोग नष्ट हो जाते हैं, दृष्टि निर्मल बनी रहती है, शरीर पुष्ट रहता है, निद्रा सुखपूर्वक आती है, त्वचा सुन्दर और दृढ़ हो जाती है। वा० सू० १ अ०। परन्तु इस तैल का प्रयोग सिर, कान और पैर में विशेषता से करता रहे। र० मा०। अभ्यंग वातरोगनाशक है तथा धातुओं की समता, बल, सुख, नींद, वर्ण मृदुता करता और दृष्टि को पुष्ट करता है। शिरोऽभ्यङ्ग अर्थात् शिर में तैल लगाने से शिर को तृप्त, केशों को दृढ़ और नेत्र को पुष्ट करता है तथा केशों को साफ करता, केशों के लिए उत्तम और धूलि प्रभृति द्वारा हुई केश की मलिनता को दूर करता है। मद० व० ३। अभ्यङ्ग का निषेध—जो मनुष्य कफ से ग्रस्त है, अथवा वमन विरेचन देकर शुद्ध किया गया है या जो अजीर्ण से पीड़ित है उसको तैल मर्दन न करे। वा० सू० १ अ०। (३) शिरमें

तैल लगाना। भा०। (४) दोषयुक्त व्रण के दोषशमनार्थ तथा उनको कोमल करने के लिए उपाय विशेष। सु० चि० १ अ०।

अभ्यंजनीय abhyanjaníya-हिं० वि० [सं०] (१) पोतने योग्य, लगाने योग्य। (२) तेल वा उबटन लगाने योग्य।

अभ्यञ्जनम् abhyanjanam--सं० क्लो०, तैल (Oil)। हे० च०। तैल मर्दन, तैल लेपन, उबटन, रा० नि० व० १५।

अभ्यन्तः abhyantah-सं० त्रि० आतुर रोगी (Diseased affected, with sickness) अम०।

अभ्यन्तर abhyantara-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) मध्यम बीच। (Inner, Internal) (२) हृदय (Heart)। क्रि० वि० भीतर। अन्दर।

अभ्यन्तरवर्त्ती abhyantar-vartti--सं०स्त्री० मध्यवासी।

अभ्यन्तरायामः abhyantaráyámah--सं० पुं० उक्त नाम का धनुस्तम्भ रोग विशेष, अन्तरायाम। यह एक प्रकार की वात व्याधि है जिसमें बलवान वायु कुपित होकर अँगुली, वक्ष, हृदय और गलदेश आदि में प्राप्त होकर वायु समूह को खींचकर मनुष्य को क्रोड़वत (कूबड़) झुका हुआ कर देता है, जिससे नेत्र स्तब्ध हो जाते हैं और डाढ़ें बैठ जाती हैं। लक्षण— अंगुली, गुल्फ (पांव की गांठ), पेट, हृदय, वक्षः स्थल और गल में रहने वाली वायु वेगवान होकर नसों के समूह को सुखाकर बाहर निकाल दे और जब उस मनुष्य के नेत्र स्थिर हो जावें, ठोडी जकड़ जाय, पसलियों में पीड़ा हो मुख से कफ गिरने लगे और मनुष्य आगे की ओर को झुक जाय तो वह बलवान वायु अन्तरायाम को उत्पन्न करता है अर्थात् तब उसे "अन्तरायाम वात व्याधि" के नाम से पुकारते हैं। मा० नि० वा० व्या०। देखो—

अभ्यमितः abhyamitah-सं० त्रि० आतुर, रोगी (Diseased.)। अम०।

अभ्यवकर्षणम् abhyava-karshanam -सं० क्लो० शल्य आदि उत्पाटन। शल्य आदि का उखाड़ना (निकालना)। अम०।

अभ्यवहरणम् abhyava-haranam सं० क्लो० भोजन (Eating, Food.)

अभ्यवहारः abhyavaháraḥ-सं पुं० आहार (Food.) रत्ना०।

अभ्यक्ष abhyaksha सं० तिल की खली।

अभ्यान्तः abhyántah-सं० त्रि० रोगी, आतुर (Diseased.)। अम०।

अभ्याहारः abhyáhárah-सं० पुं० भक्षण, भोजन, आहार। ईटिंग (Eating.)। यह चर्व्य (चर्वण योग्य), चोष्य (चूसने या चोषण योग्य), पेय (पान योग्य) और लेह्य (चाटने योग्य) भेद से चार प्रकार का होता है। (१) च्युएबल (Chewable,) मैस्टिकेटिबल (Masticatible)। (२) Capable of being sucked. (३) To be licked. (४) Drinkable.। सु०।

अभ्यु abhyu-सं० पुं० मुनक्का बीज (Seeds of dried grapes.)

अभ्युदय abhyudaya-हिं० संज्ञा पुं० [अं०] [वि० अभ्युदित, आभ्युदयिक] (१) प्रादुर्भाव, उत्पत्ति।

अभ्युदित abhyudita-हिं० वि० [सं०] (१) उगा हुआ। निकला हुआ। उत्पन्न। प्रादुर्भूत। (२) दिन चढ़े तक सोने वाला।

अभ्युषः abhyush-सं० पुं० रोटी (Bread.) आ० सं० इ० डि०।

अभ्युक्षण abhyukshana हिं० संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अभ्युक्षित, अभ्युक्ष्य] सेचन। छिड़काव। सिंचन।

अभ्युक्षित abhukshita-हिं० वि० [सं०] (१) छिड़का हुआ। अभिसिंचित। (२) जिस पर छिड़का गया हो। जिसका अभिसिंचन हुआ हो।

अभ्युक्ष्य abhyukshya-हिं० वि० [सं०] छिड़कने योग्य।

अभ्यूषः abhyúshah-सं० पुं० अभ्योष। ईषत्पक्व कलाय आदि। (अटां० भ०) अम०। रोटी। आ० सं० इं० डि०।

अभ्रम् abhram-सं० क्लीं० } (१) मुस्ता,
अभ्र abhra-हिं० संज्ञा पुं० } नागरमोथा
(Cyperus Rotundus.) । (२) मेघ, बादल। क्लाउड (Cloud)-इं०। रा० नि० व० ६। (३) अभ्रक धातु। टैल्क (Talc.)-इं०। रा० नि० व० १३। (४) आकाश। स्काइ (Sky.,) ऐट्मॉस्फ़ियर (Atmosphere.)-इं०। (५) स्वर्ण। सोना। Gold ऑरम (Aurm)-ले०।

अभ्रकम् abhrakam-सं० क्लीं० } (१)
अभ्रक abhraka-हिं० संज्ञा पुं० } भद्रमुस्ता
नागरमोथा (Gyperus pertenuis.) (२) कर्पूर। कैम्फर (Camphor)-इं० (३) सुवर्ण। ऑरम (Aurum)। (४) वेत्र, वेतसवृक्ष (Calamus rotong.)। देखो—**वेत्रसः**। (५) अबरक धातु विशेष। भोडर। भोडल। भुखेल।

गिरिजं, अमलं (अ), गिरिजामलं, गौर्य्यामलं, (स्वामी) गिरिजा बीजं, गरजध्वजं, (के), निर्मलं, (मे), शुभ्रं (ज), घनं, व्योम, अब्दं, (र), अभ्रं, भृङ्गं, अम्बरं, अन्तरीक्षं, आकाशं, बहुपत्रं, खं, अनन्तं, गौरीजं, गौरीजेयं, (रा) -सं०। अभ्भर बं०। अबक़, तल्क़, अफ़्रीदून, इस्तराल, क़बून, कौकबुल् अर्ज़, मुनक़ा, मुकलिस, अक़्लअरूस, समअ, गगन, जना हुल्स् ब्त, -अ०। तल्क़-द० सितारहे ज़मीन-फ़ा०। उ०। अबरक-उ० माइका Mica-ले०। टैल्क, Talc, मस्कोवी ग्लास Muscovy glass, ग्लीमर Glimmser-इं०। भिंगा-ना०। कौं०। किन्-सिं०। हिंगूल-गु०, मह०।

यह एक प्रकार का स्फटिकवत खनिज है। जिसकी रचना पत्राकार होती है और जिसके अत्यन्त पतले पतले परत या पत्र किए जासकते हैं। यह बड़े बड़े ढोंकों में तह पर तह जमा हुआ पहाड़ों पर मिलता है। साफ़ करके निकालने पर इसकी तह काँचकी तरह निकलती है। यह आग से नहीं जलता एवं लचीला होता तथा धातुवत् आभा प्रभा रखता है। इसके पत्र पारदर्शक एवं मृदु होते और सरलता पूर्वक पृथक् किए जा सकते हैं। एक ओर से दूसरी ओर तक फाड़ने पर टूटने की अपेक्षा फटते हुए प्रतीत होते हैं। वैद्यक ग्रंथों में इसको महारस या उपरस लिखा है। परन्तु आधुनिक रसायन वाद के अनुसार यह न धातु है न उपधातु क्योंकि न इसमें धातु के लक्षण हैं और न उपधातु के, और न वह मौलिक तत्त्वों में से है।

उद्भव स्थान—बहुधा यह पर्वतों पर पाया जाता है। हमारे देश में अभ्रक प्रायः श्वेत भूरा तथा काला निकलता है। सीरिया और भारतवर्ष में, बंगाल, राजपूताना, 'जैपुर' मद्रास नेलौर और मध्य प्रदेश आदि की पहाड़ियों में इसकी बड़ी बड़ी खानें हैं। अबरक के पत्तर कंदील इत्यादि में लगते हैं। तथा बिलायत आदि में भी भेजे जाते हैं। वहाँ ये काँच की टट्टी की जगह किवाड़ के पल्लों में लगाने के काम में आते हैं।

अभ्रक भेद

रस शास्त्रों में अभ्रक की चार जाति एवं वर्णानुसार इसके चार भेदों का उल्लेख पाया जाता है, जैसे—

ब्रह्मक्षत्रिय विट् शूद्र भेदात्तस्या चतुर्विधम्।
क्रमेणैव सितं रक्तं पीतं कृष्णं च वर्णतः॥

अर्थ—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र भेद से अभ्रक चार प्रकार का है उन चारों के क्रमशः सफेद, लाल, पीत और काले वर्ण हैं।

चारों वर्णों के भेद—

प्रशस्यते सितं तारे रक्तं तत्र रसायने।
पीतं हेम निकृष्णं तु गदे शुद्धं तथापि च॥

अर्थ—चाँदी के काम में सफ़ेद अभ्रक, रसायन कर्म में लाल, सुवर्ण कर्म में पीला और औषध कार्य में शुद्ध काला अभ्रक काम में लाना चाहिए।

कृष्णाभ्रक के भेद—

पिनाकं दर्दुरं नागं वज्रं चेति चतुर्विधम्।
कृष्णाभ्रकं कथितं प्राज्ञस्तेषां लक्षण मुच्यते॥

अर्थ—पिनाक, दर्दुर, नाग और वज्र ये चार भेद काले अभ्रक के पंडितों ने कहा है। अब इनके लक्षण का वर्णन किया जाता है।

पिनाक के लक्षण—

मुंचत्यग्नौ विनिक्षिप्तं पिनाकं दलसंचयम्।
अज्ञानाद्भक्षणं तस्य महाकुष्ठप्रदायकम्॥

अर्थ—पिनाक अभ्रक अग्नि में डालने से अर्थात् धमन करने से दलसंचय अर्थात् पत्रों को छोड़ता है। अज्ञानवश खाने से यह महाकुष्ठ करता है।

दर्दुर के लक्षण—

दर्दुरस्त्वग्नि निक्षिप्तं कुरुते दर्दुरध्वनिम्।
गोलकान् बहुशःकृत्वातत्स्यान्मृत्युप्रदायकम्॥

अर्थ- दर्दुर अभ्रक अग्नि में डालने से मण्डूक की तरह शब्द करता है और भक्षण करने से पेट में गोले का रोग प्रगट करता एवं मृत्यु-कारक होता है।

नाग के लक्षण—

नागं तु नागवद्वन्ही फूत्कारं परिमुंचति।
तद्भक्षितमवश्यन्तु विदधाति भगंदरम्॥

अर्थ—नाग अभ्रक अग्नि में डालने से साँप के समान फुफ्कार मारता है। इसके खाने से अवश्य भगंदर रोग होता है।

वज्राभ्रक के लक्षण—

वज्रं तु वज्रवत्तिष्ठे न चाग्नौविकृतिं व्रजेत्।
सर्वाभ्रेषुवरं वज्रं व्याधिवार्धक्य मृत्युजित्॥

अर्थ—वज्राभ्रक अग्नि में डालने से वज्र के समान जैसा का तैसा रह जाता है और विकार को नहीं प्राप्त होता। यह सब में श्रेष्ठ है और व्याधि, बुढ़ापा एवं मृत्यु को दूर करता है।

यद् जननिभं क्षिप्तं न वह्नौ विकृतिं व्रजेत्।
वज्र संज्ञंहितद् योज्यमभ्रं सर्वत्रनेतरत्॥

अर्थ—जो अभ्रक काला होता है तथा अग्नि में तपाने से विकार को नहीं प्राप्त होता, वह वज्राभ्रक है। यह सर्वत्र हितकारक और योग्य है। इससे भिन्न अन्य प्रकार उत्तम नहीं।

इस शास्त्रोक्त वर्णन के विपरीत आज हमें पाँच प्रकार का अभ्रक प्राप्त होता है—श्वेत, अरुण, पीत, भूरा और काला। ये सब वर्ण के कारण ही भिन्न नहीं, प्रत्युत प्रकृति में इनकी रचना ही एक दूसरे से सर्वथा भिन्न है।

अभ्रक कोई मौलिक पदार्थ नहीं, प्रत्युत अनेक मौलिकों का एक यौगिक है। इसीलिए रसायन शास्त्रियों ने इस यौगिक से कोई और यौगिक बनाने का प्रयत्न नहीं किया, न डाक्टरों ने इसे रोगों में व्यवहार किया है। एलोपैथी में अभ्रक को किसी रूप में भी खाने में नहीं वर्ता जाता। हाँ इसके पत्रों का उपयोग अवश्य रसायन विज्ञानी यन्त्रों में करते हैं। परन्तु आयुर्वेदज्ञों ने इसको खाने के लिए उपयोगी बताया और इन्हों ने ही इसको अग्नि में डाल कर इसके उक्त यौगिक तोड़कर नए यौगिक ऐसे बनाए कि जिसे प्राणियों को रोग के समय में देने पर वह बड़े लाभदायक सिद्ध हुए, तब से इसका उपयोग चल पड़ा।

(१) श्वेताभ्रक—(Muscovite.) यह पत्राकार चाँदीवत् शुभ्र वर्ण का होता है। सुहागे के साथ मिलाकर तीव्र अग्नि देने से इसका आधे के लगभग भाग शैलकेत (Silicate.) नाम का नया यौगिक बनता है। यह कांच सा होता है, इसको हमारे यहां अभ्रक सत्व कहते हैं।

(२) अरुणाभ्रक या रक्ताभ्रक (Lepidolite.) यह अभ्रक श्वेत अभ्रक की अपेक्षा कम पत्राकार होता है। इसके छोटे छोटे पत्र होते हैं और इसके साथ और यौगिक के कण मिश्रित होते हैं। बहुधा यह अभ्रक एक प्रकार की अरुण खड़िया मिट्टी के साथ मिला पाया जाता है। यह समग्र अभ्रकों से मूल्यवान होता है; क्योंकि इसमें रक्तरूपम् नामक धातुका संयोग हुआ होता है। इसका संकेत सूत्र— पां रक्त [स्क (ऊ उ प्ल) २] स्फ (शै ऊ, ३) ३।

(३) पीताभ्रक—(Cookeite.) इस अभ्रक में पांशुजम धातु नहीं होती न तीसरा स्फट शैलोष्मिद का यौगिक होता है, बल्कि इस के स्थान पर शैलोष्मित होता है। इसका संकेत

सूत्र रक्र [स्फ (ऊ उ) २] ३ (शै ऊ ३) २ है। यह पत्राकर कहरवी वर्ण का होता है।

(४) भूराभ्रक—(Lepidomelane.) यह अभ्रक भारतवर्ष में बहुत पाया जाता है। यह वर्ण में श्यामता लिए, भूरा होता है। प्रायः बाजार में यही अभ्रक मिलता है। इसके पांच पांच सात सात इंच तक बड़े पत्र देखे जाते हैं। इसका संकेत सूत्र—(उ पां) २ लो ३ (लो स्फ) ४ (शै ऊ ४) ५

(५) श्याम अभ्रक—(Biotite.) इसके दो भेद हैं। एक बृहद् पत्र युक्त, दूसरा सूक्ष्म पत्र युक्त। सूक्ष्म पत्र युक्त श्याम अभ्रकको हमारे यहां वज्र कहते हैं।

इस बृहद् पत्र युक्त अभ्रक का संकेत सूत्र—(उ पां) (कां लो) २ स्फ २ (शै ऊ ४) ३

दूसरा श्याम अभ्रक—जो छोटे पत्र का होता है और जिसकी रचना प्रायः डलीके आकार की होती है। इसकी और प्रथम की रासायनिक बनावट में भी अन्तर है। संकेत सूत्र—(उपां) २ (कां लो) २ का ३ स्फ (शै ऊ ३) इसमें उष्मजन की १ मात्रा कम है, किसी में दो कम होती है। जिसमें ऊष्मजन कम होता है वह अभ्रक अग्नि पर रखने से नहीं फूलता। जिसमें अधिक होता है वह फूलता है। जो अभ्रक नहीं फूलता उसको वज्र संज्ञक कहते हैं और रस शास्त्रों में इसी को श्रेष्ठ माना है। भस्म के लिए इसी को व्यवहार में लाना चाहिए।

कहा भी है—

तथाभ्रं कृष्ण वर्णाभं कोटि कोटि गुणाधिकम्।
स्निग्धं पृथु दलं वर्ण संयुक्तं भारतोधिकम्॥
सुख निर्मोच पत्रंच तदभ्रं शस्तमीरितम्।

अर्थात्—कृष्णाभ्रक अर्थात् वज्र करोड़ों गुण युक्त है। (इसके लक्षण) जो चिकना, मोटे दल का, सुन्दर वर्ण युक्त और बहुत भारी हो और जिसके पत्र सहज में अलग हो जाएँ, वह अभ्रक श्रेष्ठ है।

टिप्पणी—इस समय वैद्य तीन प्रकार के अभ्रक भस्म के लिए काममें लाते हैं। श्वेत, भूरा और काला (यूनानी हमीम इनमें से श्वेत और श्याम दो ही का उपयोग करते हैं)। तीनों अभ्रकों में से श्वेत और भूरे ये दोनों शास्त्र परीक्षा में वज्र नहीं उतरते। काले अभ्रक में से कोई कोई ही इस परीक्षा में ठीक उतरता है।

ज्ञात रहे कि दर्दुर, नाग और पिनाक नामधारी अभ्रकों में प्रयोग करने पर उपर्युक्त कोई शास्त्रीय दुर्गुण दिखाई नहीं देता। रही गुण की बात, प्रत्येक प्रकार के अभ्रक एक सा गुण नहीं कर सकते, क्योंकि आप ऊपर देख चुके हैं कि सबके यौगिक भिन्न भिन्न हैं। जब सबों की रासायनिक रचना में अन्तर है तो जब उनकी भस्में बनेंगीं, उनकी रसायनिक रचना भी एक दूसरे से भिन्न होगी। ऐसी दशा में गुणों में अन्तर आना स्वभाविक बात है। पर इस कथन में कोई महत्व नहीं कि पिनाक, दर्दुर, नाग नामक अभ्रक अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न करते हैं।

अभ्रक शोधन विधि

छोटेकण का श्याम अभ्रक प्रायः बालू रेत आदिसे मिश्रित होता है। अतएव भस्म बनाने से पूर्व इसकी शुद्धि आवश्यकीय है। अन्यथा इससे नाना प्रकार के रोगों के होने की अत्यधिक सम्भावना रहती है। यथा—

सत्वार्थं सेवनार्थं च योजयेच्छोधिताभ्रकम्।
अन्यथात्व गुणं कृत्वाविकरोत्येव निश्चितम्॥

अर्थ—सत्व के वास्ते या सेवन के वास्ते शोधित अभ्रक लेना चाहिए। अन्यथा अवगुण कर निश्चय विकारों को उत्पन्न करता है।

अशोधित अभ्रक की भस्म निम्न दोषों को करती है।

पीडां बिधत्ते विविधांनराणां कुष्ठंक्षयं पांडु गदं चशोफम्। हृत्पार्श्व पीडांच करोत्यशुद्धमभ्रं हि तद्वद् गुरुवह्नि हन्स्यात्॥

अर्थ—यह (अशुद्ध अभ्रक) मनुष्यों को अनेक प्रकार की पीड़ा, कोढ़, क्षय, पांडु सूजन और हृदय एवं पार्श्वशूल आदि रोगों को करता तथा भारी है और जठराग्नि को मन्द करने वाला है।

अतः अभ्रक शोधन की कतिपय सरल एवं उत्तम विधियों का यहां उल्लेख किया जाता है—

(१) अभ्रक को तपा तपा कर काँजी या गोमूत्र या त्रिफला के क्वाथ में विशेष कर गोदुग्ध में सात सात बार अथवा तीन तीन बार बुझानेसे अभ्रक शुद्ध होता है ।

अभ्रक पत्रों को लेकर गाय के धारोष्ण दुग्ध में मलें और सुखाकर फिर मलकर सुखाएँ । तीन बार ऐसा करने से अभ्रक नवनीत के समान कोमल हो जाएगा ।

(२) अभ्रक को तपातपा कर २१ बार काँजी में डुबाने से अभ्रक शुद्ध होता है ।

(३) अभ्रक के पृथक् पृथक् पत्र कर और तपा तपा कर काँजी में बुझाएँ । बाद उन पत्रों सहित काँजी को तेज धूप में धर दें । १५–२० दिन या एक मास बाद काँजी को फेंक दूसरे शुद्ध जल से धो लें । अभ्रक शुद्ध हो जायगा ।

(४) अभ्रक को तपा तपा कर सात बार सम्भालू के रस में बुझाएँ तो अभ्रक के गिरि दोष की शांति हो ।

(५) अभ्रक को तपा तपा कर बारंबार बेर के काढ़े में बुझाएँ । पीछे सुखाकर हाथों से मर्दन करें तो धान्याभ्रक से भी उत्तम हो ।

इस प्रकार शुद्धि क्रिया के पश्चात् इसके सूक्ष्म चूर्ण बनाने के लिए धान्याभ्रक क्रिया करें ।

धान्याभ्रक की निरुक्ति

चूर्णाभ्रं शालि संयुक्तं बद्धं बद्धं हि कांजिके ।
निर्यात मर्दनाद्यत्तद्धान्याभ्रमिति कथ्यते ॥

अर्थ—चूर्ण किए हुए अभ्रक के साथ धानों को कपड़े में बांधकर कांजी में रख दें और उसे मर्दन करें । इससे जो रेत सा अभ्रक चूर्ण निकले उसे धान्याभ्रक कहते हैं ।

धान्याभ्रक करण विधि

अभ्रक को चूर्णकर धान (चौथाई भाग) मिला दें और कम्बल में ढीला बांध कर तीन रात तक काँजी में रखें । फिर इसे जोर से मलें । इस प्रकार मलकर पानी में डुबाकर फिर मलें, फिर डुबाएँ । इस प्रकार रगड़ने से अभ्रक मुलायम होकर शीघ्र टूटता रहता है और उसके छोटे छोटे कण होकर कम्बल से निकल कर उस पानी में नीचे बैठते रहते हैं । इस तरह अभ्रक को पानी में बारीक रूप से निकाल लें । जल के स्थिर हो जाने पर नितार दें और नीचे बैठे रेत सम कोमल धान्याभ्रक को मारण के काम में लाएँ ।

अभ्रक को कोमल करने की विधि— अभ्रक के पत्रों को अलग अलग करके एक पात्र में रखें । इसके ऊपर से कुकरौंधे का इतना रस भरें कि वह डूब जाय और ४–५ दिन तक धरा रहने दें । तदन्तर उसके एक मोटी थैली में भर कर उसमें कौड़ियां डालें और थैली का मुँह बांध खूब रगड़ कर धोएँ । अभ्रक रेशमवत् स्वच्छ एवं मुलायम हो जायगा । उपर्युक्त समग्र क्रियाओं के हो जाने के बाद इसकी भस्म प्रस्तुत करें ।

श्याम अभ्रक भस्म विधि

१—धान्याभ्रक किए हुए श्यामाभ्रक को कुकरौंधे के रस में थोड़ी सज्जी अथवा सुहागा मिलाकर माने, फिर टिकिया बनाकर शराब में धरें और कपरौटी कर गजपुट की अग्नि दें । एक बार में ही अभ्रक भस्म होगा । इसी प्रकार १० या १६ बार करने से निश्चन्द्र गेरुए रंगका अभ्रक भस्म प्रस्तुत होगा । ३० पुट या १०० पुट देने पर उत्तम प्रकार की भस्म निर्मित होगी । गुण वृद्धि के लिए १६ पुट आक के दूध की, धतूर के पत्तों के रस की, थूहर के दूध की, भाँग के काढे की, पीपल बड़ के अंतर छाल के काढ़े की, त्रिफले के काढ़े की, पीपल या बड़ के अंतर छाल के काढ़ेकी, बकरे के खून की, गोखरू आदि की दें । और क्रमशः १६–१६ बार पुटित करके टिकिया बना शराब में कपरौटी युक्त कर गज पुट में फूँकते जाएँ १००० पुट देकर सहस्र पुटी कर लें या ५०० पुटी बनाएँ । यह प्रत्येक रोग में अचूक सिद्ध होगी ।

२—शुद्ध अभ्रक को कसौंदी के रस में खरल करके संपुट में रखकर गज पुट की अग्नि दें । शीतल होने पर निकाल कर पुनः कसौंदी के रस में खरल कर टिकिया बनाकर उक्त विधि से दस अग्नि दें तो उत्तम भस्म बन जाती है ।

३—इसी तरह नागरमोथे के क्वाथ में छोटेछोटे टुकड़े कर अग्नि देते रहने से दस पुट में अभ्रक की भस्म बन जाती है।

४—इसी तरह अभ्रक को चौलाई पंचांग के रस में घोट घोट कर दस बार अग्नि देने से उत्तम भस्म बन जाती है। प्रतिबार वनस्पति रस छोड़ कर अभ्रक खूब घोटना चाहिए। जितना अधिक घुटेगा उतना ही शीघ्र चन्द्रिका रहित अभ्रक हो जायगा।

५—मिट्टी रेता रहित अभ्रक के सूक्ष्म सूक्ष्म कण लेकर उनको अर्क दुग्ध में घोटकर रुपये रुपये बराबर टिकियाँ बनाएँ और धूप में सुखा-कर अर्क पत्र में लपेट, सम्पुट में रखकर खूब अच्छी गजपुट की अग्नि दें। स्वांग शीतल होने पर निकाल पुनः उक्त अर्क दुग्ध में अच्छी तरह घोटकर अग्नि दें। सात पुट इसी प्रकार अर्क दुग्ध की और तीन पुट वट-जटा क्वाथ की दें। प्रत्येक बार में अग्नि की मात्रा काफ़ी होनी चाहिए। दस पुट में चंद्रिका रहित उत्तम लाल वर्ण की भस्म बन जाती है। यह भस्म अच्छी बनती है और काफ़ी गुण करती है।

६—अभ्रक को पानके रस में घोटकर टिकिया बनाकर तीन भावना अग्नि सहित दें। फिर तीन भावना हुलहुल के रस की दें, फिर तीन वट-जटा क्वाथ की, फिर तीन मूसली के काढ़े की, फिर तीन गोखरू के काढ़े की, फिर तीन कौंच के काढ़े की, फिर तीन सेमल की मूसली की, फिर तीन तालमखाने के काढ़े की, फिर तीन लोध पठानी की, इसके पश्चात एक भावना गोदुग्ध की, एक दधि की और एक घृत की, एक शहद की, एक खांड़ की देकर पीसकर रक्खें। यह ऊपर का उत्तम पौष्टिक अभ्रक तैयार होता है।

७—वट दुग्ध, स्नुही दुग्ध, अर्क दुग्ध, नागर मोथा, मनुष्य मूत्र, वटांकुर, बकरे का रक्त, इन सब वस्तुओं की भस्म से १५-१५ भावना दें तो उत्तम अरुण वर्ण की भस्म बनती है।

८—धान्याभ्रक में आधा भाग गंधक एवं आधा भाग सज्जी का देकर कुकरौंधे के रस में घोट टिकिया बनाएँ और गजपुट विधि से फूँकें तो एक बार में ही भस्म निश्चन्द्र होगी।

९—धान्याभ्रक में हरिताल, आँवले का रस और सुहागा मिलाकर घोटें पीछे टिकिया बना कर अग्नि दें। इस प्रकार ६० अग्नि देने से सिंदूर के समान लाल भस्म हो प्रस्तुत होगी। यह भस्म क्षयादि सकल रोगों का नाश करती है।

१० सहस्र पुटी अभ्रक क्रिया—

सर्व प्रथम वज्राभ्रक खरल में डालकर कूटें। पीछे उसको अग्नि में तपाकर गोदुग्ध में बुझाएँ, लोह पात्रमें घृत डाल उसमें इस अभ्रक को डाल मन्दाग्नि से पचाएँ, तदनन्तर धान से आधा अभ्रक लें दोनों को कम्बल या गाढ़ा या गजी की थैलीमें रख भिगोदें। फिर एक बड़े पात्र (कठौती, परात आदि) में उस अभ्रक को डाल थैली को खूब मसले, दो पहर बाद जब सम्पूर्ण अभ्रक निकल कर पानी में आ जाय तब पानी को नितार अभ्रक को निकाल लें। इस प्रकार करने से अभ्रक की शुद्धि एवं धान्याभ्रक होता है।

सहस्र पुट देने के लिए ६० वनस्पतियों का उल्लेख है जिनमें से प्रत्येक की १७-१७ भावना देने पर सहस्र पुटी भस्म तैयार होती है। औष-धियाँ निम्न हैं—

आक दुग्ध; वट दुग्ध, थूहर का दूध, घीकुवार का रस, अरण्डी की जड़ का रस, कुटकी, मोथा, जिलोय, भाँग, गोखरू, कटेरी; शालपर्णी, पृश्निपर्णी, सफेद सरसों, खरमंजरी, बड़की जटा, बकरेका रुधिर, बेल, अरणी, चित्रक, तेंदू, हरड़, पाढल की जड़,, गोमूत्र, आमला, बहेड़ा, जल-कुम्भी, तालीसपत्र, मुसली, अडूसा, असगन्ध, अगस्तिया का रस, भाँगरा, केले का रस, सप्त-पर्ण, धतूरा, लोध, देवदारु, तुलसी, दोनों दूब, (श्वेत वा हरित दूर्वा) कसौंदी, मरिच, अनार, दाना का रस, काकमाची (मकोय), शंखपुष्पी, बालछड़, पान का रस, सोंठ, मण्डूकपर्णी, (ब्राह्मी), इन्द्रायण, भारंगी, देवदाली, कैथ, शिवलिंगी, कटुवल्ली, ढाक का रस,

तोरई, मूषकपर्णी, जवासा, मछेछी, कलोंजी, और तेलपर्णी। कोई कोई ये ओषधि विशेष कहते हैं—पंचांगुल का रस, टुंटक, गुड़, सुहागा, मालती, सप्तपर्णी (सतवन), नागबला, अतिबला, महाबला, सतावर, कौंच की जड़ का रस, गाजर (गर्जर), प्याज, लहसुन, उटंगण, अमरबेल, हिल मोचिका, कुट्टी, पाताल गरुड़ी, जटामांसी, दूध, दही, घृत, शहत, खाँड़, धाय और पालंकिका।

अभ्रक को खरल में डालकर उपर्युक्त ओषधियों के रस में घोटें। जब सूख जाय तब अरने उपलों की आग में फूंक दें। फिर आग में से निकाल कर घोटें और अग्नि दें। इस प्रकार प्रत्येक ओषधि के १६-१६ पुट देनी चाहिए। जो ओषधि रस योग्य हो उसका रस डालें और क्वाथ योग्य के क्वाथ की पुट दें। यह अभ्रक भस्म निश्चन्द्र (चमक रहित) लाल होगा।

गुण—यह अमृत के समान दिव्य रसायन है और अनेक अनुपानों के संयोग से देह को अजर अमर करता है। अतएव मनुष्य को इस श्रेष्ठ भस्म का सेवन करना चाहिए। सेवन करने वाले को हजारों गुण करे यह समस्त रोगों का शत्रु प्रसिद्ध है।

नोट—(१) अभ्रक भस्म के रंग के लाल करने की विधि—नागबला, नागरमोथा, वट दुग्ध, हल्दी का पानी, मजीठका पानी इन समस्त का या एक एक का या केवल वटजटा प्ररोह के काढ़े की भावना दें तो गजपुट देनेसे रक्तवर्ण की भस्म होगी।

अभ्रक में पुट देने के गुण—

अठारह पुट का अभ्रक वातनाशक, छत्तीस का पित्तनाशक और ५४ का कफ, प्रमेह और सूजन का नाश करता है तथा अम्ल पित्त और आमवातादि हस्ति रूप रोगों को मारने के लिए सिंह रूप है। सौ पुट के उपरांत अभ्रक बीज संज्ञा को प्राप्त होता है। सबीज अभ्रक वीर्य, पराक्रम तथा कांति का कारण है और देह को धारण करता है। यह क्षीर स्वामी का मत है।

उक्त भस्मों के रसायनिक रूप—

सभी श्याम अभ्रक अग्नि संयोग में आने पर ऊष्मिद होते रहते हैं। अग्नि देने पर कांति, लोह और स्फटिकम् धातुएँ ऊष्मिद होती हैं। उदपांशवत का यौगिक भी टूटकर ऊष्मेत हो जाता है और जैसे जैसे उष्मेत बनता जाता है वैसे वैसे अभ्रक का वर्ण लाल होता चला जाता है। यदि इसके उक्त यौगिक में अंतर न आए तो अभ्रक का वर्ण लाल नहीं होता कई बार शैलिका का यौगिक टूट जाता है और इसका ऊष्मजन कम हो जाता है और ऊष्म जन का स्थान कज्ज ले लेता है और ऊष्मजन का स्थान कज्जल ले लेता है। उस अवस्था में अभ्रक का वर्ण श्यामतायुक्त अरुण हो जाता है। जब शैल कज्जलेत बन जाय तो इस यौगिक का विच्छेद नहीं होता। अन्त तक अभ्रक उसी वर्ण में बना रहता है। कभी कभी उदपांश वेत ऊष्म जन का संयोग पाकर पांशुजम का यौगिक तीक्ष्ण क्षार में भी परिणत हो जाता है। यह रूप कासमर्द रस में भस्म बनाने पर ही देखा जाता है और अर्क दुग्धादि में बनाने पर पांशुज तीक्ष्ण क्षार नहीं बनता अभ्रक के उक्त लोहकांत स्फटिकादि के ऊष्मिद कई रोगों में अत्यन्त लाभ करते हैं। और जब ज्वर किसी शारीरिक अंग की विकृति शोथ के कारण स्थिर रूप से बढ़ा रहता हो उस अवस्था में यह अभ्रक आन्तरिक विकृत को दूर करने में शरीर की बड़ी सहायता करता है। (आ० वि० भा० १ सं० ७।

श्वेत अभ्रक का सुलायह

१—हिना सुर्ख बारह तो० को रात्रि को पानी में तर करें। प्रातः उसका जुलाल लेकर ६ तो० धान्यकाभ्रक को उस पानी के साथ यहां तक खरल करें कि उसकी चमक जाती रहे। फिर छोटी इलायचीका दाना, वंशलोचन, मूसली-श्वेत प्रत्येक ३ तो० एक एक कर सम्मिलित करके खरल करते जाएँ। पुनः सम्पूर्ण ओषधि को चार पहर तक खूब घोटकर रख दें।

मात्रा—१ मा०। **गुण**—उष्ण यकृद, निर्ब-

लता, प्रमेह (शुक्र), और पूयमेह (सुजाक) के लिए असीम गुणकारी और परीक्षित है। (सद्वैद्यह)।

२—नौसादर १ तो०, फिटकरी १॥ तो०, अभ्रक २॥ तो०, नौसादर और फिटकरी को १ छ० पानी में घोलकर इसमें अभ्रक के बारीक पत्र को तर करें और रख दें। १ घंटा बाद उसे डंडे से कूँडे में यहाँ तक रगड़ें कि दूधकी तरह सफेद हो जाए फिर उसमें बहुत सा पानी डाल दें। जब अभ्रक तलस्थायी हो जाए तब पानी को निकाल दें। और ताजा पानी डालें, इसी तरह बारंबार करें जिससे जल में नौसादर आदि का स्वाद न रहे। फिर सुखाकर रख दें।

गुण—उष्ण प्रधान ज्वर यथा पैत्तिक व आंत्रिक में १ मा० शर्बत अनार के साथ दिन में तीन बार खिलाएँ। बालक को २ रत्ती से ४ रत्ती तक दें। अनेकों बार का परीक्षित और सदा से प्रयोग में आ रहा है। (रफ़ीक)।

६—अभ्रक को कत्तरी से कतर कर रात्रि में अम्ल दधि में तर करें। प्रातः काल जल में धोकर काकजंघा बूटी के स्वरस में एक प्रहर खरल करें। धूल की तरह हो जायगा।

गुण—मूत्र प्रणाली के रोग, सूजाक, रक्त प्रमेह, रक्त निष्ठीवन, नासारक्त स्राव, पुरातन कास, श्वास कष्ट, कुकुर खांसी, विविध उष्ण प्रधान ज्वर, शोथ, जलोदर, यकृत्प्रदाह, प्लीह शोथ, शुक्र प्रमेह और सैलान के लिए अनेकों बार का परीक्षित है।

मात्रा व सेवन विधि—१ रत्ती से २ रत्ती तक मक्खनमलाई या पान के पत्र वा कोई अन्य उपयुक्त औषध के साथ सेवन करें (म. रञ्जन)

श्वेत अभ्रक भस्म विधि

१—श्वेताभ्रक का चूर्ण करके अभ्रकके बराबर शोरा और गुड़ मिलाकर खूब कूटें और कूट कूट कर टिकिया बना सम्पुट में रख कर गजपुट की अग्नि दें। एक पुट में अभ्रक की श्वेत भस्म बन जाती है। यदि एक बार में कुछ कसर रह जाय तो इसी तरह दूसरी बार करने पर अच्छी भस्म बन जाती है।

नोट—श्वेत अभ्रक में न तो लोह होता है न कांत। पांशुजम् स्फटिकम् और शैलिका के यौगिक होते हैं इसको जब शोरे के साथ फूँका जाता है तब पांशुजम् धातु कज्जलोप्मेत् नामक यौगिक में और स्फटिकम् ऊष्मेत् में भिन्न तथा शैलिका कज्जलोष्मेत् में मिल जाते हैं। यह भस्म इतनी उपयोगी नहीं। यह बहुत कम लाभ करती है।

मृत भस्म की परीक्षा

अभ्रक की भस्म जब चमक रहित अर्थात् निश्चन्द्र तथा काजल के समान अत्यन्त बारीक हो तब उसकी ठीक भस्म हुई जाननी चाहिए अन्यथा नहीं। निश्चन्द्र भस्म को ही काम में लाना चाहिए क्यों कि यदि चमकदार हो तो यह विष के समान प्राण का हरण करने वाला और अनेक रोगों को कर्ता है। कहा भी है—

मृतं निश्चन्द्रतां यातं मरणं चामृतोपमम्।
सच्चीद्रं विषवद् ज्ञेयं मृत्युकृद्हृद् रोगकृत् ॥

अमृतीकरण

त्रिफला का काढ़ा १६ पल, गोघृत ८ पल, मृत अभ्रक १० पल इनको एकत्र कर लोहे की कढ़ाई में मन्दाग्नि से पकाएँ। जब जल और घी जल जाएँ केवल अभ्रक मात्र शेष रह जाए तब उतार शीतल कर रख छोड़ें और रोगों में बरतें। कोई कोई आचार्य केवल घृत में ही अमृतीकरण करना लिखते हैं। यथा—

तुल्यघृतं मृताभ्रेण लोहपात्रे विपाचयेत्।
घृतं जीर्णं ततश्चूर्णं सर्व कार्येषु योजयेत् ॥

अर्थ—अभ्रक की भस्म समान गोघृत लेकर लोह की कढ़ाई में चढ़ा उसमें अभ्रकको पकाएँ। जब घृत जलकर अभ्रक मात्र रह जाए तब उतार कर सब कार्यों में योजित करें।

अभ्रक के गुणधर्म तथा प्रयोग

अभ्रक की भस्म विभिन्न विधियों द्वारा प्रस्तुत कर अथवा उचित अनुपान भेदसे प्रायः सभी प्रकार की सर्द व गर्म बीमारियों में व्यवहृत होती है। उक्त अवसर पर यह प्रश्न उठाना व्यर्थ ही नहीं, प्रत्युत अपनी अज्ञानता का सूचक है, कि विभिन्न

अनुपान जिनके साथ ऐसी भस्में प्रयोग में लाई जाती हैं, यदि उनसे कोई लाभ होता हो तो वह उसी अनुपान का प्रभाव होता है। भस्म नाममात्र को प्रभावकारी मानी जाती है। परन्तु अनुभव इस बात का विश्वास दिलाता है कि उस अवस्था में जब भस्म संग में न हो तब अनुपान की इतनी अल्प मात्रा का शरीर पर किसी प्रकार का प्रगट प्रभाव नहीं होता। अस्तु यह भस्म का ही गुण है कि इतनी अल्प औषध का प्रभाव सम्पूर्ण शरीर में पहुँचा देता है। गोया किसी वस्तु की शुद्ध भस्म एक ऐसी रसायन है जो मुख में डालते ही सम्पूर्ण शरीर के नस व नाड़ियों में व्याप्त हो जाता है और अपने स्वाभाविक एवं मौलिक गुणधर्म के अतिरिक्त जो उसमें अन्तर्निहित हैं प्रत्येक उस औषध के प्रभाव को जिसमें वह भस्म किया गया है या जो अनुपान रूपसे प्रयोग की जा रही है, सम्पूर्ण शरीरमें विशेष कर रोगस्थलपर अत्यन्त शीघ्रतापूर्वक एवं स्थायी रूपसे पहुँचा देता है। जो दवा सेरों खाने से तब कहीं जाकर शरीर में अपना प्रभाव प्रगट करती है वह एक दो मा० की मात्रा में भस्म के संग योजित करने से तत्क्षण सेरभर औषध के प्रभाव से भी अधिक प्रभाव प्रगट करती है। पुनः चाहे वह प्रभाव उक्त औषध का ही क्यों न हो, पर औषध की इतनी अल्प मात्रा और प्रभाव की उस तात्कालिक शक्ति को देखकर प्रत्येक न्यायग्राही व्यक्ति यह निर्णय कर सकता है कि यह प्रभाव भस्म का ही है। क्योंकि यदि उक्त प्रभाव उस औषध का होता तो भस्म की अनुपस्थिति में भी इतनी अल्प मात्रा में प्रगट होता। परन्तु वास्तव में ऐसा है नहीं। अतः यह सिद्ध हो गया कि उपर्युक्त सम्पूर्ण चमत्कार उक्त भस्म के ही हैं जो उक्त औषध के साथ सम्मिलित होकर उसके प्रभाव को सौगुना कर दिया।

फलतः अभ्रक की भस्म को उपर्युक्त अनुपान द्वारा प्रत्येक सर्द व गर्म वा परस्पर विरुद्ध (द्वंद व्याधियों)में तद्वत् सफलता पूर्वक वरता जासकता है। केवल योग्य एवं व्यवहार कुशल होने की आवश्यकता है। इसके विपरीत बहुत सी अन्य भस्मों की तरह इसके द्वारा किसी प्रकार विषैले प्रभाव प्रगट होने की आशंका नहीं अतएव हर एक व्यक्ति में प्रत्येक ऋतु, अवस्था एवं रोग के लिए इसका निर्भय एवं निरापद उपयोग किया जा सकता है।

आयुर्वेद के मत से—

अभ्रक भारी, शीतल, बल्य है तथा कुष्ठ, प्रमेह और त्रिदोष नाशक है। मद० व० ४।

रसायन, स्निग्ध है। और बल वर्ण एवं अग्नि वर्धक है। राज०।

कषेला, मधुर, शीतल, आयुकर्त्ता और आयु बद्‌र्धक है। प्रयोग—यह त्रिदोष, व्रण, प्रमेह, कोढ़, प्लीहोदर, गाँठ, विषविकार और कृमि रोग को दूर करता है।

मृत अभ्रक के गुण

अभ्रक की भस्म रोगों को नष्ट करती, देह को दृढ़ करती, वीर्य बढ़ाती, तरुणावस्था प्राप्त कराती और शत स्त्री संभोग की शक्ति प्रदान करती है। दीर्घायु और सिंह के समान पराक्रमी पुत्रों को पैदा करती है। निरन्तर मृताभ्रक का सेवन मृत्यु के भय को भी दूर करता है।

श्री पार्वती जी का तेज अर्थात् अभ्रक अत्यंत अमृत है, वात, पित्त और क्षय का नाश करता है। बुद्धि को बढ़ाता, बुढ़ापे को दूर करता, वृष्य (वीर्य कर्त्ता) है। आयु को बढ़ाता बल कर्त्ता एवं चिकना है। रुचिकर्त्ता, कफनाशक, दीपन और शीत वीर्य है। पृथक् पृथक् योगों के साथ सकल रोगों को दूर करता और पारद को बाँधता है।

आयुष्य का स्तम्भन करता, मृत्यु तथा बुढ़ापे को दूर करता, बल तथा आरोग्य प्रदान करता और महाकुष्ठ को दूर करता है। मृत अभ्रक को सब रोगों में बरतना चाहिए, क्योंकि इसमें सदैव पारे के समान गुण हैं। देह की दृढ़ता के लिए इसको ३ रत्ती की मात्रा में खाना चाहिए। इसके सिवाय बुढ़ापे और मृत्यु का हर्ता दूसरी दवा नहीं है।

मृताभ्रक कामदेव और बल को बढ़ाता है, विष, वाद्गी, श्वास, भगंदर, प्रमेह, भ्रम, पित्त, कफ, खाँसी और क्षय आदि रोगों में अनुपान के साथ इसका सेवन करें।

औषध-निर्माण—अभ्रक, कल्क, अभ्रवटिका, ज्वराशनि रसः, ज्वरारि (अभ्रम), अग्नि कुमार रस, कन्दर्पकुमाराभ्र, लक्ष्मीविलास रस, महा-लक्ष्मी विलास रस, हरिशंकर रस, अर्जुनाभ्र, श्रृङ्गाराभ्र, वृहत् चन्द्रामृत रस, ज्वराशनिलौह, महा श्वासारिलौह, वृहतकञ्चनाभ्र, मन्मथाभ्र रस, और गलित गुष्ठारि रस इत्यादि।

प्रकृति—२ कक्षा में शीतल और ३ कक्षा में रूक्ष। **हानिकर्त्ता**—प्लीहा व वृक्क को। **दर्प-नाशक** कतीरा, शुद्ध मधु, रोग़न और करफ़्स के बीज, **प्रतिनिधि**—तीन क्रीमूलिया समान भाग या कुछ कम। **मुख्य गुण**—सार्वांगिक रक्तस्थापक है।

यूनानी ग्रंथकार—इसकी भस्म को सम्पूर्ण शीत जन्य मस्तिष्क रोगों, वात नैर्बल्य, उत्तमांगों की निर्बलता, कामावसान, श्वास कष्ट, कास, रक्त निष्ठीवन, रक्तपित्त, अधिक रज (प्रदर) व तज्जन्य निर्बलता, शुक्रमेह तथा पूयमेह भेद, मूत्र प्रणालीय विकार, समग्र प्रकार के ज्वरों एवं राजयक्ष्मा व उरःक्षत में लाभदायक मानते हैं। प्रत्येक अन्तः व्रण का रोपणकर्त्ता; कामशक्ति वर्द्धक, शुक्र को सांद्रकर्त्ता है। इसकी भस्म उपर्युक्त अनुपान के साथ हर एक रोग के लिए लाभदायक है। इसका प्रयोग शारीरिक निर्बलता और यक्ष्म रोगी में विशेष रूप से होता है। मि० ख०।

नव्यमतानुसार अभ्रकके प्रभाव—यह किसी तरह कीटघ्न (संक्रमण हर माना जाता है।

रोजेनहेम (Rosenheim) और एरमन Ehrmann (Deut. Med. woch, 20. Jan. 1910) के मतानुसार, एलुमिनम् सिलिकेट जब इसका मुख द्वारा प्रयोग होता है, तब आमाशयिक रसमें लवणाम्ल की आधिक्यता के सहयोग से इसमें प्रतिक्रिया उत्पन्न होती है, जिससे सिलिसिक एसिड और एल्युमिनियम क्लोराइड बनजाता है, और जिसमें से अन्तिम अर्थात् एल्युमिनियम क्लोराइड का आमाशयिक श्लैष्मिक कला पर ठीक विस्मथ की तरह आवरक व रक्षक प्रभाव होता हैं। इस बात की परीक्षा करना भी अत्यंत उचित होगी कि आया औषध योजित अभ्र का प्रभाव भी जो कि एक सिलिकेट ही है अमाशय पर उसी प्रकार होता है; क्यों कि यह सदैव अम्लाजीर्ण और आमाशयिक क्षत में लाभ प्रद पाया गया है। उदाहरणतः विद्याधराभ्र (Jour; Ayur; july 1924.) मांसपेशी यकृत, प्लीहा, लसीका, और सेल आभ्यन्तरिक रसों में तथा विभिन्न शारीरिक मलों यथा मूत्र विष्टा और स्वेद में भी सिलिसिलिक एसिड विभिन्न प्रतिशतों (·८१ प्रतिशत से कुछ चिन्ह तक) में पाया जाता है। आयुर्वेद में मृताभ्र परिवर्तक और सार्वांगिक वल्य कहा गया है। साधारणतः यह धातु सेलों की संवर्तक क्रियाओं का उत्तेजक भी कहा गया है यह कामोद्दीपक रूप से भी प्रयोग किया जाता है। यह त्रिदोषघ्न और उनकी साम्यस्तिथि का स्थापक ख़याल किया जाता है। धान्याभ्र वल्य और कामोद्दीपक माना जाता है। अभ्रक के योग सामान्यतः स्तंभक वल्य, कामोद्दीपक और परिवर्त्तक होते हैं। अभ्रकल्क, परिवर्त्तक, और स्वास्थ्य पुनरावर्तक है

उपयोग—अभ्रक की भस्म रक्ताल्पता, कामला पुरातन अतिसार, प्रवाहिका, स्नायविक, दुर्ब्बलता, जीर्णज्वर, प्लीह विवर्द्धन, नपुंसकता, रक्तपित्त और मूत्र सम्बंधी रोगों में लाभप्रद है। इसके अति-रिक्त इसे शहद और पिप्पली के साथ देने से श्वास, अजीर्ण, (Hecticfe fever) यक्ष्मा, व्रण, (Cachexia) आदि को नष्ट करता है संकोचक रूप से इसे वातातिसार में अधिक तर दिया जाता है। परिवर्तक रूप से इसे ग्रंथि विवर्द्धन में उपयोग किया जाता है। साधारणतः इसे २–६ ग्रेन की मात्रा में शहद के साथ दिन में दो बार वर्त्ता जाता है। थाइसिस (यक्ष्मा)

में प्रतिदिन दो बार २-३ ग्रेन तक शहद या ताजे वासक स्वरस के साथ देने से लाभ होता है इं० मे० मे० -

अभ्र-कल्पः abhra-kalpah--सं० क्लीं० अभ्र की निश्चन्द्र भस्म, आमला, त्रिकुटा, विडंग प्रत्येक समान भाग लेकर भाङ्गरे के रस अथवा जल से दो पहर तक खरल में बारीक घोटें, गोलियां बना फिर साया में सुखा लेवें। मात्रा-१ मा०। गुण—इसकी १ गोली १ वर्ष तक रोजाना खावें, दूसरे वर्ष २ गोलियां रोजाना, इसी तरह तीसरे वर्ष ३ गोलियां रोजाना लेवें, इस प्रकार तीन वर्ष पूरे होने पर यह अभ्रक का प्रयोग पूरा हो जाता है। इस योग से ३ वर्ष में जो मनुष्य ४०० तो० अभ्रक खा जाता है वह वज्रवत दृढ शरीर वाला होजाता है। इसके तीन ही महीने के प्रयोग से रक्तविकार, क्षय, असाध्य दमा, ५ प्रकार की खांसी, हृदयशूल, संग्रहणी, बवासीर, आमवात, शोथ, भयानक पांडु, वात, पित्त, कफ के रोग, और १८ प्रकार के कुष्ट दूर हो जाते हैं। रस० यो० सा०।

अभ्रक कल्प abhraka-kalpa सं० पुं० जो अत्यन्त काला तथा अत्यन्त चिकना, काले सुरमे के तुल्य, वज्राभ्र पत्थल आदि दोषों से रहित शुद्ध हो ऐसे अभ्रक को लेकर बुद्धिमान वैद्य एक दृढ मिट्टी के पात्र में रख चार या पांच दिन तक कड़ा पुट देवें, इसी तरह चौलाई के रस से पीस पीस कर पांच पुट पुनः देवें। इसी तरह पूर्वोक्त क्रम से आमला, सोंठ, मिर्च, पीपल, और वायविडंग के योग से पीस पीस चन्द्रिका रहित करें। पुनः जब चन्द्रिका रहित हो जावे तो अंगूठा के अग्र भाग से पीड़ित कर गोलियाँ बनाय साया में शुष्क कर रक्खें। इसमें से एक एक गोली निरन्तर वर्ष पर्यन्त खावें। दूसरे वर्ष में दो गोली निरन्तर खावें, इसी तरह एक एक गोली बढ़ाकर ४०० तोले अभ्रक सेवन करें तो शरीर बलवान हो और वज्रतुल्य दृढ हो इसमें संशय नहीं है। इसके तीन महीने के सेवन से रक्त रोग, क्षय, भयङ्कर पाँचो खाँसी, हृदय शूल, संग्रहणी, अर्श, आमवात, सूजन, भयंकर पांडु, वात, पित्त कफ से पैदा हुए मृत्यु तुल्य महा वात व्याधि, अठारह कुष्ठ इन्हें उचित पथ्य से यह अभ्रक कल्प नष्ट करता है। बङ्ग० सेन० स०रसायनाधिकारे।

अभ्रक गुटिका abhraka-guṭiká-सं० स्त्री० शुद्ध पारद, शु० गंधक, शु० विष, त्रिकुटा, भूना सुहागा, कान्तिसार भस्म, अजमोद, अहिफेन, तुल्य भाग, अभ्रक भस्म सर्व तुल्य लेवें और चित्रक के क्वाथ में एक दिन खरल कर मिर्च प्रमाण गोलियां बनावें, इसके एक मास पर्यन्त सेवन करने से संग्रहणी दूर होती है। अमृ० सा०। संग्र० चि०।

अभ्रक सन्धानम् abhraka-sandhánam -सं० क्लीं० उत्तम शुद्ध अभ्रक लेकर मेढकपर्णी, वरुण त्वक, अदरख, दकोत्पल (डानिकुनिशाक -बं०) मिर्ची, अपामार्ग, वच, भांगरा, अजवाइन, चौलाई, गिलोय, सूरण, पुनर्नवा, इनके रस से पृथक पृथक भावना दें। पुनः तीक्ष्ण धूप में शुष्क करें, पुनः इसमें गिलोय सत्व ४ तो०, पीपल ४ तो०, और शुद्ध पारद, त्रिफला, सोंठ, मिर्च, पीपल, अभ्रक तुल्य लेकर पारद की मूर्च्छा शहद, घृत से कर पुनः त्रिफला, त्रिकुटा के चूर्ण से मर्दन कर उत्तम चिकने पात्र में मुँह बन्द कर रक्खें। मात्रा—१ रत्ती। गुण—इसे एक रत्ती वृद्धि क्रम से भोजन के आदि, मध्य, और अन्त में जल तथा खट्टे रस से लें, और शुद्ध घृत, दधि, दूध, मांस, मद्य, शाक और प्राचीन अन्न का सेवन करें तो अम्ल पित्त, संग्रहणी, अर्श, कामलाको दूरकर्त्ताऔर अग्नि की वृद्धि करता है। भैष० र० भंग्र० चि०।

अभ्रकहरीतकी abhraka-hrítakí-सं०स्त्री० अभ्रक भस्म ८० तो०, शुद्ध गंधक २० तो०, स्वर्णमाक्षिक भस्म २४० तो०, हरीतकी ४०० तो०, आमला ८०० तो० इन सबों का चूर्णकर एक दिन जंभीरी नीबू के रस की भावना देवें, पश्चात भांगरा, सोंठ, छिरहटा, भिलावाँ, चित्रक कुरण्टक, हाथी शुण्डी, कलिहारी, तुम्बी, जल-

कुम्भी, इन प्रत्येक के रस में १-१ दिन खरल करें। तदनन्तर चीनी आदि के उत्तम पात्र में रक्खें। गुण--उचित मात्रा में प्रयोग करने से त्रिदोषजन्य अर्श दूर होता है। वृ० रस० रा० सु० अर्श चि० ।

अभ्रकादि वटी abhrakádi-vatí-सं० स्त्री० पारा, गंधक, विष, त्रिकुटा, सुहागा, लोहभस्म, अजमोद, अफीम प्रत्येक समान भाग, अभ्रक भस्म सर्वतुल्य। इन्हें चित्रक के क्वाथ में एक पहर तक खरल करके मिर्च प्रमाण गोलियां बनाएँ। प्रति दिन १ गोली खाने से ४ प्रकार की संग्रहणी का नाश होता है। वृ० नि० र०, भा० ४ सं० चि० ।

अभ्रगुग्गुलुः abhra-gugguluh-सं० पुं० अभ्रक भस्म ४ तो०, त्रिफला ४ तो०, गुग्गुल शुद्ध ४ तो०, गुड़ ४२ तो० सब को मिलाकर भोजन के प्रथम खाने से परिणाम शूल तथा हर प्रकार के शूल दूर होते हैं।

अभ्रङ्कुशः abhrankushah-सं० पुं०, (१) वायु (Air)। (२) पाणि, हाथ (hand.)।

अभ्रनामकः abhra-námakah-सं० पुं०, मुस्ता, नागरमोथा (Cyperus rotundus.) श० र० ।

अभ्रपटलः abhrapatalah-सं० क्ली० पुं०, अभ्रक (Talc) वै० निघ० ।

अभ्रपर्पटी abhraparpatí-सं० स्त्री० अभ्रक भस्म, ताम्रभस्म, गन्धक प्रत्येक समभाग लेकर पर्पटी बनावें। मात्रा-२ रत्ती। गुण-इसे मुली अथवा पञ्चकोल के क्वाथ के साथ उपयोग करने से जिह्वागत प्रत्येक व्याधियां दूर होती हैं।

अभ्रभानुः abhrabhánuh-सं० पुं० कमीला हरड़, विड़ लवण, सहिजन के बीज, अमलबेत, जवाखार, प्रियंगु, अथवा निसोथ, बच, सलई, विडंग और अजवायन इन्हें समान भाग लेकर चूर्ण बनावें। उसमें २ तो० अभ्रक, ताम्बा, और स्वर्ण की भस्म मिलावे। मात्रा-१-२ रत्ती। गुण—आमवात, अष्ठीला और गुल्म को नष्ट करता है। रस० यो० सा० ।

अभ्रपुष्पः abhra-pushpah-सं० पुं०, (१) वेतसलता, बेंत, वेतस। केन Cane-इं०। केलेमस् Calamus-ले०। भा० पू० १ भ० गु० व०। (२) वारिवेतस, जलबेंत। अम०। क्ली०, (३) जल (Water)।

अभ्रमांसी abhra-mansí-सं० स्त्री०, आकाश मांसीलता। सूक्ष्म जटामांसी-बं०। रा० नि० See-Akashamánsí.

अभ्ररोहः abhr-rohah-सं० क्ली०, वैदूर्य्यमणि See-Vaidúryya-manih. रा० नि० व० १३ ।

अभ्रवटिका abhra-vatiká-सं० स्त्री० शुद्ध पारद १० मा०, शु० गन्धक १० मा० की कज्जली, अभ्रक भस्म १० मा०, मिर्च चूर्ण १० मा०, सुहागा भस्म ५ मा० लेकर काला भांगरा, सफेद भांगरा, निर्गुण्डी, चित्रक ग्रीष्मवल्ली, अरणी, मण्डूक पर्णी, कुड़ा, विष्णुक्रान्ता प्रत्येक का रस १०-१० मासे लेकर पृथक् पृथक् मर्दन कर चणक प्रमाण गोलियां बनाएँ।

गुण—इसे उचित अनुपान उचित अवस्था के अनुसार सेवन करने से काँस, श्वास, क्षय, वात, कफः शूल, ज्वर अतिसार को दूर करती है तथा वशीकरण होते हुए बल, वर्ण और अग्नि की वृद्धि करती है। भैष० र० ग्रहणी चि० ।

अभ्रवटिका abhra-vatiká-सं० स्त्री० शु० पारद, गन्धक, और अभ्रक भस्म १-१ तो० लेकर कज्जली बनावें, त्रिकुटा चूर्ण, काला भांगरा, भांगरा सम्भालू, चित्रक ग्रीष्मसुन्दर, जैत, ब्राह्मी, भङ्ग, और श्वेत अपराजिता, पान के पत्ते इनके रस प्रत्येक कज्जली के बराबर और पारे के बराबर काली मिर्च का चूर्ण और पारे से आधा सुहागा डालकर खरल में घोटें, फिर मटर प्रमाण की गोलियां बनाएँ।

गुण—रोगानुसार उचित अनुपान के योग से देने से खाँसी, श्वास, क्षय और वात कफ के रोग दूर होते हैं। रस० यो० सा० ।

अभ्रवटी abhra-vaṭí–सं० स्त्री०, अभ्रक भस्म को २१ बार भांगरे के रस से भावित करें, फिर गन्धक, पारद और लौहभस्म पृथक् पृथक् अभ्रक के बराबर और सोना अभ्रक से आधा मिलाकर त्रिफलाके क्वाथ में डालकर अच्छी तरह घोटें पुनः १ रत्ती प्रमाण की गोलियाँ बनाएँ। इसके सेवन करने से औपसर्गिक मेह (सूज़ाक) दूर होता है।

अभ्रबद्ध गुटिका abhrabaddha-guṭiká –सं० स्त्री० नीलकण्ठ पक्षी (चाषुमास गृद्ध विशेष), बैल, उल्लू, खंजन और चमगीदड़ के हृदय और दोनों आँखों को निकाल कर और शु० पारा तथा अभ्रक सत्व प्रत्येक १-१ तोला मिलाकर बारीक घोटकर २ तो० की गोली बनाकर त्रिलोह में लपेट कर (सोना, चांदी, और तांबा इनके लपेटने की विधि यह है कि पहिले सोना आठ भाग फिर चांदी १२ भाग और सबके ऊपर १६ भाग तांबेके पत्र को लपेट दें अथवा सबके ऊपर कहे प्रमाणमें लेकर गलाकर पत्र बनाएँ और ऊपर से लपेटें) गले में बांधने से अदृश्य हो कर मनुष्य १ दिन में ४०० कोस जा सकता है। रस० यो० सा०।

अभ्रबद्ध रसः abhra-baddharasah–सं० पुं० देखो–रसयोगसागर।

अभ्रवाटकः abhra-váṭakah–सं० पुं० आम्रातक वृक्ष- अमड़ा, अम्बाड़ा आमड़ा गाछ–बं०। Spondias mangifera.। रा० नि० व० ११।

अभ्रवाटिकः abhra-váṭikah-सं० पुं० आम्रातक, अम्बाड़ा, अमड़ा (Spondias mangifera)–जटा०।

अभ्रसारः abhra-sárah-सं० पुं० भीमसेनी कपूर। वै० निघ० See–Bhímaseni karpúra.

अभ्रसिन्दूरम् abhrasindúram–सं० क्लीं० अभ्रक का चूर्ण कर, चोरक, हुरहुर, असगन्ध, संभालू, रुद्रवन्ती, भांग, शतावरी, अडूसा, बला, अतिबला, सेमल, कुष्माण्ड, नागरमोथा, विदारीकन्द, तुलसी, मैनफल, भिलावा, वनभाटा, कैथ, दाख, गूलर, आक, खस, सुगन्धवाला, कूठ, लाल रुहेड़ा, चम्पा, मकोय, गोखुरू, गुलाब, अनार, केवाँच, आमला, पुनर्नवा, ब्राह्मी, चित्रक, गोरखमुण्डी, सिरस और गिलोय इनके रसों से पृथक् पृथक् भावना देकर पुट दें तो यह अभ्रसिन्दूर सभी रोगों को नष्ट करता है जैसे सूर्योदय अन्धकार को। रस० यो० सा०।

अभ्रसुन्दरोरसः abhrasundrorasah–सं० पुं० यवक्षार, सोहागा, सज्जी, काला अभ्रक, गन्धक, ताम्बा, और पारा समान भाग लेकर मिलावें, फिर हस्तिशुण्डी और अग्नोनिया के रस से एक एक दिन उसमें भावना दें। फिर गोला बनाकर लघु पुट से पकावें, फिर उसमें नैपाली ताम्र भस्म मिलावे यदि किसी दूसरे प्रकार का ताम्बा मिलाया जायगा तो कुछ भी गुण न होगा। उचित अनुपान के साथ सभी रोगों कोदूर करता है। संग्रहणी, खांसी और मन्दाग्नि में कांजी के साथ देना चाहिए। वातरोग, शूल, पार्श्वशूल और परिणाम शूल में अदरख के रस से देना चाहिए। अम्लपित्त तथा सभी प्रकार के पित्त रोगों को यह धारोष्ण दूध के साथ देने से नष्ट करता है।

अभ्रातरः abhrátarah–सं० वि० जिसके कोई भाई न हो।

अभ्रामलक रसायनम् abhrámalakaras-ayamam–सं० क्लीं०, अभ्रक भस्म, गन्धक और मूर्छित पारा जो कि मक्खन के माफिक साफ हो इनको बराबर बराबर लें। त्रिफला, त्रिकुटा, बच, विडङ्ग, दोनो जीरे, ढाक के बीज, एलुवा, त्रिधारा, तज, कमल मूल, विडङ्ग, चित्रक, सामा, सहिंजन, दन्ती, निशोथ और मेंहदी (वर्ण दूषिका) इन सब को १-१ तोला लें और सबका चूर्ण कर कड़ी चाशनी में डाल रक्खें। उचित मात्रा से सेवन करने से यह रस कष्ट साध्य से साध्य वात रक्त को नष्ट करता है वं० से०।

अभ्राह्वम् abhráhvam-सं० क्लीं० कुंकुम, केशर, ज़ाफ़रान्। Saffron (Crocus sativus)। मद० व० ३।

अभ्रूषः abhrúshah- सं० पुं० तालु रोग विशेष। जिसरे तालु में शोणित जन्य स्तब्ध लोहित वर्ण की सूजन हो और साथ ही ज्वर और तीव्र वेदना हो तो उसे 'अभ्रूष' कहते हैं। भा० म० ४ भ० मुखरोग चि०।

अमः amah-सं० पुं० अम--हिं० संज्ञा पुं० (१) रोग (Disease) बीमारी। (२) आँव (Mucus.)। (३) पक्व फल आदि (Ripe fruits etc.)। श० र०। (४) बीमारी का कारण।

अमकीरे गद्दे amakíre-gadde-कना०, अश्वगंध--सं०महा०, ते०, बं०। पुनीर, अकरी-हिं० हब्बुल काकनज-अ०। काकनज-बम्ब०। Withania Coagulans.)-ले०।

अमग़ोस् amaghos-अ० टिड्डी, मलख (A locust.)

अमङ्गलः amangalah-सं० पुं०
अमङ्गल amangala-हिं० संज्ञा पुं०
एरण्ड वृक्ष, अरण्ड (Castor oil plant) रेंड़ का पेड़ श० च०।

अमचूर amachúra-हिं० संज्ञा पुं० [हिं० आम+चूर] सुखाए हुए कच्चे आम का चूर्ण। आम्र चूर्ण। आम की फकिया। खटाई। पिसी हुई अमहर Parings of the mango dried in the sun इं० मे० मे०।

अमज् amaj-अ० अति उष्ण, अधिक तृषा, अत्यंत प्यासा होना (Very hot, excessive thirst)

अमड़ा amará-हिं० पुं० [सं० आम्रात, या अंबाड़] अमारी, आम्रातक, अम्बाड़ा, (Spondias mangifera) एक पेड़ जिसकी पत्तियाँ शरीफे की पत्तियों से छोटी और सीकों में लगती हैं। इसमें भी आम की तरह बौर आता है। और छोटे छोटे खट्टे फल लगते हैं जो चटनी और अचार के काम में आते हैं।

अमडाई amadái-पं० कालीग्वार, पवना, मोरेड़ -हिं०। Aloes Indica (The black var of-)

अमणक्कम्-चेडो amanakkam-chedí-ता० एरण्ड, अरंड। Castor oil plant-इं०। रिसिन कम्म्यून (Ricinn commun) फ्रां०। फा० इं० ३ भा०।

अमण्डः amandah-सं०पुं० एरण्ड वृक्ष। अरंड (Castor oil plant) प० मु० हारा०।

अमण्डीर कम्म्यून amandier communa -फ्रां० (१) बादाम, वाताद, आमण्ड। (Almond) (२) कड़ुवा बादाम, तिक्त बादाम, -हिं०। बिटर आमण्डस (Bitter almonds) -इं०। Amygdalus communis, *Linn.*) फॉ० इं० १ भा०

अमण्डीस-डेस-डैमीस amandes des-dames. -फ्रां०। देखो—अमण्डीस सल्टेनीस।

अमण्डीस सल्टेनीस amandes sultanes -फ्रां० मीठा बादाम। (Sweet almonds) यह दो प्रकार का होता है एक मोटे छिलके का और दूसरा पतले छिलके का अर्थात् काग़ज़ी फा० इं० १ भा०।

अमत amata-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) मत का अभाव। असम्मति। (२) रोग। (३) मृत्यु।

अमती amatí-बम्ब० बायविडंग। रोहिण गढ़वा०। (Embelia ribes.)

अमतीपण्डु amatí-pandu-ता० केला, कदली (A plantain) (Musa sapientum)

अमत्त amatta--हिं० वि० [सं०] (१) मद रहित। (२) शांत।

अमदरियान amdariyána-यु० बकरे के सदृश एक वृक्ष है, किन्तु इससे छोटा होता है। इसकी लकड़ी से तस्बीह (सुमिरनी, मनियाँ) बनाई जाती है इस कारण इसको शज्रतुत्तस्बीह् तथा दमूक़ अयूब भी कहते हैं। साधारणतः यह मिश्र और शाम देश में उत्पन्न होता है।

अमदेस मोटापना amdesamoṭápaná-मों० जंगली मदनमस्त का फूल-हिं०। (Cycas circinalis or C. Inermes) -ले०। इं० मे० मे०।

अमधिआक amdhiáka-बं० जंगली अंगूर, पञ्जीरी-हिं०, द०। Vitis indica-ले०। इं० मे० मे०।

अमधुर amadhura-हिं० त्रि० [सं०] कटु। अरुचिकर।

अमध्यस्थ धर्म्मिणी amadhyasthadharmmiṇí-सं० त्रि० मध्यस्थ धर्मवाली नहीं, वरन् अमध्यस्थ धर्मवाली अर्थात् अनुदासीन (सुखादिक भोग भोगने वाली)। आत्मा (पुरुष) में इसके विपरीत गुण हैं अर्थात् वह मध्यस्थ धर्मवाला है यानी वह सुख दुःखादि में उदासीन रूप मध्यस्थ की भांति है। सु० शा० १ अ०।

अमनाफ़ आ ama-náfaā-अ० मुर्गी (A hen) मेमो०।

अमन् amun-ता० अजवाइन (Carum Copticum.)

अमन्तमूल amant-múl-हिं० पुं० नरलो, वन ककड़ा-पं०।

अमन्दः amandah-सं० पुं० } वृक्ष,
अमन्द amanda-हिं० संज्ञा पुं० } पेड़
(Tree.)। श० । वि०।

अमम amam-ता अजवाइन (Carum (Ptychotis) Ajowán.

अमयूलो फ़रास amyúlo-frás-रू० रामतुलसी (Ocimum gratissimum.)

अमयूस amyús-यु० नानूख़ाह, अजवाइन (Carum (Ptychotis) Ajowan.

अमम्रिः amamrih-अविनाशी, न मरने वाला। अथर्व० सू० २७। २६। का० ८।

अमर amara-हिं० वि० [सं०] मरण रहित, नित्य चिरस्थायी। जो मरे नहीं। चिरजीवी। हिं० संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अमरा, अमरी] (१) लिंगानुशासन नामक प्रसिद्ध कोश के कर्ता अमरसिंह (कोषकार), (२) अमरकोश। (३) Amoora Cucullata, *Lind* Andersonia cucullata, Rox. Amoora, Hooded. इं० है० गा०। (४) मरुद्गणों में से एक। उनचास पवनों में से एक। (५) पारद, पारा। (६) हड़जोड़ का पेड़। अस्थि संहार। (७) देवता। (८) वज्री वृक्ष। सिजू-बं०। (९) स्वर्ण, सोना।

अमर áamar अ० मसूढे, दांतों के मध्य का मांस। अमूर (व० व०)। गम्ज़ (Gums.) -इं०।

अमरकणा amara-kaṇá-सं० स्त्री० गजपिप्पली (Scindapsus officinalis.)। वै० निघ० २ भा० पांडुचि० भूनिम्बादि गुटी।

अमरकण्टिका amara-kanṭiká-सं० स्त्री० शतावरी (Asparagus racemosa.) रा० नि० व० ४।

अमरकन्दः amar-kandah-सं० पुं० कन्द विशेष (A sort of tuber.) वै० निघ०।

अमरकलानिधि रसः amara-kalá-nidhi-rasah सं० पुं० मोती, मूँगा, पारा, गंधक समान भाग लेकर बिजौरे के रस में घोटकर गोला बनावें फिर उस गोले को बारीक कपड़ मिट्टी करके सुखा लेवें, फिर दो शरावों के बीच में रखकर अग्नि में पका लेवें। ठण्डा होने पर बारीक चूर्ण कर रख लेवें। मात्रा—३ रत्ती। उचित अनुपान में सेवन करने से राजयक्ष्मा को नष्ट करता है। र० प्र० सु० राजयक्ष्मणि।

अमरकली amarkalí-हिं० स्त्री० आर्डिसिया कोलोरेटा Ardisia Colorata-ले० A., red flowered-इं०। इं० है० गा०।

अमरकालिकः amarkálikah-सं० पुं० वृश्चिकाली (Tragia involucrata.) भैष० वा० व्या० सिंहना० गुग्गुल।

अमरकाष्ठम् amarakáshṭham–सं० क्लो० देवकाष्ठ, देवदारु। (Pinus Deodara.)

अमरकुसुमम् amarakusumam–सं० क्लो० लवंग, लौंग। Cloves (caryophyllus aromaticus.) । वं० निघ० त्रयरोग० त्रैलोक्य–चि० रस।

अमरख amarakha–हिं० पुं० कमरख। A fruit (Averrhoa corimbola.)

अमरगटा amaraṭgatá-आमला (Phyllanthus Emblica)

अमरगन्धका amaragandhaká–सं० स्त्री० अज्ञात।

अमरग्रीस amergris–इं० अम्बर-अ०, हिं० ब०, मह०, फा० अम्ब्र ग्रसीआ ambra grsea–ले० इं० मे० मे०।

अमरजः amarajah–सं० पुं० (१) दुर्गन्ध खैर, गूह बबूल। Acacia Farnesiana, *Willd.* रा० नि०। (२) देवदारु (Pinus deodara (३) नदीवट। वै० नि० २ म० ग्रंथ्यादि ज्व०।

अमरजेल amarjel–श० अज्ञात

अमरतरुः amara-taruh–सं० पुं० देवदारु (Pinus deodara) अर्कादिः "किराता-मरतरूरसनाः।" वै० निघ० सा० ज्व०।

अमरद āamarad–करफ़्स, अजमोदा (carum roxburghianum).

अमरदारु amardáru–सं० पुं० क्लो०, हिं० संज्ञा पुं० वृक्ष विशेष। देवदारु का पेड़। तैल देवदारु रा० नि० व० १२। चि० क० क० वल्ली स्त्री० रोग चि०। तैल तेवदारु वृक्ष। मलंगा देवदारु-बं०। (Cedrus deodara).

अमरद्रुः Amaradruh–सं० पुं० विट् खदिर वृक्ष, दुर्गन्ध खदिर। गूह बबूल। गुजे बाबला बं०। (Acaciafarnesiana, *Willd.*)

अमरन्थ amaranth–इं० चौलाई। देखो—अमारेन्थस।

अमरपुष्पम् amara-pushpam–सं० पुं० क्लो० पूगफल, सुपारी (Arecæ semima (२) काश तृण, कास (–सा) (Saccharum spontaneum) (३) आम्र, आम (Maugifera Indica) । (४) केतक, केवड़ा (Padanus odoratissimus) मे० पपञ्चक।

अमरपुष्पकः amara-pushpakah–सं० पुं० देखो–अमरपुष्पक।

अमरपुष्पक amara-pushpaka-हिं० संज्ञा पुं० काश तृण, काँस का पौधा। काँसा (Saccharum spontaneum) । प० मु० (२) कास भेद। र० मा०। (३) ताल-मखाना। (४) गोखरू। (५) कल्पवृक्ष।

अमरपुष्पिका amara-pushpiká }
अमरपुष्पी amara-pushpi }
–सं० स्त्री० चोर पुष्पी, शंखिनी। काचकी, चोर खड़िका–बं०। See–ṣhankhiní। रमा०। (२) काशतृण, कासा (Saccharum spontaneum)। देखो—अमरपुष्पक।

अमरफलम् amara-phalam–सं० क्लो० अमृतफल, नाशपाती The pear (tree Pyrus communis.)

अमरबेल amara-beq–हिं० संज्ञा० पु० }
अमरबल्ली amara-balli " " स्त्री०। }
अमरबेली amara-beli– " " " }
अमरबेल्य amara-belya-गु०, }
अकासबेल, आकाश बौरँ, आकाशवल्ली (cassytha Filiformis, *Linn.*) । फा० इं० ३ भा०।

अमर (ल) रत्नम् amara (la) ratnam सं० क्लो०। बिल्लौर। रा० नि०।

अमरत्न amara tna–हिं० संज्ञा पु०। स्फटिक (मणी) फिटकिरी (Alumen) । रा० नि०। काच। देखो—काचः (Káchah)

अमरवल्ली amara-vallí–हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० अंबरवल्ली] अकासबेल। आकाशबंवर। अमरबौरिया। (cassythaiei formis,

अमरतानāamarrtan
उमैर्तान āumairtán } -अ० जिह्वा मूल में दो छोटी छोटी अस्थियां हैं जिन्होंने ऊर्ध्व कंठ को भीतर की ओर से घेरा है।

नोट—चूँकि चुल्लिकास्थि (Os Hyoid.) के अतिरिक्त कोई और अस्थि नहीं इसीलिए ये उसी अस्थि के दूसरे प्रवर्द्धन (निकाल) हैं जिनको लघुशृङ्ग व बृहत् शृंग कहते हैं।

अमरलगड्ड amarala-ḍḍa-द० अज्ञात।

अमरलता amara-latá-हिं० स्त्री० गुरुच, सोमलता (Tinospora cordifolia.)

अमरलता का बीज amara-latá-ká-bíja -हिं० पु० गुरुच बीज। Tinospora cordifolia (Seeds of-)

अमरवल्लरी amara-vallarí
अमर वल्लिका amara-vallika
अमरवल्ली amara-vallí } -सं० स्त्री० अकासबेल आकाशवल्ली (Cuscuta Reflexa.) भा० पू० १भ० गु० व० मद० व० १।

अमरस amarasa-हिं० संज्ञा पु० [हिं० आम+रस] निचोड़ कर सुखाया हुआ आम का रस जिसकी मोटी पर्त्त बन जाती है। अमावट।

अमर सर्षपः amara-sarshapah--सं० पु० देवसर्षप, राई। Sinapis juncea.। वै० निघ०। See-Deva-sarshapa.

अमरसालह् amra-sáláh
अमुञ्जनह् amujjanah } अ० धेनुक पक्षी, हरकीलह् (गृध्र सदृश एक मांसाहारी पक्षी है)।

अमरसी amrasí-यु०, आस वृक्ष (Myrtus comumnis)। हिं० वि० [हिं० अमरस] आम के रसकी तरह पीला। सुनहला-यह रंग एक छटांक हलदी और ८ मा० चूना मिलाकर बनता है।

अमरसुन्दरः amarasundarah-सं० पु० पारद की भस्म, शिंगरफ, शुद्ध हरताल की भस्म और गन्धक इन सबको बराबर लेकर भांगरे के रस से और काकमाची के रससे भावना देकर कुक्कुट पुट में पकाएँ, इसी प्रकार ५ बार करने से यह सिद्ध होता है। उचित मात्रा से उचित अनुपान द्वारा सभी रोगों को नष्ट करता है। र० प्र० स०, र० म० मा० अतिसार ज्वरादौ

अमरसुन्दरी amara-sundari-सं० स्त्री० ज्वराधिकारमें वर्णित रस, यथा-त्रिकटु, त्रिफला पीपलामूल, अकरकरा, रेणुका, चित्रक, विडंग, चातुर्जात, मोथा, लौहभस्म, पारद, विष तथा गंधक इनको समान भाग लेकर चूर्ण करें। पुनः इससे द्विगुण गुड़ मिलाकर कोल अर्थात् बेरी सदृश गुटिका निर्मित कर सवेरे सेवन करें।

प्रयोग०। श्वास, खासी अपस्मार, सन्निपात, गुदरोग, वातव्याधि और उन्माद को नष्ट करती है। वृ० नि० र० भा० वा०।

अमरा amará=हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] (१) अम्बाड़ा, आम्रातक। The hog plum (Spondias man-gifera) --सं० स्त्री० (२) दूर्व्वा, दूब (Cynodon dactylon, *Pers.*)। मे० रत्रिकं। (३) गुड़ची, गुरुच, गिलोय (Tinospora cordifolia) र० मा०। (४) इन्द्रवारुणीलता, इन्द्रायन-हिं०। राखालशशा -बं०। (Citrullus Colocynthis) रा० नि० व० ३। (५) नील दूर्व्वा, नीली (या हरी) दूब (Cynodon Linearis) (६) गृहकन्या, घीकुवार (Aloe Barbebedeis)। रा० नि० व० ५। (७) नीली वृक्ष, नील (Indigofera indica) (८) मेषशृंगी। मेढ़ासिंगी (Gymnema sylvestres (९) वृश्चिकाली, बिछाती (Fragia involnerata)। रा० नि० व० ८। (१०) नदीवट, वटवृक्ष (Ficus bengal ensis) रा० नि० व० ११। (११) चमड़े की झिल्ली जिसमें गर्भ का बच्चा लिपटा रहता है। आँवल, जरायु। (Uterus)। मे० रत्रिकं। (१२) जेर, जेरी, खेड़ी, (Placenta) (१३) गर्भ

नाड़ी, फूल । भैष०स्त्री०रो० (१४) नाभिनाल । नाभि का नाल जो नव-जात बच्चे से लगा रहता है । (१५) सेहुँड़, थूहर ।

(१६) नीली कोयल । बड़ा नील का पेड़ (१७) बरियारा । (१८) बरगद की एक छोटी जंगली जाति ।

अमराई amaráí–हिं० संज्ञा स्त्री०, [सं० आम्रराजि] आम का बाग़, बगीचा, आम की बारी (A garden of mango trees.) –पं० पबना, मोरेड़ ।

अमरापातन amará-pátana–हिं० खेड़ी गिराना ।

अमरापातन-विधिः—(१) कडुई तुम्बी, साँपकी काचली, सफेद सरसों, कडुआ तेल, योनि में इनकी धूनी देने से अमरा (खेड़ी) गिर जाती है ।

(२) कलिहारी की जड़ पीसकर हाथ, पाँव में लेप करने से खेड़ी गिरती है ।

(३) पीपर आदि का चूर्ण मद्य के साथ पीने से खेड़ी गिर जाती है ।

भैष० र० स्त्री० रोग० चि० ।

अमरालकः amarálakah–सं० पुं० अम्बाड़ा, आम्रातक । (Spondias mangifera.)

अमराव amaráva–[सं० आम्रराजि, हिं० अमराई] आम की बारी । आम का बग़ीचा । अमराई ।

अमराह्वम् amaráhvam–सं० क्लीं० देवदारु काष्ठ । Cedrus Deodara (Wood of.–) वा० सू० १५ एलादि० अगुरुः । "शुक्तिर्व्याघ्रनखोऽमराह्वमगुरुः ।"

अमरी amarí–सं० स्त्री० नील दूर्व्वा, हरी दूब (Cynodon Linearis.) । (२) कृष्ण निर्गुण्डी, नीला सँभालू (Vitex Negundo, Black var. of–) । (३) मूर्व्वा (Sanseviera Roxburghiana.) । वै० निघ० । –मल०, । (४) नील वृक्ष (Indigofera Indica.) । –आसा०,–हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] (५) आसन का पेड़ (Terminalia Tomentosa.) । सज । सग । पियासाल एक पेड़ जिसमें एक प्रकार की चमकीली गोंद निकलती है । इस गोंद को सुगंधके लिए जलाते हैं और संथाल लोग इसे खाते भी हैं । इसकी छाल से रंग बनता है । और चमड़ा सिझाया जाता है और जलाने में वर्त्ता जाता है । इसमें से लाही निकलती है और इसके पत्तियों पर रेशम का कीड़ा पाला जाता है ।

अमरीके का सुमाक़ amaríke-ká-sumáqa -द०, सुमाक़े अमरीकह् (Cæsalpinia Coriaria, *Willd.*) स० फा० इं० ।

अमरूत amarúta–हिं० संज्ञा पुं० [सं० अमृत (फल)] अमरूद (Psidium Guyava, *Linn.*) दी ग्वावा The Guava. इं० । जामविही (मध्यभारत और मध्य प्रदेश में) पेरुक, पेरूफल (दक्षिण में) । रुबी (नेपाल तराई में) । सफरी, अमरूद (अवध में) । लताम (तिर्हुत में) । दृढ़बीजं, पेरुकं, मांसलं अपृथक् त्वचं, अमरूदं, जांबफलं, वर्तुलं, मृदुपीतकं, अम्रूत फलम् मधुराम्लक, तुवर, अमृत फल–सं० । प्यारा –बं० । रक्त और श्वेत भेद से अमरूत दो प्रकार का होता है । (ये एक ही जाति के दो भेद हैं)

मधुरियम्–आसा० । अमुक–नैपा० । अमरूत–पं० । पेराला-बम्ब० । जाम्ब –मह० । सेगापु, कोय्या–ता० । जाम–ने० । सीबी –कना० । मालकाटवेंग–बर० । अम्रूद–अ० । –फ़ा० ।

(१) रक्त अमरूद, लाल अमरूत । सीडियम पॉमिफर्म् Psidium Pomiferum, *Linn.* (Fruit of– Red Guava) । रक्त अमरूद फलम्, रक्त बहुबीज फलम्–सं० । लाल सफरी आम, लाल सफरी, लाल जाम–द० । लाल प्यारा, लाल गो याछि फल–बं० । अम्रूदे अह्मर, कुम..स्स्रा-अ० । अम्रूदे सुर्ख़–फ़ा० । (वेल्लई) शिवप्पु -गोय्याप्-पज़म, सेगापु, कोय्यापलम्–ता० ।

एर्रजाम पण्डु, एर्र-गोय्या-पण्डु, जाम्-कोइआ –ते० । चेम्-पेर-चेम्-पेरक्क, चोवन्न-मलाक-केप्पर, पालम-पेर-मल० । केम्पु-शिबे-हण्णु–कना० । ताम्बड-जाम्ब, ताम्बड-तूप-केल–मह० । लाल पियार, लालपेरु, लाल जामूरूद गु० । रत पेर, रत पेरगडि–सिं० । मालकी-नी, मलक्का बेङ्ग –बर० । मोघरियान–आसा० । ताम्बड-पेरु –बम्ब० ।

(२) श्वेत अमरूद, सफेद अमरूत, सीडियम् पायरिफेरम् Psidium Pyriferum, *Linn.* (Fruit of– White Guava)-लें० । सुफ़ेद सफरी आम सुफ़ेद जाम्-द्व० । धोप- गोश्र् आछि फल, सादा पियारा --बं० । अमूरूदे अबैज़–अ० । अमूरूदे सुपेद --फ़ा० । वे ल्लइ गोय्या-पज़म-ता० । तेल्ल जाम--पण्डु, तेल्ल-गोय्या-पण्डु–ते० । वेड्-पेरा वेड्-पेरक्क, वेल्ल-मलाक्-कप्पेर –मल० । बिलि-शिबे-हण्णु–कना० । पांडर-जाम्ब, पांढर तूप-केल–मह० । उजलोपियार, उज्लो-पेरु, सफ़ेद जमूरूद–गु० सुदुपेर, सुदुपेर-गडि–सिं० । मालका-फिऊ--बर० । पाएर--कों० । आमुक --नैपा० । पाण्ढर-पेरु--बम्ब० ।

जम्बू वर्ग

(*N. O. Myrtaceae.*)

उत्पत्ति स्थान—अमेरिका; यह लगभग सम्पूर्ण भारतवर्ष साधारणतः वंग प्रदेश में लगाया जाता है ।

वानस्पतिक वर्णन—एक पेड़ जिसका धड़ कमज़ोर, टहनियाँ पतली और पत्तियाँ पाँच या छः अंगुल लम्बी होती हैं । इसका फल कच्चे पर कषैला और पकने पर मीठा होता है और उसके भीतर छोटे छोटे बीज होते हैं ।

इसके ताजे धड़ की छाल का बाह्य पृष्ठ चिकना और भूरे रंगका होता है, और उसपर पर्त के समान सूखी हुई छाल के चिह्न होते हैं । कभी कभी वे कुछ कुछ लगे होते हैं । धूसर उपचर्म के नीचे ताजी छाल हरित वर्ण की होती है, इसके भीतरी पृष्ठ पर लम्बाई की रुख उभरी हुई रेखाएँ पड़ी होती हैं तथा यह हलके धूसर वर्ण का होता है । स्वाद—कसैला और ग्राह्य अम्ल होता है । पत्र-सुगंधि युक्त अण्डाकार या आयताकार, लघु डंडलयुक्त नीचे की ओर कोमल रोमों से आवृत और मुख्य पत्र शिराएँ अत्यन्त स्पष्ट होती हैं ।

रासायनिक संगठन—छाल में कषायीन (टैनीन) २८·४ प्रतिशत राल और कैल्सियम ऑग्ज़ेलेट के रवे होते हैं । अधिक परिमाण में कार्बोहाइड्रेट्स (कार्बोज) और लवण होते हैं । पत्र–में राल, वसा काष्ठोज (cellulose) कषायीन (टैनीन) उड़नशील तैल, हरिन्मूरि (Chlorophyll) और खनिज लवण आदि होते हैं । वसा क्लोरोफार्म में पूर्णरूप से और ईथर या एलकोहल में अंशतः विलेय होता है । किंचित हरित उड़नशील तैल में युजिनोल (Eugenol) नामक पदार्थ होता है । यह तैल क्लोरोफार्म ईथर या एलकोहल में विलेय होता है । इस पेड़में स्फुरिक (Phosphoric) चुक्र (Oxalic) और सेव (Malic) अम्लों (Acids) के साथ मिले हुए कैल्सियम तथा मैंगानीज वर्तमान होते हैं । मूल, कांड त्वक् तथा पत्र में अधिक परिणाम में टैनिक एसिड (कषायिनाम्ल होता है ।

प्रयोगांश—त्वक् (मूल तथा कांड) फल और पत्र व भस्म ।

इतिहास—वि० डिमक महोदय के मतानुसार दोनों प्रकार के अमरूत अमेरिका से लाए गए । सम्भवतः पुर्तगाल निवासी इसको यहां लाए । पर भारतवर्ष में कई स्थानों पर यह जंगली होता है ।

प्रभाव—कांड, त्वचा और मूलत्वक् संकोचक हैं । अपक्व फल न पचने योग्य होते और वमन तथा ज्वरोत्पादक होते हैं ।

गुणधर्म तथा उपयोग

गुण—कषैला, मधुर, खट्टा है और पका अमरूद स्वादिष्ट होता है । यह वीर्यवर्धक, बल, पित्तघ्न, शीतल कफ का स्थान है तथा भ्रम दाह,

और मूर्च्छा को नष्ट करता तथा भारी है। अभि० नि० १ भा० ।

यूनानी मत से—

प्रकृति—प्रथम कक्षा में शीतल और दूसरो कक्षा में रूक्ष है। किसी किसी के मत से १ कक्षा में सर्द व तर तथा मधुर उष्ण प्रकृति युक्त।

हानिकर्त्ता—आध्मान कारक, शीत प्रकृति तथा आमाशय नैर्बल्य को।

दर्पघ्न—सोंठ का मुरब्बा और सौंफ (मिर्च स्याह तथा लवण)।

प्रतिनिधि—सेब, बिही या नाशपाती आवश्यकतानुसार।

मुख्य कार्य—हृद्य, हृदयबलदायक तथा आमाशय व पाचन शक्ति को बल देने वाला है।

मात्रा—मध्यम परिमाण में शक्त्यानुसार २-४।

शर्बत की मात्रा—२ से ४ तो० तक व न्यूनाधिक।

गुण, कर्म, प्रयोग—अपने कषायपन तथा क़ब्ज (संकोच) के कारण संग्राही है। मवादका अवरोधक और अपनी शीतलता तथा अम्लता के कारण तृषा तथा पित्त को प्रशांत करता है। अपने संग्रहण वा संकोच (क़ब्ज़) तथा कषायपन अम्लत्व और सुगंध के कारण आमाशय को बल प्रदान करता तथा उसके परदों को स्थूल एवं सशक्त बना देता है। (नफा०)।

यह आह्लादकर्ता और शक्ति प्रदान करता है। संग्राही तथा कोष्ठमृदुकर होने पर भी जिला करता है। हृदय आमाशय और पाचन शक्ति को बलवान करता, प्रकृति को मृदु कर्त्ता और मूर्च्छा को दूर करता है। क्षुधा को बढ़ाता और मस्तिष्क को शीतल रखता है। इसका गण्डूष हृद्य तथा बल्य और रक्तपित्तघ्न है। इसके पत्र अतिसार तथा व्रण के लिए अत्यन्त लाभप्रद है। फिटकिरी के साथ इसका क्वाथ दाँतों को लाभप्रद और इसके जले हुए पत्र तूतियाकी प्रतिनिधि है। (निर्विषैल)। म० मु०।

इसके पुष्प हृद्य, हृदय बलदायक, रक्तनिष्ठीवन तथा अतिसार को नष्ट करने वाले हैं। इसका लेप चक्षु शोथ लयकर्त्ता है। इसके बीज आमाशयस्थ कृमिघ्न हैं। इसके पत्र अतिसार के बद्धक और शुष्क पत्र को बारीक पीसकर छिड़कने से व्रण शोधक एवं पूरक हैं। इसका निर्यास दोष लयकर्त्ता और बलवान मुंज़िज (मल पक्ककर्त्ता) है। इसकी लकड़ी और जले हुए पत्र तूतिया की प्रतिनिधि हैं। अवचूर्णन करने से ये क्षतों को शुष्क करते हैं। लेखक के अनुभव में मधुर अमरूद पेचिश (प्रवाहिका) को नष्ट करता है। बु० मु०।

नव्यमत

इसके फल अर्थात् अमरूद देशी लोगों को बहुत प्रिय है। वे इसकी सुगंधि को बहुत पसंद करते हैं। यह संग्राही है और मलावरोध जनन की प्रवृत्ति रखता है। युरोप निवासी इसको जेली रूप में अथवा पकाकर खाना अधिक उत्तम ख़्याल करते हैं। गोआ के पुर्तगाली इससे एक प्रकार की पनीर प्रस्तुत करते हैं। इसकी छाल संग्राही है और बालकों के पुरातन अतिसार की औषध रूप से यह फार्माकोपिया ऑफ इण्डिया में प्रशंसित है। डॉक्टर वेट्ज़ (Dr. Waitz) अर्द्ध आउंस मूलत्वक् को छः आउंस जल में ३ आउंस रहने तक क्वथित कर उपयोग में लाने का आदेश करते हैं। इसकी मात्रा—१ वा अधिक चाय की चम्मच भर दिन में ३ या चार बार दें। वे इसको बच्चों के गुदभ्रंश रोग में बाह्य संकोचक रूप से उपयोग करने की शिफ़ारिश करते हैं। अतिसार में इसके पत्रका भी सफलतापूर्वक उपयोग किया जा चुका है।

डिसकॉर्टिल्ज (Discourtilz) सुगंधलेपहारक औषधों में इस पौधे का वर्णन करते हैं। इसके कोमल पत्र एवं पल्लव का क्वाथ वेस्ट इन्डीज़ में ज्वरघ्न तथा आक्षेपहर स्नानों में प्रयुक्त होता है तथा पत्र का फांट मस्तिष्क विकारों, वृक्क प्रदाह और प्रकृति दोष (cachexia) में। आमवात में इसके पीसे हुए पत्र का स्थानिक उपयोग होता है। इसका सत्व अपस्मार तथा कम्पवात में प्रयुक्त होता है। बालकों के आक्षेप

(convulsion) में इसके टिंक्चरको उसकी रीढ़ पर मालिश करते हैं। फल तथा फल का मुरब्बा ये दोनों संग्राही हैं, और उन रोगियों के लिए जो अतिसार और प्रवाहिका से पीड़ित हैं, अत्यन्त उपयोगी हैं। फा० इं० २ भा०।

कांड त्वक् तथा मूलत्वक् संग्राही हैं। अपक्व फल पचने के अयोग्य है और वमन तथा ज्वरांश उत्पन्न करता है।

मनोहर फल के कारण इसके वृक्ष की बड़ी प्रतिष्ठा है, परन्तु इसके बीज हानिकारक होते हैं। इसकी जेली हृदय बलदायक और मलावरोध के लिए उत्तम है। फलत्वक् युक्त इसको खाना चाहिए। फलत्वक् रहित खाने पर यह मलावरोध करता है। अपक्व फल अतिसार में प्रयुक्त है। गैरड (Garrod) ने रक्तवात में इसके फल की बड़ी प्रशंसा की है। वह जल जिसमें इसके फल तर किए गए हों बहुतमूत्र जनित तृषा के लिए उत्तम है। विशूचिका जन्य छर्दि तथा अतिसार के निग्रहण के लिए इसका (मूलत्वक्) क्वाथ प्रयोग में आता है। इसके क्वाथ का स्कर्वी तथा दूषित व्रण में, मुख धावन रूप से सूजे हुए मसूढ़ों में लाभदायक प्रयोग होता है। इसके पीसे हुए पत्र की अत्युत्तम पुल्टिस तैयार होती है। इं० मे० मे०।

इसकी छाल संग्राही, ज्वरघ्न और आक्षेपहर; फल कोष्ठमृदुकर और पत्र संग्राही है। इं० ड्र० इं०।

अमरूद amarúda-हिं०,अ० अमरूत, अमृतफल। (Psydium Pyriferum.).

अमरूदे-अबैज़ amarúde-abaza-अ०, हिं० अमरूद। See-Amarut.

अमरूदे-अह्मर amarúde-aḥmar-अ०

अमरूदे-सुर्ख़ amarúde-surkh-फा० लाल अमरूत, सुर्ख़ अमरूद। (The Red guava.) । See-Amarúta.

अमरूदे-सुफ़ेद amarúde-sufeda-फ़ा०, हिं० श्वेत अमरूत (The white guava.) See-Amarúta.

अमरुफलम् amaruphalam सं० क्ली० उत्तर देश में प्रसिद्ध फल विशेष । गुण—अमरुफल शीतल मल को पतला करने वाला, दस्तावर, दाहकारक, तथा रक्तपित्त, कामला, मूत्रकृच्छ्र, तथा मूत्राश्मरी को नाश करने वाला है। वै० निघ०।

अमरूल amarúla बं० चूका, खटकल। चांगेरी -सं०। (Rumex Scutatus.)

अमरेन्द्रतरुः amarendra-taruh-सं० पुं० देवदारू वृक्ष (Cedrus Deodara.)। वै० निघ० २ भा० ज्व० निगु'ण्डीधूपः।

अमरेन्द्ररसः amarendra-rasah-सं० पुं० शुद्ध गन्धक और सोहागा प्रत्येक १ मा० गोदंती २ मा० इनको मिलाकर चार पहर तक भाँगरे के रस में मर्द्दन करें, फिर ९ दिन तक पान के रस में घोटें। मात्रा—मुद्ग प्रमाण। गुण—भयानक ज्वर, पित्तजनित दाह, अनेक प्रकार के शूल, और गुल्म को नष्ट करता है। पथ्य—दही, भात। र० का० यो०।

अमरेश्वरोरसः amareshvaro-rasah-सं० पुं० पारा और उससे द्विगुण गन्धक लेकर कज्जली बनाएँ, और जमीकन्द के रस से सात भावना दें, फिर शंख, थूहर, धतूरा, कौड़ी, छोटे शंख, चित्रक, भिलावाँ, हरिण का सींग, अंगुलिया थूहर और सेंधा नमक इनके क्षारों को प्रत्येक गन्धक के समान मिलाकर घोटें, फिर थूहर का क्षार, त्रिकुटा, जमीकन्द, वंशलोचन, भिलावाँ और चित्रक प्रत्येक को गन्धक के समान डालें और सूरण के रस की २१ भावना देवें। मात्रा—२ रत्ती। अनुपान—घी। गुण—अर्श को २१ दिन में नष्ट करता सिद्ध योग है। र० कौ० अर्शोधिकारे।

अमरेर amarer-पं० चेन्जुल, थान, सिबारू, पिअो, शकेई। -झेलं० सुस्स, संसरू-चनाब। मेमो०। Bœhmeria Salicifolia, *D. Don.* एक पौधा है जिसका फल खाया जाता है। Debregeasia Bicolor, *Wedd.*

अमरैया amaraiyá-हिं० संज्ञा स्त्री० देखो—अमराई।

अमरोला amarolá-हिं० चूका, चांगेरी। (Rumex Scutatus.).

अमर्त्य amartya-सं० त्रि० जिसकी मृत्यु न हो। अथर्व०। सू० ३७। १२। का० ४।

अमर्दित amardita हिं० त्रि० [सं०] जिस का मर्दन न हुआ हो। जो मला न गया हो।

अमर्ष amarsh-हिं० संज्ञा पुं० [वि० अमर्षित, अमर्षी] क्रोध, कोप, रिस।

अमर्षण amarshana-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] क्रोध, रिस। (Anger.)। असहिष्णुता। अक्षमा।

अमर्षी amarshí-हिं० वि० [सं० अमर्षिन्] क्रोधी, रागी, कोपान्वित असहनशील। (Passionate, choleric.).

अमलम् amalam-सं० क्लो० } (१)
अमल amala-हिं० संज्ञा पुं० } अभ्रक, अबरक Talc (Mica.)। मे० लत्रिक। (२) समुद्रफेन, समुद्रझाग। (Cuttle-fish bone.) र०मा०। (३) कर्पूर, कपूर (Camphor.)। वैं० निघ० २ भा० अपस्मा० चि०। (४) रौप्यमाक्षिक, रूपामक्खी। See-Roupyamákshika. (५) पित्त (Bile.)। See-Pitta.। (६) कतक वृक्ष, निर्मली। (Strychnos Potatorum.)। (७) गंधद्रव्य विशेष। (An Aromatic Substance.)

अमल amala-हिं० संज्ञा पुं० [अ०] (१) मादक वस्तु, नशा। (Intoxication (२) अफीम (Opium)। (३) काम (Cupid)। (४) प्रभाव, असर। (५) प्रयोग (Use)।

—वि० [सं०] निर्मल। स्वच्छ।

अमल ăamala-अ० (ए० व०) अअमाल कार्य, कार्य करना।

अमल, फ़िअ्ल और सिनुअ का भेद। अमल प्रधान है तथा फ़िअ्ल सामान्य अर्थात् अमल उस फ़िअ्ल का नाम है जो प्राणियों जैसे मनुष्य व पशु से इच्छापूर्वक सम्पादित हो। विरुद्ध इसके फ़िअ्ल में इसका बंधन नहीं। यह प्राणि एवं खनिजों में से हर एक के कार्य तथा प्रभाव के लिए बोला जाता है।

अमलकी amalakí सं० स्त्री० भुँइ आमला (Phyllanthus neruri.)

अमलक्यादिखण्ड amalakyádi-khanda-सं० पुं० आमला १ कुडव (१६ तो०) लेकर पकाएँ, पुनः टुकड़े टुकड़े करके ६४ तो० गोदुग्ध में पीस ६४ तो० गोघृत में पकाएँ, पुनः उसमें ६४ तो० मिश्री अडूसा मूल १६ तो०, जीरा, मिर्च, पीपल, दालचीनी इलायची, तेजपत्र, नागकेशर प्रत्येक १-१ तो० बारीक चूर्ण कर उक्त अवलेह में मिश्रण कर उत्तम पात्र में स्थापित करें। उचित मात्रा में सेवन करने से भयानक दाह, मूर्च्छा, पुरानी छर्दि दूर होती है। वंगसे० सं० दाह चि०।

अमलक्यादि गणः amalakyádi-ganah आमला, हड़- पीपल, चित्रक।

गुण—प्रत्येक ज्वरनाशक, कफघ्न, भेदी, दीपन और पाचन है। वगसे० सं० गण पाठाधिकारः।

अमलक्यादि पाकः amalakyádi-pákah-सं० पुं० काकड़ासिंगी, तालीशपत्र, त्रिफला, खिरेटी, गिलोय, विदारीकन्द, कचूर, जीवन्ती, दशमूल, चन्दन, नागरमोथा, कमलगट्टा, इलायची, अडूसा, दाख, अष्ट वर्ग; पुष्करमूल, पृथक् पृथक् १॥-१॥ पल लें। और १६ सेर पानी में ५०० आमला औटाएँ फिर औंट जाने पर निकाल तैल घृत ६-६ पल लेकर आमलों को भूने तदनन्तर आधा तुला मिश्री की चाशनी करके आमलों का पाक करें। जब शीतल होजाए तो ६ पल शहद डाल दें। फिर वंशलोचन, चातुर्जात और पिप्पली इनमें से प्रत्येक २-२ पल डाले और उक्त शृंगयादि का चूर्ण भी डालें।

गुण—इसके सेवन से रक्तपित्त, क्षय, कास, कुष्ठ, भ्रम, प्यास, तथा बुढ़ापा दूर होता है। यो० चि० क्षय० चि०।

अमलगुच amalagucha-पं० पद्मकाष्ठ पदुमकाठ। (Prunus Sylvatica-)

अमलच्छदा amalachchhadá-सं० स्त्री० भोजपत्र। (Betula Bhojpatra).

अमलज āamalaj-अ० खर्नूब भेद। See--kharnúba.

अमलतास amalatása-हिं० (द०) संज्ञा पु० [सं० अम्ल] अमिलतास, किरवरा, घन बहेड़ा, किरवालो, किरवारों, सियार (-ह) लाठी (-लठिया) बादर तोरई, बाँदर ककड़ी, गिरमाला, शोणझाली, आमलटास्।

केशिया फिस्च्युला (Cassia fistula, *Linn.*) केथार्टोकार्पस फिस्च्युला (Cathartocarpas fistula, *Linn.*)-ले०। इण्डियन लेबर्नम् (Indian laburnum), पुडिंग पाइप ट्री (Pudding pipe tree), पर्जिंग केशिया Purging cassia (Pod or legume of)-इं०। केशीं केनीफिशिअर (Casse Canéficier)-फ्रां०।

संस्कृत पर्याय - चक्रपरिव्याधः (वै०), जठरनुत् (शे०), राजवृक्षः, सम्पाकः, चतुरंगुलः, शम्पाक, आरेवतः, व्याधिघातः, कृतमालः, सुवर्णकः, (ख०), मन्थानः, रोचनः, दीर्घफलः, नृपद्रुमः, प्रग्रहः, हिमपुष्पः, राजतरुः, कृतघ्नः, महाकर्णिकारः, ज्वरान्तकः, अरुजः, स्वर्णालुफलः, स्वर्णपुष्पः, स्वर्णद्रुः, कुष्ठसूदनः, कर्णाभरणकः, महाराजद्रुमः, कर्णिकारः, स्वर्णाङ्गः, आरग्वधः, आरग्वधः, आरग्वधम्, सम्पाकः कंडुघ्नः, रेचनः, स्वर्णभूषण। सोनालु, सों (शों) दाल, होनालु, लड़िया शोणाल, बड़ सोन्दालि। बानार-लाठी, बाँदर-लाठी, सोनाली; आमलतास, राखालवानड़ी -बं०। ख़ियार शंबर, ख़र्नूबे-हिन्दी, फ़लूस-अ०। ख़ियार-चंबर-फ़ा०। सक्के; कायिसारा-तु०। कोन्रैक्-काय्, शरक् कोन्रैक्-काय्, इरजिरुट्टम, कोमरे, कोने, मम्बल कोण्णइ-ता०। रैल-कायलु, सुवर्णमु, कोण्ड्र -कायि, रैल-चेट्टु, रैला-काय, आरग्वधमु, रेल- राला, कोयल-पन्ना, रेयलु-ते०, तै०। कोन्नक्--काय, कोन्न (-न) -मल०। कक्के -कायि, हेगके, कक्के, कक्के-मर-कना०। भावाची-मैङ्क, पाहवा, बाव्याच्या, संगातिलगर, थोर-बाहवा, बाय, बावा-बड़िलु बाह व्याचे झाड़ मह०। गड़-मालु, गरमालों, मोटो-गरमालो, गरमाल, सरमाल-गु०। आहल्ल, आहिल्ल-सिं०। नुमी, ग्नूग्यी, ग्नूशवाय्-बर०। कक्कायि, कानाल्वइलडि, बानरलाठि-कों०। कट्टुकोना-माला०। अलोश, अली, करङ्कल, कियार, कनियार, अलश-पं०। राजवृक्ष, किटोल-कुमा०। राजवृक्ष-नैपा०। चिमूकनी-लि०। नर्निक-संता० हरी-(कोल-) सोनालु-(गारो। सनारु-आसा०। बन्दरोलाट-कछा०। सन्दारी, सुनारी-उड़ि०। किनवाली, सितोली, इतोला, कितोली, भिमरी, सीम-उ० प० प्रा०। वर्गा-अव०। जग्गर वह, रैला, पिरोजह्, करकच-म० प्रा०। जग्गर, जगरुआ, कंबार, रेरा (डा)-गों०। गरमाल, बावा-बम्ब०। बड़िलु बाहवा हेगके-कु०। कानाइलड़ी-आ०। सुनारि, संदरी-सोनरी-उ० पसल (मिदली)।

परिचय ज्ञापिका संज्ञाएँ-स्वर्ण पुष्प दीर्घ फल।
गुण प्रकाशिका संज्ञाएँ - कण्डुघ्न, ज्वरान्तक, कुष्ठसूदन, रेचन।

शिम्बी या बब्बूर वर्ग।

(*N. O. Leguminosæ*)

उत्पत्ति-स्थान—प्रायः समस्त भारतवर्ष पश्चिम भारतीय द्वीप समूह और बर्मा तथा ब्राज़ील अफ़्रीका के उष्ण प्रदेश।

वानस्पतिक-वर्णन—अमलतास के वृक्ष बिना यत्न के जहाँ तहाँ उत्पन्न होते हैं। पत्र प्रायः ३-६ जोड़ेमें होते हैं, अग्र भाग में अयुग्म पत्र नहीं होता, पत्र का पृष्ठ तथा उदर मसृण और वृन्त ह्रस्व होता है। पुष्प पीतवर्ण का एवं सुदीर्घ, अवनत और अशाख पुष्प दंड पर स्थित होता है। पुष्प-बीज-कोष-एक कोष युक्त होता है जिसमें असंख्य बीजकण होते हैं। वे जितने ही परिपक्व होते जाते हैं, उतने ही अन्तर में पड़े हुए परदों की वृद्धि के साथ परस्पर पृथक् भूत होते जाते हैं। परिपक्व फल-नलाकृति, हस्ताधिक दीर्घ ह्रस्व, मज़बूत, काष्ठीय कंडल युक्त एवं नोकदार और लगभग १ इं० व्यास वृत्त से

लटका रहता है। फल का ऊपरी भाग मसृण, पकने पर गंभीर धूसर वर्ण का हो जाता है। डंठल का फाइब्रो वैस्कुलर (Fibro vascular) स्तम्भ दो चौड़े समांतर सीवनियों में विभक्त होता हैं, जैसे पृष्ठीय और उदरीय सीमंत जो शिम्बिके समग्र लम्बाई भर होते हैं। ये (सीमंत) सचिक्कण अथवा लम्बाई की रुख किंचित् धारीदार होते हैं। इनमें से हर एक दो काष्ठीय गड्ढों द्वारा निर्मित और एक संकुचित रेखा द्वारा संयुक्त होता है। एक फली में पाए जाने वाले २५ से १०० बीजों में से प्रत्येक अत्यन्त पतला काष्ठीय पर्दा से निर्मित एक कोष में स्थित होता है। बीज चक्राकार रक्ताभ धूसरवर्ण का होता है, जो चारों ओर से अहिफेनवत् कृष्णवर्ण के पदार्थ से आवृत्त होता है। यह चिपचिपा मधुर एवं दुर्गन्धियुक्त होता है।

नोट—इसका केवल यह शुद्ध गूदा ही फार्माकोपिया में प्रविष्ट हैं। पुष्पकाल:—वैषाख और ज्येष्ठ।

रासायनिक संगठन-- फल के बारीक चूर्ण के वाष्प स्रवण विधि द्वारा अर्क खींचने से मधु गंधि युक्त एक श्याम पीत वर्ण का अस्थिर तैल प्राप्त होना। तैलीय अर्क में साधारण ब्युटिरिक एसिड होता है फल मज्जा में शर्करा ६० प्रतिशत लुआब, संग्राही पदार्थ, ग्लूटीन (सरेश), रञ्जक पदार्थ, पेक्टीन, कैल्सियम् ऑक्ज़ेलेट, भस्म, निर्यास और जल सम्मिलित होता है।

प्रयोगांश—मूल, मूल त्वक्, (वृक्ष त्वक्), पत्र, पुष्प; फल, मज्जा, बीज की गिरी। अंतः परिमार्जन हेतु फल और बहिः परिमार्जन हेतु यथा कुष्ठ आदि में पत्र लेना चाहिए। सि० यो० चि० ज्व० राजादौ।

इतिहास—अमलतास वृक्ष की आदि जन्मभूमि भारतवर्ष है। अतएव प्राचीन भारतियों को उक्त औषधि का ज्ञान था। किंतु प्राचीन यूनानियों को इसका ज्ञान न था। कदाचित् पश्चातकालीन यूनानियों को अरब निवासियों द्वारा इसका ज्ञान हुआ।

औषध-निर्माण—(१) मूल त्वक् क्वाथ, मात्रा ५–१० तो० । (२) फल मज्जा, मात्रा २–४ आने भर। विरेचनार्थ आधा से १ तो०। (३) आरग्वध पञ्चक। हा० अग्नि०। (४) आरग्वधादि वा० सु०। (५) आरग्वधाद्य तैल। च० द०। (६) गुलकंद। (७) वटिका। (८) मद्य। (९) वर्तिका। (१०) अवलेह। (११) मअ्जून और (१२) फांट।

अमलतास के गुण धर्म तथा प्रयोग

आयुर्वेदीय मतानुसार-अमलतास कंडघ्न (चरक) और कफवात प्रशमन (सुश्रुत) है। अमलतास (आरग्वध) रस में तिक्त भारी उष्ण है तथा कृमि और शूल का नाश करता है और कफ, उदर रोग, प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, गुल्म और त्रिदोषनाशक है। धन्वन्तरीय निघण्टु।

आरग्वध अति मधुर, शीतल, शूलघ्न है तथा ज्वर, कण्डु (खुजली), कुष्ठ, प्रमेह, कफ और विष्टम्भनाशक है। रा० नि० व० ९।

आरग्वध गुरु, मधुर, शीतल और उत्तम स्रंसन, कोष्ठस्थ मलादि को ढीला करने वाला है। तथा ज्वर, हृद्रोग, रक्त पित्त, वातोदावर्त (ऊर्ध्व गत वायु) और शूलनाशक है। इसकी फली स्रंसन (कोठे के मलादिक को शिथिल करने वाली) रुचिकारी है। तथा कुष्ठ, पित्त और कफ नाशक है। अमलतास ज्वर में सर्वदा पथ्य और परम कोष्ठशोधक है। भा० पू० १ भा०।

राजवृक्ष (अमलतास) अधिक पथ्य मृदु, मधुर और शीतल है। इसका फल मधुर, वृष्य, वात पित्त नाशक और सर (दस्तावर) है। राजवल्लभः।

अमलतास पत्र रेचक और कफ तथा मेद नाशक हैं। पुष्प मधुर, शीतल, तिक्त और ग्राहक है। तथा कषेला...। फल मज्जा पाक में मधुर, स्निग्ध, अग्निवर्द्धक, रेचक और वात एवं पित्त का नाश करने वाली है। द्रव्य० गु० वै० निघ०।

अमलतास के वैद्यकीय व्यवहार—

चरक—ज्वर में आरग्वध फल—(१) ज्वर रोगी की कोष्ठ शुद्धि हेतु उष्ण गाय के

दूध या किसमिस के रस (क्वाथ के साथ आरग्वध फल मज्जा सेवन करनेको दें। चि० ६ अ०।

(२) रक्तपित्त में आरग्वध फल—अमलतास की फली की मज्जा को प्रचुर परिमाण में मधु और शर्करा के साथ उर्ध्वगत रक्त पित्त रोगी को विरेचन के लिए सेवन कराएँ । (चि० ४ अ०) ।

(३) पित्तोदर में ।

आरग्वध का फल—क्वाथ विधि से अमलतास के फल के गूदा का काढ़ा तैयार कर पित्तोदर रोगी को सेवन कराना चाहिए। (चि० १८ अ०) ।

(४) कामला में आरग्वध फल—आरग्वध फल मज्जा को इक्षु, भूमिकुष्माण्ड वा कच्चे आमले के रस के साथ कामला रोगी को सेवन कराना चाहिए। इससे कामला का नाश होता है। (चि० २० अ०) ।

(५) कुष्ठ में आरग्वध पत्र—अमलतास के पत्र को पीस कर कुष्ठ में प्रलेप करें । (चि० ७ अ०) ।

(६) विसर्प में आरग्वध पत्र—अमलतास के पत्र को बाटकर घृत मिला कफज विसर्प में प्रलेप करें । (चि० ११ अ०) ।

(७) उरुस्तम्भ रोग में अमलतास के पत्र का शाक—तिल तैल द्वारा अमलतास के पत्र का जल में लवण रहित शाक सिद्ध कर उरुस्तम्भ रोगी को सेवन कराएँ। (चि० २७ अ०) । "वेत्रारग्वध पल्लवैः"

सुश्रुत—(१) उपदंश में व्रत प्रक्षालनार्थ आरग्वध पत्र—जाति (चमेली) तथा आरग्वध इन दोनों के पत्र का काढ़ा कर उससे औपदंशीय व्रत का प्रक्षालन कराएँ । (चि० १६ अ०)

(२) हारिद्रप्रमेह में आरग्वध—अमलतास के पत्र वा मूलत्वक् का क्वाथ हरिद्रामेही को सेवन कराएँ । (चि० ११ अ०)

वाग्भट—(१) कफ विद्रधि में आरग्वध पत्र—आरग्वध पत्र के क्वाथ से कफज विद्रधि के व्रत को धोएँ। (चि० १३ अ०)।

(२) कफज अरोचक में आरग्वध—आरग्वध फल मज्जा तथा अजवाइन इन दोनों के द्वारा निर्मित क्वाथ को कफज अरोचक में पान कराएँ । (चि० ५ अ०) ।

(३) राजयक्ष्मा में आरग्वध—बहुदोष, बलवान यक्ष्मा रोगी को विरेचनार्थ मधु, शर्करा तथा घृत के साथ अथवा दुग्ध वा अन्य तर्पक वस्तु के साथ आरग्वध फल मज्जा का सेवन कराएँ । (चि ५ अ०) ।

(४) कुष्ठ में आरग्वध मूल—अमलतास की जड़ के काढ़े से १०० बार घृत का पाक करें। इस घृत को कुष्ठ रोगी को पान कराएँ । औषध सेवन काल में स्नान वा पानार्थ खदिरयुक्त जल का व्यवहार कराते रहें। (चि० १६ अ०)।

भावप्रकाश—आमवात में आरग्वध पत्र—सरसों के तेल में अमलतास के पत्र को भूनकर सायंकाल भोजन के साथ इसका सेवन करें । यह आमदोषनाशक है ।

चक्रदत्त—(१) पित्तज्वर में आरग्वध—पित्तज्वरी को अमलतास के गूदा तथा किसमिस द्वारा प्रस्तुत क्वाथ का पान कराएँ। ज्वर० चि० ।

(२) गण्डमाला में आरग्वध मूल—ताजे अमलतास की जड़ की ताजी छाल को चावल के धोवन से पीसकर नस्य देने तथा गण्डमाला पर प्रलेप व अभ्यंग करने से इसका नाश होता है। गण्डमाला चि० ।

वङ्गसेन—दद्रु व किटिभ कुष्ट में आरग्वध पत्र—

अमलतास के पत्र को पीस कर लेप करने से उक्त कुष्ट और सिध्म आदि कुष्टों का भी नाश होता है ।

वक्तव्य

राजनिघण्टुकार के मत से क्षुद्र अमलतास का नाम कर्णिकार है। यह मालूम नहीं होता कि यह किस अंश में छोटा है। धन्वन्तरि निघण्टुक्त कर्णिकार का एक नाम "आरोग्य शिम्बी" और राजनिघंटुक दूसरा नाम "पंक्तिबीजक" है ।

कालिदास लिखते हैं—

"आकृष्ट हेमद्युति कर्णिकारम्"।

यूनानी वैद्यकीय मत से

प्रकृति—गरमी और सरदी में मअ्‌तदिल है। जिसका प्रमाण यह है कि इसमें कोई ऐसा स्वाद नहीं पाया जाता है (इसका स्वाद मधुर और हीक अत्यन्त तीव्र होता है। अतएव इसको कक्षा प्रथम वा द्वितीय का उष्ण होना चाहिये) जिस हेतु से इसको किसी बलवान कैफ़ियत से संबद्ध किया जाए, और तर है नफ़ा० २। किसी किसी ने १ कक्षामें गरम तर और किसी किसी ने मअ्‌तदिल (शीतोष्ण) लिखा है। **हानिकर्त्ता**-आमाशय के लिए तथा हृल्लास, मरोड़ और पेचिश उत्पन्न करता है। **दर्पघ्न**—मस्तगी और अनीसूँ से इसके आमाशय पर हानिकर तथा हृल्लास-कारक प्रभावकी निवृत्ति होतीहै। मरोड़ और पेचिश के लिए इसमें रोग़न बादाम मिलाकर देना चाहिए। मग़ज़ तुख़्म कद्दू और जुलाल इमली **प्रतिनिधि**—इससे तिगुनी द्राक्षा,, तुर्बुद (निशोथ) और तुरञ्जबीन। मात्रा-१ तो० से ५ या ८ तो० तक। साधारणतः २॥ तो० से ४ तो० तक प्रयुक्त है।

गुण कर्म, प्रयोग—अमलतास उदरीय वा वातीय अन्तर अवयवों के उष्ण शोथों को लाभ पहुँचाता है। क्यों कि यह मृदुकर्ता, विलायक व द्रावक है। इन्हीं प्रभावों के कारण कण्ठस्थ शोथों के लिए मको के पानी के साथ इसका गण्डूष किया जाता है, और इन्हीं कारणों से संधिवात तथा वातरक्त पर इसका प्रलेप किया जाता है।

यह यर्क़ान (कामला) और यकृद्वेदना को लाभ पहुँचाता और उदर (कोष्ठ) को मृदु करता और बिना कष्ट के दग्ध पित्त और कफ के विरेक लाता है। गर्भवती स्त्री को भी इसका विरेचन दिया जा सकता है क्यों कि इसमें क्षोभ (लज़्अ़), तीक्ष्णता, क़ब्ज़ (धारकत्व) और कषापन जैसी कोई बुरी कैफ़ियत नहीं है जो अन्तरवयवों को हानि पहुँचाए। नफ़ा०।

मीर मुहम्मद हुसेन लिखते हैं कि उत्तम जुल्लाब होने के लिए अमलतास की फलियों को थोड़ा गरम कर उसका गूदा निकाल थोड़े रोग़न बादाम के साथ मिलाकर प्रयोग करें। यह मुल-त्तिफ़ (द्रावक) वक्ष के अवरोधों तथा रक्तोष्मा को लाभप्रद है और बालक तथा स्त्री यहां तक कि गर्भिणी के लिए भी निरापद रेचक है; किंतु इसका अत्यन्त हलका प्रभाव होता है। उपर्युक्त औषध के साथ यह सम्पूर्ण दोषों का शोधक है। उदाहरण स्वरूप एकत्र हुये पित्त को दूर करने के लिये इसको इमली के साथ पिलाना चाहिए। बलग़म तथा सौदा के लिये क्रमशः निशोथ तथा बसफ़ाइज (कासनी, बर्ग बेद, आब शाहतरा) के साथ और आन्त्रीयावरोधों को दूर करने के लिए इसको लुआबदार वस्तु यथा अतसी वा रोग़न बादाम (रीशा ख़िल्मी, बिहीदाना या ईषद् गोल के लुआब) के साथ अथवा कोई उपयुक्त औषध यथा कासनी के साथ सम्मिलित कर प्रयोग करने की सिफ़ारिश की जाती है। संधि-वात एवं वात रक्त आदि के लिए बाह्य रूप से इसका प्रलेप उत्तम होता है। पुष्प एवं पत्र में मुलत्तिफ़ (द्रावक) गुण का होना बतलाया जाता है। (किसी किसी ने रेचन गुण का होना भी लिखा है)। पुष्प के गुलक़न्द बनाने का भी वर्णन आया है। ५ से ७ की मात्रा में इसके बीजों के चूर्ण के प्रयोग करने से वमन आते हैं। और यदि फली के ऊपर की छाल, केशर, मिश्री और गुलाबजल के साथ पीसकर दें तो स्त्री को तुरन्त प्रसव हो। छाल और पत्तों को तेल में पीसकर फोड़ा के ऊपर लगाने से लाभ होता है। (म० अ०)

धनिए के जल के साथ इसका गण्डूष ख़ुनाक़ को लाभप्रद है। इसके पत्र सम्पूर्ण शोथों को लय करते हैं। क्वथित करने से अमलतास के गूदे का प्रभाव नष्ट हो जाता है। म० मु०।

यह पेचिश को नष्ट करता, यकृत् के रोध का उद्घाटक और यर्क़ान (कामला) और उष्ण प्रकृति को लाभप्रद है। जिसे एक वर्ष न हुए हो

वह रक्त प्रमेह उत्पन्न करता है। पुष्प मृदुकर्त्ता, श्याम त्वचा का प्रलेप दद्रुघ्न है। बु० मु०।

कासनी पत्र स्वरस, मको और कसूम तथा अन्य उपयुक्त औषधों के साथ इसका उपयोग करने से यह यकृद्वेदना व यकृत् के अवरोध, यर्क़ान (कामला) और उष्ण ज्वरों को लाभ दायक है। बकरी के दूध वा आब अञ्जीर के साथ इसका गण्डूष करनेसे ख़ुनाक़को लाभ होता है।

नोट—चूँकि यह आंत्र के भीतर चिपट जाने के कारण क्षोभ व घर्षण उत्पन्न करने का हेतु बनता है। अत एव इसको रोग़न बादाम के साथ मलकर काम में लाना चाहिए।

डॉक्टरी मत से—

एलोपैथी चिकित्सा में केवल इसका गूदा अर्थात् आरग्वध फल मज्जा ही औषधार्थ व्यवहार होती है।

आरग्वध फल मज्जा, आरग्वध गूदिका, अमलतास का गूदा-हिं०। केशीई पल्पा Cassiae Pulpa-लै०। केशिया पल्प Cassia Pulp.-इं०। ख़रले ख़ियार शंबर-अ०।

(ऑफ़िशल *Official.*)

निर्माण-विधि—यह कोमल, मधुर, लगभग श्यामवर्ण का गूदा है जो अमलतास की फली से प्राप्त होता है। उक्त फली को जल में मल छान कर यहाँ तक पकाएँ कि वह मृदु रसक्रियावत् रह जाए।

प्रभाव—मृदुरेचक। मात्रा—मृदुरेचक रूप से ६० से १२० ग्रेन तक और १ से २ आउंस तक विरेचक रूप से। यह कन्फेक्शियो सेन्ना में पड़ता है।

प्रभाव तथा प्रयोग—यद्यपि यह मृदुकर्ता व विरेचक है। परन्तु, क्योंकि इसके प्रयोग से जी मचलाता है और उदर में मरोड़ होने लगती है। इसलिए इसको अकेला उपयोग में नहीं लाते, प्रत्युत सनाय के साथ सम्मिलित कर मअ्जून की शकल में दिया करते हैं। (ए० मे० मे०)

अन्यमत

एन्सली ने भारतीय लोगों को इसके गूदे और पुष्प का उपयोग करते हुए पाया।

डॉक्टर इर्विन लिखते हैं—"मैंने इसकी जड़ को सबल रेचक पाया।" गुजरात से विरेचक रूप से इसके उपयोग करने की भी सूचना मिलती है।

कोंकण में इसके कोमल पत्तोंका स्वरस दद्रुघ्न रूप से तथा भिलावे के रस के प्रयोग द्वारा हुए ख़राश के शमनार्थ इसका उपयोग करते हैं।

रम्फ़ियस कहते हैं कि पुर्त्तगाल निवासी नव्य फलियों एवं पुष्प का मअ्जून बनाते हैं। इसके वृक्ष में छेवा देने से एक विशेष प्रकार का निर्यास निर्गत होता है जो कतीरा के समान पानी में फूल जाता है। (डीमक) केशिया ब्रेजिलिएना (Cassia Braziliana.) तथा केशिया मॉस्केटा (Cassia Moschata.) भी भारतवर्ष में लगाए गए हैं। ये गुण में बिलकुल अमलतास के समान होते हैं। अधिक काल तक इसका प्रयोग करने से गम्भीर धूसर वर्ण का मूत्र आने लगता है। कॉफी के एनेमा में मिश्रण करने के लिए इसका गूदा काम में आता है। अजीर्ण स्वभाव के व्यक्तियों के लिए इसके गूदा की प्रशंसा की जाती है। बीज वामक है। मूल तीव्रविरेचक है। फल मज्जा संग्रह ग्रहणी प्रवण व्यक्तियों के पक्ष में हितकर है। मृदुरेचक रूप से इसकी मात्रा ३० से ८० ग्रेन है। (मेटिरिया मेडिका ऑफ़ इंडिया—आर० एन्० खोरि, भा० २, पृ० २००)

मज्जा, मूलत्वक्, बीज और पत्रमें रेचक गुण है। मूल रेचक, बल्य और ज्वरघ्न प्रभाव करता है। चूँकि अकेला प्रयोग करने पर पूर्ण प्रभाव हेतु इसको एक या दो आउंस अथवा इससे भी कहीं अधिक मात्रा में देना पड़ता है। इस लिए इसको अन्य रेचक औषधों के साथ (सहायक रूप से) पाक वा अवलेह रूप में वर्तते हैं। (इसको अकेला न वर्तने का यह भी कारण है कि इससे शूलवत् वेदना परिकर्त्तिका और उदराध्मान

जनित होता है)। आरग्वध गूदिका कॉफी के एसेंस में भी प्रयुक्त होती है। इसके गूदे का मअ्जून (पाक) २ से ४ ड्राम की मात्रा में मृदु रेचक है। इससे १ वा २ दस्त आजाते हैं। इसके गूदे का पाक बहुमूत्र में प्रयुक्त है। वह गुलकन्द जिसमें कि यह पड़ता है विशेषतः कोमल प्रकृति की स्त्रियों के लिए एक शीतल कोष्ठ मृदुकर औषध है। इसकी मात्रा आधा आउंस है। इसको सोते समय उष्ण दुग्ध से सेवन कराएँ। इसकी पकी फली के गूदे में इमली का गूदा मिलाकर सोते समय सेवन करने से आंत्र पर इसका मृदु प्रभाव होकर दूसरी सुबह को १ वा २ नर्म विरेक हो जाते हैं। बालकों के आध्मान युक्त उदर शूल में विरेक हेतु साधारणतः इसको नाभि के चारों तरफ लगाते हैं। आमाशयिक विकारों में इसके फूल का काढ़ा दिया जाता है। इसके पत्र को पीस कर दाद पर लगाते हैं। इसके पत्र एवं छाल को पीस कर उसमें तैल सम्मिलित कर उसका, फुंसी, दद्रु, शीत के कारण हस्तपाद की अंगुलियों का कण्डूयुक्त शोथ (Chilblains) कीटदंष्ट्र, अर्द्धांगवात (Facial paralysis) और आमवात पर प्रलेप करते हैं। मूल, ज्वर, हृद्रोग, अवरुद्ध स्राव और पित्त विकार प्रभृति में लाभदायक है। (इं० मे० मे०)

आरग्वध के कतिपय चुने हुए उत्तम मिश्रित योग

(१) पाचकावलेह—नीबू के एक सेर रस में आधसेर अमलतासकी फलियों को कूटकर डाल दें। दो दिन भींगने के बाद धुले हुए स्वच्छ वस्त्र में डालकर हाथ से हिला हिलाकर छानलें। पुनः उसमें निम्नांकित १० वस्तुओं के चूर्ण को कपड़छान करके डाल दें। वे यह हैं—दालचीनी, सोंठ, काली मरिच, छोटी पीपल, हींग (भुनी हुई), छोटी अथवा बड़ी इलायची के दाने इन छः चीजों को २–२ तो० लें और सेंधा नमक, काबानमक, कालादाना (अग्नि पर भुना हुआ) और नवीन सफेद जीरा (भुनाहुआ)

निर्माण विधि—इनमें से अन्तिम की तीन चीज़ों को शिल पर खूब पीस डालें। बाकी ऊपर लिखी हुई सात चीज़ों को लोहे की खरल में कूटकर कपड़छानकर लें। सब चूर्ण को ऊपर कही हुई खटाई में मिलाने से बहुत स्वाद पाचकावलेह (पाचक चटपटी चटनी) बन जाता है। मात्रा–३ मा० से १ तो० तक।

सेवन विधि तथा गुण व प्रयोग–इसके चाटने से मन्दाग्नि व आलस्य दूर हो जाते हैं। रात्रि को चाटकर सोने से प्रातःकाल दस्त साफ हो जाता है। चित्त खूब प्रसन्न रहता है। भोजन में अरुचि होने पर दो घंटे पहिले चाट लेने से भोजन में रुचि हो जाती है। प्रायः ज्वर में मुख का स्वाद बिगड़ा रहता है, इसके चाटने से वह दोष दूर हो जाता है। यह अवलेह कुछ गरम होता है। इसलिए पांच तोले दाख को नीबू के रस के साथ शिल पर पीस छानकर अवलेह में डाल दें और पके हुए अनार के दानों का रस डाल दें तो ये सब गरमी को शान्त कर स्वाद को बढ़ा देंगे। इसको धातु के पात्र में न बनाएँ। स्वादानुसार लवण को न्यूनाधिक कर सकते हैं। (रसायनसार १ भा०)।

(२) गुलक़ंद ख़यार शंबर (आरग्वध का गुलक़न्द)–अमलतास के उत्तम फूल आधसेर लेकर एक चीनी के हावनदस्ता में डालकर थोड़ी थोड़ी सफ़ेद चीनी फूलों में डालें और कूटते जाएँ। जब १ सेर चीनी मिल जाए और मिश्रण गुलक़न्द के समान हो जाए तब तैयार जानना चाहिए। इसका रंग पीत होगा। (अथवा गुलक़न्द की विधि से इसको तैयार करें)।

मात्रा—४ से ८ मा० तक। बालकों तथा स्त्रियों के लिए अत्युत्तम है।

(३) **लऊक़ ख़यार शंबर**—यह युह़ या (यूहन्ना) बिन मासूयह् का योग है। उन्नाब ५ दाना, सपिस्ताँ (श्लेष्मान्तक) १०० दाना तुख़्म ख़ित्मी ३ तो०, मवेज़ मुनक़्क़ा ७॥ तो०; वनफ़्सह् अधकुट किया और छीली हुई मुलेठी प्रत्येक ४ तो०, कतीरा ४॥ तो०, अस्पगोल

(ईषद्गोल) ३ तो०, इन सम्पूर्ण औषधों को ३ सेर पानी में क्वथित करें। जब तीसरा भाग रह जाय तब उतार कर साफ करलें। फिर ३ तो० अमलतास घोलकर दुबारा साफ करें। पुनः ३॥ मा० सकबीनज और ६ तो० मिश्री मिलाकर क्वाथ करें। गाढ़ा होनेपर रोग़न बादाम या रोग़न बनफ़्सह् के साथ मर्दन कर आवश्यकतानुसार थोड़ी थोड़ी दिन में २–३ बार चाटें। उपयोग—कास, शोथ ज्वर, तृषा, जिह्वा की कर्कशता और वक्षस्थ व्याधियों यथा–कास, प्रतिश्याय पार्श्वशूल तथा उग्रकुफ्फुसौप प्रभृतिमें लाभदायक है।

(४) मुरब्बाए फ़लूस खयार चंबर—कच्चा अमलतास जिसमें गंध का प्रादुर्भाव न हुआ हो लेकर उसका छिलका दूर करके फ़लूस (लुआब) निकालें और पान में खाने वाले चूने के पानी में एक दो घंटे भिगो रखें। जब लाल हो जाए तब उक्त पानी से निकाल कर दो तीन बार निर्मल जल से धोएँ। फिर मिश्री को गुलाब जल में विलीन करके अग्नि पर रखें। जब चाशनी तैयार होने के निकट आए उस समय उक्त फ़लूस खयार शंबर को उसमें डालकर दो तीन उबाल और दें और उतार लें। यदि सुवासित करना चाहें तो किञ्चित् कस्तूरी तथा अम्बर भी उसमें सम्मिलित कर दें।

गुण—कोष्टमृदुकर है और अविच्छिन्न बद्धकोष्ट तथा विट् संज्ञक उदरशूल के लिए विशेष कर लाभदायक है।

(५) मअ्जून खयार शंबर—गुलाबपुष्प ७ तो०, सनाय मक्की ७ तो०, सूखी धनियाँ, रुब्बुस्सूस (सत मुलेठी) १ तो०, सैंधव १ तो० इनको बारीक करके पृथक् रखलें। निम्न औषधों को २ सेर वृष्टि जल में अहोरात्रि भिगो रखें। अंजीर १२ तो०, अनजी ६ तो०, आलूबुखारा ५ तो०, माज़ फ़लूस खयार शंबर २० तो०, अमलतास के अतिरिक्त शेष औषधों को पादशेष रहने तक क्वथित कर चलनी से छान लें। तदनन्तर उक्त जल में २० तो० अमलतास भिगोकर कुछ मिनट तक मन्दाग्नि की उत्ताप देकर उतार लें, और पुनः चलनी से छानकर उपर्युक्त बीज प्रभृति डाल दें। उस पानी में १ सेर सफेद चीनी मिलाकर गाढ़ा होने तक पकाएँ। फिर उतार कर बारीक की हुई दवाओं को मिलाकर ४ तो० रोग़न बादाम मिला दें। ध्यान रखें कि वह अग्नि पर जल न जाए।

गुण—कौलञ्ज्हार तथा आन्त्र की रूक्षता के लिए अत्युत्तम कोष्टमृदु कर है। यह मअ्जून प्रत्येक प्रकृति के लिए विशेषकर अर्श रोगी के लिए अत्यन्त लाभप्रद है। मात्रा—४ मा० से ८ मा० तक सोते समय पानी या दूध के साथ सेवन करें।

(६) आरग्वध क्वाथ—पीली हड़ का बकला ३ तो० ६ मा०, आलूबुखारा, उन्नाव विलायती प्रत्येक २०–२० दाने, मवेज़ मुनक्का, इमली प्रत्येक ५ तो० ७॥ मा०, गुलाब, गुले नीलोफ़र प्रत्येक १ तो० १॥ मा०, बनफ़्सा १॥ तो० सबको १ सेर ६ छ० पानी में क्वाथ करें जब १॥ पाव पानी शेष रहे उस समय उतार कर साफ़ करें। इसमें मग़्ज़फ़लूस खयार शंबर ४ तो० से ७ तो० तक विलीन करके साफ़ करें और ६ मा० मधुर बादाम तेल सम्मिलित कर पिलाएँ। गुण—रेचक है और पैत्तिक (उष्ण) दोषों को निःसृत करता है।

(७) आरग्वध फांट—मग़्ज़ फ़लूस खयार शंबर, इमली प्रत्येक ४॥ तो० आलूबोखारा १५ दाना, उन्नाव १० दाना, सपिस्ताँ (लिसोड़ा) २० दाना सब को गरम किए हुए अर्क़ कासनी आवश्यकतानुसार में भिगो दें। प्रातःकाल निथार कर तुरंजबीन, शीर खिश्त प्रत्येक ३ तो० ६ मा० सम्मिलित कर विलीन करें और स्वच्छ करके रोग़न बादाम १ तो० मिलाकर पिलाएँ।

गुण—समग्र उष्ण एवं उग्र पैत्तिक तथा रक्तजन्य रोगों में लाभदायक है और कोष्ठ को मृदु कर्त्ता है। यदि पित्तज कामला (यर्क़ान) हो और पित्त की उल्बणता हो तो कासनी-पत्र स्वरस ताजा ६ तोले से १२ तो० तक इसी योग में अधिक सम्मिलित करें।

सूचना—कास रोगी को इस योग का सेवन न कराएँ।

(८) आरग्वध वटिका—मग़्ज़ फ़लूस ख़यार शंबर ७॥ तो०, सक़्मूनिया मुशव्वी (भुलभुलाया हुआ) ४॥ मा०, कतीरा ६ मा०, पीली हड़ का बकला, काबुली हड़, काबुली हड़ का बकला, सनाय मक्की, ज़रिश्क (साफ किया हुआ), गुलबनफ़्शा प्रत्येक १॥ तो० । निर्माण-विधि—मग़्ज़ फ़लूस ख़यार शंबर के सिवा शेष सब औषधों को कूट छानकर १ तो० १०॥ मा० मधुर बादाम तैल में मर्दन करके चने प्रमाण वटिकाएँ प्रस्तुत करें और वर्क़ चाँदी में लपेट कर रखें। मात्रा—आवश्यकतानुसार इसमें से ७ मा० से ६ मा० तक सेवन करें।

गुण—यह सर्वोत्कृष्ट विरेचन है और मस्तिष्क रोगों में हित है।

(६) मुलय्यिन मुबारक—गुलाब १ तो० गुल नीलोफर १ तो०, गुलबनफ़्शा १ तो०, आलूबोखारा १ तो० तुरंजबीन २ तो०। निर्माण-विधि—समग्र औषधों को रात्रि भर आधसेर अर्क़ गुलाब में तर करके प्रातः काल इतना पकाएँ जिससे आधा शेष रह जाए। तदनन्तर फ़लूस ख़यार शंबर १० तो० को उक्त तरल में डालकर थोड़ी देर तक मृदु अग्नि देकर उतार लें। इसमें १० तो० हड़ के मुरब्बे का शीरा मिलाकर १ तो० रोग़न बादाम सम्मिलित कर लें। मात्रा—अवस्थानुसार वैद्य की राय से।

गुण—यह अत्युत्तम कोष्ठमृदुकर है। यह अत्यन्त सुस्वाद और प्रत्येक प्रकृति के अनुकूल है।

(१०) आरग्वध गण्डूष—रुब्ब ख़यार शंबर ६ तो०, वृष्टि जल २० तो०, शिब्ब यमानी (यमनी फिटकरी) १ मा० सबको विलीन करके गण्डूष कराएँ।

गुण—टॉन्सिल के शोथ तथा ख़ुनाक के लिए रामबाण है।

(११) शियाफ़ ख़यार शंबर—(आरग्वध फलवर्ति)—आरग्वध फल मज्जा, लाल शकर प्रत्येक ३ तो०, सनाय मक्की १॥ तो०, ख़िरमी ११ मा०, लवण ३॥ मा० । निर्माण-विधि—औषधों को कूट पीस कर प्रथम दो औषधों के द्वारा वर्ति प्रस्तुत करें और यथाविधि उपयोग में लाएँ।

गुण—उदरशूल को लाभप्रद है और कोष्ठ को मृदु करता है।

(१२) आरग्वध त्वक् क्वाथ—आरग्वध की छाल, सौंफ, कुसुम्भ बीज प्रत्येक ५ तो०, मजीठ ३ मा० । सब को जौकुट कर के १। सेर पानी में १॥ पाव जल शेष रहने तक पकाएँ। फिर शर्बत बज़ूरी मिलाकर पिलाएँ।

गुण—रजः रोध एवं कष्ट रज में लाभदायक है।

अमलतासकल्प amalatása-kalpa-हिं०पुं०
अमलतास को दाह और उदावर्त से पीड़ित रोगी को दाख के रस के साथ दें (१)–४ वर्षकी अवस्था से लेकर १२ वर्ष तक की उम्र वाले के लिए इसके गूदे की मात्रा १ प्रसृत से १ अंजली तक है। इसे सुरामण्ड, कोल शीधु, दधिमण्ड, आमले के रस या शीत कषाय बनाकर उसे सौवीरक के साथ दें। (२)–अमलतास की मज्जा (गूदे) के साथ दूध को सिद्ध करके उससे घी निकालें, फिर उस घी को आमले के रस और उसके गूदे के कल्क से सिद्ध कर सेवन करें। (३)–अथवा उसी घी को दशमूल, कुलथी, और जौ के कषाय तथा निसोथ आदि के कल्क से सिद्ध करके सेवन करें। (४)–अथवा दन्ती क्वाथ लेकर उसमें अमलतास की मज्जा (गूदा) १ अंजली और गुड़ १ अंजली मिलाकर यथा विधि सन्धान कर ४५ दिन तक रक्खा रहने दें, जब अरिष्ट सिद्ध हो जाए तो उसे सेवन करें। जिस मनुष्य को मधुर कटु या लवण जिस प्रकार का खान पान प्रिय हो उसे उसी के साथ अमलतास से विरेचन देना उचित है। च० सं० च० अ० ८।

अमलतासादि क्वाथ amalatásádi-kvátha -हिं० पु० अमलतास गूदा, पीपलामूल, मोथा कुटकी, बड़ी हड़,इनका क्वाथ पीने से वात, कफ ज्वरका शीघ्र ही नाश होता है तथा गोटा गिराता, और आमशूल दूर करते हुए अग्नि दीपन व पाचन करता है। शाङ्ग० सं०।

अमल दीप्तिः amala-diptih-सं० पुं०,कर्पूर कपूर (Camphor)। च० द०।

अमलपट्टी amala-patti-हिं० स्त्री०, (A kind of stitching)।

अमल पतत्री amala-patatri-(इन्), सं० पुं०, हंस। (A goose, a gander, a swan.)।

अमल् बिल्यद् áamal-bilyad-अ०
अम्लिय्यह् áamliyyah-
हस्त क्रिया, शस्त्र चिकित्सा, जर्राही, दस्तकारी, चीरफाड़। ऑपरेशन (Operation)-इं०।

अमलबेत amala beta-हिं० सं० पुं० [सं० अम्लवेतस्] (१) एक प्रकार की लता जो पश्चिम के पहाड़ों में होती है और जिसकी सूखी हुई टहनियाँ बाज़ार में बिकती हैं। ये खट्टी होती हैं और पाचक चूरण में पड़ती हैं। (२) एक मध्यम आकार का पेड़ जो बागों में लगाया जाता है। इसके फूल सफ़ेद और फल गोल खरबूजे के समान पकने पर पीले और चिकने होते हैं। इस फल की खटाई बड़ी तीक्ष्ण होती है। इसमें सूई गल जाती है यह अग्नि संदीपक है। यह एक प्रकार का नीबू है।

अमलबेद amalabed--हिं० संज्ञा पुं०, उ० अमलबेत, अम्लवेतस (Rumex vesicarius)।

अमलबेद नींबू amalabeda-nibú-हिं० तुरञ्ज लीमूँ।

अमलबेल amala-bela-हिं० गिदड़ द्राक,कस्सर। पं०,हिं०। अम्लपर्णी- सं०। बरडल, अम्ललता, सोनेकेशुर -बं०। वाइद्गिमा (Vitis Carnosa, *Wall, Wight*)। सीसस कार्नोसा (Cissus carnosa)-ले०। फ्लेशी वाइल्ड वाइन (Fleshy wild Wine-इं०). मेक मेकत्तवी-चेट्टु -ता० (फा इं०)। कनपतिगे (फा० इं० मे० प्लां०), मण्डल-मरीतीगे, मेक-मेत्तवी-चेट्टु, कडु-डिञ्जे, कडेप-तीगे (इं० मे० प्लां०)-ते०। जरीला-लरा (इं० मे० प्लां)-पहा०। खट-तुम्बो, खट-तुम्बो (फा० इं०, इं० मे० प्लां०, मे० मो०)-गु० तम्न्या खटुम्बो (इं० मे० प्लां०) बलरत दुम्लबू-सिं० (इं० मे० मे०) मै-मती (इं० मे० प्लां०)-आसा०। कारिक, अम्लबेल, गिदड़द्राक, द्रिकरी, बल्लुर, द्रुकी(इं० मे० प्लां) -पं०। बोडी, अम्बटबेल (इं० मे० प्लां०, फा० इं०)-कडप्पोडी-महा०। इक्-ट्ल्लारिक-लेप०।

द्राक्षा वर्ग

(*N. O. Ampelideae.*)

उत्पत्ति-स्थान—भारतवर्ष के सम्पूर्ण उष्ण प्रधान देश तथा हिमालय (के उष्ण स्थान)।

प्रयोगांश—बीज तथा मूल।

प्रभाव तथा उपयोग—इसके पत्रकी पुल्टिस (उत्कारिका) बैलों की ग्रीवा पर जूआ के कारण हुए व्रणों के लिए प्रयुक्त होती है। (इलियट)

इर्विन (Irvine) के मतानुसार इसके बीज एवं पत्र दोनों अभ्यङ्ग रूप से प्रयोग में आते हैं।

स्टयुवर्ट के कथनानुसार इसकी जड़ को काली मरिचके साथ पीसकर विस्फोटक (फोड़ा फुंसी) पर लगाते हैं।

जड़ संग्राही रूप से प्रयोग में लाई जाती है। इं० मे० मे०।

अमलमणिः amala-manih-सं० पुं०
अमलमणि amalamani-हिं० पुं०
(१) स्फटिक, फिटकरी, (Alumen)। रा० नि० व० १३।। (२) कर्पूरमणि, कर्पूरगंधमणि विशेष। (३) बिल्लौर, स्फटिक।

अमल रत्नम् amala-ratnam-सं० क्लीं० स्फटिक, फिटकिरी। (Alumen) रा० नि० व० १३।

अमल लता amala-latá-बं०
अमल बेल amala-vela
देखो—**अमलबेल।**

अमलसी amalasí-फ़ा० अनार भेद अर्थात् अनार बेदाना। इसे अनार सीतानी भी कहते है।

अमला amalá-सं० स्त्री० -हिं० संज्ञा स्त्री० (१) महानीली, बड़ा नील। रा० नि० व० ४। (२) सेहुन्ड भेद। रा० नि०। (३) भूम्यामलकी। पताल आँवला, भूँईं आमला (Phyllanthus neruri) अम०। (४) । (५) सातला वृक्ष-हिं० संज्ञा पुं० [सं० आमलक] (६) नाभिनाला, आमला आँवला (Phyllanthus Emblica) प्रयोग० क्षुद्ररोग० चि०।

अमलाज्झटा amalájjhaṭá-सं० स्त्री० भूधात्री भुँईं आमला (Phyllanthus neruri) अ० टी० भ०।

अमली amalí-हिं० वि०
आमली āamalí-अ०
(१) अमल में आने वाला। व्यवहारिक। (२) करने वाला। (३) चिकित्सा शास्त्र का वह अंग जो क्रिया से संबन्ध रखता है। (४) नशे बाज़। (५) अम्ली, इम्ली।

अमली amalí-हिं० संज्ञा स्त्री०, द०
अमली का बोट amalí-ká-bot
[सं० अम्लिका] (१) इमली, तिंतड़ीक (Tamarindus Indicus)। (२) एक झाड़ीदार पेड़ जो हिमालय के दक्षिण गढ़वाल से आसाम तक होता है। करमई गौरूबटी।

अमलूक amalúka-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अम्ल] एक पेड़ जो अफ़ग़ानिस्तान, बिलूचिस्तान हज़ारा, काश्मीर, और पंजाब के उत्तर हिमालय की पहाड़ियों पर होता है। इसमें से बहुत सा रस बहता है जो जम कर गोंद की तरह हो जाता है। इसका फल ताजा और सूखा दोनों खाया जाता है। सूखा फल काबुली लोग लाते हैं। इसे मलूक भी कहते हैं।

अमलूल āamalúla-अ० क़नाबरी।

अमलैलस amalailasa-बरब० अफ़रीका के किसी किसी भाग में एक प्रसिद्ध वनस्पति का नाम है।

अमलोनी amaloní-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० अम्ललोणी] नोनियाँ घास। नोनी। इसकी पत्तियाँ बहुत छोटी छोटी और मोटे दल की तथा खाने में खट्टी होती हैं। लोग इसका साग बना कर खाते हैं जो अग्नि वर्द्धक हैं। कहते हैं कि इसके रस से धतूरे का विष उतर जाता है। यह बड़ी पत्तियों का भी होता है जिसे कुलफ़ा कहते हैं।

अमलोरा amalorá-पं० आमला, आमी, खेमिल, खेतिमल। मेमो०।

अमलोल amalola-अ० रेत में रहने वाला एक जानवर है।

अमलोलवा amalolavá-हिं० त्रिपत्री, अम्ल-पत्री, गोधापदी-सं०। Vitis Trifolia, Cissus Carnosa। देखो—**गोधापदिका (दी-)**

अमवती,-टी amavatí-,ṭí-हिं० खटकल, चाङ्गेरी, चूका। Rumex Scutatus

अमश āamash-अ० (१) दृष्टिमांद्य, दृष्टि की निर्बलता-हिं०। ज़ोफ़ बसर, नज़र की कमज़ोरी, (२) चक्षु द्वारा जलस्राव, आँख से पानी बहना।

अमसः amasah-सं० पुं०
अमस amasa-हिं० संज्ञा पुं०
रोग (Disease)। उ०।

अमसानिया amasániyá-पं० बुनशुर। चीवा मेमो०।

अमसुल amasula-इस्पिल० ओंठ, ओष्ट। Garcinia xantho chymus। फा० इं० १ भ०। इं० मे० मे०।

अमसूल amasúla-हिं० संज्ञा पुं० [देश०] एक पतला पेड़ जिसकी डालियाँ नीचे की ओर झुकी होती हैं और जो दक्षिण में कोकण, कनारा और कुर्ग के जंगलों में होता हैं। इसका फल

खाया जाता है और गोआ में विंदाल के नाम से बिकता है। पर यह वृक्ष उस तेलके कारण अधिक प्रसिद्ध है जो उसके बीज से निकाला जाता है। बाज़ारों में यह तेल जमी हुई सफ़ेद लम्बी पत्तियों वा टिकियों के रूप में मिलता है जो साधारण गर्मी से पिघल जाती हैं। यह वह्रक और संकोचक समझा जाता है तथा सूजन आदि में इसकी मालिश होती है। मरहम भी इससे बनाते हैं।

अमसूख amasúkh-अरब०, यू० एक अप्रसिद्ध बूटी है।

अमसोल } amasola-बं० कोकम, डामरा
आमसोल } -हिं० । वृत्ताम्ल, अम्लवृत्तक।

अमहर amahara-हिं० संज्ञा स्त्री० [हिं० आम] आमकी सूखी कली। छिले हुए कच्चे आम की सुखाई हुई फाँक यह दाल और तरकारी में पड़ती है इसे कूट कर अमचूर भी बनाते हैं।

अमा āamá-अ० अंधता, अंधापन हिं०। कारी, नाबीनाई, अंधा होना। Blindness.

नोट—अअ्मा अर्थात अंधा। इसका स्त्री लिंग अम्या है।

अमाअदा amáadá-बं० कर्पूर हरिद्रा, अम्बा हलदी। (Curcuma amada) इं० मे० मे०।

अमाइरिस केम्फोरिक amyris campho ric-ले० अज्ञात।

अमाइरिस कामीफोरा amyris commiphora, *Roxb.* कॉम्मिफोरा मेडागास्करेन्सिस (Commiphora madagascarensis, *Lindl.* गूगुल। इं० हैं० गा०।

अमाइरिस गाइलोडेन्सिस amyris gylodensis, *Roxb.*-ले० अज्ञात।

अमाइली ब्रोमाइडम् amyli-bromidum देखो-एमाइल।

अमाइलोडेक्स्ट्रीन् amylodextrin-ले० श्वेत सार भेद । देखो - जायफल । फा० इं० ३ भा०।

अमाइलोप्सिन amylopsin-इं० श्वेतसार विश्लेषक। देखो—क्लोमरस।

अमाक़ amáq-अ० (ब० व०), मौक़ (ए० व०) आँख का भीतरी कोया।

अमाग़ीरून amághírún-यू०, ख़र्नूब नब्ती, अप्रसिद्ध है। See-kharnúba-nabtí.

अमाग़ौत amághouta-हिं० संज्ञा पुं० (१) एक प्रकारका धान जो अगहनमें तैयार होता है।

अमातशी amátashí—सं० स्त्री०, सुखं रवासन।

अमातीतस amátítas-यू०, शादनज या कण जो गर्म ताम्र और लोह के कूटने के पश्चात् गिरते हैं।

अमात्र amátrá-हिं० वि [सं०] मात्रा रहित बेहद। अपरिमित।

अमाद āamád-अ०, आस की जड़। See--Asa.

अमान amána-ता०, अजवाइन । Carum (Ptychotis) Ajowan. हिं० वि० [सं०] जिसका मान वा अंदाज न हो। अपरिमित। परिमाण रहित। इयत्ताशून्य।

अमानस्यम् amánasyam-सं० क्ली०, पीड़ा, दुःख (Pain)।

अमामून amámún } यू०, हमामा,
अमूमन amúman } अपर प्रसिद्ध
बूटी है

अमायरीन amayrin--इं० गोंद।

अमार amara-हिं० संज्ञा पुं० अमड़ा।

अमारस amáras-यू०, झालर, तुमुंस।

अमाराइलीडीई amarylledaceæ- }
अमाराइलिडेसीई amaryllidaceæ }
ले०, सुखदर्शन वर्ग।

अमाराइलिस ज़ीलेनिका amaryllis zeylanica, *Rox.*-ले०। सुखसुदर्शन-हिं०। Crinum zeylanica.—इं० हैं० गा०।

अमाराइलिस लिनिएटा amaryllis Lineata, *Lam.*-ले० सुखदर्शन । इं० हैं० गा० ।

अमाराइलिस सिङ्गालीज़ amaryllis Cingalese-ले० सुदर्शन । इं० हैं० गा० ।

अमारी amárí-हिं० स्त्री० अम्ली, सरसोटी-हिं० । मुत्ता-बं० । पाती मिल-नैपा० । कण्टजीर-लेप० । पेल गुमडु, मसुर, बउरी-गों० । किम्प-लीन-बर० । Antidesma Diandrum, *Tulasn.* मेमो० । पत्र व फल खाद्य कार्य में आते हैं ।

अमारीतन amáritan-एक बूटी जो किसी किसी के मत से बाबूनह गाव तथा किसी के मत से क़ैसूम की भेद से है ।

अमॉर्फोफैलस कैम्पेन्युलेटस Amorphophallus Campanulatus, *Blume.*-ले० जिमीकन्द, सूरण । फा० इं० ३ भा० ।

अमॉर्फोफैलस सिल्वैटेकस amorphophallus sylvatacus-ले० सूरन, ज़मीकन्द -हिं० । ओल-बं० । इं० मे० मे० ।

अमालीन amálína-रू० अंगूर का पानी ।

अमारेण्ट(न्थ)स amarant(h)us, *Sp.*-ले० चौलाई ।

अमारेण्ट(न्थ)स अङ्गस्टिफोलिया amarant (h)us angustifolia-ले० बनसपाता नटिया-बं० । मेमो० ।

अमारेण्ट(न्थ)स अनर्डैना Amarant(h)us anardana, *Hamilt.*-ले० चुआ -हिं० । चौलाई, गनहर, तवल, सिल (बीज) -पं० । साग बं० । मेमो० ।

अमारेण्ट(न्थ)स ऐट्रोपर्प्युरिअस amarant (h) us atropurpureus-ले० बानसपता । (Black amaranth)इं० हैं० गा० ।

अमारेण्ट (न्थ) स ऑलिरेशिअस amarant(h) us oleraceus-ले० मरसा, माटकी भाजी, चन्दी साग । इं० हैं० गा० ।

अमारेण्ट (न्थ) स कैम्पेस्ट्रिस amarant(h) us campestris, *Willd.*-ले० मेघनाद -सं० । सिरु-किरई -ता० । सिरु-कुर-ते० । चौलाई -हिं० ।

अमारेण्ट(न्थ)स क्रुएण्टस amarant (h)us cruentus, *Mq.* ले० ताजे ख़रूस, बुस्तान अफ़रोज़ । गुलकेश । Amaranth, various leaved । मेमो० । इं० हैं० गा० ।

अमारेण्ट(न्थ)स गैञ्जेटिकस amarant (h) us gangeticus, *Linn.*-ले० बानसपाता--नटिया-बं० । मेमो० ।

अमारेण्ट (न्थ) स ट्रिस्टिस amarant(h)us tristis-ले० माट की भाजी । Amaranth, round headed । इं० है० गा० ।

अमारेण्ट (न्थ) स पैनिक्युलेटा amarant (h) us paniculata-ले० ताजे ख़रूस, बुस्तान अफ़रोज़ । मेमो० ।

अमारेण्ट (न्थ) स पॉलिगेमस amarant(h) us polygamous-ले० Prince's feather (*Cock's comb.*)-इं० । सखारा, देवकटी, चौलाई, कलगा । इं०मे०मे० । श्वेतमुर्ग़ा -बं० ।

अमारेण्ट (न्थ)स फेरिनेशिअस amarant(h)us farinaceus, *Roxb.*-ले० चौलाई वर्ग की एक ओषधि है ।

अमारेण्ट(न्थ)स फ्रुमेण्टेसिअस amarant(h) us frumentaceus, *Buch.*-ले० । किर्येरी-द० भा० । मेमो० ।

अमारेण्ट(न्थ)स मैङ्गोस्टेनस amarant(h) us mangostanus-ले० चौलाई, गनहर-उत्तरी भा० । साग-बं० । मेमो० ।

अमारेण्ट(न्थ)स स्पाइनोसस amarant(h) us spinosus, *Willd.*-ले० काण्टा नटिया । कण्टा नटे -बं० । काटेमाठ-द०, बं० । मुलुक किरई-ता० । चौलाई, तण्डुलीय--सं० । काण्टालो डम्भो--गु० । फा० इं० ३ भा० ।

अमारेण्ट(न्थ)स हाइपोकॉण्ड्रिएकस amarant(h)us hypochandriacus-ले० ।

श्वेतमुरगा-बं० । कलगा,सरवारी,देवकरी-हिं० । सफेद मुरगा -गु० । इं० मे० मे० ।

अमारेण्टे (न्थे) शीई amarant(h)aceæ --लै० चौलाई वा तण्डुलीय (अपामार्ग) वर्ग । देखो-अमारेन्थेशीई ।

अमारेन्थ amaranth-इं० चौलाई, तण्डुलीय ।

अमारेन्थ ईटेब्ल amaranth eatable--इं० मरसा, माट । इं० हैं० गा० ।

अमारेन्थ गैञ्जेटिक amaranth gangetic--इं० लालसाग । इं० हैं० गा० ।

अमारेन्थ ब्लैक amaranth black--इं० बानस्पता । इं० हैं० गा० ।

अमारेन्थ राउण्डहेडेड amaranth round headed--इं० माट की भाजी । इं० हैं० गा० ।

अमारेन्थ वेरिअस लीव्ड amaranth various leaved--इं० गुलकेश । इं० हैं० गा० ।

अमारेन्थ हर्मैफ्रोडाइट amaranth hermaphrodite--इं० चौलाई, कलगा--हिं० इं० हैं० गा० ।

अमालह् amálah--अ० इन्तिक़ाल मर्ज़ । इसका शाब्दिक अर्थ प्रवृत कर देना,परिवर्तन, करना फेर देना है; किन्तु वैद्यक की परिभाषा में किसी दोष को विकारी अवयव से दूसरे अवयव की ओर प्रवृत्त कर देना अमालह् कहलाता है। मेटास्टेसिस Metastasis--इं० ।

अमालीन amálína-रू० अंगूर का पत्ती ।

अमावट amávaṭa-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० आम्र, हिं० आम+सं० आवर्त प्रा० आवह] (१) रोटिका रूपमें सुखाया हुआ आमका रस । आम्रावर्त्त-सं० । आम के सुखाए हुए रस के पर्त वा तह । इसे बनाने के लिए पके आम को निचोड़ कर उसका रस कपड़े पर फैला कर सुखाते हैं । जब रस की तह सूख जाती है । तब उसे लपेट कर रख लेते हैं । The inspissated juice of the mango.

(२) पहिना जाति की एक मछली ।

अमाह amáha-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अमांस] [स्त्रि० अमाही] नेत्र रोग विशेष । आँख के ढेले से निकला हुआ लाल मांस । नाख़ूना ।

अमाही amáhi-हिं० स्त्रि० [हिं० अमाह] अमाह रोग संबन्धी ।

अमिए amie-बर० (ए० व०), अमिए मियाश्रा (ब० व०) जड़, मूल-हिं० । Root or Rhizome । स० फा० इं० ।

अमिका-नॉकटर्ना ऑफ रम्फियस Amicanocturna of Rumphius-लै० गुलेशब्बो, गुलचेरी हिं०, बम्ब० । रजनी गंधा -सं०,बं० । (Polianthus Tuberosa, *Linn.*) फा० इं० ३ भा० ।

अ (ऍ) मिग्डला amigdala-लै० कडुआ बादाम (Bitter almond).

अ (ऍ) मिग्डला अमारा amygdala amara-लै० कटु वाताद, कडुआ बादाम। (Bitter almond).

अमिग्डला डल्सिस amygdala dulcis-लै० मधुर वाताद, मीठा बादाम । (Sweet Almond)

अ (ऍ) मिग्डेलस कम्यूनिस amygdalus communis, *Linn.*-लै० बदाम, फ़ार्सी बादाम । (The Almond). फा० इं० १ भा० ।

अ (ऍ) मिग्डेलस डल्सिस Amygdalus dulcis-लै० मधुर वाताद, मीठा बादाम । (Sweet almond).

अ (ऍ) मिग्डेलीन amygdalin-इं० वाताद सत्व । (A glucoside contained in bitter Almonds)

अमिताशन amitáṣhana-हिं० वि० [सं०] जो सब कुछ खाए । जिसके खाने का ठिकाना न हो ।

संज्ञा पुं० (Fire) अग्नि । आग ।

अमिय मूरि amiya-múri-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० अमृत मूरि] अमरमूर । अमृतबूटी । संजीवनी जड़ी, जिलाने वाली बूटी ।

अमिया amiyá–हिं० आम का कच्चा फल ।

अमिरती amiratí–हिं० संज्ञा स्त्री० दे० इमरती । मिठाई भेद ।

अमिल amila–हिं० वि० [सं० अ=नहीं+हिं० मिलना] (१) न मिलने योग्य । (२) बेमेल । अनमिल ।

अमिलतास amilatása –हिं० संज्ञा पुं० दे० अमलतास ।

अमिलातकम् amilátakam–सं० क्लीं० बेला –हिं० । इला० । See–Belá

अमिलातका amilátaká–सं० स्त्री० महाराज तरुणी पुष्प वृक्ष । बेला–हिं०, बं० । रा० नि० व० १० ।

अमिलियापाट amiliyá-páṭa–हिं० संज्ञा पुं० [हिं० अमिली=इमिली+पाट=रेशम] एक प्रकार का पट वा पटसन ।

अमिली amilí–हिं० संज्ञा स्त्री० दे० अम्लिका ।

अमिश्रण amishraṇa–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अमिश्रित] मिलावट का अभाव ।

अमिश्रित amishrita–हिं० वि० [सं०] (१) न मिला हुआ । जो मिलाया न गया हो । (२) जिसमें कोई वस्तु न मिलाई गई हो । बे मिलावट । खालिस । शुद्ध । पृथक् भूत ।

अमिष amisha–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] दे० आमिष ।

अमी amí–सं० स्त्री० अमृत–हिं० । (The water of life, nectar.).

अमी āamí–अ० दृष्टि शक्ति का नष्ट हो जाना, देखने की शक्ति का ह्रास ।

अमीनोअम्ल amíno-amla–हिं० पुं० (Amino acid) प्रोटीन की अन्तिम अवस्था को कहते हैं जो शरीर द्वारा ग्रहण की जाती है ।

अमीनोफॉर्म aminoform–इं० युरोट्रॉपीन ।

अमीबा amœba–इं० आधुनिक प्राणिशास्त्र के अनुसार एक अणुवीक्ष्य एकसेल युक्त जीवधारी ।

नोट–वेद (अथर्व) में अमीव शब्द रोगोत्पादक कीटाणु अथवा रोग के लिए प्रयुक्त हुआ है ।

अमीबा का शरीर एक स्वच्छ गाढ़े भली प्रकार न बहने वाले शहद जैसी वस्तु से बना है। इसका वास्तविक परिमाण $\frac{१}{२४०}$ से $\frac{१}{८०}$ इंच तक (व्यास में) होता है। इसमें चैतन्यता के प्रायः सभी लक्षण पाए जाते हैं अर्थात् यह एक ही घटक से उन सम्पूर्ण कार्यों को सम्पादित करता है जो किसी एक जीवधारी को जीवन-व्यापार चलाने के लिए करना आवश्यकीय होता है । देखो–सेल ।

अमीर ज़म्बूरान amíra-zambúrána–फ़ा० शहद की मक्खियों का सरदार ।

अमीरह् amírah–ले० लिसानुल् कल्ब । See–Lisánul kalb.

अमीरुशिया amírushiya–यू० शवासर (बरिआसिफ़ या क़ैसूम भेद) ।

अमीरेही āamí-rehí–अ० अरलूकूमा । वस्तुतः यह श्याम अथवा हरित वर्ण का मोतियाबिन्दु है, जिसमें नेत्रपिण्ड प्रगट रूप से ठीक मालुम होता है, परन्तु वस्तुतः उसमें दृष्टि शक्ति नहीं होती । ग्लॉकूमा (Glaucoma)–इं० ।

अमीरोसिया amírosiyá–यु० यकृत तथा एक माजून विशेष ।

अमीलैली āamí-lailí, **अशा** āashá —अ० नक्तान्ध्य, रतौंधी । हेमीरेलोपिया (Hemeralopia)–इं० ।

अमीव amíva–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] रोग ।

अमीव चातनीः amíva-chátaníh–सं० रोग नाशक, रोग उत्पन्न करने वाले जन्तुओं का नाश करने वाला । अथर्व० । सू० ७ । ५ ।

अमु इङ्गुरु amu-inguru–सिं० आर्द्रक, आदी, अदरख। (Zingiber officinalis, *Roxb.*) स० फा० इं० ।

अ(ा)मुक a(-á)muk–नैपा०, अमरूद । (Guava). See–Amarúta.

अमुकी amukí–नैपा० मैनफल । (Randia Dumetorum, *Lam.*)

अमुकिरम amukiram–मल०, **अमुक्कीर** amukkír–ता० } पुनीर

Withania (Puneeria) coagulans, Dunal. इं० मे० मे०।

अमुक्कुडा विरई amukkuḍá-viraí–ता० असगंध के बीज, पुनीर–हिं०। Withania Coagulans, *Dunal.* स० फा० इं०।

अमुज्जनह् amujjanah–अ० धेनुक पक्षी।

अमुत amuta–पं० बंदा–म० अां०। (Loranthus Longiflorus.)

अमुत्तआम amuttaáám–अ० गेहूँ, किसी किसी के विचार से आमाशय का नाम है।

अमुद्पु चेट्टु amudpu-cheṭṭu–ते० एरण्ड, अरण्ड वृक्ष। (Ricinus Communis.). फा० इं० ३ भा०।

अमुम amum–ता० दुद्धी, रक्तविन्दुच्छदा (Euphorbia Pilulifera.)। इं० मे० मे०।

अमुलटी amulaṭí–बं० आमला। (Phyllanthus Emblica.)

अमुल्का amulká–बं० जंगली अंगूर, पञ्जीरी–द०, हिं०। (Vitis Indica.) इं० मे० मे०।

अमुसा amusá–अ० अजवाइन। (Carum "Ptychotis" Ajowan.) इं० मे० मे०।

अमूक amúka–नेपा० अमरूत (Guava.)। –हिं० वि० [सं०] (१) जो गूँगा न हो। (२) बोलने वाला। वक्ता।

अमूद áamúda–अ० इमाद, उम्दह्। स्तम्भ, खम्भा। इसका बहुवचन "उमूद" है। कॉलम (Column.)–इं०।

अमूद क़ास़ातीर áamúda qásátír–अ० मूत्र प्रवर्त्तक सलाई के भीतर का तार। स्टिलेट (Stillet.)–इं०।

अमूदन्दाँ amú-dandán–पं० रसवत भेद। (Berberis Nepalensis, *Spreng.*) मेमो०।

अमूदुल् क़ल्ब áamúdul-qalb–अ० मध्य हृदय, हृदय का बीचो बीच।

अमूदुल् फ़क़रात् áamúdul-faqarát }
अमूद फ़क़री áamúda-faqarí }
–अ० उम्दतुल् फ़क़रात, सिलसिलतुज़् ज़ुहर। मेरुदण्ड, सुषुम्नाकांड। (Vertebral column, Rachis, Back bone.)

अमूदुल् ब़त्न áamúdul-batn–अ० सुषुम्नाकाण्ड का वह भाग जो उदर के सम्मुख स्थित है, पृष्ठ, पीठ।

अमूदुल् मिह्बली áamúdul-mihbalí–अ० योनि के भीतर श्लैष्मिक-कला सम्बन्धी एक सीवन है। कॉलम ऑफ़ दी वेजाइना (Column of the vagina.)।

अमूमन amúman–अ० हमामा, अमामून, हामामा, हमाम। महिल्–फ़ा०। (Dionysia Diapensiæ folia, *Boiss.*) फा० इं० २ भा०।

अमूरा amoora–ले० तिक्तराज, हारिनहारा।

अमूरा कल्क्युलेटा amoora-culculata }
अमूरा कुक्युलेटा amoora-cuculata, }
Linn.–ले० उमर। (Andersonia Cucullata, *Roxb.*)। इं० हैं० गा०।

अमूरा रोहिटका amoora rohituka, *W. & A.*–ले० रोहितका रोहिना, रुहेड़ा हिं०। (Andersonia Rohituka, *Roxb.*)। फा० इं० १ भा०। मेमो०।

अमूरा रोटक amoora rotuk–इं० तिक्तराज-हारीन हारा। Amoora or Andersonia Rohituka, Roxb.। इं० हैं० गा०।

अमूरा हुडेड amoora hooded–इं० उमर। इं० हैं० गा०।

अमूर्त्त amúrta–हिं० वि० [सं०] निराकार, मूर्त्ति रहित, अवयव शून्य, निरवयव। Formless, Shapeless; Unembodied.। –संज्ञा पुं० (१) आकाश। (२) वायु। (३) जीव।

अमूर्त्ति amúrti } –हिं० वि०
अमूर्तिमान amúrtimána } [सं०]

(१) मूर्त्तिहीन, आकृति रहित (Formless.) निराकार। (२) अप्रत्यक्ष। अगोचर।

अमूल amúla } -हिं० वि० [सं०]
अमूलक amúlaka } मूल रहित, निर्मूल, जड़शून्य। (Destitute of a root or origin.)

अमूलक amúlak-हिं० वि० मूलशून्य, निर्मूल, अप्रामाणिक।

अमूला amúlá-सं० स्त्री० (१) अग्निशिखा वृक्ष, लाङ्गली। ईषलांगुलिया-बं०। वैoनिघ०। (२) अर्कपत्रा। के०।

अमूस amúsa-अजवाइन, नानख़्वाह। (Ligusticum Ajowan). इं० हैं० गा०।

अमृणालम् amrinálam-सं० क्ली० (१) अमृणाल, लामज्जक, श्वेत उशीर। (Andropogon laniger) रा० नि० व० १२; भा० पू० १ भा० क० व०; मद० व० ३। (२) उशीर, खस-हिं०। वेणार मूल-बं०। (Andropogon muricatus) रत्ना, रा० नि० व० १२। च० द० अर्श चि० प्राणदागुटिका।

अमृतः amritah सं० पुं० } (१) पारद,
अमृत amrita-हिं० संज्ञा पुं० } पारा (Mercury)। रा० नि० व० १३। (२) वन मुद्ग, बन मूँग (Phaseolus trilobus)। रा० नि० व० १६। देखो-मकुष्टकः। अत्रि २ स्थान २ अ०। (३) धन्वन्तरि "ना धन्वन्तरिदेवयोः"। मे तत्रिकं। (४) बाराहीकंद (Tacca aspera)। रा० नि० व० ७। -क्ली० (५) वह वस्तु जिसके पीने से मनुष्य अमर हो जाता है। पीयूष, सुधा, निर्जर, समुद्रोत्पन्न १४ द्रव्यों में से एक द्रव्य विशेष। (Ambrosia, nectar)। (६) सलिल, जल, (Water)। रा० नि० व० १४। (७) घृत, घी (Ghee)। मे०, रा० नि० व० १५, वै० निघ० वा० व्या० भुजङ्गी गुटी। "अमृतं यज्ञशेषे स्यात पीयूषे सलिले घृते"। मे०। (८) सामान्य विष (Simple poison)। (९) दुग्ध (Milk)। रा० नि० व० १५। (१०) अन्न। (Corn) हे० च०। (११) औषध (Medicine)। रा० नि० व० २०। (१२) श्रृंगी विष, सींगिया, बच्छनाग (Aconite)। (१३) स्वर्ण, सोना। (Gold) (१४) भक्ष्य द्रव्य (Edible thing)। हे० च०। (१५) यज्ञ के पीछे की बची हुई सामग्री। (१६) धन। (१७) हृद्य पदार्थ। (१८) सुस्वादु द्रव्य। मीठी वा मधुर वस्तु।

अमृत कन्दा amrita-kandá-सं० स्त्री० कन्द गुडूची-हिं०। कन्दगुलवेल-मह०। वै० निघ०। See-kanda-gudúchí.

अमृतकर amrita-kar-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] चन्द्रमा, शशि, जिसकी किरणोंमें अमृत रहता है। निशाकर। (The moon)

अमृत कला निधि amritakalánidhi-सं० पुं० वच्छनाग २ मा०, कौड़ी भस्म ५ मा०, कालीमिर्च ६ मा०, बारीक चूर्णकर जल से मूँग प्रमाण गोलियाँ बनाएँ। गुण-ज्वर, पित्त और कफज अग्निमांद्य को नष्ट करता है। वृ० नि० र० ज्वरे।

अमृतकल्प भल्लातकः amrita-kalpa-bhallátakah-सं० पुं० पका हुआ भिलावाँ तीक्ष्ण वीर्य्य तथा अग्निके तुल्य होता है, इसका विधि पूर्वक सेवन करना अमृत कल्प होता है। वा० उ० अ० ३६।

अमृत-कल्प रसः amrita-kalpa-rasah -सं० पुं० अजीर्णाधिकारोक्त रस। शुद्ध पारद तथा गंधक के समान भाग की कज्जली करें पुनः उक्त कज्जली का अर्ध शुद्ध विष (वत्सनाभ) तथा इतना ही सुहागा (लावा किया हुआ) लेकर इसे यत्नपूर्वक तीन दिन तक भृङ्गराज स्वरस की भावना दें। मात्रा-मुद्ग प्रमाण।

अमृत कल्प वटी amrita-kalpa-vaṭí-सं० स्त्री० पारा, गन्धक समान भाग लेकर कज्जली करें, फिर विष और सोहागा प्रत्येक पारे के बरा-

घर डालकर भाँगरे के रस में ३ दिन घोटें, और मूँगके समान गोलियाँ बनाएँ। मात्रा–२ गोली। गुण–शूल, मन्दाग्नि, अजीर्ण आदि का नाश करती तथा धातु पुष्टि करती और अनुपान भेदसे अनेक रोगों को नाश करती है। र० सा० सं० अ० चि०।

अमृतकाशः amrita-káshah-सं०पुं० (Oxygen) ओपजन, उत्प्रजन।

अमृत गर्भः amrita-garbhah-सं०पुं० आत्मा के भीतर। अथर्व०। सू० ३६। १। का० ३।

अमृत गर्भ रसः amrita-garbha-rasah –सं० पुं० शु० गन्धक, शु० पारद, १०–१० गद्याणक लेकर दोनोंको तीन दिनतक २० गद्याणक आक के दूध में घोटकर फिर ३ दिन सेंहुड़ के दूध में घोटकर सराव संपुट में रखकर भूधरयन्त्र में पुट दें। इसी तरह ८ पुट देने के पश्चात् पीसकर बारीक चूर्ण करके चंदन, हड़ और मिरचों के क्वाथ और अम्बरवेल के रसकी ७–७ भावना दें। मात्रा–२ रत्ती। १ गद्याणक मिश्री के सहित ठंडे पानी से सर्व रोगों में दें। विशेषकर वात-शूल, पसली का दर्द, परिणाम शूल, वात ज्वर, मन्दाग्नि, अजीर्ण, कफ, पीनस, आमवात और कफ के रोगों का नाशक है। र० चि० ७ स्तवक।

नोट—१ गद्याणक=६४ वा ४८ रत्ती।

अमृत गुड़िका amrita-gudiká-सं० स्त्री० यह औषध अजीर्णके लिए हितकारी है। योग—पारद, गंधक, विष (सींगिया), त्रिकटु और त्रिफला। सर्व प्रथम पारद गंधक समान भाग की कज्जली करें। पुनः शेष औषध के समान भाग चूर्ण को उसमें योजित कर भृंगराज स्वरस की भावना देकर मुद्ग प्रमाण मात्रा की वटिकाएँ प्रस्तुत करें। यही अमृतवटी अर्थात् अमृत गुटिका है। रसै० चि०।

अमृतघृतम् amrita-ghritam-सं० क्ली० अपामार्ग बीज, सिरस बीज, मेदा, महामेदा, काकमाची, इन्हें गोमूत्र में पीस गोघृत में मिला घृत सिद्ध कर पीने से विष शांत होता है। यह अमृत नामसे विख्यात घृत मरे हुए को भी जीवित करता है। चक्र० सै० सं० विष चि०।

अमृतजटा amrita-jaṭá-सं०स्त्री०
अमृतजरा amrita-jará-हिं०स्त्री० } जटामांसी, बालछड़। Nardostachys jatamansi. *Dc.* । रा०।

अमृतजा amritajá–सं० स्त्री० (१) हरीतकी, हरड़। (Chebulic Myrobalan.) वै० निघ०। (२) आमला (Phyllanthus Emblica.)। (३) गुडूची (Tinospora Cordifolia.)। (४) लहसुन, रसोन (Garlic.)।

अमृतदान amrita-dána-हिं० संज्ञा पुं० [सं० मृद्भान्] भोजन की अथवा अन्य चीज़ें रखने का ढकनेदार बर्तन। मिट्टी का लुकदार बर्तन।

अमृतधारा amrita-dhárá-हिं० संज्ञा स्त्री० एक पेटेन्ट औषध विशेष।

अमृत नाभि amrita-nábhi-सं० स्त्री० पारद, पारा। अथर्व० ।६। ४४। ३।

अमृतनाम गुटिका amrita-náma-gutiká –सं० स्त्री० देखो—अमृत गुड़िका।

अमृत पञ्चकम् amrita-panchakam-सं० क्ली० सोंठ, गिलोय, सफेद मूसली, शतावर, गोखरू इन पांच चीज़ों को अमृत पञ्चक कहते हैं। इन पाँच चीजों के क्वाथ की ताम्रादि धातुओं की भस्म में तीन या सात भावना देकर गजपुट में फूँकने से धातुओं का अमृतीकरण संस्कार होता है जिससे धातुओं की भस्म अमृत के समान गुणकारी होती है।

अमृतपाणिः amrita-pánih-सं० पुं० पियूष पाणि, वह वैद्य जिसके हाथमें अमृत का सा असर हो। अथर्व०।

अमृतपालो रसः amrita-pálo-rasah-सं० पुं० पारा, गन्धक, बच्छनाग प्रत्येक समान भाग लेकर पानी में घोटकर गोला बनाएँ, फिर हाँडी के मध्य में रखकर ऊपर से तांबे की कोटी रखकर

सन्धि बन्द कर के हांडी के मुँह पर ढक्कन देकर कपड़ मिट्टी कर सुखा लें। फिर एक दिन दीपाग्नि से पकावें, ठण्डा होने पर तांबे के पत्र और उसके भीतर के रस को बारीक पीसकर रख लें। सेंधानमक और अदरक का रस मिलाकर प्रथम जिह्वा और मुख को अच्छी तरह चुपड़ लें। फिर इस रस की ३ रत्ती की मात्रा रोगी को देकर गरम कपड़े ओढ़ा दें। एक पहर के बाद खूब पसीना आएगा। इसी तरह तीन दिन तक करने से ज्वर बिलकुल नष्ट हो जाता है। पथ्य—छाँछ, चावलका भात।

रस० यो० सा०।

अमृतप्रभा गुटिका amrita-prabhá-guṭiká }
अमृतप्रभा वटी amrita-prabhá-vaṭí }
–सं० स्त्री० (१) मिर्च, पीपलामूल, लवंग, हड़, अजवाइन, अम्ली, अनारदाना, सेंधालवण, सोंचर लवण, विड़ लवण, १-१ पल; पीपल, जवाखार, चित्रक, सुफ़ेद जीरा, स्याह जीरा, सोंठ, धनियाँ, इलायची, आमला प्रत्येक २-२ पल, इन्हें चूर्ण कर बिजौरे नींबू के रस में घोटकर तीन पुट देकर एक मा० की गोलियाँ बनाएँ। वृ० नि० र०। भा० अरु०।

(२) अकरकरा, सेंधा लवण, चित्रक, सोंठ आमला, मिर्च, लवंग, हड़, तुल्य भाग लें, बिजौरा नीबू के रस की भावना दे १-१ मा० की गोलियाँ बनाएँ। गुण—इसके सेवन से खाँसी, गलरोग, श्वास, पीनस, अपस्मार, उन्माद तथा सन्निपात का नाश होता है।

अमृत प्राशः amrita-práṣhah–सं० पुं० उत्तम सुवर्ण का चूर्ण, ब्राह्मी, वच, कूट, हरीतकी इनका चूर्ण घी और शहत के साथ चाटने से बालकों की आयु, प्रसन्नता, बल की वृद्धि और अङ्ग की पुष्टि होती है। र० यो० सा०।

अमृतप्राशघृतम् amritapráṣha ghritam –सं० क्ली० बकरे का मांस और असगन्ध १-१ तुला (५-५ सेर), एक द्रोण (१६ सेर) जल में पकाएँ, जब चौथाई रहे, तब गोघृत १ प्रस्थ (६४ तोले) और बकरी का दुग्ध ४ प्रस्थ डाल विधिवत पकाएँ, पुनः २ कर्ष (२० मा०) केशर डाल मूर्छित कर पश्चात् निम्न औषधियों का कल्क तैयार कर पुनः घृत में डाल पाक करें। यथा—खिरेटी की जड़, गेहूं (गोधूम), असगन्ध गुरुच, गोखरू, कशेरू, सोंठ, मिर्च, पीपल, धनियाँ तालांकुर, आमला, हड़, बहेड़ा, कस्तूरी, कौंच बीज, मेदा, महामेदा, कूट, जीवक, ऋषभक, कचूर, दारुहल्दी, प्रियंगु, मजीठ, तेजपत्र, तालीशपत्र, बड़ी इलाइची, पत्रज, दालचीनी, नागकेसर, पुष्प चमेली, रेणुक, सरल, जायफल, छोटी इलायची, अनन्तमूल, कन्दूरी की जड़, जीवन्ती, ऋद्धि, वृद्धि, गूलर प्रत्येक १-१ कर्ष (१०-१० मा०)। जब घृत तैयारहो पुनः स्वच्छ वस्त्रसे छानकर उसमें शरावक भर (१ सेर) उत्तम मिश्री छोड़ विधिवत रक्खें। मात्रा—१० मा०।

गुण—इसके सेवन से शिरोव्याधि, खाँसी, अर्श, आमशूल, बद्धकोष्ठ दूर होता है। तथा उष्ण दुग्ध के साथ सेवन करने से ध्वज भंग, प्रमेह नष्ट होता है और बल वीर्य की वृद्धि होती है। भैष० र० ध्वजभङ्गाधिकार। हा०अ० त्र० ३ स्था० ६ अ०।

अमृत प्राश चूर्ण amrita-práṣha-chúrṇa --सं० पुं० एलुवा, मुद्गपर्णीमूल, शतावरी, विदारीकन्द, बाराहीकन्द, मुलहठी, वंशलोचन, दाख प्रत्येक २ पल। सरलधूप, चन्दन, तेजपात, निलोफर, कुमुद, दोनों काकोली, मेदा, महामेदा, जीवक, ऋषभक, चीनी प्रत्येक अर्द्ध पल। इनका चूर्ण कर फिर एलुवा, विदारीकन्द, बाराहीकंद और मुग्दपर्णी तथा शतावरी के रस की भावना दें। फिर ईख, आमला और शहद की सातसात भावना दें। यह दूध के साथ पीने से दाह, शिरोदाह, प्रवल रक्तपित्त, शिर और अक्षि कम्प तथा भ्रम आदि रोगों का नाश होता है। र० र० स० अ० २१।

अमृतप्राशावलेहः amrita-práṣhávaleh-ah–सं० पुं० (१) आमला, मजीठ, विदारीकन्द (काकोली, क्षीरकाकोली) ले इनका सर

समभाग निचोड़ कर गोघृत में मिलाएँ, पुनः जीवनीय गणकी समस्त औषधियाँ एक एक तो०, दाख, चन्दन, लाल चन्दन, खस, मिश्री, कमल, पद्म काष्ठ, महुए के फूल, सारिवाँ, कुम्भेरके फल, सुगंधरोहिष तृण १-१ तो० ले, इनका कल्क बनाकर घी में पकाएँ। जब पक कर शीतल हो जाए, तो इसमें शहद ३२ तो०, मिश्री २०० तो० दालचीनी का चूर्ण २ तो० इलायची चूर्ण २ तो०, कमल केशर चूर्ण २ तो० ले मिलादें, इस तरह यह अवलेह सिद्ध होता है।

जितेन्द्रिय होकर इसे नित्य सेवन करें। और इस पर दूध या मांस रस के साथ भोजन करें तो उरः क्षत, रक्तपित्त, तृषा, अरुचि, श्वास, खाँसी, वमन, मूर्च्छा, मूत्रकृच्छ्र, और ज्वर का नाश होता है। स्त्रियों में प्रीति उत्पन्न होती तथा बल की वृद्धि होती है।

भा० प्र० क्षय० रो० चि०।

(२) दूध में अथवा आमला, विदारीकन्द, ईख, तथा दूध वाले वृक्षों के समान भाग रस में ६४ तो० गोघृत को पकाएँ, पुनः इसमें मुलहठी, ईख, दाख, सुफेदचन्दन, लाल चन्दन, खस, मिश्री, कमल, पद्मकाष्ट, महुए का फूल, गुरुच, कम्भारी, रोहिष तृण, इनका कल्क मिला सिद्ध करें, पुनः शीतल होने पर इसमें ३२ तो० शहद, २०० तो० मिश्री, दालचीनी, और इलायची डाल सेवन करें।

अमृत प्राश्यावलेहः amrita-práshyávaleh -सं० पुं० दूध, आमले का रस, विदारीकन्द का रस, गन्ने का रस, पञ्च क्षीरी वृक्षों का रस, और घी प्रत्येक १ प्रस्थ मिलाकर पकाएँ, फिर इसमें मधुरादि गण, दाख, दोनों चन्दन, खस, चीनी, निलोफर, पद्माख, महुए का फूल, अनन्त मूल, खम्भारी, कतृण का कल्क १-१ कर्ष डाल कर अवलेह बनाएँ, शीतल होने पर अर्ध प्रस्थ मधु, १ तुला चीनी और दारचीनी, इलायची, पद्मकेशर प्रत्येक आधा आधा पल डाल कर भली प्रकार मिलाएँ। यथोचित सेवन करने से रक्त पित्त, क्षत, क्षय, तृष्णा, अरुचि, श्वास, खाँसी, वमन, हिचकी, मूत्रकृच्छ्र, तथा ज्वर का नाश होता है।

अमृतफल amritaphal-कुमा० शर्बती नीबू (Sweet lime)।

अमृतफलम् amrita phalam-सं० क्लो० }
अमृतफल amrita phala-हिं० संज्ञा पुं० }
(१) नासपाती-हिं०। नाक-पं०। Pyrus communis (The pear tree)। मद० व० ६ भा०। (२) अमरूद (Guava)। -पुं० (३) पारद (Mercury)। (४) पटोल, परवल (Sespadula Trichosanthes cucumerina)। (५) वृद्धि नामक औषध (See vriddhi)। रा० नि० व० ३। (६) धात्री वृक्ष, आमला (Phyllanthus emblica) मद०।

अमृतफला amrita-phalá-सं० स्त्री०, हिं० संज्ञा स्त्री० (१) अंगूर, द्राक्षा, दाख। किसमिस-हिं०। Raisin। (२) आमलकी। आमला। (Phyllanthus emblica.) रा० नि० व० ११। (३) लघु खर्जूरी वृक्ष, छोटा खजूर वृक्ष (Small date palm tree)। (४) श्वेत द्राक्षा-हिं०। उत्तरा, उत्तरी-को०। (५) मुनक्का।

अमृतबन्धुः amrita-bandhuh-सं० पुं० (१) अश्व, घोड़ा (A horse)। वै० निघ०। (२) चन्द्रमा।

अमृतबान amrita-bána-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अमृद्वान्] अमृतदान। रोग़नी हाँडी मिट्टी का रोग़नी पात्र। लाह रोग़न किया हुआ मिट्टी का बरतन जिसमें अचार, मुरब्बा, घी आदि रखते हैं।

अमृत भल्लातकम् amrita-bhallátakam -सं० क्लो० पवन से टूटे तथा नकुओं से रहित पके हुए भिलावें २५६ तो० ईंट के चूर्ण से घिसकर पानी से प्रक्षालन कर हवा में रख शुष्क कर दो दो दल करके १०२४ तो० जल में उबालें जब चौथाई शेष रहे तो वस्त्र से छानकर ठण्डाकर लें। पुनः २५६ तो० दुग्ध में पकाएँ जब चौथाई शेष रह जाए तब बराबर भाग गोघृत मिलाकर पुनः

पकाएँ, पश्चात् अर्ध भाग मिश्री मिलाकर रई से अच्छी तरह मथें । ७ दिन तक रखने के पश्चात् यह अमृत तुल्य हो जाता है। प्रातः शौचादि से शुद्ध हो मात्रा पूर्वक सेवन करने से कुष्ठ, कृमि, कान, नाक, उँगली का गलकर गिरना तथा केशों का श्वेत होना, दाँतों का गिरना इत्यादि दूर हो स्मृति की वृद्धि होती है। भैष० र० कुष्ठ० चि०।

अमृतभल्लातकावलेहः amrita-bhallátaká-valehah-सं० पुं० १२८ तो०, शुद्ध भिलावें को १०२४ तो० जल में पकाएँ । पुनः १२८ तो० गुरुच का कल्क डाल पकाएँ । जब पक कर चौथाई शेष रह जाए तब वस्त्र से छान कर उसमें ३२ तो० गो घृत, २५६ तो० गो दुग्ध, ६४ तो० मिश्री, ३२ तो० शहद डाल मन्द मन्द अग्नि से पकाएँ । जब पककर गाढ़ा होजाए अग्नि से पृथक कर निम्न औषधों का उत्तम चूर्ण डालें यथा— बेलगिरी, अतीस, गुरुच, सोमराजी, पमाड़, नीमछाल, हड़, बहेड़ा, आमला, मजीठ, सोंठ, मिर्च, पीपल, अजवाइन, सेंधा लवण, मोथा, दालचीनी, छो० इलायची, नागकेशर, पित्तपापड़ा, तेजपत्र, सुगन्धबाला, खस, चन्दन, गोखरु, कचूर और रक्त चंदन प्रत्येक २-२ तो० । मात्रा—१-४ तो० । इसके सेवन से कुष्ठ, वातरक्त, तथा अर्श दूर होता है । अपथ्य—मांस, अम्ल, धूप, अग्निताप, मैथुन, दही, तैल तथा अधिक मार्ग चलना निषेध है । भा० प्र० मध्य० ख० २ कुष्ठ० चि० ।

अमृत भल्लातकी amrita-bhallátakí-सं० स्त्री० उत्तम सुन्दर पके हुए भिलावें २५६ तो० को दो दो फाँक कर चौगुने जल में पकाएँ, जब चौथाई जल शेष रहे तब उन्हें पुनः चौगुने गोदुग्ध में पकाएँ । जब अच्छी तरह गाढ़ा होजाए तब ६४ तो० मिश्री मिला कर सात दिन तक रख छोड़ें । पश्चात् अग्नि और बल का पूर्ण अनुमान कर उचित मात्रासे सेवन करनेसे गुदा के सम्पूर्ण विकार दूर होते और अग्र भाग के केश सुन्दर कृष्ण वर्ण के हो जाते हैं । इसके लिए पथ्यापथ्य का कोई नियम नहीं ।

अमृत भस्म सूतः amrita-bhasma-sútah-सं० पुं० पारा और गन्धक समान लेकर त्रिफला के साथ ३ दिन तक लोह के खल में घोट कर ताम्बे की डिब्बी में रखकर बाहर से कपड़मिट्टी करके उसमें पुट दें । फिर त्रिफला, भाँगरा, चित्रक, सोंठ, वच, बकुची, शतावरी, भिलावाँ, गन्धक, नीलाथोथा, और वत्सनाग सबको समान भाग लेकर पीसकर चूर्ण करें और उपर्युक्त पुट दिया हुआ पारा $\frac{2}{16}$ भाग मिला कर इसको कान्तलोह के बर्तन में त्रिफला का क्वाथ करके उसके साथ खाने से ६ महीने में कुष्ठ नष्ट होता है । नीम का पञ्चांग, शहद, घी और शक्कर के साथ ६ महीने तक इसका प्रयोग करने से कोढ़ी की नासिका इत्यादि का गिरना बन्द हो जाता है । भिलावाँ का तेल और हरताल भस्मके साथ इसका प्रयोग करने से श्वित्र कुष्ठ दूर होता है ।

अमृतमञ्जरी amrita-manjari-सं० स्त्री० (१) गोरक्ष दुग्धी क्षुप । रा० नि० व० ५ । (२) सामान्य ज्वर में प्रयुक्त रस विशेष, यथा— हिंगुल, मरिच, सुहागा, पीपल विष, जायफल इनको सम भाग ले जम्भीरीके रसकी भावना दें । मात्रा-२ वा ३ गुञ्जा । किसी किसी ग्रंथमें यह रस कासाधिकार में वर्णित है । र० सा० सं० ।

अमृतमञ्जरीरसः amrita-manjarí-rasah-सं० पुं० सिंगरफ, मीठातेलिया, पीपल, कालीमिर्च, सुहागा, जावित्री, प्रत्येक समान भाग लेकर जम्भीरी के रसमें खरल करके १ रत्ती प्रमाण की गोलियाँ बना सेवन करने से दारुण सन्निपात, मन्दाग्नि, अजीर्ण और आमवात रोग नष्ट होते हैं । गर्म जल के साथ सेवन करने से हर प्रकार के रोग शमन होते हैं । इससे पाँच प्रकार की खाँसी, श्वास, सर्वाङ्ग पीड़ा जीर्ण ज्वर और क्षयज खाँसी दूर होती हैं । र० सा० सं० कासे ।

अमृत मण्डुरः amrita-mandurah-सं० पुं० देखो— अमृत मण्डूरम् ।

अमृत मण्डूरम् amrita-mandúram-सं० क्लो० शुद्ध मण्डूर ८ पल, शतावरीका रस ८ पल, दूध, घी और दही प्रत्येक ४-४ पल लेकर एकत्र पीस पकाकर गाढ़ा करें। इसको प्रातःकाल और सन्ध्या समय १-१ निष्क खाने से वातज, पित्तज और सन्निपातज परिणाम शूल का नाश होता है। र० र० शूले।

अमृत मन्थः amrita-manthah सं० पुं० दुग्धादिपरिगोलित मन्थ। प० मु० २० व०।

अमृत महल amrita-mahala-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] मैसूर प्रदेश की एक प्रकार की भैंस।

अमृतमूरि amrita-múri-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] संजीवनी बूटी। अमरमूर।

अमृत योगः amrita-yogah-सं० पुं० फलित ज्योतिष में एक नक्षत्र योग विशेष। शुभ फल दायक योग। अत्रि० २ स्था० ७ अ०।

अमृत रसः amritarasah-सं० पुं० शु० गन्धक २ कर्ष, शु० पारद १ कर्ष, त्रिफला, त्रिकुटा, नागरमोथा, विडंग, चित्रक, प्रत्येक का चूर्ण १-१ पल सबको मिश्रित कर रक्खें। १ कर्ष शहद और घी के योग से चाटें और ऊपर शीतल जल तथा गोदुग्ध यथा क्रम पान करें तो अम्लपित्त, मन्दाग्नि, परिणामशूल, कामला, और पाण्डु रोग का नाश होता है। र० चि० ११ स्तवक।

अमृत रसतुल्यपाकः amrita-rasatulya-pákah-सं० स्त्री० देखो—अमृतभल्लातकम् तथा वाग्भ० उत्तर स्थान० अ० ३९ श्लो० ७५।

अमृतरसा amrita-rasá-सं० स्त्री० कपिल द्राक्षा, अंगूर। काले द्राख-म०। (Vitis Vinifera.) रा० नि० व० ११।

अमृत रसायनम् amrita-rasáyanam-सं० क्लो० लोह चूर्ण ३ भा०, त्रिफला ३ भा०, अभ्रक १ भा०, पारद भस्म १ भा०, इनको सोलह गुने पानी में उपर्युक्त चीज़ों में से आधी डालकर उबालें। जब चतुर्थांश शेष रहे तो उसमें समान भाग घी मिलाकर और घी के बराबर शतावरी का रस और उससे द्विगुण दूध मिलाकर लोह के अथवा मिट्टी के वर्तन में उसे होशियारीसे पकाएँ। फिर उपरोक्त बचा हुआ आधा लोह चूर्ण जोकि दिव्य औषधियों से और संपुट आदि से मारा हुआ है और उपरोक्त ही मृताभ्रक, पारद भस्म और त्रिफला, दन्ती, विडंग, दोनों जीरे (अलग अलग), ढाक के बीज, झाऊ, चित्रक, विधारा, हस्तिकर्ण पलाश की जड़ (अभाव में भूमिकुष्माण्ड), कसालु, तज, त्रिकुटा, पीपलामूल, गिलोय, तालमूली, सहिजन के बीज अरनी, जवासा, नागदौन, सोनापाठा की गिरी, इन्द्रजौ, प्रियङ्गु, नीम और अजवाइन इन सब का पृथक् पृथक् चूर्ण करके अभ्रक और लोह के बराबर मिलाएँ।

गुण—वात कफ प्रधान में सोंठ और त्रिफला के साथ दें। उचित मात्रा में सेवन करने से यह तत्काल ही जठराग्नि, बल और पुष्टि को बढ़ाता है। र० यो० सा०।

अमृतलता amritalatá-सं० स्त्री०, हिं० संज्ञा स्त्री० गुरुच, गिलोय। रा० नि० व० ३। (Tinospora Cordifolia.)

अमृतलतादि घृतम् amrita-latádi-ghritam-सं० क्लो० गिलोयरस और उसका कल्क तथा भैंस का घृत डालकर पकाएँ। पुनः उसमें चौगुना दुग्ध डालकर पकाएँ। इसके सेवन से हलीमक रोग समूल नष्ट होता है। भा० प्र० मध्य० ख० २ श्लोक ४६।

अमृतवटकः amrita-vatakah-सं० पुं० सान्निपातिक अतिसार में हितकारक योग विशेष। देखो-हा० अत्रि० स्था० ३। अ० पाण्डु० चि०।

अमृतवटी amrita-vatí-सं० स्त्री० अग्निमांद्य में प्रयुक्त रस विशेष। विष २ भाग, कौड़ी ५ भाग, मिर्च ६ भाग, इनको जल में घोटकर मुद्ग प्रमाण गोलियाँ बनाएँ। भैष० र०। रस० राज० सु०।

अमृतवर्तिका amrita-vartiká-सं० स्त्री० मृत्युञ्जयतन्त्रोक्त रसायनवर्ती। साधन विधि—

यथा-त्रिफला, त्रिकुटा, ब्राह्मी, गिलोय, चित्रक, नागकेशर, सोंठ, भाँगरा, सम्हालू, हल्दी, दारुहल्दी, शक्रासन (भाँग, सिद्धि), तज, इलायची, गम्भारी की छाल, वच, वायविडंग प्रत्येक का चूर्ण २ पल, कामरूपदेशीय गुड़ ४० पल एकत्र मर्दन कर ३६० वर्त्तिका प्रस्तुत करें। इसे भोजन के पूर्व प्रति दिवस शीतल जलसे १-१ सेवन करें। भैष०।

अमृतवल्लरी amritavallarí-सं० स्त्री० (१) गुडूची, गिलोय। (Tinospora Cordifolia) भा० पू० १ भा० गु० व०। (२) उपोदकी, बड़ी पोई।

अमृतवल्लिका amrita-vallíká
अमृतवल्ली amrita-vallí
-सं० स्त्री० चित्रकूट प्रसिद्ध गुडूची। र० मा०। रा० नि० व० ३। अत्रि० २ स्था० २ अ०। इसे विषनाशक, किञ्चित् तिक्त, जरा, व्याधि, कुष्ठ, कामला, शोथ, व्रणनाशक ऋषियों ने कहा है। वै० निघ० जीर्णज्व० हरीतकी पाक।

अमृत षट्फल घृतम् amrita-shaṭphala-ghritam-सं० क्लो० सोंठ, चव्य, चित्रक, जवाखार, पीपल, पीपलामूल प्रत्येक ४-४ तो०, गोघृत ६४ तो०, अदरख का स्वरस ६४ तो०, दही का पानी ६४ तो० उक्त औषधियों का कल्क प्रस्तुत कर यथाविधि घृत सिद्ध कर सेवन करने से ऐकाहिक, द्वयाहिक, त्र्याहिक और चातुर्थिक ज्वर दूर होते हैं। यह खाँसी, श्वास तथा अर्श में भी हितकारी है। बंग० सं० ज्वर० चि०।

अमृताष्टकः amritashṭakah-सं० पुं० गुरुच, चिरायता, कुटकी, नागरमोथा, सोंठ, खस, पाठा, नेत्रबाला इन्हें अमृताष्टक कहते हैं। इसके सेवन करने से ज्वर दूर होता है। चक्र० द० यो० त० वं० से० सं०।

अमृतसङ्गमः amrita-sangamah-सं० पुं० खपरिया, संगबसरी-हिं०। खापर-बं०। कलखापरी-म०। वै० निघ०। See-khapariyá.

अमृत सञ्जीवनी amrita-sanjívaní-सं० स्त्री०, हिं० वि० स्त्री० (१) गोरखदुद्धी नामक क्षुप विशेष। रा० नि० व० ५। See-Gorakshaduddhí. (२) मृतसञ्जीवनी।

अमृत सम्भवा amrita-sambhavá-सं० स्त्री० गुडूची, गिलोय, गुलवेल, गुलञ्च। (Tinospora Cordifolia.)। रा० नि० व० ५।

अमृत सहोदरः amrita-sahodarah-सं० पुं० (A Horse.) घोटक, घोड़ा, अश्व। जयद०।

अमृतसार amritasára-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) नवनीत। मक्खन। (२) घी।

अमृतसार गुटिका amrita-sára-guṭiká-सं० स्त्री० त्रिफला, गिलोय, मोथा, विधारा, वायबिडंग, वच २-२ पल, त्रिकुटा, पीपलामूल, बाला, चीता, दालचीनी, इलायची, नागकेशर, इनका चूर्ण १-१ पल। यह चूर्ण २५ पल लेकर ५० पल गुड़ के द्वारा ३६० मोदक बनाएँ। गुण—अग्निवर्धक है। र० र० रसायने०।

अमृतसारजः amrita-sárajah-सं० पुं० गुड़ (Jaggery.)। काकली-म०। रा० नि० व० १४। (२) नवराजखण्ड। नवात-बं०। रा० नि० व० १४। गुण-यह प्यास, ज्वर, दाह और रक्त पित्त को दूर करता है।

अमृत-सारजा amrita-sárajá-सं० स्त्री० चीनी, शर्करा। म०-खड़े साकर। (Sugar.)

अमृतसार ताम्रम् amrita-sárat-ámram-सं० क्लो० रसायन अधिकारोक्त।

अमृत सुन्दरो रसः amrita-sundaro-rasah-सं० पुं० मैनसिल, सोनामाखी, हरताल, गन्धक, पारा, खपरिया प्रत्येक समान भाग लेकर अदरख, वासा और तुलसी के रस में खरल करके तांबे के पात्र में भर कर सम्पुट करके ३ दिन पकाएँ, फिर ठण्डा होने पर निकाल कर रक्खें। मात्रा—३ रत्ती। यह वातज और कफज रोगों का नाशक है।

अमृतसोदरः amrita-sodarah-सं० पुं० घोड़ा, अश्व, घोटक (A horse.)। रा० नि० व० ६।

अमृतस्रवा amrita-sravá-सं० स्त्री० (१) चित्रकूट में प्रसिद्ध लता। अमृतवल्ली। रुद्रवन्ती-बं०।

तत्पर्य्याय–वृत्तरुहा, उपवल्लिका, घनवल्ली, सित-लता। गुण–किञ्चित् तिक्त, रसायन, विषघ्न, व्रण, कुष्ठ, आम, कामला, और शोथनाशक है। रा० नि० व० ३।

(२) आयमाणा। रा० नि० व० ५। मात्रा–३ मा०।

अमृत हरीतकी amrita-harítakí–सं० स्त्री० धनियाँ, जीरा, मोथा, पञ्चलवण, अजवायन, हिंगु, तेजपत्र, लवंग, त्रिकुटा प्रत्येक समभाग ले उत्तम चूर्ण करें। इस चूर्ण के बराबर शुद्ध हड़का चूर्ण मिलाएँ। हड़ शोधन विधि–१०० हड़ोंको लेकर तक्रमें भिगोएँ। जब हड़ मुलायम हो जाएँ तब उनके बीज अलग अलग कर छिलकों को लेकर चूर्ण करलें। यही चूर्ण उक्त योग में मिलाया जाता है। पुनः इसमें षड्लवण, पंचलवण, भूनी हींग, जवाखार, जीरा, अजमोद ले चूर्ण कर चुक की भावना दें और उक्त समस्त चूर्ण में मिला रक्खें। उचित मात्रा में सेवन करने से घोर अजीर्ण का नाश होता है।

अमृतक्षारः amrita-ksháraha–सं० पुं० नवसादर, नृ(नर)सार। (Ammonium chloridum.) वै० निघ०।

अमृता amritá–सं० स्त्री०, हिं० संज्ञा स्त्री० (१) गुडूची, गिलोय। (Tinospora cordifolia) रा० नि० व० ३। २ मा०। (२) (Phyllanthus emblica.) आमला। रा० नि० ११। (३) हड़ हरीतकी। (Terminalia chebula) प० मु० "स्थूलमांसामृता स्मृता।" इयं चम्पा जाता। रा० नि० व० ११। (४) तुलसी (Ocimum Sanctum.)। (५) काकधात्री वृक्ष। भा०। (६) मदिरा, मद्य (Wine)। रा० नि० व० १४। (७) इन्द्रायण (Citrullus colocynthes) रा० नि० व० ३। (८) पारावतपदी, लताफटकी। रा० नि० व० ३ (९) गोरक्षदुग्धा। (१०) काली अतीस, कृष्ण अतिविषा। (११) रक्त निशोथ, तुर्बुद सुर्ख, रक्त त्रिवृत्ता। रा० नि० व० ६। (१२) दूर्वा, दूर्वा, दूब। (१३) पिप्पली। मे०। (१४) खिंगिनी। रा० नि० व० ३। (१५) नीलदूर्वा, हरीदूब। रा० नि० व० ८। (१६) श्वेत दूर्वा, सुफ़ेद दूब। (१७) नागवल्ली, पान। (१८) रास्ना (१९) गरुडवल्ली। वै० निघ० क्षय चि०। (२०) सूर्यप्रभा। (२१) खबूंजालता। (२२) कन्दगुडूची, कन्द गिलोय। (२३) स्फटिकारिका। (Alumen) मद० व० ४। प्रयोगा०। गिलोय। (चित्रक गुड़े) वा० सू० १५ आरग्वधादिः। "निम्बामृता मधुरसा श्रुवनृपपाठाः" पद्म कादौ अरुण ग्रंथ-मृता दुरा जीवन संज्ञाः। चि० १ अ० किरातादिः। किराततिक्तममृता। च० द० वात ज्वर चि०। किरातादामृतादीच्य–। च० द० पित्त ज्वर० चि० लोध्रादिः। च० सू० ४ अ०। (२४) मालकांगनी। (२५) अतीस।

अमृताख्यगुग्गुलुः amritákhya-gugguluh–सं० पुं० वातरक्तरोग में प्रयुक्त योग यथा–गुरुच २ श०, गुग्गुलु १ श०, त्रिफला प्रत्येक १ श० जल ६४ श० में कूट कर पकाएँ, जब चौथाई शेष रहे छानकर पुनः इतना पकाएँ कि गाढ़ा होजाए। इसमें दन्तीमूल ४ तो०, निशोथ २ तो० चूर्णकर मिलाएँ। इसका बलाबल विचार कर मात्रा दें। चक्र० द० वात० रो० चि०।

अमृताख्य घृतम् amritákhya-ghritam–सं० क्ली० अपामार्ग बीज और शिरस के बीज दोनों प्रकार की श्वेता (कटभी और महा कटभी) और काकमाची (मकोय) इन्हें गोमूत्र में पीसें। इनसे सिद्ध किया हुआ घृत विष का परम शमन करता कहा गया है। यह अमृत नामक विख्यात घृत है। सुश्रुत० सं० कल्प० अ० ७ श्लो० ११।

अमृताख्य तैलम् amritákhya-tailam–सं० क्ली० गिलोय, मुलहठी, लघुपञ्चमूल, पुनर्नवा, रास्ना, एरण्डमूल, जीवनीयगण, प्रत्येक १०० पल। वज्रा ४०० पल, बेर, बेल, जौ, कुल्थी, प्रत्येक एक एक आढक, शुष्क गाम्भारी फल १ द्रोण, इनको कूट धोकर १०० द्रोण जल में पकाएँ। जब ४ द्रोण जल शेष रहे तब छान लें

और इसमें ४ गुना दूध डालकर तथा चन्दन, खस, नागकेशर, तेजपात, इलायची, अगर, कूठ, तगर, मुलहठी, प्रत्येक ३-३ पल और मजीठ ८ पल का कल्क बनाकर उसके साथ १ द्रोण तेल का पाक सिद्ध करें। यह वातरक्त, क्षत क्षीण, वीर्य की अल्पता, थकान, योनिदोष, अपस्मार और उन्माद को दूर करता है। च० सं०।

अमृताख्य लोह रसायनम् amritákhya-loha-rasáyanam-सं० क्लो० देखो-अमृताख्य लौहः।

अमृताख्य लौहः amritákhya-louhah-सं० पुं०, क्लो० रक्त पित्त में प्रयुक्त रसायन यथा—गुरुच, निसोथ, दन्तीमूल, मुण्डी, खदिर, अडूसा, चित्रक, भाँगरा, तालमखाना, पुष्करमूल, पुनर्नवा, खिरेटी, कास, सहिंजन, देवदारु, वृद्धि, आक रस, डाभ (कुशा) का रस, शतावरी, इन्द्रायण, बरना, जमींकन्द, चव्य, तालमूली, भंगरन, पीपलामूल, कूट, भारंगी प्रत्येक ४-४ तोला, जल १०२४ तो० में पकाएँ। जब आठवाँ भाग शेष रहे क्वाथ छानकर रक्खें; पुनः त्रिफला १ प्रस्थ (६४ तो०), ८ प्रस्थ जल में पकाएँ। जब जल आठवाँ भाग शेष रहे क्वाथ छानकर रक्खें; पुनः शहद से पुट देकर मृत लौह चूर्ण ६४ तो०, अभ्रक १६ तो०, गन्धक १६ तो० विधिवत् शु० पारद ८ तो०, गुड़ ३२ तो०, मिश्री ३२ तो०, गुग्गुल शु० ८ तो०, घृत ३२ तो०, उक्त क्वाथ में विधिवत् इस लौह को पकाएँ। शीतल होनेपर शहद ३२ तो० मिलाएँ। पुनः शुद्ध सोनामक्खी का चूर्ण ८ तो० शिलाजीत शु० २ तो०, सोंठ, मिर्च, पीपल, त्रिफला, जमालगोटे की जड़ शुद्ध, निशोथ, दोनों जीरा, खदिरसार, तालीसपत्र, धनियाँ, मुलहठी, वंशलोचन, रसवत, काकड़ाश्रृंगी, चित्रक, चव्य, नागरमोथा, दालचीनी, इलायची, तेजपात, नागकेशर, कङ्कोल, लवंग, जायफल, मुनक्का, छोहारा प्रत्येक का चूर्ण २-२ तो० उक्त अवलेह में मिलाएँ। इसके सेवन से रक्तपित्त, अम्लपित्त, क्षय, कुष्ठ, ज्वर, अरुचि, अर्श, उदरशूल, संग्रहणी, आमवात, वातरक्त, मूत्रकृच्छ्र, प्रमेह, शर्करा रोग दूर होता है।

मात्रा—१ रत्ती से ८ मा०।

अनुपान—शहद, घृत।

अपथ्य—अनूपदेशज मांस और जिनके आदि का अक्षर 'क' हो उसे न खाना चाहिए। वंग० सं० रक्त पित्त चि०।

अमृताख्य हरीतकी amritákhya-haritakí-सं० स्त्री० पाण्डु रोग में प्रयुक्त योग—सतावर, भाँगरा, पुनर्नवा, पियाबाँसा, प्रत्येक को कूटकर चौगुने जलमें काढ़ा करें। जब चौथाई शेष रहे, कपड़े से छान उसमें ३६० बड़ी और स्थूल हड़ डालकर पकाएँ। पुनः सुखाकर ३० पल दुग्ध में औटाएँ। पश्चात् गुठली निकालकर ये औषध डालें—पारद, गन्धक प्रत्येक ६ पल दोनों को किसी पात्र में रख थोड़ी देर तक अग्नि से पचाएँ, पुनः उतार कर जब तक गाढ़ा न हो चलाते रहें, फिर इसमें गिलोय का सत्व मिला कर शहद से ३६० गोलियाँ बनाएँ और १-१ गोली पूर्वोक्त हड़ों में भर दें और ऊपर सूत लपेटें। पुनः एक पात्रमें शहद भरकर उसमें हड़ों को डाल दें। इनमें से प्रति दिन एक हड़ भक्षण करें। इसके सेवनसे शुष्क पांडु रोगका नाश होता है। वृ० रस० रा० सु०। पांडु० रो०अधि०।

अमृतागुग्गुलुः amritá-gugguluh-सं० पुं० गिलोय, परवल की जड़, त्रिफला, त्रिकुटा, वायविडंग सर्व तुल्य भाग ले चूर्ण कर समान भाग शुद्ध गुग्गुल चूर्ण के साथ मर्दन कर १-१ तो० की गोलियाँ बनाएँ।

इसके सेवन से व्रण, वातरक्त, गुल्म, उदरव्याधि, शोथ इत्यादि दूर होते हैं। यङ्ग० सं० व्रण० चि० श्लो० ५०। अन्य योग के लिए देखो-भाव० प्र० मध्य० ख० २७ श्लो०। प्रारम्भ १७०, श्लो० १७८ वातरक्त० चि०॥ भैष० र० वातरक्त० चि०। चक्र० द० वात० र० चि०।

अमृताघृतम् amritághritam-सं० क्लो० वातरक्ताधिकारोक्त योग विशेष। चक्र० द० वा० र० चि०।

अमृताङ्करसः amritánkarasah–सं० पुं० पारा, गन्धक, त्रिकुटा, पीपलामूल, चव्य, चित्रक, बच्छनाग, सैंधव प्रत्येक समान भाग लेकर भाँगरे के रससे भावना दें। मात्रा—२ रत्ती। गुण—यह पाँचों प्रकार की खाँसी को नष्ट करता है। रस० यो० सा०।

अमृताङ्कुरलौहः amritánkura-louhah–सं० पुं०, क्लो० चित्रक मूल प्रभृतिसे शुद्ध पारा, लौह चूर्ण, ताम्रभस्म, शिलाजीत, गन्धक, गूगुल और अभ्रक भस्म प्रत्येक ४–४ तो०, हड़, बहेड़ा १–१ तो०, आमला ६ तो० और ८ मा० लोहसे अष्टगुण घी, त्रिफला का क्वाथ १२८ तो० इन सब को लोहे की कढ़ाही में पकावें और लोहे की कड़छीसे चलाते रहें। मात्रा—[illegible] अनुसार।

गुण—प्रत्येक कुष्ठ, पांडु, प्रमेह, आमवात, वातरक्त, कृमि, शोथ, [illegible], शूल, [illegible], क्षय, दमा और वलि व पलित को नष्ट करता है। रस० यो० सा०।

नोट—इसी नाम के दूसरे योग में बहेड़ा ६ पल, आमला ८८ तोले, गोधूम १८ तोले और १ प्रस्थ त्रिफला के क्वाथ के साथ उक्त विधि से पकाने को कहा है। उ० द० चि०। र० स० सं० रस०। र० र० स० सं० टी०।

अमृताङ्कुर वटी amritánkura-vaṭi–सं० स्त्री० पारद, गन्धक, लौह, अभ्रक, शुद्ध शिलाजीत, इन्हें गिलोय के स्वरससे मर्दन कर गुञ्जा प्रमाण गोली बनाएं। इसके सेवन से क्षुद्ररोग, रक्तपित्त, जीर्णज्वर, प्रमेह, कृशता, अग्नि क्षय आदि आमला के स्वरस के साथ सेवन करने से दूर होते हैं तथा यह पुष्टि, कान्ति, मेधा और शुभ मति को उत्पन्न करती है। भैष० र० क्षुद्ररोग चि०।

अमृताञ्जन amritánjana–सं० पुं० पारा, सीसा समान भाग इनसे द्विगुण शु० सुर्मा और थोड़े से कपूर मिलाकर बनाया हुआ सुर्मा तिमिर को नष्ट करता है।

अमृतादिः amritádih–सं० पुं० विसर्प रोग में प्रयुक्त क्वाथ। यथा—गिलोय, अडूसा, परवल नागरमोथा, सप्तपर्णी, खैर, कालाबेंत, नीम के पत्ते, हल्दी, दारुहल्दी, इनका क्वाथ कुष्ठ, विष, विसर्प, विस्फोटक, कण्डु, मसूरिका, शीतपित्त और ज्वर को दूर करता है। भैष० र० विसर्प चि०।

गिलोय, सोंठ, पीयाबाँसा, इलाची, बड़ी कटेली, छोटी कटेली, शालपर्णी, पृश्निपर्णी, गोखरू, नागरमोथा, नेत्रबाला इन्हें पीस मधुयुक्त सेवन करने से गर्भ शूल नष्ट होता है।

भैष० र० गर्भिणी चि०।

अमृतादिक्वाथः amritádikváthah–सं० पुं० गिलोय, सोंठ, कटसरैया, नागरमोथा, लघुपञ्चमूल, सोंफ, सुगन्धबाला इनके क्वाथ में शहद डाल पीने से मसूरिका पीड़ा दूर होता है। यो० त० मसू० चि०। इस नाम के भिन्न भिन्न वाले योग अनेक ग्रंथों में आए हैं।

अमृतादिगुग्गुलुः amritádigugguluh–सं० पुं० देखो—अमृताद्यगुग्गुलः।

अमृतादिगुग्गुलुघृतः amritádigugguloghritah–सं० पुं० गिलोय, वासा, पटोल, चंदन, मोथा, कुटकी, कुड़ा की छाल, इंद्रयव, हड़, चिरायता, कलिहारी, अनन्तमूल, जौ, बहेड़ा, आमला, खरसारी, सोंठ, प्रत्येक १–१ मा०, इनके क्वाथ तथा ८ पल शु० गूगुल के कल्क से १ प्रस्थ घी का विधिवत पाक करें। यह हर प्रकार के नेत्र व्याधि अर्बुद, मोतियाबिंद, तिमिर, पिल्ल, कण्डु, आँसुओं का अधिकस्राव, गढ़िया आदि को दूर करता है। र० र०।

अमृतादिघृतम् amritádighritam–सं० क्लो० वात रक्त में प्रयुक्त घृत योग—गिलोय के क्वाथ अथवा कल्क द्वारा सोंठ युक्त सिद्ध घृत वातरक्त, आमवात, कुष्ठ, व्रण, अर्श, और कृमि रोग को दूर करता है। च० सं० वात रक्त० चि०।

अमृतादि चूर्णः amritádichúrṇah–सं० पुं० (१) गिलोय, गोखरू, सोंठ, मुण्डी, वरुणछाल इनका चूर्ण मस्तु आरनाल के साथ खाने से आमवात नष्ट होता है। भा० प्र० म० खं० आ० वा०

(२) गिलोय, कुटकी, सोंठ, मुलेठी, इनका चूर्ण शहद के साथ चाटकर ऊपर गोमूत्र पीने से आम वात नष्ट होता है। वृ० नि० र०।

अमृतादि तैलम् amritáditailam–सं० पुं० देखो—**अमृताद्यतैलम्**। उक्त योग में देवदारु के स्थान में तून पाठ रक्खा है। अमृत० सा० गलगण्ड चि०।

अमृतादि तैलम् amritádi-tailam सं० क्ली० गिलोय का रस, नीमकी छाल, हींग, हड़, कुड़े की छाल, बला, अतिबला, देवदारु और पीपल के कल्क से सिद्ध किया हुआ तैल गलगण्ड में हित है। वृ० नि० र०।

अमृतादि वटी amritádi-vaṭi–सं० स्त्री० विष २ भा०, कपर्द भस्म ५ भा०, मिर्च ६ भा० जल में मर्दन कर मुद्ग प्रमाण गोलियाँ बनाएँ। यह अग्निमान्द्य, त्रिदोष, और कफ के रोगों में हित हैं। भा० प्र० १ भा० ज्वर चि०।

अमृतादिस्वरसः amritádisvarasah–सं० पुं० गिलोय हरी ले कुचल कर रस निकाल कर स्वच्छ वस्त्र से छानें। यह रस २ तो० और शहद ६ मा० डालकर पीने से प्रमेह दूर होता है।
यो० तर० स्वरसादि सा०।

अमृतादिहिम amritádihima–सं० क्ली० गिलोय का हिम बनाकर प्रातः काल पीने से पित्त ज्वर नष्ट होता है। वृ० नि० र०।

अमृताद्यगुग्गुलुः amritádya-gugguluh –सं० पुं० गिलोय १ भा०, इलायची २ भा०, वायविडंग ३ भा०, इंद्रजौ ४ भा०, बहेड़ा ५ भा०, हड़ ६ भा०, आमला ७ भा० और शु० गुग्गुल ८ भा०। इनको शहद में मिलाकर खाने से स्थूलता भगन्दर और पिडकाएँ दूर होती हैं। भा० प्र० मध्य० खं० २।

अमृताद्यघृतम् amritádyaghritam–सं० क्ली० (१) आमवात में प्रयुक्त योग–गिलोय ४०० तो०, को १०२४ तो० जल में पकाएँ, जब चौथाई शेष रहे तब उस क्वाथमें ६४ तो० घृत तथा चौगुना गोदुग्ध, काकोली, क्षीरकाकोली, जीवक, ऋषभक सतावर, विदारीकन्द, मुलहठी, नीलकमल, असगन्धमूल, पृष्टपर्णी, कुटकी, ऋद्धि, वृद्धि, मेदा, महामेदा, गोखरू, कटेरी, बड़ी कटेरी, गिलोय, पीपल, रास्ना और अड़ूसा सर्व तुल्य भाग ले कल्क बनाकर उसमें डाल मन्द मन्द अग्नि से पकाएँ तो यह घृत सिद्ध हो। धन्वन्तरि जी का कथन है कि इसके सेवन से (पान, अभ्यंग, नस्य) शोथ, दाह, वात रक्त, क्रोष्टुशीर्ष, खञ्जवात, उरुस्तम्भ, दारुण वातरक्त, वातकष्ट, गृध्रसी और वातकंटक दूर होता है। उक्त नाम के छः प्रकार के योग भावमिश्र जी ने अपने ग्रन्थ में वर्णन किए हैं।

गिलोय, सारिवाँ, लघुपंचमूल, अड़ूसा, खिरेटी इनका पञ्चांग पृथक् पृथक् ४० चालीस तो०, को १०२४ तो० जल में पकाएँ। जब चौथाई शेष रहे तब उसमें पीपल, चंदन, हाऊबेर, खस, पित्तपापड़ा, सोनापाठा, मुलहठी, चिरायता, नीलकमल, इन्द्रजौ, नागरमोथा, सोंठ, कुटकी, धमासा, तालचीनी, तेजपात, अड़ूसामूल, त्रायमाण, (अभाव में बनफ्सा) प्रत्येक २-२ तो०। इनका कल्क और इस कल्क के समान भाग बकरी का दुग्ध, ६४ तो० घृत मिलाकर सिद्ध करें। इसके सेवन से भयानक राजयक्ष्मा, सन्निपात, रक्तपित्त, श्वास, कास, उरःक्षत, दाह और शोथ दूर होता है। वंग० से० सं० २ श्लो० ६५, ६६ प०। राज यक्ष्मा० चि०।

अमृताद्यचूर्णम् amritádya-chúrṇam–सं० क्ली० आमवात में प्रयुक्त योग—गिलोय, सोंठ, गोखरू, मुण्डी, वरुणछाल, प्रत्येक तुल्य भाग ले चूर्ण प्रस्तुत कर सेवन करने से आमवात दूर होता है। भा० म० २ भा०।

अमृताद्य तैलम् amritádya-tailam–सं० क्ली० गलगण्ड रोग में प्रयुक्त योग—गिलोय, नीम की छाल, अम्लवेतस, पीपल, देवदारु, दोनों बला इनसे सिद्ध तैल गलगण्ड रोग को दूर करता है। वं० से० गलगण्ड चि०।

अमृताद्यवलेहिका amritádyavalehiká –सं० स्त्री० हड़, कुटकी, सोंठ, मुलहठी शहद में

मिलाकर ऊपर से गोमूत्र पान करने से वातरक्त नष्ट होता है। यो० र० वा० र०।

अमृताद्योगुग्गुलः amritádyouguggulah -सं० पुं० देखो—**अमृताद्य गुग्गुलुः**।

अमृता नाम गुटिका amritá-náma-gutiká -सं० स्त्री० चित्रक, हड़ १–१ पल, पारद, त्रिकुटा, पीपलामूल, मोथा, जायफल, विधारा, प्रत्येक १–१ पल, इलायची, वंशलोचन, कूठ, गन्धक, हिंगुल, मैनफल, मालकांगनी, दालचीनी अभ्रक, लोह प्रत्येक आधा पल, हलाहल विष २–३ रत्ती, गुड़ ८ पल, भांगरे के रस में मर्दन कर छोटी बेर बराबर गोलियाँ बनाएँ। गुण—सम्पूर्ण वात व्याधियोंको दूर करता है। र० र० सु०।

अमृताफलः amritáphalah--सं० पुं०,क्ली० (१) पटोल, परवर (Trichosanthes dioica.)। (२) नाशपाती। (Pyrus Communis)

अमृतारिष्टम् amritárishtam--सं० क्ली० विषम ज्वर में प्रयुक्त अरिष्ट। योग -गिलोय १०० पल, दशमूल १०० पल, ४ द्रोण (१६ सेर=१ द्रोण) जल में क्वाथ करें। जब चौथाई शेष रहे तब उसमें शीतल होजाने पर ३ तुला पुराना गुड़ मिलाएँ। पुनः इसमें जीरा १६ पल, पित्तपापड़ा २ पल, सप्तपर्ण, सोंठ, मिर्च, पीपल, नागरमोथा, नागकेशर, कुटकी अतीस, इन्द्रजौ इन्हें एक एक पल मिला मिट्टी के पात्र में रख एक मास पर्यन्त रख अरिष्ट प्रस्तुत करें। इसके सेवन से समस्त ज्वर दूर होते हैं। भै० र० ज्व० चि०।

अमृतार्णवः amritárnavah--सं० पुं० मीठा विष, पारद, गंधक लौहभस्म, और अभ्रकभस्म, तुल्य भाग ले चित्रक के रस से सात भावना दें।

मात्रा -१–२ रत्ती इसे दोषानुसार अनुपान के साथ खाने से आमाशय के सम्पूर्ण रोग और विषमज्वर का नाश होता है।

भैष र० आमाशय रो० चि०।

अमृतार्णवरसः amritárnavarasah-सं० पुं० हिंगुलोत्थ पारद, लौहभस्म, गन्धक, सोहागा, कपूर, धनियाँ, नेत्रवाला, नागरमोथा, पाढ, जीरा और अतीस प्रत्येक १–१ तो० सबका चूर्ण कर बकरी के दूध से पीस कर १–१ मा० की गोलियाँ बनाएँ।

अनुपान—धनिया, जीरा, भंग, शालबीज, मधु, बकरी का दूध, मण्ड, शीतल जल, केला की जड़ का रस, मोचरस अथवा कटेरी का रस, इनमें से किसी एक के साथ खाने से घोर अतिसार दूर होता है। संग्रहणी, अर्श, अम्लपित्त, खाँसी, गुल्म और एक दोषज, द्विदोषज,त्रिदोषज, तथा उपद्रव युक्त प्रत्येक अतिसारों को यह रस नष्ट करता है। वृ० रस० रा० सु० अतिसार चि०।

अमृतार्णवलौहम् amritárnava-louham -सं० क्ली० कुष्ठ रोग में प्रयुक्त योग—त्रिकुटा त्रिफला, लौहभस्म तुल्य भाग ले चूर्ण करें। सर्व तुल्य शुद्ध शिलाजीत मिला गिलोय के रस से भावना दें और सूर्य के ताप से शुष्क करें इसी तरह तीन भावना दें और सुखाएँ और पुनः घृत से मर्दन कर रखें। **मात्रा**—१ मा० मधु के साथ सेवन करें। रस० र०। इसे प्रमेह में भी दिया जाता है।

अमृतार्णव लौहः amritárnava-louhah -सं० पुं० त्रिकुटा, त्रिफला, लौह भस्म प्रत्येक समान भाग ले चूर्ण करें, सर्व तुल्य शिलाजीत मिलाकर धूप में गिलोय के रस से ३ बार भावना दें। फिर घी में घोटें। **मात्रा**-१ मा०। **गुण**—शहद के साथ खाने से १८ कुष्ठ, कठिन वातरक्त, बवासीर, प्रत्येक प्रमेह और उदर रोग नष्ट होते हैं। रस० यो० सा०।

अमृता वटिका (गुग्गुलुः) amrita-vatiká (gugguluh)-सं० स्त्री० (१) सद्यः व्रण नाशक योग। गिलोय, पटोलमूल, त्रिफला, त्रिकुटा, और वायविडङ्ग इन्हें तुल्य भाग ले चूर्ण कर सर्व तुल्य शुद्ध गुग्गुल मिश्रित कर एक एक मासेकी गोलियाँ प्रस्तुत करें। एक एक वटी प्रतिदिन सेवन करने से व्रण विकार दूर होता है। रस० र०।

(२) घृत पिष्टित गुग्गुल १६ प०, क्वाथार्थ गुडूची १०० प०, दशमूल १०० प०, पाठा, मूर्वा, बड़ियाला, श्वेत बड़ियाला-मूल, एरण्डमूल, प्रत्येक १० प०, सास्थि (गुठली युक्त) हरीतकी १००, बहेड़ा १००, आमला ४००, पाकार्थ जल ३ द्रोण (४८ सेर) इसमें गुग्गुल को एक पोटली में बाँध दोलायंत्र की विधि से पकाएँ। जब ४८ शराव शेष रहे तब इसी क्वाथ में त्रिफला, निसोथमूल, त्रिकुटा, दंतीमूल, गिलोय, असगन्ध, वायबिडङ्ग, तेजपत्र, दारचीनी, छोटी इलायची, नागकेशर, गुण्डतृण प्रत्येक १-१ प० का चूर्ण मिला स्निग्ध पात्र में रक्खें। मात्रा—८ मा०। इसे उष्ण जल से सेवन करना चाहिए। रस० र० व्रण शोथ चि०।

अमृताष्टकः amritáshtakah-सं० पु०, क्ली० पित्तज्वर में प्रयुक्त कषाय। गिलोय, इन्द्रजौ, नीम की छाल, पटोलपत्र, कुटकी, सोंठ, चन्दन और मोथा इनके द्वारा निर्मित कषाय को पिप्पली चूर्ण युक्त सेवन करने से पित्त तथा कफ ज्वर का नाश होता है। चक्र० द० चि०।

अमृतासङ्गम् amritásangam-सं० क्ली० खर्परिका तुत्थ, खपरिया, खर्पर। तत्पर्याय-कर्परिका तुत्थं, अञ्जन (हे)। मद०।

अमृतासङ्गमः amritásangamah-सं० पु० खर्परी तुत्थ। तूँते-बं०। तूतिया-हिं०। मोरचुत -म०। वै० निघ०।

अमृताह्वम् amritáhvam-सं० क्ली० (१) अमृतफल, नासपाती। (Pyrus communis) मद० व० ६। (२) खर्बूजा। मद० व० ६।

अमृताह्वयतैलम् amritáhvaya-tailam-सं० क्ली० वातरक्त में प्रयुक्त तैल। जैसे—गिलोय, मधुक, लघु पञ्चमूल, पुनर्नवा, रास्ना, एरण्डमूल, जीवनीयगण की औषधें, इन्हें १-१ सौ पल लें, बला २०० पल, कोल (बदरी), बेल, उड़द, जौ, कुलथी १-१ आढ़क (४-४ सेर), छोटा गम्भारीमूल-छाल शुष्क १ द्रोण (१६ सेर), १०० द्रोण जलमें विधिवत पचाएँ। जब ४ द्रोण जल शेष रहे तब इसमें १ द्रोण तिल तैल और ४ द्रोण गो दुग्ध मिलाएँ। पुनः त्रिफला, चंदन, केशर, खस, तेजपात, इलायची, कुष्ठ, अगर, तगर, मुलेठी, मजीठ इन्हें आधा आधा पल लेकर कल्क बना सविधि तैल पकालें। भा० म० २ भा० वातरो० चि०।

अमृतिः amritih-सं० स्त्री० जलपात्र विशेष।

अमृतिकरणम् amriti-karanam -सं० क्ली० विधि - अभ्रक के बराबर घी लेकर दोनों को लोहे के पात्र में पकाएँ। जब घी सूख जाए तब उतार कर अभ्रक को सब काम में बर्तें। यो० चि०।

अमृतेन्द्ररसः amritendra-rasah-सं० पुं० सिद्ध पारद १ पल, त्रिफला १ पल, शुद्ध गंधक १२ तो०, ताम्रभस्म ४ तो०, लोह भस्म ४ तो०, बच्छनाग ४ तो० सबको मिलाकर गुडूची, काला धतूरा, भाँग, त्रिकुटा, महाराष्ट्री (मरेठी), भांगरा, अदरख, ब्राह्मी, हुलहुल, जैन, काली तुलसी, धतूरा, (दूसरीबार), भांगरा, (दूसरी बार) और बच्छनाग इनके रस से क्रम से पृथक् पृथक् एक एक दिन भावना दें। पुनः मूँग प्रमाण गोलियाँ बना कर रक्खें।

गुण - सन्निपात, भयानक ज्वर और मन्दाग्नि में चित्रक और अदरख के साथ दें। यह उचित अनुपानों के साथ देने से रोग मात्र को एवं वलि और पलित को नष्ट करता है। र० यो० सा०।

अमृतेशरसः amritesha-rasah-सं० पुं० पारद भस्म, अभ्रक भस्म, कान्तलोह भस्म, बच्छनाग, सोनामाखी और शिलाजीत प्रत्येक समान भाग लेकर बारीक चूर्ण करें। मात्रा— १ रत्ती। गुण—इसके सेवनसे वृद्धता दूर होकर आयु की वृद्धि होती और शरीर की पुष्टि होती है। इसके ऊपर असगंध-मूल-चूर्ण १ भा०, घी ७ भा०, गुड़ ८ भा० और पीपल १ भा० इन सबको मिलाकर मन्द मन्द अग्नि से पकाकर लड्डू बनाकर खाना उचित है। रस० यो० सा०।

अमृतेश्वररसः amriteshvara-rasah-सं० पुं० (१) सोहागा १६ भा०, कालीमिर्च १२ भा०,

सोनामाखी, बच्छनाग, अकरकरा, प्रत्येक २ भा० मिलाकर चूर्ण करें । मात्रा—१-२ रत्ती । गुण—कफ, अजीर्ण, सन्निपात, शूल और अनेक रोगों को नष्ट करता है । रस० यो० सा० ।

(२) रससिन्दूर, सतगिलोय, लौहभस्म समान भाग लेकर शहद और घृत में मिलाकर रक्खें । मात्रा—६ रत्ती । गुण—यह राजयक्ष्मा को नष्ट करता है । रसे० चिं० अ० ६ । भा० म० २ भा० । प्रयोगा० ।

अमृतोत्था amritotthá-सं० स्त्री० (Orchis laxiflora *Linn.*) सुधामूली, सालब मिश्री, सालम् (ब) मिसरी । अत्रि० ।

अमृतोत्पन्नम् amritotpannam-सं० क्लो० (१) तुत्थ (Vitriol.) । (२) खर्परी तुत्थ, तुत्थाञ्जन, खापर । कालखापरी-मह० । रा० नि० व० १३ ।

अमृतोत्पन्ना amritotpanná-सं० स्त्री० गृहमक्षिका । रा० नि० व० ।

अमृतोद्भवः amritodbhavah-सं० पुं०(१) धन्वन्तरि । रत्ना० । -क्लो० (२) तुत्थ, तूतिया (Blue Vitriol) । रा० नि० व० १३ । (३) खर्परी तुत्थ, तुत्थाञ्जन, खापर । रा० नि० । (४) आमलकी, आमला । (Phyllanthus Emblica).

अमृतोपमम् amritopamam-सं० क्लो० (१) खर्परी तुत्थ । तूँते-बं० । मोरचूत-मह० । वै० निघ० । (२) द्रव्य । वै० निघ० ।

अमृतोपहिता amritopahitá-सं० स्त्री० तो (चो)प(ब) चीनी ।

अमृध्रम् amridhram-सं० क्लो० शिश्न, मेढ़, उपस्थ । इसके तीन भेद हैं । यथा—(१) वर्षिष्ठम्, (२) अवान्यम् और (३) अमृध्रम् ।

अमेड़ी amedí-बिहा० कच्चा आम । (Green mango.)

अमेध्यम् amedhyam-सं० क्लो० } (१) पुरीष
अमेध्य amedhya-हिं० संज्ञा पुं० } (Fœces, excrement.) । श० र० । (२) अपवित्र वस्तु । विष्ठा, मल, मूत्र आदि । -वि० अपवित्र ।

अमेनिया बैक्सिफेरा ammannia baccifera, *Linn.* -ले० दादमारी, दद्रुघ्न वृक्ष । फा० इं० २ भा० ।

अमेनिया वेसिकेटरी ammania, vesicatory -ले० देखो—अमेनिया वेसिकेटोरिया ।

अमेनिया वेसिकेटोरिया ammania vesicatoria, *Roxb.*-ले० दादमारी । इं० हैं० गा० ।

अग्निगर्भ—सं० । जंगली मेंहदी, दादमारी -हिं०, बं० । दादरबूटी-पं० । बन मिरिच,अग्नि-बूटी, भूर जम्बोल-बम्ब०, द० ।

अमेरिकन वेलेरियन् american valerian -इं० बालछड़ अमरीका, सुम्बुल अमरीकी । (Cypripedium.)

अमेरिकन वर्मसीड american wormseed-इं० (Chenopodium Anthelminticum.)

अमेरिकन आइवी american ivy-इं० (Vitis Quinquefolia.)

अमेरिकन कुटकी american kutkí-इं० इचवीड (Itch weed.)-इं० ।

अमेरिकन कोलम्बो american columbo -इं० (Frasera carolinensis.)

अमेरिकन मे एपल american, may apple -इं० पॉडोफिल्लाइ र्‌हाइज़ोमा (Podophylli Rhizoma.)-ले० हशीशतुस्सफ़रा अमरीकी-अ० । म० अ० डॉ० ।

अमेरिकन मेन्ना american manna-इं० शीरखिश्त-फ़ा० । आकाश मधु-सं० । यह पाइनस लम्बरशियानी वृक्ष से प्राप्त होता है । देखो—शीरखिश्त । म० अ० डॉ० ।

अमेरिकन रोग़न तारपीन american roghan tárpín-फ़ा० देखो—रोग़न तारपीन ।

अमेरिकन सेण्टॉरी american centaury -इं० (Sabbatia Angularis.)

अमेरिकन सारसा पैरिल्ला american sarsaparilla–इं० अरेलिया न्युडिकॉलिस (Aralia Nudicaulis.)

अमेरिकन सैफ्रन american saffron–इं० कुसुम्भ, कड़। (Safflower.)

अमेरिकन हेलीबोर american helibore –इं० अमरीकी कुटकी। इच वीड (Itch weed.)–इं०।

अमेरिका का जङ्गली तम्बाकू america-ká-jangalí tambákú–हिं० पुं० ताम्रकूट विशेष।

अमेरिका का लोबान america-ká-lobána –हिं० पुं० लोबान विशेष।

अमेसा amesá–बर० शरीफ़ा, सीताफल। (Anona Squamosa.)

अमैथुनी विधि amaithuní-vidhi–हिं० स्त्री० वह सृष्टि जो बिना मैथुन के उत्पन्न होती है। (Asexual reproduction.)

अमोखा amokhá–सं० स्त्री० हड़, हरीतकी। (Terminalia Chebula.)

अमोघ amogha–हिं० वि० [सं०] निष्फल न होना। वृथा वा अन्यथा न होने वाला। अव्यर्थ। सफल। सत्य। साचा। फलदाता। अचूक। लक्ष्य पर पहुँचने वाला। खाली न जाने वाला। (Productive, Fruitful, Infallible, Effectual.)

अमोघा amoghá–सं० स्त्री०, हिं० संज्ञा स्त्री० (१) पाटला वृक्ष, पाढ़ल (-र) का पेड़ और फूल। (Stereospermum Suaveolens, *Dc.*) भा०। (२) श्वेत पाटला। (३) हरीतकी, हड़ (Terminalia Chebula.)। (४) विड़ंग, वायविड़ंग। (Embelia Ribes.) मे०। श्वेत पाटला। (५) पद्मभेद, कमलभेद। (Lotus Var.) सु० नि० व० २३।

अमोघास्त्र रसः amoghástra rasah–सं० पुं० तांबा, गंधक, बच्छनाग, संखिया प्रत्येक समान भाग लें। तांबे से तीन गुना पारा और कस्तूरी लें। फिर सब को सम्भालू और तुलसी के रस में बारीक घोटकर तिलोंके बराबर गोलियाँ बना छायामें सुखाएँ। गुण—यह १३ सन्निपात, ८ प्रकार के ज्वरों को और विषम, शीत दोष तथा साधारणतया सभी रोगों को नष्ट करता है। रस० यो० सा०।

अमोघौषध amoghoushadha–हिं० स्त्री० (Specific Medicine.) ऐसी औषध जो कभी निःष्फल न हो अर्थात् अवश्यमेव फल देने वाली दवा, अव्यर्थ, सत्य औषध। वे औषधें जो रक्त में पहुँच कर रोगाणुओं को मार डालती हैं। यदि औषध का यथा विधि प्रयोग किया जाए तो जन्तु मर जाते हैं और रोग घट जाता है या जाता रहता है और रोगी फिर धीरे धीरे अपने पहले स्वास्थ्य को प्राप्त करता है।

अमोड़ी amodí–बिहा० अमिया–हिं०।

अमोद amoda–हिं० संज्ञा पुं० देखो—आमोद।

अमोनम कर्क्यूमा amonum curcuma –ले० हलदी, हरिद्रा, पीतरस। (Turmeric) इं० हैं० गा०।

अ(ए)मोनिएक ammoniac–इं० }
अ(ए)मोनिएकम् ammoniacum–ले० } उशक़, कान्दर।

अ(ए)मोनिएकम् एण्ड मर्करी प्लास्टर ammoniacum and mercury plaster–इं० उशक़ व पारद प्रस्तर वा प्रलेप। देखो–उशक़।

अ(ए)मोनिएकम् मिक्श्चर ammoniacum mixture–इं० उशक़ मिश्रण। देखो–उशक़।

अमोनिएटेड आर्सिनियो साइट्रेट ऑफ आयर्न ammoniated arsenio-citrate of iron–इं० यह एक प्रकार का यौगिक लवण है। देखो–लौह।

अमोनिएटेड टिंक्चर ऑफ अर्गट ammoniated tincture of ergot–इं० अमूनित अर्गट आसव। देखो–अर्गट।

अमोनिएटेड टिंक्चर ऑफ इण्डियन वेलेरियन ammoniated tincture of indian valerian-इं० देखो जटामांसी।

अमोनिएटेड टिंक्चर ऑफ ओपियम् ammoniated tincture of opium-इं० अमूनित अहिफेन आसव। देखो-पोस्ता।

अमोनिएटेड टिंक्चर ऑफ कीनीन ammoniated tincture of quinine-इं० अमोनित कीनीन आसव। देखो-सिन्कोना।

अमोनिएटेड टिंक्चर ऑफ वेलेरियन ammoniated tincture of valerian-इं० अमूनित ह्रीवेर आसव। देखो-सुगन्धवाला।

अमोनिएटेड क्लोरोफॉर्म ammoniated chloroform-इं० क्लोरोफॉर्म अमोनिएटा।

अमोनिएटेड फेनाइल एसेटअमाइड ammoniated phenyl acetamide-इं० अमोनोल। देखो-एसेट एनिलाइडम्।

अमोनिएटेड मर्करी ammoniated mercury-इं० अमूनित पारद। देखो-पारद।

अमोनिएटेड मर्करी ऑइण्टमेण्ट ammoniated mercury ointment-इं० अमूनित पारदानुलेपन। देखो-पारद।

अमोनिएटेड लिनिमेंट ऑफ कैम्फर ammoniated liniment of camphor-इं० अमोनित कर्पूर अभ्यञ्जन। देखो-अमोनियम्।

अमोनियम ammonium-ले० नरसार वायव्य। देखो—अमोनिया।

अमोनियम आयर्न एलम ammonium iron alum-ले० एल्युमीन अमोनियो।

अमोनियम आयोडाइड ammonium iodide-ले० अमोनियम नैलिद। देखो-आयोडम्।

अमोनियम इक्थियॉल ammonium ichthyol-ले० देखो—सरेशममाही।

अमोनियम इक्थियॉल सल्फोनेट ammonium ichthyol sulphonate-ले० इक्थो सल्फोल। देखो—सरेशममाही।

अमोनियम एरोमेटिकस ammonium aromaticum-ले० सुवासित अमोनिया। देखो-एला, इलायची। (Cardamum)

अमोनियम एलम ammonium alum-ले० फिटकिरी भेद। एक प्रकार की फिटकिरी।

अमोनियम कार्बनित ammonium kárbanit-हिं० पुं० देखो-अमोनियाई कार्बोनास।

अमोनियम कार्बोनेट ammonium carbonate-ले० देखो—अमोनियाई कार्बोनास।

अमोनियम क्लोराइड ammonium chloride-ले० नृ(नर)सार, नौसादर। (Sal ammoniac.)

अमोनियम फॉस्फेट ammonium phosphate-इं० नृसार स्फुरेत। देखो—अमोनियाई फॉस्फॉस।

अमोनियम बेञ्जोएट ammonium benzoate इं० लोबान अम्ल। देखो—एसिडम बेञ्जोइकम।

अमोनियम बोरेट ammonium borate-इं० देखो—अमोनियाई बोरास।

अमोनियम ब्रोमाइडम् ammonium bromidum-ले० अमोनियम ब्रह्मणिकम्। देखो—ब्रोमीन।

अमोनियम सक्कीकार्बोनेट ammonium succi carbonate-ले० देखो—अमोनियाई कार्बोनास।

अमोनियम सक्कीनेट ammonium succinate-ले० अमोनियम अम्बर। देखो—अम्बर।

अमोनियम सल्फो इक्थियोलेट ammonium sulphoichthyolate-ले० देखो-अमोनिया।

अमोनियम सस्की कार्बोनेट ammonium sesqui carbonte-इं० देखो-अमोनियाई कार्बोनास।

अमोनियम हरिद ammonium harid-हिं० पुं० नौसादर, नृसार। देखो-अमोनियम क्लोराइड।

अमोनिया ammonia-इं० नरसार वायव्य।

अमोनियम Ammonium-ले०। गाज़ुनौ-शादर, गैस नौशादर-ति०।

रासायनिक संकेत सूत्र

(न उ ३) $N.H_3$.

लक्षण—यह एक उग्रगन्धि अदृश्य वायव्य (गैस) है, जो नवसादर (अमोनियम हरिद) और चूर्ण के मिश्रण से उत्पन्न होता है।

प्रयोग—नवसादर १ भाग और चूर्ण २ भाग लेकर खरल में डालकर चूर्ण करें। दोनों के परस्पर चूर्ण होने पर एक उग्रगंधि गैस निकलने लगता है। यही अमोनिया है।

यदि शृंग, खुर, केश, त्वचा और मांस आदि अथवा खेचरों के पत्र दग्ध किए जाएँ तो जो विशेष दुर्गंध प्राप्त होती है, वह अमोनिया गैस के कारण ही है, क्योंकि यह उनका एक प्रधान अंग है। इस विधि से बहुलता से अमोनिया प्राप्त होता है। प्राचीन काल में मृगशृंग प्रभृति अमोनिया बनाने के काम आते थे। यह गैस कई एक वानस्पतिक रसों यथा इक्षु रस आदि में और किसी भाँति वायु में भी विद्यमान होता है।

यद्यपि अमोनियम कोई धातु विशेष नहीं है, केवल नत्रजन और उदजन के परमाणुओं का समूह है, तथापि इसका अणु (न उ३) धातुवत् काम करता है, और अम्लोंसे मिलकर लवण बनाता है। उसका सुप्रसिद्ध लवण नवसादर (अमोनियम हरिद) है। यह अमोनियम और लवणाम्ल के संयोग से बनता है। अमोनियम के कर्बनित आदि लवण भी होते हैं, जो बहुत उपयोगी हैं।

गुण—(क) अमोनिया एक अदृश्य, उग्र, परन्तु रोचक गंधयुक्त गैस है जो वर्णरहित, स्वच्छ तथा नमनीय होता है। स्वाद तीव्र-दाहक है।

(ख) यह अत्यन्त जल विलेय है (मद्यसार में भी विलीन हो जाता है।); परन्तु जल-विलीन होकर यह स्थिर नहीं रहता। अस्तु, जल-विलीन अमोनिया उबालने पर वा बोतल खुली रखने पर जल से निकल जाता है।

(ग) खरल, जिसमें नवसादर और चूर्ण को मिलाया गया हो, उसके समीप यदि आर्द्र रक्त लिटमस पत्र लाएँ, तो वह नीला हो जाता है। अतः यह गैस क्षारीय है।

(घ) उसी खरल के पास यदि उदहरिकाम्ल में डुबोकर एक काचदण्डी लाएँ, तो श्वेत धूम्र निकलते हैं।

(ङ) इस गैस का जलविलयन क्षारों के समान गुण रखता है। रक्त लिटमस को नीला और अम्लों को उदासीन कर देता है। यह क्षार ऐसा तीव्र और दाहक नहीं है, जैसा कि दाहक सोडा या पोटास। अतः इसको संज्ञा मृदुक्षार है।

(च) इसका आपेक्षिक गुरुत्व ·५८९ है।

यदि इस गैस को बहुत सी हवा के साथ मिलाकर सुँघाया जाए तो भी यह बहुत क्षोभक प्रभाव करता है और यदि इसको शुद्ध रूप में सुँघा जाए तब तो तत्काल दम घुटने लगता है।

संज्ञा-निर्णय—प्राचीन मिश्र, यूनान तथा रोम देशनिवासियों के एमन नामक देवता का मन्दिर, जिनका वर्णन एमोनाइकम (उशक्र) के संज्ञा-निर्णायक-नोट शीर्षक के अन्तर्गत होगा, लेबिया (शाम) के जिस ज़िला में था, उस ज़िला का नाम उक्त देवता के नाम पर रखा गया था। उस ज़िलाका नाम अ(ए)मोनिया था। चूँकि कृत्रिम नवसादर सर्व प्रथम उसी जगह बनाया गया था। अतएव नवसादर का नाम सल एमोनिएक (Sal ammoniac.) अमोनीयिक लवण या एमोनिया (स्थान) का नमक है, और चूँकि यह गैस सल एमोनिएक अर्थात् नवसादर से बनता है। अस्तु, इसी सम्बन्ध से उसका नाम भी अ(ए)मोनिया रखा गया।

औषध-निर्माण—(१) लाइकर अमोनी फॉर्टिस Liquor Ammonice Fortis-ले०। स्टॉङ्ग सोल्युशन ऑफ अमोनिया Strong Solution of Ammonia-इं०। सबल अमोनिया द्रव, तीव्र अमोनिया विलयन-हिं०। क़वी साइल अमोनिया -उ०।

(ऑफिशल *Official-*)

सङ्केत सूत्र (न उ$_{3}$) N. H_3

निर्माण-विधि—अमोनियम क्लोराइड (अमोनियम हरिद्, नवसादर) को शांत चूर्ण में मिला कर उत्ताप देने से जो अमोनिया गैस प्रादुर्भूत हो उसको परिस्रुत जल में विलीन करलें।

गुण—यह एक अत्यन्त उग्रगंधि, वर्ण रहित एवं अति क्षारीय द्रव होता है जिसका आपेक्षिक गुरुत्व ·८९१ होता है। इसमें ३२·५% (भार में) अमोनिया वायव्य पाया जाता है।

प्रभाव—वेसिकेंट (फास्काजनक)। इसका आभ्यन्तर प्रयोग न करना चाहिए।

यह पड़ता है—लिनिमेण्टम कैम्फोरी अमोनिएटम, लाइकर एमोनी, स्पिरिटस एमोनी ऐरोमेटिकस, स्पिरिटस एमोनी फेटिडस और टिंकचर ग्वाएसाई एमोनिएटा में तथा अमोनियाई बेञ्जोआस, एमोनियाई ब्रोमाइडम, एमोनियाई फास्फॉस और निम्नांकित ऑफिशल योगों के निर्माण में काम आता है।

ऑफिशल प्रिपेयरेशन्स

(*Official Preparations.*)

(२) लाइकर एमोनी Liquor Ammoniæ-लें०। सोल्युशन ऑफ़ अमोनिया Solution of Ammonia-इं०। अमोनिया घोल-हिं०। सय्याल एमोनिया-उ०।

सङ्केत सूत्र (न उ$_{3}$) N. H_3

निर्माण-विधि- स्ट्रॉङ्ग सोल्युशन ऑफ़ अमोनिया १ भाग, परिस्रुत जल २ भाग, दोनों को मिला लें।

गुण—स्ट्रॉंग सोल्युशन ऑफ़ अमोनिया के सदृश, परन्तु तीक्ष्णता में यह उससे हीन होता है। इसका आपेक्षिक गुरुत्व ·६५६ होता है और इसमें १०% (भार में) एमोनिया गैस पाया जाता है। मात्रा—१० से २० बूंद।

नोट—इसको खूब डायल्यूट करके अर्थात् जल मिश्रित कर देना चाहिए।

प्रभाव—स्टिम्युलेण्ट (उत्तेजक) और रूबीफेशेण्ट (वर्ण्य वा आरुण्यकर)।

यह काम आता है—लिनिमेण्टम अमोनी, लिनिमेण्टम हाइड्रार्जिराई, टिंकचर क्विनीनी एमोनिएटा, टिंकचर अर्गोटी अमोनिएटा, टिंकचर वेलेरिएनी अमोनिएटा और टिंकचर ओपियाई अमोनिएटा तथा निम्नांकित योग के बनाने में:—

(३) लिनिमेण्टम अमोनी Linimentum Ammoniæ-लें०। लिनिमेण्ट ऑफ़ अमोनिया Liniment of Ammonia, हार्टशॉर्न लिनिमेण्ट Hartshorn Liniment -इं०। अमोनिया अभ्यंग, अमोनिया उद्वर्त्तन-हिं०। तमूरीख़ अमोनियाई, तमूरीख़ क़र्नुलईल-ति०।

नोट—प्राचीन काल में हार्टशॉर्न (मृगशृंग, बारहसिंगा) अमोनिया बनाने के काम आता था। अस्तु, लिनिमेण्ट ऑफ़ अमोनिया की दूसरी अंगरेज़ी संज्ञा हार्टशॉर्न लिनिमेण्ट अर्थात् मृगशृंगाभ्यंग भी है।

निर्माण-विधि—लाइकर (सोल्युशन) ऑफ़ अमोनिया १ आउंस, आमंड ऑइल (बादाम तैल) १ आउंस और आलिव ऑइल (ज़ैतून तैल) २ भाग इनको भली प्रकार मिला लें। प्रभाव-रूबीफेशेण्ट (वर्ण्य वा आरुण्यकारक)।

लिनिमेण्टम कैम्फ़ोरी एमोनिएटम Linimentum camphoræ ammoniatum-लें०। एमोनिएटेड लिनिमेण्ट ऑफ़ कैम्फर Ammoniated liniment of camphor-इं०। अमोनिया कर्पूराभ्यंग-हिं०। तमूरीख़ काफ़ूरी अमोनियाई, रोग़न मालिश काफ़ूरी एमोनियाई-ति०।

निर्माण-विधि—स्ट्रॉंग सोल्युशन ऑफ़ अमोनिया ५फ्लुइड आउंस, कैम्फर २॥ आउंस, ऑइल ऑफ़ लेवेण्डर १ फ्लुइड ड्राम, ऐलकुहॉल (६०%) आवश्यकतानुसार। कैम्फर और ऑइल ऑफ़ लेवेण्डर को १२ फ्लुइड आउंस एलकुहॉल (मद्यसार) में विलीन करलें। फिर उसमें थोड़ा थोड़ा स्ट्रॉंग सोल्युशन ऑफ़ अमोनिया मिलाते और हिलाते जाएँ। पुनः इतना एलकुहॉल

(मद्यसार) मिलादें जिसमें कुल द्रव्य पूरा २० फ्लुइड आउंस होजाए।

(५) लिनिमेण्टम हाइड्रार्जिराई Linimentum Hydrargyri-लै०। लिनिमेण्ट ऑफ़ मर्करी Liniment of mercury -इं०। पारदाभ्यंग-हिं०। तमूरीख़ वा मालिश सीमाब-ति०। देखो—पारद।

(६) स्पिरिटस अमोनी एरोमैटिकस Spiritus ammoniæ aromaticus -लै०। एरोमैटिक स्पिरिट ऑफ़ अमोनिया Aromatic spirit of ammonia -इं०। सुवासित अमोनिया सुरा। देखो-अमोनिया कार्बोनास के योग।

(७) स्पिरिटस अमोनी फ़ेटिडस Spiritus ammoniæ fetidus-लै०। फ़ेटिड स्पिरिट ऑफ़ अमोनिया Fetid spirit of ammonia-इं०। पूतिगंध अमोनिया सुरा -हिं०। रूह नवशादर मुन्तिन, रूह नवशादर बदबू-ति०।

निर्माण-विधि-स्ट्रॉंग सोल्युशन ऑफ़ अमोनिया २ फ्लुइड आउंस, ऐसाफेटिडा (हिंगु) १॥ आउंस और ऐलकुहॉल (९०%) आवश्यकतानुसार। ऐसाफेटिडा (हिंगु) के टुकड़े करके १५ फ्लुइड आउंस ऐलकुहॉल में २४ घंटे तक भिगोकर इसका स्रवण करें। पुनः इसमें स्ट्रॉंग सोल्युशन ऑफ़ अमोनिया और इतना ऐलकुहॉल और योजित करें, जिसमें सम्पूर्ण औषध एक पाइंट हो जाए।

मात्रा—२० से ४० बुंद (=१·२ से १·८ क्युबिक सेंटीमीटर) जब एक बार देना हो और ६० से ९० बुंद (३·६ से ४·८६ घन शतांश मीटर) जब एक ही बार देना हो। इसको अच्छी तरह जल मिश्रित कर सेवन कराएँ।

प्रभाव—उत्तेजक (Stimulant) और उद्वेष्टनहर (Antispasmodic).

नॉट ऑफ़िशल योग

(*Not official preparations*).

(१) लोशियो क्रिनेलिस Lotio crinalis-लै०। लोमजनक विलयन-हिं०। अर्क़ मू अफ़ज़ा-ति०। योग—ऑलियम एमिग्डली (बादाम तैल) १ भाग, लाइकर अमोनी फॉर्टिस १ भाग, स्पिरिटस रोज़ मेराइनी ४ भाग, एकामैलिस २ भाग। सब औषधों को मिला लें। बालों को बढ़ाने के लिए इस अर्क का प्रयोग करते हैं।

(२) टिंक्चूरा अमोनी कम्पॉज़िटा Tinctura ammoniæ composita, ऑडीलूस Eau-de-Luce—इं०। यौगिक अमोनियासव, सर्पागदार्क-हिं०। तअफ़्फ़ीन अमोनिया मुरक्कब, अर्क़ दाफ़िअ् ज़हर मार-ति०। योग—मस्टिक (मस्तगी) २ ड्राम, एलकुहॉल (९०%) ६ ड्राम, ऑलियम लेवण्डयुली १४ बूंद, लाइकर अमोनी फॉर्टिस २० फ़्लुइड आउंस। समग्र औषध को परस्पर मिलाकर साँप के काटे पर लगाया करते हैं।

अमोनिया की फार्माकॉलॉजी

अर्थात् प्रभाव

(बाह्य प्रभाव)

सोल्युशन ऑफ़ अमोनिया (अमोनिया विलयन) को जब त्वचा पर लगाया जाता है तब यह उसमें अंत होने वाले तन्तुओं एवं रक्त वाहिनियों को उत्तेजना प्रदान करता है, जिससे उक्त स्थल पर ऊष्मा एवं राग का अनुभव होता है। यदि अमोनिया के तीक्ष्ण विलयन को त्वचा के किसी भाग पर लगाकर उसको वाष्पीभूत न होने दें तो वहाँ पर फोस्का उत्पन्न हो जाता है। अतएव अमोनिया रूबीफेशेण्ट (आरुण्यकारक) और वेसिकेण्ट (फोस्काजनक) है।

नासिका और वायुप्रणाली—नासिका तथा वायु प्रणाली की श्लैष्मिक कला पर अमोनिया वाष्प का सबल क्षोभक एवं उत्तेजक प्रभाव होता है, जिससे छींकें आने लगती हैं। कञ्जङ्क्टाइवा (चक्षु के ऊपरी परत) पर भी इसका क्षोभक प्रभाव होता है, जिससे नेत्र द्वारा अश्रुस्राव होने लगता है। नासिका की संज्ञावहा नाड़ियों को

उत्तेजित करने के कारण अमोनिया परावर्तित रूप से रुधिराभिसरण को उत्तेजना प्रदान करता और नाड़ी की गति को तीव्र करता है। यदि अमोनिया को देर तक सूँघा जाए अथवा वाष्प अधिक तीव्र हों तो नासिका एवं वायु प्रणालियों में क्षोभ उत्पन्न हो जाता है। परावर्तित क्रिया द्वारा यह सार्वांगिक रक्तभार की वृद्धि करता और आघात जन्य मूर्च्छा के लिए हितकारक है।

आन्तरिक प्रभाव

आमाशय—आमाशयमें पहुँच कर अमोनिया तत्क्षण परावर्तित रूप से रक्ताभिसरण तथा हृदय को उत्तेजित करता है अर्थात् शोणित-सञ्चालन और हृदय की गति को चपल करता है। क्योंकि उनको तीव्र करने वाले सौषुम्न वातकेन्द्रों पर इसका प्रभाव पड़ता है। रक्त में अभिशोषित होने के पश्चात् इसका यह प्रभाव जारी रहता है, और श्वासोच्छ्वास भी तीव्र हो जाता है।

अन्य क्षारीय औषधों के समान यदि आहार से पूर्व अमोनिया का प्रयोग किया जाए तो यह आमाशयिक रस के स्राव की वृद्धि करता है; और यदि आहार पश्चात् दिया जाए तो यह आमाशयिक रस की अम्लता को उदासीन कर देता है। अर्थात् उसके प्रभाव को नष्ट कर देता है। यह आंत्रस्थ कृमिवत् आकुञ्चन को भी तीव्र करता है और इससे आमाशय में उष्मा का बोध होता है। अतएव अमोनिया पित्तघ्न (ऐण्टेसिड), आमाशयोत्तेजक और वायु निस्सारक (आध्मानहर) है। अधिक मात्रा में देने से यह आमाशयांत्र क्षोभक है।

शोणित—अमोनिया रक्तवारि (प्लाज्मा) के क्षारत्व को किसी प्रकार अधिक करता है। अनुमान किया जाता है कि थ्रोम्बोसिस (रक्तवाहिनियों में रक्त का थक्का बन जाना) रोग में यह रक्त के थक्का बनाने की शक्ति को हीन करता है और जो क्लॉट (खून का थक्का) पूर्व से बन चुका है उसको विलीन कर देता है।

हृदय—अमोनिया के प्रभाव से हृदय एवं नाड़ी की गति तीव्र हो जाती है और रक्तभार बढ़ जाता है। कदाचित् यह प्रभाव हृदय पर कुछ तो परावर्तित रूप से होता है; परन्तु अधिकतर इस हेतु कि अमोनिया रक्त में अभिशोषित होने के पश्चात् हृदय की गति को तीव्र करने-वाले सौषुम्न-वातकेन्द्रों को उत्तेजना प्रदान करता है।

फुप्फुस—रक्त में अभिशोषित होने के पश्चात् श्वासोच्छ्वासकेन्द्र पर अमोनिया का सरलोत्तेजक प्रभाव पड़ने से श्वासोच्छ्वास की गति तीव्र हो जाती है। अमोनिया किसी प्रकार वायु प्रणालीस्थ ग्रंथियों के मार्ग शरीर से विसर्जित होता है। अस्तु, इसके उपयोग से उन ग्रन्थियों का स्राव अधिक हो जाता है। अतः रॉसबैक (Rossbach) ने कतिपय सजीव प्राणियों की वायुप्रणालीय श्लैष्मिक कलापर अमोनिया का मन्द विलयन लगाकर इस बात की परीक्षा की है कि इसके लगाने से वहाँ पर रक्त घनीभूत होकर रक्तस्राव बढ़ जाता है।

वात-मंडल—अमोनिया सार्वांगोत्तेजक है। क्योंकि यह श्वासोच्छ्वासकेन्द्र और हृदयाशुकारी सौषुम्न-वातकेन्द्रों को उत्तेजित करता है। परन्तु, मस्तिष्क पर इसका कुछ प्रभाव नहीं होता और न वात तन्तुओं पर कोई असर पड़ता है। जब इसको स्थानिक रूप से लगाते हैं, तब उस स्थल पर झुनझुनाहट और दाह प्रतीत होता है।

जीवधारियों को जब विषैली अर्थात् अधिक मात्रा में अमोनिया दिया जाता है, तब प्रायः आक्षेप (Convulsion) होने लगता है। इसका कारण यह है कि अमोनिया सुषुम्ना की गत्युत्पादक सेलों पर उत्तेजक प्रभाव करता है।

वृक्क—अमोनिया और इसके लवण शोणित तथा शारीरिक धातुओं (तन्तुओं) में प्रविष्ट होकर वियुक्त व पाचित होजाते (सड़जाते) हैं। कदाचित् यकृत् में इससे भी अधिकतर परिवर्तन उपस्थित होते हैं, जिनका अवश्यम्भावी परिणाम यह होता है कि मूत्र (क़ारोरा) में यूरिया, युरिकाम्ल और शोरकाम्ल की मात्रा बढ़ जाती है। अस्तु, इस बात को भली भाँति स्मरण

रखनी चाहिए कि अमोनिया मूत्र की अम्लता को बढ़ाता है।

उत्सर्ग—शरीर से श्वासोच्छ्वास, वायु-प्रणालीस्थ स्राव, मूत्र व स्वेद द्वारा अमोनिया उत्सर्जित होता है।

अमोनिया द्वारा विषाक्तता

यदि अमोनिया के तीव्र विलयन की एक बड़ी मात्रा पान करली जाए तो स्वरयंत्र (Glottis) के आक्षेपग्रस्त होने से श्वासावरोध होकर किंचित् काल में ही मृत्यु उपस्थित होसकती है। अन्यथा भक्षक वा दाहक क्षारीय विषों यथा दाहक सोडा (Caustic soda) या पोटास प्रभृति के समान लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं।

अगद-जो अन्य ऐलकेलीज़ अर्थात् क्षारीय विषों के अगद हैं, वे ही इसके भी हैं। देखो—पोटासा कॉस्टिका।

अमोनिया के थेराप्युटिक्स
अर्थात्
औषधीय उपयोग
(वहिःप्रयोग)

स्थानिक वाततन्तु एवं रक्तवाहिन्योत्तेजक रूप से स्टिफ़ जॉइण्ट्स (विकृत कठोर संधियों) पर और क्रॉनिक र्‌युमैटिज़्म (पुरातन संधिवात) की विभिन्न दशाओं में लिनिमेण्ट ऑफ़ अमोनिया का अभ्यंग करते हैं। ब्रॉङ्काइटिस (कास), न्युमोनिया (फुफ्फुसौष) और प्लुरिसी (पार्श्व-शूल) में स्थानिक उग्रतासाधक (Counter irritant) रूप से भी इसका उद्वर्तन करें।

जिन रोगों में फोस्काजनन के लिए कैन्थेरिडीज़ (तेलिनी मक्खी) का उपयोग वर्जित एवं अनुचित है, उनमें उक्त अभिप्राय के लिए अमोनिया का प्रयोग करते हैं। अस्तु, जितना बड़ा फोला डालना हो उससे किंचित् बड़ा लिंट का एक टुकड़ा काट कर और उसको स्टॉङ्ग सोल्युशन ऑफ़ अमोनिया में क्लेदित कर जिस स्थल पर फोस्का उठाना हो उसे वहाँ पर रख कर ऊपर से वॉच ग्लास (जेबघड़ीके शीशे) से आवरित कर दें। किञ्चित् काल में वहाँ पर फोला पड़ जाएगा।

अमोनिया प्रायः विषैले कीटों के विष को प्रभाव-शून्य कर देता है। अस्तु, वृश्चिक, भिड़, ततैया और मुहाल इत्यादि के दंश-स्थल पर (दंश अर्थात् डङ्क को निकाल कर), कनखजूरे (गोजर) प्रभृति के काटे हुए स्थान पर और रतेल (मकड़, आरण्य मकड़) या मकड़ी मले हुए स्थान पर अमोनिया का निर्बल सोल्यूशन लगाने से वेदना एवं शोथ कम हो जाता है। अल्पविष सर्प के दंशित स्थानपर कम्पाउंड टिंकचर ऑफ अमोनिया (ओ-डी-लूस) का त्वक्स्थ अन्तःक्षेप करना लाभदायक सिद्ध होता है। लोमवर्द्धन हेतु लाशियों क्रिनेलिस (रोमवर्द्धनार्क) एक अत्युत्तम औषध है।

मूर्च्छित व्यक्ति को अमोनिया सुँघानेसे तत्क्षण होश आ जाता है। क्योंकि इसके घ्राण करने से परावर्त्तित रूप से श्वासोच्छ्वास तथा हृदय की गति तीव्र हो जाती है। अस्तु मूर्च्छा, आघात वा क्षोभ, निद्रा (जन्य विसंज्ञता) और निद्राजनक (वा अवसन्नताजनक) विषों यथा अहिफेन प्रभृति में रोगी की मूर्च्छा निवारणार्थ अमोनिया सुँघाया करते हैं।

नोट—विभिन्न प्रकार के सूँघने के चूर्ण वा लखलखे (Smelling salts) जिनका प्रधान अवयव अमोनिया होता है, बने बनाए खुले मुख के हरित वर्ण आदि की बंद शीशियों में अँगरेज़ी औषध-विक्रेताओं की दूकानों में बिका करते हैं।

आन्तरिक प्रयोग

अन्य क्षारीय औषधों के समान अमोनिया को भी अम्लाजीर्ण (एसिड डिस्पेप्सिया) में दे सकते हैं। गैस्ट्रिक इन्टेस्टाइनल क्रैम्प्स् (आमाशयांत्र के प्रावाहकीय आक्षेपक वेदनाओं) में स्पिरिट ए(अ)मोनिया ऐरोमैटिक एक अत्युत्तम औषध है। बालकके उदराध्मानमें सोडा और डिल वाटर (सोआ के अर्क) के साथ इसके कुछ बुंद देने से सामान्यतः लाभ हो जाता है। जेनरल डिफ़्युज़िब्ल स्टिम्युलेण्ट (सर्वांग व्यापोत्तेजक) रूप से सिङ्कोपी (मूर्च्छा), शॉक (क्षोभ),

फेयिटङ्क (विसंज्ञता) में तथा फ्रेब्राइल डिज़ीज़ेज़ (ज्वरयुक्त व्याधियाँ), न्युमोनिया (फुप्फुसौष) और थाइसिस (उरःक्षत) इत्यादि में जब रोगी की शक्तियाँ निर्बल हो जाती हैं, उस समय अमोनिया के उपयोग से बहुत लाभ होता है।

कास तथा प्रातिश्यायिक फुप्फुसौष (कैटारल न्युमोनिया) में अमोनिया सान्द्र एवं पिच्छिल श्लेष्मा को द्रवीभूत एवं मृदु करता है। पर इस हेतु अमोनियम कार्बोनेट का उपयोग श्रेष्ठतर होता है। नैलिका द्वारा विषाक्तता अर्थात् आयोडिज़्म (नैलिका या उसके यौगिकों से पुरातन विषाक्तता के हो जाने) को अमोनिया रोकता है। अस्तु, जब आयोडाइड्ज़ को अधिक मात्रामें देना होता है तब इसको उनके साथ मिलाकर देते हैं।

अमोनिया असारुनी ammonia asáruní -हिं० पुं० देखो—जटामांसी।

अमोनियाई आयोडाइडम् ammonii iodidum-लें० नैलिद अमोनिया। देखो—आयोडम्।

अमोनियाई एम्बेलास ammonii embelas -लें० देखो वायविडङ्ग।

अमोनियाई कार्बोज़ाटास ammonii carbojotas-लें० देखो—अमोनियाई पिक्रास।

अमोनियाई कार्बोनास ammonii carbonas -लें० अमोनियम कार्बनित, कज्जलित नरसार -हिं०। अमोनियम कार्बोनेट Ammonium carbonate., अमोनियम सस्की कार्बोनेट Ammonium Sesqi carbonate. -इं०। कर्बूनातुन्नौसादर, अमोनिया मुरक्कब ब (सेहचन्द) कार्बन।

ऑफिशल (*Official.*)

निर्माण-विधि—क्लोराइड ऑफ अमोनियम (नवसादर) या सल्फेट ऑफ अमोनियम और कार्बोनेट ऑफ कैल्सियम (चूर्ण कज्जलेत अर्थात् शुद्ध खटिका) को परस्पर संयोजित कर बारबार ऊर्ध्वपातित करने से कार्बोनेट ऑफ अमोनियम प्राप्त होता है। इसमें अमोनियम हाइड्रोजन कार्बोनेट ($NH_4\ NCO_3$) और अमोनियम कार्बोमेट ($NH_4\ NH_2\ CO$) सम्मिलित पाए जाते हैं। संकेत सूत्र $N_3\ H_{11}\ C_2\ O_5\ (NH_4\ HCO_3+NH_4\ NH_2\ CO_2)$.

नोट—उम्दतुल्मुहताज के लेखक के मत से हार्टशॉर्न अर्थात् मृगशृंग का उड़नशील लवण भी कज्जलित नरसार (कर्बूनातुन्नौशादर) ही होता है। किन्तु, उसमें गन्धमय तैल प्रभृति मिलित होते हैं।

लक्षण—अमोनियम कार्बनित एक श्वेत पार्थिव द्रव्य है, जो वायु में खुला रखने से वा सूँघने से अमोनिया और कार्बन द्वयाम्लजिद (कर्बन द्विओषित) गैस देता हुआ स्वयं नष्ट हो जाता है। इसके अर्द्ध स्वच्छ स्फटिकीय उड़नशील उग्रगंधि बड़े बड़े टुकड़े होते हैं। वायु में खुला रखने पर उनपर श्वेत चूर्ण जम जाता है। इस की प्रतिक्रिया क्षारीय होती है।

परीक्षा—अमोनियम की परीक्षा के लिए संदिग्ध लवण को चूर्ण (Lime.) के साथ मिलाकर उष्ण करें और सूँघें। यदि अमोनिया की उग्रगंध निकले, तो समझें, कि यह लवण अमोनिया का कोई योग है।

विलेयता—यह १ भाग ४ भाग शीतल जल में विलीन हो जाता है।

मिश्रण—इसमें सल्फेट्स (गंधित) और क्लोराइड्स (हरिद) का मिश्रण हुआ करता है।

उदासीनजनक मात्रा—२० ग्रेन अमोनियम कार्बोनेट, २६॥। ग्रेन साइट्रिक एसिड को और २८॥। ग्रेन टार्टारिक एसिड तथा १३ ग्रेन अर्द्ध आउंस निम्बुस्वरस को न्युट्रल अर्थात् उदासीन कर देता है।

संयोग-विरुद्ध—अम्ल, अम्लीय लवण (एसिड साल्ट्स), चूर्णोदक (लाइम वाटर), लौह के लवण (आयर्न साल्ट्स), क्षारीय मृत्तिकाएँ (अलकलाइन अर्थ्स) और क्षारोद (अलकलाइड्स) को अमोनियम कार्बोनेट के साथ नहीं मिलाना चाहिए।

औषध-निर्माण-संकेत—औषध में योजित

करने से पूर्व अमोनिया कार्ब के टुकड़े पर जो श्वेत चूर्ण लगा होता है उसको खुरच डालना चाहिए।

प्रभाव—व्याप्तोत्तेजक, श्लेष्मानिस्सारक, वामक और अम्लहर (एण्टेसिड)।

मात्रा—३ से १० ग्रेन (·२० से ·६५ ग्राम) उत्तेजक व कफनिस्सारक रूप से और ३० ग्रेन (२ ग्राम) वामक रूप में।

यह लाइकर अमोनियाई एसिटेटिस, लाइकर अमोनियाई साइट्रेटिस, स्पिरिटस अमोनी एरोमैटिकस और बिस्मथ कार्ब तथा निम्नांकित योगों के निर्माण में काम आता है:—

ऑफिशल प्रिपरेशन्ज़ (योग)
(*Official preparations.*)

(१) लाइकर अमोनियाई एसिटेटिस Liquor ammonii acetatis-लै०। सोल्युशन ऑफ अमोनियम एसिटेट Solution of ammonium acetate, स्पिरिट ऑफ मिण्डीरर Spirit of Minderer—इं०। शुक्रित अमोनियम द्रव-हिं०। सय्याल खुल्लानुऔशादर, अर्क़ अमोनिया सिर्कादार, शराब मिंद्रीर।

रासायनिक सूत्र

(न $उ_४$ $क_२$ $उ_३$ $ऊ_२$)

$NH_4 C_2 H_3 O_2$

नोट—सन् १६२२ ई० में सर्व प्रथम मिण्डीरर महोदय ने, जो ड्यूक ऑफ बेवारिया के सर्वोत्कृष्ट चिकित्सक थे, इस औषध का निर्माण किया था। अस्तु, इसे उन्हीं के नाम से अभिहित किया गया।

निर्माण-विधि—अमोनियम कार्बोनेट १ आउंस, एसिटिक एसिड (शुक्राम्ल) और परिस्रुत वारि प्रत्येक आवश्यकतानुसार। अमोनियम कार्बोनेट को दसगुने परिस्रुत जल में विलीन कर के फिर उसमें एसिटिक एसिड (शुक्राम्ल) सम्मिलित कर उसे न्युट्रल (उदासीन) कर लें। बाद को उसमें इतना परिस्रुत जल और मिलाएँ जिसमें सम्पूर्ण द्रवका द्रव्यमान पूरा एक पाइंट हो जाए। इसमें लगभग ६½% अमोनिया होता है।

मात्रा—२ से ६ फ्लुइड ड्राम=(७·१ से २१·३ घन शतांश मीटर)।

प्रभाव—मूत्रल और स्वेदक।

(२) लाइकर अमोनिया साइट्रेटिस Liquor ammonia citratis.-लै०। सोल्युशन ऑफ अमोनिम साइट्रेट Solution of ammonium citrate.-इं०। निम्बुकित अमोनिया द्रव-हिं०। सय्याल सत्रातुऔशादर, अर्क़ अमोनिया लेमूनी-ति०।

निर्माण-विधि—अमोनियम कार्बोनेट २॥ आउंस वा आवश्यकतानुसार, साइट्रिक एसिड (निम्बुकाम्ल) २॥ आउंस, परिस्रुत जल आवश्यकतानुसार। साइट्रिक एसिड (निम्बुकाम्ल) को पाँच गुने परिस्रुत जल में विलीन करके फिर उसमें अमोनियम कार्बोनेट मिलाकर उसको उदासीन (न्युट्रल) करलें और फिर उसमें इतना और परिस्रुत जल मिलादें जिसमें कुल द्रव एक पाइंट होजाए। इसमें लगभग १६% अमोनिया होता है।

रासायनिक सूत्र

$(न\ उ_४)_३$ $क_६$ $उ_५$ $ऊ_७$

$(NH_4)_3 C_6 H_5 O_7$

प्रभाव—मूत्रल। मात्रा—२ से ६ फ्लुइड ड्राम (७·१ से २१·३ घन शतांशमीटर)।

नोट—इसको सदा हरित वर्ण के बोतलों में रखना चाहिए।

(३) स्पिरिटस अमोनी एरोमैटिकस Spiritus ammoniæ aromaticus-लै०। एरोमेटिक स्पिरिट ऑफ़ अमोनिया Aromatic spirit of ammonia, स्पिरिट ऑफ़ सैल वालेटाइल Spirit of Sal Volatile-इं०। सुवासित अमोनिया सुरा-हिं०। रूहु औशादर तय्यब, रूह नौशादर मुअत्तर, रूह मिल्हु सय्यार -ति०।

रासायनिक सूत्र (न उ$_3$) NH_3

निर्माण-विधि—अमोनियम कार्बोनेट ४ आउंस, स्ट्रॉंग सोल्युशन ऑफ़ अमोनिया ८ आउंस, ऑइल ऑफ़ नटमेग (जातीफल तैल) ४॥ फ़्लुइड ड्राम, ऑइल ऑफ़ लेमन (निम्बुक तैल) ६॥ फ़्लुइड ड्राम, ऐलकुहॉल वा मद्यसार (९०%) ६ पाइंट, परिस्रुत जल ३ पाइंट। प्रथम ऑइल ऑफ़ नटमेग और ऑइल ऑफ़ लेमन को ऐलकुहॉल और परिस्रुत जल के साथ योजित कर सात पाइंट द्रव स्त्रावित करके पृथक् करलें। फिर ९ आउंस द्रव और स्त्रावित करें। तथा इसमें स्ट्रॉंग सोल्युशन ऑफ़ अमोनिया और अमोनियम कार्बोनेट को योजित कर इतना उत्ताप दें जिसमें वे विलीन हो जाएँ। अब इसमें पूर्व स्त्रावित सात पाइंट अर्क मिला लें। इसका आपेक्षिक भार ·८९ होना चाहिए। यह लगभग वर्ण रहित होता है।

मात्रा—जब बारबार देना हो तब २० से ४० बूंद और जब एक ही बार देना हो तब ६० से ९० बुंद तक।

नोट—योग में स्पिरिट अमोनी ऐरोमेटिक के साथ सिरूपस सिल्ली (वनपलाण्डु प्रपानक अर्थात् शर्बत) कदापि नहीं लिखना चाहिए।

यह मिस्चूरा (मिश्रण) सेना को० में पड़ता है।

नॉट ऑफ़िशल योग

(*Not official preparations*).

(१) लिङ्क्टस अमोनी कम्पॉजिटस Linctus ammoniae compositus-ले०। यौगिक अमोनियावलेह-हिं०। लऊक़ अमोनिया मुरक्कब-ति०।

योग—अमोनियम कार्बोनेट $\frac{1}{6}$ ग्रेन, इपिकेकाइना वाइन २ बुंद, टिंकचर ऑफ़ स्क्वील ५ बुंद, एसेंस ऑफ़ एनिसाई १ बुंद, म्युसिलेज (लुआब) अकेशिया २० बुंद, जल एक आउंस पर्यन्त। यह एक मात्रा है। (रॉयल चेष्ट)

(२) अमोनियाई बाइकार्बनास ammonii bicarbonas-ले०। अमोनियम् कार्बोनेट की अपेक्षा इसका स्वाद उत्तम होता है और यह कम दाहक (कॉस्टिक) होता है। एफ़र्वेसिंग ड्राफ़्ट्स (उफाणयुक्त घूंट) हेतु यह अधिक उपयोगी है।

(३) अमोनियाई फ्लोराइडम् ammonii fluoridum-ले०। इसके ४ ग्रेन प्रति आउंस वाले विलयन को ५ से ३० बूंद की मात्रा में विवर्द्धित प्लीहा एवं गलगण्ड प्रभृति में दिया करते हैं।

(४) अमोनियाई पिक्रास ammonii picras-ले०। इसके पीतवर्ण के छोटे छोटे पत्र होते हैं जो जलमें विलीन हो जाते हैं। इसको शीतज्वर और मलेरिया ज्वरों में देते हैं। मात्रा—$\frac{1}{8}$ से $1\frac{1}{2}$ ग्रेन तक दिन रात में ४-५ बार।

(५) अमोनियाई टार्ट्रास ammonii tartras-ले०। कफनिस्सारक रूप से इसको ५ से ३० ग्रेन तक की मात्रा में देते हैं।

(६) स्मेलिंग साल्ट Smelling-salt-ले०। आघ्राण लवण, सूँघने का चूर्ण-हिं०। मिल्हु शशम, लख़लख़ा-अ०। ये कई प्रकार के होते हैं। इसका एक श्रेष्ठतर योग निम्न है।

योग—अमोनियम क्लोराइड (नवसादर) १॥ आउंस, पोटासियम कार्बोनेट १ आउंस ६ ड्राम, कैम्फर (कपूर) १ ड्राम, अमोनियम कार्बोनेट ३ ड्राम, ऑइल ऑफ क्लव्ज़ (लवंग तैल) १० बूंद, ऑइल ऑफ बर्गेमोट १० बूंद, ऑइल ऑफ़ स्पियरमिंट ४ बूंद। शुष्क औषधों का बारीक चूर्ण कर उसमें तैल मिला दें।

(७) पिक-मी-अप Pick me up-इं०।

योग—स्पिरिटस अमोनी ऐरोमैटिकस आधा ड्राम, स्पिरिटस क्लोरोफॉर्माई आधा ड्राम, टिंक्चूरा जन्शियाई कम्पॉज़िटस १ ड्राम, टिंक्चूरा कार्डिमोमाई कम्पॉज़िटस २ ड्राम, सीरूपस २ ड्राम, जल २ आउंस पर्यन्त। सब औषधों को मिला लें। यह एक मात्रा औषध है।

प्रभाव तथा उपयोग—

(बाह्य) यद्यपि लाइकर अमोनिया के

समान ही इसके प्रभाव होते हैं, तथापि अमोनिया कार्बोनेट का बहिर प्रयोग नहीं होता। परावर्तित क्रिया के लिए स्पिरिटस अमोनिया ऐरोमैटिक सुँघाई जाती है।

(आन्तरिक) अमोनियम कार्बोनेट में वे सभी प्रभाव वर्तमान होते हैं जो लाइकर अमोनिया में हैं। इसके अतिरिक्त यह सशक्त स्रोत्तेज्य कफनिस्सारक (लगभग ८ ग्रेन की मात्रा में भली प्रकार जल मिश्रित कर देने से) है। अतएव कास, प्रातिश्यायिक फुप्फुसौष में यह एक अत्युत्तम औषध है। अमोनियम कार्बोनेट ३० ग्रेन की मात्रा में वामक है, किन्तु इस प्रयोजन हेतु क्वचित ही उपयोग-में आता है। अधिक मात्रा, उदाहरणतः २० से ३० ग्रेन में देने से यह रेचक प्रभाव करता है अर्थात् इससे विरेक आने लग जाते हैं। कभी कभी छोटी मात्रा में अधिक समय तक निरन्तर देते रहने से भी यह आन्त्र में क्षोभ उत्पन्न करता है। अस्तु, ऐसे कास रोगीको जिसको विरेक भी आते हैं, अमोनियम कार्बोनेट नहीं देना चाहिए।

कार्बोनेट ऑफ अमोनिया स्वतंत्र गैसों (वायव्य) की तरह प्रभाव करता है। लगभग ८ ग्रेन की मात्रा में भली प्रकार जल मिश्रित कर देने से यह सार्वांगिक श्वासोत्तेजक है और समग्र ज्वर-जन्य कायशैथिल्य की दशाओं में इसका अत्युत्तम प्रभाव होता है। मसूरिका (मीज़िल्स) और रक्त-ज्वर (स्कारलेटिना) में इसका प्रयोग करने से कभी कभी अत्यन्त संतोषदायक परिणाम निष्पन्न हुए हैं। इससे तापक्रम भी कम हो जाता है। स्थानिक उपयोग से जिस प्रकार ततैया के दंश और कीट दष्ट में यह विषघ्न प्रभाव करता है। सम्भवतः उक्त दशाओं में यह दूषित विषों को नष्ट कर अपना प्रभाव करता है। अमोनिएकल ब्रेथ सहित टाइफॉइड (आंत्रसन्निपात ज्वर) की दशा में यह निष्प्रयोजनीय है। सर्प दष्ट में इसके अन्तःक्षेप की उपयोगिता सन्दिग्ध है। (हि० मे० मे०)।

लाइकर अमोनियाई एसिटेटिस और लाइकर अमोनियाई साइट्रेटिस दोनों स्वेदक हैं (बालकोंके ज्वर की सम्पूर्ण दशाओं में यह विशेष कर लाभप्रद है)। सम्भवतः स्वेदोत्पादक ग्रंथियों की सेलों पर अथवा उन ग्रंथियों में अंत होने वाले वाततन्तुओं पर उनका प्रभाव पड़ने से स्वेद आता है। परन्तु ज्ञात होता है कि लाइकर अमोनिया एसिटेटिस का अधिक शक्तिशाली प्रभाव होता है। यदि रोगी को शीतल स्थान में रखा जाए अर्थात् उसके शरीर को शीतल रखा जाए तो फिर वृक्क पर एकत्र हो कर (संगठित रूप से) उनका प्रभाव होता है, जिससे अधिक मूत्र आने लगता है। अस्तु, प्रागुक्त प्रभावों के अनुसार उनको ज्वरों में ऐसे अल्पस्वेदक रूप में, जिनसे निर्बलता न हो, प्रयोग करते हैं। अधिक मद्यपान जनित प्रभावों को व्यर्थ करने के लिए भी उनको बर्तते हैं। अस्तु, सुरा की शीशी (wine glassful) की मात्रा में सेवन करने से मदात्यय के प्रभाव को नष्ट करने में यह (एसिटेट ऑफ़ अमोनिया सोल्युशन) विलक्षण प्रभाव करता है अथवा आरम्भ में कार्बोनेट को एक चाय की चम्मच भर एक शीशी सिरके में मिलाकर देने से भी वैसा ही प्रभाव होता है। यह यूरिया की शकल में मूत्र द्वारा, बिना उसके सारत्व को बढ़ाए, उत्सर्जित होता है।

अमोनिया के प्रयोग की सर्वोत्तम विधि, उसको ऐरोमैटिक स्पिरिट ऑफ अमोनिया और लाइकर अमोनी की शकल विशेषतः प्रथम रूप में देना है। उनमें सदा स्वतंत्रतापूर्वक जलमिश्रित करलें। कुश्ना के विचारानुसार इन योगों का आमाशय के धरातलपर उत्तेजक प्रभाव होकर परा-वर्तित रूप से हृदय पर प्रभाव होता है।

नोट—कार्बोनेट ऑफ़ अमोनिया को दुग्ध, शर्बत (प्रपानक) या पानी में भली प्रकार विलीन करके बर्तना चाहिए।

युरोप तथा अमेरिका के डॉक्टरों के परीक्षित प्रयोग

(१) डायफोरेटिक मिक्स्चर (स्वेदक मिश्रण) :–

एसिटेट ऑफ़ अमोनिया सोल्युशन	२ आउंस
एसिटेट ऑफ़ पोटासियम	२ ड्राम
स्पिरिट ऑफ़ नाइटर	४ ड्राम
कैम्फर वाटर	८ आउंस पर्यन्त
सिरप	१ आउंस

इसमें से १ आउंस की मात्रा में प्रति ३-३ घंटे पश्चात् दें। यह एक निरापद अत्यन्त संतोषदायक स्वेदक मिश्रण है, जिसका उपयोग प्रत्येक प्रकार के ज्वर में किया जा सकता है।

साइट्रेट सोल्युशन का भी ऐसा ही प्रभाव होता है। (See-B. on p. 318)

(२) न्युमोनिया मिक्स्चर (फुफ्फुसप्रदाहहर मिश्रण) :—

लाइकर अमोनिया एसिटेटिस	२ आउंस
अमोनियाई कार्बोनास	४० ग्रेन
पोटासियम आयोडाइड	१६ ग्रेन
वाइनम ऐण्टिमोनियाई	४० बूंद
सिरूपस	१ आउंस
एक्वा	८ आउंस पर्यन्त

इसमें से १-१ आउंस की मात्रा में दिन रात में तीन-चार बार दें।

प्रयोग—यह मिश्रण प्रातिश्यायिक फुफ्फुसौष (कैटारल न्युमोनिया) में सामान्य रूप से प्रयुक्त होता है।

(३) योगः—

सिरुपस अमोनी ऐरोमैटिकस	२० बूंद
वाइनम ऐण्टिमोनिएलिस	५ बूंद
टिंक्चूरा एकोनाइटाई	२ बूंद
इन्फ्युज़म डिजिटेलिस	१ ड्राम
एक्वा एनिसाई	१ आउंस पर्यन्त

ऐसी एक-एक मात्रा औषध प्रति ३-३ घंटे पश्चात् दें।

नोट—रक्तप्रकृति के न्युमोनिया-रोगी में रोग के आरम्भमें जब तक नाड़ी फ़ुल (पूर्ण, भरी हुई) चलती हो तब तक इस औषध को देते रहें। परन्तु जब रक्तभार कम और नाड़ी मृदु हो जाए तब इसको बन्द करके सोत्तेज्य कफ-निस्सारक औषध का उपयोग करें। इस हेतु निम्न लिखित योग लाभदायक है :—

(४) योग—

अमोनियाई कार्बोनास	३ ग्रेन
स्पिरिटस अमोनियाई ऐरोमैटिकस	२० बूंद
स्पिरिटस कैजेप्युटाई	१५ बूंद
टिंक्चर सिल्ली	५ बूंद
इन्फ्युज़म सिनेगी	१ आउंस पर्यन्त

ऐसी १-१ मात्रा औषध प्रति ४-४ या ६-६ घंटे पश्चात् दें। परन्तु, दिन रात में ४ मात्रा से अधिक न दें।

अमोनियाई क्लोराइडम् ammonii chloridum-लै० नवसादर, नरसार, नौसादर। (Sal ammoniac.).

अमोनियाई ग्लीसिरहाइज़ास ammonii glycyrrhizas.-लै० अमोनियाई ग्लीसिरहाइज़ेट।

अमोनियाई ग्लीसिरहाइज़ेट ammonii glycyrrhizate-लै० अमोनिया संयुक्त मुलेठी का सुस्वादु सत्व। यह कीनीन की तिक्तता और अन्य ह्लासजनक औषधों के दोषशमनार्थ प्रयुक्त होता है। मात्रा—चौथाई ग्रेन से १ ग्रेन तक। पी० बी० एम०।

अमोनियाई टार्ट्रास ammonii tartras-लै० देखो-अमोनियाई कार्बोनास।

अमोनियाई पिक्रास ammonii picras-लै० देखो-अमोनियाई कार्बोनास।

अमोनियाई फॉस्फॉस ammonii phosphos-लै०। अमोनियम फॉस्फेट (ammonium phosphate)-इं०। अमोनियम स्फुरित।

ऑफिशल (*Official*).

रासायनिक सूत्र $(NH_4)_2 HPO_5$

निर्माण-विधि—स्ट्रॉंग सोल्यूशन ऑफ़ अमोनिया (तीक्ष्ण अमोनिया घोल) में डायल्यूट फॉस्फोरिक एसिड (जलमिश्रित स्फुराम्ल) मिलानेसे अमोनियम फॉस्फेट (अमोनियम स्फुरित) प्रस्तुत होता है।

लक्षण—इसके स्वच्छ वर्णरहित रवे होते हैं।

विलेयता—यह १ भाग चार भाग जल में विलीन हो जाता है, परन्तु ऐलकुहॉल (९०°/₀) में विलीन नहीं होता।

प्रभाव—डायरेक्ट कोलेगॉग (सरल पित्त-रेचक) और डायॅरेटिक (मूत्रल) है। मात्रा–५ से २० ग्रेन (·३२ से १·३० ग्राम)।

प्रभाव तथा उपयोग

चूँकि अमोनियम फ़ॉस्फेट सीधा यकृत को उत्तेजना प्रदान करता है एवं मूत्रल है, और चूँकि यह अविलेय युरेट ऑफ़ सोडियम को युरेट ऑफ़ अमोनियम और फ़ॉस्फेट ऑफ सोडियम में परिणत कर देता है; अतएव इसको वातरक्त (गाउट) तथा युरिक एसिड डायथेसिस (अर्थात् उन सभी दशाओं में जब युरिकाम्ल की कंकड़ी बनने की आशंका हो) में देने से लाभ होता है।

अमोनियाई फ्लोराइडम् ammonii fluoridum लें० देखो–**अमोनियाई कार्बोनास**।

अमोनियाई बाई कार्बोनास ammonii bicarbonas–लें० नृसारद्विकज्जलेत। देखो—**अमोनियाई कार्बोनास**।

अमोनियाई बेञ्जोआस ammonii-benzoas –लें० लोबान अम्ल। देखो–**एसिडम बेञ्जोइकम्**।

अमोनियाई बोरास ammonii boras—लें० टङ्कण अमोनिया। अमोनिया तिनकारी।

नॉट ऑफ़िशल (*Not official.*)

लक्षण—यह एक स्फटिकीय लवण है, जिसकी प्रतिक्रिया क्षारीय होती है। विलेयता–यह १ भाग १५ भाग जल में विलीन हो जाता है।

प्रभाव तथा उपयोग—रेनल और वेसिकल केल्क्युलाई (वृक्क व वस्त्यश्मरी) में इसका उपयोग अत्यन्त लाभदायक प्रमाणित हुआ है। अस्तु, रेनल कॉलिक (वृक्कशूल) में २० ग्रेन (१० रत्ती) की मात्रा में इसको २-२ घंटे पश्चात् उस समय तक देते हैं, जब तक कि खूब खुलकर पेशाब नहीं आ जाता। पुनः १५ ग्रेन की मात्रा में दिन में तीन बार देते हैं।

अमोनियाई ब्रोमाइडम् ammonii bromidum–लें० देखो–**ब्रोमीन (ब्रह्मणिका)**।

अमोनियाई वैलेरिएनास ammonii valerianas—लें० देखो–**वैलेरियन, सुगन्धवाला**।

अमोनियाई सैलिसीलास ammonii salicylas–लें० वेतस अमोनिया। देखो–**एसिडम् सैलिसीलिकम (वेतसाम्ल)**।

अमोनियाकून ammoniakon–यु० (Ammoniacum) देखो–**उशक़**।

अमोनियातुज़्ज़ैबक़ amoniyátuzzaibaq –अ० नृसारेत पारद। (Hydrargyrum ammoniatum) देखो–**पारद**।

अमोनियाते जीवह amoniyáte-jívah-अ० नृसारेत पारद। (Ammoniated mercury) देखो—**पारद**।

अमोनिया बैक्सिफेरा ammonia baccifera--लें० दादमारी। इं० मे० मे०।

अमोनिया मक्युरिक क्लोराइड ammonia mercuric chloride—इं० अमोनिया पारद हरिद। देखो–**पारद**।

अमोनिया लोबानी amoniyá lobání–अ० देखो–**एसिडम् बेञ्जोइकम् (लोबानाम्ल)**।

अमोनिया वेसिकेटोरिया ammonia vesicatoria-लें० दादमारी। इं० मे० मे०।

अमोनिया वैलेरियाना ammonia valeriana –इं० हॉत्रेर अमोनिया। देखो–**वैलेरियन**।

अमोनिया सैलिसीलास ammonia salicylas—इं० वेतस अमोनिया। देखो—**एसिडम् सैलिसीलिकम् (वेतसाम्ल)**।

अमोनिया क्लोराइड ऑफ मर्करी ammonio chloride of mercury–इं० अमोनियात सीमाब। देखो—**पारद**।

अमोनी-लाइकार फ़ॉर्टिस ammoniæ liquor fortis–लें० सशक्त ए(अ)मोनिया द्रव। देखो–**अ(ए)मोनिया**।

अ(र)मोनाल amonol-इं० यह एक श्वेत वर्ण का चूर्ण है। देखा-एसेटअनालाइडम्।

अमोमम् amonum, *Sp. of.* 'capsules of'-लें० (१) हमामा। फा० इं० २ भा०। (२) बड़ी इलायची। स० फा० इं०।

अमोमम् ऐरोमैटिकम् amomum aromaticum, Roxb.-लें० बड़ी इलायची, बृहदेला। इलायची, मोरंग-बं०। इं० मे० मे०। मेमो। देखो एला।

अमोमम् ग्रेना amomum grana-लें० अज्ञात।

अमोमम् ज़िञ्जिबेरिना amomum zingiberina-लें० बड़ा कुलिञ्जन। फा० इं० ३ भा०।

अमोमम् ज़ैन्थिऑइडिस amomum zanthioidis-लें० छोटी इलायची, क्षुद्रैला। फा० इं० ३ भा०। देखो—एला।

अमोमम् डीऐलबेटम् amomum dealbatum, Roxb.-लें० यह खाद्य कार्य में आता है। मेमो०।

अमोमम् मेलेग्वेटा amomum melegueta, *Roscœ.*-लें० इसका फल औषध कार्यमें आता है। मेमो०।

अमोमम् मैक्सिमम् amomum maximum, *Roxb.*-लें० यह एक खाद्य है। मेमो०।

अमोमम् रिपेन्स amomum repens, *Roxb.*-लें० छोटी इलायची, क्षुद्रैला। देखो–एला।

अमोमम् वाइल्ड amomum wild इं० हमामा।

अमोमम् सब्युलेटम् amomum subulatum, Rox*b*.-लें० बड़ी इलायची, बृहदेला -बं०, हिं०। क़ाक़िलहे कबीर-अ०। मेमो०। फा० इं० ३ भा०। देखो—एला।

अमोमम् सिलवेस्ट्रिस amomum sylvestris-लें० हमामा। (Amomum wild) इं० हैं० गा०।

अमोमिस amomis-यु० हमामा। (Amomum.) फा० इं० २ भा०।

अमोरई amoraí-रू० ज़ैतून तैलकिट्ट।

अमोरा अमारी amorá-amárí-आसा० रोहितक, रोहिनी, रोहेड़ा-सं०। (Amoora rohituka, *W.&A.*) फा० इं० १ भा०।

अमोरी amorí-हिं० संज्ञा स्त्री० [हिं० आम+औरी (प्रत्य०)] (१) आमकी कच्ची फली। अँबिया। (२) आमड़ा, अम्मारी। आम्रातक।

अमोला amolá-हिं० संज्ञा पुं० [सं० आम्र] आम का नया निकलता हुआ पौधा।

अमोलाक़न amolíqon-रू० सीसभस्म, सीसाकी भस्म। (Lead oxide) देखो-सीस(क)म्।

अ(ा)मोलुका amoluká-बं० अम्धुक, आमधुक -हिं०। (Vitis indica, *Linn.*)। फा० इं० १ भा०।

अमोलूनस amolúnas-यू०गोधूम सत्व,श्वेतसार, निशास्ता। स्टार्च (Starch.)-इं०।

अमौआ amouá-हिं० संज्ञा पुं० [हिं० आम+औआ (प्रत्य०)]। आम के रस का सा रंग। यह कई प्रकार का होता है। जैसे पीला, सुनहरा, माशी, किशमिशी, मूँगिया इत्यादि। (२) अमौआ रंग का कपड़ा। वि० आम के रस के रंग का।

अमौलिक amoulika-हिं० वि० [सं०] (१) बिना जड़ का। निर्मूल। (२) बिना आधार का। (३) अयथार्थ, मिथ्या।

अमांसम् amánsam-सं० क्लो० मांस रहित।

अम्अदालिया ama-dáliyá-यु० बादाम, वाताद। (Amygdala.)

अम्आर amäar-अ० कम बालों वाला। जिसके बाल गिरते हों।

अमूआऽ amäáa-अ० (ब० व०) मिअ्आऽ या मिअ्आ (ए० व०)। मस्रारीन-अ०। रोदहा, आँतें-फ़ा०, उ०। आंत्र, अंतड़ी-सं०, हिं०। (Intestines, Bowels.)

नोट—आँतें सूक्ष्म व वृहत् भेद से दो प्रकार की होती हैं, जिनमें से प्रत्येक के पुनः तीन तीन

भेद होते हैं। अस्तु, ये संख्या में कुल छः हुई। देखो–अम्आऽ दिक़ाक़ व ग़िलाज़।

अम्आउलअर्ज़ amāául-arza–अ० ख़रातीन, केंचुए। (Earthworm.)

अम्आऽउलया amāáa.āulyá–अ० अम्आ दिक़ाक़।

अम्आऽग़िलाज़ amāáa-ghiláza–अ० अम्आऽ सुफ़ला। मोटी वा बड़ी आँतें, ज़ेरीं आँतें–उ०। बृहदांत्र, स्थूलांत्र–हिं०। (Large intestines.)

अम्आऽदिक़ाक़ amāáa-diqáqa–अ० छोटी आँतें, ऊपर की आँतें–उ०। लघु आंत्र, सूक्ष्मांत्र, क्षुद्रांत्र–हिं०। (Small intestines.)

अम्आऽसीन amāáa-sína–अ० ग़ोरहे (अपक्व) अंगूर का पानी।

अम्की amkí–नैपा० सम्यी–लेपचा०। (Pyrularia edulis).

अम्कुलऐन amqul āain–अ० माक़ अक्बर। आँख का बड़ा कोया जो नासिका की ओर स्थित है। इनर कैन्थस (Inner canthus)–इं०।

अम्ख़त amkhat–अ० वह व्यक्ति जिसकी नासिका सदा बहती रहे। नासा(परि)स्राव रोगी।

अम्ग़र amghar–अ० रक्त रोमों वाला।

अम्ज़र amzar–अ० नर, पुरुष, मनुष्य, आदमी, मर्द। मैन (Man)–इं०।

अम्ज़ह amzah–अ० (१) चलते समय जिस के दोनों पैर परस्पर मिलें। (२) गन्दह दुहन, मुख दुर्गन्धि। जिसके मुख से दुर्गन्धि आती हो।

अम्ज़िजह amzijah–अ० मिज़ाज (प्रकृति) का बहुवचन है।

अम्तश amtash–अ० निर्बलदृष्टि वाला मनुष्य, कमज़ोर नज़र का आदमी।

अम्तीपण्डु amtí-pandu–ले० केला, कदली। (Musa paradisiaca, *Linn.*)

अम्दश amdash–अ० निर्बल तथा अल्प बुद्धि वाला मनुष्य। दुर्बल तथा कम अक़्ल वाला मर्द।

अम्देस सामोटापाना amdes samotapana –गोआ० बजर बट्टु, जंगली मदनमस्त–हिं०। (Cycas circinalis) इं० मे० मे०।

अम्धुका amdhuka–बं० देखो–अन्धुक।

अम्न amna–अ० चैन, आराम, शांति, सुरक्षितता, निडर होना (Peace)।

अम्नाऽ amnáa–अ० (ब० व०) मनाऽ (ए० व०) माप विशेष। लगभग पक्का १ सेर का वज़न।

अम्नान amnán–अ० (ब० व०), मन्न (ए० व०) एक माप विशेष। लगभग २ पौंड अर्थात् एक सेर का वज़न।

अम्निय्यत् amniyyat–अ०
इअ्फ़ाऽ iāfáa– " } शाब्दिक अर्थ स्वास्थ्य एवं सुरक्षितता प्राप्त करना, रोगनाशकता, रोगक्षमता (Immunity.)।

अम्पफर ampfer–जर० चाङ्गेरी, चूका। (Rumex Scutatus). इं० मे० मे०।

अम्पार ampár–बाकला, बेलहर।

अम्पिलॉप्सिस क्विन् क्वि फोलिया ampelopsis quin-quefolia–ले० अमेरिकन आइवी–इं०। वाइटिस क्विन्क्वि फोलिया (Vitis quinquefolia.)–ले०।

अम्पुट्टई amputtai–ता० अम्बाड़ा, अमड़ा, आम्रातक। (Spondias Mangifera) इं० मे० मे०।

अम्पेलोसिक्योस स्कैण्डेन्स ampelosicyos scandens, (Thou. Bot. Mag. 268-1, 275-1,-2.)–ले० इसका बीज कृमिहर है। बीज चिपटा, क़रीब क़रीब गोलाकार लगभग १॥ इंच मोटा, वाह्याच्छादन कोमल टोकरी की रचना से समानता रखता है और बहुत कठोर एवं मज़बूत होता है। गिरी में मृदुतैल की कुछ मात्रा पाई जाती है। समग्र फल २–३ इंच लम्बा और ८–१० इंच मोटा होता है। इसपर लम्बाई की रूख गहरी धारियाँ पड़ी रहती हैं। इसका भीतरी भाग ३ से ६ कोषों में विभाजित होता है; इसमें प्रायः २५० बीज होते हैं।

अम्फी amphi–नैपा० सम्यी–लेपचा०।

अम्ब amba–हिं० पुं०
अम्बह ambah–फ़ा० } आम, आम्र। (A mango, a mango tree).

अम्बकः ambakah–सं० पुं० (१) य(व)कुल

वृक्ष, मौलसरी। (Mimusops Elengi) जटा०। -क्लीं० (२) नेत्र, चक्षु, आँख। (Eye) हे० च०। (३) ताम्र, ताम्बा। (Copper) रा० नि० व० १३। (४) पिता।

अम्बकरञ्ज amba-karanja-बं० करञ्ज भेद, डहरकरञ्ज। (Pongamia glabra.) इं० मे० मे०।

अम्बकुड़ा amba-kuḍá-हिं० संज्ञा पुं०
अम्बकोड़ा amba-koḍá "
अम्बकोल amba-kola "
अङ्कोल ढेरा। (Alangium decapetalum.)

अम्बग़ोल ambaghoul-अ० महाकाल, लाल इन्द्रायन। (Trichosanthus palmata.) स० फा० इं०।

अम्बज ambaja-अ० आम। (Mango tree.)

अम्बजात ambajáta-अ० मुरब्बा। (Preserve.)

अम्बट ambaṭa-बम्ब० बायविड़ंग, विड़ंग। (Embelia ribes.)

अम्बट बेल ambaṭa-bel
अम्बट वेल ambaṭa-vel
-हिं०, म० अम्लवेल, गिदड़द्राक-पं०। अम्ललता-बं०। अम्लपर्णी -सं०। (Vitis trifolia.)। मेमो०। इं० मे० मे०।

अम्बटा ambaṭá-बम्ब० बायविड़ंग, विड़ंग। (Embelia ribes.)

अम्बटी मद्दु ambaṭí-maddú-ते० अज्ञात।

अम्बटे ambaṭe-कना०
अम्बटेमरा ambae-mará कना०
अमड़ा, आम्रातक अम्बाड़ा। (Spondias mangifera.)

अम्बटे हुल्लु ambaṭe-hullú कना० सफ़ेद दूब, श्वेत दूर्वा। (Cynodon dactylon.)

अम्बड़े ambaḍe-गारो० आरी, रीस-पं०। मेमो०।

अम्बत ambata-हिं० वि० अम्ल, खट्टा, खटाई, चूक। (Sour.)

अम्बताना ambatáná-हिं० क्रि०, संज्ञा खट्टा होना। (To grow sour.)

अम्ब-पाली ambapolí-मह० अमावट। See-Amávaṭa.

अम्बरम् ambaram-सं० क्लीं०
अम्बर ambar-हिं० संज्ञा पुं०
(१) कपास, कार्पास। (Gossypium Indicum.) र० मा०। (२) अभ्रक। Talc. (Mica.)। रा० नि० व० १३; भैष०। वसन्त कुसुमाकरे। (३) तन्नामक गन्धद्रव्य, एक सुगन्धित द्रव्य, अम्बर। विश्वः। (४) वस्त्र विशेष (Clothes, Apparel.)। (५) वस्त्र। कपड़ा। पट। (६) आकाश। आसमान। (७) एक इत्र। (८) अमृत। अने०। (९) बादल। मेघ। (क्व०)

अम्बर ambar-फ़ा० संदंश, चिमटा, चिमटी, दस्तपनाह। फॉर्सैप्स (Forceps.)-इं०।

अम्बर áambar-अ० अम्बर-हिं०, बं०, मह०, बम्ब०,मद०,कों०, गुज०। अग्निजारः, वह्निजारः, अम्बरसुगंधः, अम्बरम्-सं०। शाहेबू -फ़ा०। अम्ब्राग्रसया Ambra Grsea -लै०। अंबरग्रीस Ambergris-लै०, इं०। अमर ग्रीस Amergris-इं०। मिनम्बर -ता०। मुसम्बर-सिं०। पयेन-अम्भट-बर०।

अम्बर एक प्रसिद्ध सुगंधिपूर्ण मूल्यवान औषध है। इसके विषय में विभिन्न व परस्पर विरोधी वचन प्राचीन तिब्बी ग्रंथों में विद्यमान हैं, यथा—

अम्बर को किसी किसी ने एक समुद्री चतुष्पद प्राणी का गोबर (लीद) वर्णन किया है। और किसी किसी ने लिखा है, कि यह एक बूटी है जो समुद्रतल में उत्पन्न होती है। इसको कोई कोई समुद्री जीव खाते हैं। जब उनका पेट भर जाता है तब वे इसको उगल देते हैं और यह उगाल ही अम्बर कहलाता है।

शेख़ का अनुमान है कि अंबर समुद्र तल के

स्रोत का जोश (या रतूबत) है । उनके विचार से जिन लोगों ने इसको समुद्रफेण वा किसी सामुद्री चातुष्पद जन्तु का गोबर लिखा है, वह मिथ्या है ।

शेख़ के सिवा कतिपय अन्य इतिब्बा भी इसी विचार के समर्थक हैं और इसे ही सत्य एवं अधिक प्रामाणिक मानते हैं । अस्तु, उनका वर्णनहै कि अम्बर एक रतूबत है जो समुद्रतलस्थ स्रोतों एवं समुद्र के आभ्यन्तरीय कान या द्वीप से क़फ़र, मोमियाई तथा क़ीर के समान निकलता है और अम्बर कहलाता है । यह सामुद्र तरंग के थपेड़ों के कारण उत्ताप पहुँचने से समुद्र के पानी पर तह बतह एकत्रित होकर सान्द्र(प्रगाढ़) होजाता है ।..और शमामहके समान गोल या अन्य स्वरूप ग्रहण कर समुद्र तट पर आ पड़ता है । कहते हैं कि समुद्री जीवों को अम्बर अत्यन्त प्रिय है । जब यह उनको मिलता है तब वे इसको तुरंत निगल जाते हैं । किन्तु न पचने के कारण यह उनको मार डालता है अथवा उनके उदर में आध्मान उत्पन्न कर देता है और वे जन्तु पानी के ऊपर आ जाते हैं । जो लोग इस बात का ज्ञान रखते हैं वे तत्काल उक्त जीव के उदर को विदीर्ण करके अम्बर निकाल लेते हैं । इस प्रकार का अम्बर श्याम वर्ण का और बसाँध युक्त (पूति गंधमय)होता है । इसको अम्बर बलई कहते हैं । यह अंबर ज़ंजी (ज़ंगी) नामसे भी प्रसिद्ध है । यही कारण है कि किसी किसी ने इसको समुद्री गाय का गोबर माना है ।

अम्बर के सम्बन्ध में **मुल्ला नफ़ीस** के ये वचन हैं—

"किसी किसीके कथनानुसार यह बात सत्य है कि भारतवर्ष में यह मधु से प्राप्त होता है । इसको इस प्रकार प्राप्त किया जाता है । मधु मक्षिकाएँ सुगंधित पुष्प और पत्र से रस चूस चूस कर भारतवर्ष के पर्वतों पर मधु का निर्माण करती हैं । इसी कारण यह मधु अत्यन्त सुगंध-युक्त होता है । फिर जब वर्षाधिक्य के कारण उन मक्षिकाओं के छत्तों पर जल का सैलाब आता है तब मधु तो पानी में घुल जाता है और केवल मोम का भाग अवशिष्ट रह जाता है । यह अत्यंत सुगंधित होते और नदियों में बहते हुए समुद्र तक जा पहुँचते हैं । फिर यह समुद्र के पानी में सूर्यताप द्वारा द्रवीभूत होते हैं एवं स्वच्छ हो जाते हैं । समुद्र तरंग इनको तट पर ला डालता है । यही अम्बर होता है ।" इसके ज्ञाता इसे उठा कर ले जाते और बहुमूल्य लेकर बेचते हैं ।

मुल्ला सदीद गाज़रानी ने मुफ़रदात क़ानून की टीका में उपर्युक्त कथन का समर्थन किया है और उसी वचन को सत्य माना है । क्योंकि अम्बर में मोम के लक्षण व्यक्त हैं । कारण यह है कि उष्ण जल में घोलने से वह घुल जाता है एवं शीतल होने पर मोम के समान जम जाता है। कतिपय इतिब्बा ने लिखा है कि प्रतिष्ठित व्यक्तियों की ज़बानी सुना गया है कि कभी सौभाग्यवश ताजा अम्बर हस्तगत होजाता है । वह मधुर ,ख़मीरवत्, सुस्वादु, मृदु और अत्यन्त सुगंधित होता है और यमन सागर, मालदीप तथा प्रशांत महासागर और समुद्र तरंग द्वारा उनके समीपके तटों पर आ लगता है तथा वहाँ के निवासी उसको उठा लाते हैं ।

हकीम उलवीख़ाँ लिखते हैं कि मैंने अम्बर शमामह (सर्वोत्कृष्ट प्रकारका अम्बर जिसके टुकड़े गोल होते हैं) देखा है । उसमें मधु मक्षिका के समान बहुत से जन्तु लगभग शत की संख्या में थे ।

मीर मुहम्मद हुसैन लेखक मख़ज़नुल्-अद्वियह लिखते हैं कि मैंने भी अम्बर का एक टुकड़ा देखा है जिसमें किसी रक्त जौज़ी वर्णके सद्फ़ी (शौक्तिक) जन्तुके सिर व ग्रीवा और चंचुवत् कोई वस्तु दृष्टिगोचर होती थी । परन्तु तो भी हमारे समीप वे ही वचन अधिक यथार्थ एवं विश्वस्त ज्ञात होते हैं जिन्हें शेख़ तथा प्रायः इतिब्बा ने वर्णन किए हैं । (अर्थात् अम्बर एक रतूबत है जो समुद्र तल के कतिपय सहायक तथा द्वीप से मोमियाई और क़ीर प्रभृति के समान निकलती है ।)

परन्तु अर्वाचीन गवेषणात्मक शोधों से यह ज्ञात हुआ है कि अम्बर ह्वेल मछली की एक विशेष जाति स्पर्म ह्वेल (Sperm whale.) के उदर से निकलता है। यह एक प्रकार का दूषित मल है जो उसके आंत्र वा अंत्रपुटमें रहता है। स्पर्म ह्वेल ८० फुट तक लम्बी होती है। इसका सिर इतना बड़ा होता है कि समग्र शरीर का तिहाई भाग सिर में सम्मिलित होता है। इसके सिर में एक विशेष प्रकार का तैल भरा होता है जो हवा खाकर जम जाता है। इसके उदर से अम्बर निकलता है। इसकी वास्तविकता से अनभिज्ञ होने के कारण यह जान पड़ता है कि अम्बर समुद्र में बहता हुआ तरंगों के कारण समुद्र तट से आ लगता था। वहाँ से लोग इसे उठा लाते थे या नाविकों को समुद्र में ही प्राप्त हो जाता था। और इसके सम्बन्ध में विभिन्न विचार व अनुमान स्थिर कर लिए गए थे। इसमें दूसरी चीजों यथा विविध प्रकारके मृत जन्तु सम्मिलित हो जाते होंगे जिनको कतिपय इतिव्या ने अवलोकन किया होगा जैसा कि स्वर्गवासी हकीम उल्वी खाँ के वचन में इसका उल्लेख है।

अधुना भी अम्बर समुद्र में बहता हुआ या समुद्र तटपर पड़ा हुआ मिल जाता है। परन्तु स्पर्म ह्वेल के उदर से प्राप्त होने पर इसकी सत्यता स्पष्ट रूप से स्थापित हो गई है।

स्पर्म ह्वेल का शिकार अधिकतर उसके शिरके तैल और अम्बर के लिए ही किया जाता है। इसका शिकार बड़ी जानजोखूँ का काम होता है। क्योंकि इसका यह एक विशेष स्वभाव वर्णन किया जाता है कि यह दौड़ दौड़ कर जहाज़ों को टक्करें मारती है जिससे कभी कभी वे छिन्न-भिन्न हो जाते हैं।

अम्बर के सम्बन्ध में आयुर्वेदीय मत—बहुत से आधुनिक लेखक अग्निजार को अम्बर मानकर लिखते हैं। परन्तु वास्तविक बात तो यहहै कि अष्टवर्ग की औषधियोंके समान यह भी एक संदिग्ध एवं अन्वेषणीय औषध है। अष्टवर्ग की दवाओं के सम्बन्ध में कम से कम इतना तो निश्चिततया ज्ञात है कि वे वानस्पतिक द्रव्य हैं। परन्तु अग्निजार के सम्बन्ध में यह बात भी सन्देहपूर्ण है।

अस्तु, कोई तो इसको समुद्रफल लिखते हैं और कोई इसको एक समुद्री पौधा वा अब्धिचार बतलाते हैं। कई कोषों में भी अग्निजार के जितने भी पर्याय आए हैं इनके सामने वृक्ष ही लिखा है। अतः उनके मत से अग्निजार एक वानस्पतिक द्रव्य है।

इसके विपरीत रसरत्नसमुच्चयकार के मतानुसार यह एक प्राणिज द्रव्य सिद्ध होता है, यथा वे लिखते हैं—

समुद्रेणाग्निनक्रस्य जरायुर्बहिरुज्झितः।
संशुष्को भानुतापेन सोऽग्निजार इतिस्मृतः॥

अर्थ—अग्निनक्र नामक जीव का जरायु (झर) बाहर आकर समुद्र के किनारे सूर्यताप द्वारा सूख जाता है उसी को अग्निजार कहते हैं।

अम्बर भी एक सामुद्री प्राणिज द्रव्य है, इसी आधार पर किसी किसी ने अग्निजार को अम्बर का पर्याय मान लिया है, ऐसा प्रतीत होता है।

आज अब यह बात भली प्रकार सिद्ध होचुकी है कि अम्बर स्पर्म ह्वेल नामक मत्स्य द्वारा प्राप्त होने वाला एक प्राणिजद्रव्य है। फिर भी इस बात का पता लगाना अत्यन्त कठिन है कि आया हमारे पूर्वाचार्य उक्त मत्स्य को अग्निनक्र नाम से अभिहित करते थे वा नहीं।

चाहे कुछ भी हो, पर इतना तो निश्चय रूप से ज्ञात होता है कि अग्निजार के जो गुणधर्म हमारे प्राचीन शास्त्रों में वर्णित हैं, प्रायः उनसे मिलता जुलता ही वर्णन यूनानी ग्रन्थकारों का है जैसा कि आगे के वर्णन से ज्ञात होगा।

अग्निजार नाम से आज उक्त औषध का प्राप्त करना उतना ही दुरूह है जितना कि बालू से तेल निकालना। अस्तु, यह उचित जान पड़ता है कि जहाँ जहाँ अग्निजार का प्रयोग आया हो वहाँ पर अम्बर का ही उपयोग किया जाए।

प्राप्ति-स्थान तथा इतिहास—स्पर्म ह्वेल

अमरीका के दक्षिण में प्रायः मिलती है । हिन्द-महासागर यहाँ तक कि बंगाल की खाड़ी में भी यह मिलती है किन्तु अत्यन्त छोटी होती है । अम्बर लालसागर, ब्रेजिल और अफरीका के समुद्र तट पर तैरता हुआ पाया जाता है, केवल एक मछली के उदर से ७५० पौं० तक अम्बर पाया जा चुका है । ह्वेल का शिकार भी इसके लिए होता है । इसका व्यवहार ओषधियों में होने के कारण यह नीकोबार (कालेपानी का एक द्वीप) तथा भारत समुद्र के और और टापुओं से आता है । प्राचीन काल में अरब, यूनानी लोग इसे भारतवर्ष से ले जाते थे । जहाँगीर ने इससे राजसिंहासन का सुगंधित किया जाना लिखा है ।

लक्षण—यह अपारदर्शक कभी कभी श्वेत प्रायः श्यामाभायुक्त धूसर या गुलाबी या श्याम वर्ण का होता है ।

नोट (१) साफ पीताभ अम्बर को अंबर अश्हब कहते हैं । यह सर्वोत्कृष्ट श्रेष्ठतर अम्बर होता है । इससे निम्न कोटि का अम्बर अज़्रक़ (फ़िरतक़ी) और इसके बाद श्याम है । जो अम्बर श्वेताभ होता है उसपर छोटे छोटे श्वेत बिन्दु होते हैं । यह **अम्बर खुश्खाशी** कहलाता है और जो अम्बर गोल टुकड़ोंकी शकल में होता है उसका नाम **अम्बर शमामह्** रखते हैं ।

(२) जो अम्बर समुद्र के तरंगों द्वारा समुद्र तट पर आ पड़ता है और उसमें धूल आदि के कण मिल जाते हैं उसको तिब में **अम्बर रमली** कहते हैं । उसको बिना शोधन किए व्यवहार न करना चाहिए । मोमवत् उसकी शुद्धि करनी चाहिए । अथवा उसमें समान भाग मिश्री मिलाकर खरल कर लेने से उसकी शुद्धि होती है ।

परन्तु **रसरत्नसमुच्चयकार** अग्निजार की शुद्धि न करने में निम्न कारण बतलाते हैं—

"तदब्धिक्षार संशुद्धं तस्माच्छुद्धि न हीष्यते ।"

(र० र० स० ३ अ०)

अर्थात्—समुद्रके क्षारमय जलसे शुद्ध ही रहता है । अतः इसके शोधन की आवश्यकता नहीं ।

गंध—कस्तूरीवत् विशेष सुगंधि । इसमें से मीठी मिट्टी जैसी गंध आती है जो अत्यन्त मन-मोहक होती है । सर्व प्रथम जब स्पर्मह्वेल से यह बाहर आता है, तब भूरे रंग का नर्म और दुर्गन्धयुक्त होता है, पर शीघ्र ही वायु लगने पर यह कठिन और नील वर्ण का हो जाता है । ज्यों ज्यों सूखता जाता है त्यों त्यों उत्तम गंध उत्पन्न होती जाती है । और धीरे धीरे यह गंध इतनी बढ़ जाती है, कि दूर से ही अम्बर का बोध करा देती है ।

स्वाद—यह लगभग स्वादरहित होता है ।

परीक्षा—(१) इसको एक शीशी में डालकर कोयले की आग पर रखें । यदि यह सब पिघल जाए और शीशी में तैल की भाँति बहने लगे तो शुद्ध अन्यथा अशुद्ध जानना चाहिए ।

(२) अम्बर को लेकर जरा सा आग में डालें यदि धूम्र सुगन्धियुक्त हो तो उत्तम अन्यथा नकली समझना चाहिए ।

(३) जरा सा अम्बर लेकर चबाएं यदि मुख सुगंध से पूर्ण हो जाए और चबाते समय वह दाँतों में मोम सा लगे तो उत्तम अन्यथा नकली है ।

(४) तोड़ने से यदि अम्बर ठोस हो तो उत्तम और पोला हो तो नकली है ।

(५) यह लघु और कम चिकना होता है और इसकी गंध कस्तूरी की गंध पर ग़ालिब नहीं होती । यह बहुत शीघ्र जलने वाला होता है तथा आँच दिखाते रहने से बिलकुल भाप होकर उड़ जाता है ।

यह उष्ण जल में द्रवीभूत हो जाता है, परन्तु शीतल जल में नहीं होता । यह ईथर, वसा, उड़नशील (अस्थिर) तैल और उष्ण मद्यसार में विलेय होता है । इसपर अम्लों का कुछ भी प्रभाव नहीं होता । सूखने पर अम्बर का विशिष्ट गुरुत्व ·७८० से ·९२६ तक होता है । १४५° फारनहाइट की उत्ताप पर यह पिघल कर पीले रंग के वसामय तरल में परिणत हो जाता है । २१२° फारनहाइट पर श्वेत वाष्प बनकर यह जल जाता है ।

रासायनिक संगठन—

इसमें अम्ब्रीन (ambrein) ८४% प्रतिशत और किञ्चित् भस्म प्रभृति पदार्थ होते हैं।

औषध-निर्माण—अर्क़ अम्बर, अर्क़ गज़र, अर्क़ बहार, अर्क़ हराभरा, अर्क़ ग़ाज़िम, ख़मीरह् गावज़ुबाँ अम्बरी (जवाहर वाला वा जदीद), जवारिश ज़रऊनी अम्बरी बनुस्ख़ा कलाँ, जवाहर मुहरा अम्बरी, मअ़जून कलाँ, मअ़जून नुक़रा, मअ़जून फ़लकसैर, मअ़जून हम्ज अम्बरी उलवीख़ाँ, मुफ़र्रिह् अम्बरी, रोग़न अम्बर, हब्बे अम्बर, हब्बे कीमियाये इश्रत, हब्बे ताऊन अम्बरी।

आयुर्वेदीय मत से अम्बर के गुणधर्म तथा उपयोग—

अग्निजार त्रिदोषघ्न, धनुर्वातादि वातरोगनाशक और पारद का बल बढ़ाने वाला, दीपन एवं जारणकर्म कारक है। यथा—

अग्निजारस्त्रिदोषघ्नो धनुर्वातादि वातनुत्।
बर्धनो रसवीर्यस्य दीपनो जारणस्तथा ॥
(र० रा०सु० ३ अ० ।)

नोट शेष गुणधर्म के लिए देखो—अग्निजार।

यह पक्षाघात, कम्पवात आदि वातरोगनाशक, हृदय रोग, नपुन्सकता, फुप्फुस रोग, शिरोरोग, यकृतरोग, उदररोग, प्लीहरोग, वृक्कीय आदि अनेक रोगनाशक माना गया है। कामाग्निवर्द्धक जितना इसे बताया गया है उतना अन्य किसी औषध को नहीं। प्रायः ऐसी कोई व्याधि नहीं, जिसके लिए आयुर्वेद शास्त्र में यह न कहा गया हो कि अम्बर से उत्तम अन्य औषध नहीं है।

यूनानी एवं नव्यमतानुसार—

प्रकृति—प्रथम कक्षा में उष्ण व रूक्ष है। किसी किसी के मत से २ कक्षा में उष्ण व १कक्षा में रूक्ष अथवा १ कक्षा में उष्ण और २कक्षा में रूक्ष है। **स्वाद**—किंचित् कटु। **गंध**—अत्यंत सुगंधिमय। **हानिकर्त्ता**—आँतोंको और उदर्दजनक (पित्ती उछाल देता है)। **दर्पघ्न**—धनिया, समग़ अरबी, तबाशीर और सूँघने में कपूर। कपूर अंबरकी तेज़ी को कम करता है। इसलिए उसे इसके साथ न रखना चाहिए।

प्रतिनिधि—कस्तूरी तथा केशर समभाग।

मात्रा—२ रत्ती से ४ रत्ती तक (५ से १५ ग्रेन) इं० मे० मे०।

आयुर्वेद में इसकी मात्रा १ रत्ती से ३ रत्ती तक बताई गई है।

नोट—आज कल के मनुष्यों की प्रकृति का विचार करते हुए उपर्युक्त ये सभी मात्राएँ बहुत अधिक प्रतीत होती हैं।

प्रधान गुण—रूह शक्ति तथा बाह्य व अंतःकरण को बलप्रदायक, उत्तेजक तथा आक्षेपहर है।

गुण, कर्म, प्रयोग—

यह हृदय को शक्ति प्रदान करता है तथा ज्ञानेन्द्रिय (पञ्च ज्ञानेन्द्रिय) तथा पञ्चकर्मेन्द्रिय व मस्तिष्क को लाभ पहुँचाता है। क्योंकि इसमें हृद्य व हृदय को बल प्रदान करने का असीम गुण है। इस बात में तीव्रगन्ध इसकी सहायक होती है। इसके सिवा इसमें द्रवीकरण पिच्छिलता (लहेस) और मतानत पाई जाती है। अस्तु, अंबर अपने इन गुणों के समवाय के कारण सम्पूर्ण अर्वाह् के जौहर को शक्ति देता और उनको बढ़ाता है। (नफ़ा०)

अम्बर रूहों का रक्षक और हैवानी (प्राणि), नफ़सानी (मानसिक) और शारीरिक (तब्ई) तीनों शक्तियों को बल प्रदान करता है। चित्तको प्रसन्न करता, शीतल प्रकृतियों के लिए अत्यंत हृद्य और वास्तविक उष्मा तथा बाह्य व अन्तरेंद्रियों को शक्ति देता है। वृद्ध पुरुष के लिए अत्युपयोगी, मास्तिष्क, हार्दिक और यकृत् रोगों को अत्यन्त लाभदायक है। मूर्च्छा व वबा (महामारी) को दूर करता है। रोधोद्घाटक और कामोद्दीपक है। शिश्न पर इसका प्रलेप करने से कामोद्दीपन करता और आनन्द प्रदान करता है।

प्रायः विषोंका अगद और शीत रोगोंको लाभदायक है। पक्षाघात, अर्द्धांगवात, कम्पवात, धनु-

स्तम्भ, अवसन्नता, शिरःशूल तथा अर्द्धावभेदक आदि वात रोगों को लाभप्रद, वेदना तथा वायु का परिहारक और कास, फुफ्फुसस्थ क्षत, हृदय की निर्बलता, मूर्च्छा, आमाशय तथा यकृत् की निर्बलता एवं कामला, जलोदर, आमाशय शूल, प्लीह वेदना और संधि शूल को लाभ पहुँचाता है। म० मु०। बु० मु०।

सार्वांगिक निर्बलता, अपस्मार, आक्षेप और वातनैर्बल्य (Nervous debility.) में इसका प्रयोग किया जाता है। विसंज्ञता एवं उन्माद युक्त तीव्र ज्वर, विसूचिका के कोलैप्स की अवस्था, प्लेग तथा अन्य संक्रामक व्याधियों में भी इसका उपयोग किया जाता है। यह पाक व मअ़्जून रूप में व्यवहृत होता है। इं०मे०मे०।

एलोपैथी चिकित्सा में अम्बर का विशेष व्यवहार रोग निवारणार्थ नहीं होता (वहाँ यह केवल सुगन्धियों में प्रयुक्त होता है)। हाँ! होमियोपैथी में उक्त हेतु इसका प्रचुर उपयोग होता है।

अस्तु, वे स्त्री रोगों यथा योषापस्मार (Hysteria.) या उससे मिलते-जुलते रोगों में अम्बर का विशेष उपयोग करते हैं। उनका कहना है कि उक्त अवस्थाओं में अम्बर शीघ्र ही प्रभाव प्रगट करता है। खिन्नता, बुरे विचार, अनिद्रा, मानसिक अवस्था के कारण दर्शन तथा श्रवणशक्ति का ह्रास आदि योषापस्मार या तत्सम उत्पन्न होने वाली व्याधियों में दृष्टिगत होने वाले कुलक्षणों में अम्बर का बड़ा ही उत्तम प्रभाव प्रत्यक्ष देखा जा सकता है।

विशेष वर्णन के लिए देखिए होमियोपैथिक निघण्टु प्रभृति।

अम्बर amber-इं० एक प्रकारका निर्यास, कहरुबा -फ़ा०, हिं०। देखो—**सक्सीनम** (Succinum.)

अम्बर अश्हब āambar-ashhab-अ० (A kind of amber) एक प्रकार का धूसराभ श्वेत अम्बर। देखो—**अम्बर**।

अम्बर ग्रीस amber-gris-इं०
अम्बरग्रसिया ambra grsea-लें०
} अम्बर।

अम्बरतुश्शिता āambaratushshitá-अ० शीताधिक्य, कठिन शीत, सख़्त जाड़ा।

अम्बरदः ambaradah-सं० पुं० कपास, कार्पास। (Gossypium Indicum) वै० निघ०।

अम्बरबारी ambara-bárí-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] एक क्षुप है। दारुहरिद्रा, दारूहल्द, चित्रा। (Berberis Asiatica.)

अम्बर बारीस ambar-bárísa-यु०, अ० ज़रिश्क,दारुहल्दी दारुहरिद्रा। (Berberis.)

अम्बर बारीसियह् ambar bárísiyah-अ० एक प्रकार का आहार जिसे ज़रिश्कियह् भी कहते हैं।

अम्बरबेद āambar-bed-फ़ा० गुले अबेअ़्, जुअ़्दह् (जादह)-अ०। फुलियुन (Fuliyun) -यु०। पोली जर्मेण्डर (ट्यु क्रियम् पालियम) Poley Germander (Teucrium Polium, *Linn.*)-लें०। (फा० इं० ३ भा०)

तुलसी वर्ग

(*N. O. Labiatæ.*)

उत्पत्ति-स्थान—अरब (जद्दा)।

वानस्पतिक-वर्णन—(भंगरा या कोई और बूटी है)। जुअ़्दह् वस्तुतः शेह् (दरमनह् जौहरी जवायन) की एक जाति है जिसमें शाखाएँ होती हैं। इसके पुष्प पीताभ श्वेत और पत्ते श्वेत पतले तथा लोमश होते हैं। यह लगभग एक बित्ता ऊँचा होता है। इसके शिरों पर बालों का गुच्छा होता है जिनमें बीज भरे होते हैं यह दो प्रकार का होता है—(१) छोटा और (२) बड़ा।

नोट—यद्यपि जुअ़्दह का वर्णन मूजिज़ुल् क़ानून एवं अक़्सराई में विद्यमान है, तो भी वर्तमान नफ़ीसी में इसका वर्णन न था। कदाचित् प्रकाशकीय भूल से रह गया हो।

प्रकृति—छोटा ३ कक्षा में उष्ण और २ कक्षा में रूक्ष है; बड़ा २ कक्षा में उष्ण व रूक्ष है। परन्तु दोनों मूत्र और आर्त्तवप्रवर्त्तक हैं एवं

रोधोद्घाटक तथा उदरीय कृमिघ्न व कृमिनिःसारक हैं। यर्क़ान स्याह (Black jaundice) तथा जलोदर के लिए गुणदायक हैं; परन्तु आमाशय तथा शिर के लिए हानिकर हैं। (नफ़ा०)

रोध उद्घाटक, मूत्रल, कृमिघ्न और बल्य है। (Diosc. iii., 115; Pliny., 21, 60, 84)

अरब निवासी इसको ज्वर-विकारों में प्रयुक्त करते हैं। २॥ तो० उक्त ओषधि को रात्रिभर ठंडे जल में भिगोकर प्रातः काल उसको छानकर सेवन करते हैं। बाल ज्वर में उक्त ओषधि की शरीर में धूनी देते हैं। फा० इं० ३ भा०।

स्वाद तिक्त। गंध—तीव्र।

हानिकर्त्ता—शिरः शूलोत्पादक तथा आमाशय हानिकर है। दर्पघ्न—हमामा आवश्यकतानुसार और सर्द तर वस्तु। किसी किसी के मतसे कश्नीज़ (धान्यक)। प्रतिनिधि—पार्वती पुदीना, शहद, अनार मूलत्वक् और तज। शर्बत की मात्रा—४ मा० से १०॥ मा० तक।

प्रधानगुण—बुद्धि वर्द्धक, रोधोद्घाटक और मूत्र एवं आर्त्तवप्रवर्त्तक।

गुण, कर्म, प्रयोग—इसमें रेचन तथा तिर्याक की शक्ति है। यह सम्पूर्ण अवयव के रोध का उद्घाटक, अख़्लात (दोषों) को द्रवीभूत-कर्त्ता और मूत्र तथा आर्त्तव का प्रवर्त्तक है। इसका क्वाथ बुद्धिको तीव्र करता है और विस्मृति को दूर करता है तथा इस्तिस्क़ाअ् बारिद (शीत जलोदर), यर्क़ान स्याह (Black Jaundice.) एवं श्लेष्मा व वातजन्य ज्वरों को लाभप्रद है। उदरस्थ कृमि निःसारक वायुलयकर्त्ता, मूत्ररोध तथा संधिशूल को लाभप्रद एवं गर्भाशयशोधक और प्लीहा के शोथ का लय कर्त्ता है। इसका अवचूर्णन व्रणपूरक है। नवीन पत्तों का प्रलेप व्रण को स्वच्छकर्त्ता एवं पूरणकर्त्ता है। इसकी धूनी विषैले जानवरों को भगाती है। मधु के साथ इसका अंजन करने से दृष्टि तीव्र होती है। म० अ०। तुह़फ़ा।

यह रक्त शोधक और बिच्छू के विष को दूर करने वाला है। म० मु०।

अम्बरबेल ambarbel—पं० अर्कपुष्पी, बनबेरी—हिं०। सिंगरोटा—पं०, बम्ब०। (Pentatropis spiralis.) मेमो०।

अम्बर माइअ āambar-máiā—फ़ा०
अम्बर साइल āambar-sáil—अ० }
शिलारसः, सिह्लकः—सं०। मिअ़हे साइलह्—फ़ा०। Liquidamber (Styrax praeparatus.)

अम्बर सुगन्धः ambar-sugandhah—सं० पुं० मश्क अम्बर, अम्बर। (Amber Grsea.)

अम्बरहा ambarhá—मास्तुवन्ती। लु० क०।

अम्बरा ambará—सं० स्त्री० कपास, कार्पास। (Gossypium Indicum.)

अम्बरा ambará—सं० स्त्री० आम। (Mango.)

अम्बराक्षी-ची ambarákshí,-chí—सं० स्त्री० अज्ञात।

अम्बरातकः,-रीयः ambarátakah,-ríyah—सं० पुं० अमड़ा, आम्रातक। (Spondias Mangifera.) जटा०।

अम्बरि,-रीषः ambri,-ríshah—सं० पुं०,क्ली०
अम्बरीष ambarísha—हिं० संज्ञा पुं० }
(१) अमड़ा, आम्रातक। (Spondias Mangifera.)। (२) भर्जन पात्र। वह मिट्टी का बर्त्तन जिसमें भड़भूँजा गरम बालू डालकर दाना भूनते हैं। अम०। (३) भाड़। (४) सूर्य्यका नाम। (५) किशोर अर्थात् ग्यारह वर्ष से छोटा बालक। (६) अनुताप। पश्चात्ताप।

अम्बरी ambarí—गारो० आमला। (Phyllanthus Emblica.)

अम्बरीसक ambarísak—हिं० संज्ञा पुं० [सं० अम्बरीष] भाड़। भरसायँ। —डं०।

अम्बल ambal—हिं० स्त्री० (१) मादक वस्तु (Intoxication.)। (२) खट्टा रस।

अम्बल ambal-हिं० पुं० रामतुलसी। (Ocimum gratissimum.) देखो-तुलसी।

अम्बल ambal-ता० कमल। (Nelumbium Speciosum, *Wight.*) फा० इं०।

अम्बलह् ambalah-फ़ा० अम्लिका, अमली, इमली। (Tamarindus Indicus.)

अम्बलपिष्ट ambal-pishṭa-सं० चाङ्गेरी, चूका, खटकल। (Rumex scutatus.)

अम्बली ambalí-हिं० स्त्री० अम्लिका, इमली, अमली। (Tamarindus Indicus.)

अम्बली ambalí-पं० } आमला। (Phyllanthus emblica.)
अम्बलीय ambalíya-अ० }

अम्बलु ambalu-पं० मोवा, बकलवा। मे० मो०।

अम्बलोना ambaloná-हिं० स्त्री० खटकल, चाङ्गेरी। (Rumex scutatus.)

अम्बलोनान ambalonána-हिं० पुं० एक भारतीय वृक्ष का फल है जिसका स्वाद खट्टा होता है।

अम्बलोलवा ambalolavá-हिं० पुं० गिदड़-द्राक-पं०। (Vitis trifolia.)

अम्बलोवान ambalována-हिं० अज्ञात।

अम्बवटी ambavaṭí-हिं० स्त्री० खटकल, चूका, चाङ्गेरी। (Rumex scutatus.)

अम्बष्टः,-ष्ठः ambashṭah,-ṭhah-सं० पुं० (१) देश विशेष। पंजाब के मध्य भाग का पुराना नाम। (२) वैश्य स्त्री व ब्राह्मण पुरुषसे उत्पन्न एक जाति। इस जाति के लोग चिकित्सक होते थे। (३) अंबष्ठ देशमें बसने वाला मनुष्य। (४) महावत। हाथीवान। फ़ीलवान।

अम्बष्ट(ष्ठ)का,-की ambashṭaká,-kí }
अम्बष्टा (ष्ठा),-ष्टि(ष्ठि)का ambashṭá,-shṭiká }
-सं० स्त्री० (१) एक लता का नाम। पाढ़ा। आकनादी लता। पाठा। (Cissampelas pareira, *Linn.*) रा० नि० व० ६। पराग्रष्-हिमा०। (२) भार्ङ्गी, भार्गी। (Clerodendron siphonanthus) र० मा०। (३) लाल(दम)णा मूल, श्वेत कणकारी। भैष० स्त्रीरोग-चि० पुष्यानुग चूर्ण। (४) अम्ल लोणी, आमरूल, चांगेरी। (Rumex scutatus) रा० नि० व० ४। भा० पू० १ भा०। (५) यूथिका, जूही। (Jasminum auriculatum) प० मु०। (६) मयूर-शिखा। (Actinopteris dichotoma.) वा०सू० प्रियंग्वादि। "अम्बष्ठामधुकं नमस्कारी"। (७) आम्रातक, अमड़ा। (Spondias mangifera.) क्षुद्र क्षुप विशेष। मोइआ, मोहुया-हिं०। माचिका और साकुरुण्ड-पश्चिम०। अम्बाड़ा, अम्बरी-द०। पुदिना-बं०।

पर्य्याय—वालिका, वाला, शठाम्बा, अम्बालिका, अम्बिका, अम्बा, माचिका, दृढवल्का, मयूरिका, गंधपत्री, चित्रपुष्पी, श्रेयसी, सुखवाचिका, छिन्नपत्री, भूरिमल्ली-सं०। सु० सू० ३८ अ०। रस० र० पुष्यानुग चूर्ण।

गुण—कसैली, अम्ल, कफघ्न, रुचिकारी तथा दीपन है और कंठ रोग एवं वात रोगनाशक है। रा० नि० व० ४।

अम्बष्ठादिः ambashṭhádih-सं० पुं० पाठादि गण विशेष यथा—अम्बष्ठा, धातकी पुष्प, समंगा, कट्वंग, मधुक, बिल्वपेशी, रोध्र, सावररोध्र, पलाश, नन्दी वृक्षऔर पद्मकेशर। गुण-संधानीय, पित्त में हितकारक, व्रण (रोपण) पूरक और पक्वातिसार नाशक है। सु० सू० ३८ अ०।

अम्बष्ठी ambashṭhí-सं० स्त्री० (१) कुटकी भेद, कटुकी। A kind of (Picrorrhiza kurroa)। यथा-"रक्तकाण्डेरुहाम्बष्ठी कटुका चापरा स्मृता।" द्रव्याभि०। (२) इन्द्रायण। (Citrullus colocynthis.)

अम्बह् ambah-फ़ा० आम। (Mangifera Indica.)

अम्बह हल्दी ambah-haldí-हिं० स्त्री० अम्बाहल्दी। आम्रहरिद्रा। (Curcuma amada.)

अम्बहे हिन्दी ambahe-hindí-फ़ा०, अ० अरण्डखर्बूजा, पपैया। (Carica papaya.)

अम्बा ambá-हिं० संज्ञा पुं० आम। (Mangifera indica.)

अम्बा (लिका) ambá,-liká-सं० स्त्री० (१) अम्बष्ठा, पाठा, निर्विषी। (Stephania hernandifolia) रा० नि० व० ४। (२) मोइया, माचिका (Solanum nigrum)। (३) आम्रातक, अम्बाडा। (Spondias mangifera).

अम्बाड़म् ambáḍam-सं० क्ली० अमड़ा, अम्बाड़ा, आम्रातक। (Spondias mangifera.)

अम्बाड़ा ambáḍá } -हिं० पुं०, स्त्री० (१)
अम्बाड़ी ambáḍí } अमड़ा, आम्रातक। (२) -बम्ब० पटसन -द०, म०। (Hibiscus cannabinus, *Linn.*) फॉ० इं०। -हिं० चुक्र, शतबेधी।

अम्बाड़ी की भाजी ambáḍí-kí-bhájí मेष्टा-बं०। (Hibiscus sabdariffa) पालो साग-हिं०। इं० हैं० गा०।

अम्बानुझाड़ ambánu-jháḍa-गु० आम का पेड़। (Mango tree)

अम्बापुरी ambá-purí-बम्ब० आम का पेड़। (Mangifera Indica.) मे० मो०।

अम्बापोली ambápolí-मह०, हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० आम्र=आम, प्रा० अब+सं० पौलि= पोतला, रोटी] आम्रावर्त्त-सं०। अमरस, अमावट-हिं०। फा० इं०। See-Amávata.

अम्बारी ambárí-हिं० स्त्री० अमड़ा, आम्रातक। (Spondias Mangifera.)

अम्बारी ambárí-द० (Hibiscus cannabinus.) पटसन, मेष्टपात-बं०। सन-हिं०। गोगुंकुरु-ते०। पलङ्गु-ता०। डांड़े कुद्रम-सन्ता०। कनरिया-उड़ीसा। कुद्रम-बिहार। पिण्डिक गिडा -कना०। नील-सं०। इं० मे० प्लां०।

अम्बारीक़न ambáríqan-ख़ुन्सा। लु० क०। See-Khunsá.

अम्बाल ambála-गु० (१) आमला। -फ़ा० (२) इमली। अम्लिका।

अम्बालम ambálam-मल० } आम्रातक,
अम्बालमु ambálamu-ते० } अमड़ा, अम्बाड़ा। (Spondias mangifera.) इं० मे० मे०।

अम्बालस ambálasa-यू० अंगूरलता।

अम्बालस अग्रिया ambálasa-aghriyá-यू० जंगली शलगम या जंगली अंगूर का वृक्ष।

अम्बालस मालिया ambálasa-máliyá-यू० फ़ाशरस्तीन। See-Fásharastína.

अम्बालस लूक़ा ambálasa-lúqá-यू० फ़ाशरा। (Bryonia scabrella.)

अम्बालिका ambáliká-सं० स्त्री० (१) देखो—अम्बा। -हिं० स्त्री० (२) मा, माता, जननी। (३) पाण्डुराज की माता।

अम्बासीस ambásísa-यू० अनाग़ालुसके समान प्रभावशाली एक ओषधि है।

अम्बाहलद ambáhalada-को० }
अम्बा(बे)हल्दी ambá(be)haldí-हिं०,मह० } कर्पूरहरिद्रा, वनहरिद्रा। (Curcuma aromatica, *Salisb.*)

अम्बा हिन्दी ambá-hindí-अ०, फ़ा० अरण्ड-ख़रबूज़ा, पपीता, विलायती रेंड। (Carica papaya.) इं० मे० मे०।

अम्बिका ambiká-सं० स्त्री० } (१)
अंबिका ambiká-हिं० संज्ञा स्त्री० } अम्बष्ठा, पाठा। (Cissampelas hexandra.) भा० पू० १ भा०। (२) मायाफल वृक्ष-सं०। मयनफल-हिं०। (Randia dumetorum, *Lam.*) मद० व० ४। (३) कटुकी, कुटकी। (Picrorrhiza kurroa.) श० च०। -हिं० स्त्री०(४)माता, माँ। (५) दुर्गा, भगवती, भवानी, देवी। (A name of Bhavání wife of ṣhiva.)

अम्बिया ambiyá-हिं० स्त्री० अँबिया, अमिया, टिकोरा, छोटा आम। (A small unripe mango.)

अम्बिल ambila-हिं० पुं० एक आहार है। यह धोए हुए चावल या छिलका उतारे हुए ज्वार को

पीसकर उसमें खट्टा छाछ मिलाकर धूप में रखते हैं कि खट्टा हो जाए। फिर लवण योजित कर और छाछ डालकर तैयार करते हैं। यह शीतल आहार है।

अम्बीतून ambítúna–यू० शतपुष्पा, सोया, सोवा। (Peucedanum graveolens, Benth.)

अम्बीबूटी ambí-búṭí–हिं० स्त्री० तिनपतिया, चाङ्गेरी। (Rumex scutatus.)

अम्बु ambu–सं० क्ली०
अंबु anbu–हिं० संज्ञा पुं० } (१) जल। (Water.) रा० नि० व० १४। (२) बालक, सुगन्धबाला। (Pavonia odorata.) च० द० ज्वरातिसार–चि०। "किराताम्बु यवाम-कम्।" भैष० शोथ–चि० पुनर्णवा तैल।

अम्बुक ambuka–पं० मलक, बिम्माढ़ी। (Diospyros lotus, Linn.) मे० मो०।

अम्बुकः ambukah–सं० पुं० (१) श्वेतार्क मन्दार। (२) रक्तैरण्ड।

अम्बुकण ambukaṇa–हिं० पुं० ओस, तुषार, शीत। (Dew.)

अम्बुकणा ambu-kaṇá सं० स्त्री० जल-पिप्पली। (Lippia nodiflora).

अम्बुकण्टकः ambu-kaṇṭakah–सं० पुं० जल जन्तु विशेष, नक्र, ग्राह, मगर। (An alligator.) त्रिका०।

अम्बुकन्दः ambu-kandah–सं० पुं० शृङ्गाटक, सिंघाड़ा। (Trapa bispinosa.) वै० निघ०।

अम्बुकिरातः,-टः ambu-kirátah,-ṭah–सं० पुं० नक्र, ग्राह। (An alligator.) त्रिका०।

अम्बुकोशः ambu-kíshah–सं० पुं० (१) गोधा। गोह (–ही)। (A lizard, a guana.)। (२) शिशुमार, सेकची। त्रिका०। See–shishumára.

अम्बुकुक्कुटी,-टिका ambu-kukkuṭí,-ṭiká –सं० स्त्री० जल कुक्कुटी, जल मुर्गी, मुर्गाबी –हिं०। पान कउड़ी–बं०। पान कोंबड़ी–म०। (A water-hen, diver)। देखो—प्लवः।

अम्बुकूर्मः ambu-kúrmmah–सं० पुं० गोधा। (A guana.) वै० निघ०।

अम्बुकृष्णा ambu-krishṇá–सं० स्त्री० जल-पिप्पली, जल पीपल–हिं०। काँचड़ा दाम्–बं०। वै० निघ०। See–Jala-pippalí.

अम्बुकेशरः ambu-keṣharah–सं० पुं० बीजपूर, छोलंगनेबू, विजौरा नीबू–हिं०, सं०। लेबू–बं०। (Citrus limonum.) र० सा० सं०।

अम्बुचरः ambu-charah–सं० पुं० (१) जलचर (Aquatic.)। (२) कच्छट, गज-पीपल, गजपिप्पली। (Scindapsus officinalis.) वै० निघ०।

अम्बुचामरम् ambu-chámaram–सं० क्ली० शैवाल–सं०। सेवार–हिं०। (Sea-weed.) जटा०।

अम्बुचारिणी ambu-chárịní–सं० स्त्री० स्थल पद्मिनी, थल पद्म। (See–Sthala padminí.) वै० निघ०।

अम्बुजः ambujah सं० पुं०
अम्बुज ambuja–हिं० संज्ञा पुं० }
(१) पानी के किनारे होने वाला एक पेड़। हिज्जल, समुद्रफल, ईजड़, पनिहा। (Eugenia acutangula.) अम०। (२) मत्स्य आदि। (Piscis.) भा०। (३) जलवेतस, जल-बेंत। (४) कच्छट, गजपीपल, गजपिप्पली। (Scindapsus officinalis) वै० निघ०। –त्रि० (५) जलजातमात्र, सम्पूर्ण जलोद्भूत पदार्थ, जल से उत्पन्न वस्तु (Aquatic.)। –क्ली०, हिं० पुं० (६) कमल, पद्म, अम्भोज। The lotus (Nymphæa nelumbo) मे० जत्रिकं। (७) बेंत। (८) वज्र। (९) शंख। (१०) ब्रह्मा।

अम्बुजन्म ambujanma–हिं० पुं० पद्म, कमल, पंकज। (The lotus.).

अम्बुजा ambujá-सं० स्त्री० अप्रगंधक। कुत्त-हिं०। अम्बुली-म०। कपूर-बं०। माङ्ग-नारी-मल०। (Limnophila gratioloides. *Br.*) फा० इं० ३ भा०।

अम्बुजामलकी ambujá-malakí-सं० स्त्री० पानीयामलक। (Flacourtia cataphracta.)

अम्बुटः ambuṭah-सं० पुं० अश्मन्तक वृक्ष। आवुटा। अ(-ा)पटा-महा०। रा० नि० व० ६। See-Ashmantakah.

अम्बुटी ambuṭí-बम्ब० चाङ्गेरी, चूका। (Oxalis corniculata, *Linn.*) फा० इं० १ भा०।

अम्बुतालः ambutálah-सं० पुं० शैवाल। सेवार-हिं०। (Sea-weed.) त्रिका०।

अम्बुदः ambu-dah-सं० पुं० मुस्ता, मुस्तक, मोथा। (Cyperus rotundus, *Linn.*) सि० यो० कामला चि० मूर्व्वाद्यतं वृन्द। "पटोलाम्बुदद्दारुभिः।"

अम्बुधरः ambudharah-सं० पुं० नागर-मुस्ता, भद्रमुस्ता, नागरमोथा। (Cyperus pertenuis.) वं० निघ०।

अम्बुधिः ambudhih-सं० पुं० सागर, समुद्र, सिन्धु, जलधि। (A sea.)

अम्बुधिफेनः ambudhi-phenah-सं० पुं० समुद्रफेन। Os sepie (Cuttle fish bone.) भा०।

अम्बुधिश्रवा: ambudhi-ṣhraváh-सं० स्त्री० ग्वारपाठा, घीकुँआर, घृतकुमारी। (Aloe barbadensis.)। कोड़फल-म०। रा० नि० व० ५।

अम्बुनाम ambunáma-सं० क्लो० ह्रीवेर, सुगंधबाला। (Pavonia odorata, *Willd.*) भा०। बालक।

अम्बुनाली ambunálí-सं० स्त्री० (Cerebral aqueduct.)

अम्बुनियामिका ambu-niyámiká-सं० स्त्री० (Amnion.) गर्भकला, श्रवामध्यावरण।

अम्बुपः ambupah-सं० पुं०
अम्बुप anbupa-हिं० संज्ञा पुं० } चक्रमर्द, चकवड़, चकौंड़ का पौधा। (Cassia tora) चाकुन्द (वाँ) श०। (२) कच्छट, गजपिप्पली। (Scindapsus officinalis) के०।

अम्बुपटलम् ambupaṭalam—सं० क्लो० (Aqueous humour.) जलीय पटल।

अम्बुपत्रा (पत्रिका), पत्री ambupatrá,-patriká,-patrí सं० स्त्री० उच्चटा, गुञ्जा, घुँघची। (Abrus precatorius.) र० मा०।

अम्बुपिप्पली ambu-pippalí—सं० स्त्री० जलपिप्पली। काँचड़ा घास-बं०। बुकन-हिं०। (Lippia nodiflora.)

अम्बुप्रसादः ambuprasádah
अम्बुप्रसादकः ambu-prasádakah
अम्बुप्रसादनः ambu-prasádanah } सं० पुं० निर्मली-फल वृक्ष, निर्मली का पौधा। (Strychnos potatorum, Linn.) रा० नि० व० ११। देखो-कतकः।

अम्बुप्रसादन फलम् ambu-prasádana-phalam-सं० क्लो० कतक, निर्मलीफल। Strychnos potatorum (fruit of-) वं० निघ०।

अम्बुफलम् ambu-phalam-सं० क्लो० शृङ्गाटक, सिंघाड़ा। (Trapa Bispinosa.)

अम्बुबाह ambu-báha-हिं० पुं० मेघ, वारिद, बादल। (Cloud.)

अम्बुबैया ambubaia-सिरि० (१) कासनी। Endive seeds (Cichorium intybus, *Linn.*) म्राइ०।

नोट—अम्बुबया सिरिया भाषा का शब्द है; किन्तु फ़ारसी ग्रन्थों में इसके निम्न रूढ़ार्थ पाए जाते हैं, यथा—अम्बुई (Ambui) अर्थात् गंध व बया अर्थात् पूर्ण यानी गंधपूर्ण (Allurements.)। देखो-कासनी। फा० इं० २ भा०।

अम्बुबोइया ambu-boiyá–फा० कासनी। (Endive seeds.) इं० मे० मे०।

अम्बुभृत् ambu-bhrit–सं० पुं० (१) मेघ, बादल (Cloud.)। (२) मुस्तक, मोथा। (Cyperus rotundus) अ०। (३) सागर, समुद्र। (Sea.) के०।

अम्बुमयूरकः ambu-mayúrakah–सं० पुं० जलापामार्ग, जल चिर्चिटा। वै० निघ०।

अम्बुमात्रः ambu-mátrah
अम्बुमात्रजः ambu-mátrajah } –सं० पुं० शम्बूक, घोंघा। A snail (Cochlea helix).

अम्बुमुक्,–च् ambu-muk,--much- सं० पुं० (१) मुस्तक, मोथा (Cyperus rotundus.)। (२) मेघ, बादल। (cloud.) के०।

अम्बुयष्टिका ambuyashṭiká-सं० स्त्री० भार्गी, भारंगी। (Clerodendron siphonanthus.) र० मा०। बामन हाटी–बं०।

अम्बुरः amburah–सं० पुं० द्वाराधः काष्ठ। गोवराट् (कां)।

अम्बुरु (रो) हः amburu,--ro-hah-सं० पुं०, क्ली० पद्म, कमल। (Nymphaea nelumbo.) रा०।

अम्बुरुहा amburuhá–सं० स्त्री० पद्मिनी, स्थल पद्मिनी। वै० निघ०। (See-sthala-padminí.)

अम्बुल ambula–पं० आमला। (Phyllanthus emblica-) मेमो०।

अम्बुली ambulí–महo अम्बुजा, आम्रगंधक। (Limnophila gratioloides, Br.) फा० इं० ३ भा०।

अम्बुवल्लिका ambu-vallikà–सं० स्त्री० कारवेल्ली, करेली। (Momordica charantia-) वै० निघ०।

अम्बुवल्ली ambu-vallí–सं० स्त्री० (१) क्षुद्र कारवेल्ली, छोटी करेला (Momordica charantia.)। (२) जल पिप्पली। (Lippia nodiflora-) वै० निघ०।

अम्बुवारिणी ambu-váriní–सं० स्त्री० स्थल कमलिनी, स्थल पद्मिनी। वै० निघ०।

अम्बुवासिनी ambu-vásini
अम्बुवासी ambu-vásí } –सं० स्त्री० रक्त पाटला, पाढ़ल।

अम्बुवाहः ambu-váhah–सं० पुं० मुस्तक, मोथा, नागरमोथा। (Cyperus rotundus.) त्रि० श० क० वल्ली प्रदर-चि०। (२) बादल। मेघ।

अम्बुवेतसः ambu-vetasah—सं० पुं० जलवेतस। एक प्रकारकी बेंत जो पानी में होती है। बड़ी बेंत। लह्वाला-मह०। पर्याय—परिव्याधः, विदुलः, नादेयी (अ०)।

अम्बुशिरीषिका ambu-shiríshiká
अम्बुशिरीषी ambu-shiríshí } –सं० स्त्री० जल शिरीष, ढाढोन, टिटिनी। वै० निघ०।

अम्बुशुक्तिः ambu-shuktih–सं० स्त्री० जलशुक्ति, जल सीपी। जलशिंपी –मह०। झिनुक–बं०। (A snail.) वै० निघ०।

अम्बुसर्पिणी ambu-sarpiṇí—सं० स्त्री० जलायुका, जलौकस। जोंक –हिं०, बं०। Leech (Hirudo).

अम्बुसादनम् ambu-sádanam–सं० क्ली० निर्म्मली बीज, कतक। (Strychnos potatorum-) वै० निघ।

अम्बुसारा ambu-sárá–सं० स्त्री० कदली वृक्ष। (Musa sapientum-) भा० पू० १ भा० फ० व०।

अम्बुसाह्वः ambu-sáhvah–सं० पुं० कुन्द पुष्प क्षुप। (Jasminum multiflorum.) वै० निघ०।

अम्बुसीमा ambu-símá–अ० अञ्जनहारी, घेरी, शई रह। स्टाइ (Stye), ब्लीफेराइटिस (Blepharitis)–इं०।

अम्बूकृत् ambú-krit–सं० त्रि० ऐसा वचन जिसमें थूक निकले। निष्ठीवन युक्त वचन।

अम्बूकः ambúkah–सं० पुं० लकुच वृक्ष।

बड़हर-हिं० । (Artocarpus lakoocha.)-कं० ।

अम्बूब मक्की ambúba-makkí-अ० बुस्तान अफ़रोज़ ।

अम्बूबुर्राई ambúburráái-अ० सदाबहार, हयुल्आलम ।

अम्बूबुल मलिक ambú bul-malik—अ० इसके लक्षण में मतभेद है। कोई कोई हयुल्आलम को तथा कोई कल्गाह या मद्दुरा को कहते हैं।

अम्बूरस्मा ambúrasmá-यू० सफेद कुटकी । Picrorrhiza kurroa (The white var.)

अम्बूस ambús—यू० नान्खाह, अजवाइन । (Ptychotis ajowan)

अम्बूस मारीस ambúsa-márísa—यू० काली कुटकी । Picrorrhiza kurroa (The black variety of-).

अम्बेलिफ़ेरी umbelliferæ-लें० छत्र या छत्री (-त्रिका) वर्ग ।

अम्बेलो उघ्रिया am belo-ughriyá -अ० अज्ञात ।

अम्बे हल्दी ambe haldí-इ० अम्बा-हलदी, वनहरिद्रा । (Curcuma aromatica, Salisb.) स० फा० इं० ।

अम्बो ambo-गु० आम, आम्र । (Mangifera Indica.) फा० इं० १ भा० ।

अम्बोलटी ambolaṭí-बं० आमला । (Phyllanthus emblica.)

अम्ब्लोगिना पॉलिगोनॉइडीस amblogina polygonoides, Rafin.)-लें० बनतण्डुलीय, जंगली चौलाई । मेमो० ।

अम्ब्लोगिना सीनीगेलेन्सिस amblogina senegalensis, *Lamk.*)-लें० जंगली मेंहदी । दादमारी । मेमो० ।

अम्बोसी ambosí-बम्ब० (१) आम्रपेशी, आम की गुठली । (Phyllanthus emblicá) फा० इं० १ भा० । -बं० (२)आ(अ)मचूर । -बम्ब० (३) आम । (Mangifera Indica.) मेमो० । फा० इं० १ भा० । इं० मे० मे० ।

अम्बौटी ambouṭí-हिं० स्त्री० चांगेरी, चूका । आमरूल-बं० । (Rumex scutatus)

अम्ब्री ambrí-मह० नकछिकनी, छिक्किा । (Dragea volubilis, *Benth.*) फा० इं० २ भा० ।

अम्भः ambhah-सं०, हिं० पुं० (१) अम्बु, जल, पानी । (Water.) रा० नि० व० १४ । (२) बाल, सुगंधबाला । (Pavonia odorata.) अम० ।

अम्भः पा ambhah-pá-सं० पुं० चातक पक्षी। A kind of cuckoo (cuculus melano-leucus.)

अम्भः सारः ambhah-sárah-सं० पुं० मुक्ता, मोती । (Pearl.) त्रै० निघ० ।

अम्भः सूः ambhah,-súh-सं० स्त्री० (१) शम्बूक, घोंघा (A snail.) । (२) धूम, धुँआ । धुके-मह० । (smoke.) हे० ।(३) भाप, वाष्प । (Vapour.)

अम्भसोज ambha-soja-हिं० पुं० (१) कमल, पद्म, अम्बुज (A lotus.) । (२) चन्द्र (Moon.) । (३) सारस पक्षी (A stork.)

अम्भसोद ambhasoda-हिं०पुं० जलद, अभ्र, मेघ ।(Cloud)

अम्भसोधर ambhaso-dhara-हिं० पुं० (१) जलधर, मेघ (Cloud.) । (२) समुद्र । (A sea.)

अम्भसोधि ambhasodhi } -हिं०पुं०
अम्भसोनिधि ambhasonidhi } समुद्र, सागर, जलधि । (A sea.)

अम्भेडा ambhedo -गु० अम्बाड़ा । आम्रातकः । (Spondias mangifera)

अम्भोजम् ambhojam-सं० क्ली० } (१)
अंभोज anbhoja-हिं० संज्ञा पुं० } पद्म, कमल । (Nymphœa nelumbo.)

(२) वारिवेतस, जलवेतस। (See-Jalavetas) -पुं० (३) पुष्कराह्वय, पुष्करमूल (The root of Alpotaxis auriculata.)। (४) सारस पक्षी। (A stork.) कै०। (५) कपूर। (६) शंख। (७) चन्द्रमा।

वि० जल से उत्पन्न।

अम्भोजनालः ambhoja-nálah-सं० पुं० पद्मनाल, कमलनाल, कमलकी डण्डी। (Root stock of nymphœa lotus.) वै० निघ०।

अम्भोजनी ambhojaní -सं० स्त्री०
अम्भोजिनी ambhojiní (१) पद्मलता, कमल का पौधा। कमलिनी। पद्मिनी। (२) कमलों का समूह। (३) वह स्थान जहाँ पर बहुत से कमल हों।

अम्भोजा ambhojá-सं० स्त्री० यष्टिमधु वल्ली, मुलेठी। (Glycyrrhiza Glabra.) वै० निघ०।

अम्भोदः ambhodah-सं० पुं० (१)
अंभोद anbhoda हिं० संज्ञा पुं० भद्रमुस्ता, नागरमोथा। (Cyperus Rotundus.) रा० नि० व० ६। च० द० यक्ष्म-चि० एलादिमन्थ। (२) प्रपौण्डरीक। (Root stock of nymphœa lotus.) प० मु०। (३) बादल। -क्ली० (४) कांस्य, काँसा। (Bronze.)

वि० जो पानी दे।

अम्भोधरः ambho-dharah-सं० पुं० (१) मुस्तक, मोथा। (Cyperus Rotundus.) (२) मेघ (Cloud.)। (३) समुद्र। (A sea.) शब्द० र०।

अम्भोधिपल्लवः ambhodhi-pallavah
अम्भोधिवल्लभः ambhodhi-vallabhah -सं० पुं० प्रवाल, मूँगा। (Coral.) रा० नि० व० १३।

अम्भोमुक् ambhomuk-सं० पुं० प्रवाल, मूँगा। (Coral.)

अम्भोरुहम् ambho-ruham-सं० क्ली० (१) पद्म, कमल। (Nymphœa nelumbo.) च० द० र० पि० चि०। -पुं० (२) सारस पक्षी। (The Crane.) अ०।

अम्भोरुहकेशरम् ambhoruha-kesharam -सं० क्ली० पद्मकेशर। (See-Padma-keshar.) च० द० र० पि० चि०।

अम्मआह् ammaāah -अ० शिथिल
अम्मआ ammaā विचार, निर्बुद्धि, जो प्रत्येक के आधीन हो जाए।

अम्मरस ammarasa-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अमरसर] अमृतसर का कबूतर। एक कबूतर जिसका सारा शरीर सफेद और कण्ठ काला होता है।

अम्मा ammá-हिं० स्त्री० माता, माँ। (Mother.)

अम्मी ammi-यू०, इं०
अम्मी कॉप्टिकम् ammi copticum-ले०
अम्मी डी' इण्डी ammi d' inde-फ्रां०
अम्मी पर्प्युसिलम ammi perpusillum, *Lobd.*-ले०

अजवाइन। (Carum copticum, Benth.) फा० इं० २ भा०।

अम्मुग़ीलाँ ammughílán -अ० कीकर,
मुग़ीलाँ mughílan बबूल, बर्बुर। Acacia Arabica, *Willd.* (Babool tree) स० फा० इं०। मु० आ०। म० अ०।

अम्मेनिया सिनेगलेंसिस ammania senegelensis, *Lamb.*-ले० दादमारी वर्ग।

उत्पत्ति स्थान—पञ्जाब के मैदान तथा उत्तर-पश्चिम हिन्दुस्तान।

उपयोग—फोस्काजनक प्रभाव हेतु। इं० मे० प्लां०।

अम्या āamyá-अ० अंधी स्त्री। यह अअ़्मा का स्त्री लिंग है।

अम्युल् अल्वान āamyul-alván-अ० रंगों का अंधापन। यह एक प्रकारका विकार है जिसमें

रोगी रंगों का, विशेष कर जब कि उनको दूरी से देखे तो, एक दूसरे में भेद नहीं कर सकता।
क्रोमैटाप्सिया (Chromatopsia), कलर ब्लाइण्डनेस (Colour Blindness.)

अम्यूलू फ़ारास amyúlú-fárás-रू० रामतुलसी। (Ocimum gratissimum.)

अम्यूस amyúsa-यू० अजवाइन, नान्ख़ाह। (Carum copticum.)

अम्रः amrah-सं० पुं० (१) आम्रवृक्ष, आम। (Mangifera indica) रा० नि०। (२) माचिका, मांइ(इु)या। पुदिना-बं०। (३) अम्लवेतस। (Rumex vesicarius) रा० नि०।

अम्रम् amram-सं० क्ली० आम का फल। Mangifera indica (The fruit of-)

अम्रगंध हरिद्रा amragandha-haridrá -सं० स्त्री० आम्रहरिद्रा, अम्बा हल्दी, आम हल्दी। आमहलुद-बं०। (Curcuma reclinata).

अम्रत् amrata-अ० वह मनुष्य जिसके भँव (भ्रू) के रोम गिर गए हों। जिसकी डाढ़ी घनी न हो अर्थात् छतरी डाढ़ी वाला।

अम्रत amrat-मल० गुडूची, गुरुच, गिलोय। (Tinospora cordifolia)

अम्रत amrat-हिं० पुं० लाल सफ़री आम, लाल अमरूद। (Psidium Guava, Var. *P.*) इं० मे० मे०।

अम्रतवल्ली amrata-valli-कना० गुडूची, गुरुच, गिलोय, अमृतवल्ली। (Tinospora cordifolia).

अम्रद amrad-अ० श्मश्रुहीन, डाढ़ी रहित, जिसके अभी डाढ़ी मूँछ न निकले हों। बियर्डलेस (Beardless.)-इं०।

अम्रदपरस्त amrad-parast-अ० लूती, बच्चा बाज़। पेडॅरेस्ट (Pederest.)-इं०।

अम्रवेतसः amra-vetasah-सं० पुं० अम्लवेतस। (Rumex vesicarius.)

अम्रसारः amra-sárah-सं० पुं० अम्लवेतस। (Rumex vesicarius.) रा० नि०।

अम्रा amrá-हिं० पुं० आम्रातक, अम्बाड़ा। (Hogplum).

अम्राक़ amráq-यू० मांस रस, शोरबा। (Soup.)।

अम्राज़ amráz-अ० (ब० व०) मर्ज़ (ए० व०) नाख़ुशी, दुःख, दर्द, बीमारियाँ। रोग, व्याधि, विकार-हिं०। डिज़ीज़ (Disease) -इं०। देखो—मर्ज़।

अम्राज़ असि़य्यह् amráz-āaṣriyyah-अ० वे रोग जिनमें शीत के कारण मवाद बन्द होकर ठिर जाए।

अम्राज़ अस्लियह् amráz-aṣliyah-
अम्राज़ ज़ातियह् amráz-zátiyah
अ० असली बीमारियाँ, जाती बीमारियाँ, वे रोग जो स्वतः उत्पन्न हों अर्थात् अन्य रोगों के आधीन न हों या उनकी उपस्थिति के कारण न उत्पन्न हों। ईडिओपैथिक डिज़ीज़ेज़ (Idiopathic diseases)—इं०।

अम्राज़ आम्मह् amráz-āámmah-अ० व्यापक रोग, सार्वांगिक रोग, वे रोग जो सम्पूर्ण शरीर में एक समान उत्पन्न हों, जैसे-ज्वर या रक्ताल्पता आदि। जेनरल डिज़ीज़ेज़ (General Diseases)—इं०।

अम्राज़ इन्हिलाल फ़र्द amráz-inhilál-fard -अ० देखो—अम्राज़ तफ़र्रुक़ुल् इत्तसाल।

अम्राज़ औइयह् amráz-ouāiyah—अ० अम्राज़ तजावीफ़, वे रोग जिनमें शारीरिक स्रोत संकुचित अथवा विस्तृत हो जाते हैं। वैस्क्युलर डिज़ीज़ेज़ (Vascular Diseases.) -इं०।

अम्राज़ क़ल्ब amráz-qalb-अ० हार्दिक रोग, हृद्रोग। हार्ट डिज़ीज़ेज़ (Heart Diseases) -इं०।

अम्राज़ कुल्लिय्यह् amráz-kulliyyah-अ० कष्टसाध्य, दुःसाध्य। (Difficult to cure)

अम्राज़ ख़नाज़ीरिय्यह् amráz-khanázíriyyah-अ० कण्ठमाला, गलगण्ड, गण्डमाला। स्क्रॉफ़्युलस डिज़ीज़ेज़ (Scrofulous Diseases)-इं०।

अम्राज़ खास्सह amráz-khāṣṣah–अ० खास खास रोग, स्थानिक रोग, वे रोग जो खास खास अवयवों में ही उत्पन्न हुआ करते हैं, जैसे–बधिरता कान तथा अंधता आँख में ही उत्पन्न होती है। लोकल डिज़ीज़ेज़ (Local Diseases.)–इं० ।

अम्राज़ खिल्क़त amráz-khilqat–अ० वे रोग जिनमें विकृतावयव की रूपाकृति परिवर्तित हो जाए।

अम्राज़ ग़ैर मुसल्लमह् amráz-ghair-musallamah–अ० वे रोग जिनके उचित तथा उपयुक्त उपाय में कोई बात रोधक हो।

नोट—यह शब्द अम्राज़ मुसल्लमह् का विपरीतार्थक है।

अम्राज़ जुज़इय्यह amráz-juziyyah–अ० सुखसाध्य, वे रोग जिनकी चिकित्सा आसान हो। (Easy to cure.)

अम्राज़ ज़ुह्रिय्यह् amráz-zuhriyyah–अ० अम्राज़ ज़ुह्रह्, ज़ुह्रह् की बीमारियाँ। इसका संकेत उपदंश व सूज़ाक की ओर है। काम व्याधि, जननेन्द्रिय सम्बन्धी रोग, गुप्तरोग। वेनरियल डिज़ीज़ेज़ (Venerial Diseases)–इं०।

नोट—चूँकि प्राचीन यूनानियों का यह विश्वास था, कि जब सीतानी लोगों ने उनके ऊपर चढ़ाई की, तो उनकी मुहब्बतकी देवी वीनस (शुक्र) यानी ज़ुह्रह ने उन आक्रमणकारियों में दण्ड स्वरूप उपदंश व सूज़ाक की व्याधि उत्पन्न करदी। इस कारण उक्त दोनों व्याधियाँ अम्राज़ ज़ुह्रह् के नाम से अभिहित हो गईं।

सूचना–विशेष विवरण हेतु देखो–उपदंश व सूज़ाक।

अम्राज़ तजावीफ़ amráz-tajávíf–अ० वे रोग जिनमें तजावीफ़ अर्थात् शारीरिक स्रोत अपनी प्राकृतिक अवस्था से छोटे, बड़े या अवरुद्ध हो जाएँ, जैसे—आमाशय का सिकुड़ना या फैल जाना।

अम्राज़ तफ़र्रुक़ इत्तिसाल amráz-tafarruq-ittiṣál–अ० अम्राज़ इन्हिलालुल् फ़र्द। वह साधारण बीमारियाँ जो प्रत्येक अवयव (मिश्रित व अमिश्रित) में उत्पन्न हो सकें, जैसे–किसी अवयव में विच्छेद अर्थात् विश्लेष या पार्थक्य का उपस्थित हो जाना। विस्तार के लिए देखो–**तफ़र्रुक़ इत्तिसाल वा मर्ज़ तफ़र्रुक़ इत्तिसाल।**

अम्राज़ तर्कीब amráz-tarkíb–अ० देखो–मर्ज़ तर्कीब।

अम्राज़ तारिय्यह् amráz-táriyyah–अ० ये वस्तुतः छूतदार (संक्रामक) बीमारियाँ हैं जो दो प्रकार की होती हैं—(१) वह जो किसी एक कुटुम्ब या स्थान में सीमित हों, उनको अम्राज़ वाफ़िज़ह् और अंग्रेज़ी में एन्डेमिक डिज़ीज़ेज़ (Endemic-diseases) कहते हैं और (२) वह जो किसी जाति अथवा स्थान में न हों, वरन् सामान्य तौर पर व्याप्त हो जाएँ, उनको अम्राज़ तवइय्यह् तथा अंग्रेज़ी में एपिडेमिक डिज़ीज़ेज़ (Epidemic diseases) कहते हैं।

अम्राज़ फ़स्लिय्यह amráz-faṣliyyah–अ० वे व्याधियाँ जो किसी विशेष ऋतु या फ़सल में होती हैं, जैसे–मौसमी ज्वर।

अम्राज़ बलदिय्यह् amráz-baladiyyah–अ० वह बीमारियाँ जिनका सम्बन्ध किसी विशेष स्थान या देश से हो। एन्डेमिक डिज़ीज़ेज़ (Endemic Diseases)–इं०।

अम्राज़ बसीतह् amráz-basítah–अ० देखो–**अम्राज़ मुफ़्रिदह्।**

अम्राज़ बुह्रानिय्यह् amráz-buhrániyyah–अ० वह बीमारियाँ जो बुह्रान में इन्तिक़ाल मर्ज़ के तौर पर पैदा हों, जैसे–आंत्रिक ज्वर के पश्चात् फुप्फुस प्रदाह या वृक्कप्रदाह अथवा उन्माद प्रभृति का हो जाना। क्रिटिकल डिज़ीज़ेज़ (Critical Diseases)–इं०।

अम्राज़ मजारी amráz-majárí–अ० शारीरिक अर्थात् शरीर की रग एवं नालियों की बीमारियाँ, वह बीमारियाँ जिनमें शारीरिक प्रणालियाँ संकुचित अथवा प्रसारित या अवरुद्ध हो जाएँ।

अम्राज़ माद्दिय्यह् amráz-mádiyyah--अ० वे रोग जो दोषाधिक्य अथवा उनके विकृत होने के कारण उत्पन्न हों।

अम्राज़ माबिय्यह amráz-mábiyyah-अ० वबाई मर्ज़, महामारी।

अम्राज़ मिक़्दार amráz-miqdár-अ० वह रोग जिसमें विकारी अवयव के आयतनमें अन्तर आ जाए अर्थात् वह स्थूल या क्षीण हो जाए।

अम्राज़ मिज़ाजिय्यह् amráz-mizájiyyah -अ० प्रकृति विकार जन्य रोग।

अम्राज़ मुख़्तस्सह् amráz-mukhtassah -अ० वे रोग जो विशेष अवयवों से सम्बन्ध रखते हों।

अम्राज़ मुज़्मिनह् amráz-muzminah-अ० जीर्ण या पुरातन (चिरकारी) रोग। पुरानी बीमारियाँ, मुज़्मिन बीमारियाँ। ऐसी व्याधियाँ जो ४० दिन अथवा इससे अधिक कालकी होगईहों। समय की कोई सीमा नहीं, चाहे रोग सम्पूर्ण आयु भर रहे। क्रॉनिक डिज़ीज़ेज़ (Chronic Diseases) -इं०।

अम्राज़ मुतअद्दियह् amráz-mutaâad-diyah-अ०अम्राज़ मुसिय्यह्, अम्राज़ सारिय्यह। छूतदार रोग, संक्रामक व्याधि, मुतअद्दी बीमारियाँ, वे रोग जो रोगीसे स्वस्थ व्यक्तिको लग जाएँ। इन्फेक्शस डिज़ीज़ेज़ (Infectious Diseases), कॉण्टेजिअस डिज़ीज़ेज़ (Contagious diseases)-इं०।

नोट-- प्राचीन इतिब्बा (यूनानी चिकित्सक) छः से लेकर दस रोग तक को मुतअद्दी अर्थात् छूतदार (संक्रामक) जानते रहेहैं। उनका उल्लेख निम्न पंक्तियों में किया गया है, यथा—

(१) जज़ाम (कुष्ठ, कोढ़), (२) जर्ब (तर कण्डु या खुजली), (३) जुद्री (चेचक, शीतला), (४) ह़स्बह् (खसरा), (५) सिल व क़ुरूह़ अफ़िनह् (यक्ष्मा व सड़ाँधयुक्त व्रण) और (६) हुम्मा वबाइयह (वबाई बुख़ार, महामारी का ज्वर) जो सामान्य रूप से प्रसार पाते हैं एवं जिनमें प्लेग (ताऊन) भी सम्मिलित है। किन्तु अर्वाचीन शोधों, गवेषणों द्वारा लगभग ६० रोग मुतअद्दी (छूतदार) सिद्ध हुए हैं। इन सबके लिए देखो-संक्रामक।

अम्राज़ मुतग़य्यरह् amráz-mutaghayyarah--अ० वे रोग जो क्रमानुसार उत्पन्न हों तथा धीरे धीरे बदलें।

अम्राज़ मुतवस्सितह् amráz-mutavassitah-अ० वे रोग जो हाद्दह् तथा मुज़्मिनह् के मध्य हों और जिनकी अवधि २० से ४० रोज के भीतर हो।

अम्राज़ मुतवारिसह् amráz-mutavárisah--अ० पैतृक व्याधियाँ, वे रोग जो पिता माता से सन्तति में हो, मौरूसी बीमारियाँ। इन्हेरिटेड डिज़ीज़ेज़ (Inherited Diseases)--इं०।

नोट—कोई कोई इतिब्बा (यूनानी चिकित्सक) इनकी संख्या ८ लिखते हैं। वे निम्न हैं, यथा-(१) जज़ाम (कुष्ठ, कोढ़), (२) बरस (श्वित्र, श्वेत दाग़), (३) दिक़ (जीर्ण ज्वर), (४) सिल (यक्ष्मा), (५) माली ख़ौलिया (Melancholia), (६) सुअफ़ह (गञ्ज, इन्द्रलुप्त), (७) निक़रिस (छोटी संधियों की वेदना), और (८) मानिया (उन्माद भेद)। किन्तु किसी किसी हकीम ने इनकी संख्या १७ पर्यन्त लिखी है अर्थात् आठ उपरोक्त एवं (९) सरअ (अपस्मार), (१०) उब्नह्, (११) जरब (तर खुजली), (१२) जुद्री (शीतला, चेचक), (१३) बख़ (मुखदुर्गन्धि), (१४) रमद (नेत्र आना या दुखना, नेत्राभिष्यन्द) (१५) क़ुरूह़ मुतअफ़्फ़िनह् (क्लिन्नता युक्त व्रण), (१६) ह़स्बह् (खसरा) और (१७) वबा (महामारी)। इनके अतिरिक्त शेख़ ने वृक्क एवं वस्तिस्थ अश्मरियों को भी पैतृक रोगों में समावेशित की है। आधुनिक चिकित्सक उपदंश व सूज़ाक को भी पैतृक रोगों की सूची में अंकित करते हैं।

अम्राज़ मुफ़्रिदह् amráz-mufridah-अ० साधारण रोग, असम्मिश्रित व्याधियाँ। वे रोग जो कतिपय रोगों के योग द्वारा न उत्पन्न हों,

प्रत्युत स्वयं अकेले हों। सिम्पल डिज़ीज़ेज़ (Simple Diseases)-इं०।

अम्राज़ मुरक्कबह् amráz-murakkabah -अ० मुरक्कब बीमारियाँ। यौगिक वा मिश्रित व्याधियाँ, इस प्रकार की व्याधियाँ कतिपय रोगों के योग द्वारा उत्पन्न होती हैं और इनका नाम व चिकित्सा विशेष होती है।

उदाहरणतः—शोथ प्रकृति विकार, संधि च्युति और म़ज़ु़ सर्कीब के पारस्परिक योग द्वारा उत्पन्न होता और एक ही नाम (शोथ) से पुकारा जाता है। विपरीत इसके यदि समग्र देह या किसी विशेष अवयव में कतिपय बीमारियाँ एकत्रित हो जाएँ, पर उनके समवाय का नाम व चिकित्सा विशेष न हो तो उन्हें मर्ज़मुरक्कब (मिश्रित रोग) नहीं कहते, प्रत्युत अम्राज़ मुजतमअह् (सामूहिक) नाम से अभिहित करते हैं। जैसे—ज्वर, कास और जलोदर।

कम्प्लिकेटेड डिज़ीज़ेज़ (Complicated Diseases)-इं०।

अम्राज़ मुशारिकह् amráz-musharikah -अ० वह रोग जो किसी अवयवके समीप अथवा दूर होने के लिहाज़ से उत्पन्न हो।

उदाहरणतः—एक अंगुली का अपनी निकटस्थ दूसरी अंगुली से कठिनतापूर्वक मिलना या न मिल सकना। देखो—अम्राज़ वज़अ़।

अम्राज़ मुश्तर्कह् amráz-mushtarkah -अ० अम्राज़ आम्मह, वह रोग जो साधारण एवं मिश्रित प्रत्येक अवयव में उत्पन्न हो।

अम्राज़ मुसल्लमह् amráz-musallamah -अ० अम्राज़ सलीमह, वे रोग जिनके उचित तथा उपयुक्त उपाय में कोई बात अवरोधक न हो।

अम्राज़ मुस्तअ़सियह् amráz-mustaāsi-yah-अ० असाध्य रोग। इन्क्योरेबल डिज़ीज़ेज़ (Incurable Diseases)-इं०।

अम्राज़ मुस्रिय्यह् amráz-musriyyah -अ० देखो अम्राज़ मुतअ़द्दियह्।

अम्राज़ मूमनह् amráz-múmanah-अ० वे रोग जो अन्य रोगों से मुक्ति दिलाएँ।

अम्राज़ व अअ़राज़ मुन्ज़िरह् amráz-va aāráz-munzirah-अ० वे रोग व लक्षण जो किसी अन्य रोगका भय दिलाएँ, उदाहरणतः स्थाई मूर्च्छा तात्कालिक मृत्यु का मुन्ज़िरह् (पूर्वरूप) होती है या कावूस जो अपस्मार व अर्द्धांग प्रभृति के उत्पन्न होने का भय दिलाता है।

अम्राज़ वज़अ़ amráz-vazaā-अ० वे रोग जिन में विकृतावयवकी स्थितिमें अन्तर उपस्थित होजाए, इसके २ भेद हैं-(१) मौज़ई (स्थिति संबन्धी) और (२) मुशारिकी (सहचारी, संबंधीय)।

पुनः मौज़ई के चार रूप हैं—(१) किसी अवयव का निज स्थान से उखड़ जाना, (२) अवयव का अपनी संधि में गति करना, (३) स्थिर अवयव का गतिशील होना, जैसे—कम्पन वायु (रैशा) में सिर हिलना, (४) गतिशील अवयव का स्थिर होजाना, जैसे—तहज्जुर मुफ़ासिल (संधि काठिन्य) में संधियों का गति न कर सकना।

मुशारकी के दो रूप हैं—(१) एक अवयव का अपने निकटस्थ अवयव से दूर हो जाना। उदाहरण स्वरूप—एक अंगुली का टेढ़ा होकर दूसरी अंगुली से न मिल सकना या कठिनता-पूर्वक मिलना और (२) एक अवयव का दूसरे अवयव से जुड़ जाना या मिलजाना। उदाहरणतः—दो अंगुलियों का जुड़ जाना या मर्ज़ शिनाक़ में नेत्र का कठिनाई से खुलना।

अम्राज़ वबाइय्यह् amráz-vabáiyyah -अ० महामारी, वबाई बीमारियाँ, वे रोग जिनमें एक ही काल में बहुत से मनुष्य रोगाक्रान्त हो जाएँ, जैसे—प्लेग, विसूचिका प्रभृति। एपिडेमिक डिज़ीज़ेज़ (Epidemic diseases)

अम्राज़ वाफ़िज़ह् amráz-váfizah-अ० वे छूतदार (संक्रामक) रोग जो किसी विशेष स्थान या जाति से संबंध न रखते हों। देखो—अम्राज़ तारियह्।

एण्डेमिक डिज़ीज़ेज़ (Endemic Diseases) इं०।

अम्राज़ शक्लिय्यह amráz-shakliyyah—अ० वे व्याधियाँ जिनमें विकृतावयव का प्राकृतिक स्वरूप परिवर्तित हो जाए, जैसे – इस्तिस्क़ाउर्रास (मास्तिष्कीय जलन्धर अर्थात् जल संचय वा शोथ) में सिरका चिपटा हो जाना या पृष्ठ आदि में कूबड़ निकल आना।

अम्राज़ शिर्किय्यह amráz-shirkiyyah —अ० वे व्याधियाँ जो अन्य रोगों के सहयोग द्वारा उत्पन्न हों। सहचारी रोग।

अम्राज़ सफ़ायह अअ़्ज़ाऽ amráz-ṣafáyah-aäzáa—अ० वे रोग जिनमें अवयवों के धरातल की प्राकृतिक दशा बदल जाए। उदाहरणतः—जो धरातल प्राकृतिक एवं स्वाभाविक रूप से चिकना था वह खुरदरा हो जाए और जो प्राकृतिक तौर पर खुरदरा था वह चिकना हो जाए, जैसे—आमाशय के भीतरी धरातल का चिकना हो जाना या फुप्फुस के चिकने धरातल का खुरदरा हो जाना।

अम्राज़ सलीमह amráz-salímah—अ० सुखसाध्य रोग जिनमें कोई बात उचित उपचार की विरोधी न हो।

अम्राज़ साज़िजह् amráz-sázijah—अ० साधारण रोग जो किसी दोषके कुपित होने से न हो।

अम्राज़ सारिय्यह् amráz-sáriyyah—अ० देखो-**अम्राज़ मुतअद्दियह्**। (Infectious Diseases.)

अम्राज़ सूउत्तर्कीब amráz-súuttarkíb—अ० वे साधारण रोग जो प्रथम मिश्रितावयवों में उत्पन्न हों, जैसे—**संधिभ्रंश**।

अम्राज़ सूय मिज़ाज amráz-súya-mizáj —अ० वह साधारण रोग जो प्रथम साधारण अवयवों में उत्पन्न हों, जैसे—वाततन्तु का उष्ण या शीतल होजाना। देखो-**म.ज़ सूयमिज़ाज**।

अम्राज़ हाद्दह् amráz-ḥáddah—अ० (उग्र) व्याधियाँ, कठिन रोग, वे तीक्ष्ण व्याधियाँ जिनकी अवधि थोड़ी होतीहै अर्थात् ४० दिवसके भीतर भीतर या तो रोग दूर हो जाता है अथवा रोगी की मृत्यु हो जाती है या रोग चिरकारी (पुरातन) रूप में परिणत हो जाता है। ये रोग चार प्रकार के होते हैं, यथा—(१) हाद्द कामिल या हाद्द क़िल्ग़ायत अर्थात् अत्यन्त उग्र व्याधि जिसकी अवधि अधिकसे अधिक चौथे दिन तक होती है। (२) हाद्द मुत्वस्सित या हाद्द दूनुल्ग़ायत, वह उग्र व्याधि जिसकी अवधि सातवें दिन तक होती है। (३) हाद्द मुन्तक़ वह तीव्र व्याधि जिसकी अवधि चौदहवें से बीसवें दिन तक होती है। (४) हाद्द मुन्तक़िल या हाद्द मुज़्मिन, वह उग्र व्याधि जिसकी अवधि इक्कीसवें दिवस से उन्तालीसवें दिवस पर्यन्त होती है। **अम्रा.ज़ हाद्द** (उग्र व्याधियां) के मुक़ाबिले में **अम्रा.ज़ मुज़्मिनह** (पुरातन व्याधियाँ) हैं, जिनकी अवधि चालीस दिवस अथवा इससे अधिक होती है। एक्यूट डिज़ीज़ेज़ (Acute diseases.)—इं०।

नोट—(१)म.ज़ हाद्द कामिल व हाद्द मुत्वस्सित व हाद्द मुन्तक़ को डॉक्टरी में एक्यूट डिज़ीज़ेज़ (Acute diseases.) और हाद्द मुज़्मिन को सब एक्यूट (Sub acute.) और **म.ज़** मुज़्मिन को क्रॉनिक डिज़ीज़ेज़ (Chronic diseases.) कहते हैं।

(२) डॉक्टरी में हाद्द मुज़्मिन रोगों के लिए अवधि की कोई सीमा नहीं, प्रत्युत रोगके लक्षणों की उग्रता व सूक्ष्मता से ही उनको हाद्द व मुज़्मिन कहा जाता है। देखो—**मर्ज़ हाद्द व मर्ज़ मुज़्मिन**।

अम्राज़ हाद्दह् जद्दन amráz-ḥáddah-jaddan—अ० अत्यन्त उग्र व्याधि। देखो—**अम्राज़ हाद्दह्**।

अम्राज़ हाद्दतुल् मुज़्मिनात amráz-ḥádda-tul-muzminát—अ० वे उग्र व्याधियाँ जिनकी अवधि २१ दिन से ३६ दिन तक हुआ करती है। देखो—**अम्राज़ हाद्दह्**।

अम्रातः,-कः amrátah-,kah—**सं० पुं०** अम्बाड़ा। Hogplum (Spondias mangifera.) श० मा०। त्रिका०। देखो—**आम्रातकः**।

अम्रालकः amrálakah-सं० पुं० अम्बाड़ा, अमड़ा, आम्रातक । (Spondias mangifera.)

अम्रावर्त्तः amrávarttah-सं० पुं० अमावट, आम्रावर्त्त । (The inspissated juice of the mango.) फा० इं० ।

अम्रिय्यात amriyyát-अ०
इह् शाउल् बत्न ihshául-batn-अ०
उदरीयावयव, जैसे—यकृत, आमाशय तथा आंत्र आदि । (Abdominal Viscerae.)

अम्रुचह amruchah-फा० अमृतक, अम्रुद्धक (Pyrus Communis, Linn.) । यह अम्रुद का अल्पार्थक प्रयोग है । देखो--अमृतक । फा० इं० १ भा० ।

अम्रत amruta-हिं०पुं० अमरूद । A guava (Psydium Pyriferum.)

अम्रेर amrer-झलम, पं० (Debregeasia Bicolor.) मेमो० ।

अम्रोद amroda-हिं० पुं० पथरचूर । पाषाणभेदी-सं० । पथरकुचो-बं० । पान-ओंवा-म० । (Coleus Aromaticus.)

अम्रोला amrolá-हिं० चूका वा चांगेरी, आमरुल । (Rumex Acetosa.)

अम्रोला का सत्त amrolá-ká-satta
अम्रोला सत्व amrolá satva
-हिं० पुं० काष्ठाम्ल, चूका का मत, चुक्र सत्त्व, चुक्राम्ल । Oxalic Acid (Acidum Oxalicum.) देखो—चुक्र ।

अम्लः amlah-सं० पुं०, हिं० संज्ञा पुं० जिह्वा से अनुभूत होने वाले छः रसों में से एक । खटाई । जैसे—जम्बीर मातुलुङ्ग तथा निम्बुक प्रभृति ।

गुण—लघु, उष्ण, रुचिकर, दीपन, हृदय को तर्पण करता, वातानुलोमक, दलकारी, कण्ठ में दाह उत्पन्न करता है । रा० नि० व० २० । इसका विपाक अम्ल तथा गुण में पित्तकारक और वात कफ के रोग को दूर करने वाला है । सु० सू० । प्रीतिकारक, पाचन, आर्द्रताकारक, इसके अधिक सेवन से भ्रान्ति, कुष्ठ, कफ, पाण्डु, कृशता और कास उत्पन्न होता है । रा० नि० व० १२ । पाचन, रुचिकारक, पित्तजनक, कफ उत्पन्न कर्त्ता, रक्तवर्द्धक, लघु, लेखन, उष्णवीर्य, स्पर्श में शीतल, संकोचक, क्लेदकारक, वातनाशक, स्निग्ध, तीक्ष्ण, सारक तथा शुक्र, विबंध-आनाह तथा दृष्टिनाशक और हर्षकारक है । अतिसेवन--से भ्रम, तृष्णा, दाह, तिमिर, शोथ, विस्फोटक, कुष्ठ, पाण्डु उत्पन्नकर्ता तथा और ज्वरनाशक है । भा० पू० १ म० । लघु, पाचक, पित्त, कफ, छर्दि, क्लेद, उष्ण तथा वातनाशक है । राज० ।

नि० इसका शाब्दिक अर्थ खट्टा है । हामिज़, हम्ज़, हिम्ज़-अ० । तुर्श--फ़ा० । अम्बल-बं० । सावर (Sour), एसिड (Acid) -इं० । किन्तु अर्वाचीन परिभाषा में तेजाब अर्थात् एसिड (Acid) द्रव या अद्रव के लिए व्यवहार में आता है । देखो—एसिड ।

अम्लम् amlam-सं० क्लो० (१) अम्लवेतस फल । (२) कांजी । (३) घोल । रा०नि० । (४) बदरफल । नि० शि० अरोचक चि० । (५) बर्बर चन्दन । रा० नि० व० १२ ।

अम्लकः amlakah-सं० पुं०, हिं० संज्ञा पुं० बड़हर । लकुच वृक्ष । (Artocarpus Lakoocha)

अम्ल-कन्दः amla-kandah-सं० पुं० एक जंगली बूटी की जड़ है, जिसके पत्ते पान के समान और पुष्प सफ़ेद तथा फल लाल मिर्च के तुल्य लम्बे और बीज नीबू के बीज के सदृश होते हैं ।

अम्ल-करञ्जः amla-karanjah-सं० पुं० करञ्जभेद । टक् करञ्जा-बं० । इसका फल—तृष्णानाशक, गुरु, रुचिकारक और पित्तकारक है । राज० । (A kind of karanja)

अम्लका amlaká-सं० स्त्री० (१) पालंकशाक प० मु० । (२) पलाशीलता । रा० नि० व० ४ ।

अम्लका amlka–**बं०** (Vitis Indica.) अम्बुका ! अम्लुक ।

अम्ल-काञ्जिकम् amla-kánjikam–**सं० क्ली०** (Sour gruel.) काञ्जिक, कांजी । च० द० ग्रहणी-चि० महापट्पल वृत । See–Kánjí

अम्ल-काण्डः amla-kándah–**सं० पुं०** सफ़ेद लहसुन, शुक्र रसोन । (White garlic.) वैं० निघ० । क्ली० (२) लोणी, लवण तृण । लोणा घास–बं० । रा० नि० व० ८ ।

अम्लकादि चूर्ण amlakádi chúrna–**सं० क्ली०** चतुराम्ल १ प्रस्थ, त्रिकुटा ३ पल, लवण ४ पल, चीनी ८ पल इनका चूर्ण दाल और अन्नादि में डालकर सेवन करने से खाँसी, अजीर्ण अरुचि, श्वास, हृद्रोग, पांडु और गुल्म का नाश होता है । च० सं० ।

अम्ल-कुचाई amla-kuchái–**बं०, हिं० स्त्री०** (१) एक भारतीय जंगली कण्टकयुक्त वृक्ष है जिसके पत्ते अमली के पत्तों के समान, किन्तु उससे छोटे होते हैं । (२) चुक ।

अम्ल-कुचि amla-kuchi–**बं०** पथरचूर, पाषाणभेदी, अश्मन्तक, हिमसागर । (Coleus Aromaticus.) इं० मे० मे० ।

अम्ल-कूचिः amla-kúchih–**सं० पुं०** वृक्ष विशेष । (A tree.)

अम्ल-केशरः amla-kesharah–**सं० पुं०** (१) बिजौरा नीबू, मातुलुङ्ग । (Citrus medica.) प० मु० । (२) दाड़िम वृक्ष, अनार ।

अम्ल केशरी amla-keshari–**सं० पुं०** अम्ल-रस निम्बुक वृक्ष । गोंड़ा नीबू, गोड़ा लेबू–बं० । वैं० नि० ।

अम्लकोशः (शाकः) amla-koshah,-shá-kah–**सं० पुं०** तिन्तिड़ी वृक्ष । अम्लिका, अ(इ)मली (Tamarindus Indicus.) मद० व० ६ ।

अम्ल गोरसः amla-gorasah–**सं० पुं०** माठा, तक्र, घोल । अम्ल तक्र, खट्टी छाछ । टक् घोल –बं० । बटरमिल्क (Bnttermilk.) –इं० ।

अम्ल चाङ्गेरी amla-chángerí–**सं० स्त्री०** (१) चांगेरी भेद । टक् आमरुल–बं० । च० चि० ३ अ० अगु० तैल । (२) –हिं० स्त्री० दक्खिनमें इसे चौंगर कहते हैं । एक भारतीय वृक्ष काफल है, जो अम्ल स्वादयुक्त तथा मकोयके दाने के बराबर होता है । लु० क० ।

अम्ल चुक्रिका amla-chukriká–**सं० स्त्री०** चिञ्चाम्ल, चिञ्चासार, अम्लीसार । तेंतुलेर अम्बल –बं० । रा० नि० व० ११ । See–chinchásárah.

अम्ल चूडः amla chúnah–**सं० पुं०** (१) शाकाम्ल, वृक्षाम्ल । (२) चिञ्चासार । तेंतुलेर अम्बल बं० । अम्ली के रस से प्रस्तुत किया हुआ एक प्रसिद्ध गाढ़ा पदार्थ है । रा० नि० व० ११ । (३) अम्लशाक । चुक पालंक । रा० नि० ।

अम्लच्छदा amlachchhdá–**सं०पुं०** भोजपत्र वृक्ष । See–Bhojapatra.

अम्लज amlaj–**अ०** (१) आमला । (Phyllanthus emblica.)

अम्लज áamlaj–**अ०** खर्नूबभेद । See–kharnúb.

अम्लजन amlajana–**हिं० पुं०** ओषजन, ऊष्मजन । (Oxygen.)

अम्लजन मिश्रण amlajana-mishrana –**हिं० पुं०** ओषजन मिश्रण । (Oxygen mixture.)

अम्लजनीकरण amlajaní-karana–**हिं० पुं०** ओषजनीकरण । (Oxidation.)

अम्लजम्बीरः amla-jambírah–**सं० पुं०** (Citrus medica) खट्टा नीबू, अम्लरस निम्बुक वृक्ष । टक्लेबू गाछ -बं० । इडनिम्बू –मह० । रा०नि०व० ११ । देखो–निम्बुकः ।

अम्लजिद amlajida–**हिं० पुं०** ओषिद, ऊष्मिद । (Oxide.)

अम्लटकः amla-takah–**सं० पुं०** अश्मन्तक वृक्ष । अम्ल कुचाई–बं०,हिं० । See–ashm-antakah.

अम्लत् amlat–अ० वह मनुष्य जिसके शिर तथा दाढ़ी के अतिरिक्त और कहीं बाल न हों।

अम्लता amlatá–हिं० स्त्री० अम्लत्व, खट्टापन। हुमूज़त–अ०। तुर्शी–फ़ा०। (Acidity, Sourness).

अम्लजनक amla-janak-हिं०पुं०(Antacid) श्लेष्मजनक।

अम्लतूत amla-túta–सं० पुं० खट्टातूत। See–túta

अम्लतृणः amla-trinah-सं० पुं० लवण तृण। लोणी।

अम्लत्वक् amla-tvak–सं० पुं० चार वृक्ष। प्रियाल। पियाल या चिरौंजी का पेड़। चारोली –मह०। (Buchanania latifolia, chironjia sapida.)

अम्लदोलकः amla-dolakah-सं०पुं० चुक्र। चुकापालङ्–बं०। अम्बोटी(ती)–म०। व० नि०। See--chukra

अम्लद्रवः amladravah--सं० पुं० बीजपूर रस। भा० म० १ भा० जिह्वाक उग्र० चि०। "अम्लद्रवः संशमयेद्रसज्ञां।"

अम्लदधिः amla-dadhih-सं०क्ली० खट्टा दही। लक्षण—जिस दही में से मिठास जाता रहा हो और खट्टा तथा अव्यक्त रसयुक्त हो गया हो उसे अम्ल दधि कहते हैं। गुण—यह अग्नि प्रदीपक पित्तवर्द्धक, रक्तवर्द्धक तथा कफवर्द्धक है। वृ० नि० र०।

अम्ल-द्रव्यम् amla-dravyam } --सं० क्ली०
अम्ल-नायकम् amla-náyakam }
अम्ल वेतल। थैकल–बं०। रा० नि० व० ६। आम्लवेतस–मह०। See--amlavetasah-

अम्लनिम्बूकः amla-nimbúkah–सं० पुं० महाम्ल निम्बुक। गोड़ा लेबू–बं०। मीटें इरनिम्बु –मह०। वै० निघ०।

अम्लनिशा amla-nishá सं० स्त्री० शटी, कचूर। शटी–बं०। (Curcuma zedoaria) रा० नि०।

अम्लपञ्चकम् amla-panchakam–सं० क्ली० (१) मुख्य पाँच प्रकार के खट्टे फल बेर, अनार चूका, विषांबिल, और अम्लवेत इन्हें अम्ल-पञ्चक कहते हैं। गुण—ये खट्टे रुचिकारी कफ और खाँसी को उत्पन्न करने वाले, कड़वे और जड़ताकारक हैं, तथा विष्टम्भ, शूल, वात, शुक्र, गुल्म और बवासीर को दूर करते हैं।

(२) फलाम्लपञ्चकम्, बिजौरा नीबू, जम्भीरी नीबू, नारङ्गी, अम्लवेत और इमली ये दूसरे फला-म्लपञ्चक हैं। गुण—शोफकारक मदजनक तथा विष्टंभ, शूल, गुल्म, बवासीर, शुक्र और वात-नाशक हैं। रा० नि० व० २१। देखो—पञ्चाम्ल (फल)म्।

अम्ल पञ्च फलम् amla-pancha-phalam --सं० क्ली० देखो--अम्लपञ्चकम्।

अम्लपत्रः amlapatrah--सं० पुं० (१) दण्डालु (क)। खाम आलु--बं०। वै० निघ०। See–Dandáluh. (२) अश्मन्तक वृक्ष। (See–Ashmantak) रा० नि० व० ६। (३) तुङ्गपत्र तुलसी वृक्ष। र० मा०।

अम्लपत्रम् amla-patram--सं० क्ली० चुक्र शाक, चूका। (Rumex Scutatus) रा० नि० व० ७।

अम्लपत्रकः amla-patrakah--सं०पुं० (१) भेण्डा, भिण्डी (Hibiscus Esculentus)। (२) अश्मन्तक वृक्ष-सं०। अम्लकुचाई, आचुटा-बं०। (Coleus Aromaticus) रा० नि० व० ६। मद० व० १। अम्ल-लोणिका चूका। आमरूल-बं०। (Rumex Scutatus.) भा० पू० १ व०।

अम्लपत्रा amlapatrá--सं० स्त्री० शुक्रला। ओकड़ा--बं०। See–shukralá। प० मु०।

अम्ल पत्रिका amla-patriká--सं० स्त्री० चांगेरी, चूका। गुनी, आवेता-हिं०। लुदे गुनी-बं०। (Rumex Scutatus.) रा० नि० व० ५।

अम्लपत्री amla-patrí--सं० स्त्री० (१) पलाशी लता। See–Paláshí। रा० नि०

व० ४। (२) चांगेरी, चूका। (Rumex Scutatus) रा० नि० व० ५। (३) क्षुद्राम्लिका-सं०। खुदे गुनी-बं०।

अम्लपनसः amla-panasah--सं० पुं० लिकुच वृक्ष, बड़हर। डेलो, मान्दार गाछ-बं०। ओटीचे झाड़-म०। वै० निघ०। (Artocarpus Lakoocha.)

अम्लपर्णिका amla-parniká } -सं०
अम्लपर्णी amlaparni }
स्त्री० वृक्ष विशेष। सुरपर्णी। भा०। गुण—अम्लपर्णी वात, कफ तथा शूल विनाशिनी है। वै० निघ०। See-Suraparni.

अम्लपादपः amla-pádapah—सं० पुं० वृक्षाम्ल, अमली। तेंतुल गाछ-बं०। कोवंबी-म०। वै० निघ०।

अम्लपित्तम् amla-pittam–सं० क्ली० }
अम्लपित्त amla-pitta--हिं० संज्ञा पुं० }
(Hyper-acidity), सावर बाइल (Sour-bile)--इं०। हुम्मुज़त--अ०। रोग विशेष। इसमें जो कुछ भोजन किया जाता है, सब पित्त के दोष से खट्टा हो जाता है।

निदान

पूर्व सञ्चित पित्त, पित्तकर आहार विहार से जलकर अम्लपित्त रोग पैदाकरता है। पित्त विदग्ध होने पर भोजन अच्छी तरह पचता नहीं है, जो पचता है वह भी अम्लरस में परिणत हो जाता है, इसी से अम्ल आस्वाद होता है और खट्टी डकार आदि उपद्रव उपस्थित होते हैं। अजीर्ण होने पर भोजन, गुरु पदार्थ और देरसे पचने वाली वस्तुओं का भोजन, अधिक खट्टे और भुने द्रव्यों का खाना इत्यादि कारणों से अम्लपित्त रोग उत्पन्न होता है। कहा भी है—

विरुद्ध दुष्टाम्ल विदाहि पित्तप्रकोपि पानान्नभुजो विदग्धम्। पित्तं स्वहेतूपचितं पुरा यत्तदम्लपित्तं प्रवदन्ति सन्तः॥ (मा० नि०)

अर्थ–विरुद्ध (क्षीर, मत्स्यादि), दुष्ट(बासीअन्न), खट्टा विदाहि तथा पित्त को प्रकुपित करने वाले अन्नपान (तक्रसुरादि) के सेवन से विदग्ध (अम्लपाक) हुआ और पहिले वर्षाऋतुमें जल तथा औषधों में स्थित विदाह आदि कारणों से जो पित्त सञ्चित हुआ है, उसके दूषित होने को अम्लपित्त कहते हैं।

लक्षण

आहार का न पचना, क्लांति (थकावट वा श्रमित होना), वमन आना या जी मिचलाना, तिक्त तथा खट्टी डकार आना, देह भारी रहना, हृदय और कंठ में दाह होना और अरुचि आदि लक्षण अम्लपित्त के वैद्यों ने कहे हैं। ऊर्द्ध तथा अधः भेद से यह दो प्रकार का कहा गया है।

ऊर्द्धगत अम्लपित्त के लक्षण

उर्द्धगत अम्लपित्त में हरे, पीले, नीले काले, किंचित् लाल, अतिपिच्छिल, निर्मल, अत्यंतखट्टे, मांस के धोवन के जल के समान कफयुक्त लवण, कटु, तिक्त इत्यादि अनेक रसयुक्त पित्त वमन के द्वारा गिरते हैं। कभी भोजन के विदग्ध होनेपर अथवा भोजन के न करने पर निम्ब के समान कड़ुआ वमन होता है और ऐसी ही डकार आती है, गला हृदय तथा कोख में दाह और मस्तक में पीड़ा होती है। कफ पित्त से उत्पन्न अम्लपित्त में हाथ पैरों में दाह होता है शरीर में उष्णता अन्न में अरुचि, ज्वर, खुजली और देह में चकत्तों तथा सैकड़ों फुन्सियाँ और अन्न न पचने आदि अनेक रोगों के समूह से युक्त होता है।

अधोगत अम्लपित्त के लक्षण

प्यास, दाह मुर्च्छा भ्रम, मोह (विपरीत ज्ञान) इन्द्रियों कामोह) इनको करनेवाला पित्त कभी नाना प्रकार का होके गुदा के द्वारा निकलता है और हृल्लास (जी का मचलाना), कोठ होना, अग्नि का मन्द होना, हर्ष,स्वेद अंग का पीत वर्ण होना आदि लक्षणों से जो युक्त होता है उसको अधोगत अम्लपित्त कहते हैं।

दोष संसर्ग से अम्लपित्त के लक्षण

वात युक्त, वात कफ युक्त और कफ युक्त ये दोषानुसार, अम्लपित्त के लक्षण बुद्धिमान वैद्यों ने कहे हैं। कारण यह है कि उर्द्धगत में वमन

और अधोगतमें अतिसार के लक्षण से इसके भेदों का निर्णय करना कठिन है। अस्तु, वैद्य को विचारपूर्वक इस रोग की परीक्षा करनी चाहिए। नीचे इनमें से प्रत्येक का पृथक् पृथक् वर्णन किया जाता है—

वात प्रकोप जनित अम्लपित्तमें कम्प, प्रलाप मूर्च्छा, चिउँटी काटने की सी चिमचिमाहट (झिनझिनाहट), शरीरकी शिथिलता और शूल, आँखों के आगे अँधेरा, भ्रान्ति, इन्द्रिय तथा मन का मोह और हर्ष (रोमाञ्च) ये लक्षण होते हैं।

कफ युक्त अम्लपित्त में कफ का थूकना, शरीर का भारी रहना और जड़ता, अरुचि, शीतलता, साद (अंग की ग्लानि, अवसान), वमन, मुख का कफ से लिप्त रहना, मन्दाग्नि, बल का नाश, खुजली और निद्रा ये लक्षण होते हैं।

वात कफ युक्त अम्लपित्त में ऊपर कहे हुए दोनों के चिह्न होते हैं।

कफ पित्त के अम्लपित्त में ये लक्षण होते हैं—भ्रम (तम), मूर्च्छा, अरुचि, वमन, आलस्य, शिर में पीड़ा, मुख से पानी का गिरना (प्रसेक) और मुख का मीठा रहना।

अम्लपित्त की साध्यासाध्यता

अम्लपित्त रोग नया होने पर तो साध्य होता है, पर बहुत दिन का अर्थात् पुरातन याप्य (चिकित्सा करने पर अच्छा हो जाता है, परन्तु जब चिकित्सा करना बन्द कर दिया जाता है तब उसका पुनरावर्तन होता है।) और अहित आहार तथा अहित आचार वाले पुरुष का अम्लपित्त कष्टसाध्य होता है।

इस रोग के एक बार उत्पन्न होने पर फिर इसका दूर होना बहुत कठिन है। अतएव रोग के उत्पन्न होते ही चिकित्सा करना उचित है। अन्यथा रोग पुराना होकर पुनः प्रायः छूटता नहीं।

चिकित्सा

अम्लपित्त में पटोल, अरिष्ट (रीठा), अडूसा, मैनफल, मधु तथा लवण (सैंधव) प्रभृति द्वारा वमन कराएँ और निशोथ के चूर्ण को आमले के रस और शहद में मिलाकर विरेचन दें। ऊर्ध्वगत अम्लपित्त को वमन द्वारा और अधोगत को रेचन द्वारा शमन करें। यथा—

> अम्लपित्ते तु वमनं पटोलारिष्ट वासकैः।
> कारयेत् मदनैः क्षौद्रैः सैन्धवैश्च तथा भिषक्॥
> विरेचनं त्रिवृच्चूर्णं मधुधात्री फलद्रवैः।
> ऊर्ध्वगं वमनैर्विद्वानधोगं रेचनैर्हरेत्॥
>
> भा० म० खं०।

अस्तु, वमन हेतु जल में सेंधानमक (जरा सा) डालकर एक पाव या आधसेर की मात्रा में गरम करके पीने के बाद गले में उंगली डालनेसे वमन होगा। इससे ऊर्ध्वगामी अम्लपित्त बहुत कुछ अच्छा होजाता है। अधोगामी अम्ल पित्त में सप्ताह में एक दिन वा दो दिन चौअन्नी भर "अविपत्तिकर चूर्ण" चौअन्नी भर चीनी के साथ विरेचन के लिए सेवन करना चाहिए। अविपत्तिकर चूर्ण इस रोग की एक उत्तम औषध है। जिस दिन इसका सेवन करें उस दिन अन्य औषध सेवन नहीं करनी चाहिए, स्नान-आहार भी निषिद्ध है। शाम को साबूदाना वा बारली का सेवन करें।

तीक्ष्ण संस्कार वर्जित जौ या गेहूँ की बनी चीजें, लाजयुक्त (लावा या धान की खील का सत्तू) शर्करा वा मधु में मिलाकर पिलाने वा भूसी से साफ किए हुए जौ, गेहूँ तथा आमला द्वारा पकाया हुआ जल, दालचीनी, इलायची और तेजपत्र के चूर्ण मिलाकर पिलाने से अम्लपित्त जन्य वमन तत्काल दूर होता है।

अम्लपित्तहर औषधें
(अमिश्रित औषधें)

अडूसा, पर्पटक (पित्तपापड़ा), कुलत्थी, पाठा, यव, चन्दन, धान्य आमला (रस), नागकेशर, जीरा, करञ्ज, जम्बीर, पाटला, कदली (फल), (Pyrosis) पीतशाल, सोडियम के लवण और योग, गंधक और उसके योग, प्रातः काल त्रिफला या हरीतकी के शीत कषायों का रेचन तथा अन्य तिक्त पित्तहर द्रव्य जैसे गुडूची,

पटोलपत्र, किरोततिक्ता (चिरायता), कटुकी, धान्यक, द्राक्षा, मधुयष्टी के कषाय या योग, कूष्माण्ड, आमलकी, मण्डूर, लोह भस्म और अभ्रक आदि के योग एवं भोजन के दो तीन घंटे बाद चार शीतल जल से दिए जाते हैं।

मिश्रित औषधें

अविपत्तिकर चूर्ण, पञ्च निम्बादिचूर्ण, पिप्पली-खंड, वृहत् पिप्पली खंड, शुण्ठि खंड, सौभाग्य शुण्ठि मोदक, खंड कुष्मांड अवलेह, अभयादि अवलेह, अम्ल पित्तान्तक मोदक वा सुधा, त्रिफला मण्डूर, सित मण्डूर, पानीय भक्त वटी, क्षुधावती गुड़िका, वृहत् क्षुधावती गुड़िका, पञ्चानन गुड़िका, भास्करामृताभ्र, अम्ल पित्तान्तकलौह, सर्वतोभद्र लौह, लीलाविलास रस, दसांग, पिप्पली घृत, पटोल शुण्ठि घृत, शतावरि घृत, नारायण घृत, दार्व्याद्य घृत, जीरकाद्य घृत, श्री विल्व तैल, नारिकेल खंड, वृहन्नारिकेल खंड, वृहत् अग्निकुमार रस, भास्कर लवण, शुण्ठी खंड, और अम्ल पित्तारि चूर्ण।

पथ्यादि—अम्लपित्त और शूल रोग से पीड़ित व्यक्ति को जीवन भर आहार सुख से वञ्चित रहना पड़ता है। उनको कडुए पदार्थों को छोड़ अन्य कोई द्रव्य हितकर नहीं। दूध,अधिक नमक, खट्टा, भूना और पीसा हुआ द्रव्य और मद्य सर्वदा निषिद्ध है।

अम्लपित्त हर amlapitta-hara–हिं० पुं० अम्लपित्तनाशक। देखो—**अम्लपित्त**।

अम्लपित्तहारक पाकः amlapittaháraka-pákah–सं० पुं० त्रिकुटा, त्रिफला, भांगरा, दोनों जीरा, धनियाँ, कूट, अजमोद, लोह भस्म, अभ्रक भस्म, काकड़ासिंगी, कायफल, मोथा, इलायची, जायफल, जटामांसी, पत्रज, तालीशपत्र, केशर, बन कचूर, कचूर, मुलहठी, लवंग, लाल चन्दन, प्रत्येक समान भाग लें। सर्व तुल्य सोंठ का चूर्ण, सब से द्विगुण मिश्री, गाय का दूध चार गुना मिलाकर विधिवत पाक बनाएँ।

मात्रा—१ तो०, पानी या दूध के साथ।

गुण—अम्लपित्त, अरुचि, शूल, हृद्रोग,वमन, कण्ठदाह, हृदय की जलन, शिरोशूल, मन्दाग्नि तथा हृदय, पार्श्व, एवं वस्तिशूलको नष्ट करता और विशेष कर अम्लपित्त, मूत्रकृच्छ्र, ज्वर और भ्रम का नाशक है। वै० क० द्रु०।

अम्लपित्तान्तक मोदकः amlapittántak-modakah–सं० पुं० सोंठ, पीपरऔर सुपारी बत्तीस बत्तीस तोले लें। इन्हें चूर्ण कर एक में मिलाकर इसमें घृत ६४ तो०, गोदुग्ध ६४ तो०, मिलाकर पकाएँ। पुनः लवंग, नागकेशर, कूट, अजवाइन, मेथी, वच, चन्दन, मुलहठी, रास्ना, देवदारु, हड़, बहेड़ा, आमला, तेजपात, इलायची दालचीनी, सेंधा नमक, हाऊबेर, कचूर, मयन-फल, कायफल, जटामांसी तथा अभ्रक, वंग, और चाँदी की भस्म तालीसपत्र, पद्मकाष्ठ, मूर्वा, मजीठ, वंसलोचन, पीपलामूल, सौंफ, शतावर, कुरण्टा, जायफल, जावित्री, शीतलचीनी, पीपर, नागरमोथा, कपूर, वायविडंग, अजमोद, खिरेटी, गुरुच, केवाँच के बीज, तालमखाना, चन्दन, देवताड़, चतुर्धातु विधि से मारे हुए, लोहा और काँसा की भस्में प्रत्येक एक एक तो० स्वर्ण की भस्म ६ मासे, इन सबको एकत्र मिलाकर तैयार करें।

गुण—यह छर्दि, मूर्च्छा, दाह, खाँसी, श्वास भ्रम, वातज, पित्तज, कफज, और सन्निपातज भ्रम, २० प्रमेह, सूतिका रोग, शूल, मन्दाग्नि, मूत्र-कृच्छ्र, गलग्रह और प्रत्येक रोगों को दूर करता है। भैष० अम्लपित्त० चि०।

अम्लपित्तान्तक रसः amlapittántaka-rasah–सं० पुं० पारद भस्म, लोह भस्म, अभ्रक भस्म प्रत्येक समान भाग ले चूर्ण कर इसमें से १ मा० शहद के साथ खानेसे अम्ल-पित्त नष्ट होता है। रस० यो० सा०।

अम्लपित्तान्तक लौहः amlapittántaka-louhah–सं० पुं० (१) पारा, ताम्बा, लोहे की भस्म और इन सब भस्मों के बराबर हड़ को पीस शहद मिलाकर एक मासा नित्य चाटने से अम्लपित्त शान्त होता है।

भैष० अम्ल पित्त० चि०।

(२) यह रस अम्लपित्त नाशक है। रसे० चि०। र० सा० सं०।

अम्लपित्तान्तको रसः amlapittántako-rasah–सं० पुं० रससिन्दूर, अभ्रभस्म, लोह भस्म, समान भाग लेकर सब के समान हड़ मिलाकर चूर्ण करें। मात्रा—१ मा०। शहद के साथ उपयोग करने से अम्लपित्त का नाश होता है। रस० रा० सु० अम्ल० पि० चि०।

अम्लपिष्टा amla-pishṭá–सं० पुं० चांगेरी। (Rumex Scutatus.)

अम्लपूरम् amlapúram–सं० क्लीं० (१) अम्लिका। कोकमफल। तिन्तिडी। तेंतुल-बं०। कोकम्बी-मं०। (२) वृक्षाम्ल रा० नि० व० ६

अम्लपुष्पिका amla-pushpiká–सं० स्त्री० आरण्यशण वृक्ष। जंगली सन का पेड़-हिं०। वन्य शण-बं०। राणताग-म०। A wild Indian Hemp (Crotalaria juncea.) वै० निघ०।

अम्लफलः amla-phalah-सं० पुं० आम्रवृक्ष, आम। The mango tree (Mangifera Indica) रा० नि० व० ११। तिन्तिडीक। नीबू भेद।

अम्लफलम् amla-phalam-सं० क्लीं० वृक्षाम्ल। विषांविल-हिं०। तेंतुल-बं०। रा० नि० व० ६।

अम्लफला amla-phalá–सं० स्त्री० कत्थारिका। लघु कन्थारी-मह०। वै० निघ०।

अम्लबदरः amla-badarah–सं० पुं० अम्लकोलिका, खट्टा बेर। टक कुल-बं०। च० सू० ४ अ०।

अम्लबेल amla-bela–हिं० पुं० अम्ललता। गिदड़द्राक-पं०। अमलोलवा–सं० प्रां०। (Vitis trifolia.)

अम्लभेदनः amla-bhedanah–सं० पुं० (१) अम्लवेतस। (See--Amlavetasa.) रा० नि०। (२) चुक्र (Rumex Acetosella.)

अम्लमारीषः amla-márishah–सं० पुं० अम्लशाक विशेष। अम्बल नटिया-बं०। सारा-हिं०। गुण—अम्लमारीष दोष कोपकारक, मधुर तथा पटु है। वै० निघ०।

अम्लमूलकम् amla-múlakam–सं० क्लीं० व्युषित अर्थात् बासी (धरी हुई) काँजी में पकाई हुई मूली। प० प्र० ३ ख०। च० द० संग्रहणी वृहच्चुक्र। "व्युषितं काञ्जिकं पक्वं मूलकं त्वम्लमूलकम्।"

अम्लमेहः amla-mehah–सं० पुं० पित्तजन्य मेहरोग भेद। पित्त प्रमेह। इसमें रोगी अम्लरस-गंधयुक्त पेशाब करता है। सु० नि० ६ अ०। "अम्लरस गन्धमम्ल मेही।"

अम्लरङ्गेच्छु श्वेताणु amla-rangechchhu-shvetáṇu–हिं० संज्ञा पुं० इओसिनोफाइल ल्युकोकाइट (Eosinophile leucocyte) –इं०। रक्त में पाए जाने वाला एक प्रकार का श्वेताणु। ये कण बहुरूपी मींगी वालों से कुछ बड़े होते हैं। इन कणों की मींगी या तो गोल होती है या नाल की भाँति मुड़ी हुई। कभी कभी इसके कई टुकड़े होते हैं जो एक दूसरे से तारों द्वारा जुड़े रहते हैं। इनके प्रोटोप्लाज़्म (जीवोज) में बहुत मोटे मोटे दाने होते हैं जिनमें यह गुण है कि जब कण इओसीन (एक प्रकार का रंग है। इसकी प्रतिक्रिया अम्ल होती है) आदि अम्ल रंगों में रँगे जाते हैं तो ये खूब गहरा रंग पकड़ते हैं। इन कणों के लिए अम्ल-रंगेच्छु शब्द का प्रयोग इसी कारण होता है। इन कणों की संख्या प्रति सैकड़ा २ से ४ तक होती है। ह० श० र०।

अम्लरुहा amla-ruhá–सं० स्त्री० मालव देश प्रसिद्ध नागवल्ली भेद, ताम्बूल भेद। गुण—यह रुचिकारी, दाहघ्नी, गुल्महरी, मदकरी, अग्निबल-बर्द्धिनी और आध्मान नाशिनी है। रा० नि०।

अम्ललता amla-latá } --सं० स्त्री०
अमललता amala-latá } अम्लबेल, अमलोलवा–हिं०। गिदड़द्राक-पं०। (Vitis Carnosa. *Wall.*) फा० इं० १ भा०।

अम्ललोणिका amla-loṇiká } सं० स्त्री०
अम्ललोणी amla-loṇí } (१) लोणी विशेष। पर्याय—चाङ्गेरी, चुक्रिका, दन्तशठा,

अम्बष्ठा (अ)। चांगेरी। आमरूल शाक-बं०। चुका-म०। (Oxalis Corniculata.)

गुण—दीपन, रुचिकारी, कफवात नाशक, पित्त कारक और खट्टी है तथा ग्रहणी, अर्श, कुष्ठ और अतिसार का नाश करने वाली है। भा० पू० १ भा०।

मात्रा—२-३ मा०। देखो—चाङ्गेरी।

(२) चुक्र, पालङ्क विशेष। चुका पालङ्-बं०। (Rumex monadelpha) रा० मा०।

(३) अमलोनी-हिं०। खुर्फा, कुल्फा-अ०। (Portulaca oleracea, *Linn.*) देखो--लोणी।

अम्लराज amla-rája—हिं० पुं० (Aqua rigia.) लवणाम्ल और नत्रिकाम्लका मिश्रण, जो अत्यन्त बलवान् धातुद्रावक है, अम्लराज कहलाता है।

अम्लवती amla-vatí-सं० स्त्री० (१) चाङ्गेरी। आमरुल-बं०। (Oxalis corniculata) रा० नि० व० ५। (२) क्षुद्राम्लिका। खुदेगुनी-बं०।

अम्लवर्गः amla-vargah—सं० पुं० अम्लवर्ग की ओषधियाँ निम्न हैं, यथा (१) चांगेरी, (२) लकुचा, (३) अम्लवेतस, (४) जम्बीरक, (५) बीजपूरक (बिजौरा नीबू), (६) नागरंग (नारंगी), (७) दाड़िम (अनार), (८) कपित्थ (कैथ), (९) अम्लवीज (१०) अम्लका, (११) अम्बष्ठा, (१२) करमर्दक, (१३) तिन्दुक, (१४) कोल (बेर) और (१५) तिन्तिड़ी। देखो–रा० नि० व० २२। "अम्बष्ठा सहितं द्विरेतदुरितं पञ्चाम्लकं तद्द्वयं, विज्ञेयं करमर्दनिम्बुकयुतं स्यादम्लवर्गाह्वयम्।" रसेन्द्रसारसंग्रह के लेखक के मतानुसार अम्लवर्ग की ओषधियाँ निम्न हैं, यथा-(१) अम्लवेत, (२) जम्बीर, (३) लुंगाम्ल (मातुलुंग), (४) चणक, (५) अम्लका, (६) नारंगी, (७) अमली, (८) चिञ्चाफल, (९) निम्बुक, (१०) चांगेरी, (११) दाड़िम और (१२) करमर्द। र० सा० सं०।

अम्लवल्ली,-ल्लिका amla-vallí,-llika—सं० स्त्री० त्रिपर्णीकन्द। See--Triparṇí-kanda.

अम्लवाटकः amla-váṭakah—सं० पुं० आम्रातक, अम्बाड़ा। आंबाड़ा-मह०। (Spondias mangifera) वै० निघ०।

अम्लवाटा amla-váṭá
अम्लवाटिका amla-váṭiká
अम्लवाटी amla-váṭí } -सं० स्त्री०

अम्लरस युक्त नागवल्ली भेद, खट्टा रस युक्त पान। अंबाडे पर्ण-मह०। अम्लरस विशिष्ट पान विशेष -बं०। रा० नि० व० ११। गुण-अम्ल, तिक्त, कटुरस युक्त, रूक्ष व उष्ण वीर्य, मुख पाक करने वाली, विदाहिनी, रक्त पित्त कुपित करने वाली, विष्टम्भ करने वाली, और वायु नाशिनी है। रा०। देखो-नागवल्ली।

अम्लवातकः,-वाड़कः amla-vátakah,-vádakah-सं० पुं० आम्रातक, अम्बाड़ा। (Spondias mangifera)

अम्लवाष्पः amla-váshpah-सं० पुं० चांगेरी, चुका। (Oxalis corniculata) वै० निघ०।

अम्लवास्तु (स्तू) कम् amla-vástu,-stú-kam-सं० क्ली० चुक्र नामक पत्रशाक। अम्लवेतुया, टांगा बतो-बं०। रा० नि० व० ७।

अम्लविदुलः amla-vidulah-सं० पुं० अम्लवेतस। (Rumex vesicarius) वै० निघ०।

अम्लविवेक amla-viveka-हिं० पुं० (Tests of acids.) अम्लपरीक्षा। देखो—एसिड।

अम्लवीजम् amla-víjam-सं० क्ली० वृक्षाम्ल, तिन्तिड़ी। रा० नि० व० ६।

अम्लवृक्षं,-कम् amla-vriksham,-kam -सं० क्ली०, पुं० वृक्षाम्ल, तिन्तिड़ी। भा० पू० १ भा०।

अम्लवेतसः(कः) amlavetasah,-kah
सं० पुं०, क्ली०
अम्लवेत amlaveta-हिं० संज्ञा पुं०

अमलबेत, अम्लबेत। यह एक प्रकार की लता है जो पश्चिम के पहाड़ों में होती है और जिसकी सूखी हुई टहनियाँ बाजार में बिकती हैं। ये खट्टी होती हैं और चूरणमें पड़ती हैं। (२) चुक्र। चुके का शाक, चुक पालक। चुकापालङ्-बं०। (Rumex acetosella) प०मु०। (३) अम्ललोणा। (Oxalis corniculata.) च० द० काङ्काय० गु०। (४) स्वनामाख्यात क्षुप विशेष। एक मध्यम आकारका पेड़ जो बागों में लगाया जाता है। च० द०। च० द० उ० चि०। "सिन्धुत्थयूषणैः साम्लवेतसैः"। च० सू० २ अ०।

संस्कृतपर्याय—अम्लः, वेधिः, रसाम्लः, आम्लवेतसः, वेतसाम्लः, अम्लसारः, शतवेधी, वेधकः,भीमः,भेदनः, अम्लांकुशः, भेदी, राजाम्लः, अम्लभेदनः, रक्तसारः, फलाम्लः, अम्लनायकः, सहस्रवेधी, वीराम्लः, गुल्मकेतुः, वराभिवः, शंखद्रावी(वि), मांसद्रावी (रा), वरांगी (र), चुक्रः (अ), गुल्महा, रक्तस्रावि, सहस्रनुत।

अमलबेद, अमलवे (बे) त (स), थैकल -हिं०। थैकल (ड़)-बं०। चूका-मह०। अम्लवेत-गु०। तुर्षक-फा०। रयुमेक्स वेसिकेरियस (Rumex vesicarius, *Linn.*), रयुमेक्स क्रिस्पस (Rumex crispus) -ले०। कण्ट्री या कॉमन सॉरेल (Country or Common sorrel)-इं०।

अम्लवेतसवर्ग

(*N. O. Polygonaceæ*).

उत्पत्ति-स्थान—भारतवर्ष (कोच विहार)।

वानस्पतिक-वर्णन—एक मध्यम आकार का पेड़ जो फल के लिए बागों में लगाया जाता है। पत्र बड़ा, चौड़ा और कर्कश होता है। अषाढ़ में इसमें पुष्प लगते हैं। पुष्प सफेद होता है। शरत् काल में फल पकते हैं। फल गोल नाशपाती के आकार के, किन्तु उसकी अपेक्षा दुगुने वा तिगुने बड़े कच्चे पर हरिद्वर्ण के और पकने पर पीले और चिकने होते हैं। इसको थैकल कहते हैं। इस फल की खटाई बड़ी तीक्ष्ण होती है। इसमें सूई गल जाती है। यह अग्निसंदीपक और पाचक है, इस कारण यह चूरण में पड़ता है। यह एक प्रकार का नीबू है।

कोचविहार राज्य में सर्वत्र अम्लवेतस के वृक्ष प्रचुर मात्रा में उत्पन्न होते हैं। राजनिघण्टुकार ने यथार्थ ही लिखा है, "भोट देशे प्रसिद्धम्"। हमारे देश में जिस प्रकार आम को काट सुखाकर रखते हैं उसी प्रकार कोचविहारमें वहाँ के निवासी अमलवेत के पके फल (थैकल) को काट सुखा कर रखते हैं। कोई कोई इस प्रकार सुखाए हुए थैकल को दीर्घकाल तक सर्षप तैल में भिगो कर रखते हैं। और इस तैल को वायु प्रशमनार्थ प्रयोगमें लाते हैं। शुष्क थैकल बहुत चिमटा होता है और सहज में चूर्ण नहीं होता।

प्रयोगांश—फल।

प्रभाव तथा उपयोग

आयुर्वेदीय मतानुसार—

अमलवेत कसैला, कटु, रूक्ष, उष्ण है तथा प्यास, कफ, वात, जन्तु, अर्श, हृद्रोग, अश्मरी और गुल्म को जीतता है। (धन्वन्तरीय निघण्टु)

अम्लवेत अत्यम्ल, कषैला एवं उष्ण है और वात, कफ, अर्श, श्रम, गुल्म तथा अरोचक का हरण करने वाला है तथा भोट देश में प्रसिद्ध है। (रा० नि० व० ६)

अत्यन्त खट्टा, भेदक, हलका, अग्निवर्द्धक, पित्तजनक, रोमांचकारक और रूक्ष है। इसके सेवन करने से हृद्रोग, शूल, गुल्म रोग, मूत्रदोष, मलदोष, प्लीहा, उदावर्त्त, हिचकी, अफरा, अरुचि, श्वास, खाँसी अजीर्ण, वमन, कफजन्य रोग और वातव्याधि दूर होती है। इससे बकरे का माँस पानी हो जाता है (अर्थात् यह छागमांस द्रावक है), और जिस प्रकार चणकाम्ल (चने के तेजाब वा क्षार) में लोहे की सूई गल

जाती है उसी प्रकार इसमें भी सूई डालने से सूई गल जाती है। (भा० पू० १ भा०)

अत्यन्त खट्टा, अफरा और कफ तथा वात नाशक है। यही पका हुआ (पक्कफल) दोषघ्न, श्रमघ्न, ग्राही और भारी है। (राज०)

अम्लवेतस के वैद्यकीय व्यवहार

चरक — भेदनीय, दीपनीय, अनुलोमक एवं वातश्लेष्मप्रशमक द्रव्यों में अम्लवेत श्रेष्ठ है। (सू० २५ अ०)। **वङ्गसेन**—प्लीहा में अम्लवेतस—सहिंजन की जड़ की छाल का सैंधवयुक्त क्वाथ प्रस्तुत कर उसमें बहु थैकल चूर्ण एवं अल्प पीपल व मरिच का चूर्ण मिश्रित कर प्लीहोदरी को सेवन कराएँ। (उदर चि०)

वक्तव्य

चरकमें अम्लवेतस का पाठ हृद्यवर्ग के अन्तर्गत आया है (सू० ४ अ०)। चरक के गुल्म चिकित्साधिकार में द्रव्यान्तर से अम्लवेतस का बहुशः प्रयोग आया है। यथा—(१) "पुष्कर व्योष धान्याम्लवेतस"—। (२) "तिन्तिडीकाम्लवेतसैः"। (३) "शटी पुष्कर हिंग्वम्लवेतस"—(चि० ५ अ०)। सुश्रुतोक्त गुल्म चिकित्साधिकार में अम्लवेतस का बारम्बार उल्लेख दिखाई देता है। यथा—(१) "हिंगु सौवर्चल * * अम्लवेतसैः। (२) "हिंग्वम्लवेतसाजाजी"— (उ० ३२ अ०)। अग्निमान्द्याधिकार के प्रसिद्ध "भास्करलवण" में अम्लवेतसका पाठ आया है।चक्रदत्तोक्त गुल्माधिकार में "हिंग्वाद्य चूर्ण", "काङ्कायन गुड़िका" तथा "रसोनाद्यघृत" आदि योगों में अम्लवेतस व्यवहार में आया है।

नोट—जिन प्रयोगों में अम्लवेतस व्यवहृत हुआ है उनमें आजकल प्रायः वैद्य उपर्युक्त नं०१ में वर्णित लकड़ीका ही व्यवहार करते हैं; क्योंकि बाज़ारों में अमलबेत के नाम से प्रायः यही ओषधि उपलब्ध होती है। यह शास्त्रोक्त अम्लवेतस नहीं, अपितु कोई और ही पदार्थ है। अस्तु, उपर्युक्त नं० ४ में वर्णित अम्लवेतस (अर्थात् उसका शुष्क फल) ही औषध कार्य में लाना उचित है।

नव्यमत समालोचना

अम्लवेतस, चांगेरी, अम्ललोणी, लोणी और चुक्र ये पाँचों अम्ल द्रव्य हैं। अस्तु, प्राचीन अर्वाचीन दोनों प्रकार के लेखकों ने इनका परस्पर एक दूसरे के स्थान में उपयोग कर इन्हें भ्रमकारक बना दिए हैं। प्रायः सभी जगह ऐसा किया गया है। जहाँ अम्ललोणी का वर्णन आया है वहीं उसके परियाय स्वरूप "चांगेरी" और "चुक्र" आदि संज्ञाएँ भी व्यवार में लाई गई हैं। उसी प्रकार जहाँ अम्लवेतस का वर्णन दिया है वहीं पर शेष तीन संज्ञाएँ भी व्यवहृत हुई हैं। इसी प्रकार शेष भी जानना चाहिए। ऐसे अवसर पर उक्त संज्ञाओंको अपने अपने स्थानों पर मुख्य और शेष को गौण समझना चाहिए।

डॉक्टर उदयचाँद एवं रॉक्सबर्ग दोनों ही ने अम्लवेतस का बंगला नाम "चुकापालङ्" लिखा है। परन्तु ध्यानपूर्वक विचारकरनेसे यह ज्ञात होता है कि उदयचाँद ने अम्लवेतस का उल्लेख ही नहीं किया है। अम्लवेतस के अर्थ में उनका किया हुआ चुक्र का प्रयोग गौण है। चुक्र का मुख्य अर्थ चुकापालङ्क है। यदि उदयचाँदोक्त संस्कृत नाम चुक्र एवं बंगला नाम चुकापालङ् को ठीक मान लिया जाए तो उसका लेटिन नाम अशुद्ध रह जाता है और यदि लेटिन नाम को ठीक रक्खा जाए तो संस्कृत आदि नाम अशुद्ध रह जाते हैं। अतः उसको अम्लवेतस ही कहना उचित है; किन्तु बंगला नाम थैकल अवश्य लिखना चाहिए।

यूनानी मत से—प्रकृति–सर्द व तर। हानिकर्त्ता–वायुवर्द्धक तथा कफकारक। **दर्पघ्न**—काली मरिच, लवण और अदरक। **प्रतिनिधि**—खट्टा तुरञ्ज आवश्यकतानुसार। **मात्रा—एक अदद। मुख्य प्रभाव–रक्त व पैत्तिक व्याधियों को लाभदायक है।**

गुण, कर्म, प्रयोग—(१) प्रायः हृद्रोगों को लाभप्रद है, (२) पित्त का छेदन करता, (३) पाचनकर्त्ता, (४) आमाशय को मृदु-करता, (५) क्षुद्बोधकर्त्ता, (६) रक्तोष्मा को

प्रशमन करता, (७) बावगोला की वायु को लाभकरता और (८) उदरशूल को लाभप्रदान करता है, (६) यदि अजवायन खुरासानी को सेंधानमक के साथ सात बार इसके अर्क में तर करके सुखा लें तो प्रायः वातज तथा उदरीय व्याधियों को लाभप्रद है और इसका चूरन सम्मिलित करना और भी गुणदायक है, (१०) लवंग, काली मरिच, लवण, अजवायन और अदरक को कूटकर इसमें छिद्रकर भर दें और सूर्यतापमें रखें। दो चार दिन तक उसे लकड़ी से चलाते रहें। सूख जाने पर इसको चूर्ण कर रखें। इसके सेवन से यह क्षुधा की वृद्धिकर्त्ता, आहार का पाचनकर्त्ता और प्लीहा को लाभ करता है। म० मु०। बु० मु०।

अम्लवेद amlaveda-हिं० पुं० अम्लवेत। See--amlaveta

अम्लवेदसः amla-vedasah-सं० पुं० चुक्र। चुक्र-हिं०, बं०, द०। See--chukra

अम्लशाकम् amla-ṣhákam-सं० क्लीं० (१) वृक्षाम्ल, तिन्तिड़ी -हिं०। तेंतुल-बं०। रा० नि० व० ६। -पुं० (२) चुक्र नामक पत्र शाक, चूका -हिं०। अम्लकुचाइ, कट पालङ्, चुका पालङ्-बं०।

संस्कृत पर्य्याय—शाकाम्लं, शुक्राम्लः, अम्लचूक्रिका, चिञ्चाम्लं, अम्लचूड़ः, चिञ्चासारः।

गुण—अत्यंत खट्टा, वातनाशक, दाह तथा कफनाशक है। शर्करा के साथ मिलाकर सेवन करने से यह दाह, पित्त, तथा कफनाशक है। रा० नि० व० ७।

अम्लशाकाख्यम् amla-ṣhákákhyam-सं० क्लीं० चुक्र नामक पत्र शाक, चूका। थोर चुका -मह०। (Rumex Acetosella). रा० नि० व० ७।

अम्लष्टा amlashṭá-सं० स्त्री० चांगेरी। आंबोती -मह०। (Oxalis corniculata).

अम्लस amlas-अ० समधरातल, सादा, हमवार, चिकना, वह वस्तु जिसका धरातल सम तथा चिकना हो। सॉफ् (Soft)-इं०

अम्लस amlas-गन्धोक-बं०। गंधक आमलासार। See--gandhaka.

अम्लसरा amla-sará-सं० स्त्री० नागवल्ली भेद, पान। (A sort of betel-leaf) रा० नि० व० ६।

अम्लसारः amla-sárah-सं० पुं०
अम्लसार amla-sara-हिं० संज्ञा पुं०
अम्लवेतस, अमलबेत। (Rumex vesicarius) रा० नि० व० ६। (२) निम्बुक, नीबू। (Citrus medica) रा० नि० व० ११। (३) हिन्ताल (Hintála) रा० नि० व० ६। (४) चूक, चुक्र। (५) आमलासार गंधक।

अम्लसारं,-कम् amla-sáram,-kam-सं० क्लीं०
अम्लसार amla-sára-हिं० संज्ञा पुं०
काँजी। काञ्जिक। चुक्र नामक काञ्जिक भेद। रा० नि० व० ५। See-kánjika.

अम्लस्कंधः amla-skandhah-सं० पुं० अम्लरसान्वित द्रव्य समूह अर्थात् अम्लवर्ग की ओषधियाँ। वे निम्न हैं—(१) आमला, (२) इमली, (३) बिजौरा, (४) अम्लवेत, (५) अनार, (६) चाँदी, (७) तक्र, (८) चूका, (६) पारेवत, (१०) दही, (११) आम, (१२) अम्बाड़ा, (१३) भव्य, (१४) कैथ और (१५) करौंदा। इनके सिवा कोशाम्र, लकुच, कुवल, झाड़ी बेर, बड़ा बेर, दही का तोड़ आदि द्रव्य अन्य ग्रन्थकारों के मतानुसार अम्लवर्ग की ओषधियों के साथ वर्णित हैं। वा० सू० १० अ० श्लो० २६।

अम्ल स्तम्भनिका amla-stambbaniká-सं० स्त्री० तिन्तिड़ी, अमली, अम्लिका। (Tamarindus Indica.) वै० निघ०।

अम्लहरिद्रा amla-haridrá सं० स्त्री० (१) शठी, कचूर। (Curcuma zedoaria) रा० नि० व० ६। (२) अम्बाहलदी, आँबाहलदी, आम्रहरिद्रा। (Curcuma amada).

अम्ला amlá-सं० स्त्री० (१) चांगेरी। आमरूल-बं०। (Oxalis Corniculata.)

रा० नि० व० ५ । (२) वनमातुलुङ्ग (Citrus medica) । (३) अम्लवेतस । (Rumex vesicarius.) रा० नि० । व० ६ । (४) श्रीवल्ली वृक्ष । वर्षा मल्लिका -बं० । रा० नि० व० ८ । (५) तिन्तिड़ी, अमली, अम्लिका । (Tamarindus Indica.) रा० नि० व० ११ । भा० पू० १ भा० फल व० ।

अम्लाङ्कुशः amlánkushah-सं० पुं० अम्लवेतस । (Rumex vesicarius.) रा० नि० व० ६ ।

अम्लाटनः amlátanah-सं० पुं० महासहा वृक्ष । कटसरय्या, लालगुलमक्खन-हिं० । झाँटी विशेष-बं० । आयनाट्-द० । बाणपुष्प- गौड़ । भाषा में आयना कहते हैं । (Barleria Prionitis, *Linn.*).

गुण—कसेला, मधुर, तिक्त, उष्णवीर्य तथा स्निग्ध है । भा० पू० १ भा० पु० व० । ४ ख० म० भा० योनिरो० चि० । चि० क्र० क० वल्ली० गर्भवेदनाहर योगान्तर्गत ।

अम्लाढ्यः amládhyah-सं० पुं० करुण निम्बुक, नारंगी । नारांगा लेबुर-गाछ-बं० । प० मु० ।

अम्लातः,-कः amlátah;-kah-सं० पुं० अम्लाटन वृक्ष । See-amlátanah. । भा० पू० १ भा० पु० व० ।

अम्लातकी amlátakí-सं० स्त्री० पलाशीलता । रा० नि० । See-Paláshí.

अम्लादानः amládánah-सं० पुं० कुरण्टक वृक्ष । कटसरय्या, पीयाबाँसा । बाणपुष्प- गौड़ । (Barleria prionitis, *Linn.*)

अम्लादिः amládih-सं० पुं० (१)तिन्तिड़ी, अमली, अम्लिका । (Tamarindus Indica.) रा० नि० व० ६ । (२) चुक नामक पत्र शाक । (Country sorrel.) रा० नि० व० ७ ।

अम्लाध्युषितः amlá-dhyushitah-सं० पुं०, क्ली०
अम्लाध्युषित (रोग) amládhyushita-हिं० संज्ञा पुं०

(१) सर्वगताक्षि रोग ।

लक्षण—इस रोग में आँखों के बीच का भाग नीला और किनारे लाल हो जाते हैं । कभी कभी आँखें पक भी जाती हैं; उनमें सूजन, दाह और पीड़ा होती है और पानी बहा करता है । अम्ल अर्थात् खटाई आदि के अधिक सेवन द्वारा होने के कारण इसको अम्लाध्युषित कहते हैं । मा० नि० ।

(२) करुण निम्बुक, मीठा शरबती नीबू । Citrus decumana. (Sweat lime.)

अम्लानः amlánah-सं० पुं० (१) बन्धुजीवक वृक्ष । बान्धुली वृक्ष-बं० । (Gomphrena globosa.) त्रिका० । (२) झिण्टिका भेद, कटसरय्या । (Barleria prionitis, *Linn.*) विश्व० । (३) अम्लाटन वृक्ष । आयना-बं० । See-amlátana । भा० म० ४ भा० योनिरो० चि० । (४) महासहा । मे० नत्रिकं । (५) महाराज तरणी वृक्ष । रा० नि० व० १० ।

अम्लानम् amlánam-सं० क्ली० पद्म, कमल । (Nymphaea nelumbo.) श० र० ।

अम्लानक amlánaka
अम्लान्तक amlántaka
-सं० पुं० कटसरय्या, बाणपुष्प । (Barleria prionitis, *Linn.*)

अम्लाना amláná-सं० स्त्री० महासेवती पुष्प-वृक्ष । बड़ बन सेउती-बं० । थोर राणसेवंती -मह० । वै० निघ० ।

अम्लानिनी amlániní-सं० स्त्री० पद्म समूह । पद्मिनी । (Nymphæa lotus.) त्रिका० ।

अम्लाम्ना amlámná-सं० स्त्री० चांगेरी । (Oxalis monadelpha.)

अम्लायनी amláyaní-सं० स्त्री० मल्लिका भेद। नेवारी हिं०। नेवाली-मह०। वै० निघ०।

अम्लावल amlávala-सं० अमली, चिञ्चा, अम्लिका। (Tamarindus indica).

अम्लिका amliká-सं० स्त्री०, हिं० संज्ञा स्त्री० (१) आम्र, आम। (Mangifera Indica) रा० नि० व० ३। (२) पलाशी लता (Paláshí)। (३) माचिका, मोइया। रा० नि० व० २३। (४) अम्लोद्गार, खट्टा डकार। मे०। (५) अमला (Phyllanthus emblica)। (७) श्वेताम्लिका। (८) चाङ्गेरी। (Rumex Corniculata) रा० नि० व० २३। (९) अर्श रोग में तिन्तिड़ी अर्थ में और सर्वत्र दीपन और पुरीषसंग्रहणादि योगों में अम्लिका श्यामच्छद एवं वृन्दारक के अर्थोंमें प्रयुक्त हुई है। सि० यो० अग्निमुख चूर्ण वृन्द। सि० यो० अरोचक चि०। (१०) अमली, अम्बली, इमली, कटारे-हिं०। अम्ली, आम्ली का बोट, अम्बली-द०। चिञ्चा, अम्लिका (अ०), तिन्तिड़ीकः, तिन्तिड़ीका, तिन्तिड़िकं, अम्लीका, आम्लिका, आम्लीका, तिन्तिलीका (अ० टी०), वृक्षाम्लं, तिन्तिड़ि: (वै०), तिन्तिली, तिन्तिड़िका, आम्लिका, चुक्र:, चुक्रा, चुक्र, अम्ला, अत्यम्ला, भुक्रा, भुक्रिका, चारित्रा, गुरुपत्रा, पिच्छिला, यमदूतिका, चरित्रा (शब्दर०), शाक चुक्रिका, सुचुक्रिका, सुतिन्तिड़ी, चुक्रिका, अम्ली, दंतशठा, चिंचिका-सं०। तेंतुल, तेंतुल गाछ (वं० श०), तिंतुरी, आम्ली, तेंतै (स० फा० इं०)-बं०। तमर(म्)रे हिंदी, हुमर, हूमर, सबारा (स० फा० इं०), हबारा, जोश-अ०। अम्बलह्, तमरेहिंदी ख़ुर्मायेहिन्दी—फ़ा०। टैमूरिण्डस Tamarindus, टैमूरिण्डस इण्डिका (Tamarindus Indica. *Linn.*)-ले०। टैमूरिण्ड Tamarind-इं०। टैमूरिनिएर डी' इण्डी (Tamarinier de l'Inde.)-फ्रा०। टैमरिण्डी (Tamarindi)-जर०। पुलि, पुलियम-पज़म-ता०। चिण्ट-पण्डु, चिण्ट-चेट्टु-ते०। पुलियम-पज़म (स० फा० इं०), पुलि, पलम (इं० मे० प्लां०)-मल०। हुणिसे, हुणिसिनयले, हुणशेहण्णु-कना०। चिंच, चिंचोक, चिञ्चा, चिण्ट्ज, इमली-मह०। आम्बली, आम्बलीनु, चिंचोर-गु०। सियम्बुल-सिं०। मगि-बर्मी०। आसामजब (बीज)-मल०। कँआँ-उत्०, उड़ि०। करङ्गी-मैसू०। इमली-पं०। टिण्टज वम०। तेंतुलि-उड़ि।

शिम्बी वर्ग

(*N. O. Leguminosæ*)

उद्भव-स्थान—एशिया के बहुत से भाग, भारतवर्ष, बर्मा तथा अफरीका (मिश्र), अमेरिका और पूर्वीय भारतीय द्वीप।

संज्ञा-निर्णय—इसकी अंगरेज़ी वा लेटिन संज्ञा टैमरिण्डस इसकी अरबी संज्ञा तमरहिंदी से, जिसका अर्थ हिन्दी खजूर है, व्युत्पन्न है।

वानस्पतिक-वर्णन—इसके वृक्ष से प्रायः सभी लोग परिचित हैं। इसके वृक्ष बहुवर्षीय, विशाल एवं सशाख होते हैं। देखो—**इमली**।

नोट—वृक्षाम्ल और तिन्तिड़ी पृथक् पृथक् वृक्ष हैं। वैद्यक में इनके गुण-पर्याय पृथक् लिखे हैं। वृक्षाम्ल का पर्याय तिन्तिड़ी लिखा है, और तिन्तिड़ी के पर्यायों में वृक्षाम्ल शब्द का उल्लेख है। वृक्षाम्ल के वृक्ष उत्तर पश्चिमाञ्चल में विषाम्बिल (वृक्ष) नामसे प्रसिद्ध हैं। ये देखने में अत्यन्त शोभायमान होते हैं। पत्र दीर्घ एवं चिक्कण होते हैं। ये वसन्त ऋतु में फलते हैं। फल निम्बुक फलवत् होता है। वृक्षाम्ल नाम इसकी सर्वथा अन्वर्थ संज्ञा है। इस हेतु इसको "शाकाम्लं", "चूड़ाम्लं", "फलाम्लं" और "अम्लबीजं" कहते हैं। यह चतुराम्ल तथा पञ्चाम्ल का एक अवयव है। इसका वानस्पतिक वर्ग भी यही अर्थात् **वृक्षाम्ल** वर्ग (Guttiferæ) है।

इसके पर्याय निम्न हैं—

वृक्षाम्लं—सं०। विषा(पां)विल—हिं०। **अमसूल, कोकम-बम्ब०**। (Garcinia

purpurea, Roxb. or *Garcinia indica, Chois.*)। विस्तार हेतु देखो–वृक्षाम्ल (अमसूल)।

रासायनिक-संगठन—तिन्तिड़ी-फल-मज्जा में तिन्तिडिकाम्ल (टार्टारिक एसिड) ५%, निम्बुकाम्ल (साइट्रिक एसिड), सेवाम्ल (मैलिक एसिड), तथा शुक्राम्ल (एसेटिक एसिड), पांशु तिन्तिड़ित (टार्ट्रेट ऑफ़ पोटासियम) ८%, शर्करा २५% से ४०%, निर्यास और पेक्टिन प्रभृति होते हैं। बीजत्वक् (Testa) में कषायीन (टैनिकाम्ल), एक स्थिर तैल तथा अविलेय पदार्थ होते हैं। बीज में एल्ब्युमिनॉइड्स, वसा, कर्बोज ६३·२२ %, तन्तु और भस्म जिसमें स्फुर एवं नत्रजन होते हैं।

प्रयोगांश--फल (पक्व व अपक्व), मज्जा, बीज, पत्र, पुष्प, त्वक्, त्वक्भस्म क्षार।

औषध-निर्माण—अम्लिकापान, अम्लिकावटक (भा०), पत्रक्वाथ-मात्रा-५ से १० तो०, त्वक्क्षार-मात्रा-आध आना से एक आना भर।

इमली के गुणधर्म तथा उपयोग

आयुर्वेदीय मतानुसार—अमली अत्यन्त खट्टी, पित्तकारक, लघु, रक्तजनक, वात प्रशामक और परम वस्तिशोधक है। पक्की अमली मधुराम्ल, भेदक, विष्टम्भी और वातनाशक है। त्वक् भस्म कषेली, उष्ण, कफघ्न और वातनाशक है। (धन्वन्तरीय निघण्टु)

आम तिन्तिड़ी (कच्ची इमली) अत्यन्त खट्टी और पक्की इमली मधुराम्ल (खटमिट्ठी), वातघ्न पित्त, दाह, रक्त तथा कफ प्रकोपक है। इमली की कच्ची फली अत्यन्त खट्टी, लघु और पित्तकारक है। पक्व फल स्वाद्वाम्ल, भेदक तथा विष्टम्भ और वातनाशक है। अम्ल, कटु, कषाय, उष्ण तथा कफ व अर्श का नाश करने वाली है और वात, उदररोग, तृष्णा, हृद्रोग, यक्ष्मा, अतिसार तथा व्रण की नाशक है। रा० नि० व० ६।

पक्व चिञ्चाफल रस (पक्व अमली का रस)—मधुराम्ल (खटमिट्ठा), रुचिकारक, शोफ पाककर (सूजन को पकाने वाला) और इसका प्रलेप व्रणदोष विनाशक है। अमली के पत्र शोफघ्न, रक्तदोष तथा वेदनानाशक हैं। इसके शुष्क त्वक् का क्षार शूल तथा मन्दाग्नि नाशक है। रा० नि० व० ११।

अपक्व अमली गुरु, वातहर, पित्त, कफ और रक्त, नाशक है। पक्व रेचक, रुचिकारक, अग्निप्रदीपक और वस्तिशोधक है। शुष्क हृद्य, लघु, श्रम, भ्रान्ति, और पिपासाहर है। मद० व० ६।

आम खट्टी, गुरु, वातनाशक, पित्तकर्ता, कफवर्द्धक और रक्तदोषनिवारक है। पकी इमली अग्निप्रदीप्त कर्त्ता, रूक्ष, सर (दस्तावर) गरम और वातश्लेष्मनाशक है। भा० पू० १ भा०।

आम (कच्चीइमली) वातनाशक, उष्ण और अत्यन्त भारी है। पक्व लघु, संग्राही है तथा ग्रहणी और कफवातनाशक है। मद० व० ६।

अमली के पक्व फल के गुण में वृक्षाम्ल फल से थोड़ा अन्तर है। (चरक सू० २७ अ०)

इमली का फूल (चिञ्चा पुष्प) कषेला, स्वाद्वम्ल और रुचिकारक, विशद, अग्निजनक, लघु तथा वातश्लेष्मनाशक और प्रमेहनाशक है। पत्र शोथहर है। नूतन इमली वात श्लेष्मकारक और वही वार्षिकी अर्थात् एक वर्ष की (पुरानी) वातपित्तनाशक है। (निघंटु रत्नाकर)

तिन्तड़ी के वैद्यकीय व्यवहार

हारीत—शोथ पर तिन्तड़ी पत्र-तिन्तिड़ी पत्र द्वारा सिद्ध किए हुए अत्युष्ण जल में वस्त्रखंड भिगोकर किंवा पिसे हुए तिन्तिड़ी पत्र के उष्ण पिण्ड द्वारा शोथ को स्वेदन करें। यथा—"संस्वेदन क्रिया कार्य्यासा कार्य्या च पुनः पुनः। * अथवा तिन्तिड़ीच्छदैः"। (चि० २६ अ०)

चक्रदत्त—अरोचक में तेंतुल-(१) पकी इमली के शर्बत में गुड़ मिलाकर, मधु एवं दालचीनी, इलायची तथा मरिच चूर्ण द्वारा सुगन्धित कर मुख में इसका कवल धारण करने से अभक्त-

च्छन्द नामक अरोचक रोग प्रशान्त होता है। यथा—"अम्लिका गुड़तोयञ्च त्वगेला मरिचान्वितम्। अभक्तच्छन्द रोगेषु शस्तं कवड़ धारणम्।" (अरोचक-चि०)

(२) मसूरिका में तिन्तिड़ी पत्र-हलदी और इमली के पत्र को शीतल जल में पीसकर पान करें। यह वसन्त के पक्ष में हितकर है। यथा—"निशा चिञ्चाच्छदे शीतवारिपीते तथैव तु।" (मसूरिका-चि०)

(३) नव प्रतिश्याय में तिन्तिड़ी पत्र—नूतन कफ रोग में इमली के पत्ते का यूषपान श्रेष्ठ है। कफ परिपक्व हो गया ऐसा जानकर इसके नस्य द्वारा शिरोविरेचन कराएँ। यथा—"नवे प्रतिश्याये। शस्तो यूषश्चिञ्चादलोद्भवः। ततः पक्वं ज्ञात्वा हरेच्छीर्ष विरेचनैः।" (नासारोग-चि०)

भावप्रकाश—गुल्म में चिञ्चाक्षार (१) तिन्तिड़ी वृक्ष के काण्ड के स्वयं शुष्क हुए त्वक् को अन्तर्धूम अग्नि द्वारा दग्ध करें। पुनः उससे यथाविधि क्षार प्रस्तुत कर उचित मात्रा में सेवन कराएँ। यह गुल्म तथा अजीर्ण में प्रशस्त है। यथा—"पलाश वज्रिशिखरी चिञ्चार्क तिलनालजा। यवजः स्वर्जिका चेति क्षारा अष्टौ प्रकीर्तिताः। एते गुल्महराः क्षारा अजीर्णस्य च पाचकाः।" (गुल्म-चि०)

(२) अस्थि भग्न वा अभिघातमें अम्लिका—कच्ची इमली को पीसकर कल्क प्रस्तुत करें, फिर उसको काँजी और तिल तैल में पकाकर प्रलेप करें। किसी अंग में आघातजन्य वेदना होने, किंवा अस्थिच्युत होने पर यह प्रलेप विशेष रूप से फलप्रद है। यथा—"अम्लिका फल कल्कैः सौवीर तैल मिश्रितैः स्वेदात्। भग्नाभिहत रुजाघ्नैः।" (भग्न-चि०)

वङ्गसेन--वातव्याधिमें तिन्तिड़ी पत्र-तालवृक्ष द्वारा उद्भिक्त तालरस में इमली के पत्र कोपीसकर सुहाता सुहाता उष्ण प्रलेप करने से वात रोगका नाश होता है। यथा—"तिन्तिड़ीक दलैः सिद्धं तालमण्डिकया सह। पिष्ट्वा सुखोष्णमालेपं दद्याद्वातरुजापहम्।" (वातव्याधि-चि०)

अम्लीकाफल—इमली के शुष्क फल संदीपक, भेदक, तृषाहर, लघु और कफ वात में पथ्य हैं एवं थकावट और क्लांति को दूर करते हैं। (वा० सू० अ० ६)। कच्ची इमली रक्तपित्त तथा आमकारक और विदाही है एवं वात व शूल रोग में प्रशस्त है। पक्व शीतगुणयुक्त है। (अत्रि० १७ अ०)

युनानी मतानुसार—

प्रकृति—द्वितीय कक्षा में शीतल व रूक्ष है; क्योंकि किञ्चित् संकोच के साथ इसमें अम्लत्व अत्यन्त बलिष्ठ है (नफ़ी)। किसी किसी के मत से १ कक्षा में शीतल और २ कक्षा में रूक्ष एवं किसी के मत से तीसरे में शीतल व रूक्ष है। कोई कोई इस को मातदिल लिखते हैं। हानिकर्त्ता—स्वर, कास, प्रतिश्याय और प्लीहा को एवं यह अवरोधजनक है। दर्पघ्न—खसखास, बनफ़्शा, उन्नाव और कुछ मधुर द्रव्य। प्रतिनिधि—आलूबोख़ारा(आरुक)। मात्रा शर्बत-४ से ५ वा ८ तो० तक। मुख्य प्रभाव—पित्त एवं रक्त की उल्बणता का शमन करने वाला और प्रकृति को मृदुकर्त्ता है।

गुण,कर्म,प्रयोग—अपनी लज़ूजत (पिच्छिलता) और अम्लता के कारण इमली रतूबतों (प्रक्लेद) का छेदन करती है, पित्त के विरेक लाती और अपने शोधक व संग्राही गुण के कारण आमाशय को बल प्रदान करती है। इसमें संशोधक शक्ति विरेचक शक्ति के कारण आती है। अपनी शीतलता के कारण पिपासाहर है और अपनी संग्राही शक्ति से वमन का निरोध करती है; विशेषतः जब इसका प्रपानक वा हिम उपयोग में लाया जाता है। परन्तु, भिगोकर बिना मले छान कर इसका पानक प्रस्तुत करना श्रेष्ठतर है या वैसे ही ज़ुलाल लेकर शर्करा योजित कर पान करें। क्योंकि मलने पर यह ऐसा कुस्वाद हो जाता है कि वमन आने लगते हैं। (त० न०)

मीर मुहम्मद हुसैन—स्वरचित मख़ज़नुल्अद्वियह् नामक ग्रंथ में लिखते हैं—इमली

दो प्रकार की होती है—(१) लाल और (२) भूरे रंग की। इन दोनों में लाल जाति की उत्तम होती है। इसलामी हकीम इमली के गूदे को हृद्य, संग्राही, खुलासा दस्त लाने वाला, पैत्तिक वमनावरोधक, रेचन द्वारा पित्त एवं विदग्ध दोषों से शरीर को शुद्ध करने वाला मानते हैं। जुलाब लाने को जब इसका उपयोग करना हो तब इसके साथ अन्य प्रवाही बहुत थोड़े देने चाहिए। कंठक्षत में इमली के पानी के कुल्ले करने से लाभ होता है। बीज को उत्तम संग्राही बतलाया जाता है तथा उबाल कर विस्फोटक पर इसका उत्कारिका (Poultice) रूप में उपयोग किया जाता है। जल में पीस कर कास तथा काग लटक आने में इसको शिर की चँदिया पर लगाते हैं। इसके पत्र को जलके साथ कुचल कर दबाकर रस निकालने से एक प्रकार का अम्ल द्रव प्रस्तुत होता है। इसको पैत्तिक ज्वर एवं मूत्र-दाह में लाभप्रद बतलाया जाता है। प्रादाहिक शोथों तथा वेदनाके निवारणार्थ इसकी उत्कारिका उपयोग में आती है। नेत्राभिष्यन्द में आँख पर इसके पुष्प की पुल्टिस बाँधते हैं। पुष्पके रस का रक्तार्श में आन्तरिक उपयोग होता है। इसके वृक्ष की छाल ग्राही और पाचक ख़याल की जाती है। (मख़्ज़नुल् अद्वियह्)

देशी लोग इसके वृक्ष का पवन स्वास्थ्य को हानिप्रद मानते हैं। कहते हैं कि इमली के वृक्ष के नीचे तंबू बहुत दिन रखने से उसका कपड़ा सड़ जाता है। यह भी कहा जाता है कि उसके वृक्षके नीचे अन्य पौधे भी नहीं उगते। परंतु यह सर्वव्यापक नियम नहीं। क्योंकि हम लोगों ने उसके नीचे चिरायता एवं अन्य छाया प्रेमी पौधों को प्रायः उत्पन्न होते हुए देखे हैं। (डीमक्-फा० इं० १ भा०)

हृदय और आमाशय को बल प्रदान करता, हृल्लास को शमन करता, मूर्च्छाहर, शिरोशूल को लाभप्रद और संक्रामक वायु के विष को दूर करता है। इसके बीज संग्राही और वीर्यस्तम्भक हैं। ख़ुनाक़ में इसके पत्र के क्वाथ का गण्डूष कराना लाभप्रद है। शुक्रसांद्रकर्ता और योनिसंकोचक है। इसकी छाल पीस कर छिड़कने से व्रणपूरण होता है। (मु० मु०, बु० मु०)

एलोपैथिक मेटीरिया मेडिका तथा तिन्तिड़ीफलमज्जा

एलोपैथी चिकित्सा में एक तिन्तिड़ी-फल-मज्जा औषधार्थ व्यवहारमें आती है। यह बिगड़े नहीं, इस हेतु, इसमें शर्करा मिलाकर रखते हैं। अम्लिका द्वारा प्राप्त अम्ल (तिन्तिड़िकाम्ल) अर्थात् टार्टारिक एसिड (Tartaric acid) भी डॉक्टरी चिकित्सा में व्यवहृत है। अस्तु, देखो-एसिडम टार्टारिकम्। यह दोनों ही उक्त चिकित्सा प्रणाली में ऑफ़िशल हैं। इनमें से प्रथम अर्थात् इमली के फलके गूदे का यहाँ वर्णन किया जाता है।

मिश्रण—यूरोप में कभी कभी इसमें ताम्र चूर्ण का मिश्रण कर देते हैं।

यह पड़ती है—कन्फ़ेक्शियो सेनी के ७५ भाग में ६ भाग।

प्रभाव—लैक्सेटिव (कोष्ठमृदुकर) तथा रेफ्रिजेरण्ट (शैत्यकारक)। मात्रा–$\frac{1}{2}$ से १ आउंस वा अधिक।

प्रभाव तथा उपयोग

अकेले इसका क्वचित ही उपयोग होता है। एक आउंस की मात्रा में यह कोष्ठमृदुकर है। इससे आन्त्रीय कृमिवत् आकुञ्चन की वृद्धि होती है। इसको शैत्यकारक बतलाया जाता है और टैमरिण्ड ह्वे (Tamarind whey) या अम्लिकावारि रूप में कभी कभी ज्वरों में इसका उपयोग किया जाता है। विधि—थोड़े गरम पानी में २॥ तो० इमली का गूदा मिलाकर फांट प्रस्तुत कर उसमें चौथाई दुग्ध मिलाएँ। वानस्पतिक, सेब और निम्बुक प्रभृति अम्लों की विद्यमानता के कारण इसका शैत्यकारक प्रभाव होता है।

अन्य मत

ज्वर में इमली का पन्ना (अम्लिकापान) देने से तृषा कम हो जाती है और किसी प्रकार चित्त को शांति लाभ होता है। बालकों के मलावरोध में इसका मुरब्बा विशेष रूपसे लाभदायक होता है। (म० अ० डॉ० २ भा०)।

मदात्यय एवं धुस्तुरजन्य उन्मत्तता में इमली के फल का गूदा हितकारक है। फलत्वक्भस्म का उक्त प्रकार की अन्य औषधों के साथ क्षारीय द्रव्य रूप से औषधीय उपयोग होता है। (दृष्ट हिन्दू मेटीरिया मेडिका)।

धतूर प्रभृति के वेग उतारने के लिए खजूर, द्राक्ष, इमली का गूदा, अनारदाना, फालसे और आमले सबको सम भाग ले तथा बारीक पीस और इनमें चतुर्गुण पानी मिला औटाकर काढ़ा प्रस्तुत कर उपयोग करना चाहिए।

मात्रा—१ छ० (२ आउंस) च० द०।

जिस औषध के साथ यह दी जाती है उसके प्रभाव को बढ़ा देती है। परन्तु शोरा रेवन्दचीनी के साथ इसके मिलाने से उसका प्रभाव कम हो जाता है।

कभी कभी इमली के वृक्ष से एक प्रकार का तरल स्राव होता है, जिसको नार कहते हैं। लगभग इसका सर्वांश कार्बित खटिक (Oxalate of calcium) होता है। ये श्वेत स्फटिकीय पिण्ड रूप में शुष्क होजाते हैं। (फा० इं० १ भा०)

चिरोयन लोग—पेट के मरोड़ के रोग में तथा पाचनशक्ति बढ़ाने को इमली के बीज को अन्य औषध के साथ मिला कर बर्त्तते हैं।

सालान (लङ्का) द्वीप में यकृत और प्लीहा की गाँठ होने में इमली के फूल की एक प्रकार की मिठाई बनाकर रोगी को देते हैं। पत्तों को उबालकर उसको सेक करने में प्रयुक्त करते हैं। इमली के वृक्ष के नीचे सोने से रोग होता है, परन्तु नीम के पेड़ के नीचे सोने से सर्व रोग दूर होते हैं। इमलीके गोंदका चूर्ण करके नासूर (नाड़ी व्रण)के घाव पर बुरकते हैं, इससे क्षत शीघ्रपूरित होजाता है। पत्तों को शीतल जल में भिगा के अभिष्यंद में आँखों पर तथा नासूर के घाव पर बाँधते हैं। बीज को पीस जल में मिला गाँठ पर चुपड़ने से उसके भीतर तत्काल राध पड़कर वह विदीर्ण होजाता है।

के० एम० नदकारणी-प्रभाव-अपक्वफल, अत्यम्ल। पक्वफलमज्जा—शैत्यकारक, आध्मानहर, पाचक, कोष्ठमृदुकर, मूल्यवान स्कर्वीहर (Antiscorbutic) और पित्तनाशक है। बीज— संग्राहक, कोमलपत्र तथा पुष्प शैत्यकारक तथा पित्तघ्न हैं। बीज का रक्तवर्णीय बहिर त्वक् मृदु संग्राहक और वृक्षत्वक् संग्राहक व बल्य है।

उपयोग—एक वा दो वर्ष की पुरानी पकी इमली यकृत, आमाशय तथा आंत्रदौर्बल्य में हितकर है। प्रथम पक्वफल मलावरोध में लाभदायक है। भारतीय आहारमें इमली चटनी, कढ़ी तथा शर्बत रूप में बहुत उपयोग में आती है। कोष्ठमृदुकर रूप मे यह बालकों के ज्वर में भी हितकर है। इस हेतु इमली, अञ्जीर और आलुबोखारा इनका शर्बत प्रस्तुत कर १ से २ड्राम की मात्रा में उपयोग किया जाता है।

१ आउंस (२॥ तो०) इमली का फल और १ आउंस खजूर इनको पाव सेर दुग्ध में क्वथित कर छान लें। इसमें किञ्चित् लवंग तथा इलायची और रत्ती आध रत्ती कपूर सम्मिलित करने से उत्तम कोष्ठमृदुकर पानक प्रस्तुत होता है। यह ज्वर अंशुघात और प्रादाहिक विकारों में लाभदायक है।

स्कर्वी (Scurvy) के नाशन व प्रतिषेधन हेतु इमली उत्तम है।

प्रवाहिका में इसके बीच का चूर्ण प्रयोग में आता है।

गुल्फ तथा संधि-शोथ पर सूजन एवं वेदना को कम करने के लिए अम्लिका पत्र को जल के साथ कुचलकर इसकी पुल्टिस बाँधते हैं।

तिन्तिड़ी-फल-मज्जा एवं पत्र को क्वथित कर बनाया हुआ घन शर्बत, उत्तापाधिक्य एवं दुग्धजन्य शोथ के निवारणार्थ उत्तम है।

मन्द क्षतों की स्वास्थ्यकर-क्रिया अभिवृद्धि के लिए इमली के पत्र का क्वाथ धावन रूप से उपयोग में आता है।

प्रवाहिका में इसके पत्तियों के स्वरस को लाल किए हुए लोहे से छौंक कर देते हैं। पुरातन

प्रवाहिका में बीजके रक्त बाह्यत्वक् के चूर्ण को ½ ड्राम की मात्रा में मोदक रूप से उपयोग में लाते हैं। स्वाद हेतु इसमें तिगुना जीरा का चूर्ण और पर्याप्त परिमाण में खजूर खंड डालते हैं।

इसकी छाल की भस्म का पाचक रूप में आन्तरिक उपयोग होता है। छाल को सैन्धव के साथ एक मृत्तिका पात्र में रखकर जला लें। जब श्वेत भस्म हो जाए तब चूर्णकर रखें। १ से २ ग्रेन की मात्रा में अजीर्ण तथा उदरशूल की यह एक उत्तम औषध है। मुख एवं कंठक्षत के निवारणार्थ इसकी भस्म को जल में घोलकर इसका गण्डूष कराते हैं। (इं० मे० मे०)

आर० एन० चोपरा—

इमली के बीज (चियाँ) की बाहरी लाल त्वचा प्रवाहिका एवं अतिसार की उत्तम औषध ख़याल की जाती है। अतएव १० ग्रेन (५ रत्ती) की मात्रा में इसके बीज का चूर्ण सम भाग जीरा व शर्करा के साथ दिन में दो तीन बार उपयोग किया जाता है। आदती क़ब्ज़ में इसके पक्व फल का गूदा अत्यन्त प्रभावात्मक कोष्ठ-मृदुकर गिना जाता है। नीबू के अभाव में एंटिस्कॉर्ब्युटिक (Antiscorbutic) गुण के लिए इसका उपयोग किया जा सकता है। (इं० ड्र० इं० पृ० ५६७)

हिन्दुस्तानी वैद्य—इमली को शीतल पाचक, साफ दस्त लानेवाली, दस्त की क़ब्ज़ियत और ज्वर में अत्यंत उपयोगी गणना करते हैं। इमली की फली के ऊपर की छाल की राख को खारके सदृश दवा में डालते हैं। पत्तोंको सूजन पर बाँधने से सूजन उतर जाती है।

पक्व तिन्तिड़ी-फल-मज्जा स्कर्वी रोग प्रतिषेधक, श्रमहर एवं मृदुरेचक है। यह ज्वर, तृष्णा, अंशुघात (सर्दी गर्मी) एवं पित्तप्रधान वान्ति रोग में व्यवहृत होती है। रेचन हेतु, यह चिरकारी कोष्ठबद्ध रोग में हितकर है। चोट लगने के कारण यदि किसी अंग में सूजन हो तो कच्ची इमली और इमली पत्र को पीसकर उष्णकर लें और शोथयुक्त अंग पर इसका प्रलेप करें। मुखक्षत में इसका कवल हितकर है। इमली के बीज आम वा रक्तातिसारमें व्यवहृत होते हैं। स्वयं शुष्कभूत इमली की छाल का क्षार मूत्राम्लता तथा पूयमेह में क्षारीय औषध रूप से प्रयुक्त होता है। (आर० एन० खोरी, भा० २ प्र० २३१)।

अम्लिका वृक्ष के बाह्योपरि त्वक् द्वारा वङ्गभस्म-निर्माण-क्रम

सर्व प्रथम इमली वृक्ष की ऊपरी शुष्क छाल को एकत्रित कर उसके छोटे छोटे टुकड़े करलें, किंतु बारीक चूर्ण न करें। फिर टाट आदि के टुकड़े की एक लम्बी थैली बनाएँ। उसमें नीचे एक अंगुल मोटा उक्त इमली के टुकड़ों को बिछा दें और ऊपर से शुद्धवंग (Tin) के कण्टक वेधी पत्र के छोटे छोटे टुकड़े काटकर थोड़ी थोड़ी दूरी पर रख दें और ऊपर से फिर उक्त इमली के टुकड़ों को बिछा दें। इसी भाँति थैली को पूरी कर उसकी संधियों को भली प्रकार कस कर सी दें। पुनः कपरौटी कर सुखा लें। तदनन्तर उसे गजपुट में रख अग्नि दें। स्वांग शीतल होने पर आहिस्ते से फूल हुए वंग के टुकड़ों को एकत्रित करलें। यह सर्वोत्तम श्वेत वंग की भस्म प्रस्तुत होगी।

उपयोग—सम्पूर्ण वीर्यरोगों यथा प्रमेह, शुक्रमेह, शीघ्रपतन और स्वप्नदोष प्रभृति के लिए रामवाण औषध है। यह सैकड़ों बार परीक्षा में आचुकी है।

मात्रा व सेवन-विधि—१ रत्ती से ४ रत्ती तक उपयुक्त औषध वा अनुपान के साथ प्रातः सायं सेवन करें।

अम्लिकाकन्दः amliká-kandah—सं० पुं० अम्लनालिका—म०। वै० निघ०।

अम्लिका(प्र)पान(क) amlikápánaka—हिं० पुं०
अम्लिकापानम् amliká-pánam—सं० क्लीं०
तिन्तिड़ीपानक, अम्लिकाफल-प्रपानक, अमली का पन्ना। तेंतुल पाना—बं०।

विधि—पक्की अमली को जल में भिगोकर खूब मललें; उसमें सफ़ेद बूरा, मरिच, लौंग और कपूर आदि डालकर सुवासित करलें। इसको

अमली का प्रपानक (पना) कहते हैं। यह अमली का पना वातविनाशक, पित्त तथा कफ-कारक, रुचिकारक और अग्निवर्द्धक है। भा० पू० पानकवर्गः।

अम्लिकावटकः amliká-vaṭakah-**सं० पुं०** वटक विशेष, अमली का बड़ा (बारा)। अम्ल बड़ा-**बं०**।

विधि-पक्की अमली को कतर कर जल में औटाएँ और जलके साथ ही मलले, पश्चात् उस बनाए हुए पानी में बड़े छोड़ दें और नमक मसाला आदि डाल दें, तो अमली के बड़े बन जाते हैं।

गुण-यह बड़े रुचिकारक और अग्निदीपक हैं। इनमें पूर्वोक्त बड़ों के भी सब गुण हैं। भा० प्र० ख० १।

अम्लिकासार amliká-sára-**हिं० संज्ञा पुं०** अम्ली का सत्त। (Acidum Tartaricum.)

अम्ली amlí-**सं० स्त्री०** (१) जलवेतस। वै० निघ० २ भा० मदात्यय चि० खर्जूरादि मन्थ। (२) चुक्रिका-**सं०**। टकपालङ्-**बं०**। See-Chukriká. । (३) तिन्तिड़ी, इमली, अम्लिका। (Tamarindus Indica.) रा०नि०व० ११। भा०पू० १ भा० फल-व०। (४) चांगेरी। (Oxalis monadelpha.) मे० लद्विकं। -**हिं० स्त्री०**, (५) अमारी (Antidesma Diandrum.)। (६) अमलोसा। (Bauhinia Malabarica, Rorb.) मेमो०।

अम्लीका amliká-**सं० स्त्री०** (१) तिन्तिड़ी, अमली, अम्लिका। (Tamarindus Indica.) अ० टी०। (२) अम्लोद्गार, खट्टा डकार। सु० नि० ६ अ०।

अम्लीकाफलम् amliká phalam-**सं० क्लो०** तिन्तिड़ी फल, अमली। Tamarindus Indica. (Fruit of-)। देखो-अम्लिका।

अम्लीका सत amliká-sat-**हिं० संज्ञा पुं०** अम्लिकाम्ल। देखो—एसिडम् टार्टारिकम्। (Acidum Tartaricum.)

अम्लीन चिंचोर amlína-chinchor-**गु०** अमली,अम्लिका। Tamarind (Tamarindus Indica.) इं० मे० मे०।

अम्लीयः amlíyah-**सं० पुं०** अम्लवेतस। (Rumex vesicarius.) वै० निघ०।

अम्लीय-अम्लजिद् amlíya-amlajida-**हिं० पुं०** (Acidic Oxide.) अम्लीय ओषिद् या ऊष्मिद्। यह जल में घुलकर अम्ल बनाते हैं, और ओषजन तथा अधातुओं के संयोग से बनते हैं। देखो—ओषिद्।

अम्लुकी amlukí-**बं०** सामसुन्दर, सिरस, शिरीष। (Albizzia Stipulata.)

अम्लुकी amlukí-**बम्ब०** अमला। (Phyllanthus Enblica.) मेमो०।

अम्लू amlú-**पं०** चोह। हक। ऑक्झीरिया डाइगाइना (Oxyria Digyna, *Hill.*), ऑ० इलेटियर (O. Elatior.), ऑ० रेनिफॉर्मिस (O. Reniformis, *Hook.*) -ले०।

प्रयोगांश—फल।

उत्पत्ति-स्थान—आल्पीय हिमालय, सिक्किम से काश्मीर पर्यन्त।

उपयोग—चम्बामें यह कच्चा ही और चटनी बनाकर खाया जाता है तथा शीतल ख़्याल किया जाता है। कनावार में यह औषध रूप से प्रसिद्ध है। स्टयुवर्ट।

अम्लोटकः amloṭakah-**सं० पुं०** अश्मन्तक वृक्ष। आमराड़ा-**हिं०**। अम्लकुचाइ-**बं०**। रत्ना०। See-Ashmantak.

अम्लोटजः amloṭajah-**सं० पुं०** चांगेरी। (Oxalis corniculata.) बड़ आमरुल पाता-**बं०**। च० द० चातुर्थ-ज्व० चि०। "अम्लोटजसहस्रेण दलेन।"

अम्लोत्तमम् amlottamam-**सं० क्लो०** दाड़िम, अनार। Pomegranate (Punica granatum.) प० मु०।

अम्लोत्पादक सेल amlotpádak-sela-**हिं० स्त्री०** (Oxytic cell.) अम्लजनक सेल।

अम्लोद्गार amlodgára-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] खट्टा डकार ।

अम्लोषित amloshita-सं० पुं० सर्वाक्षिगत रोग विशेष ।

लक्षण पित्त और रक्त की अधिकता वाले दोषों के कारण अन्न का सार भाग खट्टा होकर शिराओं में होता हुआ नेत्र को श्याव लोहितवर्ण का कर देता है तथा सूजन, दाह, पाक, अश्रुपूर्ण और धुंधलापन पैदा कर देता है। यथा—

"अम्लोषितोऽयम् इत्युक्ता गदाः षोडश-सर्वगाः।" वा० उत्तर० अ० १६ ।

अम्लोसा amlosá-हिं० (१) अमली (Phyllanthus emblica) । (२) (Bauhinia Malabarica. Roxb.) इसका निर्यास तथा पत्र खाद्य कार्य में आता है । मेमो० ।

अम्ल्युलाज amlyuláj-अ० दुग्ध दन्तोद्भव । दूध के दाँत निकलना ।

अम्वात् amvát-अ० (ब० व०), मौत, मय्यत (ए० व०) । मृत्यु, मरण । (Death.)

अम्शाज amsháj-अ० शारीरिक धातुएँ । स्त्री तथा पुरुष वीर्य का एकत्रीभवन जो अमिश्रित अवयव का आधार बनता है । स्त्री तथा पुरुष के वीर्य का सम्मेलन । स्त्री व पुरुष वीर्य के पारस्परिक सम्मेलन से जो नुत्फ़ा में इख्तिलात होता है ।

अम्सानिया amsániyá-पं० अम्सानिया (मेमो०) बुदशुर, के(-चे) वा, बुत्शुर,, खन्ना। एफिड्रा पेकिक्लेडा (Ephedra Pachyclada, *Boiss.*), ए० जिरार्डियना (E. Gerardiana, *Wall.*)-ले० । फोक-सन० । हुम, हुमा (फ़ा०, बम्ब०) । म०-ओह्-जापा० । खण्ड, खम-कुनवर ।

एफिड्रा वर्ग

(*N. O. Gnetaceae*)

उत्पत्ति-स्थान-पश्चिमी हिमालय, अफ़ग़ानिस्तान और पूर्वी फ़ारस ।

नोट—इसका द्वितीय भेद, एफिड्रा वल्गेरिस (Ephedra vulgaris, *Rich.*) है। **उत्पत्ति-स्थान**—शीतोष्ण तथा आल्पीय हिमालय, युरुप, पश्चिमतथा मध्य एसिया और जापान ।

इतिहास—उपरोक्त दोनों पौधे मुश्किल से भिन्न है । इनमें से अम्सानिया (E. pachyclada), एफिड्रा वल्गेरिस (E. Vulgaris) की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली एवं विषमतल (खुरदुरा) होता है । इनमें से प्रथम के विषय में श्री जे० डॉ० हूकर महोदय लिखते हैं:—"इसके बालियों तथा पुष्प में कोई विशेष बात नहीं होती, सिवा इसके कि इसमें न्यूनाधिक हारियायुक्त ब्रैक्टस (पौष्पिक पत्र) होते हैं ।" अम्सानिया (हुम) की शुष्क शाखाएँ अब भी फ़ारस से भारतवर्ष में लाई जाती हैं । इसमें औषधीय गुण-धर्म होने का निश्चय किया जाता है । उक्त पौधे को प्राचीन आर्य (एरियन) उपयोगमें लाते थे और सम्भवतः वेद वर्णित सोम यही है । (डीमक)

वानस्पतिक-वर्णन-ए० वल्गेरिस एक निम्न भूमि में उत्पन्न होने वाला, कठिन, गठा हुआ पौधा है, जिसकी जड़ें परस्पर लिपटी हुई और शाखाएँ (उत्थित,खड़ी) हरितवर्णकी होती हैं, एवं जिन पर धारियाँ पड़ी रहती हैं और जो लगभग समतल (चिक्कण) होती हैं । पौष्पिकपत्र मध्यदिक् शुण्डाकार, धार-वर्जित, लोमश, क्वचित् क्षुद्र रेखाकार होता है। पुष्पाच्छादनक (Spikelets) $\frac{1}{4}$ से $\frac{1}{3}$ इंच, अवृन्तक, प्रायः आवर्त्तयुक्त; **फल** प्रायः मांसल, रक्तवर्ण, रसपूर्ण, पौष्पिकपत्रयुक्त और एक या दो बीजयुक्त होता है । बीज युगलोन्नतोदर या समोन्नतोदर होते हैं । **स्वाद्**- (टहनी) निशोथवत् और कषाय । इनके पत्ते वा परत काट कर अणुदर्शक से देखने पर इनके तन्तु एक प्रकार के रक्तरस से पूर्ण लक्षित होते हैं ।

रासायनिक संगठन - (या संयोगी द्रव्य) इसके प्रकाण्डमें एफीड्रीन (Ephedrine) नामक एक क्षारीय सत्व पाया जाता है जिसका संकेत सूत्र क^{१०}उद^{१५}नत्र, ऊ. है । ओषजनीकरण

द्वारा उक्त सत्व लोबानाम्ल (Benzoic-acid), मॉनोमीथिलअमीन (Monomethylamine) और चुक्रिकाम्ल अर्थात् काष्ठाम्ल (Oxalic acid) में विश्लेषित हो जाता है। एफीड्रीन (घुलन बिन्दु वा द्रवणांक ३० ° शतांश) को उत्ताप पहुँचाने पर आइसो-एफीड्रीन Isoephedrine (द्रवणांक ११४ ° शतांश) प्राप्त होता है। डॉ० एन० नेगी।

ए० वल्गेरिस की टहनियों में ३ प्रतिशत कषायिन होता है। मिस्टर जे० जी० प्रेबल (१८८८).

प्रयोगांश—जड़ और शुष्क शाखाएँ।

औषध-निर्माण—जड़ का क्वाथ (४० में १)

मात्रा—आधा से १ आउंस।

प्रभाव तथा उपयोग—यह परिवर्तक (रसायन), मूत्रल, आमाशय बलप्रद और बल्य है (इं०मे० मे०)। सर्व प्रथम डॉ० एन० नेगी (टोंकियो) ने इस बात की ओर ध्यान आकृष्ट की, कि ए० वल्गेरिस में एफीड्रीन नामक एक क्षारीय सत्व होता है, जिसमें नेत्रकनीनिका-प्रसारक गुण है, तथा ऐट्रोपीन (धत्तूरीन) के स्थान में इसका उपयोग किया जा सकता है। डॉक्टर टी० वी० बीकट्रीन ने ध्यान दिलाया कि ए० वल्गेरिस की जड़ तथा प्रकाण्ड द्वारा निर्मित क्वाथ रूस देशमें आमवात, गठिया एवं उपदंश रोग की और इसके फल का स्वरस श्वासपथ सम्बन्धी रोगों की प्रख्यात औषध है।

उग्र तथा पुरातन आमवात (Rheumatism) के अनेक रोगियों को उक्त क्वाथ का स्वयं व्यवहार कराने के पश्चात् अन्ततः वे इस परिणाम पर पहुँचे कि उक्त पौधा पेशी एवं संधि सम्बन्धी उग्र रोगों की प्रधान अमूल्य औषध है। इससे व्यथा कम हो जाती है; नाड़ी मन्द तथा कोमल और श्वासोच्छ्वास सरल हो जाता है। ५-६ दिनमें तापक्रम स्वस्थ दशा की तरह हो जाता और संधिशोथ लुप्तप्राय हो जाता है। और लगभग १२ दिवस के बाद रोगी रोग मुक्त हो जाता है। कतिपय रोगियों में उस समय के समीप या उससे प्रथम, जबकि तापक्रम घटने लगा हो, मूत्रस्राव होते देखा गया। इससे पाचन एवं आन्त्रिक क्रिया भी बढ़ती हुई देखी गई। पुरातन रोगियों में एफीड्रा का प्रभाव कम प्रदर्शित होता है। आमवात संबन्धी गृध्रसी तथा अस्थिमोपुम्नकांड प्रदाह के दो रोगियों में तो मुश्किल से कोई प्रभाव उत्पन्न हुआ। परन्तु, यहाँ पर यह विचारणीय बात है कि उक्त दोनों अवस्थाओं में ऐण्टिपाइरिन, सैलिसिलेट ऑफ़ सोडा, ऐण्टिफेब्रीन तथा सेलोल इत्यादि औषधें भी लाभ प्रदान करने में असफल रहीं। डॉ० बीकट्रीन द्वारा निर्मित क्वाथ की मात्रा यह है :—औषध ३.८५ ग्राम और जल १८० ग्राम।

डॉ० कोबर्ट बतलाते हैं कि एफीड्रीन ०.२० ग्राम की मात्रा में कुक्कुर एवं बिल्ली की शिरा में अन्तःक्षेप द्वारा प्रविष्ट किया गया और इससे तीव्र उत्तेजना, सार्वांगिक आक्षेप, बाह्यचक्षु शोथ तथा नेत्रकनीनिकाप्रसार उत्पन्न होते देखा गया।

अम्सुल amsul-पश्चिम घाट० कोकम, भिरण्ड। Mangosteen (Garcinia xanthoxymus, *Hook.*) फा० इं० १ भा०। देखो—दम्पिल।

अम्सेल amsel—गों० कोकम, भिरण्ड—हिं०। See-Kokam.

अम्सेल रताम्बिसाल amsel-ratámbisál—गों० कोकम की छाल (Garcinia purpuria, bark of-) इं० मे० मे०। फा० इं० १ भा०।

अम्हक् amhaq—अ० शुद्ध श्वेत बिना चमक के जैसे चूने का रंग, गोराचिट्टा।

अम्हदन्दी amha-dandí—पं० ओड, चूची—पं०। मेमो०।

अम्हर्ष्टिया नोबल amherstia noble
अम्हर्ष्टिया नोबिलिस amherstia nobilis, *Dr. Wall.*
इं०, ले० थौका। इं० हैं० गा०।

अम्हौरी amhourí–हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० अम्भस्=जल, अर्थात् पसीना+औरी (प्रत्य०)] बहुत छोटी छोटी फुन्सियाँ जो गरमी के दिनों में पसीने के कारण लोगों के शरीर में निकल आती हैं। अँधोरी।

अयः ayah–सं० पुं०
अय aya हिं० संज्ञा पुं० } (१) लौह, लोहा Iron (Ferrum) । (२) अग्नि। (Fire) । (३) अस्त्र शस्त्र। हथियार।

अय aya–ता० पपड़ी–हिं० । रसबीज–कना० । नविली–तै० । बवल–म० । (Holoptelea Integrifolia, *Planch.*) फा० इं० भा० ३।

अयङ्गौलम् ayangoulam–मल० अङ्कोल, ढेरा। (Alangium decapetalum, *Lam.*) स० फा० इं०।

अयच्चेण्डूरम् ayachchendúram–ता० मण्डूर, लौहकिट्ट। (Ferri peroxide.) स० फा० इं०।

अयत्ला ayatlá–पं० पुड़लत, पुल्लाल, आरूड, अखान।

अयनम् ayanam–सं० क्ली०
अयन ayan–हिं० संज्ञा पुं० } (१) गति चाल। (२) A path, the half year, i.e. the sun's course north or south of the equator.

सूर्य वा चन्द्रमा की दक्षिण से उत्तर वा उत्तर से दक्षिण की गति वा प्रवृत्ति जिसको उत्तरायण और दक्षिणायन कहते हैं। मे० नत्रिकं।

नोट—बारह राशि चक्र का आधा। मकर से मिथुन तक की ६ राशियों को उत्तरायण कहते हैं; क्योंकि इसमें स्थित सूर्य्य वा चंद्र पूर्व से पश्चिम को जाते हुए भी क्रम से कुछ कुछ उत्तर को झुकते जाते हैं। ऐसे ही कर्क से धन की संक्रांति तक जब सूर्य या चन्द्र की गति दक्षिण की ओर झुकी दिखाई देती है तब दक्षिणायन होता है।

आयुर्वेद के अनुसार शिशिर, वसन्त और ग्रीष्म इन तीन ऋतुओं का उत्तरायण काल होता है। यह पुरुष के बल का आदान काल है अर्थात् उत्तरायण में सूर्य प्रति दिन मनुष्य के बल को हरण करता है। उत्तरायण में सूर्यकाल में सूर्य का मार्ग बदलनेके कारण सूर्य और पवन अत्यन्त प्रचण्ड, गर्म और रूक्ष हो जाते हैं और पृथ्वी के सौम्य गुणों को नष्ट कर देते हैं। क्रम से इन ऋतुओं में तिक्त, कषाय और कटु रस उत्तरोत्तर बलवान हो जाते हैं अर्थात् शिशिरमें तिक्त, वसन्त में कषाय और ग्रीष्म में कटु रस बलवान हो जाते हैं। इस कहे हुए हेतुसे बलका आदान अग्नि रूप है तथा इसके विपरीत वर्षा, शरद् और हेमन्त ये तीन ऋतु दक्षिणायन कहलाती हैं। इन तीन ऋतुओं में पुरुष के बल की वृद्धि होती है। इसको विसर्ग काल कहते हैं। मेघ की वृष्टि और ठंडे पवन के चलने से पृथ्वी पुष्ट और शीतल हो जाती है और इस शीतलता के कारण चन्द्रमा बलवान हो जाता है और सूर्य हीनता को प्राप्त होता है इस ऋतुमें उत्तरोत्तर खट्टे, खारे (लवण) और मधुर रस बलवान हो जाते हैं, जैसे वर्षा में खट्टा, शरद् में लवण और हेमन्त में मधुर रस बलवान हो जाते हैं। वा० सू० ३ अ०। सु० सू०।

(३) मार्ग, राह। (४) आश्रम। (५) स्थान। (६) घर। (७) काल, समय। (८) अंश। (९) गाय या भैंस के थन के ऊपर का वह भाग जिसमें दूध भरा रहता है।

अयनकाल ayana-kála–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) वह काल जो एक अयन में लगे। (२) छः महीने का काल।

अयनी ayaní–ता० अञ्जली। पतफणस–म०। ऐनी, अन्सजेनी–मल०। हिबलसु,हेस्वा–कना०। (Artocarpus Hirsuta, *Lamk.*) मेमो०।

अयपान ayapán–हिं०,मह०,बं०
अयपानी ayapání–ता०, ते०
अयप्पनई ayappanai–ता० } अल्लाप-गुं०। विशल्य-कर्णी–सं०।

अयपान-हिं०, म०, बं०। (Eupatorium Ayapana, *Vent*) स०फा० इं०। फा० इं० २ भा०। देखो—अयापना।

अयम् ayam-ता० खुम्बी, कुम्बी-हिं०। (Careya Arborea, *Roxb.*) मेमो०।

अयमोदकम् aya-modakam-मल० अजवाइन-हिं०। Carum (Ptychotis) Ajowan, *D. C.* । स० फा० इं०।

अयलूरचे ayalúrache-फ़ा० अगर-हिं०। (Alce wood.)

अयव ayava-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] पुरीष का एक कीड़ा जो यव से छोटा होता है। (२) शुक्र।

अयशिन्दूरमु aya-ṣhindúramu-ता० मण्डूर। (Ferri peroxide.) स० फा० इं०।

अयम् ayam-सं० क्लो०
अयस् ayas ”
अयसम् ayasam ”
अयस ayasa-हिं० संज्ञा पुं०
} (१) लौहमात्र। लोहा। Iron (Ferrum.) च० द० पाण्डु-चि०। रत्ना०। (२) कान्तलौह। (Load-Stone.) प० मु०। (३) मुण्डलौह। See-mundalouhah. रा० नि० व० १३। देखो—लौह।

अयस्कन्त ayas-kanta-हिं० पुं०
अयस्कान्त ayaskánta-हिं०संज्ञा पुं०
अयस्कान्तः ayas-kántah-सं० पुं०
} (१) कान्तलौह। रा० नि० व० १२। लौहचुम्बुक, चुंबक। (२) कान्त पाषाण। चुम्बक पत्थर। गुण—लेखन, शीतल, मेदकारक व विषघ्न है। मद० व० ४। Load stone (Ferri Oxidum magneticum.)

अयस्कान्त शिला ayaskánta-ṣhilá-सं० स्त्री० कान्तलौह, लोहचुम्बक, चुम्बक। (Magnet, loadstone.) वै० निघ०।

अयस्कान्तिम् ayas-kántim-सं० क्लो० एक धातुतत्व विशेष। मैङ्गेनीज़ (Manganese.) -इं०। देखो—मैङ्गेनीज़ वा मैङ्गेनेसियम्।

अयस्कारः ayas-kárah-सं० पुं०
अयस्कार ayaskára-हिं० संज्ञा पुं०
} (१) जङ्घाग्र भाग। (Foreleg.) त्रिका०। (२) लोहार।

अयस्कृतिः ayaskritih-सं० स्त्री० (१) फ़ौलाद के बारीक पत्र बनाकर लवण वर्ग से उन पर लेप करके जंगली कंडोंमें १६ बार खूब तपाकर त्रिफला और सालसारादिगणके क्वाथ में उनको बुझाएँ। फिर इसी तरह १६ बार खैर के कोयलों में तपा कर बुझाएँ, ठण्डा होने पर उनका बहुत बारीक चूर्ण कर लें, फिर गाढ़े कपड़े से छानकर रक्खें। बलानुसार इसकी मात्रा घी और शहद के साथ खाएँ। इसके पच जाने पर खटाई और नमक को छोड़कर व्याधिशामक आहार करें। इसके ४०० तो० खाने से कुष्ठ, प्रमेह, मेदवृद्धि, शोथ, पाण्डु, उन्माद और अपस्मार नष्ट होते हैं। र॰स० यो० सा०। (२) प्रमेह विषयक रोग विशेष। वा० चि० अ० १२ प्रमेह।

अयस्कोटः ayaskoṭah-सं० पुं० मण्डूर, लौहकिट्ट। (Ferri peroxide.) वै० निघ०।

अयस्तम्भिनी ayastambhiní-सं० स्त्री० शिवलिङ्गी। (Bryonia Laciniosa.)

अयस्मयी ayasmayí-सं० त्रि० लोहे की बनी हुई। अथर्व०। सू० ३७। ८। का० ४।

अयक्ष्मं ayakshmam-सं० त्रि०
अयक्ष्म ayakshma-हिं० त्रि०
} (१) नीरोग, रोग रहित। (२) निरुपद्रव। बाधा सून्य। अथर्व०। सू० २६। १२। का० ५।

अयाश्र् āayáa-अ० असाध्य या कष्टसाध्य रोग।
नोट—अयाश्र् तथा दाश्र् का भेद देखो—"दाश्र्" में।

अयाउलबह्र ayául-baḥra
मर्ज़ुल् बह्र marzul-baḥra
ग़स्यान बह्री ghasyán-baḥrí
} -अ० सामुद्रिक रोग, समुद्रीय व्याधियाँ, दरियाई बीमारी, जहाज़ी बीमारी, जहाज़ी क़ै, समुद्र यात्रा करते हुए जहाज़ में किसी किसी को मतली तथा वमन की व्याधि हो जाती है; विशेषकर वे लोग इस व्याधि से

अधिक ग्रसित होते हैं जो प्रथम बार जहाज़ यात्रा करते हैं। सी सिक्नेस (Sea Sickness.), नॉपेथिया (Naupathia)-इं०।

अयाचित ayáchita-सं क्ली० अमृत नामक आहार, बिना माँगी मिली वस्तु। "अमृतं स्याद् याचितम्" इति मनुः।

अयात अस्ल ayát-asl-अज्ञात।

अयादि लेप ayádi-lepa-सं० क्ली० लोहे का बुरादा, भांगरा, त्रिफला, और काली मिट्टी को ईख के रस में १ मास तक रख कर लेप करने से बालों का श्वेत होना बन्द होता है। वृ० नि० र०।

अयातयाम ayátayáma-हिं० वि० [सं०] (१) जिसको एक पहर न बीता हो। (२) जो बासी न हो। ताजा। (३) विगत दोष। शुद्ध। (४) अनतिक्रांत काल का। ठीक समय का।

अयादत āayádat-अ० बीमार पुर्सी, रोगी से उसकी हालत पूछना।

अयानम् ayánam-सं० क्ली०
अयान ayána-हिं० संज्ञा पुं० } स्वभाव, प्रकृति, निसर्ग। नेचर (Nature)-इं०। हारा०। (२) अचंचलता। स्थिरता। -वि० [सं०] बिना सवारी का। पैदल।

अयान āayán-(रसा० परि०), पारद, पारा। (Mercury).

अयाना ayáná-महू० खाजा हिं०। कर्गनेलिया -हिं०। (Briedelia montana) मेमो०।

अयापनम् ayápanam-सं०
अयापान ayápána
अयापना ayápaná
आयापान áyápána
} --हिं०, महू० बं०। अयपानि -ता०,ते०। अरकल, तत्री-पं०। अय(या)पा(प)नम्-मलं०। अल्लाप, एल्लिपा, अल्लापा-गु०। युपेटोरियम् अयापना (Eupatorium Ayapana, *Vent.*)-ले०। बोनसेट (Boneset), थॉरोवर्ट (Thoroughwort)-इं०। अयप्पनै-ता०। निर्विषा -बं०। रामागणम्, विशल्यकरणी-सं० (वै० श० सिं०).

मिश्र वर्ग

(*N. O. Compositae.*)

नॉट ऑफिशल (*Not official.*)

उत्पत्ति-स्थान-अमरीका वा ब्राज़ील इसका मूल निवासस्थान है; परन्तु अधिक काल से यह भारतवर्षमें भी लगाया गया है। यह आर्द्र स्थानों, चरागाहों तथा झील एवं नदी तटों पर होता है।

इतिहास—वेण्टीनाट ने इसे अमेज़न नदी (दक्षिण अमरीका की एक नदी) तट पर भी उगा हुआ पाया। इसका एक अन्य भेद युपेटोरियम् पर्फोलिएटम् (E. Perfoliatum) अमरीका में ज्वरघ्न ख़याल किया जाता है। ऐन्सली इसके विषय में वर्णन करते हैं—"यह एक लघु क्षुप है जो सर्व प्रथम फ्रांसीय द्वीपों से भारतवर्षमें लाया गया। देशी चिकित्सकों को अब भी इसके विषय में बहुत कम ज्ञात है। यद्यपि इसके प्रिय, किञ्चित् सुगंधिमय, किन्तु विशेष गंध के कारण इसमें औषधीय गुण होने का उन्हें विश्वास है। मॉरीशियस में यह बहुत विख्यात है और वहाँ इसे परिवर्तक तथा स्कर्वीनाशक ख़याल किया जाता है। इसने अन्तः रूप से औषधीय उपयोग के लिए युरूपीय चिकित्सकों को अब तक सर्वथा निराश रक्खा है। इसकी पत्तियों के शीतकषाय का स्वाद ग्राह्य एवं कुछ कुछ मसालावत् होता है और यह एक उत्तम पथ्य पेय है। ताज़ा होने पर कुचल कर मुख मण्डलके बुरे क्षतों के परिमार्जनार्थ प्रयुक्त करने के लिए यह सर्वोत्तम व्रणशोधक है"। डायमक महोदय माननीय ऐन्सली को सूचित करते हैं कि इसे शुष्क कर, फ्रांस जहाँ कि चीनी चाय की प्रतिनिधि स्वरूप, एक प्रकार की चाय बनाने में इसका उपयोग होता है, भोजन के लिए बोर्बन (Bourbon) द्वीप में उक्त पौधे की कृषि की जाती है। गिबर्ट (Guibourt) के अनुसार अब यह करीब करीब विस्मृत सा होगया है। फार्माकोपिया ऑफ इण्डिया से इसके विषय में निम्न सूचना

मिलती है.-"यह दक्षिणी अमरीकाका एक पौधा है जो अब भारतवर्ष के विभिन्न प्रान्तों तथा जावा लंका प्रभृति द्वीपों में उत्पन्न होता है और साधारणतः अपने ब्राज़ील संज्ञा अयापान नाम से विख्यात है। सम्पूर्ण पौधा सुगंधित किञ्चित् कटु वा कषाय स्वादयुक्त होता है। यह एक उत्तम उत्तेजक, बल्य तथा स्वेदक है। बॉटन (Bouton) के कथनानुसार मॉरीशियस (Mauritius) के औषधीय पौधों में यह सर्व श्रेष्ट प्रतीत होता है। अजीर्ण तथा आन्त्र वा फुप्फुस के अन्य विकारों में शीतकषाय रूप से यह वहाँ दैनिक उपयोग की वस्तु है। उक्त द्वीप की सन् १८५४-५६ की विशूचिका महामारी में शरीर के बाह्य भाग की उष्मा के पुनरावर्तन तथा रक्तसंभ्रमण शैथिल्य को दूर करने के लिए इसका अधिकता के साथ उपयोग किया गया है। सर्पदंश के प्रतिविष स्वरूप इसका अन्तः वा वहिः प्रयोग सफलता के साथ किया जा चुका है। यद्यपि सामान्य रूप से यह अज्ञात है, तथापि बागों (बम्बई) में प्रायः होता है और जो इसे जानते हैं वे इसकी बड़ी प्रशंसा करते हैं। डाइमॉक

वानस्पतिक विवरण—एक लघु भूलुण्ठित क्षुपवत् पौधा, ५ से ६ फीट ऊँचा, शाखाएँ सरल रक्ताभ (सुर्खी मायल), कतिपय साधारण बिखरे हुए (विरल) लोमों से व्याप्त, नूतन अंकुर एक प्रकारके श्वेत बाल्समीय स्राव के सूक्ष्म अणुओंकी उपस्थिति के कारण कुछ कुछ भुर भुरे स्वरूप के होते हैं; पत्र सम्मुखवर्ती, युग्म जिनके आधार प्रकांडके चारों ओर संलग्न होते हैं तथा ४-५ इंच लम्बे और $\frac{3}{4}$ इंच चौड़े, मज्जापूर्ण, ऊर्ध्व पृष्ठ विषम (खुरदरा), अधः पृष्ठ लोमश तथा रालीय विन्दु युक्त (पी० वी० एम०), चिकने (सम तल), भालाकार (शंकाकार क्वचित्), धारीवत्, आधारपर पतले शिराव्याप्त होते हैं, माध्यमिक नस (शिरा) मोटी, सुर्खी मायल, इसके मलने से अच्छी गंध आती है। पुष्प प्राउण्डसेलवत्, बैंगनी; गंध निर्बल तथा सुगंधिमय कुछ कुछ, इश्क़पेचा (Ivy) के समान, किन्तु अधिक ग्राह्य; स्वाद सुगंधित, कटु तथा कषाय (विशेष प्रकार का) होता है। डाइमॉक। पी० वी० एम०।

रासायनिक संगठन-(या संयोगी अवयव) डा० डाइमॉक महोदय के विश्लेषणानुसार इसमें दो सत्व पाए गए। इनमें से (१) एक वर्णरहित उड़नशील तैल जो ताजे पौधा को जल के साथ परिश्रुत करनेसे प्राप्त हुआ और (२) एक स्फटिकवत् (रवादार) न्युट्रल (उदासीन) सत्व जिसका नाम उन्होंने अयपानीन या अयापनीन (Ayapanin) रक्खा। जल में यह अविलेय तथा ईथर वा मद्यसार में विलेय होता है। इसके सूचीवत् दीर्घ रवे (स्फटिक) होते हैं। यह १५१° १६०° के उत्ताप पर सरलतापूर्वक उर्ध्वपातित हो जाता है।

प्रयोगांश—सम्पूर्ण पौधा (शुष्क पत्र, पुष्पान्वित शाखाएँ तथा कलिकाएँ वा कोंपल) औषध कार्य में आता है।

औषध-निर्माण—पत्र-स्वरस, मात्रा-$\frac{1}{4}$ से १ तो०। शुष्कक्षुप-२० से ६० ग्रेन (१०-३० रत्ती) तरल सत्व-१ से २ फ्लु० ड्रा०। घन सत्व-१० से २५ ग्रेन (५-१२॥ रत्ती) शीत कषाय-(२० में १)-$\frac{1}{2}$ से २ फ्लु० आउंस (प्रभावावश्यकतानुसार)।

युपेटोरीन (घन)-१ से ३ ग्रेन ($\frac{1}{2}$ से १॥ रत्ती)।

इन्फ्युज़म युपेटोरियाई (Infusum Eupatorii)-ले०। इन्फ्युज़न ऑफ़ बोनसेट (Infusion of Boneset.)-इं०। अयपान शीत कषाय-हिं०। ख़िसाँदा अयापना -फ़ा०, अ०।

निर्माण-विधि—एक भाग युपेटोरियम् को १० भाग उष्ण जल में ३० मिनट तक भिगोकर छान लें। मात्रा-आधा से १ फ्लु० आउंस।

(२) फ्लुइड एक्सट्रैक्टम् युपेटोरियम् (Fluid Extractum Eupatorium)-ले०। फ्लुइड एक्सट्रैक्ट ऑफ युपेटोरियम् (Fluid Extract of Eupatorium)-इं०। अयपान तरल सत्व-हिं०।

खुलासहे अयापना सत्याल-उ० । मात्रा-२० से ६० मिनिम (बूंद) ।

प्रभाव तथा उपयोग

अयापान के शुष्क पत्र तथा पुष्प कैलम्बा के समान अमूल्य तिक्त बल्य रूप से प्रभाव करते हैं; किन्तु इसमें स्वेदक गुण भी है । उष्ण कषाय (१ आउंस से १ पाइंट पर्यन्त) मद्यग्लास पूर्ण अर्थात् मद्य की शीशी की मात्रा में प्रति दो दो घंटे पश्चात देने से अत्यन्त स्वेद स्राव होता है । गुले बाबूना (Chamomile) के उष्ण कषाय के समान प्रायुक्त परिमाण से चतुर्गुण मात्रा में यह वामक है और विरेचक भी । वायुप्रणालीय कास, संक्रामक प्रतिश्याय तथा मांसपेशीय आमवात में त्वगोपरि प्रभाव हेतु इसका उपयोग किया जा चुका है और कद्दूदाना तथा केंचुओं को निकालने में इसके विरेचक गुण से लाभ प्राप्त किया गया है । ।

(मे० मे० ह्विटला)

प्रभाव में गुले बाबूना से अयपान की तुलना की जासकती है । सूक्ष्म मात्रा में यह उत्तेजक एवं बल्य और पूर्ण मात्रा में कोष्ठमृदुकर है । उष्ण कषाय वामक तथा स्वेदक है । शीत पूर्व ज्वर (Ague) की शैत्यावस्था में तथा उग्र प्रदाह जन्य विकारों से पूर्व होने वाली निर्बलता (depression) में इसका लाभदायक उपयोग किया जा सकता है । इसका शीत कषाय, १ आउंस (अयपान पंचांग) को १ पाइंट पर्यन्त जल में निर्मित किया जा सकता है तथा तीन तीन घंटे पर दो आउंस की मात्रा में इसका उपयोग किया जा सकता है । डाइमॉक ।

कहा जाता है कि इसमें स्कर्वीनाशक तथा परिवर्तक (रसायन)गुण भी है । अमरीकाके पीत ज्वर (yellow fever) में इसके उष्ण कषाय की बड़ी प्रशंसा की जाती है (डॉ० होर्नुक) । इसके तरल सत्व की मात्रा १० से ३० मिनिम (बूंद) है । पूर्ण मात्रा में यह कोष्ठशुद्धिकारक है तथा इसे आमाशय वा आन्त्रविकार, अजीर्ण, कास तथा शीत ज्वर में देते हैं । इं० मे० मे० ।

यह पौधा अमूल्य उग्रस्वेदक, बल्य, परिवर्तक, अन्तरुत्सेचनापह (या पचननिवारक) वामक, ज्वरघ्न, मूत्रल और मृदु उत्तेजक गुणों से पूर्ण है । स्वेदक प्रभाव में यह गुले बाबूना से श्रेष्ठतर है । पाचकावयवों पर यह बल्य प्रभाव प्रदर्शित करता है । इससे पित्त स्राव बढ़ जाता है । अजीर्ण तथा उन दशाओं में, जिनमें उत्तेजक की आवश्यकता होती हैं तथा सविराम, स्वल्प विराम, आन्त्रिक तथा अन्य भाँति के ज्वरों, कास, शीत, संक्रामक प्रतिश्याय, प्रतिश्याय और निर्बलता में भी यह उत्तेजक बल्य कहा गया है । सर्प तथा विषैले जानवरों के दंश पर इसका प्रस्तर (पुल्टिस) रूप से उपयोग होता है । पी० वी० एम० ।

तिक्त बल्य रूप से इसको आमाशय वा आंत्र विकार जैसे—अजीर्ण में बरतते हैं । श्लेष्मनिस्सारक रूप से कास और संक्रामक प्रतिश्याय में इसका उपयोग करते हैं । कास में यह एक अत्युत्तम औषध है । परियायनिवारक रूप से शीत ज्वर तथा स्वेदक रूपसे आमवात रोग में इसे प्रयुक्त करते हैं । म० अ० डॉ० ।

रक्तपित्त, क्षय, प्रदर, अर्श, रक्तातिसार प्रभृति रक्तस्राव एवं किसी अंग के अस्त्र आदि से कट जाने पर रक्तस्राव होने में इसके पत्रस्वरस का आभ्यन्तर एवं बाह्य प्रयोग उपयोगी होता है । (व० द०) प्रतिनिधि—पाठा ।

अयापनाह ayápanáh–हिं० (Eupatoium Repandum) इं० हैं० गा० ।

अयापनी ayápaní–ता०, ते० अरखर-पं० । रखेल-उ० प० सू० । (Ayapana) मेमो० ।

अयापनीन ayapanín–इं० सत्व अयापना । देखो—अयापना ।

अयापान ayápan–हिं० संज्ञा पुं० } अयापना
अयापानी ayápaní–ता० } —हिं० ।
(Eupatorium ayapana)

अयामीनून äayáminúna—यू० अफ़ीम । (Opium) ।

अयायाश् aayáyáa-अ० अपाहिज, पंगु, व्यर्थ, बेकाम, निर्बल, असमर्थ, शक्तिहीन, जो किसी काम के योग्य न हो।

अयार ayára-हिं० पीरिस ओवेलिफ़ोलिया (Pieris Ovalifolia, D. *Don.*), ऐण्ड्रोमेडा ओवेलिफोलिया (Andromeda Ovalifolia, *Wall.*)-ले०। अयरला, एइलन, एल्लल, अरर, अर्वान-पं०। अञ्जिर, अंगिअर, जगच्छाल-नैपा०। पिआज़य-भूटि०। कंगशिओर-लेप०।

उत्पत्ति-स्थान-शीतोष्ण हिमालय, काशमीर से भूटान पर्यन्त तथा खसिया पर्वत।

प्रयोगांश--पत्र, कलिका।

उपयोग—सूक्ष्मपत्र एवं कलिकाएँ बकरों के लिए विष हैं। कीड़ों के मारने के लिए इनका उपयोग होता है। इनका शीत कषाय त्वग्रोगों में उपयोग किया जाता है। (गम्बल)

अयारानुतानी ayáránutáni-यू० एक अप्रसिद्ध बूटी है। लु० क०।

अयारुफ़स ayárúfas-यू० ज़र्द सोसन। (Iris).

अयाल ayála-हिं० पुं०, स्त्री० [तु० बाल] घोड़े और सिंह आदि के गर्दन के बाल। केसर। [अ०] लड़के बाले। बालबच्चे।

अयाह्वम् ayáhvam-सं० क्लीं० कांस्य धातु, काँसा। (Bronze). वै० निघ०।

अयारिज ayárij-अ० इसका शाब्दिक अर्थ ईश्वरीय औषध (दवाए-इलाही) है, किन्तु तिब्ब की परिभाषा में रेचक औषध को कहते हैं और इसकी क्रिया-शक्ति (प्रभाव) के कारण इसे परमेश्वर (अल्लाह) से सम्बन्धित करते हैं। किसी किसी के मतानुसार प्रत्येक वह औषध, जो अपने ईश्वरदत्त प्रभाव के कारण रेचन लाती है, उसे 'ईश्वरीय औषध' कहते हैं। किसी किसी ग्रंथ में इयारज का अर्थ रेचक (वा दर्पघ्न) किया गया है; क्योंकि इस योग में रेचक औषधें दर्पघ्न औषधों के साथ हैं। किसी किसी ने इसका अर्थ इसकी शिष्टता के कारण श्रेष्ठ औषध (दवाए शरीफ़) किया है। यह प्राचीन चिकित्सकों द्वारा योजित किया हुआ प्रथम रेचन है। तदनन्तर इसके अवयवों में समय समय पर परिवर्तन होता रहा है।

नोट—इसका उच्चारण अयारिज या इयारज दोनों होता है।

अयारिज फ़ैक़रा ayárij-faiqrá-अ० तल्ख़ अर्थात् कड़ुआ अयारिज। यह एक तिक्त मिश्रित रेचक औषध है। म० ज०। किसी किसीने इसका अर्थ 'तिक्तता को लाभप्रद' किया है। जब इसमें शह्म हन्ज़ल (इंद्रायन का गूदा) सम्मिलित किया जाता है तब इसको मुशह्हम कहते हैं। यह शिरःशूल के प्रायः भेदोंके लिए लाभदायक है एवं आमाशय को म्लेद्र दोषों (अख़्लात् ग़लीज़ह) से शुद्ध करता है। मेरे आचार्य प्रायः इसे इत्रीफ़ल सग़ीर या इत्रीफल कश्नीज़ी या गुलकंदमें मिलाकर उपयोगमें लाते थे। योग निम्न है—

बालछड़, दारचीनी, ऊदबलसाँ, हब्बबलसाँ, तज, मस्तगी, तगर, केशर प्रत्येक १-१ भाग तथा एलुआ २ भाग सबको कूट छान कर तैयार करें। मात्रा-७ मा० शहद तथा उष्ण जल के साथ।

नोट—कोई कोई चिकित्सक एलुआ को शेष औषधों के समान भाग लेकर अयारिज फ़ैक़रा प्रस्तुत करते हैं। इ० अ०)

अयारिज लूग़ाज़िया ayárij- lúgháziyá-अ० 'लूग़ाज़िया' एक हकीमका नाम है। यह अयारिज शिरःशूल, आधासीसी (अर्द्धावभेदक), बैज़ह, ख़ूज़ह, कर्णशूल, सिर चकराना, (शिरोघूर्णन) बधिरता, अर्द्धांग (फ़ालिज), कम्पवायु, लक़वा, झाईं, श्वित्र तथा कुष्ठ और अन्य सर्दमाही (श्लेष्मज) रोगों के लिए लाभप्रद है। योग यह है—

इंद्रायनका गूदा १७॥ मा०, प्याज अम्सल भूना हुआ (मुशव्वी), ग़ारीक़ून, सक़मूनिया, कुटकीश्याम, उश्शक़, इस्क़ूरदयून प्रत्येक १ तो० ३॥ मा०, अफ़्तीमून, कमाज़ारियूस,एलुआ, गूगल प्रत्येक १०॥ मा०, हाशा, ग़ारीक़ून, अनीसूँ,

तेजपात, फ़रासियून, सुअदह् (नागरमोथा), तज, सफ़ेदमिर्च, मुर्मकी, जावशीर, जुन्दबेदस्तर, बालछड़, फ़ित्रासालियून, ज़रावन्द तवील,फ़र्फ़्यून इमामा, सोंठ, उसारहे अफ़्सन्तीन प्रत्येक ७ मा०, ज़िन्तियाना, उस्तोख़ुद्दूस प्रत्येक ४ मा०। इन्हें कूट छान कर यथोचित श्वेत शहद में गूँधें।

मात्रा–१४ मा० शहद तथा उष्ण जल के साथ। इसको प्रस्तुत करने के ६ मास पश्चात् उपयोग में लाना चाहिए। (इ० अ०)

अयारिज हूफ़क़्रातीस ayárij-húfaqrátís अ० "हूफ़क़्रातीस" अबक़रात का नाम है। यह अयारिज शिरःशूल जो अशुद्ध वाष्पों (पाचन विकार सम्बन्धी दोष) से हो, उसे नष्ट करता है तथा आमाशयिक रतूबतों को दूर करता है। योग इस प्रकार है—

जिन्तियाना, बालछड़, इन्द्रायन का गूदा, ज़रावन्द मदहर्ज, दारचीनी, तज प्रत्येक ३॥ मा०, फ़ित्रासालियून, कमाज़ारियूस, उस्तोख़ुद्दूस, पीपलामूल, मस्तगी प्रत्येक ४। मा०, एलुआ ५ तो० ३॥मा० कूट छान कर तिगुने शहद में जिसके झाग उतारे गए हों, प्रस्तुत करें।

मात्रा व सेवन-विधि—६ मा० से १३॥ मा० तक उष्ण जल या किसी यथोचित क्वाथ के साथ सेवन करें। (इ० अ०)

अयास्य ayásya–हिं० संज्ञा पु०[सं०] (१) प्राणवायु। (२) शत्रु। विरोधी।–वि० [सं०] निश्चल। अटल।

अयिम्परत्ति ayimpa-ratti–मल० जपा पुष्प, अड़हुल–हिं०। Shoeflower (Hibiscus rosasinensis, *Linn.*) स० फा० इं०।

अयु ayu–बर० अस्थि, हड्डी। Bones (Ossa) स० फा० इं०।

अयुक्छदः ayuk-chhadah–सं० पु०
अयुक्छद ayukchhada–हिं०संज्ञा पु०
(१) सप्तपर्ण वृक्ष, छातिम वृक्ष, छतिवन, सतवन। (Alstonia scholaris *R. Br.*) इ० च०। (२) वह वृक्ष जिसकी अयुग्म पत्तियाँ हों। जैसे बेल, अरहर इत्यादि।

अयुक्त ayukta हिं० वि०
अयुत ayut–[सं०]
(१) अमिश्रित, अमिलित, असंयुक्त, अलग। (२) अयोग्य, असम्मिलन, संयोगविरुद्ध। इन्कम्पैटिबल (Incompatible).

अयुग ayuga–हिं० वि० [सं०] विषम। ताक़।

अयुत ayut–हिं० संज्ञा पु० दस हज़ार की संख्या का स्थान। दस सहस्र। टेन थाउज़ण्ड (Ten thousand)–इं०। (२) उस स्थान की संख्या।

अयुग्म ayugma–हिं० वि० [सं०] (१) विषम, ताक़। (२) अकेला। एकाकी।

अयुग्मकः ayugmakah–सं० पु० सप्तपर्ण वृक्ष, छातिम, छतिवन। (Alstonia Scholaris. R. *Br.*) वै० निघ०।

अयुग्मच्छदः ayugmachchhadah–सं० पु० (Alstonia scholaris, R.BR.) देखो—**अयुग्मच्छद**।

अयुग्मच्छद ayugmachchhada–हिं०संज्ञा पु० सप्तपर्ण,छातिम, छतिवन।(Alstonia Scholaris, R.*Br.*) अ० टी०। (२) वह वृक्ष जिसकी अयुग्म पत्तियाँ हों, जैसे बेल, अरहर इत्यादि।

अयुग्मपत्रः ayugma-patrah–सं० पु०
अयुग्मपर्णः ayugma-parṇah "
सप्तपर्ण, छातिम, छतिवन। (Alstonia Scholaris, *R. Br.*) वै० निघ०।

अयुग्मबाण ayugma-báṇa–हिं० संज्ञा पु० [सं०] कामदेव। (Cupid).

अयुग्मवाह ayugma-váha–हिं० संज्ञा पु० [सं०] सूर्य्य। (Sun).

अयू ayú–तु० रीछ,भल्लूक। बीअर (Bear.)–इं०।

अयूक ayúka–तु० क़ाक़्म जो एक मूल्यवान खाल है।

अयूचा ayúchá–सं० भूताङ्कुश। See–Bhútánkusha.

अयुष ayusha-हिं० संज्ञा स्त्री० देखो-आयुष।

अयूमीसुए āyumí-sue-अर० अस्थि अङ्गार, हड्डी का कोयला। Animal-charcoal (Carbo Animalis.) स० फा० इं०।

अयूस ayús-यू०, रू० ज़ङ्गार। यह खनिज तथा कृत्रिम दोनों तरहका होता है।

अये aye-अर० (ए० व०) सुरा, मद्य, दारू, शराब। Spirit; Arrack. (Indian Spirituous Liquor.) स० फा० इं०। -हिं० संज्ञा पुं० [अनु०] इलोथ की जाति का एक जन्तु। यह जन्तु अये अये शब्द करता है इसीलिए इसको अये कहते हैं।

अयेमियाआ aye-miyáá-अर० (ब० व०) मद्य, सुरा। (Spirit.) स० फा० इं०।

अयोए ayoe-अर० (ए० व०) पत्रम्-सं०। पत्र, पर्ण, पत्ता, पत्ती, पात-हिं०। (Leaf.) स० फा० इं०।

अयोए-मियाआ ayoe-miyáá-अर० (ब० व०) पत्तियाँ, पत्र, पर्ण। (Leaves.) स० फा० इं०।

अयोगः ayogah-सं० पुं० }
अयोग ayoga-हिं० संज्ञा पुं० } (१) योग का अभाव। विश्लेष। विच्छेद। अनैक्य। (Analysis.) (२) कठिनोद्यम। (३) कूट (Kúṭa.) मे० गत्रिकं।

अयोगुड़ः ayo-guḍah-सं० पुं० लौह गुड़िका, लोहे की गोली। (Ball of iron.) यथा—"वरमाशी विषविषं कथितं ताम्रमेव वा। पीत-मत्यग्नि सन्तप्तो भक्षितो वाप्ययोगुड़॥" च०।

अयोग्य ayogya-हिं० वि० [सं०] जो योग्य न हो। अयुक्त। अनुपयुक्त। (Incompatible, Incompetent.)

अयोग्रम् ayogram-सं० क्ली० (१) मूषल। (२) बाण आदि (An Arrow.)। (३) अस्त्र। (A weapon.)

अयोघनः ayoghanah-सं० पुं० (१) एकीभूत-लौहपुञ्ज, लौहकूटम्, हथौड़ी। (२) निहाई।

अयोच्छिष्टम् ayochchhishṭam-सं० क्ली० लौहकिट्ट, मण्डूर। (Ferri Peroxide.) वै० निघ०।

अयोनि ayoni-हिं० वि० [सं०] अनुत्पन्न। अजन्मा।

अयोनिज ayonij-हिं० वि० [सं०] जो योनि से उत्पन्न न हो। जीव विशेष। योनि जातभिन्न, वृक्ष आदि। (२) अदेह।

अयोभस्म योगः ayobhasma yogah-सं० पुं० लौह भस्म में नागरमोथे का चूर्ण मिलाकर खैर के क्काथ के साथ पीने से हलीमक दूर होता है। नि० र०।

अयोमलम् ayomalam-सं० क्ली० लोह मल, लोह किट्ट, मण्डूर। (Ferri Peroxide.) लोहारगु वा मण्डूर-बं०। प० मु०। "अयोमलन्तु सन्तप्तं।" सि० यो० पाण्डु-चि० वृन्द। च० द० पाण्डु-चि०।

अयोमोदकः ayomodakah-सं० पुं० लोह भस्म, तिल, त्रिकुटा समान भाग लेकर तथा सर्व तुल्य सोनामाखी भस्म मिलाकर शहद के साथ लड्डू बनाकर खाने से असाध्य पाण्डु का नाश होता है। नि० र०, वै० वि०।

अयोरजः ayorajah-सं० क्ली० (१) लौहकिट्ट, मण्डूर (Ferri Peroxide.)। (२) लोहचूर्ण (Iron Powder.)। च० द० पाण्डु-चि० नवायस चूर्ण।

अयोरजः प्रभृति चूर्णम् ayorajah prabhriti chúrṇam-सं० क्ली० सोंठ, मिर्च, पीपल, विडंग इनके चूर्ण के साथ अथवा हल्दी, त्रिफला चूर्ण के साथ समभाग लोह भस्म मिला कर मधु के साथ खाएँ। रस० यो० सा०।

अयोरजादि चूर्णः ayorajádi chúrṇah-सं० पुं० लोह चूर्ण, त्रिकुटा, विडंग, हल्दी, त्रिफला अथवा निसोथ और मिश्री वा इन्द्रायण की गूदी गुड़ और सोंठ मिलाकर खाने से कामला दूर होता है।

अयोरजादियोगः ayorajádiyogah-सं० पुं० लोह चूर्ण, हड़, हल्दी इनका चूर्ण शहद और घी के साथ अथवा हड़ का चूर्ण गुड़ और शहद

के साथ चाटने से कामला दूर होता है। वृ० नि० र०।

अयोरजादि लेपः ayorajádilepah–सं० पुं० (१) लोह चूर्ण, कसीस, त्रिफला, लवंग और दारु हल्दी का लेप करने से नवीन त्वचा का रंग पूर्ववत् हो जाता है। (२) लोहचूर्ण, काला तिल, सुरमा, वकुची, आमला इनको जलाकर भांगरे के रस में पीसकर लेप करने से किलास कुष्ठ (तांबे के समान रंग वाले कोढ़, श्वेत कुष्ठ का भेद) का नाश होता है। इसे जिस स्थानपर लगाना हो पहले खुजलाकर लेप करना चाहिए।

अयः पान ayah-pána–सं० क्लीं० द्रवीभूत तप्त लोहे का पान, अयस्पान। नर्कमें तप्त लोहे का पान करने को कहा है।

अयःपिण्ड ayah-pinda–हिं० पुं० लौह पिंड, लोहे का गोला।

अयः शूल ayah-shúla–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) एक अस्त्र। (२) तीव्र उपताप।

अयोवस्तिः ayo-vastih–सं० पुं०, स्त्री० वस्तिकर्म विशेष (A kind of enemata.)। यथा—"एरण्डमूलं निःक्वाथ्य मधुतैलं ससैन्धवम्। एष युक्त अयोवस्तिः सवचापिप्पली फलः॥" भा०।

अयम ayma–ता० देखो—**अयम्**।

अय्याम् अव्वल ayyám.avval–अ० रोगारम्भ काल अर्थात् आरम्भ रोग से तीन दिवस।

अय्याम् इन्ज़ार ayyám-inzár–अ० बुह्रान की सूचना देने वाले दिन। इन दिनों में विशेष प्रकार के परिवर्तन पाए जाते हैं जिनसे यह सूचित होता है कि उक्त रोग का अमुक दिवस बुह्रान होने वाला है, यथा—नवीन रोगों में प्रथम दिवस परिपक्वता (नुज़ुज) के प्रभाव का प्रगट होना चतुर्थ दिवस बुह्रान उपस्थित होने की सूचना देता है।

अय्याम् ग़ैर बाहुरिय्यह् ayyám-ghair-báhúriyyáh–अ० वह दिवस जिनमें बुह्रान उपस्थित नहीं होता। वे निम्न तेरह दिवस हैं—२२ वाँ, २३ वाँ, २५ वाँ, २६ वाँ, २८ वाँ, २९ वाँ, ३० वाँ, ३२ वाँ, ३३ वाँ, ३५ वाँ, ३६ वाँ, ३८ वाँ, तथा ३९ वाँ। किन्तु, शेख़ ने निम्नलिखित रोगों को अय्याम ग़ैर बाहुरिय्यह माना है—पहिला, दूसरा, दसवाँ, बारहवाँ, पन्द्रहवाँ, सोलहवाँ, तथा बीसवाँ।

अय्याम् बाहुरिय्यह् ayyám-báhúriyyah

अय्याम् बुह्रान ayyám-buhrán–अ० वह दिवस जिनमें बुह्रान ताम उपस्थित हो। वे निम्नांकित ११ दिवस हैं। इनमें नवीन रोगों का बुह्रान उपस्थित होता है—

चौथा, सातवाँ, चौदहवाँ, बीसवाँ, इक्कीसवाँ, चौबीसवाँ, सत्ताईसवाँ, इकतीसवाँ, चौंतीसवाँ, सैंतीसवाँ, तथा चालीसवाँ। किसी किसी ने प्रथम व द्वितीय दिवस की भी अय्याम् बुह्रान में गणना की है। पुरातन रोगों का सर्व प्रथम बुह्रान चालीसवें दिन उपस्थित होता है।

अय्याम् वाक़ूअ फ़िल्वस्त ayyám-váqáa fil-vast–अ० मध्यकाल जो न बाहूरी (बुह्रान काल) हो और न इन्ज़ारी (बुह्रान सूचक दिवस) किंतु किसी घटना या प्रतिद्वन्द्विता के कारण इनमें बुह्रान ग़ैर ताम उपस्थित हो। वे छः दिन हैं, यथा—३ रा, ५ वाँ, ९ वाँ, ११ वाँ, १३ वाँ, और १७ वाँ, इन दिनों में कभी बुह्रान उपस्थित होता है और कभी नहीं। जिन दिनों में बुह्रान नाक़िस (अपूर्ण) होता तथा दुःख व चिन्ता होती है, वे निम्न ८ दिवस हैं, यथा—६ वाँ, ८ वाँ, १० वाँ, १२ वाँ, १५ वाँ, १६ वाँ, १८ वाँ और १९ वाँ।

अय्यिम् ayyim–अ० विधवा या राँड़ स्त्री अथवा रँडुआ पुरुष, अविवाहिता स्त्री वा पुरुष। इसका बहुवचन अयामा है। नन् (Nun)–ई।

अय्यी áayyí–अ० रुक रुक कर बात करना, बातचीत में रुकावट होना, आजिज़ हो जाना, किसी वस्तु को न जानते हुए उसकी बातचीत से अवाक् रहना, अय्यी तथा सिह्त का भेद देखो–सिहत में।

अरंग aranga-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] अर्घ्य=द्रव्य] सुगंध । महक ।

अरंड aranda -हिं० संज्ञा पुं० रेंड़ (Ricinus Communis.) देखो—एरंड ।

अर ara हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) कोण । कोना (Corner, angle) (२) सेवार, शैवाल । (Sea-wead)

आरब āarab-अ० ख़रगोश, खरहा, शशक । हेयर (A hare), रैबिट (Rabbit)-इं० ।

आरआर āarāar-अ० (१) सरोकोही —फ़ा० । हाऊबेर, हपु(वु)षा-हिं० । (Juniperi fructus. यह दो प्रकार का होता हैं—(क) बृहत् जिसका फल फ़िन्दक़ के समान होता है और (ख) लघु जिसका फल बाक़ला के बराबर गोल होता है । (२) खजूर (Date) । (३) अमल ।

अरइल araila--हिं० संज्ञा पुं० [देश] एक वृक्ष का नाम ।

अरई araí-हिं० स्त्री० आलुकी, घुइयाँ, अरुई (The root of Arum colocasia.)

अरऊन araún-हिं० पुं० अहटणी, अहरन ।

अरकः arakah-सं० पुं०, क्लो०
अरक araka-हिं० संज्ञा पुं०
} (१)शैवाल, सेवार । (Sea wead) हारा० । वै० निघ० । (२) खेत्रपर्पट, खेतपापड़ा । (Oldenlandia corymbosa.) रा० ।

अरक araka- हिं० संज्ञा पुं०
आरक़ āaraq-अ०
} (१) स्वेद, घर्म, पसीना । पर्स्पाइरेशन(Perspiration), स्वीट (Sweat)-इं० । (२)परिस्रुत जल, टपकाया हुआ पानी, भभके से खींचा हुआ औषधीय जल । किसी पदार्थ का रस जो भभके से खींचने से निकले । एक्वा (Aqua), वॉटर (Water) । देखो—अर्क । (३) रस ।

अरककुद्रुमी arak-kudrumí-सन्ता० लाल पटुआ, लाल अम्बाड़ी । (Hibiscus sabdarffa) इं० मे० प्लां० ।

आरक़ जुज़ई āaraq-juzí
आरक़ मौज़ई āaraq-mouzaāí
} —अ० स्थानिक स्वेद, आंशिकघर्म, वह स्वेद जो किसी विशेष अवयव में प्रादुर्भूत हो । मेरिड्रासिस (meridrosis)-इं० ।

आरक़ दम्वी āaraq-damví-अ० रक्तमय स्वेद-स्राव होना, पसीने में शोणित आना, रक्त मिश्रित स्वेद स्राव होना, स्वेद में रक्त मिला हुआ निकलना । हेमिड्रासिस (Hemidrosis)-इं० ।

अरक नाना araka-náná-हिं० संज्ञा पुं० [अ० अर्क़ नअ्नअ्] एक अरक जो पुदीना और सिरका मिलाकर खींचने से निकाला जाता है ।

आरक़ब āraqab-अ० पर्वतीय अर्थात् पहाड़ी बकरा, गाय या बारहसिंगा ।

अरक बादियान araka-bádiyán--हिं० संज्ञा पुं० [अ०] सौंफ का अरक़ ।

आरक़ बौली āaraq-boulí-अ० मूत्रीयघर्म, पेशाबमय स्वेद, वह स्वेद जिसमें मूत्रद्रव्य विसर्जित हो । ऐसे स्वेद में से मूत्र की सी गंध आती है । यूरिड्रासिस (Uridrosis) -इं० ।

आरक़ मुतलव्वन āaraq-mutalavvan-अ० वर्णयुक्त स्वेद, रंगीन पसीना, रंगीन पसीना आना । क्रोमिड्रॉसिस (Chromidrosis) -इं० ।

आरक़ मुन्तिन āaraq-muntin-
आरक़ मन्तिन āaraq-mantin
} -अ० दुर्गन्धित स्वेद, दुर्गन्धमय पसीना । ब्रोमिड्रासिस (Bromidrosis)-इं० ।

आरक़ मुफ़रित āaraq-mufrit-अ० स्वेदाधिक्य, पसीने की अधिकता, अधिकता के साथ स्वेदस्राव होना । एफिड्रॉसिस (Ephidrosis) हाइपरिड्रॉसिस (Hyperidrosis), स्युडोरेसिस (Sudoresis)-इं० ।

अरकला arakalá-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अर्गल=अगरी या बेंड़ा] रोक । मर्य्यादा ।

अरक़लियान araqliyán-यू० ख़शख़ाश ज़र्दी ।

आरक़ लैली āaraq-lailí-अ० रात्रि स्वेदस्राव,

रात में पसीना आना, जैसा कि राजयक्ष्मा में प्रायः होता है। नाइट स्वीट (Night sweat)-इं०।

अरकाकिया arakákiyá-यू० मकड़ी का जाला। (The Spider's web).

अरक़ान araqán-यू०
अरक़ून araqún- ,, } मेंहदी। (Myrtus communis).

अरकान arakán-बारहसिंगा। A stag (Cerous elaphus).

अरक़ुद्दम् āaraquddam-अ० रक्तमय स्वेद-स्राव, स्वेद के स्थान में रक्त निकलना, यह एक रोग है जिसमें स्वेद के स्थान में शुद्ध शोणित निकलता है। हेमेटीड्रासिस (Hematidrosis)-इं०।

अरकुल arakul-पं० दखमिला, दमविला-उ० प० सू०।

अरक़ून araqún-यू० मेंहदी। (Myrtus communis.)

अरक़ूलस araqúlas-यू० अभल, हाऊबेर, हपु(व)षा। (Juniperi fructus.).

अरक्टियम्-लेप्पा arctium lappa-लेप्पा। (Burdock.)-इं०।

अरक्टॉस्टेफिलोस ग्लॉका arctostaphylos glauca-ले० (Manzanita leaves)-इं०।

अरक्टॉस्टेफिलोस यूवा अर्साई arctostaphylos uva ursi-ले० भल्लूक द्राक्षा, ऋक्ष द्राक्षा-सं०। इनबुद्दुब, आबिस-अ०।

अरक्तः araktah-सं० पुं० लाक्षा, लाख, लाही। ला-बं०। (Lac) रा० नि व० ६। देखो-अलक्तः।

अरक्रक् āarakrak-अ० मांसल तथा उभरा हुआ पेडू।

अरखर arakhar-पं० गहुम्बल, भकोरिया, मलियून। उ० प० सू०। मेमो०।

अरखर arakhar-पं० दखमिला, दसविला। उ० प० सू०। मे० मो०।

अरकोल arakola-हिं० संज्ञा० पुं० [सं० कौलीरा] एक वृक्ष जो हिमालय पर्वत पर होता है। इसका पेड़ झेलम से आसाम तक २००० से ८००० फुट की ऊँचाई पर मिलता है।

अरकासार arakására-हिं० संज्ञा पुं० [?] तालाब। बावली। -डि०।

अरग araga-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अगरु=एक चन्दन] अरगजा। पीले रंग का एक मिश्रित द्रव्य जो सुगंधित होता है।

अरगजा aragajá-हिं० संज्ञा पुं० [हिं० अरग+जा] एक सुगंधित द्रव्य जो शरीर में लगाया जाता है। यह केशर चन्दन कपूर आदि को मिलाने से बनता है। (A perfume of a yellowish colour and compounded of seeral seecented ingredients.)

अरगजी aragají-हिं० संज्ञा पुं० [हिं० अरगजा] एक रंग जो अरगजे का सा होता है। वि० [हिं० अरगजा] (१) अरगजी रंग का। (२) अरगजा की सुगंधि का।

अरगट aragaṭa-हिं० संज्ञा पुं० [इं०] दे०—अर्गटा। (Ergota).

अरग़वाँ araghaván-फ़ा० अर्ग़वाँ-फ़ा०।

अरग़वानी araghaváni-हिं० संज्ञा पुं० [फ़ा०] रक्त वर्ण। लाल रंग। वि० (१) गहरे लाल रंग का। लाल। (२) बैंगनी।

अरगल aragala-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अर्गल] वह लकड़ी जो किवाड़ बंद करने पर इस लिए आड़ी लगाई जाती है कि वह बाहर से खुले नहीं। ब्योंड़ा। गज।

अरग़ामूनी araghámúni-यू० वन पोस्ता, मामीसा सुर्ख़ (जंगली ख़सख़ास के सदृश एक बूटी है)।

अरग़ू aragú-फ़ा० लाख, लाक्षा। Lac (Coccus lacca.)

अरघट्ट araghaṭṭa
अरघट्टक araghaṭṭaka } -हिं० संज्ञा पुं० [सं०] रहट। देखो—"अरहट" arahaṭa.

अरग्वधः aragvadhah–सं० पुं० अमलतास, आरग्वध, धन बहेड़ा । (Cassia fistula.) रा० नि० व० ६ । भा० पू० १ भा० । द्रव्य० गु० वै० निघ० ।

अरग्वधम् aragvadham–सं० क्लीं० अमलतास, स्वर्णालुफल । (Cassia fistula.) सि० यो० वृहद् अग्निमुख चूर्ण ।

अरघान araghána–हिं० संज्ञा पुं० [सं० आघ्राण=सूँघना] गंध । महक । आघ्राण ।

अरङ्गः,-गा,-गी arangah,-gá,-gí–सं०पुं०, स्त्री० (१) अरङ्गीमत्स्य, मछली भेद, मछली विशेष (Pisces.) वै० निघ० ।

(२) मधु शिग्रुः, मीठा सहिंजन । रत्ना० । (Guilandina Moringa, Sweat var. of-)

अरङ्ग aranga–बरार० कुर्का, भोण्डर, गोण्डा। नार-बोटकु-ते० । (Eriolæna Hookeriana, *W&A*; Syn. Ereolœna spectabilis *Planch.*) इसके तन्तु एवं रुई व्यवहार में आती है । मेमो० ।

अरङ्गकः arangakah–सं०पुं० दिनकर्लिंग, कडु खजूर, काला खजूर–हिं० । मीलिया ड्युबिया (Melia dubia, *Cav.*), मी. सुपर्बा (Melia superba.), मी. रोबस्टा (Melia robusta.)–ले० । कडु खजुर–गुज०, बं०, बम्बई । निम्बर-मह० । काड-बेवु, आर-बेवु-कना० ।

निम्ब वर्ग

(*N. O. meliaceae*)

उत्पत्ति-स्थान—पूर्वी व पश्चिमी प्रायद्वीप ब्रह्मा तथा लंका ।

वानस्पतिक-विवरण—दिनकर्लिंग वृक्ष के शुष्क फल को संस्कृत में अरङ्गक ख्याल किया जाता है । आकार, रूप तथा वर्ण में यह बहुत कुछ खजूरके समान होताहै, परन्तु ध्यानपूर्वक परीक्षा करने पर मज्जा एक अत्यन्त कठिन अस्थि (गुठली) से भली भाँति संश्लिष्ट पाई जाती है । फल डण्डी का अवशिष्ट भाग भी खजूर की डण्डी से भिन्न दीख पड़ता है । जलमें भिगोने पर फल शीघ्र अपनी सिकुड़न को छोड़कर अंडाकार पीताभहरित वर्ण के बेर के समान हो जाता है । अब छिलका मोटा दीख पड़ता है तथा सरलतापूर्वक गूदा से भिन्न किया जा सकता है ।

फलशीर्ष मुड़ा हुआ होता है और उस पर सूक्ष्म अंकुर होते हैं । आधार पर पञ्चभाग युक्त पुष्पाभ्यंतर कोष दल तथा फलडण्डी का एक छोटा भाग लगा होता है । गुठली १ इञ्च लम्बी, अप्रशस्त रूप से पञ्च परिखायुक्त, प्रलम्बित, दोनों शिरों पर छिद्र युक्त होती है; शीर्ष, छिद्र की चारों ओर पञ्च दंष्ट्रयुक्त, पञ्चकोषयुक्त (या पतन के कारण इससे न्यून) होता है; बीज अकेला, भालाकार, शीर्ष से लगा रहता है; बीजावरण सूक्ष्म परिमाण में; गर्भ सरल, विलोम; दौल भालाकार; आदि मूल अंडाकार एवं ऊर्द्ध होता है। बीज $\frac{३}{४}$ इञ्च लम्बा तथा $\frac{५}{६}$ इञ्च चौड़ा होता है । बीज त्वक् (Testa) गम्भीर धूसर या श्याम वर्णका परिमार्जित; गिरी अत्यन्त तैलीय एवं मधुर स्वाद युक्त होती है ।

उपयोगांश—फल ।

रासायनिक संगठन—(या संयोगी द्रव्य) फलस्थ तिक्त तत्व एक प्रकार के रवा में परिणतिशील ग्लूकोसाइड है जो ईथर, मद्यसार तथा जलमें विलेय होता है । इसमें किञ्चित् अम्ल प्रतिक्रिया होती है । इसके अतिरिक्त इसमें सेब की तेजाब (Malic acid) ग्लूकोज, लुआब, तथा पेक्टीन नामक पदार्थ पाए जाते हैं ।

डाइमॉक ।

प्रभाव तथा उपयोग—फल मज्जा में एक प्रकार का तिक्त एवं मतलीजनक स्वाद होता है । श्रमजीवियों में उदरशूल की यह एक उत्तम औषध है । इस हेतु युवापुरुष की मात्रा अर्द्ध फल है । इसमें किसी रेचक गुण की विद्यमानता मुश्किल से प्रतीत होती है; तो भी कहा जाता है कि यह कृमिघ्न प्रभाव करता है तथा व्यथाको तत्काल शमन करता है । कोंकनमें कच्चे फल का

स्वरस १ भाग, गंधक ½ भाग, और दही १भाग, इन तीनों को ताम्र पात्र में अग्नि पर गरम कर तरखुजली (Scabies) एवं (Maggots) द्वारा जनित क्षतों में लगाते हैं। डाइमॉक।

फल कटु, संकोचक और और वायुनिस्सारक (आध्मानहर) है। इं० मे० मे०।

अरङ्गरः arangarah-सं० पुं० कृत्रिम विष। (Artificial Poision.) वै० निघ०।

अरङ्गुदी arangudí-सं० स्त्री० माधवीलता। (See-mádhavílatá.) वै० निघ०।

अरचरु aracharrú-सिमला० मसुरी, मकोला -हिं०। रसेलवा, पजेरी-सिमला०। भोजिन्सी -नैपा०। (Coriaria nepalensis.) मेमो०।

अरचि arachi-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० अर्चि] ज्योति। दीप्ति। आभा। प्रकाश। तेज।

अरची arachí-ता० काञ्चनार, कचनाल, अश्ता -हिं०। (Bauhinia variegata.) मेमो०।

अरचु arachu-गढ़वाल हिन्दी रेवतचीनी। मेमो०।

अरज़ áaraz-अ० } तिब की परि-
मुज़ाअफ़ह् muzáaafah } भाषा में उस अस्वाभाविक दशा या व्याधि का नाम है जो अन्य रोगोंके कारण अर्थात् उसके आधीन होकर उत्पन्न होती है। उदाहरणतः वह शिरःशूल जो किसी ज्वर के आधीन होकर जनित होता है अर्ज़ (उपसर्ग, उपद्रव) कहलाता है। कम्प्लिकेशन (Complication.), सिम्पटम् (Symptom.)-इं०।

अलामत और अरज़ का भेद—

इन दोनों में मुख्य और गौण का अन्तर है अर्थात् अर्ज़ अलामत की अपेक्षा मुख्य वा प्रधान है। क्योंकि अलामत (लक्षण) स्वास्थ्य तथा रोग प्रत्येक दशा के लिए प्रयोग में आता है और फिर कभी यह स्वास्थ्य एवं रोग से पूर्व कभी पश्चात् होता है। इसके विपरीत अर्ज़ (उपसर्ग) रोगाक्रमण के पश्चात् ही पाया जाता है और उसके आधीन होता है। अस्तु, निम्नोष्ठ-स्फुरण वमन होने की अलामत (रूप) कहा जाता है; किन्तु उसको अरज़ नहीं कहा जा सकता। क्योंकि वह रोग (वमन) से पश्चात् नहीं, प्रत्युत पूर्व में पाया जाता है।

अलामत और दलील का भेद देखो अलामत में।

डॉक्टरी नोट—कम्प्लीकेशनका शाब्दिक अर्थ परस्पर संश्लिष्ट (लिपटना) या द्विगुण होना है। डॉक्टरी की परिभाषा में दो या अधिक व्याधियों का एक ही काल में उपस्थित हो जाना अर्थात् एक ही रोगके वेग पथमें अन्य रोग वा व्याधियों का उत्पन्न हो जाना है, जिनका स्थायित्व प्रथम रोग पर निर्भर होता है। दूसरे शब्दों में वह पूर्व व्याधि के आधीन होते हैं।

अर्वाचीन मिश्रदेशीय चिकित्सक उक्त शब्द की रचना तथा उसके मौलिक शब्दार्थ को दृष्टि में रखकर मुज़ाअफ़ह् संज्ञा को उसके पर्याय रूप से प्रयोग में लाते हैं। परन्तु तिब की परिभाषा में उसका वास्तविक प्राचीन सत्य भाव अर्ज़ शब्द से प्रकट हो जाता है। अस्तु, इसे ही यहाँ ग्रहण किया गया है।

सिम्पटम का शाब्दिक अर्थ परस्पर घटित होना है। किन्तु डॉक्टरी परिभाषा में उस परिवर्तन को कहते हैं, जो रोगकाल में उपस्थित होता है और जिससे उक्त व्याधि की उपस्थिति का पता लगता है। अस्तु, इस विचार से सिम्पटम अलामत (रूप वा लक्षण) का पर्याय है। परन्तु अर्वाचीन मिश्रदेशीय तबीब अलामत की बजाय अर्ज़ को इसका पर्याय मानते हैं।

अरज araja-हिं० संज्ञा पुं० चौड़ाई।

अरज áaraja-अ० पंगु या लुंग, लँगड़ा होना, पंगुत्व, लँगड़ापन। लेमनेस (Lameness.)-इं०।

अरजल arajala-हिं० संज्ञा पुं० [अ०] (१) वह घोड़ा जिसके दोनों पिछले पैर और अगला दाहिना पैर सफ़ेद या एक रंग के हों।

ऐसा घोड़ा ऐबी माना जाता है। (२) नीच जाति का पुरुष। (३) वर्ण शंकर।
त्रि० (अ०) नीचः।

आरजा äarajá–अ० चर्ख, आकाश, आस्मान। (Sky.)

अरजान arajána–बरब० बरबरी बादाम का वृक्ष।

अरजालून arajálún–बरब० फ़ाशरा, शिव-लिंगी। (Bryonia laciniosa).

अरजा arajá–सं० स्त्री० घृतकुमारी, घीकुआर। (Aloes Barbadensis.)

अरजुन arajuna हिं० संज्ञा पुं० [सं०] दे० अर्जुन। (Terminalia Arjuna).

अरटी araṭí–सं० स्त्री०
अरटीपण्डु araṭí-paṇḍu–ते०
अरटीचेट्टु araṭí-cheṭṭu-ते०
केला, कदली -हिं०। अनंटचेट्टु, अरिट चेट्टु-ते०। (Musa sapientum, *Linn.*) स० फा० इं०।

अरटुः araṭuh-सं० पुं० अरलुवृक्ष, सोनापाठा, श्योणा(णा)नाक। श्योणा गाछ-बं० (Oroxylum indicum, *Vent.*) अ० टी०।

अरटुपर्णः araṭu-parṇah–सं० पुं० यह चिरस्थायी वृक्ष है। अरटुपर्ण नामक वृक्ष। अथर्व०। सू० १३। १५। का० २०।

अरडी araḍí–नैपा० कचैटा–हिं०। अग्लागल, किंगली। (Mimosa rubicaulis.) मेमो०।

अरडूसी araḍúsí–गु० अडूसा, वासक। (Adhatoda vasica, *Nees.*).

अरणः araṇah–सं० पुं० (१) चित्रक वृक्ष, चीता। (Plumbago zeylanica.) वै० निघ०। (२) गंदा, मलिन। अथर्व० सू० २२। १२। का० ५।

अरण तण्डिग भूकस araṇa-tandig-bhúkas–बम्ब० भूतफल-सं०। बकरा-यू० पी० सी०। मिरम्गुप–अव०। मेमो०।

अरणमरण araṇa-maraṇa–मह० ज़ख्म-हयात्, हेमसागर हिं०, बं०। (kalnchœ laciniata, *D. C.*) फा० इं० १ भा०।

अरण मरम् araṇa-maram–मल० तून। (Cedrela toona, Roxb.) इं० मे० मे०। स० फा० इं०। इं० मे० प्लां०।

अरणा araṇá–हिं० पुं०, स्त्री० (१) जंगली भैंसा। (A wild buffalo.)। (२) कण्डा, जंगली कण्डा, अरना। (Cowdung found dried in the forest.).

अरणिः araṇih–सं० पुं०
अरणि araṇi–हिं० संज्ञा स्त्री०
(१) एक प्रकार का वृक्ष गनियार। अँगेथू। क्षुद्राग्निमंथ वृक्ष। छोटी अरणी का वृक्ष, कुण्डली, अरणी-हिं०, सं०। छोट गणिर-बं०। (Cleredendron Inerme.) वा० टी० १५ अ०; हेमा० वीरतर्वादि। अरणिर्वह्निमन्थेना द्वयोर्निर्मथ्यदारुणि। मे० णत्रिकं। (२) श्योणाक, सोनापाठा, अरलु (Oroxylum Indicum, *Vent.*)। (३) चित्रक वृक्ष, चीता (Plumbago Zeylanica.)। (४) सूर्य (The sun.)। (५) अग्न्युत्पादक-काष्ठयन्त्र। काठ का बना हुआ एक यन्त्र जो यज्ञों में आग निकालने के लिए काम आता है। इसके दो भाग होते हैं—अरणि वा अधरारणि और उत्तरारणि। यह शमीगर्भ अश्वत्थसे बनाया जाता है। अधरारणी नीचे होती है और उसमें एक छेद होता है। इस छेद पर उत्तरारणी खड़ी करके रस्सी से मथानी के समान मथी जाती है। छेद के नीचे कुश वा कपास रख देते हैं जिसमें आग लग जाती है। इसके मथने के समय वैदिक मंत्र पढ़ते हैं और ऋत्विक लोग ही इसके मथने आदि का काम करते हैं। यज्ञ में प्राय: अरणी से निकली हुई आग ही काम में लाई जाती है। अ० ग्निमंथ।

अरणिका araṇiká–सं० स्त्री० अग्निमंथ वृक्ष, अरणी। (Clerodendron Inerme.) वा० सू० १५ अ० वेल्लन्तरादि व०। "वेल्लन्तरारणिरुबूक वृषाश्य भेद·········।"

अरणी araṇí–सं० स्त्री०, हिं० संज्ञा स्त्री० (१) जंगली मादा भैंस, भैंस (A female wild buffalo) । (२) क्षुद्राग्निमन्थ । रा० नि० व० ६ । (३) अरनी (णी), अगेथ (थु), गणि (नि) आरि, टेकार--हिं० ।

संस्कृत पर्याय गणिकारिका, अग्निमन्थः, श्रीपर्णी, कर्णिका, जया, तेजोमन्थः, हविर्मन्थः, ज्योतिष्कः, पावकः, अरणिः, वह्निमंथः, मथनः (र), जयः (भा०), गिरिकर्णिका (द्रव्याभि०), पावकारणिः (शब्द मा०), अग्निमथनः, तर्कारी, वैजयन्तिका, वैजयन्ती, अरणीकेतुः, श्रीपर्णी, नादेयी, विजया, अनन्ता, नदीजा, हरिमन्थः ।

अन्वर्थ-संज्ञा—"अनुत्वा", "गन्धपुष्पा" और "गन्धपत्रा"। गणिरी, अ(आ)ग्गान्त, भूतभैरवी, गणियारी–बं० । प्रेम्ना इण्टेग्रिफोलिया (Premna integrifolia, *Linn.*) प्रेम्ना स्पाइनोसा (Premna spinosa, *Roxb.*)

मुन्नय (न्नी), नेलीचेट्टु--ता० । घेबु-नेल्लि, पिन्न-नेल्लि, चिरिनेल्लु-चेट्टु, पिनुश्रा-नेल्लि, नेल्लि-चेट्टु--ते०, तै० । अप्पेल--मल० । तल्लिले. तग्गी, नरुवल, ऐरण–कना०, कर० । गयेन्द्यारी, गैंयदारी--कों० । ऐरण, नरवेल, टांकला, चामारी, (थोर ऐरण=क्षुद्राग्निमंथ)-मह० । अरणी, मोठी अरणी, ऐरणमूल--गु० । अगयाबात--उड़ि० । गणिआरी--अव० । बकर्च--ग० । अगिवथ--उत्० । गिनेरी--नैपा० । गणियरी--आसा० । सिहिन्-मिदि, कणिका-सिं० । अरनी, ऐरणमूल-बम्ब० । टंगथैंग्-धी–बर० ।

निर्गुण्डी वर्ग

(N. O. Verbenaceæ)

उत्पत्ति-स्थान—यह भारतवर्ष के अनेक प्रांतों विशेषतः समुद्रतट पर होती हैं । उत्तरी भारत, तिब्बत, काश्मीर, बम्बई से मलक्का पर्यन्त, सिल्हट और लंका ।

नोट—क्षुद्र वृहद् भेद से अग्निमंथ दो प्रकार का होता है । दोनों प्रकारके अग्निमंथ गुण में समान होते हैं ।

क्षुद्राग्निमन्थ के पर्याय—

ह्रस्वगणिकारिका, तपनः, विजया, गणिकारिका, अरणिः, लघुमन्थः, तेजोवृक्षः, तनुत्वचा, (रा० नि० व० ६) । छोट गणियारी-बं० । नरवेल, टाकली, नरवेलर–मह० । तक्की–का० । प्रेम्ना सिरेटिफोलिया (Premna serratifolia *Linn.*). क्लेरोडेण्ड्रोन फ्लोमोइडिस Clerodendron phlomoides)-बं० । देखो–क्षुद्राग्निमन्थ ।

किसी किसीने संगकुप्पी (Clerodendron Inerme, *Gærtn.*) को क्षुद्राग्निमन्थ अर्थात् छोटी अरणी लिखा है । देखो–संगकुप्पी,–कुपी (कुण्डली-सं० । बनजोई–बं० । इसमूखारी-द०) ।

वानस्पतिक-वर्णन—इसके वृहत् क्षुप वा लघुवृक्ष होते हैं । वृक्ष१०-१२ हस्तउच्च और बहुशाख होते हैं । कांड लघु, बहुशाख, शाखाएँ प्रायः भूमिलुण्ठित (भूमि के निकट से निकली हुई), प्रसरित होती हैं जिनसे मूल उत्पन्न होते हैं । कांड–त्वक् ऊपर से म्लानशुभ्र एवं सचिक्कण, भीतर से हस्तिदंतवत् अतिशुभ्र, लघु, अल्पाघात से टूट जाने वाले होते हैं । पत्र सम्मुखवर्ती, वृन्तयुक्त, हृदयाकार, पत्राग्र सूक्ष्म (अनीदार न्यूनकोणीय);पत्रप्रांत करपत्र–शस्त्राकार सखंड (दाँतेदार); पत्रोदर मसृण व चिक्कण, पत्रपृष्ठ शिरान्वित एवं चिक्कण, १-६ इंच लम्बा और १-३ इंच चौड़ा, पत्र में एक प्रकार की तीव्र गंध होती है, पत्रवृन्त पत्र की लम्बाई से चौथाई दीर्घ । पुष्प सशाख, पुष्पदण्ड पर स्थित, पुष्पदंडकी प्रत्येक शाखा ३--४ पुष्प धारण करती है, सविन्यास, सीमान्तिक वा कक्षीय, प्रारम्भिक विभाग सम्मुखवर्ती और द्विशाख, पुष्प अतिक्षुद्र, बहुसंख्यक, पीत वा हरिदाभशुभ्रवर्ण, मिलित दल, दल-अंग प्रधानतः २ भाग युक्त जिनमें से एकभाग तीनअंशमें ईषत् खंडित व दीर्घ, अपरांश अखंड व ह्रस्व । पुंकेशर ४, जिनमें २ वृहत् तथा २ क्षुद्र, श्वेताभ, पुष्पोपरि दीर्घ पुंकेशर में कृष्ण वर्ण के परागकोष स्पष्टतया दृष्टिगोचर होते हैं ।

क्षुद्राग्निमन्थ का वृक्ष क्षुद्रतर होता है। इसलिए इसे गुल्म कहते हैं। गणियारी के कांड तथा शाखाओं में वृहत्, दृढ़ और तीक्ष्णाग्र शाखाएँ परस्पर एक दूसरे के विपरीत दिक् विस्तृत भाव से स्थित होती हैं। वह (अरणी) ऐसी नहीं होती। दोनों प्रकार के अग्निमन्थ में यही भेदक चिह्न है।

रासायनिक संगठन—एक राल (A resin), एक तिक्त क्षारीय सत्व अर्थात् क्षारोद (Alkaloid) और कषायिन (Tannin).

प्रयोगांश—पत्र, मूल, कांडत्वक्।

औषध-निर्माण—क्वाथ, मात्रा-५ से १० तो०। यह दशमूल की दश औषधियों में से एक है अर्थात् इसकी जड़ दशमूल में पड़ती है।

संज्ञा-निर्णय तथा इतिहास—मन्थन वा घर्षण द्वारा जिससे अग्नि उत्पन्न हो उसको "अग्निमन्थ" वा "वह्निमन्थ" कहते हैं। अरणि का अर्थ अग्नि है और यहाँ इससे अभिप्राय अग्न्युत्पादक यंत्र है। चूँकि यज्ञ के लिए पवित्राग्नि प्राप्त करने के लिए इसका काष्ठ काम में आता था। इसलिए इसके वृक्ष को उक्त नामों से अभिहित किया गया। गैम्बल (Gamble) के कथनानुसार सिक्किम की पहाड़ी जातियाँ अग्नि प्राप्ति हेतु स्वभावतः अब भी इसके काष्ठ का उपयोग करती हैं। इसके दो भाग होते हैं—(१) निम्न भाग जिसका काष्ठ कोमल होता है उसे संस्कृत में अधरारणी और (२) ऊर्ध्व भागको जिसका काष्ठ कठोर होता है और जिससे मन्थन क्रिया सम्पन्न होती है, प्रमन्थ कहते हैं। ये योनि और उपस्थ के संकेत माने जाते हैं।

अरणी के गुणधर्म तथा उपयोग

आयुर्वेदीय मतानुसार—तर्कारी (गणिकारिका) कटु, उष्ण, तिक्त तथा वातकफनाशक है और सूजन, श्लेष्मा, अग्निमांद्य, अर्श, मल के विबन्ध तथा आध्मान को हरण करने वाली है। दोनों अरणी वीर्य में और रसादि में तुल्य हैं। इसलिए जहाँ जैसा प्रयोग हो उसी के अनुसार इसका उपयोग करना चाहिए। यथा-"अग्निमन्थ द्वयञ्चैव तुल्यं वीर्यं रसादिषु। तत्प्रयोगानुसारेण योजयेत् स्वमनीषया ॥" (रा० नि०)

तर्कारी कटुक (चरपरी), तिक्त तथा उष्ण है और वात, पांडु, शोथ, कफ, अग्निमांद्य, आम एवं विबन्ध (मलरोध)को नष्ट करने वाली है। (धन्वन्तरीय निघण्टु)

गुण—अग्निमन्थ, उष्णवीर्य तथा कफ, वात को नष्ट करने वाला, कटुक (चरपरा), तिक्त, तुवर (कषेला), मधुर और अग्निवर्द्धक है। प्रयोग—सूजन और पांडु रोग को दूर करता है। भा० पू० १ भा० गु० व०।

गणिकारी शोथहर और बालरोगों के लिए हितकारी है। राज०।

लघु अग्निमन्थ के गुण वृद्धाग्निमन्थ के समान हैं। यथा-"लघ्वग्निमन्थस्य गुणाः प्रोक्ता वृद्धाग्निमन्थवत्। विशेषाल्लेपने चोपनाहे शोफे च पूजितः ॥" परन्तु लेपन, उपनाह और सूजन में इसका विशेष उपयोग होता है। (निघण्टु-रत्नाकर).

यह विष आम और मेद रोग नाशक है।

अरणी के वैद्यकीय व्यवहार

चरक—अर्श में अग्निमन्थ-पत्र—अर्श जन्य वेदना से पीड़ित रोगीको तैलाभ्यंग कराके अरणी पत्र के कोष्ण क्वाथ से अवगाहन कराएँ। (चि० ६ अ०)

सुश्रुत—इक्षुमेह में गणिकारिका मूल वा काण्डत्वक्—(१) इक्षुमेही को अरणी मूल वा कांडत्वक् द्वारा प्रस्तुत क्वाथ पान कराएँ। 'इक्षुमेहिनं वैजयन्तीकषायम्।' (चि० ११ अ०)

(२) चक्षुःकामित्व में गणिकारिका मूलत्वक्—(देखो—असन)।

हारीत—वातव्रण में गणिकारिका मूल—मातुलुंग और अग्निमन्थ मूल को काँजी में पीस कर वातव्रण पर प्रलेप करना हितकारक है। (चि० ३५ अ०)

चक्रदत्त-वसामेह में गणिकारिका मूलत्वक्-(१) वसामेह में अग्निमन्थ की जड़ की छाल का क्वाथ प्रयोग में लाएँ। (प्रमेह-चि०)

(२) शीतपित्त में गणिकारिका मूल—अग्निमन्थ की जड़ की छाल को पीसकर (कल्क) गोघृत के साथ एक सप्ताह पर्यंत पीने से शीतपित्त, उदर्द और कोठ का नाश होता है। (शीतपित्तोदर्द-चि०)। (३) स्थूलता में गणिकारिका मूलत्वक्—अग्निमन्थ की जड़ की छाल द्वारा निर्मित क्वाथ में शिलाजीत का प्रक्षेप देकर पान करने से स्थूलता नष्ट होती है। (स्थौल्य-चि०)

वक्तव्य

चरक, अनुवासनोपग, शोथहर एवं शीतप्रशमन वर्ग में तथा सुश्रुत, वरुणादि व वीरतर्वादि गण में गणिकारिका का पाठ आया है। किसी किसी देश में वातरोगी को गणिकारिका के पत्र का शाक व्यवहार कराया जाता है।

नव्यमत

प्रभाव—अरणी पाचक, आध्मानहर, परिवर्तक (रसायन) और बल्य है।

प्रयोग—इसके पत्र का फांट (१० में १) विस्फोटादि कृत ज्वर, शूल, उदराध्मान में १ से २ आउंस की मात्रा में व्यवहृत होता है और मूलत्वक् क्वाथ (१० में १) ज्वरावसानज दुर्बलावस्था, पूयमेह, आमवात तथा वातवेदना (Neuralgia.) रोग में सेवनीय है। (मेटिरिया मेडिका ऑफ़ इण्डिया— आर० एन० खोरी, भा० २, पृ० ४७२)

एन्स्ली (Ainslie.) लिखते हैं— गणिकारिका मूलत्वक् क्वाथ हृद्य, पाचक एवं ज्वर में लाभदायक है। इसकी जड़ तिक्त एवं प्रियगंधि है तथा क्वाथ रूप में प्रयुक्त होती है।

र्‌हीडो (Rheede.) इसको अप्पेल नाम से अभिहित करते हैं और इसके पत्र के क्वाथ को उदराध्मान में सेवनीय बतलाते हैं। लंका में यह महामिदि या मिदि-गस्स नाम से प्रसिद्ध है।

ऐट्किन्सन (Atkinson.) लिखते हैं—शैत्यप्रभव रोग एवं ज्वर में गणिकारिका पत्र को काली मरिच के साथ पीसकर व्यवहार करते हैं। शाखा-पत्र सहित अर्थात् गणिकारिका के पञ्चांग को कूटकर क्वाथ प्रस्तुत करें। आमवात तथा वातवेदना (Neuralgia.) ग्रस्त रोगी के अंग को उक्त क्वाथ से सेचन करें। (डिमक्, ३ य खंड ६७ पृ०)

आर० एन० चोपरा महोदय के अनुसार यह एक साधारण क्षुप है जो भारतवर्ष के बहुत से भाग विशेषकर समुद्रतटों में पाया जाता है। प्राचीन चिकित्सकों ने इसके पत्र एवं मूल में प्रभावात्मक औषधीय गुण के वर्तमान होने का उल्लेख किया है। इसकी जड़का क्वाथ (लगभग ४ आउंस १ पाइंट जल में १५ मिनट उबाल कर) २ से ४ आउंस की मात्रा में पाचक एवं तिक्तबल्य रूप से दिन में २ बार प्रयोग किया जाता है। इसी हेतु पत्र भी व्यवहार में आता है। (इं० ड्र० इं० पृ० ५६२)

अरणीकेतुः araní-ketuh-सं० पुं० महाग्निमन्थ वृक्ष, बड़ी अरणी। बड़ गणिरि–बं०। थेर ऐरण–मह०। (Premna longifolia.) रा० नि० व० ६।

अरण्ड aranda-हिं० पुं० (१) रेंडी का पेड़, अंडीवृक्ष, एरण्ड। (Ricinus vulgaris or Palma christi.)। (२)–सं०, हिं०, सिध उलटा कण्टा–कुमा०। (Cadaba harrida.) इं० मे० म्रा०।

अरण्डककड़ी aranda-kakarí-हिं० स्त्री०
अरण्ड खर्बूज़ा aranda-kharbújá-हिं० पुं०
अरण्ड पपय्या aranda-papayyá-हिं० पुं०
पपीता, विलायती रेंड़, पपय्या–हिं०। अरण्ड-खरबूज़ा (Carica papaya.)। इ० अ० डॉ०। म० अ०। मु० अ०।

अरण्ड तैल aranda-taila
अरण्डीकातैल arandí-ká-taila –हिं० पुं०
एरण्ड तैल, रेंडी का तैल। Castor oil (Oleum Ricini.)

अरण्डबीज aranda-bíja-सं०, हिं० पुं० अरण्डी का बीज, रेंडी। (Castor oil seed.) देखो--एरण्ड।

अरण्डी arandí-हिं०स्त्री० रेंड़ी, अरण्डी। (The fruit of Palma christa.)। देखो एरण्ड।

अरण्डी का पेड़ arandí-ká-pera-हिं० पुं० एरंड वृक्ष, रेंड़, अरण्डी का पेड़। (Castor oil palnt.,)। (Rnciius communis, Linn.) स०फा०इं०। देखो-एरण्ड।

अरण्डी के बीज arandí-ke-bíja-हिं० पुं० अरण्डी के बीज, रेंड के बीज, रेंड़ी। Ricinus communis, Linn. (Seeds-of-Castor oil seeds.)। स०फा०इं०।

अरण्डोली arandolí-जय० एरण्ड बीज, रेंड़ी, अरण्डी के बीज। (Castor-oil seeds.) देखो-एरण्ड।

अरण्यः aranyah सं० पुं०
अरण्य aranya-हिं० संज्ञा पुं० } (१) कट्फल वृक्ष, कायफल। कट्फलेर गाछ-बं०। (Myrica sapida.) श० च०। (२) शाल भेद, साखू। (Shorea robusta.) वै० निघ०।

अरण्यम् aranyam-सं० क्ली०
अरण्य aranya- हिं० संज्ञा पुं० } (१) अटवी--सं०। वन, जंगल, विपिन, कानन--हिं०। राण--मह०। अटवि--कं०। बर्र, सह्रा--अ०। दश्त--फ़ा०। जंगल-हिं०, द०। काट्टु-ता०। अडवि-ते०। काट्ट-मल०। काडु,अडवि-कना०। बन, बनेर, जंगलेर,जंगली-बं०। जंगली-गु०। वल-सिं०। तो-बर०। फॉरेस्ट (A forest.), विल्डरनेस (Wilderness.), वाइल्ड (Wild.)-इं०।

उद्यान, महावन, उपवन और प्रमदवन भेद से वन चार प्रकारका होता है। इनमें से रागी लोगों के क्रीड़ास्थल को उद्यान (फुलवारी), भीतरी राजमहल के सामने के बाग को प्रमदवन और नगर से बाहर स्थित बाग को उपवन कहते हैं। रा० नि० व० २।

-सं०पुं० (२) कट्फल वृक्ष,कायफल। (Myrica sapida.).

अरण्यकः aranyakah-सं० पुं० महानिम्ब, बकाइन। महानिम्-बं०। बकान निम्ब-मह०। (Ailantus excelsa, Roxb.)। वै० निघ०।

अरण्यकणा aranya kaná-सं० स्त्री० (१) कटुजीरक, जीरक, जीरा विशेष। Cumin Seed (Cuminum Cyminum) वै० निघ०। (२) वनपिप्पली। (Wild piper.)

अरण्य-कदली aranya-kadalí-सं० स्त्री० गिरिकदली, वनकदली, जंगली केला-हिं०। बीचेकला, बुनो कला, दयाकला-बं०। राणकेला -मह०। Musa Sapientum, Linn. (Wild var. of-) रा० नि० व० ११।

गुण—शीतल, मधुर, बलकारक, वीर्यबर्द्धक रुचिकारक, दुर्जर और भारी तथा दाह, शोष,पित्त-नाशक हैं। इसका फल कषैला, मधुर तथा भारी है। वै० निघ०।

अरण्य-कर्कटी aranya-karkatí-सं० स्त्री० वनजात कर्कटी, जङ्गली ककड़ी। बुनो काँकुड़ -बं०। राणतवसे-मह०।

गुण—जंगली ककड़ी, उष्ण, तिक्त, रसयुक्त, पाक में कटु और भेदक है तथा कफ, कृमी, पित्त, कण्डू और ज्वर का नाश करने वाली है। वै० निघ०।

अरण्य-कर्पासः aranya-karpásah-सं० पुं० पीवरी। Devil's cotton (Abroma Augusta.) देखो-ओलट् कम्बल।

अरण्य-कलद aranya-kalad-सं० पुं० चाकसू। (Cassia absus).

अरण्यकाकः aranya-kákah-सं० पुं० वनकाक,वनकौआ। (A wild crow.) दाँड़ काक -बं०। राण कावला-मह०। द्रव्य० गु० वै० मिश्र०।

अरण्य-कार्पासी aranya-kárpásí-सं०स्त्री० (१) वन कार्पास, जंगली कपास। वन कपासी

-बं० । राण कापासी-मह० । पत्ति-ते० । (The wild cotton) गुण—व्रणनाशक, शस्त्र-क्षतघ्न और रूक्ष है । रा० नि० व० ११ । (२) ओलट्कम्बल, पीवरी । (Abroma Augusta.)

अरण्यकासनी aranya kásaní-हिं० स्त्री० दुधल, बरन, कानफूल, रदम, शमुकेइ, दुध बथल -पं०, हिं० । पथरी-द० । बुथुर-सिंध० । टैरेक्ज़ेकम् ऑफ़िसिनेली (Taraxacum Officinale *Wigg.*),टै० डेण्डेलिओनिस (T. Dendelionis.)-ले० । डेण्डेलिऑन (Dendelion.)-इं० । पिस्सेन-लिट (Pissenlit.)-फ्रां० । उद्रचेकन-कों० ।

मिश्र वा तुलसी वर्ग

(*N. O. Compositae.*)

उत्पत्तिस्थान—सर्वत्र हिमालय (शीतोष्ण -इं० मे० मे०) तथा नीलगिरी पर्वतों; उत्तरी पश्चिमी सूबों में यह बोई जाती है; तिब्बत में साधारण रूप से होती है, युरुप (इङ्गलैण्ड) तथा उत्तरी अमरीका ।

नोट—डॉ० डाइमॉक महोदयके कथनानुसार सहारनपूर के सरकारी वनस्पत्योद्यान में प्रतिवर्ष इसकी कृषि की जाती है ।

नाम-विवरण—पुज़रकीनामा के सम्पादक नाज़िमुलइतिब्बा महोदय के कथनानुसार टैरेक्सेकम युनानी भाषा का शब्द है, जो तारास्सुवसे जिसका साङ्केतिक अर्थ तलयियन (मृदुता जनक) है, व्युत्पन्न शब्द है; परन्तु डा०डाइमॉक महोदय के कथनानुसार इस शब्दकी वास्तविकता अनिश्चित है, कदाचित् यह तर्ख़श्कून (फ़ारसी शब्द) का अपभ्रंश है ।

उक्त वनस्पति के गंभीर दन्दाने क्योंकि दुग्धदन्त के समान होते हैं, इस कारण आंग्ल भाषा में इसे डेण्डिलॉन (दुग्धदन्त) नाम से अभिहित करते हैं ।

इतिहास—यद्यपि प्राचीन युनानी व रूमी चिकित्सकों ने कई भाँति की कासनी का वर्णन किया है; तथापि ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने इस भाँति की कासनी का वर्णन नहीं किया । इब्नसीना ने तर्ख़श्कून नाम से इसका वर्णन किया है तथा अन्य मुसलमान चिकित्सकों ने भी इसका वर्णन किया है । युरुपमें सोलहवीं शताब्दि मसीही में फूशिअस Fuchsius (१५४२) ने हेडिप्नॉइस (Hedypnois) नाम से, ट्रैगस Tragus (सन् १५५२ई० में) ने हीरेशियम मेजस (Hieracium majus), मैथिऑलस Matthiolus (१५८३) ने डेन्सलिओनिस (Densleonis) और लीनिअस Linnœus (१७६२) ने लिऑण्टोडॉन टैरेक्सेकम् (Leonto don Taraxacum) इत्यादि नामों से (जिसको वह इब्नसीना के तर्ख़श्कून का पर्याय समझते थे) इसका वर्णन किया है । सत्तरहवीं शताब्दि के अन्त में युरुप में अरण्यकासनी (Dandelion) का उपयोग बहुतायत के साथ होने लगा । भारतीय (आयुर्वेदिक) चिकित्सकों को उक्त ओषधि ज्ञात न थी ।

नोट—मख़्ज़नुल् अद्वियह् में हिन्दबाउब्बरी तथा मुहीतआज़म में कासनीदश्ती नाम से उक्त ओषधि का वर्णन किया गया है ।

प्रयोगांश—युनानी वा भारतीय चिकित्सक तो इसकी जड़, पत्र एवं नव्य पौधा सभी औषध कार्य में लाते हैं; किंतु डॉक्टरी में केवल इसकी जड़ ओषध तुल्य व्यवहार में आती है और यह ब्रि० फा० में ऑफ़िशल है ।

अरण्यकासनी मूल

पर्याय—टैरेक्सेसाइ रैडिक्स (Taraxaci Radix.)-ले० । टैरेक्ज़ेकम् रूट (Taraxacum Root.), डैण्डेलियन रूट (Dandelion Root.), ह्वाइट वाइल्ड इण्डाइव (White wild endive.) इं० । संघ दन्तीमूल-सं० । जंगली कासनी की जड़-हिं०, उ० । अस्लुल् हिन्द बाउब्बरी-अ० । बीख़तर्ख़श्कून, बीख़ कासनी दश्ती-फ़ा० ।

ऑफ़िशल

(*Official.*)

वानस्पतिक-विवरण—ताजी जड़ (बहु-

वर्षीय) ६ से १२ या १६ इंच लम्बी, करीब करीब बेलनाकार, ½ से १ इंच चौड़ी (व्यास), ऊर्ध्व भाग अनेक सूक्ष्म कुछ कुछ घने शिरकों से आच्छादित रहता है तथा निम्न भाग में कम शाखाएँ होती हैं। ताज़ी दशा में यह हलके पीत-धूसर वर्णकी एवं गूदादार और शुष्क दशामें गंभीर धूसर या श्याम धूसर वर्ण की, जिन पर लम्बाई की रुख अधिक झुर्रियाँ पड़ी रहती हैं। भीतरसे यह श्वेत वर्णकी जिसका मध्य भाग ज़रदीमायल (पीताभ) होता है। यह गंधरहित एवं कटु स्वाद-युक्त होती है। यह स्रोतपूर्ण तथा आर्द्र ऋतु में अधिक लचीली होती है; परन्तु शुष्क होने पर सूक्ष्म चड़चड़ाहट के साथ टूट जाती है। टूटने पर बीच की लकड़ी पीतवर्ण की, स्रोतपूर्ण जिसके चारों ओर गंभीरश्याम वर्ण की कैम्बि-यम रेखा तथा घनी श्वेत त्वचा होती है, जिसके मध्य धूसरित वर्ण की दुग्ध की नालियों के वृत्त होते हैं। ये पतली दीवाल की (Parenchyma.) से भिन्न किए गए होते हैं।

शीत काल से पश्चात् एवं बसन्त ऋतु के आरम्भ में इसकी जड़ मधुर स्वादयुक्त रहती है। बसन्त और ग्रीष्म के बीच दुग्ध-रस गाढ़ा हो जाता है तथा कटु रस बढ़ जाता है; इस कारण इसकी जड़ को पतझड़ (Autumn) के समय में एकत्रित करना चाहिए। बसन्त ऋतुकी जड़ में तिक्त मधुरसत्व निकलता है।

समानता—अकरकरा की जड़ (Pellitory root) इसके समान होती है; किन्तु चबाने पर उसका स्वाद चरपरा होता है।

रासायनिक संगठन—दुग्ध रस में एक कटु विकृताकार (अस्फटिकीय) सत्व-(१) टैरेक्सेसीन (Taraxacin) अर्थात् अरण्यकासनीन वा तर्ख़्शक़ूनीन, (२) एक स्फटिकवत् (कटु) सत्व टैरेक्सेसीरीन, (Taraxacerin) और (३) ऐस्पैरेगीन (ख़िल्मी सत्व, अस्फ़ार्गीन), पोटाशियम् कैल्शियम के लवण, रालदार और सरेशदार पदार्थ होते हैं। इसकी जड़ में आइन्युलीन २५ प्रतिशत, पेक्टीन, शर्करा, लीव्युलीन, भस्म ५ से७ प्रतिशत पाए जाते हैं। प्रभाव-मूत्रल, बल्य, निर्बल पित्तनिस्सारक, और कोष्ठ मृदुकारी।

औषध-निर्माण—ऑफ़िशल योग (Official preparations):—

(१) अरण्य कासनी सत्व एक्सट्रैक्टम टैरेक्सेसाई (Extractum Taraxaci) –ले०। एक्सट्रैक्ट ऑफ़ टैरेक्ज़ेकम (Extract of Taraxacum)–इं०। ख़ुलासहे कासनी बर्री, उसारहे तर्ख़्शक़ून।

निर्माण-क्रम—टैरेक्ज़ेकम की ताजा जड़ को कुचलकर दबाने से जो रस प्राप्त हो, उसे स्थूल भाग के अन्तः क्षेपित हो जाने पर निथार लें। तदनन्तर १० मिनट तक १ से २१२° फारनहाइट के उत्ताप पर रख कर छान कर द्रव को इतने ताप पर उड़ाएँ जिसमें वह गाढ़ा होजाए।

मात्रा—५ से १५ ग्रेन (३ से १० डेकिग्राम)।

(२) अरण्यकासनी तरल-सत्व—एक्सट्रैक्टम् टैरेक्सेसाई लिक्विडम (Extractum Taraxaci Liquidum)-ले०। लिक्विड एक्सट्रैक्ट ऑफ़ टैरेक्ज़ेकम (Liquid Extract of Taraxacum)-इं०। ख़ुलासहे कासनी बर्री सय्याल, उसारहे तर्ख़्शक़ून सय्याल-अ०, फ़ा०।

निर्माण-क्रम—टैरेक्ज़ेकम् की शुष्क जड़ का २० नं० का चूर्ण २० आउंस मद्यसार (६०%) २ पाइंट, परिस्रुत वारि आवश्यकतानुसार। टैरेक्ज़ेकम् को ४८ घंटा पर्यन्त मद्यसार में भिगोएँ। पुनः इसमें से १० फ़्लुइड आउंस द्रव निचोड़ कर पृथक् करलें। अवशिष्ट स्थूल भाग को २ पाइंट परिस्रुत जल में ४८ घंटा तक भिगोएँ और दबाने से जो तरल प्राप्त हो उसे छान कर अग्नि पर यहाँ तक रखें, कि उसका द्रव्यमान १० फ़्लुइड आउंस बच रहें। पुनः प्रति तरल द्रव को परस्पर मिला लें और आवश्यकतानुसार इतना परिस्रुत जल और योजित करें कि तरल सत्व का द्रव्यमान पूर्ण २० फ़्लुइड आउंस होजाए।

मात्रा—आधा से २ फ्लुइड ड्राम=(१·८ से ७·१ घनशतांश मीटर)।

(३) अरण्य कासनी स्वरस—सक्कस टैरेक्सेसाई (Succus taraxaci)-ले०। जूस ऑफ़ टैरेक्ज़ेकम् (Juice of Taraxacum)-इं०। असीर कासनी बर्री, असीर तर्ख़श्क़ून-अ०, फ़ा०।

निर्माण-क्रम—टैरेक्ज़ेकम् की ताज़ी जड़ को कुचल कर दबाने से जो रस प्राप्त हो उसमें तिगुना मद्यसार मिलाएँ और सात दिवस पश्चात् फिल्टर करलें (पोतन करलें)।

मात्रा—१ से २ फ्लुइड ड्राम=(३·६ से ७·१ घन शतांश मीटर)।

प्रतिनिधि—अलमिराव (Launœa Pinnatifida, *Cass.*) लैक्टयुक हेनिएना, (Lactuca Heyneana *D. C.*), हिरनखुरी (Emilia sonchifolia, *D. C.*) और सॉङ्कस ऑलिरेसिअस (Sonchus Oleraceus, *Linn.*) विस्तार के लिए उन उन नामों के अन्तर्गत अवलोकन करिए।

प्रभाव तथा उपयोग—टैरेक्सेसाई रैडिक्स (अरण्यकासनी-मूल) चिरकाल से बल्य, पित्तरेचक, मूत्रल और कोष्ठमृदुकारी रूप से प्रसिद्ध रहा है। ताजे स्वरस का बल्य प्रभाव, जो प्रयोग से ठीक प्रथम प्रस्तुत किया गया हो अथवा जो जड़ को एकत्रित करने के ठीक पश्चात् अभी जब कि वह कटु हो, निर्मित किया गया हो, निश्चित रूप से उत्तम होता है। वह बहुशः प्रभावकारी बल्य औषधों का लाभदायक अनुपान है। इसके सत्व प्रायोगिक रूपसे प्रभावहीन होते हैं और इसकी जड़ द्वारा निर्मित औषध व्यर्थ। ब्रि० फा० हिट्लॉ।

ताज़ी जड़ का रस या इसका शीतकषाय केलम्बा के समान आमाशयबलप्रद प्रभाव करता है तथा यह किसी प्रकार कोष्ठमृदुकारी भी है। परन्तु इसके वे प्रयोग जो अंग्रेज़ी औषध विक्रेताओं से उपलब्ध होते हैं, उनका प्रभावात्मक होना सन्देहपूर्ण विचार किया जाता है। पहिले बहुधा पित्तरेचक वा मूत्रल रूप से इसे यकृद्रोगों जैसे—पांडु तथा जलोदर प्रभृति में अधिकतया व्यवहार में लाते थे। किन्तु, अब इसका उपयोग बहुत कम हो गया है।

अरण्य-कुक्कुटः aranya-kukkuṭah-सं० पुं० वन मुर्गा, कोमुड़ा, वनमोर्गा-हिं०। वनकुक्कुट-सं०। वन कुक्‌ड़ो-बं०। राण कोंबड़े-मह०। (Wild Cock or hen.)

गुण इसका मांस हृद्य, लघु, और कफनाशक है। रा० नि० व० १७। बृंहण, स्निग्ध, उष्णवीर्य, गुरु और वातनाशक है। मद० व० १२।

अरण्य-कुलित्थिका aranya-kulitthiká
अरण्य-कुलित्था,-त्थी aranya-kulitthá,-tthí } -सं० स्त्री०(१)वन कुलथी, कुलत्था। वन कुर्ति कलाय-बं०। रा० नि० व० ४।(२)(A blue stone used as a collyrium.)कुलत्थाञ्जन, कृत्रिम अञ्जन विशेष। रा० नि० व० १३। कालसुर्मा-हिं०। देखो—कुलत्थाञ्जनं।

अरण्य-कुसुम्भः aranya-kusumbhah-सं० पुं० वन कुसुम, वन कुसुम्भ क्षुप। जंगली कड़ (बर्रे)। राण कड़ई, राण कुसुम्भ-मह०। वन कुसुम-बं०। गुण-कटुपाकी, कफनाशक, तथा दीपन। रा० नि० व० ४।

अरण्य-कोलिः aranya-kolih-सं० स्त्री० वनकोलि, वन बदरी। वन कुल-बं०। (Zizyphus jujuba.)

अरण्य-गवयः aranya-gavayah-सं० पुं० जंगली गाय, वन गवय, वन गऊ। यह कूलचर जाति की है। सु० सू० ४६ अ०। देखो—कूलेचर।

अरण्य घोली,-लिका aranya-gholí,-liká-सं० स्त्री०(१)वनघोली नामक प्रसिद्ध पत्रशाक विशेष, घोली शाक। रा० नि० व० ४। (२) मन्थनदण्ड।

अरण्यचटकः aranya-chaṭakah-सं० पुं०

वन चटक पक्षी। धूसरः, भूमिशयः -सं०। वनचटा पाखि, गुड़गुड़े, नागर भड़ुई, छातार-बं०।

गुण— इसका मांस लघु, हितावह, शीतल, शुक्रवृद्धिकारक, बलप्रद और चटक के समान गुण वाला होता है। वै० नि० द्रव्य गु०।

अरण्यचम्पकः aranya-champakah.-सं० पुं० वनचम्पक, बन चम्पा। Michelia champaca (The wild var. of-) बनचाँपा-बं०।

गुण—शीतल, लघु, शुक्रवर्द्धक और बल-वर्द्धक है। रा० नि० व० १०।

अरण्य छागः aranya-chhágah-सं० पुं० वनछाग, जंगली बकरा। बुनो छागल-बं०। (A wild goat).

अरण्यजः aranyajah-सं० पुं० (Sesamum indicum) तिलक क्षुप, तिल वा तिल्ली का क्षुप। See--Tilakah (तिलकः) हे० च०।

अरण्यजयपालः aranya-jayapálah-सं० पुं० जंगली जमालगोटा-हिं०। (Croton polyandrum, Roxb.) हाकुड़, दन्ति-बं०। देखो-दन्ती।

अरण्यजा aranyajá-सं० स्त्री० पेऊँ।

अरण्यजार्द्रका aranyajárdraká-सं० स्त्री० वनार्द्रकः, वनार्द्रका, वनजार्द्रकः (रा० नि० व० ७)। वाइल्ड जिञ्जर (Wild ginger) -इं०। ज़िञ्जिबर कैस्सुमनार (Zingiber cassumunar, Roxb.)। फा० इं० ३ भा०। इं० मे० प्लां०। ज़ि० पर्प्युरियम् (Z. Purpureum), ज़ि० क्लिफ़ॉर्डियाई (Z. cliffordii)-ले०। इं० मे० मे०। बन आद्रक, बन आदी, जंगली आदी--हिं०। बन आदा-बं०। कल्यञ्ञ, करपुशुपु -ते०। राण आले, निसा, निसण, मालाबारी हलद-मह०। ज़ञ्जबील दश्ती-फ़ा०, अ०।

आर्द्रक वा हरिद्रा वर्ग

(N.O. *Scitamineæ or Zingiberaceæ.*)

उत्पत्ति-स्थान—भारतवर्ष (हिमालय से लंका पर्यन्त)

वानस्पतिक-विवरण—इसका ताजा पाताली धड़ (Rhizome) १ से २ इंच मोटा (व्यास), जुड़ा हुआ, दबा हुआ (संकुचित), अनेक श्वेत गूदादार अंकुरों से युक्त होता है, जिनमें से कुछ में श्वेत कन्द (Tuber) लगे होते हैं। धड़ की प्रत्येक संधि पर शुङ्ग होता है। वहिर त्वक् छिलकायुक्त तथा हलका धूसर होता है। अन्तः भाग पूर्ण सुवर्ण-पीतवर्ण का, गंध अति तीव्र तथा बहुत प्रिय नहीं (आर्द्रक, कपूर तथा हरिद्रा के सम्मिलित गंधवत्) होती है। स्वाद उष्ण और कपूरवत् होता है।

वन आर्द्रक की सूक्ष्म रचना—त्वचा का ऊर्ध्व भाग पिच्चित (संकुचित) एवं अस्पष्ट कोषोंके बहुतसे स्तरों द्वारा बनता है। पैरेनकाइमा में बृहत्बहुभुज कोष होते हैं। पाताली धड़ के त्वगीय भागस्थ कोष क़रीब क़रीब श्वेतसारशून्य होते हैं; परन्तु उसके मध्य भागमें पाए जानेवाले कोष बृहत्, अंडाकार, श्वेतसारीय कणों से पूरित होते हैं। उक्त धड़ के सम्पूर्ण भाग के बृहत् कोष सुवर्ण-पीत वर्ण के स्थायी तैल से पूर्ण होते हैं। वैस्क्युलर सिस्टम (कोष्ठक्रम) हरिद्रावत् होता है।

रासायनिक संगठन—इसमें निम्न पदार्थ पाए जाते हैं:—

ईथर एकस्ट्रैक्ट (१) स्थायी तैल, (२) वसा; और (३) मृदुराल)	६. ६६
ऐल्कुहॉलिक एकस्ट्रैक्ट (४) शर्करा, राल	७. २६
वाटर एक्स्ट्रैक्ट (५) निर्यास, (६) अम्ल आदि	१३. ४२
(७) श्वेतसार	१५. ०८
(८) क्रूड फाइबर	१२. ६१
(९) भस्म	६. ८०
(१०) आर्द्रता	७. ६६
(११) अल्ब्युमिनॉइड्स और (१२) Modifications of arabin etc.)	३०. १८
	१००. ००

जड़ कपूर तथा जायफल की मिश्रित गंध तद्वत् चरपरी होती है। मृदु राल ज्वलनयुक्त स्वाद रखता है। जड़ में कपूरहरिद्रा (Cur-

cuma aromatica) की अपेक्षा अधिक शर्करा वा लुआब होते हैं।

प्रयोगांश—पाताली धड़ (Rhizome) तथा जड़।

इतिहास—यद्यपि रॉग्ज़बर्ग ने उक्त पौधे को कस्सुमुनार (Cassumunar) लिखा है, तथापि इस बातमें अत्यंत सन्देह प्रतीत होता है कि आया इसकी जड़ कभी युरूप भेजी गई है या यह कभी भारत वर्ष में व्यापार की वस्तु रही है। कट्टुमञ्जल वनहरिद्रा का मालाबारी नाम है और इसीसे औषध-विक्रेताओं को कस्सुमुनार (Cassumunar root) नामक जड़ की प्राप्ति होती है। गंध एवं स्वाद में दोनों जड़ें बहुत समान होती हैं। महरडी नाम निसा संस्कृत भाषा का शब्द है। निशा संस्कृत में हरिद्रा को कहते हैं। इससे यह प्रगट होता है कि देहाती लोग इसकी जड़को वनार्द्रक मूल की प्रतिनिधि रूप से व्यवहार में लाते हैं।

गुणधर्म तथा उपयोग—यह कटु, अम्ल, रुचिकारक, वल्य तथा अग्निवर्द्धक है। रा० नि० व० ६।

इसके प्रभाव तथा उपयोग आर्द्रक के समान हैं। कोंकण में इसे वायुनिःसारक, उत्तेजक रूप से अतिसार एवं उदरशूल में वर्तते हैं। डाइमॉक।

इसके अन्य उपयोग हरिद्रावत् हैं। इं० मे० मे०।

अरण्यजीरम्,-कम् aranyajíram,-kam -सं० क्ली० वनजीरक, कटुजीरक, जंगली जीरा। बनजीरा-बं०। कडुजीरें-मह०। जीरकम्र-ते०। (Wild cumin Seed.) देखो-जीरा।

गुण-जंगली जीरा, उष्ण वीर्य, कसैला, कटु, वात कफ स्तंभक तथा व्रणविनाशक है। वैं० निघ० द्रव्य० गु०।

अरण्य-तमाल aranya-tamála } -हिं०
अरण्य-तम्बाकू aranya-tambákú } पुं०

फुल, बन तम्बाकू, गीदड़ तम्बाकू, वनतमाल, वनज ताम्रकूट। ग्रेट मुलीन (Great mullein), मुलीन (Mullein)-इं०। वर्बैस्कम् थैप्सस (Verbascum Thapsus, *Linn.*) -ले०। बोइल्लॉन ब्लैङ्क (Bouillon blanc), मोलीनी (Molene)-फ्रां०। बूलरफूल, भूम के धूम, बन तम्बाकू, फ्रास् रुक, एक्कबीर, कडएड, फूँटर, खर्गोश, खर्वरुआर, स्पिनखरुआर, गुरगल्ला, करथी, रावन्दचीनी, किस्री-पं०। अदानुद्दुब्ब (रीछ कर्ण), माहीज़ह्रज (मत्स्य विष), सिक्रानुल्हुत (मत्स्य शूकरान), लबीदतुल्बैदा (श्वेत क्षुप) और बुसीर-अ०। माहीज़ह्रह, बुसीर-फ़ा० (इख़्ति०)।

कटुकी वर्ग

(*N. O. Scrophularineæ*).

उत्पत्ति-स्थान—शीतोष्ण हिमालय, काश्मीर से भूटान पर्यन्त; यूरूप (ब्रिटेन से पश्चिमास्य) संयुक्त राज्य (United states).

इतिहास—ऐसा प्रतीत होता है कि चिकित्साशास्त्र के संस्कृत लेखकों ने उक्त पौधे का वर्णन नहीं किया है। अरब निवासी अदानुद्दुब्ब, माहीज़ह्रज तथा सीकरानुल्-हुत आदि नामों से उक्त पौधे का वर्णन करते हैं। अर्वाचीन अरबी (भाषा) में इसे लबीदतुल्बैदा वा बुसीर कहते हैं।

मुलीन (Mullein) का फ़ारसी नाम माहीज़ह्रह तथा बुसीर है। इख़्तियारात में हाजी ज़ैन ने इसका स्पष्ट वर्णन किया है।

वानस्पतिक-विवरण—पत्र, मूल-पत्र ६ से १८ इंच लम्बे, प्रकाण्ड (धड़) पत्र आयताकार; ऊर्ध्वपत्र छोटे नुकीले, डंठल रहित (वृन्त शून्य) न्यूनाधिक दंष्ट्राकार (लहरदार) तथा सफ़ेदी मायल चमकीले (श्वेताभ) एवं कोमल रोमों से घनाच्छादित होते हैं। स्वाद-लुआबी कुछ कुछ तिक्त, गंध ताजा होनेपर यह बात दूर होजाती है।

इसके पुष्प ६ से १० इंच लम्बी डालियों पर लगे होते हैं। केवल पुष्पाभ्यन्तर कोष (पुष्प दल) एकत्रित किए जाते हैं। इसकी चौड़ाई (व्यास) $\frac{1}{2}$ से $\frac{3}{4}$ इंच तथा लम्बाई १ इंच होती

है। दल चमकीले, पीत वर्ण के (अथवा बाहर से सुफ़ेदी मायल पीत और भीतरसे सफ़ेदी मायल नीले), पञ्च खण्ड युक्त, ऊर्ध्व भाग चिकना और अधः भाग लोमश होता है। नरतन्तु गर्भकेशर की नली से लगे होते हैं। इनमें से ऊपर के तीन ऊर्णीय तथा नीचे के दो लम्बे और चिकने होते हैं। स्वाद--लुआबी और कुछ कुछ तिक्त होता है। हाज़ी ज़ैन इसके पुष्प को नीलगूँ बतलाते हैं जो वर्बैस्कम् ब्लेटेरिया (V. Blattaria) प्रतीत होता है। पुष्करमूल (Orris-root) के साथ इसके पुष्प की गंधकी तुलनाकी गई है बीज $\frac{1}{25}$ इञ्च लम्बे, गावदुमी (शुंडाकार), अत्यन्त कड़े जिनका चूर्ण करना अति कठिन है, करीब करीब गंध रहित होते हैं। स्वाद कुछ कुछ चरपरा होता है।

रासायनिक संगठन—पुष्प में एक प्रकार का पीत उड़नशील तैल, वसामय अम्ल, स्वतन्त्र सेव वा स्फुरिकाम्ल, चूर्ण स्फुरेत तथा चूर्ण मलेत Malate of lime), ऐसीटेट ऑफ पोटास, रवा न बनने योग्य शर्करा, निर्यास, हरिन्मूरि (हरियाली) और एक पीत रालीय रञ्जक आदि पदार्थ होते हैं। (मॉरिन)

पत्र में रासायनिक विश्लेषण द्वारा ०. ८०% स्फटिकवत् मोम, उड़नशील तैल के कुछ चिह्न, ईथरविलेय राल ०. ७८%, ईथर में अविलेय किन्तु विशुद्ध मद्यसार (ऐलकोहल) में विलेय राल १. ००%, सूक्ष्म मात्रा में कषायीन, एक तिक्त सत्व, शर्करा, लुआब इत्यादि, आर्द्रता ५·६०% और भस्म १२· ६० प्रतिशत तक होता है। (एडॉल्फ)

औषध (drug) में लुआब १६· ७६% डेक्स्ट्रीन (अंगूरी शकर) के समान कार्बोज (Carbohydrate) ११· ७६%, ग्लूकोज़ (मध्वोज) ५· ४८%, सैकरोज (शर्करौज)१· २६%, आर्द्रता १६· ७६%, भस्म ४· ११%, सेल्युलोज (काष्ठोज) ३२·७५ प्रतिशत और लिग्नीन (काष्ठीन) आदि पदार्थ होते हैं।

प्रयोगांश—क्षुप (अर्थात् मूल, पत्र, पुष्प एवं बीज)

औषध-निर्माण—पत्र—१ से ४ ड्राम।
तरल सत्व—(पत्र वा पुष्प द्वारा प्रस्तुत) १ से ४ फ्लु० ड्रा०।

प्रभाव—पत्र वेदनाशामक, आक्षेपहर, स्निग्धताजनक, मूत्रल, मृदुताजनक, लुआबी और सूक्ष्म निद्राजनक है।

उपयोग—मुसलमान चिकित्सक इसे त्रितीय कक्षामें उष्ण व रूक्ष मानते हैं, और विरेचन के साथ इसे आमवात तथा संधिवात में देते हैं। दीसकुरीदूस ने इसके कई भेदोंका वर्णन किया है। वे इसे कास तथा अतिसार में लाभदायक और वाह्य रूप से मृदुताजनक बतलाते हैं। इसकी एक जाति से लैम्प की बत्ती बनाई जाती थी। ऐसा प्रतीत होता है कि अरब तथा फ़ारस निवासी मुलीन के निद्राजनक (मत्स्य के लिए) प्रभाव से भली भाँति परिचित थे।

डॉक्टर स्टयुवर्ट के मतानुसार इसकी जड़ उत्तर भारत में ज्वरघ्न रूप से उपयोग में आती है।

युरूप में मुलीन चिरकालसे पशुओं के फुप्फुस रोगों के लिए प्रसिद्धि प्राप्त कर चुका है। इसी हेतु इसे काऊज़ लङ्ग्वर्ट (Cow's lungwort) अर्थात् गो-फुप्फुस-तृण कहते हैं। जर्मनी में चूहों को भगाने के लिए इस पौधे को अन्न की कोठियों (खातों) में रखते हैं। आरम्भ में इसके डंठल को मशाल रूप से व्यवहार में लाते थे। इस कारण उक्त पौधे का, फ्रांस में सिअर्जी डी नाट्री डेमी (Cierge de notre-Dame) तथा फ्लोर डी ग्रांड शैण्डेलिअर (Fleur de grand chandelier) और इङ्गलैंड में हाई टेपर (High taper) नाम पड़ गया।

इसके पत्र तथा पुष्प स्निग्धताजनक, मूत्रल, अङ्गमर्दप्रशमन और आक्षेपहर हैं तथा चिरकाल से अतिसार एवं फुप्फुस रोगों में व्यवहृत होते आ रहे हैं। फ्रांस में इसके पुष्प का शीत कषाय मूत्रल रूप से तथा पत्र का प्रलेप स्नेहजनक रूप से व्यवहार में आता है। बीज को निद्राजनक बतलाया जाता है और कहा जाता है

कि श्वास तथा शिश्वाक्षेप (Infantile convulsions) में इसका उपयोग किया गया है । डॉक्टर एफ० जे० बी० क्विनलैन (१८८३) ने आयरलैंड में इसके पत्र को दुग्ध में उबाल कर क्षयजन्य कास तथा अतिसार के मुख्य औषधीय उपयोग की ओर ध्यान दी । उन्होंने बतलाया कि बागों में उक्त पौधे की विस्तृत कृषि की जातीहै । उनका दावा है कि इसमें कॉडलिवर ऑइल (कॉड मत्स्य यकृत्तैल) समान शरीरभारवर्द्धक तथा रोगनिवारक गुण है ।

इसकी जड़ ज्वरघ्न रूप से दी जाती है । इसके बीज कामोत्तेजक हैं । इसके पत्तोंको रगड़कर उसमें तैल सम्मिलित कर तथा उसे गर्म करके शोथ-युक्त स्थानों पर लगाते हैं । मुट्ठी भर इसके पत्र को १ पाइंट (१० छटांक) गोदुग्ध में यहाँ तक उबालें कि अर्द्ध पाइंट (५ छटांक) दुग्ध शेष रहजाए । तदनन्तर इसे छानकर शर्करा सम्मिलित कर सोते समय सेवन करें । इससे कास कम होती है तथा वेदना और क्षोभ दूर होते हैं । इं० मे० मे० ।

डॉक्टर स्टयुवर्ट के कथनानुसार इसको रेवन्दचीनी भी कहते हैं । यह इस कारण है कि कभी रेवन्दचीनीमें इसका मिश्रण करते थे ।

गेराड–डिजिटेलिस में कभी कभी इसका तथा अन्य पौधोंका मिश्रण करते हैं । दत्त महोदय वर्णन करते हैं कि देशी लोग इसे श्वास तथा फुप्फुस रोगों में बर्तते हैं और यह कि इसमें तमालवत् (ताम्रकूट अर्थात् तम्बाकूवत्) निद्रा-जनक गुण है । बीज कामोद्दीपक ख्याल किए जाते हैं ।

यूरुप तथा अमरीका के संयुक्तराज्य में एक समय स्निग्धताजनक वा मृदुताकारक रूप से इसके घने ऊर्णीय पत्र का केवल गृह औषध में ही नहीं, अपितु चिकित्सकगणों में भी बहुत मान्य था । प्रतिश्याय तथा अतिसार की चिकित्सा में इसका अन्तः और अर्श में वाह्य (प्रलेप रूप से) उपयोग किया जाता था । (वैट)

यह यक्ष्मा की मूल्यवान औषध है तथा यह रात्रिस्वेद को रोकती, कास को कम करती और आंत्र शैथिल्य को ठीक करती है । एक आउंस (२॥ तो०) इसके पत्र को एक पाइण्ट (१० छटांक) दुग्ध में उबाल कर दिन में दो बार उपयोग करने से यह श्वासावरोध को दूर करता है । (वैट)

यह मूत्रावयवस्थ क्षोभ तथा प्रदाह, प्रतिश्याय और अतिसार में लाभदायक है । श्वास रोग में इसके शुष्क पत्र को हुक्का पर पीते हैं अथवा इसका सिगरेट उपयोग में लाते हैं ।

डॉक्टरक्विन लैंगड के चिकित्सालय विषयक प्रयोगों द्वारा निम्न परिणाम स्थिर किए गए हैं:– (१) यक्ष्माकी प्रारम्भिक तथा उरःक्षतीय अवस्था से पूर्व प्रयोग करने से मुत्तान में कॉड लिवर ऑइल (कॉड मत्स्य यकृत्तैल) की अपेक्षा अधिक तथा रशन कौमिस (Russian koumiss) के तुल्य शरीरभारवर्द्धक एवं रोगनिवारक शक्ति है । (२) उरःक्षतावस्था में यह कास को बहुत कम करता है । (३) यक्ष्मीयातिसार पूर्णतः प्रतिबन्धित हो जाता है । (४) इसका यक्ष्मा के रात्रिस्वेद पर कोई सशक्त प्रभाव नहीं होता । अस्तु उसका धन्तूरीन (ऐट्रोपीन) से सामना करना चाहिए । फा० इं० एम० ।

अरण्य-तुलसी aranya-tulasí–सं० स्त्री० वनतुलसी, कृष्ण तुलसी । (Ocimum Gratissimum) कालावावरी–हिं० । रानतुलस–मह० । वैजयन्ती तुलसी । यह दो प्रकार की होती है:–– (१) ह्रस्व (छोटी) तुलसी और (२) दीर्घ (बड़ी) तुलसी । गुण—जंगली तुलसी सुगंधयुक्त, उष्ण, कटु है तथा वात, चर्मदोष, विसर्प और विषनाशक है । छोटी जंगली तुलसी कटु, उष्ण, तिक्त, रुचिकारक, दीपन, हृदय को हितकारक, लघु, विदाही, पित्तकारक एवं रूक्ष है तथा कण्डु, विष, छर्दि, कुष्ठ और ज्वरनाशक है एवं वात,कृमि,कफ, दद्रु तथा रक्तदोष नाशक है । बीज–दाह तथा शोषनाशक है । वै० निघ० द्र० गु० ।

अरण्य त्रपुसकः aranya-trapusakah-**सं०** **पुं०** वन्य त्रपुष, जंगली खीरा (Wild cucumber)। बनशशा, बनकाँकुड़-**बं०**। गोंडरोंदनी-**मह०**। **वै० निघ०**।

अरण्य त्रपुसी aranya-trapusí-**सं० स्त्री०** (१) इन्द्रवारुणी, इन्द्रायन। राखाल शशा -**बं०** (Citrullus Colocynthis.)। (२) महाकाललता, लाल (बड़ा) इन्द्रायन। माकालफल-**बं०**। (Trichosanthes Palmata.)। **वै० निघ० अपस्मा० चि०** नस्य।

अरण्यदमनः aranya damanah-**सं० पुं०** वन दमन वृक्ष, वनदौना, अफ़सन्तीन भेद। (Artemesia Siversiana.) **कै०**।

अरण्य(ज)द्राक्षा aranya,-ja-drákshá-**सं० स्त्री०** जंगली दाख। मवेज़ज, ज़बीबुज्जबल-**अ०**। (Delphinium staphesagria.) -**लै०**। **स्टैफिसैग्रीई सेमिना** (Staphesagriæ semina.)-**लै०**।

अरण्य धान्यम् aranya-dhányam-**सं० क्ली०** नीवार। उड़िधान-**बं०**। देवभात-**मह०**। (Wild variety of Oryza sativa.) **रा० नि० व० १६**।

अरण्य धेनुः aranya-dhenuh-**सं० पुं०** बन गाय, जंगली गाय। (Wild cow.)

अरण्य नील सत्व aranya nila satva -**हिं० पुं०** जंगली नील का सत। बैप्टिसीनम् (Baptisinum.)-**लै०**। बैप्टिसीन (Baptisin.)-**इं०**। जौहर नीले सह् राई -**फ़ा, उ०**।

नॉट ऑफिशल
(*Not Official.*)

उत्पत्ति-स्थान—संयुक्त राज्य अमरीका में एक भाँति के जंगली नील के पौधे उत्पन्न होते हैं जिनका वानस्पतिक नाम बैप्टीसिया टिंकटोरिया (Baptisia Tinctoria.) है; उन्हें आंग्ल भाषा में वाइल्ड इण्डिगो (Wild Indigo.) अर्थात् वन्य (अरण्य) नील कहते हैं। उनमें (जड़) से दो सत्व प्राप्त होते हैं, जिनमें से एक वह है जिसका यहाँ वर्णन हो रहा है।

लक्षण—यह एक प्रकार का धूसर वर्ण का चूर्ण है जो जल में तो अविलेय, परन्तु मद्यसार में विलेय होता है।

मात्रा—१ से ५ ग्रेन ('०६ से '३ ग्राम) वटिका (या चूर्ण) रूप में वरतें।

टिंक्चूरा बैप्टिसीई (Tinctura Baptisiæ.), टिंकचर ऑफ़ बैप्टिसीन (Tincture of Baptisin.)-सब्बाह् नीलज बर्री-**अ०**। तअ़्फ़ीन नील सह्राई-**फ़ा०**। **मात्रा**—५ से ३० मिनिम=('३ से २ घन शतांशमीटर)।

प्रभाव तथा उपयोग—थोड़ी मात्रा में कोष्ठ मृदुकारी रूप से पुरातन विष्टम्भ (मलावरोध) में देते हैं। अधिक मात्रा में विरेचक और वामक है। यह यकृदोत्तेजक एवं आमाशय विकार करने वाला है।

अरण्य पलाण्डुः aranya-palánduh-**सं० पुं०** वन जात पलांडु, जंगली प्याज, काँदा। वन पेंयाज-**बं०**। (Scilla Indica.) **अत्रि०**।

गुण—मूत्र विरेचक, श्लेष्मघ्न, अति उग्र, अधिक मात्रा में देने पर वान्तिकारक तथा मलभेदक है और विष के समान मनुष्य को मार डालता है। शोथ, श्वास, कास तथा मूत्रसंग (मूत्रावरोध) की दशा में यह प्रयुक्त होता है। **अत्रि०**। देखो—**वन पलाण्डुः**।

अरण्य पिप्पली aranya-pippalí-**सं० स्त्री०** वन पिप्पली नामक क्षुप, वन पीपल। वन पिपुल-**बं०**। (See-Vanapippalí.) **रा० नि० व० ६**।

अरण्य पु (पो) दीना aranya-pudíná-**हिं० पुं०** जंगली पुदीना (रोचनी)। हाशा-**अ०**। पुदीना कोही-**फ़ा०**। Wild thyme (Thymus Vulgaris or Serpyllum, *Linn.*)

अरण्य मदनमस्त पुष्प aranya-madan-masta-pushpa-हिं० पुं० सिकास सर्सिनेलिस (Cycas Circinalis, *Linn.* *Syn. C. Inermes.*) । जंगली मदनमस्त का फूल । बजर बट्टु-बम्ब० । पहाड़ी मदन-मस्त का फल-द० । श्राम्‌देसामोंटपन-गो० । मदन कामेशुरप्पू, मदन-काममपू, कामप्पू, चनंग काय-ता० । मदन मस्तु, रान गुवा, मदन-कामाक्षी-ते० । मालाबारी-सुपारी-मह० । रिन ब्रदम, टोड्डुपन, एन्थकाय-मलय०। मुदंग-बर०। मद्‌-गस्स-सिं० ।

(*N. O. Cycadaceoe.*)

उत्पत्ति-स्थान—मालाबार तट, पश्चिम मद-रास की शुष्क पहाड़ियाँ ।

प्रयोगांश—पौष्पिक पत्र (ब्रैक्ट्स), गुठली तथा काण्ड ।

वानस्पतिक-विवरण—बाजार में बिकने वाले पौष्पिकपत्र भाला के शिर के शकल के, दो इञ्च लम्बे तथा आध इञ्च चौड़े और पृष्ठ की ओर धूसरपीत वर्ण के कोमल सूक्ष्म रोमोंसे आच्छा-दित होते हैं । प्रत्येक छिलके के बाह्य ऊर्ध्वकोण से एक सूच्याकार अन्तः वक्र विन्दु निकलता है । जब कि कोण प्रथम प्रथम प्रगट होता है तो वे अनन्नास के अङ्कुर के समान बहुत निकट निकट चापित रहते हैं, परन्तु ज्यों ज्यों उनकी अवस्था अधिक होती है त्यों त्यों वे एक दूसरे से भिन्न होते जातेहैं । इनमें कोई तन्तु नहीं होता; छिलके का अन्तस्तल पराग-कोष (ऐन्थर) द्वारा पूर्णरूप से आच्छादित होता है; पराग-कोष (ऐन्थर) एक-सेलीय द्विकपाट युक्त, शिखरके इर्द गिर्द खुला हुआ होता है, जिससे पराग विसर्जित हुआ करता है । मज्जा में पाए जाने वाले श्वेतसार की अणु-वीक्षण द्वारा परीक्षा करने पर यह सागू के समान होता है ।

रासायनिक-संगठन(या संयोगी अवयव)—पौष्पिकपत्र तथा त्वचा में अधिक परिमाण में अल्ब्युमेनीय वा लुआबदार पदार्थ, जो जल में लयशील होते हैं, शुष्क रूप में पाए जाते हैं । परन्तु, इसमें कोई क्षारीय वा अन्य ऐसे सत्व नहीं पाए जाते जो इसके प्रसिद्ध मदकारी प्रभाव के हेतु सिद्ध हों । इससे कतीरा के समान एक निर्यास तथा एक प्रकार का सागू या प्रकांड तथा अस्थि द्वारा निर्मित आटा जिसको मलाबार में "इन्डुम पोंदी" कहते हैं, पाए जाते हैं ।

प्रभाव तथा उपयोग—नर पौष्पिकपत्र(कोष) दक्षिण भारतवर्ष में मादक रूप से उपयोग में आते हैं । इनमें उनपर रहने वाले कीटाणुओं को मदान्वित करने का गुण है । ये उत्तेजक तथा कामोद्दीपक भी हैं । इसका औषधीय गुण पाटला (पाढ़ल) पुष्प के समान ख़याल किया जाता है । इसी कारण इन दोनों ओषधियों को तामिल भाषा में मदन-काम-पु अर्थात् कामपुष्प शब्द से अभिहित करते हैं । अरण्य-मदन-मस्त पुष्प के पौष्पिकपत्र (ब्रैक्ट्स) को अन्य द्रव्यों के साथ चूर्णित कर इससे कामोद्दीपक मोदक प्रस्तुत किए जाते हैं । इस वृक्षके कांड तथा गुठली द्वारा आटा प्रस्तुत किया जाता है । मालाबार में इस की गुठलियों को एकत्रित कर मास पर्यंत धूप में सुखाते हैं; तदनन्तर इसे खल में कूटकर आटा बनाते हैं जिसको "इंडुम पोंदी" कहते हैं । यह (Caryota.) के आटे से श्रेष्ठ, किन्तु चावल से निम्नकोटि का होता है और इसे पहाड़ी जा-तियाँ तथा निर्धन लोग खाते हैं, विशेषकर जुलाई से सितम्बर मास तक जब कि चावल कम होता है और उनके नाश होने का भय रहता है । प्रायः सागू में इसका मिश्रण किया जाता है । र्हीडी (Rheede) के वर्णनानुसार फलान्वित कोण (Cone) की पुल्टिस कटि पर लगाने से वृक्कशोथ विषयक शूल दूर होता है । फ़ा०इं० ३ भा० । इं० मे० मे० ।

नोट—"मदनमस्त"(Artabotrys odoratissima, *R. Br.*) तथा "मदनमस्त का झाड़" नाम की दो और वनस्पतियाँ हैं जो पूर्व कथित वनस्पतियों से नाम सादृश्यता रखने पर भी दो सर्वथा भिन्न भिन्न ओषधि हैं । स० फा० इं० । इनके लिए यथास्थान देखो ।

अरण्य मक्षिका aranya-makshiká-सं० स्त्री० वन मक्षिका, डंस, मच्छड़-हिं० । डाँश,

माछि–बं०। गैड फ्लाई (Gad fly)–इं०। शा० र० ।

अरण्य मुद्गः aranya-mudgah–सं० पुं० वनमुद्ग, बनमूँग, मुद्गपर्णी । घोड़ा मुग–बं०। (Phaseolus Trilobus, *Ait.*) रा० नि० व० १६ । देखो—मकुष्टकः ।

अरण्यमुद्गा aranya-mudgá सं० स्त्री० मुद्गपर्णी,वनमूँग–हिं० । मुगानि–बं० । (Phaseolus Trilobus *Ait.*)रा० नि० व ३ ।

अरण्य मेथी aranya-methí–सं० स्त्री० वन मेथिका, बनमेथी, जंगली मेथी । बन मेति–बं०। राणमेथि–मह० । (See– Vanamethí) वै० निघ० ।

अरण्य रजनी aranya-rajaní–सं० स्त्री० वनहरिद्रा, जंगली हलदी । बन हलुद–बं० । राण हलद–मह० । (Curcuma Aromatica.) वै० निघ० ।

अरण्यलक्ष्मी aranya-lakshmí–सं० स्त्री० वन लक्ष्मी, रम्भा फल, अरण्य कदली, जंगली केला । Wild Plantain (Musa Paradisiaca).

अरण्य वाताद् aranya-vátád–सं० पुं० (१) बीज—जंगली बादाम–हिं०, द० । हिड्नो कार्पस वाइटिएना (Hydnocarpus Wightiana, *Blume.*), हिं० आइनेब्रिअंस (H. inebrians, *Wall.*)–ले० । जंगल आमण्ड (Jungle Almond) –इं० । नीरडि-मुत्तु, एट्टी–ता० । नीरडि-वित्तु लु –ते० । कडु-कवथ, कौटी–मह० । तमन, मरवेत्ति –मल० । रट केकुन, मकूलू–सिं० । कोष्टी–गो०। कौटी –बम्ब० । तैल—जंगली बादाम का तेल -द० । नीरडि -मुत्तु -एण्णेय–ता० । नीरडि-वित्तुलु-नूने--ते० ।

कुष्ठवैरी वा चॉलमूगरा वर्ग

(*N. O. Bixineoe.*)

उत्पत्ति-स्थान—पश्चिम प्रायद्वीप, दक्षिण कोंकणसे ट्रावनकोर पर्यन्त, मालाबार और दक्षिण भारत के कुछ अन्य भाग ।

इतिहास—उक्त वृक्ष के इतिहास के विषय में जो कुछ हमें ज्ञात है, वह यह है कि पश्चिम समुद्र तट पर यह कतिपय हठीले त्वग्रोगों में गृह औषध रूप से चिरकाल से उपयोग में आ रहा है। तथा निर्धन जाति के लोग जलाने तथा औषधीय उपयोग हेतु इसका तैल निकालते हैं। (डाइमाक)

वानस्पतिक-विवरण—इसका फल गोलाकार सेब के आकार का होता हैं; जिसके ऊपर एक खुरदरा मोटा धूसर रंग का छिलका होता है, जो बाहर की ओर कॉर्कवत् और भीतर से काष्ठीय होता है, जिस पर वृहदाबुर्द जटित होते हैं; पर किसी किसी वृक्ष में अर्बुदशून्य फल भी होते हैं। इसके भीतर १० से २० अधिक कोणाकार बीज जो करीब करीब $\frac{3}{4}$ इं० लम्बे, $\frac{1}{2}$ इं० चौड़े और ३ से ४ इं० मोटे, सामान्यतः विषम अंडाकार कभी कभी अंडाकार या आयताकार होते हैं और जिनके ऊपर का सिरा नीचे की अपेक्षा अधिक नोकीला होता है।

बीज अल्प श्वेतमज्जा में रखे रहते और श्याम पतले वाह्यत्वक् से मज़बूती के साथ चिपके रहते हैं। मज्जा को खुरच कर पृथक् करने पर बीज-बहिः त्वक् का वाह्य पृष्ठ खुरदरा और लम्बाई की रुक्ष छिछली नलिकाकार धारियों से युक्त दीख पड़ता है। उभार स्पष्ट व्यक्त नहीं होते छिलके के भीतर भरपूर तैलीय अल्व्युमेन होता है, जिसमें चॉलमूगरा के समान दो वृहद्, स्पष्ट हृदाकार तीन नसों से युक्त पत्रीय दौल होते हैं। ताजी अवस्था में अल्व्युमेन का वर्ण श्वेत, किन्तु शुष्क होने पर गम्भीर धूसर वर्ण का हो जाता है। इसकी गंध चॉलमूगरा के समान होती है। मोहीदीन शरीफ़ के मतानुसार यह गन्धरहित तथा कुछ कुछ वातादवत्, निर्बल मधुर स्वादयुक्त होता है। पारस्परिक दबाव के कारण प्रायः ये विषम हो जाते हैं। इसके बीज चॉलमूगरा के समान होते हैं; परन्तु ये आकार में छोटे तथा खुरदरे होते हैं जिनकी लम्बाई की रुक्ष धारियाँ होती हैं। चॉवलमूगरा में यह बात नहीं होती ।

उसके बीज चिकने और आकार में इससे दुगुने बड़े होते हैं।

सूक्ष्म रचना—बीज बाह्य त्वक् तथा अलब्युमेन को सूक्ष्मदर्शक द्वारा परीक्षा करने पर ये चावलमूगरा बीजवत् पाए जाते हैं।

रासायनिक संगठन—बीज में लगभग ४४% स्थिर तैल होता है, जो गंध या स्वाद में चालमूगरा तैल के समान होता है। तैल में चालमूग्रिकाम्ल तथा हिड्नोकार्पिकाम्ल और किंचित् मात्रा में पामिटिक एसिड होता है। उपर्युक्त दोनों अम्ल स्फटिकीय होते हैं।

प्रयोगांश--बीज तथा तैल।

इन्द्रियव्यापारिक कार्य--परिवर्तक, बल्य, स्थानिक उत्तेजक (मो० श०), पराश्रयी कीटघ्न, बीज शोधक है।

औषध-निर्माण--औषधीय उपयोग और इनकी प्रतिनिधि स्वरूप युरूपीय द्रव्य-चालमूगराके बीज और तैल।

मात्रा--तैल--१५ बुंद से २ ड्राम पर्यन्त (१-२ फ़्लुइड ड्राम) अथवा आमाशयपूर्ति पर्यन्त। बीज-क्रमशः इन्हें १५ ग्रेन (७॥ रत्ती) से २ ड्राम तक बढ़ाएँ। अन्तः रूप से बीज को चबाकर केवल रस को निगलें; पर सम्पूर्ण वस्तु को नहीं। बीज की अपेक्षा तैल अधिक लाभदायक, संतोषजनक तथा उत्तम है। तैल चालमूगरा तैल की उत्तम प्रतिनिधि है। पूर्ण लाभ हेतु इसका पूर्ण औषधीय मात्रा में उपयोग करना चाहिए।

नोट--क्योंकि यह बहुत स्वल्प मूल्य की वस्तु है, अस्तु अकेले ही बिना किसी अन्य तैलके सम्मेलन के इसका बहिरप्रयोग करना चाहिए।

उपयोग--खर्ज (तरखुजली) तथा विस्फोटक आदि त्वग्रोगोंमें इसके बराबर कानन एरण्ड तैल (Jatropha curcas oil) मिश्रित कर उसमें गंधक २ भाग, कपूर आधा भाग, तथा नीबू का रस १० भाग योजित कर इसका अभ्यंग करते हैं। प्रलेप वा इमलशन रूप में इसका बाह्य उपयोग होता है।

शिरोदग्ध व्रण में इस का तैल तथा चूने का पानी समान भाग में प्रलेप रूप से उपयोग में आते हैं। (डाइमॉक)

यह आमवात विषयक वेदना को शमन करता है और इसे त्वग्रोगोंमें बर्तते हैं। भस्मों (क्षारीय) के साथ मिलाकर इसे विद्रधि, चतुक्षत तथा अन्य क्षतों पर लगाते हैं। र्‌हीडी

ट्रावनकोर में आधे चाय के चम्मच भर की मात्रा में इसे कुष्ठ रोगों में देते हैं, और एरण्ड की गिरी तथा छिलके के साथ कुचल कर खुजली में इसे औषध रूप से उपयोग में लाते हैं।

(डायमॉक)

यद्यपि १५ बुंद से २ ड्राम की मात्रा में कुष्ठ, विभिन्न प्रकार के त्वग्रोग, उपदंश की द्वितीय कक्षा और पुरातन आमवात में इसका अन्तः प्रयोग होता है; तथापि इसके उपयोग में अत्यंत सावधानीकी आवश्यकता होतीहै। कहा जाता है कि यह आमाशय तथा आन्त्र क्षोभक है क्योंकि कतिपय दशाओं में इसके उपयोग से वमन व रेचन आने लगते हैं। (वॅट)

इसका तैल कुष्ठ के लिए न्यारा तथा चालमूगरा से श्रेष्ठतर अनुमान किया जाता है। इसकी मात्रा ५ बुन्द से क्रमशः बढ़ाकर ३० बुंद पर्यन्त है। कुष्ठ में मांसांतरीय वा शिरान्तः अन्तःक्षेप द्वारा भी इसे प्रयुक्त करते हैं। ईथिलेस्टर्स के मांसांतरीय वा इसके लवण (चालमूग्रिक तथा हाइड्नोकार्पिकाम्ल) के शिरान्तरीय अन्तःक्षेपों के सर्वोत्तम परिणाम दृष्टिगोचर होते हैं। इससे लेप्रा वेसिलाई (कुष्ट के जीवाणु) और ग्रंथिकों (Nodules) का अन्त हो जाता है।

(चक्रवर्ती)

डॉक्टर एम०सी०कोमन देशी औषध विषयक मद्रास समाचारमें जो अभी हाल ही में प्रकाशित हुआ है। एक पुरातन कुष्ठ रोगी का उल्लेख करते हैं, कि उसे उक्त तैल के अन्तः (मुख द्वारा) एवं त्वकस्थ (अन्तःक्षेप) प्रयोग से (रोग की विभिन्न अवस्थाओं वा भेदों—स्पर्शाज्ञता, मिश्र, ग्रंथि युक्त तथा क्षतज इत्यादि

में) अत्यन्त लाभ हुआ। ५ बुंद उक्त तैल तथा उतना ही पिथांस वसा (Pythons fat) इन दोनों को मिलाकर तथा एक एक बूंद दैनिक तैल की मात्रा बढ़ाते हुए उक्त मिश्रण का उस समय पर्यन्त मांसांतर अन्तःक्षेप करें, जिसमें मात्रा ३० वा ४० बूँद हो जाए। किसी किसी रोगी को बीज की गिरी पिसी हुई, नारिकेल तैल, सोंठ तथा गुड़ (Jaggery) द्वारा निर्मित लड्डू भी दिया गया। इसका तेल १०बूंद की मात्रा में कलेवा से १ घंटा पूर्व तथा पाक २० ग्रेन (१० रत्ती) की मात्रा में संध्या काल में दिया गया। इस प्रागुक्त चिकित्सा से पूर्व विशुद्ध विचूर्णित जयपाल बीज का ८ से १० दिवस पर्यन्त रेचन दिया गया। उपर्युक्त चिकित्साके अतिरिक्त किसी किसी रोगीको सप्ताह में २ बार सोडियमहाइड्नोकार्पेट-घोल (२ घन शतांश मीटर) का त्वकूस्थ अन्तःक्षेप किया गया।

परिणाम निम्न हुआ -"जो कुछ मैं ने देखा उसमें सन्देह नहीं कि अरण्यवाताद (H. Inebrians) कुष्ठ की घृणायुक्त दशाओं के सुधारने के लिए एक शक्तिमान औषध है।"

कलकत्ता के वैज्ञानिक अन्वेषक डॉक्टर सुधामय घोश अक्टूबर मास सन् १६२० ई० के इण्डियन जर्नल ऑफ मेडिकल रीसर्च में लिखते हैं कि कुष्ठ की चिकित्सा में हाइड्नोकार्पिकाम्ल का सोडियम साल्ट अत्यन्त गुणदायक एवं उपयुक्त पाया गया। उनका कथन है कि अरण्यवाताद (Hydnocarpus Wightiana) तथा लघु कवटी (H. Veneata) द्वारा प्राप्त तैल, चॉलमूगरा तैल की अपेक्षा अधिक सुलभ है। चॉलमूगरा तैलसे तुलना करने पर ५-५ प्रतिशत के स्थान में उनमें अधिक (१० प्रतिशत) हाइड्नोकार्पिकाम्ल वर्तमान होता है। अस्तु, मितव्ययता के विचार से कुष्ठ चिकित्सा में उनका उपयोग योग्य प्रतीत होता है। यक्ष्मा, छिलका युक्त विस्फोटक, कंठमाला के ग्रंथिकों, हठीले त्वग्रोगों यथा कंडू, रक्ताभायुक्त विस्फोटक (Lichen), रकसा (Prurigo) तथा उपदंश मूलक त्वग्रोगों पर उक्त तैल का अभ्यंग करते हैं। दुर्गन्धित (पूतिगंध युक्त) स्रावोंमें विशेषतया प्रसवके पश्चात् योनि शोधन रूप से योनि में तथा पूयमेह में इसके बीज के शीत कषाय का मूत्रमार्ग में पिचकारी करते हैं।

सुश्रुत महाराज स्वरचित सुश्रुत संहिता नामक प्रामाणिक संस्कृत ग्रंथ में लिखते हैं कि कुष्ठ रोग में खदिर क्काथ के साथ चॉवलमूगरा तैलके सेवन करने से इसकी गुणदायक शक्ति अधिक हो जाती है। यदि यह सत्य है तो चॉलमूग्रिकाम्ल खदिरॉल (Catechol) के साथ, जो उसका प्रभावात्मक सत्व है, सम्मिलित कर परीक्षा की जा सकती है। कहा जाता है कि डॉक्टर उन्ना (Unna) ने पाइरोगयलोल का, जो खदिरॉल के बहुत समान है, ओषिद (Oxide) रूप में कुष्ठ रोग में सफलतापूर्ण उपयोग किया।

कुष्ठरोग की आयुर्वेदिक चिकित्सा में चॉलमूगरा तैल तथा गोमूत्र दोनों अन्तः एवं बहिर रूप से उपयोग में आते हैं। इसके विषय में आधुनिक सर्वश्रेष्ठ भारतीय वैज्ञानिक **जगदीश चन्द्र घोश** महोदय लिखते हैं कि सम्भवतः तैल के अम्लों का मूत्र के सैन्धजम् (Sodium) तथा अमोनियम आदि लवणों से सम्पर्क होने पर कुछ क्षारीय लवण बनजाते हैं और विलेय होने के कारण ये रोगी के रक्त द्वारा समस्त शरीर में व्याप्त हो जाते हैं तथा चॉलमूगराम्ल के विलेय लवणों की तरह प्रभाव करते हैं। (इं० मे० मे०)

अश्व के वर्षाती नामक रोग में यह तैल औषध रूप से प्रयुक्त होता है।

(२) जंगली बादाम-हिं०, बम्ब० मह०। वाइल्ड आमण्ड (Wild almond), पून ट्री (Poon tree.)-इं०।

स्टरक्युलिया फीटिडा (Sterculia Foetida, *Linn.*)-ले०। पून-बम्ब०। कुडूप डुक्कु, पिनारी, कुदुदुरई- पुडुकी, कुद फुक्कु, पिनारी(-थ) मरम्-ता०। गुरपू बादाम-तै०। पिनारी मर, भाटला-कना०। पांट्ट-कवलम--

मल० । हलियम् पियू, लेट् कोय्-बर० । कुश्रोमद, विरोही-गां० । नक्यं ऊद गु०, मह० ।

आवर्त्तनी वा मरोड़फली वर्ग
(*N. O. Sterculiaceae*).

उत्पत्ति स्थान—पश्चिमी घाट (वा प्रायद्वीप), दक्षिण भारत, कोंकण, मालाबार, ब्रह्मा और लंका।

वानस्पतिक-विवरण—इसके विशाल वृक्ष होते हैं। स्टक्युलिया की अनेक जातियां से बृहत् तैलीय बीज प्राप्त होते हैं, जिन्हें दिहाती लोग खाते हैं। बीज अर्द्ध अंडाकार १ इंच लंबे और आध इंच चौड़े (व्यास), एक ढीले श्यामवर्ण की झिल्ली से आच्छादित होते हैं। आधार पर एक पीतवर्ण का अर्बुद होता है। कठिन श्यामत्वचा एक ऊर्ण जटिन स्तर से आच्छादित होती हैं। यह भीतर से धूसर एवं मखमली होती, और इसके भीतर बीज के आकार की एक तैलीय श्वेत गिरी सम्पुटित होती हैं। प्रत्येक बीज का भार लगभग २ ग्रामके होता है। छिलका कठिनतापूर्वक चूर्ण किया जा सकता है। ऊर्णवत् त्वचा जलमें बैसोरीन (Bassorin) की तरह मृदु हो जाती है। गिरी में लगभग ४० प्रतिशत स्थिर तैल और अधिक परिमाण में श्वेतसार विद्यमान होते हैं ।

रासायनिक संगठन—तैल गाढ़ा, फीका पीतवर्ण का, कोमल और शुष्क नहीं होने वाला है।

प्रयोगांश—पत्र, पुष्प, बीज, त्वक्।

प्रभाव तथा उपयोग-लोरीरो (Loureiro)के कथनानुसार उक्त वृक्ष की त्वचा (वा पत्र) रेचक, स्वेदक तथा मूत्रल है। चीनी लोग इसे जलोदर तथा आमवात में देते हैं। पुष्प विष्ठावत् गंध के लिए प्रसिद्ध है। (डाइमॉक) इसके बीज तैलीय होते हैं और जब इसे असावधानी से निगल लिया जाता है तो उत्क्लेश जनित होता तथा शिर चकराने लगता है । इं० मे० प्लां० ।

हॉर्सफ़ील्डके कथनानुसार इसकी फली लुआबी तथा सङ्कोचक होती है। (ऐन्सली)

धूपन रूप से इसका मुख्य उपयोग होता है। कंडू एवम् अन्य त्वग्रोगों में इसका अन्तर और प्रस्तर (उत्कारिका) रूप में वहिरप्रयोग होता है। इसके बीजको भूनकर खाते हैं। (इं० मे० मे० ;

(३) जंगली बादाम-हिं०, कच्छु,-बं० । जावा आमण्ड (Java almond)-इं० । एलीमाइ ट्री (Elemi tree), केनेरियम् कम्म्यून (Canarium commune, *Linn.*)-ले० । बॉइस डी कोलोफेन (Bois-de colophane)-फ्रां० । एलीमाइ-पू० भा० । कानारि-मल० । बदामी-जावा । कग्गली मर, कग्गली बीज, सम्बाणी, जावा बदामी यौनी-कना० । बादाम जावी-हिं० । मन्शिम -अ० ।

महारुख वर्ग
नॉट ऑफ़िशल
(*Not official*)
(*N. O. Burseraceæ.*, or *amyridaceæ & simarubaceæ*).

उत्पत्ति-स्थान—मलया आर्चीपेलेगो, पूर्वी भारतीय द्वीपसमुदाय, पेनैंग, मलया, ट्रावनकोर, दक्षिणी भारत में इसको कृषि की जाती है।

इतिहास—रम्फियस (Rumpheus) के वर्णनानुसार यह सीराम और उसके आसपास के महाद्वीपों में होनेवाला एक विशाल वृक्ष है। जिससे इतनी अधिकता के साथ राल उत्पन्न होता है कि वह बृहत् टुकड़ों अथवा शंकाकार अश्रु रूप में धड़ तथा मुख्य शाखाओं से लटके रहते हैं । प्रारम्भ में यह श्वेत, तरल एवं चिपचिपा; किन्तु पश्चात् को यह पीताभायुक्त और मोमवत् गाढ़े हो जाते हैं। वह आमण्ड(बादाम)का भी वर्णन करते हैं और कहते हैं कि उसे कच्चा खाने से रेचन आते हैं तथा अजीर्ण हो जाता है ।

स्प्रेंकेल के विचारानुसार :आमण्ड इब्नसीना वर्णित मन्शिम है जो उनके वर्णनानुसार बतम

(Pistacia terebinthus) के समान त्रिकोणमय बीज होते हैं। परन्तु अरबी कोषकार उसे बालसम फल (Carpobalsamum) ख्याल करते हैं। ऐन्सली कहते हैंकि अपनी जावा की औषधीय वनस्पतियों की सूची में हॉर्सफील्ड हमें बतलाते हैं कि उक्त निर्यासमें कोपाइवी बालसम (Balsam of copaiba) के समान ही गुणधर्म हैं। इसकी त्रिकोणयुक्त गिरी को दिहाती लोग कच्चे ही एवं पका कर खाते हैं और तैल ताजी दशा में खाने तथा बासी होने पर जलाने के काम आता है। राल भी जलाने के काम आता है।

जावा में बीज के लिए इसके वृक्ष लगाए जाते हैं। भारतवर्ष में ट्रावनकोर के पास यह अत्यन्त सफलतापूर्वक उत्पन्न किया गया है।

शे.खुर्रईस ने मन्शिम (हब्बुल् मन्शिम) के नाम से इस वृक्ष के फल का वर्णन किया है। हब्बुल् मन्शिम के नाम से मख़्ज़नुल् अद्वियह् और मुहीत् आज़म में भी इसका वर्णन आया है। यमन तथा हजाज़ निवासी इसके तैल को इत्रेमन्शिम कहते हैं।

वानस्पतिक-विवरण—राल वृहत्, शुष्क, ज़रदीमायल श्वेतवर्ण के समूहों में पाया जाता है। उत्ताप पहुँचाने पर यह शीघ्र मृदु हो जाता है और तब उसकी गंध एलेमीवत् (मन्शिम वत्) होती है।

फल $\frac{1}{2}$ से $\frac{3}{4}$ इंच लम्बा, अंडाकार, त्रिकोणयुक्त, सिरे की ओर नुकीला (तीक्ष्णाग्र), चिकना, किञ्चित् फीके बैंगनी पतले गूदादार वाह्यत्वक्युक्त; गुठली अत्यन्त कठोर, त्रिकोणीय, अस्फुटनीय (Indehiscent), अन्य दो के पतन होने के कारण एककोषीय होती है; आमण्ड (वाताद गिरी) का बहिरावरण झिल्लीमय होता है, जिसके भीतर तीन खण्डोंमें विभाजित और परस्पर लिपटे तथा बल खाए हुए तैलीय दौल होते हैं। गिरी से ४० प्रतिशत अर्द्ध ठोस, ग्राह्य एवं मधुरस्वादमय वसा प्राप्त होती है जो बहुत काल पर्यन्त दुर्गन्धरहित बनी रहती है। (ब्रेंट)

रासायनिक संगठन—ब्रीन (Brein) ६० प्रतिशत, एमाइरीन (राल) २५ प्रतिशत, ब्रायोआइडीन (Bryoidin), ब्रीडीन(Breidin) तथा एलेमिक अम्ल। लयशीलता—यह ईथर में तो बिलकुल लय हो जाता है, पर मद्यसार (९०%) में भी इसका बहुत सा भाग लयशील होता है।

प्रयोगांश—गुठली अर्थात् बीज तथा तैल, जमा हुआ ओलियो-रेज़िन जो काटने से टपकने लगता है (एलेमी)।

औषध-निर्माण—प्रलेप(५ में १); गिरी अर्थात् बीज तथा तैलका इमल्शन। मात्रा–आधा आउंस से १ आउंस।

एलिमाई प्रलेप (Unguentum elemi)। मरहम रातीनजुल् मन्शिम्–अ०।

निर्माण—एलीमाई १ भाग, स्परमेसीटाई आइंटमेंट ४ भाग दोनों को परस्पर पिघला कर छान लें और शीतल होने तक हिलाते जाएँ।

प्रभाव–स्निग्धताजनक, उत्तेजक और श्लेष्मनिस्सारक। निर्यास उत्तेजक तथा वर्ण्यलेपन है। तैल स्नेहकारक है।

गुणधर्म तथा उपयोग—ऐन्सली के मतानुसार इसका गोंद बालसम ऑफ कोपाइबा के समान गुणधर्म युक्त है। शिथिल (व्यथा रहित) व्रणों में इसे प्रलेप रूप से प्रयोग में लाते हैं। इसकी गिरी द्वारा प्राप्त तैल वाताद-तैल की प्रतिनिधि है। इं० मे० मॉ।

डॉक्टर वेट्ज़ (Waitz) लिखते हैं कि इसकी गिरी द्वारा निर्मित इमल्शन वाताद मिश्रण (Mistura amygdalœ) की उत्तम प्रतिनिधि है तथा वह इसके कोष्ठमृदुकारक गुण के कारण इसे वाताद मिश्रण से उत्तम ख़याल करते हैं।

गिबर्ट (Guibourt) एलेमी गंधयुक्त न्युगीनिया रेज़िन (New Guinea Resin.) के अन्तर्गत उक्त रालका वर्णन करते हैं

यह राल (Manilla elemi) जो उपयुक्त वृक्षसे प्राप्त होता है, प्रधानतः वार्निश बनाने

के काम आता है। यह रसोई बनाने के भी काम आता है तथा वाताद तैलवत् स्नेहकारक व सुस्वादु और अशुद्धस्रावों तथा पूयमेह आदिमें लाभदायक ख्याल किया जाता है। उक्त वृक्ष की त्वचा से अधिकता के साथ स्वच्छ तैल प्राप्त होता है जो नवनीतीय कर्पूरवत् समूहों में जम जाता है। इं० मे० मे०।

(४) जंगली बादाम, हिन्दी बादाम-हिं०, द०, बम्ब०। इङ्गुदी फलम्, देश-बादामित्ते-सं०। बादामे हिन्दी—फ़ा०। इण्डियन आमण्ड (Indian Almond, nut of-), आमण्ड ट्री (Almond tree)-इं०। टर्मिनेलिया कैटेप्पा (Terminalia catappa, *Linn.*)-लै०। बडामीर डी मलाबार (Badamier d' malabar)-फ्रां०। अख्टेर कैट्टा-पेन बॉम (Achter Cattapen baum)-जर०। बंगला बदाम, बदाम -बं०। नाट्टु-बादम्-मौट्टै, नाट-वादम्, आमण्डी मरम्-ता०। इंगुदी, तपस तरुवु, नाट्टु-वादमु, नाट्टु-बादम-वित्तुलु, वा (वे) दम-ते०। नाट्टु-बादम, कोट्ट-कुरु, आदम-मरम, कटप्पा-मल०। नाट-बादामि, तरू, बादरीमर-कना०। नाट बादाम, देसी-बदाम, हात बदाम, बेंगाली-बदाम, जंगली-बादाम-मह०, बम्ब०। कोटम्ब -सिं०। नाट-नि-बदाम-गु०।

हिमज वर्ग

(*N. O. Combretaceæ.*)

उत्पत्ति-स्थान—मलाया (अब सम्पूर्ण भारतवर्ष में लगाया गया है)।

नोट—बी० डी० बसु तथा मोहीदीन शरीफ़ आदि लेखकों ने इसका संस्कृत व तेलगु नाम इंगुदी लिखा है; परन्तु आयुर्वेदीय-ग्रंथ-लेखकों का इंगुदी, हिंगोट वा हिंगुआ (Balanites Roxburghii, *Planch.*) इससे भिन्न ही वस्तु है।

वानस्पतिक-विवरण-यह एक वृक्ष है। इसका फल अण्डाकार, पिच्चित (भिचा हुआ, संकुचित), चिकना, गुठलीयुक्त, जिसके उभरे हुए नाली युक्त दो किनारे होते हैं, यह दो इञ्च लम्बा और पकने पर मन्द बैंगनी रंग का होता है। मज्जा चमकीले बैंगनी रंग की होती है। गुठली खुरदरी, कठिन और मोटी होती है। गिरी बादाम के अर्द्ध आकारकी और करीब करीब बेलनाकार होती और बङ्गदेशीय युरूप निवासियों में "लीफ नट" नाम से सामान्यतया व्यवहार में आती है।

रासायनिक संगठन-ब्रैण्ट (Brannt) के मतानुसार इसमें २८ प्रतिशत तैल होता है जो स्वाद एवं मृदुता में वाताद तैल से बढ़कर होता है। यह पीताभायुक्त एवं बिलकुल गंध रहित होता है। इसमें मुख्यतः स्टियरीन (Stearin) तथा ऑलीईन (Olein) विद्यमान होते हैं। इस वृक्ष में बैसोरा (Bassora) की तरह का एक निर्यास होता है। पत्र और त्वचा में कषायीन होता है। त्वचा में एक प्रकार का काला रंग होता है जिससे कोई कोई दाँत रंगने का काम लेते हैं। त्वक्‌भस्ममें पोटास तथा कषायीन होते हैं।

प्रभाव तथा उपयोग-इसकी त्वचा संकोचक (संग्राही) है। अस्तु, पूयमेह तथा श्वेतप्रदरमें क्वाथ रूपमें इसके अन्तः प्रयोगकी प्रशंसा की जाती है।

इसके कोमल-पत्र-स्वरस द्वारा एक प्रकार का प्रलेप निर्मित किया जाता है जो कण्डू, कुष्ठ तथा अन्य प्रकार के त्वग्रोगों और शिरोऽर्ति तथा उदरशूल में अन्तः रूप से लाभदायक ख्याल किया जाता है।

इसका फल प्रभाव में बादाम के समान होता है।

अरण्य वायसः aranya-váyasah-सं० पुं० अरण्य काक, बन कौआ, डोम कौआ, काला कौआ-हिं०। डोम काक-बं०। डोम कावला -मह०। रैवेन (Raven)-इं०। रा० नि० व० १६।

अरण्य वासिनी aranya-vásiní-सं० स्त्री० अत्यम्लपर्णी लता, अमरबेल, अमलोलवा। रा० नि० व० ३। (Vitis Trifolia.)

अरण्य वास्तुकः aranya-vástukah-सं०

पुं० कुणञ्जर क्षुप, बन बथुआ । वनबेतो -बं० । राणचाकवत-मह० । (A kind of Chenopodium) रा० नि० व० ५ ।

अरण्य शालिः aranya-shálih-सं० पुं० नीवारधान्य । उड़िधान-बं० । देवभात-मह० । (Wild rice) रा० नि० व० २२ ।

अरण्य शुनः aranya-shunah-सं० पुं० (Wild dog.) वन कुक्कुर -सं० । नेकड़ेबाघ -बं० । वैं० निघ० ।

अरण्य शूरणः aranya-shúranah-सं० पुं० वनजशूरण, जंगली सूरन । बुनो ओल-बं० । गांड़ा सूरण-मह० । (Amorphophallus Campanulatus. । रा० नि० व० ७ । देखो—वनशू (सू) रणः ।

अरण्यश्वा aranya-shvá-सं० पुं० (१) कपि, वानर । (A Monkey.) हे० च० । (२) चित्र(क) व्याघ्र । चीता । (A tiger)

अरण्यसम्भूतः aranya-sambhútah-सं० पुं० A crab (Scilla serrata.) कर्कटक, केकड़ा । काँकरोल-बं० । See-Karkatak.

अरण्य हल्दी कन्दः aranya-haldí-kandah-सं० पुं०
अरण्य हरिद्रा aranya-haridrá -सं० स्त्री०
वनहरिद्रा, वनहर्दी, जंगली हल्दी-हिं० । वन हलुद-बं० । (Curcuma Aromatica.)

गुण—कुष्ठघ्न तथा वातरक्त नाशक है । भा० पू० १ भा० ह० व० । कटु, मधुर, रुचिकारी, अग्निदीपक, कडुई, कुष्ठ एवं वातहर है तथा रक्तदोष, विष, श्वास, कास और हिक्का का नाश करनेवाली है । वैं० निघ० ।

अरण्या aranyá-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] एक ओषधि ।

अरण्याक्षोट aranyáksbota-हिं० संज्ञा पुं० (Indian walnut) जंगली अखरोट ।

अरण्यू aranyú-जय० अरणी, अरनी, अग्निमंथ । (Premna Serratifolia.)

अरण्येन्द्रवारुणिका,-णी aranyendravárunika,-ni-सं०, हिं० स्त्री०
अरण्येन्द्रायन aranyendráyan-हिं० पुं०
विशाला-सं० । विषलम्बी (म्भी), जंगली इन्द्रायन, विषलम्बी-हिं० । Bitter gourd (Cucumis trigonus, *Roxb.*, Syn. Pseudo colocynthis, *Roy.*)

नोट—इन्द्रायन का साधारण संस्कृत नाम इन्द्रवारुणिका,-णी (Citrullus colocynthis, *sch ad.*) है । क्षुद्र तथा बृहत् भेद से यह दो प्रकार का होता है । इसके बृहत् भेद को ही लाल इन्द्रायन और संस्कृत में महाकाल अर्थात् महेन्द्रवारुणी वा विशाला (Trichosanthes palmata, *Roxb.*) कहते हैं । इन सब का वर्णन यथा स्थान होगा ।

अरताल aratál-गु० हड़ताल, हरिताल । (Haritála.) इं० मे० मे० ।

अरतिः aratih-सं० स्त्री० अनिच्छा, विराग, चित्त का न लगना । (Absence of desire.) "अस्वास्थ्यं चिंतयात्यर्थमरतिः कथ्यते बुधैः ।" भा० । (२) औदासीन्य (Sadness.) । (३) पित्त के रोग । (Biliary disease.)

अरत्निः aratnih-सं० पुं०
अरत्नि aratni-हिं० संज्ञा पुं०
(१) निष्ठकनिष्ठ-मुष्टी, मुट्ठी-बँधा हाथ । वा० सं० २० । ८ । रा० नि० व० १८ । (२) कपूर (Camphor.) । (३) कुहनी (Elbow) । (४) बाहु, हाथ ।

अरत्नीय प्रसारणी aratníya-prasárani -सं० स्त्री० मणिबन्ध प्रसारणी अन्तःस्था । (Extensor Carpi Ulnaris.)

अरत्नीया aratníya-सं० स्त्री० अन्तःप्रकोष्ठिका (Ulnar nerve.)

अरत्नीयाकुञ्चनी aratníyákunchaní-सं० स्त्री० करसङ्कोचनी अन्तःस्था । (Flexor carpi Ulnaris.)

अरद āarad–अ० गर्दभ, गदहा, ख़र। (An ass.)

अरदट aradaṭa–कना० होल । बर्गेरस । (Garcinia Cambogia, *Dess.*)

अरदंड aradaṇḍa–हिं० संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का करील जो गंगा के किनारे होता है।

अरदन aradan–हिं० वि० [सं० अ+रदन] बे दाँत का। बे दाँत वाला।

अरदना aradaná–हिं० क्रि० सं० [सं० अर्द्दन] (१) रौंदना। कुचलना। (२) वध करना। मार डालना।

अरदल aradala–हिं० संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का वृक्ष जो पश्चिमी घाट और लंका द्वीप में होता है। इससे पीले रंग की गोंद निकलती है जो पानी में नहीं घुलती,शराब में घुलती है। इससे अच्छा पीले रंग का वार्निश बनता है। इसका फल खट्टा होता है और खटाई के काम में आता है। इसके बीज से तेल निकलता है जो ओषधि के काम में आता है। इसकी लकड़ी भूरे रंग की होती है जिसमें नीली धारियाँ होती हैं। गोरका। ओट। भव्य। चालते। हिं०श०सा०।

अरदा aradá–सिं० सुदाब, तितली। (Ruta Graveolens, *Linn.*)

अरदार āaradár–अ० हस्ति, हाथी। (An elephant.)

अरदाल aradál–कना०,कों० हरिताल, हरताल। See–Harítál

अरदावल aradával–हिमा० बाम, चीऊ, –हिं०।

अरदावा aradává–हिं० संज्ञा पुं० [सं० अर्द। फ़ा० आरद] (१) दला हुआ अन्न। कुचला हुआ अन्न। (२) भरता।

अरदीग aradíg गुवाक, सुपारी। (Areca nut.)

अरदैवक aradaivak–एरण्ड, अरण्ड, रेंड़। (Ricinus communis.)

अरध aradha–हिं० वि० (Half) अर्द्ध, समांश। दे० अर्ध।

अरधंग aradhanga–हिं० संज्ञा पुं० (Hemipiegia) अर्द्धांग। दे०—पक्षाघात।

अरधंगी aradhangí–हिं० संज्ञा पुं० पक्षाघात रोगी। दे० अर्द्धांगी। (One afflicted with the hemiplegia)

अरधाँगी aradhángí–हिं० संज्ञा पुं० (Hemiplegic) दे० अर्द्धांगी।

अरन āaran–अ० पर जो घोड़े व गदहे के खुरों से ऊपर होते हैं।

अरन arana–हिं० संज्ञा पुं० [सं० अरण्य] (A forest) वन।

अरपा arapá–रोग रहित नीरोग, स्वस्थ। अथर्व० सू० २२। ३। का० १।

अरनब बर्री aranab-barrí–अ० शशक, ख़रगोश, खरहा। (A hare, a rabbit.)

अरनब बह्‌री aranab-bahrí–अ० दरियाई ख़रगोश। (Sea-rabbit.)

अरनबी aranabi–अ० एक बूटी है जो ख़रगोश के सदृश होती है। और ख़ास्र एवं शीतप्रधान स्थलों में होती है।

अरन मरम् aran-maram–मह० (१) ज़ख्म हयात ,घावपत्ता(kalnchœ laciniata, *D. C.*)। (२) तून (:Cedrela toona, *Roxb.*) इं० मे० मे०।

अरनसुत aranasut–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] वंश, अरण्योद्भव, बाँस। (Bambusa arundinacea *Retz.*) सुग०।

अरना araná–हिं० संज्ञा पुं० (१) महानिम्ब, बकाइन (Ailanthus excelsa.)। संज्ञा पुं० [सं० अरण्य] (२) जंगली भैंसा। (Wild buffalo) जंगलों में इसके झुंड के झुंड मिलते हैं। यह साधारण भैंसे से बड़ा और मज़बूत होता है। इसके सुडौल और दृढ़ अंगों पर बड़े बड़े बाल होते हैं। इसका सींग लम्बा, मोटा और पैना होता है। यह बड़ा बलवान होता और शेर तक का सामना करता है।

अरना उपला araná-upalá–हिं० संज्ञा पुं०

जंगली कण्डा, गोहरा। (Cow-dung found dried in the forest.)

अरनी araní-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० अरणी] (१) अरणी, अग्निमंथ (Premna serratifolia.)। (२) एक छोटा वृक्ष जो हिमालय पर होता है। इसका फल लोग खाते हैं। इसकी गुठली भी काम आती है। काश्मीरी और काबुली अरनी बहुत अच्छी होती है लकड़ीसे चरखेकी चरख और डोई आदि बनती हैं। यह माघ, फाल्गुन में फूलता फलता है और बरसात में पकता है। (३) यज्ञ का अग्नि-मंथन काष्ठ जो शमी के पेड़ में लगे हुए पीपल से लिया जाता है। दे० अरणि।

अरनेबिया aranabia, *Sp.* ले० इसकी जड़ रंग के काम आती है। मेमो०।

अरन्य aranya-हिं० संज्ञा पुं० (Forest) दे० अरण्य।

अरपा arapá-तु० जौ, यव। Barley (Hordeum vulgare.)

अरफ़ āaraf-अ० वंश, बाँस, बँस। Bamboo (Bambusa arundinacea.)

अरफ़ज āarafaj-अ० एक प्रकार की तीक्ष्ण दुग्धमय बूटी है।

अरफियह् āarfiyah-अ० फ़ाख्ता।

अरब arab यू० लोफ़ुज्जुअ्द, लोफ़कबीर से इसके पत्र छोटे होते हैं।

हिं० संज्ञा० पुं० [सं० अर्बुद] (१) सौ करोड़। संख्या में दसवाँ स्थान। (२) इस स्थान की संख्या। संज्ञा पुं० [सं० अर्वन्] घोड़ा। संज्ञा पुं० [अ०] (१) एक देश। (२) अरब देश का उत्पन्न घोड़ा। (३) अरब का निवासी।

अरबम् arabam-हिं० पुं० एक धातु तत्त्व विशेष। इर्बिअम् (Erbium.)-ले०।

अरबहरा āarbahará-सिरि० तुख़्म सँभालू, मेउड़ी के बीज। Vitex negundo (Seeds of-)

अरबा अर्बईन arbáāarbaāin-अ० (१) हज़ार पायह्, सहस्रपद, कनखजूरा, गोजर। (Centipede)। (२) पुदीना (menthus arvensis.)। (३) मकड़ी के समान एक जानवर है यह दो प्रकारका होता है—(१) दरियाई और (२) जंगली।

अरबायस arabáyas-यू० चना, चणक। (Gram.)

अरबिक एसिड arabic acid-इं० अरबिकाम्ल, गुञ्जाबीज अथवा निर्यास में पाए जाने वाला एक सत्व विशेष। म० अ० डा०। इं० मे० मे०।

अरविन्द arabind-हिं० पुं० कमल, उत्पल, पङ्कज। The lotus (Nymphæa nelumbo.)

अरबियान arabiyán-बहार या बाबूना भेद।

अरबिस्तान arabistán-हिं० संज्ञा पुं० [फ़ा०] अरबदेश। (Arabia).

अरबी arabí-हिं० वि० [फ़ा०] अरब देश का।

संज्ञा पुं० (१) अरबी घोड़ा। अरब देश का उत्पन्न वा अरबी नस्ल का घोड़ा। ताज़ी, ऐराक़ी। (२) अरबी ऊँट। अरब देश का ऊँट। (३) अरब देश की भाषा।

अरबी āarabí-अ० (१) श्वेत यव (White barley.)। (२) सुल्त, छिला हुआ जौ। (Husked barley.)

अरबी arabí-जय०, हिं० आलुकी, अरुई, घुइयाँ, अरवी-हिं०। कच्चु-बं०। A species of Arum (Arum colocasia).

अरबीस arabísa--यू० अच्छू, उलयक़।

अरबेवु arabevu-कना० अरङ्क। (Melia dubia, Cav.) फा० इं० १ भा०।

अरब्बी arabbí-हिं० वि० दे० अरबी।

अरभक arabhak-हिं वि० दे० अर्भक।

अरमः aramah-सं० पुं० नेत्ररोग विशेष। (A kind of eye disease.) वै० निघ०। देखो-अर्म्म।

अरम āaram–अ० एक प्रकार की मछली, मत्स्य भेद। (A kind of fish.).

अरमङ्क aramanka–सं० कुरङ्गक। (Indian antilope.).

अरमनी aramaní–हिं० संज्ञा पुं० [फ़ा०] आरमेनिया देश का निवासी।

अरमनीन aramanína–यू० एक बूटी है जो प्रतिवर्ष उगती है। बागी तथा जंगली दो प्रकार की होती है। इनमें से जंगली उपयोग में नहीं आती। बागी के पत्ते झाऊ के समान होते हैं।

अरमह् āaramah–अ० जंगली चूहा। (A wild rat.)

अरमा āaramá–अ० सुर्ख़ स्याह साँप, रक्त श्याम सर्प। (A red black serpent.)

अरमा armá–गोण्डा० बकली।

अरमाक aramák–कद्दू की बेल या केवड़ा वृक्ष की छाल।

अरमात aramát–यू० केवड़ा, गुले-केवड़ा। (Pandanus odoratissimus.)

अरमानियाँ aramániyán–यू० लाजवर्द। See–lájavarda.

अरमानूस aramánúsa–सिरि० अजवाइन खुरासनी पारसीक यमानी। (Hyocyamus.)

अरमाल aramála } **अरमालक** aramálak } एक वृक्ष की छाल है जो तज के समान एवं सुगन्धित होती है।

अरम्म् aramm–अ० मध्य शिर, पार्श्विकास्थियों के ऊपर मिलने का स्थान।

अरय अङ्गेली araya-angelí-मल० चान्दल, चाँदकुड़ सापसुण्डी–मह०। (Antiaris toxicaria, *Lesch.*)। फा० इं० ३ भा०। देखो–सापसुण्डी।

अरयावल arayával–मल० अर्निका (Arnica.)

अरयिली arayilí–नैपा० कग्टी। (Edgeworthia gardneri, *Meisn.*) मेमो०।

अरर āarar–यू० कन्तूरियून। See–Qantúriyún.

अरर arar–हिं० पुं० (१) मैनफल, मदनफल। Randia dumetorum, *Lam.* (Emetic nut.)। (२) तुम्बुरु-बं०, (Xanthoxylon alatum.)

–हिं० संज्ञा पुं० [सं० अरर] (१) किवाड़। कपाट। (२) पिधान, ढक्कन।

अरर ट्री arar-tree इं० सन्दरस।

अररूट किज़ङ्गु ararút kizhangu–ता० तवखीर, तीखुर, तिखुर–हिं०। See–Tíkhur. स० फा० इं०।

अररूट गड्डलु araút-gaḍḍalu–ते० तवखीर, तीखुर, तिखुर–हिं०। Curcuma angustifolia, Roxb. (root of-) स०फा०इं०।

अर्रा arrá–हिं० स्त्री० अरहर, आढ़की। (Cajanus indicus.)

अरलः aralah–सं० पुं० श्योणाक वृक्ष, सोनापाठा, अरलु। (Oroxylum Indicum.) अम०।

अरल arala–हिं० पुं० अज्ञात।

अरला arlá–सं० स्त्री० हंसपदी।

अरलि arali–का० अश्वत्थ, पीपलवृक्ष। (Ficus religiosa.)

अरलु aralu–सिंगा० हरीतकी, हड़। (Terminalia chebula.) स० फा० इं०।

अरलुः,–कः araluh, -kah–सं० पुं० }
अरलु aralu–हिं० संज्ञा पुं० }
(१) श्योणाक वृक्ष। सोनापाठा, अलुं। (Oroxylum Indicum.) शोनागाछ–बं०। टेंटु, दिंडा–मह०। टंट्या–क्रि० गढ़०। भा० म० १ भा० अतिसा० चि० गंगाधर चूर्ण। "नागर पाठारलु धातकी कुसुमैः"। च० द० गर्भ ज्वर। वै० निघ० अतिसा० चि० अम्बष्ठादि। (२) वेतस वृक्ष, बेंत (Calamus rotong.)। (३) अलांबु। अलाबु।

कड़ुई लौकी। (४) महानिम्ब, महारुखा, (Ailanthus excelsa) इं० मे० मे०।

अरलु aralu–पं० कचैटा, किंगली, अगलागल।

अरलु aralu–सिं०, मल० हरीतकी पुष्प, हड़ का फूल।

अरलु पुटपाक aralu-puṭpáka–सं० पुं० सोनापाठा की छाल द्वारा प्रस्तुत किया हुआ पुटपाक। इसे कुटज पुटपाकवत् प्रस्तुत करते हैं। देखो–कुटज।

गुण—अरलु त्वक् द्वारा निर्मित पुटपाक अग्निदीपक है। इसे मधु तथा मोचरस के साथ संयुक्त कर उपयोग करने से यह समस्त प्रकार के अतिसार को दूर करता है। शार्ङ्ग० म० ख० १ अ०।

अरलु मल aralu-mal–सिंगा० हरीतकी, हड़। (Terminalia chebula.) स० फा० इं०।

अरल्वादि क्वाथः aralvádi-kváthah–सं० पुं० अरलु, अतीस, मोथा, सोंठ, बेलगिरी, अनारदाना इनका क्वाथ प्रत्येक ज्वरों और अतिसार को शमन करता है। वृ० नि० र०।

अरवद् aravad–ता० } सतनी, सुदाब। (Ruta graveolens, *Linn.*)
अरवदा aravadá "

अरवा aravá–हिं० संज्ञा पुं० [सं० अ=नहीं +हिं० लावना=जलाना, भूनना] वह चावल जो कच्चे अर्थात् बिना उबाले या भूने धान से निकाला जाए।

अरवान aravān–पं० अयार, यज्ञ छाल–नैपा०।

अरवानह् aravánah–फ़ा० ख़ैरी सह् राई। एक जंगली बूटी है जो रात को पुष्पित होती है।

अरविन्दम् aravindam–सं० क्ली० }
अरविंद aravinda–हिं० संज्ञा पुं० }
(१) पद्म, कमल, उत्पल, पङ्कज। The lotus (Nymphœa nelumbo) प० मु०। रा० नि० व० १०। (२) ताम्र, ताम्बा। Copper (Cuprum) रा० नि० व० १३। (३) कोकनद, रक्तपद्म (Nelumbium speciosum)। रक्त कम्बल-बं०। (४) नीलोत्पल, नील कमल, नीलोफ़र। (Nymphœa stelata) रा० नि० व० १०। –पुं०। (५) सारस पक्षी। (The crane.) अम०।

अरविन्ददल प्रभम् aravinda-dala-prabham–सं० क्ली० ताम्र, ताम्बा। तामा-बं०। Copper (Cuprum) वै० निघ०।

अरविन्द बंधु aravinda-banddu–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य्य। (The sun).

अरविन्दासवः aravindásavah सं० पुं० कमल, खस, गम्भारी के फल, मजीठ, नीलोफर, इलायची, वला, जटामांसी, मोथा, अनन्तमूल, हड़, बहेड़ा, वच, आमला, कचूर, काला सारिवाँ, नीली, पटोल, पित्तपापड़ा, अर्जुन, महुआ, मुलेठी, मुरामांसी। प्रत्येक १–१ पल मुनक्का २० पल, धवपुष्प १६ प०, पानी २ द्रोण, मिश्री १०० प०, शहद ५० प०, सबको मिलाकर यथा विधि मिट्टी के बर्तन में संधान करके एक मास तक रक्खा रहने दें। यह बालकों के समस्त रोगों को दूर करता है। भा० वै० सं० भै० र०।

अरविन्दिनी aravindiní–सं० स्त्री० पद्मसमूह। र० मा०।

अरवी araví–हिं० स्त्री०, द० आलुकी, अरुई, घुइयाँ। कच्चु-बं०। A species of Arum (Arum colocasia.)

अरवी āaraví—अ० असराश। लु० क०। See–Asrásha.

अरवीनीम araví-níma–ते० माकर लिम्बू –मह० (Atalantia monophylla, Corr.) मेमो०।

अरवोरडानोट्टी arvoraḍá-noṭṭe–पुर्तगा० शेफालिका, हरसिंगार, परजाता। (Nyctanthes arbortristis.)

अरशद araṣhad–फ़ा० सोनामक्खी, सुवर्ण माक्षिक, तारामक्खी। Iron pyrites (Ferri sulphuretum.)

अरशमरम् arasha-maram-ता० अश्वत्थ, पीपल वृक्ष। (Ficus religiosa.) इं० मे० मे०।

अरशा arashá-एक हिन्दी बूटी है जिसकी उँचाई मनुष्य के बराबर होती है। शाखाएँ घास की तरह ग्रंथियुक्त होती है। पत्तियाँ भी तृण समान तथा पुष्प बनफ़्शा के सदृश किंतु, उससे भिन्न वर्ण का होता है। फल इलायची के समान त्रिपार्श्वाकार होता है। लु० क०।

अरस arasa-हपु(बु)षा, अर्दज, अभल, हाऊबेर। (Juniperus chinensis.). इं०हैं०गा०।

अरस aras ता० पीपलवृक्ष, अश्वत्थ। (Ficus religiosa.)। -हिं वि० [सं० अरस] नीरस, फीका। (Insipid).

अरस aras-काली सम्भाली, वाकस। (Justicia gendarusssa.) इं० हैं० गा०।

अरस āaras-अ० यर्बूअ, घूँस, घूइस। A bandicote rat (Mus giganteus).

अरसः arasah-सं० पुं०
अरसम् arasam-सं० क्ली० } (१) रस रहित। (२) विष रहित। अथर्व०। सू० ६। ६। का० ४। अथर्व०। सू० २२। २। का० ५।

अरसमरम् arasa-maram-ता० अश्वत्थ, पीपलवृक्ष। (Ficus religiosa).

अरसा arasá-ता० पीपलवृक्ष, अश्वत्थ। (Ficus religiosa.)

अरसाः arasáh-प्राण रहित। अथर्व०। सू० ३१। ३। का० २।

अरसास arasás-सं० निर्बल। अथर्व०। सू० ४। का० १०।

अरसिवणदह विणणु arasivaṇadah-vinaṇu-का० सहिजन, शोभांजन। (Moringa pterygosperma)

अरसी arasí-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अतसी] अलसी, तीसी। देखो-अतसी।

अरसीन arasína-कना० जहरीसोनतक-मँह०। (Allamanda cathartica, Linn.) फा० इं० २ भा०।

अरसीना arasíná-कना० हरिद्रा, हलदी। (Curcuma longa).

अरसीना उन्मत्त arasíná-unmatta-कना० पीला धतूरा, पीत धुस्तुर। (Yellow variety of Datura.)

अरसूसा arasúsá-यू० कनौचा भेद, कोई कोई जंगली गाजर को कहते हैं।

अरस्तन arastan-फ़ा० यूनानी संज्ञा आइरिस (Iris) इसीसे व्युत्पन्न है। देखो—पुष्कर-मूल। फा० इं० ३ भा०।

अरस्ता तालीस arastá-tális-अ०
अरस्तू arastú-अ० }

अरिस्टॉटल(Aristotle) अरस्तूका जन्म सन् ईस्वीसे ३८४ वर्ष पूर्व थ्रेस के इलाके स्तागीर नामक स्थानमें हुआ था। सतरह वर्षकी अवस्थामें यह हकीम अफ़लातून के शिक्षालय में सम्मिलित हुए और पूरे २० वर्ष तक दर्शनशास्त्र का अध्ययन किए और उनका पारंगत शिष्य बने। ४३ वर्ष की अवस्था में अरस्तू सिकन्दर आज़म के गुरु हुए। इनमें भौतिक वस्तुओं के अन्वेषणकी प्रबल इच्छा थी। इन्होंने अलेक्ज़ेण्डरिया में एक महाविद्यालय की स्थापनाकी जहाँ से सुप्रसिद्ध एवं प्रकांड विद्वान् उत्पन्न हुए। यह दर्शनशास्त्र के तो प्रमुख पंडित थे, परन्तु वैद्यकशास्त्र में इनका पद बुक़्रात (Hippocrate) से अत्यन्त निम्न कोटि का है। व्यवच्छेद व इन्द्रियव्यापारशास्त्र सम्बन्धी इनके कतिपय असत्य सिद्धान्तों का जालीनूस ने खंडन किया है।

इनके मुख्य मुख्य सिद्धांत निम्न थे—

(१) यह हृदय को प्राकृतिक ऊष्मा का उद्गम और रूह हैवानी का स्रोत मानते हैं। (२) इनके मतानुसार फुप्फुस हृदय को वायु प्रदान करता है। (३) धमनियाँ हृदय से रूह हैवानी को सम्पूर्ण शरीर में पहुँचाती हैं और (४) शिराएँ याकृदीय शोणित से सम्पूर्ण शरीर को आहार प्रदान करती हैं इत्यादि।

परन्तु आश्चर्य तो यह है कि आज दो सहस्र वर्ष पश्चात् भी उनके ये असत्य सिद्धांत यूनानी

कृतिका में सत्व माने जाते हैं। शेख़ भी अरस्तू के अनुयायी थे।

भिन्न भिन्न विषयों में अरस्तू के बहुसंख्यक ग्रंथ हैं। पर उनमें से लगभग १०० से कुछ ही अधिक प्रसिद्ध हैं, जिनका वर्णन हकीम बतलीमूस (Ptolemy) ने किया है। सन् ईस्वी से ३२२ वर्ष पूर्व ६२ वर्ष की अवस्था में निज जन्मभूमि में ही आपका स्वर्गवास हुआ।

अरस्तू arastú–फ़ा० छागलपाती, छलियालता -बं०। Swallow-wort (Asclepias tunicata, Roxb.) इं० हैं० गा०।

अरस्तून arastún–यू० एक प्रकार का तीक्ष्ण मद्य।

अरस्तूनास arastú-násá-यू० खटिका, खरि-(डि़)या मिट्टी, सेतखरी। (Chalk.)

अरस्तूर arastúra-यू० भंगबूटी, भाँग। (Cannabis indica.)

अरस्तूलोखिया arastúlokhiyá–यू० अरावंद, इसरमूल। (Aristolochia Indica.)

अरस्मीन arasmína–फ़ा० एक बूटी का फल है जिसे घास के स्थान में घोड़ों को बृंहित करने के लिए खिलाते हैं।

अरह äarah--अ० शशक, खरगोश, खरहा। (Hare.)

अरहज़ान arahazána–अ० हिन्दकूकी।

अरहट arahaṭ–हिं० संज्ञा पुं० [सं० अरघट्ट] अरघट्ट, रेंटा, रहँट। पानी का चरखा, एक यंत्र जिसमें तीन चक्कर या पहिए होते हैं। इन पहियों पर घड़ों की माला लगी होती है, जिससे कूएँ से पानी निकाला जाता है। "(An engine for raising water.)

अरहड़ arahaḍa–अव० आढ़की, तुवर, अरहर। A kind of pulse (Cytisus cajan.)

अरहदार्जून äarahadárjúna– खर्जूर वृक्ष। Phoenix dactylifera, Linn.(Dried fruits of-Dates.)

अरहन arahana–हिं० संज्ञा पुं० [सं० रन्धन] वह आटा वा बेसन जो तर्कारी साग आदि पकाते समय उसमें मिला दिया जाता है। रेहन।

अरहर arahara--हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० आढकी, प्रा० अड्ढकी] (१) आढ़की, रहर। (Cytisus cajan.) । (२) इसका बीज। तुवरी; तूअर। पर्या०--तुवरी। वीर्य्या। करवीरभुजा। वृत्तबीजा। पीतपुष्पा। काक्षीमृत्स्ना, मृतालका। सुराष्ट्र-जंभा।

अरहवी arahaví–हिं० स्त्री० आरी, उरि, उरु।

अरहा arahá--सं० आमला। (Phyllanthus emblica.)

अरहिरे arahire–का० नेनुआ, घोषालता।

अरहुन äarahún--अ० वर्ग नील, वस्मह्।(The leaf of Indigo plant.)

अरहूम äarahúm--अरजून।

अरहेड़ arahera--हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० हेड़] चौपायों का झुण्ड, लेहड़ी। --डिं।

अरा ará--हिं० संज्ञा पुं० दे० आरा।

अरा äa:á--अ० (१) शीत की तीव्रता, जाड़े का कड़ाका, शीताधिक्य।

--सिरि०। (२) तर्फ़ह्, गज़, भाऊ। (Tamarix gallica, Linn.)

अराक arák–यू० पीलू (जालवृक्ष), मिस्वाक। झाल–राजपु०। (Salvadora oleoides, *Dcne.*)

–हिं० संज्ञा पुं० [अ०] (१) एक देश जो अरब में है। (२) वहाँ का घोड़ा।

अराक़ू aráqú–यू० कटीला। (A tree.)

अराज़ äaráza–अ० देखो–इराज़। (Cautery.)

अराज़म् äarázam– }
अराज़म् äarázam } -अ० सिंह, शेर, व्याघ्र (A lion.)

अराजिः arájih–सं० स्त्री० धारीविहीन मांसपेशी। (Unstriped muscle.)

अराजिकेसरः aráji-kesarah–सं० पुं०

धारीविहीन मांसतन्तु। (Unstriped muscle fibre.)

अराड़ जाना arára jáná-हिं० क्रि० अ० (१) गर्भपात हो जाना, बच्चा फेंक देना। गर्भ का गिर जाना। लड़ाना।

नोट—इस शब्द का व्यवहार प्रायः पशुओं ही के लिए होता है, जैसे-गाय अराड़गई।

अराति aráti-सं० पु० शत्रु, दुश्मन।

अरातिम् arátim-सं० क्लो० जीवन को नाश करने वाले रोग। अथर्व०।

अरादीस äarádísa-अ० अस्थि-संधि, हड्डियों के जोड़। मुफ़ासिल उस्तख़्वाँ अ०। बोन जॉइण्ट (Bone joint.)-इं०।

अराब äarába-अ० सन, शण। (Crotalaria-juncea.)

अरायसुन्नील äaráyasunnila-अ० विरनीन, नीलोफ़र के समान एक बूटी है।

अरार äarára-अ० (१) उक़ह् वान, बाबूनह् गाव (Parthenium.)। (२) ज़अ़रूर। See-zaärúra.

अरारह् äaràrah-अ० वह स्त्री जो केवल लड़के प्रसव करे अर्थात् वह जिसके केवल लड़के उत्पन्न हों।

अरारा arárá-हिं० पुं० ददोड़ा, ददरा।

अरारि,-री arári,-rí-हिं० स्त्री० करंजिया।

संस्कृत पर्याय—उद्‌कीर्यः, षड्ग्रंथा, हस्तिवारुणी, मर्कटी, वायसी, करंजी और करभंजिका। थोर करंज-मह०।

विवरण—यह उदकीर्य नामक करंज का ही एक भेद है। इसके बड़े बड़े वृक्ष वन में होते हैं। पत्ते पाकर पत्र के समान गोल होते और ऊपर का भाग चमकदार होता है। फल भी नीले नीले झुमकदार लगते हैं; पत्तों में दुर्गन्ध आती है।

गुणधर्म—यह करंज वीर्यस्तम्भक, कड़वा, कसैला, पाक में चरपरा, उष्ण वीर्य और वमन, पित्त, बवासीर, कृमि, कोढ़ तथा प्रमेह को नष्ट करता है। भा० प्र० खं०।

अरारी arárí-हिं० स्त्री० करञ्ज। (Pongamia glabra)

अरारूट arárúta-हिं० संज्ञा पुं०, बं०, बम्ब० [अं० ऐरोरूट] (१) आरारोट। मेरण्टा (Maranta) -ले०। ऐरो रूट (Arrow root), वेस्ट इण्डियन ऐरोरूट (West Indian arrowroot) -इं०। विलायती तीखुर-हिं०। कुअमउ-ता०। कुवे-हिलु-कना०। कुवा-मल०। पेन-बवा-बर०। आरारूट-कों०।

आर्द्रक वा हरिद्रा वर्ग

(*N. O. Scitamineæ*)

नॉट ऑफ़िशल (*Not official.*)

उत्पत्ति-स्थान—यह एक भाँति का श्वेतसार है जो मेरण्टा अरुण्डीनेसिया (Maranta Arundinacia) नामक वनस्पति की जड़ से प्राप्त होता है। यह वनस्पति पूर्वी भारतीय द्वीप, बर्मियोडा और आज़ी में उत्पन्न होती है। अब पूर्वी बंगाल, संयुक्तप्रांत और मदरास में इसकी कृषि होती है।

वानस्पतिक-वर्णन व इतिहास—

एक पौधा जो अमेरिका से हिंदुस्तान में आया है। गरमी के दिनों में दो दो फुट की दूरी पर इसके कंद गाड़े जाते हैं। इसके लिए अच्छी दोमट और बलुई ज़मीन चाहिए। यह अगस्त से फूलने लगता है और जनवरी फरवरी में तैयार हो जाता है। जब इसके पत्ते झड़ने लगते हैं, तब यह पक्का समझा जाता है और इसको जब खोदली जाती है। खोदने पर भी इसकी जड़ रह जाती है इससे जहाँ यह एक बार लगाया गया, वहाँ से इसका उच्छिन्न करना कठिन होजाता है।

निर्माण-क्रम—इस वनस्पति की जड़को पानी में खूब धोकर और स्वच्छ करके जल में पीसते पुनः उसे मलकर छानते और एक ओर रख छोड़ते हैं। इस प्रकार अरारूट अधःक्षेपित हो जाता है।

लक्षण—यह एक हलका श्वेत वर्ण का चूर्ण है। जिसमें किसी प्रकार की अग्राह्य गंध वा स्वाद

नहीं होता। यह अमेरिका का तीखुर है। इसका रंग देशी तीखुर के रंग से सफ़ेद होता है।

टिप्पणी—इसके अतिरिक्त कच्युं मा के कतिपय अन्य भेदोंसे भी अरारूट प्रस्तुत होताहै। जिन्हें अरारूट हिन्दी कहना अधिक उपयुक्त प्रतीत होताहै। संस्कृतमें उनको तवक्षीरम् और हिन्दीमें तीखुर कहते हैं। विस्तार हेतु देखो—तवक्षीरम् (Curcuma Angustifolia).

प्रभाव तथा उपयोग—यह पोषणकर्त्ता और स्नेहजनक है। इसको प्रायः दुग्ध में पकाकर बालकों, निर्बल रोगियों, मुख्यतः आन्त्र वा मूत्र संस्थान विषयक रोगों के पश्चात् की निर्बलता में दिया करते हैं।

पाक-विधि—पहिले शीतल जल से इसकी लेई सी बना लें। तदनन्तर उसमें खौलता हुआ दुग्ध डाल कर उसका गाढ़ा सा लुआब बनालें। बाजार से जो अरारूट प्राप्त होता है उसमें प्रायः आलू के श्वेतसार का मिश्रण किया हुआ रहता है।

परीक्षा—सूक्ष्मदर्शक से इसकी भली भाँति परीक्षा की जा सकती है। उसमें देखने से आलू के श्वेतसार के कण अरारूट श्वेतसारीय कण से बड़े दीख पड़ते हैं। इं० मे० मे०। म० अ० डॉ०।

(२) अरारूट का आटा।

अरारूट करकमी arárúṭa-karkami–हिं० स्त्री० (Curcuma Arrowroot.) अरारूट भेद। देखो—अरारूट।

अरारूट हिन्दी arárúṭa-hindí–हिं० स्त्री० (Indian Arrowroot.) अरारूटभेद। देखो—अरारूट।

अरारोबा araroba–सं०, इं० गोआ पाउडर (Goa Powder.) अर्थात् गोआ चूर्ण, क्रूड क्राइसारोबीन (Crude Chrysarobin.) अर्थात् अपूर्ण वा कच्चा क्राइसारोबीन।

ऑफ़िशल *Official.*

(N. O. Leguminosæ.)

उत्पत्ति-स्थान—यह ओषधि ब्राज़ील देश के बाहिया नामक स्थान में उत्पन्न होती है।

इतिहास—पुर्तगाली भारत (गोआ) के देशी ईसाई इसको एक प्रकार के त्वग्रोग में जिसे मराठी भाषा में गजकरन कहते हैं, लगाया करते थे और उक्त ओषधि उनके गुप्त योगों में से थी। अस्तु, सर्व प्रथम यह बम्बई में १२) से ३०) प्रति टिन के भाव से जिसमें एक पौंड (अर्द्ध सेर) ओषधि होती थी, विक्रय हेतु अकस्मात् आया करती थी और दद्रुघ्न चूर्ण (Ringworm Powder), गोआ चूर्ण (Goa Powder), ब्राज़ील चूर्ण (Brazil Powder) प्रभृति नामों से विख्यात थी। माननीय डॉ० एल० केम्प महोदय ने सर्व प्रथम सन् १८६४ ई० में इसकी ओर ध्यान दी। तदनन्तर क्रमशः अन्य डॉक्टरों ने इस ओर ध्यान दिया।

भारतवर्ष में इसके प्रथम प्रवेश की ठीक तिथि अज्ञात है। नई दुनियाँ के अन्य पैदावारों के समान सम्भवतः १८ वीं शताब्दि के पश्चातकाल में ईसाई यात्री इसे यहाँ ले आए। केम्प महाशय ने इसकी परीक्षा की और वे इस परिणाम पर पहुँचे कि इसमें माननीय पेलोज़ (Pelouze) तथा फ्रेमी (Fremy) वर्णित ऑर्केला वीड (Orchella weed) में होने वाले सत्व के समान ही एक प्रकार का सत्व विद्यमान है।

ऐटफ़ील्ड (Attfield) ने सन् १८७५ ई० में इसकी ओर सर्वांगपूर्ण परीक्षा की और क्राइसारोबीन (Chrysarobin) नामक पदार्थ जो उनकी कल्पना में मुख्यकर क्राइसोफेनिक एसिड (Chrysophanic Acid) था, पाया। उसी वर्ष ब्राज़ील डॉक्टर जे० एफ० डा सिल्वा लाइमा ने सूचित की भारतवर्ष में जो पदार्थ गोआपाउडर के नाम से प्रख्यात है, वह सम्भवतः ब्राज़ील देश निवासियों का अरारोबा या अरारीबा (धूसर वर्ण का चूर्ण) ही है जिसे पुर्तगाल निवासी उक्त प्रान्त में होने के कारण पॉडी बाहिया (Pode Bahia) या बाहिया पाउडर कहते थे। उक्त डॉक्टर महोदय ने यह भी बतलाया कि वह एक बब्बूर

जातीय वृक्ष से प्राप्त होता है और ब्राज़ील में चिरकाल से कतिपय त्वग्रोगों में प्रयुक्त होता रहा है। इसके कुछ ही समय पहिले कलकत्ता के डॉक्टर फेयरर ने सिरका या नीबू स्वरस संयुक्त गोआ पाउडर कल्क के प्राक्कथित औषधीय उपयोग विषयक गुण की ओर चिकित्सकों का ध्यान आकृष्ट किया। ऐसा प्रगट होता है कि उनके लेख ने डॉ० डा० सिल्वा लाइमा महाशय का भी ध्यान उक्त विषय की ओर आकृष्ट किया।

माननीय ई० एम० होम्स ने बतलाया कि वह काष्ठ जो गोआ पाउडर से प्राप्त होता है वह (Cœsalpinia echinata, *Lam.*) के बहुत समान है; परन्तु जे० एल० मेकमिलन ने बतलाया कि उक्त काष्ठ से जल रञ्जित होजाता है और यह बात अरारोबा में नहीं है।

सन् १८७८ ई० में सी० लीबरमैन तथा पी० सीडलर ने प्रगट किया कि क्राइसारोबीन (क^{३०} उद^{२४} ऊ^{७}) अभीतक एक अज्ञात यौगिक है तथा ऐटफील्ड द्वारा निवेदित नाम को ही आपने स्थिर रक्खा।

सन् १८७९ ई०में अरारोबा का प्राप्ति-स्थान एण्डीरा अरारोबा (Andira Araroba, *Aguiar.*) स्थिर किया गया। यह बाहिया के आर्द्र वनों में सामान्य रूप से होने वाला एक बृहत् वृक्ष है जिसे वहाँ के लोग ऐञ्जेलीम अमरगोसो (Angelim amargoso) कहते हैं। अरारोबा तने के छिद्रयुक्त खोखले भागों में रहता है। ये तने में चौड़ाई (व्यास) की रुख आर-पार तक रहते और सम्पूर्ण तने के बीच प्रसरित होते हैं। प्राप्ति-विधि—वृक्ष को काटकर तथा तने को चीर फाड़ कर खोखलों से अरारोबा चूर्ण को खुरच लेते हैं। इसे लकड़ी के टुकड़ों या रेशों आदि से स्वच्छ करके तथा शुष्क कर चूर्ण कर लेते हैं।

लक्षण—यह एक खुरदरा चूर्ण अथवा सूक्ष्म विषम कण है जो आरम्भ में हलका पीतवर्ण का, परन्तु प्रकाश एवं नमी में खुला रहने पर साधारणतः गम्भीर वर्ण से मन्द पीत, पीत-धूसर या अम्बरी-धूसर अथवा गम्भीर-बैंगनी वर्ण का हो जाता है। स्वाद—तिक्त। (डाइमॉक)

यह क्राइसारोबीन के निर्माण में प्रयुक्त होता है। यदि इसको उष्ण क्लोरोफॉर्म में मिलाया जाए तो क्लोरोफॉर्म द्वारा वाष्प उड़ जानेके पश्चात् उक्त चूर्ण में से न्यूनातिन्यून ४०$^0/_0$ क्राइसारोबीन प्राप्त होना चाहिए।

क्राइसारोबीन (Chrysarobin)-इं०।
क्राईसारोबीनम् Chrysarobinnm-ले०।

निर्माण-विधि—अरारोबा (गोआ पाउडर) को उष्ण क्लोरोफॉर्म वा उष्णबेञ्जीन के साथ एक्सट्रैक्ट करके शुष्क होने तक वाष्पीभवन क्रिया कर इसे चूर्ण कर लें।

रासायनिक संगठन (या संयोगी अवयव)

इसमें (१) क्राइसारोबीन (क^{१५}उद^{१२}उ^{३}) जिसको रूहीईन या क्राइसोफ्रीन भी कहते हैं। (२) क्राइसोफेनिक एसिड, अवस्था और दशानुसार यह न्यूनाधिक होता है; ओषजनीकरण क्रिया द्वारा अधिक क्राइसोफेनिक एसिड प्राप्त होता है।

एलेन (Allen) के मतानुसार क्राइसोफेनिक एसिड, एसिड और क्राइसारोबीन का एक अनिश्चित मिश्रण है। इसमें पिकरिक एसिड तथा अन्य पीत रञ्जक पदार्थ का मिश्रण किया जाता है।

नोट—अरारोबा या गोआपाउडर से ५४ से ८० प्रतिशत और औसतन् ७१ प्रतिशत् क्राइसारोबीन प्राप्त किया जाता है।

लक्षण—क्राइसारोबीन एक स्फटिकवत् पीत वर्ण का चूर्ण है जो गंधरहित और जल में अविलेय होने के कारण स्वाद रहित होता है।

घुलनशीलता—यह जल में लगभग अविलेय, मद्यसारमें कुछ कुछ विलेय तथा एब्सोल्यूट-अलकोहल, ईथर, कोलोडियन तथा क्लोरोफॉर्म में पूर्णतः विलेय होता है।

३२३°६ ° फारनहाइटके उत्ताप पर यह पिघल जाता है और आंशिक ऊर्ध्वपातित भी होता है।

घन गंधकाम्ल में यह घुल जाता है तथा घोल पीतवर्ण का होता है। अधिक जलमिश्रित पोटास-घोल में यह लगभग अविलेय होता है। इसके विपरीत क्राइसोफेनिक एसिड घन गंधकाम्ल में घुल जाता है तथा अधिक जलमिश्रित पोटास घोल में भी घुल जाता है तथा घोल का रंग लाल हो जाता है।

परीक्षा—यदि क्राइसारोबीन को २००० भाग जल में उबाला जाए तो यह पूर्णतः नहीं घुलता और छाना हुआ पदार्थ सुर्खीमायल धूसर वर्ण का, स्वादरहित टेस्टपेपर (न्युट्रल) तथा लौह-हरिद् से अप्रभावित रहता है। क्राइसारोबीन १५० भाग उष्ण मद्यसार में पूर्णतः विलेय होता है।

व्यापार—अरारोबा अधिक परिमाण में भारतवर्ष में आता है और क्राइसारोबीन, अरारोबीन तथा गोआपाउडर नाम से विक्रीत होता है। मात्रा—$\frac{1}{6}$ से $\frac{1}{2}$ ग्रेन, (पा० वी० एम०)।

कार्य—त्वग्रोगों में कीटघ्न (Antiparasitic) है।

ऑफिशल योग

(*Official preparations.*)

औषध-निर्माण—क्राइसारोबीन प्रलेप। अङ्गुएण्टम् क्राइसारोबीनाई (Unguentum Chrysarobini)-ले०। क्राइसारोबीन ऑइण्टमेण्ट (Chrysarobin Ointment.)-इं०। मर्हम क्राइसारोबीन-उ०।

निर्माण-विधि—क्राइसारोबीन २० ग्रेन, बेंझोएटेड लार्ड वा सॉफ्टपैराफीन ४८० ग्रेन। लार्ड को पिघलाकर उसमें क्राइसारोबीन सम्मिलित करलें।

प्रभाव वा उपयोग—चम्बल वा विचर्चिका (Psoriasis) के लिए यह पराश्रयी कीटघ्न का उत्तेजक प्रयोग है।

नॉट ऑफिशल योग और पेटेन्ट औषधें

(*Not official preparations.*)

(१) अङ्गुएण्टम् क्राईसारोबीनी कम्पॉज़िटम् (Unguentum Chrysarobini compositum)-ले०। कम्पाउण्ड ऑइंटमेंट ऑफ क्राईसारोबीन (Compound ointment of Chrysarobin)-इं०। मिश्रित क्राईसारोबीन प्रलेप-हिं०। मर्हम क्राईसारोबीन मुरक्कब, मुरक्कब मर्हम क्राईसारोबीन-उ०।

निर्माण-विधि—क्राईसारोबीन ५ भाग, सैलीसिलिक एसिड २ भाग, इक्थिऑल ५ भाग, वैसेलीन ८८ भाग सबको परस्पर योजित कर मरहम बनालें।

उपयोग—चम्बल वा विचर्चिका (Psoriasis) के लिए लाभप्रद है।

(२) पिग्मेण्टम् क्राईसारोबीनी (Pigmentum Chrysarobini)-ले०। तिलाए क्राइसारोबीन-फा०।

निर्माण-विधि—क्राईसारोबीन १ भाग, क्लोरोफॉर्म १० भाग, गट्टापार्चा टिश्यू १ भाग दोनों औषधों को क्लोरोफॉर्म में हल करलें (इससे कपड़े पर चिह्न नहीं पड़ता)।

उपयोग—चम्बल (Psoriasis) पर ब्रुश के द्वारा १० दिवस पर्यन्त प्रति दिन दो बार लगाते रहने से, बशर्ते कि उस जगह पर पानी न लगने पाए, रोग निवृत्ति हो जाती है। (एक्सट्रा फार्माकोपिया)

(३) पिग्मेण्टम् क्राइसारोबीनी एट पाइरोगैलोल (Pigmentum Chrysarobini et Pyrogallol)-ले०। तिलाए क्राईसारोबीन व पाइरोगैलोल-अ०।

निर्माण-विधि—क्राईसारोबीन १ भाग, पाइरोगैलोल १ भाग, ईथर और क्लोरोफॉर्म में प्रत्येक १० भाग, क्लोडीन १२० भाग, प्रथम दो औषधों को ईथर और क्लोरोफॉर्ममें घोलकर उसमें क्लोडीन सम्मिलित करें।

उपयोग—चम्बल (Psoriasis) और दद्रु पर उसे धोकर प्रति तीसरे दिन इसे लगाने से बहुत लाभ होता है। (एक्सट्रा फार्माकोपिया)

(४) सपॉज़िटोरियम् क्राईसारोबीनी (Su-

ppositorium Chrysarobini)-ले०। क्राईसारोबीन वर्तिका-हिं०। शियाफ़ क्राईसारोबीन।

निर्माण-विधि—क्राईसारोबीन $1\frac{1}{4}$ ग्रेन आयोडोफॉर्म $\frac{3}{10}$ ग्रेन, बिलाडोना एक्सट्रैक्ट $\frac{1}{7}$ ग्रेन, ग्लीसरीन आवश्यकतानुसार जिससे कि उचित वर्ति प्रस्तुत हो जाए और काकाउबटर ३० ग्रेन पर्यन्त।

उपयोग-इस वर्ति के प्रयोग से अर्श में बहुत लाभ होता है। (एक्स्ट्रा फार्माकोपिया)

(५) एन्थ्रारोबीन (Anthrarobin) इसका प्रलेप रूप से क्राईसारोबीन के स्थान में प्रयोग करते हैं।

(६) लेनीरोबीन (Lenirobin)-यह भी क्राइसारोबीन का एक यौगिक है जिसको पुरातन नार फ़ार्सी या ज्वलनदार विस्फोटक (Chronic Eczema) और पुरातन चम्बल (विचर्चिका) पर लगाते हैं।

(७) यूरोबीन (Eurobin)-यह एक धूसर वर्ण का चूर्ण है जिसको क्राइसारोबीन के स्थान में बर्तते हैं।

उपयोग—इसका २ या ३ प्रतिशत का घोल चम्बल (Psoriasis) और दद्रु (Ringworm) के लिए लाभदायक है। इससे न तो त्वचा पर ख़राश (क्षोभ) होती है और न कपड़े पर चिह्न पड़ते हैं।

क्राईसारोबीन की फार्माकालोजी अर्थात् औषधीय प्रभाव

बहिः प्रभाव—त्वचा पर क्राईसारोबीन का सशक्त क्षोभक (Powerful irritant) प्रभाव होता है। अस्तु, इसके प्रयोग से त्वचा पर ददोड़े निकल आते हैं, मुख्यतः स्वस्थ त्वचा पर; क्योंकि विकारी त्वचा पर इससे उतना क्षोभ नहीं उत्पन्न होता। वानस्पत्य जीवाणु विषयक त्वग्रोग को उक्त औषध नष्ट करती है। अस्तु, यह सशक्त पराश्रयी कीटघ्न भी है। इसका स्थानिक वा सार्वाङ्गिक दोनों प्रभाव होता है। यह त्वचा द्वारा शोषित होजाता है और इससे त्वचा पर पीताभायुक्त धूसरवर्ण के चिह्न पड़ जाते हैं। वस्त्र पर भी इससे उसी प्रकार के चिह्न पड़ जाते हैं।

अन्तः प्रभाव—अति न्यून मात्रा ($\frac{1}{8}$ ग्रेन) में देने से भी यह आमाशय वा आन्त्र को अत्यन्त क्षुभित करता है; जिससे क्षुधा कम हो जाती है, वमन आते हैं और पेट में एँठन होकर मल आते हैं अर्थात् प्रवाहिका के से लक्षण उपस्थित होते हैं। अस्तु उक्त, औषध सशक्त आमाशय वा आन्त्र क्षोभक (Powerful gastro-intestinal irritant) है।

विसर्जन—यह किसी भाँति त्वचा द्वारा, किन्तु अधिकतर वृक्क द्वारा शरीर से विसर्जित होता है और इससे मूत्र का रंग पील व नीलगूँ हो जाता है।

क्राइसारोबीन के उपयोग अर्थात् थेराप्युटिक्स

बहिः उपयोग—पराश्रयी कीटघ्न रूप से इसको दद्रु (Ringworm) तथा कई अन्य पुरातन रूक्ष त्वग्रोगों जैसे चम्बल अर्थात् विचर्चिका (Psoriasis), ज्वलनशील फुन्सियाँ (Eczema) यौवनपिड़िकाओं (Acne) पर लगाते हैं। यद्यपि यह बात प्रमाणित करना कि जीवाणु ही उन रोगों के उत्पादक कारण हैं, अभी शेष रह जाता है; तथापि विचर्चिका (Psoriasis) रोग में इसका मुख्य उपयोग होता है। अस्तु १ आउंस वैसेलीन को तप्त कर $\frac{1}{3}$ से $\frac{1}{2}$ वा १ ड्राम क्राईसारोबीन मिलाकर ऐसा प्रलेप दिन में दो समय लगाने से उक्त रोग शीघ्र दूर हो जाता है। और इसी भाँति उपयोग करने से यह त्वचा द्वारा शोषित होकर विचर्चिका (Psoriasis) के ऐसे धब्बों को भी दूर कर देता है, कि जिनमें इसका बहिःप्रयोग नहीं किया जाता। इससे प्रायः आस पास की स्वस्थ त्वचा पर व्यथापूर्ण विसर्पीय प्रदाह होता वा बैंगनी धब्बे पड़ जाते हैं, जिससे किसी किसी रोग में इसका उपयोग नहीं किया जा सकता। विस्तीर्ण अनुभव

के पश्चात् लेखक (Sir. W. whitla) को इस बात से सन्तुष्टि हुई, कि यदि उक्त प्रलेप को केवल रोग स्थल तक ही सीमित रक्खा जाए एवं स्वस्थ त्वचा को उसका स्पर्श न होने दिया जाए तो इसको आवश्यकता हीन हो। आपका विश्वास है कि यह छोटी सी बात इसकी चिकित्सा की सफलता का गूढ़ तत्व है।

डॉक्टर फॉक्स ने क्राइसारोबीन को जल के साथ पीस कर इसका कल्क प्रस्तुत कर इसे धब्बों पर लगा ऊपर कोलोडियन से आवरित करने की सम्मति दी है। (Tramaticine) अर्थात् गट्टापर्चा इससे भी श्रेष्ठतर, सिद्ध होगा। ब्रूक प्रलेप वर्तिकाएँ Brookes' salve sticks उससे भी उत्तम होती हैं। परन्तु पूर्वोक्त सम्पूर्ण विधियों में से सर्वोत्तम विधि लेखक ह्विटलो की राय में धब्बे को औषध के तीव्र कठिन प्रलेप या कल्क द्वारा आवरित कर रखना और उसके सिरे पर रबर प्रस्तर का एक बड़ा टुकड़ा स्थापित करना है।

विचर्चिका (Psoriasis) रोगसे पीड़ित प्राणी के शरीर की एक ओर के विकारी स्थल पर प्रलेप के मर्दन से उसका स्थानिक प्रभाव देखा जा सकता है। सप्ताह अथवा दस दिवस में उक्त ओर की त्वचा के सुधार का निश्चित चिह्न दिखाई देता है। इसकी दूसरी ओर की त्वचा पर भी यह इससे कम स्पष्ट नहीं होता। और उक्त औषध को यथोक्त विधि द्वारा उपयोग करने से विकृत धब्बे लुप्तप्राय होने लगते हैं; तब उस ओर की त्वचा भी जिस ओर औषध नहीं लगाई गई है। परिणामस्वरूप सुधार के चिह्न प्रगट करने लगती है। लेखक ने उक्त औषध को निरन्तर उस स्थल पर लगाने से जिसपर सर्व प्रथम औषध लगाई गई हो शरीर के सम्पूर्ण पृष्ठतल को रोग मुक्त होते हुए पाया। सम्भवतः ऐसा औषध के शरीर में शोषित होजाने और विकारी क्षेत्र तक पहुँच जाने के कारण होता है। (मे० मे० ह्विट्लॉ)

"विस्फोटक, विचर्चिका (Psoriasis) एवं दद्रु प्रभृति त्वग्रोगों में शीघ्र एवं निश्चय प्रभावकारी जो औषध मुझे मालूम हुई है वह गोआ पाउडर तथा नीबू स्वरस वा सिरका है। इनको दिन में २ या ३ बार निरन्तर लगाने से पूर्ण लाभ होता है। प्रलेप-विधि—थोड़ी सी दवा को सिरका या नीबू के रस में घोलकर जब वह मलाई की भाँति होजाए तब उसे विस्फोटक पर कुछ दूर तक प्रलेपित कर दें। (डाइमॉक)

अन्तःप्रयोग—क्राइसारोबीन के अन्तःप्रयोग से विचर्चिका (Psoriasis), ज्वलनशील विस्फोटक (Eczema) तथा यौवनपीड़िका अर्थात् मुँहासा प्रभृति में लाभ होता है; परंतु अति न्यून मात्रा (1/6 ग्रेन) में भी इससे प्रायः उदर में ऐंठन, रेचन व वमन होते हैं, क्षुधा कम हो जाती है और व्यग्रता प्रतीत होती है। अस्तु, इसका अन्तःप्रयोग न करना चाहिए।

योग-निर्माण विषयक आदेश—क्राइसारोबीन को मुख मण्डल पर नहीं लगाना चाहिए; क्योंकि इसके क्षोभ से नेत्राभिष्यन्द होने का भय रहता है। परन्तु शिर पर १५ ग्रेन प्रति आउंस वाला प्रलेप लगा सकते हैं।

क्राईसारोबीनको एकही समय शरीर के अधिक भाग पर नहीं लगाना चाहिए; क्योंकि इसके शोषित हो जाने से बुरे लक्षण उपस्थित होने का भय रहता है। अस्तु, यदि शरीर पर बहुत विस्तीर्ण दद्रु हो तो उसके थोड़े थोड़े भाग पर दवा लगाते रहें। जब एक ओर से वह अच्छा हो जाए तब दूसरी ओर दवा लगाएँ।

वस्त्र पर जो क्राइसारोबीन प्रलेप का चिह्न पड़ जाता है वह वानस्पतिकाम्ल, पोटाश या क्लोरिनेटेड लाइम के हलके घोल से दूर हो जाता है। अथवा उस पर प्रथम बेन्ज़ीन लगाकर उसकी चिकनाई को दूर करें और फिर उस पर क्लोरिनेटेड लाइम का घोल लगाएँ। कभी कभी किञ्चित् कॉस्टिक सोडा का घोल भी लगाना पड़ता है।

अरालः arálah--सं० पुं०
अराल arála--हिं० संज्ञा पुं० } (१) धूप,

धुना, राल, सर्जरस–हिं०। धुना–बं०। राल –मह०। (Resin)। (२) शाल वृक्ष (A saltree)। (३) मत्तहस्ति (An intoxicated elephant)। मे०। वि० कुटिल। टेढ़ा।

अरालिपसीई araliaceoe–लै०, तागमारी वर्ग।

आरावह āarávah–अ० मादा टिड्डी। (A female locust.)

अराह aráh–मर तगी, मस्तकी। (Mastiche.)

अरिः arih सं० स्त्री० अरि नामक खदिर, खदिर विशेष, कत्था। खदिर विशेष–बं० अरि–मह०। शीगुरि–कं०। (Catechu.) पर्याय–सन्दानिका, दाली, खदिरपत्रिका। गुण–कषेला, कटुक, तिक्त और रक्तपित्तनाशक है। रा० नि० व० ८। देखो–खदिर।

अरि ari हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) रिपु, शत्रु (An enemy.)। (२) विट् खदिर। दुर्गन्ध खैर। अरिमेद। (Acacia Farnesiana, *Willd.*) (३) चक्र। –मल० (४) चावल। Rice-Seeds or grains without husk (Coryza sativa, Linn.) स० फा० इं०।

अरिआलु areálu of rheede–पीपल, अश्वत्थ। (Ficus religiosa.) फा० इं० ३ भा०।

अरि-इकन ari-ikan–मल० मछली का सरेस, सिरेशमे माही। Icthyocolla (Isingglass)

अरिक arik–अ० व्रण का ठीक होना, पूरित होना। इन्दिमाल और तकर्रुश के भेद के लिए देखो–हम्स।

अरिङ्ग aringa–राजपु० श्वेत बबूर वृक्ष, सफ़ेद कीकर। (Acacia leucophlœa, *Willd.*)

अरिचारायम् aricharáyam–मल० मद्य, चावल की शराब या कांजी। (Liquor of rice) स० फा० इं०।

अरिजन arijana–हिं० संज्ञा पुं० एक निष्क्रिय वायव्य विशेष। आरगन (Argon)–इं०।

अरिञ्ज arinja–हिं० संज्ञा० पुं० [देश०] (Acacia leucophlœa, Willd.) एक प्रकार का बबूल। यह पंजाब, राजपूताने, मध्य और दक्षिण भारत तथा बरमा में पाया जाता है। इसका छिलका रेशेदार होता है और इससे मछली पकड़ने का जाल बनाया जाता है। इससे एक प्रकार की गोंद भी निकलती है जो पानी में घोली जाने पर पीला रंग पैदा करती है। यह अमृतसरी गोंद कहलाती है। इसे बबूल की गोंद के साथ मिलाकर भी बेचते हैं। पेड़ की छाल को पीसकर गरीब लोग अकाल में बाजरे के आटे के साथ खाने के लिए मिलाते हैं। इसमें एक प्रकार का नशा भी होता है और यह मद्य में भी मिलाई जाती है। इसीलिए अरंज को शराब का कीकर कहते हैं। सफ़ेद बबूल। अरिङ्ग। श्वेत बबूर वृक्ष।

अरितमञ्जरी arita-manjarí–सं० स्त्री० कुप्पली, हरितमञ्जरी। (Clerodendron Inerme.)

अरितारम aritáram–ता० } हरि(कु)ताल
अरिदला aridalá–कना० } Orpiment
अरिन्ताल arintála–सं० } (Trisulphuret of Arsenic.)

अरिपूरिमः aripúrimah–सं० पुं० विट्खदिर, अरिमेदः, दुर्गन्धि खैर, गुहकीकर। गुये बबूला बं०। गंधी हिंवर–मह०। (Acacia Farnesiana.) वै० निघ०।

अरिप्र aripra–त्रि० दुःख रहित। निष्पाप। अथर्व०। सू० ५। ६४। का० १०।

अरिमः arimah–सं० पुं० विट्खदिर, अरिमेदः, गुहकीकर। (Acacia Farnesiana.) रत्ना०; वैद्य० मुसरो०–चि०।

अरिमत्स्य arimatsya–हिं० पुं० मत्स्य विशेष। (Arlus arius, *Ham. & Buch.*)

गुण—इसका मांस कठिनता से पचने वाला, पिच्छिल, हृदयोत्तेजक, स्मृतिवर्धक तथा वात-व कफवर्धक है। (इं० ड्र० इं०)

अरिमर्द्दः arimarddah–सं० पुं० कासमर्द क्षुप, कसौंदी। काल काशन्दा–बं०। कासविंदा –मह०। (Cassia Sophora.) रा० नि० व० ४।

गुण—इसका पत्र रुचिकारक, बलकारक, विष, कास तथा रक्तनाशक है और मधुर, वात कफनाशक, पाचक, कण्ठशोधक तथा विशेष रूप से कासहर, विषघ्न, धारक और हलका है। भा० पू० १ भा०।

अरिमाशत arimáshata–सं० पुं० खदिर, खैर वृक्ष। Catechu tree (Acacia catechu, *Witld.*)

अरिमेदः,-कः arimedah,-kah–सं० पुं० }
अरिमेद arimeda–हिं० संज्ञा पुं० }
(१) एक वृक्ष। (A kind of tree.) (२) एक बदबूदार कीड़ा। गँधिया। गंधी। (A green bug.)। (३) विट्खदिर। गूह बबूल, गन्धाबुल, दुर्गन्ध खैर, विलायती बबूल (कीकर)–हिं०। गू–कीकर–द०। विटः, हरिमेदः, आसमदः, इरिमेदः क्रिमिशालयः, मरुद्रुमः कालस्कंधः (रा० नि०), काम्बोजी, मरुजः, बहुसारः, गोरटः, भ्रमराज, पत्रतरु, सारखदिरः, महासारः, क्षुद्रखदिरः, दुष्खदिरः (रा० नि०), इरिमेदः, रिमेदः, गोधास्कन्धः, अरिमेदकः, अहिमारः, पूतिमेदः, अहिमेदः, विट्खदिरः–सं०। गू–बाबूल, गुया-बाबला, विट् खयेर, गुयेबाबला, दुर्गंध खदिर, काँटानागेश्वर–बं०। अकेशिया फार्नेशियाना या माइमोसा फार्नेसिएना (Acacia farnesiana, *Willd.*, syn. mimosa farnesiana, *Linn.*)–ले०। पियू वेलम्, हियू-वेल, वेदवला, पिक्कल-विल-ता०। पियि-तुम्म, कम्पु-तुम्म, नाग–तुम्म-ते०। पी-वेलम्, करी-वीलम्–मल०। करी-जाली, करयंवेलु, जाली –कना०। गु-बावल–गु०। गन्धी-हिम्बर, गुइ बबल-मह०। मन्लूँ–मैं-बर्मी०। कुए–बबल –सिंध०। कुसरी-फाड़-कों०।

शिम्बी वर्ग

(*N. O. Leguminosae*)

उत्पत्ति-स्थान—सम्पूर्ण भारतवर्ष, हिमालय से लेकर लंका पर्यन्त।

संज्ञा-निर्णायक-नोट—अरिमेदकी ताजी छाल और काष्ठ की गंध मानुषी विष्ठा के तद्वत् होती है। अस्तु, उपर्युक्त प्रायः इसके सभी पर्याय विट्–गंधि बोधक हैं। तेलगु नाम कस्तूरि-तुम्म जो किसी किसी ग्रंथ में इसके परियाय स्वरूप लिखा गया है और जिसका अर्थ कस्तूरी–गंध बबूर होता है इसके लिए प्रयुक्त नहीं किया जाना चाहिए। कारण स्पष्ट है। मेसर्स नेचरल प्रोडक्शञ्ज ऑफ़ बर्मा नामक ग्रंथ में इसके दो पर्याय और लिखे गए हैं। यथा–(१) नानूलून्-खैन् जिसका अर्थ उत्तम गंध और (२) जिसका अर्थ दुःगंध है। इनमें से प्रथम शब्द का इसका पर्याय होना संदेहपूर्ण है। कारण वही है जैसा तेलगु शब्द कस्तूरी-तुम्म के लिए वर्णन किया है। इसीकारण इन संज्ञाओं को उपर्युक्त तालिका में नहीं लिखा गया।

दक्खिनी संज्ञा गू–कीकर कभी कभी पार्किनसोनिया एक्युलिएटा (Parkinsonia aculeata) के लिए भी प्रयुक्त होता है; परंतु इसको जंगली कीकर कहना अधिक उपयुक्त होगा।

वानस्पतिक-वर्णन—इसके वृक्ष सर्वथा (बबूल, कीकर) वृक्ष के समान होते हैं, केवल भेद यह है कि इसके काँटे छोटे होते हैं और इसके पत्र आदिसे विष्ठावत् गंध आती है। (पूर्ण विवेचन हेतु देखो–बब्बूर वा खदिर।)

इससे एक प्रकारका निर्यास निर्गत होता हैजो गोलाकार अश्रुरूप में प्राप्त होता है। इनमें क्रमशः पांडु, पीत तथा गंभीर रक्ताभधूसरवर्णों की श्रेणियाँ होती हैं। डेकन में बम्बई और पूना के आस पास जो गोंद एकत्रित की जाती है वह अल्प विलेय होती है।

रासायनिक-संगठन—इसके पुष्प द्वारा प्रस्तुत तैलमें बेञ्जएल्डीहाइड,सैलिसिलिक एसिड, मीथिल सैलीसिलेट, बेञ्जिल एलकोहल, अन-एल्डीहाइड प्रभृति होते हैं।

प्रयोगांश—कांड तथा मूलवल्कल, पत्र, निर्यास, फली और पुष्प।

औषध-निर्माण—क्वाथ, लुआब, तैल (अरिमेदादि तैल–च॰ द॰)।

मात्रा—वल्कल, काष्ठ तथा पुष्प चूर्ण १–४ आना भर। सार (खैर)–½–२ आना भर। काष्ठ तथा वल्कल क्वाथ–५–१० तो॰।

गुणधर्म तथा उपयोग

आयुर्वेदीय मतानुसार—

अरिमेद कषैला, उष्ण, तिक्त, मलघ्न है और शोफ (सूजन), अतिसार, कास तथा विसर्प का नाश करनेवाला है।

विट्खदिर कटु, उष्ण, तिक्त, रक्त के दोष तथा व्रणदोष नाशक है तथा कण्डु (खुजली), विष, विसर्प नाशक और ज्वर, कुष्ठ, उन्माद तथा भूत-बाधा हरण करने वाला है। रा॰ नि॰ व॰ ८।

मुख एवं दन्त के रोग नाश करनेवाला तथा कण्डू, (खुजली), विष, श्लेष्म, कृमि, कुष्ठ और व्रण नाशक है। मद॰ व॰ ५।

कसैला, उष्ण, तिक्त, [illegible] है तथा मुख रोग और दन्त रोग नाशक, रक्तदोष, रुधिर विकार, कण्डू (खुजली), कृमि, कफ, शोथ, (सूजन), अतिसार, कास, विसर्प, विष, कुष्ठ और व्रण का नाश करने वाला है। भा॰ पू॰ १ भा॰ वटादि। भैष॰ मुखरो॰ चि॰। च॰ सू॰ ४ अ॰।

नव्यमत

प्रभाव—संग्राही (संकोचक), स्निग्धताकारक और परिवर्त्तक। वल्कल संकोचक अर्थात् ग्राही और पुष्प उत्तेजक है।

उपयोग—इसकी छाल का काढ़ा (२० में १) संकोचक मुखधावन है। इस हेतु मसूढ़ों से रक्त आने प्रभृति में यह लाभदायक है। इसकी गोंद अरबी बब्बूर-निर्यास (Gum arabic) की उत्तम प्रतिनिधि है; परन्तु जल में डालने से यह सरेशवत् हो जाती है। इसकी कोमल पत्तियों को किञ्चित् जल में पीसकर पूयमेह अर्थात् सूजाक रोगी को पिलाते हैं। इसके पुष्प को स्रवण करने पर इससे एक प्रकार का सुस्वादु इतर प्राप्त होता है जो परिवर्तक प्रभाव के लिए प्रसिद्ध है। इसमें एक प्रकार का तैल होता है। शुक्रमेह में कामोद्दीपक औषधों के सहायक रूप से इसका उपयोग करते हैं।

अरिमेदाद्यतैलम् arimedádyatailam–**सं॰** क्लीं॰ यह तैल मुख रोगमें हितकारक है। **पाठ**–मूर्च्छित तिल तैल ८ श॰, क्वाथार्थ विट्खदिर (गूह बबुल) १२॥ श॰, जल ६४ श॰ में पकाएँ, जब १६ श॰ शेष रहे तब इसमें मजीठ का २ तो॰ कल्क डालकर विधिवत् तैल सिद्ध कर कार्य में लाएँ। च॰ द॰ मुख रो॰ चि॰।

अरिय वेप्प ariya-veppa–**मल॰** नीम, निम्ब। (Azadirachta Indica, *Juss.*) स॰ फा॰ इं॰।

अरिया पोरियम् ariyá poriyam–**मला॰** एण्टिडेस्मा बुनियास (Antidesma Bunias, *Spreng.*), स्टिलेगो बु॰ (Stilago-bunias, *Linn.*, *Roxb.*)-**ले॰**।

उत्पत्ति-स्थान—भारत के समग्र उष्ण प्रधान प्रदेश।

उपयोग—अम्ल एवं स्वेदक। पत्र सर्पदंश में प्रयुक्त होते हैं। नए रहने पर इसे उबाल कर औपदंशिक शरीर विकार में उपयोग करते हैं। (लिण्डले)

अरिशि arishi–**ता॰** चावल। (Rice) स॰ फा॰ इं॰।

अरिशिना arishiná-**कना॰** हरिद्रा, हलदी। Curcuma Longa, *Linn.* (Root of–) स॰ फा॰ इं॰।

अरिशि शाडायाम arishi-shádáyám **ता॰** चावल की दारु, चावल की शराब। (Liquor of rice.) स॰ फा॰ इं॰।

अरिष्टः arishtah–सं० पुं०
अरिष्ट arishta–हिं० संज्ञा पुं० } (१) रीठा (ठी) का पेड़, फेनिल, निर्मली, रीठा वृक्ष, रीठा करञ्ज–हिं०। रिटे गाछ–बं०। Soapberry plant (Sapindus trifoliatus.) रा० नि० व० ६। मे०। गुण–रीठा पाक में कटुक (चरपरा), तीक्ष्ण, उष्णवीर्य, लेखन, गर्भपातक, स्निग्ध तथा त्रिदोषघ्न है और गृह-पीड़ा, दाह तथा शूलनाशक है। वै० निघ०। (२) रसोन, लसुन, लहसुन। Garlic (Allium Sativum.) प० मु०। रा० नि० व० २३। वा० सू० १ अ०। (३) निम्ब वृक्ष, नीम। The neemb tree (Melia azad-dirachta.) । रा० नि० व० २३। प० मु०। वा० सू० १५ अ०। गुडूच्यादि। "गुडूची पद्मकारिष्ट—।" च० द० पित्तश्लेष्म ज्व० अमृताष्टक—। "गुडूचा-न्द्र्यचारिष्ट–।" सु० सू० ४३ अ० संशोधन। (४) काक, कौआ। (A crow.) हारा०। (५) कङ्क पक्षी, मांस भक्षी पक्षी, गिद्ध। (A vulture or heron (Ardea lorra and putea.) (६) सुरा विशेष। औषध को जल में क्वथित करके पुनः उसमें मीठा आदि छोड़ संधान करने से सिद्ध किए हुए मद्य की अरिष्ट संज्ञा है। कहा भी है—

अरिष्टः क्वाथ सिद्धः स्यात्।
(प० प्र० ३)

स एव क्वथितौषधैररिष्टः। वा० टी० हेमाद्रिः।

क्वाथ सिद्धो वारिष्टः। शार्ङ्गः।

इक्षुविकार सहिताभया-चित्रक-दन्ती-पिप्पल्यादि-भूरि भेषज क्वाथादि संस्कार-वानरिष्टोऽभिधीयते। राज०।

पक्वौषधाम्बुसिद्धं यत् मद्यं तत्स्यादरिष्टकम्। भा० पू० मद्य० व०।

विविध प्रकार की औषधियों को भली प्रकार सुरा वा मद्य में डुबो कर सप्ताह बाद रस को परिस्रावितकर उसे वस्त्र से छानलें। इसको भिषक् गण अरिष्ट नाम से अभिहित करते हैं। यथा–

"आप्लाव्य सुरया सम्यक् द्रव्याणि विविधानि च। सप्ताहान्ते परिस्राव्य रसं वस्त्रेण गालयेत्। एषोऽरिष्टोऽभिधानेन भिषग्भिः परिकीर्त्तितः।" (अत्रि०)

नोट—इसी विधान से एलोपैथी चिकित्सा में वर्णित सम्पूर्ण टिंक्चर प्रस्तुत किए जाते हैं। अस्तु, आसवारिष्ट का टिंकचर के पर्याय रूप से प्रयोग करना यथार्थ है।

अरिष्ट निर्माण-विधि-(प्राचीन) यह साधारणतः मिट्टी के पात्र में ही प्रस्तुत किया जाता है; यद्यपि किसी किसी स्थान पर स्वर्ण पात्र में भी संधान करने का नियम है। जिस पात्र में अरिष्ट (आसव) तैयार करना हो, प्रथम उस पात्र की भीतरी दीवारों में अच्छी तरह घी लगा देना चाहिए। और साथ ही धव पुष्प तथा लोध्र के कल्क का लेप करके सुखा लेना चाहिए। एवं उपर्युक्त विधि से पात्र तैयार करके उसमें क्वाथित या कच्चा जल में मिश्रित गुड़, मधु और औषधों का चूर्ण आदि डालकर उसके मुख को शरावे से अच्छी तरह बन्द करके उसके ऊपर कपड़मिट्टी कर देनी चाहिए। जिसमें किसी स्थान से वायु उसके अन्दर न जा सके अब इस बर्तन को भूमि के अन्दर गड्ढे में या किसी अन्य गरम स्थान में १५ दिन या १ महीने या जैसी शास्त्राज्ञा हो रक्खे रहने देना चाहिए।

इसके बाद अरिष्ट या आसव को निकाल कर अच्छी तरह छानकर बोतलों में भर कर डाट लगादें, जिसमें उस बोतल के अन्दर वायु न जा सके, क्योंकि हवा जाने से शुक्त बन जाता है। जिस बोतल में रक्खे उसे थोड़ा खाली रक्खें; क्योंकि मुह तक भर देने से अरिष्ट जोश खाकर बोतल को तोड़ सकता है। यह जितना ही पुराना हो उतना ही अच्छा है। प्रत्येक मद्यों से श्रेष्ठ अरिष्ट ही होता है। अरिष्ट के नव्य निर्माण-क्रम एवं आसवारिष्ट अर्थात् मद्य की विस्तृत व्याख्या के लिए देखिए–आसव।

गुण—प्रायः नवीन मद्य गुरु, और वायु कारक होते हैं और पुरान होने पर स्रोतशोधक, दीपन और रुचिवर्द्धक होते हैं।

(च० सू० अ० २)

जिस द्रव्य से अरिष्ट बनाया जाता है उस द्रव्यका गुण उसमें रहता है। मद्यके सम्पूर्ण गुण इसमेंविशेष रूप में रहते हैं। ग्रहणी, पांडु, कुष्ठ, अर्श, सूजन, शोष रोग, उदर रोग, ज्वर, गुल्म, कृमि और तिल्ली इन सब रोगोंको दूर करता है एवं यह कषाय, तिक्त तथा वातकारक है। यथा—

"यथाद्रव्य गुणोऽरिष्टः सर्व मद्य गुणाधिकः। ग्रहणी पांडु कुष्ठार्शः शोष शोफोदर ज्वरान्। हन्ति गुल्म कृमिप्लीहान् कषाय कटुवातलश्च।" वा० सू० ५ अ० मद्य० व०।

अर्श, शोथ, ग्रहणी तथा श्लेष्मरोग नाशक है। यथा— "अर्श शोथ ग्रहणी श्लेष्म हरत्वम्।" राज०।

मात्रा—१ तो० से २ तो पर्यन्त।

सेवन-काल—प्रायः सभी अरिष्टासव भोजन के पश्चात् पिए जाते हैं। परन्तु रोग और रोगी की परिस्थिति के अनुसार समय में फेर फार भी किया जा सकता है।

सेवन-विधि—अरिष्ट या आसव में समान भाग जल मिलाकर सेवन करना उचित है; क्योंकि पानीके साथ सेवन करने से इसका प्रभाव शीघ्र होता है एवं जल रहित सेवन करने से गले और सीने में दाह उत्पन्न होने लगती है।

नोट—जो औषधों के क्वाथ और मधुर वस्तु तथा तरल पदार्थों से सिद्ध किया जाए वह अरिष्ट है और जो अपक्व औषधों और जल के योग से सिद्ध किया जाए वह आसव कहलाता है।

-क्ली० (७) सूतिकागार। सूतिकागृह। सौरी। (Lying-in chamber) रत्ना०। (८) आसव। (९) मरणचिह्न, मृत्युचिह्न, अशुभचिह्न, अपशकुन (Sign or symptom or prognostication of death.) देखो—अरिष्ट लक्षणम्।

(१०) तीन भाग दधि और एक भाग जल द्वारा प्रस्तुत तक्र, मट्ठा। घोल-वं०। रा० नि० व० १५। (११) मरणकारक योग। (१२) काढ़ा, क्वाथ (Decoction) (१३) क्लेश, दुःख, पीड़ा। (१४) उपद्रव, आपत्ति।

त्रि०, हिं० वि० (१) अशुभ, बुरा। सर्वत्र मे०। (२) सामान्य मद्य। रा० नि० व० १४। (३) शुभ। (४)दृढ़, अविनाशी।

अरिष्टकः arishṭakah-सं० पुं०
अरिष्टक arishṭaka-हिं० संज्ञा० पुं०
(१) फेनिल वृक्ष, रीठे का पेड़, रीठा करञ्ज Soapnut tree (Sapindus trifoliatus.) सि० यो० दाह ज्वर, श्रीकण्ठ। "फेनेनारिष्टकस्य च"। (२) निम्ब वृक्ष, नीम। The neemb tree (Melia azad-dirachta.)। उक्त स्थान में नीम के कोमल पल्लव व्यवहार में लाने चाहिए। च० द० विस्त० ज्व० शिरोलेप। रीठा-करञ्ज। रीठा। निर्मली। मद० व० ९। (३) सरल द्रुम, सरल, धूप सरल। (Pinus longifolia.) रत्ना०। – क्ली० (४) मद्य, सुरा। Wine (Spirituous liquor.) भ०।

अरिष्टत्रयम् arishṭa-trayam-सं० क्ली० अश्व के अरिष्ट (अशुभ) लक्षण विशेष। यह तीन हैं यथा—(१) स्वस्थारिष्ट, (२) वेधारिष्ट और (३) कीटारिष्ट। इनमें से स्वास्थारिष्ट के पाँच भेद हैं, यथा—भोजनारिष्ट, छायादि अरिष्ट दर्शनेन्द्रिय आदि अरिष्ट, श्रवणेन्द्रिय अरिष्ट, और रसनेन्द्रिय अरिष्ट। जय० दत्त० २३-२४ अ०।

अरिष्ट फलः arishṭa-phalah-सं० पुं० कटुनिम्ब वृक्ष। रा० नि०व० ९।

अरिष्टफलम् arishṭa-phalam-सं० क्ली० फेनिल, रीठा। Soapnut tree (Sapindus emarginatus. *Vahl.*)

अरिष्टलक्षणम् arishṭa-lakshaṇam-सं०

क्लो०, (Prognostication of death) मृत्युकारक चिह्न, मृत्युलक्षण, जिस लक्षण (चिह्न) से रोगी की मृत्यु जानी जाए उस चिह्न को अरिष्ट कहते हैं। भा०।

अरिष्टा arishṭá -सं० स्त्री०, -हिं० संज्ञा स्त्री० } (१) कटुकी, कुटकी। (Picrorrhiza kurroa.) रा० नि० व० ६। च० सू० ४ अ०। प० मु०। र० मा०। वै० निघ० २ भा०, विषमज्व० पटोलादि। (२) नागबला, गुलशकरी। (Sida alba.) रा० नि० व० ४। (३) मद्य, दारू। Wine (Spirituous liquor.)

अरिष्टादि चूर्ण arishṭádi-chúrṇa-सं० पुं० नीम के पत्र १० पल, त्रिकुटा ३ प०, त्रिफला ३ प०, सेंधा, सोंचर और साम्भर तीनों ३-३ प०, दोनों क्षार २ प०, अजवाइन ४ प०। इनका चूर्ण करके प्रातःकाल खाने से दैनिक तिजारी, चौथिया आदि का नाश होता है। यो० चि०।

अरिष्टाह्वः arishṭáhvah-सं० पुं० फेनिल, रीठा करञ्ज, रीठा। रीठे-बं०। Soapnut tree (Sapindus trifoliatus.) वै० निघ० २ भा० उन्मा० चि०।

अरिष्टिका arishṭiká-हिं०संज्ञा स्त्री० [सं०] (१) फेनिल, रीठा। (Soapnut tree) (२) कुटकी। कटुकी। (Picrorrhiza Kurroa.)

अरिसिना arisiná-कना० हरिद्रा, हलदी। (Curcuma longa.)

अरिसीना बुर्गा arisiná-burgá-कना० कम्बी, गलगल, कपटपलास। गनिश्चार-उड़ि०। गब्दी, गंगल-हिं०। (Cochlospermum gossypium, *D. C.*) इं० मे० प्लां०।

अरिस्टिडा डिप्रेसा aristida depressa, Retz.-ले० सिपन-खलक, सिपन-वेगी, जन्दर-कम्बा-पं०। नक्कि-पुटिकि-ते०। यह पौधा खाद्य कार्य में आता है। मेमो०।

अरिस्टिडा सिटेसिया aristida setacea, Retz.-ले० शिपर-गडि-ते०। थोडग-पुल्ल-ता०। यह भी खाने के काम में आता है। मेमो०।

अरिस्टॉटल aristotle-इं० अरस्तू, अरस्तातालीस।

अरिस्टीन aristine-इं० देखो—अरिस्टोलोकीन।

अरिस्टोकीन aristochin-इं० यह एक स्वाद-रहित श्वेत चूर्ण होता है जिसमें ९६·१ प्रतिशत क्वीनीन होता है। यह जल में लय नहीं होता। इसे विषमज्वर (मलेरिया), आंत्रिकज्वर (टाइफॉइड), संक्रामक प्रतिश्याय (इन्फ्लुएञ्ज़ा) तथा थोड़ी मात्रा में कूकरखाँसी (पर्टस्सिस) में बरतते हैं। मात्रा—१ से १० ग्रेन (½ से ५ रत्ती) विस्तार के लिए देखो—सिनूकोना।

अरिस्टो क्विनाइन aristo-quinine-देखो—सिनूकोना।

अरिस्टोल aristol-इं० यह डाइ थाइमोल आयोडाइड (Di-thymol-Iodide.), पांशुनैलिद (Potassium iodide.) तथा यमानीन (Thymol.) घोल को सम्मिश्रित करने से बनाया जाता है। यह रक्ताभ धूसर वर्ण का चूर्ण है जो जल तथा ग्लीसरीन में अविलेय होता; किन्तु कोलोडीन, ईथर और तैल (Oils) में लयशील होता है।

गुण—यह (अल्सरेटिव ल्युपस), दद्रु (Tænea.), नारफ़ारसी (एक्ज़िमा) और विचर्चिका (सोराइसिस) में लाभदायक है। इसका १० प्रतिशत का मलहम (प्रलेप) उपयोग में आता है अथवा इसे व्रण पर छिड़कते या क्लोडीन में मिलाकर लगाते हैं। देखो—आयोडोफ़ॉर्म।

अरिस्टोलोकिएसीई aristolochiaceæ-ले० अरिस्टोलोकिई (Aristolochiæ.) ईश्वरमूल वर्ग।

अरिस्टोलोकिया aristolochia-ले० ज़रावन्द -फ़ा०। ईश्वरमूल-हिं०।

नाम-विवरण—ज़रावन्द वस्तुतः फ़ारसी

नाम है जिसका शाब्दिक अर्थ स्वर्णपात्र (ज़ुर्फ़े तिला) है। चूँकि उक्त औषध का वर्ण सुनहला होता है इसलिए उसका यह नाम पड़ा।

इसका वर्तमान डॉक्टरी लेटिन नाम अरिस्टोलोकिया वस्तुतः इसका यूनानी (Greeck.) नाम है जिसे तिब्बी ग्रंथों में अरिस्तोलोखिया लिखा है। अरिस्टोलोकिया या अरिस्तोलोखिया दो यूनानी शब्दों अरिस्टो (लाभप्रद) तथा लोकिया (प्रसव पश्चात्कालीन रक्तस्राव, निफ़ास) का यौगिक है जिसका अर्थ "निफ़ास अर्थात् प्रसव पश्चातकालीन रक्तस्राव के लिए लाभप्रद" हुआ। किन्तु इब्नबेतार ने अरिस्तो (अरिस्टो) का अर्थ योग्य तथा लोखिया (लोकिया) का अर्थ नफ़्सा अर्थात् निफ़ासवाली औरत (वह स्त्री जिसे प्रसव के बाद रक्तस्राव जारी हो) किया है और इससे उनका अभिप्राय उस औषध से है जो उक्त प्रसूता के लिए लाभप्रद हो।

नोट—विस्तार के लिए देखो—ज़रावन्द।

अरिस्टोलोकिया इण्डिका aristolochia indica, *Linn.*–ले० ज़रावन्द हिन्दी –अ०, फ़ा०। रुद्रजटा, ईश्वरमूल, सुनन्दा, अर्कमूलहरि, उत्रारि-सं०। इशरमूल, जोरबेल –हिं०। इसर मूल-बं०। सापसन–बम्ब०, गु०। पेरु-मरियड्डु, इश्वर-मुलिबेर-ता०। सफर्स, सापुसगाआ। मेमो०। ईश्वरी, सापसन्द–मह०। ईश्वरी–गु०। ईश्वर-बेरु, गोविला-ते०। ईश्वरी वेरु, नज्ञिन-बेरु कना०। करल-वेकम, ईश्वरमुरि–मल०। मेमो०, फा० इं० ३ भा०। इं० मे० प्लां०। देखो—रुद्रजटा।

अरिस्टोलोकिया ब्रेक्टिएटा aristolochia bracteata, Retz.–ले० कीड़ामार, गंधानी –हिं०। कीडामर–गु० । गन्धान-गवत, गंधानी –मह०। पत्र-बङ्ग–फ़ा०। धूम्रपत्रा–सं०। देखो—धूम्रपत्रा। फा० इं० ३ भा०, मेमो०। इं० मे० मे०, इं० मे० प्लां०।

अरिस्टोलोकिया रेटिक्युलेटा aristolochia reticulata–ले० ज़रावन्द अमरीकी, ज़रावन्द दाफ़ा ज़हरमार। (Aristolochia Serpentaria, L.) मेमो०, म० अ० डॉ०।

अरिस्टोलोकिया रोटण्डा aristolochia rotunda, Linn.–ले० ज़रावन्द मदहर्ज –अ०। ज़रावन्द गिर्द–फ़ा०। देखो—ज़रावन्द। मेमो०। फा० इं० ३ भा०।

अरिस्टोलोकिया लॉङ्गा aristolochia longa, Linn.–ले० ज़रावन्द तवील, अरिस्तलूखिया–अ०। ज़रावन्द दराज़-फ़ा०। देखो—ज़रावन्द। मेमो०, फा० इं० ३ भा०।

अरिस्टोलोकिय सर्पेण्टेरिया aristolochia serpentaria, L.–ले० ज़रावन्द अमरीकी, ज़रावन्द दाफ़ा मार, ज़रावन्द मु.फ़ाउल् अफ़्ई –अ०। सर्पेण्टेरीई (Serpenteriae)। म० अ० डॉ०। मेमो०।

अरिस्टोलोकिया सिटेसिया–aristolochia setacea, *Retz.*–ले० शिपरगडि-ते०। थोंडपुर-पल्ल-ना०। इसका पौधा खाद्य है। मेमो०।

अरिस्टोलोकिया सैकेटा aristolochia saccata, *Wall.*–ले० मतिया चीता–हिं०। (Pouched birthwort.)। इं० हैं० गा०।

अरिस्टोलोकीन aristolochine–इं०।

अरिहन arihana–हिं० संज्ञा पुं० [सं० रन्धन] रेहन। अरहन।

अरी arí–जय० (१) आलुकी, अरुई, घुइयाँ। A species of Arum (Arum colocasia.)।–सं० स्त्री० (२) खस, उशीर। (Andropogon muricatus.)।

अरीकह् arikah } –अ०
अरीकतुल् जुरह् arikatul-jurah }
ज़ख़्म का अंगूर, शुद्ध मांस जो व्रण में पूरित हो आए। ग्रेन्युलेशन (Granulation.)

अरीकह् āarikah–अ० आदत, प्रकृति, स्वभाव। नेचर (Nature.)–इं०।

अरीकह् āarikah-अ० कोहान शुतर ।

अरीक़साअ āariqasáa } -अ० हिन्द-
अरीक़सानह् āariqasánah } क़ूक़ी, विषखपरा ।

अरीक़ालूसिया ariqálúsiyá-यू० झाऊ । (Tamarix gallica, *Linn.*)

अरीक़ितअह् āariqitaāah-अ० एक जानवर है ।

अरीज़ āariza-अ० छाग शिशु, बकरीका बच्चा । (A kid.)

अरीज़ा arízá-यू० बूटीका मूल, जड़ । (Root.)

अरीज़ियम -इं० कुर्मअनह् एक बूटी है जो कांटों से युक्त होती तथा भूमिपर फैलती है ।

अरीठा aríthá-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अरिष्ट, प्रा० अरिट्ठ] रीठा, अरिष्ट फल । Soapnut tree (Sapindus trifoliatus)

अरीतह् āaritah-अ० वृश्चिक, बिच्छू । (A scorpion.)

अरीतस arítasa-यू० चूर्ण, चूना ।(Calx.)

अरीद् arida-निर्गुण्डी, सँभालू, मेउड़ी । (Vitex negundo.)

अरीदाल arídál-सिं०, कना०, कों० } [illegible] ।
अरीदारम [illegible] ता० }
Orpiment (Trisul[illegible] [illegible] arsenic.)

अरीन āarína-अ० गोश्त, मांस । (Flesh, meat.)

अरीफ़ीस arifísa-यू० एक प्रकार का तैल है जो जल के समान कूओं से निकाला जाता है ।

अरीर āarira-क़न्तूरियून । See-qantúriyúna.

अरीरा āarírá-(१) नानूख़ाह, अजवाइन । (२) ऊशह् ।

अरीस arísa-फ़ा० } लोबान, कलक्रूरा, कम-
अरीसह् arísah-अ० } काम-फ़ा० ।(Styrax Benzoin, dryander) देखो-लोबान । फा० इं० ३ भा० ।

अरीसन arísan-का० हलदी, हरिद्रा । (Curcuma longa.)

अरीसारम arisárum-इं० लोफ़ल् जुअद, एक बूटी है जो एक बालिश्त के बराबर एवं विभिन्न वर्ण युक्त होती है ।

अरीसीन aricine-इं० सिनकोना सत्व विशेष । फा० इं० २ भा० ।

अरीसीमा टॉर्टॉसम् arisœma tortnosum, *Scholt.* }
अरीसीमा कर्वेटम् arisœma curvatum, *Kunht*, Rosb. }
--लें० बीरबङ्का--नैपा० । गुरिन, डांर, किर्किचालू, किरकल, जंगुश पं० ।

उद्भव-स्थान—पंजाब तथा हिमालय ।

उपयोग—कहते हैं कि यह विषाक्त गुणमय ओषधि है और कुल्लू में भेड़ों के उदरशूल होने पर इसके बीज लवण के साथ मिलाकर उपयोग में आते हैं । वर्षाऋतु में मवेशियों को कीड़ों से सुरक्षित रखने के लिए इसकी जड़ काम में लाई जाती है । इसके उपयोग से वे मृतप्राय हो जाते हैं । (स्टूवर्ट) इं० मे० प्लां० ।

अरीसीमा ट्रिफ़ॉलियम् arisœma trifolium--लें० शलजम । (Turnip)

अरीसीमा [illegible] arisœma leschenanthes, *Blume.*-लें० [illegible]

उत्पत्ति-स्थान—हिमालय, खसिया की पहाड़ी, नीलगिरि और लंका ।

उपयोग—सिंगाली लोग इसकी जड़ औषध तुल्य व्यवहार में लाते हैं । (थ्वैटीज) इं० मे० प्लां० ।

अरीसीमा स्पेसिओसम arisœma speciosum, *Mart.*

एरम स्पेसिओसम arum speciosum. *Wall.*

-लें० साँप की खुम्बी, किरिकी कुकरी, किरलु -पं० ।**उत्पत्ति-स्थान**–शीतोष्ण हिमालय, कुमायूँ से सिक्किम तथा भूटान पर्यन्त ।

उपयोग—हज़ारा में इसे विष ख़याल

किया जाता है। चम्पा में सर्पदंश स्थान पर इसे पीसकर लगाते हैं। कूलू में इसकी जड़ भेड़ों को उदरशूल होनेपर व्यवहार में आती है। जब बच्चे इसे खाते हैं तो उनके मुखपर इसका हानिकारक प्रभाव होता है। (स्टूवर्ट) इं० मे० प्लां०।

अरीसुस्सीन āarísussína—अ० बिश्नीन। नीलोफ़र के सदृश एक बूटी है।

अरू arú–म०, सफतालू, आड़ू।

अरुंतुद aruntuda–हिं० वि० [सं०] (१) मर्मस्थान को तोड़ने वाला। मर्मस्पृक्। (२) दुःखदायी।–संज्ञा पुं० शत्रु, बैरी।

अरुः,-स् aruh, s–सं० पुं० (१) आरग्वध वृक्ष, अमलतास। सोन्दाल गाछ-बं०। (Cassia fistula.)। (२) रक्त खदिर (Red Catechu.)। (३) क्षत, व्रण। अथर्व०। (४) मर्म। (५) संधिस्थान। उ०।

अरुआ aruá-मेवा० महानीम, महानिम्ब। (Ailanthus Excelsa.)

अरुआर aruára–हिं० पुं० कचनार के सदृश एक वृक्ष है। पत्ते अनार के समान किन्तु उससे बड़े सम्मुखवर्ती डंठलयुक्त होते हैं (डंठल लगभग १ अंगुल दीर्घ); पुष्प डंठलयुक्त, डंठल १–१॥ अंगुल लम्बे होते हैं। पुष्प-बाह्य-कोष (कुण्ड), सूक्ष्म, दंष्ट्राकार, बीजकोषोर्ध्व, हरिताभ पीतवर्ण के होते हैं। पुष्पाभ्यन्तर-कोष (दल) पञ्चकंगूरेयुक्त तथा पीताभ होता है। नरतन्तु ४, जिनमें २ बड़े तथा २ छोटे होते हैं। पराग-कोष इस प्रकार का होता है। गर्भकेशर पुंकेशर से बड़ा तथा द्वयोष्ठीय होता है। फाल्गुन मास में इसमें पुष्प आते हैं और उस समय यह पुष्पों से आच्छादित होने के कारण अत्यन्त मनोहर प्रतीत होता है। इसकी छाल किञ्चित् कड़ुई तथा पुष्प तिक्त व मधुर होता है। लकड़ी भीतर से धूसर वर्ण की शीशमके समान अत्यन्त चिकनी होती है। इसके वृक्ष अधिकतर कंकरीली पथरीली भूमि पर उत्पन्न होते हैं।

उत्पत्ति-स्थान–संयुक्त प्रांत।

अरुई arui-हिं० संज्ञा स्त्री० आलुकी, अरवी, घुइयाँ। (Arum colocasia.)

अरुकामलक arukámalak–ता० अम्बाहल्दी, आम्रहरिद्रा। (Curcuma amada) इं० मे० मे०।

अरुक् aruk–सं० त्रि० सुस्थ, नीरोग।

अरुगम-पट्ट arugam-patta–ता०
अरुगम-पुल्लु arugam-pullu–ता०
दूर्वा, दूब। (Cynodon dactylon) मेमो०।

अरुगु arugu–ते० (१) कोदों, कोद्रव। (Paspalum-scrobiculatum)। –ता० (२) सुफेद दूब।

अरुग्णः arugnah-सं० त्रि०
अरुग्ण arugna–हिं० वि०
सुस्थ, निरोग, रोग रहित। (Healthy)

अरुङ्निमेषः arungni-meshah–सं० स्त्री० नेत्र रोग विशेष। (An eye-disease)

अरुच arucha–हिं० स्त्री० गर्भवती स्त्री की अरुचि।

अरुचिः aruchih–सं० स्त्री०
अरुचि aruchi–हिं० संज्ञा स्त्री०
अग्निमांद्य रोग। अरोचक रोग। भूख होनेपर भी भोजन करने का सामर्थ्य न होना, भोजन की अनिच्छा, वितृष्णा, जी मचलाना। (Anorexia) भा० म० १ भा० श्लेष्मज्वर। देखो—अरोचकः। (२) रुचि का अभाव, अनिच्छा। (३) घृणा। नफ़रत।

अरुचिकर aruchikara–हिं० वि० [सं०] जिससे अरुचि हो जाए, जो रुचिकारक न हो, जो भला न लगे।

अरुजः arujah–सं० पुं० (१) आरग्वध वृक्ष, अमलतास। (Cassia fistula) बड़ सोनालु–बं०। रा० नि० व० ६।
स्त्री० (२) कुंकुम, केशर। (Saffron) (३) सिन्दूर। (Redlead, minum).

अरुज aruja–हिं० वि० [सं०] नीरोग। रोग रहित। (Healthy)

अरुणः aruṇah–**सं० पुं०**
अरुण aruṇa **हिं० संज्ञा पुं०** } (१) कोकिलाक्ष भेद, **तालमखाना** (Hygrophila spinosa.) । (२) अतिविषा, अतीस (Aconitum heterophyllum.) । (३) श्योणाक वृक्ष, सोनापाठा (Oroxylum Indicum.) प० मु० । (४) मञ्जिष्ठा, मंजीठ (Rubia cordifolia.) । (५) अर्क वृक्ष, मदार, आक । (Calotropis gigantea.) मे० । (६) पुन्नागवृक्ष । (Calophyllum inophyllum.) रा० नि० व० १० । (७) गुड़ । (Jaggery.) रा० नि० व० १४ । (८) चित्रक क्षुप, चीता । (Plumbago zeylanica.) मद० व० २ । (९) रक्तापामार्ग, लालचिचिंटा (Achyranthes rubrum.) देखो–अपामार्ग । (१०) रक्त करवीर, लाल कनेर । (Nerium odorum, *Soland.*) वै० निघ० । (११) एक प्रकार का कुष्ठ रोग, लालकोढ़ । (A kind of leprosy.)

लक्षण—जिसमें लालवर्ण की छोटी छोटी फैलने वाली फुन्सियाँ होती हैं तथा चीस, भेद (भेदन की सी पीड़ा) और स्वाप (स्पर्शाज्ञता) होता है उसे अरुण कुष्ठ कहते हैं । यह वातज होता है अर्थात् वायु से (वायु की प्रधानता से) उत्पन्न होता है । सु० नि० ५ अ० ।

(१२) सूर्य्य । (The sun),
(१३) गहरा लालरंग । (Deep red),
(१४) कुङ्कुम, केशर । (Saffron),

(१५) सिन्दूर । Red lead (Plumbi Oxidum Rubrum) –त्रि०, हिं० वि० पुं० [स्त्री० अरुणा] (Red.) रक्तवर्ण । लालरंग । लाल । रक्त ।

अरुणम् aruṇam–**सं० क्ली०** (१) अहिफेन, अफीम । (Opium.) वै० निघ० । (२) रक्तोत्पल, लाल कमल (Nymphæa nelumbo, the red var.) । (३) रक्तत्रिवृता, लाल निसोथ । (Ipomœa turpethum, R. Br., the red var.) वा० टी० हेमाद्रि । (४) कुंकुम, केशर । Saffron (Crocus sativus.) रा० नि० व० १२ । (५) सिन्दूर (Red oxide of lead.) रा० नि० व० १२ । (६) माणिक्यभेद । (A kind of ruby.) वै० निघ० २ भा० । ज्वररोग, त्रैलोक्य चिन्तामणिरस ।

अरुणकपिशः aruṇa-kapiṣhah–**सं० पुं०** द्राक्षाभेद, किसमिस विशेष । फकीरी द्राक्ष –महo । वै० निघ० । (A kind of drygrape.)

अरुणकम् aruṇakam–**सं० क्ली०** प्लाटिनम समूह का कठोर श्वेत धातुतत्व विशेष । रोडियम् (Rhodium.)–ले० । नोट—रूहोडियम् युनानी शब्द रोडोन (Rhodon.) अर्थात् गुलाब से व्युत्पन्न है । चूँकि इस धातु के लवणों के घोल गुलाबी रंग के होते हैं, अस्तु इसे उक्त नाम से अभिधानित किया गया । दे० रूहोडियम् ।

अरुणकमलम् aruṇa-kamalam—**सं० क्ली०**
अरुणकमल aruṇa kamal–**हिं० पुं०** } कोकनद, लाल कमल । रक्त कम्बल–बं० । (Nelumbium speciosum.) रा० नि० व० १० ।

अरुणचूड़ aruṇachúra–**हिं० संज्ञा पुं०**
अरुण चूड़ः aruṇa-chúrah–**सं० पुं०** } कुक्कुट । अरुण-शिखा । ताम्रचूड़ पक्षी । कुकुड़ा । मुर्गा । (Cock.) वै० निघ० ।

अरुण तण्डुलीयम् aruṇa-tanduliyam–**सं० क्ली०** रक्ततण्डुलीय शाक, लाल चौलाई । राङ्गा नटे–बं० । Amarantus (Thus) Spinosus (The red var. oi–) च० द० ।

अरुणनागः aruṇa-nágah–**सं० पुं०** मुद्रा-

शङ्ख, पीतिका । अत्रि० । See-mudrá-shankhah.

अरुणनेत्रः aruna-netrah-सं० पुं० (१) पारावत, कपोत, कबूतर । (Pigeon.) पायरा -बं० । (२) कोकिल, कोइ(य)ल । The black or Indian cuckoo (Cuculus) वै० निघ० ।

अरुणपुष्पी arunapushpí-सं० स्त्री० बन्धुजीवक वृक्ष, बन्धूक, दुपहरिया, गेजुलिया । बान्धुलि फुल-बं० । रक्तदुपारी-म० । (Pentapetes phœnicea, *Wil.*) वै० निघ० ।

अरुणमक्षिका aruna-makshiká-सं० स्त्री० रक्तमक्षिका । लाल माछि-बं० । वै० निघ० । See-Rakta-makshiká.

अरुणलोचनः aruna-lochanah-सं० पुं० (१) पारावत, कपोत, कबूतर । (Pigeon.) गा० नि० व० १६ । (२)कोकिल, कोइ(य)ल । The black or Indian cuckoo (Cuculus) वै० निघ० । (३) लालनेत्र । (Red eye.)

अरुणशिखा aruna-shikhá-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] कुक्कुट, मुर्गा । (Cock)

अरुण सर्पः aruna-sarpah-सं० पुं० तक्षक सर्प, सर्प विशेष । (A snake of a middle size and of a red colour.) वै० निघ० । See-Takshak.

अरुणसारः aruna-sárah-सं० पुं० हिङ्गुल, सिंगरफ । Cinnabar (Hydrargyri Bisulphuretum.) वै० निघ० ।

अरुणा aruná-सं० स्त्री०, हिं० संज्ञा स्त्री० (१) अतीस, अतिविषा । (Aconitum heterophyllum.) मे० । गा० नि० व० ६ । भा० ४भा० बाल० ज्व० चि० महाभल्ला० गुड़ । "घन कृष्णारुणाशृङ्गी" । भै० र० प्रदरारि रस । कुष्ठ० चि० । (२) मञ्जिष्ठा, मजीठ । (Rubia cordifolia.) मे० । गा० नि० व० ३ । भा० म० १ भ० ज्व० चि० लाक्षातैल । "लाक्षा दशाख्या त्वरुणा पद्मा । (३) प्रपौण्डरीक, पुंडेरी, कमलनाल । (Root stock of nymphæa lotus.) प० मु० । (४) त्रिवृता, निशो(सो)थ । (Ipomoea turpethum, *R. Br*) मे० । (५) जवा, ओड़पुष्प, अड़उल । (Hibiscus rosa-sinensis.) मद० व० २ । "अरुणातिविषा श्यामा मञ्जिष्ठा त्रिवृता च" । (६) श्यामालता, कृष्णसारिवा, श्यामलता । (Ichnocarpus frutescens.) मे० । इन्द्रवारुणीलता, इन्द्रायन, इनारुन (Citrullus colocynthes, *Shrad.*) । (८) गुञ्जालता, घुँघची । (Abrus precatorius) गा० नि० व० ३ । (९) पुनर्नवा, गदहपुन्ना (Bœrhavia diffusa.) । (१०) मुण्डी । (Sphæranthus Indicus.) रत्ना० । (११) कोदो । (१२) लालरंग की गाय । (१३) उषा ।

अरुणाई arunái-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० अरुण] ललाई । रक्तता । (Redness)

अरुणात्मिका arunátmiká-सं० स्त्री० कमरिच, मरचा, लाल मरचा । (Capsicum.) । लङ्का मरिच -बं० । लांक-म० । वै० निघ० ।

अरुणाभम् arunábham-सं० क्ली० वज्रलौह, कान्तलौह । See-kántalouha.

अरुणार arunára-हिं० वि० दे०-अरुना ।

अरुणार्कः arunárkah-सं० पु० रक्तार्क, लाल मदार । मन्दारु-मह० । मन्दार अक्क-कं० । Calotropis gigantea (The red var. of-) गा० नि० व० १० । देखो—आक ।

अरुणाक्षः arunákshah-सं० पुं० कबूतर, कपोत । (Pigeon.)

अरुणित arunita-हिं० वि० [सं०] लाल किया हुआ ।

अरुणिमा arunimá-हिं० संज्ञा० पुं० [सं० अरुण] ललाई, लालिमा, सुर्खी ।

अरुणी aruṇí-सं० स्त्री० सुरसरनी-हिं० । टिक्करी-अव० । ब्रेनिया र्‌हैमूनॉइडीस (Breynia rhamnoides, *Mull-Arg.*), फाइलैन्थस र्‌हैमूनॉइडीस (Phyllanthus rhamnoides, Willd.)-ले० ।

एरण्ड वा सेहुण्ड वर्ग

(*N. O. Euphorbiaceæ*).

उत्पत्ति-स्थान—समग्र उष्ण कटिबन्धस्थ भारतवर्ष, पूर्वीय अवध से लेकर ऊपरी आसाम तथा दक्षिण की ओर ट्रावेनकोर पर्यन्त ।

वानस्पतिक-विवरण—क्षुप (या छोटा वृक्ष); **नव्याङ्कुर** कोणाकार; **पत्र**-एकान्तर (विषमवर्ती), लघु डंठलयुक्त, अमसरिन, चौड़ा--अण्डाकार, बहिः पत्र सबसे बड़े, अधः भाग सफ़ेदी मायल, अखण्ड (किनारा), अर्ध से ¾ इं० लम्बे; **नरपुष्प** निम्न कक्षों में गुच्छाकार, **नारि पुष्प** ऊर्ध्व कक्षों में होते हैं, अकेले, ह्रस्व पुष्पडंडी युक्त, नत; **फली** मटराकार होती है।

प्रभाव तथा उपयोग—गलशुण्डी शोथ में शुष्कपत्र तमाकू रूपसे (हुक्का पर)पिया जाता है । इसकी त्वचा संकोचक है । [डाइमॉक]

अरुणोदय aruṇodaya-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] प्रातः काल । प्रभात । बिहान । उषा काल । ब्राह्म-मुहूर्त । तड़का । भोर । वह काल जब पूर्व दिशा में निकले हुए सूर्य्य की लाली दिखाई पड़ती है। यह काल सूर्योदय से दो मुहूर्त्त या चार दंड पहिले होता है । अरुनोदय ।

अरुणोपलः aruṇopalah-सं० पुं० अरुणवर्ण मणि विशेष, चुन्नि, पद्मराग मणि, लाल । (A ruby.) हिं० च० ।

अरुण्डिनेरिया फैल्केटा arundinaria falcata, *Nees.*-ले० निर्गल, नीगल-हिं० । स्प्रग-कनावार । प्रोङ्ग-उ० प० सू० । प्रांगनोक-लेप० । इसका तना रस्सी के काम आता है । मेमो० ।

अरुण्डिनेरिया रैसीमोसा arundinaria racemosa, *Munro.*-ले० पम्मून-लेप० । पात्थ्यू-नैपा० । इसका तना रस्सी या खाद्य कार्य में आता है । मेमो० ।

अरुण्डिनेरिया हूकेरियना arundinaria Hookeriana, *Munro.*-ले० प्रांग, प्राओंग-लेप० ; सिंघनी-नेपा० । तना तथा बीज खाद्य एवं रस्सी के काम आते हैं । मेमो० ,

अरुण्डिनेसीई arundinaceæ—ले० वंश वर्ग ।

अरुण्डोकार्का arundo karka, *Roxb.*-ले० कार्का, नल-बं० । नरकट, नर, नल, नदनार-हिं० । नर्रो, वाग-पं० । इसका तना व रेशा रस्सी के काम आती है । मेमो० ।

अरुण्डोबेङ्गालेन्सिस arundo Bengalensis, Linn.--ले० गावनल, नल विशेष ।(Bengal reed.) इं० हैं० गा० ।

अरुण्डोबैम्बोस arundo bambos-ले० वंश बाँस बंस । (Bambusa arundinacea.) इं० मे० मे० ।

अरुता arutá- मल० } तिनली, सुदाब । (Euphorbia lathyris, *Linn.*)
अरुद arud-सिं० }

अरुन aruna-हिं० वि० दे० अरुण ।

अरुनई arunaí-हिं० संज्ञा स्त्री० दे०-अरुणाई ।

अरुनचूड़ aruna-chúra-हिं० संज्ञा पुं० दे० अरुणचूड़ ।

अरुनता arunatá-हिं० संज्ञा स्त्री० दे० अरुणता ।

अरुनशिखा aruna-shikhá-हिं० संज्ञा पुं० दे०-अरुणशिखा ।

अरुना aruná हिं० संज्ञा स्त्री० मञ्जिष्ठा, मजीठ । (Rubia cordifolia.)

अरुनाई arunái-हिं० संज्ञा स्त्री० दे०-अरुणाई ।

अरुनाना arunáná-हिं० क्रि० अ० [सं० अरुण] लाल होना । क्रि० स० [स० अरुण] लाल करना ।

अरुनारा arunárá-हिं० वि० [सं० अरुण+आरा (प्रत्य०)] लाल रंग का, लाल ।

अरुनी aruní-सं० स्त्री० सुरसरनी, टिक्करी-अव० । मेमो० । देखो-अरुणि ।

अनेरल्ली arunellí–ना० हरफा रेवड़ी, लवली।

अरुनोदय arunodaya–हिं० संज्ञा पुं० दे०–अरुणोदय।

अरुन्धती arundhatí–सं० स्त्री० जिह्वाग्र। जिह्वा की नोक वा फोंक। (The foretongue.) वै० निघ०। दे०–अरुंधता।

अरुंधती arundhatí–हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० अरुन्धती] (१) बहुत छोटा तारा जो सप्तर्षि मंडलस्थ वशिष्ठ के पास उगता है। सुश्रुत के के अनुसार, जिनकी मृत्यु समीप होती है, वह इस तारे को नहीं देख सकते।

(२) तंत्र के अनुसार जिह्वा।

(३) घाव को पूरने वाली ओषधि, व्रणपूरक औषध, अरुष। अथर्व०। सू० २। २। का० ४।

अरुंषिका arunshiká–सं० स्त्री०, हिं० संज्ञा स्त्री० एक क्षुद्र रोग जिसमें कफ और रक्त के विकार या कृमि के प्रकोप से माथे पर अनेक मुँह वाले फोड़े हो जाते हैं। शिरोव्रण। क्षुद्ररोगान्यतम कपाल रोग भेद। मा० नि०।

अरुवा aruvá–हिं० संज्ञा पुं० [सं० अरु] (१) एक लता जिसके पत्ते पान के पत्ते के सदृश होते हैं। इसकी जड़ में कन्द पड़ता है, और लता की गाँठों से भी एक सूत निकलता है जो चार पाँच अंगुल बढ़कर मोटा होने लगता है और कन्द बनता जाता है। इसके कन्द की तरकारी बनती है। यह खाने पर कनकनाहट पैदा करता है। बरई लोग इसे पान के भीटे पर बोते हैं।

संज्ञा पुं० [हिं० रुरुआ] (An owl.) उल्लू, उलूक पक्षी। हिं० श० सा०।

अरुषः arushah–सं० पुं० (१) व्रण, क्षत (Vranah.)। (२) घोटक, अश्व। (Horse.) वै० निघ०। (३) व्रणपूरक औषध, अरुन्धती। अथर्व०। सू० १२। का० ४।

अरुषा, -टा arushá-ṭá–सं० स्त्री० भूम्यामलकी, भुँई आमला। (Phyllanthus neruri.) रा० नि० व० ५।

अरुषासः arushásah–सं० पुं० रोष रहित। अथ०। सू० ३। ३। का० ३।

अरुष्कः arushkah–सं० पुं०
अरुष्क arushka–हिं० संज्ञा पुं०
भल्लातक वृक्ष, भिलावाँ। भेला गाछ–बं०। बिब्बा–म०। (Semecarpus anacardium.) भा० पू० १ भा०। रा० नि० व० ११।

अरुष्करः arushkarah–सं० पुं० (१) भल्लातक वृक्ष, भिलावाँ। (Semecarpus anacardium.) प० मु०। रा० नि० व० ११। भा० पू० १ भा०। मद० व० १। (२) अरुंषिका। –त्रि० (३) व्रणकृत, व्रणजनक। मे० रचतुष्कं।

अरुष्करम् arushkaram–सं० क्लीο भल्लातक फल, भिलावाँ (Semecarpus anacardium.) च० द० अर्श चि०। भैष० कुष्ठचि० पञ्चतिक्त घृत। "सनागरारुष्कर वृद्धदारकम्।" सि० यो० चतुः सम लौह। च० सू० ४ अ० कुष्ठघ्न व०।

अरुस arusa–हिं० पुं० अडूसा, वासक। (Adhatoda vasika.)

अरुसिमन arusiman–यू० ब.फ़ुल-तुम-सुम, ब.फ़ुल–हवह, कसीस–अ०। कदूम–इस्फहान। मारदरुन। किरमान। दर्ाना। तब्रीज़। (Lepidium iberis, *Linn.*)–लें०। (Pepper grass, pepperwort)–इं०। Passerage iberide–फ्रां०। देखो—तोद्री। फा० इं० १ भा०।

अरुस्राणम् ausránam–सं० क्लीο (१) व्रण का दोषों को शीघ्र पकाने वाली औषध। (२) व्रण, फोड़ा। अथर्व०। सू० ३। ४। का० २।

अरुहा aruhá–सं० स्त्री०, –हिं० संज्ञा पुं० भूधात्री, भुँई आमला, भूम्यामलकी। (Phyllanthus neruri.)

अरूक़ āarúqa–अ० स्वेदक औषध। (Diaphoretic.)

अरूक़ arúqa–तु० ज़र्दालू। एक फल है जो मधुर अम्लीय होता है। खूबानी इसीका भेद है।

अरूक़लस arúqalas–रू० उश्नान, एक घास है जिससे कपड़े धोए जाते हैं। See–ushnán.

अरूकुल arúkul–फ़ा० हरिद्रा, हलदी। (Curcuma longa, Linn.) स० फा० इं० ।

अरुक़ुस्सब्बाग़ीन arúqussabbághín }
आरूक़ुस्सफ़्र āarúqussafra }
–अ० (Healthy) नीरोग, स्वस्थ ।

अरूज़ arúza–अ० चावल, धान। (Rice.) इं० हैं० गा० ।

अरूज़ा arúzá–सिरि० मुर्गाबी, जल मुर्गी। (Water-hen.)

अरूढ़ arúdha–हिं० वि० दे० आरूढ़।

अरूढ़अवपाटिका arúdha-avapátiká–सं० स्त्री० देखो—"निरुद्धप्रकाश"। सु० सं० ।

अरूद arúda–हिं० पुं० उर्द, माष। (Phaseolus radiatus.)

अरूनस arúnasa–यू० मटर, कलाय विशेष। Pea (Pisum sativum).

अरूनिया arúniyá–क़वाकह् भेद। वह मेवे जिनसे आहार प्राप्त होता है। वस्तुतः जंगली सेब को कहते हैं।

अरूनीस arúnísa–यू० कनौचा भेद। लु० क० ।

अरूप arúpa–हिं० वि० [सं०] (१) रूप रहित। निराकार। (२) कुरूप, कुत्सित रूप, कुश्री। (Deformed, ugly.)

अरूपाल arúpál–मह० अशोक वृक्ष। (Saraca Indica, Linn.)

अरूबा āarúbá–सिरि० गज़ंगबीन, झाऊ निर्यास, झाऊ वृक्ष से स्रवा हुआ गोंद।

अरूमचक arúmachak–तु० मकड़ी, ऊर्णनाभि। (A spider.)

अरूस arúsa–हिं० संज्ञा पुं० दे० अड़ूसा।

अरूस āarúsa–अ० (१) एक प्रकार की गुहेरी वा गुहाञ्जनी। (२) दुलहिन, दुलहा (A bride; a bridegroom.)। (३) नीलोफ़र, नीलोत्पल (Nymphæa stelata.)। (४) गंधक पीत (Sulphur.)। (५) शीराज़ निवासी कुसुम्भ (कड़) द्वारा परिस्रुत पीत जल को कहते हैं जो प्रथम निकलता है।

अरूसक āarúsak–अ० (१) खद्योत, जुगनू (a firefly.)। (२) तम्बूल–फ़ा०। (३) उल्लू, उलूक (An owl)। (४) बीरबहूटी, इन्द्रगोप कीट। (Scarletfly).

अरूसक दर पर्दह āarúsak-dar-pardah }
अरूसक पसे पर्दह āarúsak-pase-pardah }
–फ़ा० }
काकनज, राजपुत्रिका। (Physalis alkekenji, *Linn.*) देखो–काकनज।

अरूसा arúsá–हिं० पुं० अड़ूसा। (Adhatoda vasika.)

अरूसा ग़ारस āarúsá-ghárasa–अ० कञ्चुक, साँप की केचुली।

अरेआलु areálná–अश्वत्थ, पीपलवृक्ष। (Ficus religiosa.) फा० इं० ३ भा०।

अरेक गोल areka-gol–कों० काम रूप–हिं०, बं०। (Ficus benjamina.)

अरेकिक एसिड arachic acid–इं० }
अरेकिडिक एसिड arachidic acid, *Allen.* }
मूँगफल्यम्ल, मूँगफली का तेजाब। फा० इं० १ भा०।

अरेकिस हाइपोजिया arachis hypogæa, *Lam.*–ले० मूँगफली, चिनिया–बदाम, विलायती–मूँग। (Ground nut, Peanut, Monkey nut.) फा० इं० १ भा०

अरेकू arekú–ता० काञ्चनार, कचनाल, अरता। (Bauhinia racemosa, *Lam.*) मेमो०।

अरेकोलीनी हाइड्रोब्रोमास arecolinæ hydrobromas–ले० दे० मूँगफली।

अरेङ्गा सैकेरिफेरा arenga saccharifera, *Labill.*–ले० नीरौक–बर०। इसका माण,

शर्करा तथा तंतु खाद्य और व्यवहार कार्य में आते हैं। मेमा०।

अरेबिक एसिड arabic acid-इं० अरबिकाम्ल। फा० इं० १ भा०।

अरेबियन कॉस्टस arabian costus-इं० कूट, कुष्ठ-हिं०। पाचक-बं०। (Saussurea lappa, *Clarke.*)। फा० इं० २ भा०।

अरेबियन जस्मिन arabian jasmine-इं० बेला-हिं०। वार्षिकी-सं०। (Jasminum sambac.)

अरेबियन मिर्ह arabian myrrh-इं० बो(बो)ल-हिं०, बं०, गु०। (Balsamodendron, *Sp.*) फा० इं० १ भा०।

अरेबियन लेवेण्डर arabian lavender-इं० धारू-हिं०। उस्तुखुद्दूस (Lavandula stœchas, *Linn.*)

अरेबियन सेना arabian senna-इं० सनाय् जबली, सनाय् मक्की। (Cassia angustifolia, *Vahl.*) फा० इं० १ भा०। सनाय विशेष।

अरेबीस चाइनेन्सिस् arabis chinensis-ले० एक पौधा विशेष।

अरेयल areyal-मल० पीपल वृक्ष, अश्वत्थ। (Ficus religiosa.) इं० मे० मे०।

अरेलिया aralia-इं० तापमारी। गिन-सेङ्ग-चो०। फा० इं० २ भा०।

अरेलिया एकीमाइरिका aralia achemirica, *Dene.*-ले० बनखोर, चुरियल-पं०। मेमा०।

अरेलिया गिल फॉय्लिया aralia guilfoylia-ले० तापमारी-हिं०। गिन्-सेंग-चो०। फा० इं० २ भा०।

अरेलिया स्युडोगिन्सिङ्ग aralia pseudoginseng, *Benth.*, Wall., Pl., As., *Rar.*, t., *137*-ले० तापमारी-हिं०। गिन्सेंग-चो०। फा० इं० २ भा०।

अरेलिएसीई araliaceæ-ले० तापमारी वर्ग।

अरोकदन्तः aroka-dantah-सं० त्रि० कृष्णदन्त, काले दाँत वाला। वै० निघ०।

अरोग aroga-हिं० वि० [सं०] रोग रहित। नीरोग।

अरोगी arogí-हिं० वि० [सं०] जो रोगी न हो। नीरोग। चंगा।

अरोच arocha-हिं० संज्ञा० पुं० [सं० अरुचि] रुचि का अभाव। अनिच्छा। त्याग।

अरोचकः arochakah-सं० पुं० } [त्रि०
अरोचक arochaka-हिं० संज्ञा पुं० }
जो रुचे नहीं। अरुचिकर। (Disagreeable)। ना मर्ग़ूब-अ०।] एक रोग जिसमें अन्न आदि का स्वाद मुँह में नहीं मिलता। अरुचिरोग।

संस्कृत पर्याय—अरुचिः, अश्रद्धा, अनभिलापः। रा०।

डिसलाइक ऑफ फोर-फूड Dislike of forefood, डिसगस्ट फॉर फूड Digust for food, डिसरेलिश Disrelish, अवर्शन avertion-इं०।

निदान

यह दुर्गंधयुक्त और घिनौनी चीज़ें खाने और घिनौना रूप देखने तथा त्रिदोष के प्रकोप से उत्पन्न होता है। लिखा है—

"वातादिभिः शोक भयाति लोभ (भयातिलोभ-भा०) क्रोधैर्मनोघ्नाशनरूपगन्धैः। अरोचकाः स्युः परिहृष्ट दन्तः कषाय वक्त्रश्च मतोऽनिले न ॥" (मा० नि०। भा० प्र०)

अर्थ-वात, कफ, शोक,भय (भयरोग), अत्यंत लोभ,क्रोध,अप्रिय भोजन तथा बुरे रूप का दर्शन और दुर्गन्ध इन सब कारणों से मनुष्यों के अरुचि रोग उत्पन्न होता है। वात की अरुचि में रोगी के दन्तहर्ष होता और मुख कपैला रहता है। अरोचक के प्रधान पाँच भेद हैं—

(१) वातज, (२) पित्तज, (३) कफज, (४) संनिपातज और (५) शोकादि से उत्पन्न अर्थात् आगन्तुज।

लक्षण

(१) वातारोचक—अम्ल पदार्थ के भक्षण

से जिस प्रकार दंतहर्ष होता है उसी प्रकार दंत हर्ष होना और मुख का कषैला रहना। ये लक्षण वातजारोचक में होते हैं।

(२) पैत्तिकारोचक–पित्तकी अरुचिसे रोगी का मुख तिक्त, खट्टा, बेरस (बेस्वाद) और दुर्गन्धयुक्त होता है।

(३) श्लैष्मिकारोचक—कफ की अरुचि से खार, मीठा, पिच्छिल, भारी तथा शीतल (मुख) और बंधा सा रहता है जिससे खाया नहीं जाता और मुख कफ से लिपा रहता है। मा० नि०। (दुर्गन्धयुक्त और कफ से स्निग्ध रहता है-भा०)

(४) शोकादिजन्य (वा आगन्तुज)अरोचक— शोक, भय, अत्यंन्त लोभ और क्रोध, अप्रिय गंधसे उत्पन्न हुई अरुचिमें मुख स्वाभाविक अर्थात् जैसा का तैसा रहता है।

(५) सान्निपातिकारोचक (त्रिदोषज)- इस अरुचि में रोगी का मुख वातादि जनित तिक्त, अम्ल और लवण आदि अनेक रस युक्त जान पड़ता है।

वातादि भेद से अरोचक के अन्य लक्षण

वातज अरुचि में वक्षःस्थल में शूल के समान पीड़ा होती है। पित्तजन्य अरुचि में शरीर में, हृदय में चोषने की सी पीड़ा, दाह, मोह और प्यास होती है। कफज अरुचि में कफस्राव होता है। त्रिदोषज अरुचि में अनेक प्रकार की पीड़ा और मन में विकलता, मोह, जड़ता तथा शोक और भयादि जन्य आगन्तुक अरुचि में सब लक्षण होते हैं।

क्षुधा होने पर भी जब आहार का सामर्थ्य न हो तब उसको अरुचि कहते हैं। अन्न खाने की इच्छा होने पर भी जब खाया हुआ अन्न बाहर निकल आए अर्थात् मेदा उसको स्वीकार न करे तथा अन्नके श्रवण, स्मरण, दर्शन, गंध एवं स्पर्शन से जिसे घृणा होजाए उसे भक्तद्वेष कहते हैं। चरक तथा सुश्रुत के मत से इन तीनों प्रकार के रोगों का समावेश अरोचक शब्द के अन्तर्गत होता है, यथा—

प्रक्षिप्तन्तु मुखे चान्नं यत्र नास्वादते नरः।
अरोचकः स विज्ञेयो भक्तद्वेषमतः शृणु॥
चिन्तयित्वा तु मनसा दृष्ट्वा स्पृष्ट्वा तु भोजनम्।
द्वेषमायाति यो जन्तुर्भक्तद्वेषः स उच्यते॥
कुपितस्य भयार्त्तस्य तथा भक्त विरोधिनः।
यत्र नान्ने भवेच्छ्रद्धा स भक्ताच्छन्द उच्यते॥

॥ वृन्द भोजः॥

अर्थ—मनुष्य को जब मुख में डाले हुए अर्थात् खाए हुए अन्न का स्वाद नहीं मिलता, वह मीठा नहीं लगता, तब उसको अरोचक जानना चाहिए। अब भक्तद्वेष के सम्बन्ध में कहते हैं; सुनो—भोजन के मनमें चिन्तन करने से, देखने तथा छूने से, जिस मनुष्य को घृणा हो जाती है उसको "भक्तद्वेष" कहते हैं। क्रोधित भय से पीड़ित तथा जिसको अन्न से द्वेष हो वह और जिसकी अन्न से श्रद्धा न हो उन्हें 'भक्तच्छंद' कहते हैं।

चिकित्सा (सामान्य)

भोजन से पहिले लवण और अदरक मिलाकर भक्षण करना सदा पथ्य है। यह रुचिकारक, अग्नि-दीपक तथा जिह्वा एवं कंठ की शुद्धि करता है। यथा—

भोजनाग्रे सदा पथ्यं लवणार्द्रक भक्षणम्।
रोचनं दीपनं वह्नेर्जिह्वा कण्ठ विशोधनम्॥

॥ भा० म० खं० ॥

अथवा अदरक के रस को मधु के साथ मिला कर योजित करें। यह अरुचि, श्वास, कास, प्रतिश्याय और कफ नाशक है। यथा—

शृंगवेर रसं वापि मधुना सह योजयेत्।
अरुचि श्वासकासघ्नं प्रतिश्याय कफापहम्॥

॥ भा० ॥

अथवा पक्की इमली और श्वेत शर्करा को शीतल जल में मल कर कपड़े से छान लें, फिर उसमें इलायची, लवंग, कपूर और मरिच के बारीक चूर्ण को बुरक कर पानक प्रस्तुत करें। इसके मुख में धारण करने से यह अरुचि का नाश करता और पित्त को प्रशमित करता है।

दोषानुसार चिकित्सा

वातज अरोचक में मटर, पीपल, वायविडंग द्राक्षा, सेंधानमक और सोंठ इनके चूर्ण के साथ प्रसन्ना नाम वाली मदिरा का पान करें अथवा इलायची भार्गी, जवाखार, हींग डालकर घृत के साथ पान करें। अथवा वच का क्वाथ पिलाकर वमन कराएँ।

पैत्तिक अरोचक में गुड़ का पानी मिलाकर वमन कराएँ अथवा खांड, घृत, सेंधानमक और मधु मिलाकर चाटें।

कफज अरोचक में नीम का क्वाथ मिलाकर वमन कराएँ। इसके अतिरिक्त अजवाइन और अमलतास का काढ़ा पिलाएँ अथवा मधु के साथ तीक्ष्ण अरिष्ट और मधु के साथ माध्वीक नामक मद्य पिलाएँ और उपर्युक्त मटर आदि के चूर्ण को गरम जल के साथ सेवन कराएँ अथवा निम्न चूर्ण का प्रयोग करें।

इलायची	१ भाग
दालचीनी	२ भाग
नागकेशर	३ भाग
चव्य	४ भाग
पीपल	५ भाग
सोंठ	६ भाग

निर्माण-विधि—इन सब का चूर्ण कर सबके बराबर शर्करा मिलाकर सेवन करें।

गुण—इससे मुखमें थूक भरना, अरुचि, हृच्छूल, पार्श्ववेदना, खाँसी, श्वास, और कंठ के रोग नष्ट होते हैं।

(२) अजवाइन, इमली, अम्लवेत, सोंठ, अनार और बेर इनको १–१ तो० लेकर चूर्ण कर इसमें ४ पल मिश्री मिलाएँ। धनियाँ, संचल-नमक, कालाजीरा और दालचीनी प्रत्येक १–१ तो०, पीपल सौ और काली मरिच दो सौ इन सब का चूर्ण उक्त चूर्ण में मिलाएँ।

उपयोग—अत्यंत रुचिकर, ग्राही, हृदय को हितकारी होता है तथा विबंध खाँसी और हृदय तथा पसली का दर्द, प्लीहा, अर्श और ग्रहणी रोग को नष्ट करता है। (वा० चि० अ० ५)

अरोचक रोग में प्रयुक्त होने वाली अभिश्रित औषधें

अनार, इमली, तालीसपत्र, आमला, कपित्थ (कैथ), तक्र, कमल फूल, (Gentiana kurroo; *Royle.*), कोशिया (Quassia excelsa) और सोडियम के लवण तथा योग।

मिश्रित औषधें

यमा(वा)नी षा(खा)ड़(एड)व, कलहङ्कस, अम्लीकापान (तिन्तिडिपानक), रसाला, आर्द्रक-मातुलुङ्गावलेह, सुधानिधिरस, सुलोचनाभ्र, दाड़िमादिचूर्ण और लवंगादिचूर्ण, शिखरिणी (भीमसेनकृत), द्राक्षासव, कपित्थाष्टक चूर्ण, पिप्पल्यरिष्ट, वड़वानल चूर्ण और तालीसपत्रादि चूर्ण।

अरोचक में पथ्यापथ्य

पथ्य—वातजारोचक में वस्ति, पित्तज में विरेक (जुल्लाब) तथा कफज अरोचक में वमन और सर्व दोषों से उत्पन्न अर्थात् सान्निपातिक अरोचक में सब कामों की सिद्धि के लिए हर्षण क्रिया करना हित है। भा०।

बलानुसार वस्ति, विरेचन, वमन, धूमपान तथा कवल धारण और तिक्त वा कषैले काष्ठ के दातून से दंतघर्षण करना एवं भाँति भाँतिके अन्न पान का सेवन हितकारक है। गोधूम (गेहूँ), मूँग, लाल शालि व साठी का चावल, शूकर, बकरा तथा खरगोश का मांस, चेंग, भपांड, मधु-रालिका, इल्लिश (हीलसा), प्रोष्ठी (शफ़री), खलेश, कवयी (सुम्भा) और रोहित आदि मछली का मांस, कुष्मांड, नाड़ी शाक, नवीन मूली का शाक। वार्ताकु (भंटा), शोभाञ्जन, (सहिंजन), मोचा (कदली), अनार, भव्य (कमरख का फल), पटोल, रुचक (बीजपूर), घृत, दुग्ध, बाल (ह्रीवेर), ताल (तालीशपत्र), रसोन (लह-सुन), सूरण, द्राक्षा, रसाल (आम), मलद (लवंग), निम्ब, काँजी, मद्य, शिखरिणी, दधि, तक्र, आर्द्रक, शीतलचीनी, खजूर, पियाल (चिरौंजी), तिन्दुक, विकङ्कत, कपित्थ, बेर, ताल, अस्थिमज्जा, कपूर, मिश्री, हरीतकी, अज-

आइन, मरिच, रामठम् (हींग), मधुर, अम्ल, तथा तिक्त पदार्थ, देहमार्जनी अरुचि रोगीके लिए ये द्रव्य हितकारक अर्थात् पथ्य हैं। अपथ्य - कास, उद्गार (डकार), क्षुधा, नेत्रवायु तथा वेगों का रोकना, अहृद्य अन्न सेवन, रक्तमोक्षण, क्रोध, लोभ, भय, दुर्गन्ध रूप का सेवन अरुचि रोगी के लिए अपथ्य हैं।

अरांडिस arodis-अरण्ड चिकरम्मी-बं०। बांता, पोमा-आसा०।

अरोहन arohana-हिं० संज्ञा पुं० दे०—आरोहण।

अरोहना arohaná-हिं० क्रि० अ० [सं० आरोहण] चढ़ना, सवार होना।

अरोही arohí-हिं० वि० [सं० आरोही] सवार होने वाला।

संज्ञा पुं०[सं० आरोही] आरोही, सवार।

अरंघुषः aranghushah-सं० पुं० तुम्बा (कड़वी तुम्बी)। अथर्व०। सू० ४।४। का० १०।

अर्कः arkah-सं० पुं०
अर्क arka हिं० संज्ञा पुं० } (१) आक, आकन्द, मन्द(द)ार-हिं०। आकन्द गाछ-बं०। रूइ-मह०। अक्के-क०। जिल्लेडु-चेट्टु-तै०। (Calotropis gigantea., syn. Asclepias gigantea.) रा० नि० व० ११। भा० पू० १ भा०। मद० व० १। (२) ताम्र, तामा, ताँबा। Copper (Cuprum.) मे० कत्रिकं०। त्रैलोक्यडम्बर रस। बं० नित्र० वा० व्या० त्रि० चिन्तामणि रस। (३) स्फटिक, फिटकिरी। Alum (Alumen.) मे० कत्रिकं०। (४) अरुणार्क, लालमन्दार। (Calotropis gigantea, the red var. of-) प० मु०। भा० पू० १ भा०। (५) आदित्य पत्र पुष्प, आदित्यभक्ता, हुलहुल्। (Cleome viscosa, *Linn.*)। रा० नि० व० ४। "अर्को रक्तपुष्पः प्रसिद्धः" । सु० सू० ३७ अ० अर्कादिव०। ३६ अ० शिरो० चि०। (६) यन्त्र द्वारा परिस्रुत किया हुआ द्रव्य सारांश।

देखो—अर्क या अरक़। आरक-बं०। (Aqua)। (७) सूर्य (The sun)। (८) किसी चीज का निचोड़ा हुआ रस। रौंग स्वरस। Juice (Succus) देखो-अरक़।

वि० [सं०] पूजनीय।

अर्क arqa
सहर sahra } -अ० अनिद्रा, निद्रानाश, नींद न आने का रोग-हिं०। पर्विजिलियम (Pervigilium), इन्सॉम्निया(Insomnia) -इं०। देखो-सहर।

अर्क áark-अ० आर्त्तवमती, ऋतुमती होना, स्त्री का मासिकधर्म होना, ऋतु स्नान करना। (Menstruation)

अर्क áarq-नज्द० (१)शुष्क वा अर्धपक्व छुहारा (Dried or half matured date)। -अ० (२) भपका (वारुणीयन्त्र) द्वारा परिस्रुत वारि। निर्मल परिस्रुत वारि जो औषधों से स्रवण क्रिया द्वारा प्राप्त होता है। वह पानी जो बीज, मूल, पुष्प और पत्र आदि से विशेष विधि द्वारा प्राप्त किया जाता है। अर्कः-सं०। अर्क -हिं०। डिस्टिल्ड वाटर Distilled water.-इं०। एका डिस्टिलेटा Aqua distillata.-ले०। अरक़-अ०।

नोट—अर्क खींचने में जिस क्रिया का अवलम्बन किया जाता है उसको स्रवण (चुआना) विधि कहते हैं। इसी विधान द्वारा शुद्धासव एवं अतर भी प्राप्त किए जाते हैं। और जिस यन्त्र द्वारा उक्त क्रिया सम्पन्न होती है उसे नाड़ीयंत्र वा वारुणी निर्माण में प्रयुक्त होने के कारण वारुणीयंत्र कहते हैं। पूर्ण परिचय हेतु क्रम में उन शब्दों के सम्मुख अवलोकन करें।

अर्क खींचने का संक्षेप इतिहास—

आर्यों के उन्नति काल में सन्धान विधि द्वारा फलों और कतिपय वनस्पतियों के आसव प्रस्तुत किए जाते थे। परन्तु, क्रमशः बिना सन्धानके ही वारुणीयंत्र द्वारा बीज, पत्र एवं काष्ठ का प्रभाव

जल में परिणत होने लगा। आर्यों का यह ज्ञान अत्यन्त प्राचीन है। अस्तु, इस विषय में कईएक स्वतन्त्र ग्रंथ भी आज हमें उपलब्ध होते हैं।

इसका बड़ा रस्म ईरानी हकीमों और सबसे अधिक पश्चात् कालीन वैद्यों तथा भारतीय हकीमों में पाया जाता है।

हेतु (१) ओषधियों के सूक्ष्म प्रभाव-कारी अंश का पृथक् करना। (२) ओषधियों के बड़े परिमाण के प्रभाव को दोबारा तिबारा स्रवण करने से संक्षेप मात्रा में लाना और (३) उपयोग की सुविधा के लिए। ये ही कारण अर्क स्रवण करने के मूलाधार कहे जा सकते हैं; गोया अर्क एक प्रकारका सार है।

नोट—अर्क खेंचते समय सौंफ़, अजवायन आदि के उड़नशील तैल जलके उष्ण (१०० ° श) वाष्पों के साथ वाष्पीभूत हो जाते हैं।

यह एक अत्यन्त गवेषणात्मक विषय है कि आया जो द्रव्य अर्क चुआने में व्यवहृत होते हैं; उन सबके प्रभावात्मक अंश परिस्रुत द्रव में आ जाते हैं वा नहीं? आयुर्वेदीय अर्कग्रंथों एवं यूनानी क़राबादीनों में अर्क के बहुसंख्यक योग मिलेंगे, जिनमें अमूल्य प्रभाव का होना बतलाया गया है। परन्तु परीक्षा काल में प्रत्येक अर्क से अभीष्ट लाभ नहीं प्राप्त होता। बहुत से तो ऐसे हैं। जिनमें सिवा समय नष्ट करने के और कोई परिणाम नहीं, अस्तु, इस विषय में अभी काफ़ी अनुसंधान करने की आवश्यकता है। आवश्यकता होने एवं अवसर मिलने पर गवेषणापूर्ण तथा अपने अनुभवात्मक लेख द्वारा कभी इस विषय पर उचित प्रकाश डालने का प्रयत्न किया जाएगा।

अवयव—अर्क के योगों को ध्यानपूर्वक देखने से यह ज्ञात होता है कि उनमेंप्रायः निम्न लिखित अवयवही मिश्रित रूप में पाए जाते हैं, यथा—

(१) बीज, (२) पत्र, (३) गिरी (मींगी), (४) खनिज (पाषाण आदि), (६) कस्तूरी तथा अम्बर, (७) पुष्प, (८) त्वक् (६) काष्ठ, (१०) जड़, (११) मांस-रस (यख़्नी), (१२) माउज्जुब्न (दूध का फाड़ा हुआ पानी), (१३) फल तथा (१४) निर्यासवत् पदार्थ।

औषध एवं जल की मात्रा—सामान्य बाजारू अत्तार छटाँक भर औषध में दो सेर तक अर्क प्रस्तुत कर लेते हैं। यह अत्यन्त निर्बल होता है। अस्तु दस पंद्रह तोले से १ सेर अर्क निकालना श्रेष्ठतर है

यदि पाव भर औषध हो और दो सेर अर्क निकालना हो, तो लगभग ४ सेर पानी में औषध भिगोएँ, तब दो सेर अर्क निकलेगा।

यदि अर्क में दुग्ध भी सम्मिलित हो तो उसको प्रातःकाल अर्क निकालने के समय मिलाना चाहिए।

यदि अर्क के योग में कस्तूरी, केशर तथा अंबर आदि के समान सुगंधित द्रव्य हों, तो उनको पोटली में बाँध कर (वारुणी यन्त्र द्वारा अर्क चुआने की दशा में) टोंटी के नीचे इस प्रकार लटकाएँ कि अर्क उस पर बूंद बूंद पड़े और फिर उससे टपककर बर्तन में एकत्रित हो। परन्तु, यदि भभका द्वारा अर्क चुआना हो तो नैचे के मुख में रखना चाहिए।

यदि अर्क में गिरियाँ पड़ी हों तो उनका शीरा निकाल कर अर्थात् उनको पानी में पीस छान कर डालना चाहिए।

अर्क के समाप्त होने के लक्षण—

इस बात का जानना अत्यन्त कठिन है कि अर्क समाप्त हो गया या नहीं। अस्तु इस बात के जानने के लिए कुछ कौड़ियाँ (कपर्दिकाएँ) डेगमें डाल देनी चाहिएँ। जिस समय जल समाप्त होने के समीप होगा, ध्यान देकर श्रवण करने से कौड़ियों का शब्द ज्ञात होगा। उस समय तत्क्षण अग्नि देना बन्द करदें।

इसकी एक परीक्षा यह भी है कि जब अर्क समाप्त होने को होता है तब वह अत्यल्प और विलम्ब से आता और जल की ध्वनि कम हो जाती है।

नोट—अर्क स्रवण विधान के लिए स्रवण

और विविध यंत्र विधान अर्थात् तत्साधनोपकरण, तन्निर्माण-क्रम, इतिहास एवं उपयोग प्रभृति हेतु देखिए—वारुणी (नाड़िका) यन्त्र । आयुर्वेदीय अर्कों के लिए देखिए अर्कप्रकाश ।

(१) अर्क़—उस्तोख़ुद्दूस १२ तो०, गुलाब ५ तो०, मुनक्का, गावज़ुबान प्रत्येक १०तो०, हलेला स्याह पावभर, धनियाँ शुष्क तीनपाव (ऽ॥।) और पोस्त हलेलाज़र्द १ सेर । सम्पूर्ण ओषधियों को तीन दिन-रात जल में भिगोकर ७ सेर अर्क खींचें ।

गुण—वातरोग तथा शिरोरोग को नष्ट करता है, हृदय तथा आमाशय को बल प्रदान करता और शिर की ओर वाष्पारोहण को रोकता है । इ० अ० ।

(२) अर्क़—उपर्युक्त गुणधर्म युक्त है ।

योग—गुलगावज़ुबान २ तोला, गावज़ुबान, गुलाब, कासनी बीज प्रत्येक २ तो०, शाहतरा ३ तो०, उस्तोख़ुद्दूस, अफ़्तीमून (पोटली में बाँधकर) प्रत्येक ६ मा०, बिल्लीलोटन, बस्फ़ाइज-पिस्ती, दरूनज-अक़्रबी, हजरअर्मनी, गिले-अर्मनी, गुलसेवती प्रत्येक ७ मा०, पोस्त हलेला काबुली, धनियाँ शुष्क, गुल नीलोफ़र प्रत्येक १०॥ मा० । इनको दो रात-दिन जल में भिगोए रक्खें । तदनन्तर ५ सेर अर्क़ खींचें ।

(३) अर्क़—गुलकेतकी १ तो०, गुलसेवती, गुल गावज़ुबान प्रत्येक २ तो०, गुलेनीलोफ़र, धनियाँ शुष्क प्रत्येक १० तो० । २ रात-दिन जल में भिगो-कर १० सेर अर्क़ खींचें । उष्ण प्रकृति वाले के लिए इसमें कपूर की वृद्धि करें, इससे बहुत लाभ होता है । कभी कभी कपूर के साथ वंशलोचन सफ़ेद भी यथोचित मात्रा में सम्मिलित किया जाता है अथवा उक्त अर्क़ का "क़ुर्सकाफ़ूर" या "क़ुर्सतबाशीर" के साथ उपयोग किया जाता है ।

गुण—हृदय एवं मस्तिष्क को बल प्रदान करता है ।

(४) अर्क़—हकीम काज़मअलीख़ाँ सदा यह अर्क तैयार करते थे । दो बार लेखक के अनुभव में भी आचुका है और मालीख़ौलिया (Melancholia) के सम्पूर्ण भेदोंमें लाभप्रद है । उक्त क़राबादीन (अम्म मह़्ज़ूम) से उद्धृत है ।

योग—कीकर त्वक् धोकर साफ किया हुआ १० सेर, गुड़ १ मन (शाहजहानी), पानी ४ मशक । इन सबको मटके में डालकर भूमि में गाड़ दें और उसके नीचे किञ्चित् घोड़े की लीद डाल दें । जब लाहन उठ आए अर्थात् सन्धानित हो जाए तब ३० सेर एकाग्नीय अर्क खींचें । पुनः लौंग ६ मा०, जायफल, जावित्री, दारचीनी तुन्द व शीरीं, इलायची छोटी और खस प्रत्येक १तो०, चन्दन चूर्ण २ तो०, गुलाब५ तो० । इन ओषधियों को एक रात-दिन उक्त अर्क़ में भिगो रक्खें । दूसरे दिन २० सेर द्व्याग्निकार्क खींचें । पुनः उक्त लौंग, जावित्री प्रभृति ओषधियों को अर्ध मात्रा में लेकर द्व्याग्निकार्क में एक रात दिन भिगोएँ और दूसरे रोज १२ सेर त्र्याग्निकार्क खींचें । यदि ३ मा० गुलाब का इत्र भपके में डाल दें तो उत्तम होता है । कुछ दिन बाद उपयोग में लाएँ ।

गुण—हकीम मुहम्मद जाफ़र अक्बराबादी उक्त अर्क़ को प्रस्तुत कर ४० दिवस पश्चात् ख़फ़क़ान (मूर्च्छा रोग), हृदय की निर्बलता, मालीख़ौलियाए मराक़ी और शारीरिक निर्बलता की दशा में गुलाब और मिश्री के साथ अग्नि लगाकर शीतल होने पर पिलाते थे । इसकी विधि निम्न है—

मद्य १० तो० को चीनी के प्याले में डालकर मिश्री और गुलाब प्रत्येक ५ तो० को परस्पर मिलाएँ और शराब को आग लगा कर गुलाब में घोली हुई मिश्री उसमें डाल दें, और चमचा से चलाएँ जिससे अग्नि बुझ जाए । शीतल होने पर पीएँ और ४-५ घड़ी बाद भोजन करें । इ० अ० ।

अर्क़ अजवाइन aarq-ajaváin-अ०, फ़ा० अजवाइन का अर्क, यमान्यर्क ।

निर्माण-विधि—तुख़्म अजवाइन १॥ पौंड, जल ३ क्वार्ट० । अर्क की विधि से ४ घंटे तक अर्क खींचें ।

मात्रा व उपयोग विधि—एक एक आउंस (२॥ तो०) की मात्रा में थोड़ी थोड़ी देर पश्चात् उपयोग करें।

गुणधर्म—आक्षेपयुक्त उदरशूल में लाभदायक तथा परीक्षित है।

अर्क अजवाइन मुरक्कब (जदीद) āarq-ajaváin murakkab 'jadíd'-अ० नूतन मिश्रित यमान्यर्क।

निर्माण-विधि—दारचीनी, अजवाइन देशी प्रत्येक २० तो०, गावज़ुबान १ सेर। सबको २४ घंटे तर रखकर अर्क खींचें और पुनः इस अर्क में उपर्युक्त औषध २४ घंटे तर करके दुबारा अर्क खींचें।

माात्रा एवं उपयोग-विधि—एक एक तो० यह अर्क सिकञ्जबीन सादा १ तो० मिलाकर सवेरे-शाम दिन में तीनबार या यथा आवश्यक चार चार घंटे के अन्तर से पिलाते रहें।

गुणधर्म—विशूचिका में लाभदायक है। वमन तथा अतिसार को लाभ करता है। हर्षजनक एवं हृद्य है।

अर्क अजवाइन सादह् 'जदीद' āarq-ajaváin sádah 'jadíd'-अ०, फ़ा० नूतन सामान्य यमान्यर्क।

निर्माण-विधि—अजवाइन ऽ२॥ सेर रात को भिगोकर सवेरे १० बोतल अर्क खींचें। पुनः इसमें २॥ सेर अजवाइन डालकर रात को तर कर दें, और सवेरे १० बोतल अर्क खींच लें।

मात्रा व उपयोग-विधि आमाशय तथा आंत्ररोग में जवारिश बम्बासह् (जावित्री) ५ मा० के साथ और यकृद्रोग में माजून दबीदुलवर्द के साथ यह अर्क १॥ तो० की मात्रा में पी लें।

गुण-धर्म—आमाशय शूल, अजीर्ण, उदराध्मान, जलोदर तथा यकृत की शीतलता के लिए यह अर्क अत्यन्त लाभदायक एवं शीघ्र प्रभावकारी है।

अर्क अजीब āarq-āajib-अ० विलक्षणार्क।

निर्माण-विधि—सत अजवाइन, सतपुदीना, कपूर प्रत्येक एक तो० सम्पूर्ण औषधों को शीशी में डालकर धूप में रक्खें, अर्क तैयार हो जाएगा।

मात्रा व सेवन-विधि—४-५ बूंद, विशूचिका, उदरशूल तथा ज्वर में अर्क बादियान १२ तो० के साथ या बताशा या शर्करा में मिला कर बरतें। विशूचिका में एक-एक घंटा बाद ऐसी खुराक दी जाए। जब वमन तथा अतिसार बन्द हो जाएँ तब औषध देना बन्द कर दें। यदि एक-दो मात्रा से आराम न हो तो स्थानीय चिकित्सक को बुलाएँ। किन्तु, विशूचिका के दिनों में स्वास्थ्यरक्षा हेतु एक मात्रा प्रयोग में लाया जाए। शिरःशूल में कनपुटी (शंख) पर लेप करें और चार बूंद ताजे पानी के साथ पी लें। दाढ़ या दंष्ट्रशूल हो तो रूई का फाया इसमें तर करके वेदना स्थल पर लगाएँ। वृश्चिक एवं ततैया के काटने पर भी इसे दंश स्थान पर लगाएँ।

गुणधर्म—कई रोगों पर तात्कालिक लाभ प्रदर्शित करता है। संक्रामक तथा आहार-विकार जन्य विशूचिका के लिए बहुत गुणदायक है। प्रत्येक भाँति की वेदना चाहे वह कान में हो चाहे दाढ़ में या आमाशय में हो, शिर में हो अथवा किसी भी स्थानमें हो तुरंत नष्ट होती है। आमाशयिक विकार या आहार जन्य विकार के कारण जो ज्वर हो जाता है उसको यह दूर करता है। ति० फ़ा० १ भा०।

अर्क अञ्जबार āarq-anjabár-अ० अञ्जबार मूल, अञ्जबार की जड़-हिं०। (Pyrethri Radix.)

अर्क अनन्नास जदीद āarq-anannás-jadíd-अ० नूतन अनन्नासार्क।

निर्माण-विधि—त्वचायुक्त अनन्नास १२ अदद, सौंफ १ सेर, प्याज श्वेत २ सेर सब को एक साथ देग में डालकर ऊपर इतना पानी डालें कि चार अंगुल ऊपर रहे। तदनन्तर यथोचित विधि से अर्क खींचें। मात्रा व सेवन-विधि—

८ तो० अर्क में मिश्री ?.? शर्बत बज़ूरी २ तो० सम्मिलित करें।

गुण-धर्म—वस्त्यश्मरी के लिए अत्यन्त लाभदायक है।

अर्क़ अनीसूँ āarq-anísún—अ० अर्क़ बादियान रूमी, रूमी सौंफ का अर्क़। एक्वा एनिसाई (Aqua Anisi.)-ले०। देखो-**अनीसूँ**।

अर्क़ अफ़ीम āarq-afím } —अ० अफ़ीम का
अर्क़ अफ़्यून āarq-afyún }
अर्क़। एक्वा ओपियाई (Aqua Opii.) —ले०। देखो—**अफ़ीम** (वा पोस्ता)।

अर्क़ अफ़्सन्तीन āarq-afsantín—अ० अफ़्सन्तीन रूमी आध सेर को अर्क़ गुलाब ३ सेर में रात को भिगो दें। सबेरे २ सेर पानी और डाल कर ४ बोतल अर्क़ खींचें। पुनः उक्त अर्क़ में अफ़्सन्तीन रूमी आध सेर तथा अर्क़ गुलाब ३ सेर और पानी दो सेर डालकर दोबारा ४ बोतल अर्क़ खींचें।

मात्रा व सेवन-विधि—डेढ़ तोला यह अर्क़, अर्क़ सौंफ ६ तो० और शर्बत कसूस २ तो० सम्मिलित कर पिलाएँ।

गुण-धर्म—यकृद्विकार (शोथ व काठिन्य) के कारण जो ज्वर होता है उसमें यह अर्क़ बहुत गुणदायक सिद्ध होता है। यकृत् का शोधनकर्ता तथा (सांद्र) स्थूल दोषों से शुद्ध कर उसे स्वाभाविक दशा में ले आता है। सामान्य अर्क़ अफ़्सन्तीन से यह कहीं अधिक लाभप्रद एवं शीघ्र प्रभावकारक है। यह अति तीव्र प्रभावकारक है। इस की मात्रा अति न्यून है।

अपथ्य—घृत, तैल और अन्य तैलीय पदार्थ तथा लाल मिर्चों से परहेज करें।

अर्क़ अम्बर āarq-āambar—अ० मजमूआ से उद्धृत है। हृदय व मस्तिष्क एवं उत्तमांगों को बल प्रदान करने के लिए अनुपमेय है। मूर्च्छा को नष्ट करने और शक्ति को पुनरुज्जीवित करने के लिए शीघ्र प्रभावकारक है। अस्तु, कई स्त्रियाँ आर्तवाधिक्य के कारण तथा कई पुरुष अर्श में अत्यधिक रक्तस्राव के कारण अन्तिम दशा को पहुँच चुके थे, किन्तु इस अर्क़ के पीते ही अपनी पूर्वावस्था पर लौट आए। इस अर्क़ के अत्यन्त विस्मयकारक प्रभाव अनुभव में आ रहे हैं।

योग—मिश्क खालिश ४॥ मा०, अम्बर अश्हब, मस्तगी रूमी प्रत्येक ६ मा०, बर्ग रेहाँ नवीन, नागरमोथा, तज, खुश्क धनियाँ, गुले गावज़ुबान गीलानी, अनीसूँ, दरूनज अक़्रबी, पिस्ता बाह्यत्वक् प्रत्येक १ तो० १०॥ मा०, ज़र्नबाद, अगर, कबाबह खन्दाँ, छड़ीला, बालछड़, बहमन सुर्ख़, बहमन सफ़ेद, शक़ाक़ुल मिश्री, तेजपात, दारचीनी, ज़ाफ़रान, लौंग, बूज़ीदान, गुलाब, वंशलोचन सफ़ेद, बड़ी इलायची, छोटी इलायची, दूब, पोस्त उत्रज, अबरेशम कतरा हुआ, श्वेत चंदन प्रत्येक २ तो०, ताज़े विलायती सेब का पानी ऽ॥ (आध सेर आलमगीरी), तुर्श अनार का पानी १ सेर, अर्क़ बेदमुश्क, अर्क़ गावज़ुबान, अर्क़ बादरंजबूयह (बिल्लीलोटन) प्रत्येक २॥ सेर, गुलाब क़िस्म अव्वल। कूटने योग्य औषधियों को कूटें और सब को अर्क़ों के साथ एकत्रित कर रात को सुरक्षित रखें। सबेरे सेब और अनार का पानी सम्मिलित कर देग में डालें तथा अम्बर व मिश्क को नीचे के मुँह में रखकर अर्क़ खींचें।

मात्रा—क़हवे की एक प्याली से ४ प्याली तक।

नोट—चिकित्सक को रोगी की प्रकृति के अनुसार इस अर्क़ में परिवर्तन करना योग्य है। अस्तु, आमाशय पुष्टि हेतु मधुर बिही का पानी १ सेर, तथा उसे उष्णता पहुँचाने एवं बलप्रदान करने के लिए बहारनारंज १ तो० १०॥ मा० और अतिसार को रोकने के लिए गुल सिम्रद या सिम्रद समावेशित करें। इ० अ०।

अर्क़ अम्बर जदीद āarq-āambar-jadíd —अ० नूतन अम्बरार्क़।

निर्माण-विधि- मिश्क ५ मा०, अम्बर ६ मा०, मस्तगी १८ मा०, बर्ग रेहाँ ताज़ा, नागरमोथा (सुअ्द कोफ़ी), धनियाँ शुष्क, गुलेगावज़ुबान, अनीसूँ, दरूनज अक़्रबी, ज़र्नबाद, पिस्ता बाह्यत्वक्, ऊदग़र्क़ी, कबाबचीनी, छड़ीला,

बालछड़, बहमन सुर्ख़, बहमन सफ़ेद, शक़ाक़ुल, दारचीनी, तेजपात, लौंग, बूज़ीदान, गुले सुर्ख़, बंसलोचन, इलायची छोटी तथा बड़ी, अल्फ़ हिन्दी, पोस्त उत्रज, अबूरेशम कतरा हुआ, सफ़ेद चंदन प्रत्येक ४५ मा०, केशर १ तो० ६ मा०, सेब का पानी १ सेर, खट्टे अनार का पानी २ सेर, अर्क़ गावज़ुबान, अर्क़ बेदमिश्क, अर्क़ बादरअबूया प्रत्येक ५ सेर, अर्क़ गुलाब १० सेर। जो औषध कूटने योग्य हैं उन्हें कूटकर रात को अर्कों में भिगोएँ। सवेरे सेबका जल, अम्ल अनार का जल सम्मिलित कर अम्बर व मिश्क पोटली में बाँधकर नीचे के मुँह के भीतर रखें और अर्क़ खींचें। पुनः उपर्युक्त अर्क़ों के स्थान में उक्त अर्क़ में उतनी ही औषधियाँ रात को भिगोकर दोबारा अर्क़ खींचें।

मात्रा व सेवन-विधि—दो तोला यह अर्क़ अन्य उपयुक्त औषध के साथ।

गुण-धर्म—उत्तमांगों को बलप्रद तथा मूर्च्छा में लाभप्रद है। अर्श तथा मासिक स्रावाधिक्य के कारण हुई अशक्तता को दूर कर पुनः शक्ति का सञ्चार करता है और कामोद्दीपक भी है। ति० फ़ा० १ भा०।

नोट—इसी नाम के कुछ अवयव तथा मात्रा की न्यूनाधिकता के सहित कई एक और योग भी हैं जो विस्तार भय से यहाँ नहीं दिए गए।

अर्क़ अम्बर बारीस āarq-ambar-báris —अ० यह अर्क़ आमाशय एवं यकृत को पुष्टि प्रदान करता है, पित्तकी तीक्ष्णता को नष्ट करता तथा क्षुधा की वृद्धि करता है।

निर्माण-विधि—ज़रिश्क गुठली निकाला हुआ ६७५ तो० को २४ घण्टे पानी में भिगो रखें। पुनः उसमें ६ तो० ४॥ मा० लौंग पीसकर समावेशित करें और थोड़ा सिर्कहे अंगूरी (अंगूरी सिर्का) जो ज़रिश्क की चौथाई से अधिक न हो सम्मिलित कर विधि अनुसार अर्क़ खींचें। यदि इसमें थोड़ी सी चना की भस्म मिलालें तो स्वादिष्ट हो जाएगा।

इ० अ०।

अर्क़ अस्वद बारिद āarq-asvad-bárid-अ० उष्ण प्रकृति वालों के लिए उपयुक्त एवं आह्लाद व प्रफुल्लताकारक है। मालीख़ौलिया तथा मराक़ के रोगियों के लिए और जले हुए वायु के लिए लाभदायक है

निर्माण-क्रम—गुड़ ६७॥ सेर, बबूल की छाल ६७५ तो० दोनों को मटके में डालकर इतने जल में भिगोएँ कि तिहाई मटका शेष रहे। तदनन्तर मटके को घोड़े की लीद में गाड़ दें और रख छोड़ें। यहाँतक कि उसमें जोश (संधान) आने के बाद स्थिरता आजाए। इसके बाद अर्क़ खींचें और पुनः उक्त अर्क़ को एक बर्तन में डालें तथा चन्दन का बुरादा, शुष्क धनियाँ प्रत्येक ७॥ तो०, गुलनीलोफ़र १५ तो०, बहेड़े की छाल, आमला गुठली निकाला हुआ प्रत्येक ३७॥ तो०, गुलगावज़ुबान, तुख़्मकद्दू प्रत्येक ४५ तो०, मग़ज़ तुख़्म कद्दू अधकुटा ७५ तो०, तुख़्म कासनी अधकुटा, तुख़्म ख़ुर्फ़ा छिला हुआ, मग़ज़ तुख़्म खीरा अधकुटा प्रत्येक ६० तो०, पोस्त हलेला काबुली, किश्नब बेद (जंगली बेद के फल और फूल) व बहार प्रत्येक ११२ तो० ६ मा०, गुले सुर्ख़ ११। सेर। सम्पूर्ण औषधों को उक्त अर्क़ में २४ घंटे भिगो रखें। तदनन्तर अर्क़ खींचें। अर्क़ खींचते समय अम्बर अशहब ६ मा० नीचे के मुँह में रखें। इ० अ०।

अर्क़ आशोब चश्म āarq-áshob-chashma —अ० चक्षुः शूल नाशक घोल।

निर्माण-क्रम—अर्क़ गुलाब शुद्ध २॥ तो०, सिल्वर नाइट्रेट (रजताम्ल, चाँदी का तेज़ाब, रजतनत्रेत) २ ग्रेन (१ रत्ती) दोनों को मिलाकर नीलवर्ण की शीशी में रखें।

मात्रा तथा सेवन-विधि—दो तीन बूंद दुखते हुए नेत्र में टपकाएँ।

गुणधर्म—हर प्रकार के आँख आने (अभिष्यन्द, नेत्र दुखने) में अत्यन्त लाभदायक है। विशेषतः रोहों (कुक्करों) के लिए और उस दशा में जब कि नेत्र से कीचड़ अधिकता के

साथ निकलता है तब यह अत्यन्त लाभ पहुँचाता है।

अर्क़ आसफ़ āarq-ásaf-अ० बीख़ कबर। (The root of Capparis spinosa.)

अर्क़ आसव āarq-ásava-अ०

निर्माण-क्रम - गुड़ १ सेर, कीकर की छाल १२ सेर, मटके में डालकर अग्नि पर रखें। जब जोश आजाए तब बेलगिरी २० तो०, लोध, अतीस, मोचरस प्रत्येक ४ तो० ८ मा०, पिस्ता वाह्य त्वक्, नागरमोथा, बालछड़, पोस्त तुरञ्ज, ज़रंबाद प्रत्येक २ तो० ४ मा०, चंदन का बुरादा, गुलाब, खस प्रत्येक १० तो०, आमला आधसेर, माजू जौकुट किया हुआ १ तो० २ मा०। सम्पूर्ण औषधों को मिलाकर विधि अनुसार अर्क़ खींच लें।

नोट—द्विआग्नेय बनाना हो तो उक्त औषधों को २४ घंटे मद्य में भिगोकर डालें।

कभी कभी कीकर की छाल ८ सेर, जामुन की छाल २ सेर और सेंभल की छाल २ सेर डाली जाती हैं।

मात्रा और सेवन-विधि—६ तो०, शर्बत हब्बुल् आस २ तो० के साथ व्यवहार में लाएँ।

गुणधर्म—आमाशय-पुष्टिकर तथा आह्लादजनक है एवं आमाशयिक अतिसार के लिए लाभदायक है।

अर्क़ इलायची āarq-iláyachi-अ० बृहदेला-र्क। **निर्माण-विधि**—सवासेर बड़ी इलायची को रात को पानी में भिगोएँ और सवेरे २५ बोतल अर्क़ खींचें।

मात्रा व सेवन-विधि—१०-१२ तो० उपयोग करें।

गुणधर्म—उल्लासकारक तथा हृद्य, विशूचिका वान्ति एवं अतिसार की दशा में लाभदायक और वायुलयकर्त्ता है।

अर्क़ इलायची,-जदीद āarq-iláyachi-,jadíd -नूतनैलार्क। २॥ सेर इलायची को रात को जल में भिगो दें और सवेरे २५ सेर अर्क़ खींचें। पुनः उतनी ही इलायची उक्त अर्क़ में डालकर रात्रि को भिगो रखें और दूसरे सवेरे दोबारा अर्क़ खींचें।

मात्रा व सेवन-विधि—३ तो० आवश्यकतानुसार अनुपान रूप से उपयोग में लाएँ।

गुणधर्म—अर्क़ इलायची के सदृश।

अर्क़ उश्बह् āarq-āushbah-अ० उश्बा का अर्क। **निर्माण-विधि**—उश्बह् मग़रबी सवासेर और चोबचीनी सवासेर को रात्रि में उष्ण जल में भिगोकर सवेरे ४० तो० अर्क़ खींचें।

मात्रा व सेवन-विधि—७ तो० अनुपान रूप से व्यवहार में लाएँ।

गुणधर्म—वायुजन्य रोगों में गुणदायक है। संधिवात, उपदंश और सूज़ाक के लिए लाभदायक है, रक्त की शुद्धि करता एवं फोड़े फुन्सी की शिकायत को दूर करता है।

अर्क़ उश्बह् मुरक्कब āarq-āushbah-murakkab-अ०, मिश्रित उश्बार्क। **निर्माण-विधि**-उश्बह् ३० तो०, बुरादा चोबचीनी, शीशम का बुरादा प्रत्येक एक पाव, गुलबनफ़्सा, गुल नीलोफ़र, गुलनीम, गुलसुर्ख़, गावज़ुबान, शाहतरा, चिरायता, मुंडी, सरफ़ोका, गोखुरू, श्वेतचन्दन का बुरादा, लाल चन्दन का बुरादा प्रत्येक आध पाव, पीली हड़का बक्कल, काबुली हड़ का बक्कल, बर्ग सना, बर्ग हिना प्रत्येक ५ तो० सबको १५ गुने जल में २४ घंटे तर करके जल का दो तिहाई भाग अर्क़ प्रस्तुत करें।

मात्रा व सेवन-विधि—सवेरे शाम दोनों समय ७-७ तो० उक्त अर्क़ में शर्बत उश्बह् या शर्बत चोपचीनी २ तो० सम्मिलित कर पिलाएँ

गुणधर्म—इसमें आश्चर्यजनक रक्तशोधक प्रभाव अन्तर्निहित है। उपदंश, रक्तविकार तथा अन्य वात रोगों में लाभदायक है।

अर्क़ क़त्रान āarq-qatrán-अ० Tar Water (Aqua picis) देखो-क़त्रान।

अर्क़ क़न्दी āarq-qandí-अ० उल्लास एवं प्रफुल्लताजनक प्रभाव में इससे उत्तम तथा स्वादिष्ट कोई दूसरा अर्क़ नहीं। यह हृदय एवं

मस्तिष्क को शक्ति प्रदान करता है, खुमार बिलकुल नहीं लाता और नहीं कोई गंध रखता है, कामोद्दीपन करता एवं आहार का पाचन करता है।

योग व निर्माण-क्रम—गुड़ एक मन जहाँगीरी, कीकर की छाल ८ सेर जहाँगीरी, आवश्यकतानुसार शुद्ध स्वच्छ जल के साथ एक मटके में डाल रखें। संधानित होने पर ३० सेर एकाग्निक अर्क़ खींचें।

अर्क़ कराविय़ह् āarq-karáviyah-अ० कृष्णजीरकार्क। (Caraway water) देखो-स्याहज़ीरा।

अर्ककान्ता arka-kántá-सं० स्त्री० आदित्यभक्ता हुलहुल्। (Cleome viscosa, *Linn.*)-ले०। रा० नि० व० ४। मद० व० १।

अर्क़ काफ़ूर āarq káfúr अ०
अर्क कपूर arka-kapúr-हिं० संज्ञा पुं०

निर्माण-क्रम—(१) कपूर १ ड्राम, जल एक पाइण्ट। कपूर को जल में मिश्रित कर रक्खें।

मात्रा व सेवन-विधि आवश्यकतानुसार यह अर्क एक-एक आउंस की मात्रा में दिन में दो या तीन बार।

गुण धर्म—पाचक और वायुनिस्सारक।

(२) २० ग्रेन (१० रत्ती) शुद्ध कपूर को इतने मद्यसार (रेक्टिफाइड स्पिरिट)में घोलें कि आधा आउंस (१। तोला) हो जाए। पुनः इस घोल में एक ग्रेन परिस्रुत जल क्रमशः मिलाएँ।

मात्रा व सेवन-विधि—१ से २ औंस तक पिलाएँ।

गुण धर्म—विशूचिका एवं उदराध्मान के लिए गुणदायक है।

अर्क़ कासनी āarq-kásani-अ० कासनी का अर्क।

निर्माण-विधि—तुख्म कासनी सवासेर ऽ११, रात को जल में भिगोएँ तथा सवेरे २० बोतल अर्क खींचें।

मात्रा व सेवन-विधि—१२ तो० उपयुक्त औषध के साथ सेवन करें।

गुण-धर्म—रक्त तथा पित्त की तीक्ष्णता को दूर करता है तथा तृष्णाशामक व पित्तज शिरःशूल को लाभ करता है।

अपथ्य उष्ण वस्तुएँ।

नोट—यदि उपर्युक्त अर्क में उतनी कासनी और डालकर दुबारा अर्क़ खींच लें, तो यह और भी तीव्र होगा तथा इसको मात्रा तीन-तीन तो० सवेरे शाम दोनों समय सिकञ्जबीन सादा या शर्बत नीलोफ़र एक तो० सम्मिलित कर पिलाएँ। इसको अर्क़ कासनी ज़ईद कहते हैं। ति० फ़ा १ व० २ भा०।

अर्क़ किब्रीत āarq-kibrít-अ०
अर्क गंधक arka-gandhak-हिं०संज्ञा पुं०

मिट्टी के बर्तन में एक छोटा सा लौह त्रिपाद रख कर उसकी चारों ओर आमलासार गंधकका चूर्ण फैलाएँ और त्रिपाद के ऊपर एक छोटा सा चीनी का प्याला रख दें। तदनन्तर बर्तन के मुख पर चीनी अथवा एलोमिनियम का एक इतना बड़ा कटोरा रक्खें कि वह बर्तनके मुख पर भली प्रकार बैठ जाए। पुनः किनारों को गूँधे हुए आँटे से भली प्रकार बन्द करदें जिसमें अर्क़ वाष्प रूप में बाहर न निकल सके। ऊपर वाले कटोरा मेंठंडा पानी भर दें और नीचे मन्दी मन्दी अग्नि दें। गरम होने पर ऊपर का पानी बदलते रहें। इसी प्रकार घण्टा दो घण्टा तक करें। बाद को अग्नि नरम होने पर बर्तन का मुँह खोलकर प्याली निकालें। उसमें अर्क एकत्रित होगा। इसे शीशी में सुरक्षित रखें।

गुण-धर्म—उचित मात्रा एवं उपयुक्त अनुपान के साथ विविध रोगों में इसका आश्चर्यजनक व लाभदायक वाह्य तथा आन्तरिक उपयोग होता है। जिन सब का वर्णन यहाँ विस्तारभय से नहीं किया गया।

अर्क केवड़ा āarq-kevará-**अ०** केतक्यर्क ।

निर्माण-विधि—केवड़ा की बालें १० अदद जल में भिगोएँ और विधिअनुसार अर्क खींचें ।

मात्रा व सेवन-विधि—५ तो० ऐसेही उपयोग में आता है ।

अपथ्य - उष्ण पदार्थ ।

गुण-धर्म—हृद्य तथा प्रमोदजनक और ऊष्माशामक है। वैकल्य एवं भ्रमनिवारक तथा उत्तमांगों को शक्तिप्रद है ।

अर्क क्रियाज़ूट āarq-kriyázúṭ-**अ०**(Aqua creosoti) । देखो—**क्रियाज़ूट** ।

अर्क क्लोरोफ़ॉर्म āarq-kloroform-**अ०सम्मोहिन्यर्क** । Chloroform water(Aqua-chloroformi) । देखो-**क्लोरोफ़ॉर्म** ।

अर्क खब्सुल्हदीद āarq-khabsulhadíd -**अ०** मण्डूरार्क, मण्डूर का अर्क ।

निर्माण-विधि—(१) पुरातन मण्डूर बारीक किया हुआ १ छं०, पीपल, सुहागा, सोंठ, नौशादर कूटा हुआ प्रत्येक १॥ तो०, पुराना गुड़ आधसेर, मवेज़ मुनक्का १ सेर, घृतकुमारी स्वरस ५ सेर । सम्पूर्ण औषधों को मर्तबान में डालकर उसका मुँह बन्द कर दें और गेहूँ की रास अथवा भूसा में गाड़ दें । ग्रीष्म ऋतु में १५दिवस के पश्चात् तथा शरद् ऋतुमें २१ दिनके बाद निकाल कर ऊपरी जलीय घोल धीरे धीरे छान लें और बोतल में रखें ।

गुण—यकृत नैर्बल्य, प्लीहावृद्धि, पाण्डु तथा शोथ के लिए परीक्षित है ।

मात्रा - सवेरे-शाम १ छं० की मात्रा में पिलाएँ । (सद्दूरियह)

(२) अजवाइन, पीले हड़ का बक्कल प्रत्येक ७ छं०, मण्डूर १०॥ छं०, औषध त्रय को यवकुट करके ऐसे बर्तन में जिसमें प्रथम घृत प्रभृति चिकनी वस्तु रखी गई रही हो रक्खें और उसमें एक सेर गुड़ १० सेर मीठे पानी में घोलकर समावेशित करें । फिर घीकुआरका स्वरस आधसेर डाल कर बर्तन का मुँह बन्द करके किसी गढ़े में घोड़े की लीद के बीच स्थापित करें । तीन सप्ताह पश्चात् निकाल शुद्धकर बोतल में रक्खें ।

गुण-धर्म—प्लीह काठिन्य व आध्मान, उदर-शूल, क्षुधा की कमी तथा यकृन्नैर्बल्य के लिए लाभदायक है ।

मात्रा—२-३ तो० या अधिक प्रकृत्यनुकूल । (अक्सी० अ०)

अर्क खम्मान āarq-khammán-**अ०** खम्मान का अर्क । Elder flower water (Aqua sambuci) । देखो—**खम्मान** ।

अर्क खुश्बू āarqkhushbú-**अ०** पक्षाघात, अर्द्धांग तथा सम्पूर्ण शीतजन्य मास्तिष्क रोगों के लिए लाभदायक है ।

योग व निर्माण-विधि—दालचीनी, गुल-सेवती प्रत्येक ४ सेर, जायफल, जावित्री प्रत्येक २ सेर, छालिया, अगर प्रत्येक आधसेर, केशर ४ तो० और श्वेत तथा सुगन्धित पान के पत्र १०० अदद । सबको थोड़ा कूटकर ७ सुराही अर्क लौंग (जो कि अर्क गुलाब में लौंगों को भिगोकर खींचा गया हो)में भिगोकर दो रातदिन रख छोड़ें । तदनन्तर अर्क खींचें और उसका इत्र लेकर पृथक् सुरक्षित रक्खें तथा उसके अर्क को बोतल में डालकर पृथक् सुरक्षित रक्खें ।

मात्रा—सवेरे शाम दो दो तो० पिलाएँ । यदि मदकारक बनाना चाहें तो अर्क लौंग के स्थान में अर्क कन्दी या अर्क खुर्मा (छुहारा) में भिगोकर बनाएँ । (इ० अ०)

अर्क गज़र अम्बरी व नुस्खहे कलाँ āarq-gazar- āambarí ba-nuskhahe-kalán-**अ०** गर्जरार्क विशेष ।

निर्माण-विधि—गाजर ५ सेर, किशमिश, मवेज़ मुनक्का प्रत्येक २॥ सेर, बिही, सेब प्रत्येक आधसेर, मीठा अनार एक सेर, गुलेसुर्ख, इलायची छोटी व बड़ी, लाल व सफेद चन्दन, अब्रेशम (कतरा हुआ), बर्ग रैहाँ, शुष्क धनियाँ, गावज़ुबान, तुख्म कासनी, तुख्म ख़्यारेन प्रत्येक ५ तो०, अर्क गुलाब, अर्क केवड़ा, अर्क गावज़ुबाँ प्रत्येक २ सेर । केशर १ तो०, मिश्क (कस्तूरी) तथा अम्बर प्रत्येक ३ मा० को पोटलीमें

बाँधकर निम्न मुख पर रख कर विधि अनुसार अर्क़ खींचें। पुनः उक्त अर्क़ में उपर्युक्त अर्कों के सिवा शेष सम्पूर्ण औषधियाँ डालकर दोबारा अर्क़ खींचें।

मात्रा व सेवन-विधि—तीन तो० उक्त अर्क को १ मा० शर्बत अनार के साथ पान करें।

गुण-धर्म—हृद्य, मेधाजनक, कामोद्दीपक, शुद्ध रक्त, उत्पन्न करता तथा प्रमोदकारक है और इसके उपयोग से मुख मण्डल पर रक्ताभा झलकने लगती है।

अर्क़ गज़र 'जदीद' āarq-gazar 'jadid' **–अ०** नूतन गर्जरार्क।

निर्माण-क्रम—गाजर २ सेर, गावज़ुबान ४ तो०, गुलगावज़ुबान २ तो०, सफ़ेद चन्दन ३ तो० ६ मा०, तोदरी सुर्ख़, बहमन सुर्ख़, बहमन सुफ़ेद प्रत्येक २ तो० ३ मा० सबको पानी में भिगोकर २० बोतल अर्क़ प्रस्तुत करें। पुनः उतनी ही औषध उक्त जल में भिगोकर अर्क़ खींचें।

मात्रा व सेवन-विधि ५ तो० अनुपान रूप से उपयोग करें।

गुण-धर्म—प्रमोदजनक, बलकारक एवं उत्ताप-शामक है और मूर्च्छा तथा विभ्रम को दूर करता है।

अर्क़ गज़र मुरक्कब 'जदीद' āarq-gazar-murakkab 'jadid' **–अ०** नूतन मिश्रित गर्जरार्क।

निर्माण-विधि—छिला हुआ गाजर १ सेर, बर्ग गावज़ुबान २ तो०, गुलेगावज़ुबान १॥ तो०, सफ़ेद चन्दन १॥। तो०, बहमन सफ़ेद, तोदरी सुर्ख़ प्रत्येक १ तो०, सबको मिश्रित कर एक दिन-रात यथोचित जल में भिगोकर विधि अनुसार अर्क़ प्रस्तुत करें। तत्पश्चात् प्रति बोतल के हिसाब से टिंकचर बिलाडोना ८ मा०, स्पिरिट अमोनिया एरोमेटिक १६ मा० और स्पिरिट ऑफ़ क्लोरोफ़ॉर्म २ तो० भली प्रकार मिश्रित कर रख लें।

निर्माण-क्रम—५-५ तो० दिन में ३ बार व्यवहार करें।

गुणधर्म—हृदय तथा मस्तिष्क को बल प्रदान करता और मूर्च्छानाशक है।

अर्क़ गन्धक āarq-gandhaka-**देखो—अर्क़ किब्रीत।**

अर्क गन्धिका arka-gandhiká-**सं० स्त्री०** (Ipomœa digitata.) पताल कुम्हड़ा, भूमि कुष्माण्ड। **प० मु०।**

अर्क़ गार कर्ज़ी āarq-ghár-karzí-**अ०** **देखो—चेरी लॉरेल वाटर** (Cherry laurel water.)

अर्क़ गावज़ुबाँ āarq-gávazubán-**अ०** गावज़ुबाँ का अर्क़।

निर्माण-क्रम—गावज़ुबाँ १। सेर रात को जल में भिगोकर सवेरे २० बोतल अर्क़ निकालें।

मात्रा व सेवन-विधि – १२ तो० यह अर्क़ उपयुक्त औषध के साथ सेवन करें।

गुणधर्म—उत्तमांगों को बल प्रदायक तथा शारीरोष्मानाशक है और हृदय प्रफुल्लकारक, तृष्णा शामक तथा वात रोगों में लाभप्रद है।

अर्क़ गावज़ुबाँ "जदीद" āarq-gávazubán "jadid"-**अ०** नूतन गावज़ुबाँ का अर्क़।

निर्माण-विधि—गावज़ुबाँ २॥ सेर रात को जल में भिगोएँ और सवेरे यथा विधि अर्क प्रस्तुत करें। फिर २॥ सेर गावज़ुबाँ उक्त अर्क़ में और भिगोकर दूसरे दिन दोबारा अर्क परिस्रुत करें।

मात्रा व सेवन-विधि—३ तोला।

गुणधर्म—उत्तमांगों तथा शारीरोष्मा को बलप्रद है। हृदय प्रमोदकारक, तृष्णा शामक तथा वात रोगों में लाभ पहुँचाता है।

अर्क़ गुल सेंभल āarq-gule-senbhal-**अ०** शाल्मली पुष्पार्क। अत्यन्त बलवर्द्धक, क्षुधा-जनक, कामोद्दीपक तथा शिश्न-प्रहर्ष वृद्धि-कारक है।

निर्माण-क्रम—सेमल पुष्प छाया में शुष्क किए हुए, इनके समान भाग गुलेसुर्ख़ तथा उतनी ही गुले मुण्डी और उससे आधी गुल चमेली को परस्पर मिश्रित कर गुलाब के समान परिस्रुत करें।

अर्क गुलाब āarq-gulāb—फ़ा० गुलाबजल, गुलाबार्क।

निर्माण-विधि—गुलाब के फूल १। सेर का यथाविधि अर्क परिस्रुत करें।

मात्रा व सेवन-विधि—७ तो० अनुपान रूप से उपयुक्त औषध के साथ सेवन करें।

गुणधर्म—हृदय, मस्तिष्क तथा आमाशय को बलप्रदान कर्त्ता है। यकृद्वेदना, आमाशय तथा प्लीहा के लिए गुणदायक और उष्णताजन्य मूर्च्छा एवं तृषा को लाभ पहुँचाता और गर्मी तथा पाचन विकार का सुधार करता है।

अर्क गुले नीम āarq-gule-nīm—फ़ा० निम्ब, पुष्पार्क।

निर्माण-क्रम—नीम पुष्प नवीन, गिलोय हरी, सरफ़ोंका, मुण्डी, बर्ग शाहतरा प्रत्येक ४ तो०, खस २ तो०, तुख़्म काहू, तुख़्म कासनी, गुल-नीलोफ़र प्रत्येक १ तो०। औषधों को यथा विधि रात को जल में भिगोएँ और सवेरे अर्क परिस्रुत करें।

मात्रा व सेवन-विधि—बच्चों को ३ से ५ तो० पर्यन्त और युवावस्था वालों को आध पाव पर्यन्त यह अर्क शर्बत उन्नाब एक दो तो० मिला कर खाकसी छिड़क कर पिलाएँ।

गुणधर्म—रक्तविकार, वात और पैत्तिक ज्वर, चेचक, कुष्ठ और कण्डु प्रभृति के लिए अत्यन्त लाभदायक है।

सूचना—कण्डु आदि में न्यूनातिन्यून २० रोज़ तक उक्त अर्क को पिलाएँ।

अर्क गोगिर्द āarq-gogirda—अ० गंधकाम्ल, गन्धक का अर्क, गन्धक का तेज़ाब। देखो—**अर्क किब्रीत**। इ० अ०, मि० ख०।

अर्क गोलार्ड āarq-golārd—गोलार्ड का अर्क। गोलार्ड्स वाटर (Goulard's water.) —इं०। देखो—**नाग (सीसक)**।

अर्कचंदनम् arka-chandanam—सं० क्ली०
अर्कचंदन arka-chandana—हिं० संज्ञा पुं०
रक्त चन्दन, लाल चन्दन (Pterocarpus Santalum, *Linn.*) गा० नि० व० १२।

अर्क चोबचीनी āarq-choba-chīnī—फ़ा० चोबचीनी का अर्क। इ० अ०।

अर्क चोबचीनी जदीद āarq-chobachīnī-jadīd—फ़ा० नवीन चोबचीनी का अर्क।

निर्माण-क्रम—दालचीनी, गुलेसुर्ख़, तुख़्म रैहाँ प्रत्येक ११ तो० २ मा०, लवंग, बालछड़, तेजपात, इलायची, ज़र्नबाद, बादरञ्जबूया, गुले-गावज़ुबाँ, अबरेशम कतरा हुआ प्रत्येक ५ तो० ७ मा०, बहमन सुर्ख़ व सफ़ेद, सफ़ेद चन्दन, ऊद हिन्दी, छड़ीला प्रत्येक १ तो० ५॥ मा०, चोबचीनी १ सेर ४॥ छटांक, सेब मीठा १०० अदद, अर्क गुलाब १ सेर ११ छटांक, मिश्री ११ तो० २ मा०। चोबचीनी को टुकड़ा टुकड़ा करें और सेब को भी टुकड़े टुकड़े करें; कूटने योग्य औषधों को अधकुट करें और सम्पूर्ण द्रव्य को रात्रि में अर्क गुलाब में भिगोएँ और सवेरे ८० बोतल जल सम्मिलित कर अर्क परिस्रुत करें। अर्क परिस्रुति काल में केशर १ तो० ६ मा०, मस्तगी तथा कस्तूरी विशुद्ध हर एक ३॥ मा०, अम्बर अशहब ७ मा० इन सब की पोटली बना कर नैचा के मुँह पर भभके के भीतर लगाएँ। द्वितीय बार पुनः उतनी ही औषध लेकर उक्त अर्क में भिगोएँ और उपर्युक्त विधि अनुसार पुनः अर्क परिस्रुत करें।

मात्रा व सेवन-विधि—२ तो० भोजनोपरांत थोड़ा थोड़ा पान करें।

गुण-धर्म—उत्तमांगों को बलप्रदान करता, आमाशय को बलवान बनाता तथा कामोद्दीपक, हृदयप्रफुल्लकारी एवं आहार पाचक है। बुद्धि एवं चेतना को तीव्रकर्त्ता तथा हृदय को प्रसन्न रखता है। उष्ण कक्षा में रक्तशोधक है। इसके उपयोग से सम्पूर्ण रक्तविकारों की शान्ति होती है। नि० फ़ो० ? भा०।

अर्कच्छदनम् arkachchhadanam—सं० क्ली० अर्कमूल, मदार की जड़। The root of (Calotropis gigantea.)

अर्क जज़्र āarq-jazra—गाजर का अर्क। इ० अ०।

अर्क़ जज्र सादह् āarq-jazra-sádah–सादह् अर्क गाजर । इ० अ० ।

अर्क़ जदीद āarq- jadíd–अ० नूतनार्क ।

निर्माण-विधि—अर्क पुदीना, अर्क इलायची, अर्क बादियान प्रत्येक ३ तो०, सिकञ्जबीन सादा ३ तो०, स्पिरिट अमोनिया एरोमैटिक ३० बूँद (मिनिम)। सब को शीशीमें डालकर भली भाँति हिलाएँ जिसमें वे परस्पर मिश्रित होजाएँ ।

मात्रा व सेवन-विधि—३ तो० अर्क अष्ट-वर्षीय बालक को पिलाएँ । दिन में ऐसी ३ मात्राएँ उपयोग में लाएँ ।

गुण-धर्म—शिशुओं के उदराध्मान एवं अजीर्ण के लिए अत्यन्त लाभदायक है ।

अर्क़ जाविदानी āarq-jávidáni–अ० ।

निर्माण-क्रम—जायफल, लौंग, बड़ी इलायची, आमला, बालछड़, धवपुष्प प्रत्येक १० तो०, दालचीनी २० तो०, बबूल की छाल सम्पूर्ण औषधों से द्विगुण, गुड़ सम्पूर्ण औषधों से चतुर्गुण । सब को एक मटके पानी में भिगो रखें-जब लाहन उठ आए तो अर्क परिस्रुत करें और काम में लाएँ ।

गुण-धर्म—मूर्च्छा तथा आमाशय पुष्टि के लिए अत्यन्त गुणदायक है ।

अर्क़ ज़ियाबेतुस āarq-ziyábetus-अ० मूत्रमेहार्क ।

निर्माण-विधि—गिलोय सब्ज़, बर्गबेदसादा, बर्ग जामुन प्रत्येक एक पाव, गुलनार, तुख्मकाहू, तुख्म खुर्फा, मीठे कद्दू के बीज की गिरी, मग़ज़ तुख्म पेठा, मग़ज़ तुख्म तर्बूज़, तुख्म कासनी, गुल नीलोफ़र, सफ़ेद चंदन का बुरादा, रक्तचंदन का बुरादा, खस गुजराती, आमला शुष्क, भाऊ प्रत्येक ५ तो० । रात्रि में सम्पूर्ण औषधोंको जल में भिगोकर सवेरे इसमें भलभलाए हुए कद्दू का पानी, भलभलाए हुए खीरा का पानी, बकरी का दोग़ प्रत्येक २ सेर, हरी कासनी के पत्तेका फाड़ा हुआ पानी १ सेर, शुद्ध जल ७ सेर अधिक डाल कर तबाशीर और सफ़ेद चंदन प्रत्येक ६ मा० नैचा के मुँह में लटकाकर अर्क परिस्रुत करें ।

मात्रा व सेवन-विधि—६ तो० की मात्रा में उक्त अर्क को सवेरे शाम पीएँ ।

गुण-धर्म—ज़ियाबेतुस (बहुमूत्र रोग) के लिए लाभदायक है ।

अर्क़ ज़ीरहे विलायती āarq-zírahe-vilá-yatí–फ़ा०, उ० अर्क़ करावियह्, कृष्ण जीरकार्क, स्याह जीरा का अर्क–हिं० । Caraway water (Aqua carui) । देखो–कृष्ण-जीरक वा स्याह जीरा ।

अर्क़ तपेदिक़ खासुलखास āarq-tapediq-khásul-khás–यक्ष्मघ्नार्क, राजयक्ष्मा का मुख्य अर्क ।

निर्माण-क्रम–बर्ग बेद सादा आधा सेर, छिली हुई मुलेठी ¼ सेर (१ पाव), दोनोंको भलभलाए हुए (मुरब्बी) कद्दू जल, भलभलाए हुए तर्बूज़ जल तथा भलभलाए हुए खीरा जल प्रत्येक २ सेर, ताजे कसेरू का पानी, हरे पालक के पत्ते का पानी प्रत्येक १ सेर में तर करके सवेरे सत मुलेठी विलायती, सत गिलो देसी असली प्रत्येक १ तो० नैचे के मुँह में रखकर यथा विधि अर्क परिस्रुत करें ।

मात्रा व सेवन-विधि—६ तो० इस अर्कमें शर्बत उन्नाब २ तो० मिश्रित कर प्रति दिवस पिलाएँ ।

गुणधर्म—राजयक्ष्मा तथा उरःक्षत रोग के लिए अत्यन्त लाभप्रद है । ताप चाहे अकेले तथा उरःक्षत के साथ हो यह दोनों अवस्थाओं में लाभदायक है ।

अर्क़ तम्बाकू āarq-tambákú–अ० तमाखार्क, ताम्रकूटार्क । वातग्रस्तता, पक्षाघात, अर्दित, जलोदर, वायुजन्य उदरशूलके वायुका लयकर्त्ता, यकृत तथा मासारीका के अवरोध का उद्घाटक, अंत्रा-युस्थ विकृत दोषों का लयकर्त्ता एवं क्षुधा विवर्द्धन के लिए उत्तम है । श्लेष्मज शिरःशूल और आमवात के लिए भी गुणदायक है । अर्वाचीन चिकित्सकों के उन्वेषित पदार्थों में से है ।

योग तथा निर्माण-क्रम–तम्बाकू पीत एवं शुष्क २ सेर १३ छटांक (यदि तम्बाकू हरा हो तो

८–७ सेर तम्बाकू लें) और अजवायन तथा सातर प्रत्येक १ तो० १०॥ माशा, दालचीनी, लौंग, नख, हाशा प्रत्येक ६ मा०। सबको ११। सेर जल में एक रात दिन भिगोएँ। तदनन्तर अर्क परिस्रुत करें।

मात्रा व सेवन-विधि—सवेरे शाम २–२ तो० पिलाएँ।

अर्क़ तम्बूल āarq-tambúl–**अ०** पानका अर्क।

निर्माण-विधि—गुले सुर्ख़, गावज़ुबान, पुदीना शुष्क, पका हुआ पान का पत्ता प्रत्येक १ पाव, नान्ख़ाह (अजवाइन), सातर फ़ारसी, दालचीनी, लौंग, कुलिञ्जन, सोंठ, छोटी इलायची, प्रत्येक आध पाव, अर्क़ गुलाब ४ शीशा, अर्क़ बेदमिश्क, वर्षाजल प्रत्येक २ शीशा। सम्पूर्ण औषधों को अर्क तथा वर्षा जल में रात्रि को भिगो दें। प्रातः यथा विधि ८ सेर अर्क़ परिस्रुत करें।

मात्रा व सेवन-विधि—३ तो० अर्क कोष्णोष्ण करके पान करें।

गुणधर्म–उदरशूल, वायुजन्य उदर पीड़ा तथा अन्य वातज वेदनाओंके लिए अत्यन्त लाभप्रद है।

अर्क़ तिला मुरक्कब व सम्मुलफ़ार ब्रोमीनी āarq-tilá murakkab ba sammulfár bromíní-(**लै०** Liquor auri-et Arsenii Bromidi) देखो-**संखिया**।

अर्क़ तिहाल āarq-tihál–**अ०** प्लीहार्क, प्लीहानाशक अर्क।

निर्माण-विधि—(१) झाऊ पत्र १ सेर और बादावर्द २ तो०को अधकुट करके १२ सेर जल में क्वथित कर छान लें। पुनः इसमें गुड़ १ सेर मिश्रित कर दोबारा क्वथित करें। जब ४ सेर जल शेष रह जाए तब इसको एक सप्ताह धूप में रखकर छानकर बोतलों में रख लें।

मात्रा व सेवन-विधि—प्रति दिन प्रातःकाल निराहार मुख ६ तो० से १२ तो० पर्यन्त उक्त अर्क़ पान करें।

गुण-धर्म—प्लीहा शोथ को अति शीघ्र लयकर्त्ता है। तिं० फ़ा० ६ भा०।

(२) चौकिया सुहागा, कालीमिर्च प्रत्येक ३ तो०, खाने का नमक, (सेंधा नमक), काला नोन, नमक तल्ख़ सुलेमानी नमक, आदी का रस, घीकुवार का रस, कागज़ी नीबू का रस, शुद्ध सिरका प्रत्येक ६ तो० मिश्रित कर शीशा के बर्तन में डालकर दस दिवस पर्यन्त धूप में रक्खें।

मात्रा व सेवन-विधि—एक तो० इस अर्क़ को १२ तो० सौंफ के अर्क़ और १ तो० सिकञ्जबीन लेमूँ में मिलाकर प्रातःकाल पान करें।

गुण-धर्म—प्लीहा के लिए लाभदायक एवं आशु-प्रभावकारी है। थोड़े ही दिनों में तिल्ली जाती रहती है। तिं० फ़ा० २ भा०।

(३) साल्ट (लवण) १५ तो०, तेज़ाब शोरा (शोरकाम्ल), हरित काई ३ तो०, लोह क्वीनीन ६ मा०। तेज़ाब के अतिरिक्त तीनों औषधों को पीसकर बोतल में रक्खें और आधा बोतल पानी डाल कर खूब हिलाएँ। तदनन्तर शोरकाम्ल डालकर अच्छी तरह हिलाएँ और रक्खें। अगले दिन बोतल को जल से पूरित कर दें। बस! अर्क़ तय्यार है।

मात्रा व सेवन-विधि—सम्पूर्ण औषध को १४ मात्राओं में विभाजित करें और एक मात्रा प्रति दिवस प्रयोग में लाएँ।

गुण-धर्म—यह अर्क़ वातज तथा श्लेष्मज ज्वरों को दूर करता है।

विशेष-गुण—प्लीहावृद्धि के लिए यह अर्क़ अत्यन्त लाभदायक तथा सशक्त प्रभावकारक है। थोड़े ही दिनों में प्लीहा के शोथ का निवारण करता है। तिं० फ़ा० १ भा०।

(४) नवसादर, सफ़ेद फिटकरी, सुहागा, कल्मी शोरा प्रत्येक एक तो०। इन सबको पीसकर घृतकुमारी के पत्र का भीतरी गूदा निकाल कर उक्त पत्र में उपर्युक्त औषधों को भर दें। परन्तु, ध्यान रहे कि उक्त पत्र का निम्न भाग मज़बूत रहे। पुनः ऊपर की ओर धागा बाँधकर धूप में लटका दें और उसके नीचे मिट्टी का पात्र रक्खें। उक्त पात्र में जो अर्क़ टपक कर एकत्रित हो जाए उसे सुरक्षित रक्खें।

मात्रा व सेवन-विधि—तीन बूंद बतासे में डालकर सेवन करें।

गुण-धर्म—प्लीहा वृद्धि के लिए अत्यन्त लाभदायक है। नि० फ़ा० १ भा०।

अर्क़ तेज़ाब äarq-tezáb-अ० तेज़ाब का अर्क़। (१) श्वित्र को नष्ट कर्ता, रोग स्थल से चर्म को पृथक् करता तथा देह के समान नवीन त्वचा को उत्पन्न करता है।

योग—ज़ाज सफ़ेद (कसीस सफ़ेद) १२ भाग, ज़ाज ज़र्द (कसीस पीत) २४ भाग, शोरा ४४ भाग। सबको परस्पर मिश्रित कर यथा विधि अर्क़ परिस्रुत करें। श्वित्र स्थल को गाय के शुष्क गोबर से रगड़ने के पश्चात् उक्त तेज़ाब को लगाएँ।

(२) हकीम अली का परीक्षित है। श्वित्र को जलाकर तथा उसमें व्रण संजनित कर उसको अच्छा कर देता है।

योग—मग्ज़ कुनिया (कफ़ आबगीना, काँच का झाग), शोरा, कसीस स्याह। इसे यथाविधि परिस्रुत करें। तीक्ष्ण तेज़ाब परिस्रुत होता है। मुर्गी के डैने से श्वित्र-स्थल पर लगाएँ।

अर्क तैलम् arka-tailam-सं० क्ली० यह तैल कुष्ठाधिकार में वर्णित है।

योग—कड़ुआ तैल (सरसों का तेल) ८ पल, मदार के पत्ते का रस ८ पल, हल्दी एक पल और मैनसिल १ पल। इनका यथाविधि तैल प्रस्तुत करें। च० द० कुष्ठ०-चि०। रसा० कौ०।

अर्क दलः arka-dalah-सं० पुं० (१) आदित्य-पत्र क्षुप, हुलहुल। (Cleome Viscosa.) रा० नि० व० ४। (२) अर्क वृक्ष, आक, मन्दार। (Calotropis gigantea.)

अर्क़ दार(ल)चीनी äarq-dara,-la-,chini दालचीनी का अर्क़। Cinnamon water (Aqua Cinnamomi.) देखो—दालचीनी।

अर्क़ दो आतशह् äarq-do-átashah-फ़ा० द्वयाग्नीयार्क, दो बार परिस्रुत किया हुआ अर्क़। इ० अ०।

अर्क़ नअ्नअ् äarq-naänaä-अ०
अर्क़ नअ्नअ् फ़िल्फ़िली äarq-naänaä filfili-अ०

अर्क नाना arka-náná-हिं०, उ० अर्क पुदीना, पुदीना का अर्क। Peppermint water (Aqua Menthæ Peperatæ.) देखो—पुदीना (वा रोचना)।

अर्क़ नअ्नअ् सब्ज़ äarq-naänaä-sabza
अर्क़ नअ्नअ् सुम्बुली äarq-naänaä-sumbuli
-अ० Spearmint water (Aqua menthæ viridis.) देखो—पुदीना।

अर्क़ नअ्नोल äarq-naänol-अ० पुक्वा मेन्थोल (Aqua menthol.) देखो—पुदीना।

अर्क नामा arka-námá-सं० पुं० रक्तार्क, लाल-मन्दार। Calotropis gigantea (The red var. of-)

अर्क़ नुक़रा äarq-nuqrá-अ० रजतार्क। देखो—रजत।

अर्क-पलः arka-palah-सं० पुं० (१) आदित्य-पत्र क्षुप, हुलहुल। (Cleome Viscosa.) रा० नि० व० ४ च० द०। (२) अर्क वृक्ष, मदार, आक (Calotropis gigantea.)

अर्कपत्र रस तैलम् arkapatra rasatailam --सं० क्लो० हिं० आक के पत्तों का रस और हल्दी के कल्क से सिद्ध किया हुआ सरसों का तैल पामा, कच्छु और विचर्चिका को दूर करता है। शार्ङ्ग० सं०।

अर्कपत्र स्वरसः arkapatra-svarasah-सं० पुं० आक के पके हुए पीले पत्तों में घी लगाकर आग पर सेककर निकाला हुआ स्वरस गुनगुना करके कान में डालने से कान का दर्द दूर होता है। वृ० नि०।

अर्क पत्रा,-त्री,-त्रिका arka-patrá,-trí,-

trika–सं० स्त्री० ईश्वरमूल वृक्ष, इशरमूल, ज़रावन्दे-हिन्दी, रुद्रजटा, सापसन्द। (Aristolochia Indica) प० मु०। र० मा०। (२) एक लता जो विष की ओषधि है। अर्क-मूल।

अर्क पत्रादियोगः arkapatrádiyogah–सं० पुं० आक के पत्ते और लवण को मिट्टी के बर्तन में बन्द करके मुखपर कपड़-मिट्टी करके अग्नि में फूँककर रक्खें। इसे मस्तु के साथ पीने से तिल्ली दूर होती है। च० द० उ० चि०।

अर्क-पर्णः arka-parnah–सं० पुं०
अर्क-पर्ण arka-parna–हिं० संज्ञा पुं०
(१) रक्तार्क, लालमदार, सूर्य मन्दार–मह०। भा० पू० १ भा०। Calotropis gigantea (the red var. of–)। (२) मदार का वृक्ष। (३) मदार का पत्ता।

अर्क-पर्णिका,–र्णी arka-parniká,-ní–सं० स्त्री० माषपर्णी, हयपुच्छा। माषार्ना–बं०। (Terammus Labialis.)

अर्कपादः arka-pádah–सं० पुं० (१) सूर्य-कान्त मणि। (२) निम्ब वृक्ष। (Melia azadirachta, *Linn.*)

अर्क-पादपः arka-pádapah–सं० पुं० (१) निम्ब वृक्ष (Melia Azadirachta, *Linn.*)। (२) अर्क क्षुप, मदार, आक। (Calotropis gigantea.)

अर्क़ पान áarq-pán–अ० पान का अर्क़।

निर्माण-विधि––(१) गुलेसुर्ख़, गाव ज़ुबान, पुदीना, पान पत्र प्रत्येक एक पाव, अजवाइन, सातर, दालचीनी, लौंग, कुलिञ्जन, सोंठ, इलायची छोटी हर एक १० तोला, अर्क़ गुलाब ४ बोतल, अर्क़ बेदमिश्क, वर्षा जल हर एक २ बोतल। सब औषधों को रात्रि भर भिगोकर प्रातः काल ७–८ सेर अर्क़ परिस्रुत करें।

गुणधर्म–उदर शूल तथा आमाशयस्थ वेदना-शामक, वायु जन्य शूल तथा अन्य पीड़ाओं की शांति हेतु परीक्षित है। क्या ज़ा़ आज़म म.हूँम से उद्धृत। इ० अ०।

(२) पान १८ तो० ४ मा०, दालचीनी नं०१ पौने नौ तो०, बहमन सफ़ेद ४तो० १०मा०, इलायची का दाना, जायफल, तोदरी हर एक ३॥ तो०, वर्षा जल २० सेर। इससे यथा विधि १० सेर अर्क़ परिस्रुत करें।

मात्रा—चिकित्सक की राय पर निर्भर है।

गुणधर्म—पाचनशक्ति को बढ़ाने, कपोलों के वर्ण को निखारने तथा कामोद्दीपनके लिए अनुभूत है। अन्य योगों की अपेक्षा कम उष्ण है। इ० अ०।

अर्क़ पान जदीद áarq-pán-jadíd–अ०

निर्माण-विधि— योग "अर्क़ पान नं० १" को द्विगुण मात्रा में लेकर उक्त विधि अनुसार ७ सेर अर्क़ परिस्रुत करें। पुनः उतनी ही औषध और रात्रि भर भिगोकर दोबारा ७ सेर अर्क़ परिस्रुत करलें।

मात्रा व सेवन-विधि—पौने २ तो० इस अर्क़को उपयुक्त शर्बतके साथ मिलाकर सवेरे शाम दोनों समय पिलाएँ। यथा—

हृद्रोग में शर्बत सेब या गुड़हल अथवा केवड़ा मिलाएँ, आमाशयिक शूल, एवं वातज वेदनाओं में सिकञ्जबीन सादा या नीबू मिलाएँ।

गुणधर्म आमाशय तथा हृद्रोग को लाभ पहुँचाता है। उदर तथा आमाशयिक वेदना में लाभदायक है और वातज वेदनाओं को शमन करता है। हृदोल्लासकारक तथा हृदय शामक है ति० फ़ा० २ भा०।

अर्क़ पियागङ्गा मुरक्कब áarq-piyárángá-murakkab–अ० पियारांगाका मिश्रित अर्क़। देखो–पियारांगा। ति० फ़ा० २ भा०।

अर्क़ पुदीना áarq-pudíná
अर्क़ पुदीना जदीद áarq-pudíná-jadíd
–अ० पुदीना का अर्क़, नव्य पुदीनार्क। देखो— पुदीना।

अर्क पुष्प योगः arka-pushpayogah–सं० पुं० आक के फूल तेल में पका कर सेवन करने से स्त्रियों का मासिक धर्म खुलकर आता है। यो० र०।

अर्क पुष्पा arka-pushpá **सं० स्त्री०** क्षीर-काकोली । क्षीर काँकल-ऽ० । देखो—क्षीर-काकोली (Kshíra kákolí)

अर्क पुष्पिका arka-pushpiká
अर्क पुष्पी arka-pushpí
—सं० स्त्री० (१) सूर्य्यवल्ली । अन्धाहुली, अर्क सदृश पुष्पी लता, अर्कहुली, क्षीरवृम्, दधि-वार-हिं० ; श्वेत हुड़हुड़िया-बं० । (Gygandropsis Centahylla, Syn. Cleome pentaphylla.) शिरदोड़ी-महा० । पर्याय-पयस्या, सूर्य्यवल्ली, सितपर्णी, शीतपर्णी । र० । भा० ४ म० बाल रो० चि० ।

गुण-यह कृमि, श्लेष्म, प्रमेह तथा पित्तनाशक है । मद० व० ६ । यह कृमि, कफ, प्रमेह तथा मनोविकार नाशक है । भा० पू० १ भा० । (२) रक्त अपराजिता । रत्ना० । (३) क्षीर काकोली । (See-kshíra kákolí.) र० मा० । (४) सूर्यमुखी ।

अर्क पुष्पी कल्कम् arka pushpí kalkam —सं० क्ली० आकड़ेके फूल गाय के दूध में पीस कर ३ दिन तक रोज प्रातः पीनेसे दाह युक्त प्रवृद्ध पथरी का नाश होता है । वृ० नि० र० भा० ५ अर्श० ।

अर्क प्रभा गुटि(ड़ि)का arka-prabhá-guṭi-(ḍi)ká-सं० स्त्री० रसायनाधिकार में वर्णित रस विशेष । प्रयोगा० रसायना० ।

अर्क प्रकाश arka-prakásh-सं० पुं० रावण कृत ग्रन्थ जिसमें अर्क के अनेक उत्तम से उत्तम योग एवं उनके चुआने की विधियाँ दी गई हैं ।

अर्क प्रिया arka-priyá-सं० स्त्री० (१) आदित्यभक्ता, हुलहुल । हुड़हुड़िया-बं० । (Cleome viscosa.) । (२) जवा । जपा । अड़हुल । गुड़हर । ओड़ पुष्प वृक्ष । अड़उल । (Hibiscus Rosa=Sinensis.) रा० नि० व० १० ।

अर्क़ फ़वाकह् जदीद áarq-favákah-jadíd —अ० निर्माण विधि-अनार अम्ल व मधुर, सेब, बिही हर एक डेढ़ (ऽ१॥) सेर, दाख मीठा, अमरूद हरएक एक सेर, क़रिश्क का रस २० तो०, सफ़ेद चन्दनका बुरादा आधासेर, इनमें यथा विधि अर्क परिस्रुत करें । पुनः उतनी ही औषध उक्त अर्क में डालकर दोबारा अर्क खींचें ।

मात्रा व सेवन-विधि—३ तोला अर्क पान करें ।

गुणधर्म—उत्तमांगों को बलप्रदान करता, मालीख़ौलिया (Melancholia), मूर्च्छा, भ्रम तथा भय दूर करने के लिए अत्यन्त लाभदायक सिद्ध हुआ है ।

अर्क़ फ़ौलाद áarq-foulád-अ० लोहे का अर्क, लोहासव । देखो—लोह ।

अर्कबंधु arka-bandhu-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] पद्म । कमल । The lotus

अर्क़ बनफ़्शह् 'जदीद' áarq- banafshah 'jadíd'-अ० नूतन बनफ़्शार्क ।

निर्माण-विधि—बनफ़्शा ऽ१। सवासेर रातको उष्ण जल में भिगो कर सवेरे ४० बोतल अर्क परिस्रुत करें और उक्त अर्क में दोबारा उतना ही बनफ़्शा तर करके पुनः दोबारा ४० बोतल अर्क परिस्रुत करें ।

मात्रा व सेवन-विधि—३-३ तोला प्रातः सायं शर्बत नीलोफ़र या बनफ़्शा एक तोला मिलाकर पान करें ।

गुणधर्म—प्रतिश्याय, नज़्ला तथा शिरःशूल में अत्यन्त लाभदायक है । नि० फ़ा० २ भा० ।

अर्क़ बरिञ्जासिफ़ 'जदीद' áarq-barinjásif-jadíd-अ० नूतन बरिञ्जासिफ़ार्क ।

निर्माण-विधि—बरिञ्जासिफ़, शुकाई, बादावर्द, मकोय शुष्क, सौंफ, मवेज़ मुनक्का, हर एक ४० तो०, गुले गावज़ुबान २० तो० सम्पूर्ण औषधों को रात्रि में उष्ण जल में तर करके प्रातः काल हरी मकोय का रस ३ सेर योजित कर २० बोतल अर्क परिस्रुत करें । उक्त अर्क में पुनः उपर्युक्त औषधों को उतनी

मात्रा व सेवन-विधि—३ तो० प्रातः सायं मातदिल शर्बत बज़ूरी या शर्बतन्नीनार आवश्यकतानुसार मिलाकर पिलाएँ।

गुणधर्म—आमाशय तथा यकृत् को बल प्रदान करता है। शोथ लयकर्त्ता एवं श्लैष्मिक ज्वरों में लाभदायक है।

अर्क बल्लभा arka-ballabhá-हिं०संज्ञा स्त्री० [सं०] गुड़हर। ओढ़ पुष्पी। (Hibiscus Rosa-sinensis.)

अर्क बहार āarq bahár-अ०

निर्माण-विधि—गुलतरशाबह् ५ सेर, अर्क गुलाब १ सेर, सौंफ, मवेज़ मुनक्का, किशमिश हरएक १५ तो०, ऊ़द, ज़र्नब, बहमन सुर्ख, बहमन सफ़ेद, शक़ाक़ुल हरएक १ तो०, अम्बर पौने दो (१॥।) तो०। सबको १४ सेर जल में रात को भिगोकर प्रातःकाल ५ सेर अर्क परिस्रुत करें। कभी पान पत्र १०० अदद, इलायची, दारचीनी, लौंग हरएक १४ मा० और डालते हैं।

मात्रा व सेवन-विधि—१० तो०, अनुपान रूप से सेवन करें।

गुण-धर्म—मूर्च्छा व विभ्रम में लाभप्रद है। तृषानाशक तथा उत्ताप शामक है और हृदय एवं मस्तिष्क को प्रमोद प्रदान करता है।

अर्क़ बहार जदीद āarq-bahár-jadíd-अ०

निर्माण-क्रम—गुलतुरञ्ज सादा १० सेर, अर्क गुलाब २ सेर, सौंफ, मवेज़ मुनक्का, किशमिश प्रत्येक ३० तो०, ऊ़द, ज़र्नब, बहमन सुर्ख या सफ़ेद, शक़ाक़ुल हरएक २ तो०,अम्बर ३॥ मा०। सब को तीन सेर पानी में रात को भिगोकर प्रातःकाल अर्क परिस्रुत करें। उक्त अर्कमें उतनी ही औषध और भिगोकर दूसरे दिन पुनः दोबारा अर्क परिस्रुत करें।

मात्रा व सेवन-विधि—३-३ तो० प्रातः सायं व्यवहार में लाएँ

गुण-धर्म—मूर्च्छा में लाभप्रद है। तृषा को नाश कर्ता एवं उत्ताप को शमन कर्ता है। हृदय तथा मस्तिष्क को उल्लास प्रदान करता है।

सूचना—कभी पान पत्र २०० अदद, इलायची, दालचीनी, लौंग हरएक २ तो० ४ मा० अधिक डालते हैं। नि० फ़ा० १ भा०।

अर्क़ बादियान āarq badiyán-अ० सौंफ का अर्क।

निर्माण-विधि—सौंफ २॥ सेर, रात को पानी में भिगोकर प्रातःकाल ४० बोतल अर्क परिस्रुत करें।

मात्रा व निर्माण-विधि—१२ तो० अनुपान रूप से सेवन करें।

गुण-धर्म—उस यकृद्वेदना व आमाशय तथा वृक्क की पीड़ा में जो शीतलता के कारण हुई हो, लाभदायक है। यकृद्वरोधोद्घाटक और वायु लयकर्ता है। नि० फ़ा० १ भा०।

अर्क़ बादियान मुरक्कब "जदीद" āarq-bád-iyán murakkab,-jadíd-अ० देखो—अर्क़ बरिञ्जासिफ़ जदीद।

अर्क़-बेदमुश्क āarq-bedemushka-फ़ा० माउल् ख़िलाफ़-अ०। बेदेमुश्क का अर्क—द०। Salix caprea, *Linn.* (water of-) देखो—बेदमुश्क।

अर्क़ बेद सादह् āarq bed sádah-अ०

निर्माण-विधि—बर्गबेदसादा १। सेरको रात्रि भर जल में भिगोकर प्रातःकाल दस बोतल अर्क परिस्रुत करें। पुनः उतना ही बेद सादा उसमें तर करें और दोबारा दश बोतल अर्क परिस्रुत करें।

मात्रा व सेवन-विधि—तीन-तीन तो० प्रातः साय यह अर्क़ शर्बत उन्नाब २ तो० में मिलाकर पिलाएँ।

गुण-धर्म—हृदय की ऊष्मा, भय एवं मूर्च्छा को दूर करता है। उष्माजन्य रोगों में लाभदायक है। राजयक्ष्मा में विशेषकर गुणदायक है। साधारण अर्कों की अपेक्षा यह अर्क अधिकतर लाभदायक है। नि० फ़ा० २ भा०।

अर्क भक्ता arka-bhaktá-सं० स्त्री०, हिं० संज्ञा स्त्री० ब्राह्मी, ब्राह्मी शाक (Hydroco-

tyle asiatica.)। (२) हुड़हुड़े। हुल-हुल। हुरहुर का वृक्ष-हिं०। सूर्य फुलवल्ली-म०। (Cleome viscosa.) रा० नि० व० ४। र० मा०।

अर्क भूतिः arka bhútih-सं० स्त्री० ताम्र भस्म। (Copper oxide.) वै० निघ० २ भा० वीर ताम्ररस० संग्रहणी० चि०।

अर्क मको áarq-mako-अ० मकोय का अर्क।

निर्माण-विधि—मको शुष्क सवासेर को भिगोकर २० बोतल अर्क परिस्रुत करें।

मात्रा व सेवन-विधि—१२ तो० अर्क यथाविधि व्यवहार करें।

गुण-धर्म—उत्तमांगों तथा प्रकृतोष्मा को शक्ति प्रदान करता है। ऊष्मा को शमन करता तथा पिपासाको तृप्ति प्रदान करता है। वायु रोगों, मूर्च्छा तथा भ्रम में विशेषकर लाभदायी है। नि० फ़ा० १ भा०।

अर्क मको जदीद áarq mako jadíd-अ०

निर्माण-विधि—मको शुष्क २॥ सेर को जल में भिगोकर बीस बोतल अर्क परिस्रुत करें। पुनः उतना ही मको शुष्क उक्त अर्क में भिगोकर दुबारा अर्क खींचें।

मात्रा व सेवन-विधि—५ तो० अर्क अनुपान रूप में व्यवहार में लाएँ।

गुण-धर्म—अर्क मको के समान।

अर्क माउज्जुब्न áarq-máujjubna—अ०

निर्माण-क्रम—पीले हड़ का बक्कल, काबुली हड़ का बक्कल, काले हड़ का बक्कल, हरी गिलोय, बकायन के पत्र, बकायन की छाल, निम्बछाल, निम्बबीज, विजयसार पुष्प, गावज़ुबान, कासनी के बीज, कासनी की जड़, हिरनखुरी, इमली की गिरी, आमला की गिरी, हड़ का बक्कल, धनियाँ शुष्क, मौलसरी वृक्ष की छाल हरएक १० तो०, शाहतरा, चिरायता, सरफोका, मेंहदी के पत्र, अबरेशम, रक्तचन्दन का बुरादा, श्वेत चन्दन का बुरादा, शीशम का बुरादा, इनबुरुस्सअलब खुश्क (सूखी मकोय), गुलेसुर्ख, झाड़ी बेरकी मूल-त्वचा, भंगमूल, बहेड़ा मूल त्वचा, चमेली पत्र, आबनूस का बुरादा, उन्नाब, इसुमूल प्रत्येक ५ तो०, माउज़्ज़ुलूस आधसेर, माउज्जुब्न एकपात्र, मजीठ एक पात्र सब को भिगोकर प्रातः काल ४० बोतल विधि अनुसार अर्क परिस्रुत करें।

मात्रा व सेवन-विधि १० तो० अर्क उपयुक्त औषधों के साथ उपयोग में लाएँ।

गुण-धर्म आह्लादजनक, शामक तथा रक्त शोधक है। वातज रोगों में अत्यन्त लाभजनक सिद्ध हुआ है। नि० फ़ा० १ भा०।

अर्क माउल्लहम कासनी मकोवाला áarq-máullahma, kásaní-makoválá-कासनी तथा मकोवाला मांसरसार्क।

निर्माण-विधि—बरिंजासिफ़, शुकाई, बादावर्द, बिल्लीलोटन, सौंफ (कुटा छाना हुआ), मवेज़ मुनक्का, कबर की जड़, इज़खिर की जड़, मुलेठी, हरी गिलोय, मको हरएक १० तो०, गावज़ुबान, गुले गावज़ुबान हरएक ५ तो०। सम्पूर्ण औषधों को रात्रिभर उष्ण जल में भिगोएँ। प्रातः हरी कासनी का पानी, मकोय का पानी जिनमें उक्त दोनों औषधें २ सेर डाली हों, डालकर युवा बकरे के ४ सेर मांस की यख़्नी निकालें और उपर्युक्त औषधों को डाल कर विधि अनुसार २० बोतल अर्क खींचें।

मात्रा व सेवन-विधि—५ तो० उक्त अर्क को उपयुक्त औषध के साथ व्यवहार करें।

गुण-धर्म—शरीर को पुष्ट करनेवाला, शोथलयकारक तथा आमाशय और यकृत की दशा को सुधारने वाला है। नि० फ़ा० १ भा०।

अर्क माउल्लहम खास áarq máullahma-khás-अ० मुख्य मांसरसार्क।

निर्माण-विधि—बालछड़, तेजपात, छोटी इलायची, बड़ी इलायची, बहमन सफ़ेद, लौंग, दालचीनी, ऊदख़ाम पोस्त तुरञ्ज, गावज़ुबान, बूज़ीदान, छड़ीला, श्वेतचन्दन, बादरञ्ज, बूया, राम तुलसी के बीज, गुलगावज़ुबान

सूखी धनियाँ, ज़र्नबाद, सौंफ़, दरूनज, मस्तगी, सुअ्द कोफ़ी (नागरमोथा) हरएक ४॥ तो०, शक़ाक़ुल मिश्री, सालबमिश्री, गुलेसुर्ख़, अब्रेशम (कतरा हुआ) प्रत्येक ६ तो०, बैल का शिश्न ३ तो०, गोश्त हलवान (बकरी के एक वर्ष तक के बच्चे को हलवान कहते हैं, इसका मांस) २४ सेर, बटेर २४ अदद, अर्क बेदमुश्क ६ सेर, अर्क गावज़ुबान ६ सेर। अंगूर, सेब, बिही, रोगमाही, माही रोबियाँ (झींगा मछली) हरएक तीन सेर, झींगा मछली शुष्क या ताजा ६ सेर, अम्बर २। तो०, मिश्क २। तो०, चोज़ेहे-मुर्ग़ १४ अदद, साँड़ा १० मात्रा। सम्पूर्ण मांसों की यख़नी प्रस्तुत करके उपरोल्लिखित औषधें सम्मिलित करें और ८० बोतल अर्क परिस्रुत करें।

मात्रा व सेवन-विधि—५ तो० अर्क उपयुक्त औषध के साथ व्यवहार में लाएँ।

गुण-धर्म—उत्तमांगों और अर्वाह की शक्ति के लिए मुख्य पदार्थ है। यह सामूहिक शारीर शक्ति की वृद्धि करता है। कामोद्दीपक, स्तम्भक, तथा प्रफुल्लता कारक है। हृदय को प्रफुल्ल और चित्त को प्रसन्न रखता है। शुद्ध शोणित उत्पन्न करता एवं मुख की कांति को निखारता है। ति० फा० १ भा०।

अर्क माउल्लह्म जदीद áarq-máullahma-jadíd—अ० नूतन मांसरसार्क।

निर्माण-विधि—बकरे का मांस १२ सेर (या हलवान शेर मस्त, मस्त सिंह के बच्चे का मांस), नर गौरैया (नर कुञ्जश्क) १०० मात्रा, कबूतर, लवा, बटेर प्रत्येक ५० मात्रा, मुर्ग़ी का बच्चा ३० मात्रा, तीतर २० मात्रा। सम्पूर्ण मांस को शुद्ध स्वच्छ कर यख़नी पकाएँ। तदनन्तर उसमें मोमियायी, जुन्दबेदस्तर, सुअ्द कोफ़ी (नागरमोथा), जद्वार, केशर, कस्तूरी, अम्बर हरएक एक तो०, गुलगावज़ुबान, कबाबचीनी, आककरहा, तबाशीर, बसफ़ाइज, दरूनज, सीसालियूस, ऊदसलीब, सातर फ़ारसी, फ़ितरा सालियून, चोता, फ़राम्शियून, जावित्री, जायफल, तुख़्म जर्जीर, मायहे शुतुर ऐराबी, रोगमाही, हब्बुल् कुल कुल प्रत्येक २ तो०, अजवाइन, ज़ूफ़ा शुष्क, बज्जनुर्की हरएक ३ तो० ४॥ मा०, दालचीनी, तुन्द बेला, अब्रेशम (कतरा हुआ) प्रत्येक ७ तो० १॥ मा०, तुख़्म हलियून, मूली के बीज, इस्पस्त, तुख़्म बालंगो, तुख़्म शर्बती, तुख़्म रेहाँ, तुख़्म फ़रञ्जमिश्क, बर्ग फ़रञ्जमिश्क, बीख़ सोसन, आस्मानजूनी, गुले बाबूना, मग़ास्स (मेदा), बूज़ीदान, क़ुर्फ़ा, तज, मस्तगी, नागेसर, छड़ीला, तेजपात, रक्तचन्दन, उस्तोख़ुद्दूस, ज़रावन्द मदहर्ज, माहीरोबियाँ (झींगा मछली), ज़र्नब, असारून, कांकनार हरएक ४। तो०, बहमन सुर्ख़ व सफ़ेद, तोदरी सुर्ख़ वा सफ़ेद, ऊदग़र्क़ी, शक़ाक़ुल मिश्री, सरिञ्जान शीरीं, गावज़ुबान, इन्द्रजौ मधुर, बादियान ख़ताई, गुलेसुर्ख़, इलायची छोटी व बड़ी, बादरञ्जबूया, परसियावशान (हंसराज), पुदीना, जिन्तियाना, कुलिञ्जन, तुख़्म ख़ुर्फ़ा, तुख़्म गाजर, तुख़्म ख़िर्मी सफ़ेद, तुख़्म ख़ुब्बाज़ी, हब्बुलख़िज़ारा, हब्बुस्समनह, हब्बुलक़ुर्तुम, हब्बुल् कुल्त, सपिस्ताँ, माहीरोबियाँ (झींगा मछली) प्रत्येक ८॥ तो०, चोबचीनी, अञ्जीर ज़र्द, मवेज़ मुनक़्क़ा, किशमिश हरएक २४ तो०, ख़ार ख़सक (मुरब्बा), सेबमधुर का पानी, बिही मधुर का पानी, मीठे अनार का रस, हर एक ६८ तो०, मिश्री २ सेर ८ छ० ४ तो०, बर्ग रेहाँ ताज़ा आध सेर, उन्नाब विलायती १०० मात्रा। अम्बर, कस्तूरी, केशर के सिवा जो औषधें कूटने की हैं उनको कूटकर मांसों में डालकर एक रात दिन रहने दें दूसरे दिन अर्क गुलाब, अर्क बेदमुश्क हर एक २बोतल, अर्क गावज़ुबान, अर्क ख़ियार शम्बर (अमलतास) प्रत्येक ३ सेर, ताज़े गाजर का रस, ईखुजल हर एक २० सेर सम्मिलित करके प्रथम बार १२–१४ सेर अर्क प्राप्त करें। इसे पृथक् रखें। पुनः उतना ही और अर्क परिस्रुत करें यह दूसरी कक्षा का अर्क प्रस्तुत होगा। अम्बर, कस्तूरी, केशर की पोटली बाँधकर नैचा के मुख में रखें।

मात्रा व सेवन-विधि—५ तो० अर्कमें २ तो०

मिश्री मिला कर प्रयोग करें। कोई विशेष परहेज़ नहीं। हाँ! अम्ल वस्तुओं से बचना आवश्यकीय है।

गुण-धर्म पुरुष शक्ति को विवर्द्धित करने-वाला शरीर में बल का संचार कर्ता, वृक्क को शक्ति देता, वायु लयकर्ता, संधिवात और नज़लाके विकार को लाभ पहुँचाता है। शीतल रोगोंके नष्ट करने में अक्सीर है। नि० फ़ा० १ भा०।

अर्क़ मुख़्तरिअ्‌ āarq-mukhtariā-अ० एक अर्क विशेष। इ० अ०।

अर्क़ मुण्डी āarq-mundí-अ० मुण्डी का अर्क।

निर्माण विधि मुण्डी सवा सेर को पानी में भिगोकर सवेरे २० बोतल अर्क खींचें।

मात्रा व सेवन-विधि—७ तोला यह अर्क अनुपान रूप से व्यवहार में लाएँ।

गुणधर्म—रक्तशोधक और उल्लासकारक है। दृष्टि को शक्ति प्रदान करना, उत्तमांगों को बलवान बनाता और रोध उद्घाटक है। नि० फ़ा० १ भा०।

अर्क़ मुण्डी जदीद āarq-mundí-jadíd-अ० नूतन मुण्डी का अर्क।

निर्माण-क्रम मुंडी २॥ सेर को पानी में भिगोकर प्रातः २० बोतल अर्क परिस्रुत करें। पुनः उतनी ही मुंडी उक्त अर्क में भिगोकर दोबारा अर्क खींचें।

मात्रा व सेवन-विधि—३ तो० अनुपान रूप से सेवन करें।

गुणधर्म—अर्क मुंडी के समान। नि० फ़ा० १ भा०।

अर्क़ मुब्ही व मुक़व्वी āarq-mubhí-va-muqavví-अ० बल्य व कामोद्दीपक अर्क।

निर्माण-विधि—जावित्री, लौंग, मालबमिश्री दालचीनी हर एक १४ मा०, गुल गुड़हल, किशमिश, मिश्री प्रत्येक १० तो०, वर्षा जल २ सेर। औषधों को अधकुट करके बोतल में डाल कर तीन-चार दिन तक धूप में सुरक्षित रक्खें जिससे उसमें खूब जोश आजाए। तदनन्तर व्यवहार में लाएँ। इ० अ०।

अर्क़ मुरक्कब मुसफ़्फ़ी ख़ून āarq-murakkab-musaffíkhún-अ० रक्तशोधक मिश्रित अर्क विशेष।

निर्माण-विधि—बर्ग शाहतरा, तुख़्म शाहतरा, चिरायता, सरफोका, मुण्डी, नीलकण्ठी, ब्रह्मदण्डी, आबनूस का बुरादा, शीशमका बुरादा, रक्त व श्वेत चन्दन का बुरादा, अफ़्तीमून (पोटली में बाँध कर), बसफ़ाइज, उश्बा हर एक ५ तो० बर्ग हिना, गुलहिना, बर्ग नीम, गुलनीम हर एक ७ तो०, नीमकी छाल, बकाइन की छाल, शीशम की छाल, कचनील की छाल हर एक पाव सेर, उन्नाब, अमलतास हर एक आध पाव, सबको तीस सेर पानी में यहाँ तक क्वथित करें कि सात सेर पानी शेष रह जाए। पुनः साफ करके अर्क खींचें।

मात्रा व सेवन-विधि-५ तो० इस अर्क को २ तो० शर्बत गुलाब के साथ प्रातः सायं सेवन करें।

गुणधर्म—रक्तशुद्धि के लिए अनुपम है। फोड़े, फुन्सी, तथा खुजली को दूर करता है और उपदंश तथा अन्य वातरोगों में लाभप्रद है।

अर्क़ मुसक्किन जदीद āarq-musakkin-jadíd-अ० नवीन शामक अर्क।

निर्माण-क्रम—अर्क अजीब (कपूर, सत अजवाइन, सत पुदीना समभाग को लेकर मिलाले) १५ बूंद में, १ बूँद कार्बोलिक एसिड मिला कर रखें।

मात्रा व सेवन-विधि—ज़रा सी रूई की फुरेरी इस अर्क में तर करके मसूढ़ों पर लगाएँ और यदि छिद्र हो तो उसमें भर दें।

गुणधर्म—दन्तपीड़ा को तत्काल बन्द करता है। नि० फ़ा० १ भा०।

अर्क़ मुसफ़्फ़ी āarq musaffí-अ० अर्क रक्तशोधक, शोधक अर्क।

(१) निर्माण-विधि—शाहतरा के बीज, शाहतरा का पत्ता, सरफोका, मेंहदी की हरी पत्ती,

झाऊ की हरी पत्ती, मुण्डी, ब्रह्मदण्डी, नीलकण्ठी उष्ट्रकण्टक, अफ़्तीमून, चिरायता, तुख़्म काहू, तुख़्म कासनी, रक्त व सफ़ेद चन्दन का बुरादा, शीशम की लकड़ी का बुरादा, आबनूस का बुरादा, नीम पुष्प, बीख़ कासनी। समस्त औषधों को समान भाग लेकर रात को कलईदार डेगचा में भिगो के प्रातः काल यथा विधि अर्क खींचें।

मात्रा व सेवन-विधि–प्रकृति तथा अवस्थानुसार ६ से १२ तो० तक उक्त अर्क को शर्बत उन्नाब या शर्बत शीशम प्रभृति में मिलाकर पिलाएँ।

गुणधर्म—रक्त शुद्धि के लिए अत्युत्तम है। सूक्ष्म एवं निर्बल प्रकृति वालों के लिए विचित्र वस्तु है। अति शीघ्र लाभ करता है।

(२) निम्ब पुष्प, निम्ब फल, निम्ब वृक्ष की छाल, निम्ब पत्र, मेंहदी की हरी पत्ती, मेंहदी का फूल, शीशम वृक्ष की छाल, कचनाल की छाल प्रत्येक एक पाव। सब को ८ सेर जल में क्वथित कर शुद्ध करें। तदनन्तर अर्क परिस्रुत करें।

मात्रा व सेवन-विधि—३ तो० से ५ तो० पर्यन्त प्रति दिवस प्रातः सायं पिलाएँ।

गुणधर्म—यह अत्यन्त सरल योग है; किन्तु अन्तिम कक्षा का रक्तशोधक तथा अनुभूत है। नि० फ़ा १ भा०।

(३) अर्क मुसफ़्फ़ी जदीद—नीम पत्र, नीम की छाल, बकाइन की छाल, बकाइन का पत्ता, कचनाल की छाल, मौलसिरी की छाल, छोटी दुद्धी, श्याम भृङ्गराज पत्र, जवासा के पत्ते की शाख़, गूलर की छाल, मेंहदी पत्र, मुण्डी, शाहतरा, सरफोका, धमासा, चोब, विजयसार, गुल नीलोफ़र, गुले सुर्ख़, शुष्क धनियाँ, श्वेत चन्दन, तुख़्म कासनी, कासनी की जड़, मजीठ, बर्ग बेद सादा, शीशम की लकड़ी का बुरादा प्रत्येक २० तो०। सब को एक दिन रात जल में भिगोकर १२ सेर अर्क खींचें और इस अर्क में दोबारा उपर्युक्त औषधों को भिगोकर १२ सेर अर्क परिस्रुत करें।

मात्रा व सेवन-विधि—तीन तीन तोला इस अर्क में शर्बत उन्नाब या शर्बत शीशम १ तो० मिलाकर प्रातः सायं पिलाएँ।

गुणधर्म—उत्तम रक्तशोधक है। फोड़े फुन्सी का विकार इसके उपयोग से जाता रहता है। शरीर तथा चेहरे का रंग साफ हो जाता है। उपदंश तथा सूज़ाक में भी लाभ पहुँचाता है। अत्याहार तथा प्रबल प्रभावकारक है। नि० फ़ा० २ भा०।

अर्क मुसफ़्फ़ी ख़ून बनुस्ख़ा कलाँ āarq-musaffí-khun-ba-nuskhá-kalán –अ०

निर्माण-विधि—नीम पत्र, नीम की छाल, बकाइन की छाल, कचनाल की छाल, मौलसरी की छाल, दुद्धी ज़र्द, काली भंगरैया का पत्ता, जवासा के पत्ते की शाख़, गूलर की छाल, मेंहदी का पत्ता, मुण्डी, शाहतरा, सरफोका, धमासा, विजयसार की लकड़ी, गुलनीलोफ़र, गुले सुर्ख़, शुष्क धनियाँ, श्वेत चन्दन, तुख़्मकासनी, कासनी की जड़, मजीठ, बर्ग बेदसादा, शीशम की लकड़ी का बुरादा प्रत्येक १० तो०। इन सब औषधों को २४ सेर जल में रात दिन तर करें। तदनन्तर १२ सेर अर्क परिस्रुत करें। कभी नीम का बीज बकाइन का बीज, तुख़्म शाहतरा, तगर, अफ़्तीमून, तेजपात, हरी गिलोय, उन्नाब, ख़त्म, चिरायता प्रत्येक १० तो० और समावेशित करते हैं।

मात्रा व सेवन-विधि—१२ तोला यह अर्क शर्बत उन्नाब २ तोला के साथ पीएँ।

गुणधर्म—इस अर्क से रक्त शुद्ध होता है। फोड़े फुन्सियों की शिकायत दूर होती है तथा चेहरेका रंग अरुणाभऔर साफ़ निकल आता है। यह उपदंश व सूज़ाकमें भी लाभदायक सिद्ध हुआ है। नि० फा० १ भा०।

अर्क मुहल्लिल āarq-muhallil–अ० लयकारक अर्क।

निर्माण-विधि—कलमी शोरा ४ तो०, गंधक आमलासार, गोखरू हर एक १तो०। सबको पानी में भिगोकर अर्क परिस्रुत करें और उक्त अर्क में झाऊ का पत्ता ८ तो०, गुले ग़ाफ़िस, अफ़्सन्तीन

रूमी, बालछड़, तुख्म खबूजा, तुख्म कासनी सौंफ की जड़, कासनी की जड़, करफ्स (अजमोदा) की जड़, इज़खिर की जड़ प्रत्येक ८ तो०, मकोय की हरी पत्ती का फाड़ा हुआ पानी, कासनी की हरी पत्ती का फाड़ा पानी प्रत्येक २ सेर शुद्ध सिरका १ सेर सम्मिलित कर यथाविधि अर्क परिस्नुत करें।

मात्रा व सेवन-विधि—५ तोला अर्क प्रति दिवस प्रातः काल सेवन करें।

गुणधर्म – यह अर्क समस्त उदरीयावयवों के शोथ का लयकर्त्ता है।

विशिष्ट गुण—यकृद् शोथ तथा प्लीहा शोथ के लिए विशेष कर लाभप्रद है। नि० फा० १ भा०।

अर्क मूर्ति रसः arka-múrti-rasah- सं० पु० यह रस सन्निपात ज्वर में प्रयुक्त है। भै० ज्व० चि०।

अर्कमूर्ती रसः arkamúrtirasah–सं० पु० ताम्बे के पत्र के दोनों तरफ बराबर पारा और गन्धक लपेटकर हांडी में रखकर ऊपर से हांडी का मुख बन्द करके दो पहर तक तीव्र अग्नि में पकाएँ; फिर स्वांग शीतल होने पर ताम्बे के पत्र के बराबर बच्छनाग और उतना ही गन्धक मिलाकर चित्रक के क्वाथ और अदरख के रससे भावना दें। मात्रा—१ रत्ती।

गुण—यह सूजन पांडु, कफ और वातरोगों को नष्ट करता है। इसपर लघु पथ्य खाना उचित है। रस० यो० सा०।

अर्कमूल arkamúla–हिं० संज्ञा पु० [सं०] इसरमूल लता। रुद्रिमूल। अहिगंध।

इसकी जड़ साँप के काटने में दी जाती है। बिच्छू के डंक मारने में भी उपयोगी होता है। यह पिलाई और ऊपर लगाई जाती है। स्त्रियों के मासिक धर्म को खोलने के लिए भी यह दी जाती है। कालीमिर्च के साथ, हैजा, अतिसार आदि पेट के रोगों में पिलाई जाती है। पत्तों का रस कुछ मादक होता है। छिलका पेट की बीमारियों में दिया जाता है। रस की मात्रा ३० से १०० बूंद तक है।

अर्क मूलम् arka-múlam–सं० क्ली० इसी नाम से प्रसिद्ध है। एक वृक्ष विशेष। च० द० अग्निमा० चि० क्षार गुड़।

अर्क मूला arka-múlá–सं० स्त्री० ईश्वर मूल, ईशेर मूल–बं०। जरावन्दे हिन्दी–अ०, फा०। (Aristolochia Indica.) रत्ना०।

अर्क मूलादि धूम्र arkamúládi dhúmra –सं० क्ली० आक की जड़, मैनसिल समान भाग, त्रिकुटा अर्ध भाग इनका चूर्ण बना धूम्रपान करके ऊपर से ताम्बूल खाने से अथवा दूध पीने से ५ प्रकार की खाँसी का नाश होता है। वृ० नि० र०।

अर्क़ याबिस áarq-yábis–अ० कल्कूनिया (जङ्गबारी)

अर्क लवणम् arka-lavanam–सं० क्ली० अर्कक्षार, मन्दारक्षार। (An alkaline of Calotropis gigantea.) वै० निघ०।

अर्क लेप arka-lepa सं० क्ली० पुष्कर मूल, दालचीनी, चित्रक, गुड़, दन्तीबीज, कट और कसीस को आक के दूध में पीसकर लेप करने से कर्णमूल का नाश होता है। वृ० नि० र०।

अर्क लोकेश्वरो रसः arka-lokeshvarorasah–सं०पु० ४ तो० शुद्ध पारामें आकके दूध की बार बार भावना दें, फिर ८ तो० शुद्ध गन्धक और ३२ तो० शंख बड़ा इन दोनों को चीते के रस से तीन दिन तक कई बार भावना दें। सूखने पर उपर्युक्त पारे में मिला दें। फिर उसमें पारे से आधा सोहागा मिलाकर आक के दूध से एक पहर भावना दें। जब वह सूख जाए तो एक हांडी में चूना पोतकर औषध को रखकर चूना पोते हुए ढकन से ढक कर बारीक मिट्टी का लेप ढकन के चारों तरफ कर दें, फिर लघु पुट दें।

मात्रा—४ रत्ती। अनुपान—घी, मिर्च।

पथ्य—दही, भात। रात को इस पर भांग और गुड़ सेवन करना चाहिए।

गुण—संग्रहणी के लिए यह अनुभूत है। रस० यो० सा०।

अर्क लोहाभ्रकम् arka-lohábhrakam–सं० क्ली० विदारीकन्द, पिण्ड खजूर, जवासा, अतीस,

हड़, पीपल और दाख इनका चूर्ण समान भाग लें। विदारीकन्द के बराबर प्रत्येक तांबा, लोह भस्म और अभ्रक मिलाएँ।

मात्रा--१-२ रत्ती। घी और शहद के साथ खाने से छः लक्षणों से युक्त राजयक्ष्मा, उरःक्षत, रक्त पित्त, रक्तार्श और अग्निमांद्य का नाश होता है। रस० यो० सा०।

अर्क लोकेश्वर रसः arka-lokeṣhvara-rasaḥ-सं० पुं० शुद्ध पारद ४ तो०, आक के दुग्ध में खरल करें, पुनः शुद्ध गंधक ८ तो० और बड़े शंख की भस्म ३२ तो०, दोनों को चित्रक के रस में ३ दिन खरल करें, पश्चात् उक्त पारद को इसी चूर्ण में मिला दें, और १ तो० सोहागा इसमें और मिलाएँ, सब को मिलाकर १ प्रहर आक के दूध में खरल करें, पीछे उसको १ हंडी के भीतर लेप कर सुखा लें, पीछे सम्पुट में रख कर पुट दें। जब शीतल हो जाए, तब निकाल कर रक्खें।

मात्रा--१-४ रत्ती।

अनुपान--मक्खन।

पथ्य--दही, भात। रात में गुड़ मिश्रित भंग खाना चाहिए। इसके सेवन से घोर संग्रहणी दूर होती है। वृ० रस० रा० सु०। गृह० चि०।

अर्क वल्लभः arka-vallabhaḥ-सं० पुं० बन्धु जीव वृक्ष। बन्धूक पुष्प, दुपहरिया-हिं०। गुल दुपहरिया-पं०, हिं०। बान्धुलि वृक्ष, दुपुरे चगडी-बं०। दुपारी-मह०। (Pentapetes phœnicea, *Linn.*, *Roxb.*) रा० नि० व० १०।

अर्क वल्ली arka-vallí-सं० स्त्री० आदित्य-भक्ता। हुलहुल-हिं०। हुड़हुड़े-बं०। (Cleome Viscosa.) वै० निघ०।

अर्क वेदम्,-धम् arka-vedam,-dham-सं० क्ली० तालीशपत्र। (Abies webbiana.) प० मु०। रा० नि० व० ६।

अर्क् शाहतरा áarq-sháhtará
अर्क् शाहतरा जदीद áarq-sháhtará-jadíd } नवीन शाहतरा का अर्क।

निर्माण-क्रम--२॥ सेर शाहतरा को जल में भिगोकर २० बोतल अर्क परिस्रुत करें। पुनः उक्त अर्क में उतना ही और शाहतरा भिगोकर दोबारा अर्क खींचें।

मात्रा व सेवन-विधि--५ तो० अर्क अनुपान रूप से व्यवहार करें।

गुणधर्म--रक्तशोधक है। चेहरेका वर्ण निखारता और फोड़े फुन्सी की शिकायत को दूर करता है।

अर्क् शीर áarq-shír-अ० दुग्धार्क।

निर्माण-क्रम--कासनी का बीज, गुले गावज़ुबान, खीरा का बीज, बंशलोचन, ज़हरमोहरा हर एक एक तो०, गुले सुर्ख, मकोय शुष्क, गावज़ुबान, मग़ज़ कद्दू, तुख़्म काहू प्रत्येक २ तो०, तुख़्म खुर्फ़ा ३ तो०, शुष्क धनियाँ, श्वेत चन्दन रक्त चन्दन हर एक ४ तो०, कद्दू सब्ज़, कासनी की हरी पत्ती, काहू की पत्ती हर एक ४ तो० ८ मा०, गुले कँवल ५ तो०, कसेरू, गुलेबेद, गुले नीलोफ़र हर एक १० तो०, अर्क बेदेमुश्क, अर्क शाहतरा, अर्क मको हर एक १ सेर, अर्क गुलाब २ सेर, अर्क बेद सादा ४ सेर, बकरी का दूध १० सेर, वर्षा जल आवश्यकतानुसार विधि अनुसार अर्क परिस्रुत करें।

गुणधर्म--राजयक्ष्मा तथा वातज्वर के लिए लाभदायक है। इ० अ०।

अर्क् शीर जदीद áarq-shír-jadíd-अ०

निर्माण-क्रम--हरा गुर्च (छिला हुआ) १८ तो०, गुल नीलोफ़र, गुल मुंडी, ब्रह्मडण्डी, गुल मासफ़र, (कुसुम्भ पुष्प), मेंहदी पुष्प, निम्ब पुष्प, गुल सेवती, गुले सुर्ख, पीली हड़ का बक्कल, हलेला स्याह, आमला छिला हुआ हर एक १० तो०, सरफोका चिरायता, बादरअबूया हर एक १४ तो०, कासनी का बीज, खीरा का बीज, खुर्फ़ा का बीज, खर्बूज़ा का बीज, हर एक

१८ तो०, शाहतरा की पत्ती, झाऊकी पत्ती, नगुन्द-बाबरी, नीलकण्ठी, मेंहदी की हरी पत्ती हर एक आधसेर, सफ़ेद चन्दन का बुरादा, लाल चंदन का बुरादा, शीशम का बुरादा, आबनूस का बुरादा, निम्ब की लकड़ी का बुरादा, हर एक १ पाव केवड़ा की जड़ २ सेर। सम्पूर्ण औषधों को रात्रि भर उष्ण जल में भिगोकर। प्रातः काल बकरी का दूध १० सेर, कासनी की पत्ती का फाड़ा हुआ पानी ४ सेर, अफ़्तीमून विलायती, बसफ़ाइज पिस्ती प्रत्येक १० तो० और सम्मिलित कर अर्क़ परिस्रुत करें और दोबारा उक्त अर्क में उपर्युक्त औषध डालकर पुनः अर्क परिस्रुत करें।

मात्रा व सेवन-विधि—२ तो० से ४ तो० पर्यन्त यह अर्क प्रति दिवस प्रातः सायं दोनों काल शर्बत उन्नाब या कोई अन्य उपयुक्त शर्बत मिलाकर पिलाएँ।

गुणधर्म—उपदंश, कुष्ठ तथा अन्य वात रोगों में अत्यन्त लाभप्रद हैं। ति० फ़ा० २ भा०।

अर्क़ शीर बसीत़ āarq-shír-basít-अ०।

योग निर्माण-विधि—छाग दुग्ध ५ सेर, अर्क बेद सादा २ सेर, अर्क बेदे मुश्क, अर्क शाहतरा हर एक १ सेर, मिश्री आध पाव यथा विधि अर्क परिस्रुत करें।

गुणधर्म—राजयक्ष्मा और वात ज्वर के लिए लाभदायक है। इ० अ०।

अर्क़ शीर मुरक्कब जदीद āarq shír mura-kkab-jadíd-अ० नूतन मिश्रित दुग्धार्क।

निर्माण-विधि—तुख़्म कासनी, गुल गाव-ज़ुबान, खीरा के बीज, तबाशीर, ज़हर मोहरा प्रत्येक १ तो० गुले सुर्ख़, मकोय, गावज़ुबान, मग़ज़कद्दू, तुख़्म काहू प्रत्येक २ तो०, तुख़्मख़ुर्फ़ा ३ तो०, शुष्क धनियाँ, रक्त व श्वेत चन्दन, प्रत्येक ४ तो०, हरी कासनी की पत्ती, हरा कद्दू, काहू पत्र प्रत्येक ४ तो० ८ माशा, कमलपुष्प ५ तोला, कसेरू, गुलबेद, गुलनीलोफ़र हर एक १० तो०, अर्क बेदमुश्क, अर्क शाहतरा, अर्क मको हर एक एक सेर, अर्क गुलाब २ सेर, अर्क बेद सादा ४ सेर, छागदुग्ध १० सेर। इनमें यथावश्यक जल मिश्रित करके ८० बोतल अर्क परिस्रुत करें। पुनः इस अर्क में उपर्युक्त औषधों को सम्मिलित कर दोबारा अर्क खींचें।

मात्रा व सेवन-विधि—५ तोला यह अर्क प्रातः सायं तथा मध्याह्न तीनों काल में सेवन करें।

गुण-धर्म—रक्तशोधक, बल्य, उष्माशामक तथा तर है। वायु रोगों तथा राजयक्ष्मामें अक्सीर सिद्ध हुआ है। ति० फ़ा० १ भा०।

अर्क़ सम्मुल्फ़ार āarq-sammulfár-अ० संखिया का घोल, फ़ूलर महाशय का घोल। Fowler's solution (Liquor Arsenicalis) देखो-संखिया।

अर्क़ सम्मुल्फ़ार मुरक्कब ब ब्रोमीन āarq-sammulfár murakkab ba bromin-अ० (Liquor Arsenici Bromiatus) देखो-संखिया।

अर्क़ सम्मुल्फ़ार मुरक्कब ब सीमाब व आयोडीन āarq-sammulfár murakkab-ba-símáb va áyodín-अ० डूनोवन महाशय का घोल। Donovan's solution (Liquor Arsenii et Hydrargyri Iodidi) देखो-संखिया।

अर्क सुता arka-sutá-सं० स्त्री० कृष्ण अपराजिता। Clitorea Ternatea (The black var. of--) वै० निघ०।

अर्क सुधा arka-sudhá-सं० स्त्री० अर्कोत्थ सुधा --हिं०। मकरूल् अश्र, शकर मदार-अ०। आकन्देर चुण-बं०। गुण—गुल्मरोग नाशक है। वै० निघ०।

अर्क़ सूज़ाक āarq súzák-अ० पूयमेहार्क।

निर्माण-विधि—सूखी धनियाँ ५ तोला को रात्रि भर आधपाव जल में भिगोएँ और प्रातः काल इसका क्वाथ विधि द्वारा काढ़ा प्रस्तुत कर शीतल होने पर इसमें ३ तो० मांडी और ६ मा० रोग़न सन्दल सम्मिलित कर अर्क तैय्यार कर लें।

मात्रा व सेवन-विधि—प्रातः सायं व मध्याह्न १–१ तो० ।

गुण-धर्म—सूज़ाक के लिए यह अत्यन्त लाभजनक सिद्ध हुआ है। इसे व्यवहार में लाने से मूत्रदाह, वेदना, रक्त, पीव तथा क्षत सम्बन्धी सम्पूर्ण शिकायतें दूर हो जाती हैं।

नोट—हिन्दुस्तानी दवाखाना देहली का ख़ास नुसख़ा है जिसे जनाब मसीहुलमुल्क हकीम अजमलख़ाँ साहब ने अपनी असीम कृपा से अपने गुप्त योगों में से प्रदान किया था।

अर्क़ सोडा मुरक्कब ब सम्मुलफ़ार āarq-sodá murakkab ba sammulfár–अ० (Liquor sodii arsenatis) देखो—संखिया।

अर्क़ सोय āarq-soy
अर्क़ शिब्बित āarq-shibbit
अर्क़ शविद,-त āarq shavid,-t
} -अ० सोया (अ) का अर्क। Dill water (Aqua anethi)। देखो–शतपुष्प।

अर्क़ सौंफ āarq-sounf–उ० सौंफ का अर्क। Anise water (Aqua anisi) देखो–सौंफ।

अर्क़ संखिया तुर्श āarq-sankhiyá tursha –अ० (Liquor arsenici hydrochloricus). देखो–संखिया।

अर्क़ हड़ताल āarq-haratál–अ० हड़ताल का अर्क। देखो–हरिताल।

अर्क़ हराभरा जदीद āarq-harábhará-jadíd–अ०

योग निर्माण-क्रम—लाल व सफ़ेद चन्दन, ख़श, पद्माख, नागरमोथा, हरी गिलोय, शाहतरा, नीम की छाल, गुल नीलोफ़र, तुख़्म कासनी, सौंफ, कद्दू के बीज, नेत्रबाला, धनियाँ, तुलसी के बीज, बहेड़े की जड़, इसुमूल, जवासा की जड़, कासनी की जड़, धमासा, मुलेठी, मुण्डी, इलायची छोटी, कोकनार (पोस्त का डोंडा) हरएक एक तो०, रात को जल में भिगोकर यथा विधि अर्क परिस्रुत करें। पुनः इस अर्क में उपयुक्त औषध भिगोकर दूसरे दिन दोबारा अर्क परिस्रुत करें।

मात्रा व सेवन-विधि—१॥ तो० उपयुक्त औषध के साथ।

गुणधर्म—राजयक्ष्मा में अत्यन्त लाभदायक सिद्ध हुआ है। मूत्र दाह, सूज़ाक और मूर्च्छा के लिए भी गुणदायक है तथा उत्तमांगों को बल प्रदान करता है। प्रधान गुण-राजयक्ष्मा के लिए विशेषकर लाभप्रद है।

अपथ्य—उष्ण एवं शुष्क वस्तु।

नोट—यक्ष्मा के लिए जनाब मसीहुल मुल्क हकीम अजमलख़ाँ साहब का मुख्य नुसख़ा है।

अर्क़ हाज़िम āarq házim
अर्क़ हाज़िम जदीद āarq házim jadíd
} --अ० पाचकार्क।

निर्माण-विधि-- बबूल की छाल १० सेर, किशमिश हरा, तथा मिश्री प्रत्येक ५ सेर, लहसुन, लौंग प्रत्येक १ तो०, ऊद ग़र्क़ी २ तो०, सफ़ेद चन्दन २२ मा०, बीख़ बनफ़्सा १८ मा०, सुअदकोफ़ी (नागरमोथा) १० मा०, पोस्त तुरञ्ज ४ तो०, बहमन सफ़ेद व लाल, शक़ाकुल, सालबमिश्री, तेजपात, दालचीनी, गुलगावज़ुबान हरएक २ तो०, खस ४ तो०, बड़ी इलायची का दाना ५ तो०, जायफल, जावित्री, हरएक २ तो०, केशर १ तो०, अम्बर ६ मा०, अम्बर व केशर के सिवा शेष सम्पूर्ण औषधों को रात्रि भर उष्ण जल में भिगोकर प्रातःकाल १० बोतल अर्क परिस्रुत करें। केशर व अम्बर की पोटली अर्क खींचते समय नीचे के मुँह में रख दें। इस अर्क में समग्र औषधों को पुनः तर करके फिर दस बोतल अर्क खींचें।

मात्रा व सेवन-विधि—सवा तो० यह अर्क किसी उपयुक्त शर्बत के साथ या वैसे ही पिलाएँ।

गुण-धर्म—आमाशय के सम्पूर्ण दोषों को दूर करता है। पाचक, क्षुधावर्द्धक, शरीर में

चुस्ती व चालाकी लाता एवं बल तथा ओजको बढ़ाता है। ति० फा० १ व २ भा०

अर्क हिता arka-hitá-सं० स्त्री० आदित्यभक्ता, हुलहुल, हुरहुर-हिं०। हुड़हुड़िया-बं०। (Cleome viscosa) सूर्य्य फुलवल्ली -मह०। रा नि० व० ४।

अर्क हेमाम्बुदम् arka-hemámbudam-सं० क्ली० खस, पतंग, कमलकेशर, चन्दन, एर्वारुक (ककड़ी भेद), नागकेशर, दारुहल्दी, नागरमोथा, तृणमणि (कैरवा) और श्वेत कमल इन सबको बराबर लेकर बहुत बारीक चूर्ण बनाएँ। फिर खस के बराबर तामबा, लोहा, और अभ्रक भस्म पृथक् पृथक् मिलाकर शहद के साथ खाने से मुख, नेत्र, कर्ण, गुदा, और रोम कूपों से निकलता हुआ रक्त बन्द होता है। र० यो० सा०।

अर्क़ हैज़ा áarq-haizá-अ० वैशूचिकार्क।

निर्माण-विधि—(१)ज़रिश्क, अनारदाना खट्टा प्रत्येक एक पाव, रक्त चन्दन का बुरादा, आलूबोखारा, सौंफ प्रत्येक अर्धसेर, पुदीना हरा, दालचीनी प्रत्येक १ सेर, तबाशीर ७ तो०, कपूर ४ मा०, बड़ी इलायची आधपाव, शुद्ध जल १० सेर, औषधों को पानी में भिगोकर यथाविधि ५ सेर अर्क़ परिस्रुत करें। अर्क खींचते समय दो माशा कपूर नीचे के मुँह में रख दें।

मात्रा व सेवन-विधि—२ तो० यह अर्क दो–दो घंटे के अन्तर से पिलाते रहें।

गुण-धर्म—हैज़ा वबाई के लिए अत्यन्त लाभदायक है। तीव्र तृषा को तत्काल शमन करता है और पित्त को समूल नष्ट करता है ति० फ़ा० २ भा०।

(२) दरियाई नारियल, तुरञ्ज की पीली छाल, गुलाब की कली, पपीता, काग़ज़ी नीबू के बीज, पियारांगा, नीम वृक्ष की छाल, सौंफ हरएक ६ तो०। सबको यवकुट करके अर्क गुलाब में तर करें। प्रातः शुद्ध सिरका १ सेर, आबतुरञ्ज, काग़ज़ी नीबू का रस, हरे कुकरौंधा का रस, हरे पुदीना का फाड़ा हुआ रस प्रत्येक १ पाव सम्मिलित कर अर्क परिस्रुत करें।

मात्रा व सेवन-विधि—दो–दो तो० प्रातः सायं नीबू का सिकञ्जबीन मिलाकर या यूँ ही पिलाएँ। ति० फ़ा० २ भा०।

अर्क़ हैज़ा वबाई áarq-haizá-vabái-अ० संक्रामक वैशूचिकार्क।

निर्माण-क्रम—प्याज़, लहसुन हरएक २॥ सेर, आकाशबेल २ सेर, जीरा स्याह आधसेर, इलायची श्वेत, सोंठ, पीपल प्रत्येक ८ तो०, पुदीना शुष्क १६ तो०, दालचीनी १४ तो०। सब को कूटकर रात को पानी में भिगो दें और प्रातः यथाविधि ५ सेर अर्क परिस्रुत करें तथा बोतलों में रखें।

मात्रा व सेवन-विधि—१ तो० से ३ तो० तक प्रातःकाल पान करें।

गुण-धर्म—वबाई हैज़ा के दिनों में स्वास्थ्य संरक्षण हेतु इसका उपयोग अत्यन्त लाभदायक है। हैज़ा के रोगी के लिए भी इसका प्रयोग अति ही लाभदायी है। ति० फ़ा० २ भा०।

अर्क क्षारः arka-ksháraḥ-सं० पुं० आक के कोमल पत्तों को तेल और पाँचों नमक तथा काँजी के साथ विधिवत् भस्म करके क्षार बनाएँ। इसे उष्ण जल या मद्य के साथ सेवन करने से बादी बवासीर का नाश होता है। वृ० नि० र० बवासीर।

अर्क क्षीरम् arka-kshíram-सं० क्ली० अर्क वृक्ष निर्यास। आकन्दर आटा-बं०।

गुण—कृमिहर, व्रणघ्न, कुष्ठ, उदररोग तथा अर्श में हित है। राज०। तिक्त व लवण स्वादयुक्त, उष्ण वीर्य, लघु, स्निग्ध, गुल्म एवं कुष्ठ हर और उदर विकार तथा विरेचन में हित है। भा० पू० १ भा०। च० द० अर्श-चि०।

अर्काकिया arkákiyá-अ० मकड़ी का जाला। (Spider's web.)

अर्काङ्कुरादि स्वरसः-arkánkurádisvarasaḥ सं० पुं० आक के अंकुरों को कांजी या नीबू के रस में पीसकर और नमक तथा तेल मिलाकर उसे थूहर के डंडे में भरकर उसपर कपड़मिट्टी करदें।

फिर पुटपाक विधि से पकाकर उसका रस निकालें, फिर उस रस को गुनगुना करके कान में डालने से कान के दर्द का नाश होता है। वृ० नि०।

अर्कादिक्वाथः arkádikváthah-सं० पुं० आक की जड़, पीपलामूल, सहिजन की छाल, दारुहल्दी, चव्य, सम्हालू, पीपल, रास्ना, भांगरा, पुनर्नवा, चित्रक, वच, सोंठ, चिरायता। इनका क्काथ सन्निपात, तन्द्रा, वायु, सूतिका रोग, शीत और अपस्मार का नाशक है। वृ० नि० र०।

अर्कादिगणः arkádiganah-सं० पुं० मन्दारके वर्ग की ओषधियाँ।

(१) आक, (२) सफेद आक, (३) नागदन्ती, (४) विशल्या (लांगली), (५) भारंगी (भार्गी), (६) रास्ना, (७) वृश्चिकाली, (८) कंजा, (९) ओंगा, (१०) काकादनी, (११) श्वेता, (१२) महाश्वेता (ये दोनों कोइल के भेद हैं) और (१३) हिंगोट अर्थात् इंगुदी यह अर्कादिगण है। सु० सू० ३८ अ०।

गुण—कफ, मेद दोष, विष, कृमिरोग, कुष्ठ रोग इनको नष्ट करता है और विशेष करके व्रण को शुद्ध करता है। वा० सू० १५ अ०।

अर्कादितैलम् arkáditailam-सं० क्ली० आक का रस, धतूरे का रस, सफेद थूहर का रस, सहिजन का रस, कांजी प्रत्येक १ प्रस्थ कूट और सेंधानमक प्रत्येक २-२ पल। इनके साथ एक प्रस्थ तैल का पाक सिद्ध करें। यह खल्ली, शूल, हैज़ा, पक्षाघात और गृध्रसी का नाशक है। वृ० नि० र०।

अर्कादिलेपः arkádilepah-सं० पुं० आक का दूध, थूहर का डंठल, गोखरू, कड़वी तरोई के पत्ते, करंज की गिरी इन सबको बकरे के मूत्र में पीसकर लेप करने से मस्सों का नाश होता है। यो० र०।

अर्क़ान arkán-फ़ा० मेंहदी, हिना। (Lawsonia inermis) इं० हैं० गा०।

अर्क़ान arqán-अ० यर्क़ान, काँवर, कामला। देखो—कामला। जॉण्डिस (Jaundice.) इं०।

अर्क़ान arqán } -यू० मेंहदी। (Myrtle,
अर्क़ून arqún } Henna plant..)

अर्कान arkán } -अ०
उस्तुक़ुस्सात ustuqussát } रुक्न का बहुवचन है। अग्नि, वायु, जल तथा पृथ्वी प्रभृति चार भूत (तत्व) विशेष जिनसे सृष्टि की सम्पूर्ण वस्तुएँ उद्भूत हुई हैं। (Elements.) देखो—तत्व।

अर्कानलेश्वरः arkánaleshvarah-सं० पुं० पारा १ भाग, सुवर्ण पत्र १ भाग दोनों को मिलाएँ। जब पारे में सुवर्ण अच्छी तरह मिल जाए, तब पारेके समान सोना माखी और आधे प्रमाण में गन्धक मिलाकर अग्नि पर पिघलाकर पर्पटी बनाएँ। फिर पर्पटी का चूर्ण करके एक दिन बालुकायन्त्र में पकाएँ। यदि इसकी शक्ति बढ़ानी हो तो गन्धक दे दे कर ६ लघुपुट दें। नोट—इसमें स्वर्ण के स्थान में चाँदीपत्र और सोनामाखी के स्थान में किसी किसी के मत से वेधक हरिताल डालते हैं। रस० यो० सा०।

अर्कावली arkávalí-सं० स्त्री० गुर्जा (एक हिन्दी दवाई)।

अर्काश्मन arkáshman-हिं० पुं० } (१)
अर्काश्मा arkáshmá-सं० पुं० }
(A crystal lens.), सूर्य्य कान्तमणि। (२) (A ruby.) चुन्नी। पन्ना। एक प्रकार का छोटा नगीना। चुनि, पान्ना-बं०। अरुणोपल। हला०।

अर्काहुली arkáhulí-बं० (१) सूर्य्य कान्तमणि (The sun stone.)। (२) हुरहुर, सूर्यावर्त। (Gynandropsis Pentaphylla.) अन्धाहुली-हिं०।

अर्काह्वः arkáhvah-सं० पुं० (१) तालीशपत्र (Tálíshapatra.)। (२) सूर्य्यकांतमणि (A crystal lens; a rubby.)। (३) अर्क वृक्ष। (Calotropis gigantea.) अम०।

अर्क़ियात āarqiyát-अ० (ब० व०), अर्क़ (ए० व०) Waters (Aquae.) देखो—अर्क़ ।

अर्की arkí-सं० पुं० मयूर, मोर पक्षी । मयूर -बं० । मोरी-महं० । (A peacock.) वै० निघ० ।

अर्क़ील āarqíl-अ० अण्डे की ज़र्दी, अण्डपीत भाग । (Yolk of an egg.)

अर्क़ुज्जबाल āarqujjabála-अ० मोमियाई । See-Momiyái.

अर्क़ुज़्ज़बीब āarquzzabíba-अ० मुनक्का या दाख का पानी जो विशेष विधि द्वारा निकाला गया हो ।

अर्क़ुत्तीब āarquttíba-अ० (१) अमरार (A tree.) । (२) ज़र्नबाद, नरकचूर, कचूर ।(Curcuma zedoaria, *Roscoe.*)

अर्क़ुल् अरूस āarqul-āarúsa-अ० अभ्रक, भोडर(ल) । Talc (mica.).

अर्क़ुल् क़दीद arqul-qadída-अ० भुना हुआ नमकीन मांस जिसे यात्रा में साथ ले जाते हैं ।

अर्क़ुल्काफ़ूर āarqulkáfúra-अ० (१) कपूर का अर्क, कर्पूरारिष्ट । (The spirit o: Liquor of Camphor.) । (२) ज़र्नबाद, नरकचूर, कचूर । (Curcuma zedoaria, *Roscoe.*)

अर्क़ुश्शज्र āarqushshajra-अ० गोंद निर्यास। (Gum.)

अर्क़ून āarqúna-अ० एक पौधा है जिसकी पत्तियाँ शक़ायक़ुन्नुअ्मान (गुले लाला) जैसी होती हैं ।

अर्क़े गुले सुर्ख़ āarqe-gule-surkha-फ़ा० गुलाब, गुलाब जल, गुलाब का अर्क । (Rose water.) स० फा० इं० ।

अर्क़े गोगिर्द āarqe-gogirda-फ़ा० गंधकाम्ल, गंधक का तेजाब (Sulphuric Acid.) स० फा० इं० ।

अर्क़े बेदेमुश्क āarqe-bedemushka-फ़ा० बेदमुश्क का अर्क-द० । माउल् ख़िलाफ़ अ० । Salix caprea, *Linn.* (Water of-) स० फा० इं० ।

अर्क़े नमक āarqe-namak-फ़ा० लवणाम्ल, उज्जहरिकाम्ल, नमक का तेजाब । (Hydrochloric or Muriatic Acid.) स० फा० इं० ।

अर्क़े शोरह् āarqe-shorah-फ़ा० शोरकाम्ल शोरे का तेजाब, (Nitric acid.) । स० फा० इं० ।

अर्केश्वररसः arkeshvara-rasah-सं० पुं० चन्द्रोदय, ताम्रभस्म, लौहभस्म, सुहागा भुना, खपरिया (शुद्ध), त्रिकुटा, हरताल इनको आक के दूध में खरल करें यह एक दिन में सिद्ध होता है । इसे नस्य द्वारा प्रयोग करनेसे सन्निपात दूर होता है ।

अर्केश्वरोरसः arkeshvarorasah-सं० पुं० हरिताल, सोनामाखी, मैनसिल, शुद्ध पारा, सुहागा, सेंधानमक, चित्रक और भांगरे का चूर्ण सबको बराबर लेकर बारीक चूर्ण करके मिलाएँ ।

मात्रा—४ रत्ती । गुण—शहद के साथ सेवन करने से सुप्त मण्डल वाला कुष्ठ नष्ट होता है । रस० यो० सा० ।

अर्केश्वरः arkeshvarah-सं० पुं० ताम्रभस्म, बंगभस्म, अभ्रक भस्म, सोनामाखी भस्म प्रत्येक समभाग लेकर गिलोय और सुगन्धबाला के रस की २१ पुट देकर शराव सम्पुट में रखकर फूँक दें । फिर अडूसा, शहद और विदारीकंद के रस में चार चार रत्ती की गोलियाँ बनाएँ । इसको शहद के साथ खाने से रक्तपित्त तत्काल नष्ट हो जाता है । रस० रा सु० रक्तपित्त ।

अर्कोत्तमा arkottamá-सं० स्त्री० वर्वरी, बबुई तुलसी । (Ocimum basilicum.)

अर्कोपलः arkopalah-सं० पुं० }
अर्कोपल arkopala-हिं० संज्ञा पुं० }
सूर्यकान्तमणि, आतशी शीशा, लाल पद्मराग । (The sun-stone;a ruby;a crystal lens.)

अर्कोल arkol } –पं० तत्रक, तत्री, तेत्री,
अर्खर arkhar } चेचर, ककरी, दूदल, वांश, हुलशिङ्ग । रूहस सेमि-अलेटा (Rhus Semi-alata, *Murray.*), रूहस बकियामेला (R. Buckia mela, *Roxb.*)–ले० । रश्तू –सत० । दखमिल, दसविल–उ० प० सू० । बक्रियामेल, भगमिली–नैपा०। तुखरिल–लेप० ।

भल्लातक वर्ग

(*N. O. Anacardiaceæ.*)

उत्पत्ति-स्थान—शीतोष्ण हिमालय, बनहल से सिक्किम पर्यन्त तथा खसिया पर्वत ।

प्रयोगांश—फल (Berries.) । तैल-औषध तथा आहार के काम आता है ।

उपयोग—उदरशूल में इसका फल व्यवहार में आता है । स्टयवर्ट ।

अर्क़ ज़ा āarqzá } –अ० (१) हिन्द
अर्क़ ज़ान āarqzána } क़र्क़ी, विषखपरा
अर्ह ज़ान āarhzána } (बूटी), (२) बरबतूरह । कोई कोई बख़ूरुल अक़राद को कहते हैं ।

अर्क्टोस्टैफिलास ग्लौका arctostaphylos glauca–ले० मेन्ज़ानीटा लीव्ज़ (Manzanita leaves.)–इं० ।

अर्क्टोस्टैफलॉस यूवा अर्सई arctostaphylos uva, ursi, *Spreng.*–ले० इनबुदुब, भल्लूक (रीछ) द्राक्षा–हिं० । इसकी पत्तियाँ औषध कार्य में आती हैं । मेमो० । देखो—युवा अर्साई । (Uvæ ursi.)

अर्क़ फन arkfan पु० चणकः, चना । (gram or chick pea).

अर्खामून arkhámúna–अ० चक्षु श्याम वृत्त । नेत्र का काला भाग अर्थात् पुतली ।

अर्गजा argajá –हिं० संज्ञा पु'० अरगजा । सुगन्धि विशेष । (A perfume of a yellowish colour and compounded of several scented ingredients).

अर्गट: argatab–सं० पु'० आरगवध नामक कण्टक वृक्ष विशेष । नील झाण्टी–चं० । एरवणी –महा० । कटसरैया–हिं० । (Barleria coerulea).

गुण—शीतल, व्रणशोधक तथा रोपक है । मद० व० ५ । अर्गट कसैला, शीतल वीर्य, व्रण-विशोधक, व्रण रोपण करने वाला तथा पुष्प मधुर है । यह तिक्त है एवंज्वर, पित्त, कफ तथा रक्त रोग नाशक है । वै० निघ० ।

अर्गट ergot }
अर्गट ऑफ़ राई ergot of rye } –इं० गन्दुम दीवाना, शैलम, अर्गटा । (Ergota.)

अर्ग़नोन arghanoun–अ० अर्गन वाद्य जिसको हकीम अफ़लातून ने अन्वेषित किया था । ऑर्गन Organ–इं० ।

नोट—ऑर्गन का अर्थ अवयव, इन्द्रिय अथवा शस्त्र भी है ।

अर्गल argal–हिं० संज्ञा पु'० [सं०] (१) अरगल । अगरी । ब्योंड़ा । (२) किवाड़ । (३) अवरोध । (४) कल्लोल ।

अर्गलम् argalam–सं० क्ली० मांस, गोश्त । (Muscle; Flesh.) वै० निघ० ।

अर्ग़ल arghala–अ० वह मनुष्य जिसका ख़तना न हुआ हो । (Uncircumcised.)

अर्गला argalá–हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] (१) अरगल । अगरी । (२) ब्योंड़ा । (३) अवरोध । (४) बाधक । अवरोधक । रुकावट डालने वाला ।

अर्गलाधरा argaládhará-सं०स्त्री० (Infraspinatus) कशेरु कण्टकाधरा ।

अर्गली argalí–हिं० संज्ञा स्त्री० [देश०] भेड़ की एक जाति जो मिश्र शाम आदि देशों में होती है ।

अर्गलोत्तरा argalottará-सं० स्त्री० (Supra spinatus) कशेरुकण्टकोर्ध्व ।

अर्ग़वाँ arghaván-फ़ा० (१)अर्जवाँ-अ० । एकवृक्ष है जो फ़ारस देश में उत्पन्न होता है । इसके

पुष्प अत्यन्त नीलाभरक्त वर्ण के तथा सुन्दर होते हैं। स्वाद मधुर होता है।

प्रकृति—१ कक्षा में उष्ण व रूक्ष, माइल ब इअ्तिदाल। स्वाद—किञ्चित् मधुर, किसी किसी ने कटु एवं किञ्चित् विकट लिखा है। हानिकर्त्ता—इसकी जड़ वमनकारक है। आमाशय के लिए अहितकर। दर्पघ्न—वर्ग उन्नाब और नमाम। प्रतिनिधि—संदल व गुले सुर्ख। मात्रा—जड़ २ दिरम (७ मा०) और पुष्प ३ दिरम (१०॥ मा०)। प्रधान कर्म—श्वासोच्छ्वासावयव का विशोधक।

गुण, कर्म, प्रयोग—पिच्छिल वा सांद्र दोषों को विसर्जित करता तथा आमाशय एवं वृक्क की शीतलताको नष्ट करता है। श्वासोच्छ्वास सम्बन्धी अवयवों (फुप्फुस) को शुद्ध करता है। जलाकर इसके प्रयोग करने से मुख द्वारा रक्त स्राव होने को लाभदायक है और इसका बीज नेत्र सम्बन्धी औषधों में चाकसू के समान उष्ण नेत्राभिष्यन्द को दूर करता है। म० मु०। अश्मरी को नष्ट करता एवं स्वर को साफ करता है। इसके फूलों का क्वाथ आमाशय एवं फुप्फुस को शुद्ध करता और अत्यन्त वमन लाता है। जलाकर अवचूर्णन करनेसेयह रक्तरुद्धक और उत्तम खिज़ाब है तथा भवों के [illegible] जाता है। बु० मु०। (२) बैंगनी रक्त वर्ण (Red & bluish)

अर्गवानी arghaváni-अ० श्यामाभायुक्त रक्त वर्ण। (Blackish red colour.)

अर्गाइरोल argyrol-इं० वाइटेलीन (Vitellin.) देखो—रजत।

अर्गामूनी arghámúní-अ० वन पोस्ता, मामीसा सुर्ख़ (वन्य पोस्त सदृश एक बूटी)। (Wild poppy.)

अर्गीमोन मेक्सिकेना argemone mexicana, *Linn.* ले० सत्यानासी, भड़भाँड़। (Gamboge thistle; mexican poppy.) फा० इं० १ भा०।

अर्गीरिया स्पेसिओज़ा argyreia speciosa -ले० समुद्रशोष। (Elephant creeper.) इं० मे० मे०।

अर्ग़ीलम arghílam-इब्रा० खुर्फ़ा। See khurfá.

अर्ग़ीस arghís-यू० ज़रिश्क मूल त्वचा। See-zarishka.

अर्गेनिया सिडरॉक्सिलोन argania sideroxylon, *R. S.*-ले० इसका बीज तथा फल प्रयोग में आता है। मेमो०।

अर्गेमीन ergamine-इं० देखो—अर्गोटा।

अर्गोग्राफ ergograph-इं० इटली के एक वैज्ञानिक ने इस नाम का एक यन्त्र तैयार किया था। इसके द्वारा अंगुलियों की पेशियों की शक्ति नापी जाती है।

अर्गोएपिओल ergoapiol-इं० यह अजमोदा (Apiol.) तथा अर्गटका एक मिश्रण है। इसको कैप्स्यूल रूप में रजोरोध में देते हैं। हिं० मे० मे०। देखो—अजमोदा।

अर्गोटा ergota-ले० अर्गट Ergot, अर्गट ऑफ राई Ergot of Rye, सीकेल कॉर्न्युटम् Secale Carnutum, स्पर्ड राई Spurred rye, स्मट राई Smut rye-इं०। क्लेवस सिकेलिनस Clavus secalinus ब्ली कॉर्नु Ble cornu-फ्रें०। मटर कॉर्न Muttercorn-जर०। शैलम्, अरशैल्मुल् मुक़रन, जवेदार (मिश्र०), अलक़ुमृहिउल् अस्वद, हन्तुस्मोदा-अ०। गन्दुम दीवानह -फ़ा०।

छत्रिका वा तृणवर्ग

(*N. O. Fungi and Graminaceæ.*)

संज्ञा-निर्णय—फ़रासीसी भाषा में अर्गट का अर्थ कुक्कुटकण्टक (ख़ारे मुर्ग़) है। अर्गट स्वरूप में उसके समान होता है। इसलिए इसको उक्त नाम से अभिहित किया गया।

उत्पत्ति—यह फ़ंगस अर्थात् छत्रिका के प्रकार की एकफफूँदी या काई है, जिसको परिभाषा में क्लैवीसेप्स पर्प्युरिया (Claviceps purpurea, *Tulasne.*) कहते हैं। अन

यह फफूँदी सीकेली सिरिएली (Secale Cereale) नामक धान्य में जिसको आँग्ल भाषा में कॉमन राई (Common Rye) और अरबी में शैलम या जवेदार कहते हैं, लग जाती है (अर्थात् उक्त फफूँदी छत्रकीय जीवाणु या वानस्पतिक कीट राई के दाने के भीतर प्रविष्ट होकर उसकी रचना में परिवर्तन उपस्थित कर देते हैं।) तब उक्त विकृत राई को जो वास्तव में उक्त फफूँदी से पूर्ण होती है, अर्गट वा अर्गट ऑफ राई कहते हैं।

वर्णन—इसके किसी भाँति नोकीले त्रिकोणाकार साधारणतः वक्र दाने होते हैं जिनकी नोक पतली होती है। ये $\frac{1}{3}$ से $\frac{1}{2}$ वा एक इंच लम्बे और $\frac{1}{3}$ इंच चौड़े होते हैं। इनके दोनों पृष्ठ विशेष कर नतोदर पृष्ठ तीन परिखायुक्त होते हैं और दाने स्फुटित (चिड़चिड़ाए या चटखे) होते हैं। बाहर से ये नील लोहित (बनफशई स्याह) और भीतर से प्याजी श्वेत वर्ण के और भंगुर होते हैं अर्थात् इनको जहाँ से तोड़ें वहीं से टूट जाते हैं। गंध विशेष प्रकार की अग्राह्य और स्वाद खराब (कुस्वाद) तथा हल्लासकारक होता है।

रासायनिक संगठन—रासायनिक विधि अनुसार अर्गट का विश्लेषण करने पर इसमें अनेक पदार्थ पाए जाते हैं। उनमें से इसके केवल प्रभावात्मक सत्वों का ही यहाँ उल्लेख किया जाता है। वे निम्न हैं—

(१) **स्फेसीलिनिक एसिड** (Sphacelinic acid.) - (जिसका प्रभाव स्फेसीलोटॉक्सीन के कारण होता है) गर्भाशयिक मांसपेशियों के संकोचनके अतिरिक्त यह रक्तवाहिनियों को भी आकुंचित करता है। यह जल में अविलेय पर ऐलकोहल (मद्यसार) में विलेय होता है। (२) **कॉर्न्युटीन** (Cornutine.)—यह एक ऐल्कलाइड (क्षारोद) है जिसका मुख्य कार्य जरायु सम्बन्धी मांसपेशियों का संकोचन है। यह जल में अविलेय होता है। (३) **अर्गटिनिक एसिड** (Ergotinic acid.)- एक ग्लूकोसाइड। (४) **अर्गटॉक्सीन** (Ergotoxine.) —एक गैंग्रीनोत्पादक सत्व जो प्रयोग करने पर व्यर्थ सिद्ध होता है। कहते हैं कि यह इसका प्रभावात्मक अंश है। अर्गोटीनीन इसका अनूहाइड्राइड है। (५) **अर्गमीन** (Ergamine.) तथा (६) **टायरेमीन** (Tyramine.)। (७) एक स्थिर तैल ३०%, (८) **ट्राइमीथल अमाइन** जो इसकी गंध का मूल है और (९) **टैनीन** तथा रञ्जक पदार्थ प्रभृति अवयव इसमें विद्यमान होते हैं।

संयोग-विरुद्ध (Incompatibles.)- ग्राही (Astringent.) औषध और मेटैलिक साल्ट्स (धातुज लवण)।

प्रतिनिधि—कार्पास मूलत्वक। **नोट**-स्त्री रोगों की चिकित्सा में कार्पास अर्गट से श्रेष्ठतर एवं निरापद है। देखो—कार्पास।

सूचना—अर्गट के समूचे दानों को सुरक्षिततया शुष्क करके (अग्नि पर नहीं, प्रत्युत अशांत चूर्ण के उत्ताप पर शुष्क करें) सर्वथा शुष्क एयर टाइट अर्थात् वायुरोधक शीशी में डालकर और उसमें किंचित् कपूर डालकर रखें जिसमें वह विकृत न हो एवं उसमें कीड़े न लग जाएँ। इस औषधि का चूर्ण बहुत शीघ्र विकृत हो जाता है।

संयुक्त राज्य अमेरिका की फार्माकोपिया में लिखा है कि एक वर्ष पश्चात् यह अप्रयोजनीय हो जाता है।

प्रभाव—आर्त्तवप्रवर्त्तक, गर्भशातक और सार्वांगीय रक्तस्थापक।

औषध-निर्माण तथा मात्रा—

चूर्णित अर्गट, १० से २० ग्रेन, प्रसव हेतु, ३० से ६० ग्रेन।

तरल रसक्रिया (सार), १० से ६० मिनिम।

घन सत्व (रसक्रिया), १ से ५ ग्रेन।

फाण्ट (४० में १), १ से २ फ्लु० आउंस।

तैल, १० से २० वा ३० मिनिम प्रसवार्थ।

टिंक्चर वा आसव (१ से ४ प्रूफ स्पिरिट), १० से ६० मिनिम।

मात्रा—१५ से ६० ग्रेन (१ से ४ ग्राम)। प्रायः चूर्ण रूप में प्रयुक्त होता है।

ऑफ़िशल योग

(*Official preparations.*)

(१) **एक्सट्रैक्टम अर्गोटी** (Extractum Ergotæ.)-**लें०**। एक्सट्रैक्ट ऑफ़ अर्गट (Extract of Ergot.) अर्गोटीन, अर्गट रसक्रिया, अर्गट सत्व वा सार -हिं०। ख़ुलासहे शैलम्, शैल्मीन-अ०। रुब्ब गन्दुम दीवानह्-फ़ा०। नोट—अर्गोटीन (Ergotin) ब्रिटिश फार्माकोपिया (B. P.) में सॉफ्ट एक्सट्रैक्ट ऑफ अर्गट का ऑफ़िशल पर्याय था। पर इस नाम से भ्रम उत्पन्न होने की आशंका है, अस्तु इस नाम का परित्याग कर देना ही उत्तम है।

निर्माण-विधि—अर्गट का ४० नं० का चूर्ण २० आउंस, ऐलकोहाल (६० %) और परिस्रुत वारि आवश्यकतानुसार, डायल्युटेड हाइड्रोक्लोरिक एसिड (जल मिश्रित उज्जहरिकाम्ल) ७॥ फ़्लुइड ड्राम और सोडियम कार्बोनेट १७५ ग्रेन।

अर्गट के चूर्ण को १० फ़्लुइड आउंस ऐलकोहाल से क्लेदित कर पर्कोलेटर (क्षरण यन्त्र) में स्थापित करें और पर्याप्त ऐलकोहल डालकर इतना क्षरण करें कि वह एक्ज़ास्ट होजाए (ख़तम होजाए)। पुनः प्राप्त द्रव को जलकुण्ड (वाटर बाथ) पर इतना उड़ाएँ वा शुष्क करें कि उसका द्रव्यमान ५ फ़्लुइड आउंस शेष रह जाए। फिर उसमें ५ फ़्लुइड आउंस परिस्रुत वारि मिलाएँ और शीतल होने पर पोतन कर उसमें जलमिश्रित उज्जहरिकाम्ल सम्मिलित करदें। २४ घंटे पश्चात् पुनः उक्त द्रव का पोतन करें और जो मल अवशेष रह जाए उसको जल से इतना धोएँ कि उसकी अम्लता सर्वथा दूर हो जाए। फिर अवशिष्टांश को धोने से शेष रहे हुए द्रव को पूर्व प्राप्त द्रव में मिलाकर और सोडियम कार्बोनेट को उसमें विलीन करके उसे जल कुण्ड (वाटर बाथ) पर वाष्पीभूत कर मृदु रसक्रिया रूप में शुष्क करलें।

मात्रा—२ से ८ ग्रेन (·१३ से ·५२ ग्राम वा १२ से ५० शतांश ग्राम)।

(२) **एक्सट्रैक्टम अर्गोटी लिक्विडम्** Extractum Ergotæ Liquidum --**लें०**। लिक्विड एक्सट्रैक्ट ऑफ अर्गट Liquid Extract of Ergot--**इं०**। अर्गट तरल सत्व, अर्गट द्रव रसक्रिया--हिं०। ख़ुलासहे शैलम सय्याल--अ०। रुब्बे गन्दुम दीवानह् सय्याल--फ़ा०।

निर्माण-विधि—कुट्टित अर्गट २० आउंस, परिस्रुत वारि ७॥ पाइंट, ऐलकोहल (९० %) ७॥ फ़्लुइड आउंस। अर्गट को ५ पाइंट परिस्रुत वारि में १२ घंटे तक भिगोकर निःस्रावित करलें और अवशेष को अवशिष्ट परिस्रुत वारि में उतने काल तक भिगोकर पोतन करें। पुनः प्रत्येक प्राप्त द्रव को परस्पर योजित कर इतने उत्ताप पर वाष्पीभूत करें जिसमें तरल का द्रव्यमान ४ फ़्लुइड आउंस शेष रह जाए फिर उसमें सुरा सम्मिलितकर १ घंटा पश्चात् पोतन करलें। प्रस्तुत रसक्रिया का परिमाण पूरा २० फ़्लुइड आउंस होना चाहिए।

मात्रा—१० से ३० मिनिम (·६ से १·८ घन शतांश मीटर वा ६ से १८ डेसिमिलिग्राम) जल में।

(३) **इन्फ्युज़म अर्गोटी** Infusum Ergotæ--**लें०**। इन्फ्युजन ऑफ़ अर्गट Infusion of Ergot-**इं०**। अर्गट फांट --हिं०। ख़िसाँदहे शैलम--अ०। ख़िसाँदहे गन्दुम दीवानह्--फ़ा०।

निर्माण-विधि—सद्यः कुट्टित अर्गट १ भाग, खौलता हुआ परिस्रुत जल २० भाग, १ बंद पात्र में १५ मिनट तक अर्गट को जल में प्रक्लेदित कर पोतन करलें।

मात्रा—१ से २ फ़्लुइड आउंस (२८·४ से ५६·८ घन शतांश मीटर वा ३० से ६० मिलिग्राम).

इञ्जेक्शियो अर्गोटी हाईपोडर्मिका Injectio ergotæ hypodermica -**लें०**। Hypodermic injection of

ergot or Ergotin हाइपोडर्मिक इन्जेक्शन ऑफ़ अर्गट ऐंड अर्गोटीन–इं०। अर्गट त्वकधःस्थ अन्तःक्षेप-हिं०। ज़राक़हे शैल्मीन तह् तुजिल्द या ज़ेरेजिल्द–अ०। शैल्मीन की ज़ेरे जिल्द पिचकारी–उ०।

निर्माण-विधि—एक्सट्रैक्ट ऑफ़ अर्गट १०० ग्रेन, फेनोल ३ ग्रेन, परिस्नुत वारि २२० मिनिम वा आवश्यकतानुसार। फेनोल को परिस्नुत वारि में मिलाकर थोड़े काल तक क्वथित करें। शीतल होने पर उसमें एक्सट्रैक्ट ऑफ अर्गट सम्मिलित करके इतना परिस्नुत जल और मिलाएँ कि इञ्जेक्शन का द्रव्यमान ३३० मिनिम हो जाए।

शक्ति ३३ ग्रेन अर्गट ११० मिनिम में या ३ में १ (३.३ मिनिम=१ ग्रेन एक्सट्रैक्ट ऑफ अर्गट)।

मात्रा—३ से १० मिनिम (·१८ से ·६ घन शतांशमीटर) गम्भीर त्वकधःस्थ अन्तःक्षेप हेतु।

सूचना—समय पर इसको सदा सद्यः प्रस्तुत कर प्रयोग करना चाहिए।

टिंक्चूरा अर्गोटी अमोनिएटा

Tinctura ergotæ ammoniata–ले०। अमोनिएटेड टिंक्चर ऑफ अर्गट (ammoniated tincture of ergot–इं०। अमोनित अर्गटासव–हिं०। सिब्ग़हे शैलम अमूनी–अ०। तअफ़ीन गन्दुम दीवानह् अमूनी–फ़ा०।

निर्माण-विधि—अर्गट का २० नं० का चूर्ण ४ आउंस, सोल्युशन ऑफ अमोनिया २ फ्लुइड आउंस, ऐलकोहल (६०%) आवश्यकतानुसार। सोल्युशन ऑफ अमोनिया में १८ फ्लुइड आउंस ऐलकोहल सम्मिलित कर उसमें से २ फ्लुइड आउंस लेकर उससे चूर्ण को प्रक्लेदित कर स्रवण-यंत्र (पर्कोलेटर) में स्थापित कर दें तथा अवशिष्ट द्रव को उस पर धीरे धीरे डाल कर उसे पर्कोलेट (स्रवण) करलें। पुनः अवशेष को निचोड़ने से प्राप्त अर्क को स्रवणकृत तरल में सम्मिलित कर उसमें इतना ऐलकोहल और योजित करें कि प्रस्तुत टिंक्चर का द्रव्यमान पूरा १ पाइंट हो जाए। फिर २४ घंटे पश्चात् टिंकचर का पोतन करलें।

मात्रा—आधे से १ ड्राम वा ३० से ६० मिनिम (१.८ से ३.६ घन शतांशमीटर=२ से ४ मिलिग्राम)।

नॉट ऑफ़िशल योग तथा पेटेन्ट औषधें

(*Not official preparations.*)

(१) **डिस्कस ऑफ़ अर्गोटीन** Discs of ergotin अर्थात् अर्गोटीन पट्टिकाएँ। सफ़्हात रक़ीक़ह् शैल्मीन–अ०।

प्रत्येक टिकिया में $\frac{1}{3}$ या $\frac{1}{4}$ ग्रेन अर्गोटीन होता है। त्वगीय पिचकारी द्वारा त्वगधः प्रविष्ट करने के लिए इसका निर्माण किया गया है।

समय पर एक टिकिया को १० मिनिम कीट-रहित (क्वथित कर साफ़ व स्वच्छ किए हुए) परिस्नुत वारि में मिलाकर प्रयुक्त करें।

(२) **पिल्युला अर्गोटीनी** Pilula ergotini अर्गोटीन वटिका। हब्ब शैल्मीन।

अर्गोटीन २ ग्रेन, लिकोरिस पाउडर (यष्टि-मधु चूर्ण) ३ ग्रेन। दोनों को परस्पर योजित कर वटी प्रस्तुत करें।

(३) **लाइकर अर्गोटी अमोनिएटस** Liquor ergotæ ammoniatus–अमोनित अर्गोटीन द्रव। सय्याल शैल्मीन अमूनी।

यह एक प्रकार का लिक्विड एक्सट्रैक्ट ऑफ़ अर्गट अर्थात् अर्गट तरल सत्व है जो अमोनिया वाले विलीन एलकोहल से प्रस्तुत किया जाता है।

(शक्ति १ में १) यह एक प्रभावात्मक और विश्वस्त योग है।

मात्रा—१० से ६० मिनिम=(·६ से ३.६ घन शतांशमीटर).

(४) **मिसच्यूरा अर्गोटी** Mistura ergotæ–अर्गट मिश्रण। मज़ीज शैलम्।

लिक्विड एक्सट्रैक्ट ऑफ़ अर्गट ३० मिनिम, डायल्युटेड सल्फ्युरिक एसिड १० मिनिम, क्लोरोफ़ॉर्म वाटर १ आउंस पर्यन्त। (बी० पी० सी०)

(५) मिसच्यूरा अर्गोटी अमोनियटा—Mistura ergotae ammoniata—अमोनित अर्गट मिश्रण। मज़ीज शैलम अमोनी।

लिक्विड एक्सट्रैक्ट ऑफ़ अर्गट २० मिनिम, अमोनियम कार्बोनेट ३ ग्रेन, इमल्शन ऑफ़ क्लोरोफ़ॉर्म १५ मिनिम, कैम्फर वाटर १ आउंस पर्यन्त। (युनिवर्सिटी हॉस्पिटल).

(६) मिसच्यूरा अर्गोटी एट फेराई Mistura ergotae et ferri—लौहार्गट मिश्रण। मज़ीज शैलम व आहन।

लिक्विड एक्सट्रैक्ट ऑफ अर्गट ३० मिनिम, सोल्युशन ऑफ़ फेरिक क्लोराइड १५ मिनिम, साइट्रिक एसिड ५ग्रेन, क्लोरोफार्म वॉटर १आउंस पर्यन्त। (गाईज़ हॉस्पिटल लण्डन)

(७) वाइनम अर्गोटी Vinum ergotae—अर्गट सुरा। शराब शैलम।

फ्लुइड एक्सट्रैक्ट ऑफ अर्गट २० भाग, डीटक्सेटेड शेरी ८० भाग। (बी० पी० सी०)

(८) एसिडम स्क्लेरोटिकम् Acidum Scleroticum—लें०। स्क्लेरोटिनिक एसिड Sclerotinic acid—इं०। यह अर्गट द्वारा प्राप्त एक महान प्रभावकारी सत्व है। परीक्षा—एक निर्बल अम्लीय सार जो धूसर स्फटिकीय चूर्ण रूप में पाया जाता है। यह आर्द्रताशोषक और जलविलेय होता है।

गुण-तथा उपयोग—१ ग्रेन स्क्लेरोटिनिक एसिड प्रभाव में ३० ग्रेन अर्गट के बराबर होता है। यह सूक्ष्म रक्तवाहिनी संकोचक है। अस्तु यह रक्तास्थापक रूप से तथा रक्तसंचय जनित शिरःशूलहर रूप से लाभदायक है।

मात्रा—$\frac{1}{8}$ से $\frac{1}{4}$ ग्रेन, त्वकस्थ अन्तःक्षेप द्वारा (वा ५ से १५ मिनिम मुख तथा अन्तःक्षेप द्वारा—ह्वि० मे० मे०)।

(९) कॉर्न्युटीन साइट्रेट Cornutin citrate—यह अर्गट के एक एलकलाइड (क्षारोद) का विलेय लवण है जो कोबर्ट के मतानुसार अर्गट का क्रियाशील सत्व का प्रभावात्मकांश है। यह एक धूसर वर्ण का चूर्ण है, प्रसव हेतु जिसका अधिक उपयोग होता है। अस्तु $\frac{१}{१०}$ से $\frac{१}{८}$ ग्रेन की मात्रा में मुख द्वारा तथा $\frac{१}{३२}$ से $\frac{१}{८}$ ग्रेन की मात्रा में त्वकस्थ सूचीवेध द्वारा इसका प्रयोग करते हैं।

(१०) अर्गोटीन (Ergotin)—यह अर्गट का केवल एक विशुद्ध सत्व है। अर्गोटीन (Ergotine), बोञ्जियन्स अर्गोटीन (Bonjean's Ergotine)—इं०।

उपयोग

इसका प्रायः उन सभी दशाओं में प्रयोग होता है, जिनमें कि अर्गट प्रयुक्त है। परन्तु निम्न लिखित कतिपय अन्य ऐसे विकार भी हैं जिनमें इसका उपयोग होता है।

(१) नपुंसकत्व (क्लीवता)—शिश्न पृष्ठस्थ शिराओंके फूल जाने के कारण जब उचित प्रहर्षणाभावमें मैथुन शक्ति कम हो जाती है, तब अर्गोटीन के त्वकस्थ अन्तःक्षेपसे प्रायः पूर्ण लाभ होता है।

(२) अर्गोटीन और कोनीन—यह दोनों गर्भाशय एवं प्लीहा को संकुचित करते हैं; और विशेष कर उस अवस्था में जब विषम ज्वरों में प्लीहा कोमल हो या वह बढ़ गई हो, तब इनमेंसे प्रत्येक एक दूसरे की प्रतिनिधि हो सकता है। विषम ज्वरों में इन दोनों का मिश्रण अत्यन्त उपयोगी होता है और इस प्रकार उपयोग करने से कीनीन के अधिक परिमाण की बचत होती है। क्योंकि मिश्रित रूप में व्यवहार करने से आधा ही कीनीन प्रयुक्त होता है।

(३) यक्ष्मा जन्य रात्रि स्वेद यह यक्ष्मा रोगियों के रात्रिस्वेद में हितकर है। मात्रा—२ ग्रेन तीन वा चार बार दैनिक। कमी की दशा में मात्रा घटाकर देनी चाहिए।

इंजेक्शियो अर्गोटीनी हाइपोडर्मिका (Inj. Ergotini. Hypod.)
अर्गोटीन त्वकस्थ अन्तःक्षेप ।

शक्ति अर्गोटीन १०० ग्रेन, कैम्फर वाटर २०० फ्लुइड ग्रे० । मात्रा—३ से १० मिनिम ।

(११) **अर्गोटीनीन** Ergotinine–यह एक ऐल्कलाइड (क्षारोद) है जो अर्गट से प्राप्त होता है। इसके सूक्ष्म श्वेत स्फटिक (रवे) होते हैं जो वायु एवं प्रकाश के प्रभाव से कृष्ण वर्ण के हो जाया करते हैं ।

नोट—अधुना यह अर्गोटॉक्सीन का अनहाइ-ड्राइड माना जाता है ।

विलेयता—यह एक भाग (माप में) ३३ भाग (मापमें) शुद्धाम्ब (Absolute Alcohol.)में, तथा ५०° फ़ारनहाइटके उत्ताप पर विलीन होजाता है । और एकभाग २२० भाग शुद्ध ईथर (Absolute Æther.) में, एक भाग ९१ भाग ईथिल एसीटेट में, १ भाग २६ भाग एसीटोन में, १ भाग ७७ भाग खौलते हुए बेन्ज़ीन में, १ भाग ५२ भाग खौलते हुए ईथिल ऐलकोहल में और १ भाग ५६ भाग मीथिल ऐलकोहल में विलीन हो जाता है ।

नोट—अर्गोटीनीन और सम्पूर्ण विलायक द्रव्यों के भाग द्रव्यमान (आयतन) के अनुसार नहीं, प्रत्युत माप के अनुसार हैं ।

गुणधर्म तथा उपयोग—प्रभाव में यह अर्गोटीन की अपेक्षा अधिकतर शक्तिशाली है। धमनिका गत्युत्पादक वात-तन्तु-विकार, विशेषतः शिरोऽर्त्ति, अर्द्धावभेदक, (Basedow's disease) और वस्तिकी वातग्रस्तताकी दशा में इसका प्रयोग करते हैं। अर्गट सत्व (Extract of ergot) के अन्तःक्षेप की अपेक्षा अर्गोटीनीनी का $\frac{१}{३००}$ से $\frac{१}{६०}$ ग्रेन की मात्रा का त्वगधोऽन्तःक्षेप अधिकतर लाभ प्रदर्शित करता है। मॉर्फीन इंजेक्शन (अहिफेनीन अन्तःक्षेप) की अपेक्षा यह अधिक वेदना नहीं उत्पन्न करते (अपितु अपेक्षाकृत वेदना रहित हैं), और क्षोभ या किसी अन्य प्रकार के कुलक्षण नहीं उपस्थित करते । (प्रोफेसर युलेनबर्ग) ।

डॉक्टर मरेल (Dr. Murrel) को यक्ष्मा-जन्य फुफ्फुसीय रक्तनिष्ठीवन में कई दिन तक रक्तस्राव अवरुद्ध रखनेके लिए साधारणतः इसका एक अन्तःक्षेप ही पर्याप्त सिद्ध हुआ है। प्रसव के पश्चात् की चिकित्सा एवं रक्तस्रुति के कतिपय अन्य भेदों में इसका सफलतापूर्वक त्वकस्थ अन्तःक्षेप किया जा सकता है ।

मात्रा–$\frac{१}{२००}$ से $\frac{१}{८०}$ ग्रेन।इसकोसाधारणतःत्वकस्थ सूचीवेध द्वारा प्रयुक्त करते हैं। अतः अर्गोटीनीन १ ग्रेन, लैक्टिक एसिड २ मिनिम, क्लोरोफॉर्म १००० मिनिम को मिलाकर इसमें से ५ से १० मिनिम, लेकर त्वकस्थ सूचीवेध द्वारा प्रयुक्त करते हैं ।

(१२) **अर्गटीनी साइट्रास** (Ergotinae Citras.) और (१३) **अर्गटीनीहाइड्रोक्लोराइड** (Ergotinae Hydrochloride)–यह दोनों अर्गोटीनीन द्वारा निर्मित धूसर वर्ण के चूर्ण हैं जो जलविलेय होते हैं ।

मात्रा- $\frac{१}{४५०}$ से $\frac{१}{[illegible]}$ ग्रेन । इनमेंसे प्रथम का अन्तःक्षेप किया जा सकता है ।

(१४) **अर्गोटॉक्सीन** (Ergotoxine)–यह एक लघु श्वेत वर्ण का चूर्ण होता है जो शीतल ऐलकोहल तथा सोडियम हाइड्रोक्साइड के विलयन में विलीन हो जाता है ।

इससे हाइड्रोक्लोराइड (उज्जहरिद), ऑक्ज़ेलेट (काष्ठेत्) और स्फुरेत् लवणों का निर्माण [illegible]ता है ।

मात्रा—$\frac{१}{१००}$ से $\frac{१}{५०}$ ग्रेन । यह कौन्युटीन, एक्बोलीन और हाइड्रो-अर्गोटीनीन नाम से भी प्रख्यात है ।

नोट—अर्गोटीन यद्यपि ब्रिटिश फार्माकोपियाके एक्सट्रैक्ट ऑफ अर्गट का पर्याय है, तथापि उसके अतिरिक्त इसके कई एक व्यापारिक भेद हैं जिनमें से कतिपय निम्न हैं :—

(क) अर्गोटीनम् बोंजियन् (Ergotinum Bonjean)—यह एक जलीय रक्ताभधूसर एक्सट्रैक्ट है जो ऐलकोहल से शुद्ध किया जाता है। इसका १ भाग ५ या ६ भाग अर्गट के बराबर होता है। मात्रा—$1\frac{1}{2}$ से $4\frac{1}{2}$ ग्रेन।

(ख) अर्गोटीनम् बॉम्बेलॉन फ्लुइडम् (Ergotinum Bombeion Fluidum)—यह एक धूसराभकृष्ण वर्णीय द्रव है जिसको ३० मिनिम की मात्रा में त्वकूस्थ सूचीवेध द्वारा प्रयुक्त किया करते हैं।

(ग) अर्गोटीनम् डेंजेल फ्लुइडम् (Ergotinum Denzel Fluidum)—यह एक स्वच्छ किया हुआ रसक्रिया (खुलासा, रुब्ब) है जिसको ३ से १० ग्रेन की मात्रा में देते हैं।

(घ) अर्गोटीनम् कोलमैन फ्लुइडम् (Ergotinum Kohlman Fluidum)—यह भी श्यामाभधूसर द्रव है जो जल के साथ संयुक्त हो जाता है। मात्रा—६० से ७५ ग्रेन।

(१५) टायरेमीन (Tyramine), हाइड्रॉक्सीफेनिलीथिलामीन (P-Hydroxyphenylethylamine)—यह अर्गट फांट में वर्तमान होता है और इसे सन्धानक्रिया विधि (Synthetically) द्वारा भी प्रस्तुत किया गया है। इसका प्रभाव एड्रीनेलीन (उप वृक्कसार) के समान होता है। त्वगधोऽन्तःक्षेप द्वारा ($\frac{1}{12}$ ग्रेन की मात्रा में) भी इसका प्रयोग किया जा सकता है। यह सिस्टोजन (Systogen) और युटेरामीन (Uteramin) नाम से भी प्रसिद्ध है।

(१६) इर्न्युटीन (Ernutin)—यह एक तरल है, जिसमें टायरेमीन और अर्गोटॉक्सीन दोनों सम्मिलित होते हैं। त्वगधोऽन्तःक्षेप रूप से (१० मिनिम की मात्रा में और आन्तरिक रूप से ३० से ६० बूंद 'मिनिम' की मात्रा में) इसका उपयोग होता है।

अर्गट की फार्माकालाजी

अर्थात्

अर्गट के प्रभाव

(आन्तरिक प्रभाव)

डॉक्टर डिक्सन (Daixon) एवं डॉ० डेल (Dale) ने अर्गट स्थित मुख्य प्रभावकारी सत्वों की ध्यानपूर्वक परीक्षा की जो इस कच्ची औषध (Crude drug) के प्रभाव पर यथेष्ट प्रकाश डालती है। जैसा कि डिजिटेलिसके सम्बन्ध में कहा जाता है, इसका यह प्रभाव इसके विभिन्न सत्वों के सम्मिलित प्रभाव का परिणाम मानो जा सकता है। (डिजिटेलिस के समान, अर्गट से भिन्न किए हुए किसी भी सत्व का ऐसा विश्वस्त प्रभाव नहीं होता जैसा कि कच्ची औषधके फांट, टिंक्चर या लिक्विड एक्सट्रैक्ट अर्थात् तरल सत्व का)।

(१) अर्गोटॉक्सीन (Ergotoxine)—वे पदार्थ जो प्रथम स्फेसीलिनिक एसिड (Sphacelinic Acid) और स्फेसीलोटॉक्सीन (Sphacelotoxin) नाम से अभिहित होते थे, उक्त ऐलकलाइड (क्षारीद) के अशुद्ध रूप थे। डिक्सन महोदय इसका प्रभाव-स्थल प्रान्तस्थ नाडी-गंड की सेलों को मानते हैं। उनके मतानुसार यह रक्तवाहिनियों को बलपूर्वक आकुंचित करता है जिससे शरीरावयव एवं हस्तपाद में गैंग्रीन बन जाते हैं, और कुक्कुट की अरुणशिखा श्यामवर्ण में परिणत होकर पतित हो जाती है एवं यह गर्भान्वित जरायु के तन्तुओं का सबल आकुञ्चन उत्पन्न करता है। शय्यागत रूप से अर्थात् रोगी पर यद्यपि इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होता, तो भी यही इसका एक ऐसा प्रभावकारी सत्व है जिससे वास्तव में अर्गट को अमोघ कहा जा सकता है।

(२) टायरेमीन (Tyramine.)—प्राणिज पदार्थ के पचनकाल में अमिनो-एसिड द्वारा भी यह निर्मित किया जाता है। टायरोसीन

(Tyrosine.) से कर्बनद्विओषित (CO_2) का विच्छेद कर भी यह प्रस्तुत किया जा सकता है और उपर्युक्त सत्ववत् प्रभाव करता है। प्रांतस्थ सौषुम्न वात-तन्तुओं के अंतिम भाग पर प्रभाव करके यह कोष्ठगत दीवारों का आकुंचन उत्पन्न करता है और गर्भित जरायु की पेशियों का भी सकोच उत्पन्न करता है।

(३) अर्गेमीन (Ergamine.)—उसी प्रकार पचनकारक कीटाणुओं की क्रिया द्वारा यह हिस्टिडीन (Histidine.) से भी भिन्न किया जा सकता है। यह धमनिकाओं का महत् विस्तार उत्पन्न करता है और इससे गर्भावस्था से पूर्व भी गर्भाशयिक मांसतन्तुओं का सशक्त वल्य आकुंचन उपस्थित होता है। जल-विलेय न होने के कारण चूँकि अर्गोटॉक्सीन फांट वा तरल सत्व में विद्यमान नहीं रहता, अतएव इन औषधों की पूर्ण मात्रा द्वारा उत्पन्न प्रभाव, टायरेमीन के धमनिका-संकोचन (Vaso-constrictor) प्रभाव के कारण होना अवश्यम्भावी है, जो कि अर्गेमीन की धमनिका प्रसारण (Vaso-dilator) शक्ति की अपेक्षा अत्यधिक है।

मुख-आमाशय तथा आंत्र—अर्गट का स्वाद तिक्त है। यह लालाप्रस्राववर्द्धक है अर्थात् इससे अधिक लाला (थूक) उत्पन्न होती है। मध्यम मात्रा में प्रयुक्त करने से यह आंत्रीय स्वाधीन वा अनैच्छिक मांसपेशियोंको गति प्रदान करता है। अस्तु, आंत्रस्थ कृमिवत् आकुंचन तीव्र हो जाता है। कभी कभी तो यह प्रभाव इतना बढ़ जाता है कि विरेक आने आरम्भ हो जाते हैं। अधिक मात्रा में उपयोग करने से यह आमाशय तथा आंत्र में क्षोभ उत्पन्न कर देता है।

शोणित—इसके प्रभावात्मक अंग तत्काल रक्त में प्रविष्ट हो जाते हैं, परन्तु रक्त पर उनका कुछ भी प्रभाव नहीं होता।

हृदय—अर्गट हार्दिक मांसपेशियों पर अवसादक या नैर्बल्योत्पादक (Depressant) प्रभाव करता है अर्थात् इससे हार्दीय मांसपेशियों की शक्ति घट जाती है। अस्तु यह नाड़ी की गति को भी शिथिल करता है। नाड़ी की गति का उक्त शैथिल्य फुप्फुस वा आमाशय नाड़ी प्रांत के क्षोभ के कारण होता है। क्योंकि अर्गट से पूर्व यदि ऐट्रोपीन (धत्तूरीन) दी जाए तो फिर ऐसा नहीं होता। अतः इससे प्रथम रक्त भार घट जाता है अर्थात् अर्गटसे हृदय निर्बल होजाना और नाड़ी शिथिल हो जाती है।

रक्त वाहिनी—(रक्त भार) अधिकतर धामनिक मांसतंतुओं पर अर्गट का सरल प्रभाव होने से और किसी भाँति इससे सौषुम्न धामनिक गत्युत्पादक केन्द्रों (Vaso-motor centre) को गति प्राप्त होने के कारण सम्पूर्ण शरीर की धमनियों के सबल रूप से आकुंचित होने से रक्तभार जो आरम्भ में कम होगया है। अब वह शीघ्र बढ़ जाती है। यही नहीं प्रत्युत शिराएँ भी किसी प्रकार संकुचित हो जाती हैं। सारांश यह कि अर्गट से सम्पूर्ण शरीर की रक्त वाहिनियाँ विशेषतः छोटी २ धमनियों के संकुचित होजाने और स्फेसीलिनिक एसिड के प्रभाव से उनकी दीवारों के स्थूल हो जाने के कारण यह एक सार्वांगिक रक्तस्थापक (General Hæmostatic) है। अस्तु यदि अर्गट को अधिक काल तक सेवन किया जाए तो शारीरिक धमनियों के संकुचित होजाने के कारण शरीरके विभिन्न भागमें गैंग्रीन (Gangrene) हो सकता है, जिससे गैंग्रीनस अर्गोटिज़्म (Gangrenous-ergotism) होजाया करता है। इसको अत्यधिक मात्रा वा विषैली मात्रा में प्रयुक्त करने से वैसोमोटर सेण्टर्ज़ (धामनिक गत्युत्पादक केन्द्र) वातग्रस्त हो जाते हैं। हृदय के निर्बल होजाने और धमनियों के प्रसारित हो जाने के कारण रक्तभार बहुत घट जाता है।

श्वासोच्छ्वास—अर्गट श्वासोच्छ्वास को कम करता है। अस्तु, श्वासोच्छ्वास सम्बन्धी मांसपेशियों की निर्बलता तथा आक्षेप के कारण श्वासावरोध होकर मृत्यु उपस्थित होती है।

वात वा नाड़ीमण्डल—मस्तिष्क पर इसका अत्यल्प प्रभाव होता है। औषधीय मात्रा अथवा एक ही बड़ी मात्रा में इसका उपयोग करने से सर्वोत्कृष्ट वातकेन्द्र प्रभावित नहीं होते। पर यदि चिरकाल तक इसका निरंतर उपयोग किया जाए तो विशेष प्रकार के लक्षण उपस्थित हो जाते हैं, जिनको आक्षेपयुक्त अर्गटजन्य विषाक्तता (Spasmodic ergotism) कहते हैं।

गर्भाशय—गर्भवती स्त्रियों तथा क्षुद्र जीवों में गर्भावस्था विशेषकर प्रसवकाल में अर्गट के प्रयोग से जरायु इतनी तीव्र गति से आंकुचित होता है कि तदाभ्यन्तरस्थित सभी वस्तुएँ बहिर निर्गत हो जाती हैं। अतएव यह एक सबल गर्भशातक (आशुप्रसवकारी) औषध है। इसको बड़ी मात्रा में प्रयुक्त करने से टेटेनिक स्पैज़्म (धानुस्तम्भीय आक्षेप) होने लगता है। यह बात अभी सन्देहपूर्ण है कि आया यह गर्भशातक भी है ? क्योंकि जब तक दुरविज़ह आरंभ न हो इससे जरायु संकुचित नहीं होता। गर्भविहीन वा शून्य जरायु पर इसका बहुत साधारण प्रभाव होता है; बल्कि कुछ प्रभाव नहीं होता अर्थात् इससे गर्भाशयिक सन्तु संकुचित नहीं होते। सम्भवतः इसका यह प्रभाव गर्भाशय के धारीविहीन मांस पेशियों पर सरलोत्तेजक असर होने से और किसी भाँति सौषुम्न गर्भाशयिक वातकेन्द्रों को गति प्रदान करने के कारण हुआ करता है।

प्रस्राव (रसोद्रेक)—अर्गट के प्रयोग से लाला, घर्म, दुग्ध तथा मूत्रोत्पत्ति व प्रस्राव घट जाता है। जिसका कारण यह होता है कि समग्र शरीर की रक्तवाहिनियों के संकुचित हो जाने से उक्त द्रवों की उत्पन्न करनेवाली ग्रंथियों में रक्त यथेष्ट परिमाण में नहीं पहुँचता।

अर्गट-अगदतन्त्र

(अर्गट के विषाक्त प्रभाव वा लक्षण)

क्रॉनिक अर्गोटिज़्म (अर्गट द्वारा चिरकारी विषाक्तता)—औषधीय मात्रा में इसका उपयोग करने से तो कदाचित् विरलाही तज्जन्य विषाक्तता दृष्टिगोचर होती है। परन्तु ऐसे निर्धन प्राणी जो दूषित राई के धान्य (जिसमें अर्गट ऑफ राई वर्तमान होती है) भक्षण करते हैं, प्रायः वे क्रॉनिक अर्गोटिज़्म (पुरातन प्रकार के अर्गट विष) से आक्रांत पाए जाते हैं। निम्नलिखित इसके दो स्वरूप होते हैं—

(१) गैंग्रीनस अर्गोटिज़्म—

धमनियों के संकुचित हो जाने से चूँकि रक्त समग्र अवयवों में यथेष्ट परिमाण में नहीं पहुँच पाता; अतएव पोषण विकार के कारण शरीर के विभिन्न अवयवों में विशेषकर हस्तपाद में गैंग्रीन (Gangrene) की दशा उपस्थित हो जाती है जिसका पेलैग्रा (Pellagra) से निर्णय करने में भ्रम न करना चाहिए।

(२) स्पैज़्मोडिक अर्गोटिज़्म (आक्षेपयुक्त अर्गट विष) इस प्रकार के रोगी को प्रथम कण्डु वा गुदगुदी का बोध होता है अथवा सम्पूर्ण शरीर पर चिउँटियाँ रेंगती हुई प्रतीत होती हैं। तदनन्तर सनसनाहट और स्थानिक संज्ञाशून्यता का अनुभव होता है। अस्तु साधारणतः पहिले हस्तपाद आक्षेपग्रस्त एवं अवसन्न हो जाते हैं। पुनः सम्पूर्ण शरीर की यह दशा हो जाती है। क्षुधा बढ़ जाती है। श्रवण व दर्शनमें अन्तर आ जाता है। मांसपेशियों की निर्बलता के कारण गति अस्थिर हो जाती अर्थात् चाल लड़खड़ाने लगती है। नाड़ी की गति अत्यन्त मंद हो जाती है, वमन व विरेक आरम्भ हो जाते हैं। अन्ततः सार्वांगाक्षेप होकर ऐस्फिक्सिया (श्वासावरोध) की दशा में मृत्यु उपस्थित होती है।

अगद

अर्गट द्वारा विषाक्त होने पर निम्न मिश्रण का व्यवहार करें—

ईथरिस प्योर	३० मिनिम
टिंक्चर ओपियाई	१० मिनिम
सिरूपाई	५ ड्राम
एक्वी डिस्टिलेटा	४ ड्राम

इसमेंसे एक चाय के चम्मच भर औषध प्रति आध आध घंटे के अन्तर से प्रयुक्त करें।

नोट नाइट्रोग्लीसरीन को बड़ी मात्रा में देने से जो विषाक्तता उत्पन्न होती है उसका तथा अधिक परिमाण में क्वीनीन के प्रयुक्त करने से हुई मास्तिष्कीय विकार का अर्गट एक उत्तम अगद है।

अर्गट के थेराप्युटिक्स अर्थात् उपयोग
(बहिर प्रयोग)

कभी कभी गलगण्ड (गॉइटर) और धामनीयार्बुद (एन्युरिज़्म) के समीप अर्गोटीन का त्वकूस्थ अन्तःक्षेप करने से लाभ होता है। गुद-भ्रंश (Prolapsus of the rectum) में यदि प्रति दूसरे वा तीसरे दिवस गुदसंकोचनी पेशी वा स्वयं गुदा में ३ ग्रेन अर्गोटीन का त्वकूस्थ अन्तःक्षेप किया जाए तो कहते हैं कि उक्त व्याधि की निवृत्ति होती है।

आन्तर प्रयोग

सार्वांगिक रक्तस्थापक रूप से अर्गट अब तक विख्यात है और सम्प्रति इसको आभ्यन्तरिक शोणित क्षरण यथा नासार्श द्वारा रक्तस्राव होने अर्थात् नकसीर (Epistaxis), रक्तनिष्ठीवन (Hæmoptysis), रक्तवमन (Hæmatemesis) और रक्तमूत्रता (Hæmaturia) प्रभृति रोगों में वर्तते हैं। व्याधियोंकी ऐसी उग्रावस्था एवं भयानक रोगियों में प्रति १५ वा ३० मिनट के अन्तर से अर्गट का त्वकूस्थ वा गम्भीर अन्तःक्षेप करना उपयोगी है। आन्तरिक अवयवों की रक्तस्रुति में रक्तस्थापक रूप से अर्गट का उपयोग बुद्ध्यात्मक नहीं, प्रत्युत आनुभविक है। इस बात का ध्यान में आना अत्यन्त दुस्तर है कि जो औषध धमनियों को संकुचित कर रक्तभार की वृद्धि करती हो वह किस भाँति रक्तस्थापक (हीमोस्टेटिक) हो सकती है?

परन्तु गर्भाशय जन्य रक्तस्रुति पर जो इसका रक्तस्थापक प्रभाव होता है, वह अधिकतया जरायुस्थ मांस पेशियों के संकोच के कारण होता है। अतएव प्रसवानन्तर होने वाले रक्तस्राव में अर्गट एक अत्यन्त चमत्कारिक औषध है। उन बहुप्रसूता नारियों को जिनमें प्रसव के पश्चात् प्रायः रक्तस्राव हुआ करता है, प्रसव के बाद तत्क्षण अर्गट का उपयोग लाभदायक होता है। और यदि इसके प्रयोग में कोई बात रोधक न हो तो प्रसवसे पूर्व भी इसे दे सकते हैं। कतिपय प्रधान रोगियों को अमोनिएटेड टिंक्चर ऑफ़ अर्गट या लिक्विड एक्सट्रैक्ट ऑफ़ अर्गट १ से २ ड्राम की मात्रा में दिन में ३-४ बार देते हैं या हाइपोडर्मिक इञ्जेक्शन ऑफ़ अर्गट को १०मिनिमि की मात्रामें २-३ बार प्रयुक्त करते हैं। रक्तप्रदर एवं कई प्रकार के गर्भाशयिक अर्बुदों की रक्तस्रुति में भी उक्त औषधि के प्रयोग से उत्तम परिणाम प्राप्त हुए हैं। ऐसी दशा में गर्भाशयिक द्वार में अर्गोटीन की पिचकारी करनी चाहिए।

अर्गट चूँकि रक्तवाहिनियों को संकुचित करता है; अस्तु कभी कभी इसको पर्प्युरा (रक्त विकार जन्य विस्फोटक), प्रवाहिका, प्लीहवृद्धि, सौषुम्न काठिन्य (स्पाइनल स्क्लीरोसिस) एवं सौषुम्नस्थ रक्तसंचय (Spinal congestion), घर्माधिक्य और मधुमेह (डायाबेटीज़ इन्सिपिडस) प्रभृति रोगों में भी बर्तते हैं। अतः यक्ष्माजन्य रात्रिस्वेदके रोकनेके लिए इसका प्रयोग करते हैं।

अर्गट को अधिकतर शिशु प्रसवानन्तर प्रयोग में लाते हैं। क्योंकि प्रसव के पश्चात् इसको देने से गर्भाशय भलीभाँति संकुचित हो जाता है, एवं अमरापातन में सहायता मिलती है और जरायु द्वारा रक्तस्राव नहीं होने पाता। परन्तु प्रसव से पूर्व इसका उपयोग अत्यन्त चतुरतापूर्वक करना चाहिए। अन्यथा जरायु संकोच के कारण गर्भ के नष्ट हो जाने की आशंका होती है या गर्भाशय के विदीर्ण हो जाने का भय होता है। क्योंकि इसके प्रयोग द्वारा जरायु न केवल क्रमशः बल पूर्वक आकुंचित होने लगता है, बल्कि वह अधिक काल तक संकुचित रहता है और यही

भ्रूण के पक्ष में भयावह होता है। अपरञ्च यदि भ्रूण जरायु द्वारा विसर्जित न हो तो जरायु के बलपूर्वक आकुञ्चित होने पर स्वयं गर्भाशय के विदीर्ण हो जाने की आशंका होती है। अस्तु यदि वस्तिगह्वर में कोई विकार न हो और भ्रूण उदर के भीतर आड़ा या किसी विकृत रूप में न हो एवं कोई अन्य कारण प्रसव के लिए रोधक वा अहितकर न हों तथा गर्भाशयिक द्वार भली प्रकार खुल गया हो और गर्भाशय की शिथिलता के कारण प्रसव में विलम्ब हो रहा हो तो अर्गट को प्रसव की दूसरी वा तीसरी श्रेणी में भी बर्तना उपयोगी है।

योग-निर्माण विषयक आदेश—

(१) अर्गट एक अनाशुकारी विष है। अस्तु क्वचित काल इसके एक आउंस लिक्विड एक्सट्रैक्ट को एक ही मात्रा में देने से विषाक्त लक्षण नहीं उपस्थित हुए।

(२) इसके सद्यः निर्मित फांट और इसके अमोनित यौगिक उदाहरणतः अमोनिएटेड टिंक्चर ऑफ़ अर्गट अपेक्षाकृत अधिक विश्वस्त योग हैं।

(३) क्लोरोफॉर्म वॉटर और टिंकचर ऑफ़ ऑरेञ्ज के योजित करने से अर्गट के कुस्वाद का निवारण हो जाता है।

(४) लिक्विड एक्सट्रैक्ट ऑफ़ अर्गट को परक्लोराइड ऑफ़ आयर्न के साथ मिश्रित करने से जब मिश्रण श्यामवर्ण का हो जाता है, तब उसमें किञ्चित् निम्बुकाम्ल (Citric acid) के मिलाने से उसका शुभ्र वर्ण होजाता है।

(५) अर्गोटीन को वटिका रूप में वा कैपशूल में डालकर दें। इसके त्वक्स्थ अन्तःक्षेप करने के लिए नितम्ब स्थल की गम्भीर पेशी श्रेष्ठतर है। उदर की दीवार में इसका त्वगीय अन्तःक्षेप नहीं करना चाहिए। त्वक्स्थ अन्तःक्षेप के पश्चात् उक्त स्थल प्रायः शोथयुक्त हो जाता और वहाँ पर फोड़ा बन जाया करता है।

परीक्षित प्रयोग

(१) एक्सट्रैक्टम अर्गोटी लिक्विडम $\frac{1}{2}$ ड्राम
लाइक्वार स्ट्रिक्नीनी २ मिनिम
लाइक्वार आर्सेनिकैलिस ३ मिनिम
क्वीनीन सल्फ २ ग्रेन
एसिडम सल्फ्युरिकम डिल ५ मिनिम
एक्वा एनिसाई १ आउंस

यह एक मात्रा है। आवश्यकतानुसार ऐसी ही एक एक मात्रा औषध दिन में दो-तीन बार दें।

प्रयोग—प्रसव के पश्चात् ज्वर होने की दशा में अथवा ज्वर के न रहने पर भी इसका उपयोग लाभदायक है।

(२) एक्सट्रैक्टम अर्गोटी लिक्विडम् ३० मिनिम
लाइक्वार स्ट्रिक्नीनी ३ मिनिम
एक्वापाइमेण्टी (या मेन्थी) $\frac{1}{2}$ आउंस पर्यन्त

ऐसी एक एक मात्रा औषध प्रति तीन-तीन घंटे पश्चात् दें।

प्रयोग—रुकी हुई आँवल के निकालने अर्थात् अमरापातन हेतु गुणप्रद है।

(६) एक्सट्रैक्टम अर्गोटी लिक्विडम ४० मिनिम
एसिड गैलिक १० ग्रेन
एक्वासिनेमोमाई १ आउंस पर्यन्त

ऐसी एक मात्रा औषध तत्क्षण पिलावें। आवश्यकता होने पर कुछ घंटे पश्चात् एक मात्रा और दें।

प्रयोग—जरायु द्वारा रक्तस्राव होने (Uterine hæmorrhage) में लाभप्रद है।

(४) एक्सट्रैक्टम अर्गोटी १ ग्रेन
एक्सट्रैक्टम गॉसीपियाई $\frac{1}{2}$ ग्रेन
फेराई सल्फास एक्सीकेटा १ ग्रेन
एक्सट्रैक्टम एलोज सोकोट्राइनी १ ग्रेन

सब की एक वटिका प्रस्तुत करें और ऐसी एक एक वटी दिन में दो बार दें। प्रयोग—रजःप्रवर्त्तक है।

(५) एक्सट्रैक्टम अर्गोटी लिक्विडम ३० मिनिम
पोटासियाई आयोडाइडाई ३ ग्रेन
अमोनियाई कार्ब २ ग्रेन
एक्वा मेन्थी पेप० १

ऐसी एक एक मात्रा औषध दिन में दो बार दें। प्रयोग—यूटराइन फ़ाइब्रॉइड (गर्भाशय तन्त्वर्बुद) में उपयोगी है।

(६) एक्सट्रैक्टम अर्गोटी लिक्विडम १५ मिनिम
टिंक्चूरा बेलाडोनी ५ मिनिम
सिरूपस ऑरन्शियाई ½ ड्राम
इन्फ्युज़म कस्केरी ½ आउंस पर्यंत

ऐसी एक एक मात्रा औषध दिन में तीन बार दें। प्रयोग—यह स्तन्यह्रासकारक (Anti-galactagogue.) है।

अर्गोटॉक्सिन ergotoxin-इं० अर्गट का एक प्रभावकारी सत्व। देखो-**अर्गोटा**।

अर्गोटिज़्म ergotism-इं० अर्गट द्वारा विषाक्तता। देखो—**अर्गोटा**।

अर्गोटीन ergotin-इं० अर्गट सत्व। यह अर्गोटॉक्सिन का अनहाइड्राइड है। देखो - **अर्गोटा**।

अर्गोटीनीन ergotinin-इं० अर्गट से निर्मित किया हुआ एक अल्कलॉइड (क्षारीय सत्व) विशेष। देखो—**अर्गोटा**।

अर्गोटीनम् कोलमैन फ्ल्युइडम्-ergotinum kohlman fluidum-लै० अर्गोटीन भेद। देखो—**अर्गोटा**।

अर्गोटीनम डेन्ज़ील फ्ल्युइडम ergotinum denzel fluidum-लै० अर्गोटीन भेद। देखो—**अर्गोटा**।

अर्गोटीनम् बोम्बेलोन फ्ल्युइडम् ergotinum bombelon fluidum-लै० अर्गोटीन भेद। देखो—**अर्गोटा**।

अर्गोटीनम् बोंजियन ergotinum bonjean -लै० अर्गोटीन भेद। देखो—**अर्गोटा**।

अर्गोटैनिक एसिड ergotannic acid-लै० एक ग्ल्युकोसाइड विशेष। देखो —**अर्गोटा**।

अर्गोनीन argonin-इं० यह चाँदी का एक यौगिक है। देखो—**रजत**।

अर्गोल arghol-काफ़ूर मोती (कपूर का एक भेद है जो गदला नीला सा होता है)।

अर्घ argha-हिं० पुं० (१) Mode of worship, act of pouring out water in honour of a deity (The sun, moon, *etc.*) while performing worship, पूजाका एक विधि। जलदान, सामने जल गिराना। तर्पण करना। (२) मूल्य।(price, value.)

अर्घटम् arghaṭam-सं० क्लो० भस्म। (Oxide.) हारा०। see-Bhasman.।

अर्घा arghá-हिं०पुं०, स्त्री०(१)अर्घ्य देनेका शंख की आकृति का एक ताम्र पात्र। जलहरी, तर्पण का पात्र (A vessel shaped like a boat.)। (२)जिस वनमें जरत्कारु मुनि तप करते थे, वहाँ का मधु।

अर्घ्यम् arghyam-सं० क्ली०
अर्घ्य arghya-हिं० संज्ञा पुं०
आर्घ्य मधु, **मधु**। A sort of honey (Mel.)। वि० (१) पूजनीय (२) बहुमूल्य।

अर्घ्यत arghyata-देखो—**मधु**।

अर्घ्याटः,-लः arghyáṭah,-lah-सं० **पुं०** शुक्रला, उच्चटा। आंकड़ा, चंच्कां-बं०। **पर्याय** -शुक्रला, चालुपत्रः, अर्घ्यतः, अर्घ्याटलः। द्रव्याभि०।

अर्घ्यातः arghyátah-सं० **पुं०** अर्घ्याट, उच्चटा, आंकड़ा। (Abrus precatorius) द्रव्याभि०।

अर्घ्यार्हः arghyárhab-सं० **पुं०** मुचकुन्द वृक्ष। (Pterospermum suberifolium.) रा० नि० व० १०। देखो-**मुच (चु) कुन्दः**।

अर्चा कामी archá-kámí-सं०,हिं० स्त्री० बलि कामी-सं०।

लक्षण-जब ग्रह अपनी पूजा कराने के निमित्त आक्रमण करते हैं तब बालक दीन होकर अपने हाथों से मुख को मलता है; उसके ओष्ठ, तालु और कंठ सूख जाते हैं। शंकित चित्त होकर वह चारों ओर देखने लगता है, रोता है, ध्यान में बैठ जाता है, दीनता प्राप्त कर लेता है, भोजन की

इच्छा होने पर भी नहीं खाता, ऐसा रोगी सुख साध्य होता है।

चिकित्सा—हिंसात्मक ग्रहों को वेदोक्त मन्त्रों द्वारा एवं होमादिसे जय करें। अर्चाकामी ग्रहोंको यथाभिलाषित बलिप्रदानादि से जय करने का उपाय करें। वा० उ० अ० ३।

अर्चिः archih-सं० स्त्री०, क्ली०
अर्चि archi-सं० स्त्री०, हिं० संज्ञा स्त्री०
(१) अग्निशिखा, लांगलिक, करिहारी। (Gloriosa superba.)। (२)अग्निज्वाला, गज पिप्पली (Pothos officinalis)। (३) चमक, आँच, ज्योति, दीप्ति, तेज (Light, splendour.)। (४) अग्नि आदि की शिखा। (५) किरण।

अर्चिमान archimána-हिं० वि० [सं०]
अर्चिष्मान् archishmán-हिं० संज्ञा पुं०
[सं०] [स्त्री० अर्चिष्मती] (१) अग्नि (Fire) (२) सूर्य्य (The sun.) -वि० [सं०] दीप्त। प्रकाशमान। चमकता हुआ।(Lighted.)

अर्ची archí-ता० काञ्चनार, कचनाल (र)। (Bauhinia racemosa, *Lam.*) मेमो०।

अर्ज़ áarza-अ०(१) पीलु,-लु (Salvadora persica.)। (२) दर्शनशास्त्र (हिक्मत) की परिभाषा में उस वस्तु को कहते हैं जो दूसरे के आधार से स्थित हो अर्थात् जिसका अस्तित्व दूसरे के आधार पर हो। उदाहरणतः रंगीन कपड़े में जो रक्तता, श्यामता या श्वेतता प्रभृति वर्ण पाए जाते हैं वे "अ.ज़" हैं और स्वयं कपड़ा उनका मूलाधार है। और पदार्थत्व अर्थात मृदु, लघु, सूक्ष्म प्रभृति गुण पदार्थ के अस्तित्व को प्रगट करते हैं अर्थात वे पदार्थाश्रित हैं तथा "अ.ज़" या गुण कहलाते हैं। क्रियात्मक लक्षण, धर्म, स्वाभाविक गुण, लक्षण प्रभृति इसके पर्यायवाची शब्द हैं। क्वालिटी (Quality) इं०।

अर्ज arja
अरीज aríja
-अ० झुकना, सुगन्ध फैलना। परफ्यूम (Perfume.)

अ.र्ज़ arza-अ० (१) पृथ्वी, भू, एक तत्व विशेष। (Earth) देखो—तत्व। (२) चौड़ाई। आयत। अर्ज़-हिं०।

अ.र्ज़ह् arzah-अ० दीमक। (White ant.)

अर्जकः arjakah-सं० पुं०
अर्जक arjak-हिं० पुं०
(१) क्षुद्रतुलसी-भेद, बाबरी-हिं०। बाबुइतुलसी-बं०। अजवला गर्गेर-कं०। तेल्लगग्गेरचेट्टु-तै०। (Ocimum Basilicum.)। पर्याय—श्वेतच्छदः, गन्धपत्रः, पाता, कुठेरकः। "वर्वरिकाकारो लघुमञ्जरीकः सूक्ष्मपत्रः निर्गन्धः श्वेत कुठेरकः (बाबुई)।" सु० सू० ३८ अ० सुरसादि ड०। श्वेत वर्वरी। शादा बाबुई-बं०। भा० पू० १ भा०। श्वेत पर्णासः, श्वेत तुलसी, तोकमारी। सि० यो० विमूर्चा-चि० वमन शान्ति। अर्जक अर्थात् बाबरी श्वेत, कृष्ण तथा रक्त भेद से तीन प्रकार की और तीनों गुण में समान होती हैं।

गुण—कटु, उष्ण, वात कफ रोगनाशक, नेत्र रोगहर, रुचिकारक तथा सुखप्रसवकारक है। रा० नि० व० १०। देखो-वर्वरी (बनतुलसी, विश्वतुलसी)। (२) श्वेतपलाश वृक्ष। Butea frondosa (The white var.)

अर्जकर्जः arjakarjah-सं० पुं० असन वृक्ष, आसन (-ना), पियाशाल।(Terminalia tomentosa.) देखो- आसन।

अर्जकादिवटिका arjakádi-vaṭiká-सं० स्त्री० सफेद तुलसी मूल, शंखाहुली मूल, निर्गुण्डी, भांगरे की जड़, जायफल, लवंग, विडंग, गजपीपल, चातुर्जात, वंशलोचन, अनन्तमूल, मूसली, शतावरी, विदारीकन्द, गोखरू सब को कीकर की छाल के रस में खरल करके १-१ मा० की गोलियाँ बनाएँ। अनुपान-सुरामण्ड। यह गोलियाँ स्तम्भक और वृष्य हैं। भैं० र० वी० स्तं०।

अर्जता arjatá-भूम्यामलकी, सदाहजमनी। (Phyllanthus niruri.) इं० हैं० गा०।

अर्जन arjan-इब्रा० मकड़ी। (Spider.)

अर्ज़न arzan-फ़ा० कंगुनी या चीना। (Millet.)

अर्ज़रा arzará-बरब० आस।

अर्ज़लब्नान arza-labnán-अ० देवदार, चीड़। (Pinus Cedrus.) म० अ० डा०।

अर्जवा arjavá-रू० चाँदी, रजत। Silver (Argentum.) देखो—रजत।

अर्जवाँ arjaván-अ० अर्गवां।

आर्जा áarjá-अ० चर्ख़। See charkha.

अर्जान arján बरब० बरबरी बादाम का वृक्ष।

अर्ज़ानी arzání-अ० मुहम्मद अकबर अर्ज़ानी शाह नाम था। आप फ़र्रुख़शेरके समकालीन तथा उच्चकोटि के हकीम थे। मीज़ानुत्तिब, तिब्ब अकबर, मुफ़र्रहुलक़ुलूब प्रभृति आपके लिखे हुए प्रसिद्ध ग्रंथों में से हैं।

अर्जाब arjáb } -अ० आन्त्र। नोट-यह शब्द एकवचन
अम्आअ amáaa } में नहीं आता। (Intestines.)

अर्जालून arjálún-बरब० फ़ाशरा, शिवलिंगी। (Bryonia.)

अर्ज़ीज़ arzíz } -फ़ा० वङ्ग, राँगा। tin
अर्ज़ीर arzír } (Stannum.) स० फा० इं०।

अर्जीक़नह् arjíqanah-यू० इक्लीलुल्मलिक (नाख़ूना)। (Melilotus officinalis.)

अर्जीनिया urginea-लें० अरण्यपलाण्डु, काँदा, जंगली प्याज़। अन्सुल, इस्क़ील-अ०। (Indian squill.) देखो—वन पलाण्डु।

अर्जीनिया इण्डिका urginea Indica, *kunth.*
अर्जीनिया सिल्ला urginea scilla, *Steinheil.*
-लें० काँदा, जंगली प्याज़, अरण्यपलाण्डु। (Scilla indica.) देखो—वन पलाण्डु।

अर्जुनः arjunah-सं० त्रि० }
अर्जुन arjuna-हिं० वि० }
-स०, हिं० पुं० (१) श्वेत वर्ण, सफ़ेद। उज्ज्वल (White colour.)। (२) शुभ्र। स्वच्छ। (३) सफ़ेद कनैल।

(१) नेत्र शुक्लगत रोग विशेष। आँख का एक रोग जिसमें आँख के सफ़ेद भागमें लाल छींटे पड़ जाते हैं।

लक्षण—नेत्रों के सफ़ेद भाग में ख़रगोश के रुधिर के समान जो एकही बिन्दु उत्पन्न हो उसको "अर्जुन" कहते हैं। मा० नि०।

(२) मयूर, मोर पक्षी (The peacock.)। मे० नत्रिकं।

(३) एक वृक्ष विशेष।

पर्याय—नदीसर्जः, वीरतरुः, इन्द्रद्रुः, ककुभः (अ), इन्द्रद्रुमः (शब्दर०), शम्बरः, पार्थः, चित्रयोधी, धनञ्जयः, वैरातङ्कः, किरीटी, गाण्डीवी, कर्णारिः, करवीरकः, कौन्तेयः, इन्द्रसूनुः, गंडीरी, शिवमल्लकः, सव्यसाची, वीरद्रुः, कृष्णसारथिः, पृथाजः, फाल्गुनः, धन्वी, वीर-वृक्षः—सं०। कहू, कहुआ, काह (हू), कोह, कौह, अर्जुन का पेड़, अञुन-हिं०। अर्ज्जुनः, अर्ज्जुन, गाछ -बं०। टर्मिनेलिया अर्जुना (Terminalia arjuna, *Bedd.*, टर्मिनेलिया ग्लैब्रा Terminalia glabra, *W. & A.*, पेण्टाप्टेरा अर्जुना Pentaptera arjuna, *Roxb.*, पेण्टाप्टेरा ग्लैब्रा Pentaptera glabra., पेण्टाप्टेरा अंगस्टिफोलिया Pentaptera angustifolia., बॉहीनीया टामेण्टोसा Bauhenia tomentosa -लें०। अर्जुना Arjuna दी अर्जुना माइरोबेलन The Arjuna myrobalan-इं०। वेल्लइ-मरुद्-मरम्, वेल्लमरद, तेल्ल मद्दी-ता०। तेल्ल-मद्दि-चेट्टु, मद्दि (द्दि) चेट्टु, येग्मद्दि-ते०, तै०। वेल्ल-मरुत, पुल्ल-मरुत-मल०। होले-मट्टि, बिलि-मट्टि, तोर-बिलि-मट्टि, तोर-मट्टि, बिल्लि मट्टि—कना०। सारदोल, अरमर-क०। अर्जुन साड़ (द) डा, आपटा, सारदोल, अर्जुन वृक्ष, शादूंल, पिअल, सन्मदट—मह०। सादड़ो, अर्जुन, साजदान, आमोदरो-गु०। तांरेमती -का०। हअल-उड़ि०। श्वेतवर्ण वृक्ष, सारदोल

-फों० । मद्दिविल्लि-मद्दि, मद्दि-मैसू० । तौक्कयान-ब्र० । अर्जुन-बम्ब० । कुम्बुक -सिंहल० ।

हिमज वा हरीतकी वर्ग
(*N. O. Combretaceæ.*)

उत्पत्ति-स्थान यह वृक्ष दक्खिन से अवध तक नदियों के किनारे होता है। यह बरमा और लङ्का में भी होता है। उत्तरी, पश्चिमी प्रांत, हिमवती पर्वत मूल, संयुक्त प्रांत, बंगप्रदेश तथा मध्य भारत, दक्षिण बिहार और छोटा नागपुर।

वानस्पतिक-वर्णन- इसके वृक्ष अत्यन्त विशाल ३०-३२ हाथ अर्थात् ६० से ८० फीट उच्च तथा पतनशील (पत्र) होते हैं। इसका काण्ड अत्यन्त स्थूल होता है। बंगदेश में वीर-भूम्यञ्चल में यह प्रचुर मात्रा में उत्पन्न होता है। यह एक आरण्य वृक्ष है। पत्र नरजिह्वाकार, पत्रपृष्ट में वृन्त के सन्निकट दो अर्बुदाकार ग्रंथियाँ इस प्रकार लगी होती हैं जिनको पत्र के ऊपर की ओर से देखने से वे दिखाई देती हैं, ऐसा बोध नहीं होता। वैशाख तथा ज्येष्ठ में इसमें पुष्प लगते हैं। पुष्प अत्यन्त सूक्ष्म, हरिद्राभ श्वेतवर्ण के और पुष्प दण्ड के चतुर्दिक स्थित होते हैं। केशर केशवत् सूक्ष्म एवं उच्च होते हैं। फल अगहन और पौष में परिपक्व होते हैं। फल देखने में कर्म्मरंग के समान लम्बाई की रुख उच्च तीरणिकाओं एवं तन्मध्य गंभीर परिखाओं से युक्त फाँकदार होते, किंतु तदपेक्षा खर्वाकार एवं तादृश मांसल नहीं होते हैं। नवीन त्वक् आमलक वल्कवत् बाहर से रक्ताभ धूसर तथा भीतर से अरुणवर्ण का होता है। स्वाद ग्राह्य कषाय होता है।

रासायनिक-संगठन—ग्रन्थ संकेतों से यह प्रगट होता है कि बहुशः पूर्व अन्वेषकों को उक्त ओषधि यथेष्ठ अभिरुचि प्रदान करचुकी है। हूपर (१८६१) के अनुसार इसकी छाल में ३४ प्रतिशत भस्म प्राप्त होती है जिसमें लगभग सम्पूर्ण शुद्ध खटिक कार्बनित अर्थात् चूर्णोपल या खड़िया मिट्टी (Calcium carbonate) होता है। जलीय रसक्रियामें २३ प्रतिशत खटिकके लवण और १६ प्रतिशत कषायीन (Tannin) यह दो द्रव्य वर्तमान होते हैं। ऐलकोहल द्वारा रसक्रिया प्रस्तुत करने पर कषायीन के सिवाय अत्यल्प मात्रा में रञ्जक पदार्थ प्राप्त हुआ।

घोशाल (१६०८) ने इसकी छाल का विस्तृत रासायनिक एवं प्रभाव विषयक अध्ययन किया। उनके अनुसार इसमें निम्न लिखित द्रव्य पाए गए—

(१) शर्करा, (२) कषायीन, (३) रञ्जक पदार्थ,(४)ग्लूकोसाइड के समान एक पदार्थ और (५) कैल्सियम तथा सोडियम के कार्बोनेट्स और किञ्चित क्षारीय धातुओं के हरिद (Chlorides) । उन्हें यह भी ज्ञात हुआ कि सम्पूर्ण कषायीन १२ प्रतिशत और भस्म ३० प्रतिशत हुई।

परन्तु, आर० एन० चोपरा महोदय एवं उनके सहयोगियों ने उत्तम शुद्ध वल्कल को एकत्रित कर, इसके उस प्रभावात्मक सत्व की प्राप्ति हेतु, जिसको उक्त ओषधि के हृदयोत्तेजक प्रभाव का मूल बतलाया जाता है, इसका अत्यन्त चतुरतापूर्वक विश्लेषण किए। कहा जाता है कि इसमें ग्लूकोसाइड्स वर्तमान होते हैं। अस्तु, उनकी विद्यमानता का ज्ञान प्राप्त करने के लिए अत्यन्त ध्यानपूर्ण शोध की गई। परन्तु इसके वल्कल में न ऐल्कलाइड (क्षारोद) और न तो ग्लूकोसाइड ही प्राप्त हुए और न सुगंधित वा अस्थिर तैल के स्वभाव का ही कोई द्रव्य पाया गया। आपके अनुसार वल्कल में निम्न पदार्थ वर्तमान पाए गए—

(१) अल्प मात्रा में एल्युमिनियम (स्फटिकम) तथा मग्नेशियम (मग्नम) लवणों के सहित असाधारणतः बहुल परिमाण में खटिक (Calcium) के लवण।

(२) लगभग १२ प्रतिशत कषायीन जिसमें प्रधानतः पाइरोकैटेकोल टैनिन्स (Pyrocatechol tannins) वर्तमान होता है।

(३) उच्च द्रवणाङ्कयुक्त एक सैन्द्रियकाम्ल और फाइटॉस्टेरोल (Phytosterol)।

(४) एक सैन्द्रियक एस्टर (Ester) जो धात्वम्लों द्वारा सहज में ही हाइड्रोलाइज्ड (Hydrolysed) हो जाता है।

(५) कतिपय रञ्जक द्रव्य, शर्करा प्रभृति। उपर्युक्त विश्लेषण द्वारा यह बात स्पष्ट होगई कि इसमें कोई ऐसा प्रभावात्मक सत्व, जो इसके हृदय बलकारक प्रभावका कारण सिद्ध हो, जिसमें एतद्देशीय जनता की महान श्रद्धा है, नहीं पाया जाता। पृथक्करण काल में पेट्रोलियम, ईथर, मद्यसारीय और जलीय सारों से प्राप्त विभिन्न अंशों की ध्यानपूर्वक परीक्षा की गई; परन्तु खटिक यौगिकों के सिवा कोई अन्य द्रव्य जो हृदय वा किसी अन्य धातु पर प्रभाव उत्पन्न करें, नहीं पाए गए। रञ्जक पदार्थ को वियोजित कर उसकी परीक्षा की गई, पर परिणाम पूर्ववत् रहा। अभी हाल में कैइयस (Caius), म्हैस्कर (Mhaskar) तथा आइजक (Isaac) (१९३०) ने टर्मिनेलिया अर्थात हरीतकी जाति के सामान्य भारतीय भेदों के द्रव्यगठन का विस्तृत अध्ययन किया, परंतु क्षारोद (alkaloid) वा मध्वोज (Glucoside) अथवा सुगन्धित या अस्थिर तैल (Essential oil) के स्वभाव के किसी प्रभावात्मक द्रव्य के प्राप्त करने में वे असमर्थ रहे। सम्पूर्ण १५ प्रकार की छालों को भस्म कर परीक्षा करने पर उनमें एक श्वेत, मृदु, निर्गंध और निःस्वाद भस्म वर्तमान पाई गई। (इं० ड्र० इं०)

प्रयोगांश—त्वक्, पत्र (तथा अर्जुन सुधा)।

मात्रा—त्वक् चूर्ण—२–६ आना भर।

साधारण मात्रा—२ तो०।

औषध-निर्माण—अर्जुनघृतम्, अर्जुनाद्य घृतम्, अर्जुन त्वक् क्वाथ, (१० में १)

मात्रा—आधा से १ आउंस; और त्वक् चूर्ण।

अर्जुन के गुणधर्म तथा प्रयोग

आयुर्वेदीय मतानुसार—अर्जुन कषेला, उष्ण वीर्य, कफघ्न तथा व्रणशोधक है और पित्त, श्रम तथा तृषानाशक एवं वातरोग प्रकोपक है। धन्वन्तरीयनिघण्टु। रा० नि० व० ९।

ककुभ अर्थात् अर्जुन शीतल, कषेला, हृदय को प्रिय (हृद्य), क्षत, क्षय, विष और रुधिर विकार को दूर करता है तथा मेद रोग, प्रमेह, व्रणरोग एवं कफ पित्त को नष्ट करता है। भा० पू० १ भा० वटादि व०। वा० सू० १५ अ०–न्यग्रोधादि। "जम्बू द्वयार्जुनकपीतन सोम वल्क।"

पार्थ (अर्जुन) क्षत तथा भग्न में पथ्य और रक्तस्तम्भक तथा मूत्रकृच्छ्र में हितकर है। (राजवल्लभ)।

अर्जुन के वैद्यकीय व्यवहार

चरक—रक्तपित्त में अर्जुन त्वक्—(१) अर्जुन की छाल को रात्रिभर जल में भिगो रक्खें प्रातः उक्त जल (हिम) को या अर्जुन की छाल के रस वा छाल को जल में पीसकर किम्वा अर्जुन की छाल द्वारा प्रस्तुत क्वाथ के पान करने से रक्तपित्त प्रशमित होता है। (चि० ४ अ०) "धनञ्जयोदुम्बर* निशिस्थिता वा स्वरसीकृता वा कल्कीकृता वा मृदिता शृता वा। एते समस्ता गणशः पृथग्वा रक्तं सपित्तं शमयन्ति योगाः"।

(२) व्रणाच्छादनार्थ अर्जुनपत्र—अर्जुन पत्र द्वारा व्रण (क्षत) को आच्छादित करें। यथा—"कदम्बार्जुन ×। व्रण प्रच्छादने विद्वान् ×।" (चि० १३ अ०)।

सुश्रुत—शुक्रमेह में अर्जुनत्वक्–शुक्रमेही को अर्जुन की छाल वा श्वेत चन्दन का क्वाथ पान कराएँ। यथा—"शुक्रमेहिनं ककुभ चन्दन कषायं वा।" (चि० ११ अ०)।

वाग्भट—मूत्राघात में अर्जुन त्वक्—मूत्ररोध होने पर अर्जुन की छाल का क्वाथ पान कराएँ। यथा—

"कषायं ककुभस्य वा" (चि० ११ अ०)

(२) व्यङ्ग में अर्जुन त्वक् व्यंग (यौवन पिडका वा मुहाँसा) रोग के प्रतीकारार्थ अर्जुन त्वक् को पेषण कर मधु के साथ प्रलेप करें। यथा—

"व्यङ्गेषु चार्जुन त्वचा" (उ० ३२ अ०)

(२) अर्जुन और सिरिसकी छालके क्वाथमें रूई की बत्ती भिगोकर योनि में रखने से मूढ़गर्भ के निकलने के पश्चात् की व्यथा दूर होती है।

चक्रदत्त—रक्तातिसार में अर्जुन त्वक् अर्जुन की छाल को बकरी के दूध पीसकर बकरी का दूध तथा मधु मिला कर पीने से रक्तातिसार निवृत्त होता है। यथा—

"× अर्जुन त्वचः। पीताः क्षीरेण
मध्वाढ्याः पृथक् शोणित नाशनाः।"
(अतिसार चि०)

(२) हृद्रोग में अर्जुन त्वक्—कुट्टित अर्जुन छाल २तो०, गव्य दुग्ध आध पाव, जल डेढ़ पाव, इनको दुग्धावशेष रहने तक क्वथित करें। यह क्वाथ हृद्रोग में सेवनीय है। यथा—

"अर्जुनस्य त्वचा सिद्धं क्षीरं योज्यं
हृदामये।" (हृद्रोग चि०)

(३) बलसञ्जननार्थ अर्जुन त्वक्—अर्जुन की छाल को दुग्ध में पीसकर दूध के साथ पीने से बल की वृद्धि होती है अर्थात यह परं बल्य व रसायन है। यथा—

"ककुभस्य च वल्कलम्।
रसायनं परं बल्यं ※।" (हृद्रोग चि०)

(४) अस्थिभग्न में अर्जुन त्वक्—सन्धियुक्त अस्थि भग्न में दुग्ध तथा घृत के साथ अर्जुन त्वक् चूर्ण को पान कराएँ। यथा—

"सघृतेन ※ अर्जुनम्। सन्धियुक्तेऽस्थि भग्ने च पिबेत् क्षीरेण मानवः।" (भग्न चि०)

भावप्रकाश—क्षयकास में अर्जुन त्वक्—अर्जुन की छाल को चूर्ण कर अडूसा पत्र स्वरस की सात भावना देकर मिश्री, मधु तथा गोघृत के साथ चाटें। यह सरक्त क्षयकास हर है। यथा—

"चूर्णं काकुभमिष्टं वासक रस भावितं बहुवारान। मधु घृत सितोपलाभिर्लेह्यं क्षय कासरक्तहरम्।" (म० ख० द्वि भा०)

(२) मूत्ररोधज उदावर्त्त में अर्जुन त्वक्—मूत्ररोध जन्य उदावर्त्त में अर्जुन की छाल का क्वाथ पान कराएँ। यथा—

"मूत्ररोध जनिते ※ कषायं ककुभस्य च।" (म० ख० तृ० भा०)

हारीत—पूयमेह में अर्जुन त्वक्—पूयमेही को धव तथा अर्जुन की छाल का क्वाथ पान कराएँ। यथा—"※ पूयमेहे कषायश्च धवाऽर्जुनस्य।" (चि० २८ अ०)

वङ्गसेन—ग्रहणी में अर्जुनक्षार—केशराज एवं अर्जुन की छाल के अन्तर्धूम दग्ध क्षारको प्रातः काल तक्र (मस्तु) के साथ पान करें। यह वेदना बहुल आमग्रहणी के लिए हितकर है। यथा—

केशराजार्जुनक्षारं प्रातः पीतश्च मस्तुना।
निहन्ति साममत्यर्थमचिराद् ग्रहणीरुजम्॥
(ग्रहण्यधिकार)

वक्तव्य

चरक के उदर्दप्रशमनवर्ग में अर्जुन का उल्लेख है (सू० ४ अ०) तथा पित्तमेह "निम्बार्जुनाम्रात निशोत पलानां," "शिरीष सर्जार्जुन केशरानां" व कफमेह "विडङ्ग पाठार्जुन धन्वनाश्च" एवं कफ वातज मेह "वचापटोलार्जुन" विषयक पाठों के अन्तर्गत द्रव्यान्तर से प्रमेह रोगों में अर्जुन का व्यवहार दृष्टिगोचर होता है। चक्रदत्त की हृद्रोग चिकित्सा के अन्तर्गत इसका पाठ है और उन्होंने हृद्रोगहर द्रव्यों में इसे श्रेष्ठ माना है। किन्तु चरक सुश्रुतोक्त हृद्रोग चिकित्सामें इसका नामोल्लेख भी नहीं हुआ है।

चरक-सुश्रुतोक्त क्षयकास चिकित्सान्तर्गत अर्जुन का प्रयोग दिखाई नहीं देता। चक्रदत्तोक्त रक्तातिसारान्तर्गत अर्जुन का प्रयोग, सुश्रुतोक्ति की अविकल प्रतिलिपि है। (सु० उ० ४० अ०)

उपर्युक्त वर्णन से यह ज्ञात होता है कि संस्कृत ग्रन्थकार अर्जुन को अति प्राचीन काल से हृदय बलदायक औषध मानते आए हैं। सर्व

प्रथम वाग्भट महोदय ने इस ओर हमारा ध्यान आकृष्ट किया। वे लिखते हैं—

"क्वाथे रोहीतकाश्वत्थ खदिरोदुम्बरार्जुने
* * * ।" (चि० अ० ६)

इस पाठ में वे कफज हृद्रोगी को द्रव्यांतर सहित अर्जुन के उपयोग का आदेश करते हैं। इनके बाद के पश्चात्कालीन लेखकों में चक्रदत्त ने इसे कषाय एवं बल्य लिखा और हृद्रोग में इसके प्रयोग का उल्लेख किया।

इसकी छाल एवं तन्निर्मित औषध अपने प्रत्यक्ष हृदयोत्तेजक प्रभाव के लिए इस देश में आजतक विख्यात है। आयुर्वेदीय चिकित्सक हृद्दौर्बल्य तथा जलोदर की सभी दशाओं में इसका उपयोग करते हैं। कतिपय पाश्चात्य चिकित्सकों की भी इसके हृदोत्तेजक प्रभाव में आस्था है और वे इस का हृद्य (हृदय बल्य) रूप से व्यवहार करते हैं। अस्तु इसकी छाल द्वारा निर्मित एक तरल सत्व डाक्टरी औषध-विक्रेताओं द्वारा उपलब्ध होता है।

परन्तु कोमन Koman (१९१९-२०) महोदय ने हृदय-कपाट जन्य व्याधि विषयक २० रोगियों पर इसके त्वगद्वारा निर्मित क्वाथका उपयोग किया, पर परिणाम लाभ के विपक्ष में रहा। उष्णकटिबन्धीयौषधि परीक्षणालय (School of Tropical Medicine) में जलोदरयुक्त वा तद्रहित हृद्दौर्बल्य (Failure of cardiac compensation) पीड़ित बहुशः रोगियोंमें इसके त्वक् द्वारा निर्मित ऐलकोहलिक एक्सट्रैक्ट की भली भाँति परीक्षा की गई। किन्तु डिजिटेलिस वा कैफ़ीन समूह की औषधों के समान किसी रोगी पर इसका प्रगट प्रभाव न हुआ। रक्तभार एवं हृदय स्पन्दन की शक्ति पूर्ववत् ही रही। उक्त रोगियों के मूत्रोद्रेक पर इसका प्रत्यक्ष प्रभाव नहीं हुआ। जो प्रभाव इस औषध का बतलाया जाता है वह इसमें अधिक परिमाणमें पाए जाने वाले खटिक यौगिकों का हो सकता है जिसका संकेत प्रथम किया जा चुका है।

केइयस (Caius), म्हेसकर (Mhaskar) तथा आइजक (Isaac) १९३० ने टर्मिनेलिया जाति के भारतीय भेदों के बहुशः भिन्न भिन्न स्वरूपाकार के होने का उल्लेख किया है। इसके भिन्न भिन्न १५ भेद हैं। इस प्रकार के टर्मिनेलिया की छालों की रूपाकृति में परस्पर इतनी सादृश्यता है कि इनके भेद निर्णय करने में भूल हो जाने की बहुत सम्भावना है। भारतवर्षीय औषध-विक्रेता (वणिक्) क्रियात्मक रूप से इनमें कोई भेद नहीं करते और वे सदा अर्जुन की अभेद संज्ञा द्वारा इन सब का विक्रय करते हैं। उक्त विद्वानों ने इनकी शुष्क निर्मल छालों को उष्ण फांट, क्वाथ एवं ऐल्कोहालिक एक्सट्रैक्ट रूपमें प्रयोग कर इनके प्रभावका पृथक् पृथक् अध्ययन किया और परिणाम निम्न रहा—

टर्मिनिलिया (हरीतकी) की सामान्य भारतीय जातियों की छालों को स्वास्थ्यावस्था में प्रयुक्त करने पर वे या तो (१) मृदु मूत्रल, यथा अर्जुन (Terminalia Arjuna), विभीतकी (T. belerica), (T. pallida) वा (२) उत्तम सबल हृदोत्तेजक यथा टर्मिनेलिया बाइअलेटा (T. bialata), टर्मिनेलिया कोरिएशिया (T. coriacea), टर्मिनेलिया पाइरिफोलिया (T. pyrifolia) वा (३) उभय मूत्रल तथा हृदयोत्तेजक होते हैं, यथा अरण्य बादाम (T. catappa), हरीतकी (T. chebula), हरीतकी भेद (T. citrina), टर्मिनेलिया मायरियोकार्पा (T. myriocarpa), ट० ऑलिवेराई (T. oliveri), किञ्जल वा किण्डल (T. paniculata) और आसन (T. tomentosa).

(School of Tropical Medicine Calcutta) द्वारा घोषित परिणामों से ये भिन्न हैं। परन्तु चूँकि अभीतक कोई प्रभावात्मक द्रव्य पृथक् नहीं किया गया और केइयस (Caius) तथा उनके सहकारियों ने क्रियात्मक रूप से विभिन्न प्रकार की छालों की रासायनिक-संगठन में कोई परिवर्तन न पाया।

अस्तु इस बात का समझना अत्यन्त कठिन है कि इसकी अलग अलग जातियोंके इन्द्रियव्यापारिक एवं औपयोगिक प्रभाव पृथक् पृथक् हैं। अस्तु प्रागुक्त शोधों की पुष्टि हेतु विशेष अध्ययन अपेक्षित है।

यूनानी मत—

प्राचीन यूनानी ग्रंथों में अर्जुन का वर्णन नहीं मिलता। हाँ! वर्तमानकालीन लेखकों ने इसका कुछ सामान्य वर्णन किया है। उनके मतानुसार यह—

प्रकृति—उष्ण व रूक्ष २ कक्षा में, किसी किसी के मतसे ३ कक्षा में। रंग-श्वेताभधूसर। स्वाद-विकट। हानिकर्त्ता-उष्ण प्रकृति को तथा आध्मानजनक है। दर्पघ्न-मधु,घृत व तैल। प्रतिनिधि-पलाश त्वक्। प्रधान कार्य-काम शक्तिवर्द्धक तथा शुक्रमेहघ्न। मात्रा-३ मा० से ४ मा०।

गुण, कर्म, प्रयोग—कफविकारनाशक, हैं और पित्तदोष में लाभप्रद हैं। क्षत में इनका पान व प्रलेप हितकर है। इसकी छाल कामोद्दीपक है एवं शुक्रमेहघ्न है। (लगभगविषैल) म० मु०।

इसके अतिरिक्त इसकी छाल शुक्रतारल्य एवं मज़ी व वदी के पतलेपन तथा कामशक्ति के लिए हितकर है।यह मूत्रप्रस्रावाधिक्यको नष्ट करता है। कामशक्ति के बढ़ाने के लिए कतिपय बल्य औषध में योजित कर इसका हलुवा लाभदायक होता है। भारतीय इसका अधिकता के साथ उपयोग करते और इसको परीक्षित बतलाते हैं; परन्तु यह उतना सत्य नहीं। बु० मु०।

नव्यमत

अर्जुन त्वक् कषाय तथा बल्य है। यह हृद्रोगी के लिए उपयोगी है। क्षत, व्रण तथा पिष्ट अंग के प्रक्षालन हेतु इसकी छाल के क्वाथ का स्थानिक उपयोग होता है। अस्थिभग्न किम्वा नेत्र शुक्रगत रक्तफूली अर्थात् अर्जुन (Ecchymosis) में अर्जुन त्वक् को पीस कर प्रलेप करें। एतद्देशीय लोग रक्तस्रुति किम्वा अन्यान्य प्रस्रावों (यथा प्रावाहिकीय श्लेष्मस्राव तथा प्रदर संबन्धी रक्त स्राव इत्यादि) में अर्जुन त्वक् का प्रयोग करते हैं। वे अश्मरी व शर्करादि प्रतिषेधक रूप से भी इसका व्यवहार करते हैं। (मे० मे० ऑफ इं०-आर० एन० खोरी, २ य खं०, २५८ पृ०। फा० इं० २ भा० ११ पृ० द्वा०)

यह पैत्तिक विकारों में लाभप्रद तथा विषों का अगद है। त्वक् कषाय और ज्वरघ्न है। फल बल्य तथा रोधोद्घाटक एवं नवीन पत्र-स्वरस कर्णशूल में हितकर है।

(बैडेन पॉवेल पंजाब प्रॉडक्ट)

काँगड़ा में त्वक् क्षत प्रभृति में प्रयुक्त होता है। (स्टयुवर्ट)

अर्जुनम् arjunam-सं० क्ली० तृणमात्र (Grasses.)। हला०। (२) सुवर्ण। Gold (Aurum) मे० नत्रिकं। (३) कासतृण। (Saccharum spontaneum.) र० मा०। (४) दर्भ भेद, कुश (Poa cynosuroides.)। (५) श्वेत वर्ण के या कुटिल गति से जाने वाले कीट। अथ० सू० ३२। ३। का० २।

अर्जुन arjuna-हिं०संज्ञा पुं० पुन्यन (Ehratia acuminata.) मेमो०। (२) वृक्ष, बड़ा गाछ-बं०। भूताङ्कुमम्-ते०। घनसुरा म०। गोटे-सन्ता। (Croton oblongifolius) फा० इं०। देखो—अर्जुनः।

अर्जुन गाछ arjuna-gáchh-बं० अर्जुन, कहू, कोह। (Terminalia arjuna)

अर्जुन घृतम् arjuna-ghritam-सं० क्ली० (१) अर्जुन की छाल के रस और कल्क से सिद्ध किया घृत समस्त हृद्रोग के लिए लाभदायक है। भै० र०।

(२) अर्जुनकी छाल के कल्कसे तथा स्वरस से पकाया हुआ घी सम्पूर्ण हृदय रोगों में हितकारी है। योग तथा निर्माण-विधि—घृत ४ श०, अर्जुन स्वरस ४ श०, कल्कार्थ अर्जुन त्वक् १ श०। सा० कौ०। भैष०।

भा० । र.स० र० । मूर्च्छित घृत ४ श०, अर्जुन स्वरस १६ श० (अथवा ६४ पल अर्जुन की छाल को ६४ श० जल में यहाँ तक पकाएँ कि १६ श० जल शेष रह जाए । बस इसको छान कर घृत में सम्मिलित करें) और अर्जुन त्वक्कल्क १ श०, इनको एकत्रित कर घृत पाक विधि से पकाएँ । च० द० हृद्रोग-चि० ।

अर्जुनत्वक् arjuna-tvak-सं० स्त्री० अर्जुन वल्कल, अर्जुन की छाल । Terminalia arjuna (Bark of-) । च० द० अ० सा० चि० शल्लक्यादि ।

अर्जुन त्वगादिलेपः arjuna-tvagádi-lepah सं० पुं० अर्जुन की छाल, मजीठ, वृष (बाँसा) को पीस शहद में मिलाकर लगाने से झाँई और व्यंग का नाश होता है । वृ० नि० र० ।

अर्जुन नामाख्यः arjuna-námákhyah-सं०पुं० अर्जुन वृक्ष, काहूका पेड़ । Terminalia arjuna (Tree of-) भा० ।

अर्जुनसुधा arjuna-sudhá-सं० स्त्री० अर्जुनोत्थ सुधा, अर्जुन काष्ठ का चूर्ण (बुरादा) ।

गुण—अर्जुनोद्भूत सुधा कफ को नाश करने वाली है । वै० निघ० । द्रव्यगुण ।

अर्जुनाख्यः arjunákhyah-सं० पुं० (१) काशतृण, कासा । (Saccharum spontaneum.) र० मा० । (२) अर्जुन वृक्ष, कहू का पेड़ । Terminalia arjuna. (Tree of-).

अर्जुनादः arjunádah-सं० त्रि० दर्भकाश खादक । च० चि० २ अ० ।

अर्जुनादि क्षीरम् arjunádi-kshíram-सं० क्ली० दूध को अर्जुन की छाल डालकर पकाकर पीने से पित्त जन्य हृद्रोग दूर होता है । यो० र० ।

अर्जुनाद्यघृतम् arjunádya-ghritam
अर्जुनाद्य तैलम् arjunádya-tailam
सं० क्ली० अर्जुन, परवल, नीम, वच, अजवाइन, रास्ना, मजीठ, भिलावाँ, अगर, मोथा, कूट, चीता, चन्दन, खस, गोखरू और सफेद कत्था । इनका क्वाथ कर, उसमें नवीन परवल, हलदी, हरड़, बहेड़ा, आमला, पाखान भेद, अर्जुन, अजमोद, लोध, मजीठ और अतीस इनका कल्क डालकर पकाया हुआ घी 'अर्जुनाद्य घृत' कहलाता है ।

गुण—इसे सेवन करने से पित्त सम्बन्धी प्रमेह नष्ट होते हैं ।

नोट—इसी क्वाथ तथा कल्क से पकाया हुआ तैल "अर्जुनाद्य तैल" कहलाता है ।

गुण—उक्त तैल को व्यवहार में लाने से कफ तथा वायु सम्बन्धी प्रमेह दूर होते हैं । भा० म० ३ भा० मेह० चि० ।

अर्जुनाद्य क्षीरपाकम् arjunádya-kshírapákam-सं० क्ली० अर्जुन (कहुआ) की छाल लेकर गोदुग्ध में पकाकर पीने से हृदय रोग का नाश होता है । वंगसे० सं० हृद्रो० चि० ।

अर्जुनी arjuní-सं० स्त्री०, (हिं० संज्ञा स्त्री०) (१) सफेद रंग की गाय । अथर्व० । सू० ३ । का० २० । (२) उषा ।

अर्जुनी arjuní-सं० स्त्री० गवि, गाय, गो । (A cow.) मे० नत्रिक ।

अर्जुनोपमः arjunopamah-सं० पुं० शाक द्रुम (A potherb in general.) । शेगुन गाछ-बं० । र० मा० । (२) शालवृक्ष (Shorea robusta.) रत्ना० ।

अर्जुन्ना arjunná-अव० आछ-नैपा० । परोकपी-आसा० । गणसूर-मह० । भूटन-कुसम -ले० । थेत्यिक्-बर० । क्रोटन ऑब्लाँगिफॉलिअस (Croton oblongifolius, Roxb.) ले० ।

गुण—इसका तैल एवं छाल औषध कार्य में आती है । मेमो० ।

अर्जेण्टम् argentum-ले० चाँदी, रजत, रौप्य-हिं० । फ़िज़्ज़ह्-अ० । नुक़्रह्-फ़ा० । (Silver.)

अर्जेण्टम् कोल्लोइडेल argentum Colloidale-इं० (Collargol.)। देखो—रजत।

अर्जेण्टम् लिक्विडम् argentum liquidum }
अर्जेण्टम् वीवम argentum vivum }
-ले० देखो--पारद (Hydrargyrum.)

अर्जेण्टाई एल्ब्युमिनास argenti albuminas-इं० (Silver albuminate)। देखो—लार्जीन (Largin.)

अर्जेण्टाई ऑक्साइडम् argenti oxidum -ले० रजतौष्मिद, रौप्यभस्म-हिं०। (Silver-oxide) देखो—रजत।

अर्जेण्टाई आयोडाइडाई argenti iodidi-ले० रजतैलिद। देखो - रजत।

अर्जेण्टाई एसीटास argenti acetas-ले० (Acetate of silver.) चुक्रीय रजत। देखो—रजत या इट्रोल्।

अर्जेण्टाई क्लोराइडम्--argenti chloridum -ले० रौप्यहरिद। देखो—रजत।

अर्जेण्टाइड argentide-इं० यह सिल्वर आयोडाइड (रजत् नैलिद) का एक तीक्ष्ण घोल है जिसमें किञ्चित् जल मिश्रित कर स्थानिक पचननिवारक रूप में प्रयोग करते हैं। देखो—आर्गीरोल। **ह्वि० मे० मे०**।

अर्जेण्टाई नाइट्रास argenti nitras-ले० रजतत्रास। (Silver nitrate, Lunar caustic.) देखो—रजत।

अर्जेण्टाई नाइट्रास इण्डयोरेटस argenti nitras induratus-ले० कठिन रजतत्रास। देखो रजत।

अर्जेण्टाई नाइट्रास मिटिगेटस argenti nitras mitigatus-ले० (Mitigated caustic.) हलका कियाहुआ कॉष्टिक। देखो—रजत।

अर्जेण्टाई न्युक्लीआस argenti nucleas -ले० नार्गोल (Nargol.)-इं०। देखो-न्यूक्लीन या न्यूक्लीश्रोल।

अर्जेण्टाई फॉस्फास argenti phosphas (Tribasic.)-ले० रजत स्फुरेत। यह अपस्मार तथा अन्य वातरोगों में व्यवहृत होता है। मात्रा-$\frac{1}{6}$ से $\frac{1}{2}$ ग्रेन वटिका रूप में। पी० वी० एम०।

अर्जेण्टाई फ्लोराइडम्-argenti fluoridum-ले० देखो-रजत, एसिडम् हाइड्रोक्लोरिकम्।

अर्जेण्टाई लैक्टास argenti lactas-ले० एक्टोल (Actol.)। देखो--रजत।

अर्जेण्टाई साइनाइडम् argenti cyanidum -ले० सिल्वर साइनाइड (Silver cyanide)-इं०। देखो—रजत। (Itrol) आर्गीरोल।

अर्जेण्टाई साइट्रास argenti citras-इं० देखो— रजत।

अर्जेण्टार्सील argentarsyl-इं० यह काकोडाइलेट ऑफ़ आयर्न (Cacodylate of iron) तथा कोलॉइड सिल्वर (Colloid Silver) का एक संमिश्रण है।

बारकैवोविच ने मलेरिया ज्वर में ०.०५ से १० घन शतांशमीटर (c. c.) की मात्रा में अन्तःक्षेप रूप से इसका व्यवहार सफलतापूर्ण उपयोग किया। उनका यह दावा है कि केवल एक अन्तःक्षेप मात्र से रक्त स्थाईरूप से सम्पूर्ण प्रकार के पराश्रयी कीटों से शून्य हो जाता है। **ह्वि० मे० मे०**।

अर्जेण्टेमान argentamin-ले० देखो—रजत।

अर्जेण्टोल argentol-इं० यह रजत का एक यौगिक है। देखो—रजत।

अर्जोवा arjová-रू० चाँदी, रौप्य। Silver (Argentum.)

अर्टिका पिल्युलिफेरा artica pilulifera, *Linn.* }
अर्टिका प्राइमा urtica prima, *Matthiolus.* }
-ले० अञ्जुरह, उतञ्जन। (Blepharis edulis, *Pers.*) फा० इं० ३ भा०।

अर्टिका मोर्चुआ urtica mortua-इं० (Dead nettle, white nettle, blind nettle, white archangel.) लेमिनम् एल्बम् (Laminum album.) -ले०। पी० वी० एम०।

अर्टिकेसीई urticaceæ-ले० वट या अश्वत्थ-वर्ग।

अर्टी artí-सं० स्त्री० केला, कदली। (Musa Sapientum.)

अर्णः arṇah-सं० पुं० शाक वृक्ष। शेगुन-बं०। (A potherb in general.) श० च०।

अर्णः,-स् arṇah,-s-सं० क्ली० } जल, पानी।
अर्ण arṇa-हिं० संज्ञा पुं० } (Water.) रा० नि० व० १४।

अर्णभवः arṇa-bhavah-सं० पुं० शंख (Conchshell.) वै० निघ०।

अर्णवः arṇavah-सं० पुं० } (१)
अर्णव arṇava-हिं० संज्ञा पुं० } समुद्र, सागर, जलनिधि। (The ocean.) रत्ना०। (२) सूर्य्य। (The sun.)

अर्णवजः arṇavajah } -सं०
अर्णजमलः arṇavaja-malah } पुं०
अर्णवफेनः arṇava-phenah } समुद्र-
अर्णवमलः arṇava-malah } फेन, समुद्र कफ-हिं०। इज़ाराफ़ी-अ०। कफ़ेदरिया -फ़ा०। The dorsal scale or Cuttle fish bone (Sepia officinalis.) रत्ना०।

अर्णवोद्भवः arṇavodhavah-सं० पुं० अग्निजार वृक्ष। (See-Agnijára.) रा० नि० व० ६।

अर्णा arṇá-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] नदी। (River.)

अर्णोदः arṇodah-सं० पुं० मुस्तक, मोथा। (Cyperus rotundus., Syn. Hexastachyos. *Roxb.*) रा० नि० व० ६।

अर्णोभवः arṇobhavah-सं० पुं० शंख। (The conch shell.) रा० नि० व० १३।

अर्तकी artaqí-यू० एक पहाड़ी वृक्ष जो अत्यन्त विशाल तथा भारतवर्ष में अधिकता के साथ होता है।

अर्तनीथ artanítha-यू० बखुरमरियम्। (Cyclamen Persicum, *Miller.*) फा० इं० २ भा०।

अर्तनीसा āartanísá-आज़रब् (चोबक उश्नान) एक जड़ है जिससे ऊन धोया जाता है।

अर्तब āartaba-अ० ख़ारख़सक। गोखरू। (Tribulus terestris.)

अर्तबह āartabah } -अ० (१) नासा
अज़्क़मह् āazqamah } मध्य, नासावंश, बाँसा (Bridge of nose.) । (२) ऊर्ध्व ओष्ठ का मध्यस्थ गढ़ा।

अर्तल artala-कना० अन्तल। रीठा-हिं०। (Sapindus trifoliatus, *Linn.*) फा० इं० १ भा०।

अ.र्तब artaba-अ० अधिक तर,ज़्यादा तर,स्निग्ध तर।

अर्तानियाये हिन्दी artániyáye-hindí अ० वल्लारी, वल्लारी का पत्ता-द०। थोलकुरि-बं०। ब्राह्मी-सं०, हिं०। Hydrocotyle Asiatica, *Linn.* (Indian Hydrocotyle or Penny-wort.) स० फा० इं०।

अर्तामासिया artámásiyá } -रू०
अर्तियह् मासिया artiyah-másiyá } या मि० बरिंजासिफ़, क़ैसूम। (Artemesia Indica.)

अर्ति arti-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० अर्त्तित] पीड़ा। व्यथा।

अर्तिया artiyá-यू० एक छोटी बूटी है, जिसकी पत्तियाँ अत्यन्त लघु और बहुसंख्यक शाखाओं से युक्त होती हैं। बीज ख़ुशा के सदृश होते हैं।

अर्ती arti-यू० या रू० वृक्ष दारक। कोई कोई हालों व कह् और बूयेमादरान को कहते हैं।

अर्तीक़ह artíqah-राँगा, वँग। Tin (Tannum.)

अर्तीमव् artímavú-ता० तीखुर, तवखीर। (Curcuma angustifolia, *Roxb.*)

अर्तीरस artíras-नैपा० कुरटी-भूटा०। (Caragana crassicaulis.) इसकी जड़ ज्वरघ्नी है। फा० इं० ३ भा०।

अर्तूनास artúnása-यू० खटिका,खरिया मिट्टी। (Chalk.)

अर्तूवास artúbása-यू० मिश्र देशोद्भूत एक प्रकार की मृत्तिका है जो श्वेत या धूसरित वर्ण की और उष्ण स्थलों में उत्पन्न होती है।

अर्त्तगलः arttagalah-सं० पुं० नील झिण्टी, कटसरैया। (Barleria longifolia.) नीलझाण्टी-बं०। सु० द्रव्यसं०, अ०। आगड़ नामक फल वृक्ष। रत्ना०।

अर्त्तगाँ arttagán-फ़ा० यह एक प्रकार का प्रस्तर है। स्वाद—फीका। वर्ण—रक्त एवं पीत। प्रकृति—१ कक्षा में शीतल व रूक्ष।

गुण, कर्म, प्रयोग व्रणपूरक (क्षतों के मांस को भर लाता) और अवयवों के बाह्य शोथों को लयकर्त्ता एवं क्षतों को निर्मल करता (व्रणशोधक) है। मुदिर्रात (प्रवर्त्तक वा रेचक) के साथ प्रयोग करने से यह वृक्क एवं वस्त्यश्मरी एवं सिकता आदि को नष्ट करता है। म० मु०।

अर्त्तिः arttih-सं० स्त्री० रोग। (Disease.) रा० नि० व० २०।

अर्थः arthah-सं० पुं० } [वि० अर्थी]
अर्थ artha-हिं० संज्ञा पुं० } (१) इंद्रियों के विषय (Object)। (२) धन, संपत्ति (Wealth, riches.)। (३) याचन (Begging, request.)। (४) कारण, हेतु, निमित्त (Cause, sake.)। (५) वस्तु (Substance, goods.)। (६) अभिधेय, अभिप्राय, प्रयोजन, मतलब (Intention, purpose.)। (७) निवृत्ति (Rest.) मे० थद्विकं।

अर्थ चम्पिका artha-champiká-सं० स्त्री० कर्कट शृङ्गी, काकड़ासिङ्गी (Rhus succedanea, *Linn.*) वै० निघ०।

अर्थनट earth-nut—इं० मूँगफली, भूफली। (Arachis Hypogœa.) इं० डु० इं०।

अर्थनट ऑइल earth-nut oil-इं० मूँगफली का तैल, रोग़न मूँगफली। (Arachis Oleum).

अर्थ प्रसादनी artha-prasádaní-सं० स्त्री० धामन वृक्ष। (See-Dhámana.) वै० निघ०।

अर्थ वर्म earth-worm-इं० केचुआ। ख़रातीन -अ०।

अर्थ साधकः artha-sádhakah-सं० पुं० पुत्रजीव वृक्ष, पुत्रजीवा। (Putranjiva Roxburghii.) मद० व० १ भा०।

अर्थ साधनः artha-sádhanah-सं० पुं० (१) पुत्रजीव वृक्ष, पुत्रजीवा। (Putranjiva Roxburghii.) मद० व० १। (२) रीठा करंज। (Sapindus trifoliatus.) मद० व० ५।

अर्थ सिद्धः,-कः artha-siddhah,-kah-सं० पुं० (१) पुत्रजीव वृक्ष (Putranjiva Roxburghii.)। (२) श्वेत निर्गुण्डी, सफेद मेउड़ी (Vitex negundo album.)। (३) कृष्ण निर्गुण्डी। (Vitex negundo nigrum.) रा० नि० व० ४।

अर्थापत्तिः arthápattih-सं० स्त्री० }
अर्थापत्ति arthápatti-हिं० संज्ञा पुं० }
जो बिना ही कहा हुआ अर्थ से जाना जाए उसे "अर्थापत्ति" कहते हैं। जैसे-किसी ने कहा मैं भात खाऊँगा तो इस कथन से जाना गया कि वह यवागू पीने का इच्छुक नहीं है। सु० उ० ६५ अ०। "यदकीर्त्तितमर्थादापद्यते।"

मीमांसा के अनुसार एक प्रकार का प्रमाण जिसमें एक बात कहने से दूसरी बात की सिद्धि आप से आप हो जाए। नतीजा। निगमन। जैसे बादलों के होने से वृष्टि होती है। इससे यह

सिद्ध हुआ कि बिना बादल वृष्टि नहीं होती। न्यायशास्त्र में इसे पृथक् प्रमाण न मानकर अनुमान के अंतर्गत माना है।

अर्थेनाइट arthenite-फ़ां० बखुरमरियम-इं० बाजा० । Sow-bread (Cyclamen Persicum, *Miller.*) फा० इं० २ भा० ।

अर्थ्यम् arthyam-सं० क्लो० शिलाजतु। (Bitumen.) मे० यद्विकं।

अर्थ्रोकनीमम् Arthroenemum-ले० उश्नान, सर्जि। Soda Plants (Caroxylon.) फा० इं० ३ भा०।

अर्थ्रोकनीमम् इण्डिकम् arthroenemum Indicum, *Moq.*-ले० सर्जि। फा० इं० ३ भा०।

अर्द āarda-अ० गदहा, गर्दभ (An ass.)

अर्दह् ardah फ़ा० तिलकचरी।

अर्दक ardaka-फ़ा० बत्तख़ । (A Duck.) (२) आलूबोखारा। (Prunum.)

अर्दज ardaja-फ़ा० हाऊबेर, अर्स, अरर, अभल, हपुषा। (Juniperus chinensis)

अर्दन ardana-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) पीड़न, दलन, हिंसा। (२) जाना, गमन।

अर्दना ardaná-हिं० क्रि० स० [सं० अर्दन पीड़न] पीड़ित करना।

अर्दनिः ardanih--सं० पुं० अग्निरोग। अ० टी०।

अर्दम ardam-रू० सूर्यमुखी। (Helianthus Annuses.)

अर्दमा ardamá--(१) कनौचा (२) पाव जुवान। (Caccina glauca, *Savi.*)

अर्द हालिय्यह् -arda-háliyyah }
सलाहे मुखातियह् salāahe-mukhátiyah }
अ० (१) गाढ़ा हरीरा जो आटे को मक्खन में गूँध कर पुनः घी में पकाया जाता है। (२) एक प्रकार की श्यामायुक्त रसौली है जिसके माद्दे की चाशनी गाढ़े हरीरे के सदृश होती है। देखो—सलाहे मुखातियह् (Myxoma).

नोट—अर्दहालिय्यह् फ़ारसी भाषा का शब्द है। जो आर्द=आटा और हालह्=तैल का यौगिक है। पर उक्त संयुक्त शब्द का उपयोग उस हरीरे के लिए होता है जो आटा और घी के संयोग द्वारा निर्मित होता है। चूँकि इस रसौली के माद्दे का क़वाम उक्त हरीरे के समान होता है। इसलिए इसे इस नाम से अभिहित किया गया है।

आर्दार ārdára-अ० हाथी, हस्ति। (An elephant.)

अर्दाल ardál }
अर्दाली ardálí } -फ़ना० क्लो०, हरिताल। (Orpiment.)

अर्दावा ardává-हिं० पुं० मोटा आटा, दलिया, सूजी।

अर्दित ardita-हिं० वि० } पीड़ित।
अर्द्दितम् ardditam-सं० त्रि० } दलित। यन्त्रणायुक्त।

सं० क्लो०, हिं० संज्ञा पुं० एक रोग जिसमें वायु के प्रकोप से मुँह और गर्दन टेढ़ी हो जाती है, सिर हिलता है नेत्र आदि विकृत हो जाते हैं, बोला नहीं जाता और गर्दन तथा दाढ़ी में दर्द होता है। पक्षाघात विशेष। लकवा।

फेशल् पैरालिसिस (Facial Paralysis), पैरालिसिस ऑफ दी पोर्टियो ड्योरा (Paralysis of the portio dura, बेल्स पैरालिसिस Bell's paralysis-इं०। लक़वह्-अ०। कजी दहन-फ़ा०। मुँह का टेढ़ा हो जाना-उ०।

निदान संप्राप्ति तथा लक्षण

गर्भिणी सूतिका बालवृद्ध क्षीणेष्वसृक्क्षये।
(सु०)

उच्चैर्व्याहरतोऽत्यर्थं खादतः कठिनानि वा॥
हसतो जृम्भतो वापि भाराद्विषमशायिनः।
(व्यसनात्-सु०)

शिरोनासौष्ठ चिबुक ललाटेक्षण सन्धिगः॥
अर्दयत्यनिलो वक्त्रमर्दितं जनयत्यतः।
वक्रीभवति वक्त्रार्धं ग्रीवा चाप्यपवर्तते॥
शिरश्चलति वाक्सङ्गो नेत्रादीनां च वैकृतम्।
ग्रीवा चिबुक दन्तानां तस्मिन् पार्श्वे च वेदना॥

यस्याग्रजो रोमहर्षो वेपथुर्नेत्रमाविलम् ।
वायुरूर्ध्वं त्वचि स्वापस्तोदोमन्या हनुग्रहः॥
तमर्दितमिति प्राहुर्व्याधिं व्याधिविचक्षणा ॥
(मा० नि० । सु० नि०)

अर्थ-निदान—गर्भवती, प्रसूता स्त्री, बालक, वृद्ध, दुर्बल तथा शोणित क्षय वाले की (सु०) और ऊँचे स्वर से बोलने से, कठिन वस्तु खाने से, बहुत हँसने से, जम्हाई लेने से, बोझ ढोने से, ऊँचे नीचे स्थान में सोने (विषम भारवहन तथा विषम श्वास प्रश्वास के कारण - सु०) आदि कारणों से (वाग्भट्ट में ये कारण विशेष लिखे हैं यथा शिर पर बोझ ढोना, उत्ता मुख होना, बलपूर्वक छींक लेना, कठोर धनुष को खींचना, ऊँचे नीचे तकिए पर शिर धरना तथा अन्य वात प्रकोपक हेतु) 'सम्प्राप्ति'—वायु प्रकुपित होकर शिर, नाक, ओष्ठ, ठोड़ी, ललाट तथा नेत्रों की संधियों अर्थात् शरीर के ऊर्ध्व भाग में प्राप्त होकर एक ओरके मुख (वाग्भट्टके अनुसार हँसने और देखने को भी) को टेढ़ा कर (क्वचित् पार्श्वद्वय की पेशियाँ वातग्रस्त हो जाती हैं) अर्दित रोग को उत्पन्न करता है ।

लक्षण—इसमें आधा मुख टेढ़ा होजाता है । गर्दन नहीं मुड़ती, शिर हिलने लगता है, बोला नहीं जाता, नेत्रादि बिगड़ जाते हैं और जिस अंग की ओर वह टेढ़ा होता है उसी ओर की गर्दन, ठोड़ी और दाँतोंमें पीड़ा होती है । वाग्भट्ट ने ये विशेष लिखे हैं—

दंतचाल, स्वरभ्रंश, श्रवण शक्ति का नाश, छींक का बन्द हो जाना, घ्राणाज्ञता, स्मृतिका मोह, स्वप्नावस्था में त्रास, दोनों ओर से थूक निकलना, एक आँख का बन्द होना, जत्रु के ऊपर के भाग में वा शरीर के आधे भाग में वा नीचे के भाग में तीव्र वेदना आदि उपद्रव उपस्थित होते हैं । **पूर्व रूप**—जिस रोग के पूर्व रोमाञ्च हो, शरीर काँपे, नेत्र मलयुक्त हों और वायु ऊपर को गमन करे, त्वचा शून्य हो जाए, सूई चुभने की सी पीड़ा हो, मन्या नाड़ी तथा ठोड़ी जकड़ जाए उसको रोगों के जानने वाले अर्दित (लक़वा) कहते हैं । वाग्भट्ट के अनुसार कोई कोई इसको एकायाम भी कहते हैं ।

अन्य तन्त्रों में आधे मुख की तरह अर्द्ध शरीर में व्याप्त वातग्रस्तता को भी अर्दित नाम से ही लिखा है । यथा—

'अर्धे तस्मिन् मुखार्धे वा केवलेस्यात्तदर्दितम्' ।
(दृढ़बलः)

यदि ऐसा है तो अर्दित और अर्द्धांगवात में अन्तर क्या रहा ? उत्तर में कहते हैं कि इन दोनों में भेद यह है कि अर्दित में कदाचित् ही वेदना होती है, किंतु अर्द्धांगवात में सर्वदा ही वेदना बनी रहती है । अथवा पूर्वोक्त अर्दित के उन सभी लक्षणों के विपरीत लक्षण अर्द्धांगवात के होते हैं ।

परन्तु चरक, सुश्रुत, वाग्भट्ट तथा माधव आदि ग्रंथ निर्माताओं ने केवल मुखमात्र की वातग्रस्तता को ही अर्दित नाम से अभिहित किया है और अर्द्धांगवात को एकांगवात, पक्षवध तथा पक्षाघात आदि नामों से । अस्तु ऐसा ही मानकर उक्त शब्द का व्यवहार करना शास्त्र सम्मत है ।

डॉक्टर लोग शीत लगना, कनफेड़, उपदंश, कतिपय मस्तिष्क रोग, कर्णास्थि क्षत, किसी दाँत का खराब हो जाना तथा निर्बलता इत्यादि इसके उत्पादक कारण मानते हैं । इनके अनुसार भी अर्दित के प्राय: वे ही लक्षण हैं जिनका वर्णन ऊपर किया गया है । जैसे--

विकृत मुखमण्डल का स्वस्थ की ओर आकृष्ट हो जाना (मुखमण्डल जिस ओर को आकुञ्चित होता है वास्तव में वह पार्श्व सुस्थ होता है), मुख के एक कोने का नीचे की ओर लटक पड़ना, मुख प्रसेक, जलपान करते समय उसका बाहर बह चलना, कफ निष्ठीवन की असमर्थता, सीटी न बजा सकना और न फूक मार सकना इत्यादि लक्षण होते हैं । रोगी पवर्ग के अक्षरों का उच्चारण नहीं कर सकता अर्थात् उसके ओष्ठ परस्पर नहीं मिल सकते हैं । विकृत पार्श्व का नेत्र खुला रहता है और उससे अश्रु स्राव होता रहता है ।

और वह किसी चीज को मुँह से खींचने वा चूसने के अयोग्य होता है।

असाध्यता

जो मनुष्य अत्यन्त क्षीण होगया हो जो स्पष्ट रूप से नहीं बोल सके, जिसकी आँखों के पलक न लगें और रोग को उत्पन्न हुए तीन वर्ष व्यतीत हो गए हों अथवा जिसकी नासिका, मुख तथा नेत्र से जल स्राव होता हो एवं काँपता हो वह अर्दित रोगी असाध्य है। यथा—

क्षीणस्यानिमिषाक्षस्य प्रसक्ताव्यक्तभाषिणः।
न सिध्यत्यर्दितं गाढं (बाढं--सु०) त्रिवर्षं वेपनस्य च॥ मा० नि०।

चिकित्सा
(आयुर्वेदीय)

अर्दित रोग में नस्य देना, शिर में तेल लगाना तथा कान और आँख का तर्पण करना हित है। यदि अर्दित शोथ युक्त हो तो वमन कराना तथा दाह और राग से युक्त होने पर फ़स्द खोलना चाहिए। यथा—

अर्दिते नावनं मूर्ध्नि तैलं श्रोत्राक्षि तर्पणम्।
सशोफे वमनं दाहरागयुक्ते सिरा व्यधः॥
(वा० चि० २१ अ०)

सुश्रुताचार्य के मत से अर्दित रोगी की वातव्याधि विधानोक्त चिकित्सा करें और मस्तिष्क एवं शिर की वस्ति, नस्य, धूमपान, स्नेहन, स्वेदन तथा नाडी स्वेद इतना विशेष करें इस हेतु निम्न लिखित औषध प्रयोग में लाएँ—

सतृण (कुश, काश, नल, दर्भ और इक्षुकांड), महापञ्चमूल (विल्व, अग्निमन्थ, अरलु, गाम्भारी और क्षुद्राग्निमन्थ), काकोल्यादि अष्ट वर्ग की ओषधियाँ, विदारिगन्धा आदि, औदकमांस अर्थात् जलीय जीवों का मांस यथा कर्कट, शिशुमार, प्रभृति, अनूपदेशीय जीवों का मांस यथा वराह आदि और कशेरु, सिंघाड़ा प्रभृति औदक कन्द इनको समान भाग लेकर १ द्रोण (३२ सेर) दुग्ध और २ द्रोण (६४ सेर)जलमें क्वाथ करें। चौथाई अथवा दुग्ध मात्र अवशेष रहने पर उतार कर छान लें। इसमें १ प्रस्थ (३२ पल) तैल मिलाकर फिर अग्नि पर रक्खें। दूध के भली प्रकार मिलजाने पर उतार कर शीतल होने पर मथकर घी प्रस्तुत करें। फिर इसको तथा मधुर औषध यथा काकोल्यादि और सहा अर्थात् माषपर्णी (कोई कोई इनके स्थान में पूर्वोक्त क्वाथ्य द्रव्यों के चतुर्थांश कल्क का प्रक्षेप देते हैं) के कल्क को चतुर्गुण दुग्ध में पकाकर तैल प्रस्तुत करें। इस क्षीरतैल को अर्दित रोगी के पिलाने एवं अभ्यंग आदि में प्रयुक्त करें। तैल रहित सिद्ध कर प्रयुक्त करने से यह अक्षि तर्पक है। सु० चि०।

डाक्टरी

चूँकि यह रोग प्रायः कठिन शीत के कारण से ही हो जाया करता है। अस्तु, विकृतपार्श्व के कान के पीछे ब्लिस्टर लगाएँ या चन्द जोंकें लगवाएँ और फिर एक लोटे या पतेली में खौलता हुआ पानी डाल कर उसकी टोंटी विकृत कर्ण के छिद्र में प्रविष्ट करदें अथवा इसके बहुत समीप रखें जिसमें उष्ण जलवाष्प से कान के भीतर गर्मी पहुँचे। दस मिनट तक इस प्रकार करें फिर गरम रुई से कान को सेकें, पश्चात् वही गरम रुई कान पर बाँध दें। ४ ग्रेन कैलोमेल और एक ड्राम कम्पाउंड पाउडर ऑफ जैलप मिलाकर खिला दें जिसमें दो तीन दस्त आजाएँ।

आहार—शोरबा या यख़नी (मांस रस) प्रभृति दें।

यदि रोगी निर्बल हो तो ईस्टज़ सिरप् या आधे से १ ड्राम फेलोज़ सिरप् को किञ्चित् जल में मिलाकर दिन में दो बार भोजनोपरांत दें। और यदि रोग उपदंश के कारण हो तो पोटासी आयोडाइड का प्रयोग करें यदि कान में क्षत प्रभृति हो तो उसका उचित उपाय करें और यदि कोई दाँत बोसीदा होगया हो तो उसको निकलवा दें।

नोट—यदि यह रोग शीत, निर्बलता या उपदंश के कारण हो तो उचित उपचार से एक से अढ़ाई मासमें अच्छा हो जाया करता है और यदि

किसी मास्तिष्कीय व्याधि के कारण हो तो कठिनतापूर्वक अच्छा हुआ करता है।

यूनानी वैद्यकीय अर्थात् तिब्बी चिकित्सा

रोगारम्भ में पक्षाघात के अन्तर्गत वर्णित तिब्बी चिकित्सा से काम लें अर्थात् जब तक चौथा या सातवाँ दिन न व्यतीत हो जाए तब तक माउल् उसूल और माउलअस्ल (मधुवारि) के सिवा और कोई वस्तु खाने पीने को न दे और न उक्त काल में बाह्य वा आन्तर सब उष्माजनक एवं दोषप्रकोपक उपाय का अवलम्बन करें। तदनन्तर पांचवें या आठवें दिन पक्षाघातोक्त मुञ्जिज कराके विरेचन दें। आहार में कपोत, तीतर, बटेर प्रभृति जीवों का शोरबा दें या चने का पानी पिलाएँ। मास्तिष्कीय आर्द्रताके रेचन हेतु कबाबचीनी अकरकरा, लवङ्ग जायफल और दालचीनी प्रभृति चबाएँ। कलौंजी पीसकर सिरका में मिलाकर नाक में टपकाएँ और राई को जैतून तैल वा तिल तैल में पीस कर मुखमण्डलके विकृत एवं रोगाक्रांत पार्श्व पर प्रलेप करें। यदि आवश्यकता हो तो चन्द जोंकें कानके पीछे लगवाएँ और सेंक करें तथा कुष्ठ तैल, रोग़न सुर्ख़ वा रोग़न शोनीज का विकृत पार्श्व पर अभ्यंग करें अथवा हिंगु २ तो० पीसकर और रोग़न पान में मिलाकर उक्त स्थल पर प्रलेप करें या निम्न तैल प्रस्तुत कर प्रयोग करें।

रोग़न लक़वा--मोम १ तो० को एरण्डतैल ३ तो० में मिलाकर फ़र्फ़्यून, जुन्दबेदस्तर, मस्तगी, सूरिञ्जान तल्ख़ प्रत्येक ३ मा० को बारीक पीसकर मिलादें और आवश्यकता होने पर इसका अभ्यंग करें। यदि ज़रूरत हो तो मर्ज़ञ्जोश, सातर फ़ारसी, अकरकरा, राई, करवीर मूल त्वक्, अनार दाना तुर्श और सोंठ इन सबको समभाग ले कूट कर जल में क्वाथ करें और सिकञ्जबीन अंसली ४ तो० मिलाकर गण्डूष कराएँ। छिक्किका को बारीक पीस कर नस्य दें जिसमें दो चार छींकें आजाएँ और (१) जायफल २ मा० केशर १ मा० को बारीक पीसकर माजून योगराज गूगल ५ मा० सम्मिलित कर अर्क़ गावज़ुबान के साथ दें या (२) ख़मीरह गावज़ुबान अम्बरी ऊदसलीब वाला ५ मा० की मात्रा में अर्क़ गावज़ुबान के साथ दें या (३) दवाउल्मिस्क हार जवाहरवाला ५ मा० अर्क़ गावज़ुबान व अर्क़ अम्बर के साथ देना हितकर है। कलौंजी २ मा० पीस कर मधुमें मिलाकर खिलाएँ या बीरबहूटी एक-दो पाँव पृथक् कर पान के बीड़े में रख थोड़े दिन खिलाएँ। पूर्ण शुद्धि के पश्चात् पक्षाघातोक्त योगों का सेवन कराएँ और पक्षाघात के समान शुद्धि के पश्चात् माजून फ़िलासफ़ा, माजून कुचला, मअजून जोगराज गूगल या दवाउल् मिस्क हार प्रभृति यहाँ भी लाभदायक हैं।

अर्दित में प्रयुक्त होनेवाली अमिश्रित औषधें

आयुर्वेदीय तथा युनानी—वन पलाण्डु एवं सभी वातहर औषध एवं उपचार यथा तिल कल्क युक्त रसोन कल्क तथा स्नेह पान, नस्य, स्निग्ध पदार्थोंका भोजन, लेपन और स्वेदन आदि इस रोग में हितकर हैं। देखो—पक्षाघात।

डाक्टरी—अर्जेण्टाई नाइट्रास, अर्निका, बेलाडोना, ऑलियम केजेपुटी, केलेबार्बीन, फेरिपर ऑक्साइड, ऑलियम माइरिष्टिस ऑलियम पाइनाइ सिलेवेस्ट्रिस, फॉस्फोरस (स्फुर), नक्सवोमिका (कुचिला), पोटाशियम् आयोडाइडम्, पोटाशियाई ब्रोमाइडम्, सिकेलीः कान्युटम्, सल्फर, सल्फ्युरिक एसिड, इलेक्ट्रिसिटि (विद्युत), स्ट्रिक्निया (कुचिला का सत्व) और उत्ताप इत्यादि।

मिश्रित औषध

आयुर्वेदीय—वातव्याधि में प्रयुक्त औषध।

यूनानी—हब्ब फ़ालिज व लक़्वा, दवाए इज़ाराक़ी, रोग़न लक़्वा व फ़ालिज, रोग़न हफ़्त बर्ग, मअ्जूनइज़ाराक़ी, मअ्जून इज़ाराक़ी(जदीद) मअ्जूनजोगराज गूगल, मअ्जून लना, इत् रीफ़ल ज़मानी, हब्ब लक़्वा, दवाए ग़ारीक़, दवाउल् फ़िब्रीत, रोग़न सुर्ख़, लहसन पाक, हब्ब राहत, और हब्ब स्याह कसी हल् फ़वायद

(२) घोड़े का एक रोग विशेष।

लक्षण—दोनों हनुओं का विक्षेप, नासिका एवं नेत्र के मध्य भाग में भेदनवत् वेदनाका होना और नासापुट आदि विकार से बुद्धिमान् लोग इसे अर्दित कहते हैं।

अर्धंग ardhanga-हिं० संज्ञा पुं० देखो—अर्द्धांग।

अर्धंगी ardhangí-हिं० संज्ञा पुं० देखो—अर्द्धांगी।

अद्‌र्ध arddha-हिं० वि०) (१)
अद्‌र्धम् arddham-सं० क्लो०) किसी वस्तु के दो समभागोंमें से एक, अर्द्ध, समांश, अर्द्धांश, तुल्य विभाग, आधा, मध्य। (Half.)-इं० पुं० खण्ड। (Region, section.) मे०।

अद्‌र्धकः arddhakah-सं० पुं० जल सर्प। (An aquatic serpent.) वं० निघ०।

अद्‌र्धकण्टक arddha-kaṇṭaka-सं० पुं० छोटा सतावर, क्षुद्र शतावरी। Asparagus racemosus (the small var. of–).

अद्‌र्धकण्डरामयी arddha-kaṇḍarámayí-सं० स्त्री० (Semitendinosus.)

अद्‌र्धकपाट सन्धिकः arddha-kapáṭa-sandhikah-सं० पुं०

अद्‌र्धकलामयी arddha-kalámayá-सं० स्त्री० (Semimembranosus.)

अद्‌र्ध कैशिकी arddha-kaiṣhikí-सं० स्त्री० छेदनार्थ शस्त्रधारा विशेष। सु० सू० ८ अ०।

अद्‌र्धखारी arddha-khári-सं० स्त्री० खारी-मानार्द्ध, आधा खारी। देखो-खारि:(री)।

अद्‌र्धगोलम् arddha-golam-सं० क्लो० (Hemisphere) अर्ध वृत्त, अर्ध चन्द्र, आधा गोल।

अद्‌र्धङ्ग arddhanga-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] पक्षाघात, अर्द्धांग। (Hemiplegia..)

अद्‌र्धचक्रम् arddha-chakram-सं० क्ली० अर्द्ध वृत्त। (An arch.)

अद्‌र्धचक्राकारनाली arddha-chakrákára-nálí--सं० स्त्री० मुड़ी हुई नाली, अर्द्धचन्द्राकार नलिका। (Semicircular canal.)

अद्‌र्धचन्द्रः arddha-chandrah--सं० पुं० (१) मयूर पुच्छ, चन्द्रिका, मोर-पंख पर की आँख। हे० च०। (२) आधा चन्द्र, अर्द्धेन्दु (A crescent, a half moon)। (३) नख क्षत।

अद्‌र्धचन्द्रम् arddha-chandram-सं० क्ली० अंगुली तोरण। हारा०।

अद्‌र्धचन्द्र कपाटम् arddha-chandra-kavátam--सं० क्ली० (Semilunar valve) अर्ध गोलाकार कपाट (किवाड़ी)।

अद्‌र्धचन्द्रगण्डः arddha-chandra-gaṇḍah--सं० पुं० (Semilunar ganglion) अर्ध गोलाकार वातगण्ड।

अद्‌र्धचन्द्र छिद्रम् arddhachandra-chhidram--सं० क्ली० (Semilunar notch) अर्ध गोलाकार छिद्र।

अद्‌र्धचन्द्र तलम् arddha-chandra-talam--सं० क्ली० (Lunate surface.) अर्ध गोलाकार पृष्ठ।

अद्‌र्धचन्द्र तान्तव कीकसम् arddha-chandra--tántava--kíkasam--सं० क्ली० (Semilunar fibro-cartilage.) अर्ध गोलाकार तान्तवोपास्थि।

अद्‌र्धचन्द्र धमनी arddha chandra-dhamaní--सं०, हिं० स्त्री० (Semilunar artery) अर्ध गोलाकार धमनी।

अर्द्धचन्द्राकार कपाट arddha-chandrákára-kapáṭa-हिं० संज्ञा पुं० (Semilunar Valves.) अद्‌र्ध चक्राकार कवाट।

अर्द्धचन्द्राकार कारटिलेज arddha-chandrákár-kártileja-हिं० संज्ञा० पुं० (Semilunar cartilage) अर्ध गोलाकार कुर्री।

अर्द्धचन्द्राकार पिंड arddha-chandrákára-piṇḍa-हिं० पुं० (Plica semilunaris.)

अर्द्धचन्द्राकार नलिका arddha-chandrá-kára-naliká-हिं० संज्ञा स्त्री० (Semi-lunar canal.) अर्ध गोलाकार नली।

अर्द्ध चन्द्राननः arddha-chandránanah -सं० पुं० अन्तर्मुख नामक विस्रावण अस्त्र। अम०।

अर्द्धचन्द्रास्थि arddha-chandrásthi-सं०, हिं० स्त्री० (Lunate-bone.) अद्‌र्ध-गोलाकार हड्डी।

अर्द्धचन्द्रिका arddha-chandriká-सं० (हिं० संज्ञा) स्त्री० (१) कर्णस्फोटा नाम की लता। कनफोड़ा। रा० नि० व० ३। (२) कृष्ण त्रिवृता, काली निशोथ। मद० व० १।

अर्द्धचोलकः arddha-cholakah-सं० पुं० चोली, कुर्पास। काँचुली-बं०। (A bodice, a waist coat.) हारा०।

अर्द्ध ज्योतिका arddha-jyotiká-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] ताल का एक भेद।

अर्द्धझिल्लीकृत पेशी arddha-jhillíkrita-peshí-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] (Semi-membranosus muscle.) वह पेशी जो अर्ध झिल्लीदार हो।

अद्‌र्धतरल arddha-taral-हिं० वि० [सं०] (Semi-liquid) अर्ध द्रव।

अद्‌र्ध तिक्तः arddha-tiktah-सं० पुं० (१) किरात तिक्त, चिरायता (Andrographis paniculata.)। (२) नैपाल देशज निम्ब विशेष, एक प्रकार की नीम जो नैपाल में होती है। रा०। भा० पू० १ भा०।

अद्‌र्धधारकम् arddha-dhárakam-सं० क्ली० अस्त्र विशेष। यह छेदन भेदन कार्य्य में आता है। सु० सू० ८ अ०।

अद्‌र्ध नाराच arddha-nárácha-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का बाण।

अद्‌र्ध नारी नटेश्वर रसः arddha-nárína-teshvara-rasah-सं० पुं० जमालगोटा, तज, अङ्कोलपत्र, पटोलपत्र, हुहुर, अजमोद, प्रत्येक तुल्य भाग लें, चूर्णकर अद्‌र्ध भाग शुद्ध नीलाथोथा मिश्रित करें। इसका नस्य लेनेसे संज्ञा होती है और यह सन्निपात, अत्यन्त निद्रा, तन्द्रा, मस्तक शूल, श्वाँस, खाँसी, प्रलाप, उग्र कफ इन्हें तत्क्षण दूर करता है। वृ० रसरा० सु०।

अद्‌र्ध नारी नटेश्वरः arddha-nárínate-shvarah-सं० पुं० त्रिकुटा, त्रिफला, पारा, गन्धक, ताम्रभस्म, लोहभस्म, कुटकी, भांगरा, मोथा, और बच्छनाग प्रत्येक समान भाग और पारद से द्विगुण कुचला मिलाकर बकरेके पित्त से भावित करें। इसे पुत्र वाली स्त्री के दूध में घिस कर दाहिनी आँख में अञ्जन करें तो तत्काल ज्वर नष्ट होता है। यह परम आश्चर्यकारी रस है। इस नाम के १७ योग रसयोगसागर में आए हैं।

अद्‌र्ध नारीश्वर रसः arddha-náríshvara rasah-सं० पुं० पारद, गन्धक, विष और सुहागा भस्म तुल्य भाग ले खरल करें, जब कज्जल सा हो जाए तब इसको काले साँप के मुख में रख कपरमिट्टी कर एक मिट्टी के पात्र में प्रथम नमक बिछाकर उसमें पूर्वोक्त सम्पुट रख कर ऊपर पुनः नमक भर दें, पश्चात् उस पात्र का मुख सराव से दृढ़ बन्द कर चूल्हे पर रख ४ प्रहर की तीव्र अग्नि दें। जब स्वांग शीतल हो जाए तब निकाल कर खरल में डाल पीस लें।

मात्रा—१ रत्ती।

प्रयोग—इसको बांए नथुने में नास देने से उस तरफ का ज्वर दूर होता है और पुनः दाहिने नथुने में नस्य देने से दाहिने अंग का ज्वर शीघ्र उतर जाता है। यह योग गुप्त रखना उचित है। वृ० रसरा० सु०।

अद्‌र्ध नाली arddha-nálí-हिं० स्त्री० (Gr-oove.) परिखा।

अद्‌र्धपलम् arddha palam-सं० क्ली० दो कर्ष, कर्षद्वय(=४ तो०)। "स्यात्कर्षाभ्या-मद्‌र्धपलम्"। प० प्र० १ ख०।

अद्‌र्धपादा arddha-pádá-सं० स्त्री० भूम्या-मलकी, भुँई आमला। (Phyllanthus neruri.) वै० निघ०।

अर्द्धपारावतः arddha-párávatah–सं० पुं० (१) बन कुक्कुट (Wild cock.) (२) चित्रकण्ठ पारावत। (३) तित्तिरपक्षी, तीतर। A partridge (Perdix francolinus.) अत्रि०।

अर्द्धपुष्पा arddha-pushpá–सं० स्त्री० महाबला। (See Mahábalá) वै० निघ०।

अर्द्धपोहल arddha-pohala–हिं० संज्ञा पुं० (देश) एक पौदा जिसकी पत्तियाँ मोटी होती हैं।

अर्द्धप्रसादनः arddha-prasádanah–सं० पुं० महदेवी, सहदेई।

अर्द्धभाग arddha-bhága–हिं० पुं० आधा। (A half.)

अर्द्धभोजनम् arddha-bhojanam–सं० क्ली० अर्द्धाशन, आधा पेट खाना।

अर्द्धमात्रा arddha-mátrá हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] आधी मात्रा।

अर्द्धमात्रिकः arddha-mátrikah–सं० पुं० एक प्रकार की निरूहण वस्ति विशेष।

विधि तथा योग—दशमूल के क्वाथ में २ तो० सौंफ पीसकर उसमें २ तो० सैंधानमक, मधु २ पल, तैल २ पल और एक मदनफल का चूर्ण योजित करें इसको अर्द्धमात्रिक वस्ति कहते हैं। निरूहवत् इसका प्रयोग करें। च० द०।

अर्द्धमासूरी arddha-másúrí–सं० स्त्री० लेखनार्थ अस्त्रधारा विशेष। सु० सू० ८ अ०।

अर्द्ध रन्ध्रम् arddha-randhram–सं० क्ली० (Notch.) भंग।

अर्द्धरात्रः arddha-rátrah–सं० पुं० रात्रि का अर्धभाग, आधीरात, महानिशा। मिडनाइट (Midnight.)–इं०।

अर्द्धवश्या arddha-vashyá–सं० स्त्री० (Semispinalis.)।

अर्द्धवलयम् arddha-valayam–सं० पुं० (Arch.)।

अर्द्धवीरच्छा arddha-virachchhá–सं० स्त्री० कृष्ण दूर्वा।

अर्द्धवृत्तम् arddha-vrittam–सं० क्ली०
अर्द्धवृत्त arddha-vritta–हिं० संज्ञा पुं०
(Semicircle.) अर्द्धगोल। वृत्त का आधा भाग। वृत्त का वह भाग जो व्यास और परिधि के आधे भाग से घिरा हो।

(२) पूरे वृत्त की परिधि का आधा भाग।

अर्द्ध वृत्तप्रणाली arddha-vritta-pranáli–सं० स्त्री० (Semicircular duct.) अर्धगोलाकार प्रणाली।

अर्द्धश (स) फरः arddha-sha- (sa) pharah–सं० पुं० दण्डपाल नामक क्षुद्र मत्स्य विशेष। दाँड़िका वा डानकोणा–माछ –बं०।

अर्द्ध शरावः,-कः arddha-sharávah;-kah–सं० पुं० दो प्रसृति, प्रसृतिद्वय (=३२ तो०)। प० प्र० १ ख०। भा०।

अर्द्धसहः arddha-sahah–सं० पुं० पेचक, उलूक पक्षी। प्याँचा–बं०। घुवड़–मह०। (An owl.)

अर्द्ध स्वच्छ arddha-svachchha–हिं० वि० अस्फुट दर्शक,वे पदार्थ जिनमेंसे प्रकाश अच्छी तरह न जा सके, जैसे—तेल, पतला कागज, धुँधला काँच इत्यादि। (Translucent, semitransparent.)

अर्द्धांग arddhánga–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) आधा अंग (Half the body.) (२) एक रोग जिसमें आधा अंग चेष्टाहीन और बेकाम हो जाता है; फ़ालिज, पक्षाघात। पक्ष वध। एकांगवात। अर्द्धांगवात। (Hemiplegia.) देखो—पक्षवध (वात) वा एकाङ्गवात।

अर्द्धाङ्ग वातारि रसः arddhánga-vátári-rasah–सं० पुं० पारा २० तो०, शुद्ध ताम्र चूर्ण ४ तो० लेकर जम्बीर के रस में घोटें, और उसमें गन्धक २० तो० पान के रस में घोट कर मिलाएँ फिर सम्पुट में बन्द कर भूधरयन्त्र

में ८ पहर तक हलकी आँचमें पकाएँ और इसके बराबर त्रिकटु का चूर्ण मिलाकर बारीक पीस रख लें।

मात्रा—२ रत्ती।

गुण—यह अर्द्धांग वात और एकांग वात को नष्ट करता है। रस० यो० सा०।

अर्द्धांगी arddhangi-हिं० वि० [सं०] (१) पक्षाघाती अर्द्धांग-रोग-ग्रस्त। (One afflicted with the hemiplegia.)

अर्द्धांशोनजलम् arddhánshonajalam -सं० क्ली० अर्द्धांश हीन पक्व जल, आधा भाग से कम पकाया हुआ जल। यह वात पित्त नाशक है। रा० नि० व० १४।

अर्द्धालिगः arddháligah-सं० पुं० जल सर्प। (Aquatic serpent.) वै० निघ०।

अर्द्धावभेदकः arddháva-bhedakah -सं० पुं०
अर्द्धावभेदक ardháva-bhedaka -हिं० संज्ञा पुं०

एक प्रकार का परियाय से होने वाला शिरःशूल जो सामान्यतः आधे शिर में, कभी कभी सम्पूर्ण शिर में हुआ करता है। इसमें जी मचलाता और उबकाइयाँ आती हैं और आँखों के सामने चिनगारियाँ सी उड़ती दृष्टिगोचर होती हैं इत्यादि। आधासीसी। अर्धभेदक, अधकपारी (ली)।

हेमिक्रेनिया (Hemicrania), माइग्रीन Migraine, सिकहेडेक Sick headache, मेग्रिम Megrim, नर्वस हेडेक Nervous headache-इं०। माइग्रीन Migraine-फ्रां०। माइग्रेन Migrane -जर०। शक़ीक़ह्, सुदाअ़ निस्फ़ी, सुदाअ़ रास्यानी-अ०। दर्दे नीम सर, दर्दे शक़ीक़ह्, दर्दे सर रास्यानी-फ़ा०, उ०। आधासीसी, सर का दर्द-उ०। आध् कपालेर धरा-बं०।

आयुर्वेद के मत से मस्तक के आधे भाग में होने वाले शिरोविकार को अर्द्धावभेदक कहते हैं। उनको इसका परियाय रूप से होना भी स्वीकार है। यथा—

अर्धे तु मूर्ध्नः सोऽर्धावभेदकः।
पक्षात्कुप्यति मासाद्वा स्वयमेव च शाम्यति।
अति वृद्धस्तु नयनं श्रवणं वा विनाशयेत्॥
(वा० उ० २३ अ०)

अर्थ—मस्तक के आधे भाग में जो शिरोविकार होता है, उसे अर्धावभेदक कहते हैं। यह रोग पन्द्रहवें दिन वा मास मास में कुपित होता है और औषध के बिना अपने आप शान्त हो जाता है। अर्द्धावभेदक प्रबल हो जाने पर नेत्र वा कानों को मार देता है।

सुश्रुताचार्य भी ऐसा ही मानते हैं। परन्तु माधव के विरुद्ध केवल एक वा दो दोषों से ही कुपित हुआ न मानकर तीनों दोषोंसे कुपित हुआ मानते हैं। यथा—

यस्योत्तमाङ्गार्धमतीव जन्तोः
संभेद तोद भ्रम शूल जुष्टम्।
पक्षाद्दशाहादथवाप्यकस्मा-
त्तस्यार्धभेदं त्रितयाद् व्यवस्येत्॥
(सु० उ० २६ अ०)

माधवाचार्य के मत से—

रूक्षाशनात्यध्यशन प्राग्वातावश्याय मैथुनैः।
वेगसंधारणायास व्यायामैः कुपितोऽनिलः॥
केवलः सकफोवार्धं गृहीत्वा शिरसोबली।
मन्या भ्रूशङ्ख कर्णाक्षि ललाटार्धेऽतिवेदनाम्॥
शस्त्रारणिनिभां कुर्यात् तीव्रांसोऽर्धावभेदकः।
नयनंवाथवा श्रोत्रमतिवृद्धो विनाशयेत्॥
(मा० नि०)

अर्थ—अत्यन्त रूखे पदार्थ खाने से अधिक भोजन करने से, भोजन पर भोजन करने से पूर्व की वायु एवं बर्फ का सेवन करने से, अति मैथुन करने तथा मल मूत्रादिक के वेगों को रोकने से, अधिक श्रम तथा व्यायाम करने आदि कारणों से केवल वायु अथवा कफ संयुक्त वायु कुपित होकर आधे शिर को ग्रहण कर मन्या नाड़ी, भौंह, कनपटी, कान, नेत्र और ललाट एक ओर के इन सभी अवयवोंमें कुल्हाड़ी के काटने कीसी अथवा अरणी (जो मथ कर अग्नि निकालने की लकड़ी है) के समान तीव्र पीड़ा उत्पन्न करता है उसको अर्धावभेदक कहते हैं।

यह रोग जब अधिक बढ़ जाता है तब एक ओर के कान और नेत्र को नष्ट कर देता है।

यूनानी वैद्यक के मत से शक़ीक़ह् एक प्रकार का शिरोशूल है जो साधारणतः आधे शिर में अर्थात् शिर की वाम वा दक्षिण पार्श्व में होता है, किन्तु कभी सम्पूर्ण शिर में होता है।

जैसा मुल्ला नफ़ीस ने इसकी व्याख्या की है। ऐसी दशा में इसको शक़ीक़ह् आम कहते हैं। निम्नलिखित डॉक्टरी नोट से भी इसकी सत्यता स्थापित होती है। इस वेदना की विशेषता यह है कि यह साधारणतः पर्यायि रूप से अर्थात् दौरे के साथ हुआ करती है। इसके साथ सामान्यतः हल्लास एवं वमन विकार होते हैं। जिस समय यह वेदना सम्पूर्ण शिर में होती है उस समय इसको सुदाअ् बैज़ह् (सम्पूर्ण शिर के दर्द) से पहिचानने में भ्रम हो जाया करता है। इन दोनोंमें मुख्य भेद यह है—शक़ीक़ह् में शाङ्खिकी धमनियों में स्पन्दन अधिक होती है और उनको दबा लेने से वेदना शान्त हो जाती है; किन्तु सुदाअ्बैज़ाअ् में ऐसा नहीं होता।

टिक डोलरो (Tic Douloureux) अर्थात् इसाबह् (भौंहों के दर्द) को भी किसी किसी डॉक्टरी उर्दू ग्रंथों में दर्दे शक़ीक़ह् लिखा है। परन्तु यह ठीक नहीं।

डॉक्टरी मत

डॉक्टरों के मत से माइग्रीन एक प्रकार का नौबती शिरःशूल है जो सामान्यतः आधे शिर में हुआ करता है। निदान—उनके मतानुसार यह प्रायः पैतृक होता और अधिकतर स्त्रियों को होता है। विशेषतः अधिक रजःस्राव होने या अधिक काल तक स्तन्यपान से यह हो जाता है। कभी कभी वायगोला भी इसका कारण होता है। रक्तविकार, थकावट व श्रम, उपवास एवं निर्बलता, अजीर्ण, अनिद्रा, तीव्र प्रकाश, उग्र गंध, मलेरिया द्वारा उग्र विषाक्तता, अति मैथुन, वृक्क व्याधि और कुब्धकर दृष्टि दोष इत्यादि इसके मोत्साहक एवं उत्पादक कारण हैं।

लक्षण—साधारणतः वेदनारम्भ से पूर्व तबीयत आलस्यपूर्ण एवं शिथिल होती है, सिर घूमता है, नेत्र के सामने चिनगारियाँ प्रभृति उड़ती दृष्टिगोचर होती हैं। ये लक्षण पूर्वरूप में होते हैं।

फिर इस प्रकार वेदना आरम्भ होती है—प्रथम कनपटी और भौंहों में मन्द मन्द वेदना आरम्भ होकर उग्र रूप धारण करती जाती है। यहाँ तक कि कुछ काल पश्चात् अत्यन्त तीव्र वेदना होने लगती है। ऐसा प्रतीत होता है गोया शिर विदीर्ण हुआ जाता हो। गति करने से वेदना की वृद्धि होती है। प्रायः तो शिर के एक ही पार्श्व में वेदना होती है; किन्तु किसी किसी समय सम्पूर्ण शिर में वेदना होती है। तो भी एक ओर तीव्र होती है। रोगी के लिए शब्द तथा प्रकाश असह्य होते हैं। उसकी आँखों के सामने भुनगे वा चिनगारियाँ उड़ती सी प्रतीत होती हैं। कर्णनाद होता, मुखमण्डल की विवर्णता, शरीर का काँपना, नाड़ी की निर्बलता, हल्लास (मचली), उबकाइयाँ आना आदि लक्षण होकर अन्ततः एक ओर की कनपटी या भौंह में व्यथा टिक जाती है। दो-तीन घंटे से लेकर साधारणतः २४ घंटे तक और यदि उग्र हो तो कभी २–३ दिवस पर्यन्त रहकर जब शमन होने लगती है तब रोगी को नींद आ जाती है। जागृत होने पर वह सर्वथा स्वस्थ होता है और फिर कुछ दिवस पश्चात्, पर सामान्यतः ३ या ४ सप्ताह बाद दर्द का वेग होता है।

अर्धावभेदक की चिकित्सा

अर्धावभेदक में दोषों का सम्बन्ध विचार कर शिरोरोगान्तर्गत चिकित्सा का अवलम्बन करे। कहा है—

अर्धावभेदके प्येवं यथा दोषान्वयात्क्रिया।
(वा० उ० २४ अ०)

अस्तु सिरस के बीज, ओंगा की जड़ तथा विडनमक इनका नस्य अथवा शालपर्णी के काढ़े का नस्य अथवा काँजी के साथ पिसे हुए पँवाड़ के बीजों का लेप हितकारी है। यथा—

शिरीष बीजापामार्गमूलं नस्यं विडान्वितम्।
स्थिरारसो वा लेपेतु प्रपुन्नाटाऽम्लकल्कितः॥
(वा० उ० २४ अ०)

सुश्रुताचार्य के मत से नस्य कर्म आदि रूप औषध, जांगलप्राय भोजन और दुग्ध एवं अन्न के बने पदार्थ तथा घृत आदि केवल सूर्यावर्त्त में ही नहीं, प्रत्युत अर्धभेदक में भी प्रयोजनीय हैं। और स्नेह, स्वेद, शिराव्यधन (फसद खोलना) तथा अवपीड़नस्य और कर्णशूलोक्त दीपिकातैल आदि में से जो उपयुक्त हो उसका व्यवहार करें।

शिरीष, मूलक (मूली) तथा मदनफल इनका अवपीड़ नस्य देना अर्धावभेदक तथा सूर्यावर्त्त दोनों में हितकारक है। वच और पिप्पली का अवपीड़न करना इसमें लाभदायक है। अथवा मुलेठी का बारीक चूर्ण कर उसमें मधु मिलाकर इसका अवपीड़ करें। मैंसिल अथवा चन्दन के चूर्ण में शहद योजित कर इस का अवपीड़न करें। (सु० उ० २६ अ०)

परीक्षित नस्य

काश्मीरी पत्र, करवीर पत्र, छोटी इलायची, कायफल, नकछिकनी, जौहर नवशादर और सफेद चन्दन। सबको समान भाग लेकर खूब बारीक चूर्ण कर रखें। इसका नस्य लेने से आधासीसी को लाभ होता है।

डॉक्टरी चिकित्सा

रोग के मूल कारण का पता लगाकर उसको दूर करने का प्रयत्न करें और यदि प्रधान कारण ज्ञात न हो सके तो निम्न लिखित उपाय काम में लाएँ।

रोगी को आदेश करदें कि वह स्वास्थ्य-संरक्षण सम्बन्धी नियमों का पालन करे और मध्य मार्गी बन कर जीवन निर्वाह करे। स्वच्छ एवं खुली हुई वायु में रहे। दैनिक वायु सेवनार्थ भ्रमण किया करे। अधिक श्रम एवं वैकल्यकारक कार्यों तथा चिंता आदि से अपने को दूर रक्खें। यथासम्भव अपने को प्रसन्न रखने का यत्न करें। उष्ण व उत्तेजक आहार यथा पोलाव, कुर्मा, शराब वा कबाब, चाय तथा कहवा और मिष्ठान्न (मिठाई) आदि सेवन न करे। क्यों कि अधिक मांस तथा मिठाई के सेवन से वेग की वृद्धि होती है। जिस पदार्थ के सेवन से वेगारम्भ होने की आशंका हो उसका कदापि व्यवहार न करें और प्रत्येक प्रकार के भारी तथा आध्मानकारक आहार से परहेज करें। रोगी को चाहिए कि भोजन करने से पूर्व एक घंटा तक सर्वथा आरामसे लेटने की आदत डालें। इस बात का सर्वथा ध्यान रक्खें कि मलावरोध न हो। पाखाना साफ़ हो जाया करे। इसलिए किसी मृदुरेचक औषध का व्यवहार करें और कभी कभी (महीने में एक बार) ४–७ दिवस पर्यन्त निम्नयोग का व्यवहार करें।

मैग्नेसियाई सल्फास	२० ग्रेन,
क्वीनीनी सल्फास	२० ग्रेन,
एसिड सल्फ डिल	५ मिनिम,
लाइक्वार स्ट्रिक्नीनी	२ मिनिम,
इन्फ्युजम ऑरेंशियाई (ऐड)	१ आउंस।

ऐसी एक-एक मात्रा औषध दिन में ३ बार दें।

जब वेदना के वेग से पूर्व आँखों के सामने चिनगारियाँ सी उड़ती दिखाई दें या कनपटी पर सुरसुराहट बोध हो या शिरोघूर्णन वा शिर के एक पार्श्व पर सूक्ष्म सी वेदना हो तब दो तीन दिवस पर्यन्त १० ग्रेन अमोनियम् ब्रोमाइड को किञ्चित् जल के साथ दिन में ३ बार व्यवहार करें। अथवा ३-४ दिन तक १५ ग्रेन कैल्शियम लैक्टेट थोड़े सोडावाटर में मिलाकर ऐसी एक एक मात्रा दिन में तीन चार बार दें।

वेग कालीन चिकित्सा

जब शिर में दर्द होने लगे तब रोगी को एक अँधेरे कमरे में सुखपूर्वक लिटाए रक्खें। वहाँ पर किसी प्रकार का शोर व गुल न होने दें। रोगी को कोई आहार न दें। यदि आमाशय आहार से पूर्ण हो तो कोई वामक यथा ४ ड्राम वाइनम् इपिकेक्वानी ४ आउंस जल में मिलाकर पिलाएँ जिसमें १–२ वमन आकर कोष्ठ शुद्धि हो जाए और यदि आमाशय रिक्त हो तब

बार बार उबकाइयाँ आती हों तो बर्फ चुसाएँ अथवा सोडावाटरमें बर्फ डालकर घूँट घूँटपिलाएँ आमाशय द्वारपर १५-२० मिनट तक राई का प्लास्टर लगाएँ। मलावरोध होने की दशा में ब्ल्यूपिल ५ ग्रेन खिलाकर उसके घंटे पश्चात् सोडियाई सल्फास या मैग्नेशियाई सल्फास ४ से ६ ड्राम ४ आउंस (२ छं०) पानी में मिला कर पिलाएँ। शिरोशूल निवारणार्थ निम्न योगों में से किसी एक का व्यवहार करें। ये सब अत्यन्त लाभप्रद और परीक्षित हैं।

केफीन साइट्रास	१० ग्रेन
फेनासिटीन	१० ग्रेन

यह एक मात्रा है। ऐसी एक मात्रा औषध प्रातः काल अथवा किसी भी समय वेदना काल में जल वा दुग्ध के साथ सेवन करें।

(२) ऐण्टीपायरीन	५ ग्रेन
सोडियम सैलीसिलेट	५ ग्रेन
केफीनी साइट्रेट	१ ग्रेन
सीरुपस औरेंशियाइ	३० मिनिम
एक्वा क्लोरोफॉर्माई (ऐड)	½ आउंस

ऐसी एक-एक मात्रा औषध १५-१५ मिनट पश्चात् तीन-चार बार दें। वेदना आरम्भ होते ही इसका प्रयोग करने से प्रायः व्यथा रुक जाती है।

(३) ब्युटल क्लोरल हाइड्रेट	५ ग्रेन
टिंक्चूरा जलसीमियाई	८ मिनिम
टिंक्चूरा कैन्नाबिस इण्डिकी	५ मिनिम
ग्लीसरीन	१ ड्राम
एक्वा (ऐड)	१ आउंस

ऐसी १-१ मात्रा औषध आध-आध घंटे पश्चात् दो-तीन बार दें। इस प्रकार के शिरोशूल में यह औषध अत्यन्त लाभप्रद है।

(४) ऐण्टिपायरीन	६० ग्रेन
पोटासियाई ब्रोमाइडाई	२४० ग्रेन
स्पिरिटस क्लोरोफॉर्माई	२ ड्राम
एक्वा कैम्फोरी (ऐड)	८ आउंस

इसमें से आध आउंस (४ ड्राम) औषध वेदना आरम्भ होते ही दें। आवश्यकता होने पर आध घंटे पश्चात् १-२ मात्रा और दें। वेगान्तर काल में कुछ दिन तक २ ड्राम की मात्रा में प्रातः सायं इसका सेवन किया करे।

प्रत्येक भाँति के शिरोशूल में लाभदायक है।

(५) ऐस्पिरीन	५ ग्रेन
फेनासिटीन	३ ग्रेन
डोवर्स पाउडर	३ ग्रेन

ऐसी एक-एक पुड़िया एक-एक घंटे पश्चात् तीन-चार पुड़िया तक दें।

(६) अर्द्धावभेदक के लिए अत्यन्त लाभदायक है।

क्लोरल हाइड्रेट	१० ग्रेन
पोटासियम् ब्रोमाइड	१५ ग्रेन
लाइकार ट्राइ नाइट्रीन	१ मिनिम
एक्वा क्लोरोफ़ार्म (ऐड)	१ आउंस

ऐसी एक-एक मात्रा दिन में तीन बार तक दें।

(७) हर प्रकार के शिरःशूल के लिए गुणदायक है।

ऐस्पिरीन	५ ग्रेन
क्वीनीन सल्फेट	३ ग्रेन
फेनासिटीन	३ ग्रेन
केफीन	२ ग्रेन

ऐसी एक-एक पुड़िया २-२ घंटे के अन्तर से ३ पुड़िया तक दें।

(८) यह अर्द्धावभेदक के वेग रोकने के लिए अत्युपयोगी है। दो तीन मास इसका निरन्तर उपयोग करना चाहिए।

सोडियम ब्रोमाइड	१० ग्रेन
टिंक्चर जेलसीमियाई	१० मिनिम
लिकार ट्राइ नाइट्रीनी	१ मिनिम
लाइकार स्ट्रिक्नीनी	५ मिनिम
एका मेन्थी पेप(ऐड)	१ आउंस

ऐसी एक-एक मात्रा दिन में २-३ बार दें।

नोट—प्रत्येक सप्ताह में एक दिन का नागा देना चाहिए। इस प्रकार के हठीले शिरो वेदना में दोनों स्कंधों के बीच में और कानों के पीछे और नीचे खुश्क गिलास लगाने से तथा गुद्दी पर

रुपये के बराबर ब्लिस्टर लगाने और फिर ब्लिस्टर जनित क्षत पर मरहम सियून लगाकर उसको दस दिवस पर्यन्त शुष्क न होने देने से और विकारी पार्श्व अर्थात् जिस ओर तीव्र वेदना होती है उस ओर के कान के पीछे के अस्थ्यर्बुद पर राई के पलस्तर लगाने से प्रायः लाभ होता है।

यूनानी वैद्यकीय चिकित्सा

रोगी को एक अँधेरे कमरे में सुखपूर्वक लिटाए रखें और उसके प्राकृतिक शैत्य व ऊष्मा को ध्यान में रखकर वाह्य तथा आन्तर उपचार काम में लाएँ तथा रोग के मूल कारण का परिहार करें। अस्तु उदर के आहार से पूर्ण होने से वाष्पोद्भूत होकर इस प्रकार का शूल हुआ हो तो (१) तीन पाव उष्ण जल में सिकञ्जबीन सिर्का ४ तो० और सैंधव १ तो० को विलीन कर पिलाकर वमन कराएँ। यदि मलावरोध की भी शिकायत हो तो किसी उपयुक्त वस्तिदान द्वारा उसको शीघ्रातिशीघ्र निवारण करें। प्रकृतोष्मा की दशा में रोगी को (२) कपूर तथा श्वेत चन्दन सुँघाएँ तथा (३) २ रत्ती अफीम, ४ रत्ती कपूर को पानी वा स्त्री दुग्ध में घोलकर नस्य दें या (४) केवल रोगन बनफ्शा वा स्त्री दुग्ध का उक्त विधि से सेवन कराएँ या (५) सिन्दूर ४ रत्ती को एक काग़ज़ पर मल कर उसकी बत्ती बनाकर उसका एक सिरा वेदना होने वाली नासिका के विपरीत दूसरी ओर की नाक में रखें और दूसरे सिरे की ओर से जलाकर धूनी लें। माद्दा के विनाश हेतु पिण्डलियों पर मज़बूत बंधन लगाएँ और पाशोया कराएँ। (६) चन्दन और कपूर को गुलाब में घिसकर शिर और शंख स्थल पर प्रलेप करें। (७) परीक्षित प्रलेप—सोंठ, चन्दन श्वेत, एरण्ड मूल त्वक् सब को सम भाग लेकर साठी चावल के धोवन में पीस कर मस्तक और कनपटी पर लगाएँ। इससे हर प्रकार के अर्द्धावभेदक में लाभ होता है। (८) उग्र वेदना की दशा में क़ुर्स मुसल्लस का व्यवहार करें। (९) बर्ग मोरिद सब्ज़, मुरमकी सिब्र सक़ोतरी, रसवत मक्की, रसवत हिन्दी, समग़ अरबी, निशास्ता, अञ्ज़रूत, कतीरा, पोस्त कुंदुर, गुलनार फारसी, अक़ाक़िया, दम्मुल् अख़्वैन, शियाफ़ मामीसा प्रत्येक ३ मा०, अफीम ६ मा०, ज़ाफ़रान २ मा०। समग्र औषध को कूट कर मोरिद के हरे पत्तों के पानी में गूँध कर टिकिया प्रस्तुत करें। आवश्यकता होने पर एक टिकिया को अण्डे की सफ़ेदी में घोल कर गोल और छिद्रयुक्त काग़ज़ पर लगाकर शंखकी धमनी पर चिपका दें। इससे बहुत शीघ्र वेदना शान्त हो जाएगी। (१०) अनिद्रा की दशा में रोग़न बनफ़्शा, रोग़न कद्दू, या रोग़न काहू प्रभृति का शिर पर अभ्यंग करें। इससे नींद आ जाती है। प्रकृति के शैत्य की दशा में मेंहदी के पत्तों को पीसकर इसका प्रलेप करें या बादाम ५ को सर्षप तैल में पीसकर मस्तक पर लगाएँ और रीठा को पानी में घिसकर दो तीन बूंद नाक में टपकाएँ। इससे लाभ न होनेकी दशा में यह प्रलेप लगाएँ।

एक जमालगोटा को पानी में घिसकर वेदना युक्त पार्श्व की दूसरी ओर की कनपटी पर रुपया के बराबर प्रलेप करें। यदि इससे अधिक जलन हो और फोस्का उत्पन्न हो जाएँ तो उसपर मक्खन लगाएँ।

पुरातन आधासीसी पर निम्न प्रलेप का उपयोग करें।

मेंहदी के पत्र इन्द्रायण का गूदा, उश्शक, इक्लीलुल मलिक, कबाबचीनी, एलुआ सबको समान भाग लेकर बारीक पीस लें और सिरका में मिलाकर प्रलेप करें या यह प्रलेप लगाएं—मुरमकी २ मा० को किञ्चित् सिरका में पीसकर लेप करें।

नस्य—यह साधारणतः उस कफज अर्द्धाव भेदक में जिससे शिर में गर्मी और वेदना की शिकायत एवं टीस नहीं होता, लाभदायक है। समुद्र फल १ और नवसादर १ मा० दोनों को बारीक पीसकर सूर्य की ओर मुखकर नस्य लें। इससे प्रायः छींकें आकर वेदना शांत हो जाती है। दिन में कई बार प्रयोग करें।

शीरा उस्तु खुद्दूस ३ मा०, काली मिर्च इसका पानी में शीरा निकाल कर बिना साफ़ किए सूर्योदय से प्रथम पान कराएँ अथवा इस फांट का प्रयोग करें–गुलबनफ़्सा ६ मा०, उन्नाब ५ दाना, सपिस्ताँ १० दाना, गुलखित्मी ४ मा०, शाहतरा ६ मा०, आलूबोखारा ५ दाना, बिहीदाना ३ मा०, सम्पूर्ण औषध को अर्क़ कासनी २० तो० में भिगोएँ और प्रातः इसको थोड़ा क्वथित कर २ तो० मिश्री मिलाकर पिलाएँ। विबंध को दूर करने के लिए मग़ज़ फ़लूस ४ तो० को जल में घोलकर इसमें ४ तो० एरंड तैल मिलाकर कभी कभी पिलाते रहें और हब्ब बलग्माँ १॥ मा० रोजाना खिलाएँ, अथवा यूनानी मिश्रित औषधों में से आवश्यकतानुसार किसी एक का उपयोग करें।

यदि इन उपचारों से लाभ न हो तो फिर मुञ्जिज और मुसहिल पिलाकर व्याधि गत दोषों का पूर्णतया शोधन करें।

मुञ्जिज—गुल बनफ़्शा, गाव ज़ुबान, मको खुश्क, तुख़्म कसूस (पोटली में बँधा हुआ) शाहतरा, अफ़्सन्तीन प्रत्येक ५ मा०, आलूबोखारा, उन्नाब, सपिस्ताँ प्रत्येक ६ दाना, तमर हिंदी (अम्लिका) २ तो०, तुर्बुद ६ मा०। सम्पूर्ण औषध को क्वथित कर और मल छानकर ख़मीरा बनफ़्शा सादा ४ तो० मिलाकर सात दिवस तक पिलाएँ। आठवें दिन उसी नुस्खामें मग़ज़ फ़लूस ख़यार शंबर ५ तो०, तुरञ्जबीन ४ तो०, शीरा मग़ज़ बादाम शीरीं ५ दाना मिलाकर विरेचन दें। दूसरे और तीसरे विरेचन में मुख्यतः मस्तिष्क की शुद्धिहेतु हब्ब अयारिज ६ मा० रातको खिलाकर प्रातः काल प्रागुक्त विरेचन दें। यदि वेदना पूर्णरूप से शांत न हो तो फिर कुछ दिन हब्ब सिब्र या इत्‌रीफ़ल सग़ीर १ तो० या शर्बत उस्तु खुद्दूस २ तो० उपयोग में लाएँ।

हब्ब सिब्र—एलुआ २ तो०, हड़ काबुली १ तो०, मस्तगी ७ मा०, गुलसुर्ख़, अनीसूँ प्रत्येक ४ मा० और कतीरा ६ मा०, सबको बारीक पीस करें चने के बराबर वटिकाएँ प्रस्तुत करें। मात्रा ५ मा० रात्रि को सोते समय उष्ण जल के साथ।

अर्द्धावभेदकमें प्रयुक्त होनेवाली अमिश्रित औषधें

आयुर्वेदीय तथा यूनानी—जदवार, समुद्रफल, छिक्किका (नकछिकनी), अपराजिता, बन खजूर (राम गुआक), विडङ्ग, हिंगु, दुरालभा, तिक्त कोशातकी, विडंग तैल, रीठा।

डॉक्टरी—आर्सेनिक, केफीन, काफ़ी, फेरी सल्फ, क्विनीन, विराट्रिया, केफ़ीनसाइट्रास, फिनासिटीन और एसिटेनिलाइडम् (एंटिफेब्रिन)।

मिश्रित औषध

आयुर्वेदीय शिरोशूल में प्रयुक्त होने वाली प्रायः औषध।

यूनानी—इत्‌रीफ़ल फौलादी, हब्ब अयारिज, सऊत अजीब, सऊत इस्माबह व शक़ीक़ह, क़ुर्स मुसल्लस, दवाए शक़ीक़ह और शिरोशूल में प्रयुक्त होने वाली सभी दवाएँ।

पथ्यापथ्य

शिरोरोग में वर्णित पथ्यापथ्य एवं आहार-विहार अनुसरणीय हैं।

अर्द्धाशनम् arddháshanam–सं० क्ली० अर्द्ध भोजन, आधा पेट खाना, भूख से कम खाना। श० च०।

अर्द्धिक arddhika–हिं० संज्ञा पु० [सं०] अर्द्धावभेदक। आधासीसी। (Hemicrania.)

अर्द्धीकरण arddhí-karaṇa–हिं० संज्ञा पु० [सं०] आधा करना।

अर्द्धेन्दुः arddhenduh—सं० पु० नख चिह्न। मे० द्विकं।

अर्द्धेन्दुपुष्पक arddhendu-pushpak–सं० अज्ञात।

अर्द्धेन्दु शकला arddhendu-shakalá–सं० स्त्री० (१) नासारोग (Nasal disease)। अम्राज़ुल् अन्फ़–अ०। (२) कपालरोग भेद। (A kind of the diseases of skull.) (३) ओष्ठ रोग (Labial diseases.)

(४) अर्बुद रोग। (Tumour)
(५) गल रोग (Pharyngeal diseases)
(६) तालु रोग (Diseases of the palate)
(७) कर्ण रोग। (Diseases of the ear.) वैं० निघ०।

अर्द्धोदक क्षीरम् arddhodaka-kshíram -सं० क्ली० अर्द्धोदक श्रृत दुग्ध, आधा जल मिलाकर पकाया हुआ दुग्ध यह श्रेष्ठ एवं लघु होता है।

'अर्द्धोदकं पयः शिष्टमामाल्लघुतरं श्रृतम्'। हेमाद्रि:चारपाणि।

अर्ध ardha-हिं० वि० दे०—अर्द्ध।

अर्न arna-चीड़ वृक्ष भेद। (Chíra)

अर्नक़ी arnaqi-यू० एक विशाल वृक्ष है जो चीन तथा भारतवर्षमें पाया जाता है। इसकापुष्प लाल, पीला, अथवा श्वेत होता है।

अर्नब बर्री arnaba-barrí-अ० खरगोश। (A hare.)

अर्नब बह्री arnaba-bahrí-अ०दरियाई खरगोश। (Sea-rabbit.)

अर्नबी arnabí-अ० एक बूटी है जो खरगोश के पैर के समान होती है। यह खराब और शीतल स्थानों में होती है।

अर्नबिय्यह arna-biyyah
ऐन अर्नबिय्यह áain-arnabiyyah
} -अ० एक रोग है शतरह (shatarh) जिसमें ऊर्ध्व पलक सङ्कुचित होकर छोटे हो जाते हैं और नीचेको लौट जाते हैं। इस कारण दोनों पलकें परस्पर नहीं मिल सकतीं और रोगी के नेत्र सुप्तावस्था में शशा चक्षु सदृश आधे खुले रहते हैं। लैग ऑफ्थैल्मास (Lag ophthalmas.)-इं०।

अर्ना arná-हिं० जंगली भैंस (Wild buffalo.)।

अर्ना arná-हिं० महानिम्ब (Ailantus-excelsa, *Roxb.*) फा० इं० १ भा०।

अर्नाबः arnábah-सं० पु० जंगली अंजीर। (Wild fig)

अर्निका arnica-इं०
अर्निका मॉण्टेना arnica montana, *L.*-लै०
} एक पौधा है जो औषध के काम में आता है। मेमो०। देखो-आर्निका मॉण्टेना।

अर्नीका फ्लोरिस arnica floris-लै० अर्नीका फ्लावर्स (arnica flowers.)-इं०।

अर्निया कल्दः arniyá-kaldahah सं० पुं० चाकसू। (Cassia absus.)

अर्नियाती arniyáti-सं० स्त्री० थल पद्मनी। स्थल कमल।

अर्नियूक़ून arniyúqúna-यू० चिरायता। (Andrographis paniculata.)

अर्नीसीन arnicin-इं०, अर्नीका सत्व। V. M. M.

अर्नुक़्सान áarnuqsán-अ० हिन्दक़ूकी, विषखपरा।

अर्नेबिया arnabia, *Sp.*-लै० रतनजोत, रङ्गे बादशाह। देखो-रतनजोत। (Alkanet.) फा० इं० २ भा०। मेमो०।

अर्नैट arnat
अर्नैटस डाई arnatt's dye
} -इं० लटकन, बलकन। (Bixa orellana, *Linn.*) इं० मे० मे०।

अर्नोटाप्लाण्ट arnotta plant-इं० सेन्दुरिया लटकन, वटकन। Arnatto (Bixa orellana.) इं० मे० मे०।

अर्फ़ह् áarfah-अ० हथेली का घाव।

अर्फ़ áarfa-अ० (१) शाब्दिक अर्थ "उच्च स्थान" परन्तु परिभाषा में अस्थि की ऊभरी हुई रेखा को कहते हैं।

क्रेस्ट (Crest.)-इं०। (२) बाँस।

अर्फ़ आनी áarfa-áání-अ० पेड़ की अस्थि की उभरी हुई रेखा। प्युबिकक्रेस्ट (Pubic crest.) -इं०।

अर्फ़ज áarfaj-अ०तीक्ष्ण दुग्ध मय बूटी भेद।

अर्फ़ हर्क़फ़ी áarfa-harqafí-अ० चड्डे की अस्थिकी उभरी हुई रेखा। इलिअक क्रेस्ट (Iliac crest.)-इं०

अर्फ़ियह् āarfiyah-अ० फ़ाख़्ता ।

अर्बतह् arbatah-अ० (ब० व०), रबात (ए० व०) बंधनी । लिगेमेण्ट्स Ligaments)-इं० ।

अर्बहरा āarbahrá-सिरि० सँभालूबीज । Vitex negundo (Seeds of-)

अर्बितुर्रिह्म arbitaturrihm-अ० जरायु बंधनियां, गर्भाशय के बंधन जो उसको एक दूसरे से संलग्न रखते हैं । लिगेमेण्ट्स ऑफ दी यूटरस (Ligaments of the Uterus.)-इं० ।

अर्बितुल् मसानह् arbitatul masánah -अ०. वस्तिबंधन, मूत्राशय के बंधन । लिगेमेण्ट्स ऑफ दी ब्लैडर (Ligaments of the bladder.)-इं० ।

अर्बियानुस arbiyánus-यू० बाबूनहे गावचश्म -फ़ा० । फ़र्त़ानियून-यू० । पार्थीनिअम (Parthenium), मैट्रिकेरिया Matricaria-लै० । म० अ० डॉ० ।

अर्बी āarbi-अ० सफ़ेद यव (White barley) । (२) सुल्त ।

अर्बु (वु)दः arbu(vu)dah-सं० पुं०, क्ली० }
अर्बुद arbuda-हिं० संज्ञा पुं० }

(१) गणित में नवें स्थान की संख्या । दश कोटि । दस करोड़ ।

(२) कद्रु का पुत्र, एक सर्प विशेष ।

(३) मेघ । बादल ।

(४) दो मास का गर्भ ।

(५)एक रोग जिसमें शरीरमें एकप्रकारकी गाँठ पड़ जाती है । इसमें पीड़ा तो नहीं होती, पर कभीकभी यह पक भी जातीहै । इसके कई भेद हैं जिनमें से मुख्य रक्तार्बुद और मांसार्बुद हैं । बतौरी । रसौली । (Tumour) सु० नि० ११ अ० । मा० नि० । दे० अब्बुर्द ।

(६) नेत्र वर्त्म गत रोग विशेष । यह मांस के पिंड के समान एक गाँठदार सूजन है जो वर्त्म के भीतर होती है । यह रक्त तथा वातादि तीनों दोषों के कारण उत्पन्न होती है । इसमें दर्द नहीं होता, इसे अर्बुद कहते हैं । जब यह वर्त्म के बाहर होती है तब यह चलायमान और विषम आकृति वाली होती है । जैसे—

वर्त्मान्तर्मांसपिण्डाभः श्वयथुर्ग्रथितोऽरुजः ।
सास्रैःस्यादर्बुदो दोषैर्विषमो बाह्यतश्चलः ॥
वा० उ० अ० ८ ।

(७) अस्थि का उभरा हुआ भाग । (Protuberance.)

(८) रक्त के प्रकोप से तालु के बीच में पद्म के आकार के समान जो सूजन होती है उसे "अर्बुद" कहते हैं । वा० अ० सं० अ० २१ ।

अर्बुदम् arbudam-सं० क्ली० (१) (Tubercle) उभार । (२) अब्बुर्द फोड़ा विशेष (Tumour)

अर्बुद फलम् arbuda.phalam-सं० क्ली० मलूक का फल । यह एक भारतीय वृक्ष है ।

अर्बुदहरो रसः arbuda-haro-rasah-सं० पुं० दे०-अब्बुर्द हरो रसः ।

अर्बुदान्तर सरिका arbudántara-saritká-सं० स्त्री० (Intertubercular.)

अर्बूतानून arbútánúna-न० एक बूटी है जो पृथ्वी पर फैलती है । यह जंगली तुलसी के समान किन्तु उससे छोटी और नर, मादा दो प्रकार की होती है ।

अर्बोर कॉन्सिलिओरम् arbor concilliorum, *Rum.*-लै० पीपल, अश्वत्थ । (Ficus religiosa.) फा० इं० ३ भा० ।

अर्बोर टॉक्सिकेरिया फेमिना arbor toxicaria femina & *Mas*-लै० सापसुण्डी -मह० । फा० इं० ३ भा० ।

अर्बोर वाइटी arbor vitæ-इं० (Thuya occidentalis)-लै० सन्द्रच ।

अब्युटीन arbutin-इं० रीछदाख सत्व, भल्लूक द्राक्षासार ।

मात्रा—५ से ३० ग्रेन । देखो—भल्लूक (रीछ) द्राक्षा (Arctostaphylos uvaursi) पी० वी० एम० ।

अर्ब्री अवांग्लेएट arbre aveuglant-फ्रां० गेरिश्रा, गङ्गुवा, अगुरु-बं० । Blinding tree, Tiger's milk tree (Excæcaria agallocha, Linn.) फा० इं० ३ भा० ।

अर्ब्री अ-सोई arbre a soie-फ्रां० श्राक, मदार । Gigantic swallow wort (Calotropis gigantea, R. Br.) फा० इं० २ भा० ।

अर्ब्री वची arbre vache-फ्रां० तगर । Ceylon jasmine (Tabernæ montana coronaria Br.) फा० इं० २ भा० ।

अर्ब्रोस डी' एन्सेन्स arbres d' encens -फ्रां० लुबान, कुन्दर । Frankincense tree (Boswellia.) फा० इं० १ भा० ।

अर्भः,-कः arbhah,-kah-सं० पुं०
अर्भ,-क arbha,-ka-हिं० संज्ञा पुं०
(१) बालक, शिशु, पुत्र । (A child, a pupil) रा० नि० व० १८ । (२) कुश (Poa cynosuroides.) मे० कत्रिकं । (३) पक्षजात शिशु, १५ दिवस का पैदा हुआ बच्चा । रा० नि० व० १८ ।

हिं०वि० (१) मलिन । धुँधली । (२) शिशिर ऋतु । (३) साग पात ।

अर्भः arbhah-सं० पुं० बाल सर्प । साँप का बच्चा । अथर्व० । सू० २६ । ३ । का० ७ ।

अर्भकम् arbhakam-सं० क्लीं० छोटा विषैला काँटा या विष । अथर्व० । सू० ५६ । ६ । का० ७ ।

अर्भा arbhá-सं० स्त्री० गुग्गुल । (Burseraceæ) "अर्भाचूर्ण सहयुतम् ।" प्रयोगा० भग्नचि० ।

अर्म arama हिं० संज्ञा पुं० [सं०] आँख का एक रोग । टेंटर । ढेंढर ।

अर्मह् āarmah-अ० जंगली चूहा । (A wild rat.)

अर्म āarm-अ० मत्स्य भेद । (A kind of fish.)

अर्मज़ āarmaz-अ० हरी काई जो जल के ऊपर आजाती है (Green moss.) । (२) हब्बुलग़ार । (३) जंगली बेर । (४) छोटे पीलू का वृक्ष ।

अर्मज़ान āarmazána-अ० (१) हिन्दुकूकी । (२) बज़्रुल् अक़्राद् ।

अर्मणः armanah-सं० पुं० द्रोणपरिमाण (=३२ सेर) । प० प्र० १ ख० । च० द० अ० सा० चि० कुटजावलेह ।

अर्मद armada-अ० रम्द अर्थात् आँख दुखने का रोगी, वह व्यक्ति जिसके नेत्र दुखते हों (आँख आई हो) । अभिष्यंदी । ऑफ्थैल्मिएक (Ophthalmiac.)-इं० ।

अर्मनी armaní-हिं० संज्ञा पुं० दे०— अरमनी ।

अर्मनीन armanína-यू० एक बूटी है जो प्रतिवर्ष उगती और बाग़ी व वन्य दो प्रकार की होती है । इसमें बाग़ी के पत्र झाऊ पत्र सदृश होते हैं तथा जंगली अप्रयुज्य है ।

अर्मल armal-अ० बे तोशा, कुँवारा पुरुष । (Bachelor.)

अर्मा āarmá-रक्त श्याम सर्प । (A red black serpent.)

अर्माक armáka-कदू की बेल का नाम अथवा केवड़ा वृक्ष की छाल ।

अ (.इ) र्माज़ āa-āi-rmáza-अ० काई । (Moss.)

अर्मात armáta-यू० केवड़ा या गुले केवड़ा ।

अर्मानियाँ armániyán-यू० लाजवर्द । See-Lájavard.

अर्मानूस armánúsa-सिरि० अजवाइन, ख़ुरासानी । (Hyocyamus.)

अर्माल armála
अर्मालक armálaka
एक वृक्ष की छाल जो वल्क के समान तथा सुगन्धित होता है ।

अर्मीना armíná–अ०, यू० नौशादर। Sal-ammoniac (Ammoniae hydrochloras.) स० फा० इं०।

अर्मीनाक़न armínáqan–यू० ज़र्दालू, एक फल है जो पीतवर्ण का और गोल व मधुराम्लता युक्त होता है। ख़ूबानी इसका एक भेद है। यह शीत प्रदेशों में अधिक होता है।

अर्मूनिया armúniyá–यू० अक़ाक़िया। See-Akákiá.

अर्म्मन् armman–सं० क्ली० नेत्र रोग विशेष यह पांच प्रकार का होता है—

(१) प्रस्तार्य्यर्म्म, (२) शुक्लार्म्म, (३) रक्तार्म्म, (४) मांसार्म्म और (५) स्नाय्वर्म्म। इनके लक्षण यथा स्थान देखो—।

अर्य्यमा aryyamá–सं० पुं०, हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) अर्क वृक्ष, आक (Calotropis gigantea.)। रा० नि० व० १०। (२) सूर्य। She Sum)।

अर्र áarr–अ० (१) कण्डु, खज्, खुजली। (The-itch)। (२) जड़ से बाल उखाड़ना।

अर्रक़ araqq–अ० रक़ीक़तर अर्थात् बहुत पतली चीज़।

अर्रा arrá–हिं० संज्ञा पुं० [?] एक जंगली पेड़ जो अर्जुनवृक्ष से मिलता जुलता होता है। इसकी लकड़ी बहुत मज़बूत होती है छत पाटने आदि के काम में आती है।

(२) अरहर। आढकी।

अरुज aruza }
उर्ज़ uaza } –अ० तण्डुल, चावल। Rice (Oryza sativa, *Linn.*) स० फा० इं०।

अर्हीनाल arrhenal–इं० आर्सिनिल Arsynil (Disodium methyl arsenate.) यह काकोडाइल का एक नवीन यौगिक है। देखो—संखिया।

अ(र)लू ar(ra)lu–सिं० पीली हड़, हर्रा, हरीतकी फल (Terminalia chebula, *Retz.*) स० फा० इं०।

अर्लू arlú–पं० कवैटा, किगनी, अगरागल। (Mimosa rubicaulis, *Lam.*) मेमो०। फा० इं० ३ भा०। (२) अरलू।

अर्व áarva–अ० कम्पन लगकर ज्वर चढ़ना, जाड़े से ज्वर आना, शीत पूर्व ज्वर, जूड़ी ज्वर।

अर्वती arvatí–सं० स्त्री० अज्ञात ओषधि अथर्व। सू० ४। २१। का० १०।

अर्वन् arvan–सं० पुं० गतिशील, चलनेवाला अथर्व०।

अर्वाक arváka–अव्य० [सं०] (१) पीछे, इधर।

अर्वाक स्रोता arváka-srotá–हिं० संज्ञा पुं० जिसके वीर्यपात हुआ हो। ऊर्द्धरेता का उलटा।

अर्वाह् arváh–(ब० व०), रूह् (ए० व०) अ० ये तीन हैं—(१) रूह् हैवानी (प्राणी शक्ति) जो हृदय में उद्भूत होती है और धमनियों के द्वारा सम्पूर्ण अवयवों में विभाजित होकर उनको प्राण शक्ति प्रदान करती है, (२) रूह् नफ़्सानी (मानसिक शक्ति) जो मस्तिष्क में संजनित होती है और बोध तन्तुओं (नाड़ियों) द्वारा शरीर में फैलकर उनको बोध व गति प्रदान करती है, (३) रूह् तबई (प्राकृतिक शक्ति) जो यकृत में पैदा होती है और शिराओं द्वारा अवयवों में वितरित होकर उनको पाचन शक्ति एवं पोषण प्रदान करती है। रूह् के लक्षण एवम् वास्तविक के लिए देखो—रूह्।

स्पिरिट्स Sqirits, सोल्स Souls, न्यूमाज़ Pneumas। ये मुख्य पारिभाषिक शब्द हैं जो अर्वाह के उपर्युक्त पर्याय हैं।

अर्वाह् कुञ्जद arváh-kunjada–अज्ञात।

अर्व्वणः arvvanah }
अर्व्वा,-न् arvvá,-n } सं० पुं० अश्व घोड़ा। (A horse.) भा० पू०।

अर्व्वती arvvatí-सं० स्त्री० वड़वा। कुत्सित दासी। मे० तत्रिक।

अर्व्वा,-न् arvvá,-n-सं० पुं० अश्व (A horse.)। भा० पू०।

अर्व्वुदः arvvudah } -सं० पुं० क्ली०
अर्बुदः arbudah } (१) पुरुष; (२) दशकोटि परिमाण। मे० दत्रिकं। (३) मांसकीलकाकार रोग विशेष। देखो—अर्बुद। रसौली, बतौरी (ड़ी), अर्बु (बु) द-हिं०। ट्यूमर (Tumour.)-इं०। जदरह्, सल्अह् वर्म-अ०। आन-व०।

आयुर्वेद के मत से अर्बुद एक प्रकार की मांस की गाँठ है जो वातादि दोषों के कुपित होकर मांस और रक्त को दूषित करने से शरीर के किसी भाग में हो जाया करता है। यह गोल स्थिर, मंद, पीड़ायुक्त, अति स्थूल (यह ग्रंथि से बड़ी होती है), विस्तृत मूलयुक्त, बहुत काल में बढ़ने वाली और नहीं पकने वाली होती है। वातज, पित्तज, कफज, रक्तज, मांसज और मेदज भेद से ये छः प्रकार के होते हैं। इनके लक्षण सदा ग्रंथि के समान होते हैं। (किसी किसी ने द्विरर्बुद और अध्यर्बुद इन दोनों को सम्मिलित कर इसके आठ भेद माने हैं)।

गात्र प्रदेशे क्वचिदेव दोषाः
संमूर्च्छिता मांसमभि प्रदूष्य।
वृत्तं स्थिरं मन्दरुजं महान्त
मनल्पमूलं चिरवृद्ध्यपाकम्॥
कुर्वन्ति मांसोच्छ्रयमत्यगाधं
तदर्बुदं शास्त्रविदो वदन्ति।
वातेन पित्तेन कफेन चापि
रक्तेन मांसेन च मेदसा च॥
तज्जायते तस्य च लक्षणानि
ग्रंथेः समानानि सदाभवन्ति॥
मा० नि०। सु० नि० ११ अ०।

अर्बुद के उपर्युक्त भेदों में से रक्तार्बुद और मांसार्बुद मुख्य हैं। इनमेंसे प्रत्येकका यहाँ पृथक् पृथक् वर्णन किया जाता है।

रक्तार्बुद

दोषः प्रदुष्टो रुधिरं शिरास्तु
संपीड्य संकोच्य गतस्तु पाकम्।
सास्रावमुन्नह्यति मांसपिण्डं
मांसाङ्कुरैराचितमाशु वृद्धिम्॥
स्रवत्यजस्रं रुधिरं प्रदुष्ट
मसाध्यमेतद्रुधिरात्मकं स्यात्।
रक्तक्षयोपद्रव पीडितत्वात्
पाण्डुर्भवेदर्बुद पीडितस्तु॥
मा० नि०। सु० नि० ११ अ०।

अर्थ—दूषित हुआ दोष रुधिर की शिराओं को संकुचित कर उनको इकट्ठा कर मांस के गोले को प्रकट कर देता है। वह कुछ पकनेवाला तथा कुछ बढ़ने वाले मांस के अंकुरों से व्याप्त एवं शीघ्र बढ़ने वाला होता है। उसमें से सदा रुधिर बहा करता है यह रक्तार्बुद असाध्य है। यह रक्तार्बुद रोगी रक्तक्षय के उपद्रवों से पीड़ित होने के कारण पीला हो जाता है। ये रक्तार्बुद के लक्षण हैं।

मांसार्बुद (Cancer)

मुष्टि प्रहारादिभिरर्दितेऽङ्गे
मांसं प्रदुष्टं प्रकरोति शोफम्।
अवेदनं स्निग्धमनन्यवर्ण
मपाकमश्मोपममप्रचाल्यम्॥
प्रदुष्ट मांसस्य नरस्यबाढ
मेतद्भवेन्मांस परायणस्य।
मांसार्बुदं त्वेतदसाध्यमुक्तं
साध्येष्वपीमानि तु वर्जयेच्च॥
मा० नि०। सु० नि० ११ अ०।

अर्थ—मुक्का वा घूँसा आदि के लगने से शरीर में जो पीड़ा होती है उस पीड़ा से मांस दूषित होकर सूजन को उत्पन्न करता है। यह सूजन पीड़ा रहित, चिकनी देह के रंग के समान होती है, इसका पाक नहीं होता और यह पत्थर के समान स्थिर होती है। जिस मनुष्य का मांस

दूषित हो जाता है अथवा जो सदैव मांस खाते हैं उनको यह अर्बुद रोग उत्पन्न होता है। यह मांसार्बुद असाध्य है। साध्य अर्बुदों में भी निम्नलिखित अर्बुद त्याज्य हैं। यथा—

संप्रस्रुतं मर्म्मणि यच्च जातं
स्रोतः सुवायच्च भवेदचाल्यम्।
यज्जायतेऽन्यत् खलु पूर्वजाते
ज्ञेयं तदध्यर्बुदमर्बुदज्ञैः॥
यद् द्वन्द्वजातं युगपत् क्रमाद्वा
द्विरर्बुदं तच्च भवेदसाध्यम्।
मा० नि०। सु० नि० ११ अ०।

अर्थ—स्रावयुक्त, मर्मस्थान तथा नासिका आदि छिद्रों में उत्पन्न होने वाले एवं अचल अर्बुद असाध्य होते हैं (प्रथम जिस स्थान में अर्बुद उत्पन्न हुआ हो उसी के ऊपर जो एक दूसरा अर्बुद उत्पन्न हो जाता है उसको अध्यर्बुद कहते हैं। एक साथ दो अर्बुद अथवा जो क्रमशः एक के पश्चात् दूसरा अर्बुद उत्पन्न हो जाता है उसको द्विरर्बुद कहते हैं, यह असाध्य है)।

अर्बुदों के न पकने के कारण

न पाकमायान्ति कफाधिकत्वान्मेदोऽधिकत्वाच्च विशेषतस्तु।
दोष स्थिरत्वाद् ग्रथनाच्चतेषां सर्वार्बुदान्येव निसर्गतस्तु॥
मा० नि०। सु० नि० ११ अ०।

अर्थ—कफ की अधिकता से वा विशेषकर मेद की अधिकता से एवं दोषों की स्थिरता से अथवा दोषों के ग्रंथि रूप होने से सब प्रकार के अर्बुद स्वभाव से से ही नहीं पकते।

नोट—यूनानी वैद्यक के मतानुसार अर्बुद के लक्षण आदि विषयक पूर्ण विवेचन के लिए अरबी शब्द सल्अह संज्ञा के अन्तर्गत देखें। मेदोर्बुद को अंगरेजी में फैटी ट्यूमर (Fatty tumour) और अरबी में सल्अह् दुहूनिय्यह् वा शह्मिय्यह् कहते हैं।

आयुर्वेदीय चिकित्सा के लिए इनके अपने अपने भेदों के अन्तर्गत अवलोकन करें।

अव्वुर्द हरो रसः arvvuda-haro-rasah—सं० पुं० पारा (रस सिंदूर) को चौलाई, विषखपरा, पान, घीकुआर, खिरेटी और गोमूत्र की भावना देकर पान में लपेट कर उसके ऊपर मिट्टी का २ अंगुल मोटा लेप करके सुखाकर एक लघु पुट दें। इसके सेवन से अर्बुद नष्ट होता है। र० र० स० २४ अ०।

अव्वुर्दाकारः arvvudákárah—सं० पुं० बहुवार वृक्ष, लसोरा। चालिता गाछ—बं०। (Cordia myxa. or C. Latifolia.) वै० निघ०।

अव्वुर्दाद्रिजः arvvudádrijah—सं० पुं० मेषशृंगी, मेढ़ासिंगी। मेढ़ाशिङ्गी—बं०। मुरदारसिंग—मह०। (Asclepias geminata) वै० निघ०।

अव्वुर्दान्तरिक रेखा arvvudántarik-rekhá—सं० स्त्री० (Intertubercular plane.) वह पड़ी रेखा जो नितंबास्थियों के ऊपर के किनारों (जघन चूड़ा) के उभारों में से गुजरती है।

अव्वुर्दान्तरिका रेखा arvvudántariká-rekhá—सं० स्त्री० (Intertubercular plane.)

अव्वुरम् arvvúram—सं० क्ली० आढुल्य नामक क्षुप। तड़वड़—काश०। तड़वड़—मह०। वै० निघ०२ भा० संग्रहणी० चि० तालीशादिचूर्ण।

अर्शः (स्) arshah,-s—सं० क्लो० }
अर्श arsha—हिं० संज्ञा पुं० }
स्वनामाख्यात गुदरोग विशेष, एक रोग जिसमें वातादि दोषों के दूषित होने के कारण गुदा में अनेक प्रकार के मांस के अंकुर उग आते हैं जिनको अर्श अथवा बवासीर कहते हैं। ये नाक एवं नेत्रादि में भी उत्पन्न होते हैं। आयुर्वेद के अनुसार इनके निम्न भेद हैं—

(१) वातज, (२) पित्तज, (३) कफज, (४) सान्निपातिक, (५) रक्तज और (६) सहज। विस्तार के लिए देखिए—बवासीर।

पर्याय—दुर्नामकं (अ), दुर्नाम, गुदकील:, गुदाङ्कुर: (रा), अनामकं (शब्द र०), गुदकीलक:, गुदामय:, दुर्नामम्, दुर्नामा, दुर्नाम्नी सं०।

पायह्, बवासीर (मख़्ज़न)-उ०। हिमोरी. दूम, अमूरूदिम, एमोरीदूस-यू०। बवासीर (ब० व०), बासूर (ए० व०), अमोरीदूस -अ०। पाइल (Pile) (ए० व०), पाइल्ज़ (Piles) (ब० व०); हीमोराइड (Hæmorrhoid) (ए० व०), हीमोरॉइड्स् (Hæmorrhoids) (ब० व०)-इं०। हीमोराइडीज (Hæmorrhoides) -फ्रां०। हीमोरॉइडेन (Hœmorrhoiden) -जर०।

अर्श āarsh-अ० ललाट, छत, तालू, पैलेटबोन्ज़ (Palate bones.)-इं०। हिं० संज्ञा पुं० (१) आकाश (२) स्वर्ग।

अर्शकर्म arsha-karm-सं० क्लो० भिलावां। (Semicarpus Onacardium.)

अर्श कुठारः arsha-kuthárah-सं० पुं० वरनाग अर्थात् ६४ पुटित सीसा भस्म, अभ्रक सत्व, ताम्र और लोह भस्म प्रत्येक समान भाग लेकर थोड़ी थोड़ी हरताल को चिटकी दे देकर लोह की कड़ाई में पिघलाएँ और लोहको कड़छी से चलाते रहें। जब हरताल की दुगनी भूकी खप जाए तब सब अलग निकाल कर पारा मिला पिष्टी बनाएँ और उस पिष्ठी को भिलावें के वृक्ष की जड़ के पास १ महीने तक गाड़ रक्खें। फिर निकाल कर गाय के दूध में डालें और इसमें पातालयंत्र से निकाला हुआ भिलावे का तैल एक चिकनी कड़ाही में डालकर उसमें पिष्ठी डाल कर एक सेर तेल जारित करें। फिर भिलावें के तेल में गन्धक को भावित करके उस गन्धक की पुट देकर उपरोक्त पिष्टी के बराबर पारा लेकर कट सरैया के रस में कई भावना देकर धूप में रख भस्म कर डालें। फिर उस भस्म को उपरोक्त पिष्ठी भस्म में मिलाएँ। फिर क्रम से बन सूरन, निगुंडी, मुरेठी, गोखुरू, हड़ जोर, तिधारी और चित्रक इनके क्वाथ से भावना दें फिर भंगरे के रस की भावना दे सुखाकर रखलें।

मात्रा—३ रत्ती।

गुण—अर्श, मुख आँख के मस्से, प्लीहा, संग्रहणी, गुल्म, यकृत, मन्दाग्नि और कुष्ट को नष्ट करता है।

अर्श कुठार रसः arsha-kuthár-rasah -सं० पुं० शुद्ध पारद ४ तो०, गन्धक ८ पल, ताम्रभस्म, लोहभस्म, प्रत्येक १२ तो० त्रिकुटा, कलिहारी, दन्ती, पीलू, चित्रक प्रत्येक ८ तो०, जवाखार, भुना सुहागा प्रत्येक ५-५ पल, सेंधानमक ५ पल, गोमूत्र ३२ पल, थूहर का दूध ३२ पल, सब एकत्र कर पात्र में रख मन्दाग्नि से पचाएँ। जब गाढ़ा हो जाए तो २ माशे की गोलियां बनाएँ।

गुण—एक गोली नित्य सेवन करने से यह अर्श कुठार रस बवासीर को दूर करदेता है। वृ० रसरा० सु० अर्श० चि०।

अर्शद arshad-अ० सोनामक्खी, तारामक्खी। Iron pyrites (Ferri Sulphuretum.)

अर्शन-कर्म्म arshan-karmm-सं० क्ली०, व्रणों के खुरचने की विधि।

अर्श नाशक योग arsha-náshakayoga -सं० क्ली० पुं० जवासा, बेल की छाल, अजवाइन और सोंठ इनमें से एक एक के साथ भी पाठे के क्वाथ का पान करने से अर्श की पीड़ा नष्ट होती है। च० सं० अ० चि० १४।

अर्शपातनम् arshapátanam-सं० क्ली० कंटकरञ्ज, हड़, नागरमोथा, चिरायता, काला कुड़ा की छाल, सूरन, चित्रक, सेंधानमक, देवदाली (बन्दाल) तुल्य भाग ले चूर्ण प्रस्तुत करें।

मात्रा—१० मा०। अनुपान-तक्र।

गुण—इसको एक मास पर्यन्त भक्षण करने से बवासीर के मस्से गिर पड़ते हैं। वंगसे० सं० अर्श चि०।

अर्श में तक्र प्रयोग arsha-men-takra-prayoga-सं० पुं० चीते की जड़ की छाल को पीसकर घड़े में लेप करके उसमें दही जमा दें, उस दही को या उससे प्रस्तुत तक्र को पीने से अर्श का नाश होता है। च० सं० चि० अ० १४।

अर्शम् arsham-सं० क्ली० अर्श रोग, बवासीर। (The piles or hoemorrhoids.) श० र०।

अर्श वर्त्म arsha-vartma-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की बवासीर जिसमें गुदा के किनारे ककड़ी के बीज के समान चिकिनी और किंचित् पीड़ायुक्त फुन्सियाँ होती हैं।

अर्श सूदनः arsha-súdanah-सं० पुं० शूरण, सूरन। तुल-वं०। (Amorphophallus Campanulatus, *Blume*.)

अर्शसः arshasah-सं० त्रि० अर्शयुक्त, अर्शरोगी।

अर्शहर arsha-hara-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (Amorphophallus Campanulatus, *Blume*.) सूरन। ओल। ज़मींकंद। देखो-शूरण।

अर्शा arshá-अ० देखो—अरशा।

अर्शी arshí-सं० त्रि० अर्शयुक्त, अर्शरोगी। श० र०।

अर्शोऽरि रसः arshorírasah-सं० पुं० पारा १ भाग, अभ्रक भस्म २ भाग, ताम्रभस्म ३ भाग, लोहभस्म ४ भा० और गन्धक ५ भाग चमार दूधी (धवल कुसुम वल्ली) के रस में लोह की कड़ाही में १ दिन पकाएँ। ठंडी होने पर १ पहर वत्सनाग के स्वरस अथवा क्वाथसे भावना दें। फिर सफेद पुनर्नवा, पुनर्नवा, त्रिकुटा, त्रिफला इनके रस अथवा क्वाथ से भावना दें।

मात्रा—३ रत्ती। इसके सेवन से बवासीर के सभी उपद्रव नष्ट होते हैं। रस० यो० सा०।

अर्शोघ्न arshoghna-हिं० संज्ञा पुं०
अर्शोघ्नः arshoghnah-सं० पुं०
(१) शूरण, सूरन, ओल, ज़मीकन्द। (Amorphophallus Campanulatus, *Blume*.) रा० नि० व० ७। (२) भल्लातक, भिलावाँ (Semicarpus anacardium.)। (३) सर्जिक्षार, स्वर्जिकाक्षार। (४) तेजबल (Zanthoxylum alatum.)। (५) श्वेत सर्षप (Brassica juncea.)। (६) कटु शूरण। वै० निघ०। (७) अर्श नाशक द्रव्य मात्र।

अर्शोघ्न महाकषायः arshoghna-mahákasháyah-सं० पुं० कूड़े की छाल, बेल, चित्रक, सोंठ, अतीस, हड़, धमासा, दारुहल्दी, चव्य, वच, इनका कषाय बनाकर पीने से अर्श दूर होता है। च० सं०।

अर्शोघ्न वटकः arshoghna vatakah-सं० पुं० पीपल, पीपलामूल, ज़मीकंद, मिर्च, चित्रक, कटेली, गुड़ल के फूल प्रत्येक १-१ पल, इनके कल्क को हाथी और बकरी के मूत्र में मिट्टी के बर्तन में पकाएँ। जब मूत्र जल जाए, तब इसका चूर्ण करके इसमें सैंधव, सोंचर, सांभर नमक १-१ पल मिलाकर १-१ कर्ष प्रमाण के वटक बनाएँ। पथ्य—तक्र व घृत का भोजन करें। १ मास के प्रयोग से अर्श नष्ट हो जाता है।

अर्शोघ्न वर्गः arshoghna vargah-सं० पुं० कुटज, बिल्व, चित्रक, नागर, अतिविषा, अभया, दुरालभा, दारुहरिद्रा, वच और चव्य ये दस वस्तु अर्शोघ्न प्रभाव युक्त है। च० सू० ४। विशेष देखो-बवासीर।

अर्शोघ्न वल्कला arshoghna-valkalá-सं० स्त्री० तेजबल। (Zanthoxylum alatum.) वै० निघ०।

अर्शोघ्नी arshoghní-सं० स्त्री० (१) तालमूली, काली मूसली (Curculigo orchides.)। रत्ना०। मे० नत्रिक। (२) भल्लातक, भिलावाँ (Semicarpus anacardium.)। वै० निघ०।

अर्शोजः arshojah-सं० पुं० भगन्दर रोग। (See-Bhagandara)

अर्शो दावानलो रसः arṣhodávánalo-rasah–सं० पु० मण्डूर को तेज़ अग्नि में तपा तपा कर त्रिफला के क्वाथ में कई बार बुझाएँ फिर घीकुआर के रस में भावना देते हुए २१ पुट दें। फिर गन्धक और पारे की कज्जली और उतनी ही लोहभस्म, त्रिकुटा, त्रिफला, भांगरा, चीता और मोचरस मिलाकर गिलोय के क्वाथ की भावना दें तो यह सिद्ध होता है। इसे चार मासे ज़मीकन्द के चूर्ण और हींग के साथ खाने से अथवा भिलावें के तेल और शहद के साथ खाने से हर प्रकारके बवासीर नष्ट होते हैं। रस० यो० सा०।

अर्शोयन्त्रम् arṣhoyantram–सं० क्लीं० अर्शोयन्त्र (बवासीर का यन्त्र) गौ के स्तनों के सदृश चार अंगुल लम्बा और पाँच अंगुल गोलाई में होता है। स्त्रियों के लिए इसी यन्त्र की गोलाई छः अंगुल की होती है क्योंकि उनकी गुदा स्वाभाविक ही बड़ी होती है। व्याधि के देखने के लिए दोनों ओर दो छिद्र वाला यंत्र होता है तथा शस्त्र और क्षारादि प्रयोग के निमित्त एक छिद्र वाला यंत्र होता है। इस यन्त्रके बीचका भाग तीन अंगुल का और परिधि अंगूठे के समान होती है। इस यन्त्र के ऊपर आध आध अंगुल ऊँची एक कर्णिका होती है जिससे यन्त्र बहुत गहराईमें नहीं जा सकता है। अर्श के पीडन के निमित्त एक और प्रकारका यन्त्र होता है। उसे शमी कहते हैं। यह भी ऐसा ही होता है। किंतु छिद्र रहित होता है। वा० सू० २५ अ०। अत्रि०। जयद० ५३ अ०।

अर्शोरिमण्डूरम् arṣhorimandúram–सं० पु० पुराने मण्डूर को लेकर गोमूत्र में पकाएँ जिससे वह चूर्ण सा होजाए। फिर इसमें त्रिकुटा त्रिफला और आधी मिश्री मिलाकर ३ दिन तक धरा रहने दें, पश्चात् रोगी को दें तो गुदा द्वारा आने वाला रुधिर बन्द होता है।

पथ्य—यूष, चावल, मसूर एवं घी प्रसंग निषिद्ध है। वृ० नि० र० अर्श चि०।

अर्शोवर्त्मन् arṣho-vartman–सं० क्लीं० नेत्रवर्त्मगत रोग विशेष।

लक्षण—ककड़ी खीरा के बीजों के समान मन्द पीड़ा वाली चिकनी और कठोर फुन्सी जो नेत्रवर्त्म (नेत्र के पलक) में उत्पन्न हो उसे "अर्शोवर्त्म" कहते हैं। यह सन्निपातज होती है मा० नि०।

अर्शोहररसः arṣhohar-rasah–सं० पु० यह रस अर्श के लिए हितकारक है। योग इस प्रकार है—पारद, वैक्रान्त, शुद्ध अभ्रक भस्म, कान्तलौह भस्म, गंधक शुद्ध, सबके तुल्य भाग को ले अनार स्वरस से भली प्रकार मर्दित कर रख छोड़ें।

मात्रा व गुण—इसमें से १ मासा खाने से अर्श नष्ट होता है। रस० र०।

अर्शोहर रसः arṣhohara-rasah–सं० पु० गन्धक, चाँदी, और ताम्बा एक एक भाग लेकर बारीक पीस लें। फिर तीनों के बराबर अभ्रक भस्म और गन्धक से $\frac{1}{5}$ भाग लोहभस्म और $\frac{1}{16}$ भाग बच्छनाग और गन्धक से द्विगुण पारद। सबको मिला जम्भीर के रस में घोटकर मिट्टी के बर्तन में रखकर त्रिफला के क्वाथ की भावना दें। फिर क्रम से दशमूल और शतावरी के क्वाथ में पकाएँ।

मात्रा—३ रत्ती गोली रूप में।

गुण—यह अर्श, गुदा रोग और शूल को नष्ट करता है। रस० यो० सा०।

अर्शोहरलेप arṣharalep–सं० क्लीं० हाथी की लीद, घी, राल, पारा, हल्दी इन्हें थूहर के दूध में पीस कर लेप करने से अर्श नष्ट होता है। च० सं०।

अर्शोहितः arṣhohitah–सं० पु० भल्लातक वृक्ष, भिलावाँ। (Semicarpus anacardium.) त्रिका०।

अर्षणी arshaṇí-सं० स्त्री० (१) गति शील कीट विशेष। अथर्व०। का० ६। १३। ४२। (२) तीव्र पीड़ाजनक रोग। अथर्व०। सू० ८। १३। का० ६।

अ़स्ंह् āarṣah-अ० सहन,मैदान,दूरी, अन्तर। असात, अरास (ब० व०)।

अ़र्स āars-अ० (A bandicote rat.) यर्द्गम (घूँस)।

अ़र्सफ़ āarsafa-कमाफ़ीतूस, कुकरौंधा। (Blumea densiflora, *D. C.*)

अर्सम् arsam-सं० क्ली० निर्बल। अथर्व०। सू० ५६। ३। का० ७।

अर्सह arsah-उ० (Solanum pubescens.) Night shadedowny.-इं०। इं० हैं० गा०।

अ़र्सह् āarsah-अ० नकुल, नेवला। Mongoose (Vivera mungo.)

अर्सातून arsátúna } -अ० मैथुनेच्छा बिना इन्द्री
फ़रीस्मूस farísmúsa }
आक़ूना āáqúná }
का सदैव प्रहर्षित रहना। एक रोग है जिसमें इन्द्री (शिश्न) हर समय उत्तेजित रहती है, किन्तु काम या मैथुनेच्छा नहीं होती। देखो—फ़रीस्मूस। प्रायापिज़्म (Priapism.) इं०

अर्सानीक़ून arsániqúna-अ०, यू० हड़ताल, हरिताल। Yellow orpiment (Arsenicum tersulphuretum.)। स० फा० इं०।

अर्सैनाइट ऑफ़ कॉपर arsenite of copper-इं० ताम्र मल्लेत। (Cuprii arsenis.) देखो—संखिया

अर्सैनातेगा arsená-tegá-मयलू० कदम्ब। (Nauclea kadamba.)

अर्सैनिआई आयोडाइडम् arsenii iodidum -ले० मल्लनैलिद। (Arsenious lodide.) देखो—संखिया।

अर्ह arha-हिं० [सं०] (१) पूज्य। (२) योग्य। उपयुक्त।

नोट—इस शब्द का प्रयोग अधिकतर यौगिक शब्द बनाने में होता है। जैसे पूजार्ह।

अर्हम् arham-सं० क्ली० सुवर्ण, सोना। Gold (Aurum.) वै निघ०।

अर्हा arhá-सं० स्त्री० त्रायमाणलता। (Delphinium zalil, *Aitch.*) वै० निघ०।

अ़र्हा़ arháa-अ० (ब० व०), रहा (ए० व०) चक्की, तिब्बकी परिभाषा में डाढ़ें; क्योंकि आहार चर्वण में यह चक्की का काम देता है। मोलर्ज़ (Molars.)-इं०।

अर्हियोल arheol--इं० देखो सैण्टेलोल (Santalol.)

अलम् (**कम्**) alam,--kam-सं० क्ली० }
अल ala--हिं० संज्ञा पुं० }
(१) हरिताल, हड़ताल। Yellow orpiment (Arsenicum tersulphuretum.) रा० नि० व० १३। सि० यो० कास० चि० मनःशिलादि धूमपानवृन्द। "मनःशिलाले मरिच" इति। (२) वृश्चिक पुच्छ कण्टक, बिच्छू का डंक। हे० च०। (३) कक्कोल, शीतलचीनी। (Cubeb.) वै० निघ० २ भा० वा० व्या० प्रत्यष्ठीला० चि०। (४) भंगीयुक्त केश। (५) विष। ज़हर।

अल ala-सं० (१) सफ़ेद मदार (Calotropis gigantea, the white var. of--)।--मह० (२) आदी, अदरक Zingiber officinalis, *Roxb.* (Fresh root of--Green ginger.)।--सिं० (३) कन्द (Tuber.)।--ता० (४) वट, बरगद। (Ficus Bengalensis.)

अलकः alakah--सं० पुं० (१) विष कुक्कुर, पागल कुत्ता,--हिं०। पागल कुकुर--बं०। मैड डाग (Mad dog)--इं०। (२) चूर्ण कुन्तल।

अ़लक़ह् āalaqah--अ० (१) तासीकुन या सिम्र। (२) नुत्फ़ा के बाद की अवस्था, ख़ून की फटकी, जमा हुआ शोणित। (Clotted blood).

अलक āalak--अ० (ए० व०) उलूक (ब० व०), गोंद, निर्यास। (Gum or resin.)

अलक़ āalaq--अ० (१) जलायुका, जलौका, जोंक। Leech (Hirudo.) स० फा० इं०। म० ज०। (२) जमा हुआ, बँधा हुआ या गाढ़ा रक्त।

अलक alaka--हिं० संज्ञा पुं० [सं०] मस्तक के इधर उधर लटकते हुए मरोड़दार बाल। बाल। केश। लटा। छल्लेदार बाल। घूँघर वाले बाल। यौ० अलकावलि।

अलकतरा alakatará--हिं० संज्ञा पुं० [अ०] पत्थर के कोयले को आग पर गलाकर निकाला हुआ एक गाढ़ा पदार्थ। कोयले को बिना पानी दिए भभके पर चढ़ाकर जब गैस निकाल लेते हैं, तब उसमें दो प्रकार के पदार्थ रह जाते हैं—

एक पानी की तरह पतला, दूसरा गाढ़ा। वही गाढ़ा काला पदार्थ अलकतरा है जो रँगने के काम में आता है। यह कृमिनाशक है। अतः इससे रँगी हुई लकड़ी घुन और दीमक से बहुत दिनों तक बची रहती है। इससे कृमिनाशक ओषधियाँ जैसे—नेपथलीन, कारबोलिक, एसिड, फिनाइल आदि तैय्यार होती हैं। इससे कई प्रकार के रंग भी बनते हैं।

अलकप्रियः alaka-priyah-सं० पुं० (१) कृष्णभल्लातक, काला भिलावाँ-हिं०। कालभेला-बं०। बिबेला जटा-महा०। (Semecarpus anacardium.)। (२) बीजक वृक्ष, विजयसार। (Pterocarpus marsupium.) मद० व० ५।

अलक बग़दादी āalaka baghdádí-फ़ा० मस्तगी वृक्ष (Mastich tree.)। इं० हैं० गा०।

अलक़म alaqama-अ० इन्द्रायन का फल। (Citrullus colocynthes, fruit of-)

अलक़म āalaqama-अ० (१) कड़ुआ पौधा (A bitter plant.)। (२) इन्द्रायन (Citrullus colocynthes, *Schrad.*)। (३) क़साउल्‌हुम्मार, खिन्दाल। (Ecbellium elatarium.)

अलक़मह् āalaqamah-अ० फ़रासियून। See-Farásiyúna.

अलका alaká-सं० स्त्री०, हिं० संज्ञा स्त्री० (१) वसा, चर्बी। (Fat.) घं० निघ०। (२) आठ और दस वर्ष के बीच की लड़की।

अलकावलि alakávalí-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] केशों का समूह, बालों की लटें।

अलकाह्वयः alakáhvayah-सं० पुं० कटु, निम्ब। (The bitter nimb tree.) घं० निघ०।

अलक़िय्यह् āalakiyyah-अ० वह वस्तु जिसमें चिपचिपापन के साथ किसी भाँति कठोरता भी हो।

अलक़ी āalaqí-एक प्रसिद्ध पौधा है। (An unknown plant.)

अलकुर्रूमी āalakurrúmí-अ० मस्तगी। (Mastiche.)

अलकुल् अम्बात āalakul-ambáta-अ० बतम अथवा उसके समान एक वृक्ष का गोंद।

अलकुल् जाफ़ āalakul-jáfa-अ० रातीनज जाफ।

अलकुलब (बु)तम āalakul-butam-अ० बतम का गोंद।

अलकुल् याबिस āalakul-yábis-अ० रातीनज भेद। (A sort of resin.)

अलकुशी,-सी alakushí,-sí-बं० केवाँच,आत्मगुप्ता। (Mucuna pruriens, *D. C.*) फा० इं० १ भा०।

अलकुस्सनौबर āalakussanobar-अ० चीर की गोंद, सरल निर्यास, सनौबर की गोंद, गंधा बिरोज़ा। (Pinus longifolia, resin of-) स० फा० इं०।

अलक़ुलीस alqúlísa- यू॰ शहद, मधु । Honey (Mel.)

अलकंना टिङ्क्टोरिया alkanna tinctoria, *Tausch.*) ले॰ रतनजोत-हिं॰ । अलखना -अ॰ । (Alkanet.) फा॰ इं॰ २ भा॰ ।

अलकेयाबिस āalake-yábis-अ॰ रातीनज भेद । (A kind of resin.)

अलकेरूमी āalake-rúmí-अ॰, रूमी मस्तगी, मस्तिकी-अ॰, फ़ा॰ । धूनराज, गन्धिनी-सं॰ । (Mastiche.) ।

अलकाहॉल (Alco'hol)-इं॰ मद्यसार । देखो-ऐलकोहाल्

अलक्तः,-कः alaktah,-kah-सं॰ पुं॰, क्ली॰
अलक्त alakta-हिं॰ संज्ञा पुं॰
अलक्तक alaktaka-हिं॰ संज्ञा पु॰

(१) लाक्षा, लाख, लाही जो पेड़ों में लगती है । लपड़ा, आलता, लाहा, जौ, गाला-बं॰ । अलिता -मह॰ । अलतगे-कं॰ । (Lac, the red animal dye so called.)

पर्याय-राक्षा, यावः द्रुमामयः, रक्षा, अरक्तः, जतुकं, यावकः, अलक्तकः, रक्तः (शब्द र॰), पलङ्कषा, क्रिमिः, वरवर्णिनी ।

गुण—तिक्त, उष्ण, कफ वात रोगनाशक, रुचिकारक और व्रणघ्न । रा॰ नि॰ व॰ ६ । वर्ण्य, हिम, बल्य, स्निग्ध, लघु, कषेला, उष्ण नहीं, कफ, रक्त, हिक्का, कास, ज्वरनाशक, व्रण, उरःक्षत, विसर्प, कृमि, कुष्ठनाशक । अलक्तक अर्थात् लाक्षा विशेष रूप से व्यङ्गघ्न है । भा॰ पू॰ १ भा॰ । लाही रजोरोधक, रक्त पित्त तथा क्षय नाशक है और प्रदर तथा रक्तातिसार को शीघ्र लाभ पहुँचाती है । ख॰ अ॰ । विस्तार हेतु देखो-लाक्षा ।

(२) लाह का बना हुआ रंग जिसे स्त्रियाँ पैर में लगाती हैं । महावर ।

अलख़न्ना alkhanná-अ॰ रतनजोत । (Alkanet.) फा॰ इं॰ ।

अलख़्स alakhs-अ॰ जिसका ऊपरी पलक मोटा तथा कठिन हो ।

अलगणः alaganah-सं॰ पुं॰ नेत्ररोग विशेष । (An eye disease.) वै॰ निघ॰ ।

अलगर्दः alagardah-सं॰ पुं॰ सर्प विशेष, डेड़हा । जल ढोंड़ा, जल बोड़ा-बं॰ । (A serpent.)

अलगर्दा alagardá-सं॰ स्त्री॰ सविष जलौका, विषाक्त जोंक (A poisonous Leech.) । यह महापार्श्व, रोमयुक्त और कृष्णमुखी होती है । सु॰ सू॰ १३ अ॰ । देखो—जलायुका ।

अलगर्धः alagardhah-सं॰ पुं॰ अलगर्द । जल का साँप । (A serpent.) अम॰ ।

अलगी algœ-इं॰ चीनी घास, अगर-अगर । (Chinigrass.)

अलगी alagí-ते॰ मैदालकड़ी । (Litsœa Sebifera, *Pers.*)

अलग़ुराब alghuráb-फ़ा॰ अकाशबेल ।

अलगुसी alagusí-बं॰ अमरबेल, अकाशबेल (Cuscuta Reflexa.)

अलग़ौल alaghoul-अ॰ ख़ारेशुतुर, ख़ारेबुज़ -फ़ा॰ । (Alhagi Camelorum, *Tisch.*) फा॰ इं॰ १ भा॰ ।

अलङ्कार सुवर्णम् alankár-suvarṇam -सं॰ क्ली॰ शृंगीकनक । हारा॰ ।

अलङ्की alangí-ता॰ अंकोल । (Alangium Decapetalum.)

अलङ्गीन alangine-इं॰ अंकोलीन, ढेरा सत्व । फा॰ इं॰ २ भा॰ ।

अलज alaja-अ॰ तरुलता, इश्कपेचा (Ipomœa quamoclit.) । -सं॰ पक्षी । (A bird.)

अलजान āalajána-अ॰ क़ज़ाह । See-Qazáh.

अलजी alají-सं॰ स्त्री॰
-हिं॰ संज्ञा स्त्री॰ } (१) (Carbuncle.) प्रमेहपिडका रोग । एक प्रकार की लाल या काली फुन्सी जो बहुत पीड़ा देती है ।

लक्षण—वह पिटिका जो लाल श्वेत बारीक फोड़ों से व्याप्त एवं भयंकर होती है उसे 'अलजी'

कहते हैं। सु० नि० प्रमेह चि० ६ अ०। मा० नि०। (२) शूक दोष विशेष। लक्षण-जो अलजी प्रमेह पिड़काओं में वर्णन हो चुकी है यदि उसके लक्षणों से युक्त फुन्सी हो तो उसे "अलजी" जानना चाहिए। सु० नि० शू० दो० चि० १४ अ०। (३) नेत्र-संधि रोग विशेष।

लक्षण—नेत्रों की सफ़ेद और काली संधियों में जो पूर्वोक्त (प्रमेह पीड़का के) लक्षणों वाली फुंसी उत्पन्न हो जाती है उसे "अलजी कहते हैं। पर्वणी और अलजी में केवल इतना ही भेद है कि पर्वणी छोटी फुंसी है और अलजी बड़ी है। मा० नि०। अथर्व०। सू० ८। २०। का० ८।

(४) वर्त्म के बाहर की ओर कनीनिका में एक कठोर और ऊँची गाँठ होती है। उसका रंग तांबे के सदृश होता और पकने पर वह राध एवं रुधिर बहाने वाली होती है, उसे "अलजी" कहते हैं। यह बारबार फूल जाती है। वा० सं० अ० ८। (५) कनीन के बीच में वेदना, तोद और दाहयुक्त जो सूजन होती है उसको "अलजी" कहते हैं। वा० सं० अ० १०।

(६) वाग्भट्ट के अनुसार इसके निम्न लक्षण हैं—अलजी नाम की पिटिका उत्पन्न होते समय त्वचामें जलन पैदा करती है। ये अत्यंत कष्ट देती और फैलती हुई चली जाती हैं। इनका वर्ण काला या लाल होता है और इनमें तृषा, स्फोट, दाह, मोह और ज्वर ये उपद्रव होते हैं। वा० नि० १० अ०।

अलञ्ज alanja अ० इसके स्वरूप में मतभेद है।

अलञ्जरः alanjarah-सं० पुं० बहु जलधर-मृण्मयपात्र। जाला-बं०। सुराही-हिं०। संस्कृत पर्याय-अलिञ्जरः, माणिकं। अ० टी० भ०।

अलञ्जुरः alanjurah-सं० पुं० मिट्टीकी सुराही। (Jar.)

अलत alat-अ० काली तुलसी। (Ocimum gratissimum.)

अलत alat-अ० जिसके दाँत कीड़ों ने खाए हों पर दन्तमूल अवशेष रह गए हों।

अलत माक़ून alat-máqun-यु० जावित्री। Mace (Myristica fragrans, Houtt. Flower of-)

अलता alatá } -हिं० पुं०, बं० आलता,
आलता álatá } लाख का रंग, महावर। (Cotton strongly impregnated with the dye of lac ready to be used for dyeing etc.)

अलताई का रस alatái-ká-rasa-हिं० }
अलता को रस alatá-ko-rasa-जय० }
महावर, अलता का रस। See--alatá.

अलतून alatúna-तु० शेर का नाम, सिंह। (A lion.)

अलन्नता alannatá } -हिं० स्त्री० नीमच्छद,
अलन्नदा alannadá } इन्द्रवल्ली-सं०। एक वृक्ष है जिसकी शाखाओं पर लघु श्यामवर्ण के कण्टक लगे होते हैं। पत्र मांतिया पत्र सदृश किन्तु उनसे लघु तथा मृदु और फल फालसा के बराबर होते हैं। अपक्वावस्था में हरितवर्ण और अम्ल स्वादयुक्त किन्तु पकने पर रक्ताभायुक्त श्यामवर्ण के और खटमिट्ठे हो जाते हैं। इनके भीतर त्रिकोणाकार बीज होते हैं। जड़ टेढ़ी होती है।

अलफ़ áalaf-अ० अअ्लाफ़ (ब० व०) चारा, पशुओं का चारा। (Fodder)

अलफ़क़ दाग़ áalafak-dágha-अ०, फ़ा० ..जुफ़्रह। एक घास है। (A grass.)

अलफ़क़ हिन्दी áalafak-hindí-अ० बाच (एक सुगन्धित तृण है। इसके सम्बन्ध में और बातें नहीं मालूम हो सकीं)।

अलफ़ गारखर áalafa-gorkhara-अ०,फ़ा० इज़ख़िर। रोहिष तृण। (Andropogon schæranthus.)

अलफजन alafajana-हिं० धारो, उस्तो ख़ुद्दूस (Lavendula stoechas.) इं० मे० मे०।

अलफ़ मुहलिक áalafa-muhlik-अ० कुटकी, कटुकी। (Helleborus.)

अलफ़ शीरदार áalaf-shirdár-फ़ा० मेष, मेष। (A sheep.)

अलफ़ हिन्दी áalafa-hindí-यु० सक़ूरदियून, जंगली लहसन। (Wild garlic.)

अलफ़्फ़ alaffa-अ० वह जो स्पष्ट भाषण न करसके।

अलब alab-अ० एक जंगली कण्टकमय वृक्ष है। यह विषाक्त होता है।

अलब.तूत alabatúta-आवर्तनी, मरोड़फली या मरोड़ सींग। (Helicteres isora.)

अलबदा alabadá-अएड० मेलोशिया वेल्युटीना। (Melochia velutina, *Beddome.*) इसके तन्तु व्यवहार में आते हैं। मेमो०।

अलबरून al-barúna-यु० सुमाक़, प्रसिद्ध है। (Sumac.)

अलबाई alabái-यु० ख़िल्मी, प्रसिद्ध है। See-- Khitmí.

अलबानीस alabánísa-यु० चौलाई का साग। (Amaranth.)

अलबोरस alaborasa-मिश्र० कबूतर के बराबर श्वेत रंगका एक पक्षी है जो मत्स्य का आहार करता है।

अलब्नी alabní-यु० (१) नान्ख़ाह, अजवाइन (Ptychotis ajowan.)। (२) जङ्गली गाजर। (३) एक और बूटी है जो गाजर के समान होती है।

अलब्यूमेन albumen-इं० अण्डश्वेतक, अण्डलाल। (The white of anegg.)

अलमक alamak-तु० मज्जा वा भेजा (मख़) जो अस्थि या शिर में होता है।

अलमर alamar-हिं० संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का पौधा।

अलमरम् alamaram-ता०, कना० वट, बर्गद, बड़। (Ficus bengalensis) इं० मे० मे०।

अलमास alamás-हिं० संज्ञा पुं० [फ़ा०] हीरा। (Diamond.)

अलमिराव alamirávo-गोआ }
अलमिरास alamirás " }
पथरी-बम्ब०। (Launæa Pinnatifida) इं० मे० मे०।

अलमीकह् alamíkah-फ्रां० मस्तगी। (Anisomeles malabarica) इं० मे० मे०।

अलमुल् फ़ुवाद alamul-fuvád }
वज्उल् फ़ुवाद vajaul-fuvád }
-अ० (१) हृच्छूल, हृद्वेदना, हृदय की पीड़ा। दर्दे दिल, दिल का दर्द। (२) आमाशय द्वारशूल, कौड़ी का दर्द। कार्डि ऐल्जिया (Cardialgia)-इं०।

नोट—फ़ुवाद का शाब्दिक अर्थ "हृदय" है। इस कारण वज्उलफ़ुवाद का अर्थ वज्उलक़ल्ब या दर्देदिल अर्थात् हृच्छूल हुआ। फ़म मिअ्दह् अर्थात् आमाशयिक द्वार को भी हृदय के समीप होने के कारण अल्फ़ुवाद कहते हैं।

वज्उल् क़ल्ब तथा वज्उल् फ़ुवाद का भेद—वज्उलक़ल्ब (हृच्छूल) में एकाएक हृदय में तीव्र वेदना का उदय होता है, जिसकी टीसें वाम वस्ति की ओर जाती हैं। रोगी का रंग फ़क़ हो जाता है। हाथ पाँव शीतल होजाते हैं। कभी साथ ही वमन भी हो जाता है और रोगी को मृत्यु का भय होता है। किसी किसी अर्वाचीन मिश्रदेशीय वैद्यक ग्रंथो में वज्उलक़ल्ब को ज़ुबहह् सद्रियह् तथा किसी किसी में अलम् फ़ुवादी लिखा है।

आंग्ल भाषा में वज्उल् क़ल्ब को अञ्जाइना पेक्टोरिस (Angina pectoris) कहते हैं और ज़ुबहह् सद्रिय्यह् इसका ठीक पर्यायवाची शब्द है।

वज्उल् फ़ुवाद (आमाशयद्वार-शूल)—तिब्बी ग्रंथों यथा—क़ानून व अक्सीर आज़म प्रभृति में वज्उल् फ़ुवाद के सम्बन्ध में लिखा है कि वह एक तीव्र वेदना है जो आमाशयिकद्वार पर प्रगट होती है। इसमें रोगी को कठिन अस्थिरता व व्यग्रता होती है। हस्त पाद शीतल हो जाते हैं। चैतन्यता का सर्वथा लोप होता है और बहुधा यह शीघ्र मृत्यु उपस्थित कर देती है। यह एक अत्यन्त कठोर व्याधि है।

डॉक्टरी ग्रंथों में—उक्त रोग के निम्नोल्लिखित लक्षण लिखे हैं, यथा—आमाशयिक द्वार पर रुक रुक कर शूल चला करता है। इसका दौरा प्रायः रात के समय हुआ करता है।

साधारणतः खाली पेट में वेदना हुआ करती और आहार ग्रहण करने पर वह कम हो जाती है। परन्तु, कभी इसके विपरीत होता है। उदराध्मान, आटोप तथा दाह होता है। डकारें आती हैं, जी मचलाता है और प्रायः वमन हो जाता है। अर्वाचीन मिश्र देशीय चिकित्सक इस रोग को हुर्क़तुल् क़ल्ब लिखते हैं जिसका सही अंगरेज़ी पर्याय हार्टबर्न (Heartburn) है। और जिसको उर्दू में कलेजा जलना तथा हिन्दी में हहाह कहते हैं। अंगरेज़ी (आंग्ल भाषा) में इसे कार्डिएल्जिया (Cardialgia) भी कहते हैं जो अपने अर्थ के अनुसार वजउलफ़ुवाद का बिलकुल सही पर्याय है।

वजउलमिअ्दह् (आमाशय शूल)—इसमें आमाशयिक स्थल पर कठिन वेदना होती है जिसकी टीसें वाम स्कन्ध पर्यन्त जाती हैं। वेदनाधिक्य के कारण रोगी बेचैन हो जाता है और जलशून्य मत्स्यवत् लोटता है तथा आमाशय के स्थान पर दबाता है।

सूचना—तिब्बी ग्रंथों में वजउलफ़ुवाद के जो लक्षण लिखे हैं वे वस्तुतः वजउलक़ल्ब के लक्षण हैं। किन्तु, वजउलमिअ्दह् (आमाशय शूल) के लक्षण भी इसके बहुत समान होते हैं। इसलिए रोगविनिश्चय में दिक़्क़त होती है। परन्तु वजउलमिअ्दह् में तीक्ष्ण अचेतता नहीं होती और न तात्कालिक प्राणनाश का भय होता है।

अलमूल alamúl–सं० गावज़ुबाँ-बम्ब०।

अलमोसः alamosah–सं० पुं० मत्स्यभेद (A sort of fish) वै० निघ०।

अलमोसा alamosá–हिं० अ(इ)मली। (Tamarindus Indicus.)

अलम् alam–अव्य [सं०] यथेष्ट। पर्याप्त। पूर्ण। काफ़ी। (Enough, sufficient.)

अलम alam–फ़ा० (१) अदरक, आदी (Zingiber officinalis) देखो—आर्द्रक। (२) कंगुनी, चीना। (Panicum verticillatum.)

अलम् āalam–रसा० हड़ताल, हरिताल। (Yellow orpiment)

अलम alam–मल० कुम्बी-सं०, बं०, हिं०। वकुम्भ–ते०। (Careya arborea) इं० मे० मे०।

अलम् alam–अ० } (ए० व०).
अलम alama–हिं० संज्ञा पुं० } आलाम (ब० व०)। रंज, दुःख दर्द, कष्ट, वेदना, व्यथा, पीड़ा। पेन (Pain), एक (Ache)–इं०।

हकीम जालीनूस के वचनानुसार मनुष्य का प्रकृतावस्था से अप्रकृतावस्था की ओर चला जाना "अलम" कहलाता है। फिर चाहे उसे उक्त अवस्था का बोध या ज्ञान हो अथवा न हो यथा—व्यथित व अचेत होना। किन्तु शेख़ का वचन है कि विरुद्ध वस्तु का बोध होना ही अलम् कहलाता है। यथा—किसी बुरे समाचारके सुनने से अथवा किसी तिक्त या स्वाद रहित वस्तु को चखने से कष्ट प्रतीत होता है। अस्तु, दोनों परिभाषाओं के पारस्परिक भेद का परिणाम यह है कि जालीनूस अचेत व मूर्च्छित व्यक्ति को भी दुःखान्वित "मुब्तलाए अलम्" कहता है; किन्तु शेख़ चूँकि "अलम्" की परिभाषा में बोध व ज्ञान की सीमा निर्धारित करते हैं। अतः वे अचेत व मूर्च्छित व्यक्ति को दुःखान्वित नहीं कहते। वास्तव में यदि ध्यानपूर्वक देखा जाए तो दुःख वही है जिसका बोध हो। अस्तु शेख़ की उक्त परिभाषा अधिक सही और अनुमेय प्रतीत होती है।

नोट—प्राचीन फ़ारसी व अरबी तिब्बी ग्रंथों में व्यथा के लिए वजअ् शब्द व्यवहृत हुआ है। किन्तु अर्वाचीन मिश्र देशीय हकीम अब वजअ् (वेदना) के लिए प्रायः अलम् शब्द को व्यवहार में लाते हैं। अस्तु, निम्न शब्द उन्हीं के ग्रंथों से उद्धृत किए गए हैं।

अलम् और वजअ् का भेद—

उल्लामह् क़ुर्शी के वचनानुसार जिस दर्द का बोध विशेष स्पर्श शक्ति द्वारा हो उसे वजअ् और जिसका बोध सामान्य अर्थात् सार्वांगिक वा सामूहिक बोध शक्ति द्वारा हो उसको अलम् नाम

से अभिहित करते हैं। अस्तु वज्अ विशेष है और अलम् सामान्य।

अलम् अअ़्ज़्म alam-āazm
वज्अ अअ़्ज़्म vajāa-āazm
–अ० अस्थि वेदना, हड्डी का दर्द। ऑस्टिओ-डीनिया (Osteodynia)–इं०।

अलम् अअ़्ज़ुद् alam-āazud–अ० बाज़ू की पीड़ा, भुज वेदना। ब्रैकिऐल्जिया (Brachi-algia.)–इं०।

अलम् अन्फ़ alam-anfa–अ० नासिका की वेदना, नाक का दर्द। राइनैल्जिया (Rhin-algia.)–इं०।

अलम् अम्आ़अ alam amāāa–अ० उदर शूल, आंत्र वेदना, आँतों का दर्द। एण्टरेल्जिया (Enteralgia.) –इं०।

अलम् अर्बतह् alam-arbatah–अ० बंधनी वेदना। डेसमोडीनिया (Desmodynia.) –इं०।

अलम् अस्नान alam-asnána–अ० दन्त पीड़ा, दन्त शूल, दाँत का दर्द। ओडोण्टैल्जिया (Odontalgia)–इं०।

अलम् अस्.बी alam-āaṣbí–अ० नाड़ी शूल, वात वेदना, वायु का दर्द (रेही दर्द)। न्यु-रैल्जिया (Neuralgia.)–इं०।

अलम् उ.ज़्न alam-uzna–अ० कर्ण शूल, कान का दर्द। ऑटैल्जिया (Otalgia.) ईयर-एक (Earache.)–इं०।

अलम् उ.ज़्ली alam-āuzlí–अ० मांस पीड़ा, मांसपेशी शूल। माइऐल्जिया (Myalgia) –इं०।

अलम् उस्.उस् alam-āuṣāuṣ–अ० चञ्चु-पीड़ा। कॉक्सियोडीनिया (Coccyo dynia.) –इं०।

अलम् ऐ.न alam-āain–अ० चक्षुपीड़ा, आँख का दर्द, नेत्र शूल। ऑफ्थैल्मैल्जिया (Oph-thalmalgia.), ऑफ्थैल्मोडीनिया (Oph-thalmodynia.)–इं०।

अलम् क़.ज़ीब alam-qazíba–अ० शिश्नशूल, लिंग की पीड़ा। फलैल्जिया (Phallalg-ia.)–इं०।

अलम् क़ज़्हिय्यह् alam-qazḥiyyah–अ० आँख के अंगूरी पर्दा का दर्द। आइरैल्जिया (Iralgia.)–इं०।

अलम् क़.त्न alam-qatn–अ० कटिशूल, कमर का दर्द। लम्बेगो (Lumagbo.)–इं०।

अलम् क़दम alam-qadam–अ० पादशूल, पाँव का दर्द। पॉडैल्जिया (Podalgia.) –इं०।

अलम् क़.स्स. alam-qaṣṣa–अ० वक्षोऽस्थि वेदना, उरोऽस्थि शूल, सीने की हड्डी का दर्द। स्टर्नैल्जिया (Sternalgia.)–इं०।

अलम् कबिद alam-kabida–अ० यकृद्वेदना, कलेजे का दर्द। हिपैटैल्जिया (Hepatalg-ia.)–इं०।

अलम् कुल्यह् alam-kulyah–अ० वृक्कशूल, वृक्क वेदना, गुर्दा का दर्द। नेफ्रैल्जिया (Neph-ralgia.)–इं०।

अलम् खु.स्यह alam-khuṣyah–अ० आण्ड-शूल, मुष्क वेदना, आँड़ी या खुसिया का दर्द। डिडिमैल्जिया (Dedymalgia) ऑर्कि-ऐल्जिया (Orchialgia.), ऑर्किओडीनिया (Orchiodynia.)–इं०।

अलम् ग़ुज़्रूफ़ alam-ghuzrúf–अ० उपास्थि शूल, कुर्री का दर्द। कॉण्डड्रैल्जिया (Chon-dralgia)–इं०।

अलम् ग़ुद्दी alam-ghudadí–अ० ग्रंथि-शूल, ग्रंथिस्थ वेदना, ग़ुद्द का दर्द।
एडीनैल्जिया (Adenalgia.), एडीनो-डीनिया (Adenodynia.)–इं०।

अलम् जन्ब alam-janba–अ० पार्श्वशूल, पसली का दर्द। प्लुरोडीनिया (Pleurody-nia), स्टिच (Stitch.)–इं०।

अलम् ज़ह्र alam-zahra–अ० पृष्ठशूल, पीठ का दर्द। नूटैल्जिया (Nucalgia.)–इं०।

अलम् जिल्द alam-jilda–अ० त्वक्शूल, चर्म

वेदना, त्वचा का दर्द। डर्माटैल्जिया (Dermatalgia.)-इं०।

अलम् ज़ौ alam-zou-अ० रश्मिशूल, प्रकाशमान् या चमकदार वस्तु के देखने का दर्द। फोटैल्जिया (Photalgia.)-इं०।

अलम् नुख़ाअ् alam-nukháá-अ० सुषुम्ना शूल, सौषुम्नस्थ वेदना। माइऐल्जिया(Myalgia.)-इं०।

अलम् फ़क़रात alam-faqaráta-अ० कशेरुका शूल, काशेरुकीय वेदना। स्पॉण्डिऐल्जिया (spondialgia.)-इं०।

अलम् बत्न alam-batna-अ० उदरशूल, पेट का दर्द। सेलिऐल्जिया (Celialgia.) -इं०।

अलम् बलऊम alam-balaúma-अ० कंठ शूल, हलक़ का दर्द। फेरिंगऐल्जिया (Pharyngalgia)-इं०।

अलम्ब मुष्ककः alamba-mushkakah-सं० पुं० मुष्कक वृक्ष। मोखा-हिं०। घण्टापारुल -बं०। (Schrebera swietenioides.)

अलम्बा alambá-सं० स्त्री० तिक्तालाबु, स्थावर विषान्तर्गत पत्रविष तितलौकी। तितलाउ-बं०। सु० कल्प० २ अ०। देखो—पत्रविषम्।

अलम्बुजा alambujá-सं० स्त्री० गोरखमुण्डी, गोरख मुण्डी। (Sphœranthus Indicus, *Linn.*) वं० नि०।

अलम्बुदम् alambudam-सं० क्ली० बालक, ह्रीवेर (Pavonia odorata.)। बाला -बं०। वै० निघ० ज्वर० चि० शिवगुटी०।

अलम्बुषः alambushah-सं० पुं० (१) वान्ति रोग, वमन, उलटी, छर्दि, कै। (Vomiting.) मे० षचतुष्क। (२) भूकदम्ब। कुकशिया गाछ-बं०। र० मा०। रत्ना०।

अलम्बुषा,-सा alambushá,-sá-सं० स्त्री० (१) लज्जालुका भेद। (A sort of sensitive plant.)। फुल शोला-बं०। लज्जावती, छुईमुई, लजालू पौधा।

पर्याय—खरत्वक्, मेदः, गला।

गुण—मधुर, लघु, कृमि तथा कफ पित्त नाश करने वाली है। भा० पू० १ भा० गु० व०। अलम्बुषा स्वरस का २ पल की मात्रा में पीने से अपची, गण्डमाला तथा कामला नष्ट होता है। (२) भूकदम्ब। कुकशिमे-बं०। See--bhúkadamba. (३) महा श्रावणी, गोरखमुण्डी। गोरखमुण्डी, मुण्डी। बड़ थुलकुडि -बं०। (Sphœranthus Indica) रा० नि० व० ५। वै० निघ०२ भा० वा० व्या० षड्शीति-गुग्गुल और त्र्यूषणादि लौह। (४) लौह मल, मण्डूर। (Ferri peroxidum.) च० द० १ भा० आमवात अलम्बुषादि चूर्ण।

अलम्बुषादिचूर्णम् alambushádi-chúrnam-सं० क्ली० हड़ १ भा०, बहेड़ा २ भा०, आमला ३ भा०, गोरखमुण्डी १ भा०, वरुणमूल १ भा०, गिलोय १ भा०, सोंठ १ भा०, इनको लेकर चूर्ण करें।

गुण—आमवातको दूर करता है।

मात्रा-१ कर्ष (२ तो०)। भै० म० ख० आ० वा० चि०।

अलम्बुषाद्यचूर्णम् alambushádyachúrnam--सं०क्ली०(१)अलम्बुषा (पानीका लजालू) १ भाग, गोखरू २ भाग, त्रिफला ३ भाग, सोंठ ४ भाग, गिलोय ५ भाग, निसोथ सर्व तुल्य ग्रहण कर उत्तम चूर्ण प्रस्तुत करें।

मात्रा—४--१० मा०।

अनुपान-दही का पानी, तक्र, मद्य, काँजी, उष्ण जल।

गुण-आमवात, रक्तपित्त, त्रिकवेदना, जानुगत वात, उरुगत वात, सन्धिवात, ज्वर, अरोचक इसके सेवन से दूर होते हैं। च० से० सं० आमवा० चि०।

(२) अलम्बुषा, गोखरू, गिलोय, विधारा, पीपल, निसोथ, नागरमोथा, बरना की छाल, पुनर्नवा, त्रिफला, सोंठ तुल्य भाग। इनका चूर्ण कर सेवन करने से उक्त व्याधियाँ दूर होती हैं।

मात्रा-४-१० मा० । अनुपान-पूर्वोक्त । गुण--पूर्वोक्त । बं०गा०से०सं० आमवात चि० ।

अलम्बोर्द्धस्तनी alamborddhastaní-सं० त्रि० जिसके स्तन न लम्बे और न ऊर्ध्वमुखी अर्थात् ऊँचे हों । सु० शा० १० अ० ।

अलम्बौष्ठी alamboushṭhí-सं० त्रि० जिसके ओष्ठ लम्बे न हों । सु० शा० १० अ० ।

अलम् मज्री बौल-alam-majrí-boul-अ० मूत्रप्रणालीस्थ वेदना, मूत्र नाली का दर्द । दर्देनाइज़ह्-फ़ा० । यूरेथ्रैल्जिया (Urethralgia.)-इं० ।

अलम् मफ़्सल alam-mafṣal-अ० संधि-शूल, जोड़ का दर्द । आर्थ्रैल्जिया (Arthralgia.)-इं० ।

अलम मबैज़ alam mabaiza-अ० डिम्बाशयिक शूल, डिम्बाशय सम्बन्धी पीड़ा । ओव्रैल्जिया (Ovaralgia.)-इं० ।

अलम् मरी alam-marí-अ० अन्नप्रणालीस्थ वेदना, आहार पथका दर्द । ईसॉफैगैल्जिया (Œsophagalgia.)-इं० ।

अलम् मस्.ानह alam-masánah--अ० वस्ति शूल, मूत्राशयिक वेदना । सिस्टैल्जिया (Cystalgia.)--इं० ।

अलम् मिअ्दह् alam-miādah-अ० आमाशय शूल, आमाशयिक वेदना, मेदे का दर्द । गैस्ट्रैल्जिया (Gastralgia)-इं० ।

अलम् रहिम,-रिह् alam-rahim,-rih-अ० जरायुस्थ पीड़ा, गर्भाशयिक वेदना । मेट्रैल्जिया (Metralgia), हिस्टिरैल्जिया (Hysteralgia)-इं० ।

अलम् रास alam-rás-अ० शिरःशूल, शिरोव्यथा, शिर का दर्द । सिफेलैल्जिया (Cephalalgia), हेडेक (Headache)-इं० ।

अलम् रुक्बह् alam-rukbah-अ० घुटने का दर्द । गोनैल्जिया (Gonalgia)-इं० ।

अलम् लिस्सान alam-lissán-अ० जिह्वाशूल, ज़बान का दर्द । ग्लोसैल्जिया (Glossalgia) -इं० ।

अलम् वज्ह alam-vajha-अ० मुखमंडलीय वेदना, चेहरे का दर्द । प्रोसोपैल्जिया (Prosopalgia)-इं० ।

अलम् वरिक alam-varik-अ० नितम्ब शूल, चूतड़ का दर्द । इस्कियैल्जिया (Ischialgia) -इं० ।

अलम् शरासीफ़ alam-sharásíf-अ० आमाशयिक द्वार के आस पास की पीड़ा । एपिगैस्ट्रैल्जिया (Epigastralgia)-इं० ।

अलम् शर्ज alam-sharja-अ० गुदशूल, गुदाकी वेदना । रेक्टैल्जिया (Rectalgia)-इं० ।

अलम् सद्दी alam-sadí-अ० चूचुक शूल । दर्दे पिस्तान, चूचीका दर्द-उ० । मस्टैल्जिया (Mastalgia)-इं० ।

अलम् हालिब alam-hálib-अ० गविन्यु शूल । दर्दे हालिब-फ़ा० । यूरेटरैल्जिया (Ureteralgia)-इं० ।

अलयाऽ alayáa-यू०, रू० सिब्र, मुसब्बर, कुमारीसारोद्भवा । (Alœs.)

अलयून alayúna-यू० शेर, सिंह । (A lion.)

अलयूह alayúh-यू० ज़ैतून । (Olive.)

अलरी alarí-ता०, मल० कर्वीर, कनेर । (Nerium odorum.) इं० मे० मे० ।

अलर्कः alarkah-सं० पुं० अर्क, सफ़ेद, मदार, मन्दार, श्वेत आकन्द-बं० । (Calotropis gigantea or procera, अर्क of white flowers.) भा० पू० १ भा० । मे० कत्रिक० । मन्दार । हेमा० अलर्कादि व० । मन्दारार्क । रा० नि० व० १० । "अलर्को मन्दारार्कः यस्य क्षीरं न विनश्यति" । सु० सू० ३८ अ० अर्कादि, ड० । श्वेत पुष्पीय मन्दार । वा० सू० १५ अ० अर्कादिव. अलर्काः । "अर्कालर्कौ नागदन्ती विशल्या ।" योगोन्मादित कुक्कुर । मे० कत्रिकं० । (२) कुक्कुर ज्वर । (Hydrophobia) हा० अत्रि० २ स्था० २ अ० । (३) पागल कुत्ता ।

अलर्क alarka-सं० सोलेनम् ट्रिलोबेटम् (Sola-

num trilobatum, *Linn.*)-लै० । टूड वुल्ले-ता०। मूँ-डल-मुस्तह अचिन्त-कुर-ते०। मोट-रिंगनी मूल-मह० । नाभि-अङ्कुरी-उड़ि०। इं० मे० मां० ।

वार्त्ताकी वर्ग

(*N. O. Solanaceæ.*)

उत्पत्तिस्थान—पश्चिमी डेकन प्रायद्वीप, कोंकण से दक्षिण की ओर । प्रयोगांश—मूल, पुष्प, पत्र तथा फल (Berries.) और कोमल अङ्कुर । यह एक प्रकार की बेल है ।

प्रभाव तथा उपयोग—इसके पत्र तथा मूल स्वाद में कटु होते हैं और क्षय रोगियों में इन्हें अवलेह क्वाथ वा चूर्ण रूप में बर्तते हैं । अवलेह चायके चम्मचसे १॥ चम्मच भर दिन में दो बार देते हैं । कासमें पुष्प तथा फल (Berries) उपयुक्त होते हैं । ऐन्सली ।

यह क्षुद्रकण्टकारी की प्रतिनिधि रूप से प्रयुक्त होता है । डाइमाक ।

अलर्नैन्थरा सिसीलिस alarnanthera sessilis-लै० मोकनु-वन्ना-सिंगा० ।

अलल बछेड़ा alala-bachherá-हिं० संज्ञा पुं० [हिं०अल्हड़+बछेड़ा] घोड़े का जवान बच्चा ।

अलले alale-मैसू०
अलले कायि alale-káyi-कना०
} हड़, पीली हड़, हरीतकी । (Terminalia chebula, *Retz.*) स० फा० इं० ।

अललेपिन्द alale-pinda-कना० बाल हड़, जंगली हड़। (The young dried fruits of Terminalia chebula, *Retz.*) स० फा० इं० ।

अलले हुव्वु alale-huvvu-कना० हड़ पुष्प, हड़े का फूल । हरीतकी पुष्पम्-सं० । (The gall-like excrescenses found on the leaves & young branches of T. Chebula)

अलल्लाँ alallán हिं० संज्ञा पुं० [?] घोड़ा । -डिं० ।

अलवणा alavaṇá-सं० स्त्री० (१) ज्योतिष्मती । मालकांगुनी-हिं० । लताफट्की-बं० । (Cardiospermum halicacabum). "वसुलपक्वरक्तफलापीत तैला काकमर्दनिका" सु० सू० ३८ अर्कादिव० ड० । अलवणा अर्थात् मालकांगुनी तीव्र, कफ, मेद तथा कृमि विनाशिनी है । अत्रि० । (२) हरीतकी हड़ । (Terminalia chebula, *Retz.*) मद० व० १ ।

अलवाँती alavánti-हिं० वि० स्त्री० [सं० बालवती] (स्त्री) जिसे बच्चा हुआहो । प्रसूता । जच्चा ।

अलवाई alavái -हिं० वि० स्त्री० [सं० बालवती, हिं० अलवैंती] (गाय वा भैंस) जिसको बच्चा जने एक वा दो महीने हुए हों । बाखरी का उलटा ।

अलविन्द alavinda-सिंध तेन, तिन्दुम, तेनसी -उ०प०सू० । (Diospyros cordifolia)

अलश alash-पं० अमलतास । (Cassia fistula.)

अलशी यण्णे alashí-yanne-कना० अलसी का तेल । (Linseed oil) स० फा० इं० । देखो—अतसी ।

अलशी alashi-हिं०, गु० जावा, म०, कौं०, बं०, कना० अलसी । (Linseed)

अलशी विरई alashí-virai-ता० अंतसी, अलसी, तीसी-हिं० । Linseed (Linum usitatissimum) इं० मे० मे० ।

अलसः,-कः alasah,-kah-सं०पुं०
अलस alasa-हिं० संज्ञा पुं०
}

(१) पाद रोग विशेष । पैंव का एक रोग जिसमें पानी से भींगे रहने वा गंदे कीचड़ में पड़े रहने के कारण उँगलियों के बीच का चमड़ा सड़ कर सफ़ेद हो जाता है और उसमें खाज, दाह और चीस युक्त पीड़ा होती है । खरवात । कँदरी । खार । सु० नि० १३ अ० ।

(२) विसूचिकाकी एक अवस्था है । अजीर्ण रोग का एक भेद । विषाजीर्ण, रसाजीर्ण और दोषाजीर्ण भेद से यह तीन प्रकार का होता है ।

शाङ्ग० । जो आहार ऊपर के मार्ग अर्थात् मुख द्वारा नहीं निकलता, अधोमार्ग (गुदा द्वारा) भी नहीं निकलता और न पचता ही है। प्रत्युत केवल नाभि और स्तनों के मध्यवर्ती आमाशय नामक स्थान में अलसीभूत अर्थात् स्तब्ध भाव में रहता है उसे अलसक रोग कहते हैं। जैसे अनुद्यमशील मनुष्य आलसी कहलाता है। वा० सू० ८।

लक्षण—जिस रोग में कुक्ष और पेट में अत्यन्त अफारा हो, बेहोशी हो, पीड़ा युक्त शब्द करे और वायु चलने से रुक कर ऊर्ध्व गति हो, कोख के ऊपर कंठ आदि स्थानों में गमन करे, मल मूत्र और गुदा की पवन रुक जाए, प्यास और डकारों से पीड़ित हो तो उसको "अलसक" कहते हैं। देखो—मन्दाग्नि।-च० चि०। (३) क्षुद्र कुष्ट रोग भेद।

लक्षण—जिसमें अत्यन्त खुजली चले, लाली युक्त तथा छोटी फुन्सी अधिक हों उसको "अलसक" कुष्ट कहते हैं। मा० नि०। (४) व्याल जाति ज्वर। गत-वै०। (५) जिह्वा रोग। वै० निघ०। (६) वृक्ष भेद। (A kind of tree.)

अलस āalas-अ० भेड़िया (A wolf.)। -फ़ा० (१) गन्दुम मक्कह (मक्का का गेहूं, गेहूं के सदृश अनाज है)। (२) सुलत, आत जौ, जौ बिरहना।

अलस् āalas-यु० खन्दरीली, कासनी भेद। (A kind of Kásaní)

अलसकः alasakah-सं० पुं० } अजीर्ण
अलसक alasaka-हिं० संज्ञा पुं० }
रोग का एक भेद, अजीर्ण जन्य रोग (Dyspeptic disease)। देखो—अलसः।

अलसन alasan-यु० एक वनस्पति है।

अलसनतुल् आसाफ़ीर alasanatul-āasáfíra-अ० इन्द्रयव। Wrightia Tinctoria, R. Br. (Seeds of--)

अलसन्दह् alasandah-हिं० मोठ। (Vetches, Lentils)

अलसन्दा alasandá-ते० } लोबिया। (Dolichos catiang, D. sinensis) इं० मे० मे०।
अलसन्दी alasandí-कना० }

अलसफ़ाफ़न alasafáfan-(१) लिसानुल्-अवल। (२) राइ्युल्अवल। इसके लक्षण में मतभेद है।

अलसा alasá-सं० स्त्री०, हिं० संज्ञा स्त्री० (१) हंसपदी लता। गोधापदी (Vitis pedate)। गोयाले लता-बं०। मे० सत्रिक। (२) लज्जालू। लाल फूल की लज्जावन्ती।

अलसा alasá-फ़ा० (१) मरोड़फली, आवर्तकी। (Helicteres Isora)
(२) ख़िल्मी (See--khitmí)।
(३) नानूख़ाह, अजवाइन। (Carum ptychotis Ajowan)

अलसी alasí-सं० (हिं० संज्ञा स्त्री०) अतसी। तीसी-हिं० बं०।

अलसी āalasí अ० घृतकुमारी, ग्वारपाठा, घीकुवार। (Aloe Indica.)

अलसी का तेल alasí-ká-tel-हिं०, द०, तीसी का तेल। अलसी(-त-)तैलम्-सं०। तिसि तैल, मोसिनार तैल-बं०। दुह नुल् कत्तान-अ०। रोग़ने ज़गीर, रोग़ने कताँ-फ़ा०। लिन्सीड ऑइल (Linseed oil)-इं०। लिनम युसिटेटिसिमम् Linum Usitatissimum, *Linn.* (oil of-)-ले०। अलिशि-विरै-येण्णेय्-ता०। नदनगिञ्जल-नूने-ते०। चेरुचाण-विचिन्ते-एण्णा-मलया०। अलशी-यण्णे-कना०। स० फ़ा० इं०। देखो-अतसी।

अलसी विरई alasí-virai-ता० अलसी, तीसी, अतसी। Linseed (Linum Usitatissimum) इं० मे० मे०।

अलसेलुका alaseluká-सं० स्त्री० रक्तलालुका। फुल सोला-बं०। वै० निघ०।

अलस्तीन alastín-यु० नमक, लवण। Salt (Sodium chloride.)

अलस्तून alastún-रू० अफ़्सन्तीन। (Artemesia Indica, *Willd.*)

अलहैरी alahairí-हिं० संज्ञा पुं० [अ०] एक जाति का अरबी ऊँट जिसे एक ही कूबड़ होता है और जो चलने में बहुत तेज होता है।

अलाई alái-हिं० पुं० [१] घोड़े की एक जाति।

अलाउठा aláuṭhá-सं० क्षिप्त रोग। देखो-क्षिप्त। अथर्व। सू० ६। ३। का० ६।

अ़लाक़ह् āaláqah-अ० (१) इच्छा, लगाव। (२) वह तन्तु या सूत्र जो किसी अवयव को लटकाए या निज स्थान पर स्थिर रखे।

अ़लाक़तुल् बैज़ह् āaláqatul-baizah-अ० अण्डधारक रज्जु। स्पर्मेटिक कॉर्ड (Spermatic Cord)—इं०।

अ़लाचारह् āalácharah-असफ़हा० अक़्अक़। See-āaqāaq.

अलाग़ alágh-तु० गदहा, गधा, गर्दभ। (An ass.)

अलाकलङ्ग alákalanga-तु० तेलनी मक्खी (एक प्रसिद्ध परदार पक्षी है)। (Cantheridis.)

अलातम् alátam-सं० क्ली० } अँगारा, अलात alátá-हिं० संज्ञा पुं० } ङ्गारा (A firebrand, embers.) । कयला-बं०। रत्ना०। (२) जलती हुई लकड़ी। लुआठी।

अलातन alátan-यु० जाविन्नी। (Mace.)

अलातरी alátarí } अमरबेल, अकाशबेल।
अलाटरी alaṭarí } (Cuscuta Reflexa.)

अलाती aláti-रू० एक वृक्ष है, जिसकी गोंद चीड़ की गोंद के समान होती है। किसी किसी के मतानुसार यह चीड़ का एक भेद है।

अलातीनी alátíní-रू० लबलाब, इश्क़ पेचा, एक बेल है। (Ipomoea Quamoclit.)

अलाद aláda-यु० जैतून तैल। (Olive oil.)

अलानीतून alánítún-रू० रवासन, किसी किसी के मत में एक दूसरी औषधि है।

अलाबष्टर alábaster-इं० सफ़ेद पत्थर, गोदन्ती। (Calcium Sulphate.) सङ्गिराहत-सं०। इं० मे० मे०।

अलाबाद alábád-अरब०

अलाबु alábu-सं० पुं० यंत्र विशेष। वा० सू० अ० २६।

अलाबु alábu-सं० क्ली० }
अलाबुः,-बूः alábuh,-búh-सं० स्त्री० }
अलाबू alábú-हिं० संज्ञा स्त्री० }
(१) स्वनामाख्यात फल शाकलता, लौकी, मिठीतुम्बी, लौआ, कद्दू-हिं०। लाउ गाछ -बं०। दुध्या भोपला-मह०। (Cucurbita lagenaria.) कटो०। शब्दर०। भा० पू० १ भा०। द्रव्यगु०। राज०। (२) कटुतुम्बी, तितलौकी, तितलाउ-बं०। Wild variety of legenaria vulgaris. शा० र०। (३) तूँबा। (४) सर्प विष की थैली। (Serpent venom sac.) अथर्व०। सू०१०। १। का० ८।

अलाबुकः alábukah-सं० पुं० अश्व मुखरोग। इसमें मुख दुर्गन्धि, तालुशोफ तथा ग्रास ग्रहण में द्वेष प्रभृति लक्षण होते हैं। (Mouth disease of the horse.) ज० द०।

अलाबुका alábuká-सं० स्त्री० कटु दुग्धयुक्त अलाबु, तितलौकी, कटुतुम्बी। भा०। See-Kaṭu tumbí.

अलाबुनी alábuni-सं० स्त्री० (१) कटु दुग्धालाबु, कटुतुम्बी, तितलौकी। तितलाउ -बं०। Wild variety of legenaria vulgaris.। (२) मिष्ट तुम्बीलता, मीठी तुम्बी, लौकी, कद्दू-हिं०। मिष्टलाउ गाछ -बं०। (Cucurbita lagenaria) मद० व० ७।

अलाबु-विधिः alábu-vidhih-सं० पुं० तुम्बी लगाने की विधि।

अलाबु सुहृत् alábu-suhrit-सं० पुं० अम्ल-वेतस। (Rumex vesicarius.) वै० निघ०।

अलाबू यन्त्रम् alábú-yantram-सं० क्ली० यन्त्र विशेष । तुंबी ।

लक्षण—तुम्बी यंत्र १२ अंगुल मोटा होता है । इसका मुख गोलाकार तीन या चार अंगुल चौड़ा होता है । इसके बीच में जलती हुई बत्ती रखकर रोग की जगह लगा देने से दूषित श्लेष्मा और रक्त खिंच आता है । अत्रि० । वा० सू० अ० २३ ।

अलाम äalám-अ० मेंहदी (हिना) । Myrtus Communis.

अलामत äalámat-अ० (हिं० संज्ञा पुं०) (ए० व०), अलामात (ब० व०) । इसका शाब्दिक अर्थ लक्षण, चिह्न, लिंग आदि है (विस्तार के लिए देखो—लक्षण) । तिब्ब की परिभाषा में वह वस्तु जिसके द्वारा किसी शारीरिक दशा अर्थात् स्वास्थ्य वा रोगमें से किसी अवस्था पर दलील पकड़ी जाए अर्थात् जिसके द्वारा स्वास्थ्य वा रोग लक्षित हो । सिम्प्टम् (Symptom), साइन (Sign), इण्डिकेशन (Indication)-इं० ।

तिब्बी नोट—अलामत अर्थात् लक्षण से कभी भूतकालीन (भूतकाल में उपस्थित हुई) दशा का पता चलता है, जैसे-नदावतुल् बदन (शरीर की तरी) तथा नाड़ी की निर्बलता एवं शिथिलता से वैद्य को इस बात का बोध होता है कि रोगी को इससे पूर्व स्वेद आ चुका है । ऐसी अलामत या लक्षण को अलामत मुज़्किरह अर्थात् किसी गत घटना की द्योतक अलामत कहा जाता है । इससे वैद्य को बहुत लाभ होता है अर्थात् उक्त अलामत के द्वारा रोगी के गत शारीरावस्था के बतलाने से उसकी श्रेष्ठ विद्वता एवं क्रिया कुशलता लक्षित होती है । (२) कभी अलामत से वर्तमान कालीन अवस्था का पता चलता है, जैसे—उष्ण स्पर्श द्वारा ज्वर की उपस्थिति का पता चलता है । ऐसे लक्षण को तिब्बमें "दाल्ल" या 'अलामत दाल्लह्' कहते हैं । और चूँकि स्पर्शोष्मा रोगीको वर्तमान ज्वरावस्था का पता देकर उसका ध्यान चिकित्सा की ओर आकर्षित करती है, इसलिए ऐसे लक्षण से अधिकतर रोगी लाभ उठाता है । (३) और कभी अलामत भविष्यकालीन घटना की परिचायक होती है । उदाहरणतः—निम्न ओष्ठ का स्पंदित होना इस बात का सूचक है कि वमन होगा । ऐसे लक्षण को तिब्ब में तक़द्दुमुल्मअ्रफ़ह् या साबिकुलइल्म अर्थात् पूर्वरूप के नाम से अभिहित करते हैं । ऐसे लक्षण से चिकित्सक व रोगी दोनों को लाभ होता है । वैद्य का ऐसे लक्षण को देखकर भविष्य में आने वाली घटना से रोगी को सूचित करना उसके हृदय में वैद्यकी उच्चकोटि की योग्यता व चिकित्सा-कौशल्य स्थान पाता है । और स्वयं रोगी चूँकि वैद्य में आदेशानुसार उक्त रोग की चिकित्सा व उपाय से परिचित हो जाता है । इस कारण रोगी भी ऐसे लक्षण से लाभान्वित होता है ।

अलामत और अ्रज़ का भेद—(देखो अ्रज़)

अलामत और दलील का भेद—अलामत अर्थात् लक्षण कभी मालदुल् अलामत (जिसका वह लक्षण है) के साथ पाया जाता है और कभी नहीं । इसके विरुद्ध दलील (लक्षण) अपने मदलूल (लक्ष्य) के साथ अवश्य हुआ करता है । इनमें से प्रथम का उदाहरण मेघ व वृष्टि है । यह बात स्पष्ट है कि मेघ कभी बिना वृष्टि के भी होता है । और द्वितीय का उदाहरण अग्नि व धूम है । क्योंकि धूम सदा अग्निके साथ पाया जाता है । तिब्ब के दृष्टिकोण से दलील तथा अलामत में मुख्यभेद यह है कि दलील केवल रोग के लक्षण के लिए प्रयोग में आता है और अलामत साधारण है जो रोग एवं स्वास्थ्य प्रति दो लक्षणों के लिए बोली जाती है ।

डॉक्टरी नोट—सिम्प्टम् का शाब्दिक अर्थ "परस्पर घटित होना" है । डॉक्टरी परिभाषा में उस परिवर्तन के लिए बोला जाता है जो रोग क्रम में उपस्थित होता है जिससे उक्त रोग के विद्यमान होने की सूचना मिलती है । इस विचार से सिम्प्टम् अलामत का पर्याय है । परन्तु अर्बा-

चीन मिश्र देशीय वैद्य अलामत के स्थान में इसका पर्याय 'अ़ज़' निर्धारित करते हैं।

साइन उस अलामत का नाम है जो केवल रोग में प्रगट होता है और सिम्प्टम् रोग व स्वास्थ्य दोनों लक्षणों के लिए बोला जाता है। अस्तु, जो अन्तर दलील व अलामत में वर्णित हुआ वही भेद सिम्प्टम् व साइन में है। इण्डिकेशन भी साइन और दलील का पर्याय है।

अलामत अ़र्ज़िय्यह् āalámat-āarziyyah —अ० वह लक्षण जो किसी अवयव के अवारिज़ अर्थात् उसकी सुन्दरता व कुरूपता से सम्बन्ध रखता हो, उसके शरीर या जौहर या उसकी क्रिया से सम्बन्ध न रखता हो। देखो—**अलामत जौहरिय्यह्**।

अलामत आ़मह् āalámat-āámah
अलामत मिज़ाजियह् āalámat-mizájiyah
—अ० सामान्य लक्षण, मिज़ाजी अलामत, वह लक्षण जिसका सम्बन्ध समग्र शरीर से हो या जो समग्र शरीर में प्रगट हो। जैसे ज्वर में सम्पूर्ण देह का गर्म होजाना।

अलामत जौहरिय्यह् āalámat-jouhariyyah-अ० (१) वह लक्षण जो अवयव के शरीर व सत्ता से अर्थात् उनकी सृष्टि व उत्पत्ति से सम्बन्ध रखता है। (२) जो लक्षण अवयव के अवारिज़ (कुरूपता वा सौंदर्य)से संबंध रखते हों उन्हें "अलामात अ़र्ज़िय्यह्" कहते हैं। और (३) उन लक्षणों को जो अवयवों के कार्य से सम्बन्ध रखते हों उन्हें "अलामात तमामिय्यह्" कहते हैं।

अलामत तमामिय्यह् āalámat-tamámiyyah-अ० वह लक्षण जो किसी अवयव की क्रिया से सम्बन्ध रखता हो, उसके शरीर वा रूप से उसका कोई भी सम्बन्ध न हो। देखो—**अलामत जौहरिय्यह्**।

अलामत मक़ामिय्यह् āalámat-maqámiyyah—अ० स्थानीय लक्षण, वह लक्षण जिसका सम्बन्ध शरीर के किसी विशेष भाग से हो जैसे—स्थानीय शोथ। लोकल सिम्प्टम् (Local Symptom)-इं०।

अलामत मबय्यिनह् āalámata-mabayyinah
दलील dalíla
दलालत dalálata
अ० वह लक्षण जिससे वैद्य को रोग का पता लगे। उदाहरणतः नाड़ी व क़ारोरा (मूत्र) प्रभृति। इण्डिकेशन (Indication), साइन (Sign)—इं०।

अलामत मुख़्तलितह् āalámata-mukhtalitah—अलामत मुरक्कबह्—अ०। संयुक्त या मिश्रित लक्षण। वह लक्षण जो अन्य लक्षणों से संयुक्त या मिश्रित होकर व्यक्त होता है अर्थात् एक रोग के विभिन्न लक्षणों का परस्पर मिलकर प्रगट होना।

उदाहरणतः—ज्वर में शिरःशूल, इन्द्रियों का टूटना व मतली प्रभृति का परस्पर मिलकर प्रदर्शित होना। कम्प्लेक्स सिम्प्टम् (Complex symptom), सिण्ड्रोम (Syndrome)—इं०।

अलामत मुज़क्किरह् āalámata-muzakkirah—अ० स्मरण कराने वाला लक्षण, स्मारक चिन्ह, वह लक्षण जो किसी रोग द्वारा उपस्थित निर्बलता में व्यक्त होकर उस गत रोग को स्मरण कराए, परन्तु उस रोग से उसका कोई विशेष सम्बन्ध न हो। कन्सीक्युटिव सिम्प्टम (Consecutive symptom)—इं।

अलामत मुन्आ़किसह् āalámat-munāakisah—अ० परावर्तित लक्षण, वह लक्षण जो रोग से दूर किसी अवयव में प्रगट हो।

उदाहरण—वृक्कशूल में वमन होना या कतिपय मास्तिष्क रोगों और गर्भावस्था में वान्ति व उबकाई का आना। रिफ्लेक्स सिम्प्टम (Reflex symptom)

अलामत मुन्ज़िरह् āalámat-munzirah—अ० भयभीत करने वाला लक्षण, पूर्वरूप, वह लक्षण जो किसी रोगसे पूर्व उसके उत्पन्न होने का

भय दिखाए। उदाहरणतः—अपस्मार के दौरा से प्रथम देह के किसी भाग में सुरसुराहट प्रतीत होना मृगी होने का भय दिखाता है और वृद्धावस्था में सिर चकराना सिक्तह् (Apoplexy) के होने का भय उत्पन्न करता है। प्रीमॉनिटरी सिम्प्टम (Premoritary symptom), प्रोड्रोम (Prodrome) -इं०

अलामत मुश्तर्कह् āalámat-mushtar-kah-अ० सम्मिलित लक्षण, वह लक्षण जो कतिपय विभिन्न रोगों में सम्मिलित रूप से पाया जाए।

उदाहरण—वमन एक ऐसा लक्षण है जो आमाशय, मस्तिष्क, वृक्क तथा गर्भाशय प्रभृति रोगों में सम्मिलित रूप से प्रगट होता है। इक्विवोकल सिम्प्टम (Equivocal symptom)-इं०।

अलामत मुस्तक़ीमह् āalámat-mustaqí-mah-अ० अलामत ज़ातियह्। जातीय लक्षण, वह लक्षण जो बिना किसी लगाव के स्वयं रोग से उत्पन्न हो। जैसे शोथ में वेदना एवं दाह। डाइरेक्ट सिम्प्टम (Direct symptom), इडिओपैथिक सिम्प्टम (Idiopathic symptom)-इं०।

अलामत शिर्किय्यह् āalámat-ṣhirkiyyah -अ० अलामत अर्ज़िय्यह्, सानुबंधिक लक्षण, अ-ज़ी अलामत जो विकारी अवयव के सिवा किसी अन्य अवयव में केवल पारस्परिक सम्बन्ध के कारण प्रगट हो। जैसे हस्तपादस्थ क्षत प्रभृति में कक्ष या चड्डे की ग्रंथियों का शोथयुक्त हो जाना या वृक्क शोथ वा जरायु शोथ में वमन होना। सिम्पैथेटिक सिम्प्टम (Sympathetic symptom)-इं०।

अलामत हालिय्यह् āalámat-ḥáliyyah -अ० वह लक्षण जो अवयव की किसी विशेष अवस्था को प्रगट करे। स्टेटिक सिम्प्टम् (Static symptom), पैसिव सिम्प्टम (Passive symptom)-इं०।

अलामलक alámalak-(तिनकाबिन व तबरिस्तानी अंगूर वृक्ष के समान एक लता है जिसको 'फ़ाशरा' या "शिवलिङ्गी" कहते हैं। (Bryonia.)

अलामात āalámáta-अ० (ब० व०) देखो—अलामत (Symptoms)।

अलार alára-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] कपाट, किवाड़। [सं० अलात] अलाव। आग का ढेर। आँवाँ। भट्ठी।

अलाव aláva-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अलात=अंगार] आग का ढेर। धूनी। ज़ख़ीरा। कौड़ा। बॉनफायर (Bonfire)-इं०।

अलावु alávu-गु० आलू। (Potato.)

अलावुद्दीन āalávuddína-अबुलहसन बिन हाज़िमुल् मुल्कीयुल् क़र्शी। देखो—क़र्शी। See-Qarsí.

अलासः alásah-सं० पुं० जिह्वा स्फोट। जिह्वागत मुख रोग। एक रोग जिसमें जीभ के नीचे का भाग सूजकर पक जाता है और दाढ़ तन जाती है।

लक्षण—जिह्वा के नीचे जो प्रगाढ़ शोथ हो तो उसे कफ और रक्त की मूर्ति अलास नामक जिह्वा रोग कहते हैं। यह रोग बढ़कर जिह्वा को स्तंभित कर देता है और जड़ में से जिह्वा पाक को प्राप्त हो जाती है। यह कफ दोष के कारण होता है। उक्त कंटक रोग से जिह्वा भारी, मोटी और सेमल के काँटों जैसे मांसांकुरों से व्याप्त होती है। सु० नि० १६ अ०।

अलासफ़ास alásafása-यु० लिसानुल् अबल्, वृक्ष और घास के एक बीच बूटी है।

अलासि alási-बम्ब० अलसी, तीसी। Linseed (Linum usitatissimum)

अलिः alih-सं० पुं० } [स्त्री० अलिनी]
अलि ali-हिं० संज्ञा पुं० } (१) भ्रमर, भँवरा। लार्ज ब्लैक बी (Large black bee)-इं०। रत्ना०। (२) मद्य, मदिरा। स्पिरिचुअस लाइकर (Spirituous liquor.)-इं०। मे० लद्विक। (३) वृश्चिक, बिच्छू। स्कॉर्पिअन (A scorpion)-इं०।

हाराo । (४) काक, कौआ। को (A crow) -इं'o। (५) कोकिल, कोयल । इण्डियन कुक्कु An Indian cuckoo (Cuculus Indicus.) शo रo। (६) सखी (A woman's female friend or companion.) । (७) पंक्ति (A line, a row) । (८) कुत्ता (A dog)। (९) दे०-अली।

अलिआर aliára-सं० ज़ख़्मी, बन्दर्रा-बम्ब०। मद०। (Dodonaea viscosa) इं० मे० मे०।

अलिंजर alinjara-हिं० संज्ञा पुं० देखो-अलिंजरम्।

अलिकः alikah-सं० पुं०, क्लो०
अलिक alika-हिं० संज्ञा पुं०
(१) कपाल, गण्डस्थल, गाल । चीक (Cheek)-इं०। रा० नि० व० १८। (२) ललाट। कपाल। मस्तक। पेशानी। फॉरहेड (Forehead)-इं०। रत्ना०। (३) दे० अलि।

अलिक āalik-अ० प्रत्येक गोंद जो चबाई जा सके। (Resin) देखो—अलक।

अलिका aliká-सं० स्त्री०पाटली। (Bignonia Suaveolens.)

अलिक मत्स्यः alika-matsyah-सं० पुं० (१) अंगारा (Embers.)। (२) भिन्न तिल। (३) तैल भृष्ट मांस, तेल में भूना हुआ मांस। (४) पिष्टक विशेष।

अलिकुल् अम्बात āalikul-ambát-अ० बतम या उसके समान एक वृक्ष की गोंद है।

अलिकुल प्रिया alikul-priyá-सं० स्त्री० काष्ट शेवती, काठ गुलाब। काठ गोलाप-बं०। (Wild rose.) वैं० निघ०।

अलि (इल) कुल् बुतम āalikul-butam-अ० बुतमका गोंद,इलकुल् अम्बात। इसकी शुष्क गोंद को कलफ़ून कहते हैं। प्रकृति-कक्षा द्वितीयके अन्त में उष्ण व रूक्ष। स्वरूप—सुर्ख़, स्याह रंग का होता है। हानिकारक—उष्ण प्रकृति व वात तन्तुओं को। दर्पघ्न—सिकञ्जबीन व शुद्ध शहद। प्रतिनिधि—मस्तगी, रातीनज उचित मात्रा में। मुख्य गुण—आमाशय को बलप्रद, मूत्रल व कासघ्न। बु० मु०।

गुण, कर्म, प्रयोग—दोषोंको परिपक्व करता एवं उनके कुधाम (खाशनी को) साम्यावस्थापर लाता, शोथ एवं वायु का लयकर्त्ता तथा कफज कास को लाभप्रद है। शुष्क एवं तर कंडू को लाभ पहुँचाता और प्रकृति को मृदु कर्त्ता है। निर्विषैल। (म० मु०)

विलायक, द्रावक, पाचन शक्ति को बल प्रदान कर्त्ता, मूत्र प्रवर्त्तक व शोधक और समग्र यूनानी हकीमों के निकट मस्तगी से श्रेष्ठतर है। इसका चबाना मस्तिष्क की आर्द्रता एवं श्लेष्मा का अभिशोषक और आमाशय बलप्रद है। यदि २॥ तो० इसकी गोंद को १ छटाँक बकरी के गुर्दे की चरबी के साथ पिघलाएँ और सब को तीन दिवस में खाएँ तो आर्द्र कास तथा मूर्च्छा के लिए अनुपम है। मधु के साथ आभ्यंतरिक क्षतों और वसा में पिघलाया हुआ अवयवों की पीड़ा को दूर करने वाला है।

अलिकुल सङ्कुला alikul-sankulá-सं० स्त्री० कंटक शेवती, काँटा शेवती। कुब्जका वृक्ष, कोंकन देशीय पुष्प वृक्ष। (Trapa bispinosa.) रा० नि० व० १०। भ० पू० १ भा० देखो—कुब्जकः।

अलिगर्द्दः aligarddah सं० पुं० जल सर्प। (A naquatic serpent.) श० र०।

अलिज़रीन alizarin-इं० नारंजी सुर्ख़ रंग का एक सत्व जो मञ्जिष्ठा में पाया जाता है। (An orange-red principle found in "Rubia cordifolia") इं० मे० मे०।

अलिजिह्वा,-ह्विका alijihvá,-hviká-सं० स्त्री० (Uvula) क्षुद्रजिह्विका, आलजिब, गले की घाँटी। गले के भीतर का कौवा। काक, कौव्वा, अलिजिह्वा, शुंडिका, कोमल तालु के पिछले भाग में एक खूँटी सी दिखाई देने वाली चीज। श० र०।

अलिञ्जरम् alinjaram-सं० क्ली० (१) फल विशेष। फुटी विशेष-बं०। चिरफोटी-मह०।

गुण—अलिञ्जर रूक्ष शीतल तथा भेदक है और कसेला, मधुर, क्षारीय, तिक्त तथा पाक में कटु और स्वादिष्ट वातकारक तथा श्वास, काम और श्लेष्म विनाशक है। वै० निघ०। (२) बहुजलधर-मृण्मय पात्र विशेष। सुराही। पानी रखने के लिए मिट्टी का बरतन। झज्झर। घड़ा।

अलिता alitá-सं० स्त्री० अलक्तक। आलता -बं०। (Lac, the red animal dye so called.)

गुण—अलिता उष्ण, तिक्त कफ वात तथा व्रण नाशक है। व्यंग, अरुची, कं: रोग और व्रणदोष नाशक है। पूर्व महर्षियों ने इसके अन्य गुण लाक्षा के सदृश वर्णन किए हैं। वै० निघ०।

अलिदूर्व्वा alidúrvvá-सं० स्त्री० मालादूर्व्वा, माला दूब। रा० नि० व० ८। See-Málá-dúrvvá

अलिन्थः alinthah-सं० पुं० (Allantois) भ्रूण का वह आवरण जिसमें उसका मूत्र एकत्रित रहता है। कीसतुल् बौल्-अ०।

अलिन्द alinda-हिं० संज्ञा पुं० (१) (Auricle)। (२) [सं० अलीन्द्र] भौंरा। (A wasp)

अलिपकः alipakah सं० पुं०
अलिपक álipaka-हिं० संज्ञा पुं०
(१) भ्रमर, भँवरा (A large black bee)। (२) कोकिल, कोयल। An Indian cuckoo (Cuculus Indicus.)। (३) कुक्कुर, कुत्ता (A dog.)। सर्व्वत्र मे० कचतुष्क।

अलिपत्रिका alipatriká-सं०(हिं० संज्ञा) स्त्री० वृश्चिककाली, बिछाती, बिछुआ घास। (Fragia involucrata.) रा० नि० व० ५।

अलिपर्णिका,-र्णी aliparniká,-rní-सं० स्त्री० वृश्चिककाली। बिछाति, बिछुटी-बं०। (Fragia involucrata.) रा० नि० व० ६।

अलिप्रियम् alipriyam-सं० क्ली० (१) रक्तोत्पल, लाल कमल। (Nelumbium speciosum.) भिका०। -पुं० (२) धारा कदम्ब (Adina cordifolia.)। (३) आम्र वृक्ष, आम। A mango tree (Mangifera Indica.) श० र०। (४) कदम्ब वृक्ष। (Anthocephalus kadamba.) भा० पू० १ भा०।

अलिप्रिया alipriyá-सं० स्त्री० (१) पाटला। पारुल गाछ-बं०। (Bignonia suaveolens.) प० मु०। (२) भूजम्बू वृक्ष, काक जम्बू। (Ardisia solanacea) वै० निघ०।

अलिप्सा alipsá-सं० स्त्री० अनिच्छा। (Indifference)

अलिफ़ान alifán-अ० बाजू के अन्दर की दो रगें।

अलिबौफ़ीर डी बेञ्ज़ाइन aliboufier de benjoin-फ्रां० लुबान, ऊद-भा० बाजा०। Gum benjamin tree (Styrax benzoin, Dryander.) फा० इं० २ भा०।

अलिमकः alimakah-सं० पुं० (१) भेक (A frog)। (२) कोकिल, कोयल (An Indian cuckoo)। (३) भ्रमर, भँवरा (A large black bee)। (४) पद्म केशर (See-padmakeshar.)। (५) मधूक वृक्ष, महुआ। (Bassia latifolia) मे० चतुष्क

अलिमोदा alimodá-सं० स्त्री० गणिकारिका। गणिरी-बं०। (Premna spinosa.) रा० नि० व० ६। देखो—अरणी।

अलिमोहिनी ailmohiní-सं० स्त्री० केविका पुष्प वृक्ष, केवार। रा० नि० व० १०। देखो—केविका (Keviká)।

अलिम्पकः,-म्बकः alimpakah,-moakah -सं० पुं० (१) कोकिल, कोयल (An Indian cuckoo)। (२) मधुमक्षिका,

मधु मक्खी, शहदकी मक्खी (A bee)। (३) कुक्कुर कुत्ता (A dog)। (४) पद्म केशर। (See-padamkeshar) वै० निघ०।

अलिया aliyá-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० आलय] एक प्रकार की खारी।

अलिवल्लभा alivalladhá-सं० स्त्री० रक्त पाटला। (See-páṭalá) भा० पू० १ भा०।

अलिवाहिनी aliváhiní-सं० स्त्री० कोंकण देश प्रसिद्ध केविका वृक्ष। केवेर-हिं०। रा० नि० व० १०। See-keviká.

अलिविरई alivirai-ना० } चन्द्रसूर, अहलीव।
अलिवेरी aliveri-बं० } (Lepidium sativum.)

अलिश alisha-काश० }
अलिशि विरई alishi-virai- ना० }
अलसी, तीसी। Linseed (Linum usitatissimum, *Linn.*) फा० इं० १ भा०। देखो—अतसी।

अलिसमाकुलः alisamákulah-सं० पुं० पुष्प वृक्ष विशेष। दवणा सेवन्ती -महं०। वै० निघ०।

अली (इन्) alí "in"-सं० पुं० }
अली alí-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अलि] }
(१) वृश्चिक, बिच्छू (A scorpion.)। (२) भ्रमर, भँवरा। (A large black bee) मे०।-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० आली] (१) सखी, सहेली, सहचरी। (A female friend.)। (२) श्रेणी, पंक्ति, क़तार।

अली alí-पं० अमलतास। (Cassia Fistula.)

अलीकः alíkb-सं० पुं० एक प्रकार का सर्प। अथर्व०। सू० १३। ५। का० ५।

अलीक़ āalíq-अ० नबलाब, इश्क पेचा। (Ipcmoea quamoclit.)

अलीकम् alíkam-सं० क्ली० ललाट, मस्तक, पेशानी। (Forehead) हे० च०।

अलीकः alíkah-सं० पुं० काकोली पुष्प, फल व पत्र।

अलीक मत्स्यः alíka-matsyah-सं० पुं० अङ्गार पर पकाकर तिल तैल में भूनी हुई उड़द की पिट्ठी। बड़े नागरबेल पानको उड़द की पिट्ठी में लपेटकर युक्ति से कड़ाई में पकाएँ, फिर छोटे छोटे कतर के तेलमें भून लें तो "अलीक मत्स्य" तैयार होते हैं। इनको बैंगन के भुरते के साथ अथवा बथुए के साग से या रायते से भक्षण करें भा० पू० २ भा०।

अलीकोचक alíkochak-हिं० तेलनी मक्खी ज़रारीह-अ०। (Cantharidis.)

अलीगड्ड alígadda-द० प्याज, पलांडु। (Allium cepa, *Linn.*)

अलीनकम् alínakam-सं० क्ली० वङ्ग। (Tin.) हे० च०

अलीफ़ीन alífína-फ़ि० हाथी, हस्ति। (An elephant.)

अलीफूल āalíphúla-द० नीलोफ़र, छोटा कमल। (Nymphæa edulis, *D. C.*) स० फा० इं०।

अली बिन अब्बास āalí-bin-āabbása-अली अब्बास मजूसी -अ०। Ali bin alabbas almajusi, Alli Abbas. यह प्रसिद्ध ईरानी हकीम गबर अर्थात् आतश परस्त (अग्निपूजक) था। इसी कारण यह मजूसी अर्थात् आतशपरस्त (अग्निपूजक) की उपाधि से विभूषित है। यह ईसवी सन की १० वीं शताब्दि के उत्तरार्ध में अहवाज़ (ईरान देश) नामक स्थानमें उत्पन्न हुआ और इसने अबी माहर मूसा बिन सय्यार से वैद्यक विद्या की शिक्षा प्राप्त की। यह अपने समय का अत्यन्त महत्व पूर्ण और श्रेष्ट हकीम हो चुका है। यह सुल्तान अज़दुद्दौला बिन बूयह् देल्मी का दरबारी चिकित्सक था। प्रसिद्ध तिब्बी ग्रंथ "अल्मलिकी" या "कामिलुस्सनाअह्" जिसको अंगरेजी ग्रंथों में लिबर रेजिस (Liber Regis'Kingly-

book") अर्थात् राजकीय ग्रंथ लिखा है, यह आपही के लिखे हुए ग्रंथ रत्नों में से है। इन्होंने यह ग्रंथ उल्लिखित राजा के लिए ही लिखा था। इस कारण इसे उसी के नामसे अभिहित किया। यह अपने काल का अनुपम ग्रंथ तिब्ब इल्मी व अमली दो भागों में विभाजित है और प्रत्येक भाग के कतिपय खण्ड हैं। अमली अर्थात् प्रायोगिक भाग में व्यवच्छेद, इन्द्रियव्यापार, सामान्य विकृति विज्ञान, गुह्येन्द्रिय संबंधी रोग, त्वक् विकार, व्रण तथा क्षत प्रभृति का वर्णन है। और इल्मी में स्वास्थ्य संरक्षण, आहार, निघण्टु (औषधनिर्माण), विशेष विकृति विज्ञान और चिकित्सा का सविस्तार वर्णन है। क़ानून शेख़ के प्रकाशित होने से पूर्व अरब व अजम में यह वैद्यक की एक अत्यन्त प्रशस्त व प्रामाणिक पुस्तक मानी जाती थी। कई बार लेटिन भाषा में इसका अनुवाद किया गया। यह पुस्तक मिश्र के मुद्रणालय में अब भी मिलती है।

अलीबिन ईसा āali-bin-āísá–अ० ईसा बिन अली (Ali bin Isa, Jesus Haly).

यह अराक़ अरब के प्रसिद्ध नेत्रचिकित्सक पाँचवीं शताब्दि हिजूरी या ग्यारहवीं शताब्दि मसीही के पूर्वार्द्ध में हुए। यह नेत्ररोगों की चिकित्सा में अत्यन्त सिद्ध हस्त थे। यही नहीं, प्रत्युत यह अपने काल के इमाम माने गए हैं। और समकालीन और पश्चात् कालीन सम्पूर्ण चिकित्सकों ने इस विषय अर्थात् चक्षुरोग की चिकित्सा एवं रोग विनिश्चीकरण में अली बिन ईसा का ही अनुकरण किया है।

अली बिन ईसा के ग्रन्थों में केवल एक ग्रंथ "तज़्किरतुल् कुह्हालीन" (Book of Memoranda for Eye Doctors.) प्राप्त होता है। चक्षुरोगों के निदान व चिकित्सा पर इस ढंग का अपने समय का यह एक अनुपम ग्रंथ है। यूनानी चिकित्सा में चक्षुरोगों में यह आज पर्यन्त भी एक उत्तम ग्रंथ माना जाता है।

अली बिन रिज़्वान āali-bin-rizván–अ० (alí bin Rudhwan Rodoam). अबुल् हसन अली बिन रिज़्वान बिन अली बिन जअफ़र। इनकी उत्पत्ति मिश्र देश के जीज़ स्थान में हुई थी। किसी २ अंग्रेज़ी ग्रंथ में लिखा है कि यह ख़लीफ़हुल् हाकिम के काल में सन् १०६८ ई० में मिश्र में एक उच्चकोटि के हकीम प्रसिद्ध थे। इनके पिता रिज़्वान बिन अली तनूर बनाने वाले थे। अली बिन रिज़्वान ने एक साधारण पेशावर की सन्तान के सदृश पालन पोषण व शिक्षा पाई और क्योंकि स्वभावतः इनका ध्यान योग्यता व विद्या प्राप्ति की ओर था। इसलिए किसी पेशा में तल्लीन होने की अपेक्षा उन्हें विद्या–विलास अधिक प्रिय व रुचिकर था। ३२ वर्ष की अवस्था में यह एक उच्चकोटि के और नामवर तबीब प्रसिद्ध हो गए और ६०, ६५ वर्ष की अवस्था तक अत्यन्त सफलतापूर्वक चिकित्सा कार्य करते रहे। परन्तु यह कुछ तुन्द प्रकृति के मशहूर थे। यह अपने समकालीन और कोई कोई पूर्वकालीन चिकित्सकों, यथा—शेख़ुर्रईस व ज़करिया राज़ी प्रभृति के वचनों का खंडन किया करते थे। किसी किसी समय अनुचित वचन कह जाते थे।

अली बिन रिज़्वान चिकित्सा में यह केवल उस्ताद ख़िर्द के शिष्य थे। पुस्तकों के सिवा इन्होंने यह विद्या किसी से नहीं पढ़ी। इनका वचन है कि विद्या जितना अध्ययन से बढ़ती है उतना पाठ पाठ पढ़ने से कदापि नहीं बढ़ सकती। सन् ४५३ ई० में ख़लीफ़ा मुस्तनसर बिल्ला के काल में आपका स्वर्गवास हुआ। आपने एक सौ से अधिक ग्रंथ लिखे हैं।

अली(ले)मड़ी alí (le) marí–हिं० वरुण, बरनावृक्ष। (Cratœva tapia.)

अलील alíla–हिं० वि० [अ०] बीमार, रुग्ण।

अलीवन alívan–यु० शेर। (A lion.)

अलीवह alívah–यु० जैतून। (Olive.)

अली(ले)वा alí,-le-vá–रू० जंगली अंजीर। (Wild fig.)

अलीष्टः alíshṭah-सं० पुं० तिलक वृक्ष,तिल, तिल्ली। तिल गाछ–बं०। (Sesamum Indicum.) वै० निघ०।

अलीस alísa--एक बड़ी मछली जिसका शिकार करना बहुत दुस्तर है।

अलुः aluh-सं० पुं०,स्त्री० (१)गलन्तिका (Seegalantiká)। (२) आलु (Potato.)। (३)तुलसी वृक्ष(Ocimum sanctum)। -क्ली० (४) मूल (Root) मे० कद्विक०।

अलुई aluí-बं० कालमेघ, यवतिक्त,किर्यात-हिं०। (Andrographis paniculata, Nees.) फा० इं० ३ भा०।

अलुकम् alukam-सं० क्ली० (१) आलुक साधारण, आलू। An esculent root (Arum campanulatum.) (२) आलूबोखारा (Prunus communis.)। (३) आमिष, मांस। (Flesh.)

अलुचा aluchá-म० आलूचा-हिं०। आलूक -सं०।

अलुदेल aludel-सिं० देल। (Artocarpus nobilis.) इसका बीज खाद्य है। मेमा०।

अलुबियूम alu-beeyúm-मल० जुन्दबेदस्तर। (Castoreum.) इं० मे० मे०।

अलुमीनम aluminama-हिं० संज्ञा पुं० [अं० एलुमीनियम] Aluminium.

अलुवह aluvah-फा० (१) ऊद पर्वर्दह्। (२) उकाब। (An eagle)

अलूक alúka-हिं० आलू। Potato (Arum campanulatum.)

अलूक़ alúqa-अ० पारद। Mercury(Hydrargyrum.)

अलूक़ी ăalúqí-मुलेठी, यष्टिमधु। (Glycyrrhizæ.)

अलूचा alúchá-आलूचा।

अलूज़ alúja-अ० मुखझमह् भेद। फ़ारसी में काज़रीसक कहते हैं।

अलूनी alúní-बरब० सोफ़ुज़ जूद नामक एक अप्रसिद्ध बूटी है।

अलूफ़न ăalúfan-यु० मद्यभेद जिसको मैफ़-ख़्तज (खटमिट्ठा) कहते हैं।

अलूफ़स ăalúfas खुब्बाज़ी। (Malva Sylvestris, Linn.)

अलूयन alúyan-यु० एक बूटी है जो अराक में उत्पन्न होती है। एक गज़ के बराबर ऊँची होती है। शाखाएँ रक्ताभ पतली और कठिन होती हैं। छिलका मृदु और मूल चुकन्दर के समान होता है।

अलूयास alúyas-लें० सिब्र सक़ोतरी, मक़ोतरी एलुआ। (Aloe socotrine.)

अलूया alúyá-फ़ा० लोबिया। (Dolichos sinensis.)

अलूसन alúsana } -यु० अब्रमून (कपास
अलसून alúsúna } के पौधे के समान एक पौधा है)।

अलूह् ăalúh-सिरि० एलुआ, सिब्र। (Aloes.)

अले aleṅ-मह० अदरक, आदी। (Zingiber officinalis.) इं० मे० मे०।

अलेई aleí-मह० (Dalbergia volubilis, Roxb.) फा० इं० १ भा०।

अलेक्सीन ulexine-इं०

यह एक वर्णरहित, पीताभश्वेत, स्फटिकीय क्षारोद है जो कॉमन गोर्स (Common-gorse) या फ़र्ज़ी (Furze) या ह्विन (Whin) नामक वृक्ष से ,जिसका वानस्पतिक नाम अलेक्स युरोपियस(Ulex Europæus) है, प्राप्त होता है। यह सायटिसस् लेबर्नम् (Cytisus laburnum) द्वारा पाए जाने वाले सायटीसीन (Cytisine) नामक सत्व के समान होता है। अधिक मात्रा में यह सबल श्वासोच्छ्वास विषयक विष तथा चेष्टावहा नाड़ियों को वातग्रस्त करने वाला है। इसमें निश्चित मूत्रल प्रभाव विद्यमान है तथा हृद्रोग जन्य जलोदर में इसका उपयोग होता है। इसको $\frac{1}{६२}$ ग्रेन से अधिक मात्रा में नहीं प्रयुक्त करना चाहिए। जल में सुविलेय हाइड्रोब्रोमाइड नामक लवण प्रयोजनीय है। इसको स्ट्रिक्नीन

कुचलीन का अगद बतलाया जाता है। (हि० मे० मे०)।

अलेथी alethí–पं० कुकपाल कुड़ा--ते०।

अलेन alen--मह० सोंठ, शुंठि। (Dry ginger.)

अलैकः alaikah-सं० पुं० काकोली पुष्प। See-kákolí pushpa.

अलैग्ज़ेण्ड्रियल लॉरेल alexandrial laurel -इं० सुल्तान चम्पा-हिं०। पुन्नाग-सं०। (Calophyllum Inophyllum, *Linn.*) फा० इं० १ भा०।

अलोणा aloṇá } -हिं० वि० [सं० अलवण] [स्त्री० अलोनी]
अलोना aloná }
अलुना, बिना नमक का, जिसमें नमक न पड़ा हो। स्वादरहित। (Not salt, fresh, saltless, insipid.)

अलोपा alopá–हिं० संज्ञा पुं० [सं० अलोप] एक पेड़ जो सदा हरा रहता है। इसके हीर की लाल और चिकनी लकड़ी बहुत मज़बूत होती है, नाव और गाड़ी बनाने में काम आती है तथा घरों में लगती है। इसकी लकड़ी पानी में ख़राब नहीं होती।

अलोमशः alomaṣhah--सं० पुं० मत्स्य विशेष, मछली। (A kind of fish.)

गुण—मत्स्य मांस बलकर, शुक्रवर्द्धक और पुष्टिकर है। रा० नि० व० १०।

अलोमशा alomashá--सं० स्त्री० वृक्ष विशेष। कांगभाड़--मह०। (A kind of tree.) वै० निघ०।

अलोम्बे alombe--बम्ब० मांसखेल--काश०। मोकशा, चम्बा, खुम्बह्।

अलोहितम् alohitam--सं० क्ली० (१) रक्त पद्म, लाल कमल (Red lotus.)। (२) ईषद्रक्त पद्म।

अलोहित alohita--हिं० संज्ञा पुं० श्वेत।

अलोहितसत्वम् alohita-satvam-सं० क्ली० (White carpuscle.) श्वेताणु।

अलौह शस्त्र alouha-ṣhastra--सं० पुं० घन-शस्त्र। वह शस्त्र जो लोहे द्वारा निर्मित न हो। वा० सू० अ० २६।

अल alam--अव्य० देखो--अलम्।

अलंबुष alambusha--हिं० संज्ञा पुं० [सं० अलम्बुषः]

अलंबुषा alambushá--हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० अलम्बुषा]

अल्‌आफ़्स alāafṣa-अ० अफ़्स अफ़्स सुल् मलूत। माजूफल, मायिका-हिं०। Galls (Galla.) देखो-- मायाफल।

अल्‌आबह् al-āabah-अ० (ब० व०), लुआब (ए० व०) Mucilage।

अल्‌आल् āalāal }
उल्‌उल् āulāul } -अ० (१) अस्थिवत्
अल्‌आल āalāala }
उपास्थि जो आमाशयिक द्वार या कौड़ी के स्थान पर होती है।

(२) शिश्न, शिथिलावस्था का शिश्न। (Flaccid penis-)

अल्‌आ alāá–अ० अंगुली की अस्थियाँ।

अल् इत्‌रियून al-itriyúna–यु० क़िस्साउल्-हिमार, बिन्दाल, देवदाली। (Ecbellium elaterium.)

अल्‌ऊनह् al-āúnah-अ० ग़ाज़ह्, गुलाबी उबटन।

अलउश्बतुल् हब्शियह् alāuṣhbatul-habshiyah–अ० जदा०, कस्सू, कौसू–उ०,फ़ा०। Cusso (Kousso).

अल्कः alkah–सं० पुं० (१) वृक्ष विशेष (A tree.)। (२) शरीरावयव। (An organ of the body.) वै० निघ०।

अल्क़ह् āalqah–अ० वह कपड़ा जो बालक उत्पन्न होने के पश्चात् आरम्भ में उस पर लपेटा जाता है।

अल्क़म् alqam--अ० इन्द्रायन का फल।

अल्क़म् āalqam--अ० हन्ज़ल। इन्द्रायन--हिं०। (Citrullus colocynthes)। (२) कड़ुआ पौधा। (३) बिन्दाल।

अल्क alka–अज्ञात।

अल्कत्तानुल् मुस्हिल् alkattánul-mus-hil–अ० कत्तान मुस्हिल। सारक अतसी। Purging flax (Linum catharticum.)

अल्कन alkan–अ० लुकनतवाला, वह जो अटक अटक कर बोले। लिस्पर (Lisper)-इं०। (२) गुंग, गुंगा, गूँगा। डम्ब (Dumb)-इं०।

अल्क़म् alqam–अ० इन्द्रायण। (Citrullus colocynthes)

अल्क़म्बीत alqumbíta-अ० फूलकोबी। (Brassica botrytis) इं० हिं० गा०।

अल्काक्नज alkákanaja–अ० राजपूतिका, वन पूतिका–सं०। पपोटन–हिं०। Alkekengi (Solanum vesecareum.) देखो—काकनज।

अल्कादुल्हिन्दी alkádul-hindí–अ० कृष्ण खदिरसार, काला कत्था। Black catechu (Catechu nigrum).

अल्किल्सुल् माई alkilsulmái
अल्किल्सुल् मुतफ़्फ़ा alkilsul-mutaffá
–अ० शांतचूर्ण, बुझाया हुआ चूना। आहक आब दीदह्–फ़ा०। Slaked lime (Calcii hydros.)

अल्क़ी áalqí-कल्लज;नल्लज। हीथ(Heath)-इं०। Erica–ले०। (Portugal broom.) इं० हिं० गा०।

अल्कीना alkíná-अ० कीना कीना। ज्वरहर त्वक्, सिन्कोना। Cinchona Bark (Cinchonœ Cortex.)

अल्कीनाउल् हुम्रा alkínául-humrá–अ० लाल सिङ्कोना-हिं०। बर्क सुर्ख़–फ़ा०। Red Cinchona bark (Cinchonœ rubrae cortex.)

अल्क़ुमिहुल् अस्वद alqumihul-asvad -अ० शैलम। गन्दुम-दीवाना-फ़ा०। Ergot (Ergota). देखो—अर्गोटा।

अल्कुसा alkusá
अल्कुसी alkusí
-सं० (१) अकासबेल। (Cuscuta reflexa.)।(२) केवाँच। (Mucuna pruriens)

अल्कुहॉल alcohol
अल्कुहा(हा)ल मुत्लक़ alkuhá-o-l mutlaq
अ० मद्यसार, ऐलकोहल। Alcohol (Alcohol absolutum.)

अल्केनाइट alkanite-इं०
अल्कनेट alkanet
रतनजोत। (Ratanajota.)

अल्कन्ना टिङ्क्टोरिया alkanna tinctoria, *Tausch.*)-ले० रतनजोत। अलख़न्ना-अ०। (Alkanet) फा० इं० २ भा०।

अल्कली alkalí-इं० क्षार।

अल्कैकनज alkekengi-इं० काकनज, पपोटन। (Solanum vesecareum.)

अल्कोहॉल alcohol–इं० मद्यसार,। देखो—ऐलकोहल।

अल्ख़न्ना alkhanná-अ० रतनजोत। (Alkanet.) फा० इं० २ भा०।

अल्ख़र्बकुल् अस्वद alkharbaqul-asvada –अ० कुटकी कटुकी। (Helleborus)

अल्ख़श्बुल् मुर्र alkhashbul-murra-अ० चोब कासिया-फ़ा०। Quassia wood (Quassiœ lignum.)

अल्ख़स्सुज़्ज़ह्म alkhassuzzahm-अ० काहू का दरख़्त, काहू वृक्ष। (Lactuca virosa.)

अल्गुसी algusí
अल्गुसी लता algusí-latá
-सं० अमरबेल, अकाशबेल। (Cuscuta reflexa) मेमो०।

अल्गण्डु algandú
अल्गण्डून् algandún
-सं० कीट जिनके काटने से खाज पैदा हो। अथ०। सू० ३१। ३। का० २।

अल्जज़्ज़ार aljazzár–अ० अबु जाफ़र अह्मद बिन इब्राहीमुजज़्ज़ार क़ैरवाँ का निवासी और हकीम इस्हाक़ बिन क़ुस्तार यहूदी के शिष्य थे। आपके लिखित ग्रंथ हिदायतुल् ग़ुर्बा और एक

और वैद्यक ग्रंथ यूनानी व लेटिन तथा इब्रानी भाषाओं में अनूदित हुए हैं। मिश्र में आपने प्लेग के सम्बन्ध में अत्युत्तम अनुसंधान किए थे। (१) अलजिज़ारह् (Algizar)। (२) अलगज़िरह्। (Algazirah)

अलजमरह aljamarah–अ० (Anthrax) देखो—ऐन्थ्रैक्स।

अल्जावी aljáví--अ० जावी। देवधूप, लोबान, राजराल। Benzoin (Benzoinum) म० अ० डॉ०।

अल्जौज़ुल्मुक़ई aljouzul-muqaí–अ० अज़ाराक़ी, क़ातिलुल्कल्ब। कुचिला, विष मुष्टि-हिं०। (Nux vomica)

अल्टर्कम् altercum–लै० अजवाइन खुरासानी, पारसीक यमानी। (Hyocyamus niger) फा० इं० २ भा०।

अल्ट्रा वायलेटरेज़ ultra-violet-rays–इं० प्रकाश जिसकी लहरें हमको दृष्टिगोचर नहीं होतीं। इनके त्वचा पर असर पड़ने से हमारे शरीर में खाद्योज ४ बनता है। देखो—खाद्योज।

अल्तमाक़ुन altamáqun—यु० जावित्री। (Mace)

अल्तअ altaā–अ० जिसके दाँत गिर कर केवल जड़ें शेष रह गई हों।

अल्तुस्त altusta—मीअहे साइलह् प्रसिद्ध। सि(शि)लारस। (Styrax prœparatus).

अल्द āalda–अ० (१) ग्रीवा की नाड़ी, ग्रैव बोध तन्तु (Cervical nerve.)। (२) कठोरता। सख़्ती। (Hardness)

अल्नग़्ल alnaghla–एक बूटी जो बिषखपरा के समान होती है।

अल्नीयून alníyún–यु० रासन। (Inula helenium) इं० हैं० गा०।

अल्प alpa–हिं० वि० [सं०] थोड़ा, किञ्चित, कुछ कम, न्यून (Little, few)। (२) छोटा। (small, short.)

अल्पम् alpam–मल० (Bragantia wallichii.)

अल्पकः alpakah–सं० पुं०
अल्पक alpaka-हिं० संज्ञा पुं०
} यास क्षुप। जवास का पौधा। दुरालभा। (Alhagi maurorum.) रा०।

–वि० [सं०] थोड़ा, कम।

अल्पकेशिका alpakeshiká
अल्प केशी alpakeshí
} –सं० स्त्री० भूतकेशी, भूतकेश (Corydalis govoniana.)। चामर कषा-बं०। प० मु०। र० मा०। रत्ना०।

अल्पगन्धम् alpa-gandham–सं० क्ली०
अल्पगंध alpa-gandha–हिं० संज्ञा पुं०
} (१) रक्त कमल। (The red lotus.) वै० निघ०। (२) रक्त कैरव, रक्त कुमुदनी, लालकूँई।

अल्पगोधूमः alpa-godhúmah–सं० पुं० तृण गोधूम। प० मु०। मद० व० १०। (Trina godhúma.)

अल्प घण्टिका alpa-ghantiká–सं० स्त्री० ह्रस्व शण पुष्पी, लघु शण वृक्ष। सन–हिं०। लघु शण गाछ-बं०। लघुताग-मह०। (Crotalaria juncea.)

अल्पजीवी alpa-jíví–हिं० वि० [सं० अल्पजीविन्] थोड़ा जीने वाला। जिसकी आयु कम हो। अल्पायु।

अल्प ज्वराङ्कुशोरसः alpa-jvaránkusho-rasah–सं० पुं० पारा, मीठा तेलिया, गन्धक प्रत्येक १–१ भा०, धत्तूरबीज ३ भा०, त्रिकुटा १२ भा० सबका महीन चूर्ण कर रक्खें। जम्भीरी या अदरख के रस के साथ इसके सेवन करने से हर प्रकार के ज्वरों का नाश होता है। भै० र० ज्वरे।

अल्पचेष्टावन्त alpa-cheshtá-vanta–सं० पुं० (Amphiarthrodial-) वह जिसमें थोड़ी ही गति संभव हो।

अल्पतनुः alpa-tanuh–सं० त्रि० खर्व। अम०। कुब्जक।

अल्पतर पार्ष्टकी alpatara-párshṭakí -सं० स्त्री० (Smaller occipital) पृष्ट की क्षुद्रतर पेशी।

अल्पदाहः alpa dáhah-सं० पुं०
अल्प दाहेष्ट alpa-dáheshṭa
अल्पदाहेष्टका पथ alpa-dáheshṭaká-patha

खस, उशीर। (Andropogon muricatus.)

अल्पतम प्रौथी alpatam-prouthí-सं० स्त्री० (Gluteus minimus.) नितम्बिका लघ्वी, नितम्बकी सबसे छोटी पेशी।

अल्प चेष्टावन्त संधिः alpa-cheshṭávanta-sandhih-सं० पु० (हिं० स्त्री०) (Partially movable joint, amphiarthrosis) वह चल या चेष्टावन्त संधियाँ जिनमें थोड़ी ही गति संभव है जैसे कशेरुकाओं के गात्रों की संधि, विटप संधि अक्षक और स्कंधास्थि की सन्धि, अक्षक और वक्षोऽस्थि की संधि आदि। मफ़्सिल अ़सिर, मफ़्सिल इर्तक़ाक़ी--अ०।

अल्पनायिकाचूर्णम् alpa-náyiká-chúrṇam -सं० क्लो० ग्रहणी में प्रयुक्त एक रस विशेष। पञ्च लवण और त्रिकुटा प्रत्येक ३-३ शाण गंधक ८ मा०, पारद ४ मा०, भंग १ पल १ शाण। निर्माण—गंधक और पारद की कज्जली कर फिर शेष ओषधियों का चूर्ण मिला कर भली प्रकार घोट कर रखें।

मात्रा—१ शाण।

अनुपान—काँजी।

अल्पनिद्रता alpa-nidratá-सं० स्त्री० पित्त। जन्य निद्राल्पता रोग। (Biliary Insomnia.) वै० नि०।

अल्पनैतवी alpa-naitaví-सं० स्त्री० (Psoas minor.) कटिलम्बिनी लघवी।

अल्प पत्रः alpa-patrah-सं० पु० (१) क्षुद्रपत्र तुलसी क्षुप। (Ocimum sanctum.) र० मा०।-क्लो० (२) रक्त पद्म, लाल कमल। (The red lotus.) र० मा०।

अल्प पत्रकः alpa-patrakah-सं० पु० गिरिज मधूक वृक्ष, पर्व्वतीय महुआ का पेड़। पाहाड़े मौल गाछ-बं०। Bassia latifolia (the wild var. of-) रत्ना०।

अल्प पत्रिका alpa-patriká सं० स्त्री० रक्त अपामार्ग क्षुप, लाल चिर्चिटा। (Achyranthus aspera rubrum.) रा० नि० व० ४।

अल्प पत्री alpa-patrí-सं० स्त्री० (१)मिश्रेया, सोआ (Fœniculum panmorium.)। (२) मुषली-सं०, हिं०। ताल मूली-बं०। (Hypoxis orchioides.)वै० निघ०।

अल्प पद्मम् alpa-padmam-सं० क्लो० रक्त पद्म, रक्तोत्पल। (The red lotus.) वै० निघ० द्रव्य गु०।

अल्प पर्णिका alpa-parṇiká -सं० स्त्री०
अल्प पर्णी alpa-parṇí मुद्गपर्णी, वनमूँग। मुगानी-बं०। (Phaseolus trilobus.) वै० निघ०।

अल्प पीना alpa-píná-सं० स्त्री० (Small saphenous.) पिण्डली की छोटी शिरा।

अल्प पुष्पिका alpa-pushpiká-सं० स्त्री० पीत करवीर, पीतपुष्प करवीर, पीले फूल का कनेर। Nerium odorum (The yellow var. of-) वै० निघ०।

अल्प प्रभाव alpa-prabháva-हिं० पु० मामूली असर।

अल्प प्रमाणकः alpa-pramáṇakah --सं० पु०
अल्प प्रमाणक alpa-pramáṇaka -हिं० संज्ञा पु०

लतापनस। र० मा०। चेलानक (१-खरबूज़ा। २-तरबूज़)। चेला तरमुज, खरमुज-बं०। वै० निघ०। (Cucurbita citrallus.) देखो—तरम्बुजम्।

अल्प मस्तकः alpa-mastakah सं० पु० चित्रक क्षुप, चीता। (Plumbago zeylánica.) वै० निघ०।

अल्प मक्षिका alpa-makshiká-सं० स्त्री० मक्षिका विशेष, छोटी (मधु) मक्खी। (A little bee.) वै० निघ०।

अल्प मानकः alpa-mánakah-सं० पुं० बिल्व गंध तुलसी। (A kind of Basil.) र०।

अल्प मारिषः alpa-márishah-सं० पुं० क्षुद्र मारिष। अल्प मरुवा, छोटा मर्षा, चौलाई -हिं०। काँटा नटिया वा चाँपा नटिया-बं०। थोर तांडुलजा-मह०। (Prickly amaranth.) अम०। इसके शाक के गुण-यह लघु, शीतवीर्य, रूक्ष, पित्त नाशक, कफ नाशक, मलमूत्र निस्सारक, रुचिकारक, दीपन और विष नाशक है। भा० पू० १ भा०। देखो—तण्डुलीय (चौलाई)।

अल्पम् alpam-मल० ब्रैगेण्टिया वैलिचिआई (Bragantia wallichii, *R. Br.*) -ले०।

रुद्रजटा या ईश्वरमूल वर्ग

(*N. O. Aristolochiaceæ.*)

उत्पत्ति-स्थान—डेकन प्रायद्वीप, पश्चिमी वन दक्षिण कोकणसे दक्षिणकी ओर। प्रयोगांश—पत्र।

उपयोग—इस वर्ग की बहुशः वनस्पतियों के समान इसकी पत्तियों का स्वरस विषाक्त सर्प दंश मुख्यतः कोबरा विष का अगद है। फ्रा-बार्तोलोमिओ (यात्रा पृ० ४१६) मालाबार की एक उक्ति का वर्णन करता है। उसका कहना है कि ज्यों ही अल्पम् शरीर में प्रविष्ट होता है त्योंही विष उसे छोड़कर पृथक् हो जाता है। फा० इं०।

पश्चिमी किनारे पर यह सर्व श्रेष्ठ सशक्त औषधों में से है। वैट०।

अल्परसा alpa-rasá-सं० स्त्री० हैमवती। रा० नि० व० २३। See-Haimavatí.

अल्पवयस्क alpa-vayaska-हिं० वि० [सं०] [स्त्री० अल्पवयस्का] छोटी अवस्था का। थोड़ी उम्र का। कमसिन।

अल्पवर्त्तकः alpa-varttakah-सं० पुं० तित्तिर पक्षी, तीतर। A partridge (Perdix francolinus.) मद० व० १२।

अल्प-शाष्कुली alpa-ṣháshkulí-सं० स्त्री० (Helicis minor.)

अल्पशुक्र alpa-ṣhukra-सं० वि० अल्प वीर्य।

अल्पशुक्रता alpa-ṣhukratá-सं० स्त्री० पित्त जन्य शुक्राल्पता रोग, वीर्य की कमी। वै० निघ०।

अल्पवर्त्तुला alpa-vartulá-सं० स्त्री० (Teres minor.) वेलना लघ्वी।

अल्पशोफः alpa-ṣhophah-सं० पुं० मर्वादि रोग। वै० निघ०

अल्पस्फैची alpa-sphaichí—सं० स्त्री० (small sciatic nerve.) गृध्रस्या ह्रस्वा नाड़ी।

अल्पहार्दी alpa-hárdí-सं० स्त्री० हार्दीया ह्रस्वा। (Small cardiac.)

अल्पक्षुपा alpa-kshupá-सं० स्त्री० ह्रस्व, लज्जालुका। वै० निघ०। बड़ी लजालू। रा० नि०। वृहद्दला।

अल्पाख्यः alpákhyah-सं० पुं० नेत्र रोगान्तर्गत एक प्रकार का पिल्ल [illegible] विशेष। वा० उ० अ० १६।

अल्पायुः alpáyuh-सं० पुं०, त्रि०
अल्पायु alpáyu-हिं० संज्ञा पुं०

(१) छाग, छागल, बकरा (Goat.)। -वि० [सं०]। थोड़ी आयु वाला। जो थोड़े दिन जिए। जो छोटी अवस्था में मरे। अल्प जीवी, शीघ्र मृत्यु, शीघ्र मरने वाला। (Shortlived, young- of a few years.)

अल्पायुषी alpáyushí-सं० स्त्री० कटूकली, ताली कोरिफा अम्ब्रेक्युलिफेरा (Corypha umbraculifera, *Linn.*)-ले०। टाली-पॉट ('Tali pot) या फैन-पाम (Fan-palm.) -इं०। बजर-बट्टू-हिं०। ताली-बं०। कौंड-पाथी,

शेद्लम्-ता०। श्री-तलमु-ते०। बिने, श्री ताली-कना०। कुट-पाम, ताली-पान-मल०। तालट-मड्डु-फों०। ताल-सिं०। पेबेङ्ग-बं०।

ताल वर्ग
(N. O. Palmaceæ.)

उत्पत्ति-स्थान - दक्षिण भारत। प्रयोगांश—पत्र वा सागू।

उपयोग—उक्त वृक्ष के गूदे से एक भाँति का सागू प्राप्त होता है। लोग इसे ओखली में कूट कर आटा बनाते हैं और इसकी रोटी बनाकर फसल पकनेसे प्रथम इसे अनाजके स्थान में व्यवहार करते हैं। इसका स्वाद श्वेत रोटिका के समान होता है। साधारणतः इसे निर्धन व्यक्ति व्यवहार में लाते हैं। इसकी काँजी भी तैयार की जाती है जो सागू, आरारूट, यव वा जई के समान एवं लगभग उतनी ही पोषक होती है। इं० मे० मे०।

अल्पास्थि alpásthi-सं० क्ली० परुषक फल, फ(फा)लसा। (Grewia Asiatica.) रा० नि० व० ११। भा० पू० १ भा०।

अल्पाहार alpáhára-हिं० पुं० थोड़ा खाना, लघुआहार। (Moderation, Abstinence.)

अल्पिका alpiká-सं० स्त्री० (१) वन मक्षिका जाति, डाँस। (A large mosquito, a gadfly) हे० च० ४। (२) मुद्गपर्णी। (Phaseolus trilobus.) भा० पू० १ भा०।

अल्पौरसी alpourasí-सं० स्त्री० (Pectoralis minor.) उरश्छादनी लघवी।

अल्फ़ alfa-कटकली, ताली-सं०। बजरबट्टू-हिं०। (Corypha umbraculifera.) देखो—अल्पायुषी।

अ़ल्फ़ ạalfa-अ० इ(अ)स्पस्त-फ़ा०। See-i(a)spasta (Trifolium pratensis.)

अल्फ़क़ alfaq-अ० (१) बाँये हत्था, बाएँ हाथ से काम करने वाला। (२) मूर्ख।

अल्फ़जन alfajan-हिं० } धारो-हिं०।
अल्फ़ाज़ेमा alfazema-पुर्तग० }

उस्तुख़ुद्दूस-भा० बाज़ा०। Arabian or French lavender (Lavandula stœchas, *Linn.*) फा० इं० ३ भा०।

अल्फ़ा नेफ्थोल alpha-naphthol } -इं०
आर्थोनेफ्थोल artho-naphthol }

यह ब्रिटिश फार्माकोपिया में नॉट ऑफ़िशल है। देखो—नेफ्थाल (Naphthol) अर्थात् विलायती कपूर।

अल्फ़ियह् alfiyah-फ़ा० ज़कर, आलहे तनासुल-अ०। शिश्न, लिंग, उपस्थ। (Penis.)

अल्फ़िल्फ़िलुल् अस्वद alfilfilul-asvad-अ० श्याम मरिच, स्याह मिर्च, काली या गोल मिर्च। Black pepper (Piper nigrum.)

अल्फ़ोज़ोन alphozone-इं० यह एक सूक्ष्म रवावत् (स्फटिकीय) चूर्ण है जो सक्सीनिक एसिड और हाइड्रोजन पर ऑक्साइडके पारस्परिक क्रिया व प्रतिक्रिया द्वारा प्राप्त होता है।

स्वाद—सूक्ष्माम्ल और तिक्त जिससे पश्चात् को धातुवत् स्वाद का बोध होता है।

घुलनशीलता—यह एक भाग ६० भाग जल में लय हो जाता है।

प्रभाव—इसको निर्विषैला कीटाणुहर रूप से व्यवहार करते हैं।

मात्रा—१ रत्ती (चोल रूप में)।

देखो—हाइड्रोजानियाई पर ऑक्साइडाई लाइकार।

अल्ब alba-अ० ज्वराधिक्य, उष्माधिक्य। तृषा। फोड़े फुन्सी का अच्छा होने लगना। (२) एक जंगली काँटादार वृक्ष है। यह विषैला होता है।

अल्बर्जीन albergin-इं० सिल्वर ग्ल्युटीन (Silver glutin.)। इसमें १५ प्रतिशत

चाँदी होती है। यह एक भाग २ भाग जल में घुल जाता है। इसके ·२ प्रतिशत का घोल सूज़ाक में और आधे से ३ प्रतिशत का घोल नेत्र रोगों में लाभदायक है।

अल्बान albána-अ० (ब० व०) लब्न (ए० व०), दुग्ध (Milk.)।

अल्बूतासुल् कावी albútásulkáví-अ० दाहक पोटास। Caustic Potash (Potassa ca-ustica.)। देखो—**पोटाशियम्**।

अल्बूतासुल् किल्सी albútásul kilsí-अ० वाइनानुलेपन। देखो—**पोटाशियम्**। Viena paste (Potassa cum calce.)

अल्बूतास्यूम albútásyúma-अ० पांशुजम्। देखो—**पोटाशियम्**। (Potassium.)

अ(ऐ)ल्ब्यूमेन albumen इं० अण्डलाल, अण्डश्वेतक। (White of egg.)

अल्मक़्तरून almaqtarúna-यु० कहरुबा। Succinum (Amber.)

अल्मग्नीसियाउल्ख़फ़ीफ़ह् almaghnísiyá-ul-khafífah-अ० हलका मग्नेशिया, सूक्ष्म मग्न। (Magnesia levis.) मैग्नेसियम्—देखो।

अल्मग्नीसियाउस्सक़ीलह् almaghnísiyá-ussaqílah-अ० भारी मग्नेशिया। (Magnesia ponderosa.) देखो—**मैग्नेसियम्**।

अल्मनाज़ियहुस्सक़ीलह् almanáziyahus-saqílah-अ० भारी मग्नेशिया (Magnesia ponderosa.)। देखो—**मैग्नेसियम्**।

अल्मनाज़ियहुल्मकल्लसह् almanáziyah-ul-makallasah-अ० हलका मग्नेशिया, सूक्ष्म मग्न। (Magnesia levis.) देखो—**मैग्नेसियम्**।

अल्मस इण्टेग्रिफोलिआ ulmus integrifolia, *Roxb.*-ले० पपरी, चाम्मा, कुञ, करञी-हिं०। पपरी, खुलेन, अर्जन-पं०। अय-ना०। नम्ली-ते०। रसबीज-क़ना०। म्योक सेइत-बर०।

प्रयोगांश—बीज व पत्र।

उपयोग—तैल, औषध, खाद्य। मेमो०।

अल्मस कैम्पेस्ट्रिस ulmus campestris, *Linn.* युम्योक-लेट्० । ब्रान, ब्राह्मी, काइ-पं०।

प्रयोगांश—त्वक्, पत्र।

उपयोग—औषध, खाद्य। मेमो०।

अल्मस वालिकयाना ulmus wallichiana, *Planch.*-ले० कैन, ब्रेन, अमूराइ, मराली-पं०। मोरेद, पबुन-हिं०। **प्रयोगांश**—त्वक्, तन्तु, पुष्प डंडी, (पुष्प वृन्त)तन्तु और पत्र। **उपयोग**—तन्तु और खाद्य। मेमो०।

अल्मामून almámúna-अ० जंगली पुदीना, पहाड़ी पुदीना, हाशा। (Thymus Vulgaris.)

अल्मास almása-अ० हीरक, वज्रम्-सं०। हीरा-हिं०। Diamond (Admas.)

अल्मिराव almirao-गो० पथरी-बम्ब०। लॉनिआ पाइनेटिफिडा (Launœa pinnatifida, *Cass.*)-ले०। खोखोआ, बनकाहू-सिन्ध०।

मिश्र वा तुलसी वर्ग

(*N. O. Compositæ.*)

उत्पत्ति स्थान—भारतवर्ष के रेतीले किनारे, बंगदेश से लङ्का पर्यन्त, तथा मदराससे मालाबार पर्यन्त।

प्रयोगांश—पञ्चांग (सम्पूर्ण पौधा), स्वरस।

वानस्पतिक विवरण—काण्ड (Filiform) तथा भूलुण्ठित होता है। इसमें इतस्ततः पत्र एवं मूल लगे होते हैं। पत्र-एकत्रीभूत, शिखरयुक्त, खण्ड बहुकोणीय वा न्यूनकोणीय; वृन्त (Peduncles) पत्र की अपेक्षा ह्रस्वतर, होता है। इसके शिखर पर छिलकायुक्त पौष्पिक पत्र होते हैं जिनके किनारे

चिह्न युक्त होते हैं। मूल मांसल, ६ से ८ इञ्च लम्बे, नवीन होने पर पीताभश्वेत होते हैं।

उपयोग—गोआ में अलिमराच नाम से यह अरण्य-कासनी (Taraxacum) की प्रतिनिधि रूप से अधिक व्यवहार में आता है। बम्बई में पथरी नाम से भैंसों (महिषी) को दूध बढ़ानेके लिए दिया जाता है। मुर्रे उक्त पौधे को सिंध का बनकाहू बतलाते हैं, किन्तु उक्त वर्णन उचित रूप में भत्तल वा बत्थल (Launaea nudicaulis, Less.) का है। उनका और भी कहना है कि बनकाहू स्वरस को खी-खांवा (सिंध में) कहते हैं तथा यह बालकों के लिए अर्द्ध माशा की मात्रा में निद्राजनक है और आमवात विषयक व्याधियों में करञ्ज तैल तथा वाइटेक्स ल्युकॉक्ज़िलॉन (Vitex leucoxylon) के स्वरस के साथ इसका बहिर प्रयोग होता है। डाइमॉक।

अलिमह़ुल् इन्क़लीज़ी almilhul-inqalízí
अलिमह़ुलमुर्रुल् मुस्हिल almilhulmurrulmushil
-अ० नमक मुस्हिल-फ़ा०। मग्नेशिया-उ०। मग्नगन्धेत, विरेचक लवण। (Magnesii sulphas.)

अल्मीअतुस्साइलह् almiäatussáilah-अ० मीअहे साइलह्-फ़ा०। सिलहक, शिलारस। (Styrax præparatus.)

अल्यह् alyah-अ० (१) नितम्ब, चूतड़, चूतड़ का मांस। तस्नि॰ नयह् अल्यतैन। (२) बड़े चूतड़ों वाली स्त्री। इसका बहुवचन "अलाया" है। नेट (Nate), बटक (Buttock)-इं०।

अल्याफ़ alyáfa-अ० (ब० व०), लैफ़ (ए० व०) तन्तु, रेशे, शरीर तन्तु। फ़ाइबर्स (Fibers.)-इं०।

अल्याफ़ अज़्लियह् alyáfa-äazliyah-अ० मांस तन्तु, मांस धातु। मस्क्युलर फ़ाइबर्ज़ (Muscular fibers.)-इं०।

अल्यास्मीनुल् अस्फ़र alyásminul-asfara -अ० स्वर्ण जाती, पीली चमेली। (Gelsemium nitidum.)

अल्युमिनियम् aluminium-इं० स्फटिकम्। देखो-एल्युमिनियम।

अल्ल alla-हिं० पु० बिछुआ। (Girardinia heterophylla)

अल्लकः allakah-सं० पुं० (१) कक्कोल (कक्कोल) विशेष, शीतल चीनी। (The fruit of Cocculus Indicus.) कनखल-बं०। (२) धान्यक, धनियाँ। (Coriander) धने-बं०। वै० निघ०।

अल्लका allaká-सं० स्त्री० धान्यक, धनियाँ। धने-बं०। (Coriandrum sativum.) वै० निघ०।

अल्लवत्सलता alla-batsa-latá-ते० पोल-हिं०। कुकती पूई-बं०। (Basella cordifolia, Lam.) मेमो०।

अल्लम allam-ते० अदरख, आदी। (Zingiber officinalis.) देखो-आर्द्रक।

अल्लमण्डा कैथार्टिका allamanda cathartica-लै० पीत करवीर, पीला कनेर-हिं०। मेमो०।

अल्लाह्लाह् allahláh-अ० सूरिञ्जान। (Colchicum.)

अल्ला allá-सं० स्त्री० (१) मातर, कृमि। (२) धान्यक, धनियाँ। धने-बं०। (Coriandrum sativum.)।-पं० (३) कचेटा, अगलालग, किंगली-हिं०। (Mimosa rubicaulis, Lam.) मेमो०।

अल्लाई allái-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० अर=शब्द करना] चौपायों के गले की एक बीमारी। घँटियार।

अल्लाप alláp-गु० अयापना-हिं०, -बं०, -मह० । (Eupatorium ayapana, Vent.) फा० इं० २ भा०।

अल्लामह् äallámah-अ० महान् विद्वान्।

अल्लिस्या allisyá-अ० प्रावम्। देखो—लिथियम् (Lithium.)

अल्ली allí–मह० मंगनवेर । बरडी गर्जन–ते० रंगड़ी–मल० । (Dalbergia volubilis.)

शिम्बी या बब्बूर वर्ग

(*N. O. Leguminosæ*)

उत्पत्ति-स्थान—हिमालय के निम्न भाग, कुमायूँ से पूरब, मध्य और दक्षिण भारत।

प्रभाव तथा उपयोग—इसके पत्ते का रस कंठक्षत में गंडूष रूप से व्यवहार में आता है। सूज़ाक में इसकी जड़ का रस जीरा और शर्करा के साथ प्रयोग किया जाता है। इं० मे० मे०।

अल्ली alli–ते० (१) अञ्जन, कर्पा-बम्ब०। कमाउ चेट्टी-ता०। (Memecylon edule, *Roxb.*)। प्रयोगांश-पुष्प, पत्र व फल। उपयोग-रंग, औषध और खाद्य। मेमो०। (२) –ता० नट्ट विल। ग्या-शीक-बर०। कासुन्द, रूखा, चान्दल, चाँदकुड़ा, चार वार-माडा-बम्ब०। एण्टिएरिस टॉक्सिकेरिया (Antiaris toxicaria. *Leesch.*) प्रयोगांश-छाल, तन्तु, बीज। उपयोग—निर्यास, तन्तु और औषध। मेमो०।

अल्लीआन alliána–हिं० कचूर। (Cornus macrophylla.) मेमो०।

अल्लीकाड allikáḍ-ते० निलोफ़र। (Nymphæa lotus.) इं० मे० मे०।

अल्लीचेट्टु allícheṭṭu-ते० किङ्गली–हिं०। अञ्जनी-सं०। Iron--wood tree (Memecylon edule .) इं० मे० मे०।

अल्लीचेड्डु allícheḍḍu–ते० अञ्जन, लोखण्डी –मह०। (Memecylon edule, *Roxb.*) फा० इं० २भा०।

अल्लीतामर allí-támar–ते० } निलोफ़र।
अल्लीतामरई allí-támaraí-ता० }

(Nymphæa lotus) इं० मे० मे०।

अल्ली पल्ली allí-pallí–पं० साउन्सपाउर, सेन्सरपाल, सतजर्र-प०। ऐस्पैरेगस फिलिसिनस (Asparagus filicinus, *Ham.*)-ले०।

शतमूली वर्ग

(*N. O. Asparagaceæ*)

उत्पत्ति स्थान--पञ्जाब, हिमालय ३००० फो० से ८९०० फी० की उँचाई पर। प्रयोगांश--मूल।

उपयोग—इसकी जड़ बल्य एवं सङ्कोचक ख़्याल की जाती है। कनावार में इसकी टहनी मसूरिका वा शीतला के रोगी के हाथ में रोगमुक्ति हेतु दी जाती है। स्टयुवर्ट।

अल्लीपा allípá–गु० अयापना। (Eupatorium ayapana) इं० मे० मे०।

अल्लीफूल alliphúla–द० निलोफ़र। (Nymphaea lotus.) इं० मे० मे०।

अल्लीबीज allíbíja–फ़ना०, खात दे० चन्द्रसुर। (Lepidium sativum.) इं० मे० मे०।

अल्लु allu–सं० क्लीं० आलूक, आलुबोखारा। (Prunus Communis)। म० द० व० १।

अल्लुपु allupu–ते० गञ्जनी–हिं०। गुच्छः-सं०। (Andropogon nardus) इं० मे० मे०।

अल्वान alvána–अ० (ब० व०), लौन (ए० व०), रंग, वर्ण। (Colour).

अलशी विरई alshí-virai–ता० अलसी, अतसी, तीसी। Linseed (Linum usitatissimum.)

अल्स alsa–अ० उन्मत्त, पागल, दीवाना, ख़ब्ती, बावला, मज्नून। (Insane, frantic).

अल्सग alsagha } –अ० तोतला,
अल्कन alkan } तुतला कर

बोलने वाला। वह जो "श" को 'स' और "र" को "ल" कहे। लिस्पर (Lisper)–इं०।

अल्शीनीज़ alshíníza } –अ० काला-
अल्शूनीज़ alshúníza } जीरा, मंगरेल।

(Nigella sativa, *Sibthorp*).

अलसतून alsatúna-रू० अफ़सन्तीन। (Absinthium).

अलसन alsan–गु० एक वनस्पति है।

अलसन्दा alsandá–ते० सेम–हिं०। शिम्बी –सं०। (Dolichos lablab, Linn.)

अलसंध alsandha–हिं० मोठ। (Vetches, lentils)

अल्सा alsá–फ़ा० (१) मरोड़फली, आवर्तनी (Helicteres isora) । (२) ख़िरमी (Khitmí) । (३) अजवाइन । Carum Copticum

अल्सी का तेल alsí-ká-tela–हिं० पुं० अलसी तैल, तीसीका तेल, अतसी तैल । (Linseed oil).

अल्ह़ज़्ज़ुल् जावी alhamzul-jávi–अ० तेज़ाब लुबान, लोबान का फूल, लोबानिकाम्ल । (Acidum benzoicum).

अल्ह़लो वल्मुर्र alhalo-valmurra–अ० काकमाची–सं० । मकोय–हिं० । (Dulcamara)

अल्ह़ाज alhája–फ़ा० य(ज)वासा –हिं० । दुरालभा, गिरिकर्णिका, यवास–सं० । (Alhagi maurorum, *Desv.*) मेमा० ।

अल्ह़ब्बातुल् ख़िज़्रा al-habbátul-khizrá
अल्ह़ब्बतिस्सौदा al-habbatissoudá
–अ० कालाजीरा, मँगरैल–हिं०, बं० । कलौंजी –बम्ब० । (Nigella sativa, *Sibthorp.*)

अवंश avansha–हिं० वि० [सं०] वंशहीन, निपूता , अपुत्र, निःसंतान ।

अव ava–उप० [सं०] एक उपसर्ग है । यह जिस शब्द में लगता है उसमें निम्न लिखित अर्थों की योजना करता है—(१) निश्चय; जैसे—अवधारण । (२) अनादर; जैसे–अवज्ञा, अवमान । (३) ईषत, न्यूनता वा कमी; जैसे–अवहुनन । अवघात । (४) निचाई वा गहराई; जैसे–अवतार । अवक्षेप । (५) व्याप्ति; जैसे–अवकाश । अवगाहन ।

अव्य० [सं० अपि, प्रा० अवि] और ।

अवकरः avakarah–सं० पुं० सन्मार्जनादि-निक्षिप्त धूल्यादि ।

पर्याय—सङ्करः (अ०), अवस्करः, (भर०), सङ्कारः (शब्द र०) ।

अवकर्षण avakarshana–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] उद्धार, निष्कर्षण, बाहर खींचना । बलपूर्वक किसी पदार्थ को एक स्थान से दूसरे स्थान में लेजाना । खींच ले जाना ।

अवकादन् avakádan–काई (Moss) । (२) फंगस । अथर्व० । सू० ३७ । १० । का० ४ ।

अवकाश avakásh–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) अवसर, समय, सुभीता । (opportunity,) विश्रामकाल, खाली वक्त, छुट्टी, फुर्सत । (Leisure । (३) स्थान, जगह, (space.) । (४) आकाश, अंतरिक्ष, शून्य स्थान । (५) दूरी, अंतर । फासिला ।

अवकिरण avakirana–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवकीर्ण, अवकृष्ट] बिखेरना । फैलाना । छितराना ।

अवकीर्ण avakírna–हिं० वि० [सं०] (१) फैलाया हुआ । छितराया हुआ । बिखेरा हुआ । (२) ध्वस्त । नष्ट किया हुआ । नष्ट । (३) चूर्ण, चूर चूर किया हुआ ।
संज्ञा पुं० ब्रह्मचर्य का नाश । ब्रह्मचारी का स्त्री–संसर्ग द्वारा व्रतभंग ।

अवकीर्ण avakírna–हिं० वि० [सं०] वह ब्रह्मचारी जिसका ब्रह्मचर्य व्रत भंग होगया हो । नष्ट-ब्रह्मचर्य ।

अवकुञ्चन avakunchan–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] समेटना । बटोरना । टेढ़ा करना ।

अवकुण्ठन avakunthan–हिं० पुं० साहस परित्याग, भीरु होना ।

अवकुन्थनम् avakunthanam–सं० क्ली० आर्त्तनाद ।

अवकुशः avakushah-सं० पुं० गोलाङ्गूल वानर । यह पर्णमृग की जाति से है । सु० सू० ४६ अ० ।

अवकूलनम् avakúlanam-सं० क्ली० अग्नि द्वारा गरम करना, आग पर गरमाना । च० द० अतिसा-चि० । "अङ्गारेष्ववकूलयेत् ।" सु० अतिसा-चि० ।

अवकृष्ट avakrishta-हिं० वि० [सं०] (१ दूर किया हुआ । निकाला हुआ । (२) निगलित । नीचे उतारा हुआ ।

अवकेशी avakeshí-सं० त्रि० (१) अफल वृक्ष (Fruitless tree) हिं० न्य० । (२) बाँझ, बन्ध्या (Sterile) ।

अवकृत avakrita-सं० पुं० व्रण भेद । वा० उ० अ० २६ ।

अवक्रः avakrah-सं०पुं० सरल वृक्ष, चीड़, धूप सरल । (Pinus longifolia.) सरल गाछ-बं० ।

अवक्रांति avakránti-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] (१) अधोगमन । उतार । गिराव । (२) झुकाव ।

अवक्लिन्न avaklinna-हिं० वि० [सं०] आर्द्र, गीला, तर, भीगा हुआ ।

अवक्काथ avakvátha-हिं० पुं० अजीर्ण काढ़ा, अपक्क क्वाथ ।

अवखात avakháta-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] गहरा गड्ढा ।

अवगण्डः avagandah-सं० पुं० गण्ड देशस्थ व्रण । वयेस फोंड़ा-बं० । पुटकुली-मह० । त्रिका० ।

अवगथः avagathah-सं० पुं० प्रातः स्नान । (Morning bath.)

अवगाढ़ avagárha-हिं० वि० [सं०] (१) निविड़ । छिपा हुआ । (२) प्रविष्ट । घुसा हुआ । निमग्न ।

अवगाढः avagárhah } -सं०पुं० विच्छिन्न
अवघृष्टः avaghrishtah }
व्रण । वा० उ० अ० २६ ।

अवगाहः avagáhah-सं० त्रि०, पुं०
अवगाह avagáha-हिं० वि० [सं० अवगाध] } अथाह, बहुत गहरा, अत्यन्त गम्भीर ।

संज्ञा पुं० गहरा स्थान । स्नानगृह । गुसल खाना । स्नानागार ।

संज्ञा पुं० [सं०] (१) भीतर प्रवेश । हलना । (२) जल में हल कर स्नान करना । निमज्जन । (Bathing, ablution)

अवगाहनम् avagáhanam-सं० क्लीं० }
अवगाहन avagáhana-हिं० संज्ञा पुं० }
[वि० अवगाहित] स्नान करण, नहाना, पानी में हलकर स्नान करना, मज्जनपूर्वक स्नान, निमज्जन, डुबकी लगाना ।

संस्कृत पर्याय—अवगाहः, वगाहः, निमज्जनं, शिरः स्नानम्, अम्भसि मज्जन (कै०) । (Bathing, ablution.) । (२) मथन । विलोडन । (३) प्रवेश । पैठ ।

अवगाह(न)स्वेदः avagáha-(na)svedah-सं० पुं० अवगाहन द्वारा स्वेद कर्म करना ।

विधि—द्रव स्वेदान्तर्गत कहे हुए द्रव्यों को एक कुंडमें अथवा एक बड़े पात्रमें भरकर रोगीको उस में बैठादें । यह रोगी ऐसा हो जिसके सर्वांग में वात वेदना होती हो अथवा अर्श और मूत्रकृच्छ्रादि रोगों में इस तरह किया जाता है । बर्तन कोई हो पर इतना बड़ा होना चाहिए जिसमें रोगी कंठ तक बैठ जाए । खाट के नीचे एक गढ़ा खोदकर उसमें वातनाशक लकड़ी उपले भरकर आग लगाकर निर्धूम अंगार कर लिए जाएँ, फिर रोगी को उस खाट पर शयन कराया जाए । इसका नाम कूप स्वेद है । इसी तरह कुटी स्वेदादि के लक्षण अन्य ग्रंथों से जानना चाहिए । वा० सू० १७ अ० ।

अवगाहना avagáhaná-हिं० क्रि० अ० [सं० अवगाहन] (१) हलकर नहाना । निमज्जन करना । (२) डूबना । पैठना । धँसना । मग्न होना ।

अवगाहित avagáhita-हिं० वि० [सं०] नहाया हुआ ।

अवगीर्णः avagírnah-सं० पुं० अपान द्वारा निकला हुआ द्रव्य ।

अवगुण्ठनम् avagunthanam-सं० क्लीं० }
अवगुंठन avagunthana-हिं० संज्ञा पुं० }
[वि० अवगुंठित] योषित शिरः प्रावरण, स्त्री मुखाच्छादन, घूँघट, बुर्क़ा (A veil.) । (२) ढँकना । छिपाना । (३) पर्दा ।

अवगुण्ठितम् avagunthitam-सं० क्लीं० }
अवगुंठित avagunthita-हिं० वि० }

चूर्णित, चूर्ण किया हुआ। (Powdered.) अिका० । (२) ढँका हुआ। छिपा हुआ।

अवगुण avaguṇa–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] दोष। दूषण। ऐब।

अवगुंठन avaguṇṭhana–हिं० संज्ञा पुं० देखो–**अवगुण्ठनम्**।

अवगुंठनवती avaguṇṭhanavatí—हिं० वि० स्त्री० [सं०] घूँघटवाली।

अवगुंठिका avaguṇṭhiká–हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] (१) घूँघट। (२) जवनिका। पर्दा। (३) चिक।

अवगुंठित avaguṇṭhita–हिं० वि० [सं०] ढँका हुआ। छिपा हुआ। देखो—**अवगुण्ठ-नम्**।

अवगुद avaguda–ते०
अवगुदे avagude–कना०
अवगुदे हण्णु avagude-haṇṇu–कना०
रक्त (लाल) इन्द्रायन, महाकाल–हिं०। Trichosanthes palmata, *Roxb.* । स० फा० इं०।

अवगुफन avaguphana–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] गूँथन। गुहन। ग्रंथन।

अवगुंफित avagumphita-हिं० वि० [सं०] गूथा हुआ। गुहा हुआ।

अवगूहन avagúhana–सं० पुं० आलिंगन, आश्लेष, प्रेम से परस्पर अंग स्पर्श, करना। प्रेम से मिलना।

अवग्रहः avagrahah–सं० पुं०
अवग्रह avagraha–हिं० संज्ञा पुं०
(१) गज ललाट देश। हाथीका ललाट। हाथी का मस्तक। हस्ति मस्तक। हारा०। (२) अनावृष्टि। वर्षा का अभाव। (३) रुकावट। अटकाव। बाधा। (४) प्रकृति। स्वभाव। (५) गजसमूह। गज यूथ।

अनुग्रह का उलटा।

अवग्राहः avagráhah–सं० पुं० अवहारक, ग्राह।

अवघातः avaghátah–सं० पुं०
अवघात avaghāta–हिं० संज्ञा पुं०
(१) आघात विशेष, अपघात, ताड़न, घन, प्रहार, चोट। (२) तण्डूलादि कण्डन (काँड़ना, कूटना)। हे०। (३) अपमृत्यु।

अवचारः avachárah–सं० पुं० प्रयोग, सहायता।

अवचूर्णन ava-chúrṇana–सं० क्लो० औषध के बारीक चूर्ण को चत आदि पर बुरकना। अवधूलन, धूड़ा(ला)करना।

अवचूर्णम् avachúrṇam–सं० क्लो० स्थूल चूर्ण, मोटा चूर्ण (Coarse powder)। वह शुष्क बारीक पिसी हुई औषध जिसको चत आदि पर छिड़का जाए (Dusting powder.)। ज़रूर, कबूस, नस्..र–अ०। धूड़ा –हिं०, उ०।

अवचूर्णितः avachúrṇitah–सं० त्रि० चूर्णित, चूर्ण किया हुआ। पाउडर्ड (Powdered.) –इं०।

पर्याय—अवध्वंसः, अपध्वस्तः। अ० टी०।

अवचूलकम् avachúlakam–सं० क्लो० चामर। (See–chámara.) त्रि०।

अवच्छद avachchhada–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] ढकना। सरपोश।

अवच्छिन्न avachchhinna—हिं० वि० [सं०] सीमाबद्ध। अवधि सहित। जिसका किसी अवच्छेदक पदार्थ से अवच्छेद किया गया हो। अलग किया हुआ। पृथक्।

अवच्छेद avachchheda–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवच्छेद्य, अवच्छिन्न] (१) अलगाव। भेद। (२) सीमा। (३) परिच्छेद। विभाग।

अवच्छेदक avachchhedaka—हिं० वि० [सं०] (१) छेदक। भेदकारी। अलग करने वाला। (२) हद बाँधने वाला।

अवच्छेदकता avachchhedakatá—हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] (१) अवच्छेद करने का भाव। पृथक् करने का धर्म। अलग करने का धर्म। (२) हद वा सीमा बाँधने का भाव। परिमिति।

अवच्छेद्य avachchhedya-हिं० वि० [सं०] अलगाव के योग्य।

अवछंग avachhanga-हिं० संज्ञा पुं० देखो-उछंग।

अवज āavaja-अ० वक्र या टेढ़ा होना। कुकुड (Crooked.)-इं०।

अवञ्चकः avanchakah-सं० पुं० भक्त रोगी, श्रद्धालु रोगी, वैद्यपर विश्वास रखने वाला रोगी। वै० निघ०।

अवटना avaṭaná-हिं० क्रि० स० [सं० आवर्त्तन, प्रा० आवट्टन] (१) मथना। आलोड़न करना। (२) किसी द्रव पदार्थ को आग पर रखकर चलाकर गाढ़ा करना।

अवटः,-टी avaṭah,-ṭí-सं० पुं० (१) नाड़ी व्रण। नासूर। (nádívrana-)। (२) कूप, कुआँ (Well.) मे०। (३) छिद्र। (A hole. a perforation.)

अवट avaṭa-हिं० संज्ञा पुं० (१) औटाकर, खौलाकर। (२) गर्त्त, गह्वर। गड्डा। कुंड। (३) गले के नीचे कंधे और काँख आदि का गड्ढा।

अवटीटः avaṭíṭah-सं० त्रि०
अवटीट avaṭíṭa-हिं० वि०
नतनासिक, चिपटी नाकवाला। खान्दा-बं०। आम०।

पर्याय—अवनाटः, अवभ्रटः। अ०।

अवटुः avaṭuh-सं० स्त्री० (१) ग्रीवा पश्चाद्भाग, ग्रीवाके पीछे भाग, गुद्दी, मन्या। (Nape of the neck.) रत्ना०। रा० नि० व० १०। -पुं० (२) वृक्ष विशेष (A tree.)। हे०। (३) रन्ध्र (A hole.)। (४) कूप। (A well.) हे०।

अवटुका ग्रंथि avaṭuká-granthi-सं० स्त्री० (Thyroid gland) चुल्लिका ग्रन्थि।

अवडः avaḍah-सं० पुं० मन्या पृष्ठ भाग, गर्दन के पीछे का भाग। (Nape of the neck.) वै० निघ०।

अवतमसम् avatamasam-सं० क्ली० अल्पान्धकार। (Slight darkness.) अम०।

अवतानम् avatánam-सं० क्ली० चन्द्रातप, चाँदनी (Moon-light.)। (२) टखना। (Ankle.)

अवतापः avatápah-सं० पुं० अजादि ज्वर। गज० वै०।

अवतारणम् avatáraṇam-सं० क्ली० भूतादि ग्रह। (२) वस्त्राञ्चल (The end or hem of a garment.) मे० णपञ्चक। (३) उतारना। नीचे लाना।

अवतारणिका avatáraṇiká-सं० स्त्री० नौका। (A boat.)

अवतोका,-दा avatoká,-dá-सं० स्त्री० वह गाय जिसका गर्भस्राव (गर्भपात) हो चुका हो। हला०।

अवतोकाम् avatokám-सं० क्ली० पतित गर्भवाली। वह जिसका गर्भ गिर गया हो। अथर्व। सू० ६। ६। का० ८।

अवतंसः avatansah-सं० पुं०, क्ली०
अवतंस avatansa-हिं० संज्ञा पुं०
[वि० अवतंसित] कर्णभूषण कर्णालंकार, कर्णाभरण, कर्णफूल, कर्णपूर, कनफूल (An ornament of the ear.)। (२) मुरकी, बाली। (३) माला। हार। (४) भूषण।

अवथोली avatholí-मल० एक प्रकार के वृक्ष की छाल जो अनिश्चित है। फा० इं० ३ भा०।

अवदन्तः avadantah-सं० पुं० बालक, सुगन्धवाला। वाला-बं०। (Pavonia odorata) वै० निघ०।

अवदलनम् avadalanam-सं० क्ली० मर्दन क्रिया, गात्र मर्दन, देह का मलना। (Rubbing, massage.) देखो—मर्दन।

अवदाघ avadágha-सं० गर्मी, उष्णता। (Heat.)

अवदातः avadátah-सं० पुं०
अवदात avadáta-हिं० वि०
(१) शुक्ल वर्ण का,

गौर (White.) । (२) पीत वर्ण का, पीला (Yellow) । अ० । (३) शुभ्र, उज्वल । श्वेत । (४) शुद्ध । स्वच्छ । विमल । निर्मल ।

अवदानम् avadánam--सं० क्लो०
अवदान avadána--हिं० संज्ञा पुं० } (१) उशीर । खस । गाँड़रे की जड़ । वीरण मूल । (Andropogon muricatus.) अ० टी० । (२) खनित्र, अस्त्र विशेष, कुदाल (A hoe or a kind of spade, a pick axe or mattock.) (४) खंडन । तोड़ना । (५) शक्ति, बल ।

अवदान्तः avadántah-सं० पुं० शिग्रु, सहिंजन । (Hyperanthera moringa.) वै० निघ० ।

अवदारक avadáraka --हिं० वि० [सं०] विदारण करने वाला । विभाग करने वाला । संज्ञा पुं० [सं०] मिट्टी खोदने के लिए लोहे का एक डंडा । खंता । रंभा ।

अवदारणम् avadáranam--सं० क्लो०
अवदारण avadárana--हिं० संज्ञा पुं० } (१) मिट्टी खोदने का औज़ार । खनित्र । कुदार (ल) । खंता । (A hoe or kind of spade) (२) विदारण करना । । विभाग करना । तोड़ना । । फोड़ना ।

अवदारित avadárita--हिं० वि० [सं०] विदारण किया हुआ । विदीर्ण । टूटा हुआ ।

अवदाहेष्टकापथम् avadáheshṭaká-patham
अवदाहेष्टम avadáheshṭam } --सं० क्ली० वीरणमूल, खस । (Andropogon muricatus.) अ० टी० भ० ।

अवदाहं--कम् avadáham,-kam--सं० क्ली० (१)लामज्जक तृण । (Andropogon laniger.)भा० पू० १ व० । (२)वीरणमूल, उशीर, खस । गन्धवेना--बं० । पिंवला वाला --मद्र० । (Andropogon muricatus.) वै० निघ० ।

अवदीर्णम् avadírṇa'n--सं० त्रि० (१) द्रवीभूत घृतादि । (२)फटा हुआ, विदारित ।

अवदोहः avadohah-सं० पुं०
अवदोह avadoha-हिं० संज्ञा पुं० } (१ दूध । दुग्ध । (Milk) त्रिका० । (२) दूध दुहना । दोहन ।

अवदंशः avadanṣhah-सं० पुं०
अवदंस avadansa-हिं० संज्ञा पुं० } (१) सुरापान में रुचिजनक भक्ष्य द्रव्य, मद्यपान के समय जो कबाब, बड़े आदि खाए जाते हैं । गज़क । चाट । चटनी आदि । उत्तेजक भक्ष्य । हला० । (२) शिग्रु अर्थात् सहिंजन वृक्ष (Moringa pterigosperma.) । (३) कृष्ण शिग्रु (काला सहिंजन) । काल सजिना गाछ--बं० । Moringa pterigosperma (The black var. of-) वै० निघ० ।

अवदंशक्षयः avadanṣha-kshayah-सं० पुं० काला सहिजन । कृष्ण शिग्रु ।

अवद्योतन् avadyotan-सं० पुं० प्रकाश । (Light.)

अवध-धतूरा avadha-dhatúrá-हिं०, दृ० अवध में उत्पन्न होने वाला प्रसिद्ध धतूरा ।

अवधान avadhána-हिं० संज्ञा पुं० [सं० (१) मन का योग । चित्त का लगाव । मनोयोग । (२)चित्त की वृत्ति का निरोध करके उसे एक ओर लगाना । समाधि । (३) ध्यान । सावधानी । चौकसी ।

संज्ञा पुं० [सं० आधान्] गर्भ । गर्भाधान । पेट ।

अवधान तन्त्री avadhána-tantrí-सं० स्त्री० (Auditory or acoustic nerve.) श्रावणीनाड़ी ।

अवधारण avadhárana- सं० पुं० [वि० अवधारित, अवधारणीय] निश्चय, निर्णय । विचार पूर्वक निर्धारण करना ।

अवधि avadhi- हिं० पुं० पर्यन्त, सीमा से तक लों ।

अवध्वंसः avadhvansah--सं० पुं०
अवध्वंस avadhvansa-हिं० संज्ञा पुं०
[वि० अवध्वस्त] (१) अवचूर्णन, चूर्ण करना (To powder, Powdering.) मे० । (२) चूर्णन । चूर चूर करना । नाश । (३) परित्याग । छोड़ना । (४) देह को जलाकर नष्ट करने वाला । अथर्व० । सू० २२ । ३ । का० ५ ।

अवध्वस्तः avadhvastah--सं० त्रि० अवचूर्णित, चूर्ण किया हुआ । (Powdered).

अवनत कर्णीया avanata-karniyá-सं० स्त्री० (Obliquus auriculae) । शष्कुलीया असरला ।

अवनत पादांगुष्ठाकर्षणी avanata-pádángushṭhákarṣhaṇí-सं०स्त्री० (Adductor hallucis obliquus.) पादांगुष्ठ अंतरनायिनी असरला ।

अवनम् avanam-सं० क्लो०
अवन avana-हिं० संज्ञा पुं०
(१) प्रीणन । तृप्तिकरण । प्रसन्न करना । (Satisfying.) अ० । (२) प्रीति ।
[सं० अवनि] ज़मीन । भूमि ।

अवनत मान्दिरः avanata-mándirah-सं० पुं० (Oblique popliteal.)

अवनम्र avanamra-सं० झुका हुआ । (Bent).

अवनत-सूत्रम् avanata-sútram-सं० क्लो० (Oblique cord.) । झुका हुआ या वक्र तन्तु ।

अवनताङ्गुष्ठाकर्षणी avanatángushṭhákarshaṇí-सं० स्त्री० (Adductor-pollicis obliquus.) ।

अवनति avanati-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] झुकाव, झुकाना ।

अवनत avanata-हिं० वि० [सं०] (१) नीचा, झुका हुआ । (oblique.) । (२) गिरा हुआ । पतित । अधोगत ।

अवनाटः avanáṭah-सं० त्रि० नतनासिका, झुकी नाक वाला, चद्रनासा युक्त । अम० ।

अवनि avani
अवनी avaní
-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी, ज़मीन, अवनितल ।

अवना avaná
अवनी avaní
--सं० स्त्री० (१) त्रायमाणा (See--Tráyamáṇá.) रा० नि० व० ५ ।

अवनीसारा avanísárá-सं० स्त्री० (Musa sapientum.) कदली, केला । वै० निघ० ।

अवनेजन avanejana-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] धोना, प्रक्षालन ।

अवन्ति(न्ती) सोमम् avantí,-ntí,-somam-सं० क्ली० काँजी, काञ्जिक । प० मु० । हारा० । रा० नि० व० १५ (See--Kánjika)

अवपतन avapatana-सं० क्लो० ऊपर से आना, गिराव, नीचे गिरना । वा० सू० १२ अ० ।

अवपाटिका avapáṭiká-सं० स्त्री० क्षुद्र रोगान्तर्गत शूक रोग । लक्षण—लिंग के चर्म को बहुत मलने अथवा दब जाने या वीर्य का वेग रुक जाने आदि कारणोंसे यदि लिंग के ऊपर का चर्म फट जाए तो उसे "अवपाटिका" कहते हैं । यथा—'यस्यावपाट्यते चर्मतांविद्यादवपाटिकाम' । सु० नि० अ० १३ । यह एक रोग है जो लघुछिद्र योनिवाली और रजस्वला-धर्म रहित स्त्री से मैथुन करने से, हस्त-क्रिया से, लिंगेन्द्रिय के बन्द मुँह को बलात्कार खोलने से अथवा निकलते हुए वीर्य को रोकने से हो जाता है । इस रोग में लिंग को आच्छादित करने वाला चमड़ा प्रायः फट जाता है । मा० नि० ।

अवपात avapáta-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) गिराव । पतन । अधःपतन । (२) गड्ढा । कुण्ड ।

अवपीड avapíḍa-हिं० पुं०
अवपीडः avapíḍah-सं० पुं०
पाँच प्रकार

के नस्य कर्मों में से एक । शोधन और स्तम्भन भेद से यह दो प्रकार का होता है। निचोड़ कर अर्थात् रस निकाल कर प्रयुक्त होने के कारण अथवा रोगी के नकुओं में टपकाए जाने के कारण इसको अवपीड कहते हैं। यथा—"अवपीड्य दीयेते यस्मात् अवपीड़स्ततः स्मृतः अथवा अव-पीड्यते यस्मात् स अवपीड।" तीक्ष्ण औषधियों का कल्क कर उसे निचोड़ कर रस निकालें । इसे अवपीड कहते हैं। यह गले की बीमारियोंमें प्रशस्त है। प० प्र० ४ ख ० । जो छींक लाने वाली औषध कल्कादि से बनाई जाती है परन्तु उसमें स्नेह नहीं मिलाया जाता है, उसे अवपीड़ वा शिरोविरेचन कहते हैं । यथा—"कल्काद्यैरवपीडस्तु तीक्ष्णैर्मूर्ध विरेचनः।" वा० सू० २६ अ० । गले के रोग, सन्निपात, निद्रा, विषम ज्वर, मनो-विकार (मद, मूर्च्छा, अपस्मार, सन्यास, उन्माद और भूतोन्माद आदि) और कृमि अर्थात् नाक में कीड़े पड़जाने (वा कृमि जन्य रोगों) में अवपीडन नस्य का प्रयोग किया जाता है। वै निघ० नस्य चि० । विशेष देखो—नस्य ।

अवपीडन avapiḍana--हिं० पुं० } अव-
अवपीडनम् avapíḍanam--सं० क्ली० } पीड नामक नस्य विशेष ।

अवबाहुक avabáhuka--हिं० संज्ञा पुं० } एक
अवबाहुकः avabáhukah--सं० पुं० } रोग जिसमें हाथ की गति रुक जाती है। भुज स्तंभ । देखो-अपबाहुकः (Apabáhukah)

अवभासिका,-नी avabhásiká,-ní-सं० स्त्री० सात त्वचाओं में से एक त्वचा विशेष । यह प्रथम अर्थात् सबसे ऊपर (शरीर के बाहर) की त्वचा है और समस्त वर्णों (कृष्णता, गौरतादि) को प्रकाश करती है तथा वहीं पाँच प्रकार की पाँच भौतिक छाया तथा चकार के ग्रहण से प्रभा को प्रकाश करती है। यह त्वचा व्रीहि अर्थात् जौ के (जो बीस भाग हैं उनमें) अठारह भाग के समान मोटी है यही सीप और पद्मकण्टक नामक चर्म रोगों के होने का स्थान है अर्थात् सीप, पद्मकण्टक इसी ऊपर की त्वचा में होते हैं। सु० शा० ४ अ० ।

अवभ्रटः avabhratah--सं० त्रि० नतनासिका वाला, चिकिन। (Flat-nosed.) अम० ।

अवम् avam--हिं० त्रि० [सं०] (१) नीच, निंदित (Low, vile, inferior.) । (२) अधम । अंतिम । (३) रक्षक ।

अवमन्थः avamanthah--सं० पुं० }
अवमन्थकः avamanthakah " }
अवमन्थ avamantha-हिं० संज्ञा पुं० }
एक रोग जिसमें लिंग में बड़ी बड़ी और घनी फुंसियाँ हो जाती हैं ।

लक्षण-जिसमें बड़ी बड़ी बहुत सी फुंसियाँ बीच से फटी सी हो जाएँ उसे "अवमंथ" कहते हैं। यह रोग कफ और रक्त के विकार से होता और वेदना तथा रोम हर्ष करने वाला होता है। सु० नि० १४ अ० ।

(२) कर्णपाली रोग भेद । सु० सू० १६ अ० ।

अवमनीय avamaníya--हिं० त्रि० जो वामक न हो अथवा जो वमन को रोके ।

अवमर्द्दः,-नम् avamarddah,-nam--सं० पुं०, क्ली० }
अवमर्दन avamardana--हिं० संज्ञा पुं० }
पीड़न । वेदना । दुःख देना । दलन । अम० । (See-Píḍanam.) पीड़ा पहुँचाना ।

अवमोटनम् avamoṭanam--सं० क्ली० आमोटन । मा० नि० वा० व्या० ।

अवम्भिसोम avambhisoma--सं० काँजी, काञ्जिक । (See-kánjka.)

अवयवः avayavah-सं० पुं० } शरी-
अवयव avayava--हिं० संज्ञा पुं० } रावयव, अंग, देह, शरीर, हस्तपाद आदि भाग, शरीर का एक देश । (A limb, a member.) । (२) अंश । भाग । हिस्सा ।

अवयव स्थानम् avayava-sthánam--सं० क्ली० शरीर (The body) । वै० निघ० ।

अवयवी avayaví--सं० पुं० पक्षी । (A bird.) वै० निघ० ।

हिं० पुं० (१) वह वस्तु जिसके बहुत से अवयव हों। (२) देह। शरीर।

--वि० [सं०] (१) जिसके और बहुत से अवयव हों। अंगी।

(२) कुल। संपूर्ण। समष्टि। समूचा।

अवरम् avaram--सं० क्लो० } हाथी की जाँघ
अवर avara--हिं० वि० } का पिछला भाग, अम०।

अवर āavar-अ० काना होना, एक नेत्र से हीन होना। (To be Blind.) काने मनुष्य को तिब (वैद्यक) में अअवर कहते हैं।

अवर गिडा avar-giḍá-कना० तरवड़-हिं०। (Cassia Auriculata, *Linn.*) फा० इं० १ भा०।

अवरज avaraja-हिं० संज्ञा पुं० [सं०][स्त्री० अवरजा] कनिष्ट भ्राता, अनुज, लहुरा भाई, छोटा भाई (A younger brother.)। (२) नीच कुलोत्पन्न। नीच।

अवरजा avarajá-हिं०संज्ञा स्त्री० कनिष्ठा भगिनी, छोटी बहिन। (A younger sister.)

अवरण avarana-हिं० संज्ञा पुं० (१) दे० अवर्ण। (२) देखो आवरण।

अवर दारुकम avara-dárukam-सं० क्ली० तन्नामक स्थावर विषान्तर्गत पत्रविष। सु०कल्प० २ अ०। देखो—पत्रविषम्।

अवरव्रत avara-vrata-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) सूर्य। (२) आक। मदार।

अवराई avarái-ता० तरवड़-हिं० संज्ञा स्त्री० (Cassia auriculata, *Linn.*) इं० मे० मे०।

अवराम् avrám-अ० (ब० व०), वर्म (ए० व०) आमास -फ़ा०। सूजन, शोथ, श्वयथु -हिं०। स्वेलिंग (Swelling.)-इं०।

अवराम् मग़ाबिन avarám-maghábin -अ० मग़ाबिन अर्थात् बगल, जंघासा और वंक्षण का शोथ जो प्लेग के अतिरिक्त होता है। ब्युबोज़ (Bubos.)-इं०। देखो—ख़ैर्ज़ील

अवरिका avariká-सं० स्त्री० धन्याक, धनियाँ। धने-बं०। (Coriandrum sativum.) रा० नि० व० ६।

अवरी avarí-गु० (१) शिम्बी, सेम। (The flat bean.) फा० इं० १ भा०।

-मल०, सिंगा० नील-हिं०। (Indigofera Indica.) इं० मे० मे०।

अवरीकी avaríkí-कना० तरवड़-हिं०। (Cassia auriculata, *Linn.*)

अवरुद्ध avaruddha-हिं० वि० [सं०] रुँधा हुआ। रुका हुआ। अटकाया गया, रुका (Obstructed)। (२) आच्छादित। गुप्त। छिपा।

अवरुद्धा avaruddhá -हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसे कोई रखले। उढ़री। रखुई। रखनी।

अवरूढ़ avarúrha-हिं० वि० [सं०] ऊपर से नीचे आया हुआ। उतरा हुआ। आरूढ़ का उलटा।

अवरोध avarodha-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] सुद्दा, रुकावट, रोक, अटकाव। हिण्ड्रन्स(Hindrance), ऑब्स्ट्रक्शन (Obstruction.)-इं०। (२) निरोध। बंद करना।

अवरोध उद्घाटक avarodha-udghátak -हिं० पुं० देह के छिद्रों को खोलने वाली औषध। वह औषध जो अपनी उष्मा के कारण स्रोतावरोध को खोले, और सुद्दा (अवरोध) प्रभृति को दूर करे। मुफ़त्तिह, मुफ़त्तिहुस्सुद्द, मुज़यियलुस्सुद्द-अ०। अभिष्यन्द रोकने वाला। डीऑब्स्ट्रुएन्ट (Deobstruent.)-इं०।

अवरोधक avarodhak-हिं० वि० [सं०] देह के छिद्रों को रोकने वाली औषध, सुद्दा डालने वाली औषध, वह औषध जो अपनी शुष्कता वा स्थूलता के कारण नालियों में रुक जाए और उनको बन्द करदे। मुसद्दि(ए० व०), मुसद्दिदात(ब० व०)-अ०। ऑब्स्ट्रुएण्ट (Obstruent.)-इं०।

(२) (Insulator.) रोधक, अपरिचालक।

अवरोधन avarodhana-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवरोधक, अवरोधित, अवरोधी, अवरोध, अवरुद्ध] रोकना, छेकना।

अवरोधना avarodhaná-हिं० क्रि० स० [सं० अवरोधन] [वि० अवरोधक] रोकना।

अवरोधित avarodhita-हिं० वि० [सं०] रोका हुआ। रुका।

अवरोधी avarodhí-हिं० पुं० [सं० अवरोध] [स्त्री० अवरोधिनी] अवरोध करने वाला। रोकने वाला।

अवरोपण avaropaṇa-हिं० संज्ञा पुं० [वि० अवरोपित, अवरोपणीय] उखाड़ना। उत्पाटन।

अवरोपणीय avaropaṇíya-हिं० वि० [सं०] उखाड़ने योग्य।

अवरोपित avaropita-हिं० वि० [सं०] उखाड़ा हुआ। उन्मूलित।

अवरोहः avarohah-सं० पुं०
अवरोह avaroha-हिं० संज्ञा पुं०
(१) वटादि वृक्षका अधो विलम्ब-काण्डाकार अवयव विशेष, बरोह, बरकी जटा। बटादिर-नामाल -बं०। (२) अश्वगन्ध। द्रव्य० र०। (३) उतार। गिराव। अधः पतन।

अवरोहकः avarohakah-सं० पुं०
अवरोहक avarohaka-हिं० पुं०
अश्वगन्धा (Withania Somnifera.) मद० व० १।-वि० [सं०] गिरने वाला।

अवरोहण avarohaṇa-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवरोहक, अवरोहित, अवरोही] नीचे की ओर जाना। पतन। उतार। गिराव।

अवरोहना avarohaná-हिं० क्रि० अ० [सं० अवरोहण] उतरना। नीचे आना। क्रि० अ० [सं० आरोहण] चढ़ना। ऊपर जाना। क्रि० स० [सं० अवरोधन, प्रा० अवरोहन] रोकना। रूँधना। छेंकना।

अवरोह शाखी avaroha-ṣhákhí-सं० पुं० प्लक्ष वृक्ष, पाक(ख)र, पकरी (-ड़ी०)-हिं०। (Ficus infectoria.)। पाकुड़ गाछ-बं०। रा० नि० व० ११।

अवरोह सायिनः avaroha sáyinah-सं० पुं० वट, बर्गद (Ficus Bengalensis.) फा० इं० ३ भा०।

अवरोह स्थल avaroha-sthal-हिं० संज्ञा पुं० (Antinode.)

अवरोहि avarohi-सं० स्त्री० नीचे आना उतरना। (Descending.)

अवरोहिका avarohiká-सं० स्त्री० अश्वगन्धा। (Withania Somnifera.) रा० नि०।

अवरोहि ग्रैवी avarohi-graiví—सं० स्त्री० (Ramus descendeus.)

अवरोहित avarohita-हिं० वि० [सं०] (१) गिरनेवाला। (१) अवनत, हीन।

अवरोहितालव्या avarohitálavyá-सं० स्त्री० (Descending palatinic)

अवरोहिस्थूलान्त्र avarohisthúlántra-सं० क्ली०(Descending colon) अधोगामी बृहदन्त्र।

अवरोही,-इन् avarohi,-in-सं० पुं०, हिं० संज्ञा पुं० वट वृक्ष, बर्गद। बट गाछ-बं०। (Ficus Bengalensis.)। रा० नि० व० ११।

अवरोह्यावर्ता avarohyávartá-सं० स्त्री० (Descending portion of Aorta.) अधोगा महा धमनी।

अवर्ण avarṇa--सं० पुं० अक्षर, आकार, निन्दा, परिवाद। -हिं० वि० [सं०] वर्ण रहित, बिना रंग का। (२) बदरंग। बुरे रंग का।

अवर्त्त avartta-सं० पुं०, हिं० संज्ञा पुं० पानी का चक्कर, भँवर, नाँद (Whirlpool.)। (२) घुमाव। चक्कर। [सं०] (३) स्फूर्तिशून्य पदार्थ। वह पदार्थ जिसके आर पार प्रकाश वा दृष्टि न जा सके। (४) देखो—आवर्त्त।

अवर्त्तिः avarttih-सं० पुं० बेचैनी। अथर्व०।

अवर्षण avarshaṇa हिं० संज्ञा पुं० [सं०] वृष्टि का अभाव। वर्षा का अभाव। वर्षा का न होना। अवग्रह। अनावृष्टि।

अवलग्नः avalagnah--सं० पु०
अवलग्न avalagna--हिं० संज्ञा पु०
मध्य प्रदेश। शरीरका मध्य भाग। धड़। मामा। --हिं० वि० [सं०] लगा हुआ, मिला हुआ, सम्बन्ध रखने वाला।

अवलम्बनः,-कः avalambanah,-kah-सं० पु० अवलंबन कफ। पाँच प्रकार के कफों में से एक। श्लेष्मा विशेष। स्थान-हृदय। कर्म-रस-युक्त वीर्य से हृदय के भाग का अवलम्बन और त्रिक (मस्तक और दोनों भुजाओं की संधि) को धारण करता है। भा०। देखो--कफ।

अवलम्बित avalambita-हिं० वि० (Suspended) मुअल्लिक़।

अवलक्षः avalakshah-सं० पु० (१) श्वेत वर्ण, सफेद (White.)। (२) स्वामी। (Mercury.)

अवला avalá-सं० स्त्री० नारी, स्त्री। (A woman.) रत्ना०। (२) प्रियंगु (Aglaia roxburghiana.)। प्रयोगा०-गलगण्ड। "मधुलोधावलासर्ज"।"-मह० (३) आमला, आँवरा। (Phyllanthus emblica, *Linn.*) स० फा० इं०।

अवला गंधक avalá-gandhaka-मह० आमलासार गन्धक-हिं०। आँवलासार गंधक-द०। (A sort of sulphur.) स० फा० इं०। देखो—गंधक।

अवला avalá-गु० (१) तरवड़-हिं०। (Cassia Auriculata, *Linn.*) फा० इं० १ भा०। -हिं० पु० (२) वरुण वृक्ष, बरना। (Crataeva tapia.)

अवलिप्त avalipta-हिं० वि० [सं०] (१) लगा हुआ। पोता हुआ। (२) सना हुआ। आसक्त।

अवली,-लि avalí,-li-सं० स्त्री०, हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० आवलि] पाँती, लकीर, पंक्ति (A line, a row.)। (२) समूह। झुंड। (३) वह अन्न की डाँठ जो नवान्न करने के लिए खेत से पहिले पहिले काटी जाती है। (४) रोआँ वा ऊन जो गँडरिया एक बार भेड़ पर से काटता है।

अवलीकन्द avalí-kanda-मालाकन्द। कन्द लता। रा० नि०।

अवलीढ़ avalírha-हिं० वि० [सं०] (१) भक्षित। खाया हुआ। प्राशित। (२) चाटा हुआ।

अवलुञ्चनम् avalunchanam-सं० क्लीo
अवलुञ्चन avalunchana-हिं० संज्ञा पु०
(१) मुण्डन (Shaving)। (२) शैथिल्य(Laxity; flaccidity.)त्रुटन। सु० सू० २५ अ०। (३) छेदना। काटना। (४) उखाड़ना। नोचना।

अवलुंचित avalunchita हिं० वि० [सं०] मुण्डित। (१) दूरीकृत। हटाया हुआ। अपनीत। (२) खुला या खोला हुआ। (३) कटा हुआ। छेदित। (४) उखाड़ा हुआ। नोचा हुआ।

अवलुंठन avalunṭhana-हिं० संज्ञा पु० [सं०] लोटना।

अवलेखना avalekhaná-हिं० क्रि० स० [सं० अवलेखन] (१) खोदना। खुरचना।

अवलेपः avalepah -सं० पु०
अवलेप avalepa-हिं० संज्ञा पु०
(१) गर्व्व, घमण्ड (Vanity, Pride.)। (२) उबटन, लेपन, लेप, मलहम (Plaster, ointment.)। (३) भूषण। (Ornament-) मे० पत्रतुष्क।

अवलेपनम् avalepanam-सं० क्लीo
अवलेपन avalepana-हिं० संज्ञा पु०
(१) उबटन। लेपन। लेप। वह वस्तु जो लगाई वा छोपी जाए (Plaster, ointment.)। (२) व्रण, तैल घृत आदि का लेपन या मर्द्दन। तैलादि की मालिश। लगाना। पोतना। छोपना। (३) अहंकार। (४) दूषण।

अवलेहः avalehah
अवलेह avaleha
अवलेहिका avalehiká
-सं० (हिं० संज्ञा) पु०, स्त्री० [वि०

अवलेह्य] (१) चटनी, चाटने वाली कोई वस्तु, भोज्य विशेष। लेई जो न अधिक गाढ़ी और न अधिक पतली हो और चाटी जाए। (२)औषध जो चाटा जाए। लेह्यौषध। प्राशः। जिह्वा द्वारा जिसका आस्वादन किया जाए उसे अवलेहिका कहते हैं। च० द० ज्व० चि०। लऊक़-अ०। लॉक Loch, लिंक्टस Linctus, लिंक्चर Lincture, इलेक्चुअरी Electuary-इं०।

नोट—यूनानी-वैद्यक एवं डॉक्टरी अवलेह निर्माण क्रमादि के विशेष विवरणके लिए क्रमशः लऊक़ तथा लिंक्टस शब्द के अन्तर्गत और आयुर्वेदीय वर्णन के लिए लेहः शब्द के अन्तर्गत देखें।

क्वाथ आदि अर्थात् स्वरस, फाण्ड एवं कल्क प्रभृति को छानकर पुनः इतना पकाएँ कि वे गाढ़े हो जाएँ। इसे रसक्रिया कहते हैं और यही अवलेह वा लेह कहलाता है। इसकी मात्रा एक पल (४ तोले) की है। यथा—

क्वाथादीनां पुनः पाकाद्घनत्वंसा रसक्रिया।
सोऽवलेहश्चलेहः स्यात्तन्मात्रा स्यात्पलोन्मिताः॥

यदि अवलेह में शकर प्रभृति डालने का परिमाण न दिया हो तो औषधों के चूर्ण से चौगुनी मिश्री और गुड़ डालना हो तो चूर्णसे दूना डालें। जल या दूध आदि द्रव डालना हो तो चौगुना मिलाना चाहिए। यथा—

सिता चतुर्गुणा कार्या चूर्णाच्च द्विगुणोगुड़ः।
द्रवं चतुर्गुणं दद्यादिति सर्वत्र निश्चयः।

अवलेह सिद्ध होने की परीक्षा

दर्वी से उठाने पर यदि वह तंतु संयुक्त दिखाई दे, जलमें डालने पर डूब जाए, द्रव रहित अर्थात् खर हो, दबाने पर उसमें उँगलियों के निशान पड़ जाएँ और वह सुगंध युक्त और सुरस हो तो उसे सुपक्व जानना चाहिए। यथा—

सुपक्वे तन्तुमत्त्वं स्यादवलेहोऽप्सु मज्जति।
खरत्वं पीड़िते मुद्रा गन्धवर्ण रसोद्भवः॥

जहाँ पर अवलेह के अनुपान की व्यवस्था न दी गई हो वहाँ पर दोष और व्याधि के अनुसार दूध, ईख का रस, पञ्चमूल के क्वाथ द्वारा सिद्ध किया हुआ यूप और अड़ूसे के क्वाथ में से किसी एक का यथा योग्य अनुपान देना हितकारी है।

दोषानुसार अनुपानों की मात्रा

कफ व्याधि में १ पल, पित्त में २ पल और वात में ३ पल की मात्रा प्रयोग में लाएँ।

मुख्य मुख्य आयुर्वेदोक्त अवलेह निम्न हैं:—कण्टकार्यवलेह, च्यवनप्राशावलेह, कूष्मांडावलेह, खण्डसूरणावलेह, अगस्त्यहरीतक्यवलेह, कुटजावलेह, कुटजाष्टकावलेह इत्यादि।

अवलेहनम् avalehanam-सं० क्लो०
अवलेहन avalehana-हिं० संज्ञा पुं०
लेहन, प्राशन, चाटना, जीभ की नोक लगाकर खाना (Licking, tasting with the tongue.)। (२) चटनी।

अवलेह्य avalehya-हिं० वि० [सं०] प्राश्य। चाटने योग्य।

अवलो avalo-ते० घोर राई, काली राई, राई, असल राई, मकरा राई-हिं०। राजिका-सं०। (Brassica nigra, *Koch.*) मेमो०।

अवलोकन avalokana-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवलोकित, अवलोकनीय] दर्शन, ईक्षण, दृष्टि देना, देखना (View, sight, the l oking at any object.)। (२) निरीक्षण।

अवल्कः avalkah-सं० पुं० मेषश्रृङ्गी, मेढ़ासिंगी। (Pistacia Integerrima, *Stewart.*) वै० निघ०।

अवल्गजा avalgajá-सं० स्त्री० कृष्ण सोमराजी, बाकुची। Vernonia anthelmintica (The black var. of-)। हाकुच-बं०। भैष० भल्ला० गुड़।

अवल्गुजः,-जा avalgujah,-já-सं० पुं०, स्त्री० (१) कृष्ण सोमराजी। (The black var. of Vernonia anthelmintica.) सु० चि० २५ अ०। (२) सोमराजी,

बकुची-हिं० । हाकुच-बं० । (Vernonia anthelmintica.) भा० पू० १ भा० । गु० कुष्ठ० चि० ।

अवल्गुज बीजम् avalguja-víjam
अवल्गुजीजम् avalguji-jam } सं० क्लो० सोमराजी बीज, बकुची । Vernonia anthelmintica. (The seeds of-)

अवल्गुजादि लेपम् avalgujádilepam-सं० क्लो० बकुची, कमौंदी, पमाड़, हल्दी, सैन्धव और मोथा इन्हें समान भाग ले काँजी में पीस कर लेप करने से उग्र कण्डू (खुजली) का नाश होता है । च० सं० ।

अवश(स)क्थिका avaṣhakthiká-सं० स्त्री० (१) जानु देश । (२) पद बन्धन बस्त्र विशेष ।

अवशिष्ट avaṣhishṭa-हिं० वि० [सं०] बचा हुआ । बचाखुचा । शेष । बाकी । उच्छिष्ट । बचा बचाया । (Left, remaining.) ।

अवशेष avaṣhesha-सं० पुं०, हिं० संज्ञा पुं० [वि० अवशेष, अवशिष्ट] (१) अन्त, समाप्ति । (२) बची हुई वस्तु । तलछट । (A residue, a remnant.)
वि० [सं०] बचा हुआ । शेष । बाकी ।

अवशेषित avaṣheshita-हिं० वि० [सं०] बचा हुआ । शेष । बाकी ।

अवश्यः avaṣhyah
अवश्या avaṣhyá } -सं० पुं०, स्त्री० तुषार, शीत, पाला, हिम, बर्फ । (Frost, cold, ice or snow.) । भा० म० ४ भा० शिरोरोग, अर्द्धाव भेदक । "प्राग्वातावश्याय मैथुनैः ।" मा० गुड़ ।

अवश्यायः avaṣhyáyah-सं० पुं०
अवश्याय avaṣhyáya-हिं० संज्ञा पुं० } शिशिर (Cold.) । च० द० पि० ज्व० मृद्वीकादि० । "अवश्यायस्थितं पाकम् ।" (२) तुषार, हिम, पाला (Frost, cold.) । भा० म० ४ भा० नासारो० । "अवश्यायकमैथुन-वाष्प सेकैः । (३) झींसी । -झड़ी ।

अवश्रयण avaṣhrayaṇa-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] चूल्हे पर से पके हुए खाने को उतार कर नीचे रखना ।

अवश्याया avaṣhyáyá-सं० स्त्री० कुज्झटिका । See—Kujjhaṭiká.

अवष्टम्भः avashṭambhah-सं० पुं०
अवष्टम्भ avashṭambha हिं० संज्ञा पुं० } [वि० अवष्टब्ध] स्वर्ण, सोना । Gold (Aurum.) मे० । (२) आश्रय, सहारा ।

अवष्टब्ध avashṭabdha- हिं० वि० [सं०] जिसे सहारा मिला हो । आश्रित ।

अवष्वाणम् avashváṇam-सं० क्ली० भक्षण । (Eating.) हे० च० ।

अवसक्थिका ava-sakthiká-सं० स्त्री०, हिं० संज्ञा स्त्री० खटिया, खट्टिका, खट्टा, खाट । पर्याय—पर्य्यस्तिका, परिकरः पर्य्यङ्कः । हे० ।

अवस्था avasthá-हिं० स्त्री० प्रकृति की हालत जैसे ठोस, तरल वा वायवीय । (State.)

अवस्था परिवर्त्तन avasthá-parivṛttana -हिं० पुं० (Change of state.) पदार्थ की एक अवस्था से दूसरी अवस्था में परिणति । इसका मुख्य कारण ताप है । अस्तु, जब हिम, मोम वा जमे हुए घी को उष्ण किया जाता है, तब वे द्रवीभूत हो जाते हैं । यदि उन्हें तपाना जारी रखें, तो उनके वाष्प बन कर उड़ जाते हैं । और वाष्पों को यदि शीतल करें तो वे पुनः पूर्वावस्था को यथाक्रम प्राप्त हो सकते हैं । आधुनिक रसायनशास्त्र के अनुसार इसे ही "अवस्था परिवर्तन" कहते हैं ।

अवसन्न avasanna-हिं० वि० [सं०] (१) शान्त, क्लान्त, थका हुआ, उदास । (२) जड़ीभूत, स्वकार्य्याक्षम, सुन्न, स्पर्श शून्य, निःसंज्ञ ।

अवसन्नता avasannatá-हिं० संज्ञा स्त्री० सुन्न हो जाना, निश्चेष्ट होना, काय सुप्तता, स्पर्शाज्ञता, त्वक् शून्यता, त्वक्स्वाप, संज्ञानाश, कार्याक्षमता, जाड्य । यह स्पर्शशक्ति के विकार

से पैदा होती है। यदि कारण बलवान हो तो स्पर्श शक्ति सदा के लिए बिदा हो जाती है, अन्यथा वह विकृत वा कम हो जाती है।

अनस्थेसिया (Anæsthesia), नार्कोटिज़्म (Narcotism), नम्बनेस (Numbness)–इं०। ख़द्र, ख़द्र, फ़क़्दुल इह्‌सास, कलालुल् हिस–अ०। ज़वाल हिस–फ़ा०। हिस का जाते रहना–उ०।

नोट—नार्कोटिज़्म अवसन्नता की उस कृत्रिम अवस्था को कहते हैं जो किसी अवसन्नताजनक औषध के प्रयोग से कृत्रिम रूप से उपस्थित हो जाती है।

अवसन्नता जनक avasannatájanak–हिं० सुन्न करनेवाली औषध, वह औषध जो अपने शैत्य, रूक्षता और स्तम्भक गुण के कारण शारीरिक धातुओं तथा आर्द्रता को सांद्रीभूत कर दे और आवयविक स्रोतो को अवरुद्ध कर प्राण वायु के आवागमनको रोके और इस प्रकार उक्त अंगको जड़ीभूत करदे। यथा–अहिफेन, कोकोन प्रभृति। संज्ञाहर, स्पर्श हारक, स्पर्शाज्ञताजनक, स्पर्शघ्न। –हिं०।

अनस्थेटिक (Anæsthetic), नार्कोटिक (Narcotic)–इं। मुख़द्दिर, मुफ़क़्क़िदुल् इह्‌सास, ख़द्दिर–अ०।

नोट—डॉक्टरी की परिभाषा में अनस्थेटिक्स उन औषधों को कहते हैं जो मस्तिष्क एवं सौषुम्न केन्द्रों पर प्रभाव कर अचेतता एवं निःसंज्ञता उत्पन्न करती हैं।

परन्तु यह शब्द अब साधारणतः सुगन्धित व अस्थिर पदार्थों यथा क्लोरोफॉर्म, ईथर, मीथिलीन, नाइट्रस ऑक्साइड गैस (हास्यजनक वायव्य) प्रभृति के लिए ही प्रयुक्त होता है। इसमें ऐलकोहल (मद्यसार) तथा अहिफेन जैसी मादक (Narcotic) औषधें सम्मिलित नहीं, यद्यपि वे भी स्पर्शाज्ञताजनक हैं।

इनके दो भेद हैं—

(१) स्थानिक संज्ञाहर— इस प्रकार की औषध शरीर के जिस अंग पर लगाई जाती हैं, वह उस स्थल की बोध शक्ति को नष्ट कर देती हैं अर्थात् उक्त भाग को अवसन्न कर देती है।

लोकल अनस्थेटिक्स (Local anæsthetics)–इं०। मुक़ामी मुख़द्दिर, मुक़ामी मुफ़क़्क़िदुल् इह्‌सास–अ०। मुक़ामी हिस्स को ज़ायल करने वाली या सुन्न करने वाली दवा –उ०।

वे निम्न हैं—

डॉक्टरी—कार्बोलिक एसिड, युकीन, कोकीन का त्वक्स्थ अन्तःक्षेप, ईथर (स्प्रे), वेराट्रीन, ईथल क्लोराइड, मीथल क्लोराइड (स्प्रे द्वारा,) बाह्य शीत (बर्फ़), आर्थोफ़ार्म, आर्थोफार्म न्यु, आयडाफ़ॉर्म, ईथर मीथीलेटस, ईथर मैथीलिक्स, ईथल ब्रोमाइडम्, ऐरोमैटिक ऑइल्ज़ (सुगन्धित तैल), ऐकोईन, एलीपोन, अनस्थेसीन (अवसन्नीन), अनस्थिल, थाइमोल (सत अजवाइन), ट्रोपाकोकीन, सबक्युटीन, स्टोवेइन, फेनोल कैम्फर (फेनोल तथा कर्पूर), क्लोरेटोन, क्लोराइल, कोकीन हाइड्रो क्लोराइडम्, कोकीनी फेनीलास, कैलीन, ग्वाएको(कि)ल, मेथीलाक और मेन्थोल (सत पुदीना) एवं नर्वसाईडीन, नर्वेनीन, नोवोकीन, हालोकीन, हाइड्रोक्लोराइड, युकीन हाइड्रोक्लोराइडम्, युग्युफार्म, युहिमबीन, स्टेनीकार्पीन।

आयुर्वेदीय तथा यूनानी—

अहिफेन, तम्बाकू, शूकरान (कोनायम्), धत्तूर फल, अजवाइन खुरासानी, यब्रूजुस्सनम् (बिलाडोना), बीख़ लुफ़ाह, उक़्हुवान (बाबूना भेद), पार्वतीय अजवाइन, भंग, केशर, हमामा, काकनज, बीख़ जर्ब, कुचिला, इस्बंद, श्वेत कटुकी, काहू, तुलसी, गुलेलाला, पित्तपापड़ा, सोआ, कुन्दुर, लवंग, शाहसफ़रम, शक़ायक़, बच्छनाग, विट्खदिर, वच, कोका, हिंगु, मेषशृंगी (गुड़मार), काली कटुकी, जलब्राह्मी, निम्ब, जटामांसी, कटुकी और अशोक।

(२) सार्वांगिक संज्ञाहर—

जेनरल अनस्थेटिक्स (General anæs-

-thetics)-इं० । मुख़द्दिरात कुल्ली-अ० । बेहोशी पैदा करने वाली दवा-उ० ।

ये औषधें इस प्रकार संज्ञाशून्यता उपस्थित कर देती हैं कि फिर किसी भाँति की वेदना का बोध नहीं होता अर्थात् सार्वदैहिक स्पर्शाज्ञता-जनक औषधों के उपयोग से मनुष्य पर पूर्ण अचेतता व्याप्त हो जाती है। दुःख एवं वेदना का सर्वथा लोप हो जाता है तथा परावर्तित चेष्टाएँ विनष्ट हो जाती हैं । यह औषध "विकास सिद्धांत" (इस नियम के अनुसार वातकेन्द्रों पर औषध का प्रभाव उनके विकास-क्रम के विरुद्ध होता है) तथा "पूर्वोत्तेजन एवं नैर्बल्योत्तर नियम" (इस नियम के अनुसार अल्प मात्रा में अथवा प्रारम्भ में औषध का उत्तेजक एवं अधिक मात्रा में अथवा पश्चात् को उसका नैर्बल्यजनक प्रभाव होता है) के उत्तम उदाहरण हैं । अस्तु इनके आघ्राण कराने अर्थात् सुँघाने से भावना शक्ति प्रबल हो जाती है। पुनः मस्तिष्क गत्युत्पादक केन्द्रों में गति होती है और रोगी चित्त वृत्ति की अस्थिरता एवं विभिन्न केन्द्रों की असाधारण तथा अनियमित गतिके कारण अनाप शनाप मूर्खतापूर्ण बातें करने लगता है और हाथ पाँव मारता है । थोड़े काल पश्चात् मास्तिष्कीय शक्तियों में निर्बलता के लक्षण प्रगट हो जाते हैं, बुद्धिभ्रंश होता तथा मस्तिष्क के उच्च केन्द्रों में और अधिक गति होती है । अतएव हृदय स्पंदित होता, श्वासोच्छ्वास तीव्र हो जाता और रक्तभार बढ़जाता है । क्षण भर बाद ये लक्षण भी अदृश्य हो जाते और रोगी पूर्णतः अचेत हो जाता है । सम्पूर्ण शरीर की बोध शक्ति लुप्तप्राय हो जाती, मांस पेशियाँ शिथिल हो जातीं एवं किसी प्रकार की चेष्टा से भी ये गतिशील नहीं होती हैं। नेत्रकनीनिका संकुचित हो जाती, नाड़ी एवं श्वासोच्छ्वासकी गति कम हो जाती है, इत्यादि । प्रायः ऐसी ही दशा में शस्त्रकर्म सम्पादित होता है ।

पर यदि जेनरल अनस्थेटिक्स (सार्वांगिक संज्ञाहर) का प्रयोग असावधानतापूर्वक किया जाए तो फिर भयानक लक्षण प्रगट होने लगते हैं । अस्तु, अनैच्छिक मांस पेशियों के वातग्रस्त हो जाने से प्रायः मल-मूत्रका प्रवर्तन हो जाया करता है, श्वासोच्छ्वास एवं हार्दिक गतियाँ अत्यन्त निर्बल और अन्ततः अनियमित हो जाती हैं । प्रायः श्वासोच्छ्वास वा हृदय केन्द्र के वातग्रस्त हो जाने से मृत्यु उपस्थित होती है ।

मूर्च्छा दूर होने के पश्चात् जब चैतन्यता का उदय होने लगता है तब जिस क्रम से मनुष्य की शारीरिक क्रियाएँ अवसित हुई थीं, ठीक उसके विपरीत उत्तरोत्तर वे उपस्थित होने लगती हैं । किन्तु औषध का प्रभाव कई घंटे तक शेष रहता है और चैतन्यता लाभ करनेके पश्चात् भी अधिक काल तक शारीरिक पेशियाँ भली प्रकार कार्य सम्पादन करने के अयोग्य रहती हैं ।

पूर्ण अचैतन्यता प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष दोनों कारणों से उत्पन्न की जा सकती है । अस्तु अप्रत्यक्ष (Indirect) रूप से संज्ञाशून्यता उपस्थित करने की निम्न लिखित तीन विधियाँ हैं :—

(१) शिरोधीया धमनी (Carotids) या गर्दन की रग को दबा कर या उन्हें बाँधकर या दोनों पार्श्व के वैगस-नर्व तथा शिरोधीया धमनी को दबा कर और इस प्रकार मास्तिष्क रक्तसञ्चार को अवरुद्ध कर, जिससे वातसेलीय संवर्तन क्रिया-शून्य हो जाता है, पूर्ण विसंज्ञता उपस्थित की जा सकती है ।

(२) रक्त की वेनासिटी (शिरा सम्बन्धी प्रतिक्रिया) को बढ़ाकर और इस प्रकार वात-सेलों की ओषजनीकरण क्रिया को घटा कर भी बेहोशी उत्पन्न की जा सकती है ।

(३) मस्तिष्क से शोणित को शरीर के अन्य भागों में पहुँचा कर जैसे पृथ्वी पर उत्तान लेटे हुए रोगी को सहसा उठाकर खड़ा कर देने से भी बेहोशी उत्पन्न की जा सकती है ।

अवलग्नीन avasannína-हिं० पुं० अनलज्नीन अवसन्नीन ।

अवसादक avasádak-हिं० संज्ञा पु० [सं०] वह औषध जो बढ़े हुए दोषों की ऊष्मा एवं क्षोभ को शमन करे अथवा वह जो धात्ववयविक क्रिया को अवसित करे। उदाहरणतः—(१) वात-केन्द्रिक क्रिया, यथा ताम्रकूट (तम्बाकू), लोबेलिया (अरण्य तम्बाकू), ब्रोमाइड ऑफ पोटाशियम प्रभृति, (२) रक्तसञ्चालन-संस्थानिक क्रिया, यथा वत्सनाभ, वेराट्रम्, टार्टर एमेटिक, प्रूसिक एसिड प्रभृति; (३) सौषुम्न-काण्ड क्रिया, यथा—कालाबार बीन, इत्यादि।

पर्याय—शामक, क्षोभहर, संशमन, निर्बलताजनक-हिं०। सिडेटिव्ज़ Sedatives, डिप्रेसेण्ट्स Depressants-इं०। मुसक्किन, मुज़्इफ़-अ०।

अवसादक औषधों को निम्न लिखित भागों में विभाजित किया जा सकता है। यथा—

(१) सार्वांगिक वा व्याप्त अवसादक-(General sedatives) मुसक्किनात उमूमी-अ०।

ये निम्न हैं—

पूर्ण मादक (Narcotics) तथा अवसन्नताजनक (Anæsthetics) औषधें यथा ओपियम (अहिफेन), मॉर्फिया (अन्तःक्षेप द्वारा), क्लोरल, हायोसायमस (अजवाइन खुरासानी), जल तथा रक्त मोचण।

(२) स्थानिक अवसादक (Sedatives)-मुसक्किनात मुक़ामी-अ०।

ये निम्न हैं—

ओपियम् (अहिफेन), ऐट्रोपीन, एसिड कार्बोलिक, एसिडम हाइड्रोस्यानिकम् डायल्युटम्, बोरेक्स (टंकण), बिलाडोना, प्लम्बाई एसीटास, प्लम्बाई कार्बोनास, क्रियोज़ूटम्, क्लोरल, लाईकार प्लम्बाई सबएसिटेटिस डायल्युटस, मॉर्फीन (अहिफेनीन) और अनस्थेटिक्स (अवसन्नताजनक औषध) तथा ऐनोडाइन्स (अङ्गमर्दप्रशमन)।

(३) मस्तिष्क अवसादक—(Cerebral Sedatives or depressants) मुज़्इफ़ात दिमाग़-अ०।

इसके उपयोग से मास्तिष्कीय रक्तसंक्रमण शिथिल हो जाता है एवं मास्तिष्कीय शक्तियाँ निर्बल हो जाती हैं अर्थात् उनकी क्रियाओं में शिथिलता उपस्थित हो जाती है। ऐसी औषधों को निम्नलिखित चार श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है, यथा—

(१) निद्राजनक (Hypnotics),

(२) मादक वा संज्ञाहर (Narcotics.),

(३) सार्वांगिक अंगमर्दप्रशमन (General anodynes) और सार्वांगिक अवसन्नताजनक (General anæsthetics)।

नोट—इनके पूर्ण विवेचन के लिए यथा स्थान देखो।

(४) सौषुम्न अवसादक (कसेरुका-मज्जा अवसादक) Spinal sedatives or depressants)-मुज़्इफ़ात नुख़ाअ-अ०।

ऐसी औषधें सुषुम्णाकांड के एण्टेरी अर्कानुवा के व्यापार को शिथिल करती हैं अर्थात् उसकी तीव्रता (activity) को घटाती हैं। इनका सरल प्रभाव होता है अथवा परावर्तित रूप से और इनका यह प्रभाव सौषुम्नोत्तेजक औषधों के विपरीत होता है।

वह औषध जो सुषुम्णा की परावर्त्तित गति को शिथिल करती है।

(क) क्लोरल हाइड्रेट*, ब्रोमाइड्स, फाइसास्टिग्मीन, क्लोरोफार्म*, ईथर*, कैनाबिस इंडिका (भंग)*, ओपियम् (अहिफेन)*, एपोमॉर्फीन*, वेरेट्रीन*, एमेटीन, ऐलकोहल (मद्यसार)*, अर्गट, गे(जे)लसीमियम्, सेपोनीन, एमाइल नाइट्रेट, सोडियम् नाइट्रेट, कैम्फर (कपूर)*, मर्करी (पारद), ऐण्टिमनी (अञ्जन), सोडियम्, पोटासियम्, लीथियम्, सिल्वर (रजत), आर्सेनिक (संखिया)*, ज़िंक (यशद), कार्बोलिक एसिड*, टर्पेनटाइन (तारपीन का तेल), कॉल्चिकम् (सूरिञ्जान) और कावाल्ट।

नोट—जिन औषधों पर ये (*) चिह्न लगे हैं उनका पूर्व प्रभाव सूक्ष्मोत्तेजक और अवसादकोत्तर प्रभाव होता है।

उपयोग—क्लोरल हाइड्रेट, ब्रोमाइड्स, फाइसास्टिग्मीन, केलेबार बीन, ओपियम्, कैनाबिस इण्डिका और क्लोरोफार्म या ईथर (आघ्राण द्वारा) टेटेनस प्रभृति आक्षेप युक्त रोगों में सामान्यतः प्रयुक्त होते हैं।

(ख) वे औषधें जो सुषुम्णा की परावर्तित गति को पेचीदा रूप से शिथिल करती हैं।

ऐसी दवाएँ सौषुम्नीय रक्तसंक्रमण को अवरुद्ध कर स्वप्रभाव प्रदर्शित करती हैं। ये निम्न हैं—

एकोनाइट (वत्सनाभ), डिजिटेलिस और क्वीनीन, अधिक परिमाण में इनका अत्यन्त प्रबल प्रभाव होता है।

(५) नासिकावसादक—(Nasal sedatives) मुसक्किनात अन्फ़–अ०। वह औषध जो नासिका की श्लैष्मिक कला के क्षोभ को निवारण कर उस पर शामक प्रभाव करें। जैसे बिस्मथ साल्ट्स अकेले या मॉर्फीन एवं कोकीन प्रभृतिके साथ और अन्य व्याप्तावसन्नताजनक औषध जैसे इपीकेकाना कम्पाजिटा तथा एकोनाइट (वत्सनाभ) प्रभृति।

(६) हृदयावसादक—(Cardiac sedatives or depressants) मुज़्इफ़ात क़ल्ब–अ०। वह औषध जो हृदय की गति को या उसकी शक्ति या उन दोनों को निर्बल करती हैं। निम्न लिखित औषधें हृदय की आकुंचन शक्ति को घटाती हैं। फलतः वह प्रसार की दशामें ही गति करने से रह जाता है। वे यह हैं—

डायल्यूट एसिड्स, मस्केरीन, एपोमार्फीन, पाइलोकार्पीन, सेपोनीन, क्लोरल, सैलीसिलिक एसिड, ऐलकलाइन साल्ट्स, डबल कॉपर साल्ट्स और डबल ज़िंक साल्ट्स अधिक मात्रा में प्रयुक्त करने से।

निम्नलिखित औषधें हृदय की गति एवं शक्ति दोनों को घटाती हैं—

एकोनाइट (वत्सनाभ), हाइड्रोस्यानिक एसिड डाइल्यूट, ऐण्टिमनी साल्ट्स (अञ्जन के लवण), वेरेट्रीन, और अर्गट प्रभृति।

उपयोग—प्रादाहिक रोगों में मुख्यतः नाड़ी की गति को मन्द करने के लिए एकोनाइट का प्रयोग करते हैं। ऐण्टिमनी साल्ट्स फुप्फुस एवं वायुप्रणाली के उग्र प्रदाह की दशा में हितकर होते हैं। जब अजीर्ण के कारण पैल्पिटेशन ऑफ़ दी हार्ट (हृदय का धड़कना) विकार होता है। तब हाइड्रोस्यानिक एसिड के प्रयोग से विशेष लाभ होता है।

हृदयावसादक औषध—ओपियम् (अहिफेन), एपोकाइनम् (अमरीकीय भंग), एक्वा लारोसेरेसाई, एमाइल नाइट्रिस, ऐण्टिमोनियम् टार्टरेटम्, बेलाडोना, डिजिटेलिस, स्पिरिटस ईथरिस नाइट्रोसाई, स्ट्रेमोनियम (धत्तूर), सिला (वनपलांडु), सोडियाई नाइट्रिस, कोनायम (शूकरान), नाइट्रोग्लीसरीन, वेरेट्रम् वरीडी, हायोसाइमस (अजवाइन खुरासानी), उशीर, गुडूची, एसिड ऐसीटिकम् (सिरकाम्ल), एसिडम् साइट्रिकम् (जम्भीराम्ल), एसिडम् ऑग्ज़ेलिकम् (चुक्राम्ल), एसिडम् टार्टारिकम् (अम्लिकाम्ल), लिमनिस सक्कस (निम्बुक स्वरस), ऐण्टिमोनियाई ऑक्साइडम् (अञ्जन ऊष्मिद वा भस्म), ऐण्टिमोनियम् सल्फ्युरेटम्, ऐण्टिमोनियाई क्लोराइडाई लाइक्वार, ऐण्टिमोनियम् नाइग्रम्, ऐण्टिमोनियम् प्यूरिफिकेटम्, एकोनाइटीन (वत्सनाभीन), सिमिसिफ़्युगा रिज़ोमा, डिजिटेलिनम्, लोबेलिया (अरण्य तम्बाकू), स्टेफसेग्राई सेमिना, टैबेसाई फोलिया, विरेट्राई विरिडिस रैडिक्स, विरेट्रम् ऐल्बम्।

(७) फुप्फुसीय वा श्वासोच्छ्वास अवसादक—(Pulmonary or respiratory sedatives) इसके निम्न लिखित कतिपय भेद हैं—

(क) अवसादक लख़लख़े (Sedative Inhalations)-लख़लख़ात मुसक्किनह्, लख़लख़हे मुसक्किन–अ०। इन औषधों के वाष्प वायुप्रणालीस्थ श्लैष्मिक कला के

क्षोभ को शमन करते हैं अर्थात् उस पर शामक प्रभाव करते हैं जैसे हाइड्रोस्यानिक एसिड डाइल्यूट, कोनायम (शूकरान) और क्लोरोफ़ार्म प्रभृति।

(ख) नासावसादक–यथा स्थान देखो।

(ग) सरल श्वासोच्छ्वास-केन्द्र अवसादक–वह औषधजो श्वासोच्छ्वास केन्द्र को स्पष्टतया शिथिल करती हैं। यथा—

ओपियम् (अहिफेन), कोडाइन (अहिफेन का एक सत्व), कोनाइम (शूकरान), एकोनाइट (वत्सनाभ), वैरेट्रीन, गैलसीमीन, सेपोनीन, फाइसास्टिग्मीन (जौहर लोबिया कालाबार), वर्जिनियन प्रून, हिरोइन, हाइड्रोस्यानिक एसिड डायल्यूट, क्लोरल, एंटिमनी साल्ट्स (अञ्जन के लवण)*, एलकोहल (मद्यसार)*, ईथर*, क्लोरोफार्म*, क्लोनीन*, केफीन*, इपीकेक्वाना*।

इनमें से अंतिम की सात औषधें जिनपर यह चिह्न (*) लगा है, श्वासोच्छ्वास केन्द्र को शिथिल करने से पूर्व उसे आंशिक उत्तेजना प्रदान करती हैं।

फाइसास्टिग्मीनका अत्यन्त प्रबल प्रभाव होता है अर्थात् यह श्वासोच्छ्वास-केन्द्रको अत्यंत शिथिल कर देता है! किंतु इस अभिप्राय हेतु इसका कदापि प्रयोग नहीं होता। ओपियम्, कोडाइन, हाइड्रोस्यानिक एसिड डायल्यूट और वर्जिनियन प्रून इस हेतु विशेष रूप से प्रयुक्त होते हैं।

उपयोग– फुप्फुस, आमाशय, यकृत, प्लीहा, फुप्फुसावरककला, वायुप्रणाली एवं प्रणालिकाओं, स्वरयंत्र, नासिका, कंठ और अन्नमार्ग के क्षोभ के कारण परावर्तित रूप से उत्पन्न हुई कास में ऐसी औषधें उपयोग में आती हैं। इस प्रकार की कास प्रायः शुष्क हुआ करती है अर्थात् इसमें अत्यल्प श्लेष्मस्राव हुआ करता है।

परावर्तित–गति जन्य कास–चिकित्सा में इन औषधोंके उपयोग से पूर्व रोग के मूल कारण का पता लगा उसके निवारण का यत्न करना चाहिए।

(घ) सांवेदनिक वाततन्तुओं को शिथिल वा निर्बल करनेवाली औषधें। ये श्वासोच्छ्वास-केन्द्र अवसादक औषध हैं। अस्तु वहाँ देखो—

(ङ)अवसादकीय श्लेष्मानिस्सारक–देखो–श्लेष्मानिस्सारक।

श्वासोच्छ्वासावसादक औषधें—

ऑलियम् टेरीबिन्थीनी (तारपीन का तेल), ईथर एसीटिक्स, ईथिल आयोडाइडम्, एका लारोसेरेसाई, एमाइल नाइट्स, ऐंटिमोनियम् टार्टरेटम्, बेलाडोना, पेरोमीन, टिङ्क्चूराप्रूनी-वर्जिनीएनी, जेल्सीमियम्, डायोनीन, स्ट्रैमोनियम् (धुस्तुर), सिरूपस प्रूनी-वर्जिनिएनी, **क्लोरल, क्लोरोफॉर्मम्,** कोडाइन (कोडीन), कोडीनी **सैलीसिलेट,** कोडीनी फॉस्फॉस, कोडीनी **हाइड्रोक्लोराइडम्,** कोनायम् (शूकरान), कोनाईन (शूकरानसार), कोनाइनी हाइड्रोब्रोमाइडम्, कोनाइनी हाइड्रोक्लोराइडम्, लोबिलिया (अरण्य ताम्रकूट), लैक्ट्युकेरियम् (अफ़ीम काहू), मोर्फीन और उसके लवण, हायोसायमस (अजवाइन खुरासानी), हीरोईन, हीरोईन हाइड्रोक्लोराइड, कूठ, कचूर, आमला, भूँई आमला, कर्कटश्रृङ्गी, कंटकारी, बृहती, हरीतकी, बहेड़ा, उन्नाब।

(८)यकृत् अवसादक—(Hepatic depressants)–मुज़इफ़ कबिद-अ०। देखो—पित्तस्राव अवरोधक।

(९) संवर्तनशक्त्यवसादक—(Metabolic depressants)–मुज़इफ़ात कुव्वत मुग़इरह्–अ०। वे औषध जो संवर्तन क्रिया को मंद करती हैं। ऐसी औषधें या तो शीघ्र ऑक्सिडाइज (उप्मिद) हो जाती हैं या ऑक्सीहीमोग्लोबीन को एक ऐसा मज़बूत यौगिक बना देती है जिसमें वह अपने ओषजन वायव्य को पृथक् नहीं कर सकता। ये निम्न हैं—

क्वीनीन, फेनेज़ून, एसिट एनीलाइड, सेलीसीन' ग्लीसरीन, रीसॉर्सीन इत्यादि।

(१०) आमाशयावसादक–(Gastric-sedatives–) मुसक्किनात मिअ्दह–अ०। देखो–आमाशय अवसादक।

(११)नाड्यावसादक (Nervine sedatives.)। मुसक्किनात अअसाब-अ०। वे औषध जो वातवहानाड़ियों के क्षोभ को घटाकर उन्हें शांति प्रदान करें। वे निम्न हैं—

एसिडम् हाइड्रोब्रोमिकम्, एका लारोसेरेसाई, एमाइल वेलेरिएनास, एमोनियाई ब्रोमाइडम्, एमोनियाई-वेलीरिएनास, ऐण्टिस्पैज़्मीन, ऐण्टिमोनियम् टार्टरेटम्, परेरा (पेरेरा), पोटासियाई ब्रोमाइडम्, ट्रायोनाल, जेलसीमियम (पीत चमेली), ज़िन्साई ब्रोमाइडम्, सोडियाई ब्रोमाइडम्, सेलिक्स नाइग्रा, फाईसाष्टिग्मा, फ्रेनेज़ूनम्, फेनेसेटीन, क्लोरेलोज़, कैम्फर (कपूर), कैम्फोरा मॉनो ब्रोमेटा, गैलोब्रोमोल, लाइकार मैग्नीसियाई ब्रोमाइडम्, लीथियाई ब्रोमाइडम्, लैक्टयुका, ल्युप्युलस, ल्युप्युलीन, मेन्थोल, वेलीरिएनेट, निकोली ब्रोमाइडम्, न्युरोनाल, वाइबर्नम्, वेरोनाल, वेरेट्रम विरीडी।

आयुर्वेदीय तथा यूनानी अवसादक औषध—अपामार्ग, बड़ी इलायची, दारुहरिद्रा, अपराजिता, हरिद्रा, तुलसी, वनतुलसी, राम तुलसी, चन्दन श्वेत, चन्दन रक्त, उशीर, कमल, निलोफ़र, अनार, नीबू, शर्बती नीबू, अमरूद, मकोय, ग्वार की गुद्दी, सिरका, आमला, हरीतकी, गुलाबजल, बर्फ़, शीतल जल, नासपाती, ककड़ी के बीज, कद्दू के बीज, पालक के बीज, काहू, नारियल दरियाई, शैवाल, अहिफेन, यबरूज (बिलाडोना), सफेदा, बत्तख की चर्बी, कुक्कुटाण्ड श्वेतक (मुर्गी के अंडे की सुफ़ेदी), कतीरा, निशास्ता, धतूरा, शूकरान, खानिकुअत्र, अजवाइन खुरासानी, अलमास, धनियाँ, कासनी, रसवत, बदरी (बेर), ईषद्गोल, टेसू के फूल, अक़ाक़िया, बीख़ अञ्जबार, खुर्फ़ा, तम्बाकू, जबरजद, आलूबोख़ारा, रजत भस्म, प्रवाल भस्म वा कच्चा, सीप भस्म, बिहीदाना, तुख़्म खुब्बाजी, ख़िरमी, पारद, श्वेत कुष्माण्ड (पेठा) काकनज, कुन्दुर, इस्बंद, बीख़ ज़र्ब, पित्तपापड़ा, लवङ्ग, वत्सनाभ, गुडूची, मुलेठी, गम्भारी, कपूरी (शारिवा), श्यामलता, सुगंधबाला, पोटासियम् नाइट्रास, उन्नाब, बृहती, कंटकारी, कर्कटशृंगी, भूम्यामलकी, कचूर, कूट और विडंग।

अवसादन avasádana-हिं० संज्ञा पुं०
अवसादनम् avasádanam-सं० क्लो० } नीचा करना। बिठाना। वैद्यक में व्रण चिकित्सा का एक भेद। मरहम पट्टी। जिनमें कोमल और उठा हुआ मांस हो उन व्रणों को पूर्वोक्त कासीसादि द्रव्यों के चूर्ण को शहद में मिलाकर लगाने आदि से अवसादन कर्म करना (अर्थात् उनका मांस नीचा करना) चाहिए। यथा—

"उत्सन्न मृदु मांसानां व्रणानामवसादनम्।
कुर्य्याद्द्रव्यैर्यथोद्दिष्टैश्चूर्णितैर्मधुनासह॥"
सु० चि० १ अ०।

अवसादनी avasádaní-सं० स्त्री० महाकरञ्ज। (Pongamia glabra.)

अवसान avasána-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) मरण। (२) सायंकाल। (३) समाप्ति अन्त। (४) सीमा। (५) विराम। ठहराव।

अवसितम् avasitam सं० क्लो०
अवसित avasita-हिं० वि० } (१) मर्दित धान्य। (२) परिपक्क। (३) समाप्त।

अवसी avasí-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० आवसित, प्रा० आवसिअ=पका धान्य] वह धान्य वा शस्य जो कच्चा नवान्न आदि के लिए काटा जाए। अवली। अरवन। गदर।

अवसृष्ट avasrishṭa-हिं० वि० [सं०] [स्त्री० अवसृष्टा] (१) त्यागा हुआ। त्यक्त। (२) निकाला हुआ। (३) दिया हुआ। दत्त।

अवसेकः avasekah-सं० पुं० रक्तमोक्षण, रक्त विस्रावण, शोणित निकालना व्यधन, फ़स्द्देकर रक्त निकालना। (Venesection, phlebotomy, Bloodletting.)

अवसेकिमः avasekimah-सं० पुं० वटक, बड़ा। (See-vaṭakah.) वै० निघ०।

अवसेचनम् avasechanam-सं० क्ली०
अवसेचन avasechana-हिं० संज्ञा पुं०
(१) जलसेचन। सींचना। पानी देना। सु०। (२) पसीजना। पसीना निकलना। (३) वह क्रिया जिसके द्वारा रोगी के शरीर से पसीना निकाला जाए। (४) जोंक, सींगी, तूँबी या फ़स्द देकर रक्त निकालना।

अवस्कन्दः avaskandah-सं० पुं० अवगाहन स्नान, मज्जनपूर्वक स्नान करना, डुबकी लगाना। (Bathing, Ablution.)

अवस्कयनी avaskayani-सं० स्त्री० बहुदिनानन्तर प्रसूता गाय, अधिक समय में वा बड़ी उम्र की ब्याई गाय।

अवस्करः avaskarah-सं० पुं०
अवस्कर avaskara-हिं० संज्ञा पुं०
(१) विष्ठा, मल, विट् (Excrement, Fœces.)। (२) गुह्य देश। (Privy-parts, Pudendum.) मे० रचतुष्क। (३) सम्मार्जनादि-निक्षिप्त धूल्यादि, आवर्जना, झाड़ना फूँकना। (४) मलमूत्र।

अवस्करकः avaskarakah-सं० पुं० सम्मार्जनी, मार्जनी, झाड़ू।

अवस्कव avaskavam-सं० क्ली० त्वचा के भीतर घुस जाने वाले दद्रु आदि के कीड़े। अथर्व०। सू० ३१। ५। का० २।

अवस्था avasthá-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०]
(१) दशा। हालत। (state, condition.)। (२) समय। काल। (३) आयु। उम्र। (४) स्थिति। (५) वेदांत दर्शन के अनुसार मनुष्य की चार अवस्थाएँ होती हैं जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति और तुरीय। (६) स्मृति के अनुसार मनुष्य जीवन की आठ अवस्थाएँ हैं—कौमार, पौगंड, कैशोर, यौवन, बाल, तरुण, वृद्ध और वर्षीयान्। (७) कामशास्त्रानुसार १० अवस्थाएँ हैं—अभिलाषा, चिन्ता, स्मृति, गुणकथन, उद्वेग, संलाप, उन्माद, व्याधि, जड़ता और मरण। (८) निरुक्त के अनुसार छः प्रकार की अवस्थाएँ—जन्म, स्थिति, वर्धन, विपरिणमन, अपक्षय और नाश। (९) सांख्य के अनुसार पदार्थों की तीन अवस्थाएँ हैं—अनागतावस्था, व्यक्ताभिव्यक्तावस्था और तिरोभाव।

अवस्थांतर avasthántara-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (Change of state) एक अवस्था से दूसरी अवस्था को पहुँचना। हालत का बदलना। दशापरिवर्तन।

अवस्थान avasthána-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) स्थिति। सत्ता। (२) स्थान। जगह। वास।

अवस्थापन avasthápana-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] निवेशन। रखना। स्थापन करना।

अवस्थातीय avasthátiya-हिं० पुं० वेदांत दर्शनके अनुसार जागृत, स्वप्न और सुषुप्ति ये तीन अवस्थाएँ हैं।

अवस्था विचार avasthá-vichára-सं० पुं० दशा विचार, अवस्था का निश्चय करना।

अवस्यंदन avasyandana-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] टपकना। चूना। गिरना।

अवह avaha-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) वह वायु जो आकाश के तृतीय स्कंध पर है। ईथर (Æther)। (२) वह दिशा जिसमें नदी नाले न हों।

अवहस्तः avahastah-सं० पुं०
अवहस्त avahasta-हिं० संज्ञा पुं०
हस्त पृष्ठ, हाथ या हथेली का पिछला (पृष्ठ) भाग, उलटा हाथ (Back of hand.)। हे० च०।

अवहारः,-कः avahárah, kah-सं० पुं०
अवहार,-कः avahára,-kah-हिं०संज्ञा पुं०
(१) ग्राहाख्य जल जन्तु, मगर। (Alligator) मे० रचतुष्क। (२) जलहस्ति। सूँस।

अवहालिका avahálikâ-सं० स्त्री० प्राचीर, बाहरका कोट, प्राकार, चार दीवारी। (A wall, an enclosure.)

अवहित avahita—हिं० वि० [सं०] सावधान। एकाग्र चित्त।

अवही avahí—हिं० संज्ञा पुं० [सं० अवह=बिना पानी का देश] एक प्रकार का बबूर जो कांगड़े के ज़िले में होता है। इसकी लपेट और फीट की होती है। यह मैदानों में पैदा होता है और इसकी लकड़ी खेती के औजार बनाने तथा छतों के तख़्तों में काम आती है। हिं० श० सा०।

अवहीरा avahírá—हिं० आप वृक्ष। See—ása.

अवक्षिप्त avakshipta—हिं० वि० [सं०] गिरा हुआ।

अवक्षिप्त सन्धिः avakshipta-sandhih—सं० पुं० सन्धि विश्लेष, सन्धिभ्रंश, संधि च्युति (Dislocation.)। "अवक्षिप्त" में संधि दूर हट जाती है और तीव्र वेदना होती है। सु० नि० १५ अ०।

अवक्षुत avakshuta—हिं० वि० [सं०] जिस पर छींक पड़ गई हो।

अवक्षेपण avakshepana—हिं० संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवक्षिप्त] (१) गिराव। अधःपात। नीचे फेंकना। (२) आधुनिक विज्ञान के अनुसार प्रकाश, तेज वा शब्द की गति में उसके किसी पदार्थ में होकर जाने से वक्रता का होना।

अवक्षेपः avakshepah—सं० क्लो० (१) (Asterion.)। (२) (Art of depressing.)

अवक्षेपणी avakshepaní—सं० स्त्री० बल्गा, लगाम। हे० च०।

अवक्षेपित avakshepita—हिं० वि० निम्नस्थित, तलस्थित, अधःक्षेपित। तलस्थाई, तहनशीं।

अवाँ aván—हिं० संज्ञा पुं० दे० आवाँ।

अवा avá—हिं० बिछुआ घास। (Girardinia heterophylla.)

अवाइद रदिय्यह् āavāida-radiyyah—अ० कुस्वभाव, ख़राब आदत। बैड हैबिट्स (Bad habits.)—इं०।

अवाक़ी aváqí—अ० (ब० व०), औक़िय्यह् (ए० व०) देखो—औक़िय्यह्।

अवाक् avák—हिं० वि० [सं० अवाच्] (१) वाक्य रहित, चुप, मौन, चुपचाप (Speechless)। (२) स्तब्ध। जड़। स्तंभित। चकित। विस्मित।

अवाक्पुष्पी avák-pushpí—सं० (हिं० संज्ञा) स्त्री० (१) हेमपुष्पी। (Hemapushpi.) र० मा०। (२) सौंफ। मधुरिका। (Madhuriká.) शताह्वया। रत्ना०। रा० नि० व० ४। (३) शतपुष्पी। सोया—हिं०। शुल्फा—बं०। बड़ा सौंफ-म०इं०। (See—shatapushpah) रा० नि० व० ४। च० द० अशो० चि० सुनिषण्ण-चांगेरी घृत। (४) चोर पुष्पी। वह पौधा जिसके फूल अधोमुख हों। (See—chorapushpi) रत्ना०।

अवाक्पुष्पी घृतम् avákpushpí-ghritam }
अवाक्पुष्पादि घृतम् avák-pushpádi-ghritam }
अवाक्पुष्प्यादि घृतम् avák-pushpyádi-ghritam }
—सं० क्ली० अवाक पुष्पी (सौंफ), मधुरी, बला, दारुहल्दी, पृष्टपर्णी, गोखरू, बरगद, गूलर और पीपल वृक्ष की कोंपल प्रत्येक २–२ पल, इनका क्वाथ, पीपर, पीपरामूल, मिर्च, देवदारु, कुटज, सेमल का फूल, चंदन, ब्राह्मी, केशर, कायफल, चित्रक, नागरमोथा, फूलप्रियंगू, अतीस, शालपर्णी, कमल केशर, मजीठ, अमलतास, बेलगिरी, मोचरस, सोनापाठा, प्रत्येक १–१ तो० इन्हें ४ प्रस्थ जल में क्वाथ करे जब १ प्रस्थ शेष रहे तो सुनिषण्णक (कुरड़) और चांगेरी का रस २–२ प्रस्थ, गोघृत १ प्रस्थ मिश्रित कर पकाएँ।

गुण—इसके सेवन से सन्निपातातिसार, प्रवाहिका, गुदभ्रंश, आमजन्य रोग, शोथ, शूल, गुदारोग, मूत्रावरोध, मूढ़वात, मन्दाग्नि, तथा अरुचि का नाश होता है।

नोट—पहले कहे हुए आठों द्रव्यों का सोलह गुने पानी में क्वाथ करें। जब १ प्रस्थ शेष रहे तब उसे ग्रहण करना चाहिए। वंग से० सं० अर्श चि०। च० सं०।

अवाक् शीराः,-स् avák-shíráh,-s-सं० पुं० निम्न शिरस्क।

अवाक् संदेस avák-sandesa-हिं० संज्ञा पुं० [वंग० देश०] एक प्रकार की बँगला मिठाई।

अवागी avágí-हिं० वि० [सं० अवाग्विन्= अपटु] मौन। चुप।

अवाग्र avágra-सं० पुं० वक्र। (Oblique.)

अवाङ् मुख aváng-mukha-हिं० वि० [सं०] (१) अधोमुख, उलटा। नीचे मुँह का। मुँह लटकाए हुए। नत। (२) लज्जित।

अवाची aváchí-हिं० स्त्री० दक्षिण दिशा। (South.)

अवाचीनः aváchính-सं० त्रि०
अवाचीन aváchína-हिं० वि० } (१) विपर्य्यस्त, विपरीत। (Reverse.) मे० नचतुष्क। (२) दे० अवाङ्मुख।

अवाच्यदेशः aváchya-deṣhah-सं० पुं० योनि। (Vagina) त्रिका०।

अवाज़िम avázim-अ० (ब० व०), आज़्मह् (ए० व०) दाढ़ें।

अवाजिम āavájim-अ० दंष्ट्र, दंत, दाँत। टीथ (Teeth)-इं०।

अवात aváta-हिं० वि० [सं०] वातशून्य। जहाँ वायु न लगे। निर्वात।

अवातिब avátiba-अ०(ब० व०), वतब (ए० व०) दूध की शीशी। बच्चे को दूध पिलाने की शीशी।

अवान āaván-अ०(१)वह स्त्री जिसके पती मौजूद हों (Mistress.)। (२) वृद्धावस्था। अधेड़ उमर।

अवानम् avánam-सं० क्ली० शुष्क फल आदि। (Dry fruits,etc.) श० र०।

अवानी बूटी avání-búṭí-पं० बूह फुट्कण्डा, जण्डी, कण्डियारी, अञ्जन, लान। बैलोटा लिम्बेटा (Ballota limbata, *Benth.*), ओटोस्टेगिया लिम्बेटा (Otostegia limbata, *Benth.*)-ले०। इं० मे० प्लां।

उत्पत्तिस्थान—पञ्जाब, झेलम से पश्चिम की पथरीली भूमि की निम्नस्थ पहाड़ियों से साल्ट रेञ्ज पर्यंत।

प्रयोगांश—पौधा, पत्र, (औषध एवं चारा)।

उपयोग—इसकी पत्तियों के स्वरस को बालकोंके मसूढ़ों पर लगाते हैं। स्टयुवर्ट।

अवान्यम् aványam-सं० क्ली० देखो—अमृघ्न।

अवाप्त avápta-हिं० वि० [सं०] प्राप्त। लब्ध।

अवार āavár-अ० दोष, कबाहत, बुराई।

अवारम् avárám-सं० क्ली०
अवार avára-हिं० संज्ञा पुं० } नदी आदि का पूर्व पार। नदी के इस पार का किनारा। सामने का किनारा। पार का उलटा।

अवारण avárana-हिं० वि० [सं०] (१) जिसका निषेध न हो सके। सुनिश्चित। (२) जिसकी रोक न हो सके। बेरोक। अनिवार्य।

अवारणीय aváraṇíya-हिं० वि० [सं०] (१) जो रोका न जा सके। बे रोक। अनिवार्य्य। (२) जिसका अवरोध न हो सके। जो दूर न हो सके। (३) जो आराम न हो। असाध्य।

संज्ञा पुं० [सं०] सुश्रुत के अनुसार रोग का वह भेद जो अच्छा न हो। असाध्य रोग। यह आठ प्रकार है वात, प्रमेह, कुष्ठ, अर्श, भगंदर, अश्मरी, मूढ़गर्भ और उदर रोग।

अवारपारः avárapárah सं० पुं०
अवारपार avárapára-हिं० संज्ञा पुं० } समुद्र। (A sea)

अवारिक़ āaváriqa-अ० भेदक दन्त विशेष। केनाइन (Canine.)-इं०।

अवारिका avárikā-सं० (हिं० संज्ञा) स्त्री० धनियाँ। (Coriandrum sativum.)

अवारिके avárike-कना० तरवड़-हिं०। (Cassia auriculata, *Linn.*) मेमो०।

अवारिज़ āavāriza-अ० (ब० व०), आरिज़ (ए० व०) दशा व कैफ़ियत, वह दशा एवं कैफ़ियत जो किसी अन्य दशा के आधीन हो।

अवारिज़ नफ़्सानिय्यह् āavāriz-nafsá-niyyah-अ० अग्राज़ या इन्फ़िआलात नफ़सानी-अ०। मानसिक दशाएँ, मनोविकार कषाय। यह छः हैं—(१) दुःख (ग़म), (२) भ्रम (हम्म), (३) भय (ख़ौफ़), (४) क्रोध (ग़ुस्सह), (५) आनन्द (ख़ुशी) और (६) लज्जा (शर्मिन्दगी)। पैशन्ज़ (Passions.)-इं०।

अवारी avári-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० वारण] बाग। लगाम।

हिं० संज्ञा स्त्री० [स० अवार] (१) किनारा। मोड़।

(२) मुख-विवर। मुँह का छेद।

अवासिफ़ āavásif-अ० पृथ्वी की मारक वायु।

नोट—सामुद्रीय विघातक वायु को "तवासिफ़" कहते हैं।

अवासिल avásil-अ० (ब० व०), वासिलह् (ए० व०) माँगे हुए चोटी के बाल लगाने वाली स्त्री।

अविः avih-सं० पुं० } मेष, भेड़ (A
अवि avi-हिं० संज्ञा पुं० }

ram.)। भा० पू०। (२) मूषिक। See-Múshikah.। (३) कम्बल। (See-kambalah.) मे०। (४) मत्स्य भेद (A sort of fish.)। (५) प्राचीर (An enclosure.)। (६) वायु (Air.)। (७) सूर्य। (८) आक। मंदार। (९) बाग। बकरा। (१०) पर्वत। (११) समूर।

—सं० (हिं० संज्ञा) स्त्री० (१२) कुलत्थिका, कुलथी (Dolichos biflorus.)। "अविः कुलाली चक्षुष्या कुम्भकारी कुलत्थिका"। र०मा०। (१३) मेषी। (See-meshí) त्रिका०। (१४)ऋतुमती, रजःस्वला। (A woman during menstruation.) अम०। (१५) लज्जा।

अविकम् avikam-सं० क्ली० (१) हीरक, हीरा। (Diamond.) रा० नि०। (२) मेष। (A ram.)

अविकमांसम् avika-mánsam-सं० क्ली० मेषमांस। (Flesh of a ram.) वै० निघ०।

अविकल avikala-हिं० वि० [सं०] (१) जो विकल न हो। बिना उलट फेर का। ज्यों का त्यों। (२)पूर्ण। पूरा। (३)निश्चल। अव्याकुल। शांत।

अविकल्प avikalpa-हिं० वि० [सं०] (१)जो विकल्प से न हो। निश्चित। (२) निःसंदेह। असंदिग्ध।

अविकाः avikáh-सं० स्त्री० छोटी छोटी भेड़ें। अथर्व०। सू० १२६। १९। का० २०।

अविकार avikára-हिं० वि० [सं०] जिसमें विकार न हो। विकार रहित। निर्दोष।

संज्ञा पुं० [सं०] विकार का अभाव।

अविकारी avikári-हिं० वि० [सं० अविकारिन्] [स्त्री० अविकारिणी] (१) जिसमें विकार न हो। विकार शून्य। निर्विकार।

(२) जो किसी का विकार न हो।

अविकाशी avikáshí-हिं० वि० [सं० अविकाशिन्] [स्त्री० अविकाशिनी] जो विकाशी न हो। निकम्मा। निष्क्रिय।

अविकृत avikrita-हिं० वि० पुं० [सं०] जो विकृत न हो। जो विकार को प्राप्त न हो। जो बिगड़ा न हो

अविकृति avikriti-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] विकार का अभाव।

अविक्रांत avikránta-हिं० वि० [सं०] दुर्बल, कमज़ोर ।

अविक्रिय avikriya-हिं० वि० पुं० [सं०] [स्त्री० अविक्रिया] जिसमें विकार न हो । जिसमें बिगाड़ न हो । जो बिगड़ा न हो ।

अविगड्डे avigadde-कन० अरुई, आलुकी । (Arum colocasia.) इं० मे० मे० ।

अविगन्धनी avigandhaní
अविगन्धिका avigandhiká
अविगन्धी avigandhí } -सं० स्त्री०
(१) अजगन्धा, बन यवानी, (२) तिलोंडी बब्बेरी । बबुई तुलसी । (Ocimum gratissimum) रा० नि० व० ४ ।

अविग्नः,-घ्नः avignah,-ghnah-सं० पुं० (१) पानीयामलक जल अंवरा । (Flacourtia cataphracta.) स्वा० गु० (२) करमर्द वृक्ष, करौंदा । (Capparis corundas.) । करमूचा गाछ-बं० । करवंद-महा० । अम० ।

अविग्रह avigrah-हिं० वि० [सं०] जिसके शरीर न हो । निरवयव, निराकार ।

अविघात avighát-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] विघात का अभाव ।

अविचल avichala-हिं० वि० [सं०] जो विचलित न हो । अचल । स्थिर । अटल ।

अविच्छिन्न avichchhinna-हिं० वि०[सं०] अभिन्न, संलग्न, भेद रहित, युक्त, अविरल । (२) अविच्छेद, अटूट, लगातार ।

अविच्छेद avichhheda-हिं० वि० [सं०] जिसका विच्छेद न हो । अटूट । लगातार । विच्छेद रहित ।

अविजन avijana-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अभिजन] कुल । वंश ।

अवितक्रम avitakrám-सं० क्ली० मेषी तक्र, भेड़ का तक्र । (Buttermilk, with a fourth part water prepared from sheep's milk)

गुण—भेड़ का तक्र, अरुच्य, अम्ल, दुर्गन्ध कारक, दीपन, कटुक (चरपरा), उष्ण, लेखन, लघु तथा पित्तकारक है और रक्तदोषकारक तथा कफ वात विनाशक है । द्रव्य० गु० ।

अवितत् avitat-हिं० वि० [सं०] विरुद्ध । उलटा ।

अवितत्करण avitatkaran-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] विरुद्धाचरण ।

अविता avitá-सं० स्त्री० मेषी, भेड़ी । (An ewe.)

अवितैश avitaish-अ० २ तो० ३ मा० ६ रत्ती, किसी किसी के मत से १ मा० १ रत्ती का माप विशेष ।

अवित्यजः avityajah-सं० पुं०
अवित्यज avityaja-हिं० संज्ञा पुं० }
पारद, पारा । Mercury (Hydrargyrum.) शब्द० कल्प० । रा० नि० व० १३ । राजनिघण्टु में भी "अचिन्त्यज" ऐसा पाठ आया है ।

अविथोली avitholí-मल० काला नागकेशर । (Kálá Nágkesara.) फा० इं० ३ भा० ।

अविदग्धः avidagdhah-सं० त्रि०
अविदग्ध avidagdha-हिं० त्रि० }
(१) अनम्ल, खट्टा नहीं । वि जयर० अजीर्णचि० । (२) जो जला या पका न हो । कच्चा ।

अविदग्धम् avidagdham
अविदुग्धम् avidugdham } -सं० क्ली०
मेषी दुग्ध, भेड़ का दूध । (Sheep's milk.) हला० । देखो—आविक क्षीरम् ।

अविदु (दू) ष्यम् avidu,-dú-shyam-सं० क्ली० मेषी दुग्ध, भेड़ का दूध । (Sheep's milk.) हला० ।

अविद्धकर्णा aviddha-karṇá-सं० स्त्री० (१) पाठा । (Cissampelos hernandifolia.) आकनादि-बं० । अटी० । सा०

कौ०। जातीफला वटी। (२) भृङ्गराज, भाँगरा-हिं०। भीमराज-बं०। (Eclipta erecta.) अटी०।

अविद्धकर्णिका,-र्णी aviddha-karniká,-rní-सं० (हिं० संज्ञा) स्त्री० (१) पाठा, पाढ़ा नाम की लता। (Cissampelos.) आकनादि-बं०। अटी० जातीफला वटी।

अविद्धा aviddhá-सं० स्त्री० दुष्ट शिरा व्यधन अर्थात् शिराओं का अनुचित रूप से वेध हो जाना। जो हीन शस्त्र के कारण बहुत छेद की गई हो वह "अपविद्धा" है। सु० शा० ८ अ०।

अविद्वेष avidvesha-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] विद्वेष का अभाव। अनुराग। प्रेम।

अविधवा avidhavá-हिं० वि० [सं०] सधवा, सौभाग्यवती, सुहागिन।

अविधेया avidheyá-सं० स्त्री० (Involuntary muscle) अनैच्छिक वा स्वाधीन मांस पेशी।

अविध्यदृष्टि avidhydrishti-सं० स्त्री० जो रोगी शिरा वेध के योग्य नहीं है। जो दृष्टि-रोग, पीनस और खाँसीसे पीड़ित है, जो अजीर्ण, भीरु, वमित तथा शिर, कान और आँख के शूल से पीड़ित हैं, उसके लिंगनाश को न वेधना चाहिए। वा० अ० १४।

अविनाश avinásha-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] विनाश का अभाव। अक्षय।

अविनाशक avináshaka-हिं० वि० पुं० (Nonlethal) अघातक, अमारक, विनाशक मात्रा से कम।

अविन्दनः avindanah-सं० पुं० वड़वानल। See-varavánalah.

अविपक्ति(क्ति)कर चूर्णम् avipakti,-tti-karachúrnam

अविपत्यकर चूर्णम् avipatyakarachúrnam } सं० क्ली० सोंठ, मिर्च पीपल, हड़, बहेड़ा, आमला, नागरमोथा, वायबिडंग के बीज, इलायची, तेजपात, तुल्य भाग, सर्व तुल्य लवंग ले चूर्ण करें। पुनः सबके द्विगुण निशोथ का चूर्ण फिर सर्व तुल्य मिश्री योजित कर इसे किसी स्निग्ध पात्र में स्थापित करें।

मात्रा—२ से ८ मा० तक।

गुण—इसे शीतल जल या नारिकेल के जल के साथ पान करने से अम्लपित्त, शूल, अर्श, २० प्रमेह, मूत्राघात और पथरीका नाश होता है।

पथ्य—दूध भात। यह अगस्त्यमुनि कथित अविपत्यकर चूर्ण है। वङ्ग से० सं० अम्लपित्त चि०। र० रा०सुं०। भैष०। प्रयोगा०। सा० कौ०। नोट—त्रिकटु आदि प्रत्येक १ तो०, लवंग चूर्ण ११ तो०, निशोथ की जड़ का चूर्ण ४४ तो० और शर्करा ६६ तो० लें।

अविपटः avipatah-सं० पुं० ऊर्णामय वस्त्र कम्बल आदि। (Blanket etc.)

अविपन्न avipanna-हिं० वि० [सं०] स्वस्थ, नीरोग।

अविपर्यय aviparyaya-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] विपर्यय या विकार का न होना।

अविपाल avipála } -हिं० संज्ञा पुं० [सं०] गँड़ेरिया। (A shepherd.)
अविपालक avipalaka }

अविपाकः avipákah-सं० पुं० अपरिपाक। अपक्वता।

अविपित्तक avipittaka-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] एक चूर्ण जो अम्लपित्त के रोग में दियाजाता है। देखो-अविपक्ति(क्ति)कर-चूर्णम्

अविप्रियः avipriyah-सं० पुं० श्यामाक तृण। शामा घास-बं०। साँवाँ-हिं०। A kind of grain generally eaten by the Hindus (Panicum frumentaceum; P. colonum.) रा० नि० व० १६।

अविप्रिया avipriyá-सं० स्त्री० श्यामालता, कृष्ण शारिवा। (Ichnocarpus frutescens.) रा० नि०। (२) श्वेतालता चुप (See--shvetá.)। (३)कोमल-हिं०, सं०। बादियान कोही-अफ़०। फितर सालियून-भा० बाज़ा०, यु०। (Prangos pabularia, *Lindl.*) फा० इं० २ भा०।

अविबत्तम avibattam-ता० सुगंधबाला,बालक। (Pavonia odorata.) इं० मे० मे०।

अविभक्त avibhakta-हिं० वि० [सं०] (१) जो अलग न किया गया हो। मिला हुआ। (२) विभाग रहित। (३) अभि-। एक।

अविभुक् avibhuk-सं० पुं० व्याघ्र। (A tiger)। लांड़गा-मह०। वै० निघ०।

अविमरीष(स)म् avimarísha,--sa,--m-सं० क्ली० आविक्षीर, भेड़ का दूध, मेषी का दुग्ध (Sheep's milk.)। हला० हे० च०।

अविमुक्त avimukta-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] कनपटी।

अविमुक्तकः avimuktakah—सं० पुं० माधवी लता। (See--Mádhaví-latá.) वै० निघ०।

अविमुक्तका avimuktaká-सं० स्त्री० (१) तिन्दुक वृक्ष। (Diospyros Cordifolia.) तेंद-बं०। तेन, केंदु-हिं०। टेभुरणी-मह०। (२) काक तिन्दुक, तिन्दुक विशेष, तेंद। (Diospyros tomentosa.) वै० निघ०।

अविमोचम् avi-mocham-सं० क्ली० आविक क्षीर, मेषी दुग्ध, भेड़ का दुग्ध। (Sheep's milk.) र० मा०।

अवियोग aviyoga-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) वियोग का अभाव। (२) संयोग। मिलाप।-वि० [सं०] (१) वियोग शून्य। जिसका वियोग न हो। (२) संयुक्त। सम्मिलित। एकीभूत।

अविरल aviral--हिं० त्रि० [सं०] (१) जो विरल वा भिन्न न हो।। मिला हुआ। (Thick.) (२) घना। सघन। अव्यवच्छिन्न।

अविरि aviri-ते० नीलवृक्ष। (Indigofera Indica.)

अविरुहा aviruhá-सं० स्त्री० मांसरोहिणी। (See-mánsarohiṇí.)

अविलपोरी avila-porí-मल० सरहटी-हिं०। पताल भेदी, सर्पाक्षी। (See-sarpákshí..)

अविलम्बित avilambita-- हिं० वि० प्रतिलम्बित, जो अस्त्र द्वारा काटने से अस्थि मात्र शेष रहे उसे "प्रतिलम्बित" कहते हैं।

अविला avilá--सं० स्त्री० मेषी। (See--meshí) हे० च०।

अविलेय-avileya हिं० वि० अनघुल। जो विलीन न हो। जो किसी प्रकार के तरलमें न घुले। (Insoluble.)

अविलेयता avileyatá--हिं० संज्ञा स्त्री० (Inssolubility.) विलीन न होनेका धर्म। अनघुलपन।

अविवृक्षः avi-vrikshah--सं० पुं० मेषशृंगी, मेढ़ा सिंगी। See--Meshaṣhrigí.

अविशिरम् avishiram--सं० क्ली० सूर्यावर्त फल, हुलहुल का फल, हुरहुर। हुड़हुड़ेर फल -बं०। (Cleome Viscosa) वै० निघ०।

अविश्वासा avishvásá-सं० स्त्री० चिर प्रसूता गाय, अधिक काल की ब्याई हुई गाय। श० च०।

अविषः avishah-सं० पुं० (१) समुद्र (The sea)। (२) आकाश। (Sky).

अविष avisha-सं० क्ली० निर्विष, विषरहित, बिनाज़हर का। (Nonvenomous, not poisonous)। अथर्व०। सू० २। १६। का०।

अविषा avishá--सं० स्त्री० अतिविषा, अतीस। (Aconitum heterophyllum) रा०

नि० घ० ६ । (२) निर्विषी तृण, निर्बिसी, निर्विषी घास । वै० नि० । (२) एक जड़ी । जदुवार । यह मोथे के समान होती है और प्रायः हिमालयके पहाड़ों पर मिलती है। इसका कंद अतीस के समान होता है और साँप बिच्छू आदि के विष को दूर करता है। (Curcuma zedoaria.)

अविसी avisí--ते० अगस्त । अगस्तिया (Agati grandiflora.)

अविसोढ़म् avisodham--सं० क्लो० अवि-क्षीर, भेड़ी का दूध ।

अविस्नम् avisram--सं० त्रि० पूति-गंधरहित, दुर्गंधि रहित । (Avoid of ill-smelling.) च० चि० २ अ० ।

अवी aví--सं० (हिं० संज्ञा) स्त्री० (१) वन कुलत्थ, बन कुलथी । Dolichos biflorus (The wild var. of--) र० मा० । (२) अनुमता स्त्री, रजस्वला स्त्री । (A woman during menstruation.) हे० च० ।

अवीकम् avíkam--तु० फेफड़ा, फुफ्फुस । (The lungs.)

अवीक़ुस avíqus--अ० फ़ारस्तीब, नख । (See--nakha.)

अवीघ्न avíghna-सं० बुक्का वृक्ष । See--Bunká.

अवीज धर्म्मी avíja-dharmmí-सं० त्रि० जो बीज धर्मी न हो अर्थात् वह जिसमें बीज रूप होकर कोई पदार्थ न रहे । वह आत्मा है। क्योंकि बीजरूप होकर कोई पदार्थ जीवात्मा में नहीं रहते; किन्तु प्रकृति में रहते हैं इससे यह पुरुष (आत्मा) बीज धर्म्मी नहीं है । सु० शा० १ अ० ।

अवीजा avíjá-सं० (हिं० संज्ञा) स्त्री० गोस्तनी के समान गुणवाली द्राक्षा, किशमिश बे दाना । Raisin, currant (uvæ) । भा० । देखो-अंगूर ।

अवीदुग्धम् avídugdham-सं० क्लो० मेषी दुग्ध, भेड़ी का दूध । च० द० ।

अवीना avíná- एक बूटी का निचोड़ है (बूटी के सम्बन्ध में मतभेद है) ।

अवी(वे)ना ऑरिएण्टेलिस avena orientalis-ले० विलायती जौ, जई, खरताल ।

अवी(वे)ना प्युबीसेन्स avena pubescens, L.-ले० यह एक प्रकार की घास है जो चारा के काम आती है । मेमो० ।

अवी(वे)ना प्रैटेन्सिस avena pratensis, *Linn.*-ले० एक प्रकार की घास है जो चारा के काम आती है ।

अवी(वे)ना फैचुआ avena fatua, *Linn.*-ले० कुल्जुद, गन्दल, जेई-हिं० । गोजंग, कासम्म ऊप्वा-पं० । प्रयोगांश-पौधा । उपयोग—औषध व खाद्य (पशु) । मेमो० ।

अवी(वे)ना सैटाइवा avena, sativa, *Linn.*-ले० जौ, विलायती जौ-हिं० । एक प्रकार की घास है जो आहार व पशुओं के चारा के काम में आती है । मेमो० ।

अवी(वे)नीन avenin-इं० अवीना बीज सत्व । देखो-जई । इं० मे० मे० ।

अवी मूत्रम् avímútram-सं० क्लो० मेषी का मूत्र, भेड़ी का मूत्र । च० द० ।

अवीरई avírai-ता०
अवीरम् avíram-मल०
अवीरी avírí-ता०
} तरवड़-हिं०, द० । (Cassia auriculata, *Linn.*) इं० मे० मे० । फा० इं० १ भा० ।

अवीरघ्नी avíraghní-सं० जो जीवन का नाश करे । अथर्व० ।

अवीर्रहोआ एसिडा averrhoa acida-ले० हरफारेवड़ी ।

अवीर्रहोआ करम्बोला averrhoa carambola, *Linn.*-ले० करमल-हिं० । कामरंगा-बं० । कर्मुरङ्ग-सं० । खमरक, करमर-बम्ब० । खमूरक-द० । तामूरिया-ता० । करोमोंगा-ते० । प्रयोगांश—अपक्व फल, पत्र और मूल । उपयोग—रंग, औषध और खाद्य । मेमो० ।

अवीर्रहोआ बाइलिम्बाई averrhoa bilimbi, *Linn.*-ले० बिलिम्बी-बं०, हिं० । उपयोगांश—पुष्प व फल भक्ष्य हैं । मेमो० ।

अवीवरन् avívaran--सं० वरण या वरुण नामक वृक्ष बरना । (Crataeva tapia) अथर्व० । सू० ८५ । १ । का०८ ।

अवीसम् avísam--फ़ा० सातर, पुदीना कोही । साथर, साथल-हिं० ।

अवीसीनिया ऑफ़िसिनेलिस avicennia officinlis, *Linn.*-ले० बीना-बं० । मड, नल्लमड-ते० । तीवर-सिंध । ओएपटा-मल० । थमे-बर० ।

प्रयोगांश—त्वक्, गिरी व भस्म ।
उपयोग—रङ्ग व भक्ष्य ।

अवीसीनिया टोमेण्टोसा avicennia tomentosa, *Jacq.*-ले० ब्यना-हिं०, बं० । तिम्मर-सिंध । नल्ल-मड-ते० । (Avicennia, Downy leaved.)

प्रयोगांश—मूल व बीज ।
उपयोग—औषध ।

अवीसीनिया, डाउनी लीव्ड avicennia, downy leaved-इं० बू अली सीना, बू अली, बीना । (Avicennia tomentosa.) इं० हिं० गा० ।

अवुकः avukah-सं० पुं० छाग, बकरा । (A goat.) श० र० ।

अवूरा avúrá-हिं० आमला, ऑवरा । (Phyllanthus emblica.)

अवृद्धः avriddhah-सं० पुं० पुष्प वृक्ष भेद, पाषाण पुष्प । पत्थर फुल-मह० । वै० निघ० ।

अवेगी avegí-सं० स्त्री० विधारा । वृद्धदारक । रा० नि० ।

अवेद्यः avedyah-सं० पुं०
अवेद्य avedya- हिं० संज्ञा पुं० } (१) गो वत्स, बछवा, बछड़ा । (A calf.) श० र० । (२) नादान बच्चा ।

वि० पुं० [सं०] (१) अज्ञेय । (२) अलभ्य ।

अवेद्या avedyá-हिं० वि०, स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिससे विवाह नहीं कर सकते । अविवाह्य स्त्री ।

अवेना avena-ले० देखो—अवीना ।

अवेन्स avens-इं० वाटर अवेन्स (Water-avens.) ।

अवेर्‌होआ एसिडा averrhoa acida-ले० हरफारेवड़ी । देखो—अवीर्‌होआ एसिडा ।

अवेल avela-नारियल का तैल, नारिकेल तैल । (Cocoanut oil.)

अवेला avelá-सं० स्त्री० पूग चर्वित, चिकनी सुपारी । चिकन-शुपारि- बं० ।

अवेश avesha-हिं० संज्ञा पुं० [सं० आवेश] (१) किसी विचार में इस प्रकार तन्मय हो जाना कि अपनी स्थिति भूल जाय । आवेश । जोश । मनोवेग । (२) भूतावेश । भूत चढ़ना । किसी भूत का सिर आना । भूत लगना ।

अवेक्षण avekshana-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवेक्षित, अवेक्षणीय] (१) अवलोकन, देखना । (२) निरीक्षण । जाँच पड़ताल ।

अवैद्य avaidya-हिं० वि० [सं०] जो वैद्य न हो । जो वैद्यक शास्त्र को न जानता हो ।

अवोइस avois-हिं० अरुई, घुइयाँ । (Colocasia antiquorum.) मेमो० ।

अवोदम् avodam-सं० क्ली० आर्द्रक, आदी, अदरक । (Zingiber officinalis.) जटा० ।

अवांतर avántara-हिं० वि० [सं०] अंतर्गत । मध्यवर्ती । बीच का ।

संज्ञा पुं० [सं०] मध्य । भीतर । बीच ।

यौ०—अवांतर दिशा-बीच की दिशा । विदिशा ।

अवांतर भेद—अंतर्गत भेद । भाग का भाग ।

अवाँसी avánsi-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० अवासित] वह बोझ जो फसल में से पहिले पहल

काटा जाय। यह नवाश्च के लिए काम में आता आता है। अखान। ददरी। कबल। अवली।

अब्दः avdah-सं० पुं० (१) वत्सर, वर्ष (A year.)। (२) मुस्तक, मोथा (Cyperus rotundus.)। (३) मेघ। See-Mesha (अ टी० रा०)।-क्ली० (४) अभ्र, अभ्रक। Talc (Mica.)

अब्दसारः avdasárah-सं० पुं० कपूर भेद। (A sort of camphor.)

अव्यक्त avyakta-हिं० त्रि० [सं०] (१) अदृश्य, अप्रकट, छिपा हुआ, अप्रकाशित अप्रत्यक्ष (Indistinct, invisible)। (२) अज्ञात। (Imperceptible) संज्ञा पुं० [सं०] (१) कामदेव। (२) वेदांत शास्त्रानुसार अज्ञान। सूक्ष्म शरीर और सुषुप्ति अवस्था। (३) जीव। (४) परमेश्वर, परमात्मा। (The Supreme Being or Universal Spirit.)। (५)प्रकृति। स्वभाव। टेम्परामेण्ट (Temperament.)

अव्यक्तमूलप्रभव avyakta-múla-prabhava-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] संसार। जगत।

अव्यक्तम् avyaktam-सं० क्ली० (१) प्रकृति। मैटर (Matter)-इं०। "अखिलस्य जगतः सम्भव हेतुरव्यक्तं नाम।" सु० शा० १ अ०। (२) आत्मा। सोल (Soul.)-इं०।

अव्यक्तराग avyaktarága-हिं० संज्ञा पुं०
अव्यक्तरागः avyakta-rágah-सं० पुं०
ईषत् लोहित वर्ण, हलका लाल, अरुण। पर्याय—अरुणः (अ), ताम्रः। (२)गौरः (ज)। गौर, श्वेत।

अव्यक्तलिंग avyakta-linga-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] वह रोग जो पहचाना न जाए।

अव्यक्ता avyaktá-सं० स्त्री० कृष्ण गोकर्णी, कृष्णापराजिता। काला अपराजिता-बं०। काली गोकर्णी-मह०। Clitorea ternatea (The black var. of-) वै० नि०।

अव्यक्तानुकरण avyaktánukarana-हिं० संज्ञा पुं० [सं] शब्द का अस्फुट अनुकरण। जैसे मनुष्य मुर्गे की बोली ज्यों की त्यों नहीं बोल सकता; पर उसकी नकल करके कुकड़ूँ कूँ बोलता है।

अव्यग्र avyagra-हिं०त्रि०
अव्यङ्गः avyangah-सं०त्रि०
अव्यंग avyanga-हिं० त्रि०
(१)जो व्यंग वा टेढ़ा न हो। सीधा। अविकलांग। (२) घबराहट रहित, अनाकुल। -स्त्री० शूकशिम्बी, केवाँच। आलाकुशी-बं०। (Mucuna pruriens).

अव्यंगांग avyangánga-हिं० त्रि० [सं०] [स्त्री० अव्यंगांगी] जिसका कोई अंग टेढ़ा न हो। सुडौल।

अव्यंगा avyangá-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] केवाँच। करैंच। कौंच। (Mucuna pruriens.)

अव्यंजन avyanjana-हिं० वि० [सं०] दे० अव्यञ्जनः।

अव्यञ्जनः avyanjanah-सं० त्रि०
अव्यञ्जन avyanjana-हिं० त्रि०
(Hornless.) शृंगहीन, सींग रहित, बिना सींग का (पशु), डूँड़ा। (२) चिह्न शून्य। हला०।

अव्यंडा avyandá-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० अव्यण्डा।

अव्यण्डः,-ण्डा avyandah,-ndá -सं० पुं०, स्त्री०
अव्यण्डा avyandá-हिं० संज्ञा स्त्री०
(१) भूम्यामलकी, भूँई आमला (Phyllanthus neruri.)। (२) कपिकच्छु, केवाँच। आलाकुशी-बं०। (Corpopogon pruriens.)। च० चि ३ अ०।

अव्यथा avyathá-सं० (हिं० संज्ञा) स्त्री० (१) स्थल कमलिनी, स्थलपद्म, पद्मचारिणी। (Ionidium suffruticosum).

भा० पू० १ भा० । रा० नि० व० ११ । (२) हरीतकी, हड़ (Terminalia chebula.) । (३) महाश्रावणी, गोरखमुण्डी। (Sphœranthus hirtus.) भा० पू० १ भा० गु० व० । (४) आमलकी, आमला (Phyllanthus emblica.) । (५) लक्ष्मणा, लक्ष्मणा मूल (Lakshamaṇá.) । (६) सोंठ ।

अव्यथिः,-थी avyathih,-thí-सं० पुं० अश्व, घोड़ा । (A horse.) वा० सू० ४ अ० प्रजास्था० ।

अव्यथिषः avyathishah-सं० पुं० (१) समुद्र (A sea.) । (२) सूर्य्य । (The sun.) सि० कौ० ।

अव्यथिषी avyathishí--सं० स्त्री० (१) पृथिवी (Earth.) । (२) अर्द्ध रात्रि, मध्य निश, आधी रात । (Midnight.)

अव्यथ्या avyathyá--सं० स्त्री० हरीतकी, हड़ । (Terminalia chebula.) भा० पू० १ भा० ।

अव्यभिचारी avyabhichárí-हिं० वि० [सं० अव्यभिचारिन्] जो किसी प्रतिकूल कारण से हटे नहीं ।

अव्यया avyayá--सं० स्त्री० गोरखमुण्डी । महाश्रावणी । गोरखमुण्डी-मह० । गोरख-चाकुलि -बं० । (Sphaeranthus Hirtus.) वै० निघ० ।

अव्यर्थ avyartha--हिं० वि० [सं०] (१) जो व्यर्थ न हो । सफल । (२) सार्थक । (३) अमोघ ।

अव्याध्या avyádhyá--सं० स्त्री० दुष्ट शिरा वेधन । जो शिरा शस्त्रकर्म (छेदन, वेधन) से वर्जित है (उसका वेध होना) अव्याध्या कहाती है । यथा—"अशस्त्रकृत्या अव्याध्या" । सु० शा० ८ अ० ।

अव्यापन्न avyápanna--हिं० वि० [सं०] जो मरा न हो, जीवित, ज़िंदा ।

अव्रण शुक्रः avraṇa-shukrah-सं० पुं०
अव्रणशुक्र avraṇa-shukra-हिं० संज्ञा पुं० नेत्र के काले भाग (काली पुतली) में होने वाला रोग विशेष । आँख का एक रोग जिसमें आँख की पुतली पर सफेद रंग की एक फूली सी पड़ जाती है और उसमें सुई चुभने के समान पीड़ा होती है ।

लक्षण—अभिष्यन्द के कारण यदि नेत्र के कृष्ण भाग में श्वेत वर्ण की, चलायमान तथा अतिपीड़ा और अश्रुओं से व्याप्त न हो एवं जैसे आकाश में बादल होते हैं इस प्रकार की फूली हो तो उसे अव्रण (व्रण रहित) शुक्र (फूली) कहते हैं और यह सरलतापूर्वक साध्य होती है (झट आराम हो जाती है) । और यदि यही फूली गंभीर और गाढ़ी हो बहुत दिन का हो जाए तो उसे कष्टसाध्य कहते हैं । सु० उ० ५ अ० ।

जो फूला अभिष्यन्दात्मक (आँखों के दुखने से उत्पन्न हुआ) कृष्ण भाग में स्थित हो और चोष (सिंगी, तुम्बी) आदि से चूसने के समान पीड़ा करे और शंख, चन्द्रमा तथा कुन्द के फूलों के समान सफेद, आकाश के समान पतला और व्रण रहित हो उस शुक्र को सुखसाध्य कहते हैं । जो शुक्र (फूला) गहरा तथा मोटा हो और बहुत दिनों का हो उसको कष्टसाध्य कहते हैं । असाध्यता—जिस फूले के बीज में गढ़ा सा पड़ जाए या उसके चारों ओर मांस बढ़कर उसको घेर ले, अचल न रहे अर्थात् एक जगह से दूसरी जगह में चला जाए, सूक्ष्म शिराओं से व्याप्त हो, दृष्टि का नाशक, दूसरे पटल में उत्पन्न और चारों ओर से लाल हो तथा बहुत दिनों का हो तो ऐसे शुक्र को वैद्य त्याग देवे । मा० नि० ।

अव्रतः avratah--सं० पुं० वह ज्वर जो बिना नियम के आता है । अथर्व० सू० ११ । २ । का० ७ ।

अव्वगुड़ avvagura
अव्वगूद पण्डु avvagúda-paṇḍu
ते० आखुत्थ । महाकाल, लाल इन्द्रायन ।

(Trichosanthes Palmata, *Roxb.*) स० फा० इं० ।

अव्वल avvala-हिं० वि०, पुं० [अ०] (१) पहला । आदि का । प्रथम । (२) उत्तम । श्रेष्ठ ।-संज्ञा पुं० आदि । आरम्भ ।

अव्वलिय्यतुल् विलादत avvaliyyatul-viládat-अ० बिकियतुल् विलादत, प्रथम बार शिशु जननेवाली स्त्री, वह स्त्री जो प्रथम बार शिशु प्रसव करे, प्रथम प्रसवा । प्राइमा पारा (Primapara)-इं० ।

अव्वलिय्यह् avvaliyyah-अ० पहला, प्रथम । (First)

अशक़ह् āashaqah-अ० देखो-इश्क़ । (āiṣ-hq.)

अशकुन ashakuna-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] कोई वस्तु वा व्यापार जिससे अमंगल की सूचना समझी जाए । बुरा शकुन । बुरा लक्षण ।

अशकुम्भी aṣha-kumbhí-सं० स्त्री० पानी-यांपरिज वृक्ष । जल कुम्भी । (Pistia stratiotes.) र० मा० ।

अशक्त aṣhakta-हिं० वि० [सं०] [संज्ञा अशक्ति] (१)निर्बल । कमज़ोर । (२) अक्षम असमर्थ ।

अशक्ति aṣhakti-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० अशक्त] निर्बलता । कमज़ोरी ।

अशङ्कर aṣhankar-कना० समाक़, सुमाक़-अ०, फ़ा० । तिमतिम, तमतम-अ० । (Rhus coriaria.)

अशद्द aṣhadda-अ० बलवान, सशक्त, तीक्ष्ण स्वभाव, १८ वर्ष की अवस्था से लेकर ३० वर्षीय युवा ।

अशनम् aṣhanam-सं० क्ली०
अशन aṣhana-हिं० संज्ञा पुं० } [वि० अशित, अशनीय] (१) भोजन, अन्न, आहार, (Food) । (२) भोजनकी क्रिया । भक्षण । खाना । रा० नि० व० २० ।
-सं० पुं० (३) पीतशाल, असन वृक्ष । Asan tree (Terminalia alata tomentosa) च० सू० ४ अ० ४३ दशक । (४) चित्रक, चीता (Plumbago zeylanica.) । (५) भल्लातक वृक्ष, भिलावाँ । (Semecarpus anacardium.) वै० निघ० ।

अश(स)नकः aṣha,-sa;-nakah-सं० पुं० असन पुष्पाकार धान्य विशेष । सु०सू० ४६ अ० ।

अशनपर्णी aṣhanaparṇí-सं० पुं०, स्त्री० (१) विजयसार वृक्ष, पटसन (Pterocarpus marsupium.) । मराठी-पश्चिम दे० ।

पर्याय—वातकः शीतकः, शीतलवातकः, असनपर्णी, सनपर्णी, शीतः और शीतकः । (२) गोकर्णीलता-सं० । अपराजिता-बं० । (See-gokarṇílatá.) अम० ।

अशनपुष्पः aṣhana-pushpah-सं० पुं० अशन पुष्पाकार शालिधान्य, षष्टिक धान्य विशेष । सु० सू० ४६ अ० । (A kind of paddy)

अशन मल्लिका aṣhana-malliká-सं० स्त्री० आस्फोता । हापरमाली-बं० । (Clitoria ternatea.) च० द० ।

अशना,-या aṣhaná,-yá-सं० स्त्री० (१) क्षुधा, भूख । (Hunger.) हला० । (२) शुक्र निष्पाव, श्वेत शिम्बी, सफेद सेम । (Phaseolus radiatus.) रा० नि० व० ७ ।

अशनायुकः aṣhanáyukah-सं० पुं० भूखा, क्षुधित । (Hungry.)

अशनिः aṣhanih-सं० पुं०, स्त्री० हीरक, हीरा । हीरे-बं० । (Diamond.)वै० निघ० ।

अशनि aṣhani-हिं० संज्ञा पुं० (१)विद्युत । (२)वज्र, इन्द्र का शस्त्र । अथर्व० । सू० २७ । ६ । का० ३ । (Lightening.)

अशनीय aṣhaníya-हिं० वि० [सं०] खाने योग्य ।

अशमह् āashamah-अ० वार्द्धक्य,वृद्धापन,बुढ़ाई, वृद्धता, वृद्धाई, जरापन । सीनीलिटी(Senility.) -इं० ।

अशम्म ashamma–अ० बड़ी और ऊँची नाक वाला। वह व्यक्ति जिसकी घ्राण शक्ति (कुव्वत शाम्मह्) अत्यन्त तीव्र हो।

अशरफ़ी asharafí–हि० संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] (१) एक प्रकार का पीले रंग का फूल। गुल अशरफ़ी। (२) सोने का एक पुराना सिक्का जो सोलह रुपए से पचीस रुपए तक का होता है। मोहर।

अशरास asharása–अ० एक जड़ी है जिसकी पत्तियाँ मज़बूत, पुष्प रक्तमायुक्त श्वेत वर्ण के तथा फल गोल होते हैं।

अशरीर asharír–हि० पुं० शरीर रहित, कन्दर्प, काम, मदन। Lust, Kamdev. (The hindu cupid.)

अशर्फ़ी बूटी asharfí-búṭí–रसा० अशरफ़ी।

अशर्म्म asharmma–हि० संज्ञा पुं० [सं०] कष्ट, दुःख।–वि० (१) दुःखी। (२) गृह रहित।

अशल्ल ashalla–अ० टुण्डा, अपाहिज, वह व्यक्ति जिसका हाथ शुष्क हो गया हो।

अशा āashá–अ० शबवान, अमी लैला, नक्तांध्य, रात्र्यंधता, नक्तांधता, रतौंधी। यह एक प्रकारका नेत्र रोग है जिसमें रात्रि में दिखाई नहीं देता। हेमीरल ओपिया (Hemeralopia.) –इं०।

अशाऽ āashá–अ० निशा, रात्रि, निशाहार, रात का खाना। डिनर (Dinner.)–इं०।

अशाका,–खा asháká,–khá–सं० स्त्री० शूली तृण। शाखाशून्यलता। रा० नि० व० ८। See–shúlí

अशान्तगन्धाढ्या ashánta-gandháḍhyá–सं० स्त्री० आम्रहरिद्रा। आमहलदी। आम आदा–बं०। अंबेहल्द–महा०। (Curcuma amada.) वै० निघ०।

अशान्त चूर्ण ashánta-chúrṇa–हि० वि० अनबुझा चूना। (Quick or unslaked lime.)

अशाम ashama–अ० वाम ओर, बाईं ओर। इसका बहुवचन अशाइम है। (Left side.)

अशितम् ashitam–सं० क्ली०
अशित ashita–हि० वि०
भुक्त, खाया हुआ, खादित, तृप्त। हे० च०।

अशितम्भवः ashitambhlavah–सं० पुं० अन्न। भात–बं०।

अशितलता ashita-latá–सं० स्त्री० नीलदूर्वा, नीलीदूब। (See–níla-dúrvvá) वै० निघ०।

अशिरम् ashiram–सं० क्ली०
अशिर ashira-हि० संज्ञा पुं०
(१) हीरक, हीरा। (Diamond.) रा० नि० व० १३। देखो—वज्रम्। (२) अग्नि (Fire)। (३) राक्षस (A demon.)। (४) सूर्य। (Sun.)

अशिरस्क ashirashka–मस्तक रहित, कबन्ध। (A headless trunk.)

अशिशिम्बी ashi-shimbí–सं० स्त्री० स्वनामख्यात शिम्बी विशेष। सफ़ेद सेम। थोर श्वेत घावै–महा०। श्वेत शिम्–बं०। (The white-flat bean.)
गुण—मधुर, कसेली, श्लेष्मपित्तघ्नी, व्रणदोष नाशिनी, शीतल और रुचिकारी है। रा० नि० व० ७।

अशिश्विश्व–का ashishvishva,–ká–सं० स्त्री० अनपत्या, पुत्र कन्याहीन स्त्री, सन्तान रहित स्त्री। (A childless woman) श० र०।

अशीता ashítá
अशुक्ला ashuklá
–सं० स्त्री० भूमिकुष्माण्ड, पताल कुम्हड़ा। (Ipomoea Digitata.) वै० निघ०।

अशीरान ashírán–यु० ख़ायहे सग–फ़ा०।

अशीरून ashírún–इन्दलु० हफ़ु'स्सतूह। एक अप्रसिद्ध बूटी है।

अशुक्लजा ashuklajá–सं० स्त्री० बोरोधान्य, बोरव धान। (See–Borodhána) वै० निघ०

अशुक्ला ashuklá–सं० स्त्री० भूमिकुष्माण्ड। (Ipomoea Digitata.) वै० निघ०

अशुङ्कार aṣhunkár-कना० अशोक-हिं०, बं०। (Saraca indica.)

अशुचिः aṣhuchih-सं० त्रि०
अशुचि aṣhuchi-हिं० वि० [संज्ञा अशौच]
(१) अशुद्ध, अपवित्र, अशौची। (२) गंदा। मैला। (Impure, foul, uncleen)। -हिं० संज्ञा स्त्री० अपवित्रता, अशुद्धता (Impurity.)।

अशुतायर āashuttáir-अ० घोंसला, खोंथा। नेस्ट (Nest)-इं०।

अशुद्ध aṣhuddha-हिं० वि० [सं०] [संज्ञा अशुद्धता, अशुद्धि] (१) बिना शोधा हुआ। बिना साफ किया हुआ। असंस्कृत। जैसे अशुद्ध पारा। (२) अपवित्र।

अशूक aṣhuka-नेपा० ल्हाला-भोट०, लेप०। सुर्च, सुट्स, काला-विस्, रसर्दकर, घुचुंक, तर्वाचुक, चुमा-पं०। हिप्पोफी सिलिसिफोलिया (Hippophæ silicifolia, *Don.*) -ले०।

(*N. O. Elæagnaceæ.*)

उत्पत्ति-स्थान—शीतोष्ण हिमालय, जम्बू से सिक्किम पर्यन्त। प्रयोगांश—फल।

उपयोग—इसका फल फुप्फुस रोगों में उपयोग किया जाता है (पञ्जाब में)। इं० मे० प्लां०।

अशूकजः,-कः aṣhúkajah,-kah-सं० पुं० मुण्डशालि, निःशूक शालिधान्य। (See-mundaṣháli) रा० नि० व० १६।

अशुष्कतोयमलः aṣhushkatoyamalah -सं० पुं० समुद्रफेन। Cuttle-fish bone (के० नि०)।

अशृत aṣhrita-सं० क्लीं० अपक्व, कच्चा।

अशोकः aṣhokah-सं० पुं०
अशोक aṣhoka-हिं संज्ञा पुं०
अशोक, असोक, अशोक बीरो, अशोगी-हिं०। सैरेका इण्डिका (Saraca Indica, *Linn.*), जोनेशिया अशोका (Jonesia asoka, *Roxb.*-ले०। दी अशोका ट्री (The Asoka tree)-इं०। जोनिसिया असजोगम (Jonesia asjogam.)-फ्रां०।

संस्कृत पर्याय—अङ्गनाप्रियः, वीतशोकः (शब्द० मा०), शोकनाशः, विशोकः, वञ्जुलद्रुमः वञ्जुलः, मधुपुष्पः, अपशोकः, कङ्केलिः, वेलिक, रक्तपल्लवः, चित्रः, विचित्रः कर्णपूरः, दोहली, ताम्रपल्लवः, रोगितरुः, हेमपुष्पः, वामङ्घ्रिः, यातनः, पिण्डीपुष्पः, नटः, रामा, पल्लवद्रुः, (रा), कान्ताङ्घ्रि दोहदः (त्रि), चक्रगुच्छः (श), कङ्केलिः, पिण्डपुष्पः, गंधपुष्पः, रक्त पल्लवकः, वामांघ्रिघातनः, रागपल्लवः, केलिकः, सुभगः, दोहलीक, पल्लवद्रुम, राम। अशो(सो)क गाछ, अशोक फुलेर गाछ-बं०। असोक-हिं०, बं०, बम्ब०, उड़ि०, कना०, तै०। अशोक-मह०। देशी पील फुलनो, आसुपालो, आसुपाल (ला) -गु०। आसोपालव, आसापाल-हिं०। होंगाश -सिंह०। असोगम-मल०, ता०। असोकदा, केङ्कलिमर-कना०। जासुंदी-बम्ब०। थवगवो-बर०। असेक-कटक, मह०। अशुङ्कर-गों०।

शिम्बी वर्ग

(*N. O. Leguminosæ,-ceæ.*)

उत्पत्ति स्थान—अशोक हिन्दुओं का एक पवित्र वृक्ष है। यह पूर्वी बंगाल की, जो सम्भवतः इसका आदि निवासस्थान है, सड़कों के इधर उधर बाहुल्यता से पाया जाता है। दक्षिण भारत, अराकान और टेनासरिम में यह अधिकता के साथ उत्पन्न होता है। संयुक्तप्रांत में कुमायूँ के समीप २००० फीट उच्च इसके वृक्ष होते हैं। सुन्दर पुष्पों के लिए इसको बहुत से स्थानों में लगाते हैं।

वानस्पतिक वर्णन—अशोक प्रायः दो प्रकार का देखा जाता है। नीचे इनमें से प्रत्येक का पृथक् पृथक् वर्णन किया जाता है—

(१) यह एक इतस्ततः विस्तृत बहुशाखासमन्वित उत्तम छाया तरु है। साधारणतः वृन्त के दोनों पार्श्व में ४-६ जोड़े पत्र होते हैं। पत्र रामफल के समान प्रायः १८-२० अंगुल लम्बे सामान्य चौड़े, तरुणावस्था में रञ्जित एवं लम्बित

होते हैं। पत्रप्रांत अखंडित एवं किञ्चित् तरंगायित होता है। पुष्प गुच्छाकार, प्रथम कुछ नारंगी रंग के, फिर क्रमशः रक्त वर्ण के होते जाते हैं। वसन्तकाल अर्थात् फागुन (एप्रिल तथा मार्च) में पुष्पित होते हैं। पुष्पित अशोक वृक्ष अति ही नयनानन्ददायक होता है। इसमें चौड़ी फली लगती है जिसमें बड़े बड़े बीज होते हैं। वृक्ष त्वक् बाहर से शुभ्र धूसर तथा (Scabrous.) होता है। वृक्ष से सद्यः छेदित पदार्थ श्वेत, किंतु वायु में खुला रहने पर वह शीघ्र रक्त वर्ण में परिणत हो जाता है। स्वाद–मृदु कषाय और अम्ल।

(२) एक वृक्ष जिसके पत्र आम की तरह लम्बे, पत्रप्रांत लहरदार होते हैं। इसमें सफेद मंजरी (मौर) वसन्त ऋतु में लगती है जिसके झड़ जाने पर छोटे छोटे गोल फल लगते हैं जो पकने पर लाल होते हैं, पर खाए नहीं जाते। इसके वृक्ष अत्यन्त सुन्दर और हरेभरे होते हैं, इससे इसे बगीचों में लगाते हैं। शुभ अवसरों पर इसके पत्र की बंदनवारें बाँधी जाती हैं।

रासायनिक संगठन—इसकी छालकी रासायनिक परीक्षा अभी तक यथेष्ट रूप से नहीं हो पाई। एब्बट Abbott (१८८७) के परीक्षणानुसार इसमें हीमेटॉक्ज़ीलीन (Hæmatoxylin) वर्तमान पाया गया। डूपर (Pharm. Indica.) ने इसमें यथेष्ट परिमाण में टैनीन (कषायीन) की विद्यमानता का वर्णन किया। स्कूल ऑफ़ ट्रॉपिकल मेडिसिन के रासायनिक विभाग में विभिन्न विलायकों से इसके विचूर्णित शुष्क त्वक् के सत्व प्रस्तुत किए गए जिसका निष्कर्ष निम्न रहा—पेट्रोलियम ईथर एक्सट्रैक्ट ०.३०७ प्रतिशत, ईथर एक्सट्रैक्ट ०.२३५ प्रतिशत, और ऐब्सोल्यूट ऐलकोहॉलिक एक्सट्रैक्ट १४.२ प्रतिशत।

ऐलकोहलिक एक्सट्रैक्ट (मद्यसारीय सत्व) में, जो बहुतांश में उष्ण जल विलेय था, यथेष्ट परिमाण में कषायीन (टैनीन) और सम्भवतः एक सेन्द्रियक पदार्थ, जिसमें लौह विद्यमान था, पाए गए। ऐलकलाइड (क्षारोद) और उड़नशील वा सुगंधित तैल (Essential) के स्वभावका कोई क्रियाशील सत्व नहीं पाया गया। इसकी पूर्ण परीक्षा की जा रही है। (आर० एन० चोपरा एम० ए०, एम० डी० इं० ड्र० इं० पृ० ३७७)

प्रयोगांश—त्वक्, बीज। मात्रा—२ तोला।

औषध-निर्माण तथा मात्रा—अशोक घृत; अशोकारिष्ट, मात्रा—१ से ५ तोला; तरल सत्व; मात्रा—१५-६० मिनिम (बूँद)।

अशोक के गुणधर्म तथा उपयोग

आयुर्वेदीय मतानुसार--मधुर, हृद्य, सन्धानीय और सुगंधित है। अशोक शीतल है तथा प्रयोग करनेसे यह अर्श, क्रिमी, अपची एवं सम्पूर्ण प्रकार के व्रणों का नाश करता है। (धन्वन्तरीय निघण्टु)

अशोक शीतल, हृद्य है एवं पित्त, दाह तथा श्रम-नाशक है और गुल्म, शूलोदर, आध्मान (अफरा) तथा क्रिमिनाशक एवं रक्तस्थापक है। (रा० नि० व० १०)। अशोक शीतल, तिक्त ग्राही, वर्ण्य (वर्णकर्त्ता) और कषैला है तथा वातादि दोष, अपची, तृषा, दाह, कृमिरोग, शोष, विष और रक्त के विकार को दूर करता है। (भा० पू० १ भा०)

अशोक के वैद्यकीय व्यवहार

चक्रदत्त--असृग्दर अर्थात् रक्तप्रदर में अशोक त्वक्--कुट्टित अशोक की छाल २ तो०, गो दुग्ध आध पाव, जल १॥ पाव। इसको दुग्धावशेष रहने तक क्वाथ प्रस्तुतकरें और शीतल होनेपर इसका सेवन करें। यथा—"अशोक वल्कल क्वाथ शृतं क्षीरं सुशीतलं। यथा बलं पिबेत् प्रातस्तीव्रासृग्दर नाशनम्।" (असृग्दर-चि०)

(२) मूत्राघात में अशोक बीज—अशोक बीज एक अदद लेकर शीतल जल में पीस कर पान कराएँ। यह मूत्राघात (प्रस्रावरोध) और अश्मरीनाशक है। यथा—"जलेन खदिरी बीजं मूत्राघाताश्मरीहरम्।" (मूत्राघातचि०) "खदिरी बीजमशोक बीजमित्याहुः" (शिवदासः)

वक्तव्य

चरक के चिकित्सा स्थान के ३० वें अध्याय एवं सुश्रुत शारीर स्थान के २ य अध्याय में प्रदर की चिकित्सा लिखी है; किन्तु वहाँ अशोक का नामोल्लेख नहीं है। राजनिघण्टुकार को भी अशोक का प्रदरनाशक गुण स्वीकृत नहीं है। चरक ने वेदनास्थापन तथा संज्ञास्थापन वर्ग के अन्तर्गत अशोक का पाठ दिया है (सू०४ अ०) वेदनास्थापन का अर्थ यन्त्रणानिवारक है (देखो—अङ्गमर्द प्रशमन)। टीकाकार चक्रपाणि लिखते हैं, "वेदनायां सम्भूतायां तां निहृत्य शरीरं प्रकृतौ स्थापयतीति वेदनास्थापनम्।" अर्थात् उपस्थित वेदना का निवारण कर शरीर को जो प्राकृतिक अवस्था में लाए उसको वेदनास्थापन कहते हैं।

कविराजगण रक्तप्रदर में अशोक को वेदनास्थापन रूप से नहीं, अपितु रक्तरोधक कह कर व्यवहार में लाते हैं। जिन सम्पूर्ण स्थलों में हठात् रक्तरोधकी आवश्यकता हो, उन उन स्थलों में प्रमादवश अशोक का व्यवहार कराने से, प्रदर रोगी का रक्तस्राव कम होकर वेदना की वृद्धि होते हुए बहुशः रोगियों में प्रत्यक्ष देखा गया है। सकल वैद्यक ग्रंथों की आलोचना करने पर ज्ञात होता है कि प्रदर में सर्व प्रथम अशोक का प्रयोग वृन्दकृत सिद्धयोग नामक पुस्तक में हुआ है। अशोकघृत का व्यवहार किस समय से हो रहा है, इसे ठीक बतलाना कठिन है। चक्रदत्त, भावप्रकाश, एवं शार्ङ्गधर में अशोकघृत का उल्लेख दिखाई नहीं देता। "सारकौमुदी" नामक संग्रह-ग्रंथ एवं वङ्गसेन सङ्कलित चिकित्सासार-संग्रह तथा भैषज्यरत्नावली नामक ग्रंथ में अशोक घृत का उल्लेख है। सुश्रुतोक्त वातव्याधि में प्रयुक्त कल्याणकलवण के उपादानों के मध्य अशोक का उल्लेख देखने में आता है। (चि० ४ अ०)

नव्यमत

आयुर्वेदीय चिकित्सक गण संग्राही एवं गर्भाशयावसादक रूप से इसके वृक्ष त्वक् का प्रचुर प्रयोग करते हैं। कहा जाता है कि गर्भाशयान्तरिक मांसतन्तुओं (Endometrium) तथा डिम्बकोष-तन्तुओं पर इसका उत्तेजक प्रभाव होता है। गर्भाशय विकार विशेषतः (Uterine fibroid) तथा अन्य कारण से उत्पन्न रक्तप्रदर में इसका बहुत प्रयोग होता है। इसकी छाल का दुग्ध में प्रस्तुत क्वाथ आज तक कविराजी चिकित्साकी एक उत्तम औषध है। अर्श तथा प्रवाहिका में भी इसका उपयोग किया जा चुका है। इं० डू० इं०।

इसमें शुद्ध संग्राही गुण प्रतीत होता है। (डीमक)

इसके पुष्प को जल में पीसकर रक्तामाश (Hæmorrhagic dysentery) में बर्तते हैं। (वॅट)

इसकी छाल का जल में प्रस्तुत क्वाथ भी जलमिश्रित गंधकाम्ल (Dilute Sulphuric acid) के साथ व्यवहृत होता है। इं० मे० मे०।

अभी हाल में ही इसकी छाल के तरल सत्व की रक्तप्रदर में परीक्षा की गई और यह लाभप्रद प्रमाणित हुआ। (Indigenous Drugs Report, madras.)

नोट—थोड़े हेरफेर के साथ अशोक के उपर्युक्त गुणों का ही उल्लेख प्रायः सभी प्राच्य व पाश्चात्य ग्रंथों में हुआ है।

वर्तमान अन्वेषक श्रीयुत आर० एन० चोपरा महोदय स्वरचित ग्रंथ में अपने अशोक सम्बन्धी विचार इस प्रकार प्रकट करते हैं।

पृथक् किए हुए जरायु पर अशोक-त्वक् द्वारा वियोजित विभिन्न अंशों की परीक्षा की गई; किन्तु उसका कोई व्यक्त प्रभाव नहीं हुआ। रक्तप्रदर एवं अन्य गर्भाशय-विकारों में यद्यपि बहुशः शय्यागत रोगी-परीक्षक गण इसके लाभदायक होने की प्रशंसा करते हैं; पर यह औषध प्रत्यक्ष प्रभाव प्रकट करती हुई नहीं प्रतीत होती। इं० डू० इं०।

अशोकम् aṣhokam–सं० क्ली० }
अशोक aṣhoka–हिं० संज्ञा पुं० }

(१) पारद, पारा। Mercury (Hydrargyrum.)

-पुं० (२) आसपाल, अशोक। (Saraca Indica.)

अशोकघृतम् aṣhoka-ghritam-सं० क्ली० प्रदर में प्रयुक्त होने वाला एक घृत विशेष।

योग तथा निर्माण-विधि—अशोककी छाल ६४ तो० (१ प्रस्थ) को २५६ तो० जल में पकाएँ। जब चौथाई जल शेष रहे तो उसमें ६४ तो० घृत मिलाकर पकाएँ। पुनः चावलोंका पानी, बकरी का दुग्ध, घृत तुल्यभाग, जीवकका स्वरस, भँगरेका स्वरस, जीवनीय गणकी ओषधियाँ चिरौंजी, फालसा, रसवत, मुलहठी, अशोकमूल त्वचा, मुनक्का, शतावर, चौलाईमूल प्रत्येक २-२ तो० ले कल्क बनाएँ। पुनः मिश्री ३२ तो० मिलाकर कोमल अग्नि से शनैः शनैः पकाएँ।

गुण—इसके सेवन से हर प्रकार के प्रदर, शोथ, कुक्षिशूल, कटिशूल, योनिशूल, शरीरव्यथा, मन्दाग्नि, अरुचि, पाण्डु, कार्श्य, श्वास एवं कामला का नाश तथा आयु की पुष्टि होती है। वंग से० सं० प्रदर चि०। भैष०। सा० कौ०।

अशोक रोहिणी aṣhoka-rohiṇí-सं० स्त्री० (१) कटुतिक्ता, रोहिणी, तिक्तरोहिणी, कटुकी। (Picrorrhiza kurroa.) रा० नि० व० ६। च० सू० ४ अ० संज्ञास्थापन। देखो—कटुकी। (२) लताशोक। यह अशोक दल सदृश दल है। रत्ना०।

अशोकवाटिका aṣhoka-váṭiká-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] (१) वह बगीचा जिसमें अशोकके पेड़ लगे हों। (२) शोक को दूर करने वाला रम्य उद्यान।

अशोका aṣhoká-सं० (हिं० संज्ञा) स्त्री० कटुरोहिणी, कटुकी, कुटकी। (Picrorrhiza kurroa.) मे०। भा० पू० १ भा०।

अशोकारिः ashokárih-सं० पुं० कदम्ब वृक्ष। कलम्ब-महा०। कदम गाछ-बं०। (Anthocephalus kadamba.) श० च०।

अशोकारिष्टः aṣhokárishṭah-सं० पुं० प्रदर रोगमें व्यवहृत एक अरिष्ट विशेष।

योग व निर्माण-विधि—अशोक की छाल १ तुला (५ सेर), को ४ द्रोण (६४ सेर) जल में पकाएँ। जब चौथाई शेष रहे तो उसमें गुड़ पुराना, धौ का फूल ६४-६४ तो०, सोंठ, जीरा, नागरमोथा, दारुहल्दी, आमला, हड़, बहेड़ा, अडूसा, आमकी गुठली, कमल का फूल, चन्दन, जीरा, इन्हें ४-४ तो० चूर्ण कर उक्त क्वथित रसमें मिश्रित कर उत्तम पात्रमें रख एक मास तक रख छोड़ें। जब सन्धानित होकर उत्तम रस तैयार हो तब छानकर बोतल में बन्द करें।

मात्रा—१-५ तो०।

गुण—इसके सेवन से रक्तपित्त, हर प्रकार के प्रदर, ज्वर, रक्तार्श, मन्दाग्नि, अरुचि, शोथ, प्रमेह और सम्पूर्ण स्त्री रोगों का नाश होता है। भैष र० प्रदर चि०। आ० वे० सं०।

अशोगम् aṣhogam-ता० }
अशोगी aṣhogí-हिं संज्ञा स्त्री० } अशोक। (Saraca Indica, *Linn.*) फा० इं० १ भा०।

अशोथनेत्रपाकः aṣhotha-netra-pákah-सं० पुं० अशोफज अर्थात् शोथ (सूजन) रहित नेत्रपाक रोग।

लक्षण नेत्रों में खुजली चले, चिपकें और आँसू बहें तथा पके गूलर की समान लाल, सूजन युक्त और जो पके वह शोफज नेत्ररोग है। इसके विपरीत जिसमें ये लक्षण न हों उसे "अशोथनेत्रपाक" रोग कहते हैं। मा० नि०।

अश्अर aṣhãara-अ० सघन बालोंवाला, बहुलोमश, अधिक रोमों वाला, वह व्यक्ति जिसके बाल अधिक हों। हाइपर ट्रिकोसिक (Hypertrichosic.)-इं०।

अश्क aṣhka-फ़ा आँसू, अश्रु। (A tear.)

अ(इ)श्क पेचा áaṣhka-pechá-फ़ा० कामलता, तरुलता। (Ipomoea quamoclit.) इं० हैं० गा०। देखो-इश्कपेचा।

अश्क़र ashqara–अ० रक्तवर्ण जो पीत एवं श्याम आभा लिए हुए हो। रोग विज्ञान में उस मूत्र (क़ारोरा) को कहते हैं जिसका रंग ललाई लिए पीला हो। रेडिश येलो (Redish-yellow.)–इं०।

अश्क़ाक़ुल ashqáqula–अ० शक़ाक़ुल। एक प्रसिद्ध जड़ है जिसको हिन्दी में "दूधाली" कहते हैं। (Asparagus ascendens, *Roxb.*)

अश्कानी ashkání–तिब्बि० चौलाई, तण्डुलीय। (Amarantus 'thus' spinosus.)

अश्कील ashkíla–.ऊसज एक वृक्ष है। (A tree.)

अश्क़ून ashqúna–तु० रेवास। See–Raibása.

अश्के मरियम ashke-mariyam–फ़ा० करञ्ज, करञ्जुआ। (Pongamia glabra.)

अश्ख़ार ashkhára
शख़ार shákhára } -ख़ुरासा० भारतीय सज्जी, सर्जि। बैरिल्ला (Barilla.)–इं०। देखो–सोडियाई क़ार्बोनास या सोडा।

अ(इ)श्ख़ीस a-ishkhísa–अ० अस्दुल्अ़र्ज़। अवावा-बरब०। ख़ामालावन-यु०। बरकरायन–इल्दलु०। किसी किसी के मतानुसार बरबरी भाषा में इसे "वहीद" और फ़ारसी में "मुरतरू" कहते हैं। किसी किसी ने इसे माज़रियून स्याह का एक भेद लिखा है तथा किसी ने इसे किर्मदाना का पेड़ लिखा है। किसी किसी के मतानुसार इसका हिन्दी नाम बक्कम है और बंगाल में बहुत पैदा होता है। फलतः यह अनिश्चित वनस्पति की जड़ है जो अफरीका और आर्मीनिया में अधिकता के साथ उत्पन्न होती है तथा आज कल अप्रयुज्य है। देखो—माज़रियून (Mazariyúna.)

अश्जअ़ ashjaá–अ० (ए० व०), अशाजिअ़ (ब० व०) (१) व्यवच्छेद शास्त्र की परिभाषा में अंगुली-मूल-संधि। जौहरी का वचन है कि अंगुलियों की संधियाँ तीन हैं,—प्रथम जो संधि मूल में स्थित है, इसे अश्जअ़ कहते हैं; द्वितीय जो मध्य में स्थित है बुर्जुमह् (Phalange) नाम से अभिहित होती है और त्रितीय जो ऊपर स्थित है अन्मिलह् (Tip of the finger.) कहलाती है। (२) उश्शक़,उश्शज। (Ammoniacum.)

अश्जार ashjár–अ० (ब० व०), शजर (ए० व०) वृक्ष, पेड़। (Trees.) स० फा० इं०। लु० कि०। देखो—वृक्षः।

अश्त ashta–मह० प्लक्ष वृक्ष, पाकर, पाखर, पकरी। (Ficus rumphii, *Bl.*) फा० इं० ३ भा०।

अश्तर ashtar–अ० फटे नेत्रवाला, दरीदा चश्म। यह सहज या प्रकृत रोग है।

अश्तबून ashtabúna
अश्तरान ashtarána } -मिश्र० बसफाइज, खंकाली –हिं०। (Polypodium.)

अश्तला बूस ashtalábúsa–रू० कायफल। (Myrica nagi, *Thunb.*)

अश्ता ashtá–हिं० काञ्चनार, कचनाल, मकुआ। (Bauhinia variegata.)

अश्दक़ ashdaqa–अ० चौड़े मुँह वाला, बड़े मुँह वाला।

अश्दाक़ ashdáqa–अ० (ब० व०), शिद्क़ (ए० व०) गोशहे दह्न। मुख कोण, मुख का कोना।

अश्नह् ashnah–.फा० दरख़्त पूज़ह। Moss, common (Lycopodium clavatum,) इं० हिं० गा०।

अश्नान ashnána–अ० स्वर्जिक्षार। देखो—उश्नान। (Ushnána.)।–हिं० पुं० स्नान, नहाना। (Bathing.)

अश्फ़रान ashfarána–अ० स्त्री की योनि के दोनों किनारे।

अश्फ़ा ashfá–अ० जिसके दोनों ओष्ठ परस्पर न मिलते हों।

अश्फ़ार ashfára-अ० (ब० व०), शफ़र (ए० व०) पलकों के किनारे अर्थात् पलकों के बाल उगने के स्थान। म०ज०। -फ़ाबु० सज्जी।

अश्बह् ashbah-अ० इश्क़पेचा के समान एक बूटी है। फूल चमेली के समान तथा सुगन्ध-युक्त होता है।

अश्बाह् ashbáh-अ० (ब० व०), शबह् (ए० व०) प्रतिबिम्ब, मूर्ति, तसवीर। (Reflection, an image, a picture.)

अश्बील ashbíla- मत्स्याण्ड, मछली के अण्डे। (Eggs of fish.)

अश्बुत्चेग़न ashbutcheghana-अ०मार्जाराण्ड, जुन्दबेदस्तर। (Castoreum.) इं० मे० मे०।

अश्म ashma-सं० क्लीं०,हिं० संज्ञा पुं०[अश्मन्] (१)स्वर्ण माक्षिक।Iron pyrites (Ferri sulphuretum) वै० निघ०। (२) पत्थर (A stone.)। (३) पर्वत, पहाड़ (A mountain.)। (४) मेघ। बादल। (A cloud)

अश्मकदली ashma-kadalí-सं० स्त्री० कदली विशेष, केला, पर्व्वतीय केला। पाहाड़े कला-बं०। लोखंड केल-मह०। Plantain (Musa sapientum.) रा० नि० व० ११।

अश्मकन्दिका ashma-kandiká-सं० स्त्री० अश्वगंध। (Withania somnifera.)

अश्मकरम् ashma-karam-सं० क्लीं० स्वर्ण, सोना। Gold (Aurum.) रत्ना०।

अश्मकूट ashma-kúṭa-हिं० पुं० (Petrous process.).

अश्मकृच्छ्रहा ashma-krichchhrahá-सं० स्त्री० वेल्लन्तर वृक्ष, वीरतरु। बेलतर-मह०। वै० निघ०।

अश्मकेतुः ashma-ketuh-सं० स्त्री० क्षुप पाषाणभेद क्षुप। पाथर कुर-बं०। रा० नि० व० ५। Coleus aromaticus (The small var.of-)

अश्मगर्भः ashma-garbhah-सं० पुं०
अश्मगर्भ ashma-garbha-हिं० संज्ञा पुं०
हरिन्मणि, पन्ना। पान्ना-बं०। ज़ुमुर्रद-अ०। Emerald (Smaragolus.) भा० पू० १ भा०।-क्लीं० (२) मरकत-मणि। हे० च०। देखो—पन्ना।

अश्मगर्भकः ashma-garbhakah-सं० पुं० तिनिश वृक्ष। (Lagerstroemia flos-reginæ.) मद० व० ५।

अश्मगर्भजम् ashma-garbhajam-सं०क्लीं० मरकत मणि,पन्ना। (Emerald.)रा० नि० व० १३।

अश्मघ्नः ashmaghnah-सं० पुं० पाषाण-भेद क्षुप। पाथरकुचा-बं०। (Coleus aromaticus.) रा० नि० व० ४। भा० पू० १ भा०।

अश्मघ्न स्वेद ashmaghna-svedah-सं० पुं० अश्मरी में प्रयुक्त स्वेद विशेष।

अश्मजम् ashmajam-सं० क्लीं०
अश्मज ashmaja-हिं० संज्ञा पुं०
(१) मुण्डलौह, लोहा भेद। Iron (Ferrum.) रा० नि० व०१३। च० द० पांडु-चि०। (२) शिलाजीत। शिलाजतु। (Bitumen.) मद० व० ४। हेमा०। प० मु०। र० मा०। रा० नि० व० १३। (३) गेरू, गैरिक, हिरामिजी। (See-Gairika.)। (४) मोमियाई।

अश्मजतु,-कम् ashmajatu,-kam—सं० क्लीं० शिलाजी(जि)त, शिलाजतु। (Bitumen.) च० द० पांडु-चि० योगराज। रा० नि० व० १३। सि० यो० र० पि० चि० खण्डखाद्य। "शुभाश्मजतुकं त्वचम्।"

अश्मदारण ashmadárana-हिं० पुं० पत्थर काटने वाला आरा।

अश्मन् aṣhman–सं० पुं० प्रस्तर, पत्थर, पाषाण। (A stone.)

अश्मन्तः,-कः aṣhmantah,-kah–सं० पुं० पाषाण भेद, पाथर चूर। (Coleus aromaticus.) च० सू० १ अ०। कोविदार वृक्ष सदृश अम्ल-पत्रीय अम्लोट, चांगेरी (A species of ebony.)। भा० म० ४ भा० गर्भ-चि०। "अश्मन्तकस्तिलाः कृष्णाः"। च० सू० ४ अ०। (३) उद्दालक वृक्ष, बहुवार-सं०। बहुआर, सोरा-हिं०।(Cordia latifolia) भा० पू० १ भा०। (४) कोविदार वृक्ष, कचनार भेद। (Bauhinia veriegata.) भ० पू० २ भा०। (५) चुक, चांगेरी (Rumex vesicarium.) र० मा०। (६) तृण विशेष। अम्लकुचाई-बं०। (A sort of grass.) सु० चि० २५ अ०। (७) स्वनामाख्यात वृक्ष। आपटा-तृण। आबुटा-हिं०। अश्मर-महा०। पर्य्याय-इन्दुकः, कुवाली, अम्लपत्रः, श्लक्ष्ण त्वक्, नीलपत्रः, यमलपत्रकः। गुण—मधुर, कसैला, शीतल, पित्तनाशक और भूत निवारण करनेवाला है। रा० नि० व० ६।

अश्मन्त(क)म् aṣhmanta,-ka-m-सं० क्ली० (१) पाकार्थ अग्नि स्थान, चुल्लि(ल्ली), चूल्ही। मे० नत्रिक०। (२) दीपाधारच्छादन, आंधारिया। मे०।

अश्मपुष्पम् aṣhma-pushpam-सं० क्ली० शैलज, शिलारस। (Styrax præparatus.) अम०।

अश्मभाण्डम् aṣhma-bhánḍam-सं० क्ली० (१) लौह भाण्ड विशेष, हावन। हामामदिस्ता-फ़ा०। श० च०। (२) खल्ल, खल। Mortar.)

अश्मभित् aṣhmabhit–सं० पुं० (१) पाषाण भेद, पाथरचुर। (Coleus aromaticus.) प० मु०। रत्ना०। (२) कवाटवक्र वृक्ष-सं०। कराविया, कवाट वेटु-ते०। पेवटुआ-हिं०। र० मा०। कवाटचक्र। रत्ना०। देखो—कवाटच(व)क्रम्। (Kavátacha,-va,-kram.)

अश्मभेदः,-कः aṣhmabhedah,-kah–सं० पुं०
अश्मभेद ashmabheda–हिं० संज्ञा पुं०
क्षुप विशेष। Coleus amboinicus, Syn., (Coleus aromaticus.)। पाखानभेद नाम की जड़ी जो मूत्रकृच्छ्र आदि रोगों में दी जाती है। पाथरचुर-हिं०। पाथर कुचा, हिमसागर, हाता जो-बं०। सु० सू० ३८, ३९ अ०। पर्य्याय-अश्मभेदः अश्मभित् (र०), अश्मघ्नः, पाषाणभेदः, शिलाभेदः, अश्मभेदकः, श्वेता, उपलभेदी, उपलभित् शिलागर्भज, नगभित्, संशोधनः। वा० सू० १५, ३६ अ०। "वल्लन्तरारणिक वृक्क वृष्याऽश्मभेदः।"

गुण—शीतल, कषैला, वस्तिशोधक दस्तावर तथा तिक्त है और प्रमेह, अर्श, मूत्रकृच्छ्र तथा अश्मरी रोग नाशक है। मद० व० १। मधुर तिक्त, प्रमेह, प्यास, दाह, मूत्रकृच्छ्र तथा अश्मरीहर और शीतल है। रा० नि० व० ५।

अश्मभेदनः aṣhma-bhedanah-सं० पुं० पाषाण भेद। मद०।

अश्मयोनिः,-नी aṣhma-yonih,-ni-सं० पुं०, स्त्री० (१) नील मणि। A gem of a blue colour (The sapphire.) अ० टी०। (२) अश्मन्तक वृक्ष। आपटा-बं०। मद० व० १०। See—aṣhmantaka.

अश्मर aṣhmar-हिं० वि० [सं०] पथरीला।

अश्मरी ashmarí–सं० (हिं० संज्ञा) स्त्री० मूत्र रोग विशेष। पथरी। कैलक्युलस Calculus (ए० व०), कैलक्युलाई Calculi (ब० व०)-ले०। स्टोन Stone, ग्रेवल Gravel-इं०। हसात-अ०। संगरेज़ह-फ़ा०। किले, पाथुरी-बं०। मुतखड़ा-महा०।

अश्मरी संस्कृत अश्मन् शब्द से व्युत्पन्न स्त्री वाचक पद है। यहाँ पर इसका अल्पार्थक प्रयोग हुआ है अर्थात् पथरी या कंकड़ीके अर्थमें। आयुर्वेद के मतसे उस पथरीको कहते हैं जो वस्तिमें प्रकुपित

हुई वायु के वस्तिगत शुक्र के साथ मूत्रको अथवा पित्त के साथ कफ को सुखाने से क्रमशः गाय के पित्त में गोरोचन के समान उत्पन्न हो जाती है। आयुर्वेद में इसके वातज, पित्तज कफज और शुक्रज ये चार भेद माने गए हैं।

चरक, सुश्रुत, वाग्भट प्रभृति सभी प्राचीन आयुर्वेदीय ग्रंथों में जहाँ भी अश्मरी का वर्णन हुआ है वहाँ उक्त शब्द का प्रयोग केवल वस्तिगत अश्मरी के लिए किया गया है। परन्तु अब यह शब्द उतने संकुचित अर्थों में नहीं लिया जाता।

प्राचीन शास्त्रकारों को और स्थानों में बनने वाली अश्मरियों का ज्ञान था वा नहीं अथवा पूर्व पुरुषों में और स्थानों में अश्मरियोंका निर्माण होता था वा नहीं? इसके संबंध में यहाँ कुछ विशेष न कह कर हम केवल इतना ही कहना यथेष्ट समझते हैं कि इस शब्द का प्रयोग अब उतने संकुचित अर्थों में नहीं होता, वरन् किसी भी ग्रंथ्यवयव की प्रणाली वा मार्ग अथवा स्वयं उस ग्रंथि में बनने वाली किसी प्रकार की पथरी को अब हम अश्मरी कह सकते हैं। यद्यपि इन सबके निदान, सम्प्राप्ति, लक्षण तथा चिकित्सा प्रभृति का, चिकित्सा प्रणालीत्रय के अनुसार अपने अपने स्थल पर सविस्तार वर्णन किया जाएगा; तोभी उन सब भेदों का यहाँ संक्षिप्त परिचय करा देना अप्रासङ्गिक न होगा।

नोट—डॉक्टरी शब्द कैल्क्युलस का अर्थ खटिका है। परंतु डॉक्टरीकी परिभाषा में अश्मरी को कहते हैं। प्राचीन पाश्चात्य शास्त्रकारभी इसका प्रयोग केवल वृक्क एवं वस्तिगत अश्मरी के लिए ही करते थे। परन्तु अब इससे व्यापक अर्थ लिया जाता है।

अश्मरी के मुख्य भेद निम्न हैं--

(१) वस्त्यश्मरी—आयुर्वेदिक शास्त्रों में इसका वर्णन अश्मरी शब्द के अन्तर्गत हुआ है। इसका एक भेद शुक्राश्मरी है; परन्तु यह आयुर्वेदोक्त "शुक्राश्मरी" वस्ति में नहीं हो सकती, वरन् इसका निर्माण बीजकोष में होता है।

पर्याय—सिस्टोलिथ (Cystolith), स्टोन इन दी ब्लैडर (Stone in the bladder)-इं। हसातुल् मसानह्-अ०। मसाना की पथरी-उ०।

(२) शुक्राश्मरी, (शुक्राशय स्थित अश्मरी) (Calculus of vesiculus seminales)—

(३) शिश्नाग्रत्वगश्मरी—शिश्नाग्र त्वचा अर्थात् शिश्न की घूँघट में बनने वाली अश्मरी। (Calculus of prepuce)

(४) प्रोस्टेटग्रंथि-स्थित अश्मरी, अष्ठीलागत अश्मरी—(Prostatic calculi) प्रोस्टेट ग्रंथि वा प्रणाली में बनने वाली पथरी। हसातुल् गुद्दहे क़ुदामियह-अ०।

(५) वृक्काश्मरी, वृक्क की पथरी—रेनल कैलक्युलाइ (Renal calculi), स्टोन इन दी किडनी (Stone in the kidney), नेफ्रोलिथ (Nephrolith)-इं०। हसातुल् कुल्यह्, हसात कुलियह्-अ०। गुर्दा की पथरी-उ०।

वृक्काश्मरी के होने पर रोगी की पीठ की ओर दाहिनी या बाईं तरफ वेदना रहती है। हिलने पर यह वेदना और तीव्र होती है। जब यह अश्मरी वृक्क में से निकलकर मूत्र-प्रणाली (गविनियु) में आ जाती है अथवा उनमें जब गति होती है तब वृक्कशूल (Renal colic) के उत्कट लक्षण पैदा हो जाते हैं। इनके मूत्रप्रणाली में आकर फँस जाने ही को "मूत्राश्मरी" कहते हैं।

(६) मूत्राश्मरी—युरिनरी कैलक्युलाई Urinary calculi, युरोलिथ Urolith, स्टोन इन दी युरिनरी पैसेज Stone in the urinary passage-इं०। हसात बौलियह्-अ०। पेशाब का संगरेज़ह-उ०।

इसके दो भेद हैं, यथा—

(क) मूत्रप्रणालीस्थ अश्मरी, गविनियुस्थित अश्मरी—(Calculus of ureter)

(ख) मूत्रमार्गस्थ अश्मरी –

(Calculus of urethra).

(७) यकृदश्मरी—यकृत में बनने वाली पथरी। हेपैटोलिथ Hepatolith-इं०। हसातुल कबिद-अ०।

(८) आन्त्राश्मरी—इन्टेस्टाइनल कैलक्युलाई (Intestinal calculi)-इं०।

यह मनुष्य एवं मांसाहारी जीवोंमें तो क्वचित्, परन्तु शाकाहारी जीवों में सामान्य रूप से होता है।

(९) पित्ताश्मरी—पित्ताशय वा पित्त-प्रणाली में उत्पन्न होनेवाली अश्मरी। बिलियरी कैलक्युलाइ Biliary calculi., गॉल स्टोन्स Gall-stones, कोलोलिथ Chololith, (Calculus of gall-bladder or duct.)-इं०। हसात सफ़राविय्यह, हसात-मसारिय्यह्-अ०। सफ़रावी पथरी, पित्त की पथरी–उ०।

नोट—इसे वस्तिस्थ अश्मरी का भेद पित्तज अश्मरी न समझना चाहिए।

(१०) क्लोमग्रन्थिस्थ अश्मरी, अग्न्याशयिक अश्मरी—यह क्वचित् ही पाई जाती हैं और जब उत्पन्न होती है तब अधिक संख्या में मुख्य प्रणाली वा गौण प्रणाली में वर्तमान होती है। पैन्क्रिएटिक कैलक्युलाई Pancreatic calculi-इं०।

(११) लालाग्रंथिस्थ अश्मरी लाला ग्रंथि वा लाला अर्थात् लार में पाई जाने वाली अश्मरी।

यह बाहर से खुरदरी (कर्कश) एवं विषमाकार होती है और साधारणतः प्रणाली के मुख के समीप पाई जाती हैं। इससे प्रणाली का मुख अवरुद्ध हो जाता है। सैलिवरी कैलक्युलाई Salivary Calculi-इं०।

(१२) शिरास्थित अश्मरी–शिरा में बननेवाली पथरी।

फ्लेबोलिथ Phlebolith-इं०। हसातुल् अव्रिदह्-अ। वरीदों की पथरी–उ०।

नोट कभी कभी शिराओं के भीतर कठोर या अश्मवत् अवरोध पाया जाता है। यह वस्तुतः रक्त के दृढ़ तथा अश्मीभूत होने से उत्पन्न हो जाता है।

(१३) अश्रुवश्मरी—अश्रुप्रणालीस्थ अश्मरी, आँसू की नालियों की पथरी।

डेक्रियोलिथ Dacryolith-इं०। हसात दम्इय्यह्-अ०।

अश्मरी कण्डनो रसः ashmarí-kandano-rasah-सं० पुं० ढाक, केला, तिल, करेला, जौ, इमली, चिर्चिटा और हल्दी इनके क्षारों को इकट्ठा करके सबका १६ वाँ भाग पारा, उतना ही गन्धक और इन दोनों के समान भाग उत्तम लोह भस्म मिलाकर सबका बारीक चूर्ण कर रक्खें।

मात्रा–१ तो०। इसे दही के साथ चाट कर ऊपर से वरुण वृक्ष की छाल का क्वाथ पीएँ। यह रस दुःसाध्य से भी दुःसाध्य पथरी को नष्ट करता है।

अश्मरी कृच्छ्रः ashmarí-krichchhrah -सं० पुं० पथरी जन्य मूत्रकृच्छ्र, मूत्रकृच्छ्र भेद। वै० निघ०। (See-Mútra krichchhra)

नोट—आयुर्वेद के अनुसार अश्मरीकृच्छ्र मूत्रकृच्छ्र का एक भेद है। परन्तु यह पथरी के निर्माण की अवस्था में ही होता है। अस्तु यह अश्मरी रोग का केवल एक लक्षण मात्र है।

अश्मरीघ्नः ashmaríghnah-सं० पुं० }
अश्मरीघ्न athmaríghna-हिं० संज्ञा पुं० }
वरुण वृक्ष, बरना का पेड़। वरुण गाछ-बं०। वायवरणा-मह०। (Cratæva religiosa.) त्रिका०।-त्रि०, त्रि० अश्मरीहर, अश्मरी नाशक, पथरी को दूर करने वाला। (Lithontriptic)

अश्मरी छेदक ashmarí-chhedaka-हिं० संज्ञा पुं० (१) अश्मरी छेदक यंत्र (Lithotrite.)। (२) अश्मरी को फोड़कर चूर

चूर करने वाली औषध । अश्मरी भेदक । (Lithotriptic) देखो—अश्मरीहर ।
वि० अश्मरीको फोड़ने वाला, अश्मरी भेदक।

अश्मरी छेदक यंत्र ashmarí-chhedaka-yantra-हिं० संज्ञा पुं० वस्ति में पथरी को फोड़ने का यंत्र । अश्मरी भेदक यंत्र । लिथोट्रिप्टर Lithotriptor, लिथोट्राइट Lithotrite-इं० । आक्रिक़तुल् .हुसात, मिफ़त्तितुल् हुसात-अ० ।

अश्मरी द्रावक ashmarí-drávak-हिं० संज्ञा पुं० पथरी को विलीन करने वाली वा घुलाने अर्थात् द्रव करने वाली औषध । वह औषध जो अश्मरी को घुलाकर पानी कर दे । अश्मरी विलायक । (Lithodialytic) मुहल्लिलुल् हुसात-अ० । देखो—अश्मरीहर । -वि० अश्मरी को घुलाने वा द्रव करने वाला ।

अश्मरी द्रावण ashmarí-drávaṇa-हिं० संज्ञा पुं० वस्तिस्थ पथरी को विलीन करना, पथरीको घुलाना । लिथोडायालिसिस Lithodialysis-इं० । तह्लीलुल् हुसात, तज़्वीबुल् हुसात-अ० ।

नोट—लिथोडायालिसिस के दो अर्थ होते हैं—(१) विलायक औषधों के द्वारा वस्ति में पथरी का विलीन करना जिसके लिए उपयुक्त हिंदी एवं अरबी शब्द प्रयुक्त हुए हैं और (२) किसी यंत्र के द्वारा वस्ति में ही अश्मरी का छेदन करना। इसके लिए अर्वाचीन आयुर्वेदीय चिकित्सक "अश्मरी भेदन" एवं मिश्र देशीय चिकित्सक "तफ़्तीतुल् हुसात" शब्द का प्रयोग करते हैं ।

अश्मरी प्रियः ashmarí-priyah-सं० पुं० महा शालिधान्य । प० मु० । (See-mahá-shálih.)

अश्मरी निर्माण ashmarí-nirmáṇa-हिं० संज्ञा पुं० पथरी बनना । (Lithiasis) तक्व्वुनुल् हुसात-अ० ।

अश्मरी भेदः ashmarí-bhedah-सं० पुं० पाषाणभेद वृक्ष,पाथरचुर । (Coleus aromaticus.) मद० व० १ ।

अश्मरी भेदकः ashmarí-bhedakah-सं० पुं० (१) पाषाण भेद । कैय० दे० नि० । सं० (हिं० संज्ञा) पुं० (२) देखो--अश्मरी छेदक ।

अश्मरी भेदन ashmarí-bhedana-
अश्मरी भेदनः ashmarí-bhedanah } सं० हिं० संज्ञा पुं०
(१) अश्मरी भेदन क्रिया, पथरी तोड़ने का कर्म । (Lithotrity) तफ़्तीतुल हुसात-अ० । (२) किसी औषध वा यंत्र द्वारा वस्ति में ही अश्मरी को फोड़कर टुकड़े टुकड़े करना । (३) पाषाण भेद । (Coleus aromaticus.) सं० निघ० ।

अश्मरी रिपुः ashmarí-ripuh-सं० पुं० (१) (१) वृहच्चणक, बड़ा चणा । रत्ना० । (२) यैत्रेवु-सं० । मकाई, भुट्टा, बड़ा ज्वार-हिं० । जर्नीर-बं० । Maize (Zea mays.)

अश्मरी विदारण ashmarí vidáraṇa-हिं० संज्ञा पुं० शस्त्रकर्म द्वारा पथरी का निकालना । (Lithotomy).

अश्मरी शर्करा ashmarí-sharkará—सं० स्त्री० तन्नामक रोग विशेष । (Renal sand, Urinary sand,urinary deposits.) रमल कुल्यह, रमल बौली, रसोब बौली-अ० । रेगे गुर्दह वा बौल-फ़ा० ।

शर्करा (रेता) और सिकता प्रमेह तथा भस्माख्य रोग (मूत्र, शुक्र रोग उत्तर तन्त्रोक्त) ये सब पथरी ही के विकार हैं और पथरी ही घुल कर शर्करा होती है; क्योंकि इनके लक्षण और वेदना समान हैं । (यूनानी हकीम भी पथरी और शर्करा को एक ही क़िस्म से बताते हैं । देखो तिब्बे अकबर)

यदि पथरी छोटी हो और वायु के अनुकूल हो जाए तब तो प्रायः निकल पड़ती है । और जो वायु द्वारा टुकड़े टुकड़े (नन्हें नन्हें दाने से) हो जाएँ तो उन्हें शर्करा कहते हैं ।

अश्मरीजन्य मूत्रकृच्छ्र एवं शर्करा के लक्षण प्रायः एक से होते हैं, यथा—

लक्षण–जिस मनुष्यको शर्करारोग होता है उसके हृदय में पीड़ा, साथलोंका थकना, कूखमें शूल और शोथ, तृषा और वायु का ऊर्द्ध्वगमन, कृष्णता (कालापन) और दुबलापन तथा देह का पीला पड़ना, अरुचि, भोजन ठीक नहीं पचना आदि लक्षण होते हैं। और जब यह मूत्रके मार्गमें प्रवृत्त होकर और वहीं स्थित हो जाती है (इसे मूत्राश्मरी कहते हैं) तब ये उपद्रव होते हैं—दुबलापन, थकावट, कृशता, कोख में शूल, अरुचि, शरीर, नेत्रादि पीले पड़ना तथा उष्णवात, तृषा हृदय में पीड़ा और वमन (या जी मिचलाना) इत्यादि। सु० नि० ३ अ०। देखो—शर्करा।

अश्मरीहरः ashmarí-harah–सं० त्रि०
अश्मरीहर ashmaríhar–हिं० वि०

पथरीको नष्ट करने वाला। अश्मरीनाशक। अश्मरीघ्न। (Lithontriptic.)

सं० पुं० (१) अश्मरी नाशक योग विशेष। यथा–शिलाजीत, बच्छनाग, दारु, दन्ती, पाषाणभेद, हल्दी, हड़ प्रत्येक समान भाग लेकर बारीक चूर्ण बनाएँ।

मात्रा—१ मा०। बच्चों को आध मा०।

अनुपान–तिलक्षार २ तो० एवं दूधके साथ खाने से पथरी नष्ट होती है।

(२) देवधान्य। देधान–बं०। (३) वरुणवृक्ष, बरना। वायवरणा-मह०। (Cratæva Religiosa.) र० मा०।

सं० (हिं० संज्ञा) पुं० (४) पथरी को नष्ट करने वाली औषध। प्रभाव भेद से यह तीन प्रकार की होती है, यथा—

(१) वह औषधं जो अश्मरी बनने को रोकती हैं अथवा मूत्रस्थ स्थूल भागको मूत्रावयव में तलस्थायी होने से बाज़ रखती हैं और यदि कोई पथरी वा कंकड़ी बन गई हो तो उसको विलीन करती हैं।

ऐण्टिलिथिक्स (Antilithics)–इं०। मानिश्रात तकव्वुने हसात–अ०।

(२) पथरी को तोड़ने वाली या उसको टुकड़े टुकड़े करने वाली औषधें। वह औषध जो अपने प्रभाव एवं सूक्ष्म गुण के कारण वस्ति तथा वृक्कस्थ अश्मरी को टुकड़े टुकड़े करके वा उसको विलीन वा द्रावित करके मूत्र के साथ उत्सर्जित करें। अश्मरी भेदक। अश्मरी छेदक।

लिथॉन्ट्रिप्टिक्स (Lithontriptics), लिथोट्रिप्टिक्स (Lithotriptics)–इं०। मुफ़त्तित्, मुफ़त्तितुल् हसात–अ०।

(३) वह औषध जो पथरी को विलीन करती हैं।

अश्मरी द्रावक। अश्मरी विलायक।

नोट—जब पेशाब अधिक अम्लतायुक्त होती है तब उसमें से युरिक एसिड या कैल्सियम् आक्सीलेट पृथक् होकर शर्करा के रूप में तलस्थाई हो जाते हैं जिससे पथरी वा कंकड़ी बन जाती है। ऐसी दशा में ऐलकेलीज़ (क्षारीय औषधों)के देने से या पाइपरेज़ीन के देने से बहुत लाभ होता है; क्योंकि यूरिक एसिड का बनना बन्द हो जाता है, प्रभृति। किन्तु जब मूत्र डीकम्पोज़ अर्थात् वियोजित या विकृत हो जाता है तब उसमें से फॉस्फेट के रवे तलस्थाई होजाते हैं। ऐसी दशा में मूत्र को अम्ल किया जाता है और उसकी विकृति वा सड़ाँधको दूर किया जाता है। अस्तु, बेञ्ज़ोइक एसिड या बेञ्ज़ोएट्स के प्रयोग से बहुत लाभ होता है।

(Gout) में पोटासियम् और लीथियम् के लवणोंके उपयोग से यूरिक एसिड (जो व्याधि का कारण होता है।) विलेय युरेट्स में अर्थात् पोटाशियम् युरेट और लीथियम् युरेट में परिणत हो जाता है एवं उनसे मूत्रस्थ अम्लता क्षारीय हो जाती है।

उपर्युक्त औषधों के सेवन काल में जल का अधिक उपयोग उनके प्रभाव का सहायक होता है। इसके उपयोग विषयक पूर्ण विवेचन के लिए विभिन्न अश्मरियों की चिकित्सा के अन्तर्गत देखें।

अश्मरीहर औषधें

आयुर्वेदीय—शिलाजीत, कुरण्टक (कटसरैया,) पलाश (क्षार), आक, वरुण वृक्ष,

ताम्रगंधेत (तूतिया), आमला, हरीतकी, विभीतकी, स्नुही (सेहुण्ड), लौह गंधेत (कसीस), हिंगु, जलब्राह्मी, निलोफ़र, कुश, कास, गजपिप्पली, सैंधव, अर्जुन, गंधनाकुली (रास्ना), कदलीक्षार, मूत्रशोधक द्रव्य मात्र (गोखरू, तृणपंचमूल, कुष्माण्ड, पाषाणभेद आदि), नागरमोथा, सुगंधबाला, अंगूरपंचांगक्षार, कण्टक तण्डुलीय क्षार, यवक्षार, कुलथी, तुलसी, ककड़ी के बीज, ख़रबूज़ाके बीज और तगर।

यूनानी—बिच्छू की राख, हज्रुल् यहूद, संग सरमाही, बरऊजासिफ़, असारून, समग़आलू, हंसराज, बादाम कड़ुआ, राज़ियानज (सौंफ), चना (स्याह), सकबीनज, कुण्डल और पेहटुल की जड़।

डॉक्टरी—एसिड फॉस्फॉरिक डायल्यूट, एसिड नाइट्रिक डायल्यूट, पाइपरेज़ीन, पॉटेसियाई एसीटास, पॉटेसियाई बाई कार्बोनास, पोडाफीलीन, पिल्युला हाइड्रार्जिराई (पारद वटी), डायोरेटिक्स (मूत्रल औषध), सिप्टेमीन, सोडियाई बाई कार्बोनास, सोडियाई बेञ्जोआस, सोडियाई साइट्रो-टार्ट्रासएफर्वेसैंस, सोडियम् पॉटेसियम् टार्ट्रेट(सोडाटार्ट्रेटा), सेपा ड्योरस, सलाइन पर्गेटिव्ह्ज़, लाइक्वार मैग्नीसियाई कार्बोनेट्स, लीथियम्सालट्स, मिनरल वाटर्स (खनिज जल) यथा सेल्टर्ज, फ्रेड्रिक शाल, वालज़, विर्की, विलडञ्जन तथा हन्याडीजूञ्ज, मैग्नीसियाई कार्बोनास, मैग्नेशिया, ग्रोराट्रापीन, युरोल, युरिया, युरिसीन, जल, बोरैक्स (टंकण), पोटाश, फॉस्फेट ऑफ सोडा और लाइम वाटर(चूर्णोदक)।

अश्मरूप-वंग ashmarúpa-vanga–हिं० पुं० (Tin–stone) वंग भेद।

अश्मर्य्याहरणयन्त्रम् ashmaryyáharana-yantram–सं० क्लो० अश्मरी निकालने का यन्त्र। अश्मरी निकालने का ऐसा यन्त्र जिसका अग्र भाग सर्प फणाकार हो। कश्चिद्वैद्य०।

अश्मलाक्षं,-क्षा ashmaláksham,-kshá –सं० क्लो०, स्त्री० शिलाजतु, शिलाजीत। (Bitumen.) रा० नि० व० १३।

अश्म शिरा कुल्या ashma-shirá-kulyá-सं० (हिं० संज्ञा) स्त्री० शिराकुल्या विशेष।

अश्म सम्भवम् ashma-sambhavam–सं० क्लो० शिलाजतु, शिलाजित। (Bitumen.) र० सा० स०।

अश्मसारः ashma-sárah–सं० पुं०, क्लो०
अश्मसार ashma-sára–हिं० संज्ञा पुं०
(१) लौह, लोहा। (Iron.) अम०। (२) लोहादि धातु (Metals.)। (३) सार लौह। इस्पात्-बं०।

अश्मसारा ashma-sárá–सं० स्त्री० काष्ठ कदली, पहाड़ीकेला। पाहाड़े कला-बं०। Wild plantain (Musa sapientum.) वै० निघ०।

अश्मसुता ashma-sutá–सं० स्त्री० पाठा। आकनादि-बं०। पहाड़मूल-मह०। (Cissampelos hernandifolia.) वै० निघ०।

अश्म-स्वेदः ashma-svedah–सं० पुं० प्रस्तर स्वेद विशेष। सु०।

अश्महा,-हन् ashmahá,-han–सं० पुं० पाषाण भेदक। पत्थरचूर-हिं०। पाथरकुची-बं०। (Coleus aromaticus.)

अश्महृत् ashma-hrit–सं० पुं०, क्लो० (१) कवाट-वक्र क्षुप, कराड़िया। See-Kaváta-vakra.) रत्ना०। (२) शिलाजतु, शिलाजित। (Bitumen.)

अश्मीरः ashmírah–सं० पुं० मूत्रकृच्छ्र। उणा०। (See-mútra-krichchhra.)

अश्मूसा ashmúsá–कनोचा भेद। इसमें अन्य भेदों की अपेक्षा कम गंध होती है।

अश्मोत्थम् ashmottham–सं० क्लो० शिलाजतु, शिलाजित। (Bitumen) रा० नि० व० १३।

अश्मंत ashamanta–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) चूल्हा। (२) खेत। (३) मरण। (४) अमंगल। देखो—अश्मन्तः।

अश्मंतक ashmantaka–हिं० संज्ञा पुं० [सं० अश्मन्तकम्] (१) मूँज की तरह का

एक घास जिससे प्राचीन काल में ब्राह्मण लोग मेखला अर्थात् करधनी बनाते थे। (२) आच्छादन। छाजन। ढकना। (३) दीपाधार। दीवट।

अश्याफ़ ashyáf-अ० (ब० व०)

नोट—शियाफ़ का बहुवचन अश्याफ़ और शियाफ़ बहुवचन है शाफ़ह् का। पिचुक्रिया, वर्तिका-हिं०। फ़तीले, बत्तियाँ-फ़ा०, उ०। (Suppositories.)

अश्यामा aṣhyámá-सं० स्त्री० श्वेत त्रिवृता, सफ़ेद निशोथ। Ipomœa turpethum (The white var. of-)

अश्रम् aṣhram-सं० क्ली०
अश्र ashra-हिं० संज्ञा पुं० } (१) रुधिर, रक्त, शोणित। (Blood.) श० टी०। (२) नेत्रोदक, नेत्राम्बु, आँसू। (A tear.)

अश्रअ aṣhraā-अ० (१) एक खाया (अण्ड) पुरुष अर्थात् वह मनुष्य जिसके एक खायह् (अण्ड) हो या (२) जिसका एक खाया (अण्ड) छोटा और दूसरा बड़ा हो। एक अँड़िया आदमी, एकाण्ड पुरुष।

अश्रज aṣhraja-अ० वह मनुष्य जिसका एक अण्ड बड़ा हो तथा दूसरा छोटा या वह मनुष्य जिसके केवल एक ही अण्ड हो।

अश्रद्धा ashraddhá-सं० स्त्री० अरोचक, अरुचि, श्रद्धा का अभाव। (Disgust or Aversion.)

अश्रम ashram-अ० वह व्यक्ति जिसका नासाग्र कटा हुआ हो। वह जिसके दोनों ओष्ठों में चीरा हो।

अश्रस ashras-अ० अधिक पलक झपकाने वाला मनुष्य। वह मनुष्य जो पलक अधिक झपकाए।

अश्रि ashri-हिं० संज्ञा स्त्री [सं०] घर का कोना। अस्त्र शस्त्र की नोक।

अश्रिबह् ashribah-अ० (ब० व०), शराब, शर्बत (ए० व०) पेया, पीने की वस्तु (Drinks, Syrups.) देखो—पेया, मद्य।

अश्रिबह् इत्य तियादिय्यह् ashribah-iátiyádiyyah-अ० दैनिक व्यवहार या स्वभावतः पीने की वस्तु—जैसे, पानी पीना। हैबिचुअल ड्रिङ्क्स (Habitual drinks.)-इं०।

अश्रिबह् मुन्बिह्ह् ashribah-munbihhah-अ० शक्तिदायक तथा उत्तेजक शर्बत। स्टिम्युलेण्ट ड्रिंक्स (Stimulant drinks) -इं०।

अश्रिबह् मुलत्तिफ़ह् मुग़िज़्ज़्यह् ashribah-mulattifah-mughziyyah-अ० पोषण और लताफ़त (प्रमोद वा हर्ष)प्रदान करनेवाले शर्बत या द्रव, प्रफुल्लकारक, प्रमोद या आह्लादजनक पेया। रेफ्रीजरेण्ट ड्रिंक्स (Refregerant drinks.)-इं०।

अश्रु ashru-सं० क्ली०
अश्रु ashru-हिं० संज्ञा पुं० } मन के किसी प्रकारके आवेग के कारण आँखों में आने वाला जल। नेत्र जल। नयन जल। नयनाम्बु। आँसू। (A tear.) चक्षेर जल-बं०। अश्क-फ़ा०। अम०।

संस्कृत पर्याय—नेत्राम्बु, रोदनं, अस्रं, अस्तं, अस्तु, वाष्पं (अ०), लोचं (ज०)।

यह अश्रुग्रंथिमें बननेवाला एक स्वच्छ जलीय रस है। इसका स्वाद लवण होता है। इसका काम पलकों और अक्षिगोलक के सम्मुख पृष्ठों को तर रखना है। अश्रु अधिक बननेकी दशामें ये आँखों से टपकने लगते हैं। नासिकाका आँखसे सम्बन्ध है इसलिए रोते समय अश्रु कभी कभी नासिका में चले जाते हैं और नासारन्ध्र में सेटपकने लगते हैं।

अश्रु अङ्कुर ashru-ankura-हिं० पुं० अश्रुवांकुर(Papilla lacrimalis)। नासिका की ओर वाले अपांग में दोनों पलकों के सम्मुख किनारों पर दो छोटे उभार होते हैं। इनमें से प्रत्येक को अश्रु अंकुर कहते हैं।

अश्रुकोष ashru-kosha-हिं० पुं० (Lacrimal sac.) आँसूकी थैली। कीस दम् ई-अ०।

अश्रुगोलम् ashru-golam-सं० क्ली०
अश्रुग्रंथि ashru-granthi-हिं० स्त्री० }

(Lacrimal-gland) यह ग्रंथि बादाम के बराबर होती है और अश्रुग्रंथि-खात में रहती है। ग़ुद्दहे दम्इय्यह्-अ०।

अश्रुग्रंथि खात ashru-granthi-kháta -हिं० पु० (Lacrimal gland cavity.) नेत्र गुहा की छत (नेत्रच्छदि फलक) में कनपुटी की ओर एक गढ़ा होता है।

अश्रुछिद्र ashru-chhidra-हिं० पुं० (Punctum lacrimale) अश्रु अंकुर की शिखर पर एक छिद्र होता है जिसका नाम अश्रुछिद्र है। इस छिद्र में से ही होकर अश्रु आँखों से नासिका में जाया करते हैं।

अश्रुनलिका ashrunaliká-हिं० स्त्री० (Lacrimal duct.) अश्रुप्रणाली।

अश्रुनाली ashru-náli-सं० स्त्री० भगन्दर रोग। वै० निघ०। See-Bhagandara.

अश्रुपातः ashru-pátah सं० पुं०
अश्रुपात ashru-páta-हिं० संज्ञा पुं०

(१) घोड़े का एक अशुभ लक्षण विशेष। यह चिह्न (भँवरी, आवर्त्त) घोड़े की आँख के नीचेके स्थान में होता है। यह अत्यन्त भयावह तथा स्वामी के कुल का घातक है। जय० द० ३ अ०। (२) आँसू गिराना। रुदन। रोना।

अश्रुप्रणाली ashru-pranálí-सं० पुं०, हिं० स्त्री० (Naso-lacrimal Duct.) आँसुओं की नली। क़नात् दम्इय्यह्-अ०।

अश्रुवाहिनी ashru-váhiní-सं० स्त्री० (Lacrimal cannal.) अश्रुनलिका।

अश्रुश्रोत ashru-shrota-हिं० पुं० (Lacrimal Duct.) अश्रुप्रणाली।

अश्रूश āashrúsha-अ० दरियाई ख़रगोश। (A sea rabbit.)

अश्र्वस्थि ashrvasthi-सं०हिं०स्त्री० यह नाली जैसी एक अस्थि है; आँख से अश्रु इसी अस्थि में रहने वाली एक थैली में होकर नासिका के भीतर पहुँचते हैं। अश्रुओंसे सम्बन्ध रखने के कारण इस अस्थि का नाम अश्र्वस्थि पड़ा है। यह अस्थि काग़ज़ जैसी पतली और बहुत कोमल होती है। लैक्रिमल बोन (Lacrimal bone)-इं०। अज़्म दम्ई-अ०। उस्तख़्वाँने अश्की-फ़ा०।

अश्लानह ashlánah-हिं० मोरशिखा, मोरपंखी। (Actinopteris Dichotoma, *Bedd.*)

अश्लाबूस ashlábús-रू० कायफल, कट्फल। (Myrica sapida.)

अश्लियह् क्यात्तम ashliyah-kyátum
अश्लियह् पातम ashliyah pátam

फिं० चूका, चाङ्गेरी। (Rumex vesicarius.)

अश्लिष्ट ashlishta-हिं० वि० [सं०] श्लेष-शून्य। असंबद्ध। असंगत।

अश्लेष ashlesha-हिं० पुं० श्लेष रहित, अपाय, असंख्य, अप्रीति, अश्लेषमिश्र, अपरिहास।

अश्वः ashvah-सं० पुं०
अश्व ashva-हिं० संज्ञा पुं०

घोटक, घोड़ा, हय, तुरंग, वाजि-हिं०। घोड़ा-बं०, हिं०। अस्प-फ़ा०। A horse (Equus caballus, *Linn.*)

गुण—घोड़े का मांस उष्ण, वातनाशक, बलकारक हलका तथा अधिक सेवन करनेसे पित्त तथा दाह जनक होता है। रा० नि० व० १७। लवण रस युक्त, अग्निवर्द्धक, कफ तथा पित्त कारक, वातनाशक, वृंहण, बल्य, चक्षु के लिए हितकारक, हलका और मधुर है। भा० पू०। घोड़े की सवारी वातको प्रकुपित करता, अंगों को स्थिरता प्रदान करता, बल तथा अग्निवर्द्धक है। राज०। देखो—वाजि।

अश्वकः ashvakah-सं० पुं० (A sparrow) कुलिङ्ग पक्षी। चिड़ा। वै० निघ०। *S*ee--kulingah.

अश्वकञ्चुकी रसः ashva-kanchukírasah-सं० पुं० घोड़ाचोली रस। योग तथा निर्माण-विधि—शुद्ध पारद, विष, गन्धक, हरताल, सोहागा, सोंठ, मिर्च, पीपल, शुद्ध जमालगोटा के बीज, हड़, बहेड़ा, आमला, प्रत्येक तुल्य भागलें। इनको चूर्ण कर भांगरे के रसमें खरल कर उड़द प्रमाण गोलियाँ बनाएँ। यह प्रत्येक रोगोंको दूर करता है। जिस जिस रोग

में जो जो अनुपान कहा है, उसी के साथ इसको देना चाहिए। यो० त० ज्वर० चि०।

(२) हरिताल (रससमाणिक्य), पारा, गन्धक, वच, त्रिकुटा, बहेड़े की छाल, सोहागा, संखिया, गोखरू, बच्छनाग, जमालगोटा, हींग, कुष्ठ कड़वी, नकछिकनी, गजपीपल, हड़ की छाल प्रत्येक समान भागको पृथक् पृथक् चूर्ण कर कपड़छन करके भांगरे के रस में ४ दिन खरल करके मूँग प्रमाण गोलियाँ बनाएँ। यह पृथक् पृथक् अनुपान से रोग मात्र को तथा अंजन से फूले को और लेप से श्वित्रको नष्ट करती है। रस० यो० सा०।

अश्वकन्दकः ashvakandakah-सं० पुं० अश्वगंधा, असगंध। (Withania somnifera.) रत्ना०।

अश्वकन्दिका ashva-kandiká-सं० स्त्री० (१) एक वनस्पति विशेष। (२) अश्वगंधा, असगंध। (Withania somnifera.) र० मा०।

अश्वकर्णः,-कः,-र्णिका ashvakarnah,-kah-rniká-सं० पुं०, स्त्री० (१) शाल वृक्ष। (Shorea robusta,) शाल गाछ-बं०। सु० सू० ३८ अ०। च० सू० ४ अ०। (२) सर्ज रस भेद, एक प्रकारका शाल-वृक्ष। सर्जशाल विशेष। रा० नि० व० २३ शाकु।

संस्कृत पर्याय—जरणद्रुमः, तार्क्ष्य, प्रसवः, शस्यसम्बरणः, धन्वः, दीर्घपर्णः, कुशिकः, कौशिकः। भा० म० ४ भा० रेवती-चि०। 'धवाश्वकर्णककुभः।'

गुण—कटु, तिक्त, स्निग्ध, रक्त पित्तघ्न, उरो रोग, विस्फोट और कण्डू (खाज) नाशक है। रा० नि० व० ६। कषेला, व्रण, पसीना, कफ तथा कृमिनाशक और विद्रधि, बधिरता, योनि व कर्ण रोग नाशक है। भा० पू० १ भा० वटादि व०। मात्रा—२ मासा।

(३) पलाश-भेद। सु० सू० ३६ अ० शरीर (४) लताशाल। शिपाबिलता-बं०। प० मु०।

अश्वकर्णम् ashva-karnam-सं० क्ली० काण्डभग्न (बीच से अस्थिभंग) नामक अस्थिभंग विशेष। जो टूटा अस्थि घोड़े के कान की भाँति ऊँची हो जाए उसे "अश्वकर्ण" कहते हैं। सु० नि० १५ अ०। देखो-भग्नम्।

अश्वकात(थ)रा,-रिका ashva-káta (tha rá,-riká. }
अश्वकाथरिवा ashva-kátharivá }

सं० स्त्री० हयकातरा। घोड़ा काथरा-हिं०, बं०। घोड़े काथर-मह०।

गुण—तिक्त, वातनाशनी तथा दीपनी है। (काथराहय पर्य्यायैः काथरा वै प्रकीर्त्तिता) रा० नि०।

अश्वकात्रि ashva-kátri-मह० बाशिंग, वान्दर बाशिंग। कडिक पान,कडिक-पन-बम्ब०। पांली पोडिश्रम् क्रसिंफोलिश्रम् (Polypodium quercifolium, Spr.)-ले०। फा० इं० ३ भा०। देखो-बाशिंग।

अश्वखुरः ashva-khurah-सं० पुं०,(१)नखी नामक गन्ध द्रव्य। (See--nakhí.)रत्ना०। (२) घोटक खुर, घोड़ेका खुर, सुम। (A hoof.) रा० नि०।

अश्वखुरा,--री ashvakhurá,-rí-सं० स्त्री० श्वेतापराजिता, विष्णुकान्ता। रा० नि० व० ३। (Clitorea ternatea.) देखो-अपराजिता।

अश्वगन्द-बिची ashva-ganda-bichí-बं० पुनीर के बीज, हिन्दी काकनज के बीज-हिं०, द०। Withania (Puneeria.) Coagulans, Dunal. (Seeds of--) स० फा० इं०। देखो—अश्वगंधा।

अश्वगंधा (न्धिका) ashvagandhá,-ndhiká-सं० (हिं०) स्त्री० एक सीधी झाड़ी जो गर्म प्रदेशों में होती है और जिसमें मको की तरह छोटे छोटे गोल फल लगते हैं। वाराही, गेठी, असगंध, पुनीर-हिं०।

संस्कृत पर्याय—जिस संस्कृत शब्द के अन्त में "गंधा" और आदि में वाजि वाचक शब्द

आए (अर्थात् समस्त अश्ववाचक शब्द), उन सब को असगंध का पर्याय समझना चाहिए, जैसे, तुरंगगन्धा वा हयाह्वया प्रभृति । अश्वकंदिका, काम्बूका, अश्वावरोहकः (र), अश्वारोहा (हे); हयगंधा, वाजिगंधा, अश्वगन्धिका, बल्या, तुर(ग, ङ्ग) गन्धा, कम्बुका, अश्वारोहिका, तुरगी, बलजा, वाजिनी, अवरोहिका, वराहकर्णी, हया, पुष्टिदा, बलदा, पुष्टिः, पीवरा, पलाशपर्णी, वातघ्नी, श्यामला, कामरूपिणी, काला, प्रियकरी, गन्धपत्री, हरप्रिया, वाराहपत्री, वाराहकर्णी, तुरंगगन्धा, तुरगा, वाजिना, वनजा, हयप्रिया, कम्बुकाष्ठा, अवरोहा, कुष्ठघातिनी, रसायनी और तिक्ता । गुण प्रकाशिका संज्ञाएँ—"पुष्टिदा", "बल्या", "वातघ्नी" "वाजीकरी" । हिन्दीकाकनज–द० । अश्वगंधा–बं० । काकनजेहिन्दी –अ०, फा० । बहमन बर्री–फा० । विथेनिया सोम्निफ़ेरा (Withania somnifera, *Dunal.*), फाइसेलिस फ्लक्सुओसा (Physalis fluxuosa.), फाइसेलिस सोम्निफ़ेरा (Physalis somnifera, *Dunal.*) -ले० । विण्टर चेरी(Winter cherry.) –इं० । मूरेंकप्पेन (Moorenkappen) –डच० । अङ्कुलाङ्क-कालंग, अश्वगण्डी–ता० । पेन्नेरु-गड्डु, अश्वगंधी, पिल्ली आंगा–ते० । पेवेट्टे, अमुकिरम्–मल० । अंगबेरु, सोगडे-बेरु, हिरे-वेरू, हिरे-मद्दिन(-वेरु)–कना० । आसकन्द, असन्ध, आसंध, आसोंद, अंगुर, आसन्धिका, अश्वगन्धा, तुला, कञ्चुकी, दोरगुञ्ज–मह० । आसवसन्ध, आसोंध (घ), आसन–गु० । फतरफोदा –गो० । ढोरगुञ्ज–दे० । असगन्ध–बम्ब० । बयमन–सिंध । अमुक्का–सिंहली ।

बृहती वर्ग

(*N. O. Solanaceæ.*)

उत्पत्ति-स्थान—भारत के शुष्क एवं अधोष्ण भाग यथा बम्बई, पश्चिम भारतवर्ष वा पश्चिमी घाट और कभी कभी बंग प्रदेशमें मिल जाता है । असगंध नागौर प्रदेश में बहुत होता है और वहाँ से सर्वत्र भेजा जाता है । इसी हेतु इसको नागौरी असगंध भी कहते हैं नागौरी असगंध सर्वोत्तम होता है ।

वानस्पतिक-वर्णन—असगन्ध के क्षुप २–२॥ हाथ उच्च एवं शाखाबहुल होते हैं । पत्र युग्म (जोड़े जोड़े), अण्डाकार, अखंड, २ से ४ इंच दीर्घ, ह्रस्ववृन्त, लोमश तथा चौड़े होते हैं । पुष्प क्षुद्र, ह्रस्ववृन्त, कक्षीय (पत्रवृन्तमूल से होकर प्रस्फुटित होते), शाखाग्रस्थित, दलबद्ध; दल (पुष्पाभ्यंतर कोष)घण्टाल्याकार, पीताभ हरिद्वर्ण, और अत्यंत लघु होते हैं । फल छोटे, लाल, मसृण, मटराकार, एक झिल्लीवत् कुण्ड (Calyx) से आवरित और शिखर पर खुले हुए होते हैं, बीज असंख्य अतिक्षुद्र, लगभग एक इंच का $\frac{1}{16}$वाँ भागदीर्घ, पीताभश्वेत, वृक्काकार, पार्श्वद्वय संकुचित; बीज वाह्यावरण (Testa) मधुमक्षिकागृहवत् होता है । समग्र क्षुप ह्रस्व, सशाख, सूक्ष्माग्र रोमों से आच्छादित होता है । मूल मूलकवत् शंक्वाकार, किंतु क्षीण–ऊपर से हलका धूसर परंतु तोड़ने पर भीतर श्वेत होता है । कच्ची जड़ से अश्व मूत्रवत् (तीक्ष्ण अग्राह्य) गंध आती है, इसी कारण इसको अश्वगंध प्रभृति नामों से अभिहित करते हैं । शुष्कावस्था में गंध नहीं होती एवं यह अत्यंत मृदु होती है । इसका स्वाद तिक्त होता है ।

व्यापार में आनेवाली शुष्क जड़ ४ से ८ इञ्च लम्बी और शिखर से किञ्चित् अधःस्थ स्थूलतम भाग चौथाई से आध इंच चौड़ा (व्यास)होता है । यह मसृण, चिक्कण, शंक्वाकार, बाहर से हलका पीताभधूसर वर्ण का और भीतर से श्वेत एवं भंगुर होता है । टुकड़े लघु और श्वेतसार पूर्ण होते हैं । मूल विरला ही सशाख होता है । शिखर से संश्लिष्ट कतिपय कोमल काण्ड के अवशेष वर्तमान होते हैं । अणुवीक्षण द्वारा परीक्षा करने पर जड़ में पाए जाने वाले पदार्थ प्रधानतः कोमल, अण्डाकार, कोषावृत श्वेतसार द्वारा निर्मित होते हैं । यह

लुआबी एवं किञ्चित् तिक्त स्वादयुक्त होता है। "मेटिरिया मेडिका ऑफ़ वेस्टर्न इंडिया" में यह मत प्रगट किया गया है कि व्यापारिक वस्तु उपर्युक्त पौधे की जड़ नहीं हो सकती।

रासायनिक संगठन—इसमें सोम्निफेरीन (Somniferin) वा अश्वगंधीन नामक एक क्षारीय सत्व (क्षारोद) पाया जाता है जो निद्राजनक है तथा राल, वसा और रञ्जक पदार्थ पाए जाते हैं।

प्रयोज्यांश—मूल, बीज तथा पत्र।

मात्रा—२ तो०।

औषध निर्माण—मूल चूर्ण, मात्रा-४ आना से ८ आना पर्यंत। क्षार, मात्रा-२ आना से ४ आना तथा अश्वगंधाघृत और अश्वगंधाऽरिष्ट आदि।

अश्वगन्धा के गुणधर्म तथा उपयोग

आयुर्वेदीय मतानुसार-अश्वगंधा तिक्त, कषेली, उष्ण वीर्य तथा वातकफनाशक है और विष, व्रण व कफ को नष्ट करती एवं कांति, वीर्य व बल प्रदान करती है। धन्वन्तरीय निघण्टु।

शुक्रवृद्धिकारक होने के कारण इसको शुक्रला कहते हैं तथा यह तिक्त, कटु, उष्णवीर्य एवं बलकारी है तथा कास, श्वास, व्रण और वात को नष्ट करने वाली है। (रा० नि० व० ४)

असगंध बलकारक, रसायन, तिक्त, कषेला, गरम और अत्यंत शुक्रल है एवं इसके द्वारा वात श्लेष्म, श्वित्र (सफेद कोढ़), सूजन, क्षय, आमवात, व्रण, खाँसी और श्वास का नाश होता है। (भा० पू० १ भा०। मद० व० १)

यह रसायन है और वात कफ, सूजन तथा श्वित्र (सफेद कोढ़) को नष्ट करता है। (भा० म० ख० १ भा०)

अश्वगंधा जरा (वृद्धता) व व्याधि नाशक और कषेली एवं किञ्चित् कटुक (चरपरी) है तथा धातुवर्द्धक व बल्य है। (वृहन्निघण्टु रत्नाकर)।

अश्वगंधा के पत्रका प्रलेप करनेसे ग्रंथि, गलगंड तथा अपची का नाश होता है। (शोढ़ल निघण्टु)

तत्शोधनं यथा प्रयोगाः—पञ्च पल्लव तोयेन गंधानः क्षालनं तथा। शोधणञ्चापि संस्कारो विशेषश्चात्र वक्ष्यते ॥

असगंध के वैद्यकीय व्यवहार

चरक—श्वास में अश्वगंधा मूल क्षार—श्वास रोगी को घृत तथा मधु के साथ अश्वगन्धा के अन्तर्धूमदग्ध क्षार का सेवन कराएँ। यथा—

"क्षारश्चाप्यश्वगन्धाया लेहयेत् क्षौद्र सर्पिषा।" (चि० २१ अ०)

सुश्रुत—शोथ में अश्वगन्धा—कुट्टित अश्वगन्धा २ तो० को गव्य दुग्ध आध पाव तथा जल डेढ़ पाव के साथ दुग्ध मात्र अवशेष रहने तक क्वाथ प्रस्तुत करें और इसे वस्त्रपूत कर शोथ रोगी को पिलाएँ; किम्वा क्षीर परिभाषानुसार प्रस्तुत असगन्ध के क्वाथ से मन्थन द्वारा निकाले हुए नवनीत और उससे बने हुए घृत का पान कराएँ। यथा—

"क्षीरं पिवेद्वाप्यथ वाजिगन्धा—। विपक्वमेवं लभते च पुष्टिम्। तदुत्थितं क्षीर घृतं सिताढ्यम्। प्रातः पिवेद्वाथ पयोऽनुपानम्।" (उ० ४१ अ०)

मात्रा—आधा तो० से १ तो० तक।

चक्रदत्त—वातव्याधि में अश्वगन्धा-(१) असगंधका क्वाथ तथा कल्क और इससे चतुर्गुणाघृत इन सबको गोदुग्ध के साथ यथा-विधि पाक कर सेवन करें। यह घृत वातघ्न, वृष्य एवं मांस वर्द्धक है। यथा—

'अश्वगन्धा कषाये च कल्के क्षीर चतुर्गुणम्। घृतं पक्वन्तु वातघ्नं वृष्यं मांस विवर्द्धनम् ॥,

(वातव्याधि० चि०)

(२) उदरोपद्रवभूत शोथ में अश्वगन्धा—उदर रोग में शोथ होने पर असगन्ध को गोमूत्र में पीसकर पान कराएँ। यथा—

"गोमूत्रपिष्टामथवाश्वगन्धाम्।"

(उदर० चि०)

(३) बन्ध्यात्व में अश्वगन्धा—क्षीर परि-

भाषानुसार प्रस्तुत असगन्ध के क्वाथ में किञ्चिद् गोमूत्र का प्रक्षेप देकर, ऋतुस्नान की हुइ बन्ध्या वाला (नारि) इसका पान करे। यह गर्भप्रद है। यथा—

"क्वाथेन हयगन्धायाः साधितं सघृतं पयः।
ऋतुस्नाता वाला पीत्वा धत्ते गर्भं न संशयः॥"
(योनिव्यापद्धि०)

(४) बालकके कार्श्य रोगमें अश्वगन्धा—कृश शिशु के शरीरकी पुष्टि हेतु दुग्ध, घृत, तिल तैल, किम्वा ईषदुष्ण दुग्धके साथ असगन्धकेचूर्ण का सेवन कराएँ। यथा—

"पीताऽश्वगन्धा पयसार्द्धमासम्।
घृतेन तैलेन सुखाम्बुना वा॥
कृशस्य पुष्टिं वपुषो विधत्ते।
बालस्य शस्यस्य यथाम्बुवृष्टिः॥"
(रसायनाधिकार)

मात्रा—अवस्थानुसार।

भावप्रकाश-हृदयगत वायु रोग में अश्वगन्धा—वायु के हृदयगत होने पर असगन्ध को उष्ण जल के साथ पीस कर सेवन कराएँ। यथा—"पवेदुष्णाम्भसा पिष्टामश्वगन्धाम्।"
(म० ख० २ भा०)

वंगसेन—निद्रानाश रोग में अश्वगन्धा—अश्वगन्धा चूर्ण को गोघृत तथा चीनी के साथ चाटने से नष्टनिद्रा वाले को नींद आजाती है। यह परीक्षा सिद्ध है। यथा—

"चूर्णं हयगन्धायाः सितया सहितञ्च सर्पिषा लीढम्। विदधाति नष्टनिद्रे निद्रामशुवेव सिद्धमिदम्॥" (जलदोषादि योगाधिकार)

वक्तव्य

जिन द्रव्यों के आर्द्र रूप में प्रयुक्त करने की विधि है "सदैवार्द्रा प्रयोक्तव्या" उनमें से असगन्धभी एक है। असगन्ध कच्चे अर्थात् गीले रूप में ही व्यवहृत होता है। चरक की वातव्याधि की चिकित्सा के अन्तर्गत अश्वगन्धा के क्वाथ में तैल पाककर व्यवहार करने का उपदेश है ("कल्पोऽयमश्वगन्धायाः"-चि० २८ अ०), पर सुश्रुतोक्त चिकित्सा के अन्तर्गत अश्वगन्धा का नामोल्लेख भी नहीं। सुश्रुतोक्त वातव्याधि चिकित्सा के अन्तर्गत अश्वगंधा का नामोल्लेख दृष्टिगोचर नहीं होता। चरक में अश्वगन्धा का बल्यवर्ग में पाठ आया है।

यूनानी मतानुसार—

प्रकृति—उष्ण व रूक्ष २ कक्षा में (पिच्छिल आर्द्रता के साथ)। हानिकर्त्ता—उष्ण प्रकृति को। दर्पघ्न-कतीरा आवश्यकतानुसार। प्रतिनिधि-समान भाग बहमन सफ़ेद (वा मधुर कूट तथा सूरिञ्जान)। मात्रा—४ से ६ मा०। प्रधान कर्म—कामशक्तिवर्द्धक तथा कटिशूल के लिए हितकारक है।

गुण, कर्म, प्रयोग—कास, श्वास तथा अवयवों के शोथ को लाभप्रद है। शरीर, काम, कटि और गर्भाशय को शक्ति प्रदान करता, श्लेष्म विकार को शमन करता और आमवात (गठिया) के लिए कटु सूरिञ्जान की प्रतिनिधि है। (निर्विषैल) म० मु०।

नोट—यूनानी ग्रंथों में असगंध के गुणधर्म प्रायः आयुर्वेदीय ग्रंथों की नकल मात्र हैं।

नव्यमत

असगंध बल्य, रसायन एवं अवसादक है। असगंध की जड़ का चूर्ण दुग्ध किम्वा घृत के साथ बालकको सेवन करानेसे वह पुष्ट होता है। अश्वगन्धा का रसायन रूपसे खण्डमोदकादि रूप में जराकृत दौर्बल्य तथा वातरोगों में व्यवहार करते हैं। वातज दौर्बल्य एवं प्रदर में एतद्देशीय रमणीगण अन्यान्य बहुपोषक द्रव्यों के साथ अश्वगन्धाका उपयोग करती हैं। अश्वगंधा के पत्र को एरण्ड तैलमें सिक्त कर स्फोटकादि के ऊपर स्थापित करने से वह अंग सुप्त हो जाता हैं अर्थात् तत्स्थानीय त्वक् स्पर्शज्ञान रहित हो जाता है। बधिरता में नारायण तैल (जिसका अश्वगन्धा एक उपादान है) का नस्य एवं पक्षाघात, धनुस्तम्भ, वात एवं कटिशूल में इसका अभ्यंग और आमरक्तातिसार (प्रवाहिका)विशेष एवं भगंदर में इसका अनुवासनवस्ति (Enema) रूप से प्रयोग करते हैं। शिशु कार्श्य,

जराजन्य दौर्बल्य,कुष्ठ, वात व्याधि एवं वातरोगों में यह १५ से ६० बूँदकी मात्रा में सेवनीय है। (मेटिरिया मेडिका ऑफ इण्डिया, आर० एन० खोरी २ खं० पृ० ४५२)

"मख्बे पज़ोरा" नामक पुस्तक के रचयिता लिखते हैं कि इसके बीज पुनीर बीजवत् दुग्ध के जमानेके काम आते हैं। मैंने भी प्रयोगकर इसकी परीक्षा की और वस्तुतः इसके बीज में किसी प्रकार उक्त शक्ति को विद्यमान पाया। (फा० इं० २ भा० पृ० ५६७)

रॉग्ज़बर्ग लिखते हैं कि तैलिंग चिकित्सक इसको विषघ्न मानते हैं।

ऐन्सलो लिखते हैं कि बाजार में मिलने वाली जड़ पांडु वर्ण की होती और उसका बाह्य स्वरूप जेन्शनकी तरह होता है;परंतु इसमें किंचित् अगाह्य स्वाद एवं गंध होती है। यद्यपि तैमूल चिकित्सक इसको अवरोधोद्‌घाटक और मूत्रल मानते हैं और इसका क्वाथ चाय की प्याली भर दिन में दो बार प्रयुक्त करते हैं। पत्र को किंचित् उष्ण एरंड तैल में सिक्त कर विस्फोटक पर स्थापित करते हैं।

बीज मूत्रल और निद्राजनक प्रभाव करते हैं। (इर्विन)

फल मूत्रल है। पत्र अत्यन्त तिक्त होते हैं और ज्वर में इसका फांट व्यवहार में आता है। पञ्जाब में यह कटिशूल निवारणार्थ प्रयुक्त होता है और कामोद्दीपक माना जाता है। सिंधमें गर्भपात हेतु इसका व्यवहार होता है। राजपूत लोग इसकी जड़ को आमवात तथा अजीर्ण में लाभदायक मानते हैं। (इं० मे० प्लां०)

देशी असगंध (आकसन बूटी)

अश्वगन्धा सं०, बं०, म०,को०। देशी असगंध, आकसन, अकरी,पुनीर–हिं०। काकनजे हिन्दी–अ०, फा०। विथेनिया (पुनीरिया) कोग्यूलेन्स Withania (Puneeria) Coagulans, *Dunal*.–ले०। वेजिटिबल रेनेट Vegetable rennet–इं०। नाट की असगंध, हिंदी काकनज-द०। अमुकुड़ा-विरै-ना०। पेन्नेरु-गड्डु-वित्तुलु-ने०। अमूकीरे-गड्डे–क०ना०। अमुकिरम्-मल०। काकनज-बम्ब०। पनीर-बन्द, पनीर-जा-फोटा-सिं०। अमुकुर-म०। खाम जड़िया, स्पिनबज्ज, शापिअङ्क, खूम-ए-जड़े, माख़जूर, पनीर, कुटिलना-पं०। स्पिनबज्ज–अफ़०।

देशी असगंध के बीज

पुनीर के बीज-हिं०। हिंदी काकनज के बीज, नाट की असगंध के बीज-द०। हब्बुल्-काकनजे-हिन्दी-अ०। तुख़्मे काकनजे हिंदी-फा०। विथेनिया (पुनीरिया) कोग्यूलेंस Withania (Puneeria) Coagulans, *dunal*- (Seeds of–)-ले०। अम्मुकुड़ा-विरै-ता०। पेन्नेरु-गड्डु-वित्तुलु-ते०। अश्वगंद-विची–सं०।

बृहती वर्ग

(*N. O. Solanaceae*)

उत्पत्ति-स्थान—भारतीय उद्यान, बन, पर्वत तथा खेतों की बाड़ों में यह बूटी सामान्य रूप से होती है। पंजाब, सिन्ध, सतलज की घाटी, अफ़ग़ानिस्तान और बिलूचिस्तान।

वानस्पतिक-वर्णन—एक लघु, दृढ़, धूसर, लगभग १ गज उच्च क्षुप है। पत्र श्लेष्मातक पत्रवत्; किन्तु उससे किञ्चित् लम्बोतरी शकल के; शाखा बहुल, प्रत्येक शाखा पर अधिकता के साथ फल लगे होते हैं। समग्र फल लगभग $\frac{3}{8}$ इं० व्यास में, आधार पर चिपटा, एक चर्मवत् कुण्ड द्वारा आवृत्त, जिसके शिखर पर एक पञ्च विभाग युक्त सूक्ष्म छिद्र होता है जिससे फल का एक सूक्ष्म अंश दृष्टिगोचर होता है। परिपक्व होने पर यह रक्तवर्ण का किन्तु शुष्कावस्था में पीताभ एवं छिलकावत् हो जाता है। उसके भीतर चिपटे वृक्काकार बीजों का एक समूह होता है जो चिपचिपे धूसर मज्जा से संश्लिष्ट होता और जिसकी गंध हृल्लासजनक फलीय होती है। बीज अधिकाधिक $\frac{1}{8}$ इंच लम्बे होते हैं। पत्र का स्वाद एवं गंध तिक्त होती है।

रासायनिक संगठन—विथेनीन (Withanin.) नामक एक प्रभावात्मक सत्व। यह एक प्रकार का अभिषव (Ferment) है जो उक्त पौधे के बीज द्वारा प्राप्त होता है और प्राणिज रेनेट (Animal rennet) से बहुत कुछ समानता रखता है एवं उसकी एक उत्तम प्रतिनिधि है।

क्वथित करने से यह नष्ट हो जाता है और मद्यसार से अधःक्षेपित होता है एवं इसका उसके जमाने वाले गुण पर कोई प्रभाव नहीं होता। बीजसे ग्लीसरीन वा साधारण लवण (सैंधव) के तीव्र घोल द्वारा इसका सत्व प्राप्त किया जाता है। इन दोनों विधियों द्वारा प्रस्तुत सत्व अल्प मात्रा में भी तीव्र जमाने का प्रभाव रखता है।

प्रयोगांश—फल, मूल एवं पत्र।

औषध-निर्माण—घृत व तैल आदि।

प्रभाव—वामक, रसायन, मूत्रल और यह दुग्ध को जमा देता है।

प्रयोग—सिंध तथा उत्तर पश्चिम भारत एवं अफ़ग़ानिस्तान में यह रेनेट के स्थान में दुग्ध जमाने के काम आता है। देशी लोग इसके फल को थोड़े दुग्ध के साथ रगड़ कर इसको दुग्ध में उसे जमाने के लिए मिला देते हैं। डॉक्टर स्टॉक्स (१८४९) के वर्णन से पूर्व ऐसा प्रतीत होता है कि इस ओर लोगों का कम ध्यान था।

(नवीन) फल वामक रूप में भी प्रयुक्त होता है और अल्प मात्रा (शुष्क) में यह पुरातन यकृद्रोगजन्य अजीर्ण (तथा आनाहशूल) की औषध है। यह मूत्रल एवं रसायन है। बम्बई में इसको प्रायः काकनज (Physalis alkekengi, *Willd.*) के साथ मिलाकर भ्रमकारक बना दिया जाता है। काकनज का आयात फ़ारस से होता है और अरबी में उसको काकनज वा हब्बुल् काकनज कहते हैं। इब्नसीना ने इसको काकमाची (मको) वत् रसायन लिखा है और त्वग्रोगों के लिए विशेष रूपसे लाभदायक लिखा है। उक्त दोनों पौधे रक्तशोधक रूप से प्रख्यात हैं। अधुना क्यु (Kew) में किए गए हूकर (Sir. J. D. Hooker) के परीक्षणानुसार यह निश्चय किया गया है कि १ आउंस पुनीर के फल (Withania coagulans) का १ क्वार्ट (४० आउंस) खौलते हुए जल में क्वाथ कर, इसमें से एक (Tablespoonful) उक्त क्वाथ १ गैलन उष्ण दुग्ध को लगभग आध घंटे में जमा देगा (फा० इं० २ भा०)। शुष्क फल में भी यह गुण है।

पक्व फल में अंगमर्दप्रशमन एवं अवसादक गुण होने का अनुमान किया जाता है। (इं० मे० प्लां०)।

अश्वगन्धा घृतम् ashva-gandhá-ghritam-सं० क्ली० असगंध के कषाय या कल्क में चौगुना दुग्ध मिला उसमें घृत मिला कर पकाएँ। जब घृत सिद्ध होजाए तब उतार एवं छान कर रक्खें।

गुण—इसके सेवन से वातरोग का नाश होता है और पुष्ट करते हुए मांस की वृद्धि करता है। वंग से० सं० वातरोग-चि०।

अश्वगन्धा तैलम् ashvagandhá-tailam-सं० क्ली० वात व्याधि में प्रयुक्त तैल विशेष। च० द०। प्रयोगाः।

अश्वगन्धादि नस्यम् ashva-gandhádinasyam-सं० क्ली० असगन्ध, सैंधव, वच, मधुसार, मरिच, पीपल, सोंठ और लहसुन को बकरे के मूत्र में पीस नस्य लेने से नेत्र स्वच्छ होते हैं।

अश्वगन्धाद्य घृतम् ashvagandhádyaghritam-सं० क्ली० (१) अश्वगन्ध के कल्क ४ भा० को दुग्ध १० भा० में पकाकर बालकों को पिलाने से यह उनके बलकी वृद्धि करता है। वं० सं० बालरो०-चि०।

(२) असगंध मूल १ प्रस्थ, दुग्ध २ आढ़क (५१२ तो०), घृत १ प्रस्थ इनको कोमल अग्निसे पकाएँ। पुनः सोंठ, मिर्च, पीपल, दालचीनी, इलायची, तेजपत्र, नागकेशर, वायविडंग,

जावित्री, खिरेटी, गंगेरन, गोखरू, विधारा, लोहभस्म, अभ्रकभस्म, वंगभस्म प्रत्येक ४-४ तो०, मिश्री ३२ तो०, शुद्ध शहद ३२ तो०। काष्ठ औषधियों का चूर्ण कर उक्त सिद्ध घृत में मिश्रित कर उत्तम पात्र में रक्खें।

गुण—इसको उचित मात्रा में सेवन करने से अर्दित वात, हनुस्तम्भ, मन्यास्तंभ कटिग्रह, शोष, सन्धिगत वात, अस्थिभङ्ग, गृध्रसी, अग्नि दोष, चर्म दोष, पादशोष, गर्भपरिस्राव, असमय गर्भपात, आमवात, पाण्डु, शुक्रदोष, नपुंसकता आदि रोग नष्ट होते हैं। वं। से० सं० वाजी-कर० अ०।

(३) शुभ दिन, शुभ देशज अश्वगंधमूल ४०० तो० ग्रहण कर १०२४ तो० जल में पकाएँ। जब चौथाई शेष रहे, वस्त्रसे छानकर पुनः छाग मांस ८०० तो०, गोघृत ६४ तो०, गोदुग्ध २५६ तो०, काकोली, ऋद्धि, मेदा, महामेदा, क्षीर काकोली, जीवक, कौंच बीज, अडूसा, कबीला, मुलहठी, मुनक्का, धमासा, पीपल, जीवन्ती, खिरेटी, पीपर, विदारीकंद, शतावरी इनका कल्क बना उक्त घृत में मंदाग्नि से पकाएँ। पुनः शहद मिश्री १६-१६ तो० मिश्रित कर उत्तम पात्र में रक्खें।

गुण इसके सेवन से क्षत, क्षय, दुर्बलता, बालोंका श्वेत होना, हृद्रोग, वस्तिगत रोग, विवर्णता, स्त्री, पुरुष एवं बालकों के रोग, नपुंसकता, खाँसी, श्वास, वातव्याधि, स्त्रियों का बन्ध्यापन आदि अनेक व्याधियाँ दूर होती हैं। वंग० से० सं० क्षय-चि०।

अश्वगन्धाद्य चूर्णम् ashvagandhádya-chúrnam-सं० क्ली० यह स्वरभंगका नाश करता है। योग इस प्रकार है, यथा—अश्वगंध, अजमोदा, पाठा, त्रिकटु, सौंफ, पलाशपापड़ा, सेंधानमक समान भाग, इनका आधा भाग वच, इन सबको चूर्णकर मधु और घृत में भली प्रकार मिलाकर रखें।

मात्रा—१० माषा (दुग्ध के साथ) सेवन करें।

नोट—ब्रह्मबीज (पलाश पापड़ा वा पलाश के बीज) को सब चूर्ण का आधा लेना चाहिए। रस० र०।

अश्वगन्धाद्य तैलम् ashvagandhádya-tailam-सं० क्ली० असगन्धमूल ४०० तो० को १०२४ तो० जल में पकाएँ, जब चौथाई शेष रहे तब कपड़ छान कर चौगुना गोदुग्ध मिला कर पकाएँ। पुनः कमल की डंडी, कमलकन्द, कमलतन्तु, कमलकेशर, (कमलपञ्चांग), चमेली पुष्प, नेत्रबाला, मुलेठी, अनन्तमूल, कमलकेशर, मेदा, पुनर्नवा, दाख, मजीठ, दोनों कटेरी, एलवालुक, त्रिफला, मोथा, चन्दन, इलायची, पद्मकाष्ठ प्रत्येक १-१ तो० लेकर कल्क प्रस्तुत करें। पुनः १२८ तो० तिल तैल मिलाकर विधिवत् पकाएँ।

गुण—इसके सेवन से रक्तपित्त, वातरक्त, प्रदर, कृशता, वीर्य विकार, योनि विकार, नासा शोष, नपुन्सकता, व्रण तथा शोथ दूर होते हैं। इसको मालिश (अभ्यंग) पान और अनुवासन वस्ति में भी देते हैं। वंग० से० वातव्याधि चि०।

अश्वगन्धा पाकः ashvagandhápákah-सं० पुं० ६ सेर गाय के दूध में ३२ तो० अश्वगंध के चूर्ण को पकाएँ। जब पकते पकते कड़छी से लिपटने लगे तो इसमें चातुर्जात, जायफल, केशर, वंशलोचन, मोचरस, जटामांसी, चन्दन, अगर, जावित्री, पीपल, पीपलामूल, लवंग, शीतलचीनी, चिरौंजी, अखरोट की गिरी, भिलावाँ की गिरी, सिंघाड़ा और गोखुरू प्रत्येक एक एक तो० को चूर्ण कर डालें। और रससिंदूर, अभ्रक भस्म, सीसा, वंग और लोहभस्म प्रत्येक ६ माशा डालें। फिर सबको सुखाकर (घी में सेककर) चासनी में डालें।

गुण-यह उचित मात्रा से सभी प्रमेहों, जीर्णज्वर, शोष, वातिक तथा पैत्तिक गुल्म को नष्ट करता है तथा वीर्य की वृद्धि और शरीर को पुष्ट करके जठराग्नि को प्रदीप्त करता है। रस० यो० सा०।

अश्वगन्धाभ्रकः ashvagandhábhrakah –सं० पुं० ८ सेर असगंध का क्वाथ बनाकर छानें। फिर उसमें १६ तो० घी, ३२ तो० अभ्रक और सबके बराबर हल्दीका चूर्ण मिलाएँ। और केवाँचके बीजोंका चूर्ण, त्रिफला, त्रिजात, नागरमोथा, पृथक् पृथक् चार चार तो० मिलाकर पकाएँ। पाक तैयार होने पर ठंडा कर उसमें ३२ तो० शहद मिलाएँ।

मात्रा—बलानुसार देने से राजयक्ष्मा, उरःक्षत, क्षय, वात रोग और कृशता को दूर करके स्त्रियों में अत्यन्त हर्ष को उत्पन्न करता है। रस० यो० सा०।

अश्वगन्धारिष्टः ashvagandhárishtah-सं० पुं० असगंध ½ तुला, मुषली ८० तो०, मजीठ, हड़, हल्दी, दारुहल्दी मुलहठी, रास्ना, विदारीकंद, अर्जुनकी छाल, नागरमोथा, निशोथ अनन्ता (दूब) श्यामलता प्रत्येक ८०-८० तो०, श्वेत चन्दन, रक्त चंदन, वच, चित्रक प्रत्येक ६४-६४ तो० इनको चूर्ण कर ८ द्रोण जल में पकाएँ। जब १ द्रोण क्वाथ शेष रहे तब शीतल हो जाने पर धवपुष्प १२८ तो०, उत्तम शहद १५ सेर, सोंठ, मिर्च, पीपल १६-१६ तो०, दालचीनी, इलायची, तेज पत्र ३२ तो०, फूल प्रियंगू ३२ तो०, नागकेशर १६ तो० चूर्ण कर उक्त क्वाथ में मिश्रित कर उत्तम पात्र में रख एक मास पर्यंत रखने से यह अरिष्ट सिद्ध होता है।

मात्रा—१ से २ तो०।

गुण—इसके विधिवत् सेवन करने से मूर्च्छा, अपस्मृति, शोष उन्माद, दुर्बलता, अर्श, मंदाग्नि और समस्त वात व्याधियों का नाश होता है। भैष० र० मूर्च्छा चि०।

अश्वगन्धावलेहः ashvagandhávalehah –सं० पुं० असगंध चूर्ण ४० तो०, सोंठ चूर्ण २० तो०, पीपल चूर्ण १० तो० और काली मिर्च ४ तो०, दालचीनी, छोटी इलायची, तेजपात और नागकेशर चूर्ण प्रत्येक ४ तो०, गाय का दूध २०० तो०, शहद ५० तो०, गाय का घी २५ तो०, राब १०० तो०, सबको पृथक् पृथक् लेकर मिट्टी की कड़ाही में डालकर मंद अग्नि से पकाएँ। जब पकते पकते आधा दूध शेष रहे तब ऊपर बनाए हुए चूर्णों को उसमें मिला दें। जब दूध और घी घोटते घोटते पृथक् न मालूम पड़ें तब उतार लें। फिर जीरा, पीपलामूल, तालीसपत्र, लवंग, तगर, जायफल, खस, सुगंधबाला, नलद (बारीक खस), बेलगिरी, कमल के फूल, धनियाँ, धौके फूल, वंशलोचन, आमला, खैरसार, घनसार (कपूर), पुनर्नवा, अजगंधा, चित्रक और शतावरी प्रत्येक आधा तो० और शुद्ध पारा २ तो० तथा रससिंदूर २ तो० लेकर बारीक चूर्ण करके मिलाएँ। फिर ठंडा होने पर शहद मिलाकर चिकने बर्तन में रक्खें।

मात्रा—२ तो०।

गुण—खाँसी, दमा, हिचकी, अजीर्ण वातरक्त, प्लीहा, वातरोग, आमवात, सूजन, बादी बवासीर, पांडु, कामला, संग्रहणी, गुल्म रोग, वात कफ के विकार तथा मंदाग्नि को दूर करता और बालकों, स्त्रियों तथा अल्पवीर्य वाले पुरुषों की काम वृद्धि करता है। रस० यो० सा०।

अश्वगन्धिका ashva-gandhiká-सं० स्त्री० अश्वगंधा, असगंध। (Withania Somnifera.) रा०।

अश्वगोष्ठम् ashvagoshtham—सं० क्ली० वाजिशाला, अस्तबल, तबेला, घुड़साल,। (A stable.)

अश्वघ्नः ashvaghnah–सं० पुं० श्वेत करवीर वृक्ष, सफेद कनेर का पेड़। श्वेतकरवी गाछ-बं०। Nerium odorum (The white var. of-) रा० नि० व० १०।

अश्वचक्र ashvachakra–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) घोड़े के चिह्नों से शुभाशुभ का विचार। (२) घोड़ों का समूह।

अश्वजीवनः ashvajívanah–सं० पुं० चणक। चना-हिं०। छोला-बं०। Gram or chick pea (Cicer ariatinum.) वै० निघ०।

अश्वतरः aṣhvatarah–सं० पुं० } [स्त्री
अश्वतर aṣhvatara– हिं० संज्ञा पुं० }
अश्वतरी] (१)अश्वखरज, खच्चर, घोड़ी और गधे से उत्पन्न जीव। खच्चोर घोड़ा-बं०। (A mule or donkey) सु० अ० ४६।

गुण—इसका मांस बल्य, बृंहण और कफ पित्त कारक है। मद० व० १२।

(२) एक प्रकार का सर्प। नाग राज।

अश्वतृणम् aṣhvatrinam–सं० क्ली० पाषाण मूली। घोड़ाघास–हिं०। उश्बुलख़ील–अ०। (Collinsonia.) देखो—पृ० ७८३

अश्वत्थः aṣhvatthah–सं० पु० }
अश्वत्थ aṣhvattha–हिं० संज्ञा पुं० }
(प० मु०। सु० सू० ३८ अ० न्यग्रोधादिव.) पीपल, पि(पी)पर–हिं०, मह०, गु०, पं०, बम्ब०। फाइकस रेलिजिओजा (Ficus religiosa, *Linn.*)–ले०। दी सेक्रेड ट्री (The sacred tree), दी पीपुल ट्री (The peepul tree)–इं०। फिगोर-ओ आर्ब्रे देस पैगोडेस Figu-ier ou-arbre des pagodes (Ou de Dreu ou Conseils)–फ्रां०। रेलिजि ओजर फीगेनबॉम(Religioser Fiegenbaum)–जर०।

संस्कृत पर्याय—केशवालयः, चैत्यद्रुः(त्रि०), बोधितरुः, कृष्णावासः (हे), चैत्यवृक्षः (र), नागबन्धुः, देवात्मा, महाद्रुमः (श), कपीतनः (मे), बोधिद्रुमः, चलदलः, पिप्पलः, कुञ्जराशनः (अ), अच्युतावासः, चलपत्रः, पवित्रकः, शुभदः, बोधिवृक्षः, याज्ञिकः, गजभक्षकः, श्रीमान्, क्षीरद्रुमः, विप्रः, मंगल्यः, श्यामलः, गुह्यपुष्पः, सेव्यः, सत्यः, शुचिद्रुमः, धनुर्वृक्षः, गज भक्ष्यः, गजाशनः, क्षीरद्रुमः, बोधिद्रुः,धर्म्मवृक्षः,श्रीवृक्षः। आशुद् गाछ, अशोथगाछ, अश्वत्थ, अस्वत-बं०। मुर्तअश-अ०। दरख़्त लरज़ाँ, पीपल-फ़ा०। सुही-उ०। अरस, अरश मरम्, अस्वर्थम्–ता०। राई (वि)चेट्टु, कुलुजुव्विचेट्टु, राई, रैग, रावि, कुञ्जरावि, रागी–तै०। रंगी, बसी, अरली, अरले नेसपथ, रागी, अस्वत्त, अरशेमर, अश्वत्थमर–क़ना०। पिंपल, पीपलो-मह०। पिम्पल–मह०, कों०। अरली–का०। पिम्पल, पिप्लो, पिपुर, पिपुल–बम्ब०। पीपल, भोर–पं०। पिपुल–गु०। हिसार, पीपर-कोल०। हिसाक स०ता०। जाऊ-उंडु०। बोरबुर–कछा०। पिप्ली–नैपा०। आ(अ)ली–गों०। पेपरी–कोकु०। पीपल का पेड़–मारवा०। अरशम्मरम् द्राविं०।

नोट—इसका एक छोटा भेद है जिसको पीपली कहते हैं। इसके पत्र छोटे होते हैं।

अश्वत्थ वा वटवर्ग

(*N. O. Urticaceae.*)

उत्पत्ति-स्थान—सम्पूर्ण भारतवर्ष और (बंग प्रदेश, मध्य प्रदेश) हिमालय पाद।

वानस्पतिक-वर्णन—अश्वत्थ एक उत्तम छाया वृक्ष है। पीपल के पक्व फल को पक्षीगण खाकर जब बीट करते हैं तब उसमें साबित बीज निकलते हैं। इनमें जननोपयोगी बीज किसी वृक्ष वा दीवार पर गिर कर मिट्टी का सहारा पाकर अंकुरित हो जाते हैं।। अस्तु, प्राचीन गृहों की दीवारों तथा वृक्षों पर भी पीपल के वृक्ष दृष्टि-गोचर होते हैं। चैत्र में अश्वत्थ वृक्ष पत्रशून्य होता है और प्रायः ग्रीष्म ऋतु में नवीन पत्रों से सुशोभित होता है। इसके वृक्ष अत्यन्त विशाल एवं बहुशाखी होते हैं। पत्र गोल अंडाकार सिरे की ओर लहरदार हृदाकार, पत्रवृन्त दीर्घ एवं क्षीण, पत्राग्रभाग क्रमशः सूक्ष्म होता हुआ वर्द्धित, पत्र का $\frac{1}{3}$ लम्बा होता है। फलकोष (कुण्ड) कक्षीय, युग्म, वृन्त रहित, संकुचित, मटराकार (वा उससे वृहत्), ग्रीष्म ऋतु में फल लगते और प्रावृट में परिपक्व होते हैं। पक्वावस्था में बैंगनी रंग के होते हैं। पीपल के काटने और तोड़ने से उसमें से एक प्रकार का लसदार श्वेत रस निर्गत होता है जिसे पीपल का दूध कहते कहते हैं। इसी कारण इसका एक नाम "क्षीर-द्रुम" है और इसकी क्षीरी वृक्षों में गणना

होती है। उक्त दूध में रबर या धूप होता है। इसके वृक्ष में लाख लगता है जो औषध कार्य में आता है। इसकी शाखों और पेड़ में से वट वृक्ष की तरह हवा में जड़ें फूटती हैं जिनको पीपल की दाढ़ी कहते हैं; परन्तु ये वट के वरोह इतने प्रशस्त नहीं होते और न इनसे वृक्ष ही तैयार होते हैं। उक्त दाढ़ी औषधकार्य में आती है। इसके कतिपय द्रारों से एक प्रकार की श्यामवर्ण की गोंद भी निकलती है।

नोट जनसाधारण का यह विश्वास है कि वट, पीपल, गूलर, पाकर तथा अंजीर प्रभृति वृक्षों में फूल आते ही नहीं; परन्तु उनका यह विचार सर्वथा मिथ्या है और इससे उनकी उद्भिद्विद्या विषयक अज्ञता सूचित होती है। पीपल के फल और फूल की शकल में कोई विशेष अन्तर न रहने के कारण ऐसा हो जाना सम्भव है। शास्त्रों में इसके अस्पष्ट रहने के कारण ही इसको गुह्यपुष्प कहा गया है। सर्वसाधारण जिसको पीपल का कच्चा फल कहते हैं वही इसका पुष्प है। इसका निश्चित ज्ञान वनस्पतिशास्त्र के अध्ययन द्वारा हो सकता है।

ज्ञात रहे कि प्रायः वृक्ष रात्रि के समय एक प्रकार का मनुष्य-स्वास्थ्य के लिए हानिकारक वायव्य पैदा करते हैं; परन्तु अर्वाचीन विज्ञान के अन्वेषणानुसार उसके विपरीत अश्वत्थ में यह बात नहीं पाई जाती। यही कारण है कि हिंदू लोग इसको चिरकाल से देवता तुल्य मानते आए हैं एवं उनके यहाँ इसकी बड़ी प्रतिष्ठा है। देखो—अंजीर।

रासायनिक संगठन—त्वक् में कषायीन (Tannin), कू(कौ)चुक (Caoutchouc) अर्थात् भारतीय रबर और मोम (Wax) आदि पाए जाते हैं।

प्रयोगांश—पत्र, पत्रमुकुल, त्वक्, फल, बीज, पीपल की दाढ़ी, दुग्ध, काष्ठ, मूल और निर्यास, तथा लाक्षा।

औषध-निर्माण—क्वाथ, मात्रा आध पाव। पञ्चवल्कल कषाय (च० द०), पञ्चवल्कलादि तैलम् प्रभृति।

प्रभाव—पत्रमुकुल-रेचक; त्वक्-संग्राही; फल-कोष्ठमृदुकर वा मृदुरेचक; बीज-शीतल, मृदुरेचक, शैत्यकारक और रसायन।

अश्वत्थ के गुण-धर्म तथा उपयोग

आयुर्वेदीय मतानुसार—पीपल का पका फल मधुर, कषैला, शीतल, कफपित्तनाशक एवं रक्तदोष व दाह का शमन करने वाला और तरुण योनिदोषहारक है। अन्यच्च अश्वत्थ वृक्ष के पक्व फल अत्यन्त हृद्य एवं शीतल हैं और पित्त, रक्त के रोग, विष व्याधि, दाह, वमन, शोष तथा अरुचि दोष (अरोचक का) नाश करने वाला है। अश्वत्थिका (पीपली) मधुर, कषैली है तथा रक्तपित्तहर, विष एवं दाह प्रशामक और गर्भवती के लिए हितकारी है। रा० नि० व० ११। दुर्जर और शीतल है। मद० व० ५।

दुर्जर, शीतल, भारी, कषैला, रूक्ष, वर्ण प्रकाशक, योनि शोधनकर्त्ता, पित्त, कफ, व्रण और रुधिर के विकार को दूर करता है। भा० पू० १ भा० वटादिव०।

अश्वत्थ के वैद्यकीय व्यवहार

चरक-(१) वातरक्त में अश्वत्थ त्वक्-पीपल की छाल के क्वाथ में मधु का प्रक्षेप देकर सेवन करने से दारुण रक्तपित्त प्रशमित होता है। यथा-

"बोधिद्रुम कषायन्तु पिबेत्तं मधुना सह।
वातरक्तं जयत्याशु त्रिदोषमपि दारुणम्॥"
(चि० २९ अ०)

(२) व्रणाच्छादनार्थ अश्वत्थ पत्र अश्वत्थके पत्र से व्रण प्रच्छादन करें। यथा—

"*पिप्पलस्य च। व्रण प्रच्छादने विद्वान्।"
(चि० १३ अ०)

(३) व्रण में अश्वत्थ त्वक्—अश्वत्थ त्वक् चूर्ण के क्षत पर अवचूर्णन करनेसे वह शीघ्र पूरित होता है अर्थात् भर जाता है। यथा—

"ककुभोदुम्बराश्वत्थ--। त्वक्समाश्वेव गृह्णन्ति त्वक् चूर्णैश्चूर्णिता व्रणाः॥"
(चि० १३ अ०)

सुश्रुत -(१) नीलमेह में अश्वत्थ त्वक्—

नीलमेहीको अश्वत्थ की छाल द्वारा प्रस्तुत क्वाथ पान कराएँ। यथा--

"नीलमेहिनमश्वत्थ कषायं वा पाययेत्" (चि० ११ अ०)

(२) वाजीकरणार्थ अश्वत्थ फलादि--अश्वत्थ फल, मूल त्वक् एवं शुंग (पत्रमुकुल) इनका क्वाथ प्रस्तुत कर मधु एवं शर्करा का प्रक्षेप देकर पिलाने से चटकवत् मैथुन शक्ति की वृद्धि होती है। यथा—

"अश्वत्थ फल मूलत्वक् च्छुङ्गासिद्धं पयोनरः। पीत्वा स शर्करा क्षौद्रं कुलिङ्गइव हृष्यति ॥" (चि० २६ अ०)

चक्रदत्त—(१)वमनमें अश्वत्थ त्वक्–अश्वत्थ वृक्ष की सूखी हुई छाल को जलाकर उक्त अंगार को जल में डाल रखें। इस जल के पीने से वमन की निवृत्ति होती है। यथा—"अश्वत्थ वल्कलं शुष्कं दग्ध्वा निर्व्वापितं जले। तत्तोयपानमात्रेण छर्दिंजयति दुस्तराम्।" (छर्दि चि०)

(२) अग्निदग्धव्रण में अश्वत्थ वल्कल-अश्वत्थ वृक्ष की सूखी छाल के बारीक चूर्ण के अग्नि से जल जाने के कारण उत्पन्न हुए व्रण पर छिड़कने से क्षत अच्छा हो जाता है। यथा—"अश्वत्थस्य विशुष्कवल्कल कृतं चूर्णं तथा गुण्डनात्।" (व्रण शोथ-चि०)

(३)कर्णशूल में अश्वत्थपत्र–अश्वत्थपत्र द्वारा प्रस्तुत चोंगाको तैलाक्तकर उसे तप्त अंगारोंसे पूर्ण कर कर्ण के ऊपर (कुछ दूरी पर) रक्खें। अँगारों द्वारातप्त होकर जो तैल चोंगे से चुए, उससे कर्णपूरण करने से तत्काल कर्णशूल की शांति होती है। यथा—

"अश्वत्थ पत्र खल्लस्वा विधाय बहुपत्रकम्।
तैलाक्तमंगार पूर्णं विदध्याच्छ्रवणोपरि।
यत्तैलं च्यवते तस्मात् खल्लादंगारतापितात्।
तत्प्राप्तं श्रवणस्रोतः सद्यो गृह्णाति वेदनाम्।
(कर्ण रोग-चि०)

(४) शिशु के मुख पाक में अश्वत्थ त्वक् एवं पत्र–बालक के मुख पकने पर अश्वत्थ की छाल तथा पत्र को मधु के साथ भली प्रकार पीस कर उस पर प्रलेप करें। यथा—

"अश्वत्थत्वग्दलं क्षौद्रैर्मुखपाके प्रलेपनम्।" (बालरोग-चि०)

वक्तव्य

अश्वत्थत्वक् "पञ्चवल्कल"के अवयवों में से एकहै। योनि रोगमें पञ्चवल्कल का क्वाथएवं विसर्प में उसके प्रलेप का बहुशः प्रयोग करने से ये लाभप्रद सिद्ध हुए। चरक में अश्वत्थ का "मूत्रसंग्रहणीय वर्ग" में पाठ आया है। इसके अतिरिक्त अश्वत्थ त्वक् का सोम रोग में प्रयोग किया जा सकता है। सन्निपातज्वर में अश्वत्थ-पत्र-स्वरस को विशेष औषधों के अनुपान रूप से व्यवहार किया जाता। सुश्रुत के न्यग्रोधादिगण में अश्वत्थ का पाठ आया है (सू० ३८ अ०)। चरक सिद्धिस्थान में अतिसार में प्रयुक्त यवागू पाकार्थ द्रव्यान्तर के साथ अश्वत्थ शुंग व्यवहृत हुआ है—"मसूराश्वत्थशुंगैश्च यवागूः स्याज्जले शृता।" अविकसित पत्रमुकुल को शुंग कहते हैं ("शुंग इत्यविकसित पत्र मुकुलम्"--चक्रसंग्रह टीकायां शिवदासः)।

यूनानी मतानुसार—प्रकृति–पत्र तथा त्वक् २ कक्षा में शीतल व रूक्ष किसी किसी के मत से उष्ण हैं।

हानिकर्त्ता—आमाशय तथा आन्त्र को।
दर्पघ्न—लवण तथा घी।
प्रतिनिधि--विलायक रूप से वट पत्र।
मात्रा--छाल, १ मिस्काल तक(४॥ मा०)।
प्रधान-कर्म--व्रण एवं शोथ लयकर्ता।
गुण, कर्म, प्रयोग--देखो--पञ्चाङ्गवर्णनांतर्गत।

अश्वत्थपत्र तथा पत्र–मुकुल

पीपल के पत्र और कोंपल विरेचन रूप से प्रयोग में आते हैं (एन्सली व वाइट)। स्वप्रयोगोंमें भी इनका उपयोग होता है (इं० मे० मे०)।

पीपल के कोमल पल्लव को दुग्ध में क्वथित

और स्वाद हेतु उसमें यथेष्ट शर्करा योजित करें। यह अत्यन्त पोषक एवं शीतल प्रातःकालीन पेया है। विपादिका में इसका स्वरस हितकर है इसके पत्र पर रेशम के कीट रक्खे जाते हैं। इसके पत्र का क्वाथ चमड़ा सिझाने के काम आता है।
(इं० मे० मे०)

इसके पत्र को गरम करके फोड़े पर बाँधने से यह शोथ लयकर्ता और व्रणपूरक है। स्वयं शुष्क होकर गिरे हुए पत्र को जलाकर गरमागरम पानी में डालकर उस पानी को पीने से वमन तथा हृल्लास में लाभ होता है। म० मु०। बु० मु०।

पतझड़के समय साधारणतः फागुन चैत में जब पुराने पत्र झड़ जाते हैं और पत्रमुकुल का आविर्भाव होता है, तब उन पत्र–कलिकाओं को क्वथित कर जल फेंक देते हैं, जिससे कषायपन और अग्राह्य अम्लता दूर हो जाती है। फिर किञ्चित् लवण छिड़क कर थोड़े समय धूप में उसका जलांश सुखा लेते हैं और सर्षप तैल में डालकर अचार बनाते हैं।

गुण—सुस्वादु होने के सिवा यह विशूचिका एवं महामारी को नष्ट करता, विकृत दोषों को साम्यावस्था पर लाता और क्षुधा की वृद्धि करता है। ज्वर जन्य अरुचि को दूर कर शीघ्र आहार का पाचन करता और मुख का स्वाद ठीक करता है।

अश्वत्थ की पुरानी पत्तियों को पानी में पीस कर क्षत पर प्रलेप करने से प्राचीन से प्राचीन क्षत दिनों में पूरित हो जाते हैं। पत्तियों को जलाकर पानी में डाल दें और जब वह तलस्थायी हो जाए तब वह स्वच्छ जल विशूचिका रोगी को पिलाना लाभप्रद है।

कुष्ठी को इसकी पत्तियों से क्वथित कोष्ण जल से दैनिक अवगाहन करना लाभप्रद है और छाल को पानी में डाल कर पानी पीना तृषा एवं हृल्लास को शमन करता है।

पीपल के पत्तों का क्वाथ बकरी के दूध के साथ अर्धोष्ण देने से पूयमेही को मनुष्य बनादेता है और वर्षों की व्यथा मिनटों में जाती है।

बकरी को माउजुल्न (फाड़े हुए दूध के पानी) के साथ इसके पत्ते खिलाकर दूध दूहें तो वह अधिकतर लाभदायक होजाता है। पत्र वायुनाशक हैं। इसकी पत्तियों को पानी में पीसकर ललाट पर प्रलेप करने से खूब नींद आती है। आमाशय शोथ में उक्त स्थल हर पत्तियों का प्रलेप वा क्वाथ का उपयोग अत्यंत लाभप्रद है।

पत्रभस्म को मधु के साथ मिलाकर चटाने से आर्द्र कास नष्ट होता है। पत्र का क्वाथवृक्क एवं वस्त्यश्मरीनाशक है। प्रकृति तीसरी कक्षा में रूक्ष एवं दूसरी में शीतल है।

छाया में शुष्क किए हुए पत्र १ तो०, बहुफली बूटी छाया में शुष्क की हुई १ तो०, कतीरा ६ मा०, सालबमिश्री ६ मा०, इनको कूट छान कर पीपल के दूध में गूँधकर जंगली बेर के बराबर बटिकाएँ प्रस्तुत करें। चना भिगोए हुए पानी के साथ १ से ३ गोली तक दैनिक २१ दिवस पर्यन्त सेवन करें।

गुण—यह कामावसाय, शुक्रप्रमेह एवं पूयमेह में असीम गुणकारी है।

इसके पत्र को तिल तैल से सिक्त कर गरम कर शोथ पर बाँधे तो यह उसे लयकर्ता है और यदि फोड़ा पकने योग्य हो तो उसे पकाकर विदीर्ण कर देता है। किसी किसी के मत से इसकी राख में पीत हरिताल एवं मल्ल की भस्म प्रस्तुत होती है। परन्तु यह परीक्षा में नहीं आया है।

पीपल के नवीन पत्र को गरम गरम पंजा से पिण्डली तक बाँधने से वन्ध्यत्व दूर होता है।

इसके पत्ता को गर्म करके सीधी ओर बाँधने से बद बैठ जाता है।

इसके और नीम के पत्तों को पीस कर लेप करने से अर्श मिटता है वा केवल पीपलके पत्ते को घोटकर बवासीर के मस्सों पररखने से लाभ होता है।

पीपल के पत्तों का पानी निकाल कर तिगुनी मिश्री में शर्बत तैयार करें। प्रति दिवस २ तो०

शर्बत अर्क गुलाब में पीने से हौलदिल में लाभ होता है।

पीपल के पत्तों को सुहागे में शुष्क करके, समग़ अरबी (बब्बूर निर्यास), सत मुलहठी और मिश्री इनको कूट छान इसका चने के बराबर गोलियाँ बनाएँ। इसको मुख में रखकर चूसने से खाँसी, गले की सूजन प्रभृति को लाभ होता है।

पीपल के ताजे पत्ते २ तो०, कालीमरिच ११ अदद, दोनों को पाव भर पानी में रगड़ और छान कर प्रातः सायंकाल पिलानेसे कुष्ठ रोग नष्ट होता है।

पीपल के पत्र एवं पत्र-स्वरस का येनकेन प्रकारेण व्यवहार अतिशय लाभप्रद है।

पीपल के पत्र का रस १ छ०, तिल तैल आध छटाँक इसको तैलावशेष रहने तक पकाएँ। फिर छान कर रखें। इसके लगाने से कंठमाला दूर होता है।

पीपल के कोमल पत्तों को जल से धोकर इसे घी में भूनकर और आवश्यकतानुसार काली मरिच और नमक का चूर्ण मिला सुबह शाम सेवन करने से बन्ध्यत्व दूर होता है। लगभग एक मास पर्यंत सेवन काफ़ी है। अपथ्य-६ मास पर्यंत पुरुष समागम और रजोधर्म काल में हलदी का सेवन।

पीपल के पीले पत्तों का, सत्व-निर्माण-विधि द्वारा सत्व प्रस्तुत कर २-२ रत्ती की मात्रा में इसको जल वा गोदुग्ध के साथ सेवन करने से कंठमाला को लाभ होता है। नोट—खरल करते समय चिकना करने के लिए इसमें किञ्चित् गोघृत मिला लेना चाहिये।

पीपल के पत्तों को खूब घोटकर वर्तिका बना रजोकाल में इसके योनि में रखने से आर्तव प्रवर्तन होता है।

अश्वत्थ पत्र का अर्क दो तो० की मात्रा में पीना हौलदिल के लिए लाभदायक है।

छाया में शुष्क किए हुए पीपल के पत्ते ६ मासा, पहाड़ी पोदीना ६ मा०, मस्तगी रूमी ६ मासा, इन तीनों ओषधियों को कूट छानकर चने के बराबर गोलियाँ बाँधकर रख छोड़ें। आवश्यकता होने पर १ गोली गर्म पानी या सौंफ के अर्क के साथ सेवन करने से यह मूत्रल है और वृक्क शूलके लिए हितकर है तथा कोष्ठबद्धता एवं बादी को बहुत कुछ लाभ प्रदान करता है।

पीपल के पत्तों को काली मरिच के साथ पीस कर मरिच प्रमाण वटिकाएँ प्रस्तुत कर सेवन करने से भी उपर्युक्त लाभ होता है।

पादशोथ में इसके पत्तों की लुपड़ी बाँधना हितकर है।

२॥ अदद पीपल के पत्तों को खूब घोटकर छोटी इलायची और बताशा डालकर पाव भर पानी में मिलाकर प्रातः सायं पान करने से मूत्र-दाह दूर होता है।

पीपल के नव पल्लव को लेकर बारीक बारीक चीरलें। फिर इनको उबाल लें। उबालने से जो पानी निकले उसमें शकर डालकर चाशनी बनाएँ और चाशनी में उबाली हुई कोंपलें डालकर मुरब्बा तैयार करलें। गुण—यह अत्यंत वल्य एवं वृंहण है।

पीपल के पत्तों का रस सन्निपात की औषधों का एक अनुपान है।

पीपल के पत्तों के क्वाथ में सिद्ध किया हुआ कड़ुआ तैल हर प्रकार के कर्णशूल के लिए लाभप्रद है। उत्कट ज्वर के उतरने के पश्चात् की रूक्षता जन्य वधिरतामें यह तैल और भी लाभदायक है।

छाया में शुष्क किए हुए पीपल के पत्तों को कूट छान कर गुड़ के साथ इसकी चने प्रमाण गोलियाँ बनाकर सेवन करने से निम्न रोगों में लाभ होता है, यथा—उदरीय कृमि, उदरशूल आमशूल, प्लीहा, शोथ, अजीर्ण और कोष्ठबद्धता इत्यादि। इन रोगों के होने पर १-१ गोली प्रातः सायं अर्क सौंफ़ के साथ सेवन करें।

इसके हरे पत्तों के गरमागरम क्वाथ द्वारा सेक करने और पत्तों को रोग स्थल पर बाँधने से खुनाक़ में लाभ होता है।

पीपल के पत्ते ५, नीबू के पत्ते ५ और निर्गुण्डी पत्र ७ इन तीनों में १॥ सेर पानी डालकर खूब क्वथित करें। थोड़ा जल शेष रहने पर इसको उतार कर मोटे कपड़े से छानलें और इससे (क्वाथ से) दूना तिल तैल मिलाकर तैलावशेष रहने तक पकाएँ।

गुण व प्रयोग—यह तैल कर्णशूल, कर्णक्षत एवं बधिरता के लिए हितकर है। कान से पूयस्राव होताहो तो प्रथम उसको निम्न क्वाथ से प्रक्षालित कर फिर इस तैल के ४-५ बूँद रूई के फाया पर डाल कर इसको कान में रखें। इससे लाभ होगा।

अश्वत्थ त्वक्

अश्वत्थ त्वक् संग्राही है और पूयमेह में इसका उपयोग होता है। इसमें पोषक गुण भी है (ऐन्सली तथा वाइट)। आर्द्र कण्डू में इसकी छाल के फांट का अन्तः प्रयोग होता है।

प्रादाहिक शोथों में इसके विचूर्णित त्वक् का कल्क आचोषक (Absorbent) रूप से व्यवहार में आता है। (इमर्सन)

इसकी छाल को जलाकर उसे गरम गरम जल में डाल दें। कहा जाता है कि यह पानी हठीले कास में लाभदायक है। (डॉ० थ्रॉण्टन)

इसकी शुष्क छाल का चूर्ण भगंदर में प्रयुक्त होता है। मैंने एक हकीम को इसका लाभपूर्ण उपयोग करते हुए पाया। प्रयोग-विधि निम्न है—एक धातु (वा किसी अन्य पदार्थ) की नली में किञ्चित् अश्वत्थ चूर्ण को रख कर भगन्दर के क्षत के भीतर फूँक द्वारा प्रविष्ट करदें। (वैट)

बालक के ओष्ठ, जिह्वा, तालु किम्वा मुख के भीतर दधि विन्दुवत् शुभ्र क्षत होने पर वा साधारण मुख क्षत में मधु के साथ अश्वत्थ चूर्ण का प्रलेप करें। श्वास रोग में अश्वत्थ चूर्ण मधु के साथ सेवनीय है। अश्वत्थ त्वक् साधित तैल श्वेतप्रदर तथा आमरक्तातीसार में अनुवासन वस्ति रूप से और इसका क्वाथ विकृत क्षत के धावनार्थ एवं लालास्राव में कवलार्थ व्यवहार में आता है।

(मेटिरिया मेडिका ऑफ इण्डिया—आर० एन० खोरी २ य खण्ड, ५५४ पृ०)

अश्वत्थ त्वक् का क्वाथ तथा फांट पिलाना पूयमेह, मूत्रकृच्छ्र एवं आर्द्र कण्डू में हितकारक है।

अश्वत्थ चूर्ण को अंकुरोत्पादन हेतु विकृत क्षतों पर छिड़कते हैं। छाल चमड़ा सिझाने के काम में आती है। (इं० मे० मे०)

इसकी छाल संग्राही है और विकृत क्षतों एवं कतिपय चर्म रोगों में इसका उपयोग होता है। (इं० ड० इं०)

अश्वत्थ की शुष्क छाल के चूर्ण को अलसी तैल के साथ प्रयुक्त करने से यह व्रणपूरक है।

इसकी छाल को पानी में डालकर उस पानी के पीने से हल्लास एवं तृषा तत्काल प्रशमित होती है। इसकी छाल (वा मूल त्वक्) का प्रलेप नाड़ीव्रण (नासूर) के लिए हितकर और शोथ लयकर्त्ता है।

इसकी छाल को पानी में पीस कर लिंगेन्द्रिय पर प्रलेप करें। सूख जाने पर उष्ण जल से धोकर स्त्री-संग में प्रवृत्त होने से यह आश्चर्यजनक वीर्य स्तम्भन करता है। और मनुष्य को बेवश बना देता है।

पीपल वृक्ष की छाल को जल में घिस कर यदि आरम्भ में ही फुंसियों पर प्रलेप करें तो यह उनको जला देता है और बढ़ने नहीं देता। किसी किसी समय वृद्धि की दशा में लगाने से फोड़े को अपनी जगह बिठा देता है।

नाड़ी-व्रण के क्षत के लिए इसकी छाल को घृतकुमारी के पीले रस में घिसकर वर्तिप्लुत कर नासूर में रखने और उसके चारों ओर प्रलेप करने से थोड़े ही दिवस में नासूर को अच्छा कर देता है।

पीपल वृक्ष की छाल को जौकुट करके एक घड़े में भरदें और मुख बन्द करके इसको एक गढ़े में रक्खें। इस गढ़े के भीतर एक और छोटा सा

गढ़ा खोदकर चीनी का प्याला रखदें और इसके ऊपर प्रागुक्त घड़ा रहे, जिसके पेंदे में छिद्र कर दिया गया हो। इसमें आग लगादें। जब शीतल हो जाए नीचे की कटोरी में एकत्रित हुए तैल को नागरबेल पान के साथ प्रति दिन आधे वाल भर खाने से थोड़े ही दिवस के भीतर नपुंसकता दूर होती है।

फोड़ों को पकाने के लिए इसकी छाल की पुल्टिस बाँधते हैं।

पित्त शोथ को मिटाने के लिए इसकी छाल का ठंडा लेप करना चाहिए।

इसकी छाल के कोयलों को पानी में बुझाएँ। इस पानी को पिलाने से हिक्का, वमन तथा तृषा आदि प्रशमित होते हैं।

पीपल की छाल का काढ़ा शहद मिलाकर पीने से वातरक्त की खराबी दूर होती है।

इसकी छाल के चूर्ण को व्रणचूर्णन करने से व्रणपूरण होता है।

मुख से अधिक लालास्राव होता हो जैसा शिशुओं को प्रायः होता है तो पीपलकी छाल के क्वाथ का गण्डूष लाभदायक होता है।

पीपल की ताजी छाल २ तो० को आध सेर पानी में क्वथित कर पाद शेष रहने पर छानकर शीतल होने पर प्रातः और इसी प्रकार शाम को पिलाएँ। गुण-कुष्ठघ्न है।

पीपल की ताजी छाल को छाया में सुखाकर बारीक पीसकर कपड़ छान करें और ६ मा० से १ तो० तक दिन में २-३ बार सेवन कराएँ। गुण—कुष्ठघ्न है।

पीपल के छिलके को पत्थर पर गोमूत्र या पानी में घिसकर दिन में दो-तीन बार कुष्ठ के व्रणों पर लगाना चाहिए।

पीपल की ताजी छाल २० सेर, छिलकेके छोटे छोटे टुकड़े करके रात को २ मन पानी में भिगोएँ और प्रातः अग्निपर पकाएँ जब पानी लगभग २० सेर शेष रह जाए तब उतार कर छान लें और दुबारा आगपर चढ़ाएँ। जब शहद के समान गाढ़ा हो जाए तब अग्नि से उतार रखें। यह अश्वत्थ सत्व (एक्सट्रैक्ट) है। मात्रा—४ रत्ती से माषा पर्यंत प्रातः सायंकाल ताजे पानी के साथ। गुण—कुष्ठहर।

छाया में सुखाए हुए अश्वत्थ के ताजे छिलके ५ सेर को ३० सेर पानी में रात को भिगोएँ। प्रातः काल इसमें से २० बोतल अर्क खींच कर इस अर्क में २ सेर पीपल की शुष्क छालको फिर भिगोएँ और दोबार १० बोतल अर्क तय्यार करें।

मात्रा—आध आध पात्र अर्क दिन में तीन चार बार। गुण—कुष्ठहर।

पीपल वृक्ष की कोमल छाल को छाया में सुखाकर बारीक पीस कपड़छान करें। मात्रा व सेवन-विधि—ज्वर आने से एक दिन पूर्व तथा बारी के दिन ६-६ माषे इस चूर्ण को प्रातः, मध्याह्न और सायंकाल गर्म पानी से खिलाएँ। गुण—ज्वर प्रतिषेधक है।

अश्वत्थ त्वक् द्वारा

भस्म-निर्माण-क्रम

इसकी छाल का चूर्ण राँगा और सीसा प्रभृति धातुओं की भस्म करने का उत्तम साधन है।

(१) पीपलके दरमियानी आर्द्र त्वक् २ सेरको लेकर उसका कल्क बनाएँ और बीच में ऽ- शुद्ध राँगा रख कर कपड़मिट्टी कर मन भर उपलों की आँच दें तो अत्युत्तम भस्म प्रस्तुत होगी।

मात्रा—१ से ४ रत्ती। अनुपान—मक्खन वा बकरी के दूध की लस्सी। गुण तथा प्रयोग—यह प्रमेह, स्वप्नदोष और सूज़ाक में अत्यन्त लाभप्रद है।

(२) २० तोले पीपल की छाल को २ सेर पानी में क्वथित करें। जब ऽ॥ सेर अर्थात् पाद-शेष जल रह जाए तब उतार कर छान लें। बाद को ५ तो० सीसा को आग पर मिट्टी के बरतन में डालकर पिघलाएँ और पीपल के क्वाथ में डाल दें। इसी प्रकार कम से कम ७ बार करें। तदनन्तर इस शुद्ध सीसे को किसी मिट्टी के मज़बूत और कोरे ठीकरे पर रख कर तीव्र अग्नि पर

रखें और पीपल की शुष्क छाल को बारीक पीस कर सीसे पर डालकर पीपल की सूखी लकड़ी से भली प्रकार हिलाते रहें और जले हुए पीपल के छिलके को हवा देकर उड़ा दिया करें। ऐसे अवसर पर बाँसकी नली का उपयोग करना उत्तम है। दो-तीन घंटे की लगातार आँच से सीसे की रक्त वर्ण की भस्म प्रस्तुत होगी। यदि कुछ चमक शेष रहे तो घंटे आध घंटे और इसी प्रकार आँच दें। मात्रा—१ रत्ती से २ रत्ती तक २ तो० मलाई या मक्खन में प्रातः सायंकाल दोनों समय खिलाने से यह नपुंसक को पुंसत्व शक्ति प्रदान करती है एवं प्रचीन से प्राचीन सुरहा और प्रमेह का मूलोच्छेदन कर देती है।

राँगा की भस्म भी इसी प्रकार प्रस्तुत हो जाती है और पूर्वोक्त सभी रोगों में लाभदायक होती है।

नोट—सीसे को काथ में डालते समय वह ज़ोर से उछलता है। अस्तु, यह कार्य अत्यंत सावधानी से करना चाहिए।

(३) पीपल की सूखी छाल के २० तो० जौकुट चूर्ण में से थोड़ा चूर्ण एक बड़े उपले में गढ़ा बनाकर बिछाएँ। फिर उस पर २ तो० वंग और २ तो० पारद को रेज़ा रेज़ा करके रख कर ऊपर उसके पुनः उक्त अश्वत्थ त्वक् चूर्णको और वंग को तह ब तह रख कर दूसरे उपले को ऊपर देकर हर दो उपलों की संधियों को कपड़ मिट्टी द्वारा बन्द कर एक गड्ढेमें रख ५ सेर उपलों की अग्नि दें। स्वांगशीतल होने पर इसको निकाल लें। उत्तम श्वेत भस्म प्रस्तुत होगी। मात्रा—१ रत्ती। अनुपान—मक्खन में रखकर प्रात: सायंकाल इसका उपयोग करें। गुण—कामावसाय, शीघ्रपतन, शुक्रमेह तथा पूयमेह के लिए लाभप्रद है। अर्शके लिए इसे हरड़के मुरब्बामें ४ रत्ती की मात्रा में प्रतिदिन सेवन करें। यह प्रत्येक प्रकार के अर्श के लिए अमोघ है। आन्त्रस्थ कद्दूदाने एवं केचुए के लिए एक मात्रा इस भस्म को प्रतिदिन दधि में मिलाकर खिलाने से दो-तीन दिन में यह सबको मृतप्राय कर उदर से विसर्जित कर देता है।

अश्वत्थ फल

पीपल का फल कोष्ठमृदुकर है (अस्तु इससे कोष्ठबद्धता दूर होती है) और यह पाचनशक्ति की सहायता करता है। (ऐन्सली। इं० मे० मे०)

बार्थलोमियो (Bartholomeo) के मतानुसार (पूर्वी भारत की यात्रा में) शुष्क फल के चूर्ण को पक्ष भर जलके साथ सेवन करनेसे श्वास रोग नष्ट होता है और इससे स्त्रियों का बन्ध्यत्व दूर होता है।

पशुओं के लिए यह अत्यंत पोषक चारा है। (इं० मे० मे०)

इसके फल के चूर्ण को मधु के साथ हर सुबह को खिलाने से शरीर बलिष्ट होता है।

पीपल के फलों को सुखाकर बारीक पीस कपड़छन कर, ६ मा० प्रातः सायं ताजे पानी के साथ कण्ठमाला के रोगी को खिलाने से लाभ होता है।

पीपल के फल को लेकर छाया में सुखा लें और चूर्ण बनाकर इसमें दूनी मिश्री मिलाकर रखें और प्रतिदिन १ तो० इस चूर्ण को दूध तथा पानी के साथ खाया करें।

प्रभाव तथा प्रयोग-स्वप्नदोष, वीर्यपात, शुक्रमेह निर्बलता और शिरःशूल प्रभृति के लिए लाभदायक है।

पीपल के पके फल को सुखाकर सत्तू बना लें। ४ तो० इस सत्तू को गुड़ के शर्बत के साथ सुबह को खाने से पुरुषों का प्रमेह, स्त्रियों का सोम रोग और स्वप्नदोष १०-१२ दिन के सेवन से दूर हो जाते हैं।

पीपल के परिपक्व फल के गूदे को छाया में सुखाकर फिर कूट कर चक्की में पीस कर आटा प्रस्तुत करें। इस आटे का हलुआ बनाकर खाने से शरीर बलवान हो जाता है। स्त्रियों के गर्भाशय संबंधी रोग एवं कटिशूल में यह अत्यंत हितकर है। मुँह में छाले पड़ने बंद हो जाते हैं। यदि हलुआ न बनाना हो तो एक तोला आटे में १ तो० शकर मिलाकर फाँकने और ऊपर से दुग्ध पान करने से भी बहुत लाभ होता है। शहद के साथ चाटने से भी यह लाभप्रद है। यह

एक ऐसी निरापद वस्तु है जिसको छोटे बच्चों और गर्भवती स्त्री को भी अन्दाज़ से खिला सकते हैं।

अश्वत्थ बीज

बीज को शीतल तथा रसायन बतलाते हैं। (ऐन्सली)

पीपल के बीजों को मधु के साथ चटाने से रुधिर शुद्ध होता है।

इसके बीजों को पीस कर पीने से अन्तर्दाह मिटती है।

पीपल की दाढ़ी (रीश)

पीपल की दाढ़ी ४ मा०, गर्जर बीज ६ मा०, और लवंग ३ मा०, इनको ऽ॥ आध सेर पानी में क्वथित करें। तीन छटाँक पानी शेष रहने पर मल छान कर मिश्री २ तो० मिलाकर पिएँ। आर्तव प्रवर्तनार्थ ३-४ बार पान करें और निम्न पोटली योनि में रक्खें:—

चोक की लकड़ी १ तो०, बाकुची १ तो०, यवक्षार १ तो०, वत्सनाभ १ तो०, जंगली तोरई १ तो०, कटुकी ६ मा०, कालादाना १ तो० इनको बारीक पीस वर्त्ति बना योनि में रखने से मासिक धर्म बिना कष्ट के जारी हो जाएगा। यह आर्त्तव प्रवर्त्तक है।

पीपल की दाढ़ी २० तो० को कूटकर वस्त्रपूत करें और इसमें समान भाग मिश्री योजित कर लें। मासिक-धर्म आरम्भ होने के दिवस से प्रति दिन २-२ तो० स्त्री-पुरुष दोनों गोदुग्ध के साथ सेवन करें और मैथुन से बचे रहें। इसके ११ वें दिन स्त्री-संग करने से स्त्री गुर्विणी होगी।

पीपल की दाढ़ी को जौकुट करके चिलम पर रख कर तम्बाकू की तरह पिलाने से वृक्कशूल नष्ट होता है।

जिस स्त्री को गर्भधारण न होता हो उसको ऋतु-स्नान के पश्चात् २॥ तो० पीपल की दाढ़ी का क्वाथ कर उसमें आवश्यकतानुसार खाँड मिलाकर पिलाने से गर्भधारण होता है।

पीपल की दाढ़ी ४ तो०, बुरादा हाथी दाँत २ तो० इनका बारीक चूर्ण कर रखें। ऋतुस्नान के बाद इसमें से ६ मा० चूर्ण हर रात को दूध के साथ खाने से पक्ष के भीतर ही स्त्री अवश्य ही गर्भवती होती है।

पीपल की दाढ़ी २॥ तो०, तुलसी के फूल ६ मा० इनको बारीक करके ६-६ मा० की पुड़ियाँ बनाएँ। आठ तोले गरम पानी में सवा तोले रोग़न बादाम मिलाकर पहिले पुड़िया खिलाएँ फिर ऊपर से पानी पिलादें। इससे तत्क्षण वृक्क-शूल नष्ट होगा।

पीपल की दाढ़ी को बारीक पीसकर ऋतु स्नानान्तर इसे प्रति दिन १ तो० की मात्रा में गरम दूध के साथ स्त्री को खिलाएँ। प्रति मास केवल सप्ताह पर्यन्त इसके उपयोग से ३ से ६ मास के भीतर वन्ध्यत्व दूर हो जाता है।

नोट—पीपल के सेवन के दिनों में स्त्री को काफी घी दूध खिलाना चाहिए। अन्यथा परिणाम स्वरूप वह तपेदिक से आक्रान्त होकर काल कवलित हो जाएगी।

पीपल का दूध तथा निर्यास

इसके गोंद से विशेष विधि द्वारा चूड़ियाँ बनाई जाती हैं जिसे शूद्रा स्त्रियाँ पहिनती हैं। इसलामी शरीअत में इसकी रचना इसको अपवित्र कर देती है जिससे मुसलमान स्त्रियों को पहिनना नाजायज़ है। परन्तु हिन्दू शास्त्रों में अश्वत्थ की बड़ी महिमा है और यह वैज्ञानिक नियमों पर आधारित है, जिसका स्थल स्थल पर निर्देश किया गया है।

वस्त्र के सफ़ेद टुकड़े को सर्व प्रथम मधु में भली प्रकार भिगोएँ। तदनन्तर इसको दुग्ध में क्लेदित कर शुष्क करलें और जलाकर राख सुरक्षित रखें। श्वित्र को प्रथम उष्ण जल से धोकर राख को सिरका में सिक्त कर गरम कर उस स्थल पर लगाएँ। यह वर्ण को शरीर के वर्ण की तरह कर देता है।

यदि दुग्ध को दद्रु पर लगाएँ तो त्वचा को संकुचित कर खुड्डी उत्पन्न कर देता है। उक्त खुड्डी के पृथक् हो जाने पर त्वचा स्वच्छ हो जाती है और दद्रु के कोई चिह्न शेष नहीं रह जाते।

पीपल वृक्ष के ५ तो० दूध में कुटी एवं छानी हुई इमली की छिली हुई गिरी १० तो० मिलाकर सुखाएँ। चने का आटा २० तो०, गोघृत १ पाव, खाँड आध सेर इनका यथा विधि हलुआ बनाकर उतारने के पश्चात् दुग्ध द्वारा विशोधित इमली का चूर्ण, छोटी इलायची के दाने, केशर १० माशा बारीक करके मिला दें।

गुणधर्म—कामोद्दीपक, वर्ण एवं मुखमंडल को कांति प्रदान करता एवं सुन्दर बनाता है।

मात्रा—२ तो० से ३ तो० तक।

यह पुरुषों के प्रमेह और स्त्रियों के सोमरोग की अपूर्व औषध है। प्रतिदिन प्रातःकाल ६ से १२ बूंद तक पीपल का दूध एक छोटे बताशे में डालकर मुँह में रक्खें और ऊपर से गाय का या भैंसका आधसेर धारोष्ण दुग्ध पी लिया करें। स्वप्नदोष के लिए यह अत्यन्त लाभदायक है। दस बारह दिन के सेवन से रोग निर्मूल हो जाता है।

पीपल का दूध लगाने से विपादिका (बिवाई) भर जाती है।

जिस स्त्री के बच्चा पैदा न होता हो और जो व्यथासे बेताब हो रही हो उसको तोला भर भैंस के गोबर को आध सेर पानी में पकाएँ, जब चन्द जोश आ जाएं तब छानकर ४ तो० मधु और ११ बूंद पीपल का दूध मिलाकर पिलाएँ। प्रसव होगा।

सफ़ेद संखिया को ४ सप्ताह पीपल के दूध में खरलकर मूँग के दाने के बराबर वटिकाएँ प्रस्तुत करें। प्रतिदिन एक गोली प्रातः और एक रात को सोते समय दूध के साथ खिलाएँ। दूध गाय या भैंस का ऽ।= हो और इसमें देशी खाँड़ मिला लिया करें। २१ दिन के सेवन से हर प्रकार का रोग दूर होता है।

अपथ्य—मादक द्रव्य तथा खटाई।

शुष्क पोदीने का चूर्ण या धतूर की शुष्ककली का चूर्ण १० मा० तक लें और इसमें पीपल का दूध १२–१६ बूँद सम्मिलित कर तमाकू की तरह चिलम में पिलाएँ तो श्वासरोगीको तत्काल लाभ होगा।

जिस स्त्री के बच्चे बालापस्मार से मर जाते हों वह यदि बच्चा पैदा होने के दिन से लेकर दो मास पर्यन्त प्रतिदिन पीपल का दूध १ बूँद गाय या बकरी के दूध में मिलाकर पी लिया करे तो उसके बालक स्वस्थ रहेंगे। दूध में आवश्यकतानुसार मिश्री मिला लेनी चाहिए।

उन्माद या अपस्मार के कारण अथवा हौलदिल या किसी विष वा मादक द्रव्य वा किसी भी प्रकार से हुई मूर्च्छा में पीपल के दूध के कुछ बूँद रोगी के कान में टपकाने तथा दूध को समान भाग शहद में मिलाकर मस्तक पर प्रलेप करने से रोगी होश में आ जाता है।

अश्वत्थ मूल

पीपल की जड़ का मंजन दंतशूल में उपयोगी है। इसकी जड़ की छाल के क्वाथ से विसर्प रोग मिटता है।

पीपल के छोटे वृक्ष जो पेड़ वा दीवारों पर अंकुरित हो जाते हैं उनकी बारीक जड़ वा जड़ के एक मृदु बारीक अगले भाग को पीसकर फोड़ों पर प्रलेप करने से वे शीघ्र विदीर्ण हो जाते हैं।

अश्वत्थ मूल त्वक् को छाया में शुष्क करके बारीक पीसकर कपड़छान करें और पीपल की जड़ के रस में चालीस दिन खरल करके शुष्क होने पर ३–६ माशा प्रातः सायं गौ के कोष्ण दुग्ध के साथ सेवन कराएँ।

गुण—पुरुष के वीर्य-दोष एवं निर्बलता में लाभप्रद है।

इसकी जड़ की छाल शुक्रसांद्रकर्त्ता, तथा कामोद्दीपक एवं कटिशूलहर है। बु० मु०। यह वीर्य स्तम्भक है। भ० मु०।

पीपल की लकड़ी

पीपल की लकड़ी का कटोरा बनाकर उसमें दूध डालकर स्त्रीको प्रति दिन प्रातः काल पिलाने से बन्ध्यत्व दूर होकर गर्भस्थापन होता है।

जिस घर में साँप हों वहाँ पीपल की लकड़ी जलाकर धुँआ करने से साँप निकलकर भागता है।

जिस दिन ज्वर आने को हो उस दिन

ज्वर आने से पहिले पीपल की दातौन करना ज्वर को और दाँतों से खून आने को रोकता है।

पीपल की लकड़ी का प्याला बनाकर उस प्याले में रात्रिको पानी भर रक्खें और सवेरे उस पानी को पिएँ। इससे मस्तिष्क शीतल रहता है, वीर्य गाढ़ा होता है और त्वचा के रोग दूर हो जाते हैं। उक्त प्याले में पानी रखने से उसके स्वाद में अन्तर आजाता है। पानी में पीपल की लकड़ी का असर एवं स्वाद स्पष्ट मालूम पड़ता है। इसमें कुछ समय पर्यन्त दूध रख कर पीने से बहुत लाभ होता है।

बहुतसे सर्प-चिकित्सक इसकी कनिष्ठा अंगुली के इतनी मोटी लकड़ीके एक सिरेको गोल बनाकर एवं घिसकर चिकनाकर ऐसी दो लकड़ियोंको सर्प दष्ट रोगी के दोनों कानों में १-१ लकड़ी प्रविष्ट कर उससे तरह तरह की बातें पूछ कर विष दूर करने का ढोंग करते हैं। परमात्मा जाने इसका क्या प्रभाव होता है! (लेखक)

पीपल की सूखी लकड़ी और पत्र को जलाकर क्षार-निर्माण-विधि द्वारा इसका क्षार प्रस्तुत करें।

प्रयोग—आध पाव पानी में १ मा० इस क्षार को मिलाकर इससे दिन में दोबार कोढ़ के जख्मों को धोने से वे बहुत शीघ्र अच्छे हो जाते हैं। इसके निरन्तर प्रयोग से प्राचीन से प्राचीन कोढ़ एवं फुलवरी (श्वित्र) आदि रोग दूर हो जाते हैं। इससे उपदंश में भी लाभ होता है।

अश्वत्थकम् ashvatthakam-सं० क्ली० मल्लिका पुष्पदल। मल्लिका फुलेर पापड़ी-बं०। (See-Mallika-pushpa.) वै० निघ०।

अश्वत्थ पत्र योग ashvattha-patra-yoga-सं० पुं० पीपल के पत्तों के अग्रभाग का रस १ भाग, बोल ६ भाग, शहद १२ भाग मिला कर पीने से रक्तस्राव और हृदयस्थ संचित रक्त-विकार दूर होता है। वृ० नि० र० भा० ५ र० पित्त०।

अश्वत्थफलका,-ला ashvattha-phalaká,-lá-सं० स्त्री० हवुषा। झाउबेर-हिं०। हवुष वृक्ष-बं०। लघु शेरणी-मह०। (Juniperi fructus.) भा० पू० १ भा०।

अश्वत्थभित्,-भेदः ashvattha-bhit,-bhedah-सं० पुं० नन्दी वृक्ष। बालिया पीपर, तून-हिं०। भा० पू० १ भा० वटादिव०। (Cedrela toona.)

अश्वत्थमर ashvatthamar-कना० अश्वत्थ। पीपल का पेड़। (Ficus religiosa.)

अश्वत्थ वल्कलादि योगः ashvattha-valkaládi-yogah-सं० पुं० पीपल की सूखी छाल जला कर उससे पानी बुझा कर पीने से प्रबल वमन का नाश होता है। वृ० नि० र० छर्दि०।

अश्वत्थ वल्कलादि लौह ashvattha-valkaládi-louh-सं० पुं० पीपल वृक्ष की छाल, सोंठ, मिर्च, पीपल और मण्डूर इनके चूर्ण को गुड़ के साथ सेवन करने से क्षय रोग का नाश होता है। वृ० नि० र० क्षय चि०।

अश्वत्थ सन्निभा ashvattha-sannibhá-सं० स्त्री० देखो—अश्वत्थिका।

अश्वत्था,-त्थी ashvatthá,-tthí-सं० स्त्री० (१) क्षुद्र अश्वत्थ वृक्ष। गय अश्वत्थ-बं०। रा० नि० व० ११। (२) श्रीवल्ली वृक्ष। (See -shrívallí) रा० नि० व० ८। (३) सीका-काई। शीतला।

अश्वत्थादि प्रक्षालनम् ashvatthádi-prakshálanm-सं० क्ली० पीपल, पिलखन, गूलर, बड़ और बेंत के क्वाथ से धोने से घाव, सूजन और उपदंश का नाश होता है।

अश्वत्थिका,-त्थी ashvatthiká,-tthí-सं० स्त्री० क्षुद्रपत्र अश्वत्थ वृक्ष। गया अश्वत्थ-बं०। पिप्ली-हिं०। अश्वत्थी-मह०। हेनरलि-का०।

संस्कृत पर्य्याय—लघुपत्री, पवित्रा, ह्रस्व पत्रिका, पिप्पलीका और वनस्था।

गुण—मधुर, कसेली, रक्तपित्तनाशक, विषघ्न दाहनाशक तथा गर्भिणी स्त्रियों के लिए हितकारी है। रा० नि० व० ११।

अश्वतृणम् ashvatrinam-सं. क्ली. पाषाण मूली, घोड़ा घास-हिं०। कॉलिनसोनिया (Collinsonia.), कॉ० कैनेडेन्सिस (C. Canadensis)-ले०। स्टोन रूट (Stone root)

हॉर्सवीड (Horse-weed नॉबरूट (Knobroot)–इं० ।

उश्बुल् ख़ैल, ख़श्बुल् ख़ैल, हज्रुल् जज़्र–अ०। संगबीख़, ग्याहे अस्प–फ़ा०। पत्थरजड़ी-उ०।

तुलसी वर्ग
(*N. O. Labiateæ*)

नॉट ऑफ़िशल (*Not official*)

उत्पत्ति-स्थान—उत्तरी अमरीका।

वानस्पतिक-विवरण—इस वनस्पति का काण्ड सीधा लगभग ४ इञ्च के लम्बा होता है जिसपर छोटी छोटी ग्रंथिमय विषम शाखाएँ होती हैं। कांड पर बहुत से उथले चिह्न होते है। यह अत्यन्त कठिन होता है। इसका वहिः वर्ण धूसर श्वेत तथा अन्तः श्वेत या स.फेदी मायल होता है। त्वचा बहुत पतली, जड़ें असंख्य होती जो सरलतापूर्वक टूट जाती हैं।

गंध-लगभग कुछ नहीं, स्वाद–कटु तथा मूर्च्छाजनक।

रासायनिक संगठन—इसमें राल (Resin), कषायिन (Tannin), श्वेतसार, लुआब और मोम होते हैं।

कार्य—अवसादक, आक्षेपशामक, संकोचक और बल्य ।

मात्रा–१५ से ६० ग्रेन (७॥ से ३० रत्ती अर्थात् १ से ४ ग्राम)।

औषध-निर्माण—टिंकचूरा कोलिनसोनी Tinctura collinsonœ) ले०। अश्वतृणासव-हिं०। तक्फ़ीन अश्बुल् ख़ैल–अ०। निर्माण-विधि-कोलिनसोनिया की जड़ कुचली हुई एक भाग, मद्यसार (६०$^0/_0$) १० भाग मेसीरेशन की विधि से टिंकचर बना लें।

मात्रा–३० से १२० बूँद (मिनिम)। इसका एक फ्ल्युइड ऐक्सट्रैक्ट (तरल सत्व) भी होता है जिसकी मात्रा १५ से ६० मिनिम (बूँद) है।

प्रभाव तथा उपयोग—इसको उग्र बस्तिप्रदाह (Acute cystitis), वृक्काश्मरी (Renal calculi), जलोदर (Dropsy), श्वेत प्रदर, आमवात, अजीर्ण, श्वास और किसी किसी हृद्रोग में बर्तते हैं।

यद्यपि सिवा इसके कि सूक्ष्म मात्रा में यह स्थानिक संकोचक तथा अधिक मात्रा में मृदु पित्तनिस्सारक विरेचन है, इसके इन्द्रिय व्यापारिक क्रिया के विषय में क्रियात्मक रूप से कुछ भी ज्ञात नहीं; तथापि अमरीका में इसका अनेक रोगों मे उपयोग करते हैं।

इसीलिये पूयमेह, अश्मरी तथा वस्तिप्रदाह में मूत्र विषयक श्लैष्मिक कलाओं के लिए यह अवसादक है और अर्श वा गुदाक्षेप में मूल्यवान सिद्ध हो चुका है। आक्षेपहर रूप से कुक्कुर कास, (Chorea) तथा हृदय की धड़कन में इसका उपयोग किया जाता है।

अश्वदंष्ट्रकः ashvadanshtrakah–सं० पुं० (१) गोक्षुर। गोखरू–हिं०। (Tribulus terrestris, *Linn.*) वँ० निघ०। (२) हिंस्र जन्तु विशेष। सु०।

अश्वदंष्ट्रा ashva-danshtrá–सं० स्त्री० गोक्षुर, गोखरू। (Tribulus terrestris, *Linn.*) भा० पू० १ भा०।

अश्वनाला ashvanálá–सं० स्त्री० ब्रह्मसर्प नामक सर्प विशेष। त्रि०। (A serpent named Brahma.)

अश्वनाशः,–कः,–नः ashvanáshah,-kah,-nah–सं० पुं० श्वेत करवीर। सफ़ेद कनेर –हिं०। (Nerium odorum (The white var. of-) रा० नि० व० १०।

अश्वपर्णिका,–र्णी ashvaparniká,-rní–सं० पुं० भूतकेशीलता। भूतकेश–हिं०। श्वेत दूर्वा–बं०। (Corydalis govoniana.)

अश्वपालः ashvapálah–सं० पुं०
अश्वपाल ashvapála–हिं० संज्ञा पुं०
अश्व रक्षक, अश्वसेवक, साईस। (A groom.)

अश्वपुच्छ aṣhvapuchchha-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (Canada equina.)

अश्वपुच्छकः aṣhva-puchchhakah-सं० पुं० खंगलता । तरबांलेर खाप-बं० । श०च०।

अश्वपुच्छा aṣhva-puchchhá-सं० स्त्री० (१) पृश्निपर्णी, पिठवन-हिं० । चाकुलिया -बं० । (Uraria lagopoides, *D. C.*) । (२) माषपर्णी । मासवर्णा-हिं० । (Teramnus labialis.) रा० नि० व० ४ ।

अश्वपुच्छिका,-च्छी aṣhva-puchchhiká,-chchhí-सं० स्त्री० माषपर्णी लता । माषानी -बं० । (Teramnus labialis) रा० नि० व० ४ ।

अश्वपुट भावना aṣhvapuṭa-bhávaná -सं० स्त्री० ३२ पल परिमाण द्रव्यकी भावना । वै० निघ० ।

अश्वपुत्री aṣhvaputrí-सं० स्त्री० सल्लकी वृक्ष, सलई-हिं० । (Boswellia serrata, *Roxb.*) रत्ना० । (२) द्रवन्ती । (Anthericum tuberosum.) वै० निघ० ।

अश्वपुष्पः aṣhvapushpah-सं० पुं० पत्थर का फूल, छड़ीला । Stone flower (Parmelia Perlata, *Each.*)

अश्वबला aṣhvabalá-सं० स्त्री० मेथिका । मेथी -हिं०, म० । Fenugreek. । (२) नारी शाक- सं०, हिं०,बं० । करेमू-हिं० । गुण—अश्वबला शाक रूक्ष है तथा मल, मूत्र और वायु का वर्द्धक है । सु० । See-nárí.

अश्वबालः aṣhvabálah-सं० पुं०
अश्वबाल aṣhvabála-हिं० संज्ञा पुं०
काशतृण । कासा । कास का पौधा । (Saccharum spontaneum) त्रिका० ।

अश्वभा aṣhvabhá-सं० स्त्री० सौदामन्या । विद्युत ।

अश्वमार aṣhvamára-हिं० संज्ञा पुं०
अश्वमारः aṣhvamárah-सं० पुं०
अश्वमारकः aṣhvamárakah-सं० पुं०
श्वेत करवीर । सफ़ेद कनेर-हिं० । श्वेत करवी -बं० । Nerium odorum, *Soland.* (White var. of-) । (२) उपोदिका -सं० । पोई-हिं० । (Basella Rubra or lucida) । (३) पालङ्क शाक-सं० । पालक पालकी-हिं० । (Beta bengalensis) सु० चि० १ अ० । (४) करवीर -सं० । कनेर-हिं० । (Nerium odorum) सु० सू० ३८ अ० । लाक्षादि-बं० । भा० पू० १ भा० । (५) श्वेत करवीर मूल, सफ़ेद कनेर की जड़ । यह स्थावर विषान्तर्गत मूल विष है । (६) सुगन्ध रोहिष । सु० कल्प० २ अ० । देखो-मूलविषम् ।

अश्वमाराख्यः aṣhvamárákhyah—सं० पुं० श्वेत करवीर वृक्ष । सफ़ेद कनेर का पेड़ । -हिं० । श्वेत करवी गाछ-बं० । (Nerium odorum, *Aiton.*) रा० नि० व० १० ।

अश्वमालः aṣhvamálah-सं० पुं० सर्प विशेष । (A snake.) वै० निघ० ।

अश्वमुत्रा aṣhvamutrá-सं० स्त्री० इन्द्रगू वृक्ष ।

अश्वमूत्रम् aṣhva-mútram-सं० क्ली० घोटक मूत्र, घोड़े की पेशाब । घोड़ार मूत-बं० । हॉर्स युरिन (Horse urine.)-इं० ।

गुण—तिक्त, उष्ण, तीक्ष्ण, विषघ्न, वातकोपशामक, पित्तकारक और दीपन है । रा० नि० व० १५ । मेद, कफ, दद्रु (दाद) और कृमि नाशक है । म० व० ८ ।

अश्वमूत्रिका,-त्री aṣhva-mútriká,-trí-सं० स्त्री० शल्लकी वृक्ष । सलाई-हिं० । (Boswellia serrata,*Roxb.*) जटा० ।

अश्वमोहकः aṣhva-mohakah-सं० पुं० श्वेत करवीर । सफ़ेद कनेर-हिं० । (Nerium odorum, *Aiton.*) वै० निघ० ।

अश्वयानम् aṣhva-yánam-सं० क्ली० असवारी, घुड़सवारी, अश्वारोहण, घोड़े की सवारी,

अश्व भ्रमण। घोड़ार चड़ा–बं०। (Riding on horse-back.)

गुण—घोटकारोहण (घोड़े की सवारी) वात, पित्त, अग्नि तथा श्रमकारक है और मेद, वर्ण तथा कफ का नाश करने वाला और बलवान मनुष्यों के लिए अत्यन्त हितकारक है। दिनच०।

अश्वयुजः ashva-yujah–सं० पुं० आश्विन मास, क्वार। The 6 th hindu month (September-october.)

अश्वरक्षकः ashva-rakshakah–सं० पुं० अश्वपाल, अश्वसेवक, साईस। घोड़ार सहिप-बं०। (A groom.)

अश्वरिपुः ashva-ripuh–सं० पुं० (१) करवीर वृक्ष, कनेर (Nerium odorum.)। (२) महिष, भैंस। (A buffalo.) भा०।

अश्वरोधकः ashva-rodhakah–सं० पुं०
अश्वरोधक ashva-rodhaka–हिं० संज्ञा पुं०
श्वेत करवीर वृक्ष। सफ़ेद कनेर–हिं०। (Nerium odorum, *Aiton.*) रा० नि० व० १०।

अश्वरोहका ashva-rohaká } सं० स्त्री०
अश्वरोहा ashva-rohá } अश्वगंधा।
असगन्ध–हिं०। (Withania somnifera.)

अश्वलम् ashvalam–सं० क्लीं० क्षुद्र तृण विशेष। घोड़े सर बं०। "अश्वलञ्च तृणं बल्यं रुच्यं पशुहितावहम्।" वै० निघ०।

अश्वलोमा ashva.lomá–सं० पुं० सर्प विशेष। (A snake.) त्रिका०।

अश्ववराहः ashva-varáhah–सं० पुं० वाराहीकन्द। An esculent root or a yam (Dioscorea.) वै० निघ०।

अश्वका (ashtaka–सं० स्त्री० वृक्ष भेद। (A sort of tree.) हे० च०।

अश्ववर्च्चः,–स् ashva-varchchah,–s–सं० क्लीं० अश्वविष्ठा, घोड़े की लीद। घोड़ार नाद–बं०। (The dung of horses.)

अश्ववहः,–वाहः ashva-vahah,–vábah –सं० पुं०
अश्ववार ashva-vára–हिं० संज्ञा पुं०
अश्ववाहक, घुड़सवार। जटा०।

अश्ववारः ashva-várah–सं० पुं० (१) कनेर (Nerium odorum)। (२) घोड़े का बाल। (Hair of the horse) अथर्व०। सू० ४। २। का० १०।

अश्ववारणः ashva-váranah–सं० पुं० गवय। हे० च०। See-Gavaya.।

अश्ववैद्यः ashva-vaidyah–सं० पुं० अश्वशास्त्र (शालिहोत्र आदि) के प्रणेता, अश्व चिकित्सक।

अश्ववैद्यकम् ashva-vaidyakam–सं० क्लीं० अश्व चिकित्साशास्त्र। इसके प्रणेता शालिहोत्र, नकुल, भोज और जयदत्त प्रभृति विद्वान हुए हैं।

अश्वशाला ashva shálá–सं० स्त्री०, हिं० संज्ञा स्त्री० (१) मन्दुरा। हला०। (२) वह स्थान जहाँ घोड़े रहें। तबेला, घुड़साल, अस्तबल। स्टेबल (A stable.) –इं०।

अश्वसेन ashva-sena-हिं० संज्ञा पुं० तक्षक का पुत्र नाग विशेष, नलनकुमार।

अश्वसेवक ashva-sevaka–हिं० संज्ञा पुं० अश्वपाल, साईस। (A groom.)

अश्वहनः ashva-hanah–सं० पुं० करवीर वृक्ष, कनेर। (Nerium odorum.) रत्ना०। भैष० भग्न–चि० निशाद्य तैल।

अश्वहा ashvahá–सं० पुं० श्वेत करवीर वृक्ष, सफेद कनेरका पेड़। (Nerium odorum, *Aiton.*) मद० व०।

अश्वक्षुरकः ashva-kshurakah–सं० पुं० कनेर, करवीर। (Nerium odorum) अथर्व०।

अश्वक्षुरा ashva-kshurá } –सं०
अश्वक्षुरिका ashva-kshuriká } स्त्री०
अश्वक्षुरी ashva-kshurí } श्वेत
अपराजिता, विष्णुकान्ता (Clitorea ternatea.)। (२) कृष्ण अप-

राजिता। Clitorea ternatea (The black var. of-) वै० निघ०। (३) नखी नामक गंध द्रव्य विशेष। See-nakhí.

अश्वा ashvá-सं० स्त्री० (१) अजमोदा। Carum (Ptychotis) Roxburghianum, *Benth.* | (२) अश्वगंधा, असगंध (Withania somnifera.) | (३) अपामार्ग, चिर्चिटा (Achyranthes aspera. | (४) इन्द्रवारुणी-सं०। (Cumis melo.) | राखाल शशा-बं०। (५) घोटकी, घोड़ी। (A mare.)

अश्वाकर्णा ashvá karná-सं० स्त्री० सुख मही।

अश्वागंधी ashvá-gandhí-सं० स्त्री० डमाडाल-द०। एक बूटी है। कोई कोई असगंध तथा कोई किसी अन्य बूटी को कहते हैं।

अश्वातक्रम् ashvá-takram-सं० क्ली० घोटकी तक्र, घोड़ी का तक्र, घोड़ी के दूध द्वारा निर्मित छाछ। घोड़ार दुधेर घोल-बं०।

गुण—घोड़ी का तक्र कसैला, किंचित् वातकारक, अग्निदीपिकर, रूक्ष, नेत्र को हितकारक तथा मूर्च्छा और कफनाशक है। वै० निघ०।

अश्वादधि ashvá-dadhi-सं० क्लो० घोड़ी का दही। वाडवं, आश्वम्-सं०। सुश्रुत सू० ४५ अ० दधि व०।

अश्वान् āashván-अ० रक्तांधता, रतौंधी, नक्तांधता। (Hemeralopia.)

अश्वानु ashvánu-सं० एक हिन्दी वृक्ष का फल है।

अश्वान्तकः ashvántakah-सं० पुं० श्वेत करवीर, सफ़ेद कनेर। (Nerium odorum, *Aiton.*) रा० नि० व० १० | अथर्व०।

अश्वामूत्रा ashvá-mútrá-सं० स्त्री० इन्द्रगू वृक्ष।

अश्वारिः ashvárih-सं० पुं०
अश्वारि ashvári-हिं० संज्ञा पुं० }

(१) करवीर या कनेर वृक्ष। (Nerium odorum.) भैष० कुष्ठ-चि० मरिचाद्य तैल। (२) महिष, भैंसा। (A buffalo.) जटा०।

अश्वारिपत्रः ashvári-patrah सं० पुं० तिलकन्द। तैलकन्द स्वरूपः।

अश्वारूढ़ ashvá-rúdha-हिं० पुं० असवार, घुड़चढ़ा, अश्वारोही। (Mounted on a horse, a horseman.)

अश्वारोहः,-कः ashvá-rohah,-kah-सं० पुं० अश्वगन्धा, असगंध। (Withania somnifera.) रत्ना०।

अश्वारोहण ashvá-rohana-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अश्वारोही] घोड़े की सवारी।

अश्वारोहा ashvá-rohá-सं० स्त्री० इन्द्रवारुणी। राखालशशा-बं०। बड़ा इनारुन, इन्द्रायन (Cumis melo-) | (२) अश्वगंधा, असगंध। (Withania somnifera.) मे०।

अश्वारोही ashvá-rohí-हिं० वि० [सं० अश्वारोहिन्] घोड़े का सवार।

अश्वालः ashválah-सं० पुं० (१) उशीर, खस-हिं०। (Andropogon muricatus.) | (२) क्षुद्र काशतृण। (Saccharum spontaneus.) रा० नि० व० ८।

अश्वावरोहकः,-हिका ashváva-rohakah,-hiká-सं० पुं०, स्त्री० अश्वगन्धा, असगंध। (Withania somnifera.) र० मा०।

अश्वावती ashvávatí-सं० स्त्री० वाजीकरण। "अश्वावतीं सोमावती मुर्जयन्तो मुदोजसम्" वा० १२।

अश्वासना ashvásaná-सं० स्त्री० (१) ऋद्धि। See-Riddhi | (२) घोटकी, घोड़ी। (A mare.) वै० निघ०।

अश्वाह्वा ashváhvá-सं० स्त्री० अश्वगन्धा, असगंध। (Withania somnifera.)

वै० निघ० वा० व्या० शतावरी तैल, नारायण तैल।

अश्वाह्वादिखुरा,-री ashváhvádi-khurá,-rí-सं० स्त्री० श्वेत अपराजिता, विष्णुकान्ता। (Clitorea ternatea.) वै० निघ० व० ३।

अश्वाक्षः ashvákshah-सं० पुं० (१) देव सर्षप वृक्ष। (See-Deva-sarshapa.) अम०। (२) वृक्ष भेद। (A sort of tree.) रा० नि०।

अश्विजौ ashvijou-सं० पुं० अश्विनीकुमार, स्वर्ग के वैद्य, देव वैद्य। (See-Ashviní-kumára.)

अश्विनी ashviní-सं० स्त्री० (१) जटामांसी। (Valeriana jatamansi.) व० निघ०। (२) घोड़ी।

अश्विनीकुमार ashviní-kumára-हिं० संज्ञा पुं० देव वैद्य, स्वर्ग के वैद्य। पर्या०—स्ववैद्य। दस्र। नासत्य। आश्विनेय। नासिक्य। गदागद। पुष्करस्रज।

अश्विनीकुमारो रसः ashviní-kumáro-rasah-सं० पुं० त्रिकुटा, त्रिफला, अफ़ीम, मीठा तेलिया, पीपलामूल लवंग, जमालगोटा, हरताल, सुहागा, पारा, गंधक प्रत्येक १-१ कर्ष लेकर यथा क्रम आधा आधा प्रस्थ गाय के दूध, गोमूत्र और भाँगरे के रस में घोटकर गोलियाँ बनाएँ।

मात्रा—मुद्ग प्रमाण। इसे उचित अनुपान के साथ सेवन करने से अनेक रोग दूर होते हैं। अनु० त०।

अश्विनौ ashvinou-सं० पुं० दोनों अश्विनी-कुमार। रत्ना०।

अश्वि भेषजम् ashvi-bheshajam-सं० क्ली० लघुमेष शृङ्गी। मेढ़ासिंगी-हिं०। मेढ़ा सिङ्गे-बं०। (See-Ajashringí) वै० निघ०।

अश्वीघृतम् ashví-ghritam-सं० क्ली० घोड़ी के दुग्ध द्वारा निकाले हुए नवनीत से तैयार किया हुआ घृत, घोड़ी का घी।

गुण—कटु, मधुर, कसैला, ईषत् दीपन, भारी, मूर्च्छानाशक और वात को कम करनेवाला है। रा० नि० व० १५।

अश्वीदधि ashví-dadhi-सं० क्ली० घोड़ी के के दुग्ध से उत्पन्न हुआ दधि, घोड़ी का दही। घोड़ीर दई-बं०। घोडि चे दहि-मह०। कुदिरेय सोसरु-कं०।

गुण—मधुर, कषैला, रूक्ष, कफ रोग तथा मूर्च्छानाशक और ईषद्वातल (थोड़ा वातकारक), दीपन तथा नेत्रदोषनाशक है। रा० नि० व० १५।

अश्वीनवनीतम् ashví-navanítam—सं० क्ली० घोटकी दुग्ध जात नवनीत, घोड़ी के दुग्ध से निःसरित नवनीत, घोड़ी का मक्खन (नैनू)। घोड़ार दुधेर ननी-बं०।

गुण—कषैला, वातनाशक, नेत्रको हितकारक, कटु, उष्ण और ईषद् वातकारक, है। रा० नि० व० १५।

अश्वीयम् ashvíyam-सं० क्ली० (१) अश्व समूह, सम्पूर्ण अश्वजाति, अश्वमात्र।-त्रि० (१) अश्वहेतु, अश्व के लिए। मे० यत्रिक। (२) अश्व सम्बंधी। घोड़े का।

अश्वीक्षीरम् ashví-kshíram-सं० क्ली० घोटकी दुग्ध, घोड़ी का दूध।

गुण—उष्ण, रूक्ष, बलकारक, वात कफ-नाशक है। एक शफ(खुर)क्षीर मात्र लवणाम्ल (नमकीन तथा खट्टा), लघु और स्वादिष्ट होते हैं। मद० व० ८।

अश्वेता ashvetá-सं० स्त्री० (१) कृष्ण अपराजिता। Clitorea ternatea(The black var. of-)। (२) कृष्ण अतिविषा, काली अतीस। Aconitum heterophyllum (The black var.of-) वै० निघ०। (३) गम्भारी वृक्ष। (Gmilina arboria.)।(See-Gambhárí.) रा० नि०।

अश्वेल ashvela-मत्स्याण्ड, मछली का अंडा। (The egg of a fish.)

अश्श āashsha-अ० दुबला, पतला होना, बारीक होना, निर्बल या चीण होना।

अश्शमूउल् अबैज़ ashshamāul-abaiza -अ० सफ़ेद मोम, श्वेत मधूच्छिष्ट। White-bees-wax (Cera alba.)

अश्शमूउल् अस्फ़र ashshamāul-asfar -अ० मोम ज़र्द-फ़ा०। पीला मोम, पीत मधूच्छिष्ट-हिं०। Yellow bees-wax (Cera flava.)

अश्शूरा ashshúrá-(Lemonia pentaphylla, Roxb.) ई० हैं० गा०।

अश्शैलमुल् मुक़रन ashshailamul-muqran-अ० शैलम। गन्दुम दीवाना-फ़ा०। देखो—अर्गोटा (Ergota.)

अश्हब ashhaba-अ० श्यामाभायुक्त, श्वेत रंग की वस्तु, कालापन लिए हुए सफेद रंग की चीज़, धूसर, भूरा।

अश्हल ashhala-अ० वह मनुष्य जिसका नेत्र भेड़ का सा बड़ा और कुरूप हो, मेष चक्षु। मेश चश्म-फ़ा०।

अश्हायूस ashháyúsa-रू० कायफल,कट्फल। (Myrica sapida.)

अश्हार ashhára-रू० तोदरी। See-Todari.

अषाढ़ ashádha-हिं० संज्ञा पुं० [सं० आषाढ़] चौथा महीना। वह महीना जिसमें पूर्णिमा पूर्वाषाढ़ में पड़े। असाढ़। आषाढ़। The Hindú third solar month (June-July, during which the sun is in Gemini, and the full moon is near ashádhá अषाढ़ा more properly called Poorv-ashádhá पूर्व्वाषाढ़ा or Uttaráshádhá उत्तराषाढ़ा a constellation Sagittarius.)। (२) व्रत (Austerity)। (३) पलाश दण्ड।

अष्टंगी ashtangí-हिं० वि० दे० अष्टांगी।

अष्ट ashta-हिं० वि० [सं०] संख्या विशेष, आठ। अट (Eight.) -ई०।

अष्टक ashtaka-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] अष्ट संख्या, आठ की पूर्ति, आठकी संख्या। आठ वस्तुओं का संग्रह। जैसे हिंग्वष्टक।

अष्टकट्वर तैलम् ashta-katvara-tailam -सं० क्लीं० यह तैल वातरक्त तथा उरुस्तम्भ में हित है। योग निम्न हैं:—

तैल ३२ पल (= २५६ तो०), दधि ३२ पल (=२५६ तो०), तक्र २५६ पल (=२०४८ तो०), पिप्पली और सोंठ प्रत्येक २-२ पल अर्थात् १६-१६ तो० (किसी किसी के मत से दोनों मिलकर २ पल या प्रत्येक १ पल) इसको तैल-पाक विधि अनुसार पकाएँ। च० द० ऊ० स्त० चि०। अस्नेह दधि अर्थात् स्नेह रहित दधि या दही का तोड़ और घृत रहित अर्थात् घी निकाला हुआ तक्र ग्रहण करना चाहिए। रस० र०।

अष्टकमल ashta-kamala-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] हठयोग के अनुसार मूलाधार से ललाट तक के आठ कमल जो भिन्न भिन्न स्थानों में माने गए हैं अर्थात् मूलाधार, विशुद्ध, मणिपूरक, स्वाधिष्ठान, अनाहत (अनहद), आज्ञाचक्र, सहस्रारचक्र और सुरतिकमल।

अष्टकर्म ashta-karmma-सं० क्लीं० पारद के आठ संस्कार। पारद के १८ कर्मों में से स्वेदनादि से दीपन पर्यंत आठ प्रकार के संस्कार। वे निम्न हैं:—

(१) स्वेदन, (२) मर्दन, (३) मूर्च्छन, (४) उत्थापन, (५) पातन, (६) बोधन, (७) नियामन और (८) दीपन। र० सा० सं०। इनको विधि अपने अपने पर्यायों के सम्मुख देखें।

अष्टका ashtaká-सं० स्त्री० वृक्ष भेद। (A sort of tree.) हे० च०।

अष्टकुल ashta kula-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार सर्पों के आठ कुल; यथा—शेष, वासुकि, कंबल, कर्कोटिक, पद्म, महापद्म, शंख और कुलिक। किसी किसी के मत से-तक्षक,

महापद्म, शंख, कुलिक, कंबल, अश्वतर, धृतराष्ट्र और बलाहक हैं।

अष्टकुली ashṭakulí–हिं० वि० [सं०] साँपों के आठ कुलों में से किसी में उत्पन्न।

अष्टकोण ashṭakoṇa–हिं० संज्ञा पु० [सं०] (१) वह क्षेत्र जिसमें आठ कोण हों। वि० [सं०] आठ कोने वाला। जिसमें आठ कोने हों।

अष्टगंध ashṭa-gandha हिं० संज्ञा पु० [सं०] आठ सुगंधित द्रव्यों का समाहार। दे० गंधाष्टक।

अष्टगाधः ashṭa-gádhah सं० पु० (१) ऊर्णनाभि। See--úrṇa-nábhih. (२) शरभ। See--sharabha.

अष्टगुण मण्डः ashṭa-guṇa-maṇḍah–सं० पु० जिस माँड़ में धनिया, सोंठ, मिर्च, पीपल, सेंधानमक और छाछ डालकर भूना जाए तथा भूनी हींग और तैल पड़ा हो उसे अष्टगुणमण्ड कहते हैं।

गुण—दीपन, प्राणदाता, वस्तिशोधक, रुधिर वर्द्धक, ज्वरनाशक और प्रत्येक रोगों को नष्ट करता है। यो० त०।

अष्टदल ashṭa-dala–हिं० संज्ञा पु० [सं०] आठ पत्ते का कमल।

वि० [सं०] (१) आठ दल का। (२) आठ कोन का, आठ पहल का।

अष्टधातुः ashṭa-dhátuh–सं० पु०
अष्टधातु ashṭa-dhátu–हिं० संज्ञा स्त्री०
आठ धातुएँ यथा—१-सुवर्ण, २-रूपा, ३-शीष (सीसक), ४-ताम्र ५-पित्तल, ६-रंग (राँगा), ७-कान्त लौह, और ८-मुण्डलोह। किसीने पित्तल के स्थान में तीक्ष्ण लोह लिखा है। र० सा० सं० टी०।

नोट—किसी किसी ने इसकी गणना इस प्रकार की है—१-सुवर्ण (Gold.), २-रूपा-चाँदी (Silver.), ३ ताँबा (Copper.) ४-पीतल (Brass.), ५-राँगा (Tin.), ६-जस्ता (Bell-metal.), ७-सीसा (Lead) और लौह (Iron.)। किसी किसी ने पीतल के स्थान में पारद लिखा है। देखो—अष्टलौहक।

अष्टधात्री ashṭa-dhatrí
अष्टधाती ashṭa-dháti
–हिं० वि० [सं० अष्टधातु] अष्ट धातुओं से बना हुआ। (A compound of eight metals.)

अष्टपद ashṭa-pada–हिं० संज्ञा पु० देखो–अष्टपाद।

अष्टपदी ashṭa-padí–सं० स्त्री० बेल नाम से प्रसिद्ध एक पुष्प क्षुप विशेष। बेल फुलेर--गाछ –बं०। (A shrub named Vela.)

गुण—शीतल, लघु, कफ पित्त तथा विष नाशक। मद० व० ३।

अष्टपलम् ashṭa-palam--सं० क्ली० शराव मान (=६४ तो० अर्थात् १ सेर ८१)। sharáva (A measurement=one seer.)

अष्टपलक घृतम् ashṭa-palaka-ghritam--सं० क्ली०
अष्टपल घृतम् ashṭa-pala-ghritam–सं० क्ली०

–सं० क्ली० ग्रहणी नाशक योग विशेष। यथा सोंठ, मिर्च, पीपल, हड़, बहेड़ा, आमला, प्रत्येक ४-४ तो० इनका कल्क बनाएँ और बेलगिरी ४ तो०, गुड़ १ पल तथा घृत ३२ तो० को कल्क युक्त पकाएँ।

इसे उचित मात्रा में भक्षण करने से मन्दाग्नि रोग नष्ट होता है। बंग से० सं० ग्रहणी चि०। च० द०।

अष्टपात्-,दः ashṭapát,-dah–सं० पु०
अष्टपाद ashṭa-páda–हिं० संज्ञा पु०

(१) काश्मीर देशीय शरभ, शरध, शार्दूल। मद० व० १२। (२) ऊर्णनाभि, लूता, मकड़ी। हे० च० ४ का०।

अष्टपादपः ashṭa-pádapah–सं० पु० वृक्ष भेद। (A sort of tree.) वै० निघ०।

अष्टपादिका ashṭa-pádiká-सं० स्त्री० (१) शरद मल्लिका। काष्ठमल्लिका--बं०। रत्ना०। (२) आस्फोता, अपराजिता। (Clitorea ternatea.) हापर माली--बं०। प० मु० च० ११।

अष्टप्रहर ashṭa-prahar-सं० पु० आठ पहर, आठ याम। (Incessant, the whole day and night.)

अष्टबन्ध्या ashṭa-bandhyá-सं० स्त्री० आठ प्रकार की बन्ध्याएँ, बाँझ या अपुत्रवती स्त्रियाँ। Eight sorts of bandhyas (childless women)। वे निम्न हैं - (१) काकबन्ध्या, (२) कन्यापत्य, (३) कमली, (४) गलद्गर्भी, (५) जन्म बन्ध्या, (६) त्रिपत्नी, (७) त्रिमुखी, (८) मृतगर्भा। इनके अतिरिक्त आठ प्रकार की और बन्ध्याओं का वर्णन यं० कल्प द्रु० के प्रणेता ने किया है जो निम्न हैं—

(१) मृत्वत्स्या, (२) रजोहीना, (२) वक्री, (३) व्यङ्गिनी, (५) व्याघ्रिणी, (६) शुभ्रती, (७) सज्वा और (८) स्रवद्गर्भी।

अष्टवसु ashṭa-basu-हिं० पुं० आठ देव विशेष (The eight deities.)। यथा—आप, ध्रुव, सोम, धव, अनिल, अनल, प्रत्यूष और प्रभास।

अष्टभावः ashṭa-bhávah-सं० पुं० स्तम्भ, स्वेद, रोमाञ्च, स्वरभंग, वैस्वर्य्य, कम्प, वैवर्ण्य और अश्रुपात ये आठ भाव हैं। वै० निघ०।

अष्टम ashṭam-हिं० वि० [सं०] आठवाँ। (The eighth.)

अष्ट मंगलः ashṭa-mangalah-सं० पुं० (१) श्वेत मुख, पुच्छ, वक्ष तथा खुर वाला अश्व। हे० च०। जिसका समग्र पाद, पुच्छ, वक्ष तथा मुख सफ़ेद हो उसे "अष्टमंगल" जानना चाहिए। ज० द० ३ अ०।--क्ली० आठ मंगल द्रव्य वा पदार्थ जैसे—१-ब्राह्मण, २-गो, ३-अग्नि, ४-स्वर्ण, ५-घृत, ६-सूर्य्य, ७-अश्व, (कहीं कहीं जल लिखा है) तथा ८-नृप ये आठों अष्टमंगल कहलाते हैं। वै० निघ०। किसी किसी के मत से १-सिंह, २-वृष, ३-नाग, ४-कलश, ५-पंखा, ६-वैजयंती, ७-भेरी और ८-दीपक ये आठ अष्टमंगल हैं।

अष्टमंगल घृतम् ashṭa-mangal-ghritam-सं० क्ली० बाल रोग नाशक घृत विशेष। एक घृत जो आठ औषधियों से बनाया जाता है। औषधियाँ ये हैं—१-वच, २-कूट, ३-ब्राह्मी, ४-सर्षप, ५-सारिवाँ, ६-सेंधा नमक, ७-पीपल १-१ तो०, और ८-घृत ८ तो०, उक्त औषधियों का कल्क बना घृत सिद्ध कर पीने से बालकों की स्मृति, स्रुति और बुद्धि की वृद्धि होती है और पिशाच, राक्षस, दैत्य बाधा दूर होती है। च० तथा वंग से० सं० बालरोग-चि०। भा०। रस० र०।

अष्टमधु जातिः ashṭa-madhu-játih-सं० स्त्री० माक्षिक, भ्रामर, क्षौद्र, पौत्ति(त्रि)क, छात्रक आर्घ्य, औद्दाल और दाल इत्यादि आठ प्रकार के मधु। विस्तार के लिए उन उन शब्दों के अन्तर्गत देखो।

अष्टम नकली पसली ashṭama-nakalí-pasalí-सं० स्त्री० (Eighth false rib) मांस और उपास्थि की पर्शुका।

अष्टमानम् ashṭa-mánam-सं० क्ली०
अष्टमान ashṭa-mána-हिं० संज्ञा पुं०
दो प्रसृति=४ पल (=३२ तो०) अर्थात् अर्द्ध सेर (Half a seer.)। आठ मुट्ठी का एक परिमाण। प० प्र० १ ख०।

अष्टमिका ashṭamiká-सं० स्त्री०, हिं० संज्ञा स्त्री० तोल चतुष्टय परिमाण, ४ तो० का एक परिमाण। प०। आधे पल वा दो कर्ष का परिमाण।

अष्टमी ashṭamí-सं० (हिं० संज्ञा) स्त्री० (१) क्षीर काकोली। (See--kshíra-kákolí.) वै० निघ०। (२) तिथि विशेष। शुक्ल और कृष्णपक्ष के भेदसे आठवीं तिथि। आठैं। (The eighth day of the moon.)। (३) श्रावणी नाड़ियाँ (Acoustic nerves.) -त्रि०, वि० आठवीं।

अष्टमूत्रम् ashṭa-mútram-सं० क्लो० आठ जानवरों का मूत्र (The urine of the eight animals.) । उनके नाम निम्न प्रकार हैं :--

(१) गो, (२) बकरी, (३) भेड़, (४) भैंस, (५) घोड़ी, (६) हस्तिनी, (७) उष्ट्री और (८) गधी । वै० निघ० ।

अष्ट मूर्ति रसः ashṭa-múrti-rasah-सं० पु० सोना, चाँदी, ताम्बा, सीसा, सोनामाखी, रूपामाखी, मैनसिल प्रत्येक समान भाग ले जम्बीरी के रस से भावित कर भूधरयन्त्र में १ पहर तक पुट दे फिर चूर्ण कर रखलें।

मात्रा—१ रत्ती उचित अनुपान से क्षय, पांडु विषमज्वर तथा रोग मात्र को समूल नष्ट करता है। रस० यो० सा० ।

अष्ट मूलम् ashṭa-múlam-सं० त्रि० त्वचा, मांस, शिरा, स्नायु, अस्थि, सन्धि, कोष्ठ तथा मर्म्म ये आठ मूल कहे जाते हैं। सु० चि० अ० ।

अष्टमौक्तिक स्थानम् ashṭa-mouktika-sthánam-सं० क्लो० मोती की उत्पत्ति के आठ स्थान, जैसे, शंख, हाथी, सर्प, मछली, मेंढ़क, वंश (बाँस), सूअर तथा सीप इन आठ प्राणियों में मोती होता है । वै० निघ० । देखो—मोती ।

अष्टयामिक वटी ashṭa-yámika-vaṭí-सं० स्त्री० चांगेरी चूर्ण ६ मा०, पारा, हल्दी, सेंधानमक प्रत्येक दो भाग इनको गाय के दही में मर्दन कर झाड़ी बेर प्रमाण की गोलियाँ बनाएँ । इसे ज्वर आने से ३ रोज़ बाद गरम पानी से लेने से ८ पहरके अन्दर नवीन ज्वर नष्ट होता है । रस० यो० सा० ।

अष्टलोह(क) ashṭa-loha,-ka-हिं० संज्ञा पु०
अष्टलौहकम् ashṭa-louhakam-सं० क्ली०
अष्ट प्रकार के धातु विशेष । स्वर्ण, रौप्य, ताम्र, रङ्ग, शीष (सीसक), कान्त लौह, मुण्ड लौह, और तीक्ष्णलौह । पञ्च लौह समेत कान्त, मुण्ड तथा तीक्ष्ण लौह । रा० नि० व० २२ । देखो—अष्टधातुः ।

अष्टवर्गः ashṭa-vargah-सं० पु०
अष्टवर्ग ashṭa-varga-हिं० संज्ञा पु०
(A class of eight principal medicaments, Rishabhaka etc.) आठ ओषधियों का समाहार । मेदा प्रभृति आठ ओषधियाँ । यथा—१ मेदा, २ महामेदा, ३ जीवक, ४ ऋषभक, ५ ऋद्धि, ६ वृद्धि, ७ काकोली और ८ क्षीर काकोली । प० मु० । "जीवकर्षभकौमेदे काकोल्या वृद्धि वृद्धिकौ एकत्र मिलितैरेतैरष्टवर्गः प्रकीर्त्तितः" । रा० नि० व० २२ ।

गुण—शीतल, अतिशुक्रल, बृंहण, दाह, रक्तपित्त तथा शोषनाशक और स्तन्यजनक एवं गर्भदायक है। मद० व० १ । रक्तपित्त, व्रण, वायु और पित्तनाशक है । राज० । हिम, स्वादु, बृंहण, गुरु, टूटे हुए स्थान को जोड़ने वाला, कामवर्द्धक, बलास (कफ) प्रगट करता एवं बलवर्द्धक है तथा तृष्णा, दाह, ज्वर, प्रमेह और क्षय का नाश करनेवाला है । भा० पू० १ भा० ।

अष्टवर्ग प्रतिनिधिः ashṭavarga-pratinidhih-सं० पु० मेदा आदि ओषधियों के अभाव में उनके समान गुण-धर्म की ओषधियों का ग्रहण करना, यथा—मेदा महामेदा के अभाव में शतावरी, जीवक ऋषभक के स्थान में भूमि कुष्मांड मूल (पताल कुम्हड़ा, विदारीकंद), काकोली, क्षीर काकोली के अभाव में अश्वगंधा मूल (असगंध) और ऋद्धि वृद्धि के स्थान में वाराहीकन्द । भा० पू० १ भा० । कोई कोई इसकी प्रतिनिधि इस प्रकार लिखते हैं, जैसे—जीवक, ऋषभकके अभावमें गुडूची वा वंशलोचन, मेदा के अभाव में अश्वगंधा और महा मेदा के अभाव में शारिवा और ऋद्धि के अभाव में बला और वृद्धि के स्थान में महाबला लेते हैं । कोई कोई ऐसा लिखते हैं—

प्रतिनिधि—काकोली (मूसली श्याम), क्षीर काकोली (मूसली श्वेत), मेदा (सालब मिश्री छोटे दाने की), महामेदा (सक़ाकुल मिश्री), जीवक (लम्बे दाने के सालब), ऋष-

भक (बहमन श्वेत), ऋद्धि (चिड़िया कंद) और वृद्धि (पंजा सालबमिश्री)।

अष्टविधान्नम् ashta-vidhánnam—सं० क्ली० आठ प्रकार के आहार द्रव्य, जैसे (१) चर्व्य, (२) चोष्य, (३) लेह्य, (४) पेय, (५) खाद्य, (६) भोज्य, (७) भक्ष्य तथा (८) निष्पेय रूप भोजन द्रव्य।

अष्टक्षीरः ashta-kshírah—सं० पुं० आठ दूध। आठ प्राणियों के दूध। वे निम्न हैं—

(१) गोदुग्ध, (२) बकरी का दूध, (३) ऊँटनी का दूध, (४) भेड़ का दूध, (५) भैंस का दूध, (६) घोड़ी का दूध, (७) स्त्री का दूध और (८) हाथी का दूध।

"गव्यमाजं तथा चौष्ट्रमाविकं माहिषं च यत्।
अश्वायाश्चैव नार्यश्च करेणूनां च यत्पयः॥"

सु० सू० अ० ४५।

अष्टाङ्ग ashtánga—हिं० संज्ञा पुं० }
अष्टाङ्गम् ashtángam—सं० क्ली० }

[वि० अष्टांगी](१) आयुर्वेद के आठ विभाग।

(क) शल्य, शालाक्य, कायचिकित्सा, भूत विद्या, कौमारभृत्य, अगदतन्त्र, रसायनतंत्र और वाजीकरण।

(ख) काय चिकित्सा, बालचिकित्सा, ग्रह चिकित्सा, ऊर्ध्वांग चिकित्सा, शल्य चिकित्सा, दंष्ट्र चिकित्सा, जरा चिकित्सा और वाजीकरण ये आयुर्वेद के आठ अंग हैं। वा० सू० १ अ०।

(ग) द्रव्याभिधान, गदनिश्चय, शल्य, काय, भूत निग्रह, विष निग्रह, रसायन और बाल-चिकित्सा। वैद्यकम्।

(२) शरीर के आठ अंग, जानु पद, हाथ, उर, शिर, वचन दृष्टि, बुद्धि जिनसे प्रणाम करने का विधान है।

वि०[सं०](१) आठ अवयववाला। (२) अठपहल।

अष्टाङ्ग घृतम् ashtángaghritam—सं० क्ली० यह एक वाजीकरण घृत है।

अष्टाङ्ग धूपः ashtánga-dhúpah—सं० पुं० यह धूप ज्वरनाशक है।

योग—गुग्गुल, निम्बपत्र, वचा, कुष्ठ, हरड़, यव, श्वेत सर्षप इनमें घृत मिलाकर धूप देने से ज्वर नष्ट होता है। च० द०।

अष्टाङ्ग मङ्गल घृतम् ashtánga-mangal-ghritam—सं० क्ली० वच, मण्डूकपर्णी, शंखपुष्पी, ब्राह्मी, हुरहुर, श्वेतगुञ्जा शतावरी, गिलोय प्रत्येक ४--४ तो०, घृत ६४ तो०, दुग्ध २५६ तो० उक्त ओषधियों का कल्क बना घृत पकाकर सिद्ध करें।

गुण—इसके सेवन से धृति, स्मृति की वृद्धि होती है। वंग० से० सं० रसा० अ०।

अष्टाङ्गयोगः ashtánga-yogah—सं० पुं० योग विशेष। यथा—कट्फल (कायफल), पोष्कर, शृंगी, व्योष (त्रिकटु), यास (जवासा) और कारवी। संग्रहः।

अष्टाङ्ग रसः ashtánga-rasah—सं० पुं० अर्शोऽधिकारोक्त रस विशेष। लोहकिट्ट(मण्डूर) और फलत्रय (त्रिफला)। र० सा० सं०। देखो—अष्टाङ्गो रसः।

अष्टाङ्ग लवणम् ashtánga-lavanam—सं० क्ली० काला नमक १ भा०, जीरा १ भा०, वृक्षाम्ल (अमसूल) १ भा०, अम्लवेत १ भाग, तज आधा भा०, इलायची आधा भा०, मिर्च आधा भा०, मिश्री १ भा० ले चूर्ण प्रस्तुत करें।

गुण—यह अग्नि को दीपन करता और कफज मदात्यय रोग को दूर करता है। वंग से० सं० मदा०चि०। चर० मदात्यय-चि०। जीरा, काला जीरा, वृक्षाम्ल (अमसूल) और महार्द्रक (स्थूल का वन आर्द्रक)। र० सा० सं०।

सौवर्चलं कृष्णजीरकाम्लवेतसाम्ललोणिकानां।
प्र०चूर्णं समं त्वगेलामरिचानां प्रत्येकमर्द्धभागः।
शर्करायाः भागैकं एकत्र मिश्रयेत्। च० द० मदा० चि०।

अष्टाङ्ग वैद्यकम् ashtánga-vaidyakam—सं० क्ली० शालाक्य, काय, भूत, अगद, बाल, विष, वाजीकरण और रसायन इन्हें अष्टांग वैद्यक कहते हैं।

अष्टाङ्ग हृदयम् ashṭánga-hridayam--सं० क्लीं० वाग्भट विरचित वैद्यक ग्रंथ। अष्टांग आयुर्वेद के प्रत्येक अंग का सार सार ग्रहण करके रचा गया। अस्तु, यह सब अंगों का सारभूत अष्टांग हृदय है। वा० सू० १ अ०।

अष्टाङ्गावलेहः,-हिका ashṭángávalehah,-hiká-सं० पुं०, स्त्री० सन्निपात ज्वर तथा हिक्का व श्वासादि में हितकर योग विशेष।

योग तथा निर्माण-क्रम—कायफल, पोहकर मूल, काकड़ासिंगी, अजवाइन, सौंफ, सोंठ, मिर्च, और पीपल ये सब औषध समान भाग लेकर चूर्ण करलें। इस चूर्ण को अदरख के रस तथा शहद में मिलाकर चाटें।

गुण—कफ, ज्वर, खाँसी, श्वास, अरुचि, वमन, हिचकी, कफ और वातनाशक है। भा० म० १ भा०। सा० कौ०। च० द०। भैष०।

अष्टाङ्गी ashṭángí-हिं० वि० [सं०] आठ अंगवाला।

अष्टाङ्गोरसः ashṭángorasah-सं० पुं० गन्धक, पारा, लोहभस्म, मण्डूरभस्म, त्रिफला, त्रिकुटा, चित्रक, भांगरा प्रत्येक समान भाग लेकर सेमल और गिलोय के क्वाथ से ३ पहर घोटकर छाया में सुखाएँ।

मात्रा—४ मा०। उचित अनुपान के साथ सेवन करने से हर प्रकार के अर्श का नाश होता है। रस० यो० सा०।

अष्टादश ashṭádasha-अठारह। (Eighteen.)

अष्टादश धान्यम् ashṭádasha-dhányam -सं० क्लीं० १८ प्रकार के धान्य विशेष जैसे-कलाय (मटर आदि), गोधूम, आढ़की, यव, यावनाल (मक्का), चणक, मसूर, अतसी, मूँग, तिल, कुलथी, श्यामाक (सावाँ), माष, राजमाष, वर्त्तुल, हरिक, कंगु और तेरणा। वै० निघ०।

अष्टादश मूलम् ashṭádasha-múlam-सं० क्लीं० १८ प्रकारकी जड़ें यथा-बिल्व, अरणी, सोनापाठा, गाम्भारी, पाठा (निर्विषी), पुनर्णवा, वाट्यालक, माषपर्णी, जीवक, एरण्ड, ऋषभक, जीवंती, शतावर, शर, इक्षु, दर्भ, कास और शालिधान्य मूल। वै० निघ०।

अष्टादश शतिक महाप्रसारणी तैलम् ashṭádasha shatika-mahá-prasáraní-tailam-सं० क्लीं० गन्धाली पञ्चांग १२० तो०, शतावरी ४०० तो०, केतकीमूल ४००तो०, अश्वगंध ४०० तो०, दशमूल ४०० तो०, खिरेटी मूल ४०० तो०, कुरण्टा ४०० तो०, इनको १०२४ तो० जलमें पकाएँ, जब १००वाँ भाग शेषरहे तब इस क्वाथमें दुगुना और क्वाथ लें। काँजी और दही का पानी २५६ तो०, दुग्ध, शुक्त, ईख का रस, बकरे के मांस का रस प्रत्येक ४-४ सेर, तिल तैल १०२४ तो०। कल्कार्थ-भिलावाँ, तगर, सोंठ, चित्रक, पीपल, कचूर, वच, स्पृक्का, प्रसारिनी, पीपलामूल, देवदारु, शतावर, छोटी इलायची, दालचीनी, नेत्रबाला, कूट, नखी, बालछड़, पुष्करमूल चन्दन, सारिवा, कस्तूरी, अगर, मजीठ, नख, शिलाजीत, केशर, कपूर, विरोजा, हल्दी, लवंग, रोहिषतृण, सैंधानमक, कंकोल, पालक, नागरमोथा, कमल, दारुहल्दी, तेजपत्र, कचूर, रेणुकाबीज, लोबान, श्रीवास (धूप), केतकी, त्रिफला, रक्त धमासा, शतावरी, सरल, कमलकेशर, मेहदी, खस, बालछड़, जीवनीयगण, पुनर्नवा, दशमूल, असगंध, नागकेशर, रसवत, कुटकी, जावित्री, सुपारी, शलई का गोंद प्रत्येक १२-१२ तो० ले मन्दाग्नि से तैल पकाएँ। सिद्ध होने पर मालिश करें तो सम्पूर्ण वात व्याधियाँ दूर हों। इसे नस्य, पान और वस्ति कर्म में भी प्रयुक्त किया जाता है। विशेष गुण देखो-वंग से० सं० वात व्याधि चि०। च० द० वा० व्या० चि०।

अष्टादशाङ्गः ashṭádashángah-सं० पुं० सन्निपातज्वरोक्त कषाय विशेष। यह चार प्रकार का है—(१) दशमूल्यादि, (२) भूनिम्बादि, (३) द्राक्षादि (४) और मूलकादि इनमें से प्रथम—दशमूली, कचूर, शृंगी, पोहकरमूल, दुरालभा, भार्गी, इन्द्रयव, पटोल और कटुरोहिणी इन्हें अष्टादशांग कहते हैं।

गुण—सन्निपात ज्वरनाशक ।

द्वितीय—भूनिम्ब, दारुहरिद्रा, दशमूल, सोंठ, नागरमोथा, तिक्त इन्द्रयव, धनियाँ, नागकेशर और पीपल का कषाय । गुण—तन्द्रा, प्रलाप, कास, अरुचि, दाह, मोह, श्वासादि, सम्पूर्ण रक्तविकार और ज्वर को तत्काल शमन करता है ।

तृतीय—द्राक्षा, गुडूची, कचूर, शृंगी, नागरमोथा, लालचन्दन, सोंठ, कुटकी, पाठा, भूनिम्ब, दुरालभा, खस, पद्मकाष्ठ, धनियाँ, सुगन्धबाला, कण्टकारी, पुष्कर और नीम । गुण—तुरन्त जीर्णज्वर को दूर करता है ।

चतुर्थ नागरमोथा, पित्तपापड़ा, उशीर, देवदारु, महौषध, त्रिफला, दुरालभा और यवास, नीली कम्पिल्लक, निशोथ, चिरायता, पाठा, बला, कटुकी, रोहिणी, मुलेठी, पीपलामूल आदि नागरमोथा गण कहलाते हैं । च० द० । भैष० ।

अष्टादशाङ्ग गुटिका ashṭá-daṣhángaguṭiká-सं० स्त्री० चिरायता, कुटकी, देवदारु, दारुहल्दी, नागरमोथा, गिलोय, कडुआ परवर, धमासा, पित्तपापड़ा, निम्बछाल, सोंठ, मिर्च, पीपल, त्रिफला, वायविडंग प्रत्येक १-१ भा०, लौह चूर्ण सर्व तुल्य, चूर्ण कर शहद और घृत से गोलियाँ बनाएँ ।

गुण—इसे तक्र के साथ भक्षण करने से पांडु, शोथ, प्रमेह, हलीमक, हृद्रोग, संग्रहणी, श्वास, खाँसी, रक्तपित्त, अर्श, आमवात, व्रण, गुल्म, कफज विद्रधि, श्वेत कुष्ठ, उरुस्तम्भ आदि रोग दूर होते हैं । वंग से० सं० पांडुरो० चि० ।

अष्टादशाङ्ग लौहम् ashṭádaṣhánga-louham-सं० क्ली० पांडु अधिकारोक्त लौह विशेष ।

योग तथा निर्माण-क्रम—चिरायता, देवदारु, दारुहरिद्रा, नागरमोथा, गुडूची, कुटकी, पटोल, दुरालभा, पित्तपापड़ा, निम्ब, त्रिकटु, चीता, त्रिफला, मदनफल, वायविडंग इन सबको समान भाग लेकर इन सब के बराबर लौह भस्म मिलाकर घृत और मधु के साथ वटिका निर्मित करें । अनुपान—इसको तक्र के साथ उपयोग में लाएँ । गुण—पाण्डुघ्न । भा० म० २ भा० ।

अष्टापदः ashṭápadah-सं० पुं०
अष्टापद ashṭápada-हिं० संज्ञा पुं०
(१) शरभ । See-sharabha । (२) मर्कट । बानर-हिं० । (A monkey) देखो—मर्कटः । (३) महासिंह । See-Mahásinha । (४) धुस्तूर । धतूरा हिं० । (Datura fastuosa) । रा० नि० व० १६ । (५) शतरञ्ज की चाल । वा० उ० अ० २२ । "पक्वेऽष्टापदवच्छिन्ने" । —क्ली० (६) सुवर्ण, सोना । (Gold) रा० नि० व० १३ । —(दी) स्त्री० (७) मल्लिका भेद । चन्द्र मल्लिका ।

अष्टापद ashṭápada-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) लूता, मकड़ी, । (२) कृमि । देखो—अष्टापदः ।

अष्टाम्लवर्ग ashṭámla-varga-सं० पुं० आठ खट्टे फल, यथा-(१) जम्बीर, (२) बीजपुर, (३) मातुलुंग, (४) चुक्रक, (५) चांगेरी, (६) तिन्तिड़ी, (७) बदरी और (८) करमर्द ।

अष्टावक्र ashṭá-vakra-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] एक ऋषि ।

अष्टावक्र रसः ashṭá-vakra-rasah-सं० पुं० रसायनाधिकारोक्त रस विशेष । यथा—पारद १ भा०, गन्धक २ भा०, स्वर्ण भस्म १ भा०, चाँदी भस्म ॥० भा०. शीशा भस्म ।० भा०, राँगा भस्म ।० भा, ताम्रभस्म ।० भा० और खपरिया शुद्ध ।० भा० इसको वटाङ्कुर तथा घीकुआर के रस में १ प्रहर तक मर्दन कर रससिंदूर की तरह पकाएँ । मात्रा—२ रत्ती ।

अनुपान—पान का रस । भैष० ।

अष्टाश्रि ashṭáshri }
अष्टास्र ashṭásra } --हिं० त्रि० [सं०]

आठ कोने वाला, अठकोना, अठकोण।

अष्ठिः-,ष्ठिः ashṭih,-shṭhih--सं० स्त्री० }
अष्ठि ashṭi--हिं० संज्ञा स्त्री० }

(१) अण्ठी । आँटी--बं०। (२) मींगी (Nucleus)। नुवात--अ०। देखो -- सेल।

अष्टौषधिः ashṭoushadhih--सं० स्त्री० ब्रह्मसुवर्चला, आदित्यपर्णी, नारीकाष्ठ, गोधा, सर्पा, पद्मा, अज और नीली ये आठ अष्टौषधि कहलाती हैं। च० चि० १ अ०।

अष्ठिला ashṭhilá }
अष्ठीला ashṭhílá } -सं० स्त्री०, हिं० संज्ञा स्त्री० (१)
अष्ठीलिका ashṭhíliká } वायु रोग विशेष।

एक रोग जिसमें मूत्राशय में अफरा होने से पेशाब नहीं होता और एक गांठ पड़ जाती है जिससे मलावरोध होता है और वस्ति में पीड़ा होती है। इसके निम्न भेद हैं—

लक्षण—वह ग्रंथि जो ऊपर को उठी हुई तथा अष्ठीला के सदृश कठोर और आनाह के लक्षणों से युक्त होती है उसे **अष्ठीला** कहते हैं। वा० नि० ११ अ०। नाभि के नीचे उत्पन्न हुई इधर उधर चलती हुई अथवा अचल जो एक ही स्थान में रहे ऐसी पत्थर की बटिया के समान कड़ी और ऊपर को कुछ लम्बी और आड़ी, कुछ ऊँची हो और अधोवायु, मल, मूत्र इनको रोकने वाली गाँठों को **वाताष्ठीला** कहते हैं। जो अत्यन्त पीड़ा युक्त वायु, मूत्र, मल को रोकने वाली और जो तिरछी प्रगट हुई हो उसको **प्रत्यष्ठीला** कहते हैं। मा० नि० वा० व्या०। वाग्भट्ट के अनुसार तिरछी और ऊपर को उठी हुई ग्रंथि को प्रत्यष्ठीला कहते हैं। वा० नि० ११ अ०।

(२) शूकरोग भेद। लक्षण-जो कड़ी और भीतर से विषम ऐसी वायु के कोप से पिडिका हो वह **अष्ठीलिका** है। यह विषयुक्त शूकों से होती है। सु० नि० १४ अ०।

(३) उत्तरापथ प्रसिद्ध वर्तुलाकार पाषाण खण्ड (जे ज्वरः) वा पत्थर की गोली। लोहार की लोहे की दाँती, अस्त्र विशेष। गयदास।

(४) प्रॉस्टेट ग्रंथि विशेष। (Prostate gland.)

अष्ठि(ष्ठी)वान् ashṭhi,-shṭhí,-ván-सं० पुं० (१) शूक रोग विशेष। लक्षण—जो कड़ी और भीतर से विषम ऐसी वायु के कोप से पिड़िका हो वह 'अष्ठीलिका' है। यह विष युक्त शूकों से होती है। सु० नि० १४ अ०। देखो—अष्ठीलिका। (२) जानु। (knee) रा० नि० व० १८।

अष्ठीवान्,-त् ashṭhíván,-t--सं० पुं० घुटना, जानु। (Knee) सु० शा०। अथर्व०। सू० ६। २१। का० १०।

अष्ठीला दाह asṭhhílá-dáha-हिं० पुं० प्रोस्टेट ग्रंथि प्रदाह। (Prostatitis)

अष्ठीला विकार ashṭhílá-vikára--हिं० पुं० प्रोस्टेट ग्रंथि के रोग। (Diseases of the prostate).

अष्ठीला वृद्धि ashṭhílá-vriddhi-हिं० स्त्री० प्रोस्टेट ग्रंथि का बढ़ जाना, वाताष्ठीला। (Prostatic enlargement.)

अष्ठीलास्थित अश्मरी ashṭhílásthita-ashmarí-हिं० स्त्री० प्रोस्टेट ग्रंथि स्थित अश्मरी। (Prostatic calculi) देखो—अश्मरी वा प्रोस्टेट।

असंक्लिन्नः asanklinnah-सं० त्रि० सम्यक् रूप से आर्द्र नहीं अर्थात् जो पूर्णतः क्लेदयुक्त (तर) न हो। यथा—"पिंडीकृतमसंक्लिन्नम्।" भा० पू० १ भा०।

असंयोग asanyoga-हिं० पुं० भिन्न, अनमेल।

असंलग्न asanlagna-हिं० वि० जो मिला न हो, असंयुक्त, अमिल।

असकत asakata-हिं० स्त्री० आलस्य, उर्ध्वांस। (Drowsiness, slothfulness.)

असकती asakatí-हिं० पुं० आलसी, ढीला। (Drowsy, lazy.)

असकुट asakuṭa-लैरक, कलम, कंपकी-पं० (चनाब नदी)। मेमा०।

असखी asakhí-सं० स्त्री० अयुग्म। (Azygos) फ़र्द-अ०।

असगन्द asaganda } -हिं० संज्ञा पुं०
असगन्ध asagandha } अश्वगंधा।
(Physalis flexuosa.)

असगंध चाछुरी asagandha-cháchhurí-(१) वट, बर्गद, बड़। (Ficus Bengalensis.) असाम्बु-म०। (२) असगंध। (Withania somnifera.)

असजद áasajada-अ० (१) सुवर्ण। सोना -हिं०। Gold (Aurum.)। (२) जवाहिरात (जैसे-याक़ूत, ज़बरजद आदि)। (Gems.)। (३) स्थूल वा मोटा ऊँट (A fat camel.)

असजर áasajara-अ० टिड्डी। (A locust).

असढ़िया asadhiyá-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अषाढ़] एक प्रकार का लंबा साँप जिसकी पीठ पर कई प्रकार की चित्तियाँ होती हैं। इसमें विष बहुत कम होता है।

असथन asathana-हिं० संज्ञा पुं० [?] जायफल-डिं०।

असनः asanah-सं० पुं० } (१)
असन asana-हिं० संज्ञा पुं० }
विजयसार, बीजकः। Pterocarpus marsupium, *Roxb.*। देखो—विजयसार। भा० पू० १ भा० वटादि व०। (२) छाग कर्णवत् पत्रशाल वृक्ष विशेष, पीतशाल, पीतशालः। प० मु०। असन, असना, आसन असन। र० मा० रत्ना०। पियाशाल -हिं०। Terminalia tomentosa, *Bedd.*। -बं०। अइन्, असणा, वढि लुरिया -महo। संस्कृत पर्याय—परमायुधः (श), महासर्ज्जः, सौरिः, बधूकपुष्पः, प्रियकः, बीजवृक्षः जीवकः, प्रियसालकः, अजकर्णः, वनेसर्ज्जः। "असनो बीजकः कटाख्यः स्वनामाख्यातः।" सु० सू० ३८ अ०। गुण—कटु, उष्ण, तिक्त, वातनाशक, सारक तथा गलदोष नाशक है। रा० नि० व० ६। २३। कुष्ठ, विसर्प, श्वित्र (कुष्ठ भेद), प्रमेह, गुह्य कृमि, कफ तथा रक्तपित्त-नाशक है और त्वच्य, केश्य तथा रसायन है। भा० पू० १ भा० वटादि व०। सि० यो० राज्य० चि० एलादिमन्थ। वृन्द०। "निम्बासन शाल सारान्।" वा० सू० १५ अ० असनादि व०। "असन तिनिश भूर्ज।" भा० म० ४ भा० योनिरोग चि०। "स्वर्जिकाप्रमन त्र्यहम्।" देखो—आसन। (३) जीवकद्रुम। मे० नत्रिक। (४) बक वृक्ष, अगस्तिया (Agati-grandiflora.)। (५) बाणतरू आदि। -क्ली० (६) क्षेपण। मे० नत्रिक।

नोट—आयुर्वेदीय निघंटुकार प्रायः असन और विजयसार दोनों का वर्णन संस्कृत शब्द असन के ही अन्तर्गत किए हैं; परन्तु परस्पर बहुत कुछ समानता रखते हुए भी ये पृथक् पृथक् द्रव्य हैं। अस्तु, इनका वर्णन यथा स्थान किया जाएगा। आयुर्वेद में असन उपर्युक्त दोनों संज्ञाओं के पर्याय स्वरूप प्रयुक्त हुआ है, जिनमें से (१) आसन, असना-हिं०। आशान पियाशाल-बं०। (Terminalia tomentosa, *W.* & A.) ले०। और (२) वि(बि)जय-(जे)सार, बीजक, बीजा-हिं०, पीतशा(सा)ल -बं०। Pterocarpus marsupium, *D. C.* (Indian kino tree.)-ले० है।

इसके निर्यास को हिन्दी में विजयसार निर्यास वा हीरादोखी तथा अरबी में दम्मुलअख़्वैन हिंदी और लैटिन में Pterocarpus marsupium, *D. C.* (Gum of- Indian kino.) कहते हैं।

काइनो के पर्याय—दम्मुल्अख़्वैन-अ०, हिं०। ख़ूने सियावशान-फ़ा०। kino (The drug-Draggons' blood.)

असन asana-अ० जल का स्वाद तथा गंध बदल जाना।

असन áasana-अ० पुरातन वसा। (Old fat.)

असनपर्णिका,-र्णी asana-parniká,-rni -सं० स्त्री० (१) अपराजिता-सं०, बं०।

(Clitorea ternatea.) मराठी। अ० टी० भे०। (२) पटसन, रसुनिया घास।

असनपुष्पः,-कः asana-pushpah,-kah -सं० पुं० षष्टिक धान्य जाति भेद। साठी भेद। सु० सू० ४६ अ०।

असनमल्लिका asana-malliká-सं० स्त्री० रामसर-हिं०। ढापर माली बं०। (Echites dichotoma.) इ० मे० मे०। देखो—भद्र-वल्ली।

असना asaná-गु० }
असन asana " } असगंध, अश्वगंधा। (Withania somnifera.) इं० मे मे०।

-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अशन] एक वृक्ष जो शाल की तरह का होता है। इसके हीर की लकड़ी दृढ़ और मकान बनाने के काम आती है तथा भूरापन लिए हुए काले रंग की होती है। इस पेड़ की पत्तियाँ माघ फाल्गुन में झड़ जाती हैं। पीतशाल वृक्ष। Terminalia tomentosa, *Bedd.*)

असनादिगणः asanádi ganah-सं० पुं० पीतशाल, तिनश, भोजपत्र, पूतिकरञ्ज, खदिरसार, कदर (खैरसारकी आकृतिवाला श्वेतसार), शिरिष, शीशम, मेषशृंगी, त्रिहिम (चन्दनत्रय अर्थात् श्वेत, रक्त व पीत चन्दन), ताड़, ढाक, अगर, वरदारु, शाल, सुपारी, धवपुष्प, इन्द्रयव, अजकर्णी और अश्वकर्णी।

गुण—ये श्वित्र कुष्ठ,कफ, कृमिरोग पाण्डुरोग, प्रमेह तथा मेद सम्बन्धी दोषों को दूर करते हैं। वा० सू० १५ अ०।

असंताप asantápa-सं० त्रि० संताप या क्लेशरहित। अथर्व०।

असन्धानकर asandhána-kara-हिं० त्रि० पुं० संधान निवारक।

असन्न asanna-अ० कक्ष दुर्गन्धि। वह मनुष्य जिसके कक्ष से दुर्गन्धि आती हो।

असब áasab-अ० (ए० व०) अअ्साब (ब० व०) पै, पुट्ठा-उ०। नाड़ी, बोध तन्तु, ज्ञानतन्तु-हिं०। नर्व (Nerve.)-इं०। देखो नाड़ी।

असब इश्तियाक़ी áasaba-ishtiyáqí-अ० असब अश्फ़ाक़ी। यह मस्तिष्क की चतुर्थ नाड़ी है जो मस्तिष्क से आरम्भ होकर नेत्र में चक्षु के वक्रोर्ध्व पेशी में समाप्त होती है। पैथेटिक नर्व (Pathetic nerve.) इं०।

असब ज़ाजिअ् áasaba-zájiá-अ० अस्ब-बुर्रियह् वल्मिअ्दह्, असब मुतरद्दिदह्, लौटने वाला पुट्ठा। आमाशय फुफ्फुसीया नाड़ी, अस्त व्यस्त बोधतन्तु। (Pneumogastric nerve, Vagus nerve.)

असब ज़ौक़ी áasaba-zouqí-अ० असब लिसानी व बलऊ.नी, जिह्वाकण्ठनाड़ी। (Glossopharyngeal nerve.)

असब नुखाई इज़ाफ़ी áasaba-nukháái-izáfí-अ० सौषुम्न सहायक नाड़ी। (Spinal accessory nerve.)-इं०।

असब बस्री áasaba-basrí-अ० असबनूरी, असब मुजव्वफ़, असबह् मुजव्वफ़ह्। चाक्षुषीया नाड़ी, आलोक सम्बन्धी नाड़ी, देखने की नाड़ी, दृष्टिनाड़ी। (Optic nerve.)

असब मुजव्वफ़ áasaba-mujavvafa-अ० असबह् मुजव्वफ़ह्। (Optic nerve.) देखो—असब बस्री।

असब वजिही áasaba-vajihí-अ० मौखिकी नाड़ी। (Facial nerve.)

असब वर्की कबीर áasaba-varkí-kabíra -अ० अस्बह् वरीज़ह्, महा कटिनाड़ी। (Great sciatic nerve.)

असब वर्की सग़ीर áasaba-varkí-saghíra-अ० लघु कटि नाड़ी। (Small sciatic nerve.)

असब शम्मी áasaba-shammí-अ० उस्स्तुशम्म। घ्राण नाड़ी। (Olfactory nerve.)

असब शिर्की áasaba-shirkí-अ० असब हमदर्दी। पिंगल नाड़ी। (Sympathetic nerve.)

असब समई āaṣaba-samāí--अ० असबतु-स्समूअ्। श्रावणी नाड़ियाँ। (Auditory nerve.)

असब सुलासी वजही āasaba-sulásí-vajhí--अ० त्रिपार्श्विका नाड़ी। (Trifacial nerve.)

असबह् āaṣabah-अ० नाड़ी, बांधतन्तु। (Nerve.)

असबहे ज़ाइक़ह् āaṣabahe-záiqah-अ० स्वाद नाड़ी, जिह्वाकंठ नाड़ी। (Glossopharyngeal nerve.)

असबहे नूरियह् āaṣabahe-núriyah-अ० चाक्षुषीया नाड़ी, दृष्टि नाड़ी। (Optic nerve.)

असबहे बासिरह् āaṣabahe-báṣirah-अ० चाक्षुषीया नाड़ी, दृष्टि नाड़ी। (Optic nerve.)

असबहे मुजव्वफ़ह् āaṣabahe-mujavvafah-अ० दृष्टिनाड़ी। (Olfactory nerve.)

असबहे शाम्मह् āaṣabahe-shámmah-अ० घ्राण नाड़ियाँ। (Olfactory nerve.)

असबहे सामिअह् āaṣabahe-sámiāah-अ० श्रावणी नाड़ियाँ। (Auditory nerve.)

असबर āasabara-अ० नर चीता। (A tiger.)

असब(व)रग asba(v)raga
असबर्ग asabarga
--हिं० संज्ञा पु० [फ़ा०] स्पृक्का : (See--Sprikká) ख़ुरासानकी एक ऊंची घास जिसमें पीले या सुनहले फूल लगते हैं। सुखाए हुए फूलों को अफ़ग़ान व्यापारी मुलतान में लाते हैं, जहाँ वे अकलबेर के साथ रेशम रँगने के काम में आते हैं।

असबा āaṣaba--अ० लबलाब भेद।

असबान āasabana--अ० खजूर भेद। (A kind of date)

असबाब asabába--अ० (ब० व०), सबब (ए० व०) कारण। हेतु। निदान।

असमदृष्टि asama-drishti--हिं० स्त्री० (Astigmatism.) दृष्टि दोष। ख़लल-बसर, ख़ललुन्नज़र--अ०। ख़राबिये नज़र-फ़ा०। नज़र की ख़राबी- उ०।

यह एक प्रकार का दृष्टि विकार है जिसमें एक ओर की दृष्टि तो ठीक होती है; परन्तु दूसरी ओर की दृष्टि में निकट दृष्टि वा दूर दृष्टि के विकार होते हैं। प्राचीन हकीमों ने इसका पृथक् वर्णन नहीं किया, प्रत्युत इसे एक प्रकारका दृष्टिनैर्बल्य माना है।

असमंत asamanta--हिं० संज्ञा पुं० [सं० अश्मंत] चूल्हा।

असम asama--हिं० वि० [सं०] जो सम या तुल्य न हो। जो बराबर न हो। असदृश।

असमनेत्र asama netra--हिं० वि० [सं०] जिसके नेत्र सम न हों, विषम हों।

(२) दृष्टि दोष : देखो – **असमदृष्टि**।

असमबाण asama-váṇa--हिं० संज्ञा पुं० [सं०] पंचबाण। कामदेव।

असमवायीकारण asamaváyi-káraṇa-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] समवायी कारण का आसन्न कारण।

असमर्थता asamarthatá-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] सामर्थ्यहीनता, दुर्बलता, निर्बलता।

असमशर asamaṣhara-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव।

असमानध्रुव asamána-dhruva--हिं० पु० (Unlike Poles)

असम् āasam-अ० हाथ पाँव घना जाना।

असम्म asamma-अ० वह नासिका जिसका छिद्र संकुचित हो।

असम्म aṣamma-अ० (ए० व०), सुम्म (ब० व०) बधिर, बहरा। (A deaf)

असर asara-हिं० संज्ञा पुं० [अ० असर] (१) प्रभाव। (२) दिन का चौथा पहर।

असरबक्का asarabacca-असारून, तगर। म० अ०। फा० इ० २ भा०।

असरा asará-हिं० संज्ञा पु'० [हिं० असाढ़] आसाम देश के कछारों में उत्पन्न होने वाला एक प्रकार का चावल।

असरी āasarí-अ० शाक भेद। (A sort of vegetable)

असरी asarí-नैपा० भूतकेश, लान्दचात-नम्ब०। बेबिना।

असरुः asaruh-सं० पु'० भूकदम्ब, भूई, कदम्ब। कुकुरशोङ्गा-बं०। (See--bhúkadamba) श० च०। (२) कुकरौंधा। A plant (Celsia.)

असरेली asarelí-सिन्ध० फराश-पं०। छोटी माईं, लाल झाऊ-हिं०। (Tamarix auriculata, Valil.) इं० मे० प्लां०।

असल asala हिं० वि० [अ०] शुद्ध, बिना मिलावट का।-संज्ञा पु'० दे० असल।

असल asal-अस्तमूर्बर्दी, दख, दीस, लख, नरज। सूम, हमार, बज़ा। Bullrush (इं० हैं० गा०)

अस. (स.) ल asa,-s-la-अ० सरह। चेकोनर्दा-ते०। (Cadaba Farinosa. Forsk.) फा० इ० १ भा०। इं० मे० मे०। देखो-कैडेबा फैरिनोसा।

असलम् asalam-सं० क्लीं० (१) लौह। Iron (Ferrum)। (२) अस्त्र। (A weapon in general.) वै० निघ०।

असला asala-हिं० संज्ञा स्त्री० सर्प भेद।

असलियह् āsaliyyah-अ० सलअह् लय्यिहनह्। नर्म रसौली का एक भेद है जो दबाने से दब जाती है, किन्तु पुनः उभर आती है। (Soft-fibroma.)। देखो-सलअह लय्यिहनह्।

असलिया asaliya-बम्ब०, गु० चन्द्रसूर, अहलीव। (Lepidium sativum.) इं० मे० मे०।

असवः asavah-सं० पु'० प्राण। जीव। अथर्व०।

असह asah हिं० संज्ञा पु'० हृदय। -डिं०।

असा āasa-अ० बलह। कसूस।

असाअस āasáāsa-अ० साही, सेही-हिं०। ख़ारपुश्त--फ़ा०। (A porcupine)

असाइफिल asyphil-इं० देखो-एर्टॉक्ज़िलेट।

असाउर्राई āasáurráāi अ० बीजकन्द, केसरी, -हिं। बतबात (Polygonum auriculare, Linn.)। फा० इं० ३ भा०। म० अ०।

असाक़ल āasáqala
असक़ल āasaqala
—अ० कुमात (खुम्बी)। Agaricus.

असाक़ asáqú-रू० ज़र्दालू। देखो-ख़ूबानी।

असाग़ह् asághah-अ० आहार अर्थात् खाद्य एवं पेय का कंठ से नीचे उतरना।

असाग़र्बह् aságharbah-अ० औषधि का अनुभव तथा निर्माण-क्रम।

असाढ़ asárha-हिं० संज्ञा पु'० [सं०] आषाढ़ का महीना। वर्ष का चौथा महीना।

असाढ़ी asárhi-हिं० वि० [सं० आषाढ़] अषाढ़ का। -संज्ञा स्त्री० (१) वह फ़सल जो अषाढ़ में बोई जाए। ख़रीफ़।

असातुन्नह्ल asátunnahal-अ० शहद, मधु। Honey (Mel.)

असा.तून asátún-अ० मद्य भेद। वह सुरा जो अंगूर के पानी, शहद तथा कतिपय उष्ण औषधियों के योग द्वारा निर्मित होता है।

असात्म्यः asátmyah-सं० त्रि०
असात्म्य asátmya-हिं० संज्ञा पु'०
प्रकृत्यसुखावह, प्रकृति विरुद्ध पदार्थ। वह आहार विहार जो दुःखकारक और रोग उत्पन्न करने वाला हो।

-क्लीं० सात्म्य विपरीत।

असाध्य asádhya-हिं० वि० [सं०] (१) आरोग्य होने के अयोग्य। जिसके अच्छे वा चंगे होने की सम्भावना न हो। जैसे—यह रोग असाध्य है। (२) जिसका साधन न हो सके। न करने योग्य। दुष्कर। कठिन।

असान asána-महृ०, बम्ब० विजयसार(-ल)। (Pterocarpus marsupium, Roxb.) फा० इं० १ भा०।

असान asána-म हृ०, कना० खरका, लम्कना, खाज हिं०। (Briedelia Retusa, *Spreng.*) फा० इं० ३ भा०।

असानः asáno-बम्ब० खाजा-हिं०। कर्नेलिया। (Briedelia montana.)

असान्दु asándu-मह०
असान्धु asándhu-मह० } अश्वगंधा, असगंध। (Withania Somnifera.)

असाफ़ीर āaṣáfír-अ० रोदे, आँतें, अंतड़ियाँ -उ०। आन्त्र-हिं०। (Intestines.)

नोट—असाफ़ीर का शाब्दिक अर्थ पक्षी व चिड़ियाँ है। चूँकि उदर की अँतड़ियों में जब क़राक़र (आटोप)होता है तब ऐसा शब्द उत्पन्न होता है, जैसा कि पक्षियों का। इस कारण आंत्र को उक्त नाम से अभिहित किया गया।

असाब āaṣáb-अ० हरिण। (Deer)

असाबअ aṣábaā
असाबीअ aṣábīā } -अ० (ब० व०), अस्बअ (ए० व०), अंगुश्तान, अंगुलियाँ। (Fingers)

असाबअ क़न्यान aṣábaā-qanyán-अ० फ़रअमिश्क। रामतुलसी, अम्बल-हिं०। (Ocimum gratissimum)

असाबअ ग़ुदादी aṣábaā-ghudádí-अ० एक लम्बे प्रकार का अंगूर।

असाबअ फ़ुऊ्न aṣábaā faraūna-अ० एक प्रकार का पाषाण है जो यमन अमान देश में पैदा होता है।

असाबअ हुर्मुस aṣábaā-hurmasa-अ० सूरिंजान पुष्प। Hermodactylus, (Flower of-)

असाबइर्रसानी aṣábaāirraṣání-अ० एक बूटी की जड़ है जिसका रंग हरित तथा श्वेत मिश्रित होता है।

असाबइल् उसूल aṣábaāil-uṣúla-अ० तृण तथा वृक्ष के बीच की एक प्रकार की बूटी है। यह एक गज ऊँची तथा पुष्प व कलिकायुक्त होती है।

असाबइल् फ़तियात aṣábaāil-fatiyáta -अ० तुख़्म बालंग, फ़रनूफ़लेबुस्तानी (अबु-हनीफ़)। Calamintha clinopodium *Benth.*, (the wild Basil.) फा० इं० ३ भा०।

असाबइल् मलिक aṣábaāil-malika-अ० इक्लीलुल् मलिक। (Melilotus officinalis.)

असाबइस्सफ़र aṣábaāiṣṣafara-अ० हंसपदी, गोधापदी। (Vitis pedate.)

असाबीअ aṣábíā-अ० (ब० व०), अस्बअ (ए० व०), अंगुलियाँ। (Fingers.)

असाबीअ asábíā-अ० (ब० व०), उस्बूअ (ए० व०) एक सप्ताह, सात दिवस, सात बार।

असामयिक asámayika-हिं० वि० [सं०] जो समय पर न हो। जो नियत समय से पहिले वा पीछे हो। बिना समय का। बेवक़्त का।

असामर्थ्य asámarthya-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] (१) शक्ति का अभाव। अक्षमता। (२) निर्बलता। ना ताक़ती।

असामूसा āasámúsá-अ० लाल साग।

असारम् asáram-सं० पुं०, क्लो०
असार asára-हिं० संज्ञा पुं० }
(१) काष्ठ अगुरु चन्दन। (A kind of Agar.) रा० नि० व० १२। (२)अगुरु, अगर (Aloe wood.)। (३)जैपाल, जमालगोटा (Croton tiglium, *Linn.*)। (४)एरण्ड वृक्ष, (अरण्डी, अण्डी)रेंड़ी का पेड़। (Ricinus communis, *Linn.*) श० च०।

असार asára-हिं० वि० [सं०] (१) सार रहित। निःसार। (२) शून्य। ख़ाली। संज्ञा पुं० दे० असारम्।

असार āasára } -अ० भेड़िया । (A
असारह् āasárah } wolf.)

असार राई asára-rái-अज़ुबार । (Polygonum bistorta.)

असार दधि asára-dadhi-सं० स्त्री० नवनीत अर्थात मक्खन निकाले हुए दूध से जमाया हुआ दही ।

गुण—असार दधि ग्राही, शीतल, वातकारक हलका, विष्टम्भी, दीपन, रुचिकारक तथा ग्रहणी रोगनाशक है । भा० पू० दधि व० ।

असारबक्का, कामन asarabacca-common-ई० असारून, तगर ।

असारा asárá-सं० स्त्री० कदली वृक्ष, केला । Plantain (Musa sapientum.) वै० निघ० ।

असारून asárún-अ०, लि० तगर भेद, पारसीक तगर । तुक्कर-हि० । (Asarun Europæum.)

हवेर वा जटामांसी
(N. O. *Valerianeæ.*)

उत्पत्ति-स्थान—फ़ारस, अफ़ग़ानिस्तान तथा भारतवर्ष । भारतवर्ष में इसका आयात अफ़ग़ानिस्तान से होता है ।

नोट—तगर, ह्वेर तथा जटामांसी प्रभृति एक ही वर्ग की ओषधियाँ हैं और परस्पर इनमें बहुत कुछ समानता है । अतएव कतिपय ग्रन्थों में इसके निश्चीकरण में बहुत भ्रम किया गया है । इसके पूर्ण विवेचन के लिए देखो—तगर वा ह्वेर ।

वानस्पतिक-वर्णन यह एक बूटी है जिसके पत्र लबलाब अर्थात् इश्क़पेचा के पत्र के समान होते हैं । भेद केवल यह है कि इसके पत्र क्षुद्रतर एवं अतिशय गोल होते हैं । इसके पुष्प नील वर्ण के, पत्तों के बीच में जड़ के समीप होते हैं । इसके बीज बहुसंख्यक और कुसुम्भ बीजवत् होते हैं । इसकी जड़ें सीधा, ग्रंथियुक्त और सुगंधियुक्त होती हैं । (औषधों में यह जड़ ही काम में आती है) ।

प्रकृति—द्वितीय कक्षा के अंत में उष्ण व रूक्ष है । किसी किसी ने तीसरी कक्षा में उष्ण एवं द्वितीय कक्षा में रूक्ष और किसी ने तीसरी कक्षा में रूक्ष लिखा है । **स्वरूप**—पीताभ । **स्वाद**—तीक्ष्णतायुक्त वा बेस्वाद । **हानिकर्त्ता**—फुप्फुस को । **दर्पघ्न**—मवेज़ मुनक्का । **प्रतिनिधि**—कुलिञ्जन एवं शुंठि । **मात्रा**—४ माशे । **प्रधान-कर्म**—मस्तिष्क बलप्रद और शीत प्रकृति को ऊष्मा प्रदान करता है ।

गुण, कर्म, प्रयोग—इसमें काफ़ी ऊष्मा होता है । अतएव यह यकृदावरोधोद्घाटक है । यह प्लीहा काठिन्य को दूर करता है; क्योंकि अपनी उष्णता के कारण यह उसकी सख़्ती के माद्दे को घुलाता है । इसी हेतु पुरातन कूल्हे के दर्द (वजउल वरिक) एवं वात-तन्तुओं के शीत जन्य रोगों को लाभप्रद है । मूत्र एवं आर्त्तव का प्रवर्त्तन करता है; क्योंकि इसमें द्रावक (तल्तीफ़) एवं विलायन (तहलील) की शक्ति पाई जाती है । (नफ़ा०)

यह तारल्यताजनक है एवं ऊष्माको बढ़ाता है तथा शोथ एवं वायुको लयकर्त्ता, मस्तिष्क, आमाशय, यकृत, वाततन्तुओं, प्लीहा एवं वृक्क को बल प्रदान करता है । पित्तज एवं श्लेष्मज माद्दा को मल द्वारा उत्सर्जित करता तथा जीर्णज्वर को दूर करता और मूत्र व आर्त्तव की प्रवृत्ति करता है । म० मु० ।

उपर्युक्त औषधों के साथ वा अकेले इसका पीना अपस्मार, अर्दित, पक्षाघात, इस्तरख़ा (वातग्रस्तता), श्लेष्मज आक्षेप, अवसन्नता, मस्तिष्क एवं बोधक तन्तुओं की उष्णता एवं शक्ति के लिए हितकर है । गर्भाशय सम्बन्धी शिरःशूल एवं विस्मृति को लाभप्रद है । आन्तरिक शूल प्रशामक, जलोदर, अवरोध जन्य पांडु, यकृत् एवं प्लीहा शोथ के लिए उत्तम, गर्भाशय-शोधक एवं मूत्रावयव, वृक्काश्मरी तथा वस्त्यश्मरी को लाभप्रद है । आर्त्तव एवं मूत्ररोध, संधिवात पार्श्वशूल, गृध्रसी, और निक्रस को लाभप्रद है । बकरी या ऊँट के दूध के साथ शीत-

काम शक्ति का उद्दीपन कर्त्ता है। मधुत्वारि (मा-उल् अस्ल) के साथ एक मिस्क़ाल (४॥ मा०) की मात्रा में रेचक है। इसके तेलके सूँघनेसे विस्मृति रोग नष्ट होता है। इसका अञ्जन क़र्निया की बीमारियों को, इसका अवचूर्णन वृश्चिक दंश की ओर वंक्षण एवं पेड़ू पर इसका प्रलेप कामशक्ति के बढ़ाने में परीक्षित है। यु० मु०।

असारून अस्फ़र asárúna-aṣfara-सिरि० आस बर्री, जंगली हब्बुल् आस का वृक्ष।

असारून कैण्डेन्सी asarun candensi-ले० रीशए-वाला-फ़ा०। असारून-सिरि०।

असारून युरोपिअम् asarun europæum -ले० असारून, तगर भेद।

असारूने हिन्दी asárune hindí-फ़ा० तगर (पादिका)म्। सुम्बुल जिब्ली-अ०। (Valeriane wallichii, *D. C.*)

असारूम युरोपिअम् asarum europæum, *Linn.*-ले० तुक्किर-हिं०। असारून-अ०। मेमो०।

असालस asálasa-यू० फ़ासरा-अ०। शिवलिङ्गी -हिं०। (Bryonia laciniosa.)

असाला asála-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० अशालिका] हालों, चंसुर।

असालिया asáliya-गु०, बम्ब०
असालियो asáliyo-गु० } चन्द्रसूर। (Lepedium sativum.)

असालीज āasálíja-अ० बारीक शाखाएँ या बेलें जो वृक्षों पर लिपटती हैं।

असालूँ asálúṅ-जयपु० चन्द्रसूर। (Lepidium sativum.)

असाल्यूँ asályúṅ-जय० चन्द्रसूर। (Lepedium sativum.)

असावरी asávarí-हिं० संज्ञा स्त्री० कबूतर, कपोत (A kind of pigeon.)। (२) तूल (रूई) वस्त्र भेद। (A kind of cotton cloth.)

असास asása-अ० बुनियाद, जड़, नीवँ-उ०। फ़ाउण्डेशन (Foundation)-इं०।

असास āasása-अ० भेड़िया। (A wolf.)

असासनू asásanú-कश्ज। (Straw-berry) -इं०। (Fagaria-Indica.) ले०। इं० हैं० गा०।

असि asi-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] खंग, तलवार, खाँड़ा, कटार। (A sword, a scimitar.)

असि asi-बर० (प० ब०), असिमियाआ-या संयुक्ताक्षरों में (त्रि, "ब० व०" जिमियाआ) गुठली, अस्थि। (Nut, stone.) स० फ़ा० इं०।

असिकम् asikam-सं० क्ली०
असिक asika-हिं० संज्ञा पुं० } चिबुक और ओष्ठ का मध्यभाग। होंठ और ठुड्डी के बीच का भाग। हे० च०।

असिक्निः asiknih-सं० (१) गहरे कृष्ण रंग की गाय। (२) पृथ्वी। अथर्व०। सू० १३०। २। का० २०।

असिक्निका,-क्नी asikniká,-kní-सं० स्त्री० अवृद्धान्तः पुर पेषी, अन्तःपुर में रहनेवाली वह दासी जो वृद्धा न हो। मे० नत्रिक। दासी। जटा०।

असिगण्डः asigandah-सं० पुं० क्षुद्रोपाधान। जटा०।

असितः asitah-सं० पुं०
असित asita-हिं० संज्ञा पुं० } (१) धववृक्ष, धातकी। धाओया गाछ-बं०। (Woodfordia floribunda.) र० मा०। रत्ना०। -क्ली० (२) काष्ठ अगुरु। (A kind of Agar.) वै० निघ०। (३) पिंगला नाम की नाड़ी। (४) कालसर्प। अथर्व०। सू० ४। १३। का० १०। (५) एक प्रकार का सर्प। अथर्व०। सू० १३। ५। का० ५। -त्रि, (हिं० वि०) जो सफ़ेद न हो। कृष्ण वर्ण। काला। (Black.)

असितकम् asitakam-सं० क्ली० काष्ठागुरु।

(See-káshṭháguru.) भा० म० २ भा० आ० या० ।

त्रि० (हिं० वि०) जो सफेद न हो । कृष्ण वर्ण, काला । (Black.)

असितका asitaká-सं० स्त्री० कृष्ण अपराजिता । नील अपराजिता-बं० । काली गोकर्णी-मह० । वै० निघ० ।

असितकादि चूर्णम् asitakádichúrṇam -सं० क्ली० आमवातघ्न चूर्ण विशेष ।

असिताङ्ग भैरवोरसः asitánga-bhairav-o-rasaḥ-सं० पुं० पारा, गंधक, हरताल प्रत्येक समान भाग लेकर धतूरे के रस से भावित करें। फिर पारे के बराबर बच्छनाग लेकर उसके क्वाथ से ३ भावना दें; इसी तरह त्रिकुटा के क्वाथ और बिजौरे के रस की एक एक भावना दें ।

मात्रा-१ रत्ती ।

गुण-सन्निपात, नवज्वर, दंष्ट्रविष, और विशेष कर धनुर्वात में अदरख के रस के साथ दें । रस० यो० सा० ।

असितज फलः asitaja-phalaḥ-सं० पुं० नारिकेल वृक्ष, नारियल । (Cocos nucifera.) वै० निघ० ।

असित तिलः asita-tilaḥ-सं० पुं० कृष्ण तिल, काला तिल । (Sesamum nigrum) च० द० अर्श-चि० ।

असितद्रुमः asita-drumaḥ-सं० पुं० कृष्ण ताल, काला ताड़ । (Borassus flabelliformis.) वै० निघ० ।

असित पल्लवा asita-pallava-सं० स्त्री० भूमि जम्बु, भूईं जामुन, नदी जम्बू वृक्ष ।

असितफलः asita-phalaḥ-सं० पुं० मधु नारिकेल । (A kind of cocoanut tree.)

असितम् asitam-सं० क्ली० या० सं० ११ । ८१ । सफ़ेदकोढ़ । अथर्व० । सू० २३ । ४ । का० १ ।

असितवल्ली asita-vallí-सं० स्त्री० नीलदूर्वा, नीली दूब । (Cynodon dactylon.) वै० निघ० ।

असित वेत्रम asita-vetram-सं० क्ली० श्यामालता, कृष्ण सारिवाँ (Ichnocarpus frutescens.) वा० र० अमृतादि कषाय ।

असित सारः,-कः asita-sáraḥ,-kaḥ-सं० पुं० तिन्दुक वृक्ष, तेंदू । (Diospyros cordifolia.) वं० निघ० ।

असिता asitá-सं० स्त्री० (१) ह्रस्वनीली वृक्ष । (A small var. of Indigo plant.) रा० नि० व० ४ । देखो—असिलका । (२) कालातिविषा, काली निशोथ। (Turpethum nigrum)-त्रि० कृष्ण वर्ण वाला, काले रंग का । अथर्व० ।

असितांग asitánga-हिं० त्रि० [सं०] काले रंग का ।

असिताञ्जनी asitánjaní सं० स्त्री० कृष्ण कार्पास, काली कपास । (Gossypium nigrum.)रा० नि०व० ४ । देखो-कालाञ्जनी ।

असिताननः asitánanaḥ-सं०पु० कपि,वानर । (A monkey.) हे० च० ।

असितावल मोटा asitábala-moṭa-सं० स्त्री० कृष्ण जयन्ती, काली जयन्ती । काल जयन्ती-बं० । Sesbania aculeatia (The black var. of-)

गुण—कृष्ण जयन्ती रसायन को करने वाली है । इसके अन्य गुण जयन्ती के गुण के समान हैं । वै० निघ० ।

असिताभ्रशेखरः asitábhra-ṣhekharaḥ-सं० पुं० नीली वृक्ष, नील । (Indigofera Indica) त्रिका० ।

असितालया asitálaya-सं० स्त्री०(१)नीलदूर्वा, नीलीदूब (Cynodon dactylon.) । (२)श्यामालता । (Ichnocarpus frutescens.) वै० निघ० ।

असितालुः asitáluḥ-सं० पुं० नील आलु, नीले रंग का आलु । रा० नि० व० ७ ।

असितोत्पलम् asitotpalam-सं०क्ली० नीलोत्पल । (Nymphæa stelata,) रा० नि० व० १० ।

असितः asitah-सं० पुं० अमरबेल, बेल्लतर, अरुणा।

असिदंष्ट्रः,-कः asidanshtrah,-kah-सं० पुं० मकर। (See-makarah) त्रिका०।

असिदन्तः asidantah-सं० पुं० (१) मकर। (See-makar.)। (२) कुम्भीर, घड़ियाल। (The crocodile of the Ganges.) वै० निघ०।

असिद्धः asiddhah-सं० त्रि० } बेपका, आम,
असिद्ध asiddha-हिं० वि० } अपक्व,
कच्चा। रत्ना०।

असिधेनुः,-कः asidhenuh,-kah-सं० स्त्री० (A knife) छुरिका। (See-chhuriká) हला०। हे० च०।

असिपत्रः asipatrah-सं० पुं० } (१)
असिपत्र asipatra-हिं० संज्ञा पुं० }
सेहुण्ड वृक्ष, थूहर। (Euphorbia nerrifolia.) म० द० व० १। (२) इक्षु, ईख। Sugarcane (Saccharum officinarum.) प० मु०। त्रिका०। (३) गुण्ड तृण विशेष, कसेरू। (Scirpus kysoor) । See-Gundah। रा० नि० व० ८। (४) "क" श्वेत दर्भ। (See-shveta-darbhah.) रा० नि० व० १४।

असिपत्र तृणम् asipatra-trinam-सं० क्ली० गुण्डा तृण, तृण विशेष। गुण्डागवत -मह०। रा० नि० व० ८।

गुण—शीतल, मधुर, कफ वातनाशक, रक्तदोष, अतिसार तथा परम दाहनाशक है। यह दीर्घ व लघु भेद से दो प्रकार का होता है। इसमें दीर्घ गुण में अधिक है। वै० निघ०।

असिपत्रिका asipatriká-सं० स्त्री० केवड़ा, केतकी। (Pandanus odoratissimus.)

असिपुच्छः,-कः asipuchchhah-सं० पुं० }
असिपुच्छ asipuchchha-हिं० संज्ञा पुं० }
(१) जलचर विशेष। मगर, शुशुक-बं०। (A kind of aquatic animal)। (२) सकुची मछली जो पूँछ से मारती है। हारा०।

असिप्ररोहः asiprarohah-सं० पुं० (Xiphoid process) असिप्रवर्द्धन। नुतूऊ् खंजरी-अ०।

असिम āasima -अ०।

असिमिना ट्रिलोबा asemina triloba-ले० पोस्ते के बीज। पापा सीड-इं०।

असिमेदः asimedah-सं० पुं० खदिर क्षुप, विट् खदिर, दुर्गन्ध खैर। गुयेबाबूला -बं०। खैरा चे झाड़-मह०। (Acacia Farnesiana, Willd.) श० र०।

असिय्यु asiyyu-अ० चिकित्सित, चिकित्सा किया हुआ, वह मनुष्य जिसकी चिकित्सा की गई हो।

असिर āasira-अ० कठोर, कठिन होना, दुःसाध्य। डिफ़िकल्ट (Difficult.) इं०।

असिरेकी asireki-तै० आमला। (Phyllanthus emblica.)

असिशिम्बी asishimbi-सं० स्त्री० गोजिया सेम, खड्गशिम्बी। रा नि०।

असी así-बर० सैंगरी गोंद।

असीउर्राई āasíurráái-अ० लाल साग, राजगिरी, रामदाना।

असीतिका asítiká-सं० स्त्री० विष्णुक्रान्ता। कैय दे० नि०।

असीतिका asítiká-सं० स्त्री० कुकरौंधा। (Blumea lacera.)

असीद asída-अ० वक्र ग्रैव, टेढ़ी गर्दनवाला।

असीदह āasídah-अ० एक प्रकार का हलुआ।

असीनूब asínúba-फ़ा० एक अप्रसिद्ध वृक्ष है। (An unimportant tree.)

असीफ़ asífa-अ० जो तनिक सी बात में दुखी हो जाए, वात प्रकृति का। नर्वस (Nervous.) -इं०।

असीफ़रह āasífarah } -अ० एक पीत
असीफ़ीरह āasífírah } वस्तु है।

असीब āasíba-अ० खजूर भेद। (A kind of date)

असीम āasíma-अ० (१) स्वेद, मैल कुचैल। (२) निशान, प्रभाव।

असीम और अर्क का भेद—स्वेद को अर्क और जब वह शुष्क होजाए तो उसे असीम कहते हैं।

असीर āaṣíra-अ० स्वरस, निचोड़, रस-हिं०। Juice (Succus.)

असीर कुप्पी āaṣíra-kuppí-अ० कुप्पी स्वरस। (Succus acalypha.)

असीर तरञ्जील āaṣíra-taranjíla—अ०

असीर बञ्ज āaṣíra-banja-अ० पारसीक यमानी स्वरस। (Succus hyocyami.)

असीर मिअ्दी āaṣíra-miádí अ० रतूबत मिअ्दी, आमाशयिक रस, रतूबत मेदा। Gastric juice.)

असीर यबरूज āaṣíra- yabrúja-अ० बिलाडोना स्वरस। (Succus Belladona.)

असीर लेमूँ āaṣíra-lemún-अ० नीबू का रस, निम्बुक स्वरस। (Succus limonis.)

असीर शौकरान āaṣíra-shúkarána-अ० शौकरान या कोनाइम स्वरस। (Succus conii.)

असीर सिन्नुल् असद āaṣíra-sinnul-asada-अ० जंगली कासनी का रस (Succus taraxaci.)

असील āasíla-अ० हस्ति शिश्न, हाथीका लिंग। (Elephant penis.)

असीली सक़ान āasílí-saqána-फ़ा० पाषाणभेद। (Coleus aromaticus.)

असीस aṣísa-अ० लगन, तसला, वह बर्तन जिसमें वस्त्र धोकर डालते हैं या जिसमें वस्त्र को धोते हैं। (Tray.)

असुः asuh-सं० पुं०
असु usu-हिं० संज्ञा पुं० } (१) प्राण, प्राणवायु। (Life, breath, the five vital breaths or airs of the body.) अम०। -क्लीo (२) चित्त। (Mind.) त्रणा०।

असुखम् asukham सं० क्ली० दुःख। (Pain, grief.) हे० च०।

असुद asuda-बं० पीपल, अश्वत्थ। (Ficus religiosa.) फा० इं० ३ भा०।

असुधारणम् asudháraṇam-सं० क्ली० जीवन, जीवन धारण।

असुन्धा asundhá-गु० असगंध, अश्वगंधा। (Withania somnifera.) इं० मे० मे०।

असुपाला asupálá-बम्ब०, गु० अशोक। (Saraca Indica. *Linn.*) फा० इं० १ भा०।

असुरम् asuram-सं० क्ली० (१) सामुद्र लवण। (Sea-salt.) मद० व० २।-पुं० (२) देवदारु वृक्ष। (Cedrus deodara.) वै० निघ० जीर्णज्वर लवंगादि।

असुर asura हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) रात्रि। (२) पृथिवी। (३) सूर्य। (४) बादल। (५) वैद्यक शास्त्र के अनुसार एक प्रकार का उन्माद जिसमें पसीना नहीं होता और रोगी ब्राह्मण, गुरु, देवता आदि पर दोषारोपण किया करता है, उन्हें बुरा भला कहने से नहीं डरता, किसी वस्तु से उसकी तृप्ति नहीं होती और वह कुमार्ग में प्रवृत्त होता है।

असुर asura-काश० राई, सर्षप। (Sinapis racemosa, *Roxb.*) इं० मे० प्लां०।

असुरः asurah-सं० पुं० "असुप्राणां रक्षयति पालयति इति भूत असुरो वैद्यः" अर्थात् जो प्राणों की रक्षा करे। प्राणदाता। प्राणाचार्य। वैद्य। अथर्व०।

असुरग्रहः asura-grahah-सं० पुं० भूत ग्रह विशेष। मा० नि०।

असुरसा asurasá-सं० स्त्री० बर्बरी, वन तुलसी। बाबुइ तुलसी-बं०। (Ocimum basilicum.) र० मा०।

असुरा asurá-सं० स्त्री० (१) रजनी, रात्रि, रात (Night.)। (२) हरिद्रा। (Curcuma longa.) मे० रत्रिक।

असुरादि अञ्जन asurádi-anjana-सं० पुं० कांसा के मैल का चूर्ण और कस्तूरी मधुयुक्त कर अञ्जन करने से सन्निपात की बेहोशी और तन्द्रा दूर होती है।

असुराह्वम्,-ह्वा asuráhvam,-hva-सं० क्लो०, स्त्री० कांस्य, काँसा। (Bronze.) इं० च०।

असुराह्वपतङ्गः asuráhva-patangah-सं० पुं० तैलपायी, तैलपायिका। तेला पोका, आशोला-बं०। "असुराह्व पतंगस्य विट्-चूर्णं मधु संयुतम्" वैद्यकम्।

असुराह्वविट् asuráhva-vit-सं० पुं० कांस्य मल, काँसे का मैल। वै० निघ० २ भा० ज्वर असुराद्यञ्जन।

असुरी asurí-सं० स्त्री० राजिका, राई। राइ सरिषा-बं०। (Brassica juncea.) ब० टी० भ०।

असुरु asuru-नैपा० तगर। (Tabernaemontana coronaria.)

असुव asuva-अ० व्रण प्रभृति पर मलहम का फाहा रखना, व्रण की चिकित्सा करना।

असुस्थः asusthah-सं० त्रि० }
असुस्थ asustha हिं० त्रि० पुं० }
रोग ग्रस्त, रोगी। (Sick.)

असुई asúí-हिं० स्त्री० अरुई। (Arum nymphacifolium.) इं० हैं० गा०।

असूतिका asútiká-वह गंडमाला जिसमें पीप न पैदा हुई हो। अथ०।

असूपा कारक asúpá-kárak-सं० फीकी।

असोई asoí-हिं० स्त्री० अरुई। (Arum nymphacifolium) इं० हैं० गा०।

असंकोचनीय asankochaníya-सं० पुं० जो दबाने के योग्य न हो। जो न दबे। (Incompressible.) अथर्व०।

असृक् asrik-सं० क्लो०, हिं० संज्ञा पुं० (१) स्पृक्का नामक गन्ध द्रव्य। See-sprikká. (२) कुंकुम, केशर। Saffron (Crocus sativus.) रा० नि० व० १२। (३) रक्त। रुधिर। शोणित। (Blood.) रा० नि० व० १८।

असृक्करः asrikkarah-सं० पुं० शरीरस्थ रस धातु, रस। (Chyle.) हे० च०।

असृक्पः,-पा asrikpah,-pá-सं० पुं०, स्त्री० जलायुका, जलौका, जोंक। Leech (Hirudo.) अ० टी० भ०।

असृगुत्थः asrigutthah—सं० पुं०, क्लो० केशर। saffron (Crocus sativus.)

असृग्गदः asriggadah-सं० पुं० कोष्ठः। (See-koshtham) वै० निघ०।

असृग्दरः asrigdarah-सं० पुं० (Menorrhagia) रक्त प्रदर। मा० नि०। सु० शा० २ अ०। देखो-प्रदर।

असृग्दर शैलेन्द्र रसः "सर्व्वाङ्ग सुन्दरः" asrigdara-shailendra-rasah- सं० पुं० रक्तप्रदरोक्त रस विशेष।

असृग्ध (ग्धा) रा asrigdha"gdhá",-rá -सं० स्त्री० चर्म, त्वचा। (Skin) अ० टी० भ०।

असृणम् asrinam—सं० क्लो० स्वर्णगैरिक, सोनगेरु-हिं०। सुवर्ण गिरि माटी बं०। Red ochre (Ferrum Haematite) वै० निघ०।

असृतम् asritam --सं० त्रि० असिद्ध, अपक्व। रत्ना०।

असृपाटी asripátí --सं० स्त्री० रक्त धारा। अ० टी० सा०।

असेक aseka—कुटक, अशोक। (Saraca Indica.)

असेन्दा asendá--हिं० तिमस, सान्दन।

अ(ए)सेप्टॉल aseptol -इं० कार्बो[illegible]काम्ल वा गंधकाम्ल (Sulpho-carbolic Acid)। देखो—कार्बलिकाम्ल (Acidum Carbolibum).

असेप्रोल aseprol } -इं० यह धूसर वर्ण
अब्रैस्टॉल abrastol } का एक चूर्ण होता है

जो कि जल और मद्यसार में सरलतापूर्वक लय हो जाता है। देखो—नैफ्थाल।

असेरेकी asereki--ते० आमला। (Phyllanthus Emblica.)

असेलू aselú--नैपा० गेम्बी। मेमो०।

असैङ् asaiṅ--बर० सैंसि, सेञ्जि। हरित, हरा। (Green.) सं० फा० इं०।

असोक asoka--हिं०, बम्ब०, ते० (१) देवदारी। मेमो०।-हिं० संज्ञा पुं०, कना० (२) अशोक, आसापाल (Jonesia asoca, *Linn.*) । (३) शांति, शोकरहितता। (Ease tranquility.)

असोका asoká--हिं० अशोक। (Saraca indica, *Linn.*)

असोकदा asokadá--कना० अशोक। (Saraca Indica, *Linn.*) इं० मे० मे०।

असोग asoga--हिं० पुं० (१) A tree (Uvaria longifolia)। (२) शांति, शोकरहितता। (Ease, Tranquility.)

असोज asoja--हिं० संज्ञा पुं० [सं० अश्वयुज्] आश्विन। क्वार। (The sixth solar month.)

असोत्थापिकापेशी asotthápikápeshí-हिं० संज्ञा स्त्री० (Levater Scapulæ.) कंधे को उठाने वाली पेशी।

असोथी asothí--ता० अशोक। (Saraca indica, *Linn.*) मेमो०।

असौंध asoundha--हिं० संज्ञा पुं० [अ=नहीं हिं० सौंध=सुगंध] दुर्गन्धि। बदबू।

असोरा asorá--बालछड़। (Nardostachys Jatamansi.)

अस्अस āasāas
अस्आस āasāás
असास āasás
} -अ० भेड़िया। (A wolf)

अस्ईरा asāírá-बिन्दाल, बंदाल, देवदाली। (Ecbellium, elatarium.)

अस्क़न्क़ूर asqanqúr-अ० देखो—सक़न्क़ूर।

अस्कतान askatán-अस्करयुलफ़र्ज-अ० (१) अस्कतान। गर्भाशय की दोनों ओर। (२) इस्कतान अर्थात् भग के दोनों किनारे या भग की दोनों ओर।

अस्कनह् askanah-अ० मि. सक़ब, बरमा, रुखानी, छिद्र करने का यंत्र। गिमलेट Gimlet-इं०।

अस्क़ना asqanna-मद्य; सुरा। (Wine.)

अस्कन्दरूस askandarús-रू० (१) प्याज़ (Onion) (२)। लहसुन। (Garlic.)

अस्क़लिया तीक़ूस asqaliyátíqus-यू० गुलनार (Punica granatum, *Linn.*)

अस्क़लानुर्रास āasqalánurrás-अ० अब्‌लाए सर, चँदिया।

अस्क़लानूस āasqalínús-अ० एक अप्रसिद्ध बूटी है जो रेतीली और पर्वतीय भूमि पर उगती है।

अस्क़लीब्यूस asqalí-byús-यू० (Asclepios) यह चिकित्सा कलाका आविष्कर्ता एवं सर्व प्रथम प्रसिद्ध निपुण यूनानी चिकित्सक है।

अस्काम्तगम् askámtagam-ता० अजमोद (Carum Roxburghianum, *Benth.*) मेमो०।

अस्कुट askuṭa-लेद्दक फलञ्ज, नंगकी-चनाब०। राइबीज़ ऑरियण्टेलि (Ribes orientale, *Pir.*), रा० वाइलोसम (R. Villosum, *Wall, Roxb.*)-ले०। ग्वालदाख, कघक, कवन-उ० प० सू०। यंगे (स्पिटि०)। (*N. O. saxifrageæ.*)

उत्पत्ति-स्थान—काशमीर, बल्तिसथाना।

प्रभाव तथा उपयोग—इसका फल (Berry) एक या दो की संख्या में एक समय खाने से ग्रामीण लोगों के विचारानुसार यह उत्तम विरेचक है। इं० मे० प्लां०।

अस्कूल āasqul
असाक़ूल āasáqul
} -अ० कुमात, खुम्बी। (Agaric)

अस्कुलह āasqulah-अ० सफ़ेद संगरेज़ा।

अस्ख़ार askhár-रू० तोदरी । (Lepidium iberis, *Linn.*)

अस्ज़द āasjad-अ० सुवर्ण, सोना। Gold (Aurum.)

अस्टिलेगो मैडिस ustilago-maidis, *Leveille.*)-लै० । कॉर्न स्मट (Corn smut), कॉर्न अर्गट (Corn Ergot)-इं० । वन्ध्या मकाई, भुट्टा का कण्डो (लोढ़) -हिं० ।

उत्पत्ति-स्थान—भुट्टा (Zea mays) का पराश्रयी कीटाणु ।

प्रयोगांश—तुषरहित फङ्गस ।

रासायनिक-संगठन तथा लक्षण-ये विषम गोलाकार समूह रूप में जो कभी कभी छः इंच मोटे होते हैं, पाए जाते हैं । इन पर एक स्याही मायल झिल्ली होती है, जिसके भीतर असंख्य, श्याम धूसर वर्ण के गोलाकार लघु ग्रंथिवत् दाने (बीज) होते हैं ।

गंध तथा स्वाद-अप्रिय । इसमें एक उड़नशील क्षार, एक स्थायी तैल और एक स्क्लीरोटिकाम्लवत् ऐन्द्रियकाम्ल इत्यादि होते हैं ।

औषध-निर्माण—विचूर्णित कॉर्न अर्गट-१० से २० ग्रेन (=५-१० रत्ती); तरल सत्व—१० से २० मिनिम (बूँद) ।

प्रयोग - अर्गट ऑफ़ राई के समान औषधीय गुण-धर्म में, जिसके यह बहुत समान है तथा जिसे बहुत से चिकित्सक तत्तुल्य लाभदायक और अर्गट ऑफ़ राई की अपेक्षा अपने प्रभाव में अधिकतर अनुरूप मानते हैं, यह उत्तम गर्भशातक एवं रक्तस्थापक गुणपूर्ण है । इसके द्वारा उत्पन्न गर्भाशयिक आकुंचन सदा विरामसहित होता है तथा अर्गट के समान लगातार वा वलय नहीं होता । पैसिव रक्तस्राव में अर्गट की अपेक्षा यह श्रेष्ठतर ख़्याल किया जाता है और शुक्रमेह, विचर्चिका (Psoriasis), आर्द्रकंडु (Eczema), तन्तुमय अर्बुद और तत्तुल्य व्याधियों में भी यह लाभदायक विचार किया जाता है । पी० वी० एम० ।

अस्तम् astam-सं० क्ली०
अस्त asta-हिं० संज्ञा पुं०
मृत्यु । (Death.) हे० च० ।-वि० वि० नष्ट । ध्वस्त ।

अस्तन astan-हिं० संज्ञा पुं० दे० स्तन ।

अस्तबल astabal-हिं० संज्ञा पुं० [अ०] घुड़साल । तबेला । (A stable.)

अस्तबूब astabúb-फ़ा० एक वृक्ष है ।

अस्तमती astamatí-सं० स्त्री० शालपर्णी । (Hedysarum gangeticum.) श० र० ।

अस्तमन बेला astaman-belá-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] सायंकाल । सन्ध्या का समय ।

अस्तमित astamit-हिं० वि० [सं०] (१) नष्ट । मृत । (२) तिरोहित । छिपा हुआ ।

अस्तर astar-हिं० संज्ञा पुं० [फ़ा० । सं० स्तृ=आच्छादन, तह] (१) नीचे की तह वा पल्ला । भितल्ला । उपल्ले के नीचे का पल्ला ।

अस्तर astar-फ़ा० खच्चर । (A mule.)

अस्तरक astarak-फ़ा० सिलाजीत । (Common storax)-इं० । इं० हैं० गा० ।

अस्तरखा astarkhá--लाल हड़ताल (मैनसिल वा मनःशिला) । (Realgar.)

अस्तरङ्ग astaranga-फ़ा०
अस्तरज astaraj-मु० अ०
यब्रूज, बिलाडोना । Belladona (Mandragora officinalis.) इं० हैं० गा० ।

अस्तरा astará-हिं० पुं० आप्टा । Seeáptá ।

अस्तराई astaráí-तु० गोलमिर्च । (Black pepper.)

अस्तरून astarun-अ० गुलाब भेद, गुलेनस्त्रीन । (Rosa rubiginosa) इं० हैं० गा० ।

अस्तलस astalas-यू० क़फ़रुल् यहूद । (A kind of stone.)

अस्तलोबान astalobán-हिं० संज्ञा पुं०

सिलारस। (Western frankincense) म० अ०। फा० इं० १ भा०।

अस्ताकीस astákís-फ्रां० एक बालिश्त के बराबर (ऊँची) एक अप्रसिद्ध बूटी है।

अस्ताते सुर्ब astáte surba-फ्रां० शीशक शर्करा, शीशक लवण-हिं०। ख़ल्लातुर्रसास्-अ०। (Plumbi acetas.)

अस्ताफ़ायस astáfáyas | **अस्तून** astúna | -यु० गाजर, गज्जर। The carrot (Daucus carrota.)

अस्ताफ़ालियूस astáfáliyús-यू० जंगली गाजर। (Wild carrot.)

अस्ताफ़ियूस astáfiyús-यू० (१) मवेज़, द्राक्षा, मुनक्का। Uvæ, Syn. Uvæ passæ (Raisins.)

अस्ताफ़ियूस अग़्रिया astáfiyús-aghriyá-यू० पहाड़ी मवेज़, पर्वतीय द्राक्षा। (Wild raisins).

अस्ताम astám-फ़ौलाद। (Steel)

अस्ति asti-सं०, बं०, मल० अस्थि, हड्डी। Bones (Ossa) स० फा० इं०।

अस्तीकरि astí-kari-मल० अस्थि अंगार, हड्डी का कोयला। (Animal charcoal.) स० फा० इं०।

अस्तूम astúma-फ़ा० नज्ज, सूम। (Bullrush.) इं० हैं० गा०।

अस्तूस āastúsa-अ० वृक्षभेद। (A sort of tree.)

अस्त्रम् astram-सं० क्लीं० | **अस्त्र** astra हिं० संज्ञा पुं० | (१) आयुध, शस्त्र, हथियार। चाप, धनुष (A weapon in general; A missile weapon.) (२) करवाल। ढाल। मे० रद्विक। (३) व्याघ्र नख (The tiger's nail.)। (४) वह हथियार जिससे चिकित्सक चीर फाड़ करते हैं।

अस्त्र चिकित्सकः astra-chikitsakah-सं० पुं० अस्त्रवैद्य, शस्त्र वैद्य, अस्त्र द्वारा रोग दूर करनेवाला, जर्राह, मलहम पट्टी करनेवाला। सर्जन (Surgeon.)-इं०। सु०।

अस्त्र चिकित्सा astra-chikitsá-सं० (हिं० संज्ञा) स्त्री० (१) वैद्यक शास्त्र का वह अंग जिसमें चीर फाड़ का विधान है। सर्जरी (Surgery.)-इं०। इल्मुल् जराहत, फ़न्ने जर्राही-अ०।

(२) चीर फाड़ करना। अस्त्र प्रयोग। अस्त्र द्वारा व्रण क्षत आदि की चिकित्सा करना। जर्राही। इसके आठ भेद हैं:—(क) छेदन=नश्तर लगाना। (ख) भेदन=फाड़ना। (ग) लेखन=खरोचना, छीलना। (घ) वेधन=सूई की नोक से छेद करना। (च) मेषण=धोना, साफ़ करना। (छ) आहरण=काटकर अलग करना। (ज) विश्रावण=फ़स्द खोलना। (झ) सीना=सीना या टाँका लगाना। सु०।

अस्त्रजित् astrajit-सं० पुं० कवाटवक्र वृक्ष। कवाट बेटु, कराड़िया-हिं०। रत्ना०। See-kaváṭa-vakram.

अस्त्रवेद astraveda-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] वह वेद जिसमें अस्त्र बनाने और प्रयोग करने का विधान हो। धनुर्वेद।

अस्त्र वैद्यः astra-vaidyah-सं० पुं० अस्त्र चिकित्सक। (A surgeon.) वै० निघ०।

अस्त्रशाला astra-shálá | **अस्त्रागार** astrágára | -हिं० संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ अस्त्र शस्त्र इकट्ठे रक्खे जाएँ।

अस्त्रसम् astrasam-सं० क्लीं० एक धातु तत्व विशेष। (Strontium.)

अस्त्राघातः astrághátah-सं० पुं० अस्त्र प्रयोग, अस्त्र चलाना, हथियारसे चोट पहुँचाना। वै० निघ०।

अस्थायी astháyí-हिं० वि० [सं] अस्थिर, नाशवान। (Temporary.)

अस्थायी दाँत astháyí-dánta-हिं० पुं० (Decidus or milk-teeth.) पतनशील वा दुग्ध दन्त। अस्नानुल्लब्न-अ०।

अस्थावर asthávara–हिं० वि० चर, चल। (Moveable, moving.)

संज्ञा पु० जंगम। जो स्थावर न हो अर्थात् चर वा चलने फिरने वाले प्राणी यथा मनुष्य, पशु, पक्षी आदि।

अस्थि,-कम् asthi,-kam–सं० क्लो० }
अस्थि asthi–हिं० संज्ञा स्त्री० }
हड्डी, धातु (तन्तु) विशेष। Bone (Os) अज़्म–अ०। पूर्ण विवेचन हेतु देखो–हड्डी।

अस्थिकर्क्कटिका asthi-karkkatiká–सं० स्त्री० एक वृक्ष विशेष।

अस्थिका asthiká–सं० स्त्री० लघु अस्थि।

अस्थिकृत् asthi-krit–सं० पु० वह जिससे अस्थि बने, अस्थिका बनाने वाला, मेद धातु, रस रक्तादि सात धातुओं में से चतुर्थ धातु विशेष। (Adeps.) हे० च०।-त्रि० अस्थि का (बना)

अस्थिकृत् अन्तःस्थ कर्ण asthi-krit-antahstha karna–हिं० संज्ञा पु० (Osseous lebyrinth.) अस्थिमय गहनम्।

अस्थिगत ज्वरः asthi-gata-jvarah–सं० पु० तदाश्रित ज्वर, हड्डी में रहने वाला ज्वर, अस्थि के आश्रय से रहने वाला ज्वर।

लक्षण–अस्थिभेद, कूजन अर्थात् घुरघुर शब्द का होना, श्वास, अतिसार, वमन तथा शरीर का इधर उधर पटकना ये लक्षण अस्थिगत ज्वर में देख पड़ते हैं। वै० निघ०।

चिकित्सा—वमननाशक औषध, वस्तिकर्म, अभ्यंग और उद्वर्तन आदि द्वारा इसका प्रतीकार करें।

अस्थिग्रंथिः asthi-granthih—सं० पु०, स्त्री० ग्रन्थिरोग।

अस्थिच्छलितम् asthi-chchhalitam–सं० क्लो० उक्त नाम का कांडभग्न (बीच से अस्थिभग्न) अस्थि विशेष। यदि अस्थि एक तरफ नीची हो जाए और दूसरा टूटा हुआ भाग ऊँचा हो तो उसे "अस्थिच्छलित" कहते हैं। सु० नि० १५ अ०। देखो-भग्नम्।

अस्थिजः asthijah–सं० पु० मज्जा। (Bone marrow.) रा० नि० व० १८।

अस्थिजननी asthi-janani–सं० स्त्री० वसा, मेद धातु। (Adeps.) वै० निघ०।

अस्थितिस्थापक asthitisthápaka–हिं० वि० (Inelastic.) जो स्थितिस्थापक न हो। जो लचीला न हो।

अस्थितुण्डः asthi-tundah–सं० पु० एक पक्षी विशेष। (A bird.) श० मा०।

अस्थितोदः asthi-todah–सं० पु० (Ostalgia.) अस्थि पीड़ा, अस्थि में सूची भेदनवत् पीड़ा होना। हड़फूटन, हड्डी का दर्द। वै० निघ०। अलमुल् अज़्म–अ०।

अस्थिधरकला asthidhara-kalá }
अस्थिधरा asthi-dhará } –सं०

स्त्री० अस्थ्यावरक। (Periosteum.) सिमहाक़, ग़रीह, ग़िशाअ अज़्मी–अ०।

अस्थिधातुः asthi-dhátuh–सं० अस्थि तन्तु (Osseous tissue.) नस्ज अज़्मी–अ०। देखो–हड्डी।

अस्थिपञ्जरः asthi-panjarah–सं० पु० कङ्काल, ठठरी, ढाँचा। स्केलेटन (Skeleton)–इं०। रा० नि० व० १८।

अस्थिफलः asthi-phalah–सं० पु०, पनस वृक्ष, कटहल। (Artocarpus integrifolia.)–इं०।

अस्थिभङ्गः asthi-bhangah–सं० पु०, क्लो० (१) अस्थि विश्लेष, हड्डीका टूट जाना। इन्किसारुल्अज़्म, कस्र–अ०। (Fracture.)। कांडभग्न तथा सन्धिमुक्ति (संधिच्युति, संधि भ्रंश) भेद से यह दो प्रकार का होता है। पुनः संधिमुक्त के ६ तथा कांडभग्न के १२ भेद होते हैं। सु० चि० ३ अ०। विस्तार के लिए उन उन पर्यायों के आगे देखें। देखो—भग्नम्।

(२) अस्थिसंहार, हरसंकरी। (Vitis quadrangularis.)

अस्थिभञ्जक asthi-bhanjaka–हिं० संज्ञा पु० (Osteoclast.) अस्थिध्वंसक।

अस्थिभक्षः asthi-bhakshah—सं० पुं० (१) कुक्कुर, कुत्ता (A dog.) । (२) शृगाल । (A jackal) हारा० ।

अस्थि भक्षा asthi-bhakshá-सं० स्त्री० पर्ण-बीज, ओषधि विशेष, हेमसागर । घायमारी, घायपात-मह०। ज़ख़्मे हयात-फ़ा० ।(Kalanchœ laciniata, *D. C.*) वै० निघ० । देखो-ज़ख़्मे हयात ।

अस्थिभेद asthi-bheda-हिं० संज्ञा पुं० अस्थि भंग हड्डी का टूटना (Fracturing, breaking or wounding a bone.)

अस्थिमज्जा asthi-majjá-हिं० स्त्री० (Bone-marrow.) अस्थिमार । देखो-मज्जा ।

अस्थिमय गहनम् asthimaya-gahanam -सं० क्लो० अस्थिकृत अन्तःस्थ कर्ण । (Osseous labyrinth.)

अस्थि मर्म्म asthi-marmma-सं० क्लो० मर्म विशेष । ये संख्या में आठ हैं । यथा—कटि में तरुण नामक २, नितम्ब में २, अंसफलक में २ तथा दो दोनों शंखो (कनपुटियों) में हैं । सु० शा० ५ अ० ।

अस्थिर asthira-हिं० वि० इसका शाब्दिक अर्थ चंचल, अस्थायी (Usteady, Unstable.) है, किन्तु वैद्यक की परिभाषा में इससे अभिप्राय उस संधि से है जिसमें गति हो सकती है अर्थात् चल या चेष्टावंत संधि । (Moveable-joints.) देखो—संधि ।

अस्थिर कठोरता asthira-kathoratá-हिं० संज्ञा पुं०(Temporary hardness.) क्षणिक कठिनता । अस्थायी कठोरता ।

अस्थिर वृक्क asthira-vrikka-हिं० संज्ञा पुं० (Moveable kidney) गतिमान वृक्क विशेष ।

अस्थिवत् asthivat-हिं० वि० अस्थि के समान, हड्डी जैसा । (Bony, osseous.)

अस्थिवल्क asthi-valka-हिं०संज्ञा पुं०(Cortex of bone.) अस्थि का सबसे बाहर का (पृष्ठ के नीचे का) भाग । यह बहुत ठोस, कठिन और मज़बूत होता है । इसको ही अस्थिवल्क कहते हैं ।

अस्थिविकाश asthi-vikásha-हिं० संज्ञा पुं० (Ossification.) अस्थि बनना । तअज़्ज़ुम --अ० ।

अस्थि विकाश केन्द्र asthi-vikásha-kendra-हिं० संज्ञा पुं० सेण्टर ऑफ़ ऑसिफ़िकेशन (Centre of ossification.) इं० । मर्कज़ तअज़्ज़ुमियह् -अ० । वह स्थान जहाँ कारटिलेज (कुरी) के भीतर सबसे पहले अस्थि बनती है, अस्थि विकाश केन्द्र कहलाता है ।

अस्थिवेष्ट asthi-veshta-हिं० संज्ञा पुं० अवस्थ्यावरक, अस्थियों के ऊपर सौत्रिक तन्तु से निर्मित चढ़ी हुई एक झिल्ली विशेष । (Periosteum) सिम्हाक़-अ० ।

अस्थिशोथ asthishotha-हिं० संज्ञा पुं० अस्थिप्रदाह । (Osteitis)

अस्थिशोष asthi-shosha-हिं० संज्ञा पुं० शोष रोग, सूखा रोग, अस्थि नैर्बल्य । (Dryness & decay of the bones; rickets.)

अस्थिशृङ्खला,-लिका asthi shrinkhalá,-liká-सं० स्त्री० अस्थिसंहार । हड़जोड़, अस्थिशृङ्खल-हिं० । हाड़जोड़ा-बं० । गुण-वृष्य, श्लेष्माजनक, मधुर, रक्तपित्त और वायुनाशक है । मद० व० ७१ ।

अस्थिसङ्घातः asthi-sanghátah-सं० पुं० अस्थिमेलन स्थल, हड्डी के शृङ्गाटक । ये १८ इस प्रकार हैं, यथा तीन-तीन एक-एक पाँव में (एक गुल्फ, एक घुटना तथा एक जंघामूल में) हैं और ३-३ एक एक हाथ में (१ पहुँचे, १ कुहनी और १ खांदे में) अर्थात् कुल १२ हुए । एक त्रिक स्थान में और एक शिर में ऐसे सब १४ हुए (किसी किसीके मत से ये अस्थिसंघात १८ होते हैं अर्थात् १४ प्राक्कथित और १ वंक्ष में जिसे कौड़ी कहते हैं तथा १ दोनों नितम्बों के बीचमें जिसे दूबी कहते हैं और दो दोनों अंसकूटो

पर इस प्रकार कुल १८ हुए)। सु० शा० ५ अ०। देखो—सन्धिः।

अस्थि सन्धानकरः asthi-sandhána-karah-सं०पुं० रसोन लशुन, लसून। Garlic (Allium sativum.) वै० निघ०।

अस्थिसन्धान जननी asthi-sandhána-janani-सं० स्त्री० अस्थिसंहार। हड़ जोड़ --हिं०। (Vitis quadrangularis.) वै० निघ०।

अस्थि सन्धिः asthi-sandhih-सं० पुं० (१) अस्थि सम्मेलन स्थान, हड्डियों का जोड़ (Articulation, joint.)। (२) मर्म स्थान। देखो—सन्धिः।

अस्थि समुद्भवः asthi-samudbhavah--सं० पुं० मज्जा। (Bone-marrow.) वै० निघ०।

अस्थिसंधि शोथ asthi-sandhi-shotha--हिं० संज्ञा पुं० (Osteo-arthritis.) सन्धिस्थ अस्थिप्रदाह।

अस्थि सन्धिकः asthi-sandhikah-सं० पुं० अस्थिसंहार, हड़ जोड़। (Vitis quadrangularis.) भैष०।

अस्थिसम्बन्धनः asthi-sambandhanah-सं० पुं० राल, धूप। धुनो-बं०। (Resin) व० निघ०।

अस्थि सम्भवः asthi-sambhavah-सं० पुं०, क्ली०(१) मज्जा (Bone-marrow.)। (२) शुक्र धातु। (Semen virile.) वै० निघ०।

अस्थि सम्भव स्नेहः asthi-sambhava-snehah

अस्थिसारः asthi-sárah सं० पुं० मज्जा। (Bone-marrow.) वै० निघ०।

अस्थि संस्थान asthi-sansthán-हिं० पुं० हड्डियाँ, अस्थि समुच्चय, अस्थिविभाग। (Osteology, skeletal system.) मब्ह़स़ुल इज़्राम-अ०। चिकित्साशास्त्र का वह भाग जिसमें अस्थियों का वर्णन किया जाए।

अस्थि संहतिः asthi-sanhatih-सं० पुं० अस्थिसंहार। (Vitis quadrangularis.) मद० व० ७।

अस्थि संहारः,-कः asthi-sanhárah,-kah--सं० पुं० (१) हस्तिशुण्डि, हाथीसुण्डी। हाती शुँड़े-बं०। (Heliotropium indicum, *Linn.*)

(२)हाड़ जोड़ (ड़ा), हड़जोड़ा, हर (ड़)संकरी, हड़ संहारी, हड़जोड़ी, हरसङ्कारि, हड़जुरी, नल्लेर-हिं०। नल्लेर-द०। वज्रवल्ली,ग्रन्थिमान्, कुलिशं, अमरः (र०), शिरालकः (श.), अस्थि संहारी, वज्राङ्गी, अस्थि श्रृङ्खला-सं०। हड़ जोड़ा, हाड़िच, हाड़जोड़ा, हाड़भांगा-बं०। वाइटिस क्वाड्रैङ्गयुलेरिस, (Vitis quadrangularis, *Wall.*), सिसस क्वाड्रैङ्गयुलेरिस Cissus quadrangularis-ले० विग्नी एट रेजिन्स डी गैलम Vigne et Raisins de Galam-फ्रां०। कोड़िए, पेरण्डेइ-कोड़िए, पिरण्डै-ता०। नल्लेरु-तीगे, नुल्लेरुतिगट्ट, नाल्लेई-ते०। वेरण्टा, पिरण्ट, इस्गङ्गालम परेण्ड --मल०। मङ्गरूलि --कना०। चौधारि नरधारी,हाडसांकल, हाड़सांक्लिा, हड़संकर-गु०। शन्नाल्नन-लेप्-बर०। हिरेस्स-सिं०, सिंहली। चौधारी, त्रिधारी, कांडवेल,हाड़ संधी-मह०। हाड़ सांखल-दे०। तिधारी, कांडवेल, हाड़जोड़ा-कों०। हड़ संकर, हाड़जोड़ा, नअर, कांडवेल, चोधारी-बम्ब०।

द्राक्षावर्ग

(*N. O. Ampelideæ.*)

उत्पत्तिस्थान-भारतवर्षके उष्ण प्रधान प्रदेश, पश्चिम हिमवती मूल मे (जैसे कुमायूँ) लंका और मलक्का द्वीप पर्यन्त तथा अरब। दक्षिण भारत के जंगलों में यह अधिकता के साथ होता है।

वानस्पतिक-वर्णन—अस्थिसंहार वृक्षाश्रयी वा भूलुण्ठित होता है जिसमें सूत्रवत् मूल होते हैं। काण्ड (नवीन) गम्भीर वा पांडु हरिद्वर्ण, मसृण, श्रृङ्खल वा मालाकार, चतुष्कोण क्वचित्

त्रिकोण, पत्राकार और संधियुक्त होते हैं। प्रत्येक जोड़ विभिन्न लम्बाई का (२ से ४ इंच) होता है। यदि कांड से एक ग्रंथि काटकर मृत्तिका से ढाँक दी जाए तो उससे एक सुदीर्घ लता उत्पन्न हो जाती है। इसीलिए इसका एक नाम काण्डवल्ली है।

(Stipule) चन्द्राकार, अखंड; पत्र अत्यंत स्थूल एवं मांसल, विषमवर्ती, साधारणतः त्रिखंडयुक्त, हृदण्डाकार, (Serrulated); वृन्त ह्रस्व; फूल छत्राकार, लघु वृन्तक, श्वेत व ह्रस्व; पराग केशर ४; दल ४, प्रशस्त; फल मटरवत् वर्तुलाकार, अत्यन्त* चरपरा वा कटुक (यह उसमें पाए जानेवाले एक प्रकार के अम्ल के कारण होता है), एक कोष युक्त, एक बीजयुक्त; बीज एकान्तिक, अर्धाण्डाकार एक कृष्णधूसर स्पञ्जवत् कोष से आवृत्त होता है; पुष्प ह्रस्व, श्वेत और वर्षा के अंत में प्रगट होते हैं।

नोट—* इसके कांड में भी यही स्वाद होता है। इसकी एवं द्राक्षा की अन्य जाति के पौधे की उक्त चरपराहट खटिक काष्ठेत (Calcium oxalate.) के सूच्याकार स्फटिकों की विद्यमानता के कारण होती है। पौधे के शुष्क होने पर ये स्फटिक टूट जाते हैं एवं जल में क्वथित करने से वे दूर हो जाते हैं।

प्रयोगांश—सर्वांग (काण्ड, पत्र आदि)।

मात्रा-शुष्क चूर्ण, १८ रत्ती वा २ मा०।

प्रतिनिधि—पिपरमिण्ट और कृष्णजीरक।

अस्थिसंहार के गुणधर्म तथा उपयोग

आयुर्वेदीय मत से—

वात कफ नाशक, टूटी हड्डी का जोड़नेवाला, गरम, दस्तावर, कृमिनाशक, बवासीरनाशक, नेत्रों को हितकारी, रूखा, स्वादु, हलका, बलकारी, पाचक और पित्तकर्त्ता है। भा० पू० १ भा०।

शीतल, वृष्य, वातनाशक और हड्डी को जोड़ने वाला है। म०द० व० १।

वज्रवल्ली (हड़जोड़) दस्तावर, रूक्ष, स्वादु (मधुर), ऊष्णवीर्य, पाक में खट्टा, दीपन, वृष्य एवं बलप्रद है तथा कृमि और बवासीर को नष्ट करता है। अर्श में विशेष रूप से हितकारक और अग्निदीपक है। चतुर्धारा काण्डवल्ली (चौधारा हड़जोड़) अत्यंत उष्ण और भूत बाधा तथा शूल नाशक है एवं आध्मान, वात तिमिर, वातरक्त, अपस्मार और वायु के रोगों को नष्ट करती है। (बृहन्निघण्टुरत्नाकर)

अस्थिसंहार के वैद्यकीय व्यवहार

चक्रदत्त-भग्नरोग में अस्थिसंहार—संधियुक्त अस्थिभग्न में अस्थिसंहार के कांड को पीसकर गोघृत तथा दुग्ध के साथ पान करें। यथा—
"सघृतेनास्थिसंहारं* । संधियुक्तेऽस्थिभग्ने च पिबेत् क्षीरेण मानवः" । (भग्न-चि०)

भावप्रकाश-वायु प्रशमनार्थ अस्थिसंहार मज्जा—अस्थिसंहार के डांटा की छालको छीलकर उस लकड़ी का चूर्ण १ मा० तथा छिलकारहित किसी कलाय की दाल (वातहर होने के कारण माष कलाय अर्थात् उड़द उत्तम है) आध मासे ले दोनों को सिल पर बारीक पीसकर तिलके तैल में इसकी मगौरी बनाकर खाएँ। ये मगौरी अत्यंत वात नाशक हैं। यथा—
"कांडं त्वग्विरहितमस्थिशृङ्खलायामाषाद्द्विदलमकुञ्चकं तदर्द्धम्। सम्पिष्टं तदनु ततस्तिलस्य तैले सम्यक् वटकमतीव वातहारि॥" भा०। च० द० अ० पि०, अश्र शुद्धौ।

वक्तव्य

चरक, राजनिघण्टु तथा धन्वन्तरीयनिघण्टु में अस्थिसंहार का नामोल्लेख दृष्टिगोचर नहीं होता है। सुश्रुतोक्त भग्नरोग चिकित्सा में अस्थिसंहार का पाठ नहीं है। चक्रदत्तके समान वृन्द ने भग्नाधिकार में इसका व्यवहार किया है। राजवल्लभ लिखते हैं—
"अस्थिभग्नेऽस्थिसंहारो हितो बल्योऽनिलापहः।"
अर्थात् हड्डियों के टूट जाने में अस्थिसंहार हितकर है एवं यह बल्य और वातनाशक है।

यूनानी मतानुसार—

प्रकृति—उष्ण व रूक्ष। स्वरूप-नवीन हरा और शुष्क भूरा। स्वाद-विकठा व किञ्चित् तिक्त एवं कषाय।

हानिकर्त्ता—उष्ण प्रकृति को। दर्पघ्न--घृत।
प्रतिनिधि—जोंक की पित्ती।
प्रधान कर्म—सबल भग्नास्थिसन्धानक।
मात्रा—२ मा०।

गुण, कर्म, प्रयोग—प्राचीन यूनानी ग्रंथों में हड़जोड़का उल्लेख नहीं पाया जाता। अर्वाचीन लेखकों ने अपने ग्रंथों में जो इसके संक्षेप वर्णन दिए हैं वे केवल आयुर्वेदीय वर्णन की प्रति लिपि मात्र हैं। वनस्पति विषयक कतिपय उर्दू ग्रंथों में लिखा है कि "प्रायः गुणों में यह गुडूची के समान है।" परन्तु यह परीक्षणीय है। इससे पारद की भस्म बनती है। बु० मु०। म० मु०।

नव्यमत

मोहीदीन शरीफ़--इन्द्रिय व्यापारिक कार्य-आमाशय बलप्रद (पाचक) तथा परिवर्त्तक (रसायन)। उपयोग—अजीर्ण में इसका लाभदायक प्रयोग होता है।

औषध-निर्माण-मुरब्बा—नवीन तथा कोमल कांड के छोटे छोटे टुकड़े करें और प्रत्येक टुकड़े को कोंचनी से कोंच डालें (जिस प्रकार आमला का मुरब्बा बनाते समय आमलोंको एक विशेषयंत्र द्वारा कोंचते अर्थात् उसकी चारों ओर गम्भीर छिद्र कर डालते हैं)। पुनः उन टुकड़ों को जलमें कोमल होने तक क्वथित करें। इसके बाद पानी को फेक दें और टुकड़ों को हलके हाथों से निचोड़ लें। फिर उनको चूर्णोदक वा १ ड्राम (३॥ मा०) से ४ आउंस पर्यन्त कार्बोनेट ऑफ सोडा विलीन किए हुए जल में क्वथित करें और पूर्ववत् तरल को फेंक दें। इस क्रम को दो तीन बार और काम में लाएँ अथवा इस क्रम को तब तक दोहराते रहें जब तक कि वे किसी प्रकारकी चरपराहटसे शून्य एवं कोमल न होजाएँ। तदनन्तर उनको स्वच्छ उष्ण जल से धोकर और कपड़े से पोंछ कर शर्करा के साधारण शर्बत में डालकर सुरक्षित रक्खें। सप्ताह पश्चात् यह प्रयोग में लाने योग्य हो जाएगा।

मात्रा—२ से ४ ड्राम तक २४ घंटे में २ या ३ बार। डॉक्टर महोदय लिखते हैं कि इस ग्रंथ में उक्त पौधे के वर्णन देने का कारण यह है कि टिप्लिकेनमें एक आदमी जोकि चिरकारी एवं हठीले (Obstinate) अजीर्ण से चिरकाल से पीड़ित था ४० दिवस तक उक्त मुरब्बाके सेवन के पश्चात् वह बिलकुल रोग मुक्त होगया। (मे० मे० मै०)

डीमक—इसके ताजे पत्र एवं काण्ड का कभी कभी शाक रूप से व्यवहार होता है। पुरातन होने पर ये चरपरे हो जाते हैं तब इनमें औषधीय-गुण धर्म होने का निश्चय किया जाता है। फा० इं० १ भा०।

ऐन्स्ली लिखते हैं कि तामूल चिकित्सक अग्निमांद्य जन्य कतिपय आन्त्र रोगों में इसके शुष्क काण्ड के चूर्ण का व्यवहार करते हैं। ये नशक्त परिवर्तक माने जाते हैं और लगभग २स्क्रूपल (२॥ मा०)की मात्रामें इसका चूर्ण किञ्चित् तण्डुलोदक के साथ दो बार दैनिक व्यवहार में आ सकता है।

फॉस्कहल (Forskahl) वर्णन करते हैं कि मेरुदंड विकार से पीड़ित अरब लोग इसके कांड की शय्या बनाते हैं।

कर्णस्राव (पूति कर्ण) में इसके कांड स्वरस द्वारा कर्ण पूरण करते हैं तथा नासार्श वा नासाक्षतमें इसे नासिकामें टपकाते हैं। अनियमित ऋतुदोष तथा स्कर्वी के लिए भी यह प्रख्यात है। प्रथम रोग में २ तो० स्वरस (पौधे को उष्ण करके निकाला हुआ), २ तो० घृत और १-१ तो० गोपीचन्दन (श्वेत मृत्तिका विशेष) तथा शर्करा में मिलाकर दैनिक उपयोग में आता है। **फा० इं० १ भा०। मे० मे० ऑफ इं० आर० एन० खोरी।**

बैल्फर (Balfour) राजयक्ष्मा में इसके कांड का कल्क व्यवहृत होता है।

आर० एन खोरी—अस्थिसंहार रसायन तथा उत्तेजक है। यह अजीर्ण, अग्निमांद्य एवं स्कर्वी रोग में व्यवहृत होता है। आर्द्र अस्थिसंहार को पीसकर अस्थि विश्लेष, अस्थिभग्न किम्वा क्षत पर प्रक्षेप करते हैं। (Materia

Medica of India- R. N. khori. Part 11., p. 136.)

आर० एन० चोपरा एम० ए०, एम० डा०—इसके पत्र एवं कांड दक्षिण भारतवर्ष में कढ़ी के साथ व्यवहार में आते हैं। मद्रास में पौधे के नवांकुरों को अन्तर्धूमाग्नि द्वारा भस्म कर इसको अजीर्ण एवं अग्निमांद्य में बरतते हैं। (इं० ड्रु० इं० पृ० ६०२)

अस्थिसंहारिका,-री asthi-sanhárika,-rí सं० स्त्री० अस्थिसंहार। (Vitis quadrangularis.) भा० पू० १ भा०।

अस्थि संहृत् asthi-sanhrit—सं० पुं० अस्थिसंहार। (Vitis quadrangularis) च० द०। भैष० भग्न-चि०।

अस्थिसारः asthi-sárah-सं० पुं० मज्जा। (Bone-marrow)। रा० नि० व० १८।

अस्थिसार स्थिता asthisár-sthitá—सं० स्त्री० मज्जा। (Bone-marrow.)

अस्थिस्नेहः asthi-snehah-सं० पुं० मज्जा। मज्जन। (Bone-marrow) रा० नि० व० १८।

अस्थिस्नेह संज्ञः asthisneha sanjnyah -सं० पुं० मज्जा। मगज-हिं०। (Marrow, Pith.) रा० नि० व० ७।

अस्थिस्नेह सञ्चारः asthi-sneha-sanchárah-सं० पुं० मज्जा, मज्जन। (Marrow)

अस्थिस्रंसं asthisransam--सं० क्लो० हड्डियों को तोड़नेवाला। अथर्व०।

अस्थिक्षय asthi-kshaya-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] अस्थिशोष, अस्थिनैर्बल्य। (Rickets.)

अस्थीकरणम् asthíkaranam-सं० क्ली० अस्थि विकाश, अस्थि बनना, कुरीं का अस्थि बनना। (Ossification)। तअज़्ज़ुम-अ०।

अस्थीयम् asthíyam-सं० क्लो० (Ossein.) अस्थि का।

अस्थूरि asthúri-दोष रहित। अथर्व०। सू० १३०।

अस्थ्यङ्गारः asthyangárah—सं० पुं० हड्डीका कोयला। (Animal charcoal, Bone charcoal.)

अस्थ्यन्तरीय asthyantaríya-सं० त्रि० (Interosseous) हड्डी के भीतर का।

अस्थ्यान्तरिका पेशियाँ asthyántariká peshiyán-सं० स्त्री० (Interossei) अस्थि के भीतरी तरफ़ की पेशी।

अस्थ्यावरक asthyávaraka
अस्थ्यावरण asthyávarana
-हिं० पुं० अस्थिवेष्ट। (Periosteum) सिम्हाक़, ग़रीय-अ०। अस्थियों के ऊपर सौत्रिक तन्तु से निर्मित एक झिल्ली चढ़ी रहती है इसको अस्थ्यावरक कहते हैं।

अस्द asda-अ० शेर, सिंह। (A lion.)

अस्दरान asdarán
अस्दग़ान asdaghán
-अ० वह रगें जो दोनों कनपुटियों के नीचे स्थित हैं। पुड़पुड़ियों की रगें।

अस्दी asdí-अ० (ब० व०), स्दी (ए० व०) स्तन, कुच स्त्री का हो अथवा पुरुष का। (Breasts.)

अस्दुल अद्स asdul-āadsa-अ० (१) शरट, गिर्गिट (Chemolion)। (२) माज़रियून। (Mázariyún.)। (३) एक अप्रसिद्ध बूटी है। जिस बूटी के समीप यह होती है उस बूटी को यह नष्ट कर देती है।

अस्दुल अर्ज़ asdul-arza-अ० (१) गिर्गिट, शरट (Chemelion.)। (२) एक अप्रसिद्ध ओषधि है जिसके लक्षण के सम्बन्ध में मतभेद है। कोई कोई हस्त्रीम को कहते हैं।

अस्नः asnah-सं० पुं० लालारस। अथर्व०।

अस्थ्यांतरिक बंधन asthyántarika-bandhana-सं० स्त्री० (Interosseous ligament.) अस्थि का भीतरी बंधन।

अस्नहान asnahán –सं० देगी (कमलके समान एक पुष्प है)।

अस्नाख़ asnákh–अ० (ब० व०), सन्ख़ (ए० व०), दन्तमूल। (Root of teeth.)

अस्नान asnána–अ० (ब० व०), सिन (ए० व०) (१) दन्त, दाँत (Teeth.)। (२) आयु, अवस्था। (Age.) देखो—सिन्न।

अस्नानुल्फ़ार asnánulfára–अ० शाब्दिक अर्थ मूषा दंत, (चूहे का दाँत), पारिभाषिक अर्थ नख के वे बारीक तीक्ष्ण तन्तु जो नखके सिरे के समीप फटजाने से उसमें उत्पन्न हो जाते हैं या नख के मूल में होते हैं।

अस्नानुल् लुब्न asnánul-lubna–अ० अस्नान लुब्नियय्यह्। दुग्ध दंत, दूध के दाँत। दन्दाने शीर –फ़ा०। (Milk teeth)

अस्नानुल्हु(हि)ल्म asnánul-ḥu(ḥi)lma –अ० अस्नानुल् अक़्ल। बुद्धि दन्त–हिं०। दन्दाने अक़्ल, अक़्ल दार्दे–फ़ा०। (Wisdom teeth.)

अस्नाने क़वातिअ asnáne-qavátiā–अ० अग्रदन्त, छेदक दंत। दन्दाने पेश–फ़ा०। (Incisors.)

अस्नाने कवासिर asnáne-kavásira–अ० भेदकदन्त, रदनक। दन्दाने नीश–फ़ा०। (Canines, Canine tooth.)

अस्नाने तवाहुन asnáne-taváḥuna–अ० चर्वणक दन्त। दन्दाने आसिया, पीसने वाले दाँत–उ०। (Molars.)

अस्नाने दाइमिह asnáne-dáimih–अ० स्थायी दंत। दन्दाने मुस्तक़िल, मुदामी दाँत–उ०। (Permanent teeth.)

अस्नाफ़ asnáfa–अ० (ब० व०), सिन्फ़ (ए० व०) भेद, प्रकार। (Kinds.)

अस्निग्ध asnigdha–सं० त्रि०, हिं० वि० पुं० जो स्निग्ध नहो, रूक्ष। स्निग्धता का अभाव।

अस्निग्धदारु-कम् Asnigdhadáru,-kam–सं० क्री०
अस्निग्ध दारुक asnigdha.dáruka –हिं० संज्ञा पु० } देवदारु, देवदार की जाति का एक पेड़। (Cedrus Deodara.) रा० नि० व० १२।

अस्निग्ध लक्षणम् asnigdha-lakshaṇam –सं० क्री० अस्निग्ध अर्थात् रूक्ष के लक्षण। यथा—

गाँठदार पाखाना का होना, रूक्षता, वायुविकार मृदुता, पका हुआ सा होना, खरत्व और शरीर की रूक्षता ये अस्निग्ध के लक्षण हैं।

"पुरीषं ग्रथितं रूक्षं वायुरप्रगुणो मृदुः।
पक्ता खरत्वं रौक्ष्यंच गात्रस्यास्निग्ध लक्षणम्॥"

(च० सू० १३ अ०)

अस्प aspa फ़ा० अश्व, घोटक। (A horse.)

अस्पग़ोल aspaghola
अस्पग़ल aspaghala } –फ़ा० ईसबगोल, ईषद्गोल। (Ispaghula.)

अस्पञ्ज aspanja–अ० अस्फ़न्ज। अब्रमुर्दा, मुर्दा-बादल, स्पञ्ज। (Sponge.)

अस्पताल aspatála–हिं० संज्ञा पुं० [इं० हॉस्पिटल] औषधालय। चिकित्सालय। दवा-ख़ाना।

अस्पदन्दाँ aspa-dandán–फ़ा० (तिब्बि०, पारिभा०) ख़ुश्कअबीन (एक प्रकार का मधु जो अत्यन्त शुष्क होता है)।

अस्पदरियाई aspa-dariyái–फ़ा० फ़र्सुल माअ्–अ०। दरियाई घोड़ा।

नोट—कहा जाता है कि यह जानवर मिश्र देश में नील नदी के भीतर होता है। इसके पाँव गोपाद सदृश होते हैं। पुच्छ वाराह पुच्छ सदृश और स्वरूप घोड़े का सा होता है। यह घड़ियाल आदि समुद्री जीवों का आहार करता है।

अस्पनाज aspa-nája–फ़ा० पालक। (Spinacea oleracea.)

अ(इ)स्पन्द a-i-spanda–फ़ा० राई। देखो—इस्पन्द। (Ispanda.)

अस्परक़ asparaqa–फ़ा० पीली जड़, त्रायमाणा। (Delphinium zalil, *Aitch.*)

अस्प(र)र्क asparka–हिं० तिरोर (इं० में

प्तां०),जिरीर (मेमां०)--फ़ा० । बनपिरिंग-बं० । ट्रिफ़ोलियम् ऑफिसिनेलां (Trifolium officinale, *Willd.*), मोलीलोटस ऑफिसिनेलिस (Melilotus officinalis.) --लें० । इक्लीलुल्मलिक-अ० ।

बब्बूर या शिम्बी वर्ग

(*N. O. Leguminosæ*)

उत्पत्तिस्थान—नुब्रा तथा लेदक ।

प्रयोगांश—क्षुप।

उपयोग—यह क्षुप रक्तस्थापक है । क्षतों पर भी इसका उपयोग होता है । वैट ।

अस्पर्ग़म् asparghạm-फ़ा० रैहाँ । (Ocimum basilicum, *Linn.*)

अ(इ)स्पर्ज़ह् a-i-sparzah-फ़ा० इस्पग़ोल । ईसबग़ोल,ईषद्गोल-हिं० । (Ispaghula.)

अस्पर्तम aspartam--क़फ़रुल् यहूद । यह एक प्रकार का पाषाण है । See-qafrul-yahúda.

अस्पर्शा asparshá-सं० स्त्री० आकाशबेल, आकाशवल्ली । आलोकलता-बं० । (Cuscuta reflexa-) रा० नि० व० ८ ।

अस्पस्त aspasta } -फ़ा० नस्तरन, क़त,
अस्फ़त asfata } कमीज़ह, नर्फ़ील,दमचह । (Trifolium pratensis.) इ० हैं० गा० ।

अ(ए)स्पाइरीन aspirine-इं० देखो—एस्पाइरीन ।

अ(ए)स्पालेन्थस इण्डिकस aspalanthus indicus, *Ainslie.*-लें० शिवनिम्ब-मह० । (Indigofera aspalanthoides, *Vahl.*) फ़ा० इं० १ भा० ।

अस्पालोटा aspálotá-जलपीपर, तूतबूटी, तुकन । नफ़ा० २ भा० । देखो—जलपिप्पली ।

अस्पियूस aspiyúsa-अ० इस्पग़ोल, ईसबगोल, ईषद्गोल । (Ispaghula)

अस्पीडियम् फिलिक्स मैस aspedium filix mace-लें० मेलफर्न ।

अस्पीडो स्पर्मा aspedosperma-लें० एक पौधा है ।

अस्पीडो स्पर्मा क्युब्रेको ब्लैङ्को aspedosperma cubreko blanco-लें० एक पौधा है ।

अस्पेरग asperg-फ़ा० अस्फ़र्क-फ़ा० । ज़रीर-अ० । त्रायमाण, गुले जलील-बम्ब० । गाफ़िज़-पं० । (Delphinium zalil, *Aitch, et Hemsley.*) फ़ा० इं० १ भा० ।

अस्पेरज़ा aspergi-फ़ा० नागदौन-हिं० । (Artemisia vulgaris.)

अस्फ़ āasfa-अ० अन्तिम श्वास, मरणावस्था, मरणासन्न, मुमूर्षु ।

पॉइण्ट ऑफ़ डेथ (Point of death.)-इं० ।

अस्फ़ुअ asfaā-अ० श्याम, काला । (Black.)

अस्फ़न्क़ारून asfanqárúna-रू० }
अस्फ़ञ्ज asfanja-फ़ा० }

अब्र मुर्दा, मुश्रा बादल, स्पञ्ज । Sponge (Spongia officinalis.)

अस्फ़ञ्ज का जलाना अर्थात् सोख़्तह् करना—

मुश्रा बादल के जलाने की विधि—अस्फ़ञ्ज अर्थात् मुश्रा बादल को साबुन से धोकर भली भाँति निचोड़ कर शुष्क कर लें । पुनः इसे बारीक कतर कर मिट्टी के बर्तन में रखकर अग्नि पर इतना जलाएँ जिसमें वह पीसने योग्य हो जाए । परन्तु इतना न जलाएँ कि जलकर राख हो जाए । तत्पश्चात् योगों में प्रयुक्त करें । ख्या० अ० भा० ३ ।

अस्फञ्ज मुह्रिक़ asfanja-muhriq }
अस्फ़ञ्ज सोख़्ता asfanja sokhtá }

अ०, फ़ा० जलाया हुआ मुश्रा बादल ।

अस्फटिकीय asphaṭikíya-हिं० वि० वह जिसके स्फटिक अर्थात् रवे न हों । बे रवा । अमूर्त । स्फटिक रहित । (Amorphous.)

अस्फन्द् asfanda-फा० (१) सफ़ेद राई (White-mustard)। (२) दालू, हुर्मुल। (३) अस्पन्द। (Ruta alluflora.) इं० हैं० गा०।

अस्फन्दान asfandána
अस्फन्दा सफ़ेद asfandá safeda
फा० सफ़ेद राई। (White mustard seed.)

अस्फन्दान asfandána-फ़ा० मद्य भेद। (A kind of wine.)

अस्फ़र asfara-अ० ज़र्द-फा०। पीत, पीला, पीली-हिं०। (Yellow.) इलिब्बा ने इसकी पाँच कक्षाएँ स्थिर की हैं—(१) नस्री, (२) उत्रजी, (३) अश्क़र, (४) नारी और (५) अहमर नासिअ। अस्तु उन उन पर्यायों के सामने देखो—

अस्फरक asfaraka-फ़ा० एक श्याम वर्ण का पक्षी है जो घरोंमें पाला जाता है। इसकी चोंच पीली होती है। इसे पढ़ाया जाता है तथा यह मनुष्य से प्रेम करता है।

अस्फ़र फ़ाक़िअ् asfar-fáqiā-अ० घन पीत, अत्यन्त पीला, गहरा पीला। (Deep yellow.)

अस्फ़रागोयूस asfarághoyúsa-यू०बिरडाल, देवदाली। (Ecbellium elatarium.)

अस्फराज asfarája-इन्दुलि० नागदौन। देखो-अस्फ़ार्ग़ीन। (Artemisia vulgaris.)

अस्फ़रान asfarána-अ० जिह्वा तथा हृदय। (Heart and tongue.)

अस्फ़रे बर्री asfare-barrí-फा० बादावर्द-हिं०, बम्ब०। (Volutarella divaricata, *Benth.*) फा० इं० २ भा०।

अस्फ़ह asfah-अ० विशाल ललाट, विशाल मास्तिष्केय, चौड़े माथे वाला।

अस्फ़ाक़ asfáka फा० त्रायमाण, वलभद्रा। अभि० नि०।

अस्फ़ाद asfáda
अस्फ़ाद सुफ़ेद asfáda-sufeda
-फा० राई। (Sinapis ramosa.)

अस्फ़ानाख़ asfánakha-अ० पालक। (Spinacea oleracea.)

अस्फ़ानाख़ रूमी व हिन्दी asfánákha-rúmí-va-hindí-फ़ा० वास्तुक, बथुआ।

अस्फ़ार्ग़ीन asfárghína-यू० एक बूटी है जिसकी शाखाएँ सौंफ के समान आदि में मृदु किन्तु पश्चात् को कठोर एवं हरी हो जाती हैं। नागदौन। देखो-एस्पेरेगीन (Asparagin)

अस्फ़िक्सिया asphíksiya-अ० इख़्तिनाक़, दम घुटना, दम बन्द होना-उ०। श्वासावरोध, श्वास का अवरुद्ध होना। (asphyxia.)

अस्फुट asfuta-हिं० वि० [सं०] (१) अर्द्ध स्वच्छ। जो स्पष्ट न हो। जो साफ़ न हो। (२) गूढ़। जटिल।

अस्फुट दर्शक asfuta-darshaka-हिं० वि० अर्द्ध स्वच्छ, अस्पष्ट दर्शक। (Translucent.)

अस्फोडेलस फिस्ट्युलोसस asphodelus fistulosus, *Linn.*-ले० पियाज़ी, बोकाट-पं०। पर्यायांश—पौधा व बीज। उपयोग—औषध तथा खाद्य। मेमो०।

अस्फोतः asphotah-सं० पुं० काञ्चनार वृक्ष, कचनार। (Bauhinia variegata.) वै० निघ०।

अस्ब(बु)अ् asba,-bu,-ā-अ० (ए० व०) असाबिअ्, असाबीअ (ब० व०), अंगुश्त, उंगली-उ०। अंगुली-हिं०। (Finger.)

अस्बन्द् asbanda-हिं० संज्ञा पुं० [अ०] इस्बन्द। (Peganum harmala.)

अस्बर āasbara-अ० नर चीता। (A male-tiger.)

अस्बर्ग asbarga-हिं० पुं० ग़ाफ़िस। (Delphinium saniculaefolium.)

अस्बल asbal-अ० लम्बी मूछोंवाला, वह मनुष्य जिसकी मूछें बड़ी बड़ी हों।

अस्बाग़ aṣbágha-अ० (ब० व०) देखो—आसव । (Tinctures.)

अस्बान āasbána-अ० खजूर भेद । (A kind of date.)

अस्बाब asbába-अ०(ब० व०), सबब (ए० व०)- वैद्यक की परिभाषा में वह वस्तु जो मनुष्य शरीर में रोगारोग या हालते स्.ालस्.ह् (अवस्थात्रय) को उत्पन्न करे अथवा उसको सुरक्षित रखे, चाहे वह वस्तु शारीरिक या अशारीरिक तत्त्व हों या अर्ज़ ।

कारण, निदान, हेतु । (Causes.) देखो—सबब ।

अस्बाब इब्तिदाइय्यह् asbába-ibtidáiyyah
अस्बाब अव्वलियह् asbába-avvaliyah
अस्बाब अस्.लियह् asbába-aṣliyah
-अ० किसी रोगके आदि कारण । इनका समावेश वस्तुतः अस्बाब साबिक़ा (प्रारम्भिक कारण) ही में होता है । (Primary causes, Ultimate causes.)

अस्बाब कुल्लिय्यह् asbába-kulliyyah —अ० वे हेतु जिनके होने से नवीन चीज़ों का होना अनिवार्य हो ।

अस्बाब ख़ुसूसिय्यह् asbábá-khuṣuṣiyyah —अ० वे मुख्य हेतु जो किसी प्रधान रोग को उत्पन्न करें । जैसे—प्लेग तथा विशूचिका विष जो उक्त रोगोंको ही उत्पन्न करते हैं । (Speci-fic causes.)

अस्बाब तमामिय्यह् asbába-tamámiyyah-अ० वे कारण जिनसे शरीर अथवा शरीर की किसी अवस्था विशेष की पूर्ति होती है । (Complimental causes.)

नोट—उक्त अरबी परिभाषा सामान्यतः इल्मे हिकमतमें सबबे ग़ाई अर्थात् किसी काम की ग़ायत व ग़र्ज़ के लिए बोली जाती है ।

अस्बाब फ़ाइलिय्यह asbába-fáāiliyyah -अ० वे कारण जो रोगारोग अथवा हालते स्.ालस्.ा (अवस्थात्रय) में से किसी एक को शरीर में प्रगट करें या शारीरावस्था को सुरक्षित रक्खें, पुनः चाहे वे प्राकृतिक हों या अप्राकृतिक ।

अस्बाब बादिय्यह् asbába bádiyyah-अ० अस्बाब ख़ार्जियह् अस्बाब मेख़ानिकिय्यह् । बाह्य-कारण । वे हेतु जो मनुष्य शरीर के बाहर आक्रमण करके अपना प्रभाव स्थापित करें, जैसे शैत्योष्णता आदि ।(External or Local causes.)

अस्बाब मादिय्यह् asbába-mádiyyah —अ० वे हेतु जिनपर रोगारोग का आधार हो ।

अस्बाब मुज़ाद्दह् asbába-muzáddah —अ० अमिश्रित घातक कारण जो शरीरको हानि पहुँचाते एवं उसे नष्ट कर डालते हैं, जैसे—तलवार या गोली का घाव, विषपान तथा जलमग्नता आदि ।

अस्बाब मुतम्मिमह् asbabá-mutammimah-अ० वे कारण जिनके शरीर पर प्रभाव करने के पश्चात् तत्काल रोग उत्पन्न हो जाएँ । सन्निकृष्ट कारण ।

अस्बाब मुमर्रिज़ह् asbabá-mumarrizah —अ० रोगोत्पादक कारण, रोग संजनक हेतु ।

अस्बाब वासिलह asbába-vásilah
अस्बाब क़रीबह asbába-qaríbah
अस्बाब सानोयह् asbába-sánoyah
—अ० वे कारण जो शरीर में विद्यमान हों और बिना किसी अन्य कारण की अपेक्षा करते हुए शरीर में कोई अवस्था उत्पन्न करें । जैसे—अफ़ूनत (सड़ँध) बिना किसी अन्य कारण के अफ़ूनती (पचनीय, दूषित) ज्वर उत्पन्न करती है । (Immediate causes, Proximate causes.)

अस्बाब साबिक़ह् asbába-sábiqah
अस्बाब मुइद्दह् asbába-muāiddah
अस्बाब बईदह् asbába-baāídah
—अ० वह कारण जो मनुष्य शरीर पर सहयोग द्वारा प्रभाव करें अर्थात् शरीर को किसी दशा के

लिए तैयार करें; किन्तु स्वतः उसको उत्पन्न न करें। जैसे–इस्तिदाद(शरीर का दोषपूर्ण होना) शरीर को दूषित ज्वरों के लिए उद्यत बनाता है, किंतु बिना सहयोग के दोष उसको नहीं उत्पन्न कर सकते। प्रीडिसपोजिंग कॉज़ेज़ (Predisposing causes.); रीमोट कॉज़ेज़ (Remote causes.)–इं०।

अस्बाब सित्तह् asbába-sittah
अस्बाब सित्तह् ज़रूरियह asbába-sittah-zarúriyah
अस्बाब ज़रूरियह् asbába-zarúriyah
अस्बाब आमिय्यह् asbába-āámiyyah
–अ० वे ६ प्रसिद्ध कारण जो जीवनके लिए आवश्यक हैं, जैसे-(१) वायु, (२) खाना पीना, (३) सोना जागना, (४) शारीरिक गति एवं विश्राम, (५) मानसिक चेष्टाएँ एवं शांति और (६) संशोधन एवं संग (अवरोध)।

अस्बाब तूरिय्यह् asbába-ṣúriyyah–अ० रचनात्मक या प्राकृतिक बातें और जो उनसे सम्बन्धित हों।

अस्बितालिय्यह् asbitáliyyah–अ० यह हॉस्पिटल (अंगरेज़ी शब्द) से अरबीकृत शब्द है अर्थात् हस्पताल, शिफ़ाख़ानह्। अस्पताल, चिकित्सालय-हिं०। (Hospital,infermary.)

अस्बितालिय्यह् नक़्क़ालह् asbitáliyyah-naqállah–अ० रणभूमि से आहत प्राणियों को ले जानेकी डोलियाँ प्रभृति। (Ambulance.)

अस्बूर asbúr–अ० स्पोर से अरबीकृत शब्द है जिसका अर्थ बीज या कीटाणु है। (Spore)

अस्म āasma–अ० धूम्रवायु भक्षण, आहार आदि जिसमें धूम्रगंध आगई हो।

अस्मगन्ध वृक्षः asmagdha-vrikshah–सं० पुं० आम्रातक, अम्बाड़ा, अमड़ा। (Spondias mangifera) लु० क०।

अस्मगन्ध कन्तू asmagdha-kantú–सं० मोम। (Wax)

अस्मगन्धफलम् asmagdha-phalam–सं० क्ली० कटहल,पनस। (Artocarpus integrifolia.)

अस्मस्वेदन asma-svedan–सं० प्रस्तर स्वेद। सु०।

अस्मङ्गलगण्डा asmangal-ganda–हिं०पुं० नागमरगद (एक भारतीय बूटी है जो भूमि पर आच्छादित होती है। पत्ते कस्तूरी सदृश और मूल ककोड़े के समान तथा विषमतल होते हैं)। लु० क०।

अस्मन्तम् asmantam–सं० क्ली० चुल्ली, चूल्ही (चूल्हा)। उनन, आका–बं०। चुल–मह०। (A fire-place.) अ० टी० भ०।

अस्मन्तिका asmantiká–सं० स्त्री० आपटा।

अस्मर asmar–अ० गन्दुमगूँ, गन्दुमी रंग। गेहूँ का रंग, गोधूम वर्ण, धूसर वर्ण, भूरा–हिं०। (Brownish)

अस्मर्शा asmarsá
अश्मर्शा ashmarshá
}-कनौचा भेद।

अस्मानिया asmániyá–पं० बूटशूर, बुदशूर, खमा, चेवा। (Ephedra gerardiana, *Wall.*) मेमो०।

अस्मानी गलगोता asmáni-galagotá–यु०, द० जंगली लवेण्डर।

अस्मालावन asmálávan–यु० सौसन बर्री (एक सुगंधित पुष्प है जो सौसन के नाम से प्रसिद्ध है)। यह बागी भी होता है।

अस्मितः asmitah–सं० त्रि० विकसित, खिला हुआ। फुटन्त–बं०। (Blown, opened.) वै० निघ०।

अस्मीलूस asmilús–यु० लोबान का सत, लोबानिकाम्ल। (Acidum benzoicum.)

अस्मूनियून asmúniyún–यु० सफ़ेदा, सुफ़ेदा। (Plumbi carbonas.) देखो—सीसक।

अस्मूसा asmúsá–यू० जंगली गाजर, वन्य गर्जर। (Wildcarrot,)

अस्यूस asyús-यू० अस्यूस, पत्थर भेद। (A kind of stone.)

अस्रम् asram-सं० क्लीं
अस्र asra-हिं० संज्ञा पुं० } (१) शोणित, रक्त, रुधिर। ब्लड (Blood)-इं०। रा० नि० व० १८। (२) केशर, कुंकुम। Saffron (Crocus sativus.) च० द०। (३) नयनजल, अश्रु, आँसू। टियर (Tear)-इं०। रत्ना०। -पुं० (४) आस्राव। विज० र०। (५) कोण, कोना कॉर्नर (A corner.) इ०। (६) केश, बाल। हेयर (Hair)-इं०। मे०। (७) एक देश (A country)। (८) जल।

अस्र asra-अ० शुद्ध तैल। (Pure oil-)

अस्र āasra-अ० ठोकर खाना, मुँहके बल गिरना। (To trip, to stumble.)

अस्र āasra-अ० निचोड़ना, दबाकर निचोड़ना। (Expression.)

अस्रकण्टकः asrakantakah-सं० पुं० बाण। हे०। (See-vána.)

अस्रखदिरः asra-khadirah-सं० पुं० रक्त खदिर वृक्ष, लाल खैर। रक्त खेर-महा०। (The red Catechu tree.) रा० नि० व० ८।

अस्रघ्नः asraghnah-सं० पुं० तेज बल। (Excæcaria agallocha, *Linn.*) वै० निघ०।

अस्रघ्नी asraghní-सं० स्त्री० विशल्यकर्णी। निर्विषी। भै० र०।

अस्रजम् asrajam-सं० क्लीं० मांस। (Muscle, flesh.) रा० नि० व० १७।

अस्रजित् asrajit-सं० पुं० वनस्पति विशेष। कपाट बेदु-हिं०। (A plant.) र० मा०।

अस्रत् āasrat-अ० लग्ज़िश। ठोकर, ऐसा ठोकर जिससे मुँह के बल गिरे (Tripping, a beat of the foot, a stumble.)

अस्रपः asrapah-सं० पुं०
अस्रप asrapa--हिं० संज्ञा पुं० } (१) जलौका, जोंक, जलायुका। (Leech Hirudo.) । (२) मत्कुण, कीट भेद। रा० नि० व० २३। (See-matkunah.) -हिं० वि० रक्तपीनेवाला।

अस्रपत्रः,-कः asrapattrah,-kah सं० पुं० भेण्डा वृक्ष, भेंडा वृक्ष। रा० नि० व० ४। See-bherá.।

अस्रपा asrapá-सं० (हिं० संज्ञा) स्त्री० जलायुका, जलोका, जोंक। (Leech, Hirudo.) मे०।

अस्रफला,-ली asraphalá,-lí-सं० स्त्री० शल्लकी वृक्ष, सलई, सलाईका पेड़। शालुई गाछ -बं०। (Boswellia serrata.) रा० नि० व० ११।

अस्रबिन्दुच्छदा asra-binduchchhadá -सं० स्त्री० लक्ष्मणा। See-lakshmaná

अस्रमातृका asra-mátriká-सं० स्त्री० रस धातु। (Chyle) रा० नि० व० १८।

अस्रयष्टिका asra-yashtiká सं० स्त्री० मजीठ, मञ्जिष्ठा। (Rubia cordifolia.)

अस्ररेणुः asra-renuh-सं० पुं० सिन्दूर। Red lead (Plumbi oxidum rubrum.) मे०।

अस्ररोधिका,-नी asra-rodhiká,-ní-सं० स्त्री० लज्जालुका क्षुप, लजालू, लजावती। (Mimosa pudica.) रा० नि० व० ५।

अस्रविन्दुच्छदा asra-vinbuchchhadá -सं० स्त्री० (१) लक्ष्मणा कन्द (लक्ष्मणा)। (See-lakshmaná) रा० नि० व० ५। (२) रक्तबिन्दुच्छदा। कैय० दे० नि०।

अस्रशिम्बी asra-shimbí-सं० स्त्री० रक्तशिम्बी, लाल सेम। राङ्ग शिम्-बं०। (The red flat bean) वै० निघ०।

अस्रसायकः asra-sáyakah-सं० पुं० नाराच अस्त्र, लोहा का बाण। लोहार बाण -बं०।

अस्रस्रुती asra-sruti-सं० स्त्री० रक्तस्राव, (स्रुति), शोणित स्राव, रक्तक्षरण। वै० निघ।

अस्रहरारिष्टः asra-hará́rishtah-सं० पुं० अस्रघ्नी (विशल्यकर्णी, निर्विषी) और मृत-सञ्जीवनीसुरा हर एक एक पल लें। पुनः एक मिट्टी के पात्र में रख उसका मुख मिट्टी से अच्छी तरह बन्द कर ७ दिन तक रक्खें। पश्चात् गाढ़े वस्त्र से छान कर शीतल में यत्न से रक्खें।

मात्रा—१–२० बूंद।

अनुपान—शीतल जल।

गुण—इसके सेवनसे उरःक्षत, रक्तपित्त, कास, रक्तातिसार, रक्तप्रदर और राजयक्ष्मा नष्ट होता है भै० र० यक्ष्मा चि०।

नोट—अस्रघ्नी के अभाव में अम्बष्टा (निर्विषी) लेना उचित है।

अस्रार asrára } -अ० ललाट की रेखाएँ।
असिर्रह् asirrah } क्रीज़ (Crease), फोल्ड (Fold.)-इं०।

अस्रार asrára-ज़रिष्क। (Berries of Berberis aristata, D. C.)

असरार asrára-मग़० एक वृक्ष है जो हजाज़ और जिद्दा के समुद्री किनारों पर उगता है।

अस्रार्जकः asrárjakah-सं० पुं०
अस्रार्जक asrárjaka-हिं० संज्ञा स्त्री० (१)रक्त तुलसी वृक्ष, लाल तुलसी। राङ्गा तुलसी-बं०। (Ocimum rubrum.)। (२) श्वेत तुलसी। शादा तुलसी-बं०। पांढ़री तुलसी-मह०। (Ocimum album, *Linn.*) वै० निघ०।

अस्रावित भक्तम् asrávita-bhaktam-सं० क्ली० मण्ड (माँड़) संयुक्त भात।

गुण—यह भात भारी, शीतल, रुचिकारक, वृष्य, वीर्यवर्द्धक, मधुर, वातनाशक, कफनाशक, ग्राही, तृप्तिकारक और क्षयरोग का भी नाश करने वाला है। वृ० नि० र०।

अस्राश asrásha-अ० एक प्रकारका बारीक चूर्ण है जो कभी आम्र से और कभी ख़ुन्सा के बीज से बनाया जाता है।

अस्राह्वः asráhvah-सं० पुं०, क्ली० कुंकुम, केशर। Saffron (Crocus sativus.) मद० व० ३।

अस्रि asri-हिं० स्त्री० (Ten millions.) १० लाख।

अस्रिब asrib } -अ० (ब० व०),
असारिब asárib } म़स्रब (ए० व०), आन्त्रीय रसायनिकल्ली, आन्त्रश्छदाकला, आन्त्रावरण, जठरावरण। (Omentum.)

अस्रीली asrílí-हिं० स्त्री० आसवीली, गिरगिट सदृश एक जानवर है। यह हरे रंग की होती तथा सर्प सदृश दुम मारती है।

अस्रु asru-सं० क्ली० नेत्रवारि, नयनजल, अश्रु, आँसू। टियर (A tear.)-इं०। आँसू के रोकने से पीनस रोग उत्पन्न होता है। वा० सू० ४ अ०।

अस्रुकः asrukah-सं० पुं० अशीर वृक्ष। आउच गाछ-बं०। रत्ना०।

अस्रुल जुद्री asrul-judrí-अ० शीतला के चिन्ह, दाग। (Pit, Pock mark.)

अस्रुल बुस्रह् asrul-busrah-अ० फुन्सी के चिन्ह या दाग। सिकट्रिक्स (Cicatrix.)-इं०।

अस्रु वाहिनी asru-váhiní-सं० स्त्री० अश्रु-वाहक धमनीद्वय। (Lachrymal canal.) सु० शा० ६ अ०।

अस्रेली asrelí-सिन्ध० छोटी माईं। Tamarix orientalis, *Vahl.* (Galls of Tamarix galls.)

अस्रैणः asrainah-सं० त्रि० स्त्रियों से रहित। अथर्व०।

अस्रोज़ asroza-अ० (१) एक कीट है जिसका शिर लाल और शेष शरीर श्वेत होता है। यह रेत और घास में उत्पन्न होता है या (२) ख़रातीन (केंचुआ)। (Earthworm.)

अस्रोरह asrorah-बालछड़। (Nardostachys Jatamansi)

अस्रोहो asroho-रू० बनफ़्शा। (Viola odorata.)

अस्ल aṣl-अ० } (ए० व०), उ.सूल
असल asala-हिं० }
(ब० व०) मूल, जड़, बुनियाद। (Root or rhizome.) स० फा० इं०।

अ.स्ल asla-अ० तर्फ़ा। झाऊ-हिं०। (Tamarix gallica, *Linn.*) स० फा० इं०।

अस्ल āasla-अ० मधु, शहद। Honey (Mel.) स० फा० इं०।

अस्ल asla-अ०समान-मिश्र०। रूह कर्तह-फ़ा०। कसरानी-हिं०। एक बूटी है जो जलीय भूमि पर उत्पन्न होती है। इससे बोरिया या चटाई बिने जाते हैं।

अस्ल āasla-हड़ताल, हरिताल। (Yellow orpiment.)

अस्.लअ् aṣlaā-अ० वह मनुष्य जिसके चाँदिया पर के बाल गिर गए हों। बेश्ड (Bald.) इं०।

अ.स्ल अफ्.सन्तीन āasla-afsantína-अ० वह शहद जिसकी मक्खी अफ़्संतीन पर बैठी हो।

अ.स्.लक् aslaq-अ० फ़न्जंगुश्त,निगुंडी,सँभालू-हिं०। (Vitex negundo, *Linn.*) स० फा० इं०।

अ.स्.लके अस्वद aslaqe-asvad-अ० नील निगुंडी, काला सँभालू-हिं०। (Justicia gendarussa, *Linn.*) स० फा० इं०।

अ.स्.लके आबी aslaqe-ábí-अ० जल निगुंडी, पानी का सँभालू-हिं०। (Vitex trifolia, *Linn.*) स० फा० इं०।

अस्.लख aṣlakh-अ० पूर्ण बधिर मनुष्य, पूरा बहिरा। (A Dumb)

अस्लज āaslaj-अ० अ.र्तनीसा की जड़। Cyclamen persicum, *Miller.* (Root of--)। देखो—बखूर मरियम्।

अस्लञ्ज āaslanja-अ० ब.खूर्मरियम् का एक भेद, हत्थाजोड़ी। (A kind of sow-bread.)

अस्.लत aslat-अ० वह मनुष्य जिसकी नासिका आधे से अधिक कट गई हो।

अस्.लतुज़्ज़िराअ् aslatuzziráā-अ० कलाई की हड्डी या पहुँचे की बारीक सिरा जो हथेली से लगा हुआ है।

अस्.लम aṣlam-अ० गोश बुरीदा-फ़ा०। सहज कर्ण हीनता। वह बुचा जो जन्मसे कर्णहीन हो। जिसके कान जड़से काट डाले गए हों। (Clipt-eared.)

अस्.ल मुअ्.दी aṣla-muādí-अ० माद्दहे छूत, छूत पैदा करने वाली वस्तु, संक्रामक दोष। (Contagium.)

अस्लराई asla-rái—हिं० स्त्री० घोराई, राई। (Brasica nigra.) मेमो०।

अस्लह् aslah-अ० नेज़ा, निश्तर, शयान या कुहनी की नोक।

अस्.लह aṣlah-अ० एक प्रकार का भयंकर सर्प जिसके पैर होते हैं। यह फ़ारस देश में पैदा होता है।

अस्.लान āaṣlána-अ० अन्सल,जंगली पियाज़, काँदा, वनपलाण्डु। (Scilla Indica.)

अस्लियूस asliyúsa-यू० तज। (Laurus cassia.)

अस्लुन्नहल āaslunnaḥal-अ० मधु, शहद। Honey (Mel.) स० फा० इं०।

अस्लुन्नुखाअ् aṣlun-nukḥáā }
रासुन्नुखाअ् rásun-nukḥáā }
मब्दउन्नुखाअ् mabdaun-nukḥáā }
-अ० सरे हराम मग़ज़-फ़ा०। सुषुम्ना शीर्षक-हिं०। (Medulla-oblongata.)

अस्लुर्रमिस् āaslurramis-अ० (१) वह ओस जो रमिस् पर पड़ता है। (२) शकर-तेग़ाल।

अस्.लुल् अह्.मर aslul-aḥmar-अ० लाल झाऊ। (Tamarix orientalis, *Vahl.*) स० फा० इं०।

अस्लुल् क़सब āaslul-qasab-अ० इक्षु रस, ईख या गन्ने का पानी।

आस्लुल् क़स.ब äaslul-qaṣab-अ० एक प्रकार का मधु जो शुष्क खजूर से बनाया जाता है।

अ.स्लुल् क़ु.ल्त aṣlul-qulta-अ० कुलथी की जड़। Dolichos biflorus(Root of-)

आस्लुल् खिलाफ़ äaslul-khiláfa-अ० बेद-सादह् का दूध।

आस्लुल् फ़ार äaslul-fára-अ० अज्ञात ।

अ.स्लुल् बज़्.र aṣlul-bazara-अ० भगांकुर मूल। (Crus clitoris)

अ.स्लु.ल् माकोल aṣlul-mákol-अ० हल्दी, हरिद्रा। (Curcuma longa)

अ.स्लुल् मुदव्वर aṣlul-mudavvar-अ० (ए० व०), उ.सूलुल् मुदव्वर (ब० व०) कन्द-हिं०, सं० । (Bulb or tuber.) स० फा० इं० ।

अ.स्लुल्लिसान aṣlul-lisána-अ० कर्णमूल ग्रंथि। (Submaxillary gland)

अ.स्लुल्लुफ़ाहब्बर्री aṣlullufáha-barrí-अ० यब्रूजुस्सनम, विलाडोना। (Mandrake.)

आस्लुल्लुब्नी äaslul-lubní-अ०(१)मेअहे सायेलह्, सिलारस-हिं०। Liquid amber altingia, *Blume.*) (Resin of-Liquid storax) स०,फा० इं०। म० अ० डॉ०।(२) ह.सी लुबान, लोबान।

आस्लुल्हवा äaslul-havá -अ० शीर ख़िश्त -फ़ा०। अकाश मधु-सं०, हिं०।(Manna.) म० अ० डॉ०।

आस्लुल्.हाज äaslul-ḥája-अ० तुरञ्जबीन। Alhagi maurorum (Manna of-)

अ.स्लुल् हिन्द बाउब्बरी aṣlul-hinda-báubbarí -अ० जंगली कासनी की जड़। (Taraxaci radix) म० अ० डॉ०।

आस्लुस्समावी äaslussamávi- अ० शीर ख़िश्त-.फ़ा०। आकाशमधु-सं०। (manna) म० अ० डॉ०।

अ.स्लुस्सित.ब्र aṣlus-sitabra-अ० (ए० व०) उ.सूलुस्सित.ब्र(ब० व०), कन्द-सं०, हिं०। (Bulb or tuber) स० फा० इं०।

अ.स्लु.स्.सीनी aṣlus-ṣíní-अ० चोबचीनी-हिं०, द०, फ़ा०। Radix chinensis (China root) स० फा० इं०।

अ.स्लुस्सूस aṣlussúsa-अ० यष्टिमधु-सं०। मुलेठी, जेठीमध-हिं०। Glycyrrhizae-radix (Liquorice root or liquorice.) स० फा० इं०।

आस्लेख़ियार चम्बर äasle-khiyára-chambara-फ़ा० अस्ले ख़ियार शंबर-अ०। आरग्वध गूदिका-स०। अमलतासका गूदा-हिं० Cassia pulpa (Cassiæ pulp.) देखो— अमलतास ।

आस्ले.तबर्ज़द äasle-tabarzada-अ० कन्द या मिश्री का शीरा ।

आस्लेतम्र äasle-tamra-अ० दोशाब खुर्मा।

आस्लेदाऊद äasle-dáúda-अ० एक प्रकार के मधु का तैल।

आस्लेन.हल äasle-naḥala-अ० मधु, शहद। Honey (Mel.)

अ.स्ले फ़ुरऊ.न aṣle-faraúna-अ० एक प्रकार का पत्थर जो यमन उम्मान् देश में होता है।

आस्लेबिलादुर äasle-biládur-अ० एक प्रकार का श्याम लसदार द्रव है जो भिलावेंसे निकलता है।

आस्ले मा.ज़ी äasle-mází-अ० श्वेत खजूर मधु।

आस्लेमु.स.फ्फ़ा äasle-muṣaffá-अ० साफ़ किया हुआ या शुद्ध मधु। (Mel depuratum.)

अ.स्लेमेस.ा äasle-mesá अ० मुलेठी, यष्टिमधु। (Liquorice.)

आस्लेयाबिस äasle-yábisa-अ० खुश्कअबीन या पतला सुगंधित आहार।

आस्लेलुब्नी äasle-lubní-अ० सिलारस। (Styrax.)

अस्ले.हाशा āasle·hásha–अ० वह शहद जिसकी मक्खी हाशा (जंगली पुदीना)पर बैठी हो ।

अस्व asva–हिं० संज्ञा पुं० [सं० अश्व] (१) घोड़ा (A horse)। (२) असगंध, अश्वगंधा। (Withania somnifera)। (३) निर्धनी, कंगाल, दरिद्री।

अ.स्वह् āasvah–अ० बालों की लट, ज़ुल्फ़ दराज़।

अस्वकर्ण asva-karna–हिं० पुं० [सं०] साल, साखू। Sal tree (Shorea robusta, *Gartn.*) फा० इं० १ भा०।

अस्वच्छ asvachchha–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] अदर्शक, अपारदर्शक, ऐसी वस्तुएँ जिनमें से कुछ भी नहीं दीखता। अबै.ज़ हक़ीक़ी, अस्ली सफ़ेद–अ०। ओपेक (Opaque.)–इं०।

अस्वद asvad–अ० स्याह रंग, श्यामवर्ण, काला, कृष्ण। (Black.)

अस्वद सालख़ asvad-sálakh –अ० श्याम सर्प। (A black serpent.)

अस्वन्तः asvantah सं० पुं० चुल्ली। (A fire-place.)

अस्वभाविक मृत्यु asvábhávika-mrityu –हिं० संज्ञा स्त्री० वह मृत्यु जो स्वाभाविक न हो। अप्राकृतिक मृत्यु।

अस्वमारक asva-máraka–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] कनेर, करवीर। (Nerium odorum.) फा० इं० २ भा०।

अस्वल asvala–अ० वह मनुष्य जिसका पेड़ू आगे को निकला हुआ हो।

अस्वस्थ asvastha–हिं० वि० [सं०] (१) रोगी, बीमार। (२) अनमना।

अस्.वात asváta–अ० (ब० व०), सौत (ए० व०), शब्द, ध्वनि। (Sound.)

अस्वादुकंटक asvádu-kantaka–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] गोखरू। गोक्षुर।

अस्वास्थ्यम् asvásthyam–सं० क्ली० }
अस्वास्थ्य asvásthya–हिं० संज्ञा पुं० }
पीड़ा, रोग, असुस्थता, बीमारी।

अस्वेद्यरोगी asvedya-rogí–सं० पुं० वह रोगी जिसे स्वेद (पसीना) न दिया जा सके। वह रोगी जो स्वेद कर्म करने के अयोग्य हो। वह जिसका स्वेद न किया जा सके। स्वेद के अयोग्य। स्वेद निषिद्ध। स्वेदाविहित। च० सू० १४ अ०। वा० सू० १७ अ०। देखो—स्वेदः।

अस्स assa–अ० बुनियाद, जड़, हृदय। (Foundation.)

अ.स्स. āassa–अ० क़ुर्मतुल् वतर। शाब्दिक अर्थ जड़ किन्तु अर्वाचीन परिभाषामें कटित अवयव। (Stump.)

अस्सनतुल् अ.साफ़ीर assanatul-āasáfíra–अ० इन्द्रयव। (Wrightia tinctoria, *R. Br.*) देखो—कुटज।

अस्सफ़ाफ़न assafáfan–अ० लिस्मानुलूईल, रा.ई-युलूईल। इसके लक्षण में मत भेद है।

अस्समोगम् assamogam }
अस्समोदगम assamodgam } –सिं०
अस्समोदगुड़ assamoda-guda }
अजवाइन। Carum (Ptychotis.) Ajowan.

अस्सरख़्सुल् मुज़.क्कर assarakhsul-muzakkar–अ० सरख़्श मुज़.क्कर, चमाज़–फ़ा०। Male fern (Filix mass.) म० अ० डॉ०।

अस्सराजत assarájata–अज्ञात।

अस्साबूनुल्लिय्यिन assábúnulliyyin–अ० हरा साबुन, नरम साबुन–हिं०। (Sapo mollis.) म० अ० डा०।

अस्साबूनुस्स.ालिब assábúnussalib–अ० कठोर साबुन, जैतून तैल का साबुन–हिं०। (Sapo durus.) म० अ० डॉ०।

अस्सालिया assáliyá–गु० चन्द्रसूर। (Lepidium sativum) फा० इं० १ भा०।

अस्सुउसन assu-usun--पं० सुफेद राई--हिं०। सिद्धार्थक--सं०। (Eruca sativa.) मेमा०।

अस्सुलेमानियुल्‌ अक्काल्‌ assulemániyul-akkál-अ० सुलेमानी, दाराशिकना, दारचिकना -हिं०। (Hydrargyri perchloridum.)

अस्हब aṣhab-अ० श्वेताभायुक्त रक्तवर्ण, ब्याज़ी रंग, रोग-विज्ञान में श्वेताभायुक्त रक्तवर्णीय क़ारोरह् (मूत्र) को कहते हैं।

अहं aham-सर्व० [सं०] मैं। (I).
संज्ञा पुं० [सं०] अहंकार, अभिमान।

अहः ahah-सं० क्लो० } [सं० अहन्‌]
अह aha-हिं० संज्ञा पुं० } (१) दिवस, दिन। (Day.)। अम०। (२) सूर्य्य।

अहङ्कारः ahankárah } -सं० (हिं० संज्ञा)
अहंकार ahankára } पुं० [वि० अहंकारी]
(१) अभिमान, गर्व, घमंड। (२) क्षेत्रज्ञ पुरुष की चेतना। इन्द्रियादि सम्पूर्ण शरीर-व्यापी अहं अर्थात् मैं और मेरा के भाव की विशेष प्रवृत्ति। ममत्व। वैकारिक, तैजस, एवं भूत अर्थात् सात्विक राजस, तामस भेद से यह तीन प्रकार का होता है। सांख्य के समान आयुर्वेद शास्त्रियों ने इसकी उत्पत्ति महत्तत्त्व से मानी है। इनके अनुसार यह महत्तत्त्व से उत्पन्न एक द्रव्य अर्थात् उसका एक विकार है। इसकी सात्विक अवस्था और तैजस की सहायता से पाँच, ज्ञानेन्द्रियाँ पाँच कर्मेन्द्रियाँ तथा मन की उत्पत्ति होती है और तामस अवस्था तथा तेजस अर्थात् राजस की सहायता से पंच तन्मात्राओं की उत्पत्ति होती है, जिनसे क्रमशः आकाश, वायु, तेज, जल और पृथ्वी की उत्पत्ति होती है। यथा—

"तल्लिङ्गाच्च महतस्तल्लक्षण एवाहङ्कार उत्पद्यते, सतु त्रिविधो वैकारिकस्तैजसो भूतादिरिति; तत्र वैकारिकादहङ्कारात् तैजस सहायात्तल्लक्षणान्येवै कादशेन्द्रियाण्युत्पद्यन्ते; भूतादेरपि तैजस सहायात् तल्लक्षणान्येव पञ्चतन्मात्राण्युत्पद्यन्ते। सु० शा० १ अ०।

अहतम्‌ ahatam-सं० क्लो० नूतन वस्त्र। (New cloth.) हला०।

अहत्ती ahattí-सिं० कुम्बी, खुम्बी। (Careya arborea, Roxb.) मेमो०।

अहन्‌ ahan-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] दिन।

अहन्‌ पुष्प ahan-pushpa—हिं० संज्ञा पुं० [सं०] दुपहरिया का फूल। गुल दुपहरिया।

अहर ahara-हिं० संज्ञा पुं० डोवा, पोखरा, सरोवर। (A reservoir for collecting rain-water.)

अहरङ्ग aharanga-मल० काष्ठ अंगार, लकड़ी का कोयला। Wood charcoal (Carbo-ligni) इं० मे० मे०।

अहरद्दक्‌ aharadrik-सं० पुं० गृध्र, गिद्ध पक्षी। शकुनी-बं०। वल्चर (A vulture.) इं०। वैं० निघ०।

अहरण aharaṇa } -जय० अहरन, अरउन।
अहरणी aharaṇí }

अहरन aharan-हिं० संज्ञा स्त्री० }
अहरनि aharani-हिं० संज्ञा स्त्री० }
[सं० आ+धारण=रखना] निहाई।

अहरह aharah-हिं० क्रि० वि० प्रति दिन। (Everyday.)

अहरा ahará-हिं० संज्ञा पुं० [सं० आहरण =इकट्ठा करना] १-जाड़े में तापनेका स्थान। कंडे का ढेर जो जलाने के लिए इकट्ठा किया जाए। (२) वह आग जो इस प्रकार इकट्ठे किए हुए कंडों से तैयार की जाए।

अहराक़ ahráq-अ० जलाना। लु० क०।

अहरितः aharitah-सं० पुं० पाण्डुरोग। हारिद्र-रोग। अथर्व०। सू० २२। ३। का० १।

अहर्गण ahargaṇa-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] दिनों का समूह।

अहर्ज्जवः aharjjavah-सं० पुं० सम्वत्सर, वर्ष। (A year.) के०।

अहर्पणः aharpanah-सं० पुं० मांस। (Muscle; Flesh.) हारा०।

अहर्बान्धवः aharbándhavah }
अहर्मणिः aharmanih }
-सं० पुं० अर्क वृक्ष, आक, मदार। (Calotropis gigantea.) है० च०।

अहर्मुखम् aharmukham-सं० क्लीं० }
अहर्मुख aharmukha-हिं० संज्ञा पुं० }
प्रातः काल, सवेरा, भोर (Early morning, day-break.)।

अहर्र aharra-अ० अधिक उष्ण, ज़्यादा गरम।

अहलद ahalad-कना० वट, बर्गद। Banian (Ficus Bengalensis.)

अहलना ahalaná-हिं० क्रि० अ० [सं० आह्लनम्] हिलना। काँपना। दहलना।

अहलात ahaláta-यु० अगर। (Aloe wood.)

अहलु ahalu-पं० बम्बल, बहल।

अहल्यः ahalyah-सं० त्रि० }
अहल्या ahalyá-हिं० वि० [सं०] }
अनाकृष्ट-भूमि। जो (धरती) जोती न जा सके।

अ(-ा)हल्ल ahalla-सिं० अमलतास। (Cassia fistula, *Linn.*) फा० इं० १ भा०।

अहस्करः ahaskarah-सं० पुं० अर्क वृक्ष, आक, मदार। (Calotropis gigantea.) है० च०।

अहस्पतिः ahaspatih-सं० पुं० (१) अर्क वृक्ष, मदार, आक। (Calotropis gigantea.)। (२) सूर्य। (The sun.) अम०।

अहस्सु ahassu-अ० वह व्यक्ति जिसके शिर में कम बाल हों।

अहः ahah-सं० नाश करना। अथर्व०।

अहार ahára-हिं० संज्ञा पुं० [सं० आहार] (१) भोजन, खाना (Aliment, food, victuals.)। (२) लेई, माँड़ी। (Starch, glue, paste.)।

अहालिम ahálim-यू० अगर। (Aquilaria agallocha.)

अहालिवा ahálivá-मह०, बम्ब० चन्सूर, हालिम। (Lepidium Sativum, *Linn.*)। इं० मे० प्लां०। फा० इं० १ भा०।

अहिः ahih-सं० पुं० }
अहि ahi-हिं० }
(१) शीषक, सीसक, सीसा। Lead (Plumbum.) प्रयोग, वसन्तकुसुमाकर रस। र० सा०सं०। (२) सर्प, नाग, फणि, साँप। सर्पेंट (A serpent.)-इं०। मद० व० २२। (३) उदावर्त, नाभि। (Navel.) हारा०। (४) वज्रीवृक्ष। मनशा-सिजु-बं०। (See-vajrí.) है० च०। (५) अफीम (Opium.)। (६) सूर्य। (The sun.)

अहिंस्र ahinsra-हिं० वि० [सं०] अहिंसक।

अहिंस्रा ahinsrá-सं० स्त्री० कण्टकपाली वृक्ष, काकादनी, हैंसा। काँटा गुड़ कांटली-बं०। (Capparis sepiaria.) रत्ना० आमवात प्रलेप। गुण—विष शोथ हर। राज०।

अहिकः,-का ahikah,-ká-सं० पुं०, स्त्री० }
अहिका ahiká-हिं० संज्ञा स्त्री० }
(१) शाल्मली वृक्ष, सेमल। शिमुल गाछ-बं०। सांवरी-मह०। (Bombax heptaphyllum.) श० च०। (२) अन्धा सर्प। (A blind snake.)

अहिकान्तः ahikántah-सं० पुं० वायु, पवन। (Air, Atmosphere.) है० च०।

अहिकुटी ahi-kutí-सं० पुं० भारद्वाज पक्षी। वै० निघ०।

अहिखर ahi-khara-हिं० संज्ञा पुं० तालमखाना। (Hygrophylla spinosa.)

अहिगति ahi-gati-हिं० संज्ञा स्त्री० साँप की चाल, टेढ़ी चाल।

अहिगन्ध फला ahi-gandha-phalá-सं० स्त्री० सल्लकी वृक्ष। (Boswellia serrata.) रा० नि० व० ११।

अहिगन्धा ahi-gandhá-सं० स्त्री० (१) सर्प-

गंधा। रास्ना विशेष--बं०। सापगंध--मह०। (See--Sarpa-gandhá.) व० निघ०। (२) इशरमूल, ईश्वरमूल। (Iris root.)

अहिच्छत्रः ahi-chchhatrah--सं० पुं० मेष-शृंगी, मेढ़ासिंगी। See--Ajashringí.

अहिच्छत्रा ahi-chchhatrá--सं० स्त्री० (१) शताह्वा क्षुप, सौंफ। मौरी, शुलफा--बं०। (Pimpinella anisum.) रा० नि० व० ४। (२) शर्करा, चीनी--हिं०। चिनि-बं०। Sugar (Saccharine.) रा० नि० व० ४।

अहिछार ahi-chhára-हिं० संज्ञा पुं० साँप का विष, सर्प विष। (Snake poison, venom.)

अहिजाहकः ahi-jáhakah—सं० पुं० कृक-लास। (See--krikalása.) कॉकलास-बं०। वै० निघ०।

अहिजिह्वा ahi-jihvá—हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] नागफनी।

अहिजिह्विका ahi-jihviká—सं० स्त्री० महा शतावरी। बड़ शतमूली—बं०। (Asparagus racemosa.) वै० निघ०।

अहित ahita—हिं० संज्ञा पुं० बुराई, अकल्याण। वि० [सं०] (१) शत्रु, वैरी, विरोधी। (२) अपथ्य अनुपकारी, हानिकारक। (adverse, inimical, acting unkindly.)

अहितकारी ahitakárí—हिं० पुं० अहित करने वाला, शत्रु। (Inimical.)

अहित द्रव्यम् ahita-dravyam—सं० क्लो० अपथ्य पदार्थ, अहितकारक द्रव्य।

अहितपदार्थः ahita-padárthah-सं० पुं० अहितकर अर्थात् हानिकारक पदार्थ।

ये निम्न हैं, जैसे - वृद्ध रमणी, पूति (दुर्गंधित) मांस, प्रभात निद्रा, मैथुन और दधि प्रभृति।

अहिताहारः ahitáhárah-सं० पुं० अहितकर द्रव्य भक्षण, अहित भोजन, अहितकारी पदार्थ खाना।

गुण—पीड़ाजनकत्व। वा० सू० ७ अ०।

अहित्थः ahitthah-सं० पुं० वनमेथिका, वन मेथी। Trigonella fœnum græcum (Wild var. of--) मद० व० २।

अहिद्विट् ahidvit-सं० पुं० (१) नकुल, नेवला Mungoose (Viverra ichneumon.) (२) मयूर, मोर। (A peacock)

अहिनिर्मोकः ahinirmokah-सं० पुं० सर्प निर्मोक, सर्प कञ्चुक, साँप की केंचुली। भा०।

अहिनी ahiní-सं० स्त्री० सर्पिणी, साँप की मादा, साँपिन। (A female snake.)

अहिपति ahipati-सं०(हिं०संज्ञा)पुं० साँपों का राजा, वासुकी।

अहिपत्रकः ahi-patrakah-सं० पुं० निर्विष सर्प विशेष। (A kind of nonpoisonous snake.)

अहिपुत्रकः ahiputrakah-सं० पुं० तरालु, नौका विशेष। हारा०।

अहिपुष्पम् ahipushpam-सं० क्ली० (१) नाग-केशर पुष्प। Mesua ferrea (Flower of-) च० द०। (२) कुम्भीका तैल। सु० चि० ३७ अ०।

अहिपूतनः,--ना ahipútanah,--ná-सं० पुं०, स्त्री० बाल रोग भेद, शिशु गुदव्रण, पूतना। यथा—मल मूत्र से सनी हुई बालक की गुदा को न धोने से या पसीना आने से अथवा स्नान न करने से रुधिर और कफ दूषित होकर खुजली को उत्पन्न करते हैं फिर खुजाने से तत्काल फुन्सियाँ हो जाती हैं और उनमें से चेप निकलता है। फिर वह सब फुन्सियाँ एकत्रित होकर क्षत सी होजाती हैं, तब इस भयंकर रोग को अहिपूतना कहते हैं। मा० नि० क्षुद्र रो०।

अहिप्पन ahippan-अफीम। (Opium.) इ० मे० मे०

अहिफलः,--ला ahiphalah,-lá-सं० पुं०, स्त्री० दीर्घ कर्कटिका, चिचिण्डा। लम्बा कॉकुड़

-बं० । टर कांकड़ी-मह० । (Trichosanthes anguina.)

अहिफेनम्,-कम् ahi-phenam,-kam -सं० पुं०, क्ली०
अहिफेन ahiphena-हिं० संज्ञा पुं०
(१) नागफेन, अफीम-हिं० । स्वनामाख्यात सारजवर्गीयोपविष । आफिम्-बं० । अफून, अफू कड़री-मह० । आफन-माल० । नलमुण्डु-तै० । Opium poppy (Papaver somniferum.) देखो—अफीम । (२) सर्प के मुँह की लार वा फेन । (The saliva or venom of a snake.)

अहिफेन वटिका ahi-phena-vaṭiká-सं० स्त्री०अतिसारोक्त रस विशेष । खज्जूर,पिंड-खज्जूर । र० सा० सं० ।

अहिफेनपाकः ahiphenapákah-सं० पुं० १६तो० शुद्ध अफीमको १६सेर दूध और आधसेर घीमें पकाएँ । ठंडा होनेपर 1¼सेर शक्कर मिलाएँ; फिर जायफल, लवङ्ग,जावित्री, नागकेशर, अकरकरा, समुद्रशोष, कपूर, चन्दन, त्रिकुटा, धत्तूर के बीज,मुसली, तगर, शुद्ध सफ़ेद गुंजा, चव्य,बीजबंद, करंज, चित्रक, पीपलामूल, जीरा, अजवाइन, बला, गोखरू, बबूलकी गोंद और शिलाजीत प्रत्येक एक एक तो० चूर्णकर मिलाएँ। इसमें भंग चूर्ण१६ तो०, बंग,ताम्बा,लोहा, अभ्रक, और पारा की भस्म प्रत्येक १-१तो० मिलाकर बांटें और कस्तूरी तथा अगर से सुवासित करके रखलें । इसे पाचन शक्तिके अनुसार खाए और ऊपर से भैंस का दूध पिए तो मनुष्य १०० स्त्रियों के साथ गमन कर सकता है । इससे स्त्रियों का बन्ध्यापन, पुरुषों की नपुंसकता, खाँसी, दमा, शीत, अपस्मार, उरःक्षत, उन्माद, पाण्डु रोग, ८० प्रकार के वातरोग, कफ रोग, हिचकी, प्रमेह, आमवात, ज़ुकाम और अतिसार नष्ट होते हैं ।

अहिफेन बीजम् ahiphena-víjam-सं० क्ली० खसखस , पोस्ते का बीज । पुस्त, थाक्सि-बं० । Poppy seeds (Seeds of Papaver somniferum.) ।

अहिफेनासवः ahiphenásavah-सं० पुं० यह आसव अतिसार तथा विसूचिका के लिए हितकारक है ।

योग तथा निर्माण-विधि—मधूक मद्य (महुआ की सुरा) १०० पल, अफीम ४ पल,नागरमोथा, जायफल,इन्द्रयव तथा एला प्रत्येक १-१ पल इन सबको बर्तन में बन्दकर एक मास तक रखें । मात्रा-१० से ३० बूंद । भैष० ।

अहिबेल ahibela-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० अहिवल्ली, प्रा० अहिबेली] नागबेलि । पान ।

अहिभयदा ahibhayadá-सं० स्त्री० भूम्यामलकी, भूँई आमला । (Phyllanthus neruri.) रा० नि० व० ५ ।

अहिभुक् ahibhuk-सं० पुं० (१)मयूर । (A peacock.) रा० नि० व० १६ । (२)तार्क्ष्य । (See-tárkshyam)मे० । (३) क्षुद्र सापसंद नामक प्रसिद्ध वृक्ष । (४) नाकुली नामक महाकन्द शाक (Vanda Roxburghii.) । (५) गन्ध नाकुली । (Ophioxylon serpentinum.) रा० नि० व० ७ । See-Nákulí

अहिमणि ahi-mani-हिं० स्त्री० सर्पमणि ।

अहिमर्द्दनी ahi-marddaní-सं० स्त्री० गन्धनाकुली । रास्ना विशेष-बं० । (Ophioxylon serpentinum.) अहिलता विशेष । सापसंद-पश्चि० । रा० नि० व० ७ । देखो — नाकुली ।

अहिमारः,-कः ahi-márah,-kah-सं० पुं० विट्खदिर, दुर्गंधि-खैर, अरिमेद । गुये-बाबला -बं० । गन्धीहिंवर-मह० । (Acacia farnesiana, *Willd.*) रा० नि० व० ८ ।

अहिमेदः,-कः ahi-medah,-kah-सं० पुं० विट्खदिर, अरिमेद । (Acacia farnesiana, *Willd.*)रा० नि० व० ८ ।

अहिय्यह ahiyyah-अ० (ब० व०), हय्यु (ए० व०) सजीव, चैतन्य, जीवधारी, जीवित, ज़िन्दा । एलाइव (Alive)-इं० ।

अहिरावन ahi-rávana } –बम्ब० घया-
महिरावन mahi-rávana } मारी। ज़ख्मे हयात-फ़ा०। (Bryophyllum calycinum, *Salisb.*) मेमो०।

अहिरिपुः ahi-ripuh–सं० पुं० मयूर, मोरपक्षी। (A peacock) रत्ना०।

अहिलता ahi-latá–सं० (हिं० संज्ञा) स्त्री० (१)सापसंद। (Ophioxylon serpentinum.) गन्धनाकुली। रा० नि० व० ७। देखो—नाकुली। (२) ताम्बूल, नागवल्ली, पानवृक्ष। पान गाछ-बं०। (Piper betle., syn., chavica betle.) रा० नि० व० ११।

अहिलेखन ahi-lekhana–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] अहिल्यकम्–सं०। अगमर्का–हिं०। (Mukia scabrella. *Arn.*) फा० इं० २ भा०।

अहिलोकिका ahilo-kiká-सं० स्त्री० भूम्यामलकी, भूँई आमला। (Phyllanthus-neruri.) वैं० निघ०।

अहिल्यकम् ahilyakam–सं० क्ली० अहिलेखन, घंटाली, अगमर्वा–हिं०। (Mukia scabrella, *Arn.*) फा० इं० २ भा०।

अहिवधो रसः ahivadho-rasah–सं० पुं० मिट्टी का नया एक ऐसा घड़ा लें जिसमें ४ सेर पक्का पानी आसके। फिर शुद्ध गन्धक ६४ तो०, ताम्बे के पत्र ३२ तो० और सीसे के पत्र ३२ तो० लेकर घड़े के नीचे गन्धक का चूर्ण और उस पर ताम्र पत्र तथा ऊपर से सीसे के पत्र, फिर उसके ऊपर गन्धक का चूर्ण, इस प्रकार घड़े में सबों की तह जमाकर ऊपर से १२ तो० पारे और गन्धक की कज्जली डालकर घड़ेके मुख को कत्था, गुड़ और चूना मिलाकर बन्द करके सुखाकर घड़े को चूल्हे पर रक्खें और नीचे से १२ पहर की तेज आँच दें। जब स्वांग शीतल होजाए तो निकाल कर बारीक पीसकर मोटे कपड़े से छान कर पृथक् रखले।

फिर एक ऐसा घड़ा लें जिसमें पक्का ४८ सेर पानी आसके; फिर उसके भीतर गुड़ और चूने को पानी में पीस कर अच्छी तरह लेप करके सुखालें और एक जवान पुष्ट काला गेहुँअन साँप को पकड़ कर इस प्रकार मारें कि उसके बदन में चोट लगकर छिद्र न हो जाएँ (क्लोरोफॉर्म सुँघाने से साँप मर जाता है)। फिर उसके पेट में मुख द्वारा ३२ तो० पिसी हुई हरिताल डाल कर ४ तो० पिसा हुआ बच्छनाग डालकर फिर ऊपर से खूब बारीक पिसी हुई ३२ तो० हड़ताल डालकर उपर्युक्त घड़ेमें ४ तो० पिसा हुआ बच्छनाग और एक सेर बकुची, भिलावाँ और इन्द्रजौ का चूर्ण डालकर ऊपर से उस साँप की गोल चक्री जैसी करके रखदें। ऊपर से आक की टहनियाँ ६४ तो०, थूहर की टहनियाँ १ सेर, वट जटा की अंकुरें १ सेर और घिकुवार १ सेर डालकर घड़े के मुख को गुड़ चूने से अच्छी तरह बंद करके ऊपर से कपड़मिट्टी करके सुखालें। फिर उसे चूल्हे पर रख कर नीचे चावल पकने योग्य हलकी आग दें। पुनः ६६ (१६२) तो० घी लोहे की कड़ाही में गरम करके घड़ेकी सभी चीज़ उसमें डाल कर नीचे तेज आँच दें और बीच में ८ तो० भूनी फिटकिरी ८ तो० सुहागा ले चूर्ण करके थोड़ा थोड़ा चुटकी से डालते रहें। जब कड़ाही के ऊपर आग लगकर सब घी जल जाए तब उसमें उपर्युक्त ताम्बा और सीसा का छाना हुआ चूर्ण मिलाकर बारीक पीस कर रखलें।

इसको १ रत्ती भर से प्रारम्भ करें। चार दिन बाद दूना, फिर चारदिन बाद तिगुना और ४ दिन बाद चौगुना, इस प्रकार जब ४ रत्तीपर मात्रा आ जाए तब उतने ही लेते रहें। ७ दिन तक जौ का दलिया खाएँ। नमक बिलकुल त्याग दें। यदि नमक न छोड़ा जासके तो किंचित् सेंधानमक लिया करें। इस तरह करने से सम्पूर्ण शरीर में व्याप्त कुष्ट नष्ट हो जाता है। यह त्रिदोष जन्य रोगों और राजयक्ष्मा को नष्ट करता है। रस० यो० सा०।

अहिल्या ahilyá–सं० स्त्री० वन मेथिका। वन मेथी। (Crotalaria albida.) वै० निघ०।

अहिवल्ली ahi-vallí-सं० स्त्री० नागवल्ली। पान। (Piper betle,syn. chavica betle.) भैष० ध्व० भं० चि० ।

अहिवासन ahivásan-हिं० संज्ञा पुं० धनेश पक्षी। (Bucero-.)

अहिविषापहा ahivishápahá-सं० स्त्री० अहिलता, सापसंद। (Ophioxylon serpentinum.) वैं० निघ० ।

अहिश्तना ahiṣhtaná-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] बच्चों का एक रोग जिसमें उनको पानी सा दस्त आता है, गुदा से सदा मल बहा करता है, गुदा लाल रहती है, धोने पोंछनेसे खुजली उठती है और फोड़े निकलते हैं।

अहिसाव ahi-sáva-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अहिशावक] साँप का बच्चा। पोआ। सँपोला।

अहि स्कंधः ahiskandhah-सं० पुं० गुल्फ, गट्टा। पायेर गुल्ल-बं०।

अही ahí-सं० स्त्री० गवि, गाय। (A cow.)

अहीक़ ahíqa-अ० लम्ब ग्रैव, लम्बी गर्दन वाला। (Long necked.)

अहीन्द्रः ahíndrah-सं० पुं० शारिवा, अनन्तमूल। (Hemidesmus Indicus.) च० द० यक्ष्म० चि० लवङ्गादि चूर्ण।

अहीफ़ ahífa-अ० पतले कमरवाला। (Thinloined.)

अहीरणिः ahíranih-सं० पुं० द्विमुख सर्प, दुइ मुँहा या दो मुँहवाला साँप। शङ्खिनी। (Double mouthed snake, an erix.) हारा०।

अहीरुहः ahíruhah-सं० पुं० शाक वृक्ष। शगुवा-हिं०। (Tectona grandis, Teak tree.)

अहुल ahul-हिं० संज्ञा पुं० ओड़ुल, पुवाम, पुवेन, गह।

अहे ahe-हिं० संज्ञा पुं० [देश०] एक पेड़ जिसकी भूरी लकड़ी मकानों में लगती है तथा हल और गाड़ी आदि बनानेके काममें आती है।

अहेर ahera-सिंध० चन्द्रसूर, अहलीव।(Lepidium sativum, *Linn.*) इं० मे० मे०।

अहेरुः aheruh-सं० स्त्री० शतमूली, शतावर। (Asparagus racemosus, *Willd.*) अम०।

अहेरो ahero-सिंध० चन्द्रसूर। (Lepidium sativum. *Linn.*) इं० मे० प्लां०।

अहोर्न ब्लैट्ट्राइजेर फ्लुजेल्सेमीन ahorn-blattriger-flugelsamen-जर०कर्णिकार-सं०। छोटा सोन्दाल-हिं०। (Peterospermum aserifolium.) इं० मे० मे०।

अहोरात्र ahorátra-हिं० दिन रात, दिवानिशि, अहर्निशि। (Day&night.)

अहौज ahouja-अ० लम्बा मूर्ख आदमी।

अहौम ahoum-अ० विशाल शिरवाला। (Large-headed.)

अहौर ahour-अ० हूरियह (जिसके नेत्र का श्वेत भाग अत्यन्त श्वेत एवं काला भाग अत्यन्त श्याम हो।

अहौल ahoul-अ० काज़, भेंगा जो एक चीज़ को दो देखे। (Squint.)

अहौलिय्यत ahouliyyata-अ० भेंगापन। स्ट्राबिज़मस (Strabismus.)-इं०।

अहौस ahousa-अ० तंग चश्म-फा०। जिसके एक या दोनों नेत्र संकुचित (छोटे) हों।

अह्जाऽ ahjáa-अ० पालन पोषण करना, खिलाना। (Bringing up.)

अह्जाज़ ahjáza-अ० सोना, सुलाना। (Sleep,cause to sleep.)

अह्तम् ahtam-अ० जिसके अग्रिम दंत खण्डित हों।

अह्ताऽ ahtáa-अ० कुब्ज, कुबड़ा-हिं०। कुज़ पुश्त-फा०। (Hunch backed.)

अहदब ahdab-अ० कुज़ पुश्त-फा०। कुब्ज,

कुबड़ा-हिं० । हञ्च बैक्ड (Hunch backed.)-इं० ।

नोट—कुबड़ी स्त्री को अरबी में हुद्बा कहते हैं ।

अ.ह्दब और अक्अस का भेद—जिसका पृष्ठ बाहर को निकला हो और वक्ष भीतर को दबा हुआ हो उसे अ.ह्दब और विरुद्ध इसके जिसका वक्ष बाहर को निकला हो तथा पृष्ट भीतर को दबा हुआहो उसे अक्अस कहते हैं ।

अह्दब ahdab-अ० वह मनुष्य जिसकी पलकें विशाल हों ।

अह्दर ahdar-अ० शोफ उदरीय, वह मनुष्य जिसका उदर शोथयुक्त हो ।

अ.ह्दल ahdal-अ० एकाण्ड, एक अण्डवाला, वह मनुष्य जिसके एक अंड हो ।

अह्दाऽ ahdáa-अ० कुबड़ा, शोथयुक्त एवं ढीले स्कंधवाला ।

अह्दाकुल् बक़र ahdáqul-baqara-अ० काला अंगूर । (Black var. of Vitis vinifera.)

अह्दाकुल् मर्ज़ी ahdáqul-marzí—अ० उक़्हुवान, बाबूना गाव । (Parthenium matricaria.)

अह्दाब ahdába-अ०(ब० व०), हुद्ब (ए० व०) पलकें । (Eye-lids.)

अह्दिया व अहादिया ahdiyá vaahádiyá -अ० अज़्दहा-फ़ा० । अजगर-हिं० । (Boa constrictor.)

अह्नफ़ ahnafa-अ० कुब्ज, टेढ़े या छोटे पाँव वाला । क्लब-फूटेड (Club-footed.)-इं० ।

अह्मक़ ahmaqa-अ० मूर्ख, निर्बुद्धि, बुद्धिहीन, बे समझ, सामान्य । ईडियट (Idiot.) -इं० ।

अह्मदाबादी मेवा ahmadábádí-mevá-बम्ब० खिरनी, खीर खजूर, खीरी, राजादनी -हिं० । काकादिया-गु० । राजन, केर्नी-मह० । रायन-गु० । पल्ल-ता० । (Mimusops hexandra, *Roxb.*, *Cor.*) फा० इं० २ भा० ।

अह्मर ahmar-अ० सुर्ख़, सुर्ख़ रंग-फ़ा० । रक्तवर्ण, लाल-हिं० । Red (Rubrum.) । इतिब्बा ने इसकी चार कक्षाएँ निर्धारित की हैं, जैसे—(१) असहब अर्थात् सुर्ख़ सफ़ेदी मायल (श्वेताभरक्त), (२) वर्दी अर्थात् अरुण वा गुलाबी, (३) क़ानी अर्थात् गंभीर रक्त और (४) अक़्तम अर्थात् सुर्ख़ स्याही मायल (श्यामाभ रक्तवर्ण) ।

नोट—अह्मर का प्रयोग संकेत रूप से कठिन मृत्यु, मांस, मद्य, केशर तथा एक प्रकार के छुहारे के लिए भी होता है ।

अह्मर अक़्तम ahmar-aqtam—अ० श्यामाभ रक्तवर्ण, अधिक कालापन लिए हुए लाल रंग ।

अह्मर क़ानी ahmar-qání-अ० गम्भीर रक्तवर्ण, लाल भभूका, अत्यन्त रक्तवर्ण ।

अह्मर नासिअ ahmar-násiā-अ० हलका रक्तवर्ण, पिलोई लिए लाल रंग (पीताभ रक्त वर्ण) । रोग-विज्ञान में हलके लाल या पिलोई लिए हुए लाल रंग के क़ारोरह् (मूत्र) को कहते हैं । यह नारी की अपेक्षा तीक्ष्ण होता है ।

अह्मश ahmash-अ० जिसकी पिण्डलियाँ पतली और बारीक हों ।

अह्याटः ahyátah-सं० पुं० ओकड़ा । प० मु० ।

अह्यून ahyúna-यू० एक बूटी है जिसका शिर अजगर के शिर के समान होता है ।

अह्रारुल् बुक़ूल ahrárul-buqúla-अ० वह तरकारियाँ जो कच्ची खाई जाती हैं, जैसे काहू आदि ।

अह्लब दिया ahlab-diyá-सिरि० शबरम्, बाँस के समान एक बूटी है जो खेत और बगीचों में उगती है ।

अह्लाम ahlám-अ०(ब० व०), हुल्म (ए० व०)(१) स्वप्न, निद्रा । (Sleep, dream.)

(२) कुस्वप्न । (Bad dream.) देखो-हुल्म ।

अह्लला ahvalá-सं० स्त्री० भल्लातक भिलावाँ । (Semecarpus anacardium.) श० च० ।

अह्वाल ahvála-अ० (ब० व०) दशा, अवस्था, लक्षण । तिब (वैद्यक) की परिभाषा में मनुष्य शरीर की तीन अवस्थाएँ अर्थात् स्वास्थ्य, रोग, तीसरी अवस्था (हालते सालसा) जो रोगारोग के मध्य मानी जाती है, यथा—सहजांधता आदि ।

अह्वियह् ahviyah-अ० (ब० व०), हवा (ए० व०) वायु, हवा-हिं० । (Atmosphere.)

अह्शा ahshá-अ० (ब० व०), हशा (ए० व०), वक्षोदरान्तरिकावयव, उदर एवं वक्ष के भीतर स्थित अवयव । विसरा Viscera (ब० व०), विस्कस Viscus (ए० व०)-इं० ।

नोट-(१) वक्षान्तरिक अवयव को अह्शा सद्री एवं उदरान्तरिक अवयव को अह्शा बत्नी और पेडू अर्थात् वस्तिगह्वरस्थ अवयव को अह्शाउल् आनह् कहते हैं ।

(२) डॉक्टरी में मस्तिष्क का भी अह्शा में ही समावेश होता है ।

अह्शाउल् आनह् ahshául-áanah-अ० पेडू के जौफ़ में स्थित अवयव विशेष । जैसे जरायु, वस्ति (मूत्राशय) आदि वस्तिगह्वरान्तर अवयव विशेष । पेल्विक विसरा (Pelvic viscera.)-इं० ।

अह्शाउल् बत्न ahshául-batna-अ० औदरीय अवयव, उदरके भीतर स्थित अवयव, उदराशयस्थ अवयव । जैसे-आमाशय, यकृत, प्लीहा तथा आन्त्र प्रभृति । Abdominal viscera.

अह्शाउस्सद्र ahsháussadra-अ० वाक्षीयावयव, वक्ष के भीतर स्थित अवयव । जैसे-हृदय, फुफ्फुस आदि । थोरेसिक विसरा (Thoracic viscera)-इं० ।

अह्सा ahsá-अ० (ब० व०), हस्रा, हस्वह (ए० व०) हरीरा, दूधी, एक प्रकार का पतला आहार है जो साधारणतः सबूस (भूसी), शर्करा और बादाम तैल आदि के योग से निर्मित किया जाता है । देखो-हरीरा (harírá) ।

अक्ष akshah-सं० पुं०
अक्ष aksha-हिं० संज्ञा पुं० [स्त्री० अक्षा]
(१) विभीतकी । बहेड़ा । (Terminalia belerica) रा० नि० व० ६ । भा० म० ४ भा० अञ्जन । "जग्ध्वाक्षकार्द्रैर्मलमायमन्तु ।" यक्ष्मा० एलादि मन्थ वृन्द० । सि० यो० सिद्ध मतयोग कु० काम० वृन्द० । वृन्द । (२) कर्ष परिमाण । कर्ष नामक तोल जो १६ माशे की होती है । प० प्र० । देखो—कर्षः । (३) रुद्राक्ष वृक्ष । भा० अने० व० । (४) इन्द्राक्ष । ऋषभक । (५) सर्प । साँप । (A serpent) मे० । (६) श्वास । दमा । (७) ऋषभक । (८) देव शिरीष । शिरीष विशेष । रा० नि० व० ६ ।

क्ली० (६) विषयेन्द्रिय । इंद्रिय । रा० नि० व० १८ । वा० शा० ३ अ० । (१०) सौवर्चल लवण, कालानोन । (Sochal salt) ।(११) तुत्थक । तूतिया । मे० षद्विकं । (१२) विभीतक फल । (१३) पद्म बीज । रा० नि० व० ११ ।

हिं० संज्ञा पुं० (१४) धुरी । किसी गोल वस्तु के बीचों बीच पिरोया हुआ वह छड़ वा दंड जिस पर वह वस्तु घूमती है । (१५) Pivot पहिए की धुरी । (१६) Axis वह कल्पित स्थिर रेखा जो पृथ्वी के भीतरी केन्द्र से होती हुई उसके आर पार दोनों ध्रुवों पर निकली है और जिस पर पृथ्वी घूमती हुई मानी गई है । (१७) तराजू की डाँडी । (१८) सोहागा । टंकण (Borax) । (१९) आँख, नेत्र । (An eye) । (२०) गरुड़ । (२१) जन्मांध । (Born blind)

अक्षकः akshakah-सं० पुं० (१) विभीतकी, बहेड़ा । (Terminalia belerica) भा० पू० १ भा० । (२) तिनिश वृक्ष,

तिरिछ । (Lagerstræmia flos reginæ) र० मा० । "विश्वमक्षसमं पिबेत् ।" च० द० ज्वरातिसार-चि० । (३) रुद्राक्ष वृक्ष । श० र० । (४) इन्द्राक्षवृक्ष । (५) सर्प । (६) २ तो० मान । मे० षद्विकं ।

अक्षकम् akshakam-सं० क्लो०
अक्षक akshaka-हिं० संज्ञा पु० } अक्षकास्थि, हँसली । Collar bone (Clavicle) । अज़्मुत्तर्क़ वह्, अत्तर्क़ वह्-अ० ।

अक्षक सन्धिस्थालक akshak-sandhi-sthálaka-हिं० संज्ञा पु० (Facet for clavicle)

अक्षकङ्काल aksha-kankála-हिं० संज्ञा पु० (Axial skeleton.)

अक्षकाधर akshakádhar-हिं० वि० । (Subclavicular) हँसलीके नीचे का ।

अक्षकाधर शिक्यम् akshakádhara-shikyam-सं० क्लो० (Ausa subclavia.)

अक्षकाधरा akshakádhará-हिं० संज्ञा स्त्री० अक्षकास्थि तथा पहिली पसली के बीच में रहने वाली एक पेशी विशेष । (Subclavius infraclavicular.) अज़्लहे तह्तुत्तर्क़ वह्-अ० ।

अक्षकाधरा धमनीakshaká-dhará-dhamaní-सं० (हिं० संज्ञा) स्त्री० अक्षकाधोवर्तिनी धमनी । (Subclavian artery.)

अक्षकाधोधमनी akshakádho-dhamaní-हिं० संज्ञा स्त्री० हँसली के नीचे की धमनी । यह हँसली के नीचे के अंगों में शुद्ध रुधिर देती है । (Subclavian artery).

अक्षकाधो पेशी akshakádho-peshí-हिं० संज्ञा स्त्री० हँसली के नीचे की पेशी । (Subclavious muscle.)

अक्षकाधोवर्तिनी धमनी akshakádho-vartiní-dhamaní-सं० (हिं०संज्ञा) स्त्री० हँसली के नीचे की धमनी । (Subclavian artery.) शिर्यान तह्तुत्तर्क़ वह्-अ० ।

अक्षकाधोवर्त्ती शिरा akshakádho vartti-shirá-हिं० संज्ञा स्त्री० हँसली के नीचे की शिरा । (Subclavian vein.)

अक्षकान्तरच्छिद्रम् akshakántara-chchhidram-सं० क्लो० (Jugular notch.)

अक्षकान्तरीय स्नायुः akshakántaríya-snáyuh-सं०पु० (Inter clavicular.)

अक्षकारका akshakáraká-हिं० संज्ञा स्त्री० घृतकुमारी । (Aloe Indica) वै० निघ० ।

अक्षकाष्ठम् akshakáshtham-सं० क्लो० विभीतक काष्ठ । Terminalia belerica (The root of-) च० द० पाण्डु-चि० ।

अक्षकास्थि akshakásthi-हिं० संज्ञा स्त्री० अक्षक । हँसली की हड्डी । (Clavicle,)

अक्षकूट akshakúta-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] आँख की पुतली ।

अक्षकोत्तरा akshakottará-सं०(हिं०संज्ञा) स्त्री० (Supra clavicular.)

अक्षगणः aksha-ganah-सं० पुं० श्रोत्रादि इन्द्रिय समूह । ज्ञानेन्द्रियाँ । विषयेन्द्रियाँ । (The organs of sense.)

अक्षगन्धिनी aksha-gandhiní-सं० स्त्री० अतिबला । कंघी । ककही । (Sida rhombifolia.) वै० निघ० ।

अक्षणी akshaní-सं० स्त्री० चक्षु । नेत्र ॥ अथ० । १० । २ । ६ ।

अक्षतः akshatah-सं० पुं०
अक्षत akshata-हिं० संज्ञा पु० } (१) (Barley.) यव, जौ । (२) (बहु०) आतप तण्डुल(चावल) । रा० नि० व० १६ । (३)शस्य मात्र । धान्य आदि, व्रीहि यवादि । अ० टी० भानुः । सं० क्ली० (४)

लाजा। धान का लावा। मे० । यव। जौ। (Barley) प० मु०।
"लाजेषु त्रिष्वहिंसिते। यवेऽपिकचित्"।
मे० तत्रिक। कोई बिना टूटे हुए चावल को कहते हैं जो देवताओं की पूजा में चढ़ाया जाता है।

सं० त्रि०, हिं० वि० (१) अव्रण। जिसमें क्षत या घाव न किया गया हो। (२) अहिंसित। मे०।

(३) अखंडित। बिना टूटा हुआ। सर्वांग पूर्ण। समूचा। श०।

अक्षतण्डुला akshatandulá–सं० स्त्री० महा समंगा क्षुप। रा० नि० व० ५।

अक्षतयोनि akshata-yoni–हिं० वि० [सं०] (कन्या) जिसका पुरुष से सम्बंध न हुआ हो।

कुमारी। वर्जिन (Virgin.), वर्जो इन्टैक्टा (Virgo-intacta.)–इं०। बाकिरह्, अज़्राऽ,दोशीज़ह्,नाबालिग़ह्–अ०। दोशीज़ह्–फ़ा०। कुँवारी, कुँवारी औरत–हिं०, उ०।

हिं० संज्ञा स्त्री० (१) वह कन्या जिसका पुरुष से संभोग न हुआ हो। (२) वह कन्या जिसका विवाह हो गया हो पर पति से समागम न हुआ हो।

अक्षतरोगः akshata-rogah–सं० पुं० उपनख रोग विशेष।

लक्षण—वात पित्त कुपित होकर नख के मांस को पका देते हैं जिससे वेदना और ज्वर पैदा हो जाते हैं। इसरोग को चिप्प, अक्षत वा उपनख रोग कहते हैं। यथा–"वुर्योपित्तानिल' पाकं नख मांसे सरुग्ज्वरम्,चिप्यमक्षत–रोगं च विद्यादुपनखं च तम्।" वा० उ० ३१ अ०। आङ्गुल हाड़ा–बं०।

अक्षतवीर्य akshata-víryya–हिं० वि० [सं०] जिसका वीर्य पात न हुआ हो। जिसने स्त्री संसर्ग न किया हो।

अक्षता akshatá–हिं० वि० [सं०] जिसका पुरुष से संयोग न हुआ हो।

संज्ञा स्त्री० (१) वह स्त्री जिसका पुरुष से संयोग न हुआ हो।

(२) धर्मशास्त्र के अनुसार वह पुनर्भू स्त्री जिसने पुनर्विवाह तक पुरुष संयोग न किया हो।

(३) कर्कटशृंगी, काकड़ासींगी। (Rhus acuminata.)

अक्षते-चे-खोर akshate-che-khora–अक्षत। फ़ा० इं०।

अक्षतैलम् aksha-tailam–सं० क्ली० बहेड़ा का तेल, विभीतक तैल। बयड़ा बीजेर तैल–बं०। (Terminalia belerica (Oil of–) वा० उ० १३ अ०।

अक्षदण्ड aksha-danda–

अक्षधरः aksha-dharah–सं० पुं० शाखोट वृक्ष। शेओड़ा गाछ–बं०। भरि प्र०। (Trophis aspera.)

अक्षधुर aksha-dhura–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] पहिए की धुरी।

अक्षधूर्त्तः,-र्त्तिलः aksha-dhúrttah,-rttilah–सं० पुं० वृषभ। बैल। षाँड़–बं०। (A bull, an ox.) हारा०।

अक्षन akshana–हिं० संज्ञा पुं० (Axom.) सेल की जो शाखा नाड़ी बन जाती है उसे अक्षन कहते हैं।

अक्षपाकः aksha-pákah–सं० पुं० सचल लवण। (Sochal salt.) वै० निघ०।

अक्षपिंडः aksha-pindah–सं० पुं० शंखपुष्पी। (Andropogon aciculartum.) वै० निघ।

अक्षपीड़ः aksha-pídah–सं० पुं० (१) श्वेत बुह्ना। श्वेतबुह्नामूल। रसेंद्र चि० ६ अ०। (२) दुरालभा। (Alhagi maurorum.) सु० चि० ६ अ०।

अक्षपी(ड़का)ड़ा akshapí(daká),-dá–सं० स्त्री० (१) कालमेघ। शंखिनी। यवतिक्ता। (Andropogon paniculata, Nees.) रा० नि० व० ३। (२) श्वेत बुह्ना। सु०। प० मु०।

अक्षमः akshamah–सं० पुं० (१) स्थूल

मूलक। (२) बन चटक, जंगली गौरैया। (Wild-sparrow) वै० निघ०। (-मा) स्त्री० (१) अक्षान्त। ईर्ष्या। (Envy.) श० र०। (२) असमर्थ। अशक्त।

अक्षम akshama-हिं० वि० [सं०] [संज्ञा अक्षमता] (१) क्षमारहित। असहिष्णु। (२) असमर्थ। अशक्त। लाचार।

अक्षमता akshamatá-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] (१) क्षमा का अभाव। असहिष्णुता। (२) असामर्थ्य।

अक्षमाला akshamálá-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] रुद्राक्ष की माला।

अक्षय akshaya } -हिं० वि० [सं०] जिसका क्षय न हो।
अक्षय्य akshayya }
अविनाशी। अनश्वर। सदा रहने वाला।

अक्षरः aksharah-सं० पुं० }
अक्षर akshara-हिं० संज्ञा पुं० }
(१) अपामार्ग, चिचड़ा। (Achyranthes aspera.) हे० च०।-सं० क्ली० (२) जल (Water)। (३) अपामार्ग जल। (४) आकाश। (५) अकारादि वर्ण। हरफ़।-हिं० वि० अच्युत। स्थिर। अविनाशी। नित्य।

अक्षरुचकम् aksha-ruchakam-सं० क्ली० मृत्तिका लवण। खारी मिट्टी। सोरा-बं०। सोर मिट-महा०। वै० निघ०।

अक्षरेखा aksha-rekhá—हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] धुरी की रेखा। वह सीधी रेखा जो किसी गोल पदार्थ के भीतर केन्द्र से होती हुई दोनों पृष्ठों पर लंब रूप से गिरे।

अक्षल गुडः akshala-gudah सं० पुं० (Axis cylinder.)।

अक्षवाट् aksha-vát-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] अखाड़ा। कुश्ती लड़ने की जगह।

अक्षवीर्य्यवान् aksha-viryyaván-सं० पुं० श्वेत करवीर, श्वेत कनेर। Nerium odorum (White var. of-) वै० निघ०।

अक्षशिरोधिजा aksha-shirodhijá—सं० स्त्री० मन्यास्थ शिरा। वै० निघ०।

अक्षसमा aksha-samá-सं० स्त्री० (Axis vertebra, second cervical vertebra.)

अक्षसमा पृष्ठकीया संधिः akshasamá-prishthakíyá-sandhih-सं० स्त्री० (Occipito-axial joint.)

अक्षसस्यम् aksha-sasyam-सं० क्ली० कपित्थ फल, कैथ। कंवित-म० (Feronia elephantum.) वै० निघ०।

अक्षसूत्र akshasútra-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] रुद्राक्ष की माला।

अक्षहीन akshahína-हिं० वि० [सं०] नेत्रहीन। अंधा।

अक्षांश akshánsha-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) भूगोल पर उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवसे होतीहुई एक रेखा मानकर उसके ३६० भाग किए गए हैं। इन ३६० अंशों पर से होती हुई ३६० रेखाएँ पूर्व पश्चिम भूमध्य रेखा के समान्तर मानी गई हैं। अक्षांश की गिनती विषुवत् या भूमध्य रेखा से की जाती है। (२) वह कोण जहाँ पर क्षितिज का तल पृथ्वी के अक्ष से कटता है।

अक्षार लवण akshára-lavana-हिं० संज्ञा पुं० (१) वह लवण जिसमें क्षार न हो। वह नमक जो मिट्टी से निकला हो। नोट—कोई कोई सेंधे और समुद्र लवण को अक्षार लवण मानते हैं। (२) वह हविष्य भोजन जिसमें नमक न हो और जो अशौच और यज्ञ में काम आवे। अकृत्रिम सैंधव आदि। जैसे दूध, घी, चावल, तिल मूँग और जौ आदि। हारलता।

अक्षि akshi-सं० क्ली०, हिं० संज्ञा स्त्री० नेत्र, आँख, नयन। (Eye.) रा० नि० व० १८।

अक्षिकः akshikah-सं० पुं० }
अक्षिक akshika-हिं० संज्ञा पुं० }
(१) रजन वृक्ष। आउच गाछ-बं०। (Dalbergia oujeinjensis.) इला०। (२)

आल का पेड़। आच्छुक। (Morinda citrifola.)

अक्षिकुंडः akshi-kundah–सं० पु० (Orbit) अक्षिखात।

अक्षिकुंडीय akshi-kundíya–सं० त्रि० (Orbital) अक्षिखात सम्बन्धी।

अक्षिकूटः,-कः akshi-kútah,-kah–सं० पु० (१) Eye ball. इषिका, नेत्रतारा, अक्षिगोलक। वा० सू० २ अ०। (२) गजाक्षिपुटक, गजाक्षि गोलक। हे० च०।

अक्षिकूणितम् akshi-kúnitam–सं० क्ली० अपांग दृष्टि।

अक्षिकृष्णम् akshi-krishnam–सं० क्ली० नेत्र का काला भाग। शतप०।

अक्षिखात akshi-kháta–हिं० संज्ञा पु० अक्षिगुहा, नेत्रगुहा, आँख के रहने के गड्ढे की गुफा। (Orbits of eyes., orbital cavity.)

अक्षिगु(गू)हा akshigu,-gú,-há–सं० (हिं० संज्ञा) स्त्री० आँख के गड्ढे। आँख के रहने के गड्ढे की गुफा। (Orbit of eyes.) प० शा०।

अक्षिगोलः akshi.golah–सं० पु० नेत्रतारा। (The ball or globe of t e eye) वै० श० सि०।

अक्षिगोलक akshi golaka
अक्षिगोलम् akshi-golam
–सं० क्ली० आँख का ढेढन। (Ball of the eye.)

अक्षिचालनी akshi-chálaní–सं० स्त्री० (Oculo-motor.)

अक्षिच्छादनम् akshichchhádanam–सं० क्ली० अक्षिपक्ष्म, अक्षिवर्त्मन। (Eye-lash, cilia) रत्ना०।

अक्षिणी akshiní–सं० स्त्री० चक्षु, नेत्र। अथ० सू० २। ३३। का० १।

अक्षितारा akshi-tárá–हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] आँख की पुतली।

अक्षिदण्ड akshidanda-हिं० संज्ञा पु० (Axis) अक्ष।

अक्षिपञ्चकम् akshi-panchakam–सं० क्ली० श्रोत्र, त्वचा, रसना, नेत्र और नासिका। रा० नि० व० १८।

अक्षिपटल akshi-patala–हिं० संज्ञा पु०
अक्षिपटलम् akshi-patalam–सं० क्ली०
आँख का परदा। आँख के कोए पर की झिल्ली। नेत्रपटल। पलक। (Eye-lid, A coat of the eye.)

अक्षिपक्ष्म akshi-pakshma–सं० क्ली० नेत्र लोम, अक्षिवर्त्म, बरौनी। (Eyelash, Cilia) सु० शा० ३। १४।

अक्षिपाकात्ययः akshipákátyah–सं० पु० अक्षि कृष्ण गत रोग विशेष।

लक्षण—जिसकी आँखों से गरम पानी गिरने से फुन्सी हो जाए। दोनों पटलों में शुक्ल फूला प्राप्त हो जाने से ये लक्षण होते हैं। जिसमें मूँग के समान शुक्ल हो वह असाध्य है और जो तीतर के पंख के समान (काले रंग का) हो उसको भी कोई कोई असाध्य कहते हैं। तीनों दोषों से जिसके नेत्रके काले भाग में चारों ओर से सफ़ेदी छा जाती है उस नेत्रपाक को त्रिदोषज अक्षिपाकात्यय नामक नेत्र रोग वैद्यों को त्याग करने योग्य है। मा० नि०।

अक्षिपीलुः akshi-píluh–सं० पु० महानिम्ब। (Melia azedarach.) वै० निघ०।

अक्षिबुद्बुदः akshi-budabudah–सं० पु० (Optic vesicle, Bulb of the eye.)

अक्षिभेषजम् akshi-bheshajam–सं० क्ली० (१) श्वेतलोध्र। सफ़ेद लोध। मद० व० १। पट्टिका रोध्र, पठानी लोध। रा० नि० व० ६। (२) नेत्रौषध, नेत्राञ्जन।

अक्षिमण्डलम् akshi-mandalam–सं० क्ली० नेत्रमण्डल। शतप०।

अक्षिरोगः akshi-rogah–सं० पु० नेत्ररोग, चक्षुरोग। (An eye disease.)

अक्षिलोम akshi-loma-सं० स्त्री० नेत्ररोम, अक्षिपक्ष्म, बरौंधी। (Eyelash, Cilia.)

अक्षिवः akshivah-सं० पुं० (१) शोभाञ्जन वृक्ष, सहिंजन। शजना-बं०। (Guilandina or Hyperanthera morunga.) । (२) मरिच। (Pepper.) रा० निं० व० ७।-स्त्री० (३) समुद्र लवण। (Sea salt.) अ० टी० भ०।

अक्षिवर्त्म akshi-vartma-सं० स्त्री० अक्षिपक्ष्म। (Eye lash.)

अक्षिविचूर्णितम् akshi-vichúrnitam-सं० क्ली० अपांग दृष्टि। हे० च०।

अक्षिवैराग्यम् akshi-vairágyam—सं० क्ली० आँख का लाल होना, नेत्र विरक्तता। "चकारस्याक्षि वैराग्यम्।" वा० सू० ७ अ०।

अक्षिशूल akshishúla-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] नेत्र वेदना। आँख का दर्द।

अक्षिशुक्लम akshi-shuklam-सं० क्ली० नेत्रका सफ़ेद भाग। शतप०।

अक्षिशोष akshi-shosha-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] नेत्र शुष्कता।

अक्षिसेचनम् akshisechanam-सं० क्ली० नेत्रनिस्तोद वा आश्चोतन अर्थात् परिषेक। इसकी विधि निम्न है:—

विधि—रोगी को वातरहित स्थान में बैठा कर बाएँ हाथसे आँख खोलकर सीपी, प्रलंबा वा रुई के फाहे से दो अंगुल ऊँचे से आँख के तारे पर दस-बारह बूँद डाल दें। तत्पश्चात् कोमल वस्त्र से पोंछ कर गुनगुने पानीमें चेलवर्ति को भिगोकर धीरे धीरे आँखों में स्वेदन करें। यह आश्चोतन वात कफ में किया जाता है रक्त-पित्त में नहीं। वा० सू० २३ अ०।

अक्षिहुण्डनम् akshihundanam-सं० क्ली० नेत्राभ्युदास। मा० नि० विज० र०।

अक्षीकः akshíkah-सं० पुं० वृक्ष विशेष। आउच-बं०। रत्ना०। (A tree.)

अक्षीण akshína-हिं० वि० [सं०] (१) जो न घटे। (२) अविनाशी।

अक्षीणनामारसः akshínanámá-rasah-सं० पुं० स्वेदन तथा पातन किए हुए और संस्कार से बीजोत्पादित पारे में षोडशांश सुवर्ण का जारण करें। इसके पश्चात् १६ गुना गंधक जारण करें। फिर पारे का चतुर्थांश सुवर्ण और १६ वाँ भाग गंधक डालकर, जम्भीरी के रस अथवा किसी भी खटाई से मर्दित करके टिकड़ी बनाएँ। फिर कच्छपयंत्र में या सोमनाल यंत्र में नीचे ऊपर पिट्ठी से दूना या तिगना गंधक देकर पिट्ठी को बीच में दबाएँ। फिर चूल्हे पर चढ़ा कर ३ दिन तक मंद मंद अग्नि दें। इस तरह करने से सुवर्ण के साथ पारे की भस्म होगी।

उपर्युक्त विधि से मारा हुआ पारा १ भा०, कांतपाषाण या इससे निकाला हुआ लोह भस्म १ भाग, मारा हुआ अभ्रक सत्व, ताम्रभस्म एवं शुद्ध गंधक दो दो भाग, इन सबको खरल में डाल कर तीन दिन तक लगातार मर्दन करें। फिर इसकी टिकियाँ बना छाया में शुष्क कर भूधर यंत्र में करीष की अग्नि दें। फिर इसको निकालकर शीशी में रखें।

मात्रा—१ मा० रस गुडूची सत्व तथा योग्यतानुसार मुलेठी और बंशलोचन व शहद मिलाकर चाटें तो ४ महीने में पथ्य सेवी के क्षय को निर्मूल कर देता है।

पथ्य—चावल, गोघृत, तक्र, गेहूँ और जौ। रस० यो० सा०।

अक्षीवः akshívah-सं० पुं०
अक्षीव akshíva हिं० संज्ञा पुं०
(१) शोभाञ्जन, सहिंजन का पेड़। (Moringa pterygosperma) मे० वत्रिक०। च० सू० ४ अ० कृमिघ्न व०, चि० ३ अ०। (२) महानिम्ब। (Melia azedarach) भा० पू० १ भा०। (३) वचिर, तक।-स्त्री० (४) सामुद्र लवण, समुद्री नमक। (Sea salt) पाङ्गा-बं०। भा० पू० १भा०। (५) मरिच। Black pepper (Piper nigrum) ।-त्रि०, हिं०वि० अमत्त। जो मतवाला न हो। चैतन्य। धीर। शांत।

अक्षुण akshuṇa-हिं० वि० [सं०] (१) अभग्न। बिना टूटा हुआ। अच्छिन्न। समूचा। (२) अकुशल, अनाड़ी।

अक्षेयः aksheyah-सं० पुं० रक्तार्क, लाल मदार। वै० निघ०। Calotropis gig.n-tea (The red var. of-) देखो-आक।

अक्षोटः,-कः,-की akshoṭ.h,-kah,-kí -सं० पुं०, स्त्री० अखरोट, अकरोट। The walnut (Juglans regia.) देखो अखरोट।

अक्षोट तैलम् akshoṭa tailam-सं० क्ली० अखरोट का तेल। (Walnut oil.) गुण-मूलक (मूली) तैलवत्।

अक्षोड़,-कः akshoda,-kah-सं० पुं० अखरोट। Juglans regia (The walnut.) र० मा०।

अक्षोभ akshobha-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] क्षोभ का अभाव। अनुद्वेग। दृढ़ता। धीरता। स्थिरता।

वि० क्षोभरहित। चंचलता रहित। उद्वेग शून्य। स्थिर। गंभीर। शांत।

अक्षोहारः akshohárah-सं० पुं० मधु खजूरी, मीठा खजूर का पेड़। वै० निघ०।

अक्ष्णा akshṇá-सं० स्त्री० चक्षु, नेत्र, आँख। (Eye)

अक्ष्यम् akshyam-सं० क्ली० सौवर्चल लवण, साँचर (ल) नमक। (Sochal salt.)

अक्ष्यस्थिः akshyasthih-सं० पुं० अश्रु-वस्थि। (Lacrimal bone.)

अज्ञातयक्ष्मा ajnyáta-yakshmá-सं० पुं० अज्ञात स्वरूप संग दोष से लगनेवाले रोग। अथ०। सू०। ११। २। का० २।

शुद्धिपत्र (ERRATA)

पृष्ठ	कॉलम	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
ग		३	जुम्मेदोरी	जुम्मेदारी
ग		६	शातलं	शीतलं
घ		२१	संघन	सघनं
ङ		६	पूवच्छेर	शवच्छेद
च		१६	हिंदी	हिंदी
ञ		८	राबुबदीय	रायुर्वेदीय
१	१	१	ओंर	और
१	२	१६	स्त्रा	स्त्री
२	२	१३	aázáa	aāzáa
२	२	१५	,,	,,
३	२	१७	मुशाबिह्तुल अश्र्ज़श्र्	मुशाबिह् तुल्अजज़ा
५	१	२६	Tometosa	Tomentosa
,,	,,	२८	Ægptiaca	Ægyptiaca
,,	'c	३४	Integrifoila	Integrifolia
,,	२	१४	Embroyo	Embryo
,,	,,	३५	Laeppálaí	lappálaí
६	१	१६	पु	पुं
,,	,,	३७	अनाक़ा	अनीक़ो
,,	२	२३	āqadúniyá	aqadúniyá
७	२	१६	पु	पुं
,,	,,	२६	āqarqarhá	āaqarqarhá
८	१	२२	तिब्बो	तिब्बा
१२	१	१८	akarkáńtá	akara káńṭá
,,	१	३०	कज़्तुम	कज़् दुम
,,	२	१६	पु	पुं
,,	,,	२५	पु	पुं
१३	२	३१	पु	पुं
१४	१	५	पु	पुं
१४	१	७	पु	पुं
१५	१	१५	हैं	है
,,	१	५	पु	पुं
,,	२	८	पु	पुं
,,	,,	१०	पु	पुं
,,	,,	१५	पु	पुं
,,	,	२०	अकारकरभः	अकाकरभः
,,	,,	,,	पु	पुं
,,	,,	२६	शब्द	शब्द
१७	२	१३	पु	पुं
,,	,,	२३	akár-káńtá	akár-káńṭá
१८	१	८	पु	पुं
,,	,,	२१	पु	पुं
,,	,,	२४	पु	पुं
१८	२	२४	पु	पुं
,,	,,	३०	पु	पुं
१६	१	१६	पु	पुं
,,	,,	२४	कश्स्युटा	कस्क्युटा
,,	,,	२५	Cusuta	Cuscuta
२०	१	१०	ओंर	और
,,	,,	१७	वाली	वाला
,,	२	२०	अ	अ़
२१	१	५	पु	पुं
,,	,,	८	पु	पुं
,,	,,	१०	aqiqa	aqíqa
,,	,,	,,	पु	पुं
,,	,,	११	āaqiq	āaqíq
२१	,,	२१	ज्वोति	ज्योति
,,	२	४	रीं ।	रीठा
,,	,,	५	ने	में
२२	१	१५	।धः	अधः
,,	,,	३६	अ़(प) कीरैन्थीस	अ(प) कीरैन्थीस
२२	२	१४	ई	ई
२३	२	२७	अ	अ़

पृष्ठ	कालम	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
"	"	"	रोगन	रोग़न
२३	२	३०	Necca	Mecca
"	"	"	Balm	Balsam
२४	१	२	पु	पुं
"	"	६	पु	पुं
"	"	८	Hotero-phyllum	Hetero-phyllum
"	"	१३	खानिकुम्र-नमिर	खानिकुम्र-मिर
"	"	१६	अक़ुनस्यून	अक़ुनोस्यून
"	"	२५	aqumar shún	aqúmár-shúna
"	"	२७	वंच	वच
"	"	३४	पु	पुं
२५	१	२१	उसवर्ग	उपवर्ग
"	२	१७	अ	अ
२६	१	३	अफ़ा	अ०, फ़ा०
"	"	२८	तेल गुनाम	तेलगु नाम
"	२	१०	बर्ना	बर्मी भाषा,
२७	१	८	बाला	वाला
"	"	११	इसका ... आता	इसकी ... आती
"	२	३४	अगोला	अगेला
२८	२	७	औषधियां	औषधियाँ
"	"	२६	aakki	akkí
२९	२	२७	अक़्दीदुस	अक़्दीदुस
"	"	२८	āqna	āaqna
"	"	३२	बाला	वाला
३०	२	२२	aqrfa	aqraf
३०	२	२५	अक़्बी	अक़्बा
"	"	२८	हिं० व०	हिं० वि०
"	"	३१	अक़ाश्र्	अक़ाश्र्
३१	१	१३	पत्रं	पर्वं
३१	१	१४	Phormacopoeea	Pharmacopoeia
"	"	१५	Despensatory	Dispensatory
"	२	१५	anb	and
		१६	aklah	aklaḥ

पृष्ठ	कॉलम	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
"	"	२५, २६	केवांच	केवाँच
"	"	३२	Indigoplmt	Indigoplant
३२	१	२	वायुगाला	वायुगोला
"	१	२३	पुं०	यु०
"	"	३१	अ	अ
"	"	३५	सं०	सं० क्री०
"	२	४	वद्द	वद्द
"	"	२३	अग	अगर
३३	२	२६	ब वासलीक़	व बासलीक़
"	"	३५	अकहाल	अकहाल
"	"	"	अ०	अ०
३४	१	५	निककती	निकलती
३६	१	१५	क्षुत्र	क्षुद्र
३७	१	२३	पीताभयुक्त	पीताभायुक्त
"	"	२६	हरिताभयुक्त	हरिताभायुक्त
"	२	१३	अफ़ाक	अफ़्फ़ाक
३८	१	३०	agadnk-arah	agadank-arah
"	"	३१	agadnká-rah	agadanká-rah
"	२	११	विप	विपघ्न
"	"	३०	गअन	अगन
"	"	३२	अगन चश्मानो-का	अगन चश्मानो शाँच
"	"	३३	हिं० पुं०	गु०
४०	१	१५	agnaeú	aganeú
		१६	agnata	aganeta
४२	१	१४	टिपेरा	टिपेरा
४३	१	१२	गाढ़	गाड़
४५	२	१	लाड	लाइ
"	"	१७	झर्री	झुर्री
४८	१	३५	Knid	Kind
"	२	८	कुष्णागुरु	कृष्णागुरु
५०	२	२	कटिकूट	स्फटिकूट
५१	१	२	औरं	और
"	"	३५	अगस्ति	अगस्तिप
"	२	१३	इसको	इसकी
५४	२	१६	पाक	पाँक

पृष्ट	कॉलम	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४५	१	१५	मo	मांo,
४५	१	२०	aghárah	agh.arah
”	”	२२	agārdhú-mah	agára-dhúmah
”	”	२४	tay	tai
”	”	२५	घुवाँसा	धुवाँसा
	२	४	आक	आँक
५८	१	२४	रागोद्घाटक	राघोद्घाटक
”	१	३५	रागोद्घाटक	राघोद्घाटक
”	२	३०	secrations	secretions
५९	२	२७	व्योहार	व्यवहार
”	”	३०	(घातकी)	(घातकीन)
६०	२	१५	रागा	रागी
”	२	२६	अघारी	अगौरी
६१	२	२४	Zlanicum	Zeylanicum
६२	१	११	Succnum	Succinum
”	”	१२	agdí	aghí
६४	१	३४,३५	obious	obvious
”	२	७	fadu	fabu
६५	१	२३	phthisis	pthisis
६७	१	२३	कर्पास	कार्पास
६८	१	३१	आचार्यो	आचार्य
६८	१	३१	वच का भी	वच भी
”	२	३८	Cardisspermum	Cardiospermum
७०	१	८	jaaní	janani
७२	२	३५	वानष्ठोला	वाताष्ठोला
७३	२	५	मन्त्र	यन्त्र
७३	२	२८	mákham	mukham
७५	२	६	पुं०	क्ली०
७५	२	१७	पुं०	क्ली०
७५	२	३२	Verdenaceæ	Verbenaceæ
७६	१	३२	राहिणी	रोहिणी
७७	२	३	virryyam	víryyam
७८	१	१०	vaṣha	Veṣha
७९	१	१०	अरंड-कुसुम	अरण्य कुसुम

पृष्ठ	कॉलम	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८०	२	६	(१)	(२)
”	”	१०	nartridge	partridge
”	”	१७	लघ्लबह्य	लब्लबह्
”	”	३२	काय	कार्य
८१	१	६	सं०	संज्ञा
”	”	१५	adj	adj.
८१	२	३५	य०	प०
८३	२	२५	bont	bent
८४	२	६	गिशाश्र्	गिशाश्र्
८५	१	७	कोरिश्रा	कोरिऑन्
८७	१	१६	dentala	dentata
”	”	२६	अङ्कारा	अङ्कार
”	२	४	चेट्ट	चेट्टु
”	२	३६	उगन	उगना
”	”	३६	खोंना	खोंथा
८८	१	६	अङ्कर	अङ्कुर
”	”	२६	अङ्कुशकास्थि	अङ्कुशास्थि
”	”	२६	ankuṣh-asthi	ankuṣhásthi
”	२	१	अङ्कशिन	अङ्कशिन
”	”	६	अङ्कसा	अङ्कुला
८९	१	१	उपयाग	उपयोग
”	१	२६	गर्भः, वषरणः	गर्भविषण्णः
९०	१	३७	Lanlarck	Lamarck
९१	२	२८	का	के
९२	१	८	करता	×
”	”	६	हरण	हरण करता
”	२	३३	थोड़ी	थोड़े
९४	१	१०	प्रभति	प्रभृति
९५	१	२०	peptalum	petalum
”	१	२१	अङ्कालमु	अङ्कोलमु
९६	२	३८	angada-dam	angadam
९८	१	२८	व्यथ	व्यध
”	२	१	वाहन	वहन
”	”	१७	ला	का
९९	१	१३	वेदन	वेदना

पृष्ठ	कॉलम	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
९९	२	२९	Zinziber	Zingiber
१००	१	३१	अङ्कसदनन्	अङ्कसदनम्
१०१	१	१४	संयाग	संयोग
१०२	२	३०	टका	टीका
१०३	२	३१	Can	Cane
१०५	१	६	अययव	अवयव
१०६	२	१	अङ्ष्टम्	अङ्गुष्टम्
१०७	२	२७	Iodid	Iodide
१०८	२	२६	Ointmet	Ointment
१०८	२	३८	Varetrni	Varetrini
१०९	२	५	धन्गकम्	गन्धकम्
,,	,,	२०	स्टेर्वासैका	स्टैफीसग्रा
११०	२	२६	हेमेनेलिस	हेमेमेलिस
१११	१	१६	अंगुश्तफ़ा	अंगुश्त-फ़ा०
,,	,,	२३	tae	toe
,,	२	३३	Paseolus	Phaseolus
११८	२	५	पूणरूप	पूर्ण रूप
१२०	२	५	उसका	उसको
१२९	२	२७	āajamaya	āajamáya
१३०	२	१०	प०	पं०
१३१	२	३१	बाष्प	वाष्प
१३४	१	३६	बारहे अरमनी	बोरहेअरमनी
,,	२	१, २	अज़ारफ़त, अज़फ़त	अज़रफ़ूत, अज़फ़ूत
,,	,,	२१	कवाँच	केवाँच
१३६	१	२८	mubavv	mubavvi
,,	२	३८	Helicteris isora, *Linn.*	Asclepias geminata, *Roxb.*
१३७	१	३९	Umblli-feræ	Umbelli-feræ
१३८	१	१४	अजमोदा	अजमोदा के
१३९	१	४	Agua	Aqua
,,	,,	२३	शोथों के	शोथों की
,,	,,	२६	अजवायनको	अजवायन का
,,	२	२६	होती	होता
१४०	१	२२	ओार	और
,,	,,	२६	तल	तेल

पृष्ठ	कॉलम	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१४०	२	१७	लिए में	लिए
१४१	२	४	क ॅ	कर्ण
१४२	१	१२	वनस्पत्योद्यान	वनस्पत्यु-द्यान
,,	,,	१६	हश्रॉस	हुश्रॉस
,,	,,	१८	शूक	शूकर
,,	,,	२४	नाटे	नोट
	२	११	यग	योग
१४४	१	३९	दवा	द्बा
१४६	१	८	षुनः	पुनः
,,	,,	३२	अजवावन	अजवायन
,,	२	१८	sebative	sedative
१४७	२	२४	धतूरीन	धतूरीन
,,	,,	३४	soporiflc	soporific
१४८	,,	९	वालो	वाले
१५२	१	१३	म्रंश	भ्रंश
१५३	२	२४	क़ा	का
,,	,,	३१	आेार	और
१५४	१	२५	अनामून	अर्नामून
,,	२	१८	त्रि०	स्त्री०
,,	,,	३९	संदा	.संज्ञा
१५५	१	१८	स्त्री०	क्ली०
,,	,,	२३	प्रहण्याधिकारे	प्रहण्यधि-कारे
,,	,,	३०	पांडुरीग	पांडुरोग
,,	२	७	हें	हैं
१६०	२	१७ }	प्रकृत्यार्जाण	प्रकृत्यजीर्ण
,,	१	२७ }		
,,	,,	,,	नाट	नोट
१६१	१	३	knṭaka	kanṭaka
१६२	१	४	१० १०	१०–१०
,,	,,	१८	लौंग	लौंग
१६३	१	१४	ओार	और
,,	,,	२५	लामड़ी	लोमड़ी
,,	,,	२९	ओार	और
,,	,,	३३	जा	जो
,,	,,	३४	अज़त	अज़ूत
१६३	२	१२	मिपी	मिश्री
१६४	१	३४	लद्द्व	लाद्द्व

पृष्ठ	कॉलम	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१६४	२	१०	अजाफ़	अजौफ़
१६५	१	१४	azghása	azghasa
१६५	२	३	अज्ज़ाजा	अज्ज़ार्जा
१६६	१	१२	संधातिन	संधानित
"	"	१३	निर्बलेता	निर्बलता
"	"	२०	अजिनहह्	अजिनहह्
"	"	३५	अज़्फ़र	अज़्फ़र
१६७	१	६	जससे	जिससे
१६७	१	३३	फ०	फ़ा०
१६८	१	१५	कणिठक स्थि	कण्ठिकास्थि
"	"	२१	बिल्मइयनो	बिल्मइयना
"	२	२५	अज़मुरु कबह	अज़्मुरु-कबह
"	"	२६	पार्श्वयरिथ	पार्श्वयस्थि
१७१	१	६	पश्चात्	के पश्चात्
१७३	१	४०	: अञ्जन	अञ्जनः
"	२	२६	किजौरे	बिजौरे
"	"	"	शुप्क	शुष्क
१७४	१	६	मुलेटी	मुलेठी
"	"	११	शुप्क	शुष्क
"	"	३३	शाँत	शांत
१८२	१	३६	क्तेद	क्लेद
१८४	१	३७	मस्तिम्क	मस्तिष्क
१८३	२	१३	अपवर्तन	संवर्तन
१८६	१	११	अमिप्राय	अभिप्राय
"	२	३२	जाता	लाता
१९०	१	२७	ओारसी	ओाइसा
१९२	१	१६	शाता	जाता
"	"	३२	युक्	युक्त
"	२	२६	का	की
"	"	३२	हैं	है
१९३	"	३	बृंहण	बृंहण
१९४	"	२५	नाि पुष्प	नारिपुष्प
१९५	१	३	वष	वर्ष
१९६	१	१०	ओर	और
"	२	६	वयोंकि	क्योंकि
१९७	१	८	पुष्टिकारक	पुष्टिकारक
"	"	२०	डॉक्टरा	डॉक्टरी
१९७	२	२८	फ़०	फ़ा०
१९८	१	२०	pliulifera	pilulifera
"	"	२३	बीजे	बीज
२००	२	२	लम्बू	लिम्बू
२०१	१	४	जांक	जोंक
"	"	२०	atraphy	atrophy -
२०२	२	३७	ef	of
२०५	१	२७	Catchu	Catechu
२१२	२	४	क ारा	कटारी
२१२	२	१०	स्त्रा	स्त्री
२१३	१	११	ओर	और
२१५	१	५	खुस्यह	खुस्यह्
"	"	६	फ़ानह्	फ़ातह्
"	"	७	खुस्यों	खुस्या
"	"	२६	पपावपेपा	पपाव(पेपा)
"	२	३६	लस्थे	लस्वे
"	"	३७	विषमर्ती	विषमवर्ती
२१६	१	५	पुष्पभ्यन्तर-कोप	पुष्पाभ्यन्तर-कोष
"	२	२६	के	की
२१८	२	२८	होता है	होते हैं
२२१	१	३५	जाई	लाई
"	२	२७	बाइकार्वोनेट	बाइकार्बोनेट
"	"	३३	भोनन	भोजन
२२२	२	२२	कद्दूदान	कद्दूदाने
२२३	१	२८	सुहाग	सुहागा
"	२	४	गा	गो
२२४	२	३	जौहर,	जौहर
२२५	१	३५	बिषयक	विषयक
२२६	२	१२	अपवर्तन	संवर्तन
२२८	२	२८	स०	सं०
२२९	१	२३	पुप्पसार	पुष्पसार
"	२	१२	अतलस्पश	अतलस्पर्श
२३०	२	३५	बँधता	बँधर्ता
२३१	२	१	नेलि	नैलिद
२३४	१	१२	अबाध्य	अवाध्य
२३५	१	१६	जव	जब

पृष्ठ	कॉलम	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२३६	२	२१	जुनाल् हृश्फ़ह्	ताजुल् हृश्फ़ह्
२३७	२	६	करटक	कण्टक
२३६	१	१८	atijágar-ṇah	atijágarah
”	”	२३	atijágar-aah	atijágara-ṇah
२४२	१	३	*Liun*	L*inn*.
२५२	१	३०	त्ताहिए	चाहिए
२५३	२	५	अवस्था	अवस्था
”	२	१५	पा ।	पाठा
”	२	२८	कानन,	कानन
२५३	२	३८	ब लातीसार	बालातीसार
२५४	१	८	ओर	और
२५४	१	१२	अक्सगल्ल	ऑक्सगॉल
”	”	२४	क्लोरोफार्म	क्लोरोफ़ार्म
”	”	३१	विज ।	विजय
”	”	३५	क्तोरिक	क्लोरिक
”	२	५	सैंघव	सैंधव
”	”	१४	स्युबार्ब	रयुबार्ब
२५५	”	२६	ग्रमाण	प्रमाण
२५६	१	१८	शहद्	शहद
२५८	२	४	वंद	कंद
”	”	६	प्रतिपेषक	प्रतिषेधक
”	”	११	व य	वल्य
२५९	१	१३	अ ीस	अतीस
२५९	१	२३	हांती	होती
२६३	२	१७	रक्ता धिक्य	रक्ताधिक्य
२६४	२	३०	atyudírṇā	atyudírṇá
२६७	१	२३	कन०	कना०
२६७	२	६	रख	रस
२७०	१	२१	खैरसार	खैरसार
२७१	१	२६	officiulis	officinalis
२७२	२	२	हुमा	हुआ
२७४	२	१६	मै नफल	मैनफल
२७७	१	२०	गंगलघ	गंगलघण
२७७	१	२१	ओर	और
२८०	२	७	netrachch-dada	netrach-chhada
२८१	२	६	Inferor turt-binate	Inferior turbinate
२८२	१	१५	हॉना	हाना
२८२	१	२०	(२)	(३)
२८३	१	२४	वे	वै
२८३	१	३१	पेठ	पेट
२८५	१	३	(उ)	(उ़)
२८५	२	२७	Gossypinm	Gossy-pium
२८५	२	३५	soluhble	soluble
२८६	१	१	arugam	anangam
२८६	१	४	वेंकांत	वैक्रांत
२८६	२	७	मुद्ध	शुद्ध
२८७	२	७	आर	और
२८८	१	१४	लाङ्गला	(४) लाङ्गली
२८८	१	३०	अग्निकन्थ	अग्निमन्थ
२८८	२	२	crountry	country
२९०	१	२१	सुस्वाद	सुस्वादु
२९३	२	२१	वल	वूल
२९४	१	४	भल्लातकर्का	भल्लातकी
२९४	१	७	भल्लातक्याम्ल	भल्लातक्यम्ल
२९६	१	३३	prikhá	parikhá
२९८	२	२६	पभाव	प्रभाव
३०१	१	१२	आर	और
३०१	१	२२	हाता	होता
३०२	२	२२	मद्ययपान	मद्यपान
३०३	२	१५	Tukiua	Tukina
३०४	१	१४	सोर	और
३०६	१	१०	रक्क	रक्त
३०७	२	१७	पास	पांस
३०९	१	२३	पत्तों के	पत्तों को
३१२	१	११	संता	संज्ञा
३१४	१	२६	खताई	खताई
३१४	२	१	सुगंधित	सुगंधि
३१५	२	२१	तूप	तृप्त,
३२०	२	१५	ख़्	ख़्

पृष्ठ	कॉलम	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३२३	२	१०	एवं	एवं
३२४	२	२०	संज्ञा	संज्ञा
३२५	१	१४	पं०	पुं०
३२५	१	३३	Followrig	Following
,,	२	८	स्त्री०	क्ली०
,,	,,	१८	Thalicl-rum Fliosam	Thalictrum Eoliolosum D.E
३२५	२	३०	उ··वल	उज्ज्वल
३२६	१	२७	आ·	आ० ।
३२६	२	३	Vapourisa-tiou	Vapouris ation
३२७	१	१८	औपध	औषध
३२८	१	२७	सोनामुखा	सोनामुखी
३३२	१	२६	दांकर	हांकर
३३३	२	६	भैंस	भैंस
३३४	१	२६	ओर	और
३३४	२	३१	स्वार्धान	स्वाधीन
३३५	१	१४	हे	है
३३५	२	२७	अनाना	अनोना
३३६	१	२५	अनोन	अनोना
३३६	२	१५	अन्य	×
३३६	२	१६	औषधों	अन्य औषधों
३३७	१	१	अनङ्कित्	अनङ्किन्
३३६	१	१३	ओर	और
३३६	१	२८	खंड	खंड
३४३	१	३५	अन्तरात	अन्तरातप
३४४	२	२०	अनंतम	अन्तिम
३५४	२	२७	गह्वर	गह्वर

४५ } नोट—'अन्तरीय उदरच्छदा' से 'अन्तर्म-
४६ } हानाद' तक के शब्द पृष्ठ ३४३ द्वितीय कॉलमके अन्तर्मुख शब्दसे पहिले होने चाहिए और 'अन्तर्मुखी' 'अन्तर्लसिका' से पहिले तथा 'अन्तर्लोहिता' 'अन्तर्वत्नीसे' पहिले होने चाहिए।

पृष्ठ	कॉलम	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३४८	१	१६	संज्ञा	संज्ञा
३४८	१	३४	ṣhronigá	ṣhroṇigá
३४६	२	१५	इंलुति-	इलुति-
३४६	२	२	इ	इं

पृष्ठ	कॉलम	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३५०	१	२२	होता	×
३५०	२	२०	अच्छा	अच्छा
३५०	२	३७	को	के
३५१	१	३३	prishishta	pariṣhi-shṭa
३५२	२	३४	अधिफ	अधिक
३५३	२	८	प्रमृति	प्रभृति
३५८	१	३६	व	का
३५६	२	४	चली	चला
३५६	२	१०	रखें	रखें
३५६	२	२३	"	"
३६०	१	१८	जन्ममकाल	जन्मकाल
३६०	१	२४	परिस्तृत	परिविस्तृत
३६०	२	१५	आंत्रस्त	आंत्रस्थ
३६०	२	२०,	Gariec Lacti	Gastric-Lactic
३६०	२	२३	व्योहार	व्यवहार
"	"	२८	भातर	भीतर
३६३	१	१८	सन्तमम	सन्तमस
३६३	१	२१	अन्धतमस	अन्धतमस
३६८	१	३	सस्कार	संस्कार
३६८	२	८	हाता	होता
३७०	१	४	अंगुल्याग्र	अंगुल्यग्र
३७३	२	१६	कक	कफ
३८०	२	२२	श्वतापराजिता	श्वेतापराजिता
३८२	१	११	Hetic	Hectic
३८६	२	३१	क्लोलाफार्म	क्लोरोफार्म
४०१	१	११	ख ंड	खंड
४०१	१	३२	क्लेशप्रद	क्लेशप्रद
४०४	१	२८	फे	के
४०४	२	२६	परिणाम	परिणाम
४०५	२	१६	अपमार्ग	अपामार्ग
४०६	१	२	कमज़ोश	कमज़ोर
४०६	२	८	डाकर	डालकर
४०६	२	१६	क	के
४१६	१	१७	चतुष्ठय	चतुष्टय
४१६	"	"	क्रियाएँ	क्रियाएँ
४१६	२	३५	वानस्पतिक	वानस्पतिक

पृष्ठ	कॉलम	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४२४	२	३८	Sipnace aoleracca	Spinacea oleracea
४२६	१	३४	वगन	वर्णन
,,	२	३५	त	तथा
४२७	१	७	मुण	गुण
४२८	१	२१	*Loudon*	*London*
,,	१	२३	प्रयागांश	प्रयोगांश
४२९	२	१०	बस्त्र	वस्त्र
,,	,,	२६	Hippærate	Hippoc-rate
,,	,,	३७	अबुनस्र	अबुनस्त्र
४३२	१	३२	ṭamarúna	tamarúna
४३३	१	१६	akhṛhsa	akh ras
४३४	१	१३	adda	abda
४३८	१	३७	साय	साथ
,,	२	३०	aalah	ablah
४३९	१	१८	desric	desire
,,	,,	२५	ख ंड	खंड
,,	२	८	कागर्जा	कागर्जा
,,	,,	३३	अम्लघेतस	अम्लवेतस
४४०	१	१८	gutá	guṭí
,,	,,	२१	abhayādi	abhayádi
,,	,,	२२	vatí	vaṭí
४४१	२	३३ ३४ ३५	एक उपसर्ग करता है।	नोट–यह पृष्ठ ४४२ के १ स्तम्भ के प्रथम पंक्ति के बाद होना चाहिए।
४४२	१	१५	बाला	वाला
,,	,,	२४	स्त्री	स्त्री
,,	,,	२८	औ	और
,,	२	३	[botter	butter
,,	,,	५	गी	घी
,,	,,	१७	भारा	चारा
,,	,,	२०	घशीकरण	वशीकरण
,,	,,	२१	अभिचारक	अभिचारक
,,	,,	,,	abhchá-raka	abhichár-aka
..	,,	२२	मंत्र	यंत्र
४४२	,,	,,	उच्चाचन	उच्चाटन
	,,	२६	producedy	produced by
४४२	,,	३३	!	प्रयोग
,,	२	३४	र्श्रा	अभिशाप
४४३	१	१		अ
,,	,,	४	क्लोरिका	क्लोरिक
,,	,,	५	Hyorochl oric	Hydro-chloric
,,	,,	११	नबीन	नवीन
,,	,,	१४	abhinva	abhinava
,,	,,	१६	हथक्	पृथक्
,,	,,	२३	kamehva	kámeṣhva
४४३	२	३०	puaṭ	puṭa
४४४	१	३४	a himukha	abhi-ruchi
४४५	१	३	भथ	भय
,,	१	७	मा०	मा०
,,	,,	६	आभिषक्क	अभिषक्क
,,	,,	३०	adhi	abhi
,,	२	८	षीड़ा	पीड़ा
,,	,,	१८	(३)	(२)
४४६	१	८	abhi thitá	abhi hitá
,,	,,	३५	abhisaugah	abhish angah
,,	,,	३६	अभिषक्क	आभिषक्क
,,	,,	३८	प्रं	पुं
,,	२	१५	किपा	किया
,,	,,	१८	हब्बुलाआस	हब्बुल्आस
,,	,,	२२	adheda	abheda
४४८	१	२६	देखो-	देखो-वात-व्याधि।
४४९	१	१५	नागरमोधा	नागरमोथा
,,	,,	३७	पस	पर
,,	२	३	षत्र	पत्र
,,	,,	१०	उहधातु	उपधातु
,,	,,	,,	बह	यह
,,	२	३७	कष्णाभ्रक	कृष्णाभ्रक

पृष्ठ	कॉलम	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४५०	२	४	अम्रक	अभ्रक
४५१	१	४	अम्रक	अभ्रक
,,	,,	१६	दूमरा	दूसरा
,,	२	२	भ्रको	भ्रकों
,,	,,	१४	स्यभाविक	स्वाभाविक
,,	,,	३४	हीड़ा	पीड़ा
,,	,,	३६	मारी	भारी
,,	,,	,,	जठराघ्नि	जठराग्नि
४५२	१	२२	शुद्धि	शुद्धि
,,	,,	२६	चूण	चूर्ण
,,	२	१०	तद्न्तर	तदनन्तर
,,	,,	,,	उसकं	उसको
,,	,,	३०	टिकिवा	टिकिया
,,	,,	३२	प्रग्येक	प्रत्येक
४५३	१	१	कथ	काथ
,,	,,	२४	भावना	भावना
,,	२	६	भस्म हीं प्रस्तुत	भस्मप्रस्तुत
,,	,,	१४	गाड़ा	गाढ़ा
,,	,,	२८	जिलोय	गिलोय
४५४	१	८	खाँड	खाँड़
,,	,,	३८	फा	का
,,	२	११	कज्ज	कज्जल
,,	,,	२६	विकृत	विकृति
,,	,,	१५	योगिक	यौगिक
,,	,,	१६	वर्ण	वर्ण
,,	,,	३४	वशलोचन	वंशलोचन
४५५	१	२२	तर	तरह
,,	,,	३१	सेबन	सेवन
४५६	१	३७, ३८	द्वंद व्याधियों	द्वंद्व व्याधियों
४५७	२	३	श्लेष्मिक	श्लैष्मिक
,,	,,	४	आबरक	आवरक
,,	,,	६	होगी	होगा
,,	,,	१४	श्वेद	स्वेद
,,	,,	१७	परिवर्ततक	परिवर्तक
,,	,,	,,	सार्वा गिक	सार्वांगिक
,,	,,	१८	क्रियायों	क्रियाओं
,,	,,	२१	साम्यस्तिथि	साम्यस्थिति

पृष्ठ	कॉलम	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४५७	,,	२७	अम्रक	अभ्रक
,,	,,	३२	Hecticfe	Hectic
४५८	१	४	क्लो०	पुं०
,,	,,	३३	पयंन्त	पर्यन्त
,,	२	४	पत्थ्य	पथ्य
,,	,,	३२	hrítakí	harítak
४५९	२	११	वैदुर्य्य	वैदूर्य्य
,,	,,	२३	काँस	कास
४६०	,,	३५	साध्य वात	कष्ट साध्य वात
४६१	२	२६	Embclia	Emblica
४६२	१	२	मो०	गा०
,,	२	५	rsouia	rsonia
,,	,,	१२	माँस	मांस
,,	,,	२०	विशेद्	विशेष
,,	,,	३४	tragia	fragia
४६३	१	३८	Semima	Semina
,,	२	३	Maugifora	Mangifera
,,	,,	६	पौघा	पौधा
,,	,,	२३	beq	bela
,,	,,	३७	cassythaiei formis	Cassytha filiformis
४६४	१	६	-ḍda	-gaḍḍa
,,	,,	२६	sálah	sálah
,,	,,	३१	Comumnis	Communis
,,	२	१०	लर्थात्	अर्थात्
,,	,,	२३	इग्द्रवारुणीलता	इन्द्रवारुणीलता
,,	,,	२८	bededeis	bedensis
४६७	१	३५	ओट	और
४६८	१	१७	बहुनमूत्र	बहुमूत्र
४७०	१	१५	ludian	Indian
४७१	१	५	उदरोय	उदरीय
४७१	२	२५	पत्थ्य	पथ्य
४७२	१	६	सेमन	सेवन
,,	२	३८	राक्तनिघंटक	राजनिघंटुक
४७५	१	२१	कीटदंष्ट्र	कीटदष्ट
,,	,,	३७	मुना	भुना
,,	२	५	स्वाद	स्वादिष्ट
,,	,,	११	मांजन	भांजन
४७६	१	६	काथ	क्वाथ
४७७	१	३१	सुस्वाद	सुस्वादु

पृष्ठ	कॉलम	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४७८	,,	१८	सं० पुं०	संज्ञा पुं०
,,	२	२२	प्रलुक्त	प्रयुक्त
४७६	२	६	वर्द्धक	वर्द्धक
४८०	२	२८	संज्ञा	संज्ञा
,,	,,	३०	amarylled-aceæ	amaryll-edeæ
४८७	२	३८	सर	रस
४८६	१	४	शाचादि	शौचादि
,,	२	२३	किस्र्ा	किस्रा
,,	,,	३२	प्रकार	प्रकार
४६१	२	२७	खोनामाखी	सोनामाखी
४६२	१	१५	षडषण	षड्षण
,,	,,	२६	Phyllantl hus	Phyllan thus
४६६	२	२२	प्रत्येफ	प्रत्येक
,,	,,	३६	चर्ण	चूर्ण
४६८	२	१	वरतु	वस्तु
५०६	२	६	प्रमाव	प्रभाव
,,	,,	,,	रागी	रोगी
५११	१	१६	कार्बेनास	कार्बेनास
,,	,,	२०	,,	,,
,,	,,	२२	,,	,,
५१३	२	२६	लमभग	लगभग
५१७	२	१३	रखें	रखें
५२१	१	१६	स्त्री०	स्त्री०
,,	२	२	कणकारी	कण्टकारी
५२२	१	२५	अन्न	अंब
५२५	२	५	रक	रक्त
,,	,,	३३	अश्मनहारी	अश्मनहारी
५२७	२	३१	पञाज	पञाब
५२८	२	५	अम्राज़ा	अम्राज़
५३१	२	४	ताकालिक	तात्कालिक
५३१	२	३४	अम्र ज़	अम्राज़
,,	,,	३५	अम्बाड़ा	अम्बाड़ा
५३४	१	१	amlka	amlaká
५३५	२	२६	शुकला	शुक्ला
५४२	२	१४	ओर	और
५४६	१	३२	स्वाद्वाम्ल	स्वाद्वम्ल
५४७	२	२	हे	हैं
५५१	२	२६	बीच	बीज
५५१	२	१४	Enblica	Emblica
५५६	२	१७	भारनवर्ष	भारतवर्ष
५६१	२	१६	āyumí	ayúmí
५६४	२	१५	seeral	several
,,	,,	,,	socented	scented
५६८	२	२३	सम्सुखवर्ती	सम्मुखवर्ती
५७१	१	६	Rnciius	Ricinus
५७२	,,	२२	वनस्पत्योद्यान	वनस्पत्यु-द्यान
५७३	,,	५	हे	हैं
५८२	२	११	औषष	औषध
५८६	,,	१	arbáārbaāin	arbáar-baāin
५६६	,,	२७	औसतत्	औसतन्
,,	,,	,,	प्रतिशन्	प्रतिशत
६०१	१	१५	*Witld*	*Willd.*
६१३	२	३५	हाहड़ा	हाइड्रा
६३६	,,	१३	कचनोल	कचनार
६४०	१	३०	तबशीर	तबाशीर
६४१	,,	२६	ध्रक	अर्क
६४६	,,	११	अवयव	वयव
६५१	,,	६	हाते	होते
,,	२	२६	ाता	होता
६५४	१	७	हे	हैं
६६०	,,	३३	उक्त	उक्त
,,	२	५	प्रदार्थ	पदार्थ
६६४	१	२	इन्द्रय	इन्द्रिय
६६७	१	२२	अर्णजजमलः	अर्णोजमलः
६७४	२	,,	दृढ़	दृढ़
६७८	,,	३८	तथ	तथा
६८३	१	२३	arbnda	arbud
६८५	,,	८	armú uniyá	armu-niyá
,,	,,	१८	she Sum	The sun
,,	,,	२०	वाल	बाल
,,	,,	२२	araqq	arraqq
,,	,,	२६	aruza	arruza
,,	,,	३०	uaza	urza
,,	,,	३६	यौकिक	यौगिक

पृष्ठ	कॉलम	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६८५	२	१६	ऊर्द्धरेता	ऊर्ध्व रेता
,,	,,	२४	तुन्तुओं	तन्तुओं
,,	,,	३०	वास्तविक	वास्तविकता
,,	,,	,,	तेखो	देखो
,,	,,	३२	Sqirits	spirits
६८७	१	३०	से से	से
६८८	,,	१६	Onacardium	Anacardium
,,	,,	२२	माग	भाग
,,	,,	२४	लोह को	लोह की
,,	,,	२८	गाढ़	गाड़
७०८	१	२५	Alargo	A large
,,	,,	३१	alíkh	alíkah
७१५	२	५	अल्प पशुक	अल्पशुक
७१८	२	२३	अल्लाह्	अल्लह्
,,	,,	२८	अगलालग	अगलागल
७३१	२	२	उना	उतार
७३४	१	३२	कारल	क्लोरल
७३७	१	१	नाडयाव सादक	नाडयवसादक
७४०	,,	१८	avácbinh	aváchínah
७३४	२	१६	Inssolubility	Insolubility
७५०	१	१०	रक्तभायुक्त	रक्ताभायुक्त
,,	,,	३८	ashama	ashám
,,	२	६	aṣhitambhl-avah	aṣhitam-bhavah
७५६	२	२७	अश्मघ्न स्वेद	अश्मघन स्वेदः ashmaghanasvedah संपुं० रोगी प्रमाण एक स्थूल शिला का वातनाशक लकड़ियोंके अंगार से तप्त कर उष्ण जलसे धो डाले, पुनः उस पर कम्बल वा रेशमी वस्त्र बिछा कर वातनाशक तैलों द्वारा अभ्यङ्ग किए हुए रोगीको सुखपूर्वक सुला कर रुरु मृगके चर्म या रेशमी कपड़े से ढँकदें। इससे सुखपूर्वक पसीने निकलेंगे। इसको 'अश्मघन स्वेद' या कर्षू स्वेद कहते हैं। च० सू० अ० १४।
७६३	१	२५	अभाव	अभाव
,,	२	२१	अ	अ
७६६	१	१५	अगाह्य	अग्राह्य
७७०	२	१७	पिकाएँ	पकाएँ
७७६	१	१४	दोता	होता
,,	२	५	हर	पर
,,	,,	३२	ओर	और
७७६	२	८	दोबार	दोबारा
७८०	१	१२	प्रचीन	प्राचीन
७८१	१	१	अष्टादिका	अष्टपादिका
७८५	२	२६	फस्म	भस्म
८०७	२	३६	धूस	धूसर
८०८	२	१	असूकङ्कर	असृक्कङ्कर
८१२	२	५	तअउ_ज़	तअउ_ज़_म
,,	,,	१५	अवस्थ्यावरक	अस्थ्यावरक
८१३	२	७	indiucum	indicum
८२०	१	३५	फ इलयल	फाइलियह
,,	२	२६	सडँच	सडाँध
,,	,,	३७	प्रमात्र	प्रभाव
८२५	२	११	शबर	शंबर
८३०	२	१२	Phyllant-husc	Phyllan-thus

सूचना—पृष्ठ २५ से १२७ तक की हस्तलिपि साफ़ न रहने के कारण उसमें कुछ अधिक अशुद्धियाँ रह गई हैं। आगे भी जो खास खास अशुद्धियाँ थीं उन्हें ही यहाँ दिया गया है। शेष दृष्टि दोष से रहे हुए तथा संशोधन संबंधी एवं प्राकाशकीय सामान्य भूलों के लिए हम पाठकों के क्षमा प्रार्थी हैं। दो तीन स्थलों पर क्रम में भी कुछ व्यतिक्रम हो गया है। आशा है, उदार पाठकगण उसे सुधार कर पढ़ेंगे।

—प्रकाशक